आर्य्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

लखनऊ रविवार पौष २२ शक १८९०, माघ कृ० ८ वि० सं० २०२५, दिनाङ्क १२ जनवरी १९६९ ई०

## परमेश्वर की अमृत वाणी-

### जीवन रहस्य को समझो और उसे सफल बनाओ

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु। यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धाता रायूंषि कल्पयैषाम् ॥ [ऋ १०।१८।५]

भावार्थ—(यथा अहानि अनुपूर्वम) जैसे एक दिन के पीछे दूसरा, इस क्रमानुसार (भवन्तु) होता है (यथा ऋतव. ऋतुभि·) जैसे ऋतुए ऋतुओं सहित (साधुयन्ति) भली प्रकार से होती हैं (यथा अपर) जैसे बाद में होने वाला (पूर्वम् न जहाति) पहले को नहीं छोड़ता है। (धात) हे जीवधारी! (एवा आयूंषि) ऐसे ही आयुमय जीवन हैं (एषाम) इनको कल्पयस्व) सफल बना।

भावार्थ—मानवयोनि आत्मा का सर्वोत्कृष्ट धाम है पशु-पक्षी योनियां केवल भोगमय हैं, वहां मस्तिष्क का वह विकास नहीं है वहां बुद्धि के आश्रय से प्रकृति आत्मा और परमात्मा का बोध किया जाता है और तत्पश्चात् मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य की ओर अग्रसर हुआ जाता है। विवेकशील मानव परमेश्वर के इस रहस्यमय संसार में इस तत्व का बोध करता है कि यहां प्रत्येक वस्तु एक वृत्त में घूम रही है। रात होती है दिन होता है, ऊषा आती है सन्ध्या आती है दिन बीत जाता है, सप्ताह, मास, वर्ष सब बीत जाते हैं। ऋतुओं का चक्र उसे नियमानुसार चल रहा है, जैसे भूत वर्तमान और भविष्य काल सब परस्पर सम्बन्धित हैं, वैसे ही चेतन जगत् में नाना प्रकार के जीवधारियों के अपने-अपने जीवन परस्पर पिछले और अगले जीवनों से सम्बन्धित हैं। अज्ञानी जन अपनी मूलता से, अपने अज्ञान से इस उत्तम मानव जीवन को व्यर्थ गँवा देते हैं, और पशु-पक्षियों की योनियों में पुन लौट जाते हैं किन्तु विवेकशील मानव उत्तम जीवन के रहस्य को समझकर उत्तम कर्म कमाते हैं और शुभ कर्मों से न केवल इस लोक को वरन् ईश्वर इसीलिये वैदिक मार्गियों से कह रहा है कि ज्ञान पूर्वक जीवन क्रम को समझो और इसे सफल बनाओ, मानव जीवन की सफलता भौतिकवाद की आसक्ति में नहीं है, वह तो शुद्ध ब्रह्मज्ञान को आत्मसात करने में अन्तर्निहित है। —'बसन्त'

## लखनऊ में अमरीकी वैदिक शोध छात्र

श्री जीन० आर० थर्सबी

पिछले सप्ताह लखनऊ मे ड्यूक विश्वविद्यालय (संयुक्त राष्ट्र अमरीका) के शोध छात्र श्री जीन० आर० थर्सबी सपत्नीक लखनऊ पधारे। आपने धर्मशास्त्र में एम० ए० किया हैं, और अब उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का इतिहास' विषय पर शोध करने के लिये उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों का भ्रमण कर रहे हैं। आपको वैदिक धर्म, भारतीय वेश-भूषा, शाकाहारी खान-पान मे विशेष रुचि है। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती मेरिलीन पी० थर्सबी एम. ए. मनोविज्ञान की छात्रा हैं। व्यवहार मे बडो सरल और हँसमुख हैं। भारतीय रीति रिवाज उन्हे विशेष प्रिय है।

सभा उप मन्त्री श्री बसन्त जी से अनेक विषयों पर आपका वार्तालाप हुआ। जिसमे श्री बसन्त जी ने उनके सम्मुख मानव जीवन के प्रति वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

भारतीयता के रग में रगे इन अमरीकन दम्पति के स्वागत का एक आयोजन श्री ज्ञानकृष्ण अग्रवाल, सयोजक वैदिक प्रकाशन के निवास पर भी १-१-६९ की सायंकाल को किया गया, जहा भारतीय शाकाहारी भोजन को इस विदेशी दम्पति बडी रुचि से ग्रहण किया।

सत्य सनातन वैदिक धर्म मे रुचि रखने वाले और उसका प्रसार करने वाले आर्यसमाज पर शोध कार्य करने वाले इस विशिष्ट छात्र का हम हार्दिक स्वागत करते हैं और आशा रखते हैं कि पुनीत वैदिक धर्म [जो मानवता का एकमात्र प्रतीक है] को भली भांति समझकर, उसके प्रति आस्थावान होकर, विदेश मे वेद प्रचार के माध्यम से आर्यत्व की स्थापना मे आर्यसमाज के सहयोगी बनेंगे।

| वर्ष | अङ्क |
|---|---|
| ७१ | २ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पै०

इस अंक में पढ़िए!



सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
—सभा मन्त्री

# ओङ्कार-जप-विधिः

★ श्री अमरकुमार शास्त्री
'साधु सोमतीर्थ' देहली

ओङ्कार-जप का वैदिक विधान तो सर्व सम्मत है परन्तु ओङ्कार जप की अनुष्ठान विधि. क्या हो ? यह विचारणीय है। प्रस्तुत लेख मे इसी विषय को प्रस्तुत किया जा रहा है। यह एक आवश्यक विषय है। यदि आर्य विद्वान इस विषय पर कुछ विशेष प्रकाश डालने की कृपा करेंगे, तो हम उनकी रचनाओं का स्वागत करेंगे। —सम्पादक]

१—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार-विधिः, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और पंच महा यज्ञ विधिः आदि ग्रन्थों मे जिस वैदिक उपासना विधि का उल्लेख किया है, उसमें प्रणव-जप अर्थात् ओ३म्-नाम के जप का भी सुस्पष्ट विधान किया है। ओङ्कार-जप का विधान वेदों में भी मौजूद है, उपनिषदों में भी, मनुस्मृति मे भी योग दर्शन, गीता आदि मे भी, उपासनावाद विषयक प्राचीन आर्ष साहित्य में भी। माण्डूक्योपनिषद, जो एक छोटा उपनिषद है, वह तो ओङ्कार का व्याख्यान ही है। उपनिषदों की उद्गीथोपासना भी ओङ्कारोपासना ही है। ओङ्कारोपासना की महिमा और फलश्रुति के प्राचीन उल्लेख तो बहुत अधिक हैं।

२—आर्यसमाज-आन्दोलन के आरम्भकाल में "हरे राम' हरे कृष्ण" आदि पौराणिक नाम जप विधानों का बहुत जोरदार खण्डन किया गया था। तभी ओङ्कारोपासना विधायक अत्यन्त प्रबल उपक्रम भी आरम्भ हुए थे। व्याख्यान-दाता ओङ्कारोपासना पर बल देते थे और लेखक गण ओङ्कारोपासना का प्रतिपादन अपने लेखों एव ग्रन्थों में करते थे। कवियों ने भी संस्कृत और हिन्दी में ओङ्कारोपासना विषयक सुन्दर-सुन्दर स्तोत्र और गीत आदि रचे थे। पौराणिक नाम जप का खण्डन तो देर हुई ठण्डा हो चुका है। पौराणिक नाम जपवाद पौराणिकों के नाम संकीर्तन आदि रूपों मे बहुत बढ़ा है। वैदिक उपासनावाद का कोई विशेष प्रचार-प्रसार तो नहीं हो सका है। इसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं है। हां ओंकारोपासना की बातें अभी तक भी कुछ-कुछ चलती हैं। नई बात तो कुछ भी नहीं होती, तथापि लेख भी छपते हैं। भाषण भी होते हैं गीत भी बनाये और गाये जाते हैं।

३—आर्यसमाज को वैदिक धर्म प्रचारक प्रगतियों के साथ मेरा सम्पर्क चालीस वर्ष से कुछ अधिक पुराना हो चुका है। ओङ्कारोपासना के विषय में मैने बहुत कुछ पढ़ा भी है सुना भी है, पूछताछ करके जाना भी है। ओङ्कारोपासना-विधायक छोटी-बड़ी प्राय सभी पुस्तकों का संग्रह मैंने प्रयत्न पूर्वक किया है। प्राचीन ग्रन्थों के ओंकारोपासना विषयक सन्दर्भों का बारम्बार पाठ और विचार करने मे मैंने पर्याप्त समय लगाया है। स्वर्गीय श्री पण्डित शिवशंकर जी काव्यतीर्थ का उत्तम ग्रन्थ—'ओंकार निर्णय' जब दुर्लभ हो गया था, तब मैंने उसे आद्योपान्त दोबारा लिखा था और सुसम्पादित रूप में छपवाया था। एक सज्जन ने अपनी "आर्य संस्कृति के तीन प्रतीक" नाम की पुस्तक रची थी। एक पुस्तक प्रकाशक के सहयोग से वह मैंने सुन्दर रूप में छपवायी थी। ओङ्कारोपासना की महिमा का उल्लेख देखकर ही मैं उसकी ओर आकर्षित हुआ था। मेरे एक विद्वान् मित्र ने ओङ्कारोपासना विषयक एक बड़ा ग्रन्थ—'ओङ्कार दर्शन' नाम का लिखा है। क्योंकि इस विषय मे मेरी विशेष रुचि है। इसलिये मैंने उसकी पाण्डुलिपि को पुस्तकाकार मुद्रण के लिए दोबारा लिख डाला है। पुस्तक रूप में तो न जाने वह कब छपेगा ? प्रसन्नता की बात है कि सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'परोपकारी' मे उसका प्रकाशन अनुक्रम पूर्वक आरम्भ हो चुका है।

४—मैं विनम्रता पूर्वक यह प्रकट करना चाहता हूं कि ओङ्कारोपासना विधायक प्राचीन और नवीन साहित्य में तथा अन्यत्र भी 'ओम्' ईश्वर का सर्वोपरि एव निज नाम है, 'ओम्' का जप होना चाहिये, 'ओम्' नाम का अर्थ विस्तार बहुत अधिक है, ईश्वर के के सभी गुण कर्म और स्वभाव एव तत्सम्बन्धी विचार 'ओम्' नाम के अन्तर्गत आ जाता है, 'ओम' नाम जाप के लाभ बहुत अधिक हैं, व्याकरण शास्त्र भाषा विज्ञान मनोविज्ञान और ध्वनि-विज्ञान, आदि के अनुसार 'ओम्' नाम का अर्थ ही सार्थक, उत्तम, सिद्धि प्रद, दोष रहित और दुःख निवृत्ति मे सब प्रकार से विशेष सहायक है, यह सब मैंने पढ़ा सुना है। इस प्रकार सम्पूर्ण साहित्य में 'ओम्' का महिमागान और विविधता पूर्ण अर्थबोध हो भरा पड़ा है ? ओंकार-जप की विधि क्या है इसका तो कहीं कुछ भी उल्लेख है ही नहीं। यदि होता, तो वह मेरे देखने मे न आया होगा।

५—कई वर्ष पूर्व श्री विरजानन्द साधना आश्रम मथुरा मे मैने ओंकारोपासना विषयक व्याख्यान दिया था। उसके अन्त मे श्री शुभंवी जी एक वान प्रस्थी महात्मा ने मुझे बतलाया था कि उज्जैन के पण्डित शिवदत्त जी ने एक पुस्तक 'ओङ्कार-जप विधि' नाम की

(शेष पृष्ठ १० पर)

(१)

शब्द अकार उकार मकारा,
ओ३म् नाम मिल बने अपारा।
जीवन अकार पालन उकार
करता है संहार मकारा॥

(२)
अधर खुलें 'अ', 'उ' विस्तारें,
बन्द अधर जब 'म' उचारें।
जीवन पालन और मरण का,
ओ३म् शब्द संकेत विचारें॥

(३)
मुख्य ओ३म् प्रभु अन्य अनगिनत,
गुण आधारित नाम सभी हैं।
ब्रह्मा-विष्णु ईश्वर महेश,
क्रमश करते काम सभी हैं॥

(४)
'अ' प्रथमाक्षर व्यापक आला,
जिसके बिन मौन वर्णमाला।
'उ' स्वर मुखर स्वयं बल वाला,
'म' व्यञ्जन असमर्थ बेहाला॥

(५)
ईश्वर अ उ' जीवों की मशला,
'म' बोधक बहु प्रकृति भुलाला।
'अ' एक 'उ' स्वर जीव ससीमा,
जग व्यञ्जन 'म' प्रकृति विशाला॥

(६)
है 'अ' बन 'उ' से जीकी सन्ध्या,
है 'म' बन उ' से मुकी सन्ध्या।
प्रभु यही जीव सर मुकुट चढ़े
यदि करे सदा प्रभु की सन्ध्या॥

(७)
सुखा पिता प्रकृती का प्यारा,
अधोगती हो जीव बिचारा।
भेद सभी स्पष्टाक्षित करता,
प्रभु का ओ३म् नाम शुभ प्यारा॥

(८)
जो अन्य विदेशी भाषायें,
है उनमें भी ऐसा ईश्वर।
परमेश्वर है हर जगह एक,
पर नाम भिन्न धरता ईश्वर॥

(९)
जी० ओ० डी० से गाड कहाता,
ओ३म अर्थ है अंश बताता।
जनरेटर जी अपरेटर जो,
डी डिस्ट्रायर, बोध कराता॥

(१०)
अर्थ जन्म पालन-विनाश का,
नाम गाड भी बतलाता है।
अंग्रेजी का है यही ईश,
बस चिन्ह ओ३म का पाता है॥

(११)
प्राणि अप्राणि विश्व में व्यापी,
अन्तर्यामी पिता प्रतापी।
हिंसक क्रूर जीव जो पापी,
वह दुष्ट सन्तापक तापी॥

(१२)
शिव-शङ्कर प्रभु करे शमन शुभ,
रमे राम जग में परमेश्वर।
आकृष्ट करे कल्याण कृष्ण
अवतरित अनन्त सत्य सर्वेश्वर।

★ श्री देवनारायण भारद्वाज

लखनऊ—रविवार १२ जनवरी, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि सम्वत् १,९७,२९,४९,०६९

आर्यसमाज इस समय एक कटकाकीर्ण स्थिति से गुजर रहा है। वैसे देखा जाय तो आर्यसमाज का समस्त इतिहास ही कटकमय है। सुधार के पथ पर चलना और चलाना दोनों कटक मय है। पग पग पर कांटे चुभते हैं और यह निश्चित है कि जब कांटा चुभता है तो पीड़ा होती है। परमार्थ का पथ सदैव कटकमय रहा है, और इसका अनुसरण करने वालों को अपने जीवनों की आहुतियां देनी पड़ी है। जिनका सुधार किया जा रहा है, उन प्रानियों को बहकाने वाले स्वार्थियों की कमी नहीं होती, और जब स्वार्थ परस्पर टकराते हैं तो सघर्ष अनिवार्य हो जाता है। सघर्ष में विजयशील होने के लिये कुटिल योजनायें बनती हैं और सुधार करने वाले साधुओं के जीवन नाश के लिये उन्हें कभी विषपान कराया जाता है कभी सूली पर लटकाया जाता है, कभी छुरे मारे जाते हैं, कभी गोली का निशाना बनाया जाता है। सुधारक का समस्त जीवन निरन्तर बलिदान के दांव पर लगा रहता है। वह सरल साधु प्राणों की कतई चिन्ता न करते हुए परमार्थ के कटकमय पथ पर बढ़ता चला जाता है और अपने ध्येय की पूर्ति के लिये सर्वस्व अर्पित कर देता है।

ऐसे बलिदान व्यर्थ नहीं जाते। प्रत्येक परमार्थी का बलिदान रग लाता है। समाज राष्ट्र और धर्म के लिए सर्वस्व अर्पित करने वाले अमर हो जाते हैं। उनके भौतिक देह भले ही नष्ट हो जाते हैं, किन्तु वे नाम से अमर हो जाते हैं। उनके किए हुये सुपावन कृत्य युग-युगों तक मानवों के हृदय में जीवित रहकर शुभ और श्रेष्ठ कर्मों के लिये निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं। जो दूसरों के हृदय मे निवास करे उसे कोई कैसे मार सकता है, वह मरकर भी मानों जीवित रहता है।

इसलिए तप के मार्ग पर पहले भले ही शूल चुभते हों, किन्तु अन्त मे तो सुपावन सुरभित सुमनों की सुगन्धि मिलती है। दूसरी ओर जो व्यसनी और विलासी होते हैं, जो स्वार्थी और पापी होते हैं, वे भले ही जीवन मार्ग के ... पुष्पों की शैय्या पर सोवें,

# नमः सु ते निर्ऋते !

★

किन्तु अन्त मे पापो के कुपरिणाम को भोगने के लिये विवश होना पड़ता है। भोग-विलास मे रत व्यक्ति जिसे जीवन का आनन्द मानकर, उसमे नित्य रमण करते हैं, उसके अन्त मे कांटो की भयकर चुभन है।

यही कारण है कि विवेकशील व्यक्ति तप का कष्टप्रद मार्ग चुनते हैं जिसका अन्त सुखदायी है। ये अविवेकी जन हैं, जो पहले आराम और बाद मे दुःख प्राप्त करते हैं। यह स्थिति बिलकुल उसी प्रकार की है जैसे एक विद्यार्थी साल भर तो खेलकूद मे मौज उड़ाये किन्तु परीक्षा मे असफल होकर रोए और चिल्लाये। दूसरी ओर जो विद्यार्थी पहले कष्ट उठाकर अध्ययन करे और तत्पश्चात् परीक्षा मे उत्तीर्ण होकर प्रसन्न चित्त बने।

यह ससार परमात्मा की एक ऐसी ही अद्भुत शिक्षण शाला है। जैसे विद्यार्थी को शिक्षक वर्ष भर पढ़ाता है, डांटता है, डपटता है किन्तु परीक्षा भवन मे बैठा छात्र स्वतन्त्र होता है, चाहे जैसा लिखे या न लिखे, किन्तु परिणाम के लिये वह परतन्त्र है। निरीक्षक निरीक्षण करता है, परीक्षक परीक्षण करता है, सर्वान्तर्यामी और सर्व नियन्ता परमात्मा भी शिक्षक है, निरीक्षक है और परीक्षक है। मानव कृत शिक्षाओं मे, निरीक्षण और परीक्षण मे भले ही अनियमता हो, अधर्म हो किन्तु सर्वेश्वर के किसी कार्य मे कोई त्रुटि नहीं होती। सद् शिक्षाएं वह देता है, पूरा निरीक्षण करता है और न्यायकारी परीक्षक सर्वोचित न्याय करता है।

परमेश्वर की शिक्षण शाला मे पठित आर्य्य जन जब अन्तर ध्वनि से प्रेरित होकर परमार्थ के पथ पर आगे बढ़े तो सर्वतः कण्टक पीड़ित हुए। सत्य मार्ग पर बढ़ते हुये वे शहीद हुए। उनकी जीवनाहुति व्यर्थ नहीं गई। एक से अनेकत्व की उत्पत्ति हुई और बलिदानों की परम्परा ने आर्य्यसमाज का नाम उज्ज्वल कर दिया। सर्वाङ्गीण उन्नति के लिये समाज के विकास क्षेत्र के द्वार-चारों दिशाओं और चारों उपदिशाओं में खुल गये और ऐसा प्रतीत होने लगा कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की सुसाध शीघ्र ही सफल होगी।

परन्तु परमेश्वर की लीला बड़ी विचित्र होती है। वह साधकों की कठोर से कठोर परीक्षा लेता है और प्रभु की परीक्षा में वही उत्तीर्ण होता है जो १०० मे से १०० अङ्क प्राप्त करता है। आर्य जन भी आज ऐसी ही कठोर परीक्षा की अवस्था मे हैं। जब धन वैभव बढ़ जाता है तो प्रमाद व अहकार आ घेरते हैं। लोभ व मोह के लोहमय पाश मे व्यक्ति जकड जाता है, वह पथभ्रष्ट होकर कुमार्गी हो जाता है और अन्त मे यश कीर्ति वैभव खोकर दीन हीन अवस्था को प्राप्त हो जाता है। आर्यावर्त्त का इतिहास इस बात का जीता जागता प्रमाण है कि जिन आर्यों ने कभी चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किये थे, वे सहस्रों वर्ष तक दासता के बन्धन में जकड़े रहे और आज भी अपनी दीन हीन अवस्था से वे उन्मुक्त नहीं हो पाए हैं।

आर्य समाज के प्रारम्भिककाल में हमारा सघर्ष दूसरे मत मतान्तरो से था, और हमारा समस्त तप उसके लिये था। हम थोड़े होते हुए भी सगठित थे। आज भी परिस्थिति वैसी ही है, किन्तु बाह्य मोर्चों के साथ हमे भीतरी मोर्चों पर भी सघर्ष करना पड़ रहा है। हमारे भीतर जो अधार्मिक अनैतिक और स्वार्थी तत्व प्रविष्ट हो गये हैं जो वास्तव मे अनार्य हैं, किन्तु जिन्होंने आर्यत्व का बाह्य चोला पहन रखा है और जिन्होंने भीतर के सघर्षों की भरमार कर रखी है, हमे उनसे भी जूझना पड़ रहा है।

भीरु हृदय वाले भले ही भीतर व बाहर इन भयङ्कर विपत्तियों के कारण भयभीत होते हैं। किन्तु शूरवीर सच्चे आर्य वेद के शब्दों मे इस भङ्कूकर आपदा को परमेश्वर का वरदान मानते हैं। वीर की परीक्षा ही रण क्षेत्र में होती है, और वह भी जबकि उसे सब ओर लड़ना पड़े। खोटे खरे की पहचान का समय यही है। कौन है जो "नमः सुते निर्ऋते" कह कर भयावह विपत्ति का सुस्वागत करता है और कौन है जो "तिग्मते जोऽयस्मय विचृता बन्धमेतम्" जो तीक्ष्ण तेज को धारण कर इस लोहमय बन्धन को काट फेंके, तोड़ सके। विशुद्ध आर्य ही (यमेन यम्या) यम और यमी बनकर सयमी और तितिक्षी बनकर (स विदाना) परमेश्वर का सगतिकरण करते हुए (उत् तमे नाके) उच्चतम आनन्द धाम पर (अधि रोहम) चढ़ते हुए, इस सुपावन कार्य को सक्षम होकर, सर्वस्व दान देकर कर सकेंगे।

बलिदानों की इस पावन सेज पर देखें कौन आर्य है, जो सर्वस्व लुटाकर अपना सुपावन जीवन भेंट चढ़ाने के लिए आगे आता है, और अमरत्व को प्राप्त करने व ऋषि ऋण को चुकाने के लि[ए] भयङ्कर विपत्तियों का सुस्वागत क[र] उन्हे नमस्ते करता है ?

★

## इन्द्र इव विजेष कृत

अभी कुछ दिन पूर्व इसराईल छापामारों ने बेरुत के वायु स्थल प[र] खड़े जिन १३ अरब विमानों को ध्वस्त कर दिया था उसकी सर्वत्र निन्दा [की] गई है। सुरक्षा परिषद ने भी इस कृ[त्य] की घोर भर्तस्ना की गई है। कह[ा] जाता है कि लेबनान की राजधानी बेरु[त] पर इस राईल के दो छापामार हेलि[-]काप्टर सीधे वायु स्थल पर पहुंचे औ[र] सीधे बमबारी करके कुछ ही क्षणों [में] २५ करोड़ रुपये की क्षति पहुंचाक[र] इस राईल भाग गये। लेबनान अधिकारियों को न सोचने समझने [का] और नहीं कोई रक्षात्मक कार्य कर[ने] का कोई अवसर मिल पाया। वे हा[थ] पर हाथ मलते रह गए और पलक झ[प]कते ही यह सब काण्ड हो गया।

इस साहस पूर्ण आक्रमण [का] कारण जो इस राईल ने घोषित कि[या] है वह यह है कि यूनान की राजधा[नी] एथन्स मे खड़े एक इसराईली विमा[न] को अरब छापेमारों ने ध्वस्त कर दि[या] था। उसके प्रति शोध मे इसराईल [ने] १३ विमान फूंक डाले। सराहनीय बा[त] यह है कि बेरुत के वायु स्थल पर अ[न्य] देशों के भी विमान खड़े थे परन्तु उ[न्हें] कोई क्षति नहीं पहुंची। केवल अर[ब] देशों के विमान ही नष्ट किये गये।

रण चातुरी का क्या कमाल दिखा[या] है इसराईल ने। इसराईल के ती[व्र] आलोचक भी एक बात को स्वीका[र] करते हैं, और वह है यहूदियों का अप[रिमित] साहस। कहां समस्त अरब दे[श] इसराईल को दबाने की योजना बना रहे थे, और ससार के मानचित्र [से] उसका नामोनिशान तक मिटाने [को] उद्यत थे और कहां एकाकी इसराईल [ने] जो छोटा-सा देश है और सब ओर [से] अरब देशों से घिरा है, एक दर्जन अर[ब] देशों का नाक मे दम कर रखा है। ज[ब] ये अरब देश उस छोटे से देश को ह[ड़पने] की योजना बना रहे थे, तो इसर[ाईल ने] उसके पूर्व वह रण नीति [का] प्रदर्शन किया कि ससार[...] राष्ट्र मुख में उङ्गली द[बा ...] उसने समस्त अरब

ओमन्नमस्ते !

आर्यमित्र के अगस्त के अङ्कों में आपने कुछ पहेलियों का क्रम प्रारम्भ किया था, अब उसका क्रम भी स्थगित हो गया है और गत पहेलियों के उत्तरों का प्रकाशन भी नहीं हुआ है।

कृपया पिछली पहेलियों के जो उत्तर प्राप्त हुए हों उनका प्रकाशन करने का कष्ट करें।

अच्छा हो भविष्य में भी इन पहेलियों का स्तम्भ स्थायी रूप से चालू रहे, इससे सबसे बड़ा लाभ जो होता है वह यह है कि पाठकों की रुचि स्वाध्याय की ओर बढ़कर वेद-प्रचार में सहायता मिलती है।

आशा है कि आप मेरे सुझाव पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

—सतीप्रसाद शर्मा 'जिज्ञासु'
तालग्राम, फर्रुखाबाद

+

पहेलियों का क्रम हमें इसलिए स्थगित करना पड़ा था कि आर्यजगत् की ओर से उसमें कोई रुचि नहीं ली गई थी। हमने ये पहेलियां 'वनिता विवेक' और 'आर्य कुमार सभा' स्तम्भों के अन्तर्गत महिलाओं और बच्चों के लिये इस दृष्टिकोण से दी थी कि वैदिक साहित्य के प्रति उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़े। हमारी हार्दिक कामना थी कि हमारे गुरुकुलों में पढ़ने वाले ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां उसमें विशेष रुचि लें। हमारे इस ओर ध्यान आकृष्ट करने पर भी जिस घोर उदासीनता का परिचय दिया गया है, वह वास्तव में बड़ा खेदजनक है। केवल आपका ही पत्र प्राप्त हुआ है, अन्यथा पहेलियों के क्रम बन्द हो जाने पर किसी ने उसको अनुभव तक नहीं किया।

केवल महर्षि दयानन्द का जयघोष न करके यदि हम वास्तव में महर्षि के बताए वेद मार्ग पर चलें तो हमारी साध शीघ्र सिद्ध हो सकती है। वेद के पुनीत मार्ग पर चलने के लिए वेद ज्ञान होना अत्यावश्यक है। जब हम श्रुति और पवित्र वेद ज्ञान की भी अवहेलना कर रहे हैं तो आत्मानुभूत वेद ज्ञान की प्राप्ति तो कोसों दूर है।

आपके भावों का स्वागत करते हुए हम आर्यमित्र के आगामी अङ्क से पुनः पहेली स्तम्भ चालू कर रहे हैं, वेद प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस स्तम्भ में रुचि लेकर हमें उनके उत्तर भिजवाएँ ताकि इस रोचक स्वाध्याय प्रेरक स्तम्भ को स्थायी किया जा सके।

—'वसन्त'

परास्त किया, और विजयी हुआ। आज भी अरब देशों की भूमि उसके अधिकार में है, और वह अरब देशों की प्रत्येक ईंट का जवाब नुकीले पत्थर से दे रहा है।

इसराईल की यह वीरता, यह साहस हमारे लिये पथ प्रदर्शन करता है। वीर जातियां ही संसार में जीवित रहती हैं, और वीर ही वसुन्धरा का भोग करते हैं। हमारी सीमाओं पर खड़े दो शत्रुओं को भी यदि हम ऐसी ही वीरता की भाषा में उनके द्वारा किये हुए आक्रमणों का प्रत्युत्तर दें तो उनके होश तुरन्त ठिकाने आ जायें। असुरों की असुरता को दूर करने का यही रामबाण है। यह अधर्म नहीं धर्म है। यह तो धर्मानुसार असुरता के प्रति यथायोग्य व्यवहार है। हम किसी को पहले छेड़ें नहीं, किन्तु कोई यदि हमें छेड़े तो हम उसे कदापि छोड़ें नहीं।

●

## दक्षतातिम् कृणोमि

भारत में इस समय रेलों का जाल बिछा हुआ है, और प्रतिदिन करोड़ों व्यक्ति इन से यात्रा करते हैं। प्रतिवर्ष रेलों के किराये बढ़ते जाते हैं, किन्तु यात्रियों को कितनी सुविधा होती है, और उसमें क्या वृद्धि अथवा न्यूनता प्रतिवर्ष होती है, इसका प्रत्यक्ष चित्र इन पंक्तियों के पढ़ते ही पाठकों के सम्मुख खिंच जायेगा। तृतीय श्रेणी में भेड़ बकरियों की भांति कारागृह के समान बन्दी की अवस्था में जिन्हें यात्रा करनी पड़ती है, यह बात उनके दिल से पूछिए क्योंकि पैसे के बल से आरामकूल और प्रथम श्रेणी के यात्रियों को यह दयनीय अनुभूति नहीं हो सकती। परन्तु एक असहनीय व्यथा की अनुभूति सब यात्रियों को होती है, और वह है रेल-यात्रा में रेल गाड़ियों का विलम्ब से आना और पहुंचना। यह रोग प्रति वर्ष बढ़ता हुआ ही दृष्टिगोचर होता है और कुछ गाड़ियां तो सदैव ही लेट आती हैं। उदाहरण के लिये सेंट्रल रेलवे की जो गाड़ी झांसी से मु[illegible]पुर के लिये चलती है वह झांसी से कानपुर तक तो बहुधा समय से आ जाती है, किन्तु कानपुर से लखनऊ तक ४८ मील की यात्रा में उसे ५, ६ घण्टे लगते हैं। इस कष्टप्रद यात्रा की अनुभूति जिन्हें होती है, उनमें समस्त श्रेणियों के यात्री सम्मिलित होते हैं।

एक ओर भौतिक प्रगति की हम अपने देश में यह दुर्दशा देख रहे हैं, दूसरी ओर उन विदेशों की, जिनका हम हर बात में अन्धानुकरण करते हैं, भौतिकता की उन्नति में दक्षता के दर्शन करते हैं। अभी समाचार पत्रों में अमरीका के राकेट अपोलो-८ की चर्चा छपी है, जिसने चांद की परिक्रमा की है। यह राकेट ६ दिन अन्तरिक्ष में रहा और उसने ५ लाख मील से अधिक की यात्रा की। राकेट की यात्रा में अनेक कठिनाइयाँ थीं। मार्ग नया था। दिशा और गति में भी परिवर्तन होते थे। चन्द्रमा के जिस मार्ग की ओर यह अन्तरिक्ष यान गया वहां का कोई अनुभव, उन ३ अन्तरिक्ष यात्रियों को नहीं था। न किसी को चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति का बोध था और न किसी को वहां के वायु मण्डल व तापमान की कोई जानकारी थी। इन समस्त कठिनाइयों के पश्चात् भी वह अन्तरिक्ष यान लाखों मील की साहसपूर्ण यात्रा करके पृथिवी पर निर्धारित समय से एक मिनट पूर्व वापस पहुंच गया। दक्षता का यह कमाल है। हमारी गाड़ियां जो लेट होती हैं उनके मूल में अव्यवस्था है और अनियमितताएं हैं जिनका समाधान किसी कमीशन, जाँच समिति अथवा उपसमिति के पास नहीं है, विदेशों में भी रेलगाड़ियां चलती हैं पर वहाँ न तो यात्री निर्धारित संख्या से अधिक डब्बों में भरे जाते हैं और न ही नित्यप्रति गाड़ियों के पहुंचने में ऐसा घोर विलम्ब होता है। दक्षता के लिये न तो बाहिरी और न [illegible] विशेषज्ञ की नहीं होता। सहस्रों रुपये प्रतिमास प्राप्त करने वाले अधिकारी जब तक सचेत होकर अपनी दृढ़ता और श्रम का परिचय नहीं देंगे तो दुरावस्था का कभी कोई सुधार नहीं होगा।

+

# आइये, हम भी चन्द्र लोक की यात्रा करें

## वेद मन्त्र-

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथ स्त्रिर्वश्विना दिवा ।।

[ऋ० १।३४।२]

भावार्थ—( अश्विना ) हे अश्विशक्तियो ! ( मधु वाहने रथे ) मधु वाहन रथ में, सुसज्जित वायुयान में, अन्य विमान में ( त्रयः पवयः ) तीन कला चक्र वाले (त्रयस्कम्भासः) तीन खम्भे वाले ( सोमस्य वेनाम् अनु ) सोम युक्त अर्थात् चन्द्रमा की यात्रा की ओर ( आरभे ) आरम्भ करने योग्य गमन आगमन में ( विश्वे इत् विदुः ) सब निश्चयपूर्वक बोध करें ( त्रि नक्तम उ त्रि दिवा याथः ) तीन रात और तीन में ले जा सकते हो।

चन्द्रमा सदैव से मनुष्य के आकर्षण का केन्द्र रहा है। चन्द्रमा में सोम है, चन्द्रमा सरस है, आह्लादित करने वाला है केवल मनुष्य को ही नहीं, अन्य चेतन प्राणियों को ही नहीं वरन् प्रकृति को सुशोभित और तरङ्गित करने वाला है। जिस चन्द्रमा के कलानुसार घटने और बढ़ने से सागरों में भी ज्वार भाटा आ जाता हो वहाँ मनुष्य का तो कहना ही क्या है। बालक राम ने अपनी माता कौशल्या से इसीलिए चन्द्रमा खिलौने की मांग की थी। बालक राम तो जल में चन्द्रमा की प्रतिबिंबता से भले ही प्रसन्न हो गया हो किन्तु परिपक्व बुद्धि वाले मानव को भला इससे कैसे सन्तोष हो सकता था। रामायण में चर्चा आती है कि चन्द्रमा रावण का दास था, उसे जल पिलाता था और उसके रथ को खींचता था। कभी इसको कोरी गप्प समझा गया हो परन्तु इसके पीछे भी एक वैज्ञानिक मान्यता थी। चन्द्रमा से सब वनस्पतियों में रस बनता है। चन्द्रमा के कारण ही वेदनधारियों के स्तनों में दूध बनकर आता है। भौतिक वादी रावण ने विज्ञान के आश्रित चन्द्रकान्त शीशे तैयार करवाये थे जिनसे छन छन कर चन्द्रमा का जल तैयार होता था।

हमने कितने ही कथानक चन्द्रलोक की सैर के भी पढ़े हैं। देव गण और ऋषि विमानों पर एक लोक से दूसरे लोक तक आते जाते थे। आज का विज्ञान जब पुनः उन घटनाओं को सत्य-

[ आनन्ददाता परमात्मा की समस्त रचनायें आनन्दमय हैं। सूर्य चन्द्र तारे धरतियां, वनस्पतियां, औषधियां आदि सब सरस हैं। परमेश्वर ने उत्कृष्ट प्राणी मानव को वह दिव्य सामर्थ्य प्रदान किया है कि वह प्रत्येक वस्तु का अपने भीतर दर्शन और मिलन कर सकता है। यह दर्शन और मिलन भौतिक नहीं वरन् आध्यात्मिक होगा। वह चन्द्र जिसकी शुभ ज्योत्स्ना जड़ चेतन को आह्लादित कर देती है और जिस पर भौतिक रूप से पहुंचने के लिये इस धरती का मानव प्रयत्नशील है, वह क्या है? "सुषुम्नः सूर्य रश्मि चन्द्रमा गन्धर्वः" सूर्य की जिस रश्मि को धारण करके चन्द्रमा गन्धर्व बन जाता है, उसकी पूर्ण जानकारी किस भांति जानकारी करेंगी, ये सब आप जानना चाहते हैं तो वेद का पठन कीजिए। इस लेख में भूमिका रूप में थोड़ी सी जानकारी इसलिये कराई गई है कि विज्ञान की चकाचौंध से प्रभावित होने वाले, वेद की भी एक झांकी देख सकें। लेखक ]

रूप देने जा रहा है तो उसमें भले ही आज के संसार में रहने वाले मानवों को आश्चर्य होता हो, किन्तु वेदानुशीलन करने वालों के लिये यह कोई नूतन बात नहीं है जिसके प्रमाण स्वरूप ऊपर का वेद मन्त्र उद्धृत कर दिया गया है। वेद में ऐसे अनेक मन्त्र हैं जिनमें सूर्य की किरणों से और वायु के आश्रित चलने वाले रथों अर्थात् विमानों की चर्चा है। जब आज के वैज्ञानिक उस सीमा तक पहुंचेंगे तो सत्य विद्याओं के पुस्तक वेद को स्वीकार करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

आज अन्तरिक्ष को भेदकर जो अणु लगाया गया है, इसका वर्णन करते ही मनुष्य आश्चर्य चकित होता है। चन्द्रमा को देखने की जानने की और वहां से कुछ प्राप्त करने की आकांक्षा मानवों में प्रबल हो रही है। अनेक कम्पनियाँ बन गई हैं और अनदेखे स्थानों का नाम करण भी कर दिया गया है। ऐसी परिस्थिति में साधारण व्यक्ति बड़ा हताश और निराश होता है, वह समझता है कि सम्भवतः चन्द्रलोक की यात्रा भी बड़े-बड़े धनियों के सौभाग्य में ही लिखी है, परन्तु जिस चन्द्रमा की भौतिक यात्रा में तीन दिन तीन रात लगते हैं, वह मनुष्य को तीन क्षण में भी

## वैदिक अनुसन्धान

यान अन्य ग्रहों और उपग्रहों के चक्कर लगा रहे हैं उनके मूल में यही वेद ज्ञान है। आधुनिक राकेट में भी तीन खण्ड होते हैं और प्रत्येक खण्ड विशेष यन्त्रों से सुसज्जित होता है। वास्तविकता यह है कि वेद में समस्त विद्याओं और विज्ञानों के मौलिक सिद्धान्त भरे पड़े हैं। अश्वी नामक दो वैज्ञानिक शक्तियों का अद्भुत वर्णन अनेक सूक्तों में किया गया है।

अभी अमरीका का 'अपोलो ८' नामक अन्तरिक्ष यान चन्द्रमा का चक्कर लगाकर वापस आया है जिसमें ३ अन्तरिक्ष यात्रियों ने ६ दिन की अभूतपूर्व यात्रा की है। विशालकाय प्रक्षेपक राकेट सेटर्न—५ के विषय में कहा गया है, कि वह ३६ मंजिली इमारत के समान ३६३ फुट ऊंचाई में लम्बा है, और उसका वजन ३ हजार टन है। इस चन्द्र यात्रा में कितना अधिक धन

हो सकती है। कैसे? एक वैज्ञानिक रहस्य है जिसको समझिये और यदि इच्छा हो तो वैसा प्रयत्न कीजिये।

इस संसार में एक समानाकर्षण शक्ति का नियम काम करता है। स्थूल को स्थूल खींचता है और सूक्ष्म को सूक्ष्म। एक गेंद जब ऊपर फेंकी जाती है तो उस स्थूल को धरती की स्थूल आकर्षण शक्ति खींच लेती है। वृक्ष से फल टूटता है तो सीधा नीचे आता है। जो वस्तु जितनी भारी होती है उसी अनुपात से नीचे खींचने में शीघ्रता होती है। ठीक इसके विपरीत हल्की वस्तु ऊपर से नीचे विलम्ब से आती है, जैसे कागज का पतला टुकड़ा। जब हम भौतिक यज्ञ करते हैं तो प्रज्वलित समिधाओं, घृत व सामग्री के सूक्ष्म तत्व धूम्र अथवा वाष्पाकार में ऊपर जाते हैं। क्योंकि सूक्ष्म को सूक्ष्म खींचता है।

आपने आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को देखा होगा। वे कैसे उड़ते हैं। धरती की आकर्षक शक्ति के विरुद्ध वे अपने पंखों से कैसे काम लेते हैं? उड़ते हुए पक्षी को यदि बाण से अथवा गोली से विक्षत कर दिया जाय तो वह किस प्रकार तुरन्त

★ श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा उप-मन्त्री

नीचे आ जाता है। इससे क्या सिद्ध होता है। यही न कि चेतन तत्व जब तक शरीर में है तब तक पंखों के सहारे कोई भी चील या कबूतर आकर्षण शक्ति के विरुद्ध कार्य कर सकते हैं— कब तक जब तक कि स्थूल शरीर को पंखों की अपेक्षा हल्का करने का सामर्थ्य वान उस जीव में है।

किन्तु मनुष्य तो पक्षी की भांति भौतिक रूप में स्थूल को लेकर उड़ नहीं सकता। वायुयान या राकेट से यात्रा सुगम और सुलभ सबको नहीं हो सकती तो फिर वह क्या करे? कहाँ जाए? क्या स्वप्न में अपनी तृप्ति करें। जी नहीं। एक उपाय और भी है जिसे समाधि को संज्ञा दी गई है। मानव का एक स्थूल शरीर तो है ही, किन्तु उसके भीतर एक सूक्ष्म शरीर और भी है। जिसका अनुभव कभी कभी स्वप्न में भी होता है। स्वप्न में तो बिना पंख लगे भी मानव अपने स्थूलाकार जैसे शरीर को उड़ते हुये देख लिया करता है जबकि स्थूल तो चारपाई पर या धरती पर पड़ा होता है। क्या स्वप्न में शरीर जो दिखाई देता है वह सूक्ष्म नहीं है। जिसको अन्तरिक्ष अपनी आकर्षण शक्ति के नियमानुसार अपनी ओर खींचता है। इस नियमानुसार क्या हम अपने सूक्ष्म शरीर से समाधि की अवस्था में चन्द्रलोक की यात्रा कर सकते हैं। यदि हाँ तो कैसे? समाधि का सूक्ष्म शरीर क्या स्वप्न शरीर से भी अपेक्षा कृत और सूक्ष्म होता है। समाधि कैसे लगाई जाय। चन्द्रलोक की यात्रा कैसे की जाये। विश्वाकाश में जो असंख्य आकाशीय गङ्गाएँ हैं, वहां की यात्राएँ कैसे की जाएं। भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता का रस जो नितान्त सरस है, उसका कैसे पान किया जाए। समाधि और स्वप्न के क्या भेद हैं? यदि जिज्ञासुओं की इस ओर अभिरुचि होगी और वे इन गूढ़ विषयों से परिचित होना चाहेंगे तो मैं आर्य्यमित्र के आगामी अङ्कों में वेद मन्त्रों के आधार पर उनकी चर्चाएँ करूँगा।

# गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव

## १४, १५, १६ फरवरी को होगा

समस्त आर्यजगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का ६२ वां वार्षिक महोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर दिनांक १४, १५, १६ फरवरी ६९ को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संस्कृत सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा-सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा-सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन आदि आदि सम्मेलन सम्पन्न होंगे। १६ फरवरी ६९ को रविवार के दिन नवस्नातकों का समावर्तन संस्कार तथा दीक्षान्त समारोह भी होगा। दीक्षान्त भाषण के लिये भारत सरकार के उपप्रधान मन्त्री माननीय श्री मुरार जी देसाई से प्रार्थना की गई है। उनके पधारने की पूर्ण सम्भावना है शिक्षा-सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री माननीय डा० श्री त्रिगुणसेन जी की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये माननीय श्री इन्द्रकुमार जी गुजराल संचार मन्त्री भारत सरकार के आने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त देश के अग्रगण्य मान्य नेता तथा आर्य सन्यासी विद्वान् व्याख्याता तथा महोपदेशक भी पधार रहे हैं।

इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। जो महानुभाव अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश नियम व फार्म मंगा लें। जो सज्जन पुस्तक आदि की दुकान लाना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय को सूचित कर दें।

आशा है कि आर्यजनता समुपस्थित होकर व्याख्यानों तथा उपदेशों से लाभान्वित हो सकेगी।

—नरदेव स्नातक एम०पी०
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

# वेद और विश्व एकता

—श्री अनूपसिंह
दयानन्द भवन (मुरादाबाद)

क्रान्तदर्शी दयानन्द जी महाराज ने अपनी अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है—"जैसे माता-पिता अपने सन्तानों पर कृपा दृष्टि कर उन्नति चाहते हैं, वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया, जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञान रूप सूर्य को प्राप्त होकर आत्मानन्द में रहें, और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें।" सब मनुष्यों की लौकिक और पारलौकिक उन्नति के लिये सृष्टि की आदि में परम पिता परमात्मा ने वेद का ज्ञान कराया था। वेद की कुछ विशेषतायें हैं जो अधोलिखित हैं—

[१] वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में होता है। [२] वेद का ज्ञान पूर्ण होता है। [३] वेद का ज्ञान सार्वभौम होता है, अत उसमें किसी देश विशेष का भूगोल एवं इतिहास नहीं होता। [४] वेद का ज्ञान सृष्टि नियमों के विरुद्ध नहीं होता। चौथे दिन सूर्य का होना, कुमारी के बच्चा पैदा होना आदि असंगत बातें उसमें नहीं होतीं। [५] वेद तर्क और बुद्धिवाद का स्वागत करता है। [६] वेद का ज्ञान सर्वथा निर्भ्रान्त होता है, और सभी मनुष्यों के कल्याण और भलाई के लिये होता है।

इस्लाम मजहब की पुस्तक 'कुरआन' में काफिर को कत्ल करने की आज्ञा दी गई है। काफिर उसको कहते हैं, जो इस्लाम को नहीं मानता। कुरआन के शब्द हैं—"अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं। मार डालो तुम उनको जहां पाओ कत्ल से कुफ्र बुरा है यहां तक उनसे लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का। उन्होंने जितनी जियादती करी तुम पर उतनी ही तुम उनके साथ करो। म० १। सि० २। सू० २। आ० १७४।१७५।१७६।१७८।१७९॥ जिस पुस्तक में कत्ल करने की आज्ञा दी जाती है, क्या उसके अनुसार विश्व एकता सम्भव है? कदापि नहीं।

ईसाई मत की पुस्तक 'बाइबल' ने भी मनुष्यों के मार डालने की शिक्षा दी है।' यदि तुम्हारा भाई तुम्हारी ही मां का पुत्र या तुम्हारी पुत्री या तुम्हारी ही प्रिय स्त्री या तुम्हारा प्राण प्रिय मित्र यह कहते हुए तुम्हें गुप्त रूप से बहकावे कि चलो! हम दूसरे देवताओं की पूजा करें। ऐसे देवताओं कि जिन्हें तुम और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे, किन्हीं भी उन देवताओं की जो तुम्हारे आस-पास की जातियों के हों, चाहे वे नजदीक रहें, चाहे वे पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक कहीं भी क्यों न हों तुम उनकी मत मानना और न उसकी कोई बात सुनना। उस पर दया न करना। न उसके दुष्कर्म छिपाना प्रत्युत उसे मृत्यु दण्ड के लिये सौंप देना। उसे मार डालने के लिये सबसे पहले तुम्हारा ही हाथ उठे। पत्थरों से मार कर उसे मृत्यु दण्ड दिया जावे" [डियुट्रॉनामी ३।६-१०] शायद तभी तो प्रसिद्ध विद्वान् Denn farrar ने लिखा था, बाइबल जंगली किताब है, जंगली युग में जंगली मनुष्यों के लिये लिखी गयी।" अतः 'बाइबल' की शिक्षा द्वारा भी विश्व एकता सम्भव नहीं।

पाठक गण! आप ऊपर वर्णित इस्लाम और ईसाई मत की पुस्तकों की शिक्षा पढ़ ही चुके। आइए! अब जरा वेद की शिक्षा पर भी नजर डालिए। यजुर्वेद के ३६ अध्याय का १८ वां मन्त्र है—

दृते दृं्ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा,
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे॥

अर्थात् हे जगदीश्वर! जिससे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से मुझको देखें मैं मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं। इस विषय में हमको दृढ़ कीजिये। कितनी ऊंची शिक्षा है। मित्र के सदृश सबका सदा सत्कार करें तथा किसी से भी कभी द्वेष न करें।

साम्यवाद से भी विश्व एकता सम्भव नहीं क्योंकि यह पूंजीपति और मजदूरों के बीच संघर्ष को लाद खड़ा करता है। जहां संघर्ष है वहां एकता नामुमकिन है। हां! वैदिक साम्यवाद से एकता सम्भव है। वेद भगवान् कहता है—

'अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो-
वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः
सुदिना मरुद्भ्यः॥
[ऋग्वेद ५।६०।५]

अर्थात् मनुष्यों तुम में न कोई बड़ा और न छोटा। तुम सब परस्पर मानव बन्धु हो। सब मिलकर मानव और मानवता के लिए सौभाग्य का निष्पादन करो। एक परम प्रभु तुम्हारा उपास्य पिता है और प्रकृति माता तुम्हारी सब की सम्पोषिका है।

कोई कहता है बुद्ध के मार्ग पर चलो, कोई कहता है 'ईसा' के मार्ग पर चलो। कोई कहता है मोहम्मद साहब के मार्ग पर चलो। कोई कहता है कि गांधी के मार्ग पर चलो। कोई कहता है जवाहर के मार्ग पर चलो। यह संसार किस-किस के मार्ग पर चलें और क्यों? वेद किसी व्यक्ति विशेष के मार्ग का अनुसरण करने के लिये नहीं कहता। वेद भगवान् कहता है—

'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्'

अर्थात् सौभाग्य ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए प्रभो! हमें सुपथ पर चला।

कोई ग्रन्थ कहता है बौद्ध बनो। कोई ग्रन्थ कहता है जैन बनो। कोई ग्रन्थ कहता है मुसलमान बनो। कोई ग्रन्थ कहता है ईसाई बनो। वेद कहता है—'मनुर्भव जनया दैव्यं' अर्थात् मनुष्य बन और दिव्य मानवता का परिचय दे।

वेद जहां राष्ट्रियता का प्रतिपादन 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' द्वारा करता है, वहां अन्तर्राष्ट्रियता का आदेश भी देता है—

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं,
नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्॥

अर्थात् अनेक भाषाओं के बोलने वाले तथा अनेक प्रकार के कर्मों को

[ शेष पृष्ठ १३ पर ]

# भाषा विज्ञान को आर्यसमाज की देन

ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषदों के कतिपय अंश, प्रातिशाख्य तथा उनकी टीकायें, भरतनाट्यशास्त्र और उसके व्याख्या ग्रंथ, तथा पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के व्याकरण ग्रंथ मुख्य हैं, जिनमें भाषा शास्त्र विषयक बातें मिलती हैं। स्वामी दयानन्द का उपरिनिर्दिष्ट संस्कृत वाङ्मय की कतिपय शाखाओं पर पूर्ण अधिकार तथा वेद और वेद विषयक शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, शाखा, ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक आदि का उनका अध्ययन तलस्पर्शी और व्यापक था। स्वामी दयानन्द ने पूना में दिये गये अपने एक व्याख्यान में कुछ ऐसी बातें कहीं जिन्हे भाषा विज्ञान का आधार स्तम्भ कहा जा सकता है, तथा जिन्हें सूत्र रूप में ग्रहण कर अध्ययन और अनुसंधान के विस्तीर्ण प्रदेश में प्रवेश किया जा सकता है। अपने वेद विषयक पांचवें व्याख्यान में स्वामी जी ने कहा, 'संस्कृत भाषा सारी भाषाओं का मूल है। अंग्रेजी सदृश भाषायें उससे परम्परा से उत्पन्न हुई हैं। एक भाषा दूसरी भाषा का अपभ्रंश होकर उत्पन्न होती हैं। 'वय' इस संस्कृत शब्द में के 'यम्' को सम्प्रा होकर वी (We) यह शब्द उत्पन्न हुआ। उसी तरह 'पितर' से 'पेतर' और फादर' 'यूयम' से 'यू' (You) और आदिम से 'आदम' (Adam) इत्यादि। ऐसे ऐसे अपभ्रंश कुछ नियमों के अनुकूल होते हैं, और कुछ अपभ्रंश यथेच्छाचार से भी होते हैं।'' इसी प्रकार के विचार स्वामी जी ने (१) उपदेश मंजरी पाँचवां व्याख्यान पृष्ठ ५६ (आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली)

उपर्युक्त उद्धरण का विवेचन करने से पता चलता है कि स्वामी जी संस्कृत को सारी भाषाओं का मूल मानते थे। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक इस तथ्य को इस रूप में स्वीकार न कर इतना ही मानते हैं कि भारत यूरोपीय परिवार की भाषाओं का मूल उद्गम एक प्राक् कालीन भाषा है जो आज लुप्त हो गई है। संस्कृत, फारसी, लैटिन और ग्रीक कालीन आदि भाषायें इसी की पुत्रियाँ हैं। इस प्रकार वे संस्कृत भाषा को इस परिवार की अन्य भाषाओं की जननी न मानकर बहिन मानते हैं। स्वामी जी की द्वितीय उपपत्ति सर्वथा सत्य है कि अंग्रेजी तथा अन्य भाषायें उस संस्कृत के परम्परा प्राप्त विकृत रूप ही हैं। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक इसे विकृति की उपेक्षा विकास कहना अधिक पसन्द करते हैं। जो उदाहरण इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए स्वामी जी ने दिये हैं वे ही अधिकांश में परवर्ती भाषा वैज्ञानिकों द्वारा भी दिये गये हैं। संस्कृत पितृ ग्रीक Pater तथा अंग्रेजी Father की सदृशता तथा तज्जन्य मूलकता का उदाहरण सर्व प्रसिद्ध है। स्वामी जी का कथन भी नितान्त सत्य है कि इस प्रकार के भाषा सम्बन्धी परिवर्तन कभी-कभी नियमों के अनुकूल और कभी-कभी प्रतिकूल भी होते हैं। भाषा विषयक परिवर्तनों के कुछ नियम जर्मनी के ग्रिम आदि भाषा वैज्ञानिकों ने बनाये भी थे, परन्तु वे एकदेशी ही सिद्ध हुये वर्नर और ग्रासमन आदि उत्तरवर्ती भाषा वैज्ञानिकों ने उन नियमों को सुधारा और उनके ये संशोधन तथा परिवर्धन यह सिद्ध करते हैं कि इन नियमों को सर्वथा निर्दोष नहीं कहा जा सकता।

पाश्चात्य सरणि पर भाषा विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले आर्यसमाजी विद्वानों में डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा०

बाबूराम सक्सेना तथा डा० मंगलदेव शास्त्री प्रमुख हैं। डा धीरेन्द्र वर्मा का मुख्य कार्य ब्रजबोली तथा हिन्दी भाषा के विकास से सम्बन्ध रखता है। डा० बाबूराम सक्सेना ने 'सामान्य भाषा विज्ञान' लिखकर भाषा विज्ञान का परिचयात्मक निरूपण किया है। भाषा विज्ञान जैसे नीरस और क्लिष्ट विषय का सरसता पूर्वक प्रतिपादन इस ग्रंथ की विशेषता है। सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान तथा वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० मंगलदेव शास्त्री ने 'तुलनात्मक भाषा शास्त्र अथवा भाषा विज्ञान' लिखकर इस शास्त्र को निश्चय ही समृद्ध किया है। तुलनात्मक भाषा विज्ञान पर हिन्दी में यह प्रथम पुस्तक है जो अत्यन्त खोजपूर्ण शैली में लिखी गई है।

पाश्चात्य प्रणाली का अनुसरण न करते हुये स्वतंत्र चिंतनपूर्वक तथा संस्कृत एवं साहित्य की परम्पराओं को ध्यान में रखकर भारतीय विचारधारा का पोषण करते हुये सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी वैदिक गवेषक पं० भगवद्दत्त ने 'भाषा का इतिहास' शीर्षक जो ग्रंथ लिखा है उसे भाषा विज्ञान के क्षेत्र में युगान्तरकारी परिवर्तन का सूचक समझना चाहिए। इस ग्रंथ की रचना मुख्यतया भाषा विज्ञान के भारतीय पक्ष को प्रतिपादित करने के लिए हुई है, इसलिये लेखक के विवेचन की मौलिकता नवीन स्थापनायें तथा नूतन सिद्धान्तों की उद्भावनायें इस शास्त्र के अध्येता के लिये विचार की नई सामग्री प्रस्तुत करती है। सर्व प्रथम लेखक ने भाषा की उत्पत्ति की समस्या को लिया है। एतद् विषयक सभी मतों को उद्धृत करते हुये लेखक ने परम्परागत वैदिक मत को सत्य सिद्ध किया है। लेखक के अनुसार यह विचार भ्रमपूर्ण है कि भाषा निरन्तर विकसित होती है। उसके मतानुसार संसार की आदिम भाषा जिसे वे 'अति भाषा' का नाम देते हैं अत्यधिक विकसित तथा पूर्ण थी। उसके अनन्तर भाषा ह्रास और संकोच की ओर बढ़ती है, अतः भाषा का विकास होता है, इस स्थापना को वे स्वीकार नहीं करते। अपने द्वितीय व्याख्यान में इन्होंने भाषा के निरन्तर ह्रास के मत को ही पुष्ट किया है। प्राचीन संस्कृत जो पाणिनि से पूर्व अत्यन्त विस्तृत और व्यापक थी। पाणिनीय व्याकरण द्वारा किसी सीमित और नियम बद्ध हो गई है, इसे लेखक ने प्रमाण पुरस्सर समझाया है। प्राचीन पाणिनि पूर्व के संस्कृत से प्रचलित संस्कृत में किस प्रकार धातुओं, धातुरूपों, नामरूपों लिंगों तथा वाक्य विन्यास में संकोच हुआ है। इसे भी लेखक ने स्पष्ट किया है। भाषागत परिवर्तन तथा सादृश्य के कारण परिवर्तन पर विचार करने के पश्चात लेखक पद और उसके स्वरूप पर विचार करता है, तत्पश्चात शब्दार्थ सम्बन्ध तथा अर्थ परिवर्तन (sementics) के विषय को भारतीय पद्धति के अनुसार प्रस्तुत करता है। वर्ण विमर्श के अन्तरगत लिपि और उच्चारण प्रक्रिया का विवेचन करते हुए लेखक उच्चारण विद्या में योरप को भारत का ऋणी घोषित करता है। उच्चारण विकारों अथवा ध्वनि विपर्यासों का अध्ययन करते हुए लेखक ने शतशः उदाहरण देते हुये निम्न नियम को त्रुटि पूर्ण सिद्ध किया है। दशवें व्याख्यान में लेखक अतिभाषा या आदि भाषा की नूतन स्थापना को प्रस्तुत करता है। लेखक के अनुसार वेद के शब्दों पर आधारित अथवा वेद पद बहुला जो लोक भाषा ब्रह्मा और सप्त ऋषियों द्वारा आदि मानव में व्यवहृत हुई वही मानव की एक मात्र आदि भाषा

—डा० भवानीलाल भारतीय
एम ए पी. एच. डी.

थी। इसे प्राचीन आचार्यों ने 'अति भाषा' भी कहा है। इस शब्द के प्रयोग में लेखक ने भरत के नाट्य शास्त्र (१७।२७, २८) का प्रमाण दिया है।

लेखक के मत में वेद पर आधारित इस अतिभाषा में वे सभी प्रयोग व्यवहृत होते थे, जिन्हें पाणिनि आदि वैयाकरणों ने केवल छान्दस प्रयोग माना है। उनके अनुसार इस अतिभाषा के नाम लिंग, वचन, नाम रूप, धातु, धातु रूप, धातु उपसर्ग सम्बन्ध, प्रत्यय, समास रूप, संधि रूप, वाक्य विन्यास, उदात्तादि स्वर, अर्थ और पर्याय इन चौदह विभिन्न वर्गों में से अनेक आधुनिक संस्कृत में लुप्त हो गये। अतिभाषा या आदि भाषा की स्थापना के साथ-साथ लेखक उस प्राक् भारतीय भाषा की कल्पना का भी खण्डन करता है। जिसकी सत्ता और अस्तित्व की घोषणा पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने पदे-पदे की है तथा किसी मनचले लेखक ने उसकी वर्णमाला को स्थिर करने का ही प्रयास नहीं किया, अपितु वो उसमें एक भेड़िये तथा घोड़े की कहानी भी लिख चुका था। लेखक को पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किये गये भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण पर भी आपत्ति है। उसके अनुसार सैमेटिक भाषायें आर्य भाषाओं से भिन्न परिवार की नहीं मानी जा सकतीं। ग्रन्थ के अन्तिम अध्याय में लेखक ने वेद वाक्, हिन्दी भाषा, ग्रीक भाषा, प्राकृत, दाक्षिणात्य वर्गीय भाषाओं, अपभ्रंश तथा हिन्दी और पंजाबी का पृथक् पृथक् विवेचन करते हुए उनके संस्कृत भाषा के साथ सम्बन्धों का विवेचन किया है। लेखक ने अपने मत को न केवल दृढ़ता के साथ-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# शीत ऋतु चर्या

आयुर्वेद के ग्रन्थों के अध्ययन करने से पता लगता है कि हर एक ऋतु में भोजन, रहन-सहन अर्थात् आहार-विहार एक-सा न होना चाहिये। साधारणतः हर ऋतु में हम कोई विशेष भेद नहीं समझते जहाँ तक आहार विहार का सम्बन्ध है। इसलिये स्वास्थ्य के नियमों का ठीक-ठीक पालन नहीं होता जिसका परिणाम यह होता है कि छोटी-छोटी भूलों से बड़े-बड़े रोगों के बीज बोये जाते हैं। जो आगे चलकर स्वास्थ्य को नष्ट करके भयानक रोगों में ग्रस्त कर देते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि जीवन शक्ति क्षय होने लगती है जो आगे चलकर शीघ्र मृत्यु या अकाल मृत्यु का कारण होती है इसलिए शत्रु और रोग को कभी छोटा न समझना चाहिये इसी भाव को ध्यान में रखते हुए संस्कृत के एक कवि ने लिखा है कि—

"जातमात्र न यः शत्रुं व्याधिं च प्रशमं नयेत्। अतिपुष्टांगयुक्तोऽपि स पश्चात् तेन हन्यते॥"

मुख्यता वर्ष में ३ ऋतुयें होती हैं—ग्रीष्म, वर्षा, शरद। ग्रीष्म और वर्षा बीत चुकी हैं इसलिये उन पर इस समय विचार करने की आवश्यकता नहीं शरद् ऋतु इस समय हमारे सामने है उसी पर विचार करना है। इस ऋतु में पित्त का प्रकोप होता है इसलिये जठराग्नि प्रदीप होती है। अतएव पौष्टिक शक्तिवर्धक उत्तम-उत्तम भोजन घृत, दुग्ध, अन्न, फल, मेवा आदि तथा औषधियों में च्यवनप्राश, सिद्ध मकरध्वज, स्वर्णभस्म वंगेश्वर, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, द्राक्षासव मृतसंजीवनीसुरा मदनानन्द मोदक शुक्रसंजीवनी, एरण्ड पाक, कपिकच्छु पाक तथा अश्वगन्धा-पाक और मुसली पाक, आदि के सेवन करने के लिए यहाँ जाड़े के दिसम्बर, जनवरी और फरवरी के महीने उपयुक्त हैं, बहुत से लोग यह समझते हैं कि औषधि का सेवन तभी करना चाहिए जब कोई रोग हो बिना रोग दवा खाने की क्या आवश्यकता? यह बात एलोपैथिक दवाओं के लिये ठीक हो सकती है, परन्तु आयुर्वेद में लिखा है कि कोई रोग न होते हुये भी शरीर के स्वास्थ्य को सुन्दर बनाने के लिये, वृद्धावस्था को दूर हटाने के लिए तथा जीवन शक्ति की वृद्धि के लिए बिना रोग के भी शीत ऋतु में औषधि सेवन उचित है। चरक आयुर्वेद का प्रसिद्ध ऋषिकृत ग्रन्थ है। उसमें लिखा है कि 'रसायन तु तत् ज्ञेयं यज्जरा व्याधिविनाशनम्।' रसायन औषधियों के सेवन से पूर्व दो बातों की आवश्यकता है, एक तो यह जो व्यक्ति रसायन का सेवन करना चाहता है उसकी प्रकृति कैसी है। वात प्रधान है, पित्त प्रधान है, या कफ प्रधान है। दूसरी बात यह कि उसका स्वास्थ्य कैसा है? इस समय उसे कोई रोग तो नहीं है यदि कोई रोग हो तो उसकी चिकित्सा पहले करनी चाहिए। उस रोग के दूर होने पर ही रसायन औषधि का सेवन करना उचित होगा।

एक बात यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है, कि जैसे यदि कपड़ा धोने के बाद रंगा जावे तो रंग अच्छा खिलता है, उसी प्रकार रसायन औषधि का प्रभाव तब अधिक होता है, जब इसके सेवन से पूर्व विरेचन ले लिया जावे। विरेचन द्वारा जब आँतें शुद्ध हो जायेंगी तो रसायन औषधि का प्रभाव जल्दी होगा। इसके साथ ही रसायन औषधि सेवन करने के दिनों में रोगी को प्रसन्न रहना चाहिए, ताकि मानसिक प्रभाव भी उत्तम पड़े।

यह आपको जानना चाहिये कि जो भोजन हम प्रतिदिन करें वह उत्तम होना चाहिये अर्थात् अधिक मूल्यवान नहीं अपितु सतोगुणी होना चाहिये, रजोगुणी और तमोगुणी नहीं। सतोगुणी भोजन करने से सात धातुयें रस, रक्त, माँस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र सतोगुणी बनते हैं और रजोगुणी तथा तमोगुणी भोजन करने से ये सातों धातुएं रजोगुणी और तमोगुणी बन जाती हैं। धर्म शास्त्रों में लिखा है कि 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः, सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।' अर्थात् यदि हमारा भोजन शुद्ध होता है तो हमारा मन भी शुद्ध बनता है। सत्य, न्याय, दया, क्षमा आदि उत्तम गुणों का उसमें समावेश होता है अर्थात् गीता के शब्दों में 'दैवी सम्पत्' वहाँ एकत्रित होती है और यदि भोजन अशुद्ध अर्थात रजोगुणी और तमोगुणी होता है तो मन में भी छल, कपट, बेईमानी आदि दुर्गुण आ जाते हैं जिन्हें गीता ने 'आसुरी सम्पत्' के नाम से कहा है। अस्तु,

रसायन औषधियों के सेवन से आयु बढ़ती है। शरीर और ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों में दृढ़ता आती है। स्मृति शक्ति बुद्धि भी बढ़ती है। जो विद्यार्थी अध्यापक और वकील तथा ऐसे लोग हैं जिन्हें दिमाग मस्तिष्क से काम लेना पड़ता है। या जो ऐनक लगाते हैं जिनकी आँखें कमजोर हैं। मन्द दृष्टि है उनके लिए बादाम बहुत अच्छी वस्तु है प्रति दिन रात को १० कागजी बादाम एक कुल्हड़ पानी में भिगो देने चाहिये और प्रातःकाल छीलकर खूब महीन सिल पर पीसकर गाय के ताजा मक्खन और मिश्री में मिलाकर दो मास लगातार खाने से बुद्धि बढ़ेगी। मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करते हुये थकावट नहीं मालूम होगी। चित्त प्रसन्न रहेगा और दृष्टि शक्ति भी बढ़ेगी। जिनकी दृष्टि मन्द है, उन्हें प्रातःकाल त्रिफला जल से आंखें धोना भी चाहिए, तथा सिर में ब्राह्मी या आँवले का शुद्ध तेल भी लगाना चाहिए। इसके साथ ही ब्रह्मचर्य और व्यायाम के नियमों का पालन भी दृढ़ता से करना चाहिए।

जो भोज्य पदार्थ या औषधियाँ मधुर रस विशिष्ट हैं। जैसे मुनक्का, अंजीर, किशमिश, काजू, छुहारा आदि जो स्निग्ध हैं, जैसे घृत, मक्खन, बादाम आदि जो आयु वर्धक हैं, जैसे आंवला शतावर नागौरी असगन्ध आदि जो पौष्टिक हैं, जैसे कौंच के बीज विदारी-कन्द, मुसली सफेद आदि ये सब रसायन कहाती हैं।

शुद्ध दूध के बने सब पदार्थ जैसे रबड़ी, मलाई, पेड़ा, कलाकन्द, हलवा मोहन, बर्फी, खोया, खीर आदि उत्कृष्ट रसायन हैं। शरद ऋतु में भैंस का दूध भी उपयोगी है। दूध पूर्ण भोजन [Ptrfect food] है, यदि कोई अन्न न खावे, केवल दूध पर रहे, सन्त विनोबा भावे जैसे सन्तों की तरह तो उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बहाँ विचार सतोगुणी होंगे। प्राचीनकाल में ऋषि, मुनि, कन्द मूल फल इसलिए खाते थे, कि जिससे उनके विचार ऊँचे रहें, और तब वे अपने उत्तम विचारों को लेख बद्ध करें। प्राचीनकाल के बहुत से उत्तम ग्रन्थ उन ऋषियों के लिखे हुये हैं, जो त्यागी और तपस्वी थे, जंगलों में रहते थे, आजकल के भौतिकवादी उन्हें असत्य समझेंगे, परन्तु एक विद्वान् ने लिखा है कि जंगलों में देवता रहते हैं और महलों में शैतान रहते हैं।

रसायन औषधियाँ—(१) नागौरी असगन्ध का चूर्ण और मिश्री मिलाकर प्रातः दूध के साथ सेवन करें।

(२) विदारी के चूर्ण को शतावर के रस में सात बार भावना देकर ३ माशा प्रातः और ३ माशा सायं दूध के साथ सेवन करने से बुद्धि मेधा और स्मृति शक्ति बढ़ती है।

(३) धात्री रसायन.—आँवले के चूर्ण को हरे आंवलों के रस में २१ भावना दें, अर्थात २१ बार घोटें। आंवले के चूर्ण के समान घृत और मधु मिलावें फिर मिश्री आँवले के चूर्ण के

**★ श्री पं० कृष्णदत्त**
**आयुर्वेदालङ्कार फैजाबाद**

तोल की चौथाई और पीपल का चूर्ण आँवले के चूर्ण का आठवाँ भाग मिलाकर वर्ष के आरम्भ में जमा राशि में रख दें। वर्षा ऋतु के अन्त में निकाल कर सेवन करें। इसके सेवन से रूप, वर्ण, कान्ति बुद्धि मेधा और स्मृति शक्ति बढ़ती है।

(४) बुद्धि वर्धक योगः—गिलोय अपामार्ग बिडंग, शंख पुष्पी। सोंठी वच बड़ी हरड़, कूठ, और शतावर सब को कूट पीस कर कपड़छान करलें। ३ माशे की मात्रा में प्रातः सायं मधु से सेवन करें।

(५) शाल्मली रसायन—सेमर के मुसले को सुखाकर कूट पीस कर कपड़छन कर लें, फिर सेमर के मुसले के रस में चूर्ण के तोल से दुगनी चीनी मिला चाशनी बना लें। फिर चूर्ण सेमर मिला कर मोदक वा पाक कर लें यह उत्कृष्ट रसायन है। प्रातः गोदुग्ध के साथ ६ माशे की मात्रा में सेवन करें।

(६) रसायन के लिये आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अनेक प्रकार की वटी मोदक और घृतों का विधान है। यदि रोगी की जाठराग्नि प्रबल हो तो घृत से शीघ्र लाभ होता है। किन्तु यदि दब हो तो घृत अनुकूल न पड़ेगा, उस दशा में मदनानन्द मोदक दें।

जो लोग सम्पन्न हैं और स्वास्थ्य पर अधिक धन व्यय कर सकते हैं उन्हें सुयोग्य वैद्य से परामर्श करके निम्नलिखित औषधियों में से किसी एक या दो का शीत ऋतु में सेवन करके अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाना चाहिए। (१) त्रैलोक्य चिन्तामणि रस (२) महालक्ष्मी विलास रस (३) मकरध्वज वटी (४) मकरध्वज रस (५) अमृत प्राश घृत (६) बृहत् अश्वगन्धा घृत (७) बृहत् वसन्त तिलक रस (८) बृहत् मकरध्वज (९) बसन्त कुसुमाकर रस (१०) च्यवनप्राश (११) बृ० पूर्ण चन्द्र रस (१२) क्षीरकादि मोदक (१३) बृ० भारतीय महा लक्ष्मी विलास (१४) मृतसंजीवनी सुरा (१५) द्राक्षासव (१६) बृ० दशमूलारिष्ट कस्तूरी मिश्रित।

# बच्चों की शिक्षा पर पारिवारिक प्रभाव

—सुधा वर्मा बी० ए०

बच्चों में अनुकरण की प्रवृ प्रबल होती है। जैसा वे परिवार और समाज में देखते हैं उसका प्रत्यक्ष और मौन प्रभाव बराबर उन पर पड़ता है। युग प्रवाह के अनुरूप उन्हें बनाने में परिवार का बड़ा योगदान रहता है। वर्त्तमान बलगेरिया में उसी का दिग्दर्शन प्रस्तुत लेख में किया जा रहा है।

बलगेरिया की एक पुरानी कहावत है, कभी आशा न करो कि भाई तुम्हें खिलायेगा किन्तु यदि तुम्हारे भाई हैं तो अपने को भाग्यवान समझो।

उन्नीसवीं शताब्दी तक बलगेरिया की जीवन का एक नमूना था जब कि लोग विशेषकर देहातों में जाड्रुगास या छोटे-छोटे समुदायों मे रहते थे जो कि विवाह और सन्तान होने पर बढ़ते जाते थे किन्तु अपने माता पिता के साथ एक ही घर में चले आये थे। प्रत्येक जाड्रुगा अपने सबसे बड़े बूढ़े की आज्ञा का पालन काम, खाद्य संग्रह और रस्म रिवाज आदि मे करता था। ये बड़े परिवार बच्चों की शिक्षा के लिए उचित वातावरण प्रदान करते थे। छोटी-सी आयु से ही जाड्रुगा का प्रत्येक सदस्य सबके हित का ध्यान रखता था एक दूसरे की सहायता को तैयार रहता था और आत्मानुशासन मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों तथा इस बड़े किन्तु सुसंगठित समुदाय के सभी लोगों के हित साधन का काम करने की आदतें सीख लेता था। इस मामले मे किसी विशेष शिक्षा की आवश्यकता न थी। युवजन स्वतः ही बहुत सी बातों को सीख लेते थे और उनसे सामाजिक सम्बन्धों की एक काम देने वाली प्रणाली स्थापित हो जाती थी।

## नई समाज सरचना मे परिवार

आधुनिक काल में हमने पारिवारिक जीवन सरचना में विशेषकर बच्चों की शिक्षा और लालन-पालन मे महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। सर्व प्रथम प्रत्येक परिवार में बच्चों की संख्या बहुत कम हो गयी है। जाड्रुगा बिखर गया है और उसके परिणाम स्वरूप हम शहरों और गावों में एक या दो बच्चों वाले परिवारों को देखते हैं।

सन १९६४ के आकड़े बताते हैं कि बल्गेरिया के ४५ प्रतिशत परिवारों मे एक बच्चा था ३५, ५ प्रतिशत मे दो ९ ५ मे तीन ४ २ मे चार और २.४ में ५ बच्चे थे।

बदलती हुई दुनिया के बावजूद जाड्रुग के दोबुनियादी सिद्धात आधुनिक परिवार में भी प्रत्यक्ष है।

(१) व्यक्तिगत तथा सामाजिक हितों मे सामञ्जस्य।

(२) आवश्यकताओं और बच्चों के बहुमुखी आचरणों के बीच सामञ्जस्य।

पहले सिद्धान्त को इस पृष्ठभूमि में देखना होगा कि आजकल विवाह एक युवक और एक युवती के व्यक्तिगत विचार और भावनाओं को ध्यान मे रखकर होते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा आर्थिक श्रेणी या दहेज की रकम का विचार अब नहीं होता। युवक अपने पैरों खड़े होने में समर्थ होते हैं वे सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर विवाह करते हैं।

ऐसे वातावरण में पढकर बच्चे अपने प्रतिदिन के जीवन में परिवार के सदस्यों मे सद्भाव और मैत्री देखते हैं और आस-पास की दुनिया भी। परिवार सामाजिक जीवन की सीधी प्रतिच्छाया है। प्रौढ़ और बालक समान रूप से अपने को प्रत्येक व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्य में मिल कर काम करने वाले दल का सदस्य समझने लगते हैं।

## पुराने युग की बातें

पुराने समय में पिता अकेले जीविका अर्जन करता था। विवाह या विवाह विच्छेदन तलाक। की हालत मे स्त्रियों को कष्ट और अपमान सहन करने पड़ते थे, क्योंकि उनके लिये कोई और मार्ग नहीं था। वे किसी या व्यवसाय की शिक्षा नहीं पाती थीं। और अपने पति की दया पर आश्रित थीं। इससे बच्चों के लिये बड़ी कठिनाई उत्पन्न होती थी, वे अनुभव करते थे कि चाहे जो पक्ष ले यदि समझौता असम्भव हो गया तो माता की स्थिति कठिन होगी। यही नहीं उनके हस्तक्षेप से स्थिति और बिगड़ सकती थी।

## माता की स्थिति का प्रभाव

यह पाया गया है कि बहुत-सी मातायें काम करती हैं, और उनकी आर्थिक स्थित ठीक है, तो पारिवारिक सम्बन्धों मे हर प्रकार सुधार होता है। पति और बच्चों का प्रेम और सम्मान पाकर महिलायें सचमुच सुरक्षित होती हैं, और घर में सब के लिये विवेकपूर्ण वातावरण की सृष्टि करती हैं।

"पेरेण्ट्स लाइब्रेरी" या माता पिता पुस्तकालय भी उन माता-पिताओं की सहायता के लिये है जो अपनी सन्तान को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने का अवसर देना चाहते हैं।

★

# बाल-विनोद

## विजय मुकुट मां को पहनाओ

बाल सिपाही, बाल सिपाही,
बनों देश के बाल सिपाही,
जन्म भूमि की जय जय गाओ,
बनो बहादुर औ उत्साही।
बनो सिपाही, बनो सिपाही।
नहीं किसी की यहां मनाही,
जो माता का मान बढ़ावे,
बन जावे इस पथ का राही।
बनो सिपाही, बनो सिपाही।
तुम भारत के बाल सिपाही
बरबादी को दूर भगाओ,
दूर भगाओ सभी तबाही।
बाल सिपाही, बाल सिपाही
बनो, करो मत लापरवाही।
सुस्त बनो मत, चुस्त रहो नित,
तो फिर होगा काम बड़ा ही।
बाल सिपाही, बाल सिपाही
बनो बहादुर औ उत्साही।
विजय मुकुट माँ को पहनाओ,
पूरी हो सबकी मनचाही।

—सोहनलाल द्विवेदी

## चरित्र का वर्णन

एक बार एक राजा ने अपने दरबार में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया और घोषणा की कि जो कवि अपनी कविता द्वारा राजा के चरित्र का ठीक वर्णन करेगा उसे एक सच्चा हीरा इनाम में दिया जायेगा। सम्मेलन में बहुत से कवि आये और उन्होंने अपनी कविताएं सुनायीं और राजा की खूब बड़ाई की। इस प्रकार प्रत्येक कवि राजा को बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा कर रहा था और राजा भी उन्हें एक-एक हीरा देता जा रहा था। अन्त में एक कवि जिसका नाम सन्तराम था, डरते-डरते अपनी कविता सुनाने मचपर आया। उसने पहले तो राजा के दो तीन गुण बताये और फिर अवगुणों का बखान करने लगा। अन्त में राजा ने इसे भी एक हीरा दिया।

अब सारे कवि अपने-अपने हीरे को लेकर मूल्य अकवाने के लिए जौहरियों के पास गये। सन्तराम के हीरे को छोड़कर सारे हीरे नकली थे।

कविगण राजा के पास आये और बोले "महाराज, ये हीरे तो झूठे हैं, इनके बदले तो कोई एक आना भी देने को तैयार नहीं है।"

राजा तेजी से बोला—'तुमने अपनी कविता में मेरे बारे में जो कुछ कहा वह भी तो झूठ था। मेरे चरित्र का सच्चा वर्णन केवल सन्तराम ने किया।"

(शेष पृष्ठ २ का शेष)

लखी थी, कहीं मिले तो उसे पढ़ लेना चाहिए। मैं इसकी खोज में था।

सन् १९६६ में जब मुझे आर्यसमाज उज्जैन के उत्सव और वेद-कथा प्रसंग पर उज्जैन आने और बारह दिन तक वहां रहने का अवसर मिला, तब आर्य भाइयों की सहायता से मैंने उक्त 'ओङ्कार जप विधि' को खोजकर खरीद लिया। यह एक छोटी पुस्तक है। स्व० श्री पं० शिवदत्त जी उज्जैन एक सुधरे हुए विचारों के पौराणिक विद्वान थे। अपने पौराणिक मन्तव्यक अनुसार ही उन्होंने इस पुस्तक को लिखा था। इसमें जप के लाभों का ही विशेष उल्लेख है। अर्थवाद इसमें केवल ् उतना नहीं है, जो श्री महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है। जप की विधि कुछ विशेष नहीं, वह वैसी सरल ही है। वैसी की माला की सहायता से नाम जाप की प्रचलित पौराणिक विधियां होती हैं। विधि का समाधान कारक, सन्तोषप्रद और विज्ञान सम्मत का सूक्ष्म सूचक कोई उल्लेख इसमें नहीं है।

६—'श्री दयानन्द प्रकाश' लेखक स्वर्गीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज एक सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी थे। अपनी राम नाम दीक्षा, प्रेम पथ की प्रवर्तना और आर्यसमाज से विमुखता से पूर्व उन्होंने एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी—'ओंकारोपासना' इस पुस्तक का प्रचार धर्मवीर श्री महाशय राजपाल जी ने बड़े उत्साह के किया था। तब इसे आर्य जनता का आदर खूब मिला था। इसमें 'ओम्' नाम का अथवाद और माहात्म्य तो है, उपासना की विधि नहीं है। एक पुस्तक विक्रेता ने इसे अब फिर छापा है।

७—स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज का एकमात्र ग्रन्थ "सन्मार्ग दर्शन" बड़ा उत्तम है। उसका प्रथम अध्याय 'नाम गति' 'ओम् नाम की महिमा को बड़ी उत्तमता से दर्शाता है। ओम नाम के जप की विधिः इसमें भी नहीं है।

८—योग दर्शन के छोटे बड़े, नये-पुराने भाष्य मैंने देखे। ओम् नाम के जप का आदेश है, जप विधि किसी में भी नहीं।

९—सन् १९६६ ई० में उज्जैन से लौटकर मैंने विचारा था कि यदि कोई 'ओङ्कार-जप-विधिः' बन जाये, या मिल जाये, तो उत्तम होगा। मैं उसे प्रकाशित करवा दूंगा। तब मैंने बीस आर्य विद्वानों के पास जो कि सुप्रसिद्ध, ग्रन्थ निर्माता, अध्यापक, नेता और उत्तम आचार-विचार सम्पन्न हैं, जिनके चरणों में मेरी प्रगाढ़ श्रद्धा है, और जिनके विषय में मेरी धारणा है कि यदि वे "ओङ्कार-जप विधि" बना देंगे, तो उसे सहज में ही प्रामाणिकता मिल सकेगी और आर्य जनता की उपासना वाद विषयक एक उलझन सुलझ जायेगी, एक महती आवश्यकता पूर्ण हो सकेगी। मैंने "ओङ्कार-जप-विधिः" की आवश्यकता बताकर लिखा था—"कृपया आप यथा शीघ्र ही एक ऐसी 'ओङ्कार जप विधिः' बनाकर भेजने की कृपा करें, जो आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी के वैदिक मन्तव्यों के अनुसार उपासकों की आरम्भिक आवश्यकता की पूर्ति करे। मैं उसे शुद्ध और सुन्दर रूप से छपवा दूंगा।" मेरे इस प्रयास का अभी तक भी कोई लाभ नहीं हो सका।

१०—दर्शन शास्त्र के एक बड़े आचार्य ने उत्तर में लिखा था—"अन्य कार्यों में अधिक व्यस्त हूं। यह कार्य न कर सकूंगा।" वेदों के एक प्रसिद्ध विद्वान, अष्टाध्यायी महाभाष्य के प्रकाण्ड पण्डित, अनेक पुरस्कार विजेता और अनेकों महत्वपूर्ण ग्रन्थों के निर्माता यशोधन एवं महर्षि दयानन्द जी के परम भक्त एक महा पण्डित जी ने लिखा था—"मैं इस कार्य को नहीं कर सकूंगा। एक आचार्य और पण्डितराज जी बहुत विश्रुत हैं। उनकी सौभाग्यवती देवी जी भी वेदाचार्य उपाधि से विभूषित हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा विरचित ग्रन्थ "पंच महायज्ञ विधि" का एक सुन्दर और स्थूलकाय भाष्य भी उन्होंने रचा है। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। एक बड़ी सभा के अनुभवी आध्यक्ष जी ने लिखा—"अन्य कार्यों मे व्यस्त हूं। अभी यह काम न हो सकेगा।" सुप्रसिद्ध आर्य नेता, आर्य सिद्धांतों के मर्मज्ञ, मेरे गुरुभाई श्री पण्डित जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती ने मुझे बुलाया। वे मेरे पास आये और मैं भी उनके पास गया। विचार विमर्श होता रहा श्री सिद्धान्ती जी के पास ओङ्कार जप विषयक सामग्री और ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है। मैंने उनसे विधिः तैयार करने का आग्रह किया। वे मुझे यह कार्य करने को कहते रहे। मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की। इस कार्य के सम्पादन में जो संकोच मुझे है, वह भी मैंने उन्हें बतलाया। उन्होंने विधिः बनाने का कोई वचन नहीं दिया। बात बनी नहीं।

११—वेद के एक नये प्रसिद्ध कथाकार और भाष्यकार पूज्य सन्यासी जी ने मेरे प्रस्ताव की सराहना की। कई पत्रों का आदान-प्रदान हो गया। अन्त में उन्होंने लिखा—"आपका आदेश नोट कर लिया है। यथावसर एक विधिः तैयार करके प्रकाशित कराऊंगा।" इससे मुझे प्रसन्नता हुई थी। वह विधि बनी या नहीं? ईश्वर जाने।

१२—प्राचीन काल में ओङ्कार-जप की कोई व्यावहारिक विधिः अवश्य ही बनी और विकसित एवं प्रचलित हुई होगी। मैं ऐसा समझता हूं। प्राचीन काल में गुरु-शिष्य परम्परा भी जीवित और प्रचलित थी, पुस्तक-व्यापार भी आज-कल सा न था। तथा मुद्रण-कला भी न थी, तब मौखिक रूप में ही उस विधि. का प्रसार होता होगा। आज कल तो लोग सब कुछ अपने घर बैठे पुस्तक रूप में ही जान लेना चाहते हैं। पुस्तकालय में भी प्रायः लजाते हैं। उपासनावाद में तो कम लोगों की ही रुचि होती है। वैदिक उपासनावाद और ओङ्कारोपासना के प्रेमी तो और भी कम होते हैं। परिस्थितियां बदल चुकी हैं। प्राचीन विधि-विधान लुप्त भी हो गये, उलट पुलट भी गये। उन विधानों का संरक्षण, संशोधन या पुनरुद्धार हो नहीं सका।

१३—मेरी यह भी दृढ़-धारणा अब बनी है कि श्री महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक उपासनावाद के उद्धार के लिए अपना सर्व प्रथम लेख बद्ध रचना तो ओङ्कार-जप-विधिः" के रूप में ही तैयार की थी, परन्तु उनकी अन्य व्यस्तताओं एवं उनकी अकाल मृत्यु के कारण उनकी दर्शाई हुई विधि का सम्यक् विकास और प्रसार हो नहीं सका। हमारे महर्षि जी की उक्त 'ओंकार-जप-विधि.' का ही प्रचार विस्तार आजकल की प्रचलित सन्ध्या-पद्धति, वैदिक संध्या विधि' या ब्रह्म यज्ञ प्रणाली के रूप में हो गया है। महर्षि जी के बाद के उत्साही विद्वानों, प्रचारकों, पुस्तक विक्रेताओं और श्रद्धावान आर्य पुरुषों ने वैदिक सन्ध्या का एक दोषपूर्ण ढंग प्रचलित कर दिया है, जो कि अधूरा भी है, विशेष लाभदायक भी नहीं है।

१४—प्रचलित सन्ध्या-पद्धति का नाम तो 'सन्ध्या ही चला आ रहा है, परन्तु इसके प्रचलित रूप में कोई भी स्थान किसी भी प्रकार के "सम्यक-ध्यान' का नहीं है। जप का महर्षि दयानन्द कृत आर्ष विधान मौजूद है, परन्तु हमारे अधिक उत्साही नेताओं, आचार्यों और पथ प्रदर्शकों का ध्यान कभी उसकी ओर गया ही नहीं। बहुत से ब्रह्मबन्धु तो उसे जानते भी न होंगे। मुझे स्वयं भी उसे जानने में बहुत देर लगी है। एक दूषित प्रचार परम्परा ने सत्यता को दबा कर रखा है। यदि ठीक ढंग हमारी सन्ध्या का बना होता, तब तो बात बहुत पहिले ही सुलझ जाती। मैं समझता हूं कि आजकल जो कुछ भी संध्या के नाम पर किया, बोला और किया जाता है, वह सन्ध्या नहीं है। वह तो सन्ध्या की तैयारी ही है। और सन्ध्या किये बिना ही तैयारी के बाद कार्य की समाप्ति मानी जा रही है।

१५—पंच महायज्ञ विधि के ब्रह्मयज्ञ [वैदिक संध्या] के उपस्थान प्रकरण में गायत्री मन्त्र के पश्चात महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है—

'हे ईश्वर दयानिधे! अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।'

यहां जप का सुस्पष्ट उल्लेख है। परन्तु यह जप तो कोई करता ही नहीं। इस जप का प्रचलन यहां हो ही नहीं सका।

१६—जप 'ओम् ओंकार' का भी होता है, गायत्री मन्त्र का भी। 'ओम्' का ही एक व्याख्यान सुप्रसिद्ध और सन्ध्या में प्रतिपादित गायत्री मन्त्र भी है। अब मैंने ऐसा समझा है कि शिखा बन्धन, आचमन, अङ्ग-स्पर्श मार्जन, प्राणायाम अघमर्षण पुनः आचमन, मनसा परिक्रमा और उपस्थान के बाद पुनः आचमन करके दीर्घकाल तक गायत्री मन्त्र को जपा जाये। अथवा गायत्री मन्त्र का एक व तीन बार जप करके फिर दीर्घकाल तक 'ओम्' पद को जपा करे। काल मात्रा के परिज्ञान के लिए माला का उपयोग भी किया जा सकता है।

इस जप के बाद ही ईश्वर प्रार्थना और समर्पण पूर्वक नमस्कार मन्त्र के साथ संध्या समाप्त की जाये। तभी सन्ध्या सम्यक् ध्यान का रूप धारण कर सकेगी। यही है मेरी समझ के अनुसार महर्षि विरचित "ओंकार-जप-विधि."

१७—आर्य विद्वानों की सेवा में मेरा यह विनम्र निवेदन है कि यदि मेरे समझने में भूल हो, तो उसे 'आर्यमित्र' के माध्यम से सुधारने की कृपा करें। यदि कोई अन्य ओंकार-जप विधिः हो, तो उसे भी प्रगट करें। वह भी लिखें कि ओंकारोपासना-प्रचार के लिये विशेष उपाय क्या हों?

# महान् दयानन्द
# ऋषि दयानन्द की व्यापक भावना

★श्री पं० त्रिभुमित्र शास्त्री
साहित्य व्याकरणाचार्य

विज्ञान की आश्चर्यजनक उपलब्धियों के बाद भी यदि संसार में हिंसा, द्वेष, कलह की विभीषिका से आज की मानवता अभिशप्त है, तो उसका एक मात्र कारण है मनुष्य की पारस्परिक संकुचित भावना और पर के गुणों का अनादर करना।

मानव समाज, धर्म जाति, समाज और देश की परिधि में इतना संकुचित हो गया है—और होता जा रहा है कि मनुष्य एक दूसरे मनुष्य से अनायास अपने को पृथक समझने लगता है। इस पृथकत्व की भावना की उग्रता में आकर व्यक्ति दूसरों के अवगुणों को ही केवल देखा करता है—जिसका परिणाम होता है आपसी द्वेष, कलह, और हिंसा का सूत्रपात।

ऋषि दयानन्द को पूर्ण विश्वास था कि संसार का उपकार एकदेशीय भावनाओं की अपेक्षा सार्वभौम भावना से ही सम्भव है। उनके दीर्घ चिन्तन ने इस तथ्य को स्वीकार किया था कि वेद ज्ञान ही एकमात्र सार्वभौम भावनाओं से ओतप्रोत है। वेद में कहीं भी धर्म विशेष, जाति विशेष और देश विशेष की गुण-गाथा नहीं है। वेद कहता है मानव समाज उस सौहार्द की भावना से परस्पर आबद्ध होकर रहे—जिसमें सारा विश्व एक नीड-एकाई में परिलक्षित होता है—यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

इस एकत्व की भावना में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि धार्मिक भेद, शासक-शासित आदि सामाजिक भेद, हिन्दुस्तानी पाकिस्तानी, चीनी, अमेरिकी, इटालवी, वियतनामी आदि देशगत भेद तथा काले गोरे-गत रंगभेद कहाँ रह जाते हैं? ये भेद तो होते हैं मनुष्य की संकुचित भावनाओं से। मनुष्य ज्ञान के उच्च शिखर पर ज्यों ज्यों चढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसके दृष्टिकोण में व्यापकता आती जाती है, एकत्व का दर्शन करता जाता है। संकुचित भावनाओं ने ही आज मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना दिया है, मानवोचित गुणों का सर्वथा हनन कर दिया है।

गुणों की अवहेलना से अवगुणों की बाढ़ आ गयी है। ऋषि ने गुणों के उत्कर्ष के लिये वैदिक उद्घोष किया कृण्वन्तो विश्वमार्यम् सारे संसार को आर्य श्रेष्ठ बनाओ। ऋषि दयानन्द के इस उद्घोष को भी कुछ ऐतिहासिक चश्मा लगाने वालों ने समझा कि ऋषि दयानन्द विश्व को आर्य भारत की एक प्राचीन जाति के रूप में देखना चाहता है। किन्तु इस संकुचित दृष्टिकोण से पूर्व यह समझ लेना चाहिये कि ऋषि दयानन्द वेद में एकदेशीय शिक्षा नहीं मानते। पुनः आर्य शब्द से श्रेष्ठ गुणवान् होना रूप अर्थ न लेकर आर्य जाति की बात समझ बैठना मूर्खता नहीं तो और क्या समझा जाय?

स्वामी दयानन्द सद्गुणों का उत्कर्ष ही केवल देखना नहीं चाहते थे अपितु वे चाहते थे आज के मानव समाज के अभ्यन्तर व्याप्त अवगुणों का मूलोच्छेदन आज के समन्वयवादी लोगों की तरह सत्-असत् उभय पक्षों के बीच में हां में हां मिलाना भी उन्हें इष्ट नहीं था। वे समन्वय चाहते थे सत्य की एकात्मकता में अल्ला ईश्वर तक नाम में शाब्दिक मेल जोल का समन्वय भावना भले ही परिलक्षित हो किन्तु द्वेष अन्य विषमता के बीज ज्यों के त्यों बना रह जाते हैं। उस विषम बीज को उखाड़ना भी साधारण लोगों की शक्ति से परे की बात है। इसके लिये तो प्रबल क्रांति करने की आवश्यकता होती है। ऋषि दयानन्द ने इसी क्रांति भावना के बिगुल को बजाया और बहुत बार दुनिया के लिए शंकर बन कर विष पान किया। ऋषि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा भी इसी क्रांति का मन्त्र फूंका। सत्-असत् का समन्वय अन्धकार प्रकाश की भांति असम्भव समझते रहे।

वे चाहते थे संसार के लोग असत् से सत् की ओर चलें, सकलोप गुणों के भण्डार आप हों, सबका उपास्य देव एक हो हिंसा, वैमनस्य सदा-सदा के लिये समाप्त हो। मानवता का मार्ग प्रशस्त हो।

(१)

मैं अपनी धृष्टता के लिये आपसे क्षमा चाहता हूं। क्या मैं यह जान सकता हूं कि 'आर्यमित्र' में समय-समय पर प्रकाशित होने वाले वसन्त जी के मनोहर, प्रेरणा प्रद आध्यात्मिक भजनों का संग्रह पुस्तक रूप में कब प्रकाशित होगा? कबीरदास के निर्गुण भजन भी बड़े भावपूर्ण एवं शिक्षाप्रद हैं, जिन्हें वसन्त जी प्रायः अपने ओजपूर्ण लेखों में उद्धृत करते रहते हैं। उन्हें पढ़कर मैं भी बड़ा आनन्दित एवं ज्ञान प्राप्त करता हूं। परन्तु उसी तर्ज के वसन्त जी के छपने वाले गूढ़ एवं मार्मिक वैदिक निर्गुण भजन भी गाते समय एक अपूर्व समा बांध देते हैं और एक विलक्षण फिजा पैदाकर लोगों को मदहोश अबेसुध बना देते हैं। जब मैं इसे अलापता हूं—

जाना सब को बारी बारी।
करले चलने की तैयारी ।।टेक।।
\+ \+ \+
बीता बचपन आई जवानी।
खत्म हुई रङ्गीन कहानी।
आया बुढ़ापा मौत निशानी।
हे बुद्धि धारी। जाना।

फिल्मी गाना लोगों को नष्ट-भ्रष्ट निकृष्ट बना रहे हैं। वसन्त जी के गाने व भजन उन्हें श्रेष्ठ उत्कृष्ट बना सकते हैं। यदि इनके भजन भी सर्वत्र गाये जायें। गिरधारीलाल आर्य
चौरी चौरा

(२)

श्री वसन्त जी!

जब से आपके हाथ में 'मित्र' आया है विद्वानों को आप सामग्री देते हैं। अभी तक सूचना पत्र था।

ब्रह्मदत्त शास्त्री
मु०पो० अतराना (अलीगढ़)

(३)

## अभी अन्ध विश्वास शेष है

वैज्ञानिक उपलब्धियों ने मनुष्य मात्र को एक दूसरे के इतना समीप कर दिया है कि दूरी अब केवल नाम में रह गई है, और सब इनसे समान रूप से प्रभावित हैं। जिस विषय की चर्चा किसी देश विशेष में होती है उस विषय की चर्चा अन्य देशों में समान रूप से होती है और सब लोग अपनी योग्यता तथा रुचि के अनुसार उस पर अपना मत व्यक्त करते हैं। गत बड़े दिन के अवसर पर तीन वैज्ञानिकों का चन्द्र कक्ष में प्रवेश तथा चन्द्रमा की परिक्रमा अद्भुत रही है। जब तक वे वापस नहीं आये लोग इनके सम्बन्ध में अनेकों प्रकार का अनुमान लगा रहे थे। इन अनुमानों पर विचार करने से विदित होता है कि समाज में अभी कुछ ऐसे लोग हैं जो इन उपलब्धियों का मूल्यांकन नहीं कर पा रहे हैं और वे वहीं हैं जहाँ आज के बहुत दिन पूर्व लोग निवास कर रहे थे। इस प्रकार की एक वार्ता मेरे सम्मुख भी हुई और उसको मैं जनता की जानकारी के लिये उपस्थित कर रहा हूं।

मीरजापुर गङ्गा जी के किनारे अवस्थित है। अनेकों व्यक्ति प्रतिदिन गङ्गा स्नान करते हैं। मैं भी गङ्गास्नान का प्रेमी हूं। २५ दिसम्बर को प्रातःकाल गङ्गा तट पर आकाश विषयक ज्ञान पर कुछ गङ्गा स्नानार्थी आपस में बातचीत कर रहे थे। एक व्यक्ति ने कहा—मैं इन सा ...ने हिन्दुओं को छुआछूत मिटा कर भ्रष्ट किया ही था, अब देवताओं को चन्द्रमा पर जाकर भ्रष्ट करेंगे घोर कलियुग! इसमें जो कुछ न हो जाय।" इसको सुनकर मैंने कहा कि वैज्ञानिकों तथा आपके विचारों में आकाश पाताल का अन्तर है। आप गङ्गा को नारी रूप में मानते हैं। गङ्गा अवतरण की कथा में अक्षरशः विश्वास करते हैं। आप इन्हें ऐसी नारी समझते हैं जो गर्भवती होती है और पुत्र उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखती है। भीष्म पितामह इन्हीं गङ्गा के पुत्र कहे गये हैं। परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से लोकोपकारी एक नदी के अतिरिक्त यह गङ्गा कुछ नहीं है। इनका यह रूप प्रगट एवं अकाट्य है। आपकी गङ्गा केवल विश्वास की वस्तु हैं और वैज्ञानिकों की गङ्गा आपके सम्मुख हैं और आप इनसे स्नान आदि से प्रति दिन लाभ उठाते हैं इसी भांति आपकी दृष्टि में सूर्य और चन्द्र देवता हैं, परन्तु वैज्ञानिकों की दृष्टि में ये केवल निर्जीव ही नहीं बल्कि ऐसे निर्जीव हैं कि इन पर पृथ्वी पर के प्राणी तथा अन्य प्राणी जीवित ही नहीं रह सकते हैं। परन्तु वैज्ञानिक इतना अग्रसर हैं कि इस निर्जीव वस्तु से भी लाभ उठाने में प्राणों की बाजी लगाये हुए चन्द्र कक्षा की परिक्रमा में संलग्न हैं। यद्यपि उन लोगों को शान्त करने में प्रत्यक्ष तर्कों से काम लिया फिर भी वैज्ञानिक उन्नतियों को उन्होंने धर्म शब्द दूषण ही कहा।

—सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी'
एडवोकेट
इमली महादेव, मीरजापुर

## आर्यसमाज जालन्धर शहर का उत्सव

जालन्धर आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार (अड्डा होश्यारपुर) का ८४ वां वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ दिसम्बर को बड़ी सफलता पूर्वक मनाया गया। २२ दिसम्बर से श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह की वेद कथा होती रही। २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया।

उत्सव पर सर्व श्री विद्यानन्द विदेह स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी ब्रह्ममुनि, प० प्रियव्रत वेदवाचस्पति, आचार्य भगवानदेव, प० रघुवीरसिंह शास्त्री, प्रो० रामसिंह प्रधान आ० प्र० नि० सभा के उपदेश और व्याख्यान हुए। प० बृजलाल, अमरनाथ प्रेमी, प० भगतराम और प्रो० सेवाराम के भजन हुये।

—रामचन्द्र मन्त्री

## शुद्धि एवं विवाह संस्कार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बरेली द्वारा आर्य समाज आर्य नगर सूद बरेली में श्री मुहम्मद अहमद नामक एक वरिष्ट अधिकारी ने अपना इसलाम धर्म त्याग कर वैदिक धर्म स्वेच्छा से स्वीकार किया। आपका नाम आनन्द नारायण रक्खा गया। शुद्धि के पश्चात् उनका वधाली हिन्दू महिला एम० ए० एल० टी० जो शिक्षा विभाग मे उच्च पद पर कार्य कर रही हैं, से विवाह संस्कार श्री प० राजाराम शास्त्री द्वारा कराया गया। जिसमें नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री महेन्द्र बहादुर आर्य मन्त्री उप सभा बरेली ने नव दम्पति को आर्य समाज के दो ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एव संस्कार विधि भेंट किये, जिनको उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

—महेन्द्र बहादुर आर्य, मन्त्री

## आर्य समाज कोटा का उत्सव

आर्यसमाज कोटा राजस्थान का उत्सव बहुत उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमें पूज्य स्वामी विशुद्धानन्द जी पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी, श्रीमती विद्योत्तमायती जी, व पंडित बिहारी लाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ तथा श्री भजनोपदेशक श्री अभय जी व ओम्प्रकाश जी ने भाग लिया। उत्सव पर आचार्य कृष्ण जी ब्रह्मचारी ने ७ दिन तक यज्ञ कराया। उनको यज्ञ कराते मैं प्रथमबार ही देखा। उनकी व्याख्या को सुनकर हृदय श्रद्धा से भर जाता है। वे जिन मन्त्रों से यज्ञ कराते हैं, उनका सार भी हिन्दी में जनता को सुना देते हैं। उत्सव में अनेक शास्त्री प्रवचन भी उपयोगी व गम्भीर रहे। अन्तिम दिन ६० बालक बालिकायें और युवा युवतियों का यज्ञोपवीत संस्कार उन्होंने कराया। उनका उपनयन व्याख्या शास्त्र सम्मत, युक्ति युक्त और सरल थी, जनता पर बहुत ही सुन्दर प्रभाव उनके संस्कार कराने का हुआ। इसके उपरान्त आर्यसमाज रावत भाटा व आर्यसमाज कोटा डेम के उत्सव हुये। इन स्थानों पर आर्य समाज मन्दिर बन गये हैं, और इन समाजों में कार्यकर्ता सरकारी सेवा में आये हुये प्राय उत्तर प्रदेश के लोग हैं, और नवजवान हैं, उनके उत्साह को देखकर चित्त बड़ा प्रसन्न होता है, परन्तु यहां की आर्य प्रतिनिधि सभा की दशा दया के योग्य है, कोई उपदेशक उसमें नहीं। यहां के श्री बृजभूषण जी गोयल श्री धर्मसिंह तथा रामेश्वरदयाल आर्य कालभाव में कार्य कर रहे हैं। तथा कोटा डेम पर सुखपालसिंह चौहान तथा श्री मनोहरलाल जी विशेष कार्य कर रहे हैं।

यहां पर नये आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन राजस्थान के आर्य नेता डा० राजबहादुर जी ने किया, इनका भाषण आर्यों में उत्साह भरने वाला था।

—बिहारीलाल शास्त्री

## झांसी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक २५-१२-६८ को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी के तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस आर्य समाज मन्दिर सदर बाजार झांसी में आयोजित किया गया। सर्व प्रथम विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें आर्यसमाज सदर बाजार की पाठशाला के बालकों के अतिरिक्त सभी आर्य भाई बहनों ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता दैनिक जागरण के संचालक, आर्य समाज शहर के प्रधान तथा जिला उप सभा के पूर्व प्रधान श्री जयचन्द्र जी आर्य ने की। श्री शास्त्री हरप्रसाद जी एम० ए०, प्रवक्ता राजकीय कालेज झांसी, श्री महात्मा गंगाराम आर्य वानप्रस्थी, श्री बूटामल जी शर्मा पूर्व उप सभा प्रधान एव प० मदनमोहन एडवोकेट मोंठ ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी जी के जीवन एव बलिदान से प्रेरणा लेने हेतु प्रार्थना की। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य प्रो० सुरेन्द्रनाथ जी वर्मा अध्यक्ष हिन्दी एव संस्कृत विभाग बुन्देलखण्ड कालेज, झांसी ने स्वामी जी के अनेक संस्मरण सुनाये तथा वर्तमान विद्यार्थी वर्ग आन्दोलन को समाप्त करने हेतु तथा इस समस्या के समाधान हेतु केवल मात्र विकल्प गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष बल दिया। श्री जयचन्द जी आर्य ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

—बेचारीलाल आर्य, मन्त्री उपसभा

## आर्य समाज मीरजापुर का उत्सव

आर्य्य समाज मीरजापुर का ८३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १२ दिसम्बर से १५ दिसम्बर ६८ ई० तक बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मुख्य उपप्रधान श्री आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री सभा मुख्य उपमन्त्री श्री प० विक्रमादित्य वसन्त' महान् दार्शनिक श्री आर्य भिक्षु जी आर्य महोपदेशक मेरठ दिल्ली श्री वेगराज वसत संगीत भूषण, श्री नन्दलाल आर्य गाजीपुर, श्री ठा० महिपालसिंह बलिया, श्री महानन्द सिंह आर्य सुप्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशकों ने भाग लेकर उत्सव को सफल बनाया। दि० ८ से १२ दिसम्बर तक श्री वसन्त जी की वेद कथा भी आयसमाज मन्दिर मे होती रही। उत्सव के समाप्ति पर मुहल्ले-मुहल्ले मे ठाकुर महिपाल सिंह द्वारा प्रचार कार्य कराया गया। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद्सदस्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जब मिर्जापुर पधारेंगे, उन्हें १०००) की थैली सभा के लिये भेंट की जायेगी।

—आशाराम पाण्डे<br>मन्त्री आर्यसमाज मीरजापुर

## गोरखपुर मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस व शोभा यात्रा

२५ दिसम्बर को गोरखपुर में समस्त आर्य समाजों ने मिलकर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया। इससे पूर्व विशाल शोभायात्रा निकली, जिसमें आर्य संस्थाओं की बालिका, आर्य नारी, और शहर के अत्यधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित थे, सभी बालिकायें सुन्दर भजन गाती हुई चल रही थीं, अत्यन्त मनोहर दृश्य था। अन्त में अनेक वक्ताओं ने भी स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

—सूर्यदेव प्राणाचार्य, मन्त्री

## सूचना

श्री भूदेव शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी० लिट० नामक कोई सज्जन स्थान-स्थान पर जाकर अपना पता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली बताते हैं और अपने को सार्वदेशिक सभा का अधिकारी भी कहते हैं।

इस सूचना द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त नाम के कोई व्यक्ति न कभी सार्वदेशिक सभा में रहे और न हैं और न ही इस नाम के किसी व्यक्ति का सार्वदेशिक सभा से कोई सम्बन्ध है।

—रामगोपाल शालवाले<br>सभा मन्त्री<br>सार्वदेशिक आ. प्र सभा महर्षि दयानंद भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली—१

## गोवा मे अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह

डिचोली ३० दिसम्बर गोवा प्रदेश में अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह मनाया गया। उक्त कार्यक्रम के अन्तगत एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। सभा का सभापतित्व गोवा प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० अच्युत शिवलकर तथा उद्घाटन श्री वे० न० मुरटगीकर प्रिंसपल आदर्श वनिता विद्यालय मडगांव ने किया। मुख्य वक्ता श्री माधव गडकरी सम्पादक गोमन्तक दैनिक थे।

सभी वक्ताओं ने विदेशी मिशनरियों के कुचक्र तथा अन्य अराष्ट्रीय तत्वों की गतिविधियों की ओर आकर्षित किया। अस्पृश्यता एवं पिछड़ेपन को दूर किया जाना चाहिये। ये हिन्दू समाज के माथे पर एक कलंक है। समता व एकता के बिना देश कभी भी मजबूत नही बन सकता।

गोवा में फैली जातीयता, पाश्चात्य प्रभाव और विदेशियों के द्वारा फैलाये जाने वाले भ्रम को दूर करो। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने राष्ट्र को जोड़ने एव अज्ञानता व अविद्या को दूर करने के लिये रचनात्मक कार्यक्रम अपनाया है।

श्री गडकरी जी ने आश्वासन दिया कि आर्यसमाज के लिये उनका पूर्ण सहयोग मिलेगा। श्री शिवलकर जी ने घोषणा की कि वे अपना जीवन समाज के कार्यों में ही लगायेंगे। उन्होंने आर्य समाज के उद्देश्यों एवं कार्यक्रम पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला।

—रामप्रसाद सैनी, मन्त्री

—आर्यसमाज सीहोर म० प्र० प्रधान श्री विष्णुदत्त जी मिश्र, मन्त्री श्री छोटे लाल जी, कोषाध्यक्ष श्री जगन्नाथ प्रसाद जी।

—आर्यसमाज बसियाना मुजफ्फर नगर-प्रधान—श्री सुखवीरसिंह जी, मन्त्री—श्री रिसालसिंह जी।

—आर्यसमाज लक्ष्मीपुर बरहेला पूर्णिया-प्रधान—श्री बलदेव जी आर्य, मन्त्री—श्री सरयु गुप्त।

### उत्सव

—आर्यसमाज उतरौला (गोंडा) का वार्षिकोत्सव १५ फरवरी से १८ फरवरी १९६९ तक होगा। ठा०इन्द्रदेवसिंह भजनोपदेशक अपना पता लिखें।

—मन्त्री

—आर्य उप प्रतिनिधि मण्डल कुराल सौरआपुर के तत्वावधान में आर्यसमाज बमहा, हाजीपुर, शाहजहाँपुर का सम्मिलित महोत्सव १६ से १९ जनवरी तक मनाया जायगा। —देवनसिंह मन्त्री

—आर्यसमाज डिबाई (मेरठ) ने २५ फरवरी से ३ मार्च तक यजुर्वेद से यज्ञ करना निश्चित किया है। यज्ञ प्रेमियों को सम्मिलित हो सहायता करनी चाहिये। —प्रधान

आर्यों को स्कूलों में अपनी जाति न लिखाकर आर्य ही लिखाना चाहिये।

—बलदेवसिंह आर्य

—आर्यसमाज बिधूना ने २५ दिसम्बर को श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया। —मन्त्री

—श्री प० द्वारकाप्रसाद उपदेशक ने आजमगढ़ जिले के अनेक गाँवों में वैदिक धर्म प्रचार किया।

—मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

—१५ दिसम्बर को आर्य उप प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर की ओर से श्री प० आत्माराम जी पाण्डेय की अध्यक्षता में जिला आर्य सम्मेलन हुआ।

—देवनसिंह मन्त्री

—२२ दिसम्बर के साप्ताहिक अधिवेशन में आर्यसमाज मैनपुरी ने अपने कर्मठ अन्तरंग सदस्य श्री देवीदयाल जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। —नरेन्द्र मन्त्री

—आर्यसमाज पिपरासी के मन्त्री श्री विष्णुप्रसाद की धर्म पत्नी की मृत्यु पर चम्पारण जिला आर्यसमाज हार्दिक दुःख प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शांति और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। —बी०के० शास्त्री

प० रामदेव शर्मा विद्यावाचस्पति के उद्योग से सिहपुर (चम्पारण) में आर्यसमाज की स्थापना हो गई है। इस के श्री प० नरेन्द्र मिश्र प्रधान और बा० भवानीसिंह जी मन्त्री चुने गये हैं।

—बी० के० शास्त्री

## डा० आनन्द स्वरूप जी का देहान्त !

अत्यन्त दुःख है कि आर्यसमाज बुलन्दशहर के भूतपूर्व मन्त्री, लोकप्रिय और समाजसेवी श्री डा० आनन्दस्वरूप जी शर्मा का देहान्त हो गया। श्री डाक्टर साहब पहले गवर्नमेण्ट सर्विस में रहे, फिर कुछ वर्ष बाद सरकारी नौकरी छोड़कर आपने बुलन्दशहर में ही प्रैक्टिस प्रारम्भ कर दी थी। आप अत्यन्त मधुर स्वभाव के थे। आपके वियोग से स्थानीय आर्यसमाज को बड़ा धक्का लगा है। आर्यसमाज ने अपने साप्ताहिक सत्संग में दिवंगत आत्मा की शान्ति और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

—बनारसीदास शर्मा मन्त्री

### निर्वाचन—

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा शाहजहाँपुर प्रधान-श्री जयेन्द्रपालसिंह बी ए एल.टी उपप्रधान-श्री कृष्णपालसिंह एडवोकेट
" " लक्ष्मीचन्द्र जी
प्रधान मन्त्री-श्री रामपालसिंह 'मित्र'
उप मन्त्री-श्री विद्याधर जी
" " कृष्णदयाल पाराशर
कोषाध्यक्ष-श्री राजाराम जी वैद्य

—रामपालसिंह विद्यावाचस्पति मन्त्री

### १०८ श्री दर्शनानन्द जयन्ती

आर्यजगत के क्षेत्र में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो स्व० श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के नाम और काम से परिचित न हो, अतः सभी आर्यसमाजों आर्य संस्थाओं का कर्तव्य है कि ता० १३-१-६९ ई० को उनका पवित्र जन्म दिवस मनाकर आर्यसमाज के प्रचार कार्य को आगे बढ़ावें महाराज का जन्म जगरांव जि० लुधियाना पंजाब में माघ बदि १० सं० १९१८ वि० को हुआ था। अब ता०१३-१-६९ को उनके जन्म को १०७ वर्ष होंगे।

—रामगोपाल आत्रेय आर्य
महोपदेशक गुरुकुल जि० हरद्वार

### सिंहावलोकन
( पृष्ठ ७ का शेष )

युक्ति और प्रमाण पूर्वक पुष्टि ही किया है, अपितु यूरोपीय लेखकों के शतशः उद्धरणों द्वारा अपने मत की पुष्टि भी की है। इस प्रकार भाषा विज्ञान के क्षेत्र में प० भगवद्दत्त की देन को नितान्त मौलिक एवं क्रान्तिकारी कहा जा सकता है। अपने वैदिक वाङ्मय का इतिहास प्रथम भाग के द्वितीय परिवर्धित और संशोधित संस्करण में भी प० भगवद्दत्त ने भाषा शास्त्र विषयक एक नवीन अध्याय जोड़कर उस ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बना दिया है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि यद्यपि आर्यसमाजी विद्वानों के भाषा शास्त्र विषयक मौलिक सिद्धान्त संसार के ख्याति प्राप्त भाषा शास्त्रियों द्वारा प्रमाणित और सम्मानित नहीं हुए हैं। परन्तु यह निश्चय है कि इन सिद्धान्तों में सत्यता है, और वे ठोस प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत किये गये हैं। इन ग्रन्थों को जो कोई पढ़ेगा, वह इन सिद्धान्तों की सत्यता का कायल हुये बिना नहीं रहेगा। यह अवश्य है कि आर्यसमाजी लेखकों का भाषा विषयक समग्र विवेचन हिन्दी के माध्यम से हुआ है-अतः यूरोप के अधिकांश विद्वानों का ध्यान उस ओर नहीं जा पाया है। प० भगवद्दत्त ने तो इस विषय में दृढ़ता पूर्वक यहूदी ईसाई पाश्चात्य लेखकों के पक्षपात तथा पूर्वाग्रह युक्त मतों की कटु आलोचना की है तथा घोष, गुप्त आदि भारतीय भाषा शास्त्रियों को भी अपने यूरोपीय गुरुओं का उच्छिष्ट भोजी ही सिद्ध किया है। आवश्यकता इस बात की है कि प० भगवद्दत्त द्वारा प्रस्तुत स्थापनाओं पर निरपेक्ष भाव से मनन और विचार किया जाय तथा निष्पक्ष दृष्टि से उस पर निर्णय दिया जाय।

### गहरे पानी पैठ
( पृष्ठ ६ का शेष )

करने वाले, अखिल जनसमुदाय को धारण करने वाली पृथिवी सम्पूर्ण मानव समाज के लिए अभिन्न और अविभाज्य ग्रह के समान है। वेद का यह आदेश विश्व एकता के लिये कितना अच्छा है।

संसार के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिये देखिये! वेद कितनी सुन्दर एवं व्यावहारिक व्यवस्था प्रस्तुत करता है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते। (ऋग्वेद १०.१९१.२)
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ (ऋग्वेद १०.१९१.३)
हों हृदय सम के सदा संकल्प भी अविरोध सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥ (अथर्व ३.३०.३)

अर्थात् भाई भाई से द्वेष न रखे और बहन बहन से द्वेष न करे। एक मन और एक व्रत वाले होकर उत्तम रीति से भाषण करो।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥ (अथर्व ३.३०.१)

अर्थात् सहृदय, समान मन वाला, द्वेष रहित तुम्हें मैं करता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक दूसरे को प्रेम करे, जैसे गाय नवजात बछड़े को प्यार करती है।

—२२ दिसम्बर को आर्यसमाज कस्तूरबा मार्केट शोलापुर मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज नवाबगंज कानपुर का वार्षिकोत्सव २० से २२ दिसम्बर तक समारोह से मनाया गया।

—राजकिशोर शुक्ल मन्त्री

—अश्लील प्रचार निरोध अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य सेवा संघ, रसूलपुर जाहिद, पो० रसूलपुर कनौनी (आमी) मेरठ की ओर से दि० १४-१२-६८ से १९-१२-६८ तक प्रचार कार्य का आयोजन किया गया इस प्रचार कार्य मे जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ के भजनोपदेशक श्री हरस्वरूप आर्य के ईसाई मिशनरियों के कुचक्रो तथा मद्य निषेध पर प्रभावशाली भजन हुए। कई व्यक्तियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की तथा डा० भारतभूषण गुप्ता का यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया।

डा० ओमपाल शास्त्री 'आर्यप्रचेत' मन्त्री

—२३ दिसम्बर ६८ को आर्यसमाज गौतमपुरा जिला इन्दौर में श्री स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस धूम धाम से मनाया गया। एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। —मन्त्री

# सत्य का ग्रहण

[ मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने को किसी भी मूल्य पर तैयार नहीं। ग्रह-निष्कासन तथा सम्पत्ति-विच्छेद की तुच्छ धमकियाँ मुझे महान् उद्देश्य से अलग नहीं कर सकतीं और वह अपने कमरे में दाखिल हो गया। सुरेन्द्र की इस दृढ़ प्रतिज्ञा के पीछे आर्यसमाज की एक पुनीत प्रेरणा थी। ]

★

★श्री वृजनन्दन गुप्त 'ब्रजेश

रेखा १० वर्ष की थी तभी उसका विवाह एक प्रतिष्ठित परिवार में ११ साल के 'शिशु मोहन के साथ सम्पन्न हो चुका था।

यह बात लगभग १९१४-१५ की है। उन दिनों बाल विवाह की प्रथा जोरों पर थी।

सेठ श्यामलाल पुराने विचारों के व्यक्ति थे। रामा पतिदेव का अनुकरण करने मे कैसे पीछे रहती।

६ साल से १० साल तक कन्या देव कन्या रहती है। देव कन्या का कन्यादान करने से लोक प्रतिष्ठा के साथ-साथ असीम पुण्य लाभ मिलता है। गम्भीर विचार विनिमय के बाद पति पत्नी दोनों सहमत हो गये।

'बिटिया के हाथ जल्दी ही पीले कर दिये जायें।

एक दिन धूम-धाम से बरात आयी। मांगलिक गीतों के मध्य आतिशबाजी की रंगीनमा, मधुर वाद्य ध्वनि के बीच द्वाराचार हुआ। उसी रात भांवर का मुहूर्त था।

दो दिन खूब हलचल रही। तीसरे दिन रेखा परायी होकर अपने ससुराल रायपुर चली आयी। परिवार वाले रोते बिलखते रहे।

आज रेखा को विवाहित हुए ५ साल हो गये। अब वह कुछ कुछ समझने लगी सोचने लगी।

दो वर्ष पूर्व मोहन का अकस्मात देहान्त हो गया था। उन दिनों रेखा रायपुर थी। सोहाग की चूड़ी तोड़ दी गई, माथे का सिन्दूर पोंछ दिया गया। जाने क्या क्या हुआ। पर उसे क्या अनुभव वह शान्त थी, रोई तो वह थी सबके साथ, पर हृदय के साथ नहीं,

६ मास पश्चात वह नागपुर भेज दी गई। तब से यहीं है, अब उसे माँ बाप के लाड प्यार मे उपदेश की गन्ध आने लगी। वात्सल्य मे दया के दर्शन होने लगे।

दो वर्ष और बीते।

अब वह अपने को असहाय अनुभव करने लगी थी। माँ उसके सुख दुःख का बहुत ध्यान रखती। पर जैसे वह सब ओर से उदासीन हो गई। रायपुर से भी कोई बुलावा इस बीच नहीं आया।

सुरेन्द्र ग्रीष्मावकाश में घर न जाकर सीधे नागपुर चला आया था। वह अपने मामा के पास बिलासपुर मे पढ़ता था।

रेखा रायपुर को जाने को राजी हो गई और अश्रुपूर्ण हृदय से माँ बाप ने दुखिया बेटी को विदा किया।

रेखा अपने कमरे में अपना पाठ याद कर रही थी, जिसे कल सुरेन्द्र ने पढ़ाया था। सुरेन्द्र लगभग २ माह से रेखा को पढ़ाने में सपरिश्रम संलग्न था।

सुरेन्द्र की दिनचर्या मे मुख्य काम था रेखा को पढ़ाना। और रेखा का मुख्य काम रह गया था पढ़ना केवल पढ़ना। सुरेन्द्र बिलासपुर छोड़ चुका था।

३ साल से अधिक परिश्रम के बाद रेखा मिडिल की परीक्षा मे बैठी और प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुई। अब वह स्वस्थ और प्रसन्नमुख नजर आती थी।

सुरेन्द्र रेखा से ४ वर्ष बड़ा था, इस वर्ष उसने बी० ए० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास कर ली थी।

सुरेन्द्र बड़ी रात गये घर लौटा।

गांधी पार्क मे आर्यसमाज की ओर से एक सभा आयोजित की गई थी।

समाज सुधार के प्रसिद्ध कर्मठ नेता प० कृपाराम आचार्य अपने ओजस्वी भाषण मे नवयुवकों को सन्देश दे रहे थे।

तुम्हे अपनी सुख सुविधा के साथ साथ समाज से उपेक्षित उन सैकड़ों हजारों नवयुवतियों के सम्बन्ध मे भी सोचना चाहिए। जो बाल-विवाह की चक्की मे पिस कर असमय ही अपने जीवन सुख मे वंचित रह गई?

याद रक्खो धर्म की सीमित रेखाओं के भीतर रह कर ही तुम सच्चे अर्थों मे धर्म रक्षक नहीं बन सकते। आगे बढ़ो धर्म की परिभाषा विराट है। समयानुसार नैतिकता और सत्य की कसौटी पर धर्म की, आस्थायें मान्यतायें नवीन परिवेश मे निखरतीं हैं। इस तथ्य को समझकर सनातन धर्म का संरक्षक ही सच्चा संरक्षक है। और आगे बढ़ो। धर्म मे नारी का स्थान प्रथम है पुरुष का द्वितीय। नारी सृष्टि है, पुरुष सकल्प। सृष्टि के बिना सकल्प अधूरा है।

अब तुम समझ गये होगे—धर्म पूर्ण समाज का निर्माण तभी सम्भव है जब धर्म और समाज दोनों की अधिष्ठात्री नारी का धर्म-समाज के उन्नायक पुरुष द्वारा उचित सम्मान हो।

'बोलो हृदय से बोलो क्या तुम नारी के पुनरुद्धार रूप धर्म की नवीन उद्यान कड़ी के निर्माण मे कृत सकल्प हो, यथार्थ सत्य से सहमत हो?

तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम सत्य धर्म की शपथ लेकर महान् सत्कार्य मे यथाशक्ति हाथ बटाओ।

'हम तैयार हैं। आर्यसमाज मे उपेक्षित, विक्षिप्त नारी का जिस तरह उत्थान सम्भव होगा, हम प्राण प्रण मे अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे हमे मार्ग दर्शन कराइये' नवयुवकों की भीड़ एक साथ चिल्लाई।

आचार्य का मुख प्रफुल्लित हो उठा

मुझे आप सबसे ऐसी ही आशा थी। इस महायज्ञ स्थल में प्रविष्ट होने के लिये आपको पहले त्याग की कसौटी पर खरा उतरना होगा। अत वे अविवाहित नवयुवक आगे आयें जो रूप मे ईश्वर का मोह छोड़कर पवित्र प्रेम दान देकर बाल विधवाओं को धर्म पत्नी के रूप मे ग्रहण करने को सहर्ष तैयार हों?

'सभा मे सन्नाटा छा गया। दो हजार की भीड़ में २० नवयुवक आगे बढ़े। सुरेन्द्र सबसे आगे था।

उस रात सुरेन्द्र को नींद नहीं आई।

रेखा चौंक कर जगी, बिस्तर पर उठ कर बैठ गई अब यह सचेत होकर सुन रही थी।

सुरेन्द्र का संक्षिप्त उत्तर था—मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने को किसी भी मूल्य पर तैयार नहीं। ग्रह निष्कास उद्देश्य से अलग नहीं कर सकतीं औ वह अपने कमरे मे दाखिल हो गया।

रेखा को सुरेन्द्र के कमरा बन्द क की आहट होती सुनाई दी। अब व जीने से सट कर खड़ी हो गई।

रतना धीरे धीरे सुरेन्द्र को फुसल रही थी, 'यदि रेखा मान जाय तो

'तो क्या'

'लड़के की बात रह जायगी। व मर्यादा पर भी धक्का न आयेगा रामायण मे भी तो लिखा है, राम-सख सुग्रीव ने अपनी भ्राता पत्नी तारा विवाह किया था।

रेखा समझ रही थी 'सुरेन्द्र बा भावावेश मे जो प्रतिज्ञायें होती हैं उनकी पूर्ति बहुत कम होती है। निर्भ होकर किसी बात के सम्बन्ध मे निर्ण कर लेना पुरुष समाज के लिये बा हाथ का खेल है, पर निभाना बहु कठिन है।

'रेखा मेरा निर्णय बदल नहीं सक

'सच?'

करके दिखाऊँ तब तो मानोगी?

आज प्रथम बार रेखा ने सुरेन्द्र मुख से अपना नाम सुना था। वह गद्‌गद् हो उठी। तो मैं भी तुम्हारे कार्य साधक बनूंगी, रेखा ने पूर्ण निश्च कर लिया। उस समय सुरेन्द्र कुछ न समझ सका।

दो माह बाद फाल्गुन के प्रथम पक्ष की द्वितीया की दोपहर मे रस-राज बसन्त ने रेखा का माथा सिन्दूर से पुन अभिषिक्त कर दिया।

आर्य मन्दिर मे पुनीत वेद ध्वनि के बीच सुरेन्द्र ने रेखा का पाणिग्रहण किया।

पुनीत मांग की भीख मगल मुहूर्त मे पूरी हुई।

अब रेखा पुन जीवन के सुरम्य पथ पर अग्रसर थी। उसने घर पर ही गृह-शिल्प का महिला विद्यालय खोल रखा था।

सुरेन्द्र कालेज मे संस्कृत का अध्यापक था। दोनों एक दूसरे में सुखी थे।

★

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

पौष २२ शक १८९० माघ कृ० ८
( दिनांक १२ जनवरी सन् १९६९ )

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य । २५९९३ तार । "आर्यमित्र

# अमृत वर्षा

## महर्षि दयानन्द ने कहा था—

★जो दुराचार से पृथक नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिसकी आत्मा योगी नहीं और जिसका मन शान्त नहीं है वह सन्यास ले के भी अज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता।

* * *

★ब्राह्मण ही को सन्यास ग्रहण का अधिकार है क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है।

—सत्यार्थ प्रकाश, स. ५

# काशी में एक आर्य महिला को वेदाचार्य की उपाधि

आर्य जगत् मे यह समाचार बड़े हर्ष के साथ सुना जायेगा, कि संस्कृत विश्व' विद्यालय वाराणसी के दीक्षान्त समारोह ता० ३१ दिसम्बर १९६८ को श्रीमती देवी शास्त्री को वेदाचार्य की उपाधि काशी के विद्वान् देंगे। यह इतिहास मे पहली घटना है, कि काशी से एक महिला वेदाचार्य की उपाधि ग्रहण करे। साथ ही हर्ष का विषय यह भी है कि श्रीमती देवी प्रथम उत्तीर्ण हुई है। अत उन्हे स्वर्ण पदक विश्वविद्यालय देगा। और यह भी समाचार प्राप्त हुआ है कि काशी के विद्वानों ने श्रीमती देवी को आचार्य परीक्षा का परीक्षक बना दिया है।

श्रीमती देवी शास्त्री जिला मैनपुरी भोगांव निवासी श्री दयानन्द जी की सुपुत्री हैं।

श्रीमती देवी जी के बड़े भाई डा० सुरेन्द्रदेव जी एम० ए०, पी० एच० डी० अध्यक्ष संस्कृत विभाग टाउन डिग्री कालिज बलिया है जिन्होने गुरुकुल वृन्दावन से स्नातक होने के बाद अपनी बहिन श्रीमती देवी को पढ़ाया। श्रीमती जी के छोटे भाई एक बड़े व्यापारी राजेन्द्रदेव आर्य हैं।

वेदाचार्य श्रीमती देवी जी आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री आचार्य विश्वश्रवा: जी एम० ए० वेदाचार्य की धर्मपत्नी हैं आपके तीन पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। ज्येष्ठ पुत्र वेदश्रवा' जी डबल एम०एस० सी० हैं। द्वितीय पुत्र इन्द्रश्रवा इण्टर साइन्स में पढ़ रहा है। ज्येष्ठ पुत्री विश्वभारती एम० एस०सी० में पढ़ रही है और दूसरी पुत्री विश्वकीर्ति बी०एस०सी० में पढ़ रही है। कनिष्ठ पुत्री विश्वज्योति ६ श्रेणी मे है। श्रीमती देवी जी के सभी पुत्र-पुत्रियां संस्कृत बोलते हैं और संस्कृत जानते हैं।

इस समय श्रीमती देवी बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी मे पी-एच डी० कर रही हैं। हम आर्यजगत की ओर से अभिनन्दन और स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि जिस प्रकार श्रीमती देवी जी ने वेद मन्त्रों का साक्षात करने वाली लोपामुद्रा आदि ऋषिकाओं तथा गार्गी और विद्योत्तमा आदि देवियों के इतिहास को दुहराया है इसी प्रकार अन्य आर्य महिलायें भी इसका अनुकरण करेंगी।

हमारा समस्त आर्यजगत् से निवेदन है कि वह वेदाचार्य श्रीमती देवी शास्त्री का अभिनन्दन और स्वागत करे।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा उप मन्त्री

# साहित्य-समीक्षा

## शुभ लक्षण

आर्यसमाज की ओर से उच्चकोटि का साहित्य आजकल बहुत कम बल्कि नहीं के समान प्रकाशित हो रहा है। परन्तु श्री विद्याभास्कर प० उदयवीर जी शास्त्री संन्यासाश्रम गाजियाबाद के वेदान्त-दर्शन पर विद्योदय भाष्य और सांख्य पर सांख्य सिद्धान्त को देखकर हृदय आशा से भर गया। बहुत ही प्रसन्नता हुई। सांख्य सिद्धान्त सांख्य दर्शन पर एक स्वतन्त्र विचारपूर्ण ग्रन्थ है भाष्य सांख्य पर अलग छपा है।

उक्त विद्वान् ने सप्रमाण युक्ति युक्त ऋषि दयानन्द के विचारों का समर्थन किया है। अद्वैत प्रतिपादक बतायी जाने वाली श्रुतियों का ऐसे अच्छे ढंग से सरल रूप में विवेचन किया है कि मायावाद की सारी माया उड़ जाती है। अर्थों में कहीं खींचतान नहीं। युक्तियों में कहीं हठ और हेत्वाभास नहीं। दर्शन का पूरा रहस्य समझ मे आ जाता है। पण्डित जी की स्वपक्ष प्रतिपादनशैली बड़ी हृदयहारिणी है। आकर्षक है। प्रभावशालिनी है। सांख्य सिद्धान्त को पढ़कर फिर कोई भी विद्वान् सांख्य को अनीश्वरवादी नहीं कह सकता। प्रत्येक आर्यसमाज और आर्य संस्था में पण्डित जी के सब ही ग्रन्थ रखने योग्य हैं।

विद्यानुदय वीरोऽस्ति सर्वविद्वज्जन प्रिय· यस्योदयेन विदुषां निर्मलाभाति भारती वेदवेदाङ्ग मर्मज्ञः दर्शनेषु कृतश्रम अपश्युदयवीरोऽयम् आर्य वृन्दं सुपूजित

## गुरुकुल पत्रिका विशेषांक

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरद्वार से प्रकाशित होने वाली (संस्कृत मे) गुरुकुल पत्रिका का विशेषांक बहुत ही सुन्दर निकला है। ओज पूर्ण विद्वत्ता से भरे लेखों से यह अङ्क पूर्ण है। प्रत्येक लेख ही नये-नये भावों को दर्शा रहा है। श्री मुनिदेव राज जी का ज्योतिष सम्बन्धी लेख, चार्वाक दर्शन के विषय मे लेख स्वप्न विज्ञान सम्बन्धी लेख आहार के सम्बन्धी लेख पढ़ने और विचारने योग्य हैं। हिन्दी में भी लेख बहुत सुन्दर हैं, पत्रिका का हिन्दी भाग और संस्कृत भाग दोनों ही उपयोगी सामग्री से पूर्ण हैं। मुख पृष्ठ का चित्र भी आकर्षक है।

—विहारीलाल शास्त्री

## ग्राम पडैंचा (शाहजहाँपुर) मे १०५ मलकानो की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक प० गंगादयाल ने ग्राम पडैंचा जिला शाहजहा पुर में १५ १२ ६८ को एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें १०५ मलकाने राजपूतों ने इस्लाम मत को त्याग कर वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर अपनी पुरानी तोमर राजपूत जाति में प्रवेश किया। शुद्धि संस्कार प० दीपचन्द्र जी ने कराया। ग्राम मे दो दिन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से शुद्ध होने वाले भाइयों का स्वागत किया तथा ग्रामवासियों को उनके सहयोग के लिये धन्यवाद दिया।

—द्वारिकानाथ, प्रधान मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये उदयभानु आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

# अध्यात्म-सुधा

# जब से पाया दर्शन तेरा, हुआ वसन्ती जीवन मेरा।

## वेद मन्त्र-

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक
इन्मही देवस्य सवितुः
परिष्टुतिः॥

[ऋ० ५-८१-१]

भावार्थ—(विप्राः) योगी (मन.) मन को (युञ्जते) युक्त करते हैं (उत) और (धियः) बुद्धि को (युञ्जते) युक्त करते हैं (बृहत·) महान् (विपः+चित·) सर्वज्ञ (विप्रस्य) प्रबुद्ध (सवितु. देवस्य) सर्वान्तर्यामी भी देव की (मही परि स्तुति.) बृहत महिमा के साक्षात्कार के लिये (वयुना-वित्) समस्त प्रयत्नों का ज्ञाता (एकः इत) एकाकी ही (होत्राः) लोक लोकान्तरों को (विदधे) विशिष्टतयः धारण किये हुये हैं।

व्याख्या—इस संसार में आनन्द पाने के निमित्त मनुष्य इच्छावान् होकर प्रयत्न शील होता है। परमात्मा आनन्दमय है, और उसकी समस्त रचनायें आनन्दमय हैं। सच्चिदानन्द जहाँ-जहाँ पर है, वहाँ-वहाँ पर आनन्द केवल आनन्द ही आनन्द है। वह सर्व व्यापक है, भीतर बाहर ओत प्रोत है, प्रकृति में, जीवों में सर्वत्र सर्वत व्याप्त है, अतएव अणु-अणु में आनन्द समाहित है। मनुष्य सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने के नाते और अपनी वृत्तियों को वाह्यमुखी रखते हुये परमेश्वर के आनन्द का रसास्वादन करने के लिए प्रकृति की ओर आकृष्ट होता है। परमात्मा उसके हृदय में बैठा हुआ उसे शिक्षित करता है कि पदार्थ का आवश्यकतानुसार सेवन करता हुआ आनन्द रस पान कर किन्तु, उसमें आसक्त मत हो। लोभ से ग्रसित हो जाने के कारण जब मानव अपनी अन्तर्ध्वनि की अवहेलना करता है और छल कपट हिंसा से परिग्रह किये चला जाता है तो वास्तव मे जो पदार्थ उसके नहीं हैं, उनको अपना मानकर, अहंकार के वशीभूत होकर जब अन्याय और अत्याचार की पराकाष्ठा तक पहुंचने लगता है तो न्यायकारी अपनी न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत उसे दण्डित करता है। वह पीडित होता है त्राहि त्राहि करता है। वही पदार्थ जो उसके सुख के कारण थे, दुःख के हेतु बन जाते हैं। आनन्दमय परमात्मा आनन्दमग्न रहता है। प्रकृति आनन्द रस से युक्त रहती है। केवल चेतनधारी कर्मानुसार दुःख और सुख को भोगता रहता है।

भोग और योग मानव जीवन की दो पद्धतियाँ हैं। भोगी जन भोग में लिप्त रहते हैं। भोगों मे लिप्त होने के कारण और उसे ही सर्वस्व सुख साधन समझकर वे उनमें नितान्त आसक्त रहते हैं। विषयों, जीवों और पदार्थों की आसक्तियाँ उन्हें अनर्थ की ओर प्रेरित करती रहती है। वे पाप पर पाप किये चले जाते हैं, और उसके कटु फल जब उन्हें चखने पड़ते हैं तो वे दुर्भाग्य को और अपने जीवन को कोसने लगते हैं।

बाहर प्रकृति में तेजस्वी सूर्य्य प्रकाशमान रश्मियों से लोक लोकान्तरों को ज्योतित करता हुआ साधकों को प्रमुदित करता रहता है किन्तु उल्लुओं

—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा उप-मन्त्री

और चिमगादड़ों को उसमें सरसता नहीं मिलती। शुभ्र ज्योत्सना जड़ चेतन सबको आह्लादित करती है, किन्तु दुःखी मानव का चूंकि अन्तर अशान्त होता है इसलिये वह उस चाँदनी में भी कोई मस्ती प्राप्त नहीं करता। सरिताओं के शीतल जल भी उसकी अशांत अग्नि को नहीं बुझा पाते। प्रकृति का समस्त सौंदर्य भी ऐसे पापी को रिझाने में सार्थक नहीं होता।

वसन्त ऋतु का आगमन हुआ। धरती पुष्पों से लद कर दुल्हिन बन गई। जगत में एक नव उन्माद का सचार हुआ, किन्तु जीवन संग्राम में परास्त एक भोगी दु.खी बनकर बैठा हुआ रुदन कर रहा था। हंसते फूल उसे बुला रहे थे—सुरभित सुमन आनन्द का निमन्त्रण दे रहे थे, और एक वह था जो घुटनों में सिर रखकर निराशात्मक भावनाओं से जीवन उत्सर्ग के विषय में विचार कर रहा था। उस आनन्दमय वातावरण में उसे प्रतीत हुआ कि एक दिव्य संगीत गूंज रहा है।

वन उपवन में यौवन आया,
आये आज वसन्ती मेले।
झुरमुट में छिपकर क्यों बैठे,
मेरे प्रियवर आज अकेले॥
हंसते फूल बुलाते कहते,
हे मानव तुम मुस्काओ।
आज वनश्री के स्वागत में,
जीवन का मधुगान सुनाओ॥

किन्तु उस व्यथित मानव का अन्तःकरण यह कह रहा था.—

क्या गाऊँ ऋतुराज में,
जीवन में उल्लास नहीं है।
सूख गई है आनन्द सरिता,
कोई भी मृदुहास नहीं है।
जल जाए यह दुनिया सारी,
जिसमें सच्चा प्यार नहीं है।
यहाँ दिल ठुकराये जाते हैं,
और कोई भी दिलदार नहीं है॥

( शेष पृष्ठ १० पर )

## मधुमय हो गया जीवन मेरा

★

जब से दर्शन पाया तेरा।
मैं तो हो गया प्रभु जी तेरा॥

दूर हुईं सारी कटुताएं,
मधुमय हो गया जीवन मेरा।
दूर हुईं सारी चिन्ताएं,
निश्चिन्त हो गया जीवन मेरा॥

दूर हुईं सब विभीषिकाएं,
निर्भय हो गया जीवन मेरा।
दूर हुईं सब मलिनताएं,
निर्मल हो गया जीवन मेरा॥

दूर हुईं सब तिमिरताएं,
ज्योतित हो गया जीवन मेरा।
दूर हुईं सारी तृष्णाएं
तृप्त हो गया जीवन मेरा॥

दूर हुईं सारी शंकाएं,
सरस हो गया जीवन मेरा।
दूर हुईं सब न्यूनताएं,
सफल होगया जीवन मेरा॥

वसन्त ऋतु है जब-जब आती,
तेरी सुन्दरता दिखलाती।
धरती फूलों से लद जाती,
कितनी सुन्दर सबको सुहाती॥

गुन गुन करता भंवरा आता,
तेरे ही प्रभु गीत सुनाता।
फूलों से रस पाकर गाता,
धन्यवाद है आनन्ददाता॥

जैसे फूलों में है खुशबू
वैसे ही तो मुझ में है तू।
जहाँ जहाँ मैं देखूं जग में,
तू ही तू, प्रभु तू ही तू॥

जब से पाया दर्शन तेरा,
हुआ वसन्ती जीवन मेरा।
साधना की कलियाँ महकीं,
हुआ सुगन्धित जीवन मेरा॥

देख-देख कर तेरे तप को,
हुआ तपस्वी जीवन मेरा।
जब बना निष्कामी सुख का,
हुआ यशस्वी जीवन मेरा॥

टूट गये सब मोहमय बन्धन,
मुक्त हुआ यह जीवन मेरा।
'वसन्त' मस्ती छाई ऐसी,
हुआ आनन्दित जीवन मेरा॥

जब से दर्शन पाया तेरा।
मैं तो हो गया प्रभु जी तेरा॥

●

# संवत्सराः त्वा वर्धयन्तु

लखनऊ—रविवार १९ जनवरी, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत् १९६०,८५,३०,६८

वसन्त का पावन पर्व प्रत्येक वर्ष आता है और सृष्टि संवत का वर्धन कर चला जाता है। भारत वर्ष में ही नहीं विश्व के प्रत्येक भाग में ऋतुराज का सर्वत्र स्वागत होता है। क्योंकि वसन्त जीवन में नव उल्लास भर जाता है। प्रकृति की मनोरम छटा मनुष्य को मुग्ध कर देती है। सुन्दर सुवासित पुष्प आनन्दप्रद बनकर आत्म विभोर कर देते हैं। एक ओर उनका दिव्य सौन्दर्य अपनी ओर आकृष्ट करता है, दूसरी ओर उनकी सुगन्धि मस्त बना देती है। और विवेकशील मनुष्य इस सरस वसन्त ऋतु के दाता परमेश्वर के आनन्द स्वरूप की कल्पनामात्र से ही नत मस्तक हो जाते हैं।

जो साधक हैं वे तो सर्वत्र आनन्द कामी होते हैं। आनन्दमय विश्व में वे सर्वत्र आनन्द की खोज करते हैं और प्रत्येक पदार्थ में आनन्द दाता की दिव्य झलक देखते हैं। वसन्त ऋतु में साधारण कवि तो बाह्य दर्शन से मुग्ध होकर भौतिक स्तर तक ही अपने को सीमित रखता है। उदाहरणार्थ वसन्त ऋतु में जब एक गीत कार ऐसा गीत बनाता है—

आया वसन्त सखी विरहा का अन्त
बन बन में छाई बहार'

तो उसकी दृष्टि केवल सीमित होती है, और वह वसन्त का मूल्याङ्कन केवल मनो विनोद अथवा कामोद्दीपन तक सीमित रखता है, किन्तु जो इससे थोड़ा ऊपर उठते हैं, जो फूलों के सौंदर्य में परमात्मा का सौन्दर्य देखते हैं। जो फूलों की सुगन्धि में परमात्मा की सुगन्ध की अनुभूति करते हैं। सन्त कबीर जब आनन्दप्रद परमात्मा की अनुपम कृतियों को भौतिक चक्षुओं से देखकर कहता है, "सुभान तेरी कुदरत, मैं जाऊँ कुरबान" तो उस परमात्मा को अपने समीपस्थ होने में उसे कोई सन्देह नहीं रह जाता है, और वह पुकार उठता है—

'मुझको कहाँ तू ढूंढे बन्दे,
मैं तो तेरे पास रे।
मैं तो तेरे अन्दर रमता,
ज्यों फूलन में बास रे॥'

इसलिए अध्यात्म पथ पर चलने वाला ही आनन्दमय परमात्मा के आनन्द की सर्वत्र अनुभूति प्राप्त करता है। वह विचार मग्न होकर विचार करता है, कि जिस परमात्मा ने इस पुनीत दिवस पर सृष्टि की उत्पत्ति की। औषधियों वनस्पतियों, पशु पक्षी से युक्त विश्व में जब युवा मानव की उत्पत्ति हुई और उसने अपने सम्मुख आनन्द से युक्त एक भौतिक संसार देखा तो इस में क्या सन्देह रह जाता है, कि परमात्मा ने अपने इस सब श्रेष्ठ मनुष्य को संसार में आनन्दपान के निमित्त ही भेजा है। वेदानुसार यह जगत् मधुर है, यहाँ ऋतुयें मधुर हैं, जल वायु धरती आकाश अग्नि सब मधुर हैं। नदियाँ सागर, औषधियाँ वनस्पतियाँ सब मधुर हैं—

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
(ऋ० १।९०।६,७,८ य० १३। २७,२८,२९)

जब सब कुछ मधुर है तो मनुष्य क्यों न मधुर हो इसलिये वेद ने कहा—

मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः॥
(अ० १-३४ ३)

अर्थात् तेरा आना और जाना दोनों मधुर हो, तेरी वाणी मधुर हो। पूरा जीवन अपने लिये और सबके लिए मधुरता बिखेरने वाला हो इसलिये पूर्ण रूपेण मधुर हो जा। बाहर की झूठी मधुरता ही नहीं वरन भीतर की मधुरता को बाहर दें। 'यदन्तरम् तद् बाह्यम् यद्बाह्यम् तदन्तरम्' अन्दर बाहर एक जैसा होने के लिए ही तो वेद ने कहा था—

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वा मूले मधूलकम्॥
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि॥
(अ० १/३४/२)

आज जगत् में जो मधुरता नहीं है उसमें परमात्मा का नहीं वरन् इस सर्व श्रेष्ठ प्राणी का पूर्ण रूपेण दोष है। आज जीवन में जो उलझन है जो अशांति है वह मनुष्य कृत है। मनुष्यों के दुष्कर्मों की प्रति-क्रिया स्वरूप न्यायकारी की न्याय व्यवस्था के अन्तगत प्रदत्त दण्ड है। परमात्मा ने प्रत्येक पदार्थ शुद्ध स्वरूप में प्रदान कर रखा है। असली को नकली मनुष्य बना रहा है। दूध में परमात्मा नहीं मनुष्य पानी मिलाता है। प्रत्येक शुद्ध पदार्थ की विकृति का पूर्ण उत्तरदायित्व इस मनुष्य पर है।

राष्ट्रिय सामाजिक पारिवारिक व स्वत जीवन में जो अशान्ति और दुःख हैं, उसके मूल में मनुष्य का अज्ञान और अज्ञान के फलस्वरूप किये जाने वाले कुकर्म हैं। वसन्त का पावन दिवस प्रत्येक वर्ष जीवन का आनन्द सन्देश देने के लिये ही आता है। परम पिता परमात्मा बुद्धिशील मानव को बाह्य रूप से भी एक दिव्य प्रेरणा देता है कि जैसे पुष्प की सुगन्धि और सौंदर्य तुझे खींचते हैं वैसे ही तू भी अपने जीवन को ऐसा ही सुन्दर और सुरभित पुष्प बनाले ताकि विश्व उससे आकर्षित होकर तेरे समीपस्थ आये और आनन्द प्राप्त करे।

जिस दिन 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नाद गुञ्जाने वाले और अपने को आर्य कहने वाले वसंत के इस पावन सन्देश को आत्मना ग्रहण कर लेंगे तो न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में वसन्त का सदैव निवास रहेगा वरन् सामाजिक जगत् का हेमन्त भी वसन्त में परिवर्तित हो उठेगा और सम्पूर्ण विश्व द्रुतगति से वसन्ती आभा में दिव्यवान होता दिखाई देने लगेगा।

●

## सत्य पथ पर

★

बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष श्रीमती इन्दिरा गांधी जी प्रधान मन्त्री भारत सरकार द्वारा जो नव वर्ष सन्देश प्रसारित किया गया है, उसके प्रथम पृष्ठ पर बहुत ही सुन्दर ढंग से देवनागरी अक्षरों में एक वेद मन्त्र छापा गया है। जो वेद मन्त्र प्रकाशित किया गया है वह यजुर्वेद के ३६ वें अध्याय का १८वाँ मन्त्र है और मित्रता के दृष्टिकोण को लिए हुए है। भारत की प्रधान मन्त्री ने वेद की सार्वभौम और परोपकारक शिक्षाओं का इधर से जो मूल्यांकन और प्रयोग किया है, वह नितान्त सराहनीय है और हम उन्हें बधाई देते हैं।

हम पाठकों का ध्यान इस ओर भी आकृष्ट करना चाहेंगे कि अभी कुछ मास पूर्व राष्ट्र संघ में दिये गये आपके भाषण में ऋग्वेद के 'समानो मन्त्र' का उल्लेख किया गया था, जिसकी सराहना पूरे देश में की गई थी।

इस नवीय ज्ञान वेद ही आर्य संस्कृति के गौरव का मन्दिर रहा है। जब तक विश्व वैदिक वाङ्मय की महत्ता को स्वीकार नहीं करता और राष्ट्रिय स्तर पर उसका सघन प्रसार नहीं होगा, तब तक विश्व शान्ति की स्थापना नहीं होगी। जिस वेद ज्ञान के कारण भारत जगतगुरु कहलाता था, उसके विश्व प्रसार के लिए उसका पुनः शुभारम्भ हमारी सरकार द्वारा होना चाहिये। वेदमन्त्र देवनागरी व अन्य भाषाओं में अर्थ सहित प्रकाशित किए जाएं ताकि विश्व वेद का वास्तविक मूल्यांकन कर सके।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को चाहिये कि वे भारत की प्रधान मन्त्री को वैदिक साहित्य विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद सहित उपहार स्वरूप भेंट करें ताकि वे अपने सन्देशों में उसका अधिकाधिक प्रयोग कर सकें।

## भ्रमण प्रोग्राम

सभान्तर्गत सम्पत्ति विभाग के सहायक अधिष्ठाता श्री पं० आशाराम जी पाण्डेय मिर्जापुर निवासी का भ्रमण प्रोग्राम निम्न प्रकार प्रकाशित किया जाता है। उनके पहुंचने पर जायदाद आदि का निरीक्षण और साथ ही आर्य समाज एवं सदस्य का निरीक्षण कराते का कष्ट करें और भरसक प्राप्तव्य धन उपयुक्त सब श्री अधिष्ठाता जी सम्पत्ति विभाग को प्रदान करने की कृपा करें।

| | |
|---|---|
| १८-१-६९ | अ० स० फूलपुर वाराणसी |
| | शाहंशाहपुर " |
| १९-१-६९ | मऊनाथ भंजन |
| २२-१-६९ | तोरन (मिर्जापुर) |
| २५-१-६९ | साहगंज |
| " | जौनपुर |

—श्री विक्रमादित्य 'वासन्त'
सभा उपमन्त्री

# दयानन्द-सप्ताह

## ऋषि बोधोत्सव-पर्व १५ फरवरी को मनायें

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं को विदित हो कि इस वर्ष महा शिवरात्रि पर्व १५ फरवरी १९६९ को पड़ रहा है। अतः सभा ने निश्चय किया है कि "दयानन्द सप्ताह" दिनांक ९ फरवरी से १५ फरवरी १९६९ तक उत्तर प्रदेश में उत्साह पूर्वक धूम धाम के साथ मनाया जाए। सप्ताह का कार्यक्रम शीघ्र आर्यमित्र के आगामी अङ्कों में प्रकाशित किया जायेगा। अतः आर्य समाजों को चाहिए कि इस सप्ताह का कार्यक्रम विशेष उल्लास के साथ मनाने का पुरोगम बनाने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

### छपते-छपते

ज्ञात हुआ है कि बरेली मे अन्तरङ्ग सभा की बैठक का जो आयोजन रविवार दिनांक १२-१-६९ को हुआ था, उसमें सभा-प्रधान माननीय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया गया है, और बरेली की आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं द्वारा थैलियाँ भेंट की गई हैं।

पूर्ण विवरण आगामी अङ्क में प्रकाशित होगा। पाठक प्रतीक्षा करें। —सम्पादक]

# गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव

## १४, १५, १६ फरवरी को होगा

समस्त आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का ६२ वाँ वार्षिक महोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर दिनांक १४, १५, १६ फरवरी ६९ को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संस्कृत सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा-सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन आदि आदि सम्मेलन सम्पन्न होंगे। १६ फरवरी ६९ को रविवार के दिन नवस्नातकों का समावर्त्तन संस्कार तथा दीक्षान्त समारोह भी होगा। दीक्षान्त भाषण के लिये भारत सरकार के उपप्रधान मन्त्री माननीय श्री मुरार जी देसाई से प्रार्थना की गई है। उनके पधारने की पूर्ण सम्भावना है। शिक्षा-सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री माननीय डा० श्री त्रिगुणसेन जी की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये माननीय श्री इन्द्रकुमार जी गुजराल सचार मन्त्री भारत सरकार के आने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त देश के अग्रगण्य मान्य नेता तथा आर्य सन्यासी विद्वान् व्याख्याता तथा महोपदेशक भी पधार रहे हैं।

इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। जो महानुभाव अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश नियम व फार्म मगावें। जो सज्जन पुस्तक आदि की दुकान लगाना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय को सूचित कर दें।

आशा है कि आर्यजनता समुपस्थित होकर व्याख्यानों तथा उपदेशों से लाभान्वित हो सकेगी।

—नरदेव स्नातक एम०पी०
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

सदैव की भाँति रविवार २६-१-६९ को प्रकाशित होने वाला

# आर्यमित्र का आगामी अङ्क

## गणतंत्र विशेषांक होगा

इस विशेषाङ्क की कुछ विशेषताएँ—

- गणतन्त्र सम्बन्धी वेदाधारित लेख
- राष्ट्रिय कवितायें
- देश प्रेम की कथायें
- धार्मिक,सामाजिक व राष्ट्रिय समस्याएं—

२०×३०=८ के आकार में छपेगा

पृष्ठ-संख्या-३२ होगी

सीमित संख्या में छापा जा रहा है। अपनी आवश्यकताओं के सम्बन्ध में तुरन्त सूचित करें।

—व्यवस्थापक आर्यमित्र

## आर्यमित्र के लेखकों, कवियों व पाठकों से आवश्यक निवेदन:—

(१) प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के केवल एक ओर हासिया छोड़कर लिखें ताकि आवश्यक संशोधन किये जा सकें।

(२) प्रकाशित होने वाले समाचार व सूचनायें अति संक्षिप्त भेजें ताकि उनका प्रकाशन तुरन्त किया जा सके।

(३) प्रत्येक स्वीकृत रचना की सूचना, प्राप्ति के २० दिन के भीतर भेज दी जायेगी और उसका प्रकाशन सुविधानुसार किया जायगा। अस्वीकृत रचनाओं के लिए पत्र व्यवहार करना सम्भव नहीं होगा।

(४) अस्वीकृत रचनाओं की वापसी के लिये लेख के साथ टिकट लगा लिफाफा अवश्य भेजें अथवा एक अतिरिक्त प्रतिलिपि रख लें।

(५) वेद मन्त्रों पर आधारित लेखों के प्रकाशन को प्रमुखता दी जायेगी। व्यक्तिगत द्वेष और साम्प्रदायिक भावनाओं को उभाड़ने वाली रचनायें अथवा सूचनायें प्रकाशित नहीं होंगी।

(६) पत्र-व्यहार केवल हिन्दी में किया जाता है इसलिये समस्त पत्र देवनागरी लिपि में ही लिखे जाएं।

(७) पाठकों के सुझावों का सदैव स्वागत किया जाएगा।

—सम्पादक

## स्वामी समर्पणानन्द का देहावसान!

अत्यन्त दुःख है कि आर्य-जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् वक्ता श्री स्वामी समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार) का १४ जनवरी की रात्रि में, एक लम्बी बीमारी के पश्चात् देहली में देहान्त हो गया। आप गुरुकुल कांगड़ी के प्राचीन सुयोग्य स्नातक थे। आप गुरुकुल के आचार्य व उप कुलपति भी रह चुके थे। आप केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री शेरसिंह जी के यहाँ चिकित्सा करा रहे थे। आपकी शवयात्रा में दिल्ली के आर्य समाजों के हजारों आर्य भाई सम्मिलित थे। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।

## जीवन-ज्योति

# डा० सम्पूर्णानन्द का निधन !

### महान् राजनीतिज्ञ और दार्शनिक उठ गया !!

### समस्त देश में शोक की लहर !!!

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री और राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल, महान् राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और साहित्यकार डा० सम्पूर्णानन्द जी का १० जनवरी को वाराणसी में उनके निवास स्थान पर ७९ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन के समय प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी तथा श्री बाबू जी का पूरा परिवार रोग शैया के निकट था। आप कई मास से बीमार थे। आपकी शव यात्रा में जन समुदाय उमड़ पड़ा था, अपार भीड़ थी। जगह-जगह शव पर पुष्प वर्षा होती जाती थी। गंगा घाट पर राजकीय सम्मान के साथ आपका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। आपके पुत्र श्री सर्वदानन्द जी ने दाह संस्कार किया।

बाबू सम्पूर्णानन्द जी की मृत्यु से सारे देश में शोक की लहर छा गई है। उत्तरप्रदेश सरकार के सब कार्यालय शोक में बन्द कर दिये गये थे। सब शिक्षा संस्थायें बन्द हो गई थीं।

देश के प्रमुख नेताओं ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन, उपराष्ट्रपति श्री वराह व्यंकट गिरि, उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा० बी० गोपाल रेड्डी, उपप्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई, पंजाब, राजस्थान काश्मीर के राज्यपालों ने शोक सहानुभूति के सन्देश भेजे हैं, और दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। भारत के तमाम शहरों में शोक सभाएं हुईं और बाबू जी की दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थनाएं की गयीं।

दार्शनिक-राजनीतिज्ञ डा० सम्पूर्णानन्द जी का जन्म पहली जनवरी सन् १८९० में हुआ था। वारेन हेस्टिंग्स के खिलाफ बगावत का झण्डा खड़ा करने वाले काशी नरेश महाराज चेतसिंह के दरबार में उनके पुरखे दीवान थे। वह अपने परिवार में सबसे बड़े थे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से २० वर्ष की आयु में बी० एस० सी० और एल० टी० की परीक्षा पास करने के बाद डा० सम्पूर्णानन्द ने अध्यापन क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने प्रसिद्ध शिक्षा संस्थाओं में कार्य किया, जिसमें प्रिंसेस कालेज इन्दौर और काशी विद्यापीठ भी हैं। परन्तु महात्मा गांधी के आह्वान पर आप सविनय अवज्ञा आन्दोलन और स्वातन्त्र्य संग्राम में शामिल हो गये। डा० साहब ने ५ बार जेल की यात्रा की।

डा० सम्पूर्णानन्द ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पूना अधिवेशन की अध्यक्षता की। सन् ४५ में लखनऊ में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के आप प्रमुख थे। उत्तरप्रदेश कांग्रेस के आप तीन बार महासचिव चुने गये और कुछ समय तक आपने स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू के सचिव के रूप में कार्य किया।

श्री डा० सम्पूर्णानन्द जी

इतिहास, दर्शन, समाज-शास्त्र, ज्योतिष, गणित, साहित्य आदि विभिन्न विषयों के डा० सम्पूर्णानन्द प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनका अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी, फ्रेंच और उर्दू आदि भाषाओं पर व्यापक अधिकार था। अपनी पीढ़ी के सबसे अधिक विद्वान् राजनीतिज्ञों में उनकी गणना थी।

हिन्दी के प्रख्यात लेखक के रूप में उन्हें काफी सम्मान मिला। उन्होंने ३५ पुस्तकें लिखीं, जिनमें कुछ को पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। डा० सम्पूर्णानन्द पहले लेखक थे, जिन्होंने पहला वैज्ञानिक उपन्यास 'पृथ्वी से सप्त ऋषि मण्डल' हिन्दी में लिखा। इसके अतिरिक्त दर्शन शास्त्र पर उन्होंने "चिद्विलास" इतिहास पर 'आर्यों का आदि देश' तथा समाजवाद पर 'समाजवाद' पुस्तक उन्होंने लिखीं।

डा० सम्पूर्णानन्द ने एक सफल पत्रकार के रूप में भी काफी प्रतिष्ठा अर्जित की। वाराणसी के प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक 'आज' का सम्पादन करने के अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी दैनिक 'टुडे' और हिन्दी पत्रिका 'मर्यादा' का भी सम्पादन किया। पिछले कुछ समय से आप विभिन्न विषयों पर सारगर्भित लेख लिख रहे थे।

राजनीतिक क्षेत्र में भी उन्हें काफी सम्मान मिला। उत्तरप्रदेश के मुख्य मन्त्री होने के अलावा उन्होंने प्रदेश के शिक्षा एवं श्रम मन्त्री के रूप में भी काम किया। उन्होंने कई सुधार कार्यान्वित किये, जिससे प्रदेश के श्रमिक आन्दोलन को बल मिला।

सन् १९३८ में पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त की सरकार में उन्होंने शिक्षा मन्त्री के रूप में कार्यभार संभाला परन्तु सन् १९३९ में कांग्रेस कार्यसमिति के आदेश से उन्होंने सरकार के साथ त्यागपत्र दे दिया।

सन् ४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्हें दो वर्षों तक जेल में रखा गया। अप्रैल सन् ४६ में पन्त जी ने दूसरा मन्त्रिमण्डल गठित किया तो उसमें वे पुनः शिक्षा मन्त्री हो गये। उन्हें गृह, वित्त और श्रम विभागों का भी कार्यभार सम्भालने का अवसर मिला। सन् १९५४ में डा० सम्पूर्णानन्द उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री चुने गये। पण्डित पन्त को केन्द्र में गृह मन्त्री नियुक्त किया गया था।

सन् १९५७ के आम चुनावों के बाद भी डा० सम्पूर्णानन्द ने मुख्यमन्त्री पद को सुशोभित किया। परन्तु सन् १९५९ में पार्टी से मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया।

अप्रैल सन् १९६२ में उन्हें राष्ट्रपति ने राजस्थान का राज्यपाल नियुक्त किया। इस पद पर आप सन् ६७ तक बने रहे। पद निवृत्त होने से पूर्व उन्होंने विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखीं।

विगत कुछ महीनों से आप अस्वस्थ थे। पहले उनकी चिकित्सा वाराणसी में ही की गई। बाद में उन्हें लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में चिकित्सा के लिये लाया गया। स्वस्थ होने के बाद मई ६८ में उन्हें वाराणसी ले जाया गया। बीमारी के बावजूद भी इन दिनों आप वेदों पर भाष्य लिख रहे थे, जो अभी तक पूरा नहीं हो सका है।

# सिंहावलोकन

# क्या आर्य (हिन्दू) बाहर से आए हैं ?

★श्री कुंवर बहादुर माथुर
दिल्ली

इतिहास के विदेशी विद्वानों ने एक भ्रमात्मक धारणा बनाकर भारत के इतिहास में आर्य लोगों को बाहर से आकर यहां बसने वाला मान लिया और उन्हीं की कल्पनाओं पर अन्ध-विश्वास करके भारत के विद्वानों और नेताओं ने भी यही धारणा बना ली और अनेकों उपन्यास, इतिहास आदि रच डालें। संस्कृत का एक अक्षर न जानने वाले वेदों में आर्यों का इतिहास और द्रविड़ संघर्ष निकाल रहे हैं। किसी वेद मन्त्र से यह सिद्ध नहीं होता कि हिन्दू लोग बाहर से आये। आज तक कोई ऐतिहासिक विद्वान यह नहीं बता सका कि हिन्दू कहाँ से भारत में आये। उस देश वा प्रदेश का नाम हिन्दू ग्रन्थों में यह लिखा है। और न यह जानते हैं कि इस देश का आदिम वासियों ने क्या नाम रखा था। वास्तव में भारत के आदिमवासी संसार भर की जातियों के पिता हैं। आर्य लोगों ने ही बाहर आकर नये नये देश बसाए। इसका प्रमाण इतिहास है। किसी आर्य पुस्तक में यह नहीं लिखा मिलता कि आर्य बाहर से इस देश में आए। वेदों मे कोई इतिहास नहीं है—

'वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक संस्थाश्च निर्ममे।'

मनु जी ने लिखा है कि वेदों के शब्द पहले के और मनुष्यों के नाम बाद के हैं।

"Names.. are to be found in the vedas, as it were, In still fluid state hey never appear as appellations, not yet as proper names. They are organie not yet broken or smoothed down. (History of Anual )
–Sanscrit Literature P.136

प्रो० मेक्समूलर सा० ने भी यही लिखा है कि वेदों में जो नाम मिलते हैं वे ठीक-ठीक नाम हैं ऐसा नहीं समझना चाहिए। इससे सिद्ध होता है कि जिन लोगों ने केवल नाम देखकर ही वेदो मे से इतिहास निकाला उनने बड़ी मूर्खता की है। क्योंकि वेद तब के हैं जब से प्रथम मनुष्य का संसार में पहली बार प्रादुर्भाव हुआ था। जब इतिहास कहा था जो वेदो में आ घुसा था।

"इतिहास पुराणाभ्यां वेद समुपबृंहयेत।'

महाभारत में लिखा है कि इतिहास और पुराणों से वेदों का मर्म जाना जाता है। वेदों मे आए इतिहासिक नाम तो इतिहास का साथ भी नहीं देते उनका इतिहास से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। अब हम इतिहास के लेखकों के प्रमाण आपको बताते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री नेसफील्ड भारत के इतिहास में ही लिखते हैं।

"There is no division of the people as the Aryans conquerors of India and the aborigins of the country that division is modern and that there is essential unity of the Indian races The great majority of Brahmins are not of lighter complexion or of finer or better red feattees than any other caste, or distinet in race and blood from the scavengers who swept the road."

कि भारतवर्ष में आर्य विजेता और आदिवासियों जैसा कोई विभाग नहीं है। यह विभाग पूर्ण आधुनिक है। यहां सब जातियों में बहुत मेल है। ब्राह्मणों से लेकर सड़क साफ करने वाले भंगियों तक का रूप, रंग और रक्त एक समान हैं। बाइबिल में लिखा है—

"and the whole was of one language and of one speech, and it come to pass as they journeyed from the East."

( Gemisis, chap. vi)

कि पूर्व से आने वाले लोगों की भाषा और बोलचाल एक थी। यही भारत से गये हिन्दू थे। जो योरप में जाकर बसे थे। मि० मियोर साहब ने साफ शब्दों मे लिखा है—

"That so for as I know none of the Sanskrit books not even the most ancient, contain any distinct reference or allusion to the foreign origin of the Indlan'

[ Mnir's Saaskrit --Text book Vol. II P 323]

कि भारतीय आर्यों के किसी प्राचीन ग्रन्थ से, उनकी किसी कथा कहानी से और उनकी किसी भी बात से यह नहीं पाया जाता कि वे किसी बाहर के देश से आए।

श्रीमान टेलर साहब ने अपनी विशेष पुस्तक में लिखा है—

"Adelung. the father of comparative philology and leader in 1806, placed the cradle of man kind in the valley of Kashmir"

(Tailor's Origin of the Aryans Page 9)

कि मनुष्य जाति की जन्मभूमि, स्वर्ग तुल्य काश्मीर ही है। बंगाल के प्रसिद्ध पुरातत्व विशारद बा० अविनाश चन्द्र दास अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में यही मानते हैं—

"That this beautiful mountainous country [ kashmir ] and the plains of Sapta sindhu were the cradle of Aryan race."

[ Rigvedic India ] Page 55

कि आदि मनुष्य और मूल आर्य एक ही हैं। आर्यों का विशुद्ध रूपरंग काश्मीरी ब्राह्मणों में अब भी वर्त्तमान है जिससे बल पूर्वक कहा जा सकता है कि आदि सृष्टि हिमालय पर ही हुई। वास्तव में संसार के सबसे ऊँचे स्थान तिब्बत में सृष्टि रचना हुई जो १५ हजार फीट ऊँचा है यही स्थान सर्व प्रथम प्रलय के पानी से बाहर निकला होगा। वहां से लोग उत्तर भारत में आकर बसे और फिर संसार के अन्य देशों मे चले गये। यही बुद्धि में आने-वाली और इतिहास अनुकूल बात है। पर वाल्टर रेले ने जगत् इतिहास में लिखा है—

[ History of the world. P 82 ]

'कि जल प्रलय के अनन्तर भारत-वर्ष में ही वृक्ष लता आदि की उत्पत्ति और मनुष्यों की बस्ती हुई थी। इसी प्रकार श्री टॉड सा० ने राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि आर्यावर्त के अतिरिक्त और किसी देश में सृष्टि के आरम्भ का हिसाब नहीं पाया जाता। इसलिये आदि सृष्टि यहीं हुई।

इन लेखों से सिद्ध होता है कि सृष्टि रचना यहां हुई और फिर आर्यावर्त बसाया गया। अधिक आबादी हो जाने पर आर्य लोग दूसरे देशों में गये। भारत में उस समय गणराज आजकल जैसा था। जब वे जाये जाकर बसे तो वहाँ गणराज की स्थापना की और उसका नाम गणस्थान रखा जो बाद में अफगानिस्तान कहलाया। यह सदा भारत के गणराज्य का मित्र व सहयोगी रहा श्री कौंट जॉन्सजेर्ना अपनी पुस्तक (Theogony of the Hindus में लिखते हैं—

"आर्यावर्त केवल हिन्दू धर्म का ही घर नहीं है वरन् वह संसार की सभ्यता का आदि भण्डार है। हिन्दुओं की सभ्यता क्रमशः पश्चिम की ओर इथोपिया, ईजिप्त और फोनोसिया तक, पूर्व दिशा में श्याम, चीन और जापान तक, दक्षिण में लङ्का, जावा, सुमात्रा तक, और उत्तर में परशिया, काल्डिया और कोल्चिस और वहां के यूनान और रोम तक पहुंची थी" एक अमरीकन विद्वान् डेलमार सा० ने 'इण्डियन रिव्यू' में लिखा था—

कि पश्चिमी संसार को जिन बातों पर अभिमान है वे असल में भारत से ही वहां गई थी।" यूनान का एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार और इतिहास लेखक ने बताया है कि अपरिचित लोग पूर्व से आकर वहां बसे। वे बहुत बड़े बुद्धिमान् विद्वान् और कला कुशल थे। उन्होंने वहां विद्या और वैद्यक का प्रचार किया वहां के निवासियों को सभ्य बनाया।'

२०-२ १८८४ के 'डेली ट्रब्यून' में श्री डी० ओ० ब्राउन साहब ने लिखा था—

'कि यदि हम पक्षपात रहित होकर भली भाँति परीक्षा करें तो हमको स्वीकार करना पड़ेगा कि हिन्दू ही सारे

[ शेष पृष्ठ १२ पर ]

# नैतिक उत्थान आन्दोलन

# पाप की निवृत्ति

श्री सत्यव्रत जी शास्त्री
मेरठ

मनुष्य पापादि दुष्कर्म करके उससे किस प्रकार मुक्ति -- -- है, इस सम्बन्ध में आद्य धर्म प्रवर्त्तक भगवान् मनु वेद के अध्ययन को कितना महत्व देते हैं, यह बात मनुस्मृति के एकादश अध्याय को पढ़ने से सर्वथा स्पष्ट हो जाती है, प्रथम वेद का महत्व प्रतिपादित करते हुए मनु का घोष है कि—

तपो विशेषैर्विविधैर्व्रतैश्च विधि चोदितैः।
वेदः कृत्स्नोऽधिगन्तव्यः सरहस्यो द्विजन्मना ॥
वेद मेव सदाभ्यस्येत् तपस्तप्स्यन् द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ॥ (मनु अ० २)

इन दोनों श्लोकों का संक्षेप में भाव यह है कि द्विजन्मा व्यक्ति को अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का समस्त साङ्ग वेद का अध्ययन विधिवत् विविध प्रकार के तपों को करते हुए अवश्य करना चाहिये। यही उनका परम तप कहा है। वेदाध्ययन के अतिरिक्त उनके लिये कोई कर्त्तव्य तप नहीं है।

## तप का महत्व

"तपोमूल मिदं सर्वं दैवमानुषकं सुखम्।
तपो मध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तं वेद दर्शिभिः॥
यद् दुस्तरं यद् दुरापं यद् दुर्गं यच्च दुष्करम्।
सर्वं तत्साध्यं तपसा हि दुरति क्रमम् ॥ [अ० ११]

समस्त देव और मनुष्यों के सुखकर मूल-प्रधान कारण वेदस पण्डितों ने तप को ही कहा है। कितना ही कठिन से कठिन कार्य क्यों न हो जो मनुष्य के लिए कष्ट साध्य हो वह भी सब तपो बल से अनायास ही सिद्ध किया जा सकता है क्योंकि तप के सामने कोई वस्तु नहीं ठहर सकती। तप के ही प्रभाव से मानव महापातक, उपपातक आदि जितने भी अकर्त्तव्यकार्य हैं उन सबसे छूट जाता है, मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार अनेक प्रकार से तप का महत्व प्रतिपादित किया है जो वहीं पठनीय एवं माननीय है। परम नीतिनिष्णात श्री कृष्ण ने गीता में भी—ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन। इस कथन के द्वारा ज्ञानाग्नि से सर्व कर्मों का नाश हो जाता है कुछ शेष नहीं रह ऐसा कहा है। मनु का आदेश—

वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या महायज्ञ क्रिया क्षमा।
नाशयन्त्याशु पापानि महापातक जान्यपि ॥ [मनु० अ० ११]

यथैध स्तेजसा वह्निः प्राप्तं निर्दहति क्षणात्।
तथा ज्ञानाग्निना पाप सर्वं दहति वेदवित ॥ [अ० ११]

यथाशक्ति निरन्तर बिना प्रमाद के किया हुआ वेद का अध्ययन और ये नित्य पञ्च महायज्ञों का अनुष्ठान उनका विधिवत् करना, ये महापातकों और अन्य कुसंस्कार जन्य पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। जैसे तीक्ष्ण और प्रचण्ड अग्नि क्षण भर में ईंधन को जला देती है उसी प्रकार वेद का ज्ञाता ज्ञानाग्नि द्वारा सम्पूर्ण पापों को जला देता है नष्ट कर देता है।

दूसरा प्रकार—

"ख्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि ॥
"यथा यथा नरोऽधर्मं स्वयं कृत्वाऽनुभाषते तथा तथा त्वचेवाहिस्तेनाऽधर्मेण मुच्यते ॥

पाप करने वाला व्यक्ति अपने पाप को प्रगट करने और पश्चाताप करने से तप और अध्ययन के द्वारा पापों को नष्ट कर देता है। यदि ऐसा करने में असमर्थ हो तो दान करने से भी पाप से मुक्ति हो जाती है। मनुष्य जैसे जैसे अधर्म करता है और अधर्म करने के अनन्तर उसे कह देता है तोभी वह उस अधर्म से पाप से जैसे साँप केंचुली से छूट जाता है—वह भी अधर्म से छूट जाता है।

३—"कृत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात् पापात् प्रमुच्यते। नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्या पूयते तु सः ॥

"अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्कृत्वा कर्म विगर्हितम्। तस्माद्विमुक्ति मन्विच्छन् द्वितीय न समाचरेत् ॥

जैसे-जैसे पापी पाप करता है और पाप करने के पश्चात उसका मन दुष्कृत कर्म की निन्दा करता है। वैसे वैसे उस पाप से या शरीर से छूट जाता है। पाप करने के पश्चात सन्ताप होकर भविष्य में ऐसा दुष्कर्म कदापि नहीं करूंगा" ऐसी प्रतिज्ञा करके भी पाप से निवृत्त हो जाता है और पवित्र हो जाता है।

४—'यत्किञ्चदेन कुर्वति मनोवाङ् मूर्तिभिर्जना। तत्सर्वं निर्दहन्त्याशु तपसैवतपोधना ॥

ऐसे मनु में अनेक श्लोक हैं जिनमें पाप मोचन के लिये तप का वर्णन किया है और भिन्न भिन्न प्रकार के तपों का निर्देश है वहीं द्रष्टव्य है अधिक विस्तार के भय से संक्षिप्त ही दर्शाये.

५—वेद की भिन्न भिन्न ऋचाओं के अध्ययन, मनन, चिन्तन करने से भी पाप से मुक्ति हो सकती है—

जैसे—पापी पुरुष ६ मास निरन्तर "इन्द्रं मित्रं वरुणमग्नि माहुरथो ॥ इस ऋग्वेदीय ७ ऋचात्मक सूक्त का (१-१०६। १-७) जप करने से और १ मास तक भिक्षा अन्न खाकर निर्वाह करे तो पापों से मुक्त हो सकता है।

इसी प्रकार यजु० अ० मन्त्र ८ १३ "देवकृत स्यैनसो—ऽवयजनमसि" इनके द्वारा हवन करने से अथवा 'नमः—कपर्दिने' यजु० अ० १६ इन ऋचाओं को १ वर्ष तक निरन्तर जपकर बड़े से बड़े पापों से भी मुक्त हो सकता है।

'इसी प्रकार' एनसां स्थूल सूक्ष्माणां चिकीर्षन्नपनोदनम्।
अवेत्यृचं जपेदब्दं यत्किंचेदमितीति वा ॥

छोटे बड़े पापों का प्रायश्चित्त करने की इच्छा वाला मनुष्य ऋग्वेदीय (१।१।४।१४) 'अववरुण नमोभि' इत्यादि ऋचा की अथवा यच्चिदं वरुण दैव्ये जने० इत्यादि ७।८९।५ ऋचा का एक वर्ष तक जप करने से पाप मुक्त हो सकता है।

महापातक संयुक्तोऽनुचरेद्गा समाहितः।
अभ्यस्याब्दं पावमानीर्भैक्षाहारो विशुध्यति"
"यथाश्वमेधः क्रतुराट् सर्व पापाऽपनोदनः।
तथा ऽघमर्षण सूक्तं सर्व पापाप नोदनम् ॥"

महापातकी भी यदि जितेन्द्रिय होकर गौओं को चरावे और पवमानी पवमान देवता की ऋचाओं का एक वर्ष पर्यन्त अभ्यास करता हुआ उनका चिन्तन और मनन करता हुआ भिक्षा का अन्न खाकर पाप से मुक्त हो जाता है। जैसे अश्वमेध यज्ञ सब यज्ञों में श्रेष्ठ माना गया है। और सब पापों को दूर करने वाला है उसी प्रकार यह अघमर्षण सूक्त 'ऋतं च सत्यं च'

ऋ० १०।१९०।१ ३ सब पापों से मुक्ति प्राप्त करता है।

अन्त में इस प्रकरण उपसंहार करते हुए आचार्य प्रवर मनु लिखते हैं।

ऋक् संहिता त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः।
साम्नां वा सरहस्यानां सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥'
'यथा महा ह्रदं प्राप्य क्षिप्रं लोष्टं विनश्यति।
तथा दुश्चरितं सर्वं वेदे त्रिवृति मज्जति ॥'

'ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद इन तीनों संहिताओं को ब्राह्मण उपनिषदादि एकाग्र चित्त होकर सावधान मन से तीन बार आवृत्ति करे, इनका पारायण करे तो सब पापों से मुक्त हो जाता है। जिस प्रकार बड़े भारी तालाब जलाशय में डाला हुआ, फेंका हुआ मिट्टी का ढेला सर्वथा नष्ट हो जाता है उसी प्रकार समस्त पाप भी तीन बार वेदों की त्रिवृत्ति करने पर उनका विचार पूर्वक पाठ करने पर समस्त पाप उस वेद रूपी ज्ञानाग्नि में भस्म हो जाते हैं इस प्रकार मनु के अध्ययन से विदित होता है कि प्राचीन काल मे तप को कितना महत्व प्रदान किया गया है तप के द्वारा अध्ययनाध्यापन में आया हुआ वेद का भी उतना ही महत्त्व है जो व्यक्ति इस प्रकार तपः पूत होकर साधना के साथ वेद का अध्ययन मनन और चिन्तन न करेगा उसकी प्रवृत्ति पाप कर्मों में होगी नहीं जब पाप कर्मों मे प्रवृत्ति ही नहीं होगी फिर उसकी मुक्ति सुतरां सिद्ध है।

वहीं पाप मोचन का इसी में तात्पर्य है वैसे सिद्धान्तानुसार 'किया हुआ कार्य शुभ हो या अशुभ अपना अच्छा बुरा भोग कराकर उसके द्वारा होने वाला फल अवश्य ही भोगना ही पड़ता है। यह पाप मोचन भविष्य के

# ग्राम जीवन

प्रकाशकौर को अपनी सफलता पर गर्व है। और हो भी क्यों न? सत्तर क्विंटल फी हैक्टर 'सोनोरा' गेहू की पैदावार बड़ी सफलता मानी जा सकती है, लेकिन प्रकाशकौर इस सफलता को एक सीढ़ी ही मानती है।

फिर उन्हे किस बात पर गर्व है?

उनके गर्व का कारण कुछ और है। उन्होने बंजर जमीन में 'सोना' उगाया है। हां, उत्तर प्रदेश के बहुत से किसान भारी पैदावार देने वाली इस किस्म को 'सोना' कह कर पुकारते हैं।

प्रकाशकौर का गांव टिकका पुरवा उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से छः मील दूर बाराबंकी रोड पर है। इस एम० ए० पास महिला को खेती ही लाभदायक धंधा जंचा। एक बार निर्णय करने के बाद वह पूरी तरह अपनी खेती को सफल बनाने जुट गयीं।

जब इस परिवार ने कुछ साल पहले यह जमीन ली थी तो यह बंजर पड़ी थी। श्रीमती प्रकाश कौर ने इस भूमि को खेती लायक बनाया। इसे बनाने में उन्हें बड़ी मेहनत और लगन से काम करना पड़ा।

## भूमि सुधार

सबसे पहले उन्होंने ऊबड़-खाबड़ जमीन को एक सार किया। उसे उपजाऊ बनाने के लिये जमीन में कम्पोस्ट की कई गाड़ियां खाद डाली। कितनी गाड़ी इस जमीन में डाली गयी, इसका उन्हें भी अन्दाज नहीं।

भरपूर खाद मिलने पर जमीन खेती लायक बन गई, और हर साल फसल अच्छी से अच्छी होती गई। जमीन सुधार के साथ-साथ प्रकाश कौर का खेती में भी अनुभव बढ़ता गया।

पिछले साल उन्होंने एक एकड़ में सोनोरा-६४ बोया।

हरी खाद के लिये उन्होंने खेत में सनई बोई और बरसात के मौसम में उसे खेत में पलट दिया। उन्होंने १५ दिन के अन्तर से कई जोताइयां कीं। बोआई से २० दिन पहले उन्होंने अपने खेत में दस ट्रक फी हैक्टर के हिसाब से गोबर-कूड़े की खाद डालकर आखिरी जोताई की। इसके बाद पाटा चला कर खेत एक सार कर दिया।

फसल को दीमक से बचाने के लिए उन्होंने जमीन मे फी हैक्टर २५ किलो गेमैक्सीन डालकर उसे मिट्टी मे अच्छी तरह मिला दिया।

## उर्वरक

बोआई से कुछ पहले प्रकाशकौर ने फी हैक्टर ५०० किलो के हिसाब से मिश्रण न० ४ का उर्वरक डाला।

एम० ए० पास हैं तो क्या प्रकाश कौर खेती का काम बड़ी दिलचस्पी से खूब करती हैं।

# बंजर जमीन में 'सोना'

मिश्रण न० ४ में ३५ प्रतिशत अमोनियम सल्फेट, १ ६७ प्रतिशत यूरिया, ५० प्रतिशत सुपरफास्फेट और १३,३३ प्रतिशत म्यूरिएट आफ पोटाश होता है।

## बोआई

श्रीमती प्रकाश कौर ने फी हैक्टर १०० किलो सोनोरा-६४ का बीज लिया और यन्त्र की मदद से बोआई की। बीज ३,७५ सं० मी० की गहराई पर बोया। बीज से बीज की दूरी १५ सं० मी० और कतार से कतार का फासला २२, ५ सं० मी० रखा।

## सिचाई

फसल की ९ बार सिंचाई की गयी। पहली सिंचाई बोआई से २० दिन बाद और बाकी १५ १५ दिन के अन्तर से की गयी।

पहली सिंचाई उन्होंने खड़ी फसल पर फी हैक्टर १२५ किलो कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का भुरकाव करने के तुरन्त बाद की।

वह दस्ती हो से फसल की निराई गोड़ाई करती रहीं।

इस तरह से फसल की बढ़वार अच्छी हुई, और बालें दानों से भरपूर निकलीं।

उन्होंने गेहु की फसल में अन्तर वर्तीय फसल के रूप में सरसों बोयी।

प्रकाशकौर को अपनी सफलता पर गर्व है। और हो भी क्यों न? सत्तर क्विन्टल फी हैक्टर 'सोनोरा' गेहू की पैदावार बड़ी सफलता मानी जा सकती है, लेकिन प्रकाशकौर इसे सफलता की एक सीढ़ी ही मानती हैं।

फसल में दाना पकते ही प्रकाशे कौर ने कटाई शुरू कर दी। उन्हें फी हैक्टर ७० क्विन्टल के हिसाब से पैदावार मिली।

श्रीमती प्रकाश कौर का कहना है, 'सोनोरा-६४' की खूब सिंचाई पर भी फसल नहीं ढहती। जब फसल को पानी की जरूरत हो तभी उसकी सिंचाई करनी चाहिए। खासकर फसल फूलने और उसमे दाना बनने के समय सिंचाई जरूर करनी चाहिए। तब आपको सोनोरा-६४ से भरपूर पैदावार मिलेगी।

प्रकाश कौर सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर नहीं रहती। उनके फार्म पर नलकूप लगा है जिससे वह जब और जितनी चाहें सिंचाई कर सकती हैं।

वह अपने फार्म पर गेहू के अलावा गन्ने और सब्जी की भी खेती करती हैं।

"अगली रबी में मैं १५ एकड़ में सोनोरा-६४ बोऊंगी। मैं दूसरी पढ़ी महिलाओं को खेती करने की सलाह देती हू, क्योंकि यह काम दिलचस्प होने के साथ साथ फायदेमन्द भी है।"

श्रीमती प्रकाश कौर की इस सलाह से केवल पढ़ी लिखी या अन्य महिलायें ही नहीं, अनेक युवक भी लाभ उठा सकते हैं।

★

---

लिये एक संकेत मात्र देता है। चेतावनी देता है सावधान करता है जिससे हम अपने निष्ठात्मक वेदाध्ययनादि सत्कर्मों में सदा सावधान रहें उसमें कदापि प्रमाद व आलस्य न करें।

इसलिये अर्थवाद रूप में यह सब वेदाध्ययन द्वारा तपस्या मय जीवन की महिमा का ही गान है। पाप मुक्ति की मरुमरीचिका के द्वारा एक प्रलोभन मात्र है।

★

# साहित्य-सौरभ

## यज्ञशाला

वैदिक युग था स्वर्ण साम्य, थी घर घर बनी यज्ञशाला,
यज्ञ भाव को जब मानव ने, था जीवन में अपने ढाला,
स्वाहा शुभ उत्तम स्वस्ति मम, गुंजार कराती महोच्चार,
उच्चार सम व्यवहार सदा, थी करती यही यज्ञशाला।

मेधावान पुरोधा-होता, वर भव्य भूमि पर मृगछाला;
मृदु वेद मन्त्र के मन्थन से, क्षण छने सुधा का मृदु प्याला,
हरता है हवन भार ऋण का, जो जीव जन्म से है लाता;
नित्य कर्म की ओर प्रेरणा, देती है सत्य यज्ञ शाला।

जग मे जन जन का जीवन है ऋषि, पितृ, देव तीन ऋणवाला,
ब्रह्म, देव, पितृ, अतिथि यज्ञ है, पावन बलि वैश्वदेव आला,
दस धैर्य, क्षमा, सयम, अस्तेय शुचिता, हर इन्द्रिय अनुशासन,
अक्रोध, बुद्धि, सत्य विद्या का, धरती है धर्म यज्ञ शाला।

स्थान सभी शुभ काम जहां हों, जग मे जो भरते उजियाला,
शुभ काम कौन, है सभी वही, जो जीवन को करते आला,
जग सत्यम, शिवम, सुन्दरम का, जिससे उद्गम अजस्र होता,
शुभ कर्म यज्ञ हैं प्रीति पूर्ण, शुभ होते स्थान यज्ञशाला।

संसृति सारी यह सब शरीर, सचमुच है सुखद यज्ञ शाला,
करो कर्म शुभ शीघ्र यज्ञ के, होना है रिक्त धर्मशाला,
आओ आओ मन्दिर आओ, सत्सग करो सत सन्तों से,
हे आत्म देव हो सजग सदा बिछुड़े मत कहीं यज्ञशाला।

हर मनुज उदर है यज्ञ कुण्ड, खाद्यान्न भस्म करने वाला;
जो खाय अन्न सो बने मन, हर इन्द्री के पोषण वाला,
यज्ञ अग्नि कर सूक्ष्म खाद्य को, दूर प्रवाहे शुद्धि-शक्ति को,
जो जीवन में शुभ कर्म वरे, उत्तम है वही यज्ञ शाला।

मन्दिर आर्यसमाज हमारा, जिसमे शोभित सुख हरियाला,
बनता है जीवन दिव्य यहीं, नर आता है सुर मे ढाला,
मन्दिर सारा मधुवन प्यारा, वेद मन्त्र सुमन सौरभ ताजा,
बहता है कल्याण वायु में, देती है शान्ति यज्ञशाला।

संगच्छध्वं सवदध्व, सगठन श्रेष्ठ ममता वाला,
कृण्वन्तो विश्वमार्यम नारा, गौ गायत्री माता ग्वाला,
पहचान, जहां लहराती हो, व्योम विहारी ओ३म् पताका,
आते जाते नित्य नमस्ते, हरती है दर्प यज्ञशाला।

है ऊंच नीच का भेद नहीं, है भेद नहीं गोरा काला,
वर्णाश्रम का धर्म कर्म से, देता समान सबको ज्वाला,
ओ३म् नाम है शुद्ध ईश का, ईश जीव औ प्रकृति सत्य है,
धन धवल ध्येय धारण करनी, धरती पर धन्य यज्ञशाला।

था गया वेद के मन्दिर जो, हो नष्ट भ्रष्ट का तो नाला,
ऋग, यजुर, साम चौथा अथर्व, ज्ञान सदा देते सुखवाला,
हैं धर्म अर्थ औ काम मोक्ष, शुभ शाश्वत ये पथ पुरुष का,
हैं आर्यजनों की रजधानी, सिंहासन स्वर्ग यज्ञशाला।

था ढोंग रोग पाखण्ड बड़ा, लेकर मदहोशी की हाला,
नाम पुजारी काम लुटेरा, परमेश्वर पत्थर कर डाला,
आई शिवरात्रि मूलशंकर, ले, किया जागरण जिज्ञासा,
कर शोध सत्य की, ईश्वर की, दे दी वरदान यज्ञ शाला।

जड़ प्रतिमा पर छाया प्रभात, तोड़ा हर हाला का प्याला,
थे भक्त सुप्त सब ध्यर्थ व्रती, मूषक कुतरी तम की माला,
करी देख सब ने अनदेखी, आया बोध मूलशंकर को,
बन दयानन्द आनन्द भरा, दी सबको अमर यज्ञशाला।

थे दिवस देश के दुखदायी, जब पड़ा दासता से पाला;
छा गई ~~[illegible]~~ अन्ध, पड़ गया यज्ञ पर था ताला;
प्रदान किया ~~[illegible]~~ प्रकाश, आकर प्रिय दयानन्द ऋषि ने,
ध्रुव धर्म धूप से धरा भरी, फिर से जग उठी यज्ञ शाला।

तप, त्याग और बलिदान किया, तन योग साधना में ढाला,
वरदान दिया सम स्वाभिमान, हर बार पिया विष का प्याला;
दिवस दिवाली, ज्योति निराली, महर्षि भर गए दीपकों में,
आनन्द दया दे विदा काल, ऋषि की है ऋणी यज्ञ शाला।

शिष्य सत्य गुरु विरजानन्द का, दयानन्द था देव निराला,
दी प्रथम प्रेरणा स्वराज्य की, दी अन्तर्यामी की ज्वाला,
हंसराज औ लेखराम जी, श्रद्धानन्द इन्द्र वाचस्पति,
कृष्ण महाशय, गुरुदत्त भक्त, से शोभित हुई यज्ञ शाला।

नारायणस्वामी, रामदेव, सन्त सर्वदानन्द विशाला,
माधव हरि अणे, विनायक जी, श्रीमान लाजपत जी लाला,
परमानन्द, राम बिस्मिल जी, ध्रुवानन्द महान देहलवी,
है अन्य सर्व को श्रद्धांजलि, जिनकी है ज्योति यज्ञशाला।

★ [illegible] नारायण भारद्वाज, अलीगढ़

## आया वसन्त

मृदु हास और उल्लास लिये, जब तुम उपवन में आते हो।
जगती के कण कण मे तुम नव जीवन सा भर लाते हो॥

कोमल गुलाब की लाली में, तुम हे वसन्त मुस्काते हो।
सरसिज की मंजुल प्याली मे, मीठा अमृत भर लाते हो॥

कोयल की मीठी वाणी में तुम ही तो आकर गाते हो।
विहग के सुन्दर कलरव में सरगम के स्वर भर जाते हो॥

मंजुल मोहक झुमके अगणित आमों मे तुम लटकाते हो।
तृण तृण कलि कलि प्रति पल्लव में तुम मुस्काते ... ॥

तुम मलय पवन में चन्दन मादक सुगन्ध भर जाते हो।
चिर वायु तरङ्गों को मुखरित तुम हे वसन्त कर जाते हो॥

तितली के चित्रित पङ्खों पर चढ़कर तुम ही लहराते हो।
मधु लोलुप भंवरे बनकर कलियों पर आ मंडराते हो॥

खेतों पर पीली चादर तुम कैसी सुन्दर फैलाते हो।
बन में टेसू के फूलों से तुम आकर आग लगाते हो॥

तुम हे वसन्त जगती तल मे नूतन जीवन भर जाते हो।
सूखी डाली को कुसमित कर कण-कण सजीव कर जाते हो॥

आओ हम भी खेलें हिलमिल तुम जैसे हम भी हो जाएं।
उल्लास उमग भरें हम भी जग में नव जीवन फैलायें।

★ श्री अज्ञात

# विचार-विमर्श

## ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वर्णित—

## सृष्टि संवत् पर विचारणीय एक प्रश्न

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रश्न उठाया कि 'पू०—वेदानामुत्पत्तौ कियन्ति वर्षाणि व्यतीतानि ?'' और इसका उत्तर भी स्वयं महर्षि ने लिखा—'सि०—अत्रोच्यते, एको वृन्द, षण्णवतिः कोटयो, ऽष्टौ लक्षाणि, द्विपञ्चाशत्सहस्राणि, नव शतानि, षट् सप्ततिश्चैतावन्ति (१९६०८५२९-७६) वर्षाणि व्यतीतानि, सप्त सप्ततितमोऽयं संवत्सरो वर्तत इति वेदितव्यम्। एतावन्त्येव वर्षाणि वर्तमान कल्प सृष्टेश्चेति।''

अर्थ—'पू०—वेदों की उत्पत्ति में कितने वर्ष हो गये हैं ?

सि०—एक वृन्द छानवे करोड़ आठ लाख बावन हजार नव सौ छहत्तर वर्ष वेदों की और जगत् की उत्पत्ति में हो गये हैं और यह ,संवत् सतहत्तर वां (७७) चल रहा है।''

महर्षि ने आगे लिखा कि ''यह वर्तमान वर्ष ७७ वां है जिसको आर्य लोग विक्रम का १९३३ वां संवत् कहते हैं।''

उपर्युक्त वि० संवत् १९३३ से वर्तमान वि० संवत् २०२५ को ९२ वर्ष होते हैं। यदि १९३३ में महर्षि द्वारा लिखित उपर्युक्त सृष्टि संवत् १९६०८५-२९७७ में ९२ वर्ष और जोड दिये जायें तो वर्तमान विक्रमी स० २०२५ में सृष्टि संवत् १९६०८५३०६९ होता है किन्तु आर्यमित्र तथा वेद वाणी पत्रों में वर्तमान वि० स० २०२५ में, सृष्टि सं० १९७२९४९०६९ वर्ष लिखा रहता है। महर्षि द्वारा लिखित सृष्टि संवत् मे उपर्युक्त ९२ वर्ष जोड़ने पर जो सृष्टि संवत् वि० २०२५ मे होता है वह आर्य मित्र व वेदवाणी में प्रकाशित वर्तमान सृष्टि संवत से १२०९६००० वर्ष कम होता है। सृष्टि संवत् विषयक यह विभेद विचारणीय प्रश्न हो जाता है।

महर्षि ने १७२८००० वर्षों का सतयुग, १२९६००० वर्षों का त्रेता, ८६४००० वर्षों का द्वापर, ४३२०००

★श्री रामप्रताप तिवारी
अगई, सुल्तानपुर

●

वर्षों का कलियुग, चारों युगों के ४३२०००० वर्षों की एक चतुर्युगी; ७१ चतुर्युगियों का १ मन्वन्तर और १४ मन्वन्तरों का एक ब्राह्म दिन ( सृष्टि ) बतलाया। महर्षि ने लिखा ''एक सहस्र ( १००० ) चतुर्युगानि ब्राह्म दिनस्य परिमाणं भवति०'' जो पूर्व चतुर्युगी लिख आये हम एक हजार चतुर्युगियों की ब्राह्म दिन संज्ञा रखी है। इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि का समय ४३२००-००×१०००=चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होता है। महर्षि ने लिखा 'यह जो वर्तमान ब्राह्म दिन है इसके १९६०८५-२९७६ वर्ष इस सृष्टि की तथा वेदों की उत्पत्ति में भी व्यतीत हुये हैं और २३३३२२७०२४ वर्ष इस सृष्टि को भोग करने को बाकी हैं।'

किन्तु यदि हम उपर्लिखित ब्राह्म दिन के व्यतीत हुये तथा बाकी वर्षों को संख्या का योग करते हैं तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष नहीं होते बल्कि एक हजार चतुर्युगियों के वर्ष संख्या से २५९२०००० वर्ष कम होते हैं। उपर्युक्त वर्ष संख्या के विरोध का कारण चिन्तनीय है। महर्षि ने इस ब्राह्म दिन में सृष्टि के व्यतीत हुये ६ मन्वन्तरों के १८४०३२०००० वर्षों+७वें वैवस्वत मन्वन्तर के व्यतीत हुये (२७ चतुर्युगियों २८ वीं चतुर्युगी के सत, त्रेता, द्वापर युगों, तथा कलियुग के व्यतीत हुए ४९७६ वर्ष) १२०५३२९७६० वर्षों को जोड़कर ही विक्रमी संवत १९३३ को १९६०८५२९७७ वां सृष्टि संवत् लिखा है। किन्तु सूर्य सिद्धान्त अ० १ श्लोक १८ व १९ पढ़ने से स्पष्ट होता है कि एक ब्राह्म दिन में १४ मन्वन्तर तथा १५ सन्धिकाल होते हैं। ७१ चतुर्युगियों का १ मन्वन्तर और प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में १७२८००० वर्षों का एक संधि काल होता है। सृष्ट्यारम्भ मे प्रथम मन्वन्तर के पूर्व १७२८००० वर्षों का प्रथम सन्धिकाल और प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में होने वाले चौदह संधि काल को जोड़कर १५ सन्धिकाल १४ मन्वन्तरों सहित एक ब्राह्म दिन मे होते हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व्यतीत हुये ६ मन्वन्तरों के ७ सन्धिकाल के १२०-९६००० वर्षों को क्यों नहीं जोड़ा कारण ज्ञात नहीं। यदि स्वामी जी उक्त ७ सन्धिकाल के वर्ष भी जोड़े होते तो वि० संवत् १९३३ को सृष्टि संवत १९६०८५२९७७ वां न लिखकर १९७-२९४८९७७ लिखे होते। आशा है कि सार्वदेशिक सभा इस पर प्रकाश डाल-कर सन्देह निवारण करने की कृपा करेंगी। इस वि० संवत् २०२५ तथा कलियुगी संवत् ५०६९ में सृष्टि संवत् १९७२९४९०६९ है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे वर्णित सृष्टि संवत् में ७ सन्धिकाल के १२०९६००० वर्षों के न जोड़ने से जो भूल हुई सी मालूम होती है उस पर आर्यजगत् के विद्वान् ही पर्याप्त प्रकाश डाल सकते हैं।

★

---

[पृष्ठ २ का शेष]

सब इस हवस के बन्दे हैं,
मतलब के सारे धन्धे हैं।
यहाँ लेने को तैयार सभी,
देने को कोई तैयार नहीं है।
फूलो अङ्गारों सम बनकर,
आज अग्नि को धधकाओ।
झुलस जाये यह दुनिया सारी,
ऐसी इसमें आग लगाओ॥

यह है भोगी मानव की अन्तर्वेदना और उसके प्रतिशोध की कामना। वह दुःखी है, इसलिए चाहता है सब दुःखी हो जायें। वह जिस आग में स्वयम् जलता है वह चाहता है, सारा संसार उसमें जलकर नष्ट हो जाये।

दूसरी जीवन पद्धति में योगीजन इसके सर्वथा विपरीत सार तत्व को पकड़ते हैं और आनन्दित रहते हैं। वे जानते हैं कि जिस प्रकार आत्मा के मिष से जीवन का संचालन होता है, उसी भाँति अनन्त संसार उस परम देव परमात्मा से संचालित होता है। परम चेतना परमात्मा पर उनका अटूट विश्वास होता है। तत्पश्चात् उन्हें अपने पर विश्वास होता है। उन्हें इस बात का बोध होता है कि परमेश्वर ने जीवात्मा के लिये कैसी सुन्दर, अद्भुत शरीरों की रचना की है। इनमें विभिन्नता क्यों है और मानव की शरीर रूपी मशीन सर्वोत्कृष्ट क्यों है ?

साधक इस बात को जानता है, कि दृश्यमान जगत् भौतिक नेत्रों से आत्मा को दिखाई देता है किन्तु किसी चेतन से वास्तविक सम्बन्ध तो आत्मना होता है जो भीतर का सम्बन्ध है। उस दिव्य सम्बन्ध की अनुभूति तो है किन्तु अभिव्यक्ति नहीं है। शरीरों के सम्बन्ध दृष्टिवान हैं। आत्मा के सम्बन्ध भौतिक इन्द्रियों के विषय नहीं है। जब आत्मा और आत्मा का सच्चा सम्बन्ध दृश्यमान नहीं है तो आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध इन भौतिक चक्षुओं का विषय क्यों कर हो सकता है ? परमदेव का दर्शन और मिलन तो भीतर की वस्तु है।

प्रश्न उठता है परमात्मा तो बाहर भी है। जी हाँ, बाहर भी है किन्तु कहाँ ? इस प्रकृति में। सम्पूर्ण समष्टि देव सविता का विराट स्वरूप है। जो नक्षत्र सूर्य,चन्द्र अन्तरिक्ष, भूमि को आप मूर्धा, केश, नेत्र, उदर और पाद की क्रमानुसार संज्ञा प्रदान कर सकते हैं। अनादि, अनन्त और असीम विश्वात्मा का प्रवाह भी तदनुकूल है और इसी लिये वह निराकार है। बाहर जो स्थूल है उसके भीतर विश्वात्मा का दर्शन भी तभी होगा जब आत्मवत् उससे सम्बन्ध जोड़ा जाएगा।

यही कारण है कि विप्र, योगी, मेधावी अपने मन और बुद्धि दोनों को केवल मन को ही नहीं उस परम देव से युक्त करते हैं, किसलिये ? उस महान् सर्वज्ञ प्रबुद्ध, सर्वान्तर्यामी देव का साक्षात्कार कर उसकी अभि स्तुति के लिये, उस परमदेव के गुणों को धारण करने के लिये जो आत्माओं की इच्छाओं, और चेष्टाओं को जानता है। वह दिव्य देव जो संसार में सबको धारण किये हुये हैं।

ज्ञान चक्षु को खोलकर प्रबुद्ध मानव योग पथ पर चलता है। परमात्मा का दर्शन जब उसे आत्मना होता है तो सुषुप्ति जागृति, भाव शून्य और दृश्य समाधियों मे वह भीतर बाहर सर्वत्र उसका दिव्य दर्शन करता रहता है। उस परम का मिलन उसे सर्वतः होता रहता है। आनन्दमय के मिलन से उसे केवल आनन्द मिलता है और जीवन की प्रत्येक स्थिति में वह आनन्द रस का पान करता रहता है। ऐसे योगी के जीवन में ही निरन्तर बसन्त विद्यमान रहता है। भावनाओं की कलियाँ महकती हैं। विचारों के सुमन सुरभित होते हैं, और समस्त जीवन सुगन्धित हो जाता है। सुन्दर और सुरभित जीवन ही अन्य मानवों को अपनी ओर आकृष्ट करता है और उन्हें भी भोग से योग की ओर ले जाता है। ●

## श्री दयास्वरूप जी की प्रचार यात्रा

अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध एव वनवासी गिरिवासी सेवा विभाग के अधिष्ठाता श्री दयास्वरूप जी ने इलाहाबाद के दक्षिण भाग मेजा तहसील एव मीरजापुर जिले में राबर्टसगंज तहसीलों का दौरा किया। १७,१८, १९ दिसम्बर को मेजा तहसील में महुआ मेला एव कोरांव में आपके तीन भाषण हुए। राबर्टसगंज तहसील में हिन्द बिजली के कारखाने के लिए प्रसिद्ध ओबरा में २२ दिसम्बर को सायकाल को आपका भाषण हुआ, जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। आप २३ दिसम्बर को भी ओबरा रुके और वहाँ के प्रतिष्ठित नागरिकों से मिले। कोरांव में समाज मन्दिर बनाने के लिये डाक्टर चन्द्रमाप्रसाद तिवारी ने भूमि नि:शुल्क देने की घोषणा की। मन्दिर निर्माण हेतु ५५३) रुपये की धनराशि के वादे हुए। ओबरा आर्य समाज मन्दिर बनवाने हेतु भूमि खरीद चुका है। मन्दिर निर्माणार्थ धनीमानी बन्धुओं को धन मन्त्री आर्यसमाज ओबरा जिला मिर्जापुर के पास भेजना चाहिये। ओबरा एव कोरांव दोनों स्थानों पर स्थानीय अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समितियों का गठन कर दिया गया है।

जहाँ भी अराष्ट्रिय गतिविधियाँ जोर पकड़ रही हैं, वहाँ श्री दयास्वरूपजी जाने को तैयार हैं। उनका पता है—

१३८ विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद-२

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

## आर्यसमाज चौक का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज चौक का वार्षिक उत्सव १९ जनवरी से २२ जनवरी तक स्वरूप रानी पार्क में बड़े समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। १९ ता० को नगर कीर्तन है। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् सर्वश्री आचार्य कृष्ण दिल्ली, प० ओम्प्रकाश शास्त्री खतौली मुजफ्फरनगर, पं० बिहारीलाल शास्त्री बरेली, आचार्या कुमारी प्रज्ञा वाराणसी, तथा प० ओम्प्रकाश जी वर्मा अम्बाला, श्री नन्दलाल जी आर्य, गाजीपुर, ठाकुर महिपालसिंह बलिया, प० धर्मराज जी लखनऊ, आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—राधेमोहन मन्त्री

## आर्यसमाज ही अब देश को बचा सकता है

अम्बाला मे भाषण देते हुए 'वीर प्रताप' व 'प्रताप' के सचालक श्री वीरेन्द्र ने कहा कि इस समय देश की जो स्थिति है उसका मुकाबला केवल आर्यसमाज ही कर सकता है, और आर्यसमाज ही देश को बचा सकता है।

आपने कहा राजनीतिक दलों ने देश की हालत बिगाड़ दी है और वर्त्तमान स्थिति मे आर्यसमाज देश की स्थिति सुधार सकता है।

श्री वीरेन्द्र ने कहा बहुत से अमरीकी युवक आर्य साहित्य की खोज के लिये भारत आये हुए हैं। वह उस साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं जिसने भारत में जागृति उत्पन्न की।

आपने बताया कि उनके पास आर्य समाज के विषय मे एक पुरानी पुस्तक थी एक अमेरिकी युवक ने उसके लिए २०० डालर देने की पेशकश की जबकि उसका मूल्य केवल २५ रुपये था।

श्री वीरेन्द्र ने बताया कि वह गत दिनों दक्षिण भारत गये थे वहाँ प्राचीन संस्कृति का प्रचार उत्तर भारत की अपेक्षा कहीं अधिक है। वहाँ महाराजा भी नगे पाव पूजा स्थान पर आते हैं इसी तरह दूसरे लोग भी आते हैं किन्तु हमारे नेता दूसरों को उपदेश करते हैं, परन्तु स्वय उस पर अमल नहीं करते भाषा के विषय मे आपने कहा कि मैसूर और केरल में हिन्दी का कोई विरोध नहीं है। विरोध केवल मद्रास मे है।

दोपहर पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा की बैठक श्री राम शरणदास की अध्यक्षता मे हुई। इसमे मुरादाबाद आर्यसमाज के उस प्रस्ताव का स्वागत किया गया जिसके अनुसार श्री आनन्द स्वामी सरस्वती को दोनों धड़ों का झगड़ा निपटाने के लिये कहा गया है। १९ जनवरी को लुधियाना मे सम्मेलन का निश्चय किया गया जिसमें पजाब की स्थिति पर विचार किया जावेगा।

## "मोहन मीकिन फैक्टरी के सहस्रों श्रमिकों द्वारा वैदिक यज्ञ"

"मोहन मीकिन फैक्टरी डालीगज लखनऊ के प्रबन्ध सचालक (मैनेजिंग डायरेक्टर) पद्मश्री नरेन्द्रनाथ जी मोहन कई मास से अस्वस्थ हैं। उनके स्वास्थ्य लाभ और दीर्घ जीवन की प्रार्थना हेतु वरिष्ठ अधिकारियों ने फैक्ट्री के प्रांगण मे प्रात ७॥ बजे प्रतिदिन वैदिक यज्ञ का आयोजन किया है जो बुधवार ८-१-६९ से नियमित रूप से चल रहा है। इस व्यवस्था मे फैक्टरी के सर्वश्री दत्ता, सब्बरवाल, कृष्णबलदेव और माता रामप्यारी जी तथा वैदिक प्रकाशन के सयोजक श्री ज्ञानकृष्ण अग्रवाल विशेष रुचि ले रहे हैं। लगभग पौन घण्टे के इस सस्वर यज्ञ मे एक सहस्र से भी अधिक श्रमिक एकत्र हो जाते हैं।

इस महान् धार्मिक आयोजन के लिए हम समस्त मोहन मीकिन परिवार को बधाई व आशीर्वाद देते हैं'

—ज्ञानकृष्ण अग्रवाल सयोजक

## नागौर मे अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह

आर्य समाज नागौर [राजस्थान] की ओर से "अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह एव स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" दि० २३-१२-६८ से २९-१२-६८ तक मनाया गया।

इस अवसर पर दिल्ली के पूज्य स्वामी श्री ब्रह्मानन्द जी सरस्वती एव आर्य प्रतिनिधि सभा अजमेर के भजनोपदेशक श्रीमान् प० भगवतीप्रसाद जी अमय पधारे थे। नगर के भिन्न-भिन्न मोहल्लों एव नगर से दो-दो मील दूर चेनार बडली ग्राम की रेगर (चमकार) बस्तियों मे सायकाल सार्वजनिक सभाये दोपहर में आर्यसमाज मे सभायें हुईं, जिनमे भिन्न विषयों पर पूज्य स्वामी जी महाराज का प्रवचन एव अमय जी के भजनोपदेश हुये। सप्ताह भर नगर नगर मे प्रभातफेरी का भी सफल कार्यक्रम रहा।

सप्ताह समाप्ति समारोह हरिजन बस्ती मे मनाया गया। सर्दी के इस भयङ्कर समय में भी पूज्य स्वामी जी के प्रवचन एव अमय जी के भजन सुनने के लिए बहु सख्या मे नर नारी उपस्थित होते थे।

इस प्रचार कार्य के लिये श्री जगदीशसिंह जी मैनेजर कापल टेक्स कम्पनी नागौर श्री चरणसिंह जी मास्टर ने मोटर बस का प्रबन्ध किया और महेश्वरी भवन के प्रबन्धक श्री बलदेव जी अटल आदि माहेश्वरी महानुभाव माहेश्वरी भवन एव न्यास की पोल मे प्रवचन का प्रबन्ध कराया। इस सहयोग के लिये आर्यसमाज इनके प्रति आभार प्रकट करते हुये धन्यवाद देती है।

—विष्णु शर्मा, मन्त्री

## माघ मेला प्रयाग मे वैदिक धर्म प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनाक १२ से १३ जनवरी १९६९ ई० तक प्रयाग के त्रिवेणी तट पर आयोजित माघ मेला मे वैदिक प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्व श्री प्रकाशकौर जी शर्मा, खेमचन्द जी शर्मा, लक्ष्मणसिंह जी, पन्ना सिंह जी आर्य भजनोपदेशक, बहिन सलीपाल जी निपुण सगीतज्ञ पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी (ज्वालापुर) श्री रामनिवास जी डा० के० एस० गोयल जी इत्यादि विद्वानों के ज्ञान वर्धक एवम् चित्ताकर्षक भजनोपदेश हुये। —वेनीमाधव देवसिंगल, मन्त्री

-यह जानकर दुःख हुआ कि श्री वैद्य रामस्वरूप जी आर्य गाँव मकडौली जि० रोहतक का दिनांक ३० १२-६८ को साय आठ बजे ७५ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया।

श्री वैद्य रामस्वरूप जी गाँव के सर्व प्रथम आर्यसमाजी थे तथा सम्पूर्ण जीवन अविवाहित ही रहे। यह उनका अनुकरणीय आदर्श था, कि उन्होंने पूर्ण जीवन रोगियों की नि:शुल्क ही चिकित्सा की। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सुरेन्द्रकुमार सामवेदी
वेदव्यास राउरकेला

## ग्राम बघरा (मु० नगर) में १३२ ईसाइयो की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री डालचन्द जी ने २९-१२-६८ को ग्राम बघरा जिला मुजफ्फरनगर में एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिनमे १३२ ईसाइयो ने वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर अपनी पुरातन वाल्मीकि जाति मे प्रवेश किया। शुद्धि सस्कार श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया। ग्राम मे दो दिन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। श्री दीपचन्द्र व मेहरसिंह जी के भजनों से ग्रामीण लोग बड़े प्रभावित हुये। श्री हरिदत्त शर्मा ने शुद्धि होने वाले भाइयों का शुद्धि सभा की ओर से स्वागत किया।

—द्वारिकानाथ, प्रधान मन्त्री

## आर्य कन्या विद्यालय गोविन्द नगर का निर्वाचन

आर्य कन्या उच्चतर विद्यालय गोविन्दनगर कानपुर का निर्वाचन श्री बशीलाल खन्ना की अध्यक्षता में निम्न-प्रकार हुआ।

अध्यक्ष—श्री देवीदास आर्य, उपाध्यक्ष—डा० नन्दलाल गाधी, प्रबन्धक—श्री शिवदयाल टुटेजा, स० प्रबन्धक—श्री द्वारकानाथ उप्पल, कोषाध्यक्ष—श्री शुभकुमार बोहरा। —शिवदयाल

## अवकाश प्राप्त कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय को ऐसे अवकाश प्राप्त वृद्ध आर्य एवं अनुभवी कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो डबल एन्ट्री प्रणाली द्वारा हिसाब किताब रखने लायब्रेरी का कार्य करने तथा कार्यालय के अन्यान्य कार्य में दक्ष हों। प्रार्थना पत्र सभा मन्त्री को निम्न पते पर भेजें या स्वयं मिलें।

महर्षि दयानन्द भवन,
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली १

## आर्यसमाज बुलन्दशहर का शोक प्रस्ताव

दिनांक ६-१-१९६९ को आर्यसमाज बुलन्दशहर के इस साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित सभी सज्जनों को श्री महाशय शिवलाल जी वर्मा प्रधान आर्यसमाज बुलन्दशहर द्वारा यह जानकर अति दुःख, क्लेश हुआ कि हमारे नगर के सुप्रसिद्ध व्यक्ति श्री महाशय मुन्शीलाल जी गुप्त का स्वर्गवास हो गया है।

स्वर्गीय महाशय मुन्शीलाल जी गुप्त जहाँ एक बाल ब्रह्मचारी, त्यागी, तपस्वी थे वहाँ वह राष्ट्र के एक उच्च इस जिले के विजयी सेनानी भी थे। वह अपने जीवन काल में पाँच-छः बार देश की स्वतन्त्रता की लगन हेतु जेलखाने भी गये और वहाँ की नाना प्रकार की यातनायें भी बहुत मस्ती से सहन कीं-कभी भी घबराये नहीं। महाशय शिवलाल जी वर्मा के वह बहुत ही पुराने सच्चे साथी थे। तथा अटल विश्वासी थे, वह केवल आर्य ही नहीं थे,परन्तु वह एक विद्वान् करमठ ऊर्ध्व सुधारक भी थे, स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने अपने जन्मस्थान बुलन्दशहर को छोड़कर शेष जीवन हरिद्वार में मोहनी आश्रम में रहते हुये वेद शास्त्रों के अध्ययन भजन पूजा, लेखनी द्वारा परोपकारार्थ प्रचार भी काफी कवितारूप में अपने किया—उनके भाइयों ने सदैव ही उनकी आज्ञा का पालन किया।

परमात्मा से हम सभी की यह हार्दिक प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति दें और उनके परिवार को धैर्य और सन्तोष प्रदान करें।

—शिवलाल वर्मा—प्रधान
—बनारसीदास शर्मा—मन्त्री
आर्यसमाज, बुलन्दशहर

# उपाध्याय स्मारक निधि

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उपाध्याय स्मारक निधि मे अब तक निम्नलिखित सज्जनों से निम्नांकित राशि प्राप्त होने का वचन प्राप्त हुआ है। यह निधि आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय के देहावसान के पश्चात उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु स्थापित की गई जिसमे २५०००) रु० एकत्र किया जायगा और किसी बैंक में स्थिरनिधि मे जमा कर १२००) प्रति वर्ष सूद प्राप्त करके आर्य सिद्धान्तों पर लिखी हुई सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के लेखक को सम्मानित करके उपाध्याय पारितोषिक के रूप में प्रदान किया जायगा। इसके लिये निम्नलिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाई गई है। सर्वश्री प्रो० सत्यप्रकाश, दयास्वरूप, सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली अभय कृष्ण जौहरी, प्रधान आर्यसमाज चौक प्रयाग, प० मूलचन्द अवस्थी, प्रबन्धक आर्य कन्या इण्टर कालेज, प्रयाग, राधेमोहन मन्त्री आर्यसमाज चौक प्रयाग।

### सूची

| | |
|---|---|
| १—श्री प्रो० सत्यप्रकाश, प्रयाग | २५००) |
| २—श्री महात्मा आनन्द गिरि जी, लुधियाना | ५०१) |
| ३— " गङ्गाप्रसाद जी उमाशंकर आयलमिल, प्रयाग | २५१) |
| ४— " प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर, पंजाब | १०१) |
| ५— " डा० ओमप्रकाश जी सिविल अस्पताल, लुधियाना | १०१) |
| ६— " महात्मा आनन्द भिक्षु जी, दिल्ली | १०१) |
| ७— " महाशय शिवचरणलाल आर्य, प्रयाग | १०१) |
| ८— " हरिश्चन्द्र जी साहु, प्रधान आर्यसमाज कृष्णनगर प्रयाग | १०१) |
| ९— " प्रेमनारायण चतुर्वेदी, प्रधान आर्यसमाज रानी मण्डी | १०१) |
| १०— " कृष्णप्रसाद जी प्रयाग | १०१) |
| ११— " श्यामकिशोर सिद्धान्त शास्त्री प्रयाग | १०१) |
| १२— " विनयकुमार जी कलाप्रेस, प्रयाग | १०१) |
| १३— " प० इन्द्रदत्त शर्मा | १०१) |
| १४— " कुमारी देवी ( धर्मपत्नी श्री सरजूप्रसाद गुप्त प्रयाग) | १०१) |
| १५— " बिहारीलाल कक्कड़, इलाहाबाद बैंक प्रयाग | ५१) |
| १६— " बैजनाथ प्रसाद गुप्त | २५) |
| १७— " बालकृष्ण शर्मा, भजनोपदेशक आजमगढ़ | २५) |
| १८— " मदनमोहन विद्यासागर, हैदराबाद | ११२)५० पैसा |
| १९— " स्वामी परमहंस जी महाराज, प्रयाग | ५) |
| २०— " बैजनाथ प्रसाद आर्य प्रयाग | १२५)५० पैसा |
| २१— " राधेमोहन मन्त्री आर्यसमाज चौक, प्रयाग, | १०१) |
| २२— " मूलचन्द्र अवस्थी, ओंकार प्रेस | १०१) |
| २३— " राजाराम गुप्त, भूतपूर्व, प्र० जिला आर्य सभा, प्र० | १०१) |
| २४— " प० धर्मदेव विद्या मार्तण्ड ज्वालापुर | २५) |
| २५— " विश्वम्भरदयालु वर्मा आर्यसमाज मुट्ठीगंज प्रयाग | १०१) |
| २६— " बुद्धदेव जी शास्त्री प्रयाग | ५१) |
| | ५१६९॥) |

—राधेमोहन (संयोजक)

(पृष्ठ ६ का शेष)

संसार के साहित्य धर्म और सभ्यता के जन्म दाता है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थ महाभारत से भी यह पता चलता है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध के अनन्तर हिन्दुओं के सैकड़ों घराने पश्चिम की ओर गये और यूनान फिलस्तीन रूस और मिस्र आदि देशों मे जाकर रहे। वहां की नदियों पहाड़ों और झीलों के नाम आर्यावर्त के नामों पर ही रखे। जैसे दक्षिण भारत में 'पालीताना' नगर से जाने वालों ने वहाँ 'नेसेरटाइन' नाम का नगर बसाया। मनुस्मृति मे शेख जाति के लिए लिखा है—

'ब्रात्यस्तु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टक।
आवन्त्यवाटधानौ च पुष्पध शेख एव च॥' मनु०

इससे पता चलता है कि आर्यों से उत्पन्न हुई एक वर्णसंकर जाति को शेख कहते है यह ब्राह्मणों के मेल से पैदा हुई है। यह अरब जाकर शेख कहलाई। श्री शंकराचार्य के लिये

'He took his birth in a Brahman family in Arabia and was educated in the University of Alexandia" [Asiatic Researches Vol. x Page 58]

मिस्टर विलफोर्ड ने लिखा है कि अरब के ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ और अलेक्जेंड्रिया विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी यह भारत से जाने वाले परिवार ही तो थे।

यह भली भाँति सिद्ध हो गया कि हिन्दू कहीं बाहर से नहीं आये बल्कि आर्यावर्त से ही संसार में जाकर बसे। द्रविड आदिवासी और दास सब आर्यों से ही निकले हैं और हिन्दू ही हैं बल्कि मुसलमान और ईसाई भी भारत माता की ही सन्तान हैं।

—सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षायें आगामी जौलाई ६९ के अन्तिम सप्ताह में होंगी। —मन्त्री

—दिसम्बर सन् १९६८ मे अलीगढ़ जिले मे श्री शिवचरणलाल गौतम और श्री काशीनाथ जी प्रचारक द्वारा १४४ हरिजन ईसाइयों को शुद्ध किया गया।

—रघुवीरशरण आर्य

—१ से २ जनवरी तक श्री प० छाजूराम शांत आर्य भजनोपदेशक ने विकवाजीतपुरा सुल्तानपुर में भजनों और मैजिक लालटेन द्वारा प्रचार किया। —रूपनारायण आर्य प्रधान

—२९ दिसम्बर को परसपुर (गोंडा) में नवीन आर्य समाज की स्थापना हो गई।

—रामवर्ण पाण्डेय, गोंडा

—अनेक महानुभाव मेरे द्वारा साहित्य को पढ़कर मुझे लम्बे पत्र लिखते हैं, ऐसे सज्जनों से प्रार्थना है कि वे अपने-अपने विचार रोग की अवस्था संक्षिप्त में लिखें और उत्तर के लिए डाक व्यय भेजा करें।

—आचार्य भद्रसेन
वैदिक विहार अजमेर

—आर्यसमाज मिठौरा बाजार का उत्सव १ से ५ जनवरी तक सानंद सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

—२ फरवरी को आर्यकुमार सभा हरथला कालोनी मुरादाबाद धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। इसमे बालक बालिकायें भाग ले सकेंगी।

—चन्द्रप्रकाश आर्य

—५ जनवरी को आर्यसमाज मानापेट पूना में जानसन नामक एक ईसाई की शुद्धि की गई। शुद्ध होने के पश्चात् इनका ज्ञानदेव नाम रखा गया।

—शिवलाल वर्मा मंत्री

## वैदिक पहेली

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महोदेवो मर्त्याँ आ विवेश॥
[ऋ० ४।५८।३]

आर्य्य कुमारों व कुमारियों।

ऊपर एक वेद मन्त्र दिया हुआ है जिसका शब्दार्थ यह है—

(१) एक वृषभ है जिसके चार सींग हैं, तीन पैर हैं दो सिर हैं, सात हाथ हैं।

(२) वह वृषभ तीन स्थानों पर बांधा जाता है और गर्जना करता है।

(३) वह वृषभ महान् दिव्य शक्तियों से युक्त है और मनुष्यों के अन्दर प्रविष्ट है।

क्या तुम जानते हो वृषभ किसे कहते हैं और मन्त्र के अनुसार वृषभ कौन है, यदि हां तो हमें तुरन्त लिख भेजो, यदि नहीं तो अपने माता पिता और गुरु से पूछो और फिर हमें लिख भेजो। उत्तर १८।२।६९ तक प्राप्त हो जाने चाहिये। जिन बच्चों के उत्तर शुद्ध होंगे वे २३।२।६९ के आर्यमित्र में प्रकाशित किये जायेंगे। उत्तर भेजने वाले अपना नाम व पूरा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। जिस गुरुकुल व विद्यालय में पढ़ते हों उसका नाम तथा कक्षा की संख्या भी लिखें।

पत्र पर 'वैदिक बाल पहेली' अवश्य लिखें और आर्य कुमार संघ नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ—१ के पते से पत्र भेजें।

वसन्त



## सांप का विष सोने से कई गुना महंगा

बम्बई ६ जनवरी—स्थानीय हाफकिन इन्स्टीट्यूट के निर्देशक डा. पी जे. देवरस ने कल यहां भारतीय विज्ञान कांग्रेस में कहा कि सांप के विष की तुलना में सोना बहुत सस्ता है। एक ग्राम सांप का विष १२५ से २५० रुपये तक में मिलता है, जबकि सोने का मूल्य १२ रुपये प्रति ग्राम है।

उन्होंने कहा कि देश में सांप उपलब्ध हैं और अब समय आ गया है जब कि हमें जानवरों से मिलने वाले ऐसे माल का उपयोग करना चाहिए। लेकिन हम करते यह हैं कि सांप से डर कर हम उसे मार डालते हैं। हमें उसका विष निकाल कर बेचना चाहिये।

## ९५ हजार की कमीज

सान रीमो, ६ जनवरी—स्विस कपड़े और हीरों के बटन लगी कमीज ८० लाख लिरा (९५ हजार ४०० रु०) में बिकी, मिलन के एक अज्ञात खरीदार को दुकानदार ने पांच लाख लिरा (५,९६६ रु० की छूट दी।

—आर्यसमाज शाहगाहपुर वाराणसी प्रधान श्री [illegible], मन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसादसिंह कोषाध्यक्ष श्री गयासिंह जी, —मन्त्री

—आर्य समाज विकबाजितपुर (सुल्तानपुर) प्रधान श्री रूपनारायण जी अर्य मन्त्री श्री सूयनारायण जी कोषाध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र। —मन्त्री

# अहिंसा का अर्थ

—श्री दिनेशचन्द्र वर्मा

उदयगिरि की पहाड़ियों के पीछे से सूर्य की प्रथम किरण ने जन्म लिया कोमल, स्वर्णिम और स्निग्ध प्रकाश वेत्रवती के पवित्र जल में झिलमिलाने लगा। हरीतिमायुक्त जल तथा तटों पर स्थित सघन-कुञ्जों, आम्र वृक्षों एव लतिकाओं का वर्ण स्वर्णिम हो गया। सम्पूर्ण विदिशा नगर इस प्रकाश से नहाकर और भी अधिक कांतिमय हो उठा।

भिक्षुओं का वह दल, जिसका नेतृत्व मगध कुमार महेन्द्र कर रहे थे, सम्पन्नता समृद्धि, सौंदर्य, कला एव वाणिज्य की प्रसिद्ध नगरी विदिशा में प्रविष्ट हुआ। वेत्रवती नदी को पार करते हुए उनकी जयध्वनि के साथ पवित्र स्वर लहरियाँ गूंज उठीं—

बुद्धम् शरणम् गच्छामि
धम्मम् शरणं गच्छामि
संघम् शरणम् गच्छामि।

यह भिक्षु दल राज मार्ग पर चल रहा था। अश्वों रथों और अन्य वाहनों पर सवार नागरिक उन्हें श्रद्धा से देख रहे थे। झरोखों से नारियाँ झाँक रही थीं। यह दल बढ़ते बढ़ते राज महिषी देवी असन्धिमित्रा के गगनचुम्बी प्रासाद के सामने रुक गया। प्रतिहारी ने श्रद्धा और सम्मान के साथ सिर झुकाते हुए कहा—"आज्ञा दें देवगण!" एक भिक्षुक ने कहा,—"महामहिषी को सूचित कीजिये कि भिक्षु महेन्द्र उनके दर्शनों को आतुर हैं।"

राजमहिषी देवी असन्धिमित्रा यौवन की आयु सीमा को लाँघकर प्रौढ़ावस्था में प्रविष्ट हो गई थीं। जीवन की क्षण-भंगुरता के ध्रुव सत्य को उन्होंने जान-पहिचान लिया था। इसीलिये मगध के सर्वाधिक धनी नगर के नगर-श्रेष्ठि की कन्या और भारत के सम्राट की हृदय साम्राज्ञी होने पर भी वे सादगीपूर्ण धार्मिक वातावरण में अपने जीवन के शेष दिन बिता रही थीं। प्रतिहारी ने जब उनके कक्ष में प्रवेश किया तो उनका कक्ष गुग्गुल, चन्दन, अगर, घृत और पुष्पों की सुगन्धि से भरा हुआ था। वे प्रार्थना से निवृत्त होकर उठ रही थीं कि प्रतिहारी ने सिर झुकाया और कहा, 'देवी की जय हो! सूर्य एव अग्नि के समान तेजस्वी मौर्य कुमार भिक्षु महेन्द्र, देवी के दर्शन करना चाहते हैं।"

भिक्षु महेन्द्र! मौर्य कुमार महेन्द्र! देवी असन्धिमित्रा के मन में ममता और वात्सल्य का सागर हिलोरें लेने लगा। द्वार की ओर दौड़ पड़ीं—पर एकाएक रुक गईं। उनके मन मे एक विचार विद्युत् की तरह कौंध गया—

भिक्षु से किसी सांसारिक जीव का क्या सम्बन्ध? धर्म ने ममता और वात्सल्य की उमड़ घुमड़ रही नदी पर बाँध बाँध दिया। उनके कदम ठिठक गये। उन्होंने प्रतिहारी से कहा—"भिक्षु दल से कहो, हमें दर्शन देकर कृतार्थ करें।"

भिक्षु दल ने राजप्रासाद मे प्रवेश किया। ऐश्वर्य और वैभव से भरे पड़े उस प्रासाद मे प्रवेश करते समय भिक्षु महेन्द्र की दृष्टि झुकी हुई थी। कल तक वे इस प्रासाद की प्रत्येक वस्तु के उपभोग के अधिकारी थे—पर आज, किसी वस्तु को अपना समझना भी पाप था।

देवी असन्धिमित्रा अक्षत, पुष्प एव दीपमालिका से शोभित थाल लिए हुए भिक्षु दल की प्रतीक्षा कर रहीं थीं, उन्होंने कहा—'आज मैं कृतार्थ हुई देवगण! आइये आपका स्वागत है।' महेन्द्र ने आश्चर्य और विस्मय से अपनी माँ की ओर देखा और उनके हाथ जननी के चरण-रज लेने के लिए आगे बढ़े। देवी असन्धिमित्रा ने हाथ थाम लिये और कहा—भिक्षु महेन्द्र! तुम्हे यह शोभा नहीं देता। तुम भिक्षु हो—हम गृहस्थों के लिये श्रद्धेय और पूज्य। तुम पवित्रता, धर्म और उच्च कर्म के प्रतीक हो। एक साधारण गृहस्थ नारी के पैर छूना उचित नहीं है।' पवित्र पीत परिधान मे सूर्य की कांति को लज्जित कर रहे महेन्द्र ने कहा—'देवी! आप मेरी माँ हैं। आपके पवित्र गर्भ से मैंने जन्म लिया है। आप सदैव मेरे लिये पूज्य, आदरणीय एव श्रद्धास्पद हैं।' देवी असन्धिमित्रा को इस उत्तर की पहले से ही अपेक्षा थी। उन्होंने कहा—'भिक्षु कौन श्रेष्ठ है? कौन पूज्य और आदरणीय है, यह निर्णय कर्म करते हैं। जिसके कर्म श्रेष्ठ हैं, वही व्यक्ति श्रेष्ठ, आदरणीय और पूज्य है। भिक्षु के आचार विचार और कर्म सदैव श्रेष्ठ होते हैं, इस लिये वे सदैव पूज्य हैं। अब आप युवराज महेन्द्र नहीं हैं, बल्कि उससे भी कहीं अधिक सम्माननीय एवं आदरणीय भिक्षु हैं। आप चक्रवर्ती अशोक से भी ज्यादा श्रेष्ठ और महान् हैं। मेरा एक तुच्छ गृहिणी का आतिथ्य स्वीकार कीजिये।

महेन्द्र के नेत्रों मे अश्रु कण झलक उठे। देवी असन्धिमित्रा भी कराह उठीं, मगर उनकी यह कराह वे ही सुन और समझ पायीं। भिक्षुओं ने आतिथ्य ग्रहण किया और विश्राम हेतु वेदसगिरि विहार की ओर लौट पड़े। विदिशा के व्यस्त मार्गों पर पुन एक बार इन भिक्षुओं की घोर गम्भीर वाणी गूंजने लगी।

देवी असन्धिमित्रा मध्याह्न भोजन से ही निवृत्त हो पाई थीं कि प्रतिहारी ने सूचना दी कि कुछ नागरिक देवी के दर्शनों के इच्छुक हैं। देवी भेंट कक्ष मे उपस्थित हुई। नागरिकों मे विभिन्न ग्रामों के व्यापारी, ग्राम पति एव भूपति सम्मिलित थे। देवी असन्धिमित्रा के आगमन पर वे नतमस्तक खड़े हो गये। —देवी की जय हो! हम आपके पास प्रार्थना लेकर आये हैं।'—नागरिकगण! नि सकोच एव निर्भय होकर अपनी बात कहिये, आप मेरे लिये प्रजा नहीं, बल्कि भ्राता तुल्य हैं।"

—"देवी की जय हो! इन दिनों विदिशा जनपद मे दस्युओं ने आतङ्क मचा रखा है। इन दस्युओं का नेता है कालजयी। ये दस्यु नर-संहार कर रहे हैं, धन, सम्पत्ति का हरण कर रहे हैं और वेत्रवती तथा वेस के कछार मे उपजने वाली अमूल्य फसलें नष्ट कर रहे हैं। हम देवी की प्रजा हैं। देवी हमारी रक्षा करें।" नागरिक सिसकते स्वर मे अपनी व्यथा सुना रहे थे। देवी असन्धिमित्रा के गौर मुख मण्डल पर एक तनाव सा आ गया। उन्होंने कहा—'आप चिन्ता न करें मै शीघ्र ही इन दस्युओं से प्रजा की रक्षा का प्रबन्ध करूँगी।"

भिक्षु महेन्द्र देवी असन्धिमित्रा द्वारा निर्मित वेदसगिरि विहार में ठहरे थे। सूर्य क्षितिज के आँचल में छिप जाने के लिये शीघ्रता कर रहा था, आम्र-कुञ्जों के मध्य भिक्षुगण भगवान् बुद्ध की पवित्र वाणी का पुण्य स्मरण कर रहे थे। आकाश मे पक्षी उड़ रहे थे और चहचहा रहे थे। सम्पूर्ण वातावरण मानो भगवान् बुद्ध के ध्यान मे लीन था। मगर महेन्द्र के मन की शान्ति और आत्मा का उत्साह नष्ट हो गया था। वे अपने पिता और गुरुओं की आज्ञा शिरोधार्य कर भगवान् बुद्ध की परम पावन वाणी का प्रचार करने भी लङ्का जा रहे थे। माता असन्धिमित्रा के दर्शनों की उन्हें उत्कट अभिलाषा थी, वे अपनी इस महान् यात्रा पर प्रस्थान के पूर्व अपनी विदुषी माता के पवित्र आशीर्वाद लेना चाहते थे। किन्तु माता ने ममता त्याग दी और उसके स्थान पर धर्म ग्रहण कर लिया। महेन्द्र सोच रहे थे—कर्त्तव्य का नाम धर्म है। इसलिये माँ की—ममता भी धर्म है, किन्तु विदुषी माता तो कर्म को धर्म मानती है।

अन्धकार छा गया। महेन्द्र को लगा उनकी आत्मा पर भी निरुत्साह एवं विषाद की अधेरी घटायें छाती जा रही हैं। वे एक शिला पर बैठ गये और शून्य की ओर देखने लगे।

एकाएक महेन्द्र चौंक कर खड़े हो गये। उस अन्धकार में दो छायाए उनके पास आकर खड़ी हो गई थीं। वे अन्धकार मे उन्हें देख रहे थे। एक छाया ने कहा—भिक्षु महेन्द्र!" महेन्द्र ने स्वर पहिचाना—राज महिषी असन्धिमित्रा का था। "आज्ञा दीजिये राजमहिषी।" महेन्द्र ने उत्तर दिया। "हाँ! आज मैं तुम्हें आज्ञा देने ही आई हूँ। विदिशा जनपद मे दस्यु कालजयी और उसके साथियों ने आतङ्क मचा रखा है। उनका संहार करके इस जनपद के नागरिकों को भय मुक्त करो।" "महेन्द्र स्तब्ध रह गये, बोले—"देवी यह आप क्या कह रही हैं? मैं बौद्ध हूँ, बौद्ध भिक्षु। किसी प्राणी के वध की कल्पना मात्र ही पाप है।"

'महेन्द्र! देवी असन्धिमित्रा की वाणी गम्भीर हो उठी। उन्होंने कहा—'यह मत भूलो कि मैं भी बौद्ध हूँ और तुम्हे ९ महीने तक अपने गर्भ में धारण किया है। तुम्हारी धमनियों में मौर्यवंश का शौर्यपूर्ण रक्त प्रवाहित हो रहा है। फिर यह किस धर्म मे लिखा है कि अपनी मातृभूमि, अपने प्रिय देश पर संकट आये तो कायरों की समान हत्या और हिंसा से डरने लगो? धर्म और मातृभूमि दोनों मे कौन बड़ा है, यह तुम स्वय जानते हो।" महेन्द्र चुप खड़े थे। देवी असन्धिमित्रा की ओजपूर्ण वाणी से उनके मन मस्तिष्क में शौर्य का संचार

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
पौष २९ शक १८९० माघ शु० १
( दिनांक १९ जनवरी सन् १९६९ )

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र

# साहित्य-समीक्षण

[इस स्तम्भ के अन्तर्गत समालोचना के लिए प्रत्येक कृति की दो प्रतियाँ प्रेषित करना चाहिये —सम्पादक]

**(१) गुरुडम के पाखण्ड मूल्य ४० पैसे**
**(२) हंसामत का पोलखाता मूल्य १५ पैसे**

लेखक—आचार्य डा० श्रीराम आर्य
प्रकाशक—वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगंज (उ० प्र०)

वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगंज (उत्तरप्रदेश) के खण्डन मण्डन माला के ये क्रमानुसार पुष्प ३३ व ३५ है। गुरुडम के पाखण्ड में २० [वीं शताब्दी के अवतारों का खोता जागता पोल खाता है। इस लघु पुस्तिका में निम्नलिखित मतों व अवतारों का खण्डन किया गया है—

(१) हंसामत (२) आनन्दमार्ग (३) आनन्द पुरिये (४) सोऽहं व शिवोऽहं पार्टी [ब्रह्मानन्द पन्थ] (५) निरंकारी मत (६) अम्मा पन्थ (७) होंगी कृष्णावतार (८) निरंकुश ब्रह्मचारी (९) मेहरबाबा (१०) जय गुरुदेव (११) ब्रह्माकुमारी।

हंसामत का पोल खाता में हंसामत का जो खण्डन किया गया है, वह गुरुडम के पाखण्ड में भी उपलब्ध है। गुरुडम के पाखण्ड में गुरुडम पर आचार्य जी का एक शास्त्रीय लेख भी है। आचार्य जी के दिल मे पाखण्ड के प्रति जो तड़प है उसका अनुमान पाठक निम्नलिखित शब्दों से कर सकते हैं—

"भारतीय आर्य जाति का बड़ा दुर्भाग्य रहा है कि जिसने भी जिस प्रकार से चाहा उसे धोखा दिया है, जिसने चाहा वही परमात्मा का अवतार बन बैठा है। लोग आखे बन्द कर उसके पीछे हो लेते हैं। साधारण सा आदमी विश्वव्यापी ब्रह्म बनने का दावा करने लगता है।'

सस्ते साहित्य के अन्तर्गत पाखण्ड खण्डन ग्रन्थ माला के ये पुष्प आर्य जाति में महकने चाहिये, इसलिए आर्यसमाज के सदस्यों तथा विद्वानों को चाहिये कि वे अधिकाधिक संख्या में इन पुष्पों को मंगाकर भोली-भाली हिन्दू जनता मे दिल खोलकर वितरित करें ताकि जनता इन पाखण्डियों के कुचक्रों से बचे और पुनीत वैदिक सत्य सनातन धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ सकें।

—वसन्त

होने लगा था— किन्तु धम ···· ! धर्म उनके पैरों मे बेड़िया डाल दी थीं।

देवी असंघमित्रा ने आगे कहा "महेन्द्र ! तुम भी लड़का जा रहे हो। अपने पिता के रक्त को कीर्तिमान बनाने, मेरे दूध को यश देने, किन्तु आज यदि तुम कर्त्तव्य से पीछे हट गये, अपने कर्म से विमुख हो गये तो तुम्हारा, मेरा और तुम्हारे पूज्य पिता का नाम कलङ्कित हो जायगा। इतिहास तुम्हे एक कायर के रूप मे याद करेगा। फिर अहिंसा का अर्थ क्या है? क्या निरीह मानवों को पशुओं की तरह हत्या होने देना अहिंसा है। क्या देश की धन सम्पत्ति और उपज नष्ट होते हुए देखते रहना अहिंसा है। क्या बल, विक्रमशील एव पराक्रम के धनी होकर यह सब देखते रहना अहिंसा है?"

महेन्द्र के पास कोई उत्तर नहीं था। पर उनकी भुजाएँ फड़क रही थीं, रक्त खसना उठा था। उन्होंने कहा "माँ, भूल हुई मुझसे मैं काल अरी का वध करने को तय्यार हूं" देवी असंघमित्रा के नेत्रों में प्रसन्नता के अश्रु कण छलछला आये। उन्होंने कहा— मुझे यही आशा थी। लो ये खड्ग धारण करो-तब तक के लिये जब तक मातृभूमि का संकट दूर नहीं हो जाता।' दूसरी छाया एक दासी थी। वह आगे आई देवी असंघमित्रा ने उसके हाथ में रखे थाल पर पड़ा रेशमी वस्त्र उठा लिया। अंधेरे में विद्युत शलाका की भांति खड्ग चमक उठा।

एक सप्ताह बाद ! कालअयी और उसके साथियों के मस्तक विदिशा के राजमहल पर लटक रहे थे—

# अमृत वर्षा

## महर्षि दयानन्द ने कहा था—

## मुक्ति के साधन

जो मुक्ति चाहे वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्या भाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है उनको छोड़ सुख स्वरूप फल को देने वाले सत्य भाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे, वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे, क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है। सत्पुरुषों के सङ्ग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्याऽकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करें, पृथक-पृथक जानें और शरीर अर्थात् जीव पञ्च कोशों का विवेचन करें। [सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास]

# हमारे पाठक क्या कहते हैं?

## डी. ए. वी. का नाम दयानन्द वैदिक कालेज हो एंग्लो शब्द अराष्ट्रिय

महोदय,

आपके सम्मानित पत्र द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा तथा भारतीय आर्य समाज के प्रबुद्ध उन्नायकों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि अंग्रेजियत ही राष्ट्रिय जीवन से पृथक करने के लिए डी० ए० वी० कालेजों से ऐंग्लो शब्द निकालने की ओर सचेष्ट हों। ज्ञातव्य है कि अंग्रेजी के व्यापक प्रभाव को उदासीन करने के लिये उग्र आन्दोलन हो चुके हैं। महर्षि दयानन्द ने हिन्दी के उन्नयन तथा प्रचार प्रसार के लिए अपने समस्त कार्य हिन्दी मे करने का संकल्प लिया था। ब्रिटिश शासन काल में वैदिक ज्ञान की ज्योति प्रदीप्त करने के लिए लाला लाजपतराय के सद् प्रयासों से डी० ए० वी० कालेजों की स्थापना हुई थी।

प्रारम्भ मे ये विद्यालय आर्य संस्कृति के उत्कर्ष में प्राणपण से जुटे किन्तु अब ये राजनीतिक ऊहापोह मे अपने लक्ष्य से विरत होते जा रहे हैं। अस्तु, मेरा सुझाव है कि दयानन्द वैदिक विद्यालय अपने पूर्वजों पर यथावत चलते हुए हिन्दी का सबल प्रसार करें।

आशा है इस पर शीघ्र निर्णय लेकर इस कार्य को स्वदेशीय तरीके से हिन्दीमय किया जावेगा। धन्यवाद,

भवदीय

—मुकुलचन्द्र पाण्डेय
प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान विभाग
शिया डिग्री कालेज लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये पदमाकर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से ज्ञानचन्द्र शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ-रविवार माघ १३ शक १८९०, माघ शु० १५ वि० सं० २०२५, दिनाङ्क २ फरवरी १९६९

*परमेश्वर की अमृत वाणी—*

# पापियों का, असत्यवादियों का तथा राक्षसों का सर्वनाश होता है

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते ॥

[ अथर्व ८।४।१३ ]

भावार्थः—(सोमः वा उ) आनन्ददाता परमात्मा तो (वृजिनम्) पापी को (न) नाही (मिथुया धारयन्तम्) असत्य धारण करने वाले (क्षत्रियम्) क्षत्रिय को (न हिनोति) नहीं प्रेरता है (रक्षः हन्ति) राक्षस को मार देता है (असद् वदन्तम्) असत्य बोलने वाले को (आ हन्ति) सर्वथा नष्ट कर देता है (उभौ) वे दोनों (इन्द्रस्य प्रसितौ शयाते) इन्द्र के बन्धन में पड़े रहते हैं।

परमात्मा ही इस संसार का वास्तविक स्वामी है। वह ही जड़ चेतन का उत्पादक, पोषक और नाशक है। वह सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, इसलिये सर्वज्ञ है। सृष्टि का उस ने अनुपम विधान बना रखा है। जड़ जगत् उसके निश्चित नियमों के अनुसार चलता रहता है। चेतन प्राणियों का नियन्त्रण वह उनके भीतर प्रेरणा के रूप में करता है। भोग योनि में पड़े जीव तो ऋतानुसार भोगरत रहते हैं, अथवा अन्य चेतनों को कर्मफल प्रदान करने के निमित्त प्रभु प्रेरणा से कर्म करते हैं, किन्तु जीव योनि में अर्थात् मानव को कर्म करने की जो स्वतन्त्रता है, उसे दुरुपयोग से बचाने के लिये कल्याणकारी प्रभु प्रत्येक मानव को उसके अन्दर से दिव्य प्रेरणाएं देता रहता है। जो अपनी अन्तरवाणी का श्रवण करते हैं और तदनुसार आचरण करते हैं वे जीवन को निष्पाप बनाते हैं, और सत्य पथ पर चल कर देवत्व को धारण करते हुये मोक्ष को प्राप्त होते हैं। इसके सर्वथा विपरीत असत्यवादी, पापी एवं शक्तिमान् के आवागमन के बन्धन में पड़े सर्वथा नाश को प्राप्त होते रहते हैं।

आर्य परमात्मा के विधान और न्याय नियम को आत्मानुभूत कर ऋताचारी बनते हैं, और अनार्य असत्य को ग्रहण कर मिथ्याचारिता से भ्रष्ट होकर, पाप पतित जीवन के कारण बारम्बार भोग योनियों में जलते और सड़ते हैं।

**अतएव विश्व का आर्यकरण करने वालो ! परमेश्वर की इस अमृत वाणी को आत्मसात कर पुण्यात्मा बनो। पहले स्वयम् आर्य बनो फिर दूसरों का आर्यकरण करो।**

—'वसन्त'


| वर्ष | अङ्क |
|---|---|
| ७१ | ५ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पै०


## इस अंक में पढ़िए !




सम्पादक—

—प्रेमचन्द्र शर्मा

—सभा मन्त्री

# अध्यात्म-सुधा

# मेरे जीवन की बगिया में, हे वसन्त फिर आ जा।

★श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा उपमन्त्री

## वेद मन्त्र-

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य
शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून ।
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून् य
एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् ।।

[ सामवेद मन्त्र ४३१ ]

[गोतम ऋषि । इन्द्रो देवता । त्रिष्टुप छन्द । ]

भावार्थ—

[क. अद्य] कौन आज ?

[शिमीवत ] कर्म्म कारक

[भामिन ] तेजस्वी

[दुर्हृणायून] कठिनाई से दूर किये जा सकने वाले ।

[गा ] इन्द्रियों को [ऋतस्य धुरि] ऋत के चक्र में [युङ्क्ते] युक्त करता है ।

[एषाम् आसन] इनके मुख में

[अप्सुवाहान] कर्म कर्त्ताओं को

[मयोभूर] सुखप्रद [भृत्याम्] पोषण को [ऋणधत्] बढ़ाता है और बढ़ाता है । [स जीवात्] वह जीवे ।

व्याख्या—परमेश्वर का दिया हुआ मानव जीवन बड़ा अनमोल है । मानव के भीतर परमात्मा ने मानवता दी ही इसलिए है, कि वह स्वयम् भी जिये और दूसरो को भी जीने दे । कर्म करने में मनुष्य को जो स्वतन्त्रता परमेश्वर ने प्रदान कर रखी है, उसके अनुसार ही वह कर्म, अधर्म, सत्कर्म अथवा विकर्म में रत रहता है । पशुत्व और देवत्व दोनों ही मनुष्य में विद्यमान हैं । भोगात्मक भावनाएँ पशुत्व की ओर तथा योगात्मक भावनाएँ देवत्व की ओर ले जाती हैं । भोगात्मक इच्छायें जब प्रबल होती हैं, तो मन के सकल्प भ्रष्ट होते हैं, विचार दूषित हो जाते हैं, बुद्धि मलिन हो जाती है और मनुष्य दुष्कर्मों में रत रहता है । ठीक इसके विपरीत परमात्मा पर जब आत्मना आस्था होती है, विशुद्ध स्नेह होता है, दर्शन और मिलन की चाह होती है । तो मन के सकल्प शिव होते हैं, चिन्तन पवित्र होता है, बुद्धि सुमेधा होती है, और सर्वतः मानव सत्कर्मों में लीन रहता है ।

स्वार्थ मनुष्य को भोग प्रवृत्ति में युक्त करके भक्षी बनाता है, और परमार्थ योगात्मक प्रेरणायें देकर रक्षक बनाता है । जीवन जीने के लिए है, और जीवन का आनन्द सबको जीवित रखने मे अन्तर्निहित है । ५ यमों में अहिंसा को सर्व प्रथम स्थान इसीलिए दिया गया है । सामवेद की यह पावन ऋचा उपासना क्षेत्र में प्रविष्ट साधक साधिकाओं को इसी तथ्य से अवगत करा रही है । जीने को ससार में सभी जीते हैं, परन्तु वह भी कोई जीवन है, जिसमे निराशा हो, दुःख हो, दर्द हो और जीते हुये भी मरने की चाह, विद्यमान हो । साधक जानता है कि परमेश्वर न्यायकारी है । जीवन मे दुःख और पीड़ा उसकी न्याय व्यवस्था के अनुसार हमे कर्म फल के रूप मे प्राप्त है । जब कर्म्म फल भोगना है तो सहर्ष सशक्त होकर भोगना है । जो हो चुका, सो हो चुका अब आगे की रोक थाम करनी है, बुद्धिमत्ता इसी में है । साधक व साधिका यह सार तत्व समझ कर, आत्मानुभूत कर योग मार्ग का अनुसरण करते हैं । वे जानते हैं कि—

(१) जब मानव पशुत्व वृत्ति को अपनाता है तो पशुओं को भी मात् कर देता है ।

(२) जब देवत्व को अपनाता हैं, तो देवताओं और ऋषियों से भी ऊपर उठकर महादेव और महर्षि बन जाता है ।

(३) पशु वे हैं जो 'पशु पश्यतीति के अनुसार केवल देखते हैं । बार-बार ठोकर खाकर भी नहीं सम्भलते । मानव एक या दो ठोकरें खाकर सम्भल जाता है, और देवता तो वे हैं जो ठोकर लगने से पहले ही सम्भल जाते हैं ।

सामवेद की पावन ऋचा प्रेरणात्मक शब्दों में एक प्रश्न चुनौती के रूप में साधक-साधिकाओं के सम्मुख रखती है ?

'को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य?' कौन अपनी इन्द्रियों को ऋत के धुरे में जोड़ता है, यह साधना पथ है, यहीं अपनी ज्ञानेन्द्रियों को, कर्मेन्द्रियों को, सूक्ष्मेन्द्रियों को, मन को, बुद्धि को, चित्त को, और अहकार को ऋत के चक्कर पर चढ़ना है । सत्यस्वरूपपरमात्मा के लिए सत्य मार्ग को ग्रहण करना है, और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना है । साधक और साधिका को देव और देवी बनाना है । शतपथ ब्राह्मणकार भी तो मन्त्र के मन्तव्य को इन शब्दों में दोहराता है ।

'सत्य वं देवा अनृत मनुष्या.'

अर्थात् देव सत्य हैं और अनृत तो मनुष्य में आच्छादित रहता है । आत्मा की भोगात्मक इच्छाए उसे इन्द्र पद से गिराती है, इन्द्र जब इन्द्र (शत्रुणां दारयिता) नहीं रहता तो वह इन्द्रियों का स्वामी न होकर, इन्द्रियों का दास हो जाता है, इन्द्रियां मन-मानी करती हैं, और जीवन की कैसे दुर्दशा होती है, इसकी विस्तृत जानकारी कठोपनिषद् में मिलती है ।

जब गाड़ी का स्वामी गाड़ी में आरूढ़ हो, मद्यपान से असज्ञा की स्थिति में हो तो रथ का सारथि भी प्रमाद युक्त हो जाता है, क्योंकि उसका नियन्त्रण कर्त्ता नियन्त्रण की स्थिति में नहीं है । सारथि के ढीला होते ही लगाम ढीली हुई, घोड़ों पर से नियन्त्रण ढीला हुआ तो वे दूर रखी घास क ओर लपके । तेजी में गढ़े मे गिरे । घोड़े आहत हुये । रथ टूटा, रथ का स्वामी घायल हुआ, सारथी की भी दुर्दशा हुई । जीवन रथ का स्वामी आत्मा है, मन सारथि है, बुद्धि लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं और विषयो की घास है । आत्मा की दुर्बलता से जीवन का सत्यानाश इसी प्रकार होता है । देवगण जीवन निर्माण के लिये ऋत के धुरे से इन्द्रियों को जोड़ते हैं । इन्द्रियों पर जब बुद्धि रूपी लगाम कसी रहती है वे नियन्त्रण में रहते हैं, बुद्धि पर जब मन के शिव सकल्प रूपी सारथी का नियन्त्रण होता है, और मन रूपी सारथी पर जब आत्मा रूपी इन्द्र का नियन्त्रण होता है, तब ही यह जीवन

(शेष पृष्ठ १२ पर)

## मन मन्दिर के अंधियारे में, अपनी ज्योति जला जा!

●

आजा, आजा, आजा, आजा, आजा ।
पथ में तेरे नयन बिछाये कब से तेरी बाट निहारूं ।
अपने दिल की हर धड़कन में, तेरा पावन नाम पुकारू ।।
आज भया हू मैं अति व्याकुल, अब तो दरश दिखा जा ।
आजा, आजा ...... ...

चारों तरफ मेरे अंधियारा, कोई नहीं प्रभु मेरा सहारा ।
कैसे खोजूं, कैसे पाऊँ, ज्योतिमय प्रभु धाम तुम्हारा ।।
मन मन्दिर के अंधियारे मे, अपनी ज्योति जला जा ।
आजा, आजा ......

तुम तो हो प्रभु अन्तर्यामी जानत मेरी करुण कहानी ।
जो कुछ भी मेरी नादानी, क्षमा करो हे आनन्ददानी ।
तड़प रहा मैं तुम बिन प्रीतम, मेरी प्यास बुझा जा ।
आजा, आजा...... ...

मेरे अन्तर की सब आहे, तेरे दरश को पल-पल चाहें ।
मन उपवन में तुम्हें बुलाए, बना बनाकर सुन्दर राहे ।।
मेरे जीवन की बगिया में, हे वसन्त फिर आ जा ।
आजा, आजा.........

लखनऊ-रविवार २ फरवरी, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि सम्वत १९६०,८५,३०,६९

## तम् पृच्छता, सः जगाम, सः वेद, सः चिकित्वान् ।

वर्ष १९६८ के प्रारम्भ से ही एक-एक कर वैदिक विद्वान् भारत की भूमि से उठते चले आ रहे हैं। पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० दामोदर सातवलेकर, पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी, स्वामी सुखानन्द जी, स्वामी अमृतानन्द जी, पं० भगवद्दत्त जी आदि अनेक महान् विभूतियों के विछोह से शोक ग्रस्त आर्यजगत् अभी सम्भल भी नहीं पाया है, इधर दो वेदज्ञों की और क्षति हो गई है। पं० श्री सम्पूर्णानन्द जी और दूसरे स्वामी समर्पणानन्द जी का हमसे वर्ष १९६९ के प्रारम्भ में ही वियोग हो गया है। समस्त आर्यजगत् के साथ-साथ 'आर्यमित्र' परिवार भी शोक ग्रस्त है। दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये हमने भी सब के साथ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की है और उनके वियोग में दुःखी सम्बन्धियों, मित्रों और परिचितों के धैर्य की कामना की है।

आर्यजगत् का वेदज्ञों की अपार क्षति से सर्वाधिक शोकग्रस्त होना बिल्कुल स्वाभाविक ही है। हमारे पाठक और परिचित गण प्रत्येक महान् क्षति पर व्याकुल होकर पूछते हैं, अब आगे क्या होगा? उंगलियों पर गिनी जाने वाली जो थोड़ी - सी और विभूतियां हमारे मध्य में शेष रह गई हैं और जो वृद्धावस्था में विचरण कर रही हैं, उन के बाद फिर क्या शेष रह जाएगा क्योंकि जो जा रहा है, उसका स्थान लेने वाला कोई नहीं है। भविष्य अन्धकारमय दिखाई देता है। हाय! अब क्या होगा? महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को कैसे साकार किया जा सकेगा? उस परमात्मा की क्या इच्छा है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो आज वेद के और वैदिक धर्म के शुभचिन्तकों के भीतर उठ रहे हैं। निराशा के अन्धकार में विचरण करने वाले ऐसे समस्त महानुभावों के लिये हमारा एक ही उत्तर है जिसे वेद के शब्दों में हमने इस सम्पादकीय के ऊपर शीर्षक रूप में दिया है, अर्थात् परमात्मा से पूछो, वह सब जानता है, वह हर स्थान पर पहुंचा हुआ है, वह सब चिकित्सा करने में समर्थ है लिखने की आवश्यकता नहीं कि आर्य समाज एक आस्तिक समाज है, अतएव उसके समस्त सदस्यों को परमेश्वर पर पूर्ण आस्था होनी चाहिये। परमात्मा जो करता है, ठीक करता है। परमात्मा की केवल यही एक धरती नहीं है अपनी अनन्त धरतियों मे उसे वेदज्ञ आत्माओं की जहां जहां आवश्यकता है, वह कर्मानुसार उन्हें समय आने पर वहां-वहां भेज देता है। हम अल्पज्ञ भले ही अपने स्वार्थ को रोएं और उसकी लीला को न समझें, किन्तु परमेश्वर के उपासक इस रहस्य को समझते हैं इसलिये वे स्वयं भी शान्त रहते हैं और दूसरों को भी शान्ति प्रदान करते हैं।

जो भविष्य सदैव अनिश्चित रहता है, उसकी चिन्ता करने की अपेक्षा यदि हम वर्तमान पर दृष्टि रखें और अपना कर्त्तव्य निर्धारित करें तो उत्तम हो। क्षति है तो पूरा करें। वेदज्ञ बारी-बारी जा रहे हैं, तो उनके रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। नव निर्माण यदि हम नहीं करेंगे और केवल पुराने भवनों के क्षतिग्रस्त होने का रोना रोते रहेंगे तो उससे ईश्वरीय व्यवस्था मे तो परिवर्तन होगा नहीं, क्योंकि ईश्वर भी तो उसकी ही सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करता है। वेदज्ञों के रहते यदि हम ने नव निर्माण का कार्य्य नहीं किया और नये वेद व्याख्याता तैयार नहीं किए तो यह हमारी अक्षम्य भूल है। हमारी शिक्षण संस्थाओं में, जिनमे गुरुकुल व कालिज दोनों सम्मिलित हैं, यदि सहस्रों की संख्या में प्रति वर्ष वेदज्ञों का निर्माण नहीं हो रहा तो क्या यह परमात्मा का दोष है? वेद की शिक्षा प्राप्त किये हुए ब्रह्मचारीगण जब केवल रोटी, नमक, तेल, लकड़ी और मकान के लिये अपने जीवन को असत्य व्यवहार में देख दे तो एक ही निष्कर्ष निकलता है कि हम उनमे वैदिक धर्म के प्रति मनवांछित तड़प पैदा नहीं कर सके। तनिक विचारिये यह दुर्बलता हमारी है या परमात्मा की? आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने के लिये जिन अनेक विद्यालयों की स्थापना की गई है और लाखों रुपये एकत्रित किये गये हैं, उनमे से एक भी ऐसा वेदज्ञ आज तक बाहर क्यों नहीं आया जिसने डंके की चोट पर विश्व मे कम्पन पैदा कर दिया हो? क्या अपनी इस दुर्बलता को भी हम परमात्मा के मत्थे मढ़ेंगे?

सत्य तो यह है कि प्रदर्शन के वर्त्तमान युग में बाह्याडम्बर को महत्व अधिक है और ठोस कार्य्य के प्रति घोर उदासीनता है। विश्व का कल्याण करने के लिये जो नई योजनायें हमारे सम्मुख रखी जाती हैं, उनमे करोड़ों ही नहीं अरबों और खरबों रुपये के व्यय की चर्चा रहती है। परिणाम यह हो रहा है कि साधन को साध्य समझकर सब शक्ति उसके लिये व्यय की जाती है। यही कारण है कि केवल साधन की ही प्राप्ति हो रही है, साध्य की नहीं। इसे हम दृष्टान्त से इस प्रकार स्पष्ट करते हैं। एक वेदज्ञ विश्व की यात्रा करके वेद प्रचार करना चाहता है तो वह उसके लिये सर्वप्रथम एक भव्य योजना बनाता है कि सहस्रों प्रकार के आकर्षक विज्ञापन और विज्ञप्तियां छापी जायें। रेडियो पर प्रसारण के लिये कार्यक्रम तैयार किये जायें अनेक जीपें और ट्रक लिये जायें। बड़े बड़े ब्लाक बनवाये जायें, चित्र छापे जायें, प्रदर्शनियां की जायें। इन सबके मूल मे आत्म प्रशस्ति और विज्ञापन की भावना ही प्रमुख रूप से अन्तर्निहित रहती है, और उसकी पूर्ति के लिये धन की अपीलें होती हैं। धन जुटाने में स्वयम् महत्वाकांक्षी एवम् उसके शिष्यगण जुट जाते हैं, और परिणाम यह होता है कि या तो धनाभाव में सब योजना यों ही धरी रह जाती हैं और यदि धन का एकत्रीकरण हो भी गया और काम चालू भी हो गया तो वह न तो प्रभावकारी होता है, और न ही स्थिर रह पाता है। चार दिन की चांदनी और फिर अंधेरी रात वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है।

दूसरी ओर जिनके हृदय में वास्तविक तड़प है, जो कुछ करना चाहते हैं उनकी घोर उपेक्षा की जाती है। स्वार्थियों द्वारा उन्हें पग-पग पर घोर उत्पीड़ित किया जाता है। जिसके फलस्वरूप साधन विहीन होकर वे चुप्पी साध लेते हैं। जब अपने आप को ब्राह्मण कहलाने वाले ब्रह्म विमुख होकर केवल बाह्य जगत् की चकाचौंध को देखने लग जाएं तो कौन तत्वदर्शी होकर सत्य धर्म का प्रसार करेगा।

जो सर्वज्ञ है, जो सब स्थानों पर विद्यमान है, जो संसार का सूत्राधार है, जो नियमो मे स्वयम् बंधा हुआ है और जिसने सबको नियमों में बांध रखा है, वह न्यायकारी भी है। जब उससे आत्मना आप पूछिये, यह ह्रास और क्षति क्यों हो रही है, तो केवल एक ही उत्तर मिलेगा, दुष्कर्मों के कारण। जब पदासक्ति, वित्तासक्ति और विषयासक्ति के कारण सत्य से विमुख होकर, अपने को आर्य कहलाने वाले परस्पर लड़ेंगे।

## अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा का आगामी अन्तरङ्गाधिवेशन गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) के महोत्सव पर दि० १५-१६ फरवरी को होना निश्चित हुआ है।

अतः समस्त अन्तरङ्ग सदस्यो से अनुरोध है कि समय पर पधार कर कार्य सञ्चालन मे सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत करें। —प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

## अगला अंक बन्द रहेगा

प्रेस मे नया टाइप आ गया है, वह भरा जा रहा है। शिवरात्रि का विशेषांक जागृति अङ्क इसी नये टाइप मे छपेगा। इसलिये ९ फरवरी का अङ्क बन्द रहेगा। आगामी जागृति अङ्क १६ फरवरी को पाठकों की सेवा मे पहुंचेगा। पाठक एवं एजेंट नोट करलें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा उपमन्त्री

द्वेषवृत्ति से एक दूसरे की टाँगें घसीटेंगे, मिथ्या दोषारोपण करेंगे तो क्या उनका समाज फूले फलेगा ? क्या साधु वृत्ति वाले सज्जन ऐसे समाज के पोषण के निमित्त अपने जीवन अर्पित करेंगे। क्या परमात्मा का शुभ आशीर्वाद उन्हें प्राप्त होगा ?

परमात्मा के पास दुष्कृत्यों का एक ही दण्ड है जिसे सर्वनाश कह सकते हैं। यह भीतर बाहर दोनों प्रकार से होता है। जिस पर बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के भयङ्कर आक्रमण हों, वह कब तक स्थिर रहेगा ? बाह्य रूप मे बरसाती मेंढकों की तरह निरन्तर नये मत मतान्तर बढ़ते चले आ रहे हैं, शास्त्राथ महारथी प्रभु की इच्छानुसार एक एक करके धरती से खिसक रहे हैं। भीतर घोर विघटन है, सरल साधु प्रकृति के आर्य एक एक करके पृथक् हो रहे हैं। स्वार्थी स्वार्थान्ध होकर परस्पर लड़ रहे हैं। संसार तमाशा देख रहा है और परमात्मा अपना न्याय कर्म निभा रहा है।

ये पंक्तियाँ पढ़ने में भले ही अप्रिय लगें परन्तु जिसे नग्न सत्य कहा जाता है, वह यही है। अभी समय है, हम चेतें और पंजाब प्रदेश में जो आग लगी है, उसे बुझाने का जो उत्तरदायित्व पूज्य आनन्द स्वामी जी को सौंपा गया है, उन्हें अपना काम करने दें और उसमें कोई अड़चन न डालें। अनार्यों, ईसाइयों और पापियों को चुन-चुन कर बीन बीन कर पृथक् करें, और पुनीत वैदिक धर्म के प्रचार के लिये वेदज्ञानों के प्रसार के लिये, पाखण्ड-खण्डिनी पताका के नीचे भेद-भाव भुलाकर एकत्रित हो जायें। सज्जनों और साधुओं के लिये सामाजिक गृह के द्वार खोल दें, और ईश्वरीय प्रेम को अपने भीतर जागृत कर निर्वैर और निरासक्त होकर, आत्मानुभूत भाव से सब का पथ-प्रदर्शन करें और विकृत आत्माओं के रिक्त स्थानों को न केवल पूर्ति करें वरन् ब्रह्म ज्ञानियों का इतना बाहुल्य कर दें कि सारा संसार वैदिक धर्म की जय के पवित्र नारों से गूँज जाये और सोते जन मानस जागृत हो जायें। ●

## ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः

★

पंजाब से प्रकाशित समाचार पत्रों में दिये गये समाचारानुसार दिनांक १९ जनवरी ६९ को लुधियाने में आर्यसमाज दाल बाजार में जो एक आर्य सम्मेलन हो रहा था और जिसमें नगर के लोग भारी संख्या मे एकत्रित हुए थे, जन-संघियो ने उस सम्मेलन में गड़बड़ डालने का प्रयत्न किया पर जब वे उसमें सफल न हो सके, तो सभा के उपरान्त उन्होंने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को मारा-पीटा और आर्यसमाज, मुर्दाबाद के नारे लगाए। सबसे अधिक चोट हीरो साइकिल इन्डस्ट्री के स्वामी श्री बाल-मुकन्द मुञ्जाल को आई जिनका पेट एक तेज धार ब्लेड से चीरा गया। श्री मुञ्जाल जी एक अत्यन्त साधु, सज्जन और वृद्ध व्यक्ति हैं। उनका अपराध केवल इतना था कि उन्होंने संघर्ष रोकने के निमित्त बीच-बचाव किया था।

झगड़े का आधार यह था कि जन-संघी अपनी आलोचना सहन न कर सके इधर पंजाब मे होने वाले मध्यवर्ती चुनाव में उन्होंने खुल्लमखुल्ला अकालियों से गठबन्धन किया है और पंजाब के हिन्दी आन्दोलन के प्रति विद्रोह किया है। जनतन्त्र में आलोचना का अधिकार सबको होता है। आर्य वीर दल के नवयुवक नेता डा० रामप्रकाश जब आर्यसमाज के हिन्दी दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर रहे थे, तो जनसंघियों को अपनी आलोचना सहन न हो सकी। यदि जनसंघ को अकालियों से गठबन्धन का कोई नैतिक अधिकार प्राप्त है तो क्या आर्यसमाज को अपना दृष्टिकोण उपस्थित करने का कोई अधिकार नहीं है।

सब से शोचनीय दुर्घटना है मार पीट की और वह भी वयोवृद्ध के साथ, जिन्होंने बीच-बचाव का यत्न किया। जनसंघ सत्ता प्राप्त करने के लिये अत्यधिक लालायित दिखाई दे रहा है। क्योंकि गत चुनाव में उसने अनेक ऐसे दलों से गठ बन्धन कर सरकार बनाई जो सर्वथा उनके सिद्धान्तों के विपरीत थे। जनसंघ भले ही जितना अधिक हिन्दू राष्ट्रीयता का नारा लगाये, किन्तु ढाल की पोल स्पष्ट दिखाई दे रही है। आर्य समाज एक जीती जागती बलिष्ठ संस्था है, और उसके सहयोगों की संख्या जन-संघियों से बहुत अधिक है इसलिए ऐसी टक्करें लेना पंजाब में जनसंघ को कहीं अन्त्येष्टि न करवा दे, इसका ध्यान जनसंघी भाई रक्खें। वे ये भी भली भाँति सोच, समझ लें कि उनके ऐसे दुष्कृत्य राजनीति के सिन्धु से उन्हें तारने वाले सिद्ध नहीं होंगे भलेही वे हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान के कितने ही जयघोष क्यों न करें। जनतन्त्र मे यदि जनता की आलोचना को वे नहीं सहन करेंगे तो जनता भी उनको सहन नहीं कर पाएगी।

महर्षि दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्दपुरी में—

# गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में भव्य आयोजन

# चरित्र निर्माण ही स्वराज्य की सुरक्षा का आधार है

### विद्यालय के प्रशासक श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' सभा मुख्य उपमन्त्री के वेदोद्गार

२६ जनवरी १९६९ को महर्षि दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोविन्दपुरी (जिला मेरठ) में गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में विभिन्न कार्यक्रमों का एक भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। सभा मुख्य उपमन्त्री श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' के द्वारा ( जो इस विद्यालय के प्रशासक भी हैं ) राष्ट्रिय ध्वजारोहण हुआ। बालकों के व्यायाम प्रदर्शन तथा राष्ट्रिय गीतों के उपरान्त प्रशासक महोदय का वेदोपदेश हुआ, जिसमें उन्होंने वैदिक गणतन्त्र पर वेद मन्त्रों पर आधारित वेदोपदेश दिया और बतलाया कि आर्यसमाज द्वारा सहस्रों की संख्या में जो शिक्षण संस्थाएँ चलाई जा रही हैं, उसके मूल में चरित्र निर्माण प्रमुख है, क्योंकि सच्चरित्र शिक्षक और विद्यार्थी ही स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित कर सकते हैं और राष्ट्रिय चरित्र ही गणतन्त्र की सुरक्षा कर सकता है।

इस आयोजन में गोविन्दपुरी की साधारण जनता के अतिरिक्त मान्यनीय नागरिक भी विशेष रूप से आमन्त्रित किये गये थे।

२८ जनवरी १९६९ को इस विद्यालय का निरीक्षण श्री इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स् द्वारा किया गया। कार्यालय व कक्षाओं में अध्यापन के निरीक्षण के उपरान्त सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किये गये। सायं काल समस्त शिक्षक एवम् शिक्षिकाओं के परिचय कार्यक्रम में प्रशासक महोदय ने इन्स्पेक्टर महोदय का स्वागत करते हुए कहा कि निरीक्षण कार्य अत्यावश्यक होता है क्योंकि इससे हम अपनी त्रुटियों का आभास होता है, और हमें उन्हें दूर करके विद्यालय को और भी उन्नतिशील बनाते हैं। प्रशासक महोदय की प्रार्थना पर निरीक्षक महोदय ने शिक्षकों के मार्ग प्रदर्शन के निमित्त तथा विद्यालय की उन्नति के लिये एक सारगर्भित व्याख्यान दिया तथा अपने सुझाव दिये जिनके लिये उन्हें धन्यवाद दिया गया।

गत मास से इस विद्यालय का प्रशासन सभा ने अपने हाथ में सम्भाला है और तब से सभा की देख रेख में इस विद्यालय की उन्नति के अनेक कार्यक्रम बनाये गये हैं। ईश प्रार्थना, नैतिक शिक्षा, खेल-कूद, व्यायाम, राष्ट्रीय भावनाओं को उद्बोधन करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा रोचक ढंग से शिक्षण होने की पद्धति आदि में प्रशासक महोदय ने विशेष रुचि ली है, जिसके कारण स्थानीय जनता इस विद्यालय की ओर अब विशेष रूप से आकर्षित हो रही है।

---

## नवीन आर्य समासद् बनाते समय ध्यान रखें

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सभा आदेश देती है कि वह अपनी अन्तरङ्ग सभा द्वारा उन्हीं सदस्यों को आर्य समासद् बनायें जो शतांश देते हों और जिनका नाम सदाचार के साथ एक वर्ष तक अंकित रहा हो। अर्थात् उप नियम संख्या ४ का कड़ाई के साथ पालन किया जावे।

आर्य समासद् बनाते समय सभा के अधिकारी अवैतनिक उपदेशक, निरीक्षक मुख्य निरीक्षक आदि पर २५ प्रतिशत उपस्थिति का उपनियम लागू नहीं होगा।

## भ्रमण-पुरोगम

विदित हो कि भू-सम्पत्ति विभाग के सहायक अधिष्ठाता एवं सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री आशाराम जी पाण्डेय मिर्जापुर निवासी का भ्रमण-पुरोगम निम्न प्रकार है। उनके पहुंचने पर जायदाद (सम्पत्ति) बताने एवं आर्यसमाज का निरीक्षण कराने में सहयोग प्रदान करें और सभा का देय धन देकर अनुगृहीत करें। यदि सम्भव हो सके तो प्रचार की व्यवस्था भी की जाय।

दि० २ फरवरी १९६९ ई० आर्य समाज तथा उपसभा बलिया।

दि० ३ फरवरी १९६९ सिकन्दरपुर

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

# स्वर्गीय डा. सम्पूर्णानन्द जी की वैदिक दृष्टि

श्री डा. भवानीलाल जी भारतीय एम.ए. पी-एच-डी.

डा० सम्पूर्णानन्द जी के निधन से देश का एक प्रौढ़ राजनीतिज्ञ और देश भक्त नेता ही नहीं उठ गया, वैदिक वाङ्मय का निष्णात विद्वान् तथा दर्शन शास्त्र का एक प्रौढ़ पंडित और विचारक से भी हम बिछुड़ गये हैं, यद्यपि स्वर्गीय बाबू जी आर्यसमाज के सभासद नहीं थे, तथापि उनके विचारों पर वैदिक सिद्धान्तों की सुदृढ़ एवं अमिट छाप थी। उन्होंने वेदों का तलस्पर्शी अध्ययन किया था। स्वामी दयानन्द की ही भाँति वे वैदिक अध्ययन में न तो सायण आदि मध्यकालीन भाष्यकारों की याज्ञिक पद्धति को स्वीकार करते थे, और न पाश्चात्य विद्वानों की ऐतिहासिक प्रणाली ही उन्हें सन्तोष देती थी। वे भारतीय परम्परा एवं अनुभूति को प्रधानता देते हुये वेदों का अध्ययन करने और वैदिक शिक्षाओं के आधार पर जीवन निर्माण का कार्यक्रम निर्धारित करने के पक्षपाती थे।

वे यह मानते थे कि मूल वैदिक संहितायें ही आर्य जाति के प्रमुख धर्म ग्रन्थ हैं। जो लोग यह मानते हैं कि वेदों में केवल कर्म काण्ड और यज्ञ याग आदि का ही विधान है और दार्शनिक चिंतन का सूत्रपात उपनिषदों से हुआ, उनकी धारणाओं का खण्डन करते हुये वे लिखते हैं 'दुःख का विषय है कि बहुत से भारतीय भी वेदों का अध्ययन स्वयं नहीं करते। जो अंग्रेजी की लिखी पुस्तकों में पढ़ते हैं, उसी पर विश्वास कर लेते हैं। संहिता भाग पढ़ा नहीं जाता। यह मान लिया जाता है कि उनमें नीरस कर्म काण्ड है, सूखे यज्ञ हैं। उपनिषद् पढ़े जाते हैं, और यह मान लिया जाता है कि उनमें बौद्धिक विद्रोह की अभिव्यक्ति हो रही है। कर्म काण्ड से ऊबकर कुछ लोगों का ध्यान दर्शन की ओर गया। उन्होंने ही उपनिषदों की रचना की, ऐसे ही लोगों ने दशम मण्डल के दार्शनिक सूक्त बनाये। समाज में प्राधान्य के लिये ब्राह्मणों और क्षत्रियों में बराबर संघर्ष रहता था। ब्राह्मणों ने कर्मकाण्ड अपनाया। क्षत्रिय लोग दार्शनिक विचारों के पुरोगामी बने। यह सारी कल्पना निराधार है। उपनिषदों की आधार शिला संहिता है। बिना इस अंश संहिता को जाने उपनिषदों का भी रहस्य यथार्थ रूप से समझ में नहीं आ सकता।'

सायणाचार्य का वेद भाष्य वेद के प्रकृत रहस्य को नहीं खोलता। इसे स्वीकार करते हुए डा० सम्पूर्णानन्द ने लिखा–'पिछले कई सौ वर्षों में वेद के सबसे बड़े भाष्यकार सायण हुये हैं। वेदार्थ की कुञ्जी उनको नहीं मिली या फिर उन्होंने उसे ढूँढ़ा नहीं। उन्होंने वेद मन्त्रों से वहीं तक ही काम लिया जहाँ तक उनका उपयोग यज्ञों में हो सकता है। इसके लिये अर्थ की गहराई में जाना उनको स्यात् आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।' पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के विषय में जो भ्रममूलक धारणायें फैला रखी हैं, उनकी कठोर समालोचना डाक्टर साहब ने की थी। उनके अनुसार 'ऋग्वेद काल का आर्य प्रकृति के दृश्यों की मूर्तिमती तथा कल्पित शक्तियों का उपासक नहीं था।" वे इस बात से भी असहमत हैं, कि सोम कोई मादक औषधि थी, जिसका आर्य लोग सेवन करते थे। सोम' के आध्यात्मिक

अर्थों को स्वीकार करते हुए उन्होंने लिखा—"सोमोऽस्माक ब्राह्मणाना राजा' सोम हम ब्राह्मणों का राजा है। ऐसे शब्द निर्लज्जता के साथ किसी मादक वस्तु के लिये नहीं कहे जा सकते। वह उस रस, उस पोषक शक्ति का नाम है जो सभी वनस्पतियों में संचार करता है, और उसके द्वारा सभी जीवों का भरण पोषण करता है। 'सोम' प्राण की भी संज्ञा है जो और शारीरिक तथा बौद्धिक क्रियाओं और चेष्टाओं का प्रेरक है।" पुनः वे लिखते है—"यह भ्रान्त विचार है कि आर्य सोम के नशे के शौकीन थे, और उन्होंने इस मादक द्रव्य को देव पद दे दिया था।" डा० सम्पूर्णानन्द इस बात से सहमत थे कि वेदों में मूर्त्ति पूजा का विधान नहीं। वे स्वामी दयानन्द की ही भाँति यह भी मानते थे, कि हिन्दू धर्म में मूर्तिपूजा का चलन जैन व बौद्धों के अनुकरण पर हुआ। उन्होंने लिखा है—"वैदिक उपासना में पहले प्रतिमा का चलन नहीं था। पीछे से बौद्धों और जैनों का अनुकरण करके देव देवियों की मूर्तियाँ भी बनने लगीं।

डा० सम्पूर्णानन्द की यह दृढ़ धारणा थी कि वैदिक धर्म के स्थान पर पौराणिक मत सम्प्रदायों का प्रचलन ही भारत की अधोगति का मूल कारण है। वे न तो अष्टादश पुराणों को ही व्यास कृत मानते हैं, और न पुराण वर्णित बातों को ही सत्य समझते हैं। पुराण विषयक उनकी आलोचना आर्य समाज की एतद् विषयक आलोचना से किसी भी प्रकार मृदु या कम प्रभावोत्पादक नहीं है। पुराण के इस वचन पुराणं सर्वशास्त्राणां ब्रह्मणा प्रथमं स्मृतम्' अर्थात ब्रह्मा जी ने सर्व प्रथम पुराणों का ही निर्माण किया, की कटु समालोचना करते हुये वे लिखते हैं—"पुराणं सर्व शास्त्राणां' यह निरर्थक अतिशयोक्ति है। वेद को हिन्दुओं के सभी सम्प्रदाय स्वतः प्रमाण तथा ईश्वर कृत मानते हैं। वेद ईश्वर का निश्वास कहा जाता है। पुराण भी वेद की महत्ता को स्वीकार करते हैं। ऐसी दशा में यह कहना कि पुराण वेद के भी पहले प्रकट हुये निराधार वाक्य है। परन्तु ऐसे बहुत से स्थल मिलेंगे जहाँ वेद के नाम की शपथ खाते हुये भी पुराण वेद के प्रति निरादर का भाव दिखलाते हैं। "पुराणों का रचयिता एक व्यक्ति न होकर अनेक थे, इस कथन को स्वीकार करते हुये वे कहते हैं— "पुराणों के कर्त्ता वेद व्यास माने जाते हैं, परन्तु उपलब्ध पुस्तकों को देखकर ऐसा मानना कठिन हो जाता है कि इन सबका रचयिता एक ही व्यक्ति था।"

पुराणों के प्रचलन से वेदों के प्रति अश्रद्धा के भाव बढ़े हैं, यह स्वीकार करते हुये वे लिखते हैं—"मेरी समझ में पुराणों ने जो सबसे बुरा काम किया वह वेदों को अपदस्थ करना था। वेद का नाम लेते गये पर उसकी जड़ खोदते गये।" डा. सम्पूर्णानन्द अवतारवाद के सिद्धान्त को भी अवैदिक मानते थे। वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि

स्व० डा० सम्पूर्णानन्द जी

वैदिक देवताओं का अत्यन्त कुत्सित और जुगुप्सा जनक चित्र पुराणों में अंकित किया गया है। जिस वैदिक देवता इन्द्र का अत्यन्त गौरव पूर्ण चित्रांकण संहिता भाग में हुआ है उसे ही पुराणकारों ने अपनी घृणित लेखनी से दुराचारी, छली, कपटी, ईर्ष्यालु तथा लम्पट के रूप में चित्रित किया है। वैदिक देवताओं के इस कलुषित वर्णन को पढ़कर पुराणों के प्रति उनका सात्विक रोष उमड़ पड़ता है। उनका यह कथन अत्यन्त मर्म स्पर्शी है— 'बौद्धों के अनुसार बुद्धदेव को तपोभ्रष्ट करने का प्रयत्न मार (कामदेव) ने किया, पर अपने को वैदिक कहने वाले पुराणकार यह नीच काम इन्द्र से कराते हैं।"

इसी प्रसंग में पुराणों की सारगर्भित किन्तु तीखी आलोचना करते हुये वे लिखते हैं—"पुराण पथ-भ्रष्ट हो गये। उन्होंने अपने को साम्प्रदायिकता में उलझा दिया। प्रत्येक पुराणकार किसी देव देवी की उपासना का प्रचारक बन गया और इस प्रकार के कार्य के लिये अन्य देव देवियों की निन्दा करना भी आवश्यक समझा गया। परिणाम यह हुआ कि धर्म के स्वरूप का निरूपण नहीं हो सका, फिर उसकी जय किस प्रकार दिखलाई जा सकती थी? पर मत दूषण की स्पर्धा इतनी आगे बढ़ी कि सभी देव मूर्ख, लोभी, कामी, अपमार्गगामी और निर्लज्ज बना दिये गये। यदि मूल वैदिक उपासना तक अपने को सीमित रक्खा जाता तो यह न होता। कहने को सबने ही अपने को श्रुति का अनुयायी घोषित किया परन्तु पदे-पदे श्रुति की निस्सारता और निरर्थकता ही प्रतिपादित की गई।"

# गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव

## १४, १५, १६ फरवरी को होगा

समस्त आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का ६२ वाँ वार्षिक महोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर दिनांक १४, १५, १६ फरवरी ६९ को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर संस्कृत सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा-सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन आदि आदि सम्मेलन सम्पन्न होंगे। १६ फरवरी ६९ को रविवार के दिन स्नातकों का समावर्तन संस्कार तथा दीक्षान्त समारोह भी होगा। दीक्षान्त भाषण के लिये भारत सरकार के उपप्रधान मन्त्री माननीय श्री मुरार जी देसाई से प्रार्थना की गई है। उनके पधारने की पूर्ण सम्भावना है शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री माननीय डा० श्री त्रिगुणसेन जी की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये माननीय श्री इन्द्रकुमार जी गुजराल सचार मन्त्री भारत सरकार के आने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त देश के अग्रगण्य मान्य नेता तथा आर्य सन्यासी विद्वान् व्याख्याता तथा महोपदेशक भी पधार रहे हैं।

इसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश होगा। जो महानुभाव अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश नियम व फार्म मगालें। जो सज्जन पुस्तक आदि की दुकान लाना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय को सूचित कर दें।

आशा है कि आर्यजनता समुपस्थित होकर व्याख्यानों तथा उपदेशों से लाभान्वित हो सकेगी।

—नरदेव स्नातक एम०पी०
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

पौराणिक कथाओं की निस्सारता बताते हुये वे लिखते हैं—'गोवर्धन धारण की कथा को लीजिये। इन्द्रोपासना की वैदिक पद्धति के लोप कराने से कृष्ण को क्या मिला? जिसने इस भद्दी कथा को लिखा, उसने न तो इन्द्र की मर्यादा का ध्यान रक्खा न कृष्ण की प्रतिष्ठा की रक्षा की। हाँ वेद पर कुठाराघात करने पर निश्चय ही उसे कुछ सफलता मिली।'' औतारवाद पर एक और निर्मम प्रहार करते हुए वे कहते हैं—'परशुराम रूपी विष्णु से रामरूपी विष्णु की वन्दना कराई है! इसमें बेचारे पुराणकारों को क्या दोष दिया जाय? वे दया के पात्र हैं। उन्होंने किसी बड़े का अपमान कराये बिना अपने प्रिय उपास्यों की बड़ाई करना सीखा ही नहीं।'' पुराण में यह लिखा गया है कि वैदिक मार्ग पर चलने वाले असुरों को श्रुति प्रतिपादित पथ से विचलित करने के लिये विष्णु ने बुद्ध का अवतार धारण किया। इस धारणा पर अपनी युक्ति एवं तर्क का प्रहार करते हुए डा० सम्पूर्णानन्द ने लिखा—'जिन लोगों ने इस कथा को गढ़ा उनके मस्तिष्क भी कैसे विकृत थे? जो लोग वैदिक कर्मों का अनुष्ठान कर रहे थे वे क्या बुरा काम कर रहे थे? उनको हटाने के लिये वेद का ही खण्डन कर दिया। वेद (ब्राह्मण) कहता है—'विष्णुर्वैयज्ञ'' विष्णु यज्ञ स्वरूप है, उन्होंने ऐसा निंद्य कर्म क्यों कर डाला? व्यक्ति का कर्म देखा जाता है, उसका सुर या असुर होना उसकी भलाई बुराई की कसौटी नहीं हो सकती। यदि असुर होना ही मनुष्य को दूषित बना देता है तो प्रह्लाद भी तो असुर था। उसकी सहायता के लिये विष्णु ने नृसिंह का रूप क्यों धारण किया था? वेद की मर्यादा को नष्ट करके बुद्ध रूपी विष्णु ने पृथ्वी के भार को बढ़ाया या हल्का किया?''

अवतारवादियों की यह मान्यता है कि परमात्मा अत्याचारियों को दण्ड देने तथा धर्म-मार्गों की रक्षा हेतु अवतरित होता है। परन्तु डा० सम्पूर्णानन्द के अनुसार यह विचार भ्रमपूर्ण ही है। वे लिखते हैं—''हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, कंस, जरासंध, दुर्योधन—इनमें से किसने कब मन्दिरों को ध्वस्त किया या कब किसको धर्मान्तर ग्रहण करने के लिये विवश किया? उनको मारने के लिये स्वयं विष्णु को अवतरित होना पड़ा। परन्तु वर्तमान काल में क्रन्दन सुनने वाला कोई नहीं था?'' कृष्ण को अवतार घोषित करने से जो अनर्थ और अनाचार की परम्परा चली इसका पर्दाफाश करते हुये वे कहते हैं—''दम्भियों को भक्ति के नाम पर अनर्थ करने का अवसर मिल गया। हर मनुष्य न तो कृष्ण की भाँति चक्र चला सकता है, न अँगुलि पर पहाड़ उठा सकता है पर स्त्रियों के बीच रास और केलि करना वह अपना अधिकार समझता है।'' वैष्णव महाकवि जयदेव तथा उसके आश्रय दाता पर तीव्र कटाक्ष करते हुए वे लिखते हैं—''इसी महाकवि के आश्रय दाता वह राजा लक्ष्मणसेन थे, जो यह समाचार मिलने पर कि बख्तियार खिलजी थोड़े से सवारों के साथ आ रहा है, विशाल गौड़ राज्य और उसकी प्रजा को छोड़कर आधी रात को महल से भाग गये। वह भी परम विष्णु भक्त थे।''

वेद मन्त्रों के आधार पर मध्यकाल में जिस निरर्थक कर्मकाण्ड की सृष्टि हुई और मन्त्रों के ऊटपटांग विनियोग पुराण धर्मावलम्बियों ने किये उनकी चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा—''शन्नो-देवी ······ इस मन्त्र में कहीं शनि का चर्चा नहीं है। केवल मन्त्र के आरम्भ शन्नो और शनि के ध्वनि साम्य के आधार पर मन्त्र शनि को दे दिया गया है।'' उपर्युक्त उद्धरणों से डा० सम्पूर्णानन्द की वैदिक दृष्टि स्पष्ट हो जाती है आर्यसमाज के वेदोद्धार और समाज संगठन के महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रति अपनी प्रशंसापूर्ण धारणा प्रकट करते हुए वे लिखते हैं—

''आर्यसमाज ने वेदों पर श्रद्धा जगा कर और सामाजिक कुरीतियों का कठोर विरोध करके हिन्दू समाज की बड़ी सेवा की है। दूसरे धर्मों के अनुयायियों के आक्षेपों का उत्तर देकर तथा अन्य मतों के दोषों को प्रकाशित करके समाज ने हिन्दुओं को आत्मविश्वास की घाहुल्य बोला है।''

नोट—उपर्युक्त उद्धरण डा० सम्पूर्णानन्द के ग्रन्थ 'हिन्दू देव परिवार का विकास' से लिये गये हैं। यह ग्रन्थ मित्र प्रकाशन इलाहाबाद से छपा है।

●

### आर्यमित्र की उन्नति के लिए-

## डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिरनिधि

अन्तरङ्ग सभा दि० ९-५-६३ के निश्चयानुसार विषय स० २४ श्री प० सूर्यदेव शर्मा एम०ए० अजमेर का 'आर्यमित्र' सहायतार्थ धन दिये जाने विषयक पत्र विचारार्थ प्रस्तुत होकर श्री शर्मा जी का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि दानी सज्जन की निम्न शर्तों के लिए चार सहस्र रुपया दान लेना स्वीकार किया जाय। धन प्राप्त होने पर एफ० डी० में जमा किया जाये।

श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा

१—इस निधि का नाम डा० सूर्यदेव स्थिरनिधि होगा।

२—इस निधि की धनराशि स्थायी रूप में सभा में पृथक् जमा होगी।

३—इसके ब्याज से प्रतिवर्ष सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों एवं वाचनालयों को आर्यमित्र लागतरूप में दिया जाया करेगा।

४—वर्ष में कम से कम दो बार जनवरी, जुलाई मास में इस निधि की सूचना प्रमुख शर्तों के साथ 'आर्यमित्र' में प्रकाशित होगी।

५—सम्मान रूप में 'आर्यमित्र' सदा दानी सज्जन को भेजा जाया करेगा। जहाँ जहाँ जायगा उसकी सूची दानी सज्जन के पास भेजी जाया करेगी।

६—आर्यमित्र का प्रकाशन बन्द हो जाने पर इस निधि का ब्याज वैदिक साहित्य प्रकाशन में लगाया जावेगा।

—प्रेमचन्द्र शर्मा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

# महात्मा आनन्द स्वामी जी के मार्ग में रोड़ा मत अटकाइए

हैदराबाद आर्य महा सम्मेलन में ४॥ घण्टे विषय निर्धारिणी की बैठक ता० ८-११-६८ में पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात् पंजाब सभा और सार्वदेशिक सभा के मध्य चल रहे विवाद को कोर्ट से हटा कर महात्मा श्री आनन्द स्वामी जी महाराज के सुपुर्द करके समाप्त करने का निश्चय सब प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने किया, और खुले अधिवेशन में एक लाख जनता ने प्रसन्नता के उल्लास में इसका स्वागत किया। जब यह समाचार देहली पहुंचा तब केवल दो व्यक्तियों को दुःख हुआ, ऐसा मैंने अपने पूर्व लेख में लिखा था। वे दो व्यक्ति कौन हैं, इसकी अटकलें लगाई जाने लगीं। उन दोनों व्यक्तियों ने औरों के नाम लेने प्रारम्भ कर दिये। मैं यहां कुछ स्पष्ट लिखता हूं।

यह विषय पहले भी लाला नारायणदास कपूर जी के परिश्रम से महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुर्द किया गया, पर सफलता न मिली। मैं आज एक रहस्य का उद्घाटन आया करता हूं। पंजाब सभा के लोग यह समझते हैं कि लाला रामगोपाल जी शालवाले और सोमनाथ जी मरवाहा झगड़ा चाहते हैं, ऐसा कुछ लोग कहते हैं, पर यह बात नितान्त असत्य है। जिस समय लाला नारायणदास कपूर जी का परिश्रम असफल हुआ, उस समय उस गोष्ठी में मैं था, और यह बात मेरे सामने की है कि लाला रामगोपाल जी शालवाले और सोमनाथ जी मरवाहा जी ने पराकाष्ठा का यत्न इस बात का किया कि यह विषय महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुर्द करके झगड़ा समाप्त कर दिया जावे, दोनों इस पक्ष में थे, यह पंजाब सभा को समझना चाहिए, पर उन दोनों की बात मानी नहीं गई। जब मरवाहा जी यह कह रहे थे कि हमने पहले ही आपके सुपुर्द किया जिसका प्रतिवाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने किया, मैं सोच रहा था कि दोनों ठीक कह रहे हैं, पर एक दूसरे को समझ नहीं रहे हैं।

भाई ज्ञानेन्द्रनाथ जी का एक लेख सार्वदेशिक में २२ दिसम्बर १९६८ के अङ्क में प्रकाशित हुआ, "महात्मा आनन्द स्वामी के नाम खुला पत्र" "आर्य जनता को स्पष्ट बताइये कि अपराधी कौन है" यह एक सचाई की मांग है। वैदिक भावकों की साक्षात् प्रतिमा सार्वदेशिक सभा के प्रधान सेठ प्रताप भाई जी के और जिसे परिवार के दर्शन करके पापी भी धर्मात्मा बन जावे, उसके विरुद्ध जो घृणित विज्ञप्ति प्रकाशित हुई, उसका स्मरण भी करके खून खौल जाता है। इस घृणित रवैये को कोई भी सभ्य व्यक्ति अच्छा नहीं कहेगा। पर बन्धो! इस समय ऐसे व्यक्तियों को दण्ड देने का ही काम पर्याप्त नहीं है। इस समय तो शान्ति स्थापना भी लक्ष्य है। जिस समय हाई-कोर्ट का जज यह कहता है कि स्वामी दयानन्द को मैंने पढ़ा है, तुम सब उसी के अनुयायी हो जो मुकदमा लेकर आये हो, तुम में कोई भला आदमी अब नहीं रहा जो तुम्हारा निबटारा करावे। उस समय कुछ लज्जा आती है या नहीं। इसी लज्जा से क्षोभ-युक्त होकर हैदराबाद में मङ्गलाचरण

## धार्मिक समस्याएं

के बाद ही खड़े होकर मुझे कहना पड़ा कि सम्मेलन बाद में होगा, पहले झगड़ों का अन्त करो, जिसका समर्थन सबसे पहले लाला रामगोपाल शालवाले ने किया, और सबने समर्थन किया। और निश्चय हुआ। अब महात्मा आनन्द स्वामी जी जैसा मार्ग अपनावें अपनाने दो। वे सब समझते हैं, सारे हालात उन्हें मालूम हैं। वे पक्षपात न करेंगे किसी को घबराना नहीं चाहिये। घबड़ाते वे हैं जो निकम्मे हैं। पार्टी के आधार पर ही जिनका जीवन है। जो यह समझते हैं कि यदि शांति हो गई तो हमें कौन पूछेगा। याद रखो काम करने वाले की सदा पूछ होगी। झूठा सिक्का बहुत दिन नहीं चलेगा। ला० रामगोपाल जी के मुख से मैंने कई बार यह बात सुनी सार्वदेशिक के कार्यालय में जब ऐसी बात चलती है, तब वे सदा यह कह देते रहे कि काम करो काम की पूछ सदा होगी।

मैं यहां कुछ ऐतिहासिक घटनाओं और ऐतिहासिक भूलों का निर्देश करता हूं। पंजाब सभा और सार्वदेशिक सभा का विवाद गृह युद्ध है। विदेश युद्ध नहीं। महाभारत का गृह युद्ध था। अत यहां दुर्योधनाय चरित और युधिष्ठिराय चरित का प्रश्न है। महाभारत के युद्ध में चार पापी थे, उनको दण्ड दिया गया। (१) दुर्योधन (२) दुःशासन (३) शकुनि और (४) कर्ण। और महात्मा थे, युधिष्ठिर और द्रोपदी आदि। दुर्योधन नाम इसलिए रखा गया था कि जिससे कोई युद्ध न कर सके, और युधिष्ठिर का अर्थ था जो युद्ध में स्थिर रहे, डटा रहे। अर्थ दोनों शब्दों का एक है।

### दुर्योधन का पाप

दुर्योधन जब पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में आया, वहां सभा भवन में जहां पानी था वहां स्थल नजर आता था और जहां स्थल था वहां पानी नजर आता था, इस धोखे में दुर्योधन पानी में गिर गया, तब द्रोपदी ने कहा कि अन्धे की औलाद अन्धी होती है। दुर्योधन के पिता धृतराष्ट्र अन्धे थे, यह नीचतापूर्ण कटु वाक्य कहने वाली द्रोपदी महात्मा थी, और उसका बदला लेने वाला दुर्योधन पापी था।

### दुःशासन का पाप

युधिष्ठिर ने अपनी पत्नी को जुए में लगा दिया, जब जुए में द्रोपदी को हार गया तब दुःशासन ने उसको अपने घर चलने को कहा, जब वह नहीं चली तब उसको घसीटा। यहां औरत को जुयें में लगाने वाला युधिष्ठिर धर्मात्मा और उस जीती हुई को अपने घर ले जाने को कहने वाला पापी।

### कर्ण का पाप

जब कौरव पाण्डवों को युद्ध विद्या द्रोणाचार्य ने सिखाई और परीक्षा लेते समय अर्जुन ने आश्चर्यजनक युद्ध कौशल दिखाये तब वे सब युद्ध कौशल कर्ण ने भी दिखाये। जब परस्पर युद्ध करके कौन विशिष्ट है, दिखाने का प्रस्ताव आया, तब पाण्डवों की ओर से यह कहना कि अर्जुन राजपुत्र है और कर्ण शूद्रपुत्र है। अर्जुन कर्ण के साथ बात नहीं कर सकता। इसी प्रकार द्रोपदी के स्वयम्बर में द्रुपद ने जो शर्त रखी थी, उसको पूरा करने के लिये जब कर्ण उठा तब द्रोपदी ने उसको जन्म से शूद्र बताकर भरी सभा में अपमान किया। ये सब लोग महात्मा थे और निरन्तर अपमान किये जाने पर बदला लेने वाला कर्ण पापी था।

---

★श्री आचार्य विश्वश्रवा. व्यास
एम० ए०

---

### शकुनि का पाप

शकुनि विदेशी था उसके भानजे दुर्योधन को हर तरह जलील किया गया अपने भानजे की रक्षा के लिये द्यूत विद्या में चतुर शकुनि ने जुए का प्रस्ताव किया। वह पापी और जुए में राजपाट भाई और बीबी को भी जुए में रखने वाले युधिष्ठिर महात्मा थे।

### कौरवों और पाण्डवों का सामूहिक पाप-पुण्य

कौरवों ने अभिमन्यु को अकेला घेर कर अनेक महारथियों ने मिलकर मार दिया। यह कौरवों का पाप और जो भीष्म पितामह के आगे नपुंसक को खड़ा करके पीछे से अर्जुन ने भीष्म पितामह को मार दिया और कर्ण का पहिया जब हिलग गया असहाय कर्ण को अधर्म से मरवाना और द्रोणाचार्य के आगे झूठ बोलकर कि तेरा बेटा मारा गया और उसके दुःख में द्रोणाचार्य को मृत्यु के घाट पहुंचाना ये सब काम महात्मा पन के थे। जिसकी विजय हो जावे और जिसके हाथ में सत्ता हो वह महात्मा और जो हार जावे और जिसके हाथ में सत्ता न हो पापी और अपराधी यही संसार का नियम है।

### दण्ड किसे मिला

महाभारत के युद्ध में पापियों को दण्ड मिला। क्या दण्ड मिला। उनको लड़ाई में मार दिया। यही दण्ड मिला। पर वे तब न मरते अपनी मौत से भी मरते। पर वास्तव में मरा देश जो आज तक न उठ सका और न महाभारत का मारा देश प्रलय तक कभी उठ पावेगा। आर्यसमाज के इस गृह युद्ध से किसी का कुछ नहीं बिगड़ रहा है। वेद प्रचार के नाम पर मांगा रुपया मुकद्दमों पर व्यय हो रहा है। क्या कोई अपने पास से रुपया खर्च कर रहा है, पराया धन मुकदमों पर लुटाने में क्या लगता है। लज्जा तो

## 'एक परामर्श'

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्र 'आर्यमित्र के माध्यम से 'सार्वदेशिक' और 'आर्यमर्यादा' के सचालकों की सेवा में प्रार्थना करता हू कि वे अपनी पत्रिका मे एक दूसरे के विरुद्ध घृणित प्रचार प्रकाशित करना अविलम्ब बन्द कर दें। पाठक उक्त पत्रिकाओं का शुष्क वैदिक लेख पढ़ने तथा आर्यसमाज की प्रगति जानने के लिये लेते हैं; शिरोमणि सभा सार्वदेशिक और आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के झगड़ों को जानने के लिए नहीं।

जहाँ एक ओर आर्यसमाजों को इन पत्रिकाओं में प्रकाशित आन्तरिक झगड़े पढ़कर अत्यन्त दुःख होता है, वहाँ दूसरी ओर गैर आर्यसमाजी इन पत्रिकाओं को अपने प्रचार का साधन बना लेते हैं। ऐसे लोग जगह-जगह प्रचार करते हैं कि देखो! आर्यसमाज में कितने आपसी झगड़े और आन्तरिक विघटन है। "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" का दूसरों को वेदोपदेश देने वाले आर्यसमाजी स्वयं इसका पालन नहीं करते। परम आदरणीय उक्त पत्रिकाओं के सचालकों! जरा ठण्डे दिल से सोचकर देखिए जब आपकी पत्रिकाओं को ईसाई लोग पढ़ते हैं तो उनको आपके झगड़े पढ़ कर कितनी प्रसन्नता होती होगी। वे तो अपने प्रभू 'ईसा' से यही दुआ मांगते होंगे कि हे प्रभू! आर्यसमाज के पदाधिकारी ऐसे ही आपसी झगड़ों में फसे रहे।

—अनूपसिंह

आशा है, मेरे परामर्श की ओर सचालक ध्यान देंगे।

दयानन्द भवन, मेरठ मार्ग मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

किसी को है ही नहीं। वरन् जो आर्य समाज को कुछ मिल रहा है जो भले आदमियों के निगाह मे गिर रहा है।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी का प्रोग्राम बने चार वर्ष हो रहे हैं, उसका यही काम हुआ है कि शताब्दी कमेटी के संयोजक ने अनेक बार त्याग-पत्र दिया और लौटाया गया। और साहित्य निर्माण का काम यह हुआ है कि कुछ साहित्य का काम तो साहित्य के विधाता ने ही अनावश्यक घोषित कर दिया जो उनकी अकल का नमूना है। जो भी वो काम साहित्य निर्माण के रखे उनके विषय मे पण्डितों को इस भावा में पत्र लिखे गये कि किसी विद्वान् ने सार्वदेशिक सभा की ओर आँख उठाकर नहीं देखा। इस मुकद्दमेबाजी के कारण सब काम ठप्प है। केवल जो चहल-पहल सार्वदेशिक सभा में दिखाई देती है, वह लाला रामगोपाल जी का अकेले परिश्रम है। अगर आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मामूली जलसा ही करना है तो खूब मुकदमा चलने दो और अपराधियों का निश्चय ही शताब्दी तक करते रहो। आर्यसमाज स्थापना शताब्दी का यही काम बहुत है।

### अपराधी कौन है

कुछ लोग वास्तव में अपराधी होते हैं और दुष्ट होते हैं। ससार उनसे खाली नहीं है। पर यह भी सत्य है कि कुछ लोग पार्टी के आधार पर दुष्ट बताये जाते हैं।

१—कल तक हम जिनके रंगीन चित्र अखबारों के मुख पृष्ठ पर छापते थे, उन्हें आर्यजगत् का नेता लिखते थे, अब पार्टी के आधार पर दुष्ट बताये जाते हैं।

२—कल तक जिन्हें हम यह कहते थे कि इनको न अंग्रेजी आती है न संस्कृत। और उनकी योग्यता के विरुद्ध दूसरों से लेख लिखवाते थे। जब पार्टी बदल गई तब एक रात मे ही वे अंग्रेजी और संस्कृत के महान् पण्डित बन गये।

३—जब अपनी पार्टी मे कोई व्यक्ति है, तब वह झूठा भी आचार्य और एम० ए० अपने आपको कह दे वह सब सत्य। जब पार्टी बदल जावेगी तो जो झूठे एम. ए. और आचार्य हैं, वे उसी तरह निकाले जावेंगे जैसे वे अन्य स्थान से निकाले गये।

४—बन्धुवर, आजकल पार्टी के आधार पर भी व्यक्ति अच्छे और बुरे होते हैं। आज मैं पार्टी मे हू तो मैं चारों वेदों का विद्वान् और जब पार्टी मे नहीं हू तो मैं महामूर्ख। क्या आप देहली में नहीं देखते कि जो होली चुके हैं उनके नाम के बड़े बड़े पोस्टर दिल्ली में छपते हैं और उन्हें चारों वेदों का विद्वान् और आचार्य लिखा जाता, जब कि वे संस्कृत का अक्षर भी नहीं जानते न शर्म लिखनेवाले को और न लिखाने वाले को। और जो वास्तव में वेदाचार्य हैं पर होली चुके नहीं है, उनके नाम का भी पोस्टर कभी देहली में देखा। हमने संसार में खूब अनुभव किया है, अच्छा और बुरा पार्टी के आधार पर ही होता है।

५—जब अपनी पार्टी का होता है तब उसके झूठे बिल भी पास किये जाते हैं, और जो पार्टी का नहीं होता उसके सच्चे बिल भी लटकाकर जलील किया जाता है।

### मित्रों का रहस्योद्घाटन

थोड़ी देर के लिये आपकी बात को सही मानकर मैं कहता हू कि पंजाब सभा की पार्टी में जब आप थे, और उन्होंने साथी के रूप में आपसे कोई बात कही, उसको आप समाचार पत्रों में छाप रहे हैं, तो आज आप जिस पार्टी में हैं वे लोग क्या आप पर विश्वास करेंगे और आपके साथ कोई रहस्य की बात करेगा? क्या भारतीय इतिहास भूल गये। एक राजा का साथी शत्रु राजा से नाराज होकर मिल गया और उसकी विजय करा दी। विजय के बाद सबसे पहले विजयी राजा ने उसको यह कहकर मार दिया कि तू जब उसका ही साथी न हुआ तो मेरा साथी क्या होगा।

रामायण में भरत की शपथों में एक शपथ यह भी है कि मैत्री के समय मे जो बात किसी ने कही है उस रहस्य का उद्घाटन जो विरोध होने पर करता है, उसको जो पाप लगता है, वह पाप मुझ लगे, अगर भाई राम के वन भेजने में मैंने कोई सलाह दी हो। आपको चाहिये था कि यह बात महात्मा आनन्दस्वामी जी को व्यक्तिगत रूप से बैठकर कह देते उनके आचार्य।

### सार्वदेशिक पत्र में इस लेख का छपना अनुचित

मैं इस बात पर खेद प्रकट करता हू जो सार्वदेशिक पत्र मे यह लेख छपा। महात्मा आनन्दस्वामी जी के नाम खुला पत्र। यदि सार्वदेशिक पत्र में छपता है तो इससे भ्रान्ति आर्यजगत् को यह हो सकती है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने भारतेन्द्रनाथ से यह लेख लिखाकर छापा। जो यह बात है गलत, सार्वदेशिक सभा के प्रधान बम्बई रहते हैं और सार्वदेशिक सभा के प्रधानमन्त्री लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रायः दौरे पर रहते हैं, इस मध्य यह आपका लेख छपा है।

### वैधानिक स्थिति समझ लो

आर्य महा सम्मेलन का प्रत्येक प्रस्ताव तब कार्य रूप से परिणत होता है, जब सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग उसको पास करे। महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुर्द सब विवाद कर दिये जावे, यह आर्य महा सम्मेलन का प्रस्ताव है, अभी तक सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा नहीं हुई। अत इस पर अन्तरङ्ग सभा क्या करेगी, कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु, आर्य महासम्मेलन हैदराबाद में जो सार्वदेशिक सभा के अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य थे, उन्होंने सारे देश के प्रतिनिधियों के समक्ष स्पष्ट रूप से आश्वासन दिया कि हम इसको अन्तरङ्ग में पास करावेंगे। यहाँ तक कि मेरे इस प्रस्ताव का सबसे पहले समर्थन करने वाले सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री ला० रामगोपाल जी शालवाले थे। इसी के समर्थन में सोमनाथ जी मरवाहा थे। हम सार्वदेशिक सभा के हैदराबाद उपस्थित व्यक्तियों का यह नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है, कि इसको सार्वदेशिक अन्तरङ्ग में पास करावें। पर यदि सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग से पूर्व इस प्रकार के लेख सार्वदेशिक पत्र में छपेंगे तो बिना मतलब सार्वदेशिक सभा के व्यक्तियों पर यह सन्देह आर्य जगत् को होगा कि यह वास्तव में झगड़ा समाप्त करना नहीं चाहते हैं, यह सब उसकी भूमिका है।

### कोर्टों के निर्णय

भाई भारतेन्द्रनाथ जी ने अपने लेख में सब कोर्टों के निर्णय उद्धृत किये हैं, जैसे मानो महात्मा आनन्द स्वामी जी सुप्रीम कोर्ट के जज हैं, उन्हें पिछले फैसले कोई वकील साहब समझा रहे हैं। महात्मा आनन्द स्वामी जी का काम सब बिछड़े हुओं को मिलाकर बैठाना है। अगर तुम में जरा भी आदर्श है तो साधु की पुकार सुन लो और बदले की भावना छोड़कर आर्यसमाज पर दया करो। आर्यसमाज मरे या जिये, कोर्ट के जजों को इसकी चिन्ता नहीं। और जिसके हक में निर्णय हो जाता है वह तब तक ही कोर्ट-कोर्ट चिल्लाता है यदि उसके विरुद्ध कभी उलटा निर्णय हो जावे, वहीं सुप्रीम कोर्ट और न्याय सभा को गाली देने लगेगा।

### काम महान् और आदमी थोड़े

विश्व भर का ठेका आर्यसमाज ने लिया है "सारे संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य

# साहित्य-सौरभ

## धरा पर स्वर्ग ला दो

मस्त होकर गा बसन्ती, अब पुरानी राग छोडो ।
कह रहा नव वर्ष का क्षण, तुम पुरानी चाल छोड़ो ।।
है कौन छोटा-बडा, मिथ्या-अरे यह तर्क छोडो ।
हैं, सभी भाई यहां यह प्रेम नाता आज जोडो ।।

वेद के शुभ मन्त्र से कर आज तू अभिषेक नव का,
जो धरा पर आज गूंजे, गान नूतन भावना का ।
सत्य का सन्देश सारे विश्व को तुम अब सुना दो ।
आर्य वीरो आज उठकर तुम धरा पर स्वर्ग ला दो ।।

★पारसनाथ मिश्र, धनीपुर, जंगीगंज, वाराणसी

# आर्य्य महिला मण्डल

## आप भी अजमाइये

★चारपाई के चारों कोनों में थोड़ा-सा कपूर (पोटली बनाकर) लटकाने से अथवा टेसू का फूल या अजवायन रखने से खटमल भाग जाते हैं ।

★थोडे से दूध में दो तीन बूंद नाइट्रिक एसिड (नौसादर का तेजाब) डालने से दूध और पानी अलग-अलग हो जाएगा ।

★कपडे रंगने के समय यदि रंग मे थोडा सा सिरका भी मिला दिया जाये तो कपड़े अति चमकदार हो जाते हैं ।

★कार्क को तारपीन के तेल मे भिगोकर यदि चूहों के बिलों के पास रख दिया जाए तो चूहे भाग जाते हैं ।

★हींग यदि आग पर डालते ही गन्ध दे तब तो उसे असली और यदि देरी से धुआं दे तो नकली समझना चाहिये ।

★पानी मे शहद की बूंद डालने से यदि वह ज्यों का त्यों रहे तब तो असली नहीं तो नकली समझना चाहिये ।

★स्याही के धब्बे पर उबले चावल मलने से वे सुगमता से दूर हो जाते हैं ।

है" कार्य कर्ता थोड़े हैं, वे भी पार्टी मे बंटकर आधे रह जाते हैं, और आर्यों की भी शक्ति लड़ने में चली आरही है, काम क्या होगा पत्थर । बस यही अब काम रह गया है, कि बड़े-बड़े पोस्टर छापो और अखबारों मे वक्तव्य दो । इन हवाई बन्दूकों से न विदेशी मरेगा न विधर्मी । बस फट-फट और धमाका ही होता रहेगा । आज प्रत्येक नगर और गांव तक के आर्यसमाजो मे झगड़े हैं, जब प्रान्तीय सभा और सार्वदेशिक सभा मुकदमे लड़ेगी तो समाजों को किस मुंह से कहेगी कि तुम मत लड़ो । हर स्थान पर शक्तिशाली आर्य लड़ रहे हैं, यदि ये मिलकर बैठ जावें तो एक-एक ग्यारह का बल हो जावे । आज यदि ला० रामगोपाल शालवाले जैसा धुनी कार्य कर्त्ता, श्री सोमनाथ जी मरवाहा जैसे महान् बुद्धिसागर और सम्पन्न व्यक्ति, तपस्वी प० जयदेव सिद्धान्ती बाल ब्रह्मचारी तपस्या की मूर्त्ति आचार्य भगवान् देव जी नगर के महान् व्यक्ति लाला हंसराज जी गुप्त, अद्वितीय व्यक्तित्व वाले चौधरी देशराज जी, देहली में नेतृत्व में प्रतिष्ठा प्राप्त प्रोफेसर रामसिंह जी, उच्चकोटि के संस्कृत भाषा के लेखक और गम्भीर व्यक्तित्व वाले प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री आदि तथा अम्बाला में जो पंजाब सभा का निर्वाचन सार्वदेशिक न्याय सभा के आधार पर हुआ उसमें जो व्यक्ति प्रधान आदि पदों पर आये और जो १५ व्यक्ति छटकर सार्वदेशिक के लिये आये मैं सारे जीवन पंजाब में रहने के कारण सबको जानता हूं । एक एक व्यक्ति आर्यत्व की साक्षात् प्रतिमा है (और मैं सबसे पूछता हूं यह बताओ कि प्रताप भाई जैसा व्यक्ति क्या कलि युग में मिल सकता है ।) मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि इन सब महान् पुरुषों को पिता तुम मिलाकर बैठा दो, और ऋषि के मिशन पर टटा करो । क्या प्रभु वह दिन आयेगा कि सब मिलकर बैठ जावेंगे । हमारा नारा है ससार के महान् पुरुषों एक हो जाओ, और भैया आर्यसमाज के ही महान् पुरुषों एक हो जाओ तो भी ससार का कल्याण हो जावे ।

### आर्य प्रतिनिधि सभा ने आदर्श उपस्थित किया है

आर्य प्रतिनिधि सभा में घोर युद्ध सिरसागज निर्वाचन में हुआ, और यह कहा जाता था कि सिरसागज पाकस्मा हो जायेगा । उत्तर प्रदेश के नेता एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे, और इतना सघर्ष हुआ कि प्रधान सभा निर्वाचन नहीं करा सके ।

फिर देखो सब मिलकर बैठ गये, जो एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे, और दोषारोपण करते थे आज वे ही सब एक दूसरे को देखकर प्रसन्न होते हैं और सब बातें ऐसे भूल गये जैसे पूर्व जन्म की स्मृति भूल जाती है । पंजाब के लोग अपने भाई उत्तर प्रदेश के लोगों की ओर जरा देखो द्वेष कैसे मिटता है । लडाई सारे प्रांत मे नहीं होती दो चार व्यक्ति ही सारे प्रान्त को लडाते हैं, जब वे मिल जाते हैं सारे प्रान्त में शान्ति हो जाती है । एक जिन्ना ने सबको मरवा दिया परिणाम उसका भी यही हुआ कि उसकी वाणी पर कैंसर हो गया झगड़ालु आर्यों ! यदि भगवान् हे और आर्य समाज को तुम बर्बाद करोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा ।

### मेरी निश्चित धारणा है

इस शांति के प्रस्ताव से जिन दो व्यक्तियों को दुख हुआ है उन्हे ६ मास के लिए एक हजार रुपया मासिक वेतन देकर विदेश प्रचार के लिए यदि भेज दिया जावे तो निश्चित सब मुकदमे समाप्त हो जावें, और महात्मा आनन्द स्वामी जी इस शान्ति प्रस्ताव में अवश्य सफल हो जावें । यदि ऐसा नहीं हुआ तो ईश्वर ही सहारा है । यह मेरा हैदराबाद आर्य महा सम्मेलन का शांति प्रस्ताव सफल हो भी सकता है, और नहीं भी हो सकता है । अथवा उन दोनों व्यक्तियों के जो अपने स्वार्थ हैं, जिनके कारण वे इस शान्ति प्रस्ताव में विघ्न कर रहे हैं, उनको लिखित गारन्टी महात्मा आनन्द स्वामी जी पहल दे दें, तब भी यह शान्ति प्रस्ताव सफल हो सकता है क्योंकि—

"दुर्जन प्रथम वन्दे सज्जन तदनन्तरम्' । मुखप्रक्षालनात् पूर्वं गुदप्रक्षालन वरम् ।"

पदों पर डटे रहना और सभा का धन मुकदमों पर व्यय करना तो दोनों तरफ एक जसा है । नरेन्द्रनाथ जी ने न जाने क्या खाकर यह लेख लिखा जो यह नहीं सोचा कि आज जिन का साथी बनने का आप यत्न कर रहे हैं, उन पर भी यह आक्षेप आता है । मैं आशा करूंगा कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग के निर्णय तक कोई लेख सार्वदेशिक पत्र में न छपे, अन्यत्र चाहे छपें ।

### पंच फैसले मे संतोष और लज्जा की निवृत्ति

यदि महात्मा आनन्द स्वामी जी को पंच बना कर आर्यों ने निर्णय कर लिया तो प्रत्येक पक्ष कह सकता है कि ठीक तो मैं था, पर महात्मा जी का निर्णय मानना पड़ा था, और ससार में प्रसिद्धि होगी कि आर्य लडना भी जानते हैं और अपने पूज्यों की आज्ञा पालन करना भी जानते हैं । अन्यथा फिर यह कहना पडेगा कि कोर्टों में जो वादी प्रतिवादी हैं, वे सब सार्वदेशिक सभा से अलग हो जावें अन्य प्रान्तों के लोगों के हाथ मे सार्वदेशिक हो जावे । वे ही वादी प्रतिवादी और वे ही जज निर्णय हो कैसे ।

# दयानन्द-सप्ताह

## ९ फरवरी ६९ से १५ फरवरी ६९ तक

(अन्तरङ्ग सभा ति० २५ १२ ६७ के नि० स० ३२ द्वारा स्वीकृत)

### इस महान् पर्व पर हमारी प्रतिज्ञाए और कार्यक्रम

**१—ऋषि बोधोत्सव पर जन-सम्पर्क एवं सदस्यता अभियान किया जाये—** आगामी ऋषि बोधोत्सव पर आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से विशेष जन सम्पर्क स्थापित करने एव सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया जाना चाहिये ताकि आर्य विचारों तथा आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले बन्धुओं के सक्रिय सहयोग से समाज लाभान्वित हो सके।

**२—आर्यजनो मे पारस्परिक सहयोग एव भ्रातृत्व-भावना वृद्धि का प्रयत्न किया जाए—** प्रत्येक जिले में जिले की समस्त समाजों को "आर्य सम्मेलनों" का आयोजन करना चाहिए और परस्पर भ्रातृभाव की वृद्धि के साथ-साथ स्थानी आर्थिक, सामाजिक, तथा धार्मिक गोष्ठियो के द्वारा परस्पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाये।

**३—राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने का आर्यजन विशेष यत्न करें—** आर्य समाज धार्मिक आन्दोलन है राष्ट्र के नैतिक पतन को देखते हुए आर्य समाज का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अत सभी आर्य बन्धुओ को चाहिए कि वे इस पर्व पर सामूहिक रूप से राष्ट्र के नैतिक उत्थान मे विशेष सक्रिय सहयोग देने का निश्चय करें और स्वय नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करें।

### दयानन्द सप्ताह कार्यक्रम

**[१] उद्बोधन—** प्रतिदिन प्रात नगर नगर और ग्राम-ग्राम मे टोलियां बनाकर उद्बोधन किया जावे।

**[२] यज्ञ—** प्रभात फेरी के पश्चात आर्य मन्दिर मे सार्वजनिक यज्ञ किया जाये। यथासम्भव इस सप्ताह मे सम्पूर्ण यजुर्वेद सहिता से बृहद यज्ञ की योजना की जाये।

**[३] प्रचार—** [अ] प्रति दिन सायकाल ग्रामों मे तथा नगर के भिन्न भिन्न मुहल्लो में अथवा आर्य मन्दिरों में कथा द्वारा तथा अन्य प्रकार से वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार की विशेष योजना की जाय और ऋषि जीवन पर विशेष प्रकाश डाला जावे। साहित्य प्रकाश को बिना मूल्य या लागत मात्र पर देकर अधिक से अधिक प्रचार किया जावे।

**[आ] आर्यमित्र—** सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार और आर्य समाज की गतिविधियो एव नीतियों के परिचयार्थ ७० वर्ष से 'आर्यमित्र' साप्ताहिक प्रकाशित हो रहा है। १०) वार्षिक मूल्य में प्रत्येक आर्यसमाज स्वय ग्राहक बनकर और सदस्यों को उसका ग्राहक बनाकर प्रचार कार्य में रचनात्मक सहयोग प्रदान करें।

**[इ] गुरुकुल आंदोलन—** सभा की ओर से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन गत ६४ वर्षों से सचालित है। बोधरात्रि के अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष प्रकाश डालना तथा गुरुकुल की आर्थिक सहायता द्वारा इसे समर्थ बनाना प्रत्येक आर्य हिन्दू का कर्तव्य है।

**[४] आचार व्यवहार—** जनता में से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिये, सिनेमाओं के भ्रष्टाचार फैलाने वाले व अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे तथा मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर भी बल दिया जावे।

**[५] दलितोद्धार—** इस सप्ताह में न्यून से न्यून एक दिन अछूत कही जाने वाली जातियों में विशेष रूप से प्रचार कर उसके उठाने और अस्पृश्यता मिटाने का प्रयत्न किया जावे। दलितों को आर्यसमाज का सदस्य बनाना और उनमे वैदिक संस्कारों का प्रचार भी प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए।

**[६] प्रीतिभोज—** यथासम्भव प्रीतिभोज की इसी दिन योजना की जाये। प्रीतिभोज अत्यन्त सादा और स्वल्प व्ययक हो, उसमें जातपांत छूत-अछूत का भेदभाव बिसार कर, सब आर्य भाई-बहन समान रूप से सस्नेह भाग लें।

**[७] आत्म-निरीक्षण—** इस सप्ताह मे एक दिन समस्त आर्य भाई बहनों को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि जिस शक्तिशाली, आर्यसमाज का कभी बहुत बड़ा प्रभाव था, आज वह शिथिल और अकर्मण्य सा क्यों बन गया है। इसमें स्वयं आपकी कहां तक त्रुटि है।

**[८] स्वदीक्षा-व्रत—** भविष्य मे आर्यसमाज के लिये दयानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा में स्वीकृत प्रस्ताव के लिए सामूहिक दीक्षाव्रत को व्यक्तिगत और सामूहिक दोहराना चाहिए।

**[९] ईसाई प्रचार निरोध—** इस सप्ताह मे एक दिन विशेष सार्वजनिक सभा करके ईसाइयत के प्रचार के लिए आने वाले धन, विदेशी मिशनरियों पर प्रतिबन्ध लगाने, विदेशी मिशनों का राष्ट्रीयकरण करने तथा हिन्दू बालक बालिकाओं को ईसाइयत की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करनी चाहिये।

### दयानन्द जन्म दिवस (ऋषि बोध पर्व १५ फरवरी १९६९ ई० दिन शनिवार

प्रातः—समस्त आर्य सज्जन तथा देवियां मन्दिर में एकत्रित होकर—

१—कुछ काल वेद पाठ करें।

२—साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि यज्ञ करें।

३—आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जावें

४—प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें।

मध्याह्न—विशेष शोभा यात्रा का आयोजन किया जाय। शोभा-यात्रा अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिए। आर्य पुरुषों, कुमारों, देवियों को अपनी-अपनी टोलियां बनाकर स्वर्ग भजन गाने चाहिए। भजनों में प्रभु-भक्ति, महर्षि-महिमा जातीय गौरव तथा आत्म-सुधार के विशेष भाव हों।

रात्रि—मन्दिरों में विशेष रोशनी करनी और उनके पश्चात् आर्य मन्दिरों में वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिए।

विनीतः—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दिनांक १-१-६९ ई०

## बृहदधिवेशन के लिए निमन्त्रण-पत्र भेजिए

विदित हो कि प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आगामी बृहदधिवेशन के स्थान व तिथि नियत करने का विषय सभा की आगामी अन्तरङ्ग मे विचाराधीन है।

अत. प्रदेशीय आर्यसमाजों से निवेदन है कि जो आर्यसमाज अपने यहां बृहदधिवेशन को आमन्त्रित करना चाहें वे स्थानीय आर्यसमाज की अन्तरङ्ग सभा से स्वीकृति लेकर सभा कार्यालय मे निमन्त्रण-पत्र अन्तरङ्ग सभा के निश्चय सहित भेजने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

### आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के उपदेशक श्री विश्ववर्धन वेदालकार ने सभा की सेवाओं से त्याग पत्र दे दिया है, अतः समाजें उन्हें किसी प्रकार का धन न देवें।

—विक्रमादित्य वसन्त
सभा उप मन्त्री

## सार-सूचनाएँ

—गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कोटला फीरोजशाह दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव १५ फरवरी को मनाया जायगा। इसमें स्कूलों के छात्र छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता 'महर्षि दयानन्द की देन' विषय पर श्री कविराज हरनाम दास जी बी० ए० की अध्यक्षता में होगी। —ओम्प्रकाश मन्त्री

—९ फरवरी को प्रातः ८॥ बजे से आर्यसमाज राजेन्द्रनगर दिल्ली में (शंकर रोड बस स्टैण्ड के समीप) यज्ञ संध्या, प्रार्थना आदि के पश्चात् श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु का वेदोपदेश होगा। —ओम्प्रकाश मन्त्री

—श्री प० बृहस्पति जी शास्त्री एम० ए० भूतपूर्व उप कुलपति व आचार्य गुरुकुल वृन्दावन सेवा-निवृत्ति होकर अपने घर आ गये हैं। अब आपसे पत्र-व्यवहार का पता है—

श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री एम ए.
४६ मानसिंह रोड, देहरादून

—१३, १४ १५ मार्च को चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में जौहर मेला का आयोजन किया गया है —संयोजक

### उत्सव

—आर्यसमाज औरैया (इटावा) का वार्षिकोत्सव ७ व ८ और ९ मार्च ६९ को होना निश्चय हुआ है। —मन्त्री

—आर्यसमाज दयानन्दद्वार अकबरपुर जिला फैजाबाद का वार्षिकोत्सव पूर्व निश्चित तिथियों चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा पर्यन्त १९२६ को मनाया जायगा। —मन्त्री

—आर्यसमाज सकरावा (फर्रुखाबाद) का उत्सव १३ से १५ फरवरी तक मनाया जायगा। —मन्त्री

### ऋषि बोधोत्सव मेले के प्रधान डा० दुःखनराम, उप प्रधान सार्वदेशिक सभा होंगे।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, दिल्ली की ओर से स्वामी दयानन्द जी महाराज बोधोत्सव का (ऋषि मेला) १५ फरवरी, १९६९ शनिवार प्रातः ८ बजे से सायं ५ बजे तक कोटला फीरोजशाह के मैदान में मनाया जायगा। इस उत्सव की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डा० दुःखनराम जी करेंगे। ध्वजारोहण ब्रह्मचारी इन्द्रदेव मेधार्थी करेंगे।

—रामनाथ सहगल, महा मन्त्री

—आर्यसमाज कलकत्ता १९, विधान सरणी का ८३ वां वार्षिक समारोह २५ दिसम्बर १९६८ से १ जनवरी १९६९ तक मुहम्मद अली पार्क में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, महात्मा तथा भजनोपदेशक पधारे थे। ऋग्वेद से ८ दिनों तक यज्ञ नगर कीर्तन तथा कई सम्मेलन भी बड़ी सफलता से सम्पन्न हुए। जिनमें वेद, गोरक्षा, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, राष्ट्र रक्षा आदि से सम्बन्धित प्रस्ताव पारित हुए।

—छबीलदास सैनी, मन्त्री

—आर्य समाज सीतापुर की साधारण सभा प्रसिद्ध मनीषी हिन्दी के अनन्य भक्त, आर्यत्व के कट्टर समर्थक डा० सम्पूर्णानन्द जी के एवं प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार के निधन पर शोक प्रकट करती है। परम पिता से प्रार्थना है, कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—वीरेन्द्रकुमार आर्य, मन्त्री

कहानी............

( पृष्ठ १५ का शेष )

। नोट निकाल कर रिक्शे वाले की र बढ़ा दिया ।

'नहीं बहिन जी' यह तो मेरी शाम ह की मजदूरी है ।

'तो क्या हुआ तुम्हारा नुकसान भी ' हो गया है' ।

'इसमें आपका क्या दोष, मेरी स्मत ही ऐसी थी !'

"मैं तुम्हें यह रुपये अपनी खुशी दे रही हू और तुमने चलते समय हा था, जो चाहो सो दे देना ।'

मदन दुआयें देता हुआ लौट या । कुछ पैसे देकर रिक्शा ठीक राई, और जो रुपये बचे उसमें से कुछ से राशन के लिये रखकर सारे रुपये दिया माँ को देने के लिये बुढ़िया के र पहुचा ।

'माँ कुछ पैसे हैं, इससे बिटिया की वा मंगा लेना ।

'बेटा, यह पैसे मैं नहीं लूगी, तुम स दिन अपना भाड़ा भी नहीं ले थे ।'

'क्या हुआ माँ यदि तुम्हारा टा होता तो क्या यह पैसे न तीं ।'

'मेरी जैसी दु खी मां किसी की न े बेटा ।'

'माँ मैं भी दु खी हू और तुम भी ुखी दोनों ही एक जैसे हैं । मुझे अपना ेटा बनाने मे अब तो कोई ऐतराज ाहीं ? मेरी माँ बचपन में ही ७ दिन ा छोडकर इस ससार से बिदा ले गईं, ैं तभी से माँ के प्यार और दुलार के लये तरस गया हू ।'

मदन की करुण कहानी सुनकर ूढ़ी माँ का दिल भर आया । उसने मदन को अपनी छाती से चिपटा लिया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुये उसके सुखी जीवन के लिये कामना ी ।

मदन दिन भर रिक्शा चलाता, कभी कभी रात को भी और इसी तरह दो परिवारों का बोझ उठाता वह जिन्दगी की शेष सासे पूरी करने लगा । उषा को भी अस्पताल में भर्ती कर दिया । मदन का रास्ता बाबू दीनदयाल जी के बगले के साथ मे होकर जाता था । एक दिन अचानक बंगले की खिड़की से आवाज आई ।

—रिक्शा ।

मदन रुका । लड़की ने बाहर आकर कहा तुमने मुझे पहिचाना ?

'मदन कुछ सकपका गया और न पहिचानने की मुद्रा मे उसने अपनी आंखें नीची कर लीं । बहिन जी क्षमा करना ।

'अरे मैं वही तो हू जिसे तुम उस दिन स्टेशन से लाये थे और तुम्हारी रिक्शा रास्ते मे टूट गई थी ।

हाँ याद आया बहिन जी आपने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की थी ।

'और आज जानते हो तुम्हे क्या सजा मिली ?

'मदन सजा का नाम सुन कर घबरा गया और सोचने लगा शायद उस दिन मुझसे कोई भूल हो गई होगी ।

सुनीता बोली अब यह बगला मेरा है, मै इसकी मालकिन हू । तुम्हारा रिक्शा अब इसके सामने से नहीं चलेगा इसे यहीं खड़ा कर दो ।

'लेकिन मालकिन ! मेरे दो परिवार भूखे मर जायेंगे ।

'क्या मतलब ? ये दो परिवार कैसे ?'

मालकिन एक मेरा दीन परिवार और दूसरा एक और दूसरी मां का जिसकी इकलौती बीमार बेटी को मैं इलाज के लिये इसी रिक्शे से पैसे कमा-कर भेजता हू । उस बेचारी को बिना पैसे अस्पताल से निकाल दिया था । मैंने उसकी करुण कहानी सुनकर उस माँ से रिक्शे के पैसे भी नहीं लिये थे । मैंने उस दिन से यह सकल्प किया है कि मैं उसका बेटा बनकर उसकी सेवा करूँगा और उस लड़की का इलाज कराऊँगा ।

मदन की बातें सुनकर सुनीता की श्रद्धा उसकी पवित्र भावनाओं मे और भी बढ़ गई । उसकी मेहनत कश जिन्दगी और उसकी ईमानदारी से सुनीता बहुत ही प्रभावित हुई । उसने मदन से कहा—

मदन मैं सब कुछ समझ चुकी हू । अब कुछ भी कहने की जरूरत नहीं । तुम पढ़े-लिखे व्यक्ति हो । तुम्हारी बुद्धि का लाभ दूसरों को पहुचे । इसलिए तुम आज से दीनदयाल जी के कारखाने में एक क्लर्क के रूप में काम करोगे तथा दो परिवारों का बोझ न उठाकर केवल अपने परिवार का ही बोझ उठाओगे । मैं तुम्हारी दूसरी माँ का प्रबन्ध किये देती हू ।

[ पृष्ठ २ का शेष ]

रथ ठीक चलता है । यही जीवन का ऋत है । आत्मा रथी की जीवन यात्रा तभी निर्विघ्न चलती है ।

मन्त्र ने इसीलिये एक मन्त्रणा दी है कि इन कर्म कारक अश्वियों पर लगाम रखो ताकि ये 'मयोभुव' अर्थात् सुख-दायी हों, दु खदायी न हों ।

सुख और दु ख की प्राप्ति, जीवन का निर्माण व विनाश चूंकि जीवन रूपी रथ के इन अश्व अश्वियों पर आधारित है, इसलिए वेद ने उन्हे नष्ट-भ्रष्ट करने का आदेश नहीं दिया । केवल कुछ घटाने बढ़ाने के लिये कहा । दुर्बल घोड़े, मरियल टट्टू जीवन रथ को कैसे द्रुत गति से खींच सकेंगे, इस लिये उनका सशक्त होना आवश्यक है । आंखें व कान जब दुर्बल हो जाते हैं तो आत्मा के लिये कष्ट उत्पन्न होता है । गूँगा अपने मनो भावों को जब भली भांति व्यक्त नहीं कर पाता, तुतलाने वाले को जो घोर मानसिक वेदना होती है, उसकी सहज अनुभूति हम सबको होती है, इसलिए ये इन्द्रियाँ परमात्मा का वरदान हैं, अभिशाप नहीं, इन्हे पुष्ट किया जाये, स्वस्थ रखा जाये जीवन यापन के लिए, यह इनकी वृद्धि है, किन्तु उन्हें विषयों में अधिकरन न रखा जाये अर्थात् इनकी पुष्टि के लिए ही इनकी विषय वृत्ति को घटाया जाये । जीवन रूपी बहीखाते का यही सच्चा जमा खर्च है । मन्त्र ने मन्त्रणा रूप में कितना सुन्दर कहा—

'य एवा भूयामृणवत् स जीवात् ।'

अर्थात् जो इन्द्रियों पुष्ट रखे, वही जीता है ।

उपासना काण्ड में रुचि रखने वाले, परमात्मा को पुकारने वाले उसका आत्मना आह्वान करने वाले जीवन के इस सत्य को समझें । यदि परमात्मा से प्यार है, उनके दर्शन व मिलन की आकांक्षा है, समाधि की प्रवृत्ति है । बाह्य जगत् से अन्तर्जगत् मे प्रवेश की कामना है तो परमेश्वर के ऋत को समझिये । सर्वत्र सर्वत. अन्तर्मुखी कोई नहीं रह सकता । दृश्य जगत् के संस्कार जो चित्त पर पड़ते हैं वे भी अन्दर जगत् के खेल खिलाते हैं । अन्दर से बाहर, बाहर से अन्दर एक चक्र चल रहा है, जो ऋत का चक्र है । इस चक्र को समझिये, इस पर चढ़िये तो स्वत. आत्मा मे परमात्मा की लगन लगेगी और जिस दिन वह दिव्य देव जीवन में प्रविष्ट हो जायगा तो न केवल जीवन ज्योतित हो जायेगा, वरन् उस मे एक नव-बसन्त का दर्शन होगा । भावनाओं की कलियाँ महकेंगी, विचारों के सुमन सुरभित होंगे और जीवन उपवन मे विचरण करता हुआ आत्मा आनन्दित होगा ।

## संस्कार—

—२१ जनवरी को आर्यसमाज चौक लखनऊ के मन्त्री श्री शङ्करलालजी की पुत्री चन्द्रावली का विवाह-संस्कार श्री स्वतन्त्रकुमार के पुत्र चि० गुरुप्रकाश के साथ वैदिक रीत्यनुसार हुआ। पुरोहित श्री प० रामचरित्र जी पाण्डेय थे।

—ज्ञानकृष्ण

—आर्यसमाज हांसीपुर (मिरजापुर) का वार्षिकोत्सव १८ और १९ जनवरी को समारोह पूर्वक मनाया गया।

—मन्त्री

—खेरागढ़ (आगरा) मे आर्यसमाज की स्थापना हो गई। इसके प्रधान श्री रघुनाथ सिंह जी और मन्त्री श्री डा० जोगीराम जी चुने गये। —मन्त्री

१४ जनवरी को आर्यसमाज जमानियाँ मे श्री स्वामीनाथ जी के पुत्र का नामकरण संस्कार श्री रामविलास शास्त्री ने कराया। —धर्मवीरप्रसाद

—साहित्य वितरण योजना के अन्तर्गत सवाल परगना जिला में आर्य साहित्य का पर्याप्त वितरण किया गया है। —बनवारीलाल पचोरीवाला

—२२ से २९ दिसम्बर तक आ० स० मोदरा में अराष्ट्रिय प्रसार निरोध सप्ताह मनाया गया। —मन्त्री

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट अपने पुत्र के पास आजकल कासगंज में हैं। 'आपके कई व्याख्यान इस आर्यसमाज मे हुये हैं। आपकी अध्यक्षता में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस भी मनाया गया। आपने श्री स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। —मन्त्री

## स्वामी समर्पणानन्द के निधन के सम्बन्ध मे शोक-प्रस्ताव

—आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर की यह शोक सभा, वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान् सन्यासी स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती के निधन पर अपना हार्दिक दुःख व्यक्त करती है और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एव बन्धु, बान्धवों और देशवासियों को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने पाण्डित्य और प्रतिमा से वेद के प्रकाश को दिग्दिगन्त में प्रसारित किया था। उनके अभाव की पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं। उनके ओजस्वी व्याख्यान आर्यजगत् को चिरस्मरणीय रहेंगे।

—विद्याधर मन्त्री

—आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली की यह सभा वैदिक साहित्य के उद्भट विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, ऋषि दयानन्द के मिशन के सतत प्रचारक, आर्य गौरव, विद्या वारिधि, वागीश पूज्यपाद स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के दुखद देहावसान को आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति समझती है। हम सब की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे, तथा उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस विषम वेदना के सहन करने की शक्ति और सामर्थ्य दे।

—मन्त्री

—आर्यसमाज चित्रगुप्तगञ्ज लश्कर ने स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पास किया। स्वामी जी के निधन से आर्यजगत् का एक वेदों का मूर्धन्य विद्वान् व शास्त्रार्थ महारथी उठ गया है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होना कठिन प्रतीत होती है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —मन्त्री

—आदरणीय स्वामी समर्पणानन्द जी के आकस्मिक निधन के समाचार को सुनकर आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले सहित दयानन्द कालेज अजमेर के सभी प्राध्यापक एव विद्यार्थियों ने गहरा शोक प्रकट किया। वे भारत के महान् विद्वानों में से एक थे, और विशेषकर आर्य जगत् इस हानि की क्षति पूर्ति सरलता से नहीं कर पायेगा। —कार्यालयाध्यक्ष

—प्रसिद्ध आर्य नेता एवं वैदिक विद्वान् श्री स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज (विद्यामार्तण्ड श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार) के आकस्मिक निधन पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक एव शिक्षार्थियों द्वारा शोक सभा में श्री स्वामी जी की दिवंगत आत्मा के लिये शान्ति और सद्गति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

—प्रियव्रत वेद वाचस्पति, उप कुलपति

—आर्य समाज डीजल रेल इञ्जन कारखाना वाराणसी ने अपने १९ जनवरी के साप्ताहिक अधिवेशन में श्री स्वामी समर्पणानन्द जी के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

—मन्त्री

—आर्य समाज नीम मण्डी कोटा जङ्कशन ने श्री डा० सम्पूर्णानन्द जी और श्री स्वामी समर्पणानन्द के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया है। और दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की है। श्री महेशदत्त जी भार्गव बैरिस्टर हाई कोर्ट जोधपुर का भव्य स्वागत किया गया। आपका प्रभावशाली भाषण हुआ।

—मोहनलाल आर्य, मन्त्री

—आर्यसमाज नगर मण्डी फतेहगंज बुलन्दशहर ने सभा करके श्री स्वामी समर्पणानन्द जी की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया। मन्त्री जी ने कहा कि आर्य जगत् मे एक महान् विभूति उठ गई। उसकी पूर्ति करनी असमभव है। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

—शिवनन्दनदास मन्त्री

—आर्यकुमार सभा फर्रुखाबाद श्री स्वामी समर्पणानन्द जी के देहावसान पर शोक प्रकट करता है।

—कालीचरण आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज इटारसी श्री स्वामी समर्पणानन्द जी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है, और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना करता है। —मन्त्री

—आर्यसमाज भोपाल ने श्री स्वामी समर्पणानन्द जी की मृत्यु पर शोकसहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। मन्त्री

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के प्रधान श्री नरेन्द्र जी ने स्वामी समर्पणानन्द जी की मृत्यु पर घोर दुःख प्रकट करते हुए उनके महान् गुणों की प्रशंसा की है।

—१४ जनवरी को आर्यसमाज मुगलसराय में सक्रांति पर्व मनाया गया और १५ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्री

—१४ जनवरी को आर्यसमाज भरथना (इटावा) मे सक्रांति पर्व मनाया गया। १९ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। २२ जनवरी को बसन्तोत्सव मनाया गया। इसी दिन बुद्धदेव जी के नाती का जात कर्म संस्कार कराया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज अनूपशहर ने स्वामी समर्पणानन्द जी के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

—मन्त्री

—आर्यसमाज हमीरपुर ने मूर्धन्य विद्वान् एव विचारक तथा गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व उपकुलपति प० बुद्धदेव विद्यालङ्कार (स्वामी समर्पणानन्द) के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —मन्त्री

—ए॰ वी० वैदिक इण्टर कालेज आगरा के हम सभी छात्र एवं अध्यापक गण आर्य जगत् के मूर्द्धन्य विद्वान्, वेदों के मर्मज्ञ एव ओजस्वी वक्ता श्रद्धेय श्री स्वामी समर्पणानन्द जी (प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार) के आकस्मिक एव असामयिक निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करते हैं, तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव उनके वियोग मे शोक सतप्त परिवार एव आर्य जनता को इस शोक भार को वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—रो० ला० गुप्ता

## श्री छज्जामल यादव का देहावसान !

अत्यन्त दुःख है कि गत १६ जनवरी को कराची वाले श्री छगाराम जी यादव का देहावसान ८५ वर्ष की आयु में लखनऊ में हो गया। आपका जन्म १६ ११-६८ को हुआ था। आप कराची के आर्य नेता श्री प० लोकनाथ जी के साथी थे, उनके साथ आपने कराँची में आर्यसमाज का बहुत बड़ा कार्य किया था। पाकिस्तान बनने पर आप कराँची से लखनऊ आ गये थे। आपके आर्यत्व की छाप आपके पूरे परिवार पर है। आपका अन्त्येष्ठि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार प्रचुर घी सामग्री और चन्दन के साथ किया गया। आपके चार पुत्र और चार पुत्रियाँ हैं, सभी शिक्षित और योग्य हैं। आपने गरीबों की सेवा करना उन्हें सहायता देना, नौकरी दिलवाना अपना ध्येय बना लिया था। परम प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। कृष्ण

## श्री गिरधारीलाल जी का देहान्त

श्री गिरधारीलाल जी आर्य का ५ जनवरी को देहावसान हो गया। आप का जन्म ग्राम शिशोली पट्टी बगारस्यूं के एक गरीब घराने मे हुआ, गरीब होकर भी आपकी लगन आर्यसमाज में रही। आपने स्वर्गीय श्री जयानन्द जी भारतीय के साथ आर्यसमाज का कार्य किया। अब सन् १९६७ से इस समाज के प्रधान रहे।

आपकी मृत्यु पर ग्राम मटेला में दि० ६-१ ६९ को एक शोक-सभा रखी गई जिसमें आपको प्रत्येक आर्य सदस्य ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करने हेतु भगवान् से प्रार्थना की। बाद में श्री दौलतराम जी आर्य ग्राम ढौंड बौंडियालस्यूं की मृत्यु पर भी शोक प्रस्ताव पारित करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की, आप हमारी समाज के अन्तरङ्ग सदस्य भी रहे। साथ ही स्वर्गीय भूतपूर्व प्रधान श्री दयाराम जी ग्राम मटेला वालों की माता जी की मृत्यु पर भी शोक प्रस्ताव पारित करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—विजयराम, मन्त्री

—रामप्यारी आर्य कन्या इन्टर कालेज बन्नौसी की प्रबन्ध समिति बाबू लक्ष्मीनारायण जी प्रबन्ध समिति के सदस्य के अचानक देहावसान हो जाने पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे, तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। —मैनेजर

—दुःख है कि ७ जनवरी को आर्य समाज पूर्वी अलीगढ़ के सेठ श्री चुन्नीलाल जी सर्राफ का देहावसान हो गया। सेठ जी बड़े उदार व्यक्ति थे। आपने अपने पास से तीन हजार रुपया लगाकर यज्ञशाला बनवाई थी। आर्य समाज ने एक शोक प्रस्ताव पास करके दिवंगत आत्मा की शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

—सत्यप्रकाश आर्य, मन्त्री

## आवश्यकता है प्रचारक की

उच्च कोटि के विद्वान, वेद विद्या विषय ज्ञाता, शास्त्रार्थ महारथी, मर्यादा पुरुष, , स्वस्थ, प्रचार, उत्साही पंडित की, दक्षिणा योग्यतानुसार, प्रार्थना-पत्र में वय व प्रचार कार्यों का विवरण लिखें।

पत्र-व्यवहार का पता—आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, (कांकरिया रोड) अहमदाबाद-२२

## आवश्यकता

आवश्यकता है १९ वर्षीय अग्रवाल (सिंघल) इण्टर, गृह कार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य वर की। शादी अच्छी। कृपया दहेज के इच्छुक पत्र व्यवहार न करें।

पता—३ डी द्वारा आर्यमित्र कार्यालय लखनऊ

## आवश्यकता

"कन्या आयु १८ वर्ष स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक रूप ... से माता से दोनों आंख खराब हो गई। किन्तु भोजन उत्तम बनाती है। पूरा घर सम्हालती है। योग्य वर चाहिये।"

सेठ गरीबराम अग्रवाल
बिलासपुर, म० प्र०

## आवश्यकता है

आर्यसमाज मेरठ शहर के लिये एक योग्य पुरोहित की। योग्यता के आधार पर उचित वेतन के साथ आवास की भी समुचित व्यवस्था है। लिखें या मिलें।

—ओम्प्रकाश मन्त्री



—आर्यसमाज कायमगंज श्री डा० सम्पूर्णानन्द जी के निधन पर शोक प्रकट करता है, ऐसा महान विद्वान् मिलना कठिन है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। —रामचन्द्र आर्य कोषा०

—आर्यसमाज जामपुर ने श्री कान्ति चन्द्र प्रभाकर की चाची श्रीमती दयावती देवी के निधन पर शोक संवेदना का प्रस्ताव पारित किया है। —मन्त्री

# मानवता का पुरस्कार

-श्री कु० बलबिन्दर कौर

माघ का महीना था। कुहरे के कारण ठण्ड और बढ़ गई थी। इतने पर भी एक रिक्शा सड़क पर चला आ रहा था। सुनसान सड़क, सवारी की प्रतिक्षा में रिक्शा चालक ने एक चौराहा पार किया, दूसरा पार किया और तीसरा भी लेकिन उसकी निराश आंखें अब भी आशा से लगी थीं।

तन पर मैली फटी कमीज पैरों में पैबन्द लगे जूते और सूखे बाल जिनमें काफी दिन से तेल नहीं लगा था। फिर भी मदन का रङ्ग सावला और रूप सलोना, उभरी हुई आंखें गरीबी में भी उसकी शराफत प्रकट किये बिना न रहती। मदन इससे पहले कागज के लिफाफे बनाता, शहर में जाकर बेचता तब कहीं जाकर अपने परिवार का पेट पालता। मँहगाई अधिक होने के कारण आज वह रिक्शा चला रहा है। पढ़ा लिखा होते हुए भी बेचारे को कहीं नौकरी न मिली। उसकी कोई सिफारिश भी तो नहीं। क्या बुरा जमाना आया। कुछ भी हो पर मदन ने तो निश्चय किया था कि वह ईमानदारी से काम करेगा और अपने पसीने की ही कमाई से अपने परिवार का पेट पालन करेगा।

वह दिन भर रिक्शा चलाता, शाम को रिक्शे का किराया देकर जो कुछ बच रहता उसी का वह राशन ले जाता। जिस दिन कम कमाई होती उस दिन उसके परिवार को गुड़ की डली और चनों के चन्द दानों पर ही गुजर करनी पड़ती। शहर में रिक्शा बहुत थे। मदन और आगे बढ़ा, उसकी निराशा आशा में बदल गई, उसे सवारी मिल गई थी, लेकिन वह भी एक दुखियारी बुढ़िया जिसे अपनी बीमार पुत्री उषा को अस्पताल देखने जाना था।

बुढ़िया सड़क के बचकोले खाती रिक्शा चालक को दुआएं देती चली जा रही थी। अस्पताल आया और मदन बुढ़िया को आहिस्ता से उतार उससे पैसे और आशीर्वाद लेकर वापिस चला आया। उस दिन पता नहीं क्यों मदन की कमाई अच्छी हो गई थी। शाम होने को थी। मदन घर लौटने की खुशी में था। आज वह राशन के साथ धूल में खेलती हुई अपनी नन्हीं राजू को पांच नये पैसे की मूंगफली भी ले जायगा। राजू आज बहुत खुश होगी, आज उसकी हफ्तों की शिकायत पूरी हो जायगी। आज मदन अपनी प्यारी राधिका को भी प्याज के गठो के बजाय सब्जी से रोटी खिला सकेगा।

घर की ओर मदन की रिक्शा मुड़ते ही सूर्य भगवान् ने भी अपने रथ के घोड़ों को अस्ताचल की ओर मोड़ दिया। सहसा उसे दूर से फिर वही सुबह वाली बुढ़िया वापिस आती दिखाई दी। मदन उस बुढ़िया का आशीर्वाद लेने के लिए फिर रुका। अबकी बार बुढ़िया अकेली नहीं थी। उसके साथ कंधे पर हाथ रखे हुये एक दुबली पतली लड़की थी, जिसका रूप यौवन सभी कुछ बीमारी के कारण असमय में ही मुरझा गया था, ठीक माला के टूटे फूलों की तरह।

मदन का दिल भर आया, और वह बुढ़िया से उस लड़की की बीमारी की बाबत पूछ बैठा।

"माँ अभी तो यह बहुत कमजोर है।"

"हां बेटा!"

"तो फिर इसे अभी अस्पताल से नहीं लाना चाहिये था।"

"ठीक कहते हो बेटा। पर मैं लाचार थी। इसके इलाज को पैसे ही न थे, जिसके कारण डाक्टर ने मना कर दिया।"

बुढ़िया अपनी राम कहानी सुनाती चली जा रही थी। मदन किसी के दुख में डूबा चला जा रहा था और उसे पता तक न चला कि कब उस बुढ़िया का घर आ गया। उसकी पीठ पर किसी ने हाथ रक्खा और मदन का ध्यान भंग होते ही रिक्शा एक द्वार पर रुक गया। बुढ़िया लड़की को लेकर अन्दर पहुंची और मैले कुचैले कपड़े की कत्तर में बँधी एक छोटी-सी गांठ लेकर दीवार का सहारा लेती द्वार तक आई। शायद वह किराये के पैसे लायी थी। पर मदन रिक्शा लेकर घर आ चुका था।

उसकी राजू मूंगफली पाकर खुश थी, और उसकी राधिका भी आज और दिन से अधिक प्रसन्न थी, पर मदन को रात भर नींद न आयी। पता नहीं किन-किन विचारों में डूबा रहा।

सुबह हुई मदन फिर सदैव की भांति रिक्शा लेकर रोजी और रोटी की तलाश में निकला। सड़क का पहला चौराहा पार करते ही उसे रेल की सीटी सुनाई दी। मदन ने रिक्शे को स्टेशन की ओर दौड़ाना शुरू कर दिया। स्टेशन का नीरव वातावरण एकदम कोलाहल से भर गया, कोई अपना बिस्तर बक्स लेकर नीचे उतरा तो किसी ने कम्पार्टमेंण्ट में से ही कुली-कुली की रट लगाई। प्लेटफार्म में बाहर कोई किसी के आने की प्रतीक्षा पूरी होने पर गले मिल रहा था, तो कोई किसी की प्रतीक्षा में अपलक आंखें लगाये खड़ा था। यात्री बाहर आये और रिक्शे वालों ने अपनी-अपनी बोली में पुकारना शुरू कर दिया।

गाड़ी स्टेशन से छूट चुकी थी। रिक्शे वाले सवारियाँ लेकर जा चुके थे, पर मदन अकेला अपने भाग्य को कोसता सिर झुकाए मन ही मन रिक्शे की सीट पर बैठा दिन और किस्मत के फेर सोच रहा था। अचानक एक गोरी लड़की कुलियों से अपना सूट केस और बिस्तर बन्द लदवाकर गेट पर आई और बोली–

'रिक्शे वाले।'

'आया बहिन जी।'

'प्रेमपुरी चलेगा।'

'वहीं तो रहता हु बहिन जी।'

'तब तो तू बाबू दीनदयाल जी को जानता होगा?'

'उन्हें कौन नहीं जानता बहिन जी। वह तो इस शहर के बहुत बड़े रईस हैं, अच्छा खासा बंगला, कार नौकर चाकर सभी कुछ तो है। हर समय कोई न कोई दरवाजे पर अपनी जरूरत पूरी करने के लिए खड़ा ही रहता है। आज कल उन पर भगवान् की दया है।

'मुझे वहीं चलना है।'

'मैं बड़े इत्मीनान से पहुंचा दूंगा, बहिन जी आप जो चाहे सो दे देना।'

मदन ने रिक्शा शहर की ओर बढ़ाया, सवारी मिल जाने से उसने भगवान् का शुक्रिया अदा किया। रिक्शा तेजी से दौड़ा जा रहा था, और उसी तरह मदन के मन में विचारों का तांता लगा हुआ था। वह सोच रहा था यदि बुढ़िया की लड़की को दवा दारू के लिये पैसों का प्रबन्ध हो जाता तो वह भी इतनी ही गोरी और अच्छी लड़की बन जाती। पता नहीं क्यों मदन को बुढ़िया की बीमार लड़की से इतना मोह हो गया था। वह आज भी यही सोच रहा था कि आज जो पैसे मिलेंगे उन्हें भी वह बुढ़िया को दे आएगा और जब तक वह लड़की पूर्ण स्वस्थ नहीं हो जाती वह इसी प्रकार अपनी मेहनत की कमाई में कुछ बचाकर उसकी सहायता करता रहेगा। अचानक रिक्शे का पहिया दचकोले खाकर रुक गया। मदन का ध्यान भंग हो गया। उसने रिक्शे के नीचे झुककर देखा तो पिछला एक्सिल ही टूट गया था। उसके मुँह से निकला 'हे भगवान्!'

'क्या हुआ? रिक्शे में बैठी लड़की ने कहा।'

'कुछ नहीं बहन जी, सब किस्मत का खेल है।'

'क्या कुछ नुकसान हो गया?

'हाँ एक्सिल टूट गया।

फिर क्या होगा?

बहिन कुछ भी हो आपको तो पहुंचाऊँगा ही, वह देखिये सामने वाला बंगला बाबू दीनदयाल जी का ही है। मैं आपका बिस्तर और अटैची कन्धे पर रखकर ले चलता हू। आपको यदि तकलीफ न हो तो ····· बंगला कुल ५० गज ही तो है।

कोई बात नहीं; कहकर लड़की रिक्शे के नीचे उतर कर अपना पर्स हाथ में लिये मदन के साथ चल दी। कोठी के द्वार पर लगी घन्टी बजी और अन्दर से किसी ने द्वार खोला सहसा पर्दा उठते ही एक अट्टहास के साथ आवाज हुई 'सुनीता तुम!'

'हां जीजाजी मैं आ गई।

'आखिर अपने आने की खबर दी होती।'

'पहले तो आने का विचार ही न था और फिर अचानक प्रोग्राम बन गया।

'खैर, कोई बात नहीं' लेकिन हाँ तुम्हें सफर में कोई परेशानी तो नहीं हुई!

नहीं'

'और मकान तलाश करने में'

"नहीं वह रिक्शे वाला आपको जानता था।

हां बाबूजी! मैं आपके मुहल्ले में यहां से कुछ दूरी पर ही रहता हू।'

'बेचारा भला आदमी मालूम होता है' पैसे भी तय नहीं किये सुनीता ने कहते हुये पर्स से ५ रुपये

( शेष पृष्ठ १२ पर )

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
पौष १३ शक १८९० माघ शु० १५
( दिनांक २ फरवरी सन १९६९ )

# आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य । २५९९३ तार । "आर्यमित्र

## साहित्य-समीक्षण

### उप नयन सर्वस्व

मूल्य १.५२
लेखक एवं प्रकाशक—
आचार्य कृष्ण, दीवान हाल दिल्ली

### स्वाध्याय सर्वस्व

मूल्य १.५०
लेखक—आचार्य कृष्ण।
प्रकाशक—प० नरेन्द्र जी
प्रधान—आर्यप्रतिनिधि सभा,
मध्य दक्षिण हैदराबाद

ब्रह्मचारी श्री आचार्य कृष्ण आर्य समाज के एक सुयोग्य विद्वान् हैं। यज्ञादि कर्मकाण्ड कराने में तो बहुत ही निपुण हैं। इनके द्वारा होने वाले यज्ञ और संस्कार मैंने स्वयं देखे हैं। इनकी सम्पादित विधि और व्याख्या से हृदयों में श्रद्धा और भावना पैदा होती है। यज्ञ और संस्कारों को शास्त्रीय विधि से बड़े सुन्दर ढङ्ग से कराते हैं।

इनकी लिखी पुस्तक है—उपनयन सर्वस्व मू० १।) इन्हीं से प्राप्य व श्री गोविन्दराम हासानन्द नईसड़क दिल्ली से प्राप्य। इसमें यज्ञोपवीत संस्कार की ऐसी युक्तियुक्त व्याख्या की है कि पढ़कर हृदय आस्था से भर जाता है। मूर्धानाभि सम्बन्ध स्पर्श से क्या तात्पर्य है ९६ अंगुल का ही यज्ञोपवीत क्यों हो, परिवीत और उपवीत के भेद आचार्य के कर्त्तव्य आदि अनेक शास्त्रीय रहस्य इस लघु पुस्तक में समझाये गये हैं। संस्कार चन्द्रिका की व्याख्या से इसमें विशेषता यह है कि शास्त्रीय वचनों का रहस्य हृदयहारी ढंग से समझाया गया है।

दूसरी पुस्तक स्वाध्य सर्वस्व भी पाठकों में स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाली है। स्वाध्याय वेदों का हो या आर्ष ग्रन्थों का हो और इससे क्या-क्या आत्मिक लाभ हैं आदि बहुत ही उपयोगी विषयों पर विचार किया गया है। स्वाध्याय शब्द का अर्थ बहुत अच्छा किया है—वेद।

दोनों पुस्तकें प्रतिभा सम्पन्न हैं और नूतन ज्ञान को बढ़ाने वाली हैं। सब ही आर्यों वैदिकों, पौराणिकों के लिये उपयोगी हैं।

—बिहारीलाल शास्त्री

### वेद वाणी

ले०—श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ
पृष्ठ-संख्या २००, मू० १.२५
प्र० .क-जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर

आर्यसमाज के वयोवृद्ध एवं ज्ञान-वृद्ध श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री द्वारा रचित यह ग्रन्थ वेद विषयक उपयोगी निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। विद्वान् लेखक ने वेद से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर प्राञ्जल शैली में आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के मत को पुष्ट किया है। वेदों का अपौरुषेयत्व, वेद की शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ, वेदार्थ विषयक सनातनी एवं आर्य सामाजिक दृष्टिकोण, पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक धारणा आदि विवेचनीय विषयों के अन्तर्गत वेद तथा उसके अध्ययन की समस्याओं का सूक्ष्म चिंतन एवं मनन दृष्टिगोचर होता है। सरम्या और पार्ण, इन्द्र और वृत्र आदि के वैदिक उपाख्यानों का वास्तविक मर्म न समझकर यूरोप के वेद विपश्चितों ने वेद पर इतिहास आरोपण किया है, तथा उनके अनुयायी के० एम० मुन्शी आदि भारतीय विद्वानों ने भी वेद को इतिहास ग्रन्थ सिद्ध करने की जो अनधिकार चेष्टा की है। उसका दृढ़तापूर्वक निराकरण किया गया है। इन निबन्धों की शैली अत्यन्त रोचक तथा प्रभविष्णु है। लेखक ने यत्र तत्र व्याख्यान शैली का सहारा लेकर इन गूढ़ निबन्धों को सामान्य पाठकों के लिये भी सुगम बना दिया है। निश्चय ही इस ग्रन्थ से आर्य समाज के वेद विषयक दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलेगी।

—भवानीलाल भारतीय
एम०ए० पी-एच-डी०

## विश्व-वैचित्र्य

### १४ वर्षीय बालक की ४ इंच लम्बी पूंछ

जबलपुर, यहाँ पर प्राप्त सूचनाओं के अनुसार एक १४ वर्षीय बालक के पृष्ठ भाग में एक पूंछ-नुमा वस्तु का विकास हो रहा है, जिसने डाक्टरी क्षेत्र में काफी दिलचस्पी पैदा कर दी है। बताया जाता है कि इस बालक के जन्म से ही यह अंग वर्तमान था।

यह लड़का बस्तर के दक्षिण में गोपालपतनम तहसील का है, तथा उसका नाम हनमैया है। जन्म के समय उसकी पूंछ एक इञ्च लम्बी थी जो धीरे-धीरे बढ़ती हुई अब ४-५ इञ्च लम्बी हो गई है।

बस्तर के सिविल सर्जन डा० ए० सी० घोड़ ने महारानी अस्पताल में इस बालक की परीक्षा की है, और बताया कि बालक का सामान्य रूप से विकास हो रहा है। डाक्टर के अनुसार यह पूंछनुमा अङ्ग रीढ़ की हड्डी के अन्त में, एक इञ्च ऊपर है।

### संसार का अद्वितीय मुकदमा

बान—जर्मनी में एक ऐसे मुकदमे का फैसला हो गया है, जिसकी संसार में अब तक दूसरी कोई मिसाल नहीं।

श्लेस्विग-होलस्टाइन के एक न्यायालय में श्रीमती उर्सुला नेक नामक एक महिला ने यह दावा किया कि उसको हास रायमर नामक औषधि विक्रेता ने गर्भनिरोध गोली के स्थान पर एक अजीर्ण नाशक गोली दे दी जिससे उसको गर्भाधान हो गया।

श्रीमती नेक पहले ही चार बच्चों की माँ थीं। और पांचवें बच्चे के भरण पोषण का व्यय औषधि विक्रेता से मिलना चाहिए।

न्यायालय ने फैसला किया है कि औषधि विक्रेता नवजात शिशु के १८ वर्ष का होने तक उसके भरण-पोषण का आधा भार वहन करेगा।

कहते हैं कि औषधि विक्रेता से यह भूल इसलिए हो गई कि वह डाक्टर के नुस्खे को गलत समझा। वैसे दोनों गोलियों के नाम एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।

### अपराधियों का पता देने वाला स्वचालित यन्त्र

स्टाकहोम—यहाँ अब तक ऐसा गणक तैयार हुआ है जो अपराधियों को ढूंढ़ निकालने और अपराध की टोह रखने का काम करता है।

यह गणक हस्ताक्षर मिलाने, पुराने रिकार्ड ढूंढने और अंगूठे के निशान मिलाने का कार्य सेकिण्डों में कर देता है और इस पर खूबी यह है कि १,२८० अक्षर, १६ लाइन और ८० स्थानों का यह गणक एक साथ निराकरण कर देता है।

### दोपहर को स्वतः चलने वाली तोप

हैम्बर्ग—पश्चिम जर्मनी के इस नगर के संग्रहालय में २५० वर्ष पुरानी एक तोप है जो कभी दोपहर को सूर्य की किरणों से स्वत. चलती थी। चौदहवें लुई के जमाने में यह पेरिस में दोपहर को सूर्य की किरणों से स्वतः चलती थी। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि हैम्बर्ग के टाउन हाल में या तो सूर्य काफी प्रखर नहीं होता या उसके गोले खत्म हो गये हैं। (वि वा.)



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये पत्रव्यवस्थापक आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल वर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ रविवार फाल्गुन ४ शक १८९०, फाल्गुन शु० ७ वि० स० २०२५, दि० २३ फरवरी १९६९

*परमेश्वर की अमृत वाणी—* वयम् जयेम–हम विजयी हों

# वाज सात्यार्थ विशाल इच्छाओं और दिव्य शक्तियों को प्रवाहित कर

**उत नो वाज सातये पवस्व बृहतीरिषः। द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥**

[ ऋ० ९-१३-४, सा० ११९० ]

[इन्दो !] आत्मन् !

[वाज-सातये] अनन्तवेग को जायमान करने के निमित्त, [न.] हमारे लिए।

[बृहती. इष] विशाल इच्छाओं [उत] और [द्युमत सुवीर्यम्] दिव्यतम् शक्तियो को [पवस्व] प्रवाहित कर।

जीवन एक सग्राम है। मनुष्य जीवन में विजयी होना चाहता है। वह सुख, शान्ति और आनन्द चाहता है, और फल स्वरूप दु ख, अशान्ति और चिन्ताओं से मुक्ति के लिये उसे सघर्ष रत होना पडता है। मनुष्य ऐश्वर्यों की कामना करता है, अविद्या के तामसी आवरण को चीर कर ज्ञान विज्ञान के आश्रित प्राकृतिक रहस्यों को जानना चाहता है, उसे वहा पर सघर्षों मे जूझना पड़ता है।

जो वीर होते हैं वे सघर्षों से घबराते नहीं हैं, वे शक्ति का संचय करते हैं और धीरता से कार्य करते हुए सर्वंत्र विजयी होते हैं, उनके सामने लौकिक स्वार्थ पूर्ति का लक्ष्य न होकर परमार्थ का विशिष्ट उद्देश्य होता है। विश्व की सगठित आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिये दिव्य शक्तियों का वे आह्वान करते हैं, क्योंकि प्रदीप्त पराक्रम ही आसुरी वृत्तियों को [illegible] अनन्त वेग को जायमान करता है।

जगमगाते हुए सुवीर्य की प्राप्ति विशाल इच्छाओं के कारण होती है। सकीर्णताओं के वृत्त मे घिरे हुए व्यक्ति परस्पर राग द्वेष के कारण न कभी अनन्त वेग को जायमान कर सके हैं, न करेंगे। महती आकाक्षाएं ही मनुष्य के भीतर उत्साह को प्रदीप्त करती हैं और वह दिव्यतम् शक्तियो को प्राप्त करता हुआ, सकल बाधाओ और दुरिताओ को परास्त करता हुआ विजयी होता है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' आर्यों की एक ऐसी ही विशाल अकांक्षा है, जो जब तक आत्मना जागृत नहीं होती, तब तक सब उत्साह की वेगवती लहर नहीं वरन् दिव्यतम् शक्ति के आधार पर ही विजयश्री प्राप्त की जा सकती हैं। प्रभु अपने अमृत पुत्र एवम् पुत्रियो को इसीलिए आदेश दे रहा है कि हे अमर आत्माओं ! विशाल आकांक्षाओं और दिव्य शक्तियों की वेगवती धाराओं का क्षरण करो ताकि जीवन सग्राम में विजय प्राप्त करते हुए जगत् मे भौतिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्यों का सुसेवन कर सको। —'वसन्त'


| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | ८ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे


इस अंक में पढ़िए !



सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल. ए
सभा-मन्त्री

# अध्यात्म-सुधा

**वेद मन्त्र—**

आ तिष्ठ वृत्रहन् रथ युक्ता ते ब्रह्मणा हरि । अर्वाचीन सुते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥

[सामवेद मन्त्र १०२९]

शब्दार्थ—(वृत्रहन्) शत्रु विनाशक (ते) तेरे (ब्रह्मणा) ब्रह्म से (हरी) अश्व (युक्ता) युक्त हो कर (रथ आ तिष्ठ) रथ मे बैठें। (ग्रावा) सोम मेध (ते) तेरे (मन.) मन को (सु) सुन्दर (वग्नुना) वाणी से (अर्वाचीन) नवीन (कृणोतु) करे।

व्याख्या—उपासना काण्ड का यह मन्त्र क्या है, उस परम आनद मयी माँ की शिशु आत्मा को एक सुमधुर लोरी है। निद्रा लेते समय हम अन्तर्मुखी होते हैं। निद्रा से हमे विश्राम मिलता है, और हम जब जागते हैं तो एक नई स्फूर्ति और चेतना को अपने भीतर पाते हैं। परमेश्वर के आनन्दमय संसार के भोगो मे जब अज्ञानी मानव अतिशय आसक्त और लिप्त हो जाता है, जब मन मे पाप सङ्कल्पो को उदित कर दुष्कर्मो का ताना-बाना बुनता चला जाता है तो मकड़ी की भाँति अपने बुने जाल मे वह स्वयम् फँस जाता है। बधन मे दुःख है और मुक्ति मे आनन्द है, पर वह बन्धन को ही आनन्द प्रद समझकर उसमे निरन्तर लीन होता चला जाता है। जब दलदल मे फँस जाता है, और जोर लगाकर बाहर निकलने का उपक्रम करता है, तो उसे प्रतीत होता है कि वह और धँसता चला जाता है। अशक्त और असहाय होकर जब वह 'माँ' 'माँ' को रक्षार्थ पुकारता है, तो उसकी

## सो जा, राज दुलारे

सोजा, सोजा, सोजा राजदुलारे।
लोरी देती है जगदम्बा, सो जा मेरे लाल प्यारे।
सो जा

सोजा मीठे सपने आए,
तेरी सारी थकन मिटाए।
सुन्दर और सरस जीवन के
तुझको नाना दृश्य दिखाए॥
देख तू अपने अन्तर मे, सूरज चन्दा सितारे।
सो जा

मस्त रहा तू खेल में ऐसा,
मैंने बुलाया, पास न आया।
चोट लगी जब खेल मे तुझको,
मेरी शरण मे दौडा आया॥
आनन्दमय गोदी है मेरी, मन का चैन तू पा रे।
सो जा

जब तक सोए लाल तू मेरे,
तुझको मै ब्रह्म लोरी सुनाऊँ।
देकर सुन्दरसद् शिक्षाए,
तुझको ऊँचा मैं उठाऊँ॥
पाप आऊँ 'वसन्त' शिशु के, जब-जब मा को पुकारे।
सो जा

**सामवेद की लोरियाँ:—**

# लोरी देती है जगदम्बा, सोजा मेरे लाल प्यारे।

[भौतिक जगत् मे मां लोरी देती है, और खेल-कूद मे थका हारा शिशु, अपनी माँ की प्यार भरी थपकियों से पुलकित होकर, सुमधुर स्वरों को सुनता हुआ, सुख भरी निद्रा में सो जाता है। लोरी गाने वाली माँ, और प्यार से थपथपाने वाली माँ, वात्सल्य विभोर होती है, लोरी सुनने वाला शिशु जब प्यार भरा माता का स्पर्श पाता है, तो अपने को माता की सुख भरी गोद मे सर्वथा सुरक्षित समझ कर, नेत्र बन्द कर उस मधुर स्नेह का रसपान करता है। आनन्द का यह आदान प्रदान आत्म अनुभूति से सम्बन्धित है। यह रस पेय है, जिसके पान से वह आत्म तृप्ति होती है, जो शब्दो की व्याख्या मे आबद्ध नहीं की जा सकती।

आध्यात्मिक जगत् मे जब आत्मा जगत् के विषय विकारो और वासनाओ के खेल से थका हारा या चोट खाया, शिशुवत जगदम्बा की आनन्दमयी गोदी मे जाता है, तो अपने को पावन माँ की शरण मे भय, चिन्ता, अशान्ति और दुःख से सर्वथा सुरक्षित पाता है। जब करुणामयी आनन्दप्रद माता के विशुद्ध स्नेह का वह आत्मना स्पर्श पाता है, जब आनन्द की लोरिया वह आत्मना सुनता है तो सर्वत अन्तर्मुखी होकर जिस आनन्द सुधा का वह पान करता है, उससे उसकी आत्म-तृष्णा शान्त हो जाती है, और वह अनुभव करता है कि जो मधुरता उस सोम पान मे है, जो आनन्द उस दिव्य सङ्गीत मे है, वह शाब्दिक व्याख्या से नितान्त परे है। प्रभुप्रदत्त वाणी से वह कहता अवश्य है किन्तु अनन्त सोम सिन्धु की एक बूंद मात्र ही वह दे पाता है। —लेखक]

सच्ची आत्मना पुकार को सुनकर माँ उसके पास दौडी चली आती है। उसे छाती से लगाती है, गोदी मे उठाती है, प्यार करती है, लिटाती है, थपकियाँ देती है और लोरियाँ देकर मधुर निद्रा में सुला देती है। शिशु खेल मे मस्त रहता है, माता पुकारती रहती है, शिशु अनसुनी करता रहता है। जब खेल मे साथिओ से झगडा हो जाता है, मार-पिटाई होती है, शिशु को चोट लगती है, वह 'माँ' 'माँ' की पुकार लगाता है। वह माँ की ओर भागता है, माँ उसकी ओर भागती है। जब तक माँ की शरण नहीं मिलती शिशु चैन नहीं पाता, क्योंकि वह सुरक्षा माँ की ही गोदी मे पाता है।

लोरी दी जाती है, शिशु को अन्तर्मुखी करने के लिये। लोरी मे एक मनोविज्ञान है। रात मे सोते समय जैसे विचार होते हैं, वैसे संस्कार शयनावस्था में चित्त पर पड़ते रहते हैं। सोते समय प्रभु का नाम लेना, शिव सकल्प सूक्त का पाठ करना, महान् पुरुषो के चरित्र पढना, अन्तर्मुखी मानव का संस्कार रूप मे निर्माण करते हैं। लोरियो से अनेक मानसिक विकारो व रोगो को दूर किया जा सकता है, जिसकी विस्तृत चर्चा पुन. कभी की जायेगी। हमारे वेदज्ञ ऋषि और ऋषिकायें इस रहस्य को जानते थे, इसलिये मानव का आध्यात्मिक निर्माण गर्भाधान से ही प्रारम्भ किया जाता था और शिशु उत्पत्ति के उपरान्त भी हमारी विदुषी माताए लोरियो के माध्यम से उत्तम सस्कार अपनी सन्ततियों के चित्त पर उन्हे महान् बनाने के लिये डालती रहती थीं। मन्दालसा लोरी देते हुए अपने शिशु को कितने सुन्दर शब्दों से सम्बोधित

( शेष पृष्ठ ७ पर )

★ श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' मुख्य उपमन्त्री, आ प्र सभा उ.प्र

लखनऊ-रविवार २३ फरवरी ६९
दयानन्दाब्द १४४
सृष्टि सवत् १९७२९४९०६९

## यदि वासि तिरोजनम् . . .

वर्त्तमान जनतन्त्र पद्धति मे जन-नायको का जनता द्वारा निर्वाचन एक बडा तमाशा है, एक मनोरजक खेल है जिसमे जन-नायक अपनी कला-कौशल का प्रदर्शन करते हैं और जनता पहले तो दर्शक रूप मे उससे अपना मनोरजन करती है, तत्पश्चात् उस खेल के किसी खिलाडी से अपने मानसिक बन्धन मे बधकर, स्वय एक खेल प्रस्तुत कर देती है। हमने बहुधा खेलो मे देखा है कि जनता वहाँ मनोरजन के उद्देश्य से जाती है किन्तु मानवी स्वभाव के कारण खेल खेलने वाले किसी पात्र से जब दर्शकगण अपनी विभिन्न रुचियों के कारण, किसी विशेष पात्र से अपना मानसिक गठबन्धन कर लेते हैं, तो उसके कारण विभिन्न दलो मे विभक्त होकर जो युद्ध दृश्य प्रस्तुत कर दिया जाता है, वह अपने आप मे एक खेल बन जाता है क्योंकि तमाशाई स्वय तमाशा बन जाते हैं।

अखाडे मे दो पहलवान् कुश्ती के लिये उतरे। उन्होंने हँसकर दर्शको का अभिवादन किया। परस्पर हाथ मिलाये और लगे कुश्ती का कला प्रदर्शन करने। दर्शक जब आए थे तब उन्हे किसी विशेष पहलवान से कोई रुचि नहीं थी। उनकी धारणा तो यह थी कि खेल से अपना मनोरजन करेंगे और जो विजयी होगा, उसका तालिया बजाकर स्वागत करेंगे, किन्तु खेल प्रारम्भ होते ही दर्शक दो भागों में विभक्त हो गए। एक वर्ग एक पहलवान का समर्थन कर रहा है तो दूसरा वर्ग दूसरे पहलवान का। पहले उत्साहवर्द्धक नारे लगे, फिर गाली-गलौच वाग्युद्ध में परिवर्तित हुआ और फिर हाथापाई कर रहे हैं और पहलवान तमाशा देख रहे हैं।

वर्त्तमान प्रचारात्मक युग मे, जहाँ नकली को असली करके बेचा जाता है, वहां जननायको का निर्वाचन भी एक ऐसा ही खेल है जिसमे विज्ञापन का बोलबाला रहता है। सहस्रो रुपये झूठे प्रचार मे व्यय किये जाते हैं और जिस प्रकार नकली सोने की अगूठी को बढिया मखमली डिब्बी मे रख कर और असली का प्रचार कर बेच दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार अन्धाधुन्ध प्रचार मे जन साधारण को बहुधा खरे-खोटे की पहिचान न होने के कारण नकली माल ही हाथ पडता है। जब प्रचार कला मे दक्षता का प्रदर्शन करने के निमित्त हमारे जननायक एक दूसरे पर कीचड उछालते हैं तो जनता को बड़ा रस आता है। ज्यो-ज्यो निर्वाचन की तिथि निकट आती है, तूफान बढता जाता है, और जैसा कि प्रत्येक तूफान के पश्चात् देखने मे आता है, सर्वत्र शान्ति छा जाती है। चुनाव ज्वर शान्त होते ही अपनी दुर्बलता का आभास होता है। तूफान शान्त होने पर क्षति का अनुमान लगाया जाता है। ठगे जाने पर ठगी से बचने के लिए दृढ संकल्प किये जाते है किन्तु अबोध मानव प्रचार की चकाचौंध मे बारम्बार ठगा जाता है। प्रत्येक बार ज्वर ग्रस्त होनेपर वह दुर्बलता मे विचार करता है कि जिन कारणो से वह ज्वरग्रस्त हुआ है, उनको दूर करेगा, किन्तु पुन वह उन अनियमताओ को अपनाता है जिसके फलस्वरूप वह पुन रोगी हो जाता है।

देश मे अभी मध्यावधि चुनाव हुए हैं। जो विजयी हुये हैं उनकी जय-जयकार हो रही है, जो परास्त हुए हैं, वे निराश होकर जनसाधारण को मूर्ख कहकर कोस रहे है। स्वस्थ परम्परा तो यह होनी चाहिये कि जननायक अपना कोई प्रचार न करें। वे जिस दल का प्रतिनिधित्व करते हैं तो जनता यदि उस दल के विधान को पसन्द करती है तो अपना मत उन्हे प्रदान करदे। यदि निर्दलीय व्यक्ति हैं तो जिसका आचरण सर्वोत्तम हो, जो जनसेवी हो, उसे अपना मत देकर विजयी बनाया जाये, किन्तु जहा इस विज्ञापन के युग मे बाह्य आडम्बरो का बोलबाला हो, जहाँ जनसाधारण राज्य शासन विषय से अनभिज्ञ हो जहाँ खरे-खोटे की कोई पहचान न हो, वहा जननायक निर्वाचन एक ऐसा ही खेल बनकर रह जाता है जिसकी चर्चा हमने ऊपर लिखी पक्तियो मे की है।

देश सेवा का ढिंढोरा पीटने वाले जननायको मे से जो परास्त हो जाते है और जिनमे से कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते है जिनमे सेवा का सच्चा भाव होता है किन्तु युग प्रवाह मे पिछडने के कारण उन्हे पराजित होना पड़ता है, हम उन्हे वेद का पुनीत मार्ग दिखाते हैं। सुयोग्य व्यक्ति को कदापि निराश न होना चाहिये। हम ऐसे अनेक व्यक्तियो को जानते है जो देश प्रेम की तडप रखते है और जिन्होने जननायक बनकर देशसेवा करने के लिए अपनी नौकरियाँ व व्यवसाय छोडे किन्तु विजयी होने के लिए प्रचार के व वोट प्राप्त करने के लिये अपने प्रतियोगियो के समान हथकण्डे न अपनाने के कारण वे परास्त हो गये। जमीन जायदाद सब बेचकर इस तमाशे मे स्वाहा कर दी। निराशा मे डूबे हुए व्यक्ति जब ठडी सास भरकर कहते है कि देश सेवा के कितने अरमान थे, उनके दिल मे किन्तु इस मूर्ख जनता को क्या कहे कि हीरे की कद्र नही करती, नकली चमचमाते सोने के पीछे ठगी जाती है।

जनो से तिरोहित, लोगो की दृष्टि से ओझल ऐसे हीरो के लिये ईश्वरीय ज्ञान वेद बहुत सुन्दर मार्ग प्रदर्शित करता है। वेद कहता है, 'यदिवासि तिरो जनम्, यदिवा नद्यस्तिर।' चाहे तू जनो से तिरोहित है, यदि युग धारा के प्रवाह के कारण ओझल है, तो निराश मत हो, तेरे इस रोग की एक ओषधि है, जो तुझे भला चङ्गा कर देगी, जो तुझे मानसिक पीडाओ से मुक्ति प्रदान करवा देगी, जो तुझे शान्त और स्थिर कर देगी, जो तुझे तेरे जन सेवा के लक्ष्य पर पुनः ले जायगी।

क्या है, वह ओषधि ? जिसकी इस समय हमारे अनेक परास्त जन-सेवी बन्धुओ को आवश्यकता है, तो अथर्ववेद के ७ वे काण्ड के ३८ वे सूक्त का पाँचवा मन्त्र ऐसे व्यक्तियो को सम्बोधित करते हुए कहता हैं—

"इय ह मह्य त्वामोषधिर्बद्ध्वेव न्यानयत् ॥" अर्थात् ( इयम् ह ओषधि ) यह ही ओषधि है जो (त्वाम्) तुझे (मह्यम्) मेरे प्रति (बद्ध्वा-इव) बान्धकर जैसे, बान्धते हुये के नों (नि-आनयत्) निकट ले आये। कौन-सी वह ओषधि है, जो ऐसे निराश व्यक्ति को दी जाये और वह किसके निकट उसे खींच कर ले जाये, तो मन्त्र का मनन बोध कराता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमात्मा अपनी अमृतवाणी मे कहता है, 'मेरे प्रति खींच कर ले आये, मेरे निकट खींच कर ले आये, बाँध कर ले आये— कौन-सी ओषधि ? प्रेम रूपी ओषधि ?

प्रभु प्रेम की ही वह अद्वितीय ओषधि है, जो निराश व्यक्ति का उपचार कर उसे पुन स्वस्थ करती है। ओषधि रोगी को दी जाती है, ओषधि न्यूनताओ को दूर करती है, रोग का निवारण करती है। परमात्मा न केवल सबसे बड़ा चिकित्सक है, वरन् उसका प्रेम सर्व महान् ओषधि है। वेद ने कहा है—

"न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्या पर्वतीयाउत ॥" (अ० १९-४४-६)

अर्थात् ( बाह्या उत पर्वतीया ) बाह्य और भीतरी ओषधिया (त्वा न तरन्ति) तुझे नहीं तरती है, अथवा तुझ से बढ़कर नहीं है। क्यो नहीं हैं, इसका भी उत्तर वेद ने स्पष्ट शब्दो मे इस प्रकार दिया है—

'या ओषधय सोम राज्ञीर्बह्वी. शत विचक्षणा। तासा त्वमस्युत्त मार, कामाय शङ्हृदे ॥"

(अ० ६।९६।१)

अर्थात् जो भी असख्य सोमराज्ञी ओषधिया है, उनमे (तासां त्वम् उत्तमा असि) उनसे प्रभु तू सर्व श्रेष्ठ है, क्योंकि तू (कायम अरम्) कामनाओ को समाप्त

करता है, तथा (हृदे शम्) हृदय मे शान्ति देता है।

किसी भी भौतिक ओषधि में ये गुण नहीं है कि मानवी कामनाओ को कहीं समाप्त कर हृदय मे शान्ति प्रदान कर दे। यह तो परमात्मा की प्रेम ओषधि है, जो अतृप्ति को तृप्ति मे परिवर्तित कर देती है, जो निराशा को आशा मे और निरुत्साह को उत्साह मे बदल देती है। केवल राज्य सत्ता के माध्यम मे ही जन साधारण की सेवा नहीं होती। जन सेवा तो प्रेम से होती है, जिसके अनेक मार्ग हैं। जन कल्याण विरक्त करते हैं, आसक्त नहीं। जो राज्यासक्ति मे लिप्त होकर जनता से वोटों की भीख माँगते है वे प्रभु प्रेम मे डूब कर, याचना को त्याग कर, विरक्त बन कर विशुद्ध प्रेम ओषधि का सेवन करे, तो जनता स्वयम् उनके चरणों मे लोटने लगेगी। जनता ने सदैव त्यागियो, तपस्वियो एवम् विरक्तो का हृदय से अनुगमन किया है, भले ही कभी-कभी खेल तमाशो मे नेताओ और अभिनेताओं की भी वाह-वाह की हो।

★

## लखनऊ में ऋषिबोध-पर्व का भव्य सार्वजनिक आयोजन एवम् प्रीतिभोज

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान मे शनिवार १५-२-६९ को ऋषिबोध पर्व वड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रत ८-३० से ११-३० तक नगर आर्य समाज मे यज्ञ, भजन प्रवचन के पश्चात् नगर के समस्त आर्य बन्धुओ का सपरिवार प्रीति भोज हुआ। सायंकाल ५ बजे से ९ बजे तक अमीनुद्दौल्ला पार्क, अमीनाबाद लखनऊ मे एक सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे यज्ञ, भजन और प्रवचन हुए। साय कालीन सार्वजनिक कार्य्य क्रम के प्रमुख वक्ता प० रुद्रदत्त जी शास्त्री तथा श्री हरिवशलाल महता थे।

## जिलोप सभा लखनऊ की सूचनाएँ

### शुभ विवाह और महायज्ञ

लखनऊ जिले की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जिलोपसभा के प्रधान माननीय श्री कृष्ण बल्देव जी की सुपुत्री सुमन का शुभ विवाह मङ्गलवार २५-२-६९ को श्री जनकराज जी मेहरा के सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी के साथ होने जा रहा है। इस माङ्गलिक अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है, जिसमे महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज तथा पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती पधार रहे हे। महायज्ञ का कार्य क्रम इस प्रकार है—

प्रात —७-०० से ८-३०
साय—५-३० से ८-००

यजुर्वेद महायज्ञ महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा तथा वेदोपदेश पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के होगे। महायज्ञ का शुभारम्भ बुधवार १९-२-६९ की प्रात. से होगा, और पूर्णाहुति २३ २-६९ को प्रात काल होगी।

### ग्रुप फोटो

रविवार २३-२-६९ को प्रातः काल ११ बजे पूर्णाहुति के पश्चात् लखनऊ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियो एवम् अन्तरङ्ग सदस्यों का ग्रुप फोटो भी होगा।

### ६९ मासिक अधिवेशन

रविवार २३-२-६९ को सायकाल ५ से ८ तक वैजिटेबल ग्राउड, रेलवे कालोनी आलमबाग, लखनऊ मे उप सभा का ६९ वाँ अधिवेशन बडे समारोह पूर्वक मनाया जायगा, जिसमे पूज्य आनन्द स्वामी जी सरस्वती का वेदोपदेश होगा।

★ विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा मन्त्री

# हैदराबाद आर्य महासम्मेलन का शान्ति प्रस्ताव खतरे में

—श्री धर्मेन्द्र सिंह जी उपमन्त्री, आ० प्र० सभा, उ० प्र०

हैदराबाद आर्य महा सम्मेलन कई दृष्टियो से सफल सम्मेलन कहा जा सकता है। पर सबसे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बात वहा जो मेरी दृष्टि मे हुई थी, वह है इस बात का सभी आर्यों को यह अनुभव करना कि—"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली व आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब के वर्षों से चल रहे विवाद मे आर्यजगत् की अत्यधिक हानि हुई है।" अत. इसे तुरन्त सबसे पहले समाप्त किया जाना चाहिये। सबसे पहले प्रार्थना मन्त्रो के पश्चात् इस सम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती ने मार्मिक अपील करते हुए (जबकि भावुकता मे उनका कण्ठ भी अवरुद्ध हो गया था) कहा कि इन प्रार्थना मन्त्रो व सम्मेलनों की क्या आवश्यकता है जबकि आर्यजगत् मे इस प्रकार के विवाद चल रहे हो और हम आर्य लोग अपने हित को न समझकर अपने हाथो अपना विनाश कर रहे हों! उनकी इस मार्मिक अपील पर श्री आचार्य विश्वश्रवा जी ने एक प्रस्ताव रखा कि यह सम्मेलन आर्यजगत् को मानी हुई विभूति, त्यागमूर्ति व आज के अध्यक्ष श्री महात्मा आनद स्वामी जी सरस्वती को सर्वसम्मति से इस विवाद का निबटारा करने के लिये कि जिससे आर्यजगत् की बड़ी अपकीर्ति हो रही है, अपना सर्वाधिकारी नियुक्त करते हैं व उन्हे अधिकार देते हैं कि वे जैसा चाहें फैसला करे। प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए मैंने भी अपने विचार रखे। श्री मरवाहा जी का सुझाव था कि इसके साथ अन्य भी ऐसे विवाद सुलझाने का इन्हे ही अधिकार दिया जाये, यह बात भी उचित होने के कारण मान ली गई थी, ऐसा मुझे याद है, पर अत्यन्त खेद व दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि उक्त प्रस्ताव जिस उत्साह व आनन्द के वातावरण मे पास सर्वसम्मति से किया गया था उसे कुछ स्वार्थी लोग जो आर्य जगत् का भला नहीं चाहते, उस वातावरण को निराशा मे परिणत कर रहे हैं। अब जब स्वामी जी ने इस विवाद को निबटाने का प्रयत्न प्रारभ किया तो पता चला है कि उन्हे यह कह दिया गया कि वे सभी विवाद आर्य जगत् के लें, पजाब सभा का तो कोई विवाद ही नहीं। यह बात जानकर और भी कष्ट तब हुआ जब यह बात सार्वदेशिक सभा के कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के श्रीमुख से सुनी गई! मै इस समय यह विवाद नहीं उठाना चाहता कि कौन इस प्रस्ताव के विरोध में कार्य कर रहे हैं, पर मैं इतना अवश्य कहना चाहता हू कि इस प्रस्ताव के पीछे करोड़ो आर्य जनों की भावनाए निहित हैं, जो भी कार्यकर्त्ता या पदाधिकारी इन भावनाओ के विपरीत कार्य करेगा उसे आर्यजगत् छमा न करेगा, व उसके साथ 'यथायोग्य' बर्ताव होगा, ऐसी लोगो की भावनाए हैं, अतः मैं सच्चे हृदय से सभी संबंधित पक्षों से अपील करता हूं कि उक्त प्रस्ताव में तोड़-मरोड़ न करके मूल भावना को समझकर इसे सही रूप में क्रियान्वित किया जाये, और इस प्रकार आर्य-जगत् को विनाश की कगार से बचाकर सभी आर्यजन यश के भागी बनें।

★

# महर्षि का अनुपम व्यक्तित्व

[ हमे खेद है कि विलम्ब से प्राप्त होने के कारण हम इस लेख का उपयोग जागृति विशेषाक मे नही कर सके । ऐसी अन्य अनेक रचनाओं का उपयोग हम आर्यमित्र के साधारण अको मे महान् दयानन्द शीर्षक के अन्तर्गत करेगे । —सम्पादक ]

# महान् दयानन्द

श्री डा० मुन्शीराम शर्मा
कानपुर

इस युग मे महापुरुष तो कई हुए हैं, पर जो व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द का है, वह अनुपम है, अद्वितीय है। महात्मा गांधी परम्परा-प्रेमी और साथ ही प्रगतिशील भी थे,पर वेदो के विद्वान् नहीं थे। लोकमान्य तिलक का तेजस्वी व्यक्तित्व गीता ज्ञान तो रखता था, पर उनका वेद

श्री डा० मुशीराम जी शर्मा

ज्ञान पाश्चात्य पद्धति पर अवलबित था और अपूर्ण था। महात्मा अरविन्द साधना मे निरत रहे, पर सामाजिकता से विच्छिन्न हो गये। राजा राममोहन राय की भारत भक्ति प्रशसनीय है,पर आग्लप्रभुओ के सामने वे प्रतियोद्धा की भाँति कृतसकल्प होकर खड़े नहीं हो सके अकेले महर्षि दयानन्द ही ऐसे हैं जो परम्परा के प्रेमी हैं, प्रगतिशील हैं, वेदों के अनुपम विद्वान् हैं, राष्ट्रभक्ति के साथ विश्व कल्याण-कामना से ओतप्रोत हैं, एकान्त साधना के साथ सामाजिक उन्नयन के नेता हैं और स्वतन्त्रता के मगल सूत्र के प्रणेता हैं। ज्ञान, कर्म एव भक्ति की त्रिवेणी उनके व्यक्तित्व को पावन कर रही है। वेद को जो प्रतिष्ठा उनके द्वारा प्राप्त हुई, वह विगत सहस्रों वर्षों के अन्तराल में दिखाई नहीं पड़ती थी। उनकी वाणी में महर्षि मनु बोल रहे हैं। अग्नि-वायु आदित्य और अगिरा का सम्मिलित व्यक्तित्व मानो उनके व्यक्तित्व मे चमक उठा है। इतना प्राचीन, पर साथ ही इतना नवीन कोई व्यक्तित्व इस युग मे दिखाई नहीं दिया।

प्राचीनतम वेद और नवीनतम सामाजिक उद्धार के सूत्र उनकी वाणी मे युगपत् एकत्र है। फिर भी कितना उच्चकोटि का विकसित व्यक्तित्व कि अहकार का चिह्न तक वचनो मे नहीं आ पाया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त जो सम्प्रदाय अविच्छिन्न रूप से प्रचलित रहा,वही उन्हे अभिमत है। मानवमात्र का कल्याण हो, इसी भावना से प्रेरित होकर वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका मे लिखते हैं—आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतो मे हैं, वे पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बाते सबके अनुकूल सब मे सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उन का त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्तें बर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढकर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यो को प्रिय है, सब मनुष्यो को दुःख सागर मे डुबा दिया है।" विश्वहित को लक्ष्य करके स्वामी जी लिखते हैं–'जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे वर्तता हू, वैसा विदेशियों के साथ भी। तथैव सब सज्जनो को भी वर्तना योग्य है।" पशुता और मानवता मे अन्तर करते हुए वे लिखते हैं–जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलो को दुख देते और मार भी डालते हैं, यदि मनुष्य शरीर पा के वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं जो बलवान् होकर निर्बलो की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर हानि करता रहता है, वह मानो पशुओ का भी बडा भाई है।"

कितना पवित्र उद्देश्य है ! कितना महान् लक्ष्य है ! मानवता का कैसा महनीय मूल्य महर्षि के मस्तिष्क मे है ! उनका जीवन, उनका समूचा व्यक्तित्व इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये समर्पित था। उन की विद्वत्ता विवाद के लिए नहीं, सवाद द्वारा मनुष्यो को ज्ञान-दान देने के लिये थी। जो विद्वान विवादी है, भेद-बुद्धि उत्पन्न करके एक मनुष्य को दूसरे का शत्रु बना देते हैं, वे उनकी दृष्टि मे मनुष्य स्वभाव से पतित हैं। 'जो मनुष्य जाति मे विरुद्ध बुद्धि कराके एक को दूसरें का शत्रु बनाते हैं, वहकाकर लडा मारते हैं, वे विद्वानो के स्वभाव से बाहर आचरण करते हैं।" विद्वान् होकर विद्या का समुचित प्रयोग है–ज्ञान द्वारा मानव को सुखी बनाने मे। सघर्ष एव युद्ध की स्थिति मे मानव जाति को डाल देना पिशाचो का कार्य है। मानव को मानवता के मान के लिये, उत्थान एव विकास के लिये पुरुषार्थशील होना चाहिये।

आर्यसमाज के दस नियमो मे वेद को निखिल ज्ञान-विज्ञान का स्रोत कहकर मानव को सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये। यह सिद्धान्त वाक्य जोडना साधना को सामाजिक रूप प्रदान करना है। मानव सामाजिक प्राणी है। उसे अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये। समाज के अग रूप मे उसे समाज को अपने साथ उन्नत करके उठना चाहिये। आगे बढ़ो साथ मिलकर चलो, मन मे समान ज्ञान हो, सब के चित्त एक जैसे हो, सबके शुभ हो, आचरण उदात्त स्वस्थ एव सुखी हो—यह के जीवन का उद्देश्य व्यक्तित्व का सार।

इस गये बीते समय ने ब्रह्मचर्य व्रत का कठोर द्वारा, दीक्षा, तपस्या, श्रद्धा सत्य व्यवहार द्वारा सनयु दृश्य उपस्थित कर दिया। पुरा को पुनरुज्जीवित करना यह पुनरुत्थान रूढ़ियो का सत्परम्पराओ का था। रूढ़ि तो महर्षि ने डटकर खडन कि

रूढिया मानव विका बाधक है, अत निर्मम होक पर प्रहार करना चाहिये। शरीर मे मवाद से भरे फो जिन्हे चीरा न गया, तो बाहर नहीं निकलेगा और मे सडाद पैदा करके उसे स कर देगा। हमारी अनेक प्र रीति-रिवाज, जाति-बन्धन ऐस रूढियो पर आश्रित थे। समाज पवित्र करने और उन्नति-पथ अग्रसर करने के लिये इन रूढ़ को तोडना आवश्यक था। के प्रताप और उनके अनुयायि सतत प्रयत्न से बन्धन टूटे नहीं जर्जर तो कर ही दिये गये। इनमे दम नहीं रही है। वे अ मौत आप मर रहे हैं। समाज सशोधन हो रहा है और वह धीन होकर आगे बढ़ रहा है अब तक बहुत उन्नत हो गया यदि पिशाचिनी राजनीति ह पीछे न पडती। अधम कर्णधार अपने स्वार्थ, पद, प्रभुता म स्वाद मे उसे कहीं से उठाकर पटक दिया। पर साधक नि नहीं हैं। उन्हे भारतीय अध्या वाद मे विश्वास है। पाश्च भौतिकवाद की चकाचौध ने इस समय भ्रष्टाचार, अनैश्य पारस्परिक वैमनस्य की विभीषि मे अवश्य डाल दिया है, पर

त्रवेन्द्रम मे हाल मे हुई प्रद- कृषि कक्ष मे किसानो की जमा थी। पास ही एक बोर्ड था जिस पर लिखा था, की जाँच यहाँ पर करायें।

काउन्टर पर खडा सफेद बाधे एक युवक किसानो से मिट्टी के नमूने ले रहा था। र आदमी अन्दर काम कर । उनमें से एक आदमी यन्त्र दद से मिट्टी की जाँच कर ग, और दूसरा आदमी परी- नलियो (टैस्ट ट्यूबो) मे रग रसायन मिला रहा था। किसानो को बता रहा था, ट्टी के नमूनो की जांच उसी ही जायेगी और नतीजे उनको तक बता दिये जायेंगे।

किसानो को यह बात बहुत आई, और प्रदर्शनी खत्म के पहले प्रयोगशाला में २०० धिक मिट्टी के नमूनों की जांच यी।

प्रदर्शनी मे मिट्टी की जाँच शाला किसानों को यह बताने ये रखी गयी थी, कि उनकी की जाँच के लिए सुविधायें हैं। यह चीज काफी उप- सावित हुई। मिट्टी की जाँच योगशाला अब केरल मे हर प्रदर्शनी मे होती है।

अब दूसरे राज्य भी किसानों ट्टी की जांच को लोकप्रिय के लिए इसी तरह कदम रहे हैं।

देश मे मिट्टी की जाँच की

# आपके खत की मिट्टी कैसी है?

बडी ३६ प्रयोगशालायें है, जहाँ हर साल लगभग ५ लाख नमूनो की जाँच की जाती है। इनके अलावा हर राज्य मे अनेक छोटी-मोटी प्रयोगशालायें भी है। कुछ प्राइवेट उर्वरक फर्मे भी नमूनो की जाच आमतौर पर मुफ्त करती हैं।

किसानो को मिट्टी की जाँच का महत्त्व बताने के लिए कुछ चलती-फिरती प्रयोगशालाय भी जल्दी ही चालू होने वाली है। ये चलती-फिरती प्रयोगशालाये एक गाँव से दूसरे गाव मे जायेगी और

जरूरत क्या है, किसान कभी-कभी जरूरत से ज्यादा या कम मात्रा मे उर्वरक का इस्तेमाल करता है। दोनो हालतो मे उसे नुकसान होता है।

मिट्टी की जाँच से उसे यह ठीक-ठीक पता चल जायेगा कि विभिन्न फसलो मे वह नाइट्रोजन, फास्फेट तथा पोटाश वाले उर्वरक फी हैक्टर किस हिसाब से डाले।

अधिकाश प्रयोगशालायें जैविक खादें सही मात्रा मे डालने मे भी किसान की मदद करती हैं। जमीन मे जरूरत से ज्यादा तेजाब या

## ग्राम जीवन

किसानो को मिट्टी के नमूनो की जाँच करके उनके नतीजे वही के वहीं बता देंगी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि १९७० तक देश के विभिन्न भागो मे इतनी प्रयोगशालायें हो जायेंगी कि एक साल मे लगभग २० लाख नमूनो की जाँच की जा सकेगी।

मिट्टी की जांच अच्छी फसल लेने का एक सबसे सस्ता जरिया है, क्यो कि इसके आधार पर सही उर्वरको की सही मात्रा देने मे आसानी रहती है। इस बात का सही पता न होने पर कि मिट्टी की

क्षार कैसे दूर किया जा सकता है, इस बारे मे भी ये सुझाव देती हैं।

मिट्टी की सही जाँच तभी हो सकती है जब खेत से मिट्टी के सही नमूने ही इकट्ठे किये जायें। अगर खेत की जमीन ऊँची-नीची है, मिट्टी अलग-अलग रग की है, फसल की बढवार कहीं कम कहीं ज्यादा होती है, या फसल अलग-अलग ढग से बोई जाती है, तो उस हालत मे हर खेत का अलग-अलग नमूना भेजना चाहिए। आमतौर पर जाँच के लिए आधा किलो मिट्टी चाहिए।
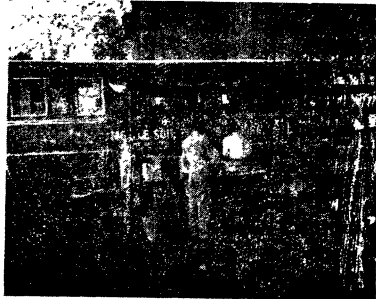
एक हैक्टर के प्लाट में से १५ २० जगह से ऊपरी परत की मिट्टी लेकर नमूने इकट्ठे करने चाहिए। इन्हें फिर मिला लें जाँच के लिये इसमे से आधा किलो मिट्टी भेजें। नमूने की मिट्टी को साफ कपड़े के थैले मे भर कर बन्द करा दें। किसान का नाम तथा पता किसी कागज पर लिख कर थैले के साथ चिपका दें।

किसानों को इससे सम्बन्धित एक सूचना फार्म भरना भी जरूरी है। यह फार्म इलाके के ग्राम सेवक कृषि अधिकारी या प्रयोगशाला से भी मिल सकता है। आमतौर पर जांच के नतीजे दो-तीन सप्ताह के अन्दर मिल जाते हैं।

जमीन से हम सबको भोजन मिलता है। अगर हम इसे खूब खिलाते पिलाते हैं तो यह भी हमें खूब खाने को देगी। इस काम में मिट्टी की जाँच से बहुत मदद मिलती है।

मिट्टी के जाच की चलती-फिरती प्रयोगशाला

---

े भी निकल जावेंगे, पार हो गे। हमारा आध्यात्म मूर्छा कता की घटाओ मे क्षणिक छादन पा गया है। वह पुन न होगा। महर्षि दयानन्द की या व्यर्थ नहीं जाएगी। महात्मा े पुन हमारे स्मरण पथ मे े और हम पुरा को नवीन रूप हुए महर्षि के जय-जयकार में ो— 'उत्तिष्ठत सनह्यध्वम् उदाराः केतुभिः सह।'

★

## लोरी देती है जगदम्बा

( पृष्ठ २ का शेष )

करती थी–

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि,
ससार माया परिवर्जितोऽसि ।
ससार स्वप्नत्यज मोहनिद्राम्,
मन्दालसावाक्यमुवाच पुत्रम ॥

प्रस्तुत मन्त्र मे विश्व माता शिशुवत आत्माओ को एक सुन्दर लोरी देकर उन्हे अन्तर्मुखी करते हुए, योगात्मक निद्रा प्रदान करती है । रात्रि को शरीर के विश्राम के लिये जब साधक शयन की तैयारी करता है तो निन्द्रा की गोदी मे जाने से पूर्व वह अपनी आनन्दमयी माँ का स्मरण करता हे । वह उसे आत्मना पुकारता है–'हे जगदम्बा, आ, अपने शिशु को थपथपा, लोरियाँ दे और सुला ।'

'शिशु की पुकार सुनकर, मां जो समीपतम है, तुरन्त स्नेह स्पर्श करती है, जिसकी साधनाशील आत्माओ को आनन्द अनुभूति होती है । साम के पावन स्वर गूजने लगते हैं और मधुर लोरी का दिव्य सगीत छिड जाता है, साधक नेत्र बन्द करके माता की गोदी मे आत्मवत लेट जाता हे और सुखमय शरण पाकर निश्चित होकर सुनता है कि माँ क्या कह रही है । जगदम्बा वेदस्वरो मे सम्बोधन करते हुए कहती है–हे मेरे शिशु ! तू अज्ञान के तम से आच्छादित है, किन्तु उसे दूर करने का सामर्थ्य तुझ मे है । हे वृत्रहन् ! तू भले ही पापो के चक्रव्यूह मे घिरा हुआ है किन्तु इस चक्रव्यूह को तोडने का सामर्थ्य तुझ मे है । तू भले ही षडऋपुओ के घेरे मे जकडा हुआ है, किन्तु उन्हे परास्त करने की शक्ति तुझ मे है । अरे ! तुझे शक्ति चाहिये तो ले मै तुझे शक्ति देती हू । तू तो जानता है, कि मै सर्वशक्तिमयी हू । अरे उठ और जो दुख निवारण करने वाले तेरे हरि हैं, तेरे जीवन के दो अश्वी हे । क्या कहा तू उन्हे नहीं जानता, अरे यह तेरा मन, यह तेरी बुद्धि, ये ही दो अश्वी हैं, ये ही तेरे हरि हैं, इन्हे ब्रह्मणा युक्त कर दे, ज्ञान से युक्त कर और नव जीवन रथ मे बैठकर विचरण कर, तू तो जानता है कि मै ज्ञानमयी हू । अपने मन और बुद्धि को मुझ से युक्त कर, फिर देख ! तेरे अश्वी कैसे सरपट भागते है, और तुझे इन शत्रुओ के घेरे से कैसे निकाल कर ले जाते हैं ।

माँ लोरी दे रही है और शिशु तन्मयता से सुन रहा है, उसे मस्ती की नींद आ रही है । कैसी शान्तिप्रद है माँ की गोदी, कैसी शक्ति वर्धिनी है, मां की लोरी । बच्चा अभी कच्ची निद्रा मे है, अभी गाढी निद्रा नहीं आई । अपरिपक्व है अभी, स्थिरता नहीं आई, अत जगदम्बा आनन्दगीत गाती चली जा रही है–मै सोम वर्षिणी हू, मेरे वत्स ! मै सदैव आनन्द घन बरसाती हूँ । मेरी सौनिक वर्षा से वनस्पतियाँ तथा औषधियाँ नव जीवन पाकर लहलहा उठती हैं । मेरी सोम वर्षा से दुखी आनन्द का अनुभव करने लगते हैं । सौनिक विद्युत की भाँति मेरी ज्योति जब तेरे भीतर अपनी झलक दिखाती है, तो मुझे पुलकित कर देती है, और जब तेरे मनो पापो को दूर करने के लिये मेरा अन्तरगर्जन होता है तो तू काँप उठता है । अरे ! मै तेरी माँ हू–मे चाहती हू तू सुन्दर मनवाला बन जाये, तेरी वाणी मे मेरी दिव्यता के स्वर आ जाये । जब तू अध्यात्म निद्रा से जागे तो तुझ मे नया जीवन आ जाये, इसलिये हे मेरे वत्स ! मै तेरा सिन्चन सोम सुधा से करती हू । जब तुझे आनन्द की प्यास लगती है, तू मुझे पुकारता हे 'माँ प्यास लगी है मेरी तृषा बुझा' मै तुरन्त तेरे हृदय नभ मे सोम उठाने [illegible] सोम बूँदे बरसने लगती हैं, [illegible] लगती हे, तू नितान्त शीतलता का अनुभव करता है, सोमपान मे विकार, कामनाओ की ज्वाला शान्त हो जाती हे, और तेरे भीतर एक [illegible]-ज्योति, नूतन शक्ति का सचार करती हे ।

यह एक ऐसी मधुर लोरी है, जिसे सुनते-सुनते अन्तर्मुखी साधक समाधि मे प्रविष्ट हो जाता है, जो गहरी भौतिक निद्रा से कहीं अधिक विश्रान्तिमय और नव स्फूर्ति देने वाली है ।

●

## चन्द्रशेखर आजाद

( पृष्ठ ११ का शेष )

के घाव पूरे न हो पाये । थोडे दिन बाद लाला जी इस ससार मे चल बसे । लाला लाजपतराय की मृत्यु का समाचार सारे विश्व भर मे फैल गया । ला लाजपतराय पर लाठीचार्ज करवाने वाले का बदला लेने के लिये चन्द्रशेखर आजाद ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं पुलिस सुपरिटेन्डेण्ट साउण्डर्स की हत्या न कर लूगा, तब तक मैं चैन से नहीं बैठूंगा । और उनको मृत्यु के घाट सचमुच उतार ही दिया । भगतसिह राजगुरु आदि को फाँसी का दण्ड मिला । परन्तु चन्द्रशेखर आजाद हाथ से निकल गया । आजाद को पकडने के लिये बृटिश सरकार ने रात-दिन एक कर दिया । यहाँ तक कि बृटिश सरकार ने सारे भारत मे घोषणा करवा दी थी, कि जो कोई आजाद को पकड लायेगाउसे १००००) रुपये पारितोषिक मिलेगा । परन्तु चन्द्रशेखर आजाद बहुत निपुण था, वह सरकार की पकड में नहीं आ सका । इसी प्रकार जब असेम्बली मे बम फेंका गया तब भी आजाद का प्रमुख हाथ था । आजाद को गुण बहुत प्रिय लगता था । इसीलिये वे सदा भोजन के बाद गुण खाते थे ।

इसी प्रकार आजाद ने एक नही अनेकों देशोपकारक कार्य ऐसे किये जो भारत के लिये ही नहीं समस्त विश्व के लिये अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए हे । आजाद का अन्तिम जीवन [illegible] सघर्षमय रहा, फरवरी सन् १९३१ मे जब आजाद इलाहाबाद गये थे, तो वहाँ अल्फ्रेड पार्क मे अपने आरक्षको सहित बैठे हुये थे, अचानक पुलिस ने आकर घेर लिया । दोनो तरफ से दनादन गोलियाँ चलने लगीं । आजाद एक हाथ से चलाता रहा । आजाद अकेला और एक तरफ सारी पुलिस आजाद की जाँघ मे एक गोली लग गई । इसी समय आजाद का रक्षक बाहर निकल गया । [illegible] २० मिनट तक गोलियो की होती रही । आजाद एक पेड की आड लिये खडा-खडा गोलियों की वर्षा कर रहा था । कई पुलिस अफसर और जवान सब के देखते देखते आजाद ने समाप्त कर दिये । अब आजाद के पास केवल [illegible] गोली शेष थी । आजाद ने अपनी कनपटी पर स्वय मार [illegible] और सदा-सदा के लिये सो गया । आजाद से बृटिश सरकार इ[illegible] काँपती थी कि आजाद के मर [illegible] के बाद भी उनके पास नहीं ग[illegible] मृत आजाद पर निरन्तर गोलियाँ चलाते रहे । पास जाने का सा[हस] किसी मे नहीं हुआ ।

२७ फरवरी को इलाहाबाद आल्फरेड पार्क मे वह सच्चा सेवक स्वाधीनता की बलिवेदी सदा के लिये सो गया । उन[का] बलिदान सदा हमे त्याग अ[ौर] बलिदान की प्रेरणा देता रहेग[ा]

शहीदो की चिताओं पर,
लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालो का,
यही बाकी निशाँ होगा

●

व—

२२ से २४ फरवरी तक आर्य ...न बिन्दकी (फतेहपुर) का ...त्सव होगा। आर्य जगत के के नेता और विद्वान पधारेंगे।

—देवदत्त आर्य मन्त्री

...कुल आश्रम अमसेना खरियार मे २६ से २८ फरवरी तक श्री ... ब्रह्मानन्दजी दण्डी की अध्य... मे सामवेद महायज्ञ हो रहा ...सी अवसर पर उत्सव, सम्मे... अन्य कार्यक्रम होगे।

—अधिष्ठाता

—आर्य समाज नगली खरौली ...त्सव १९ से २३ मार्च तक ...। श्री निरजनदेव भजनोपदे... के पते की आवश्यकता है।

—सूर्यदेव वानप्रस्थी

## सार-सूचनाएं

—सभा के आदेशानुसार मैन... जिले की आर्य समाजो का ...क्षण करूँगा। अधिकारी अपने रजिस्टर तैयार रक्खे।

—दयाराम गौड, मन्त्री
आर्य समाज शिकोहाबाद

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि ...। झासी का वार्षिक साधारण ...वेशन मार्च, ६९ मे ...धिकारियो के निर्वाचन आयोजित किया जावेगा। अत ...ने की समस्त आर्य समाजो के ...श्री महोदय से निवेदन है कि वह ...तीय सभा के आदेशानुसार ...नी आर्य समाजो के वार्षिक ...धारण अधिवेशन तथा वर्ष ६९ ..., निर्वाचन कर अपने प्रतिनिधियो ... नाम (प्रत्येक ९ आर्य सभासद् १ प्रतिनिधि) जिला आर्य उप... तनिधि सभा झासी, को भेजे ...थ ही साथ वर्ष १९६९ हेतु ...ना प्रवेश शुल्क एव अपने समस्त ...र्य सभासदो की सख्या पर वेद ...चार फण्ड [एक रुपया प्रति आर्य ...भासद् की दर से] भी जिलोप ...भा को भेजने की कृपा करे। आप ... प्रतिनिधियो के नाम तथा उक्त ...य धन प्रत्येक दशा मे २८-२-६९ ...क जिलोप सभा के कार्यालय मे ... जाने चाहिए। स्मरण रहे कि ...पको साधारण सभा द्वारा निर्वा...चित प्रतिनिधि जिलोप सभा हेतु स्वीकार किये जायेंगे, अन्तरग सभा द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि नहीं।

—केदारीलाल आर्य, मन्त्री

श्री स्वामी समर्पणानन्द के निधन पर निम्न आर्य समाजो ने शोक प्रस्ताव पास किये और दिवगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्य समाज मैनपुरी, आर्य समाज शिकोहाबाद, आर्य समाज हकीकत नगर सहारनपुर, आर्य समाज सदर बाजार झांसी, आर्य समाज जौनपुर, आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी, आर्यसमाज पीपाड।

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी श्री हरदयाल जी के पुत्र के देहावसान पर शोक प्रकट करता है, और परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करता है। —मन्त्री

—२६ जनवरी को महर्षि दयानन्द विद्यालय सोख (मथुरा) के भवन का शिलान्यास श्री आचार्य बृहस्पति जी ने किया। —मन्त्री

—असबालस्यूं गढ़वाल के श्री सुरेन्द्रसिंह जी की माता का देहावसान हो गया। जिनका अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया। प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—मन्त्री आ० स० चौन्द कोट

—२२ जनवरी को आर्यसमाज मुकन्दसराय मे बसन्त पचमी पर्व मनाया गया —मन्त्री

—आर्यसमाज पीपाड ने मकर सक्रांति व बसन्त पचमी पर्व मनाया। —मन्त्री

—बलिया उप सभा के मन्त्री श्री सुदर्शनसिंह ने आर्यसमाज सिकन्दरपुर का निरीक्षण किया। आपने बसन्त पचमी को आ० स० खडसरा मे हवन कराया। वैदिक धर्म का प्रचार किया।

—दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार का उपाधि तथा पुरस्कार वितरण उत्सव १० जनवरी को हुआ।

—आर्य समाज पूना ने पारिवारिक सत्सग विभिन्न घरो पर प्रारम्भ कर दिए हैं। —मन्त्री

—आर्यसमाज हरथला कालोनी मुरादाबाद व आर्य कुमार सभा के तत्वाधान मे २ फरवरी को धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। —मन्त्री

—आर्य समाज सोख के श्री स्वामी अनुभवानन्द जी सन् ६८ मे मे वैदिक धर्म का प्रचार किया, सस्कार कराये। कथा कहीं, उत्सव कराए।

—श्री हीरालाल आर्य वैदिक सस्थान मेहदावल (बस्ती) द्वारा वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। जिले की आर्यसमाजे अपने यहाँ के उत्सवो की तारीखे लिखे।

—शिवनारायण वेदपाठी प्रबन्धक

—आर्यसमाज शिकोहाबाद श्री रुद्रदेव जी शास्त्री व श्यामलाल जी के निधन पर शोक प्रकट करता है। दोनो ही व्यक्ति आर्य समाज की सेवा करने वाले थे।

—आर्य समाज फतेहपुर ने अपने कर्मठ सदस्य श्री बिहारीलाल जी के देहावसान पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।—मन्त्री

दिनाक ४-२-६९ मे ८२ वर्ष की आयु मे आर्यसमाज गोरखपुर के प्रथम कर्मचारी महाशय विष्णुदत्त जी आर्य का निधन हो गया, और उनके आदेशानुसार ही उनकी अन्त्येष्टि क्रिया वैदिक विधानानुसार पूर्ण रीति से समाप्त हुई। उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति एव शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए प्रभु से प्रार्थना है।—स्वामीनाथ आर्य प्रधान कार्णिक लेडी प्रसन्न कौर इटर कालेज

—१६ जनवरी से २३ जनवरी तक शोलापुर में अराष्ट्रीय प्रचार निरोध सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर साखर पेठ, कस्तूरबा मार्केट तथा विट्ठल पेठ नामक तीन विभिन्न स्थलो पर सभायें आयोजित की गई। प० विश्वनाथ जी आर्य ने प्रभावशाली भजन हुये। आम जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।'

२—'महाराष्ट्र मे तुलजापुर एक पवित्र एव ऐतिहासिक स्थान है। वहाँ २४ तथा २५ जनवरी को आ० स० साखरपेठ एव कस्तूरबा मार्केट के प्रयत्नो से प्रचार कार्य किया गया। इस अवसर पर प० विश्वनाथ आर्य के भजन तथा प्रो० ओमकुमार आर्य तथा डा० हरिश्चन्द्र धर्माधिकारी के व्याख्यान हुये तुलजापुर की पुरानी समाज मे पुनजागरण के शुभ लक्षण नजर आये।

—वैदिक धर्म प्रचार मण्डल आ० स० रसौली जिला बाराबकी की ओर से २३ फरवरी से ९ मार्च तक रसौली, मानपुर, महम्दाबाद, पारा, पडरी, करपिया आदि-आदि ग्रामो मे श्री पडित श्यामसुन्दर जी शास्त्री तथा सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक श्री धर्मराज जी द्वारा प्रचार होगा और नवीन समाजें स्थापित की जायेगी। पुस्तक विक्रेता इस समय से लाभ उठावे। —मन्त्री

—आ० स० अनूपशहर ने २ फरवरी को प्रधान तथा पदाधिकारियो और जनता के साथ शराब बन्दी पोस्टरो को हाथ मे बाँसों द्वारा लटकाये पोस्टरों के साथ बाजार और गलियो मे मूक जलूस निकाला और शराब की दुकान पर पहुचकर मूक प्रदर्शन किया शराब पीने वाले उस समय देख कर सकुचाये और अपने को रोके भी रखा इस प्रदर्शन से उनपर प्रभाव पडा।

—प्यारेलाल भटनागर मन्त्री

—दि० १६, १७, १८, १९ जनवरी को आर्य उप प्रतिनिधि मण्डल कृयाट मीरजापुर के तत्वावधान मे आ०स० शाहशाहपुर, बगहा व हासीपुर का वार्षिकोत्सव मनाया गया। —बेचनसिंह मन्त्री

## दिल्ली गुरुकुल श्री दयानन्द वेद विद्यालय में छात्रों का प्रवेश

दिल्ली गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय ३५ वर्ष से सस्कृत शिक्षा का कार्य कर रहा है। यहाँ उच्च कोटि का विशाल सस्कृत पुस्तकालय है जहाँ अनेक ग्रन्थो के प्रकाशन का कार्य होता है। इस समय आर्ष ग्रन्थो के अंग्रेजी अनुवाद का काम भी हो रहा है। महर्षि के ऋग्वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद चल रहा है। पूना के व्याख्यान जो महर्षि के १५ मुद्रित है, उनके अंग्रेजी अनुवाद का कार्य समाप्त हो गया। ऋषि प्रेमी उसको छपवा सकते है। ताण्डय महा ब्राह्मण और कात्यायन श्रौत सूत्र का आर्य भाषानुवाद हो रहा है।

कई कारणो से छात्रो का प्रवेश रोक दिया था। अब सस्कृत शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र प्रविष्ट होरहे हैं। यहाँ तीन प्रकार के छात्र प्रविष्ट होते है।

१—जो छात्र बनारस सस्कृत विद्यालय की प्रथमा मध्यमा शास्त्री आचार्य परीक्षा देना चाहे वे यहाँ पढ सकते हैं।

२—स्वतन्त्र रूप से जो छात्र आर्ष ग्रन्थो और वेद शास्त्रो और विशेष कर निरुक्त शास्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थो का अध्ययन करना चाहे वे यहाँ पढ़ सकते हैं।

३—जो छात्र उपदेशक बनना चाहे वे यहाँ विशेष शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त जो आर्य भाई वैदिक सिद्धान्तो का स्वाध्याय यहाँ रह कर करना चाहे वे भी यहा रह सकते है, और उनके भी पढ़ने का प्रबन्ध किया जाता है। यहां सब प्रकार का पुस्तकालय है। जो वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम के व्यक्ति तथा गृहस्थ भी यह चाहे कि हम स्वाध्याय भी करें और प्रचार का कार्य भी करे, और सस्कार कराने और व्याख्यान देने का अभ्यास भी करे, वे यहाँ आराम से रहकर सब सीख सकते हैं। यहां देहली मे सस्कार कराने वालों की और कथा प्रचार करने वालो की विशेष आवश्यकता रहती है। पत्र व्यवहार शीघ्र करे।

आचार्य विश्वश्रवा व्यास
एम ए वेदाचार्य
गुरुकुल
११९ गौतम नगर नई दिल्ली ४९
(यूसुफ सराय बस स्टैण्ड के पास)

## आर्यसमाज मीरजापुर के प्रस्ताव

उत्तर-प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री एव राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल उद्भट विद्वान् महामनीषी डा० सम्पूर्णानन्द के निधन पर आर्य समाज मीरजापुर के सभासदो की यह सभा शोक प्रकट करती है। हम सब की प्रभु से प्रार्थना है, दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—आर्यजगत् के प्रख्यात विद्वान् शास्त्रार्थमहारथी स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज का १४ जनवरी १९६९ को स्वर्गवास हो गया। बड़ा दु:ख हुआ। स्वामी जी गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक थे। आप वहा आचार्य पद पर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान पद पर भी रहे। आपकी मृत्यु से आर्य जगत् की अपूरर्णीय क्षति हुई है। पूज्य स्वामी जी ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज व वैदिक वाड्मय के प्रचार एव प्रसार मे लगाया। आपके पाण्डित्य की विद्वतमण्डल मे छाप थी।

यह सभा पूज्य स्वामी जी महाराज के मृत्यु पर शोक प्रगट करती है, तथा अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करती है। —मन्त्री

—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के छात्रो तथा अध्यापको की यह सम्मिलित सभा स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज तथा हिसार आर्य जगत् के कर्मठकार्यकर्त्ता एव दानवीर श्रीयुत सेठ फतहचन्द जी के असामयिक देहावसान पर गहरा शोक प्रकट करती है ईश्वर उनको सद्गति एव शान्ति प्रदान करे तथा उनके वियोग से सन्तप्त पुत्र पौत्रो और सम्बन्धियों को धैर्य तथा कष्ट सहने की क्षमता प्रदान करे।

—अधिकारी एवं छात्र वर्ग

## आर्य वानप्रस्थाश्रम, महर्षि उद्यान-अजमेर

आनासागर तट पर ऋषि उद्यान की सुरम्य भूमि पर आर्य वानप्रस्थाश्रम का निर्माण कार्य आरम्भ हो रहा है। अभी प्रबन्ध समिति ने केवल २३ प्लॉट काटे है, इनमे से ८ केवल पुरुषो के लिये, ८ केवल महिलाओ के लिये तथा ७ सपत्नीक के लिये निश्चित हुए हैं। पहले १६ प्लाटो का नाप होगा ३०' १५' और अन्तिम ७ का नाप होगा ३०' ३०' इनमे से तीन छोटे तथा एक बडा प्लाट दिये भी जा चुके है जिनपर निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा रहा है।

जो व्यक्ति अपनी कुटिया बनाकर साधना के निमित्त रहना चाहे वे फार्म मगा सकते हैं और जो नरनारी कुटिया बनाने मे असमर्थ हैं परन्तु साधना के लिये आना चाहते हैं वे आवें उन्हे रहने को स्थान दिया जावेगा।

कुटिया बनाने वालो को प्लॉट नि:शुल्क दिये जा रहे हैं।

—त्रिलोकीनाथ भार्गव अध्यक्ष

## उज्जैन, सिंहस्थ मेले में वैदिक धर्म का प्रचार

आगामी चैत्र पूर्णिमा दि० २ अप्रैल १९६९ से बैशाख पूर्णिमा २ मई १९६९ तक उज्जैन मे आयोजित सिंहस्थ (कुम्भ) मे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक धर्म के प्रचार हेतु दत्त अखाडा क्षेत्र मे बडनगर मार्ग पर ३१ दिन तक प्रात साय यज्ञ के अतिरिक्त सुयोग्य आर्य विद्वानो एव भजनोपदेशकों द्वारा वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार करावेगी। आर्य सन्यासी, महात्माओं एव अन्य विद्वान् उपदेशको से आशा की जाती है कि इस पुनीत कार्य मे अपना बहुमूल्य सहयोग इस सभा को प्रदान करें।

—विश्वामित्र कच्छ मन्त्री सभा



## सूचना

आर्यसमाज गोडा का निर्वाचन २३ फरवरी १९६९ को आर्यसमाज मन्दिर मे २ बजे मध्याह्न मे होगा सर्व आर्य सभासद् उपस्थित हो।

—मन्त्री

## शोक सूचना

श्री राधेश्याम सक्सेना, रेलवे कालोनी गोंडा के निधन के उपरांत आर्यसमाज बडगाव (गोडा) के सदस्यो के द्वारा गृह शुद्धि हेतु यज्ञ कराया गया। पाच रुपये आर्य स० को दान प्राप्त हुए। —मन्त्री उपसभा

## नवीन आ. स. की स्थापना

परसपुर (गोडा) मे आर्योप-प्रतिनिधि सभा गोडा के प्रयत्नों से आ०स० की स्थापना २९-१२-६८ को की गई। उपसभा के उप मन्त्री श्री रामवर्ण पाडेय के निर्देशन में निम्नप्रकार निर्वाचन सम्पन्न हुआ—कुल १९ सदस्य बनाए गये।

प्रधान—श्री तिलकराम आर्य एम.ए
उपप्रधान—श्री शिवशकरलाल वर्मा
मन्त्री—श्री विजयबहादुरसिंह
उपमन्त्री—श्री तिलकराम मिश्र
कोषाध्यक्ष—श्री रामकुमारसिंह
निरीक्षक—श्री रामगुलामसिंह

—मन्त्री उपसभा गोंडा

—आ०स० लोसामऊ कानपुर
प्रधान—श्री सुखदेव जी
मन्त्री— " वेदरत्न जी
कोषा-श्री सरदारीलाल जी
पुस्तका-श्री ज्ञानप्रकाश जी

आ० स० बदायूं
प्रधान-श्री सियाराम जी
मन्त्री—श्री शान्तिस्वरूप जी
कोषाध्यक्ष-श्री रामस्वरूप जी वर्मा
पुस्तका — " कुजविहारीलाल जी

स्त्री आ० स० फैजाबाद
अध्यक्षा—श्रीमती विद्यावती जी
मन्त्रिणी—श्री दयावती जी गुप्ता
कोषाध्यक्षा-श्रीमती पुष्पावती जी
पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती सरोजरानी जी

आर्यसमाज शाहगज (जौनपुर)
अध्यक्ष—श्री शम्भूनाथ जी
मन्त्री—श्री राधेश्याम जी
कोषा. " सियाराम जी
पुस्तका. श्री राधेश्याम जी

आ०स० भरथना (इटावा)
अध्यक्ष-श्री श्याम जी आर्य
मन्त्री-" वदनसिंह जी
कोषाध्यक्ष-श्री मोतीलाल जी
पुस्तका- " रामशंकर जी

आ०स० फतेहपुर
अध्यक्ष-श्री जगन्नाथसिंह जी
मन्त्री- " वेदप्रकाश जी
कोषाध्यक्ष-श्री रूपकिशोर जी
पुस्तका० -श्री विजयनारायण जी

आ० स० जलाली (अलीगढ़)
अध्यक्ष-श्री उलफतराय जी
मन्त्री-श्री पृथ्वीराज जी
कोषाध्यक्ष-श्री पन्नालाल जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष-" शिवकुमार जी आर्य

आ०स०जनकनगर सहारनपुर
अध्यक्ष-श्री निहालचन्द्र जी आर्य
मन्त्री-" हरप्रसाद जी
कोषा०-" विश्वम्भरदयालु जी
पुस्तका-श्री रामचन्द्र जी

**आवश्यकता**

"कन्या आयु १८ वर्ष स्वस्थ, सुन्दर गौर चार वर्ष उम्र मे माता से दोनो आंख खराब हो गई। किन्तु भोजन उत्तम बनाती है। पूरा घर सम्हालती है। योग्य वर चाहिये।"

वैद्य गरीबराम अग्रवाल,
बिलासपुर, म०प्र०

## निःशुल्क

अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की
सत्यार्थ सुधाकर, सत्यार्थ मार्त्तण्ड
उपाधियाँ डाक द्वारा प्राप्त करें। १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मगाइये। —परीक्षा मंत्री
भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-सदन, कटरा अलीगढ़ (उ०प्र०)



# भारी रियायत

# महर्षि सुगन्धित सामग्री के मूल्य में

शिवरात्रि एव होली के शुभ अवसर पर १५ मार्च तक सामग्री मगाने वाले ग्राहको को ५) प्रति ४० किलो के हिसाब से सामग्री के मूल्य मे रियायत की जायेगी। साथ ही एक बहुत बडा भव्य महर्षि का चित्र मय तिथि के भेंट भेजा जायेगा।

यह शास्त्रोक्त रीति से बनी हुई बलवर्द्धक, रोग नाशक तथा अत्यन्त सुगन्धित सामग्री है। यज्ञ-प्रेमी सज्जनो तथा सस्थाओ ने महर्षि सुगन्धित सामग्री की मुक्त-कण्ठ से प्रशसा की है। आप एक बार "महर्षि सुगन्धित सामग्री" मगवाकर प्रयोग करे। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपको यह सामग्री अन्य सब सामग्रियो से उत्तम प्रतीत होगी। इसकी मनमोहक सुगन्ध आपको मुग्ध कर देगी-तथा आपके समस्त परिवार को स्वस्थ, बलवान् तथा निरोग बनाये रखेगी। केवल एक बार आप अवश्य परीक्षा करें।

## महर्षि सुगन्धित सामग्री की विशेषताएँ

१—यह प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रदर्शित नियमानुसार ही तैयार की जाती है, एव इसका निर्माण आयुर्वेद के स्नातको की देख-रेख में होता है, एव २५ वर्षों से आपकी सेवा कर रही है।
२—हमारी बल-वर्द्धक रोग-नाशक सामग्री मे कुछ ऐसे विशेष तत्वो का सम्मिश्रण है। जिससे यहआधुनिक विनाशकारी आविष्कारों से उत्पन्न विषाक्त तथा दूषित वायु-मण्डल के प्रभाव को भी नष्ट करने मे भी पूर्ण समर्थ है।
३—यह सामग्री न केवल भारत मे, अपितु विदेश मे भी अपनी विशेषताओं के कारण ख्याति प्राप्त कर चुकी है।
४—यह सामग्री ऋतु अनुसार तैयार की जाती है।
५—हमारी सामग्री अपार सुगन्ध की लपटें देने वाली है।
६—इस सामग्री मे कुछ ऐसी जडी बूटियो का सम्मिश्रण है जिससे इस सामग्री से यज्ञ करने वाले परिवार सदा रोग मुक्त तथा स्वस्थ रहते हैं।

## सामग्री के सम्बन्ध में कुछ सम्मतियां

**सुप्रसिद्ध आर्य नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री**
(सदस्य लोक सभा)

१—"महर्षि सुगन्धित सामग्री" बहुत अच्छी है। जडी-बूटी पर्याप्त मात्रा मे होने से लाभप्रद भी है और सुगन्धयुक्त भी। आशा है यज्ञप्रेमी इसका अच्छा लाभ उठायेंगे। —प्रकाशवीर शास्त्री
२-२-६५

**२—एक अमेरिकन व्यापारी की सम्मति—**
आपकी भेजी सामग्री, धूप तथा धूपबत्ती सुरक्षित मिल गई। जहाँ तक मुझे सामग्रियों का ठीक अनुभव है, महर्षि सुगन्धित सामग्री निहायत उत्तम दर्जे की साबित हुई है।
R SHEORATAN Jeveler & Importer
Tourtonnelaan 19. Paramaribo Suriname
D G. ( S. America )

**सामग्री का रेट:—** स्पेशल ६०) रु०, स्पेशल मेवायुक्त ७०) रु० प्रति ४० किलो के। अपार सुगन्धित शुद्ध घृत, चावल, मेवा मिश्रित १००) रु० प्रति ४० किलो के।
सचालक—डा० वीररत्न आर्य B. R S,

**महर्षि सुगन्धित सामग्री भण्डार केसर गंज, अजमेर (भारत)**

२७ फरवरी को जिनकी पुण्य तिथि है–

# अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

बलिदान महादान है,
निज जन्मभूमि के लिये।
शतबार ग्रीवाच्छिन्न हो,
मम देश रक्षण के लिये॥

मातृ-भूमि की रक्षा के लिये अपने प्राणों को उत्सर्ग करके देश के नवयुवको को अनुपम प्रेरणा देने वालों मे अमरशहीद चन्द्रशेखर आजाद को आज भारत का बच्चा-बच्चा अच्छी प्रकार से जानता है।

अलीपुर राज्य (मध्य भारत) की झाबुआ तहसील मे एक छोटा सा ग्राम है जिसका नाम भावरा है। इसी ग्राम मे सन् १९०८ मे आजाद का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम प० सीताराम जी तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद ने बाल्यकाल मे ही व्यायाम करना प्रारम्भ कर दिया था। चन्द्रशेखर का बाल्यकाल खाने और खेलने मे ही बीत रहा था। चन्द्रशेखर को गुड़ बहुत प्रिय था। गाव मे शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। यह ऐसी दशा मे देशी बारूद लेकर तथा उसे एक खिलौने मे भरकर तोप चलाने का खेल खूब खेलता था।

चन्द्रशेखर आजाद बाल्यकाल से ही बडे उत्साही और निर्भीक नौजवान थे। आजाद ने अपनी युवावस्था मे एक बहुत बडा क्रातिकारी दल तैयार किया, आजाद क्रान्तिकारी दल के सबसे बड़े नेता थे, बचपन मे आजाद बहुत ही उग्र थे। निराला स्वभाव था। सिर कटवा सकते थे परन्तु झुक नहीं सकते थे। इसीलिये आजाद सदा अग्रेजो से लडते रहे। आजाद ने अपने तपोमय जीवन से ऐसा प्रकाश फैलाया जिससे बलिदान और आदर्श का कीर्तिमान स्थापित हो गया। वे युवकों को देश की स्वतन्त्रता के लिये मर मिटने की निरन्तर प्रेरणा देते थे और अपनी मृत्यु से उन्होंने शत्रु का सामना करने का ऐश्वर्य पूर्ण उदाहरण ही प्रस्तुत कर दिया जो हमे सकटकाल मे प्रकाश स्तम्भ की भाति रास्ता दिखाता है।

सन् १९२१ मे असहयोग आदोलन चला। आदोलन चलाने वाले महात्मागाँधी थे। इस आंदोलन रूपी आँधी को भला कौन भूल सकता है। इस आन्दोलन मे ऐसे वर्ग सम्मिलित हुये, जिनके सम्बन्ध मे स्वप्न मे भी विचार नहीं किया जा सकता था कि ये लोग भी क्या कभी राजनीति मे भाग ले सकते हैं। उनमे एक आजाद भी था, यह बनारस मे सस्कृत पढने वाला विद्यार्थी था। इसके शिर पर मोटी चोटी, अद्भुत वेशभूषा, विचार धार्मिक, पर यह भी इस आंदोलन मे अतुल धैर्य के साथ कूद पडा। सारे भारतवर्ष मे यह सूचना विद्युत्गति की तरह फैल गई कि बनारस के कुछ सस्कृत के छात्र गिरफ्तार कर लिये गये हैं, जिनमे एक छात्र केवल १४ वर्ष का बच्चा ही है। चन्द्रशेखर आजाद से मजिस्ट्रेट ने पूछा तुम्हारा क्या नाम है आजाद ने कहा—मेरा नाम चन्द्रशेखर आजाद और मेरे पिता का नाम स्वतन्त्र, और मेरा निवास स्थान जेलखाना है। इस पर उस बालक चन्द्रशेखर आजाद को १५ बेंतों की सजा मिली।

जिस समय १४ वर्ष के इस सुकुमार बालक पर सडासड-सडासड बेंत पड रहे थे तो उसने किंचित्मात्र भी कायरता न दिखलाकर प्रत्येक बेंत के साथ 'महात्मा गांधी की जय' 'भारत माता की जय' 'वन्दे मातरम्' के नारो से जेल को कपायमान कर दिया। इस घटना से सारे भारत मे आजाद के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो गई। इसी घटना से असहयोग आदोलन शांत हो गया। परन्तु जब चन्द्रशेखर आजाद जेल से बाहर आये तब भी इस वीर का मस्तक चमक रहा था।

सारे भारत भर मे जगह-जगह आजाद का फूलमालाओ से स्वागत किया। आन्दोलन बन्द होने पर आजाद को कोई मार्ग दिखाई नहीं दिया।

इसके पश्चात् फिर आजाद काशी विद्यापीठ मे भरती होगया। कुछ समय तक विद्यापीठ मे किसी प्रकार अपने दिन काटता रहा, किन्तु अन्त मे वह वहीं से किसी अज्ञात स्थान पर चला गया। आजाद अब किसी ऐसे कार्य मे लगे रहना चाहते थे जिससे वे सारा जीवन व्यतीत कर सकें।

अब चन्द्रशेखर आजाद ने अपने कुछ ऐसे नवयुवक साथियों को साथ लिया जो बडे वीर और शरीर से हृष्ट-पुष्ट थे। आजाद का एक लुहार भी मित्र था जो कि इनकी बन्दूक आदि को ठीक करता था। उसने एक तमचा भी बनवाया था किन्तु यह तमचा अधिक काम का न था। आजाद ने अब अपने सभी क्रान्तिकारी साथियो को बुलाया और यह निश्चय किया गया कि अब हमे अधिक से अधिक धन एकत्र करना है। काकोरी ट्रेन डकैती करने चल दिये। ९ अगस्त सन् १९२५ को काकोरी के समीप एक चलती हुई गाडी को रोककर लूट लिया गया। यह इन्होने निश्चित कर लिया था कि गाडी काकोरी के समीप लूटनी है। इनका दल गाडी मे बैठ गया। जब गाड़ी काकोरी के पास आई उसी समय जजीर खींचकर गाडी को रोक लिया गया। सभी युवक नीचे उतर आये और दस मिनट मे लूट कर चम्पत हो गये।

इस कार्य में आजाद का प्रमुख हाथ था। काकोरी षड्यन्त्र के मुकदमें के विषय में जब पुराने क्रान्तिकारी नेतागण पकड लिये गये उस समय से चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये। और इसके बाद का उनका सारा जीवन गुप्त अवस्था मे बीता। जब आजाद ने सरदार भगतसिह आदि के साथ मिलकर क्रान्तिकारी दल को फिर से पहले से अधिक मजबूत आधार

★ ब्र० सुरेन्द्रकुमार व्याकरणाचार्य
गुरुकुल, झज्जर

पर सघठित किया। कुछ दिनो के के बाद जो काकोरी केस मे क्रातिकारी पकडे गये थे उन्हे लखनऊ जेल मे ले जाया गया। १८ मास तक मुकदमा चलता रहा। इसके पश्चात् निर्णय सुनाया गया। इस निर्णय मे चन्द्रशेखर के चार साथियो को फांसी की सजा मिली उनके नाम हैं—

१—प० रामप्रसाद बिस्मिल।
२—श्री राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी।
३—श्री रोशनसिह।
४—श्री अशफाकुल्ला खां।

आजाद को इन प्यारे साथियो की मृत्यु से अत्यन्त दुख हुआ। वे फरार होते हुए भी हर समय घूमते रहते थे। इस समय इनका दल खूब सघठित था। आजाद चरित्र के धनी थे।

सन् १९२८ ई० मे अग्रेजो ने एक दल भेजा। जिस दल का नेता साइमन था। साइमन का विरोध क्रान्तिकारियो ने अनेक जगह किया गया। लखनऊ मे भी विरोध हुआ। जब यह दल लाहोर पहुचा तो वहा पर लाला लाजपतराय ने इसका डटकर विरोध किया। लाला जी बडे वीर एव प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। लाला लाजपतराय पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज करवा दिया। लाला जी बुरी तरह घायल हो गये। अस्पताल मे ले जाया गया, वहा पर भी लाठियो

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.–६०
फाल्गुन ४ शक १८९० फाल्गुन शु० ७
[दिनाङ्क २३ फरवरी सन् १९६९]

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमि

# अमृत वर्षा

### महर्षि दयानन्द ने कहा था–

धर्म वही है, जिसका कोई विरोधी न हो। सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब मे सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर बर्तें बर्तावें, तो जगत् का पूर्ण हित होवे।

# विश्व-वैचित्र्य

### प्रत्यारोपण चिकित्सा में अद्भुत सफलता

हैनोवर–चिकित्सा के इतिहास मे पहली बार पश्चिम जर्मनी के डाक्टरो ने एक रोगी के ऐसा गुर्दा प्रत्यारोपण किया जो ३०० किलो मीटर की दूरी से हवाई जहाज द्वारा लाया गया था।

गुर्दा कोलोन मे सड़क दुर्घटना मे मृत २५ वर्षीय महिला का था जिसे हैनोवर मे ३५ वर्षीय ऐसी के लगाया गया जिसके दोनो गुर्दों ने काम करना बन्द कर दिया था। रोगी की दशा अब सुधर रही है।

मृत महिला के गुर्दे को निकालने और उसे दूसरी महिला के लगाने के समय मे तीन घण्टे २० मिनट का अन्तर था।

बताया जाता है कि मनुष्य की मृत्यु के बाद निकाल लिये जाने के पश्चात् गुर्दा पांच-छ: घण्टे जीवित रहता है। इस अ . को और बढ़ाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं ताकि भविष्य मे एक महाद्वीप से लाये गुर्दे को दूसरे महाद्वीप मे प्रत्यारोपित किये जा सके।

आदरणीय सम्पादक जी,

आर्यमित्र के गत अनेक अङ्को में मुझे यह देख कर अत्यन्त हर्ष है कि जब से श्री 'बसन्त' जी ने 'आर्यमित्र' के सम्पादन का कार्य अपने हाथ मे लिया, तब से उनके मुख-पत्र पर 'परमेश्वर की अमृत वाणी' में एक वेदमन्त्र की व्याख्या जो अत्यन्त लोकोपकारी, उच्च विचार एवं आदर्शपूर्ण, सतपथ-प्रदर्शक तथा जीवन के गूढ़ रहस्यो को साकार करने वाली होती है, निरन्तर प्रकाशित हो रही है, वह हमारा सौभाग्य ही है। 'मित्र' के सभी अको मे उन्होंने सामाजिक एव आध्यात्मिक उन्नति के अचूक साधन, वैदिक धर्म की श्रेष्ठता, तथा उनके प्रचार एव प्रसार के सम्बन्ध मे लेखो की भरमार सी कर दी है। सदाचार तथा उच्च आदर्श सम्बन्धी लेखो की बाढ़-सी आ गयी है। उनके अनेको लेख गीत भजन इत्यादि परमार्थ, सामाजिक उत्थान तथा ईश प्रेम की ओर आकर्षित करने वाले एव हम सब को अध्यात्म सुधा का सुमधुर पान कराने वाले हैं, जो विगत आर्यमित्र के अको मे प्रकाशित हो चुके हैं। उनके भक्तिभाव पूर्ण सुमधुर गीत एव भजन समाज के साप्ताहिक सत्सगों, वार्षिक अधिवेशनो एव अनेको उत्सवो, पर्वो तथा त्यौहारो पर भी प्रेम तथा आनन्दपूर्वक गाने योग्य हैं। ऐसे गानो के रिकार्ड भी सुमधुर ध्वनियो मे बनवाये जा सकते है, जो समाजो तथा उत्सवो मे उन्हे विशेष आकर्षक बनाने मे सहायक हो सकते हैं। यही नहीं, उन्होने आर्यमित्र मे उपदेशपूर्ण कहानियाँ, समाज सुधारक एव सत-पथ-प्रदर्शक एकाकी नाटक और वैदिक पहेलियाँ, जो आज तक किसी पत्र, पत्रिका मे देखने मे नहीं आई, प्रकाशित करना आरम्भ कर दी हैं। उनका वैदिक अनुसन्धान, वेदो मे विराज व्यवस्था, जन-राज्य व्यवस्था तथा उच्च-कोटि के विज्ञान की खोज अत्यन्त उत्साह वर्द्धक एव लोक कल्याणकारी सिद्ध होगी। ये सब कृतियाँ उनके उत्कृष्ट ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमति, प्रखर बौद्धिक प्रतिमा त्याग-परायणता, एव दृढ़ कर्त्तव्य निष्ठा का द्योतक हैं। वे साहित्य मनीषी हैं, उनकी गौरव गरिमा श्लाध्य एव अभिनन्दनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे इस प्रकार कर्त्तव्य निष्ट रह कर हम सबके चिर प्रतीक्षित एव आज की भटकी हुई विपन्न समाज को शनै. शनै अपने ओजस्वी लेखो द्वारा ही सुपथ पर ले जाने की दुर्लभ आशा अवश्य पूर्ण करेंगे। उनका मनुष्यो को अज्ञान अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश मे इस प्रकार लाने का प्रयास स्तुत्य है।

अथर्ववेद के 'मृत्यु सूक्त' की व्याख्या जो उन्होने आर्यमित्र के दि० २०-१०-६८ के 'ऋषि निर्माण अक' मे की है, अद्वितीय एव चमत्कारिणी है, वह मनुष्य को मृत्यु के मिथ्या भय एव तदजन्य संताप से युक्त कर उसे जीवन का सच्चा पथ-प्रदर्शन कराती हैं। और मानवी एवं कल्याण कारी कर्त्तव्यों की ओर प्रेरित करती है; उसके गम्भीर अध्ययन तथा प्रेरणा से परमानन्द की प्राप्ति भी सम्भव है। उनके रचे हुये भजन तो अत्यन्त उत्साह वर्द्धक, सदाचार और कर्त्तव्य निष्ठा की दुर्लभ शिक्षा एवं आत्मा तथा परमात्मा के दिव्य ज्ञान से पूर्ण हैं।

'वसन्त' जी की सरक्षता में आर्यमित्र का भविष्य निसन्देह उज्वल और महान् प्रतिलक्षित हो रहा है। मै उनकी आशातीत सफलता की हृदय से कामना करता हूं।

–जियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य
२५ रायगज, झांसी

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०वी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

# अध्यात्म-सुधा

## खेल रहा मैं तुमसे प्रीतम, प्रेम रंग में पावन फाग।

श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा मुख्य उप-मन्त्री

वेदमन्त्र—

अस्मभ्य त्वा वसुविदमभि-वाणीरनूषत । गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ।।

[सामवेद मन्त्र ५७५]

शब्दार्थ—(अस्मभ्यम्) हमारे लिए (वसुविदम्) आध्यात्मिक ऐश्वर्यों का प्रदाता जानकर (वाणी) वाणी ने (त्वा) तुम्हारी (अभि-अनूषत) सर्वत स्तुति की है। (गोभि) गति शीलता के द्वारा (तेवर्णम) तेरे रङ्ग को अभिवास या मति) सब ओर बसा रहे हैं, बिखेर रहे हैं।

व्याख्या—मानव आनन्द कामी है। वह मस्ती चाहता है। मौज बिहार उसे प्रिय हैं। तभी तो वसन्त ऋतु की मादकता मे मस्त होता हुआ वह रङ्ग-बिरङ्गी होली खेलता है। वाणी से मस्ती भरे गीत गाता है। मनोरजक बातें करता है, और जीवन रस से रसान्वित होता है। ससार में भौतिक होलियाँ मानव बहुत खेलता है और खेलते-खेलते उनके स्वरूपों को ऐसा बिकृत कर देता हैकि घोर अतृप्ति अशाति, और उनके फलस्वरूप विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। भारतवर्ष मे होली पर्व पर रंग के स्थान पर जो कीचड और मल फैंका जाता है, और अश्लील बोलियां बोली जाती हैं, उनको देख कर कौन भला मानुष्य होगा, जो इस पर्व को आनन्द प्रद मानेगा।

इस भौतिक संसार में जो कुछ भी भद्र हमे दृष्टिगत होता है, उसका सूत्र हमे वेद से मिल जाता है। चाहे कथा साहित्य हो, चाहे पहेलियाँ हों, चाहे लोरियाँ, इन सबका उद्गम वेद है। जितने पर्व हमारे मध्य मे आज प्रचलित हैं, उनका बीज भी हमे कहीं न कहीं वेद मे मिल जाता है। इसलिये होली में रङ्ग खेलने तथा वाणी द्वारा आनन्द प्राप्त करने का स्रोत भी हमे वेद से प्रात हुआ है, जिसके प्रमाण स्वरूप में सामवेद का उपर्युक्त मन्त्र है—

प्रस्तुत मन्त्र मे साधनाशील प्रबुद्ध मानव परमात्मा से क्या आत्म निवेदन कर रहे हैं? वे कह रहे हैं कि हे सोम! आनन्द कन्द परमात्मन्! हम भली-भाँति जानते हैं कि आप सर्वज्ञ हैं और सर्व कल्याणी हैं। आप जीवो के आनन्द प्रदाता हैं, इसलिए, हम अपनी वाणी के माध्यम से आत्मना जिस आनन्द का पान करते हैं,उसे सर्वत व्यक्त करते हैं। मानव का यह स्वभाव है कि जब उसके भीतर मस्ती होनी है, तो वह बाहर किसी न किसी रूप मे अवश्य प्रस्फुटित होती है। जब भीतर चैन की वशी बजती है, अनहद राग रागिनियाँ सुनाई पडने लगती हैं, दिव्य सङ्गीत की मधुरता का आत्मना, आस्वादन होने लगता है, शख, ढोल, मृदुङ्ग और सकलनाद स्वत बजने लगते हैं, तो मस्ती के उस वातावरण मे तन-मन झूमने लगते हैं। भीतर के आनन्द भाव वाणी से मधुर स्वरो में फूट पड़ते हैं और मनुष्य मस्त होकर नृत्य करने लगता है। जब अन्त करण मे दुःख होता है, अशान्ति और अतृप्ति होती है, तो बाहर कितना ही राग-रङ्ग क्यों न होता हो, मानव उसमे सर्वथा उदासीन रहता है। इससे स्पष्ट है कि मस्ती भीतर की वस्तु है और भीतर की वस्तु भीतर प्राप्त होती है। साधक जानते है कि इस असीम और अनन्त ससार में भौतिक तृष्णायें भी असीम और अनन्त हैं, इसलिये जो ससार का सार है, जो महानतम के साथ सूक्ष्मतम भी हैं, वे उस आनन्दप्रद के आनन्द को पहले भीतर धारण करते हैं फिर बाहर व्यक्त करते हैं।

स्तुति होती तब है जब स्तुति करने वाला और जिसकी स्तुति की जा रही है, दोनों अभिमुख हों। आदान-प्रदान भी तभी होता है जब लेने वाला और देने वाला दोनो आमने-सामने हों। अभि-स्तुति वहीं है जहा स्तुति करने वाले से स्तुत्य को पूर्णतया समझा है, जाना है, पहिचाना है। यह बिना दर्शन और मिलन के कैसे सम्भव है, अतएव आत्मना जिसने परमात्मा का साक्षात्कार किया है जिसने इस सर्वब्रह्म को ज्ञान से समझा है और स्वयम् ब्रह्मकी स्थिति में हो गया है, वही प्रयम दर्शन, पुनः आत्म समर्पण तत्पश्चा

(शेषपृष्ठ ११ प)र

### आनन्द के ही गीत मै गाऊँ !

घट घट वासी अन्तर्यामी,
अपने घट में तुमको पाऊँ।
मन मन्दिर में मेरे स्वामी,
तेरी पावन ज्योति जलाऊँ ।।

दूर करूं अज्ञान अंधेरा,
तोड़ूं मैं विषयों का घेरा।
रीझे जिस विधि मेरे प्रीतम,
उस विधि तुमको मैं रिझाऊँ ।।
घट-घट ··

काम क्रोध की ये ज्वालाएं
मेरे तन मन को जलाएं।
शान्त हो जिस प्रेम सुधा मे,
उसकी पावन धार बहाऊँ ।।
घट-घट···

सूनी है मेरी जीवन नगरी,
खाली है मेरे मन की गगरी।
तुम आओ और रस छलकाओ,
जिससे निज को मस्त बनाऊँ ।।
घट-घट ··

युग युगों से मन है प्यासा,
दर्शन की लेकर अभिलाषा।
तेरे मिलन को मेरे प्रीतम,
पल-पल पथ मे नयन बिछाऊँ ।।
घट-घट ·

तेरे बिना प्रभु कौन है मेरा,
आनन्दमय है जिसका डेरा।
कामना 'कमलेश' की है यह,
आनन्द के ही गीत मैं गाऊ ।।
घट-घट ··

—सुश्री कमलेश बजाज

लखनऊ-रविवार २ मार्च ६९ दयानन्दाब्द १४४
सृष्टि सवत् १९७२९४९०६९

## उद्यानम् ते पुरुष नावयानम्

ऋषियों, मुनियो, तपस्वियो व ज्ञानियो की पवित्र भूमि कभी आर्यावर्त्त के नाम से सम्बोधित होती थी, क्योकि उस पर विचरण करने वाले मानव आर्यत्व को धारण करते थे। मानव योनि के नीचे पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग की योनियो मे पुन· वापस जाना उन्हे प्रिय नहीं था। वे तो सर्दव ऊंचा उठना चाहते थे। उनकी एकमात्र कामना होती थी ऊँचा और ऊंचा और अधिक ऊँचा, देव फिर महादेव, ऋषि, महर्षि। कहाँ तक ऊँचा उठा जाये, किस सीमा तक तो परमेश्वर की अमृतवाणी ने उसे परम तत्व की उच्चता तक निर्धारित किया था, जो अनन्त और असीम है। एक ऋषि से पूछा गया था कि परमात्मा की वेदवाणी का अध्ययन कब तक करते रहोगे? 'तब तक' जब तक मोक्ष या मुक्ति प्राप्त नहीं होती।'

'और मुक्ति से लौटने पर भी, जन्म-जन्मान्तर मे, क्योकि परमात्मा की यह अमर वाणी ही मानव के लिये कल्याण कीर्त्ति है। साधक की अभिलाषा तो वेद की यह पावन ऋचा बतलाती है—

*यदग्ने स्यामह त्व त्व वा घा स्या अहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः।*
[ऋ० ८।४४।२३]

अर्थात् वह उच्चतम स्थिति जिसमे मैं तू और तू मैं हो जाते हैं। चातक मेघ, चन्द्र चकोर की प्रेम स्थिति, ज्योति मे ज्योति समाहित होने वाली परम स्थिति।

दुर्भाग्य से जब वेद का पठन-पाठन बन्द हो गया। स्वार्थियों एवं वाममार्गियों ने वेद ज्योति को बसाने की अपेक्षा मानव कृत रचनाओ को प्रमुखता दी तो मानव के पतन का आरम्भ हुआ, जब मानव, दानव बन गया तो आर्यावर्त्त, आर्यों का प्रदेश न रहा, यह निशाचरो की भूमि हो गई। चक्रवर्ती राज्य समाप्त हो गए। दलबन्दियो ने सघर्षो का सृजन किया। जब सगठित हृदयो की माला टूटी तो शान्ति के मोती बिखर गए। जब हृदय बटे तो भूमिया भी बॅटीं, छोटे-छोटे अनेक राष्ट्र उठ खड़े हुए—पतन की चिकनाहट पर द्रुत गति से पाव फिसलने लगे, जातियाँ, उपजातिया एक ईश्वर के स्थान पर मनगढ़न्त सहस्रो ईश्वरो की प्रतिमाओ का पूजन। देवताओ की जननी भारत भूमि की भी अनार्यो के कारण अधोगति हुई। जो कभी आर्य थे, और चक्रवर्त्ती साम्राज्य स्थापित करते थे, वे दास और दासिया बने। कभी आर्य कहलाते थे, फिर हिन्दू नाम से सम्बोधित होने लगे। आज उस शब्द मे तो गर्व का अनुभव करते हैं, परन्तु आर्य कहने व कहलाने मे दम घुटता है।

सिन्धु प्रदेश पर पश्चिम से आने वाले आक्रमण कारियो के आक्रमण हुए और मलेच्छो का प्रवेश हुआ। पावन सिन्धु की घाटी के निवासी सिन्धु सम्बोधित हुए—आज भी सिन्ध प्रदेश के समीपवर्त्ती राजस्थान के अनेक भागो मे 'श 'स' का 'ह' बोला जाता है। 'साग' को 'हाग' कहा जाता है। आप जोधपुर चले जाइए, आज भी गृह देवियो को आप यह कहते सुनेंगे—'आज काई हाग रान्ध्यो? [अर्थात् आज क्या साग पकाया गया है?] अपने विद्यार्थी जीवन की एक मनोरजक घटना की अभी तक स्मृति मेरे मानस पटल पर है। उस समय मै सरदार पुरा मे सरदार हाई स्कूल का विद्यार्थी था। उस नये मोहल्ले मे नवीन आर्यसमाज का भवन बनाया गया था। हम विद्यार्थी गण साप्ताहिक अधिवेशनो मे नियमित रूप से जाते थे। एक दिन एक विद्यार्थी से पूछने पर जब कि नगर मे कोई वार्षिक उत्सव था, मुझे यह उत्तर मिला—'आज हाम रे हाढे हात बजे हवामी दयानन्द जी रा हत्यार्थ प्रकाश पर भाषण होवेला।' 'मै ये पक्तियाँ होली पर्व पर पाठको के मनोरजन के लिये तो लिख ही रहा हू, किन्तु इनके पीछे हम यह तो देखे कि 'स' व 'श' का गलत उच्चारण जब उस प्रदेश मे 'ह' करके होता है तब क्या 'सिन्धु' 'हिन्दु' नहीं हो सकता।

अनार्यत्व के कारण पतनशील ही नहीं वरन् मरणशील जाति में नवजीवन का सचार करने के लिए उस देव दयानन्द ने वेद सुधा पी थी और पिलाई थी। वेदामृत पिलाकर इस मृत तुल्य जाति को पुन जीवित जागृत और उत्तिष्ठ करने के लिए आर्यसमाज नामक सस्था खडी की गई थी। आज वेद का सोपान न करने से आर्य्यसमाज के सदस्यो का निजी आर्यत्व कहा पर स्थित है, यह विचारणीय है। आर्यजगत् के पूज्य आनन्दस्वामी जी से जिनकी इधर लखनऊ नगर में कथा हुई है, जब मैं मिला और पजाब की स्थिति के विषय मे वार्तालाप किया, तो जो शब्द उनके मुखवृन्द से निकले, उनमे मुझे उन की अन्तर पीडा की आत्म अनुभूति हुई और मैने आत्मना दृढ निश्चय किया कि या तो आर्यसमाज का कायाकल्प करूँगा अथवा ऋषि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने के लिये इस समाज रूपी मृत शरीर को जिसके अमरत्व के नारे 'आर्यसमाज अमर रहे' शब्दों मे लगाये जाते हैं, छोड़कर किसी नवसमाज रूपी शरीर के माध्यम को अपनाऊँगा।

आर्यसमाज के काया-कल्प के लिए मेरे हृदय मे जो एक तूफान है, उमडता हुआ मस्त सिन्धु है, उसे व्यक्त करने के लिये लेखनी व वाणी मे मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं। मै अपनी आत्मवाणी को सुनता हू और तदनुसार कर्म मे प्रवृत होता हू। मेरी आत्मवाणी मुझसे सदैव एक बात प्रमुख रूप से कहती है—उद्यान ते पुरुष नावयानम्" ऊँचा उठना है, नीचे नहीं गिरना है। समाजे या सस्थाएँ व्यक्तियो से बनती और बिगडती हैं। आज आर्यसमाज के आर्य समाजी ठीक नहीं हैं इसलिए आर्य समाज दूषित हो रहा है। सस्था गौण है, उसमे काम करने वाला पुरुष प्रमुख है, अतएव सस्था का निर्माण चाहते है तो व्यक्ति का निर्माण कीजिए। समष्टि का उत्थान चाहते हैं तो व्यष्टि का उत्थान करो।

सघर्ष चाहे सार्वदेशिक स्तर के हो, चाहे प्रान्तीय, चाहे जिले अथवा किसी एकाई मे, मूल में व्यक्ति का पथ-भ्रष्ट होना है। आज क्या आर्यसमाज के सदस्य व साधारण जन के चरित्र मे कहीं कोई भेद दृष्टिगत होता है? जब तक आर्यसमाज के सदस्यो का व्यक्तित्व पृथक दिखाई नहीं देगा तो अनार्य और आर्या मे क्या भेद रहेगा। मैं जब देखता हू कि होली जैसे पर्व पर भी आर्यसमाजी साधारण जन के साथ मिलकर वैसे ही अपने मुह काले करता हे, जब विवाहो पर वरो को वही ताजिये पहनाता है, सादगी के स्थान पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे 'घर फूक तमाशा देख' का आह्वान करता है कर्मकाण्ड मे मे पुनः उन्हीं बाह्याडम्बरो को स्थान देता है और केवल मूर्तिपूजा का खडन करता है अपनी साधना उपासना की कोई चिन्ता नहीं करता है। वेद-वेद कहता है किन्तु वेद को न पढ़ता है और न पढाता है। धर्म की आवाज लगाता हैं किन्तु सारे कृत्य अधर्म के करता है। महर्षि दयानन्द की जयकार लगाता है किन्तु बात उस की एक भी नहीं मानता, तो मेरी आत्मा मे एक पीडा होती है, एक चीत्कार होता है और मैं आत्मना

## सभा के उपदेश विभाग के प्रोग्राम

श्री प० श्यामसुन्दर शास्त्री जी महोपदेशक सभा

२३-२ से ८ मार्च ६९ उत्सव व प्रचार आ० स० रसौली (बाराबकी)
९, १०, ११ मार्च उत्सव व विवाह " सिरौली (फर्रुखाबाद)
१३ से १५ मार्च उत्सव आ० स० हैदराबाद (उन्नाव)
१६ मार्च उत्सव आर्यसमाज सडीला (हरदोई)

श्री प० केशवदेव जी शास्त्री महोपदेशक सभा

७ से ९ मार्च ६९ उत्सव आ० स० औरैया (इटावा)
१४ व १५ मार्च सस्कार कुठिला (हरदोई)
२७ से ३० मार्च उत्सव आ० स० पडरौना (देवरिया)

श्री प० रामनारायण जी विद्यार्थी उपदेशक सभा

मेला प्रचार मिश्रिक आ० स० सीतापुर दि० २३-२ से ४-३ तक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर

२७ से ३० मार्च उत्सव आ० स० पडरौना देवरिया

श्री गजराजसिंह जी प्रचारक सभा

सम्प्रति मुजफ्फरनगर जिला मे प्रचारार्थ भ्रमण करेगे।

श्री धर्मराजसिंह जी प्रचारक सभा

२३-२ से ४-३-६९ तक उत्सव व प्रचार आ. स रसौली बाराबकी द्वारा

श्री वेदपालसिह जी प्रचारक सभा

७, ८, ९, मार्च उत्सव आ० स० औरैया (इटावा)
२० से २३ मार्च उत्सव आ० स० बिन्दकी फतेहपुर
२८, २९, ३० मार्च उत्सव आ० स० चोपन (मीरजापुर)

श्री खेमचन्द्र जी प्रचारक सभा

१२, १३, १४, १५, मार्च उत्सव आ स खड्डा बाजार (देवरिया)

श्री ज्ञानप्रकाश जी प्रचारक सभा

२३-२ से ४-३-६९ तक मेला प्रचार मिश्रिक आ. स सीतापुर

श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी प्रचारक सभा

२३-२-से ४-३-६९ मेला प्रचार मिश्रिक आ स सीतापुर

श्री जयपालसिंह जी प्रचारक सभा

९, १०, ११ मार्च उत्सव व विवाह आ० स० सिरौली (फर्रुखाबाद)

नोट—श्री प्रकाशवीर जी शर्मा, श्री मुरलीधर जी, श्री खड्गपालसिंह जी, श्री रघुवरदत्त जी शर्मा तथा श्री महिपालसिंह जी प्रचारक महानुभाव अपने-अपने जिले के समाजों में प्रचार और पते से सभा को सूचित करने का कष्ट उठावें, जिससे पुरोगम आने पर सूचित किया जाये।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

कह उठता हू 'मेरे प्रभो ! मुझे ज्योति प्रदान कर, मुझे राह दिखा ताकि मैं इन भूले-भटकों को पुन उसी सत्य मार्ग पर चला सकू।'

मैं जानता हूं कि पथ कटकाकीर्ण है, यह तप का मार्ग है, यहां पहले कष्ट ही कष्ट उठाने पड़ते हैं, पीड़ा ही पीड़ा है, किन्तु यह वह मार्ग है, जहा पहले काटे हैं, बाद में फूल हैं, पहले कष्ट है तत्पश्चात् आनन्द है। सम्भव है ऐसी पीड़ा आर्यसमाज के अनेक शुभचिन्तकों में हो जिसे अपने हृदय मे संजोए वे चुपचाप कराहते हों। मै उन सबका आह्वान करता हूं वे आगे आए 'पुरुषार्थ ही इस दुनिया मे सब कामना पूरी करता है।' पुरुषार्थी बने, परमात्मा के सच्चे उपासक बनकर आत्म शक्ति प्राप्त करें। समाजों और सस्थाओं से भलो को प्रवाहित कर दें और अनार्यत्व को दूर करने के लिए आर्यत्व की चुम्बकीय शक्ति को अपने भीतर धारण करें। युग-प्रवाह मे न बहकर उसे अपने चिंतन, मनन और शुभ कर्म से नया मोड दे। जीवन को ऐसा शुद्ध सुपावन और सुगंधित बनाए कि दुर्गन्धि विलीन हो जाए। कर्म सौंदर्य को देखकर कुरूप पाप का नामोनिशान मिट जाए। आज 'मस्त' बनने की आवश्यकता है, देखें कौन 'उद्यान ते पुरुष नावयानम्' की वेद सूक्ति को जीवन में उतार कर भौतिक भोगों की शैय्या को तजकर, योग के कटक पथ पर आगे आता है। ★

## आवश्यक निश्चय

अन्तरङ्ग सभा १५-२-६९ के नि०स० ११ द्वारा निश्चय हुआ है कि आर्यसमाज के विवादो सम्बन्धी अपील शुल्क २०) के स्थान पर १००) तथा अपील करने का समय घटना के ३० दिन बाद तक का निर्धारित किया जावे।

यह भी निश्चय हुआ कि न्यायाधीशो का मार्ग-व्यय अपील कर्ता से जमा कराया जाया करे।

२३—आ० स० बहराइच एव उससे सम्बन्धित आर्य कन्या जूनियर माध्यमिक विद्यालय के सगठन को श्री सभा प्रधान जी द्वारा भग कर दिया गया तथा व्यवस्था हेतु श्री प० आशाराम जी पाँडेय को प्रशासक पद पर नियुक्ति कर दी गई है, सभा सूचित हुई।

३०(७) श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' के रिक्त स्थान पर नवीन अन्तरङ्ग सदस्य की नियुक्ति का विषय प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि श्री कृष्णबल्देव जी आर्य लखनऊ निवासी को श्री 'वसन्त जी के रिक्त स्थान पर अन्तरङ्ग सदस्य बनाया जाय।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.
सभा मन्त्री

## आगामी अंक बन्द रहेगा

होली के अवकाश के कारण आगामी ९ मार्च का आर्यमित्र बंद रहेगा। अब १६ मार्च का अङ्क पाठकों की सेवा मे पहुचेगा, एजेन्ट व पाठक नोट करलें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, एम एल ए.
अधिष्ठाता आर्यमित्र व
मन्त्री सभा

## उत्सव सम्बन्धो सूचना

प्रदेशीय आर्य समाजों को विदित हो कि उत्तरप्रदेश मे चुनाव के कारण दिसम्बर जनवरी तथा फरवरी मास मे प्राय: आर्यसमाजों के उत्सव स्थगित रहे हैं। अत आर्य समाजें उत्सव की तिथिया नियत कर वैदिक धर्म का प्रचार कराने का आयोजन करें। जिससे जन-जागरण मे जागृति हो। यदि आर्थिक कठिनाइयो के कारण उत्सव न हो सकें तो कम से कम एक-एक सप्ताह 'कथा' द्वारा प्रचार कराने की योजना बनाए। विश्वास है कि आर्यसमाज इस ओर विशेष ध्यान देकर सभा को सूचित करेंगे।

## उपदेश-विभाग की सूचना

दयानन्द प्रचारक सघ के अवैतनिक उपदेशक श्री प० राम किशोर जी शुक्ल एम ए. एल. एल बी एडवोकेट, पूर्व सदस्य महापालिका व नगर विकास बोर्ड १/५ नवाबगज कानपुर निवाशी ने सभा के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार करने का वचन दिया है। आपने एम. ए सस्कृत भाषा मे और वैदिक धर्म के साहित्य का विशेष रूप से स्वाध्याय किया है। ओजस्वी वक्ता हैं, अतः समाजों को चाहिए कि आपको उत्सवों, कथाओं में आमन्त्रित करने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल ए.
सभा मन्त्री

साप्ताहिक अधिवेशन वैदिक स्वाध्याय प्रवचन—

# यह संसार क्या है ?

[ प्रवचनकर्त्री—वेदाचार्य श्रीमती देवी शास्त्री, बरेली ]

[ मैने वेदाचार्य किया इसका कोई उपयोग आर्यसमाज मे नहीं क्योकि किसी कन्या गुरुकुल मे वेद नहीं पढाया जाता और न आर्यसमाज के पास कोई वेद सम्बन्धी कार्य है जो आर्यसमाज मुझ से ले। स्वान्त सुखाय वेदाचार्य किया और ऋषि-भक्तो की वेद स्वाध्याय प्रवृत्ति के लिये यह वेद प्रवचन माला प्रारम्भ करती हू। साप्ताहिक अधिवेशनो मे जहां आर्यसमाजो मे विद्वान् नहीं हैं वहा प्रति सप्ताह यह प्रवचन पढा जाया करेगा और जहा विद्वान् हैं उन्हे इन प्रवचनो से सहायता भी मिल सकेगी। —लेखिका ]

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत् किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद मे भी है और यजुर्वेद मे भी दो जगह है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इसका अर्थ इस प्रकार किया है।

हे मनुष्यो ! (व) तुम्हारा (निषदनम्) निवास (अश्वत्थे) अ+श्व+त्थ अश्वत्थ अर्थात् कल न रहने वाले अनित्य शरीर मे मैंने किया है। और (व.) तुम्हारा (पर्णे) कमल के पत्ते पर जल के समान चलायमान संसार मे (वसति) वास किया है। (गोभाज) इन्द्रिय आदि वाले तुम लोग (इतकिल) निश्चय करके (असथ) हो (पूरुषम्) सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को (सनवथ) सेवन करो।

महर्षि अपने वेद भाष्य मे भावार्थ मे दो और बातों पर प्रकाश डालते हैं—

१—क्योकि इस मन्त्र का देवता ओषधि या वैद्य है, और ऋषि भिषक् है अत इस मन्त्र मे यह दर्शाया गया है कि कि जिस प्रकार ओषधि फल-फूल और पत्तो से शोभायमान होती है, इसी प्रकार रोग रहित शरीर शोभायमान होता है।

२—परमात्मा और जीवात्मा के सयोग से उत्पन्न सुख को प्राप्त करो।

व्याख्या—इस पवित्र वेदमन्त्र मे प्रभु ने निम्न लिखित उपदेश ससार को दिया है।

१—हे मनुष्यो जिस ससार मे तुम रहते हो, यह कल नष्ट हो जावेगा। जो मकान और कोठियाँ जमीन तू अपनी समझकर मतवाला हो रहा है, यह धरती ही किसी दिन प्रलय मे समा जावेगी। तब न मकान होगा न कोठी और न तेरी यह जमीन, यह सब थोड़े दिन की लीला है, खेल खेल ले।

२—प्रलय मे अभी देर है, पर यह तेरा शरीर जिसमें मैंने तुझे बैठा दिया है, यह ऐसा ही चचल है जैसे कमल पर जल जो जरा भी नहीं टिकता। तनिक-सी भी हवा कमल पर स्थित जल को गिरा देती है, ऐसे ही कोई तनिक-सा बहाना होगा और तेरा शरीर छूट जावेगा, तुझे पता भी नहीं चलेगा। एक पैर उठाने पर दूसरा उठेगा या नहीं इसका भी पता नहीं।

३—जितने दिन तेरा जीवन है, इसकी शोभा शुभ कामो से

करले। जब ससार मे कुछ है ही नहीं तो क्यों बुराई करके अपयश लेता है।

४—ज्ञानेन्द्रियो के सहारे से जो साधन तुझे मैंने दिये हैं, उनसे मेरा साक्षात्कार कर।

५—इस साक्षात्कार से जो तुझे सुख मिलेगा वह ही सत्य है।

६—वैद्यो के उपदेश से औषध सेवन कर निरोग बन, जिससे अधिक समय मनुष्य देह चले और सशक्त शरीर से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त कर।

## इस मन्त्र की अशुद्ध व्याख्या

इतने सुन्दर उपदेश प्रद इस मन्त्र की व्याख्या सायणाचार्य उवट महीधर भारतवासी, तथा विलसन आदि पाश्चात्य-देश निवासी कितनी ऊटपटाग करते हैं, उसका दिग्दर्शन कराती हू।

## डा० विल्सन का अर्थ

पाश्चात्य विद्वान् डा० विल्सन ने पूरे ऋग्वेद का अग्रेजी अनुवाद किया है। इन डा० विल्सन के अर्थों का खण्डन महर्षि ने अपने वेद भाष्य मे किया है। डा० विल्सन लिखते है कि—

Your abode is in the ASHWATTATTA, your dwelling is established in PALASHA, you are assuredly the distribulers of cattle, in asmuch as you bestow them on the Physician,

(The ASHWATTA and the PALASHA)

The Ashwatta and Palasha trees beer achief part in Sacrifices and are there fore Said to be the abode of plants Mahdhar (XII 79) says the Vessels in which the offerings are presented and made of the wood of there two The Ashwatta is the Ficus Religiora and the Palasha [in the text] is the Butea Frondosa The Distributers of cattle

Sangana explains GobhaJah as Gavam Bhajayitrya, Mahidhar renders go by Aditya you are partakers of the sun i e plants offered to fire or the offering thrown in to the fire appreachis the snn

अर्थात्—हे ओषधियो ! पीपल मे तुम्हारा घर है और ढाक वृक्ष मे तुम स्थित हो। आप निश्चित रूप से पशुओ के वितरक हो। क्योंकि आप उन्हे चिकित्सक को देती हो।

## अश्वत्थ और पलाश

अश्वत्थ पीपल और पलाश = ढाक के वृक्ष यज्ञो मे विशेष रूप से प्रयुक्त हैं। और इसलिये ये ओषधियो के निवास स्थान कहे जाते हैं। महीधर यजुर्वेद भाष्य १२-७९ मे कहता है कि वे पात्र जिनमे आहुतियाँ रखी जाती है इन दोनो वृक्षो के बने हुए होते हैं। अश्वत्थ का अर्थ है— Ficus Religiosa और पलाश का अर्थ है—Butea frondosa

पशुओ के वितरक—सायण 'गोभाज' की व्याख्या 'गवा भाजयित्र्य' अर्थात हे ओषधियो तुम गौओ की वितरक हो। महीधर 'गोभाज' का अर्थ करता हुआ 'गो' का अर्थ सूर्य करता है। अर्थात् अग्नि मे डाली हुई ओषधि आग मे डाली हुई आहुति सूर्य के पास पहुच जाती है।

इस प्रकार के अर्थ पाश्चात्य विद्वानो ने सायण और महीधर का सहारा ही लेकर किये हैं जिनसे वेदो का कोई महत्त्व प्रकट नहीं होता प्रत्युत जगलियो की सी बातें मालूम होती है।

## सायणाचार्य और उवट महीधर की व्याख्या

जिस सायणाचार्य और उवट महीधर के भाष्यो की अति प्रशसा पौराणिक जगत् मे है, उनके भाष्य का नमूना पाठकगण पढे।

ये लोग इस मन्त्र का भाष्य इस प्रकार करते है—

हे ओषधियो या ओषधि देवताओ (अश्वत्थे) पीपल की बनी हुई उपभृत नाम वाली स्रुवा मे (व) तुम्हारा (निषदनम्) स्थान है और (पर्णे) ढाक की लकडी की

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# साहित्य-सौरभ

## 'उठो ! उठो !! उठो !!!'

★

उठो ! उठो !! उठो !!! उठो ! उठो !! उठो !!! ।
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ॥

'वेद' के प्रचार को,
'धर्म' के प्रचार को,
विश्व के कल्याण को,
जाति के उत्थान को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो आर्यों, उठो ! उठो !! उठो !!! ॥

भेदभाव मिटाने को,
मिथ्या प्रचार हटाने को,
शत्रुता मिटाने को,
मित्रता बढ़ाने को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो आर्य वीरो, उठो! उठो !! उठो !!! ॥

शान्ति की स्थापना को,
समाजवाद लाने को,
नशा बन्दी करने को,
गोरक्षा करने को,
वीर तुम उठो, धीर तुम कठो ।
उठो आर्य कुमारों, उठो! उठो!! उठो!!! ॥

चीन की पिटाई को,
पाक की कुटाई को,
आर्यों की सुरक्षा को,
अनार्यों से लड़ने को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो क्षत्रिय वंशजो, उठो! उठो!! उठो!!! ॥

गरीबी को मिटाने को,
भुखमरी हटाने को,
धर्म के बचाने को,
राष्ट्र के विकास को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो वैश्य वंशजो, उठो! उठो!! उठो!!! ॥

देश के उत्थान को,
समस्याए सुलझाने को,
जनता के कल्याण को,
विद्या के प्रसार को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो राजनीतिज्ञो, उठो! उठो!! उठो !!! ।

अनुसन्धान करने को,
भविष्य के सुधार को,
सभ्यता प्रदर्शन को,
भ्रष्टाचार मिटाने को
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो विद्यार्थियों, उठो! उठो!! उठो!!! ॥

अन्न के उपजाने को,
कृषी के विकास को,
खेतों के सुधार को,
राष्ट्र के सम्मान को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो कृषक वर्ग तुम, उठो! उठो!! उठो!!! ॥

अग्रेजियत हटाने को,
मानवता लाने को,
देश के बचाने को,
सीमा की सुरक्षा को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो कर्णधारों, उठो! उठो !! उठो !!! ॥

धार्मिक क्रान्ति करने को,
सामाजिक क्रान्ति करने को,
राजनैतिक क्रान्ति करने को,
सांस्कृतिक क्रान्ति करने को,
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ।
उठो 'कण्व' साथियो, उठो! उठो!! उठो!!! ॥
उठो! उठो!! उठो!!!, उठो! उठो! उठो!! उठो!!!
वीर तुम उठो, धीर तुम उठो ॥

—"कण्व" विद्यार्थी, बरेली

## जागृति-ज्योतिः

वे ही मनुज ससार मे साक्षात् देव स्वरूप हैं ।
विभु की विशेष विभूति हैं अरु अद्वितीय अनूप हैं ॥
जन्म वे लेते कभी मतिमान मानव लोक में ।
जगजगाते जगमगाते आत्म-ज्ञानालोक में ।

गुरु दयानन्दर्षि स्वामी जी तथाविध एक थे ।
एक था आदर्श जिनका, कार्य किन्तु अनेक थे
मन, वचन से कर्म से, धन साधकों से ध्यान से ।
वेद प्रण पूरा किया, प्रिय प्राण के बलिदान से ॥

उस दयानन्दर्षि का बस एक वैदिक ध्येय था ।
विश्व सारा हेय था, श्रुति का समर्थन श्रेय था ॥
"आर्य हो ससार सारा, वेद का सुप्रचार हो,
तन रहे या न रहे पर विश्व का उपकार हो ॥"

तर्क के तिग्मांशु थे, जागृति-ज्योतिःपुञ्ज थे ।
वेद के वागीश थे, पांडित्य-पाथ-निकुंज थे ॥
शास्त्र-समरांगण सुभट, व्याख्यान वाचस्पति महा ।
नित्य श्रुति सघर्ष मे यश हाथ में जिनके रहा ॥

आर्य सामाजिक जगत के नाव-खेता आप थे ।
राष्ट्र के उद्धार के हित, नव्य नेता आप थे ।
प्राचीन वैदिक पथ-प्रणाली के प्रणेता आप थे ।
मत-तमस पर 'सूर्य' सम, विद्वत् विजेता आप थे ॥

—डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालकार एम.ए. डी-लिट्, अजमेर

★

फाल्गुन बदी तीज भारतीय इतिहास का एक गौरवमय दिन है। धर्मरक्षक शिवाजी का जन्म आज के ही दिन हुआ था। शिवाजी के विषयमें महात्मा गांधी ने कहा था— ‘शिवा जी महाराज के विषय में इतिहासकार क्या कहते हैं, उस तरफ ध्यान देने की अपेक्षा मैं इस बात को अधिक महत्त्व दूगा कि सन्तों ने उनके विषय मे क्या कहा है? अमर सन्त पुरुषो ने उन्हे अच्छा प्रमाण-पत्र दिया हो, तो वह मेरे लिए काफी है।” कहना न होगा सत तुकाराम और समर्थ गुरु रामदास ने जो उनके प्रति आदर बचन कहे हैं वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। महाराष्ट्र के महाकवि मोरो पन्त ने उन्हे जनक के समान बताया है और महाराष्ट्र की जनता ने उन्हे गो ब्राह्मण प्रतिपालक-छत्र-की उपाधि प्रदान की है। स्वामी दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में शिवाजी की वीरता का उल्लेख किया है। वस्तुत: शिवा जी का इतिहास हमे बताता है कि वे अपने समय से बहुत आगे बढे हुए थे। हरेक काम नियत समय पर होना ही चाहिए, निश्चित की हुई योजना को क्रम से पूरा करना ही चाहिए, होने वाला खर्च अनुमान से एव हिसाब से बाहर जाना ही न चाहिये इन बातो मे शिवाजी की दृढ़ता प्रशंसनीय है। उनकी इस शिक्षा का आधार उनकी माता जीजाबाई थीं। उनकी इस आदर्श माता ने रामायण और महाभारत के आदर्शों की दीक्षा दी थी और यह सिखाया था कि धर्म के लिए जीना चाहिए तथा धर्म के लिए मरना चाहिए। शक्ति के उपासक शिवा जी ने देश की धर्म शक्ति को चमका दिया और हिन्दुस्तान के सामने एक उज्ज्वल आदर्श देश को दिया। उनका जीवन मन्त्र था अन्याय के खिलाफ लड़ना और किसी हालत मे हिम्मत न हारना।’ ‘कार्यम् वा साधयेयम् देह वा पातयेयम्’ ‘करो या मरो’।

शिवा जी जयन्ती के दिन एकत्र बालिकाओं के सम्मुख सघर्षमयी दुनिया में अपने को सशक्त, सक्षम

# वनिता विवेक

बहनों की बातें (५)

## हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्

और निपुण बनाने के लिए सरला बहन ने शिवाजी की तरह आत्मिक शारीरिक और मानसिक शक्ति से सम्पन्न होने का उपदेश दिया। उन्होने कहा शिवाजी की मां जीजाबाई बचपन से ही शिवाजी के शारीरिक विकास की ओर ध्यान देती थीं और साथ-साथ उनकी आत्मिक शक्ति और मानसिक शक्ति को बढ़ाने का भी प्रयत्न करती थीं। मानसिक और आत्मिक शक्ति से पूर्ण शारीरिक शक्ति को बढाने का उपाय करना चाहिये। उपनिषदो मे बल की महिमा गाई गई है। दुर्बल कुछ नहीं कर सकता। एक बलवान् मनुष्य आता है और वह सैकडो को झुका देता है। शरीर स्वस्थ न हुआ, बलवान् न हुआ तो न हम उठ सकेंगे, न बैठ सकेंगे। अत्याचार के विरुद्ध लड-भिड भी न सकेंगे, सत्सग द्वारा ज्ञानार्जन भी न कर सकेंगे। बल नहीं तो कुछ नहीं। इसलिये कहा गया है बल की उपासना करो। श्रुति का बचन है –

नायमात्मा बलहीनेन लभ्य

दुर्बलो के लिये दासता और दु ख तैयार रहते हैं। यदि शरीर मे शक्ति नहीं तो कुछ नहीं। इमारत की नींव गहरी और मजबूत होनी चाहिए। चट्टानो पर खडी की गई इमारत गिर नहीं सकती। बालू पर खडी इमारत कब गिर जायगी कुछ कह नहीं सकते। शरीर सब की नींव है।

शरीर माद्य खलु धर्म साधनम्।

शरीर सब धर्मों का मुख्य साधन है। शरीर की उपेक्षा करना मूर्खता है, पाप है। वह समाज और ईश्वर के प्रति अपराध है। बिना मजबूत शरीर के हम न मातृ, पितृ ऋण चुका सकते हैं, न आचार्य ऋण, न ऋषि-ऋण। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये बालक-बालिकाओ, स्त्री, पुरुष सभी को शारीरिक श्रम या व्यायाम करना चाहिये। व्यायाम से शरीर स्वस्थ और सुन्दर बनता है। व्यायाम से मनुष्य आत्मरक्षा कर सकता है। खेल भी व्यायाम के अङ्ग है। खेलो से हमें कई अन्य गुणो के सीखने का अवसर मिल जाता है। खेल मे बडे और छोटेपन का भाव दूर हो जाता है। अनुशासन आता है। नियम मे रहना आता है। अनासक्ति आती है। खेल निष्ठा है, खेल सत्यता है, खेल आत्म विस्मृति है। बालकों के खेल की तरह बालिकाओ केभी खेल हैं। उनके द्वारा शरीर मे सौष्ठव आता है, शरीर मे चपलता आती है। बालिका जरा बडी हुई हम उसे खेलो से विरत कर देते हैं जिससे वह प्रारम्भ से ही अनेक रोगो से पीडित हो जाती है।

शरीर की स्वस्थता के लिए कई तरह के आसनो की खोज की गई है। आसनो के द्वारा थोडे समय मे बहुत व्यायाम हो जाता है। आसनो के साथ प्राणायाम भी जुडा रहता है। भुजगासन, गरुडासन, कुकुटासन, शीर्षासन आदि पुरुषो की भांति स्त्रियो के लिये भी उतने ही उपयोगी हैं। स्त्रियो तथा पुरुषो को भी कुछ ऐसे शारीरिक श्रम करने चाहिये जिनसे निर्माण कार्य होता रहे। सब्जिया उत्पन्न करना, चक्की चलाना, बगीचे मे पानी देना, फूल-फल उत्पन्न करना यह ऐसे ही श्रम के कार्य हैं। शकुन्तला नाटक मे प्रियवदा, अनुसुइया आदि छात्राएं कण्व ऋषि के आश्रम मे शिक्षा प्राप्त करते हुए पानी देती थीं। शकुन्तला पानी देते-देते थक जाती है और पसीने से तरबतर हो जाती है। इसी प्रकार कपडे स्वय धोना, अपना कमरा स्वय साफ करना आदि भी स्त्रियो के लिए अच्छे व्यायाम है। ‘एक पन्थ दुइ काज’।

★ श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्कार
एम ए एल-टी, गोरखपुर

इस प्रकार व्यायाम से पट्ठो को शक्ति मिलती है। मस्तिष्क बलवान होता है, फेफडे दृढ़ बनते हैं रक्त शुद्ध होता है और आयु दीर्घ होती है।

औषध नहीं व्यायाम समाना,
व्यय नहीं तनिक औ लाभ महाना।

व्यायाम स्वास्थ्य सफलता के लिए आवश्यक तत्त्व है। व्यायाम करते हुए आत्म विश्वास रखना चाहिये हम स्वस्थ, सबल और शक्ति शाली बन रहे हैं।

मनोरमा ने पूछा कि सबल होने के लिए क्या केवल व्यायाम से ही काम चल जायगा, या भोजनादि के नियमो का भी हमे कुछ पालन करने की आवश्यकता है? मेरे विचार से भोजन की महत्ता व्यायाम से भी अधिक है?

सरला बहन ने कहा—भोजन और व्यायाम दोनो को दो क्षेत्र है अत कौन अधिक और कौन कम है यह कहना ठीक नहीं। भोजन का शरीर के निर्माण और स्वास्थ्य को बढ़ाने मे बहुत अधिक स्थान है। सरला बहन ने भोजन की महिमा का वर्णन करते हुए गीता का निम्नलिखित श्लोक पढा–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।

उचित भोजन, ठीक प्रकार रहना, उचित निद्रा, उचित कर्म, उचित प्रयत्न करना, यह सब कुछ जो कुछ करता है वही योगी है और उनके दु:ख नष्ट हो जाते हैं। परन्तु आजकल युक्ताहार अर्थात् उपर्युक्त एवं नियमित भोजन की जो दुर्दशा हो रही है उसके परिणाम स्वरूप समाज और व्यक्ति का नाश हो रहा है। [क्रमश]

# आर्यों के लक्षण

परिव्राजकाचार्य वेदस्वामी मेधारथी सरस्वती एम०ए०, जीवापुर-टङ्कारा

आर्य श्रेष्ठ का नाम है ! जिसमे श्रेष्ठ गुण कर्म हो ! "ऋ" गतौ से आर्य शब्द बना है । जो गतिशील हो, प्रगति प्रेमी हो वह आर्य हैं । इतने मात्र से समझ नहीं आता कि किसको आर्य कहा जाय ! परिणाम प्रत्यक्ष है । आज आर्यसमाज मे आपाधापी आ पडी है । "लक्षण प्रमाणाभ्या वस्तु सिद्धि"

किसी भी वस्तु का ज्ञान उसके सुनिश्चित लक्षणों से ही होता है । गाय का लक्षण यदि कोई करे कि जिस प्राणी के ४ पैर हों वह गाय है । तब तो घोड़े, गधे, कुत्ते और बिल्ली गाय हो जांय । इसलिए (गाय का लक्षण) कुछ दूसरा ही करना पड़ेगा ।

जिसके गले मे गल कम्बल (सास्ना) हो—वह गाय है । इस विशेष लक्षण से भैंस, गाय नहीं कहला सकती, क्योकि गलकम्बल (सास्ना) गाय के गले मे ही हुआ करती है । इसी प्रकार 'आर्य' का लक्षण भी कुछ विशेष होना चाहिए । इसी समस्या को हल करने के लिये भीष्म पितामह ने आर्य का लक्षण सुनिश्चित कर दिया था ।

कर्त्तव्य आचरन् नित्य, अकर्त्तव्य अनाचरन् ।
तिष्ठति प्रकृताचारे, सवै 'आर्य' इतिस्मृतः ॥

इसका भावार्थ यह हैः—

(१) जो दैनिक कर्त्तव्य है उसको प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करता हो । अर्थात् महर्षि दयानन्द कृत पच महाविधि (सस्कार विधि नहीं) के अनुसार प्रतिदिन 'पच महायज्ञो को सम्यक् सम्पन्न करता हो ।

(२) जो अकर्त्तव्य है, सिद्धान्त विरुद्ध है । उसको कभी न करता हो । अर्थात् महर्षि दयानन्द कृत 'आर्योद्देश्यरत्न माला' के अनुसार ही व्यवहार करता हो । नमस्ते करता हो । नमस्कार नहीं । माता-पिता आचार्य अतिथि को तीर्थ मानता हो । हरिद्वार, काशी, टकारा, को तीर्थ न मानता हो । ये तो उत्तम धाम (स्थान) हैं । तीर्थ नहीं हैं ।

(३] जो प्रकृत आचार मे वेद के नियमित स्वाध्याय में कभी नागा न करता हो । अर्थात् महर्षि दयानन्द कृत 'आर्याभिविनय' का एक मन्त्र प्रतिदिन प्रात पढ लेता हो ।

प्रयोजन यह है कि जो सध्या, हवन, अतिथि यज्ञ का अभ्यासी होगा और कम से कम वेद का एक मन्त्र प्रतिदिन मनन पूर्वक पढता होगा । वह कभी भी अनार्य कार्य के करने मे प्रवृत्त नहीं होगा । यह हमारा जीवनभर का अनुभव है ।

आज तो 'आर्य' का लक्षण यह समझा जाता है—जो चन्दा करने मे कुशल हो, लडाई झगडे की बातों के बनाने मे रस लेता हो, पदाधिकारी बनने के लिये सभी कुत्सित कर्म करता हो, जाली मेम्बर बनाता हो, सन्ध्या कभी न करता हो । हवन को घी फूंकना समझता हो, अतिथि को आगन्तुक अराति (शत्रु) समझता हो ।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# शंका समाधान

## श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट की शंका का समाधान

[जो आर्य्यमित्र (अक ४३ दिनांक ८ दि० ६८) के पृष्ठ १६ पर प्रकाशित की गई थी]

मै कुछ आशंका के साथ एक परम अनुभवी योग्य पुरुष की शंका का समाधान करने की धृष्टता का साहस कर रहा हूं । आशा है वे मुझे इस ढिठाई के लिये क्षमा करेंगे ।

प्राकृतिक नियमों के अनुसार जब तक किसी व्यक्ति के पाप का घड़ा भर नहीं जाता और उसको उन पापों का प्रतिफल, दुःख मिल नहीं जाता, वह अनेक जन्मो तक पाप करता ही रहता है, और उसके पापों का समाहार भी जन्मजन्मान्तरों में विधाता के विधानानुसार होता रहता है । परमात्मा के उस विधान को मनुष्य यथार्थतः जान भी नहीं सकता । यदि मनुष्य किसी प्रकार उसे जान पाता तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा महर्षि दयानन्द प्रभृति महामहिम पुरुषों को तो अपने पूर्व जन्मो मे किये गये पापों का ज्ञान अवश्य हो सकता था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ । उन्हें अपने पूर्व जन्म कृत अज्ञात, अयोगी पापों का ज्ञान केवल उस समय हुआ, जब उनका फल दुख परमात्मा के विधानानुसार उनके सामने आया और दोनों ने ही अपने पूर्वजन्म कृत अज्ञात अयोग पापों को स्वीकार भी किया । अस्तु यह निर्विवाद है कि अनाचारी, मिथ्याचारी तथा भ्रष्टाचारी पुरुष जब तक परमेश्वर की व्यवस्थानुसार अपने किये हुए पापों के फल भोग नहीं लेते, माताओं के गर्भ में उनकी आत्मायें उसी व्यवस्था तथा उनके कर्मानुसार आती ही रहती हैं । जन्म तो उन आत्माओं को उनकी पाप करने की प्रवृति नष्ट हो जाने के पश्चात् भी जबकि वे कालांतर में सद्ज्ञान और सत्संगति पाकर कुकर्म करने लग जाते हैं, मिलता ही रहता है । क्योंकि सुकर्मों का फल सुख भी तो मिलना अवश्य है, जो बिना मनुष्य जन्म लिये सम्भव नहीं, जैसा कि हम अनेक ऐसी आत्माओं को राजा महाराजाओं अथवा धनाढ्य पुरुषों के घर जन्म लेते देखते हैं । जहां उन्हें बिना कुछ सुकर्म उस जन्म मे किए ही सभी प्रकार के प्रभूत सुख उपलब्ध होते रहते हैं, जो कि उनके पूर्व जन्मो मे किये हुए सुकृतों का ही फल हो सकता है । अस्तु पुनर्जन्म तो अनिवार्य है, जब तक कि मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ अपने पूर्व जन्मों के सभी सुकर्म और दुष्कर्मों के फल भोग पूर्ण न करले, जो ससार में विरले को ही सम्भव है । शेष सब को तो जन्म मरण के चक्र से छुटकारा प्रलयकाल तक मिल ही नहीं सकता ।

आत्मायें भी असख्य हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती और न परमात्मा के विधान को बदला ही जा सकता है । जब तक सृष्टि चल रही है, मनुष्य-जन्म उनके कर्मानुसार होते ही रहेंगे, क्योंकि हम सब कर्म करने मे स्वतन्त्र हैं, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र । अस्तु, भ्रूण हत्या तथा अन्य दुष्कर्म भी मनुष्यों की इच्छानुसार तब तक होते ही रहेंगे, जब तक कि वे उन्हें अपने दुष्कर्मों के फल स्वरूप दुःख भोग कर अथवा सत्सगति से सुबुद्धि प्राप्त कर स्वयं अपनी इच्छानुसार अपने ही अनुभवो के आधार पर अन्य प्रेरणा से अनुप्राणित होकर बन्द न कर दें ।

—बियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य २५ रायगंज, 'झांसी'

## आशीर्वाद !

प्रियवर 'वसन्त' जी,

आपकी वेद-मन्त्र-व्याख्या धारावाही रूप में आर्यमित्र के अंको मे पढ़ने को मिल रही है। भगवान् ने आपको भक्त-हृदय के साथ उज्ज्वल मस्तिष्क भी दिया है। आर्यजगत् के लिए आपका व्यक्तित्व उद्योग शील है। मंगलमय प्रभु आपको चिरायु करे।

यदि अपना कुछ परिचय दे सकें तो अनुगृहीत हूगा।

—मुंशीराम शर्मा
९/७० आर्यनगर, कानपुर

## वेदाध्ययन की रुचि

मान्यवर श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त',

सादर नमस्ते !

आर्यमित्र मे आपके लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं, जो कि प्रेरणाप्रद होते हैं, परन्तु इस बार १२ जनवरी के आर्यमित्र मे आपका लेख 'आइये हम भी चन्द्रलोक की यात्रा करें'। पढा जिसे पढकर मन मे कुछ आशा का सचार हुआ। आपने वेद का स्वाध्याय करने की प्रेरणा की है, परन्तु मुझ जैसे बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो कि सीधे वेद से इतने प्रेरणा-प्रद शब्द ग्रहण करने मे असमर्थ हैं। मेरी अपनी हार्दिक अभिलाषा है जैसा कि आपने अपने लेख के अन्त मे लिखा है कि समय-समय पर इस प्रकार के लेख प्रकाशित करेंगे। आप इस प्रकार का कम से कम एक लेख हरेक सप्ताह आर्यमित्र मे देने की कृपा करें ताकि इच्छुक सज्जन लाभ उठा सकें। आशा हैं आप प्रार्थना स्वीकार करने की कृपा करेगे।

—परमात्माशरण मन्त्री
आर्यसमाज मसूरी ( देहरादून )

## योग जिज्ञासा

आपने आर्यमित्र को वेद ज्ञान से ओतप्रोत करके वेदज्ञान की एक गगा बहा दी है, जो स्तुत्य है, परन्तु वेद ज्ञान के एक पूरक अङ्ग प्राणायाम और योगाभ्यास की ओर आपने आर्यमित्र के पाठको को अभी नहीं मोडा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थों मे अनेक स्थानो पर प्राणायाम की प्रसंसा की है। मुझे यह तो सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, कि ऋषि भाष्य का अध्ययन कर पाता, परन्तु दयानन्द ग्रन्थावली जन्म शताब्दि ससकरण का अध्ययन किया है और प्राणायाम सम्बन्धी स्थल एकत्रित करके अपनी कुछ जिज्ञासाये सम्पादक वेदवाणी के पास भेजी थी। उन्होने उन जिज्ञासाओ समेत समस्त लेख अपनी वेद वाणी मई १९६८ मे प्रकाशित कर दिया, और अपने नोट मे यह भी लिख दिया कि इस विषय के विशेषज्ञ इन जिज्ञासाओ पर प्रकाश डालें। परन्तु अभी तक किसी ने कृपा नहीं की है। स्वामी जी ने ७ या आठ स्थानो मे प्राणायाम की रीतियां बताई है, नव दीक्षित को उनमे भिन्नता प्रतीत होती है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे उन्होने उपदेश दिया है कि उपासना नाड़ियो द्वारा ही की जाती है। यदि आप इस विषय को भी आर्यमित्र द्वारा पाठको के सम्मुख रक्खें तो शारीरिक और आत्मिक उन्नति का सुलभ साधन सर्व साधारण को प्राप्त हो जावे क्योंकि जब अभ्यासी लोग अपने-अपने अनुभव सामने रक्खेंगे तो प्रयास की ऊहापोह से वात, पित्त कफ प्रकृति वालो को अपने-अपने अनुकूल क्रियाओं के चुनाव मे आसानी होगी। मैंने अपनी धृष्टता से आपके अमूल्य समय का कुछ भाग लिया है, परन्तु ऐसे विषय के उपयोगी होने के कारण ही ऐसा किया गया है। शुद्ध और वैज्ञानिक पद्धति के अभाव मे उपासना के नये-नये और जनता को आकर्षित करने वाले व्यवसायी लोग अपने-अपने ढग का प्रचार कर रहे हैं और आर्ष प्रणाली किताबों मे पड़ी सड रही है। आप मे फिर प्रार्थना है कि वेद वाणी बनारस के वर्ष २० अङ्क ७ मास मई ६८ पृष्ठ २१ अवलोकन करके उस पत्र मे छपी जिज्ञासाओं के समाधान की कृपा करेगे या करायेंगे, ताकि इस विषय मे मुझे तथा अन्य सज्जनों को कुछ और ज्ञात करने की प्रेरणा मिले।

—चन्द्रसहाय, भूड कानून गोयान, बरेली
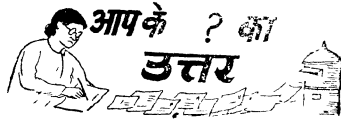
आदरणीय प० विक्रमादित्य 'वसन्त' जी की लेखनी आत्मा की बोली बोलती है। वेदो पर उन्होंने भाष्य किया हो तो नाम व दाम सूचित करने की कृपा करे या (स्वाध्याय अङ्क तथा 'मृत्यु सूक्त व्याख्या के अलावा ) अन्य जो भी रचना हो उनकी जानकारी देने की कृपा करे।

—विकर्णकुमार विनायकराव जी वेवार्य
झडें गल्ली पेठ, धाराशीव, (उस्मानाबाद)
रेल स्टेशन एडसी मध्य रेलवे (मराठवाडा) महाराष्ट्र प्रांत

[ श्री 'वसन्त' जी की, आर्य्यमित्र के जागृति अङ्क मे आत्म जागृति सूक्त की धारा-प्रवाह व्याख्या प्रकाशित की गई है। उनके वेदभाष्यो के प्रकाशन की व्यवस्था यथासमय सभा के प्रकाशन विभाग द्वारा की जाएगी। आर्य्यमित्र के साधारण अङ्को मे सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या का शुभारम्भ शीघ्र ही किया जा रहा है। —सम्पादक ]

## जागृति विशेषांक पर सम्मतियां

(१) जागृति अङ्क मिला, बहुत अच्छा निकला है।

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट, आगरा
भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक आ०प्र०सभा, दिल्ली

(२) श्री सम्पादक महोदय आर्यमित्र लखनऊ !

सादर नमस्ते !

"आर्यमित्र" का जागृति अङ्क मिला। विषय नाम के अनुरूप चुने गये हैं। सुन्दर सम्पादन के लिये अभिनन्दन स्वीकार करें।

योग्यसेवा लिखते रहे। आपका—

—भगवानदेव सचालक
महर्षि दयानन्द योगाश्रम टंकारा गुजरात

## विनम्र निवेदन

आर्य्यमित्र का पठन करने वाले अनेक विद्वानो ने मुझे इस प्रकार के आशीर्वाद प्रदान किए हैं। मै उन सबका अतिकृतज्ञ हू। प्रोत्साहन रूपी इस सुधा का पान करते हुए, मैं वैदिक सुमनो की और अधिक सुगन्ध फैला सकूगा, ऐसा मेरा दृढ़ आत्मविश्वास है। मेरा विस्तृत परिचय जानने के लिए पाठको के अनेक पत्र आ रहे हैं। मेरा विनम्र निवेदन है कि परम पिता परमात्मा की अमृतवाणी मुझे निरन्तर जिस सोम का सोपान करा रही, है वह मुझे शक्ति प्रदान कर रही है और मैं तप कर रहा हू, महत्त्व तप का होता है, नाम स्थान जन्म आयु आदि मेरी अन्तर दृष्टि से विशेष महत्त्व देने योग्य के नही हैं, मेरी हार्दिक कामना है कि मेरे सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के स्थान पर आर्य्यमित्र के पाठक मुझ से वेद जिज्ञासाए करें। आर्य्यमित्र मे वैदिक विचार प्रवाह से अब तक जो क्षेत्र मैंने तैयार किया है, उसमें मैं अब योग के वैदिक बीज बोने जा रहा हू। मेरा पूर्ण प्रयत्न रहेगा कि हरेक सप्ताह में योग साधको को वेदामृत पिलाता रहू और उनका साधना मार्ग प्रशस्त करता रहूं। —'वसन्त'

## महर्षि दयानन्द का ब्रह्मचर्य बल प्रदर्शन

दो०—कहन लगे यू एक दिन, विक्रमसिंह सरदार।
बल बढता ब्रह्मचर्य से, है भ्रमपूर्ण विचार।
ब्रह्मचर्य व्रत पालन से, बल बढे सभी बतलाते हैं
किसी ब्रह्मचारी मे पर हम, बल विशेष नहिं पाते हैं।
लेख शास्त्र का सत्य सिद्ध, यह होत नहीं दिखलाता है,
श्रीमन भी ब्रह्मचर्य धरे पर, बल न विशेष दिखाता है।
मौन भये उस समय सुनत ऋषि, कुछ नहि बोले चाले थे,
तनिक देर पश्चात् कहीं विक्रमसिंह जाने वाले थे।
गमन हेतु असवार भये वे, दो घोडो की गाडी पर,
कोचवान ने चलने को, घोडो के लगा दिया हण्टर।
घोडे जब नहीं चले तो उसने, चाबुक फिर दो मारे थे,
घोडो ने भी यत्न किया पर, चल न सके बेचारे थे।
होय सके नहीं टस से मस कुछ हण्टर बहुत लगाये थे,
पीछे फिर कर लखा खडे ऋषि पहिया पकडे पाये थे।

दो०—विस्मित विक्रमसिंह हो, लख ऋषिवर की ओर।
ब्रह्मचर्य बल देखकर, कहन लगे कर जोर॥
बाल ब्रह्मचारी अहो, धन-धन तुम्हे महान्।
बल महान् ब्रह्मचर्य मे, मैने लीना मान॥
ईषत विस्मित होय तभी, स्वामी जी ने बतलाया है
ब्रह्मचर्य व्रत पालन का बल, तुम्हे प्रत्यक्ष दिखाया है।

—हरिश्चन्द्र 'हरि' आर्योपदेशक, बिजनौर

## होली का पर्व

१— जो होली सो होली—उसे तुम भुला दो
जहां तक हो शत्रु भी अपना बना लो
२— किसी की बुराई परखने से पहले
यह दिल साफ शीशे सा अपना बना लो
३— न गाली बको और न कीचड उछालो
नशा पीके अपनी न हस्ती मिटा दो
४— हसदकीना की आग जो जल रही है
मुहब्बत के जल से उसे तुम बुझा दो
५— सफल होगी होली तभी यह तुम्हारी
आपस मे अगर प्रेम गंगा बहा दो
६— है हीरे से बढ़कर यह इनसा का जीवन
दो कोडी के बदले इसे तुम लुटा दो
७— घर-घर मे हो आज के दिन हवन यज्ञ
नमूना यह तहजीब का तुम दिखा दो
८— उठो आर्य वीरो फरज को पहचानो
जहालत की दीवार को तुम गिरा दो
९— ऋषि का अगर शिष्य बनने की धुन है
तो दुनिया मे वेदो का डंका बजा दो
१०— दयानन्द की फुलवाडी मिटने न पाए
चाहे दास को तुम जहां से मिटा दो।

—रोशनदास वोहरा

# विज्ञान वार्ता

## सुनने का नया यन्त्र

हैडलबर्ग—पश्चिम जर्मनी मे एक नया यन्त्र तैयार किया गया है, जिसकी सहायता से बहरे और गूगे, और नेत्रहीन बच्चे अधिक आसानी से बोलना सीख सकते हैं।

यन्त्र मे थिरकन पैदा करने वाला एक छोटा पुरजा तथा दो ईयरफोन और एक माइक्रोफोन लगे हैं। इनको कलाई, सीने गले की हड्डी या रीढ की हड्डी के ऊपरी भाग के पास लगा दिया जाता है। इससे बच्चे आवाज के सुनने के समान ही अनुभव कर सकते है। इससे एक साथ चार बच्चो को बोलना सिखाया जा सकता है।

## कृत्रिम छोटा गुर्दा

फ्रीवर्ग—चिकित्सा जगत् मे एक बडी सुविधा उन लोगो को मिलने वाली है जिनका गुर्दा नष्ट प्रायः हो गया है। वे अब घर पर एक छोटा यन्त्र रख सकते हैं जिसकी क्रिया से उनके शरीर में वैसी ही हरकत पैदा हो जायगी, जैसी गुर्दे द्वारा होती है। इस गुर्दे की कीमत लगभग ९,००० रुपये होगी।

जिसके पहले यह छोटा गुर्दा प्रोफेसर हांस सारे ने निर्मित किया, बडे-बड़े गुर्दे कुछ ही अस्पतालो मे उपलब्ध थे। बड़े गुर्दे की कीमत लगभग डेढलाख रुपये से अधिक थी और वे इने-गिने अस्पतालो मे ही उपलब्ध थे।

छोटे और कम कीमत के गुर्दे वाली मशीन बन जाने से सैकडों पीडितो के प्राण बचाना सभव हो जायगा।

## नए तिरंगीय किरण प्रसारक के माध्यम से वैज्ञानिक प्रगति

टोकियो—सूर्य किरण से कई सौ गुनी अधिक क्षमता का एक तिरंगीय किरण प्रसारक जापान के वैज्ञानिको ने तैयार किया है। यह प्रभारकलाल, हरी और नीली रोशनी एक साथ प्रसारित करता है, क्योकि इसका हर ट्यूब इयोन इन्द्रधनुषीय रग प्रसारित करता है, इसलिए इस यन्त्र को इओन गैस लेसर किरण प्रसारक कहा गया है। इसकी दो-दो मीटर लम्बी दो ट्यूबो मे आरगन और क्रिप्टन गैसें भरी रहती है। क्रिप्टन गैस ५ किलोवाट और आरगन १५ किलो वाट की छमता रखती है। इन दोनो ट्यूबो के बीच मे धनाग्र (एनोड) लगा दिया जाता है। इस प्रकार यह यन्त्र ४ मीटर से कुछ ही लम्बा होता।

इस छोटे से तिरगीय किरण प्रसारक से वैज्ञानिक जगत् में विशाल परिवर्तन होने की सम्भावना है। इसके माध्यम से बड़े पर्दों पर रगीन टैली विजन देखना सभव हो सकेगा। एलेक्ट्रोनिक दृग विद्या मे इससे जो सहायता मिलेगी उसके कारण कम्प्यूटर (गणक) कई गुना अधिक आकडे याद रख पायेंगे और इस प्रकार गणक (स्वचालित) यन्त्रो की क्षमता बढ जायगी।

## अध्यात्म-सुधा

[ पृष्ठ २ का शेष ]

परमानन्द से आनन्द का और ज्योतिर्मय से ज्योति को प्राप्त कर रहा है। प्रत्यक्ष दर्शी जानता है कि प्रयत्क्ष क्या है। रसान्वित वही होता है जो रसपान करता है। जिसने प्रत्यक्ष दर्शन और मिलन किया हो, उसके लिये कोई रहस्य शेष नहीं है अतएव वह कल्पनाओ की उडानें भरे बिना सीधी खरी बात कहता है। जब मस्ती भरे स्वर वह छेडता है तो रस विभोर होकर जनसाधारण उससे पूछते हैं—'यह किसकी स्तुति करते हो। रात दिन किसके गीत बनाते हो और सुनाते हो। यह कौन है जिससे तुम्हे इतना स्नेह है, प्यार है ?"

साधक एक छोटा-सा उत्तर देता है "मैं उसके लिये गीत गाता और बनाता हू जो हम सबका है, वह अकेला मेरा ही नहीं है। वह केवल मुझे ही रसान्वित नहीं करता है। जो भी उसके समीप आता है, वह रसविभोर हो जाता है। वह आध्यात्मिकों ऐश्वर्यो का अधिपति है। ये आध्यात्मिक ऐश्वर्य भौतिक जगत् मे नहीं मिलते, ये कहीं विकाऊ नहीं हैं। ये तो प्रेम भरे उपहार हैं मेरे रसिया के। अनन्त भण्डार है उसका, वह सबको खुले हाथो अपने आध्यात्मिक रत्न लुटाता है, फिर भी उसका कोष वैसे का वैसा भरा रहता है।

जन साधारण में उस अनुपम रसिये के लिये एक कौतूहल उत्पन्न होता है। 'कहाँ है वह रसिया ?'

साधक कहता है—'मेरा मन बसिया' "कैसे रस देता है मन बसिया ?' प्यार भरे खेल मे। मैं उसपर रीझता हू, वह मुझ पर रीझता है।"

'तु किस पर रीझता है रे?'

'उसके वर्ण पर, श्वेत ज्योतिर्मय आभा पर, अद्वितीय सौंदर्य पर।'

और वह तुझ पर किस प्रकार रीझता है रे।"

'मेरी पवित्रता पर, निर्मलता पर, शुभ्रता पर।"

'जब तुम्हारी आत्मा निर्मल हो जाती है, राग द्वेष सब छूट जाते हैं, समदर्शिता आ जाती है, तो फिर क्या होता है ?"

'हम फाग खेलने हैं, पवित्र फाग, आत्म ज्योति ब्रह्म ज्योति मे समाहित होती है। वह अपनी ज्योतिर्मय आभा मुझे प्रदान करता है और मै अपनी पावन आभा से उसे निहारता हू और पवित्र से पवित्रतम होने के निमित्त उससे पावन मिलन करता हू। मेरी पीलिमा ज्योति पर ज्यो-ज्यो उस श्वेत शुभ्र ज्योति का रग पड़ता जाता है, मेरी ज्योति भी उसी क्रम से श्वेत होती चली जाती है।'

जब साधक आत्मना ऐसी पवित्र फाग अपने प्रीतम से जी भर कर खेलता है, तो उसके भीतर एक अपूर्व उत्साह आच्छादित हो जाता है। वह सब भौतिक मोह-माया मे लिप्त प्राणियो को दुःख सिन्धु के मझधार मे डूबते हुए देखता है तो उसका मानव हृदय दयार्द्र हो जाता है, वह अपनी मस्ती भरी आवाज को उन तक पहुचाता हुआ कहता है—'इस भ्रम-जाल से उन्मुक्त होओ। तुम्हारा मगल करने वाला शिव तुम से आनन्द फाग खेलने के लिये तुम्हारा इधर आह्वान कर रहा है, और एक तुम हो जो पुन बारम्बार उसी गदगी मे लिप्त होते जाते हैं। आओ जीवन का आनन्द लो। आनन्द रङ्ग की होली खेलो, पहले अपने ज्योतिमय स्वामी से ज्योति रङ्ग मे खेलो, फिर उसी रङ्ग से उसके प्राणियो से खेलो। जीवन उल्लास के लिये है, इसे उल्लासमय से उल्लासप्रद बनाओ। ज्यो-ज्यो उल्लासमय बनोगे, तुम्हारे भीतर उल्लासमय गतियो का थिरकन होगा, नर्त्तन होगा और जब तुम स्वत आनन्द रङ्ग मे रङ्गे जाओगे तो सबको उसमे रङ्गकर जीवन को आनन्द मय बना सकोगे।

आनन्द रङ्ग का यह खेल खेलने के लिये ही तो प्रभु ने यह मानव योनि दी है। जिसमे साधक न केवल स्वयम् खेलता हैं, वरन् दूसरों को भी खिलाता है।

---

# आर्य्यमित्र

के

## आगामी अंक मे

### आइए, हम देव भाषा संस्कृत पढे—

का नया स्तम्भ आरम्भ हो रहा है। सरलतम विधि से सस्कृत पढ़ने का सुअवसर उन पाठको को दिया जा रहा है जो सस्कृत भाषा को शीघ्र सीखना चाहते हैं।

शीघ्र ही योग एव प्राणायाम के स्तम्भ भी आरम्भ किए जा रहे है।

आर्य्यमित्र जो आर्य्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ का प्रमुख पत्र है, वेद प्रचार का ठोस कार्य्य कर रहा है, इसके प्रत्येक अक मे सुन्दर सरस वेद व्याख्याए प्रकाशित हो रही है। अब देवभाषा सस्कृत के प्रचार का भी इसे पुनीत माध्यम बनाया जा रहा है। योग एवम् प्राणायाम के नये स्तम्भो मे इमे और जीवनोपयोगी बनाया जा रहा है।

अब हमारा कर्त्तव्य है, कि नए टाइप से सुशोभित, सचित्र सर्वोपयोगी आर्यजगत् के सबसे पुराने इस पत्र के

[१] स्वय ग्राहक बनें एवम् अपने मित्रो को बनाए।
[२] सर्वत्र एजेन्सियां स्थापित करे और करवाए।
[३] विज्ञापनदाताओ से विज्ञापन दिलवाए।
[४] उत्तम लेखन सामग्री भेजें एवम् भिजवाए।

आर्य्यमित्र आपका अपना पत्र है, इमे कदापि न भूलें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
सभा मुख्य उपमन्त्री

---

## वेदोपदेश

(पृष्ठ ५ का शेष)

बनी हुई जुहू नाम वाली स्रुवा मे (व) तुम सबकी (वसति. कृता) स्थिति की गई है। हे हविर्भूत ओषधियो ! तुम (गोभाजः) सूर्य को प्राप्त होती हो (यत्) जबकि तुम (पूरुषम्) यजमान को (सनवथ) सेवन करती हो।

महर्षि का आध्यात्मिक अर्थ कितना शिक्षाप्रद है उस उपदेश से मनुष्य का जीवन कल्याणमय बन जाता है। मनुष्य जीवन इसीलिये मिला है कि हम परमात्मा और जीवात्मा को जानें और उसके द्वारा प्राप्त अनन्त सुख को हम भोगें। और जीवित रहते हम उस जीवन को सुन्दर बनावें और स्वस्थ रहकर ही धर्म अर्थ काम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। रोगी मनुष्य ईश्वर को भी नहीं प्राप्त कर सकता है और ना ही सांसारिक सुख। परमात्मा ने उपदेश किया है कि संसार को अनित्य समझ मृत्यु को सदा सामने रख तब धर्म तुझे सूझेगा। नहीं तो बेहोश रहेगा। और ससार को नित्य समझ कर उसमे लिप्त हो जावेगा। इस अभिप्राय को वर्त्तमान कवियो ने इस प्रकार अपनी सस्कृत कविता में वर्णन किया है—

प्रथम जगदेव नश्वर पुनरास्मिन् क्षणभगुरा तनू। ननु तत्र सुखाप्ति हेतवे क्रियते हन्त जनै परिश्रम ॥

अर्थ—प्रथम तो ससार ही नष्ट होने वाला है, पर वह ससार तो देर मे नष्ट होगा यह देही तो तेरी क्षण मे नष्ट हो जावेगी फिर भी आश्चर्य है कि मनुष्य इसमे सुख ढूढता है।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्। गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥

अर्थ—अपने को अजर-अमर समझकर विद्या और धन का उपार्जन कर पर मौत ने मेरे बालो को पकड़ लिया है यह प्रत्येक समय ध्यान करके धर्म का आचरण कर।

## निर्वाचन–

–आ० स० बडबाव (गोंडा)
अध्यक्ष-सकटमोचन जी
मन्त्री- ठाकुरसिह जी
कोषा -प्रतापकुमार जी
पुस्तका -वद्रीप्रसाद जी

–आ०स० खुरजा (बुलन्दशहर)
अध्यक्ष–ओमप्रकाश जी बाधवा
उपाध्यक्ष–युधिष्ठिरकुमार जी माथुर
" –वीरेश्वरकुमारजी अग्रवाल
मन्त्री–राजपाल सिह जी आर्य
उपमन्त्री–कृष्णलाल जी
" –रामस्वरूप जी आर्य
कोषाध्यक्ष तथा जायदाद प्रबन्धक–
बुद्धसेन जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष–होतीलाल जी शर्मा
–राजपालसिह मन्त्री

–आ० स० टीटागढ
अध्यक्ष–रामलषणसिह जी
उपाध्यक्ष–देवलोचनसिह जी
" –जयनन्दनराम जी
मन्त्री–रामसमुझ जायसवाल
उपमन्त्री–भुवनेश्वरसिह जी
प्रचारमन्त्री–अटलबिहारीसिह
कोषा श्री विन्दाप्रसाद साह

–आर्यायुवक सभा टकारा
सरक्षक–प०सत्यदेव जी विद्यालकार
" स्वामी सत्यानन्द जो (वकील)
अध्यक्ष–हरिश्चन्द्र जी
उपाध्यक्ष–ओमप्रकाश जी
मन्त्री–पार्श्वनाथजी (निरजनदेवजी)
सह मन्त्री–रामसुभगसिह जी
" –कमलकुमार जी
कोषाध्यक्ष–छगनलाल जी भाटिया

शिवरात्रि ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टकारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के तत्वावधान मे आर्य युवक सभा टकारा की ओर से युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया। –पृथ्वीनाथ मन्त्री

–आर्यसमाज रामपुर–अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र आर्य, मन्त्री श्री सहदेवशरण आर्य, कोषाध्यक्ष श्री शान्तिप्रसाद गोयल। –मन्त्री

–आर्यसमाज उन्नाव, अध्यक्ष श्री उमरावसिह जी एडवोकेट, मन्त्री श्री चन्द्रदत्त जी त्रिवेदी और कोषाध्यक्ष श्री रामभारतीय। –मन्त्री

–आर्य स्त्री समाज बदायूं– अध्यक्षा श्रीमती सरस्वती जी
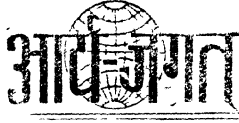
पवर, मन्त्रिणी श्रमती प्रकाशवती जी जफा, कोषाध्यक्ष श्रीमती शारदादेवी, निरीक्षिका श्रीमती प्रियम्बदा देवी।
–प्रकाशवती जफा, मन्त्रिणी

–आर्यसमाज बासगाव (गोरखपुर) अध्यक्ष श्री ब्रह्मदेवप्रसाद श्रीवास्तव वकील सरकार, मन्त्री श्री मोहन सहाय लेक्चरर, कोषाध्यक्ष, श्री अनन्तप्रसाद गुप्त।
–मन्त्री

–आर्य समाज अफजलगढ़ अध्यक्ष श्री लाला जुगुलकिशोर मन्त्री लाला राजनाथसिह और कोषाध्यक्ष श्री राधेश्याम –मन्त्री

–आर्यसमाज जौनपुर सर्वश्री रामावतार जी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष प० सूर्यबली जी, मन्त्री तारानाथ जी, उप मन्त्री धर्मेन्द्रनाथ जी कोषाध्यक्ष रामनारायण जी, पुस्तकाध्यक्ष चुन्नीलाल जी, निरीक्षक विश्वप्रकाश जी। मन्त्री

–आर्य समाज बडहलगज (गोरखपुर) अध्यक्ष–विद्यासागर जी आर्य, उपाध्यक्ष–कन्हैयालाल जी आर्य, मन्त्री– शारदाप्रसाद जी आर्य, उपमन्त्री–मक्खलाल जी कोषाध्यक्ष–धर्मदत्त जी आर्य। पुस्तकाध्यक्ष–इन्द्रदेव प्रसाद।
–शारदाप्रसाद आर्य

आर्यसमाज औरैया (इटावा) अध्यक्ष–रामनाथ जी गुप्त और मन्त्री–रामलखन जी गुप्त। –मन्त्री

–आर्यसमाज फैजाबाद–अध्यक्ष देशराज जी, उपाध्यक्ष–मदनमोहन जी वर्मा, किशोरीलाल जी चोपडा, कल्पनाथगिरि जी, मन्त्री ज्ञानेन्द्र जी भटनागर, उपमन्त्री सुरेन्द्रबहादुर सिह जी, प्रतापसिह जी, शिवहर्ष जी तिवारी, कोषाध्यक्ष त्रिवेणी प्रसाद जी, पुस्तकाध्यक्ष श्रीचन्द आर्य। –मन्त्री

–आर्य समाज ललितपुर– अध्यक्ष वीरसिह जी, मन्त्री कन्हैयालाल जी आर्य, उपमन्त्री पुरुषोत्तम नारायण जी सोनी, और कोषाध्यक्ष फकीरचन्द जी।
–पुरुषोत्तमनारायण सोनी उपमन्त्री

–मुगेर जिला आर्य सभा– अध्यक्ष–ओमप्रकाश जी और मन्त्री डा० दामोदरराम जी वर्मा, कोषाध्यक्ष अनूपसिह जी। मन्त्री

–आर्यसमाज परेव (पटना) अध्यक्ष कमलाप्रसाद जी मन्त्री लोक नाथ जी पडित।

–आर्यसमाज कालागढ (बिजनौर) प्रधान ओमप्रकाश जी सारस्वत, उपप्रधान ऋषिकुमार जी मन्त्री पवनकुमार जी विश्नोई। कोषाध्यक्ष राजेन्द्रसिह जी वर्मा।
–मन्त्री

–आर्य युवक परिषद् दिल्ली [रजि०] अध्यक्ष देवव्रत धर्मेन्दु जी, उपाध्यक्ष अचरजलाल जी तथा रामदेव जी तनेजा, मन्त्री ओम्प्रकाश, उपमन्त्री शम्भूदयाल जी शर्मा प्रचारमन्त्री जलसिह ब्रजशकर कोषाध्यक्ष केदारनाथ निरीक्षक गुमान सिह जी। –जलसिह, प्रचार मन्त्री

–आर्यसमाज सीतापुर अध्यक्ष गगाधर शर्मा, मन्त्री–वीरेन्द्र कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष–बाबूराम आर्य पुस्तकाध्यक्ष–ओमप्रकाश जी आर्य
–वीरेन्द्रकुमार आर्य मन्त्री

–आर्यसमाज डोईवाला, (देहरादून अध्यक्ष–चन्द्रलाल जी शाह एम ए एल टी उपाध्यक्ष रामपालसिह जी वर्मा, मन्त्री–कृष्णदत्त जी वैद्य, उपमन्त्री भगतसिह जी, कर्मचन्द जी मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष विजयचन्द जी, पुस्तकाध्यक्ष रगीलाल
–मन्त्री

–आर्यसमाज जयपुर मे ऋषि बोध पर्व धूमधाम से मनाया गया। अनेक रोचक कार्यक्रम हुए। -मन्त्री

–आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी ने श्री वशीधर जी की पत्नी श्रीमती सुन्दरदेवी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।
–मन्त्री

–५ से ७ फरवरी तक बास खेडा (मन्दसौर) मे गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। –मन्त्री

–आर्यसमाज उमरी (कानपुर) के मन्त्री श्री हीरालाल जी का देहावसान १० फरवरी को अचानक हो गया। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति तथा दुखित परिवार को धैर्य प्रदान करे। –जगरूपसिह विश्वम्भरनाथ

–आ०स०पीपाड (राजस्थान) के मन्त्री श्री प्यारेलाल जी की दादी का ९७ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया। आपकी शवयात्रा मे सैकडो व्यक्ति सम्मिलित हुए। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया
–कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'

–२९ जनवरी को श्री रामहित मौर्य पिलखी (आजमगढ़) का देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। आपकी आयु १०३ वर्ष की थी। शुद्धि सस्कार यज्ञ प्रवचन श्री द्वारकाप्रसाद उपदेशक द्वारा सम्पन्न हुआ।

–मोठ के श्री तुलसीदास शर्मा एडवोकेट की पुत्री सुश्री शोभाकुमारी का पाणिग्रहण सस्कार वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।
–प्रकाशचन्द्र उपाध्याय

–आर्यसमाज खडवा मे ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। –मन्त्री

–आसनसोल आर्यसमाज के प्रधान तथा जनसेवक श्री चन्द्रशेखर जी की कन्या आयुष्मती रानू ]बी०ए० फाइनल] का पाणिग्रहण सस्कार बक्सर निवासी आयुष्मान् रतनलाल जी एम० ए० के साथ दि० २९-१-६९ को पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। नगर के अनेको प्रतिष्ठित तथा विद्वान् सज्जन वैदिक पद्धति से सम्पन्न वैवाहिक सस्कार से अत्यन्त प्रभावित तथा आल्हादित हुए और उन्होंने नव दम्पति के उज्ज्वल भविष्य के लिये शुभ - कामनाएं प्रकट की।" –मन्त्री

# गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का महोत्सव १४ से १६ फरवरी तक आनन्द सम्पन्न हो गया। उत्सव मे सस्कृत सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, शिक्षा-सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, दीक्षान्त समारोह, व्यायाम सम्मेलन, आदि का कार्य-क्रम बडा रोचक रहा। इस वर्ष उत्सव की तिथियो मे परिवर्तन कर दिया गया था। हाल ही मध्यावधि चुनाव होकर चुके थे प्रान्त की जनता इन चुनाओ की थकान से आराम कर रही थी। शिवरात्रि सप्ताह का कार्यक्रम प्रत्येक समाज मे चल रहा था। इस कारण उतनी अधिक उपस्थिति न हो सकी, जितनी गुरुकुल के अधिकारी आशा कर रहे थे। केन्द्रीय मन्त्रि मण्डल मे सहसा परिवर्तन होने के कारण वह मन्त्री भी गुरुकुल न आ सके, जिनका आना निश्चित था। फिर भी गुरुकुल का उत्सव अत्यन्त रोचक रहा। आयुर्वेद सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विद्याभूषण जी वैद्य आयुर्वेद शिरोमणि, और उसके उद्‌घाटन कर्त्ता श्री रामनारायण जी मिश्र प्रधान सचालक वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन झासी दोनो के व्याख्यान अत्यन्त विद्वतापूर्ण हुये। श्री प० रामनारायण जी ने गुरुकुल अधिकारियो को यह भी विश्वास दिलाया कि वे निकट भविष्य मे वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन से सेवा निवृत्त हो रहे हैं और वे वृन्दावन मे ही वास करेगे। और गुरुकुल की प्रयोगशाला को प्रगति के पथ पर खडा करने मे सहयोग देंगे। आयुर्वेद महा विद्यालय के सचालन का वचन श्री प० विद्याभूषण जी वैद्य ने दिया है।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री सभा प्रधान माननीय प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य की अध्यक्षता मे हुआ। दीक्षान्त समारोह मे—दीक्षान्त भाषण भी श्री माननीय प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद् सदस्य ने दिया। श्रीमान् प० प्रकाशवीर जी शास्त्री का दीक्षान्त भाषण इतना मार्मिक था कि श्रोतागण सुन कर गद्‌गद् हो गये। आपने कहा कि मेरे प्यारे स्नातको आज इस दीक्षान्त के पश्चात् आपके जीवन का दूसरा अध्याय आरम्भ हो रहा है, इस कुल मे रहकर आपने एक उच्च शिक्षा प्राप्त की है। अपनी वैदिक सस्कृति को पढा है, और उसके अनुसार अपने जीवन का निर्माण किया है। अब आप जहाँ भी जाय जो भी करे, अपनी इस कुल माता को न भूलना, अपने कार्यों से इस सस्था के नाम को उज्ज्वल बनाना आपके जीवन मे ऐसा कोई कार्य न हो जिससे गुरुकुल के नाम को धब्बा लगे। प्रत्येक मनुष्य धीरे-धीरे आगे बढता है। ऊँचा उठता है। एकदम कोई भी उन्नति के शिखर पर नहीं चढ जाता। आपको जो भी कार्य आपकी रुचि का मिले उसे करना, किसी कार्य को हेय न समझना। उसे करते हुए आगे बढने का प्रयत्न जारी रखना। आपने नवस्नातको को आशीर्वाद देते हुए कहा कि परमपिता परमात्मा आप को बल दें कि आप देश और समाज की सेवा करते हुए उच्च शिखर पर पहुचे और इस गुरुकुल के गौरव को बढायें। यह समारोह अत्यन्त कारुणिक था। बाद मे श्री आचार्य विश्वश्रवाजी ने श्री प्रधान सभा के दीक्षान्त भाषण की भूरि-भूरि प्रशसा की।

१६ फरवरी की रात्रि को गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के अद्‌भुत खेल भी हुए। उनको देखकर प्रो० राममूर्ति और अर्जुन की याद आती थी। अन्तिम दिन श्री प० विद्याभूषण जी वैद्य का 'शरीर मे जीवात्मा का स्थान' विषयक भाषण भी बडा विद्वत्तापूर्ण और हृदयग्राही था, जनता को बहुत पसन्द आया।

इस बार स्वयसेवको का कार्य गुरुकुल के छोटे ब्रह्मचारियो ने बडी तत्परता और सतर्कता के साथ किया। इसके अतिरिक्त और भी विद्वानो के भाषण सराहनीय और हृदयग्राही थे।

## उत्सव सूचना

श्री राजेन्द्र जी आर्य अन्तरङ्ग सभासद् ग्राम सहारनपुर निवासी सूचित करते है कि आर्यसमाज अलीपुरा, पो० खास जि० सहारनपुर का उत्सव ८ व ९ मार्च '६९ को होना निश्चित हुआ है। उपस्थिति प्रार्थनीय है। —मन्त्री

## सार सूचनाएं

श्रीमद्दयानन्द आर्य विद्यापीठ, जिसका कार्यालय गुरुकुल झज्जर [रोहतक] मे है, की शास्त्री और आचार्य परीक्षाओ को सरदार पटेल युनिवर्सिटी वल्लभ विद्यानगर [गुजरात] ने अपने यहाँ की बी ए और एम ए की समकक्ष क्रमश स्वीकार कर लिया है।

स्मरण रहे गुरुकुल पद्धति पर चलने वाली अखिल भारत वर्षीय श्रीमद्दयानन्द आर्य विद्यापीठ की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री और आचार्य परीक्षाओ को केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय नई दिल्ली ने क्रमश मिडिल, हायर सैकण्ड्री, बी ए और एम ए के समकक्ष समानता प्रदान की हुई है।

—वेदानन्द वेदवागीश

—आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री लाडिलीप्रसाद जी एडवोकेट अम्बाह के देहावसान पर आर्यसमाज लश्कर ने शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

—मन्त्री

—आ० स० नागौर (राज०) ने ऋषिबोध पर्व बडी धूमधाम से मनाया। —मन्त्री

( पृष्ठ ८ का शेष )

तभी तो आज आर्य समाजो मे आडम्बर के अखाडे बने पडे है। शिरोमणि सभाओ से मुहल्ला सत्सग सभाओ तक अशान्ति की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है। नेताओ का न होना, सन्यासियो की सभा समाप्त होना, पचास वर्ष पश्चात् भी पुत्र-पालन मे प्रवृत्त रहना। सभी नाश के लक्षण उपस्थित हो गये हैं। सब कहते है, सब सुनते हैं, सकोच से, कि अब आर्यसमाज की वह बात नहीं रही। परन्तु कोई भी क्रियात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत नहीं करता है। यदि ऐसी ही दशा बनी रही तो दशम आर्य महा सम्मेलन के पश्चात् आर्य समाज भी दशवीं अवस्था को प्राप्त कर लेगी। जितने भी आर्य सम्मेलन अधिक होते है, उतने ही रगड़े-झगडे बढते हैं। ऐसा तटस्थ जनों को अनुभव हो रहा है।

**मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की**

इसलिए शीघ्रातिशीघ्र "त्रयवरा परिषत्" का निर्माण किया जाय और वह "त्रयवरा परिषत्" जो मार्ग बताये उस पर दृढता पूर्वक चला जाय। जो न चले उसको अनियमित किया जाय। जब तक इस प्रकार ड्रास्टिक स्टैप [भयकर कदम] न उठाया जायगा। यह यक्ष्मा आर्यसमाज को खा जायगा।

वेद मे कहा गया है.—विजानीहि आर्यान्, ये च दस्यव ।। इस मन्त्र की व्याख्या [देखो—आर्याभिविनय] मे महर्षि ने स्पष्ट लिख दिया है कि—

"वानप्रस्थ, सन्यासादि धर्मानुष्ठान व्रत रहित वेद मार्गोच्छेदक अनाचारियो [अनार्यो] को यथायोग्य शासन करो। शीघ्र उन पर वध नियातन करो। जिससे वे भी शिक्षा युक्त हो के श्रेष्ठ [आर्य] हो। अथवा उनका प्राणान्त हो जाय।" कहो क्या कहते हो ? करो या मरो।

# डा० वृन्दावन लाल वर्मा का देहान्त !

झाँसी, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा का ८० वर्ष की आयु मे २३ फरवरी को देहावसान हो गया।

गत गुरुवार को उन्हें हृदय का दौरा पडने के कारण झासी के सिविल अस्पताल मे भर्ती कराया गया था, उच्च-कोटि के उपचार के बावजूद उनकी दशा मे निरन्तर गिरावट ही होती गई।

उनकी अन्त्येष्टि झासी मे सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उनके पुत्र श्री सत्यदेव वर्मा तथा पौत्र-पौत्रियाँ, परिवार के अन्य सदस्य एव अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

डा० वर्मा ८० वर्ष की वृद्धावस्था मे भी बडे क्रियाशील थे। वह प्रतिदिन ८ घण्टे लेखन कार्य और २ घण्टे व्यायाम नियमित रीति से करते थे। स्वास्थ्य रक्षणार्थ वह प्रतिदिन दूध का सेवन करते थे। रुग्णावस्था मे भी वह एक दिन कह उठे मुझे दूध, चाय चाहिये, लिखने का काम पूरा करना है। मर्मज्ञ साहित्यकार के अतिरिक्त वर्मा जी एक सुविज्ञ वकील भी थे।

डा० वर्मा ने ८८ ऐतिहासिक उपन्यासो की रचना की जिनमे गढकुठार,'झासी की रानी','कमल और कीच','मृगनयनी'प्रमुख है।

डा० वर्मा को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया था। 'साहित्य अकादमी' भी आपको सम्मानित कर चुकी थी, उन्हे सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। सरकार की हिंदी विरोधी नीति के विरोध मे डा० वर्मा ने'पद्मभूषण की उपाधि को त्यागकर प्रशसनीय कार्य किया था।

वर्मा जी के अनेक उत्कृष्ट साहित्य ग्रथो का रूसी तथा चेक भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है। उनकी कुछ कहानियो का जर्मन अग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे अनुवाद किया जा रहा है। वह अगले वर्ष रूस की यात्रा करने वाले थे।

डा० वर्मा के निधन से राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो क्षति हुई है उसकी चिरकाल तक पूर्ति होना असम्भव है।

डा० वर्मा का जन्म ९ जनवरी १८८९ को झासी के एक प्रसिद्ध कायस्थ घराने मे हुआ था। उन्होने १९१५ मे आगरा विश्वविद्यालय से एल एल बी परीक्षा पास की। उनकी गिनती जिले के प्रख्यात वकीलो मे थी। वे बहुत वर्षों तक जिला बोर्ड और सहकारी बैंक के अध्यक्ष रहे।







आवश्यकता है प्रचारक की

उच्चकोटि के विद्वान्' वेद विद्या विषय ज्ञाता, शास्त्रार्थ महारथी, मर्यादा पुरुष, स्वस्थ, प्रचार, उत्साही पंडित की, दक्षिणा योग्यतानुसार, प्रार्थना-पत्र मे उम्र व प्रचार कार्यो का विवरण लिखें।

पत्र-व्यवहार का पता

—आर्यसमाज मन्दिर,

महर्षिदयानन्द मार्ग,

(कांकरियारोड) अहमदाबाद-२२

आवश्यकता

"कन्या आयु १८ वर्ष स्वस्थ, सुन्दर गौर, चार वर्ष उम्र मे माता से दोनो आख खराब हो गई। किन्तु भोजन उत्तम बनाती है। पूरा घर सम्हालती है। योग्य वर चाहिये।"

वैद्य गरीबराम अग्रवाल,

बिलासपुर, म०प्र०

**आवश्यकता है**

एक २४ वर्षीय कायस्थ स्नातक विद्यार्थी बहुत बडे व्यवसायी के लिए सुन्दर, स्वस्थ शिक्षित कन्या की। पत्र-व्यवहार का पता—

एं० झा०, मोतीझील,

मुजफ्फरपुर (बिहार)

एक सत्य जिज्ञासु अमरीकन युवक को

## वैदिक धर्म दीक्षा

**( महत्त्वपूर्ण शुद्धि-संस्कार )**

गत गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रिय पर्व पर (२६ जनवरी) प्रात सवा आठ बजे सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के प्रधान श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड ने आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे केलिफोर्निया (अमरीका) निवासी थोमस लिन नामक एक सत्य जिज्ञासु युवक को उसकी प्रार्थनानुसार शुद्धि-संस्कार कराकर वैदिक धर्म की दीक्षा दी। तथा उसे सत्यपाल यह नाम दिया गया। यह अमरीकन युवक (२३ वर्षीय) अमरीका के अतिरिक्त यूरोप के प्राय सभी देशो मे, तथा अफ्रीका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि का भ्रमण कर चुका है और सत्यान्वेषी के रूप मे उसने इस्लाम, सिक्ख मत, बौद्ध मत, चीन, जापान के मतो का भी अनुशीलन किया, पर जब गत मास प० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड से ऋषिकेश मे उसकी भेंट हुई और उन्होने अपनी Conception of Cod in Christianity and Vedic Dharma, Some Psalms of Sama Veda Sanhita आदि अपनी पुस्तकें उसे भेंट कीं तो उनके अध्ययन से वह बहुत प्रभावित हुआ। और वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे कुछ दिन रहने और वैदिक धर्म सम्बन्धी पुस्तकें पढने के पश्चात् उसने वैदिक धर्म मे दीक्षित होने को लिखित प्रार्थना-पत्र दिया। वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर वासी समस्त नर-नारियो तथा अन्य सुशिक्षित सज्जनो की उपस्थिति मे प० धर्मदेव जी ने वैदिक धर्म के मुख्य सिद्धान्तो तथा उसकी विशेषताओ गायत्री मन्त्र तथा यज्ञोपवीत आदि की अंग्रेजी मे व्याख्या करते हुए उसे यज्ञोपवीत पहनाया और गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया। उसने अपना प्रार्थना-पत्र और वक्तव्य पढकर सुनाया, जिसमे उसने लिखा था कि–

'I believe strongly in the Vedas as my and the World's basis for law and the way, You are my Guru, Guide me O father in to the light of truth I wish to take the oath of purification and be enterec in to the holy order."

इत्यादि अर्थात् मै वेदो को विश्व नियम और सत्य मार्ग के आधार के रूप मे दृढ़ विश्वास रखता हू। मुझे गुरू के रूप मे आप सत्य के प्रकाश का दर्शन करावें। मै पवित्रता का व्रत लेकर पवित्र वैदिक धर्म में प्रवेश करना चाहता हू। जब उसे 'अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि' मन्त्र द्वारा व्रत ग्रहण कराया गया तो उसने उसका अंग्रेजी अर्थ स्वय पढकर सुनाया, और गुरुमन्त्र का भी शुद्ध उच्चारण करके सुनाया जो उसे सिखाया गया था। वह स्वय निरामिष भोजी है, और इसका प्रचार करना चाहता है। वानप्रस्थाश्रम के मान्य प्रधान महात्मा हरप्रकाश जी ने आश्रम वासियो की ओर से माला पहनाकर उसको आशीर्वाद दिया।

—चन्द्रभूषण सिद्धान्तभूषण

# जीवन-ज्योति

## पूज्य श्री स्वामी समर्पणानन्द जी

*श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री

सन्यासी बनने से पूर्व वह थे विद्यामार्तण्ड प० बुद्धदेव विद्यालकार। भाषण-कला मे अनोखे, साहित्यिक सक्तुक बोलने मे निपुण, धारा प्रवाह इगलिश भाषण मे विदग्ध, प्रतिभा के धनी, स्वधर्म प्रेम मे मग्न, सादा वस्त्र और रहन सहन। मेरे तो बडे मित्र और प्रेमी थे। हसी मजाक भी खूब रहता था। गुरुकुल के गौरव थे। धर्म-प्रचार के जीवन को अपनाया तो उसी मे डटे रहे। लेखन और कविता मे भी दक्ष थे। उनके बनाये गीत भजनोपदेशक बडे चाव से गाते हैं–

"दुन्दुभि बाजगई,
दहल उठो दल दम्भ राज को
सुनि ललकार नई।"

आदि गीत उनके ही लिखे हुए हे। गाते भी बहुत बढिया थे, वे गुमशुम गम्भीर नहीं थे। चुलबुले और चहल-पहल के लोग थे। अभिमान से कोसो दूर और प्रेम से भरपूर। इस वर्ष मे तीन दिग्गज उपदेशक चल दिये–पूज्य ब्रह्मचारी श्री अखिलानन्द जी, श्री प कालीचरण जी अरबी फाजिल और तीसरे श्री स्वामी जी।

जो गया चला गया बिलकुल
देखिये दूसरा है कब आये।
अब चमन से खिजां का मौसम है
देखना है बहार कब आये।

पडित जी (विद्यालकार जी) शास्त्रीय मर्मों को जानने वाले विद्वान थे। वेदमन्त्रो और ब्राह्मणो की श्रुतियो की सगति बहुत युक्तियुक्त मनोरजप्रद लगाते थे। किन्तु इतने योग्य व्यक्ति को धन का सदा अभाव रहा। वैसे तो आर्य समाजी अपने उपदेशको को इतना ही देता है, जितना कि सर्कस वाले सरकस के शेरो को। सरकस के शेर अफीम के नशे मे काम करते है, और आर्य विद्वान् अपने धर्म प्रेम के नशे मे। परन्तु विद्यालकार जी को आर्य भाइयो ने पर्याप्त धन दिया, किन्तु उनके व्यय अपव्यय थे, अत वे सदा कगाल रहे। उनका लिखा बहुत कुछ है और सब ही उत्तम हे। उनकी लिखी पुस्तक "काया कल्प" तो बहुत ही सुन्दर और उपयोगी है। उनका लिखा शतपथ भाष्य न पूरा हो सका न अधूरा छपा। देखिये उनके शिष्य आगे क्या करते है। विद्यालकार जी ने रूढिवाद को कुचल कर रख दिया। गौड ब्राह्मण होते हुये भी उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह जाटों और अरोडो मे किया। वे चले गये, परन्तु उनके काम अमर हैं। श्री स्वामी जी चल दिये,

तजि जग श्री सुर धाम।
किन्तु रहेगी जगत मे,
उनकी कीर्ति ललाम॥

श्री शिवचरणलाल गौतम प्रचारक अतरौली क्षेत्र द्वारा–

३-१-६९ को ग्राम ढोलना डा. खास तहसील कासगज, जिला एटा मे स ४६ ईसाई स्त्री, पुरुष बच्चो को शुद्ध करके उनकी प्राचीन हिन्दू जाति मे सम्मिलित किया गया।

११-१-६९ को ग्राम हखारी मुहाल पूर्वी डा खास जि अलीगढ मे स. ५२ ईसाई स्त्री, पुरुष बच्चो को शुद्ध करके उनकी प्राचीन हिन्दू जाति में सम्मिलित किया गया। —रघुबीरशरण आर्य

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल –६०

फाल्गुन ११ शक १८९० फाल्गुन शु० १३
[दिनाङ्क २ मार्च सन् १९६९]

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य . २५९९३ तार । "आर्यमित्र" .

# पुस्तक-परिचय

## सत्य की परख–मूल्य २५ पैसे

प्रकाशक–जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलीगढ (उ प्र)

इस लघु पुस्तिका मे अलीगढ जिले के सेहोर गॉव मे ९ मई १९६३ को पादरी अब्दुल हक के साथ पं० शिव शर्मा शास्त्रार्थ महारथी के शास्त्रार्थ का विवरण दिया गया है। शास्त्रार्थ मूल रूप मे प्रकाशित किया गया है, जो बडा मनोरजक एवम् ज्ञान वर्धक है।

## गुरु-शिष्य सम्वाद–मूल्य १-५०

प्रकाशक–भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद, सेवा सदन कटरा, अलीगढ (उ प्र)

इस पुस्तक मे गुरु शिष्य सवाद के दस भागो का सकलन है, जिनमे सत्यार्थप्रकाश के पूर्वार्द्ध अर्थात् दस समुल्लासो का सक्षिप्त व रोचक अध्ययन कराया गया है। पुस्तक का सम्पादन आचार्य मित्र सेन एम. ए (हिन्दी संस्कृत) सिद्धान्तालकार द्वारा किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों द्वारा विशेष रूप से पठनीय हैं।

## आर्य समाज के लोकोपकारी कार्य–मूल्य ७५ पैसा

लेखक–आचार्य मित्रसेन एम ए (द्वय) सिद्धान्तालकार
प्रकाशक–भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् सेवासदन कटरा, अलीगढ (उ. प्र)

इस पुस्तक मे निम्नलिखित विषयो पर ओजस्वी विचार व्यक्त किये गये हैं–

आर्य समाज से पूर्व का भारतवर्ष, जागृति की भावना, वेदो का पुनरुद्धार, शिक्षाक्षेत्र मे क्रांति, राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार, स्त्री जाति का सम्मान, अछूतोद्धार, शुद्धि आन्दोलन, ईश्वर का सच्चास्वरूप, स्वातन्त्र्य आन्दोलन, आर्यसमाज अमर रहे।

पुस्तक का पठन उत्साह का वर्धन करता है और आर्यसमाज के पुनीत कार्य को आगे बढाने की प्रेरणा देता है।

## नित्य कर्म विधि–मूल्य ४० पैसे

सम्पादक–विद्याधर आर्य शास्त्री
प्रकाशक–भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् सेवा सदन, कटरा अलीगढ़ (उ प्र)

इस लघु पुस्तिका मे सकल्प मन्त्र, प्रात.कालीन मन्त्र ब्रह्म यज्ञ (सध्या) स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्र से यज्ञ के लिये स्वति वाचन, शान्ति प्रकरण, पूर्णाहुति के मन्त्र, व्रतग्रहण मन्त्र, वैदिक प्रार्थना, पाक्षिक यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलि वैश्य देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ, सगठन सूक्त, प्रमुख आर्यपर्वों के मन्त्र, यज्ञ प्रार्थना, आरती और आर्यसमाज के नियम दिये गये हैं–पुस्तिका सर्वथा उपयोगी है। शुद्ध छपाई व सफाई की ओर थोडा अधिक ध्यान दिया जाता तो अच्छा होता। –'वसन्त'

# अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था–

## विद्यार्थियों का पठन-पाठन कहां और कैसे हो ?

★

★विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त मे होना चाहिए और लड़के और लडकियो की पाठशाला दो कोस, एक दूसरे से दूर होनी चाहिए, जो वहा अध्यापिका और अध्यापक पुरुष भृत्य अनुचर हो, वे कन्याओ की पाठशाला मे सब स्त्री और पुरुषो की पाठशाला मे पुरुष रहे। स्त्रियो की पाठशाला मे ५ वर्ष का लड़का और पुरुषो की पाठशाला मे पाच वर्ष की लडकी भी न जाने पावे।

★ जो अध्यापक पुरुष या स्त्री दुष्टाचारी हो, उनसे शिक्षा न दिलावे, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हो, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं।

★ जब तक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी रहे, तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा विषय का ध्यान और सग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहे।

★ सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान आसन दिए जायें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए।

## सभा के वार्षिक चित्र भर कर भेजिए

सभा से सम्बद्ध समस्त आर्यसमाजो एव जिला उप प्रतिनिधि सभाओ को वार्षिक चित्रादि भेजे जा चुके हैं। जिन स्थानो पर फार्म न पहुचे हो, वह सभा कार्यालय मे पत्र भेज कर पुन: मगालें।

२–सभा का प्राप्तव्य धन दशाश, सूद कोटि, चवन्नी फण्ड तथा प्रतिनिधि शुल्क सीधा सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें। किसी उपदेशक व प्रचारक को न दें।

३–चित्र सावधानी के साथ भर कर कार्यालय में आना चाहिए, ताकि बार-बार वापस भेजने मे व्यर्थ का पोस्टेज व्यय न हो।

४–आर्यमित्र की एजेंसी का धन और शुल्क भी आना आवश्यक है।

समाजों से अनुरोध है कि वह अपने चित्रादि नियमानुसार भर कर ३१ मार्च तक सभा कार्यालय में अवश्य भेज दें। –प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा-मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०दी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

'वयं जयेम' ] लखनऊ रविवार फाल्गुन २५ शक १८९०. चैत्र कृ० १३ वि० स० २०२५, दि० १६ मार्च १९६९ [ हम जीतें


*परमेश्वर की अमृत वाणी—*

# निष्पापता के लिए मन से बुरे विचारों को हटा

**परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि। परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः। ( अथर्व० ६–४५–१ )**

*

(मनस्पाप) मन के पाप ! (परा-उप-एहि) तू दूर भाग जा (किम्) क्यों (अशस्तानि) निन्दनीय बातों को (शंससि) विचारता है (परेहि) दूर हो जा (त्वाम्) तुझको (न कामये) नहीं चाहता (वृक्षाम वनानि) वृक्षों और वनों में (सञ्चर) विचरण कर (मे मन) मेरा मन (गृहेषु) गृह के भीतर (गोषु) गति शीलता मे है।

सुख समृद्धि शान्ति और आनन्द मानव प्रजा की निष्पापता मे अन्तर्निहित रहते हैं। जहां पाप होंगे, वहां अपराध होंगे और जहां अपराध होगे, वहां सुख-शाति समृद्धि और आनन्द का वास नहीं होग। विश्व न्यायालयों के दण्ड नियम भले ही किसी को भयभीत करने वाले हों, किन्तु वे अपराधों को समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि अपराधों के जनक पाप अब तक विद्यमान रहते हैं, अपराधों का सृजन करते रहते हैं।

विश्व का आर्य करण निष्पापता से होगा। युग की पाप धारा में प्रवाहित होने से काम नहीं चलेगा। पाप मन का विषय है, उसे निष्पाप करने के लिये परमेश्वर आदेश देते हैं कि मन से उसे दूर भगाओ, मानवी प्रजाओं से दूर इन पापों को वनों में विचरण करने दो जहां पापात्मायें विभिन्न योनियों में पड़ी पाप कर्म के फलों को भोग रही हैं।

निष्पापता के लिए आत्म साधक अपने शरीर रूपी गृह के भीतर उस गृही को देखे। मकान के भीतर जो मकीन है, और जिसके कारण इस मकान की शोभा है, उस तत्त्व को जाने अर्थात् आत्म ज्ञान उपलब्ध करे गतिशीलता के लिए आत्म ज्ञान नितान्त आवश्यक है। जो शरीर रूपी गृह मे अपनी आत्म चेतना को प्रचेतित करने मे लगा हुआ है, उसके मन मे पाप का उदय नहीं हो सकता, क्योंकि वहां तो शिव सङ्कल्पों का डेरा है।

अतएव विश्व का आर्य करण करने वालो ! पहले स्वत निष्पाप बनो। खोटी नियत छोड़ो। देखने वाला देख रहा है और सुनने वाला सुन रहा है। खरी-खोटी नियत का उस सर्वज्ञ को सब पता है। न्यायकारी न्याय नियम को नहीं छोड़ेगा। पाप करोगे तो नहीं बचोगे। अधर्म का पथ छोड़ो और धर्म को ग्रहण करो। धर्म पूर्वक निष्पापी बन कर आत्म साधना करो, स्वयम् आर्य बनो और दूसरों को आर्य बनाओ।

—'बसन्त'


| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | १० |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे


इस अंक में पढ़िए !




सम्पादक—

—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल. ए
सभा-मन्त्री

## सामवेद की धारा प्रवाह व्याख्या–

### तू आ जा रे मेरे प्रीतम प्यारे।
### दर्शन को तेरे व्याकुल आत्मा बारम्बार पुकारे।

श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' सभा मुख्य उप-मन्त्री

[ सामवेद, वेद का उपासना काण्ड है। परमात्मा के समीपस्थ होने के लिए जहां आत्मबोध और प्रकृति ज्ञान आवश्यक हैं, वहा श्रेष्ठतम कर्म का होना भी अनिवार्य है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए मन, वचन और कर्म की शुद्धता धारण करनी होती है। निर्मल आत्मा ही परमात्मा का आह्वान करता है। उस विशुद्ध ज्योतिस्वरूप के दर्शन के लिए जो रूप रस गन्ध श्रवण और स्पर्श से परे हैं, हमें आत्मना पवित्र होना पडता है। जब तक हम भौतिक ऐश्वर्यों की कामनाओं को सजोए उनकी उपलब्धि के लिये व्यग्र रहते हैं तो आत्मना उस आनन्दस्वरूप के दर्शन और मिलन की तडप कैसे हो सकती है। 'प्रेम गली अति साकरी ता में दुई न समाइ' के अनुसार प्रेम की सच्चाई का प्रतीक केवल अपने प्रियतम का एकमात्र प्यार है। जब वास्तविकता का बोध होता है, हृदय मे उस अविनाशी के लिये प्रेम जागृत होता है। विरह वेदना असह्य हो उठती है। आत्मा चीत्कार कर उठती है और 'प्रभु' 'प्रभु' की रट लग जाती है। पुकार मे जो दर्द है, आत्मना पीड़ा है वह आनन्दमय के मिलन के बिना ठीक नहीं हो पाती है। सुपावन दर्शन, स्नेहयुक्त मिलन, सोम सुधा सोपान, आनन्द गान के निमित्त उपासना क्षेत्र मे साधक व ज्ञान व कर्म के आधार पर प्रविष्ट होता है। उसकी आत्मा के जो स्वर निकलते हैं, हृदय की धड़कन मे 'ओ३म्' 'ओ३म्' का जाप होता है, उसकी दिव्य अनुभूति साधक को स्वतः होती है। परमेश्वर की निरन्तर समीपता का उसे स्पष्ट आभास होता है और वह उस परम शक्ति के आकर्षण से खिचा, निर्वाण पथ पर अबाध गति से बढता चला जाता है और परम धाम पर पहुचकर ज्योति मे ज्योति समाहित कर देता है।

साम की पावमानी ऋचाए उपासकों के लिये न केवल प्रेरणाप्रद हैं वरन् नितान्त आनन्ददायक हैं क्योंकि जिन अनुभूतियों की अभिव्यक्तिया उनकी वाणिया करने में असमर्थ होती हैं, उनकी पूर्ति परमेश्वर की इस अमृतवाणी से हो जाती है। —लेखक ]

### वेद मन्त्र–

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्य दातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ [साम०–१]

भावार्थ—(अग्ने) हे प्रकाश पुन्ज (वीतये) कान्ति प्रक्षेप के लिए (हव्य दातये) हव्य दात्यार्थ (गृणान) स्तुत्य होकर (होता) बन कर, आदान-प्रदान के निमित्त (आयाहि) आओ (बर्हिषि) वेदि पर (नि सत्सि) निरन्तर विराजो।

व्याख्या—इस ससार मे शरीर धारी आत्मायें भटकती हैं। जब कोई अपने धाम से भटक जाता है, तो जब तक वह अपने धाम पर पुनः नहीं पहुच जाता, उसे शान्ति नहीं मिलती। जब किसी प्रियतमा का अपने प्रीतम से बिछोह हो जाता है तो जब तक पुनः मिलन नहीं हो जाता उसे विरह अग्नि जलाती रहती है। आत्मायें जब तक कर्मानुसार विभिन्न योनियो मे पडी रहती हैं, नितान्त अतृप्त और अशान्त रहती हैं। "भोग योनियो मे केवल भोग है, न्यायकारी की दण्ड व्यवस्थानुसार वहां केवल भूख, प्यास और मैथुन है। थोडी बहुत मस्तिष्क की गतिशीलता भी हो सकती है, किन्तु मनुष्य जैसी बुद्धि का वहां सर्वथा अभाव है। मानव जैसा विकसित मस्तिष्क किसी भी प्राणी का नहीं है, इसे आस्तिक नास्तिक दोनों स्वीकार करते हैं।

मानव समाज की भी दो कोटिया हैं। एक कोटि मे वे जन हैं, जो जन्म लेते हैं, चमकीली माया के पीछे अन्धाधुन्ध भागते हैं और पाप-पुण्य की चिन्ता किए बिना निकृष्ट स्वार्थ पूर्ति मे रत रह कर, पापो और दुष्कर्मों के कारण पुनः पक्षियों की योनियो मे वापस जाते हैं। दूसरी कोटि में वे प्रजन हैं जो जीवन के उद्देश्य को समझते हैं, जो ससार की सर्वोपरि शक्ति को हृदय से स्वीकार करते हैं और उस सर्व नियन्ता, सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर न्यायकारी के प्रति आकृष्ट होते हैं। सूर्य्यचन्द्र और सितारों मे जिनकी पुनीत ज्योति है, फलो मे जिनका रस है, रूप में जिसका सौंदर्य है, गन्धियों में जिनकी सुगन्धि है, जो इन भौतिक चक्षुओं से दृष्टिगत नहीं होता, भौतिक कर्ण जिनकी ध्वनि को नहीं सुन पाते, त्वचा जिसका स्पर्श नहीं कर सकती, घ्राण जिसको प्राप्त नहीं कर सकती जिह्वा जिसका स्वाद नहीं ले सकती। जो मन, बुद्धि, चित्त के घेरे के बाहर है, वह केवल आत्मवत जाना, पहचाना और माना जा सकता है। जिसका यह सब जगत् है, जिसके भौतिक आकर्षण हमे आकर्षित करते हैं, वह कौन है, कहां है? उस सर्वव्यापक की निकटता होते हुए भी यह दूरी कैसी है? समीपतम होते हुए भी इतनी विशाल दूरी क्यों?

एक तडप उठती है, एक लगन लगती है, एक हूक मचलती है 'अग्न आ याहि' हे सुन्दर देव बुला रहा हूं आ! आह्वान कर रहा हूं, चला आ। मैं अशक्त हू तेरे पास नहीं आ सकता, पर तू तो सर्वशक्तिमान् है। मैं दूरतम हू, पर तू

(शेष पृष्ठ १२ पर)

## रख उस पर विश्वास

रख उस पर विश्वास बन्दे! रख उस पर विश्वास।
जीवन दु:ख मे सुख का दाता, सदा बंधाए आश॥
रख ... ...

चाहे पग-पग पर हो बाधा, चाहे हों तूफान भयकर।
मदमाती भीषण लहरों का, चाहे नर्तन हो प्रलयङ्कर।
पार लगाएगा वह नैय्या, होना नहीं निराश॥
रख ... ...

मत डरना जो हो अधियारी, दीखे न तुमको उजियारी।
कभी न होना विचलित पथ से, कभी न होना तू दुखियारी।
चीरेगा वह तम के बादल, देगा विमल प्रकाश॥
रख ... ...

करे जो जग में तेरी बुराई, करना उसको सदा भलाई।
न्यायकारी परमेश्वर तो सिखलाता जीवन सच्चाई।
होंगे शिव सकल्प जो तेरे, देगा वह शाबास॥
रख ... ...

देगा अपना पावन दर्शन, रीझेगा जब प्रीतम तेरा।
मिट जाएगे सारे सशय ज्योति मे जब होगा बसेरा।
सङ्ग 'वसन्त' रहेगा निरन्तर, ज्यों धरती आकाश॥
रख ... ...

लखनऊ-रविवार १६ मार्च ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०६९

## यद्वशिचत्रं युगे युगे नव्यं घोषाद मर्त्यम्

आर्य्यमित्र मे आर्य्यसमाज विषयक जो विचार व्यक्त किये जा रहे हैं, उन पर हमारे अनेक कृपालु पाठको ने अपने सुझाव दिये हैं। हृदय की सच्ची वाणी प्रभावकारी होती है, और अपना रङ्ग लाती है, हमारे पाठक जो आर्य्यसमाज के शुभचिंतक हैं, उनके पत्रों को पढ़ने से मुझे ऐसा विदित हो रहा है कि हम घोर निराशावादी हो गये हैं। निरुत्साह हम मे पूर्णतया घर कर गया है और हम जीते हुए भी मृत तुल्य हो गये हैं। एक पाठक ने मुझे यहां तक परामर्श दिया है कि 'आर्य्यसमाज' रूपी माता की हत्या उसके नालायक पुत्रो द्वारा कर दी गई है और अब वे लाश पर लड झगड रहे हैं। लाश से चिपटना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। जो भवन खडहर हो चुका है, उस की तो नींव खोदकर नया भवन ही खडा करना उपयुक्त है।

इस ससार मे प्रत्येक मानव के भीतर दो वृत्तिया कार्य्य करती हैं। एक को पुसक वृत्ति और दूसरे को नपुसक वृत्ति की सज्ञा दी गई जिनके भीतर पुसत्व होता है, पुरुषत्व होता है, वे मरुत बनकर युग परिवर्त्तन तक करने की क्षमता रखते हैं, किन्तु जो नपुसकता को धारण करते है वे बने बनाए काम को भी बिगाड़ देते हैं। आज धरती की मानव जाति पतनोन्मुख होकर मरणासन्न हो चुकी है। नवजीवन का सचार कर उसे उत्थानोन्मुख करने के लिये आज मरुतो की सर्वत्र आवश्यकता है। आर्यसमाज की स्थापना इसी उद्देश्य से कीगई थी।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जिनके पावन नाम का जयकार हमारे आर्य भाई करते हैं और जिन्हे जगद्गुरु और युग प्रवर्त्तक भी कहते हैं, एक ऐसे ही मरुत् थे। उनकी समस्त जीवनी इस बात की साक्षी है कि उनमे कितना पुसत्व था। सत्यवादिता अपने भीतर पुसत्व को सजोए रखती है। असत्य से चाहे चक्रवर्ती राज्य भी प्राप्त होता हो, तब भी असत्य का परित्याग और सत्य का ग्रहण करना, एक मरुत् को वाणी से ही सुशोभित होता है। आज कितने ऐसे हमारे बन्धु है जो अपनी आत्मा की आवाज को पार्टी बाजी के नाम पर दबाते हैं, भय और सकोच से मौन धारण कर लेते हैं। आर्यसमाज को जिन्होने अब 'दयानन्दी समाज' बना दिया है और केवल अन्य सम्प्रदायो की भाति यहा पर भी ईर्ष्या, द्वेष वैमनस्य और सघर्ष के बीज बो दिए हैं, उनके भीतर पुसत्व कहा है? दूसरी ओर वे सज्जन हैं जो आर्य समाज की वर्तमान अवस्था से पीड़ित तो होते है किन्तु उनमे प्रतिकूल परिस्थितियो से टक्कर लेने का पुंसत्व नहीं है। अत्याचार और अन्याय का प्रतिकार न करना और केवल आलोचना करना नपुसकता है जो आज सर्वत्र व्याप्त हो रही है। आज तो ऐसे मरुतो की आवश्यकता है जो बिना भय और परिणाम की चिन्ता किए अत्यन्त गभीर विषय और प्रतिकूल परिस्थियो मे डटकर साधनाशील बनकर आर्य्यसमाज का कायाकल्प करदें।

साधारण जन सदैव एक प्रवाह मे प्रवाहित होते है। उनके पास अन्तर्दृष्टि नहीं होती। जब उत्साह का वातावरण होता है, तो उनका पुसत्व जागृत हो उठता है। निराशा की लहर उठती है तो वे भी नपुंसक हो जाते हैं। सनातन पौंस्य से अलकृत मरुत ससार के चित्र को पलटते हैं क्योकि उनकी कल्पनाओं मे मानव जाति के अभ्युदय का एक नवीन चित्र होता है। उनका चित्र अमर्त्य होता है, उसमे सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् के अमिट रग होते हैं।

कल्पना मे नये चित्र बना लेना सरल है, किन्तु उन्हे साकार करना दुस्तर है। पुसत्व गुण को अपने भीतर सजोए जब साधना पथ पर चल कर साधक अपने भीतर अजेय शक्ति को सचित कर लेता है तो वह कल्पना के उस चित्र को, जो अतिशय कठिन होता है, साकार रूप देने के लिये विश्व प्राङ्गण मे उतर पड़ता है और असम्भव को सम्भव करके दिखा देता है। वह पहले स्वयम् अपने को चित्रित करता है तत्पश्चात् अन्यो को उस रग मे रगता है। केवल वाणी ही नहीं वरन् जब चित्रित जीवन स्वयम् बोलने लगता है, तब जन साधारण मे मन वाछित परिवर्त्तन झलकने लगता है।

विश्व का आर्यकरण करने की जिनकी चिर साध है, जो नये युग के सुनिर्माण का चित्र अपनी कल्पनाओ मे सजोये बैठे हैं, उन्हे नपुसक होकर हताश होने की आवश्यकता नहीं है। स्वयम् युग प्रवाह मे जो बह और डूब रहे हैं वे कैसे दूसरो की रक्षा कर सकेंगे, धारा के प्रवाह को मोडना उनके वश की बात नहीं है। अतएव आर्यजगत् के समस्त शुभचिन्तको से परमेश्वर की पुनीत वेदवाणी का आधार लेकर हम एक विनम्र निवेदन करते है—कि वे उठे सम्भले, अपनी आत्मवाणी को सुने और सगठित होकर वर्तमान युग मे जिस क्रान्तिकारी परिवर्त्तन की आवश्यकता है, उसे करके दिखाये और सिद्ध कर दे कि युग-युग मे नवीन चिरस्थाई चित्र जो भले हो दुस्तर हो, उसमे अपनी धारणाओ को पृथक् रूप से चित्रित करने का सामर्थ्य जिन आर्यो मे होता है, वे वही है।

### बन्दे! मौत बड़ी बलवान

आर्य जगत् के विद्वानों का निधन जिस द्रुत गति से हो रहा है, उसे देख कर आर्य जनों के हृदयो का शोक ग्रस्त होना स्वाभाविक ही है। गत २३ फरवरी श्री को डाक्टर गोकल चन्द जी नारग का दिल्ली मे ९० वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। अभी कुछ दिन पूर्व उनके छोटे भाई श्री केसरराम जी नारग का देहान्त हुआ था। स्व० डा० गोकलचन्द नारग ने पजाब मे लाला लाजपत राय जी के साथ धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र मे पदार्पण किया था। आप डी० ए० वी० कालेज मे प्राध्यापक रहे, तत्पश्चात् व्यवसायिक क्षेत्र को अपनाया और यथेष्ट धन सग्रह किया। अनेक चीनी मिलो के स्वामी होते हुए भी आपने पजाब के आर्य सगठन मे सक्रिय भाग लिया और आर्यसमाज की पर्याप्त सेवा की। स्वाधीनता सग्राम मे आप अनेकबार जेल गये। विभाजन के पूर्व आप पजाब सरकार के मन्त्री भी रहे। आप एक उत्तम वक्ता थे और उज्ज्वल मस्तिष्क के कारण आपका सर्वत्र मान सम्मान होता था। आपको अग्रेजी सरकार ने 'सर' की उपाधि भी प्रदान की थी जिसे आपने १९४६ मे वापस कर दिया था।

भारत के ऐसे आर्य सपूत को हम अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। परमात्मा से दिवगत आत्मा की शाति और सद्गति की प्रार्थना करते हैं और नारग परिवार से अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हैं।

### आए भी वे गए भी वे, खत्म अफसाना हो गया।

इस परिवर्त्तनशील जगत् में जो व्यक्ति क्षण-क्षण होने वाले परिवर्तन के रहस्य को न समझकर पदार्थों विषयो और जीवो मे आसक्त होते हैं, उनकी निस्सन्देह दुर्गति होती है और अन्त दु:खद होता है। इसका कटु अनुभव श्री अयूबखान को हो चुका है। एक दिन वह भी था जब उन्होने जनरल सिकन्दर मिर्जा से शक्ति के बल पर सत्ता छीनी थी और अब एक दिन वह भी आया है जब नितान्त शक्ति हीन होकर उन्हे सम्भवत पाकिस्तान से भी बाहर जाना पड़ेगा। पिछले दिनों पाकिस्तान मे भयकर उपद्रव हुए हैं

## दयानन्द प्रचारक संघ की सूचना

सभान्तर्गत अवैतनिक उपदेशक महानुभावो की सेवा मे निवेदन है कि सभा का वर्ष १९६८ समाप्त हो गया। सभा से वर्ष भर के प्रचार का कार्यक्रम भेजने के लिये कार्यालय से पत्र जा चुके हैं। अत. उन सभी महानुभावो का नाम अवैतनिक उपदेशक पद के लिये आगामी वर्ष के लिये घोषित किया जाता है और उनसे प्रार्थना की जाती है कि वर्ष भर के प्रचार का कार्य विवरण सभा कार्यालय को इस सूचना के पढ़ते ही भेजने की कृपा करे। जिससे प्रचार का विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित कराया जाये।

प्रेमचन्द्र शर्मा एम एल ए
सभा मन्त्री तथा अधि. उपदेश वि.

## श्री पं. विद्याभिक्षु जी अस्वस्थ

आर्यजगत् के विद्वान् वक्ता श्री प विद्याभिक्षु जी आर्य आलम फाजिल इस समय बहुत अस्वस्थ हैं। आप सभा भवन लखनऊ में निवास कर चिकित्सा करा रहे हैं। आपको नवम्बर ६८ मे फालिज का अटैक हुआ था, तब से निरन्तर इलाज हो रहा है और अब तक उनके स्वास्थ्य में कोई लाभ नहीं है। सैप्टिक और ब्लडप्रेशर से भी पीड़ित हैं।

---

और अयूब सरकार सशक्त जन विद्रोह को कुचलने में असमर्थ रही है। अभिमान कुचला जा चुका है। जिन राजनीतिक विरोधियो को कारावास मे डाला गया था और देश द्रोह के मुकद्दमे खडे किए थे, वे निष्फल हो चुके हैं।

१९७० पाकिस्तान मे सत्ता लोलिपों के लिए क्या रग लायेगा, यह तो भविष्य ही बतलायेगा किन्तु जनमत का निरादर करने का और सेवा भाव को त्याग कर शासकीय वृत्ति का जो दु:खद अन्त इस ससार मे नित्य-प्रति देखने मे आता है, उससे राजनीतिक क्षेत्र के खिलाड़ियों को शिक्षा अवश्य लेनी चाहिए।

## सभा की सूचना

सर्व जिलास्थ आर्यसमाजों को विदित हो कि सभा कार्यालय से मास फरवरी के अन्तिम सप्ताह में पत्र भेजकर निवेदन किया गया था कि उत्तरप्रदेश के मध्यावधि चुनाव मे आर्यसमाजी कौन महानुभाव किस-किस दल की ओर से निर्वाचित हुये हैं ? इस प्रकार की सूची बनाकर भेजें-किन्तु खेद का विषय है कि सभा कार्यालय में केवल ५-६ समाजों के उत्तर ही प्राप्त हुए हैं। अतः पुन. निवेदन किया जाता है कि अपने-अपने जिले के निर्वाचित आर्य सज्जनो के नाम पते सहित तुरन्त भेजने की कृपा की जावे जिससे उनकी सूची तैयार की जाए आशा है समाजें शीघ्रता करेगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभामन्त्री

## प्रोग्राम १६ से ३१ मार्च

१—आ० श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्रीः—२४ से २८ गुरुकुल अयोध्या।

२—श्री प केशवदेव जी शास्त्री—१६ से २२ कथा बढ़ापुर (बिजनौर) २७ से ३० पडरौना।

३—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी—२७ से ३० लुकसर।

४—श्री रामस्वरूप जी आ. मु:—१६ से १८ उन्नाव, २० से २३ बिन्दकी, २७ से ३० पडरौना।

५—श्री गजराजसिंह जीः—जिला मु० नगर, २७ से ३० लुकसर।

६—श्री खेमचन्द्र जीः—२४ से २८ गुरुकुल अयोध्या।

७—श्री ज्ञानप्रकाश जी—२४ से २७ केराकत।

८—श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी.—२८ से ३० चोपन।

९—श्री खडगपालसिंह जी.—१२ से २० अडींग (मथुरा)।

१०—श्री हेमलतादेवी जीः—१८-१९ उन्नाव।

## उत्सव सम्बन्धी सूचना

प्रदेशीय आर्य समाजों को विदित हो कि उत्तरप्रदेश में चुनाव के कारण दिसम्बर जनवरी तथा फरवरी मास मे प्रायः आर्यसमाजों के उत्सव स्थगित रहे हैं। अतः आर्य समाजें उत्सव की तिथियां नियत कर वैदिक धर्म का प्रचार कराने का आयोजन करें। जिससे जन-जागरण मे जागृति हो। यदि आर्थिक कठिनाइयों के कारण उत्सव न हो सकें तो कम से कम एक-एक सप्ताह 'कथा' द्वारा प्रचार कराने की योजना बनाए। विश्वास है कि आर्यसमाज इस ओर विशेष ध्यान देकर सभा को सूचित करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.
सभा मन्त्री

## आर्यमित्र साप्ताहिक के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में विवरण

प्रपत्र—४ नियम ८

१—प्रकाशन का स्थान—भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

२—प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक प्रति बुधवार बृहस्पतिवार।

३—मुद्रक का नाम—श्री कृष्णगोपाल शर्मा, स्वत्वाधिकारी-श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के लिये।

४—प्रकाशक का नाम—श्री कृष्णगोपाल शर्मा स्वत्वाधिकारी-श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र., लखनऊ के लिये।

राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

५—सम्पादक—श्री प० प्रेमचन्द्रजी शर्मा एम.एल ए सभा मन्त्री। ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

राष्ट्रीयता—भारतीय

६—पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा उ प्र. लखनऊ।

मैं कृष्णगोपाल शर्मा घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही हैं।

—कृष्णगोपाल शर्मा
प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक १ मार्च, १९६९

## सभा के वार्षिक चित्र भर कर भेजिए

सभा से सम्बद्ध समस्त आर्यसमाजों एव जिला उप प्रतिनिधि सभाओ को वार्षिक चित्रादि भेजे जा चुके हैं। जिन स्थानों पर फार्म न पहुंचे हों, वह सभा कार्यालय मे पत्र भेज कर पुन: मगालें।

२—सभा का प्राप्तव्य धन दशांश, सृष्टि कोटि, चवन्नी फण्ड तथा प्रतिनिधि शुल्क सीधा सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें। किसी उपदेशक व प्रचारक को न दें।

३—चित्र सावधानी के साथ भर कर कार्यालय मे आना चाहिए, ताकि बार-बार वापस भेजने में व्यर्थ का पो स्टेज व्यय न हो।

४—आर्यमित्र की एजेंसी का धन और शुल्क भी आना आवश्यक है।

समाजो से अनुरोध है कि वह अपने चित्रादि नियमानुसार भर कर ३१ मार्च तक सभा कार्यालय में अवश्य भेज दें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा-मन्त्री

## वार्षिक विवरण शीघ्र भेजिए

सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखी जाना आरम्भ हो गया है। सभा के मान्य अधिकारियों, अन्तरग सदस्यों, निरीक्षकों, अवैतनिक उपदेशकों, जिला उप सभाओं तथा विभागों के अधिष्ठाताओं से अनुरोध है कि वह अपने कार्य का विवरण २२ मार्च तक अवश्य भेजने की कृपा करें। ताकि शीघ्र ही रिपोर्ट प्रकाशित होकर सेवा में भेजी जा सके।

—विक्रमादित्य 'बसन्त'
सभा उप मन्त्री

# सुझाव और सम्मतियाँ

## एक आवश्यक सुझाव

—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आ प्र सभा

१—पाखण्ड खन्डनी पताका शताब्दी मनाना सन् १९६८ मे निश्चय हुआ था। मैंने सार्वदेशिक सभा को इस सम्बन्ध मे पत्र गत वर्ष लिखा था, उन्होंने ये लिखा था कि इस समय, समय कम रह गया था, इस वर्ष प्रबन्ध किया जायगा। अभी तक इस सम्बन्ध की सूचना प्रकाशित नहीं हुई है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से अनुरोध करूंगा कि वह हरिद्वार में इस शताब्दी के लिए व्यवस्था करे। अप्रैल मास में किसी तिथि को यदि स्वतन्त्र रूप से मनाने की व्यवस्था न हो सके तो गुरुकुल कागडी के उत्सव के साथ या ज्वालापुर उत्सव के साथ एक दिन इसके लिए निश्चय किया जाय।

२—आर्य समाज की स्थापना शताब्दी सन् १९७५ मे बम्बई मे मनाई जा रही है। उसके लिये यह आवश्यक है कि एक स्थापना शताब्दी सम्बन्ध में समिति का निर्माण हो जाय जिसमे भारत भर के प्रमुख आर्य समाजी व्यक्ति सदस्य हो और शताब्दी के लिये अभी से प्रबन्ध होना चाहिए, और उसकी रूप-रेखा गम्भीरता के साथ निश्चय की जाय। जन्म शताब्दी मथुरा के अवसर पर इसी प्रकार की एक समिति बनाई गई थी, जिसमे कार्यक्रम निश्चय हुआ और उत्तम साहित्य प्रकाशित हुआ और शताब्दी बड़ी धूम से मनाई गई।

३—मैं आर्य समाज के प्रचार मे प्रगति लाने के लिये अपने एक पुराने सुझाव को पुन प्रकाशित कर रहा हू ! एक सुन्दर और उपयोगी मोटर का प्रबन्ध हो जिसका नाम 'वेदरथ' हो उसमे कुछ व्यक्ति बैठकर सारे देश का देशाटन करे और प्रचार करें। उसका ड्राइवर और क्लीनर ऐसे हों जो भजन भी गा सके। दूसरे दो चार व्यक्ति सारे देश में भ्रमण करें। और जिस प्रान्त या जिले मे ये मोटर गस्त करे वहाँ उस प्रान्त और उस जिले के मुख्य व्यक्ति भी साथ लिये जाय, इससे यह लाभ होगा कि आर्य समाज की आवाज बहुत दूर-दूर तक पहुच जायगी। स्थापना शताब्दी तक आर्य समाज को अपना विशाल सार्वजनिक और उपयोगी स्वरूप को सारे देश मे प्रकट कर देना आवश्यक है।

४—शताब्दी मनाने से पूर्व विदेशो मे भी ऐसी व्यवस्था प्रचार की हो जिससे उस देश के निवासियो तक आवाज पहुच सके ! अब तक प्राय ऐसा होता है कि जो आर्यसमाज के प्रचारक या नेता विदेश जाते हैं उनका प्रचार अधिकतर उन भारतवासियो तक ही सीमित रहता है ! जो वहाँ निवास करते है। कभी-कभी ऐसा भी हुआ है, कि उन देश वालो के लिए प्रचार हो सका। आर्य समाज सारे विश्व के लिये है और इसको अपनी कार्य प्रणाली और कार्यक्रम इस लक्ष्य को दृष्टि मे रख कर निर्धारित करना आवश्यक है।

५—मेरा ये विश्वास है कि वेद रथ के बनवाने मे और उसकी यात्रा मे जो व्यय होगा उससे बहुत अधिक धन भी दान मे प्राप्त हो जायगा।

**और यदि ऐसी व्यवस्था हो गई तो मैं अपने जीवन का शेष समय इस शुभ कार्य मे देना सौभाग्य समझूंगा।**

धर्म निरपेक्ष—

## होली हास्य व्यंग

—श्री मदनमोहन एडवोकेट मोठ (झाँसी)

वसन्ती बहारो के बीच, क्या ऊँच, क्या नीच, खींचत बने सो खींच खाका, पैसा लगे न टका। खाली चौका मौका देख कर मन मे आया कि रगीले, रसीले शब्दो के छींटो से देश का दिग्दर्शन कराता हुआ पवित्र मिलन पर्व मनालूं —

बहिनों, बन्धुओ ! अष्टाध्यायी के अनुसार होली शब्द की व्युत्पत्ति 'हल' प्रत्याहार से हुई है, जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण व्यजन आते हैं, यही कारण है इसको सर्व मिलन पर्व माना गया है।

सभी ने आचार्य विश्वश्रवा की धर्म पत्नी श्रमती देवी के बडे वायवेला के बाद सर्व-प्रथम वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त करने का शुभ समाचार सहर्ष पढा होगा। अपूर्व स्वागत हुआ ठीक ही हुआ बहिन जी यदि किसी पाश्चात्य उपाधि के पीछे पडतीं तो निश्चित ही अधिक सुगमता होती। सौभाग्य से देश मे बहिन जी का राज्य है, जो मनुष्यो का तो कहना ही क्या है, पक्षियों का भी मूल्यांकन करने मे अत्यन्त दक्ष है। आपने कुछ दिन हुए पढ़ा होगा कि भारत सरकार निकट भविष्य मे कुछ पछियो के डाक टिकट निकाल रही है, उसका मूल्यक्रम इस प्रकार है। (१) नीलकण्ठ २० पैसा (२) कठफोरा ५० पैसा (३) टिटहरी एक रुपया (४) शक्कर खोरा दो रुपया। पाठको की भावनाओ की अभिव्यक्ति निम्न पक्तियों मे पर्याप्त रूप मे मिलेगी ऐसी आशा है।

बहिन जी जो कुछ करें सो थोरा।  
एक देखत मे अति भोले, एक कोल के करते पोले  
बीस पैसा नीलकण्ठ के, पर पचास कठफोरा ..  
हैं हैं करती चाल टेढी, एक लगाता सबको एढ़ी,  
टिकट एक का टिटहरी का, दो का शक्कर खोरा...  
अध्यापको से जेलें भरती,अध्यापिका जी मौजे करतीं  
घूम-घूम कर धूम मचा रए, छुहर फिर रए छोरा .  
ऊँचौ हो रओ उनकौ दर्जा, अमरीका से आरओ कर्जा  
कोऊ भूखन मर रए कोऊ खा के पर रए बोरा...  
पप्पू, मम्मी, अन्टी, डैडी, महामहिम जी हो गये रैडी  
भोरी, गोरी रंगई का भई चले गये जो गोरा ..  
जो चाहो अपनी पन्नामा, पैरो चूडीदार पजामा  
डाढी मूँछ मुडा कर मिल लो,फिर का तुमखों तोरा  
बूढे पुराने साँची कैगए, धर्म-कर्म के नाम रह गये  
तन्द्रा मे जब इन्द्रा पर हैं खैहैं दाँत निपोरा  
बनें बहिन जब वेदाचारी, स्वर्ग हुई है वसुधा सारी  
फहरे ओ३म् ध्वजा व्योम मे, गान गूंजे मेरा .

[ २ ]

### धर्म निरपेक्षता का नवीनतम उदाहरण

निरपेक्ष देशका देखिये, दृष्टान्त गर्म गर्बीला  
'पाटौदी' पुल्लिग अरु स्त्री है 'शर्मीला'  
स्त्री है शर्मीला क्या है व्याकरण की बाधा  
पूर्ण वचन हुए दोनो के, भेद लिंग का आधा  
नेता कहे सुनो अभिनेत्री,धर्म की चर्चा नहीं चलाना  
पडे हुए वृथा क्यों गम में, हो वेगम सुल्ताना .

# ग्राम जीवन

## हल्दी केले के वीर—

वयोवृद्ध अजि रेड्डी सारी उम्र हल्दी और केले की खेती करते रहे हैं। लेकिन उन्हे मशहूरी मिली कपास । गुन्टूर जिले के किसान उन्हें प्रति ्मी कपास का भीष्म कहते हैं।

७५ वर्षीय कल्ल उ रेड्डी आंध्र प्रदेश मे गुन्टू जले के कोक्षपालेम गाव के किसान हैं। कपास उगाने का विचार उन्हे कैसे सूझा, यह भी एक दिलचस्प घटना है।

एक दिन यू ही वह अपने केले तथा हल्दी के खेतों को देख रहे थे तो उन्हें ख्याल आया, कि पौधों के बीच में खाली जगह का सदुपयोग क्यों न किया जाये ?

रेड्डी ने हल्दी की कटाई करने से डेढ़ महीने पहले कतारो के बीच खाली जगह मे कपास का पी० २१६ एक किस्म का बीज बो दिया। हर जगह पर उन्होने दो तीन बीज चोबकर बोये। कतारों के बीच १५० सेंटीमीटर और जगहों के बीच ४५ सेंटीमीटर का फासला रखा। जब पौधे कुछ बडे हो गये तब उन्हें छितरा किया और एक जगह केवल एक मजबूत पौधा रहने दिया।

जब हल्दी तैयार हो गई तब अजि रेड्डी ने फी हेक्टर ढाई सौ किलो अमोनियम सल्फेड डालकर सब्बल से हल्दी की

इसके बाद उन्होने फावड से कपास के पौधो पर मिट्टी चढ़ाई। अप्रैल मे कपास की फसल मे फी हैक्टर ढाई सौ किलो अमोनियम सल्फेट फिर डाला।

इसी प्रकार केले की कतारों के बीच भी कपास बो दी। केले के ४० हैक्टर के बगीचे मे उन्होंने केले की फसल तैयार होने से एक महीने पहले खाली जगह मे द बीज हर स्थान पर चोबकर बो दिये। कतारो के बीच फासला १५० सेंटीमीटर और स्थानों के बीच ६० सेंटीमीटर रखा।

केले की फसल लेने के बाद उन्होंने पौधों को जड सहित उखाड कर निकाल दिया। उसके बाद निराई गोडाई करके कपास के पौधो पर मिट्टी चढ़ाई।

बाद के दो तीन महीनो मे उन्होंने फी हैक्टर डेढ सौ किलो के हिसाब से अमोनियम सल्फेड खडी फसल पर भुरका।

कपास की वह फसल जिससे अजि रेड्डि को केला और हल्दी दोनो के बराबर मुनाफा मिला।

## दुगनी फसल उगायें

खेतो मे खलिहानों मे, हरे भरे मैदानो मे,
आओ श्रम की स्वर लहरी पर यही तराना गायें,
हम दुगुनी फसल उगाए।

घृणा के अकुर न फूटें गायें खुशी के गीत।
ऐसी समता आये हृदय मे दुश्मन हो जायें मीत।
धीरज धर्म प्रणाली हो, राहो मे उजियाली हो,
तार न टूटे, प्यार न छूटे यही तराना गायें,
हम दुगुनी फसल उगायें ॥१

किसी वस्तु से कोई बन्धु होवे नहीं निराश।
अधर भरे हों सबके हसी से रहे न कोई उदास।
गाव गांव खुशियाली हो, खेतों मे हरियाली हो,
आगन हसे द्वार मुस्काकर यही तराना गायें,
हम दुगुनी फसल उगायें ॥२

शूलो को भी फूल बनादें मिटे राह की धूल,
मरुथल की भी प्यास बुझा दे कर मौसम अनुकूल।
घर-घर में दीवाली हो, नई सुबह की लाली हो,
गम हट जाये तम मिट जाये यही तराना गायें,
हम दुगुनी फसल उगायें ॥३

सिर पर चाहे गिरे बिजलियाँ साहस कभी न छूटे,
युग पुरुषों की मर्यादाए कभी न हमसे टूटें।
गूंज उठे दीवालों से, मन्दिर क्या चौपालों से,
तन तरङ्ग हो, मन उमग हो यही तराना गाए
हम दुगुनी फसल उगायें ॥४

—ओमपाल आर्य 'सचेत' रसूलपुर जाहिद (मेरठ)

## —कपास के भीष्म

कपास की उन्होने कुल पांच सिंचाई कीं।

अपनी कपास की फसल को जैसिड तथा बौंडी के कीडों से बचाने के लिये उन्होंने सेविन, गधक, एन्ड्रिन तथा पैराथियान दवाओ के छिडकाव किये।

हर पौधे मे ६०-७० बौंडियाँ देखकर लोग रेड्डी की खूब प्रशसा करते थे। कपास की पैदावार फी हैक्टर २,४७५ किलो मिली। यह पैदावार जिले भर मे सबसे अधिक थी।

इस प्रकार अजि रेड्डी को अपनी ०६ हैक्टर जमीन से ८,००० रुपये का मुनाफा हुआ। इतना ही नहीं गुन्टूर जिले की कपास उत्पादक सस्था ने उन्हें 'प्रति भीष्म' की उपाधि से विभूषित भी किया।

किसी ने सच कहा है कि सब विचार सफलता की सीढी होते हैं।

# 'आर्य्य वर्ण' मीमांसा

श्री रामप्रताप अगई, सुल्तानपुर

## गहरे पानी पैठ

कुछ पाश्चात्य तथा भारतीय इतिहास लेखक विद्वानों में आर्य शब्द विषयक भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि आर्य वर्ण का अर्थ है, गौरवर्ण और अनार्य वा दस्युवर्ण का अर्थ है श्याम वा कालावर्ण। उपर्युक्त विद्वानों की कल्पना है कि प्राचीनकाल में आर्य वर्ण का अर्थ था, गोरे रग का मनुष्य। इस देश में उनके ख्याल से अनार्य जाति (काले रग का मानव समुदाय) ही पहले रहती थी और बाद में आर्य जाति (गोरे रग का समुदाय) दूसरे देशों से इस देश में आई थी। किन्तु उपर्युक्त विद्वानों की उक्त कल्पना सर्वथा मिथ्या है, क्योंकि प्राचीन सम्पूर्ण आर्य साहित्य मे एक भी प्रमाण नहीं पाया जाता जिससे उपर्युक्त कल्पना सत्य मानी जा सके। क्या उपर्युक्त पक्ष स्थापक विद्वान् 'आर्य वर्ण' शब्द का अर्थ रग रूप मुखाकृति परक (गोरा रग) वेद, ब्राह्मण उपनिषद् आदि आर्ष ग्रन्थों से दिखा सकता है ? कदापि नहीं।

आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से स्पष्ट होता है कि न कोई आर्य जाति थी न अनार्य जाति। जाति मनुष्य है। आर्य का अर्थ है, श्रेष्ठ, धर्मात्मा सच्चरित्र मनुष्य। इसके विपरीत दुष्ट, धर्मात्मा, दुश्चरित्र मनुष्य ही अनार्य है। आर्य शब्द न जाति वाचक है न रग आकृति वाचक और इसी प्रकार 'दस्यु वर्ण' शब्द भी न जाति वाचक न काला रग परक है।

'वि जानी ह्यार्यान्. ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्'

(ऋग्वेद १।५१।८) इस वेद मन्त्र मे आर्य तथा दस्यु को गोरा वा काला रग का आकृति परक नहीं कहा, प्रत्युत इस मन्त्र मे दस्यु की परिभाषा व लक्षण किया है। अव्रती—सत्य व्रत (सत्याचरण) का न पालन करने वाला मनुष्य। इसी अगले मन्त्र मे दस्यु को अयज्वा=याज्ञिको (श्रेष्ठाचरण करने वालो) से ईर्ष्या करने वाला कहा है। 'दसु' उपक्षये धातु से दास वा दस्यु शब्दो का निर्माण हुआ है।

'वधीर्हि दस्यु धनिन घनेन' [ऋग्वेद १।३३।४]

'हत्वी दस्यून् प्रार्य वर्ण मावत्' [ऋग्वेद ३।३४।९]

'यो दास वर्ण मधर गुहाक.' [ऋग्वेद २-१२-४]

उपर्युक्त वेद मन्त्रों में दस्युवर्ण अर्थात् डाकुओं (सामाजिक राष्ट्रीय नियमों के विध्वसकों) को दण्ड देकर आर्यवर्ण (श्रेष्ठ मनुष्यों) की रक्षा करने का उपदेश दी है। किन्तु काले रग वाले मनुष्यों को 'दस्यु' वा गोरे रग वालों को 'आर्य' नहीं कहा है। यदि आर्य का अर्थ और वर्ण वा दस्यु वर्ण का अर्थ श्याम वर्ण माना जाय तो महान् अनर्थ और अन्याय होगा।

'अधि गुप्ताय जुह्वत' [ऋ० १।५१।५] इस वेद मन्त्र मे दस्यु वर्ण का विशेषण अपने ही मुख में हवन करने वाला अर्थात् परोपकार न करने वाला तो कहा है किन्तु काला रग का नहीं कहा है। यदि आर्य का अर्थ गोरा रग होता तो श्याम रग के राम को आर्य न कहा जाता। 'आर्यः सर्व समश्चैव सदैव प्रिय दर्शिन' (वाल्मीकि रामायण) इस श्लोक में वाल्मीकि महर्षि ने अयोध्या नरेश राजा दशरथ के पुत्र महाराजा श्री रामचन्द्र जी को 'आर्य' सबको समान देखने वाला- सबका प्रियदर्शी कहा है। राम को वनवास दिये जाने की कैकेई की मांग पर राजा दशरथ ने कहा कि—

अनार्य इति यामार्याः पुत्र विक्रायक ध्रुवम्। धिक् करिष्यन्ति रथ्यासु सुराय ब्राह्मण यथा॥

[वा० रा० अयोध्या० स० १२]

अर्थात् गलियो मे आर्यजन मुझे पुत्र विक्रेता अनार्य कहकर धिक्कारेंगे। क्या कैकेई की इच्छा पूरी करने (राम को राजगद्दी न देकर बन भेज देने) से दशरथ राजा काले रग रूप के हो जाते ? यदि गोरे से काला न हो जाते तो उनको 'अनार्य' कहे जाने का डर क्यों हुआ था ? क्या इससे स्पष्ट नहीं होता कि एक आर्य (न्याय पूर्वक आचरण करने वाले) का न्याय विरुद्ध आचरण करना (बिना अपराध के पुत्र को १४ वर्ष के लिए बन भेज देना) सर्वथा अन्याय और अनार्यत्व है, और इसी से ही राजा को अपने लिये अनार्य कहे जाने का भय लगा। वाल्मीकि रामायण में अनेकों स्थलो पर आर्य शब्द श्रेष्ठ मनुष्य के लिए और अनार्य शब्द दुष्ट मनुष्य के लिए प्रयुक्त हुआ है, किन्तु गोरे काले आर्यों में नहीं। वर्णो वृणोतेः (निरुक्त अ० २ ख० ३) वर्ण शब्द की निरुक्ति करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे लिखा है कि निरुक्त प्रामाण्याद्वरणीया वरीतु मही, गुण कर्माणि च दृष्ट्वा यथा योग्य व्रियन्ते ये ते वर्णा" अर्थ—इस निरुक्त के प्रमाण से वर्ण का अर्थ है वरणीय अर्थात् स्वीकार के योग्य। अपने-अपने गुण कर्म के अनुसार यथा योग्य जो स्वीकार किये जाँय या अधिकारी बनाये जाए उन्हीं को 'वर्ण कहते हैं।

यदि आर्य शब्द गोरा रग वाचक और अनार्य वा दस्यु शब्द काला रग वाचक होता तो श्याम रग रूप के राम को बाल्मीकि रामायण मे आर्य न कह कर अनार्य क्यो न कहा जाता ?

आस मुद्रात्तु वै पूर्वादा समुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरे वान्तर गिर्यो रार्या वर्तं विदुर्बुधा॥

मनु स्मृति २।२३॥

उपर्युक्त श्लोक में इस देश का नाम आर्यावर्त्त लिखा है जिससे स्पष्ट होता है कि इस देश के आदिम निवासी काले रग के मनुष्य एवं अनार्य नहीं थे, प्रत्युत वेदानुकूल श्रेष्ठ सदाचारी मनुष्य जिन्हें वेद के शब्दों मे आर्य कहा जा सकता है, सृष्टि के आदि से निवास करते थे। मनुष्यों की उत्पत्ति जब त्रिविष्टप (तिब्बत) में सृष्टि की आदि मे हुई। तब से ही उसमे से श्रेष्ठ मनुष्य (आर्य) इस देश के प्रथम निवासी बने और अपने नाम पर इस विशाल भू-भाग का जिसका वर्णन उपर्युक्त श्लोक मे है, 'आर्यावर्त' रखा। यदि यहाँ के आदिम निवासी अनार्य होते तो इसका नाम 'अनार्यावर्त' क्यो न हुआ होता ?

ब्राह्मणादि चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का आर्यों मे गुण, कर्म, स्वभाव परक वेदादि शास्त्रों में पाये जाने से भी सिद्ध होता है कि आर्य तथा दस्यु शब्दों के साथ वर्ण शब्द का प्रयोग रग व शारीरिक आकृतिक परक कभी भी प्रयुक्त नहीं होता था, बल्कि गुण, कर्म स्वभाव (चरित्र) परक होता था। तभी तो महर्षि यास्काचार्य ने वर्ण की निरुक्ति उपर्युक्त ढग से की।

स्वनाम धन्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट कर दिया है कि आर्य नाम है श्रेष्ठ आप्त पुरुषों का और दस्यु नाम है दुष्ट पुरुषो का। किसी भी प्राचीन आर्ष ग्रन्थ मे नहीं लिखा कि आर्य लोग पश्चिमी देशो से यहा आये वा यहाँ पूर्व मे अनार्य रहते थे। आशा है कि इतिहास लेखक भारतीय विद्वान् 'आर्य' और 'अनार्य' शब्दो के सबध मे अपनी कल्पित धारणाओ को बदल कर सत्य का ही प्रकाशन करेंगे। जो चाहे 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़कर अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

★

## वनिता विवेक

### बहनों की बातें (५)

# हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्

[गताङ्क से आगे]

ऐतरेयोपनिषद् की कथा का उद्धरण देते हुए, श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक 'उपनिषदों का सन्देश' मे लिखा है कि भगवान् जब सारी सृष्टि बना चुके, पशु, पक्षी, मनुष्य वृक्ष, फल, फूल सब बन चुके तो मनुष्य और पशु सब इकट्ठे होकर भगवान् के पास पहुचे। मनुष्य ने आगे बढ़कर कहा—"महाराज! आपने बना तो दिया हमे, पर अब हम खावे क्या? और कितनी बार खावे?

ईश्वर ने कहा, 'तुम २४ घटे मे दिन और रात मे दो बार खाओ। मनुष्य ने सुना और पीछे हट गया। पशुओ ने सुना तो घबरा गये। आगे बढ़कर बोले—महाराज! २४ घण्टे मे केवल दो बार? हम तो भूखे मर जायेंगे? भगवान् ने मुस्करा कर कहा—'घबराओ नहीं, २४ घण्टे मे दो बार खाने की बात तुम्हारे लिये नहीं, केवल मनुष्यो के लिये है। तुम तो पशु हो चाहे जितनी बार खाओ। दिन भर खाओ। रात को भी खाओ। तुम्हारे लिये कोई नियम नहीं।"

भारती ने बात की पुष्टि करने के लिए कहा—'केवल दो बार? परन्तु बहन जी आज का मानव! उसने जब देखा कि पशु हर समय खाते हैं तो उसने सोचा 'यह पशु मुझसे छोटा और खाए अधिक, यह तो ठीक नहीं। मुझे भी अधिक खाना चाहिए। और तब उसने अपना प्रोग्राम बनाया। अर्ली टी, बैड टी और फिर टी और फिर पी और पी, पी टी, पी पी टी टी टी सारा दिन यही होता रहता है। मनुष्य, मनुष्य नहीं रहा, कुछ और बन गया है, भूल गया है कि खाना स्वाद के लिये नहीं केवल शरीर रक्षा के लिए है। भूल गया कि जीना खाने के लिए नहीं, खाना जीने के लिये है।

भारती बोलती चली गई। उसने पूज्य आनन्द स्वामी जी को पुस्तक 'उपनिषदों का सन्देश' का उद्धरण देते हुए कहा—'सुनो [ जो अधिक खाता है वह जल्दी मर जाता है। क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को भोजन के लिये जीवन भर का एक राशन कार्ड देता है। कार्ड मे जितनी भोजन की मात्रा जीवन भर मिलता है। इससे न तो कम और न अधिक। अब आपके अधिकार मे है इस राशन को शीघ्र समाप्त कर दीजिये अथवा देर तक रहने दीजिए। जितनी देर राशन रहेगा उतनी देर आप जीवित रहेगे। उसने आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा सुनी हुई दुर्गा मोटे की कथा सुनाई। उसने कहा—स्वामी जी ने सुनाया कि एक दिन दुर्गा मिलाप के कार्यालय मे आया। उन्होने कहा, 'सुनाओ भाई दुर्गा! कुछ पानी वानी पिओगे? उसने कहा 'नहीं'। स्वामी जी ने कहा 'लेमनेड'? वह बोला 'हाँ'। जब चपरासी से एक बोतल 'लेमनेड' लाने को कहा तो उसने कहा, इससे मेरा क्या होगा?' दस-बीस मगा लो? चपरासी दो दर्जन बोतलें लाया। स्वामी जी ने एक एक बोतल खोलकर देने को कहा। दुर्गा बोला 'नहीं, ऐसे नहीं'। एक बाल्टी मे सब उडेल दो।" चपरासी ने वैसा ही किया और वह सारी बाल्टी पी गया। वह दुर्गा अब नहीं है, छोटी आयु मे मर गया।

भारती की बात सुनने के पश्चात् सरला बहन ने भोजन के विषय मे एक कहानी सुनाई और बताया, महर्षि चरक जब सब ग्रथ लिख चुके और अपने शिष्यों को उन्होंने चिकित्सा की सब विधियाँ बता दी और उन्हें अपने यहाँ से विदा कर दिया तो उन शिष्यो की परीक्षा के लिए वे एक बार उन चिकित्सको के बाजार मे पहुचे और पक्षी का रूप धर कर ऊची आवाज मे वृक्ष पर से बोले, 'को ऽरुक् को ऽरुक्, को ऽरुक्' रोगी कौन नहीं रोगी कौन नहीं, कौन रोगी नहीं? एक वैद्य ने पक्षी को देख कर और उसकी आवाज समझकर कहा, जो मेरी दूकान का बना च्यवनप्राश का प्रतिदिन सेवन करता है वह रोगी नहीं होता।' दूसरे ने कहा, 'मेरी फार्मेसी की चन्द्रप्रभा वटी का सेवन करने वाला कभी रोगी नहीं हो सकता।' तीसरे ने कहा, 'जो हमारा बनाया हुआ लवणभास्कर खाता है, वह रोगी नहीं हो सकता।' चौथे ने अपनी सत-शिलाजीत को स्वास्थ्य का कारण बताया। परन्तु चरक को किसी का उत्तर नहीं जंचा और वे निराश होकर जब जा रहे थे तो नदी से नहा कर प्रसिद्ध वैद्य और उनके प्रतिभाशाली शिष्य वाग्भट्ट आरहे हैं, यह देखकर वे एक सूने वृक्षपर पहले की भाँति 'कोऽरुक्,कोऽरुक्, कोऽरुक्' उन्होंने आँख उठाकर देखा और बोले 'हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्' अर्थात् जो हितकारी भोजन करता है, मात्रा मे भोजन करता है और ईमानदारी की कमाई का भोजन करता है वह कभी रोगी नहीं हो सकता। चरक सामने आये और कहा, तुमने ठीक समझा है। 'हितभुक्' का अर्थ हुआ हितकारी भोजन करना चाहिए। ऐसा भोजन जो शरीर और मन के लिये हितकारी हो और यह उपयोगी भोजन भी 'मितभुक्' मात्रा में खाना चाहिए। हम हर समय खाते रहते हैं। प्रात काल की चाय, फिर काफी, फिर चाय, फिर नाश्ता, फिर भोजन। यह ठीक नहीं। तीसरी बात यह है कि हितकारी भोजन मात्रा में तो हो ही। वह 'ऋतभुक्' ईमानदारी की कमाई का होना चाहिए। पाप के अन्न से आत्मा का पतन होता है। गिरी हुई आत्मा वाले मनुष्य का सिर कभी ऊँचा नहीं होता। उसका भोजन पचता नहीं। चिन्तायें उसे खाती रहती हैं। इसलिये अपने और अपने बच्चों के जीवन को सुखी घर-घर में यह लिख कर टांग दो–

★ श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्कार
एम ए. एल-टी, गोरखपुर

हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्

हितकारी भोजन करो, मात्रा मे भोजन करो और ईमानदारी की कमाई का भोजन करो। इसलिए मनोरमा तुमने जो अपना 'हैल्थ प्रोग्राम' बनाया है उमे इस प्रकार बना सकती हो:–

१–प्रात काल उठना। प्रभु भक्ति एव नित्य कर्म करना।

२–प्रातःकाल ताजे पानी से स्नान करना, व्यायाम करना, खुली हवा मे सांस लेना।

३–स्वच्छ वस्त्र धारण कर सध्या, हवन करना और उसके बाद शान्त मन से दिन भर के कार्यों का निर्धारण।

४–जलपान करना। जिसमें भिगोये हुए चने, सूखे मेवे और दूध आदि आवश्यकतानुसार लेना। दलिया दही व मठ्ठा आदि भी ले सकते हैं।

५–ग्यारह बजे के आस-पास अपनी सुविधानुसार भोजन करना। भोजन मे रोटी, चावल, दाल, सब्जी आदि के अतिरिक्त कच्ची तरकारियों का सलाद, गाजर, टमाटर आदि भी लिया जा सकता है।

६–शाम को तीसरे पहर कोई ऋतु का फल।

७–शाम को खेल कूद, घूमना अपनी परिस्थितियों के अनुसार शारीरिक श्रम।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

# काव्य कानन

## 'गोरक्षा की अनिवार्यता'

गोहत्या के चालू रहते उत्थान नहीं होगा।
इससे स्वदेश का किसी भांति निर्माण नहीं होगा।

गो पूज्य हमारी मातृशक्ति माता का अरे हनन कैसे ?
जो दूध पिला पालन करती उस पर हो चले छुरी कैसे ?
बन करके क्रूर कृतघ्नी जो उपकार भूल सब जाते है।
मानवता कलुषित करने मे जो तनिक भी नहीं लजाते हैं।

उन राष्ट्र द्रोहियो से यह देश बलवान नहीं होगा।
गोहत्या के चालू रहते उत्थान नहीं होगा।१।

गोहत्या द्वारा प्राप्त धनो की जो नित चर्चा करते हैं।
गोपालन द्वारा प्राप्त लाभ का वे न ज्ञान कुछ रखते हैं।
निज मान धर्म का पैसो से ही मूल्य आकते रहते हैं।
जीवन का अनुपम महल गिराने की कृतघ्नता करते हैं।

उन हत्यारो से हरित कभी उद्यान नहीं होगा।
गोहत्या के चालू रहते उत्थान नहीं होगा।२।

भारत है कृषि प्रधान देश खेती ही यहाँ का जीवन है।
है कृषि असम्भव वृषभ बिना गोपय बिन नीरस जीवन है।
गोवश ह्रास पर तुले हुए कुछ ऐसे नीच विचारक हैं।
जो फर्टलाइजर ट्रैक्टर से खेती करने के प्रचारक हैं।

इससे अनाज से हरा-भरा मैदान नहीं होगा।
गोहत्या के चालू रहते उत्थान नहीं होगा।३।

यदि भारत को पुन. सबल चक्रवर्ती राष्ट्र बनाना है।
ऋषियों की पावन धरती पर शान्ति सुधा सरसाना है।
मेधावी दानव सहारक यदि वीरो की चाह हमें।
शस्य और पय घृत समृद्धि की अगर कामना आज हमे।

गोहत्या अविलम्ब बन्द कर गो का रक्षण करना होगा।
अर्थ शास्त्र पश्चिमी त्याग निज सस्कृति को अपनाना होगा।
गोमांस बेंचने से यह देश धनवान नहीं होगा।
गोपालन से ही भारत का उत्थान पुन॰ होगा।४।

रचयिता—सत्यनारायण द्विवेदी (गगा जमुनी) [बहराइच]

## दिवंगत विद्वच्छिरोमणि स्वा० समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव जी) को श्रद्धांजलि

[ १ ]

विद्या के मार्तण्ड मनस्वी, बुद्धदेव जी अस्त हुए।
जग आलोकित किरणो से कर, दिव्य दिवाकर अस्त हुए॥

[ २ ]

ओजस्वी वक्ता वे कविवर, प्रतिभाशाली शिरोमणि थे।
अज्ञानअत्याचार मिटाते, हाय भानु वे अस्त हुए॥

[ ३ ]

नहीं दिखाई देता उनसा, प्रतिभान्वित वैदिक विद्वान्।
दूर-दूर अधि यात्राओ मे कर, शक्ति अपव्यय अस्त हुए॥

[ ४ ]

शतपथ ब्राह्मण श्रुति आथर्वण, भाष्य अधूरा छोड गये।
जनता का यह दोष अधूरा, कार्य छोड कर अस्त हुए॥

[ ५ ]

ये शास्त्रार्थ महारथि अनुपम, सिंह समान गरजते थे।
तम अज्ञान मिटाने जग का, विद्या भास्कर अस्त हुए।

[ ६ ]

केसरि समउनका अब गर्जन, नहीं सुनाई देवेगा।
गर्जन मे निज शक्ति खो गये, कभी न जो कि परास्त हुए॥

[ ७ ]

वेद धर्म निष्ठा विद्वत्ता, निर्भयता का अनुकरणीय।
प्रस्तुत करके भव्य निदर्शन, बुद्धदेव रवि अस्त हुए॥

[ ८ ]

सरस्वती के पुत्र लाड़ले, बनकर वे समर्पणानन्द।
श्रद्धापूर्वक कर हरि कीर्तन, इसमे ही वे मस्त हुए॥

—धर्मदेव, विद्यामार्तण्ड, प्रधान अखिल भारतीय स्नातक मण्डल
आनन्द कुटीर ज्वालापुर

मान्यवर प्रिय श्री सम्पादक,
आर्यमित्र, लखनऊ।

मैं आर्यमित्र के ऋषिबोध विशेष अक का बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। पहुचते ही पान करा मैंने छण्टा १॥ घण्टा उसका नियम पूर्वक स्वाध्याय तथा अध्ययन किया। सच मानिये आपके गत विशेष वेदांक से भी बढकर बहुत आनन्द आया। आत्मा मे जो सुषुप्त वृत्तियाँ जाग उठी। और आत्म परीक्षा चिन्तन तथा निरिच्छा से एक बार तो आत्मा की शक्ति का पुनर्जीवन होने का आभास हुआ। वास्तविकता यह है कि विशेष अको का उद्देश्य जिस ढग से पूरा कर रहा है उससे पाठकों का आध्यात्मिक ज्ञान का सचार होना निश्चित है। जिसकी आर्य पुरुषों के लिये अत्यन्त ही आवश्यकता है। यदि आर्य पुरुषो ने शिवरात्रि के मनाने का वास्तविक लक्ष्य सम्मुख रख कर यत्न किया होता तो मेरा पूरा विश्वास है कि शिवरात्रि की परम पुनीत रात्रि को बीसियो ईश्वर भक्त और वास्तविक शिव के उपासक मन्दिरों मे एकत्र होकर आत्म चिन्तन और निरीक्षण का व्रत लेकर वेद के ऐसे परम पुनीत और जागृति पैदा करने वाले शिव सकल्प को धारण करके अपनी आत्मा को सदैव जागरूक रख कर आत्म उन्नति करने के अधिकारी होते। प्रभु सब को शुभ मति देवें।

—डा० सेवकराम यात्री, आर एम पी (होम्योपैथ)
कैसर-ए-हिन्द मैडलिस्ट, यात्री-निवास, शुगर मिल, खतौली

# ढोल की पोल

## कहानी-कुञ्ज

गाँव से ६ फर्लाङ्ग की दूरी पर जो नदी बहती है, उसके तट फैले हुए खरबूजो के खेतो से थोड़ी दूर पर एक बड़ी-सी कुटिया दिखाई पड़ी। बीस दिनों के बाद आज अपने मामा के घर से यहा आया था। शाम को घूमने की इच्छा हुई और सुभाष के साथ इसी नदी तट पर घूमने निकल आया। वार्तालाप के मध्य सुभाष ने बतलाया कि कोई महात्मा जी पन्द्रह दिनों से यहां विराज रहे हैं। वैसे तो कोई न कोई साधु महात्मा मेरे गाव मे प्रायः तीन-चार महीने बाद आते ही रहते थे, तब उन दिनों खूब भजन-कीर्तन आदि होता धूनी जमती, गाँजा, भाग का दौर चलता तथा कभी-कभी हर-हर महादेव और बम-बम आदि घोष भी गूजते रहते, किन्तु यह सब होता केवल तीन या चार दिन, और वह भी पचायत घर के पास वाले बड़े पीपल के पेड के नीचे। जबकि इन महात्मा जी ने गाव से दूर ही न जाने क्यों अपना डेरा लगाया था। शायद उन्होंने गाँव से बाहर ही सुरम्य नदी तट पर भगवद् भजन के लिए उपयुक्त स्थान सोचकर कुटिया बनवा ली हो।

न जाने क्यो मुझे उनका इतने दिन तक वहां रहना अच्छा नहीं लग रहा था, और निकट भविष्य मे अभी उनके न जाने के कोई आसार भी नजर नहीं आ रहे थे जब हम लोग उनकी कुटिया के समीप पहुचे तब उस समय उनके पास लगभग दो दर्जन व्यक्ति विद्यमान थे जिनमे उनके तीन चार वे भक्त लोग भी थे जो सदा उनकी सेवा मे वहीं रहते थे।

समय बीतता रहा। अब लगभग एक महीना होने जा रहा है, मै प्रतिदिन शाम को उधर की ओर कभी अकेले कभी सुभाष के साथ और कभी अन्य मित्रो के साथ भी घूमने निकलता हू और महात्मा जी के दर्शन दूर से ही कर लिया करता हू। उनके पास शाम को अच्छी खासी भीड़ हो जाया करती है, महात्मा जी झोपड़ी के सामने एक बड़ी चौकी पर आसन लगाकर उपदेश करते हैं। उपदेशों मे तो मैं कभी सम्मिलित नहीं हुआ पर गाव के कुछ लोगो के कथनानुसार, जो उनके उपदेशो मे प्रायः बतलाया करते थे, वे बड़े सिद्धि और दैवी गुणो से सम्पन्न व्यक्ति थे।

हमारे गांव से सात मील दूर जो नगर है वहां से प्रतिदिन दोपहर को बारह बजे एक स्टीमर हमारे गांव की ओर से होता हुआ निकला करता था किन्तु इधर तीन चार दिनों से उसके समय मे परिवर्तन हो जाने के कारण वह अब ठीक प्रातः साढ़े सात बजे हमारे गाव के सामने से होता हुआ निकला करता है। दुर्भाग्यवश महात्मा जी के भी स्नान पूजा आदि करने का वही समय था। वे प्रति दिन साढ़े सात बजे नदी में कमर तक पानी मे जाकर पूर्वाभिमुख हो दीपक जलाकर पत्र-पुष्प आदि के साथ उसे प्रवाहित कर अर्घ्य आदि देकर मन्त्र का जाप करते हुए नदी से निकलते थे। किन्तु इधर तीन चार दिनो से ठीक उसी समय वह स्टीमर उनके सामने से अपना भद्दी आवाज वाला भोपू जोरो से बजाता, काला धुआँ उगलता और अपने द्वारा उत्पन्न लहरो से महात्मा जी द्वारा विसर्जित दीपक को डुबाकर उनके पूजा के पुष्प आदि पदार्थों की एक क्षुद्र स्टीमर द्वारा नष्ट होते और पूजा मे व्यर्थ का विघ्न होते देख उन्हे बहुत क्रोध आता था। महात्मा जी के लिये तो अपना समय परिवर्तन करना तो एमदम असभव था, अत उनका एक शिष्य नगर मे जाकर स्टीमर के प्रबन्धकों से मिला, और उनसे स्टीमर के समय परिवर्तन के कारण महात्मा जी को होते हुए विघ्न बाधा से परिचय करा एव उनके गुणो और महत्ता से प्रभावित करने का प्रयत्न करते हुए कोई अन्य समय निर्धारित करने की माँग की। किन्तु उस दिन प्रबन्धको से कोई सन्तोषजनक समाधान नहीं प्राप्त हो सका। अतः अगले दिन दो शिष्य पुनः तीन-चार भक्त लोगो के साथ स्टीमर अड्डे पर जाकर प्रबन्धकों से मिले और उनसे बहुत आग्रह किया, कि आप लोग स्टीमर के समय में परिवर्तन करें, किन्तु अधिकारियों एव प्रबन्धकों ने उस दिन स्पष्ट कह दिया कि वे अपने समय का परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। अब महात्मा जी के लिए यह एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका था। उन्होने तीसरी बार फिर चेतावनी और धमकी के स्वर में स्टीमर के प्रबन्धको को कहला भेजा कि वे अपने समय का परिवर्तन कर दें। किन्तु अधिकारियों ने फिर वही अपना पुराना उत्तर ही दिया। इधर स्टीमर चलाने वाले भी जानबूझ कर स्टीमर को थोडा और समीप से ले जाकर जोरो से भोंपू बजाते हुए निकाला करते। तथा उनके क्रोधपूर्ण मुख मुद्रा का व्यङ्ग्यपूर्वक अवलोकन कर आनन्द प्राप्त करते थे।

अन्ततः एक दिन महात्मा जी ने अधिकारियो के पास अपना अल्टिमेटम भेज ही दिया। एक शिष्य स्टीमर के प्रबन्धको से मिला, और महात्मा जी का अल्टिमेटम सुनाते हुए बोला कि यदि तीन दिन के अन्दर समय परिवर्तन न किया गया तो महात्मा जी इस जड और क्षुद्र स्टीमर को उदरस्थ कर लेंगे अर्थात् निगल जाएगे। आखिर महात्मा जी भी तो अगस्त्य ऋषि के वंशज ही तो थे, फिर क्या बात कि ये प्रबन्धक या अधिकारी लोग उनकी बात यू ही उड़ा देवे। किन्तु खेद!

---

श्री पं० प्रशस्य मित्र शास्त्री,
शास्त्रीनगर २३/३ कानपुर-५

---

महा खेद! उनके अल्टिमेटम या चेतावनी को अधिकारियों ने वास्तव मे हसी मे उड़ा दिया और उनके शिष्य को डांट फटकार कर भगा दिया तथा आगे से पुनः अपने पास आने की सख्त मनाही करते हुए कहा कि इन व्यर्थ की बातों को सुनने के लिये उनके पास समय नहीं है।

इधर महात्मा जी ने भी तीसरे दिन स्टीमर को निगल जाने की अपनी निर्णीत घोषणा कर दी। शिष्य और अनेकों मस्त लोगो ने उनको बहुत समझाया कि उस बेचारे जड स्टीमर का क्या दोष तथा उसमें बैठे यात्रियों का क्या दोष कि उनको अकाल ही काल का ग्रास बनाया जावे आदि, किन्तु महात्मा जी ने उन लोगो की एक न सुनी। इसके बाद भी शिष्यों ने पुनः एक बार भक्त लोगों के साथ नगर मे जाकर स्टीमर के प्रबधकों के पास दौडधूप करके उन्हें मनाना चाहा, किन्तु उन्होंने फिर टका सा जवाब दे दिया। वे लोग भी उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे कि देखें महात्मा जी क्या करते है। अतः उनको उस दिन की घटना देखने के लिए समय परिवर्तन करना सर्वथा असम्भव था।

आखिरकार दो दिन बीतने पर तीसरे दिन महात्मा जी ने स्टीमर को निगलने की ठानी। पास-पडोस के गाव और शहर के भी पचासों लोग सात बजे ही नदी तट पर इस घटना को देखने के लिये इकठ्ठे हो गए। मैं भी सुभाष के साथ नदी तट पर पहुच चुका था। अभी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

# आर्य विदुषी श्रीमती देवी को वेदाचार्य की उपाधि

## काशी के दीक्षान्त समारोह की एक झाँकी

३१ दिसम्बर १९६८ को काशी के पण्डितो ने आर्य विदुषी श्रीमती देवी शास्त्री को वेदाचार्य की उपाधि प्रदान की।

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी का दीक्षान्त समारोह ३१ दिसम्बर १९६८ मध्यान्होत्तर २॥ बजे प्रारम्भ हुआ उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा० बी गोपाल रेड्डी, काशी नरेश महाराज डा० विभूतिनारायणसिंह, श्री आदित्यनाथ झा राज्यपाल दिल्ली, वाइस चासलर डा० गौरीनाथ आदि मच पर विराजमान हुए। विश्वविद्यालय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्यगण जिसमे श्री आचार्य विश्वश्रवा जो भी थे, तथा सीनेट के सब लोग काशी के समस्त विद्वान् हजारो की सख्या मे सम्भ्रान्त नागरिक उपस्थित हुए।

'स्वाध्यान्मा प्रमद.' आदि उपनिषदो के वचन जैसा सस्कार विधि के समावर्त्तन सस्कार मे उद्धृत है बोला गया। तदनन्तर काशी की वेद गद्दी पर विराजमान वेद विभागाध्यक्ष वैदिक श्री प० गोपालचन्द्र मिश्र वेदाचार्य ने उपकुलपति को सम्बोधन करते हुए कहा—

हे सम्मान्य उपकुलपति महोदय!

मै आपके समक्ष श्रीमती देवी को उपस्थित करता हू। इस देवी ने सब वेदो को सागोपाग ठीक-ठीक पढ़कर अपनी योग्यता से सन् १९६८ मे यह प्रमाणित किया है कि वह वेदाचार्य उपाधि के योग्य है। अतः मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप इस देवी को वेदाचार्य की उपाधि प्रदान करें।

काशी के वेद विभागाध्यक्ष की सस्तुति पर उपकुलपति महोदय ने घोषणा की कि—

वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति के अधिकार से मैं वेदाचार्य की उपाधि धारण करने के लिये तुम्हें आज्ञा देता हू। तुम आजीवन अपने नाम के साथ वेदाचार्य की उपाधि को लगाना और सानुरोध निवेदन करता हू कि तुम ससार मे अपनी योग्यता से इस बात को सिद्ध करना कि कि तुम वेदाचार्य की उपाधि के योग्य हो।

उपकुलपति की इस घोषणा के अनन्तर वेदविभागाध्यक्ष वैदिक पं० गोपालचन्द्र मिश्र वेदाचार्य ने कुलपति राज्यपाल को सम्बोधित करते हुए कहा कि—

सम्मान्य कुलपति महोदय!

मैं आपके समक्ष वेद मन्दिर ९९ बाजार मोतीलाल बरेली निवासिनी श्रीमती देवी शास्त्री नाम वाली देवी को उपस्थित करता हू। इस देवी ने वेदाचार्य (नै प्र) परीक्षा मे विश्वविद्यालय मे सबसे अधिक अङ्क प्राप्त करके सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। अत· आप सेठ प्रतापसिंह शूर जी बल्लभदास स्वर्ण पदक इस देवी को देकर अलकृत करे।

वेदविभागाध्यक्ष की इस सस्तुति पर कुलपति राज्यपाल महामहिम बी० गोपाल रेड्डी ने श्रीमती देवी के स्वर्ण पदक लगाया। उस समय काशी नरेश तथा आदित्यनाथ झा आदि चकित होकर इस दृश्य को देख रहे थे।

हम श्रीमती देवी के इस अदम्य उत्साह की सराहना करेंगे कि उन्होने बीस वर्ष घोर तपस्या करके ससार की विद्यास्थली वाराणसी मे वहा के विद्वानो से वेदाचार्य की उपाधि ग्रहण की और परीक्षा मे सर्वप्रथम रहकर स्वर्णपदक भी ग्रहण किया। इस से श्रीमती देवी ने महिला जगत् को एक गौरव प्रदान किया है और गार्गी और विद्योत्तमा के इतिहास को पुन जीवित किया है। स्त्रियो को वेद पढ़ाने का जो महर्षि का स्वप्न था उसका ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। समस्त आर्यजगत् इसको अपने इतिहास मे सदा स्मरण रखेगा।

---

# आइए हम देवभाषा संस्कृत पढ़ें

### प्रथमः पाठः

सस्कृत भाषा अति सरल है। यदि आप आर्यमित्र के इस शीर्षक के अन्तर्गत दिये हुए पाठो का निरन्तर अभ्यास करेगे तो आप शीघ्र ही इस देव भाषा की जानकारी प्राप्त कर, अनमोल साहित्य के रस से रसान्वित हो सकेंगे—

## वचन, लिंग और पुरुष

३ वचन—एक वस्तु के लिए—एक वचन
दो वस्तुओ के लिए—द्वि वचन
दो से अधिक वस्तुओं के लिये बहु वचन

टिप्पणी—सस्कृत भाषा मे अन्य भाषाओ के प्रतिकूल [illegible] वचन भी होता है।

३ लिङ्ग—पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग व नपुसकलिङ्ग ये शब्दो की रचना के अनुसार प्रत्येक शब्द के लिये नियत होते हैं, अर्थानुसार नहीं।

३ पुरुष—प्रथम पुरुष—जिसके विषय मे बात की जाए।
(या अन्य पुरुष)
मध्यम पुरुष—जिससे बात की जाए।
उत्तम पुरुष—जो बात करे।

वचन और पुरुष को इस भाति ठीक प्रकार से समझिए—

**पुरुष — एक वचन — द्वि वचन — बहु वचन**

प्रथम—सः (वह) तौ (वे दो) ते (वे) [२ से अधिक] या सब
म[illegible]—[illegible]) युवाम (तुम दो) यूयम् (तुम) ,,
उत्तम—अहम् मैं आवाम् (हम दो) वयम् (हम) ,,

## इन शब्दार्थों को स्मरण करिए

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईशः | — | ईश्वर | खलः | — | दुष्ट |
| शठ. | — | मूर्ख | मत्त. | — | पागल |
| बुधः | — | विद्वान | नट. | — | अभिनय करने वाला |
| धृष्ठ. | — | ढीठ | चौर | — | चोर |
| नृप | — | राजा | गज | — | हाथी |
| भृत्य. | — | नौकर | अश्व. | — | घोडा |
| जनक. | — | पिता, उत्पन्नकरनेवाला | प्रश्नः | — | प्रश्न |
| बाल. | — | बच्चा, बालक | | | |

उच्चारण के लिये कृपया याद रखिये कि जिस शब्द के सम्मुख विसर्ग (:) दिया हुआ होता है, उसका उच्चारण 'ह' की भाति [illegible] जाता है।

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

तो समीपतम है। मेरी पुकार सुन और चला आ। मै बुला रहा हू तेरा निरन्तर गुणगान कर रहा हू, स्तुति कर रहा हू, गीत और भजन बना रहा हू, गा रहा हू, गवा रहा हू। तू "गृणान" है, स्तुत्य है। मै स्तोता बन कर दिल की प्रत्येक धड़कन मे 'अग्न आयाहि' को गुजा रहा हू। तू सुन रहा है मेरी आत्म पुकार तो चला आ, चला आ।

मैं पुकार रहा हू प्रभो ! मुझे प्रकाश चाहिए। मै अज्ञान, अविद्या और पाप तिमिर से आच्छादित हूं। तू ब्रह्म है, सकल विद्याए तेरी हैं। तू शुद्ध और बुद्ध है। पाप तुझे नहीं बेधता तू नस नाडी और काया से परे है और मैं हाड मास के पिंजरे मे अपनी करनी से कैद हूं। मुझे निष्पाप बनाने के लिये अपनी दिव्य ज्योति देने के लिए आ, चला आ।

तू तो प्रभो ! होता है, तू अपने दिव्य आकर्षण से मुझे अपनी ओर आकृष्ट करता है। तू निरतर मुझे सर्वस्व देता है। आज मै भी अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए व्याकुल हू। मेरे आत्मतत्व के अतिरिक्त मेरे पास और हैं ही क्या ? सब कुछ तो भगवन् तेरा ही है। प्रभो जो कुछ मेरे पास है वह मैं देने के लिये प्रस्तुत हू और जो तेरे पास है वह मुझे दे दे। इसीलिये 'हव्य दातये' मै तुझे पुकार रहा हू। अपने विराट यज्ञ का मुझे हव्य प्रदान कर ताकि मै उसका सेवन कर तुझ जैसा बन जाऊँ।

प्रभो ! तुम आओ, चले आओ और ऐसा आओ कि फिर न जाओ। मेरे पास जो 'बर्हिष' आसन है, हृदय का सिहासन है, उस पर 'नि सत्सि' निरन्तर विराजमान रहो। तुम हृदयासन पर विराजमान रहो, मै गाता रहू अपना सर्वस्व अर्पित करता रहू, तुम मुझे अपना प्रकाश और विश्व यज्ञ का हव्य दान देते रहो तो हे प्रकाशपुञ्ज मैं भी कुछ बन जाऊँ और अपना जीवन सफल करलू इसलिए हे मेरे स्वामी ! हे मेरे नाथ !! हे मेरे सुन्दर प्रियतम !!! अब और न तडपाओ, बस चले आओ, चले आओ, चले आओ।

## आ. स. मीरजापुर

यह निर्वाचन सभा मुख्य उप मन्त्री श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' के पर्यवेक्षण मे, अत्यन्त सद्भावनापूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान-श्री चन्द्रपाल वर्मा एडवोकेट
मुख्य उपप्रधान-श्री बटुकप्रसाद वैद्य
उपप्रधान-श्री जैराम जोशी
मन्त्री-श्री कपूरचन्द आजाद
मुख्य उपमन्त्री-श्री रामनिरंजनसिह
उपमन्त्री-श्री मोहनसिह
कोषाध्यक्ष-श्री आशाराम पाँडेय
स " -श्री रमाशकरसिह एडवोकेट
पुस्तकाध्यक्ष-श्री श्रीराम जोशी
आय-व्यय निरीक्षक-श्री रामनरेश आर्य
अन्तरग सदस्य-श्री भगवानदास वर्णवाल, श्री रमेशचन्द्र गुप्त, श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, श्री जिउधन जी आर्य, श्री जीतूराम आर्य, श्री लाल जी गुप्त।

प्रतिनिधि सभा सदस्य-
श्री आशाराम पाण्डेय
श्री कपूरचन्द आजाद

जिला प्रतिनिधि सभा सदस्य
श्री कपूरचन्द आजाद, श्री चन्द्रलाल वर्मा, श्री मोहनसिह, श्री रामनिरजनसिह जी।

डिग्री कालेज प्रतिनिधि-
श्री आशाराम पाडेय, श्री रामनिरजनसिह, श्री रमाशकरसिह, श्री मोहनसिह, श्री जैराम जोशी
—मन्त्री

## आ.स. गोंडा का निर्वाचन

आर्य्यसमाज गोडा का वार्षिक निर्वाचन रविवार २३-२-६९ को श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान-श्री मुरलीमनोहर
उपप्रधान-श्री हनोमानप्रसाद वैद्य
मन्त्री-श्री बलराम गोविन्दसिह
उपमन्त्री-श्री रामचरित्र पाण्डे
कोषाध्यक्ष-श्री विशेश्वरशरण
पुस्तकाध्यक्ष-श्री बलदेवप्रसाद
निरीक्षक-श्री सियाराम पाण्डे
बलराम गोविन्द सिंह
—मन्त्री

## उत्सव

—आर्य समाज जौनपुर का ६७ वां वार्षिकोत्सव दि० २७ से ३० मार्च तक मनाया जावेगा। इस अवसरपर श्री महात्मा आनन्द गिरी जी महाराज श्री प० विद्यानन्द जी मस्तकी, श्री प० ओम प्रकाश जी शास्त्री, श्री इन्द्रदेवसिह जी, श्री नन्दलाल जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। —तारानाथ मन्त्री

—गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या का वार्षिकोत्सव २४ से २७ मार्च तक होगा। —विजयानन्द

—आर्यसमाज गया का वार्षिक उत्सव २७ से ३० मार्च तक समारोह से होगा। —मन्त्री

—१४ से १६ फरवरी तक आ स गोडा मे ऋषि बोधोत्सव समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—१४ १५ फरवरी को आ स रामगढ ( मीरजापुर ) का उत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

—गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी टकारा मे ऋषि मेला धूमधाम से मनाया गया। देश के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी तथा श्रद्धालु भक्त पहुचे थे त्रिओकारनाथ

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झासी का वार्षिक साधारण अधिवेशन एव आगामी वर्ष हेतु पदाधिकारियो का निर्वाचन दि० २३ मार्च को आर्यसमाज सदर बाजार मे होगा। —मन्त्री

—१६ मार्च को १२ बजे आ स. अलीगढ़ मे जिला उप प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन होगा। सदस्यगण समय पर पधारें। -मन्त्री

—२७ मार्च को जिला उप सभा मीरजापुर की अन्तरङ्ग सभा की बैठक शिवशकरी मेले मे होगी। —बेचनसिह मन्त्री

## आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण का दृढ़ संकल्प

भारत की स्वतन्त्रता के बाद ईसाइयो का दिन प्रति दिन बढ़ते हुए षडयन्त्रो को समाप्त करने समस्त भारत मे सार्वदेशिक, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निश्चयानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि प्रान्तों मे प्रचारार्थ अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति द्वारा आराष्ट्रीय तत्वो को तथा विशेष कर ईसाई धर्म प्रचार की आड लेकर सर्वत्र अपना जाल फैला रखे हैं। उनको देश से बाहर करने का दृढ़ सकल्प कर अपने प्रचार को तीव्र गति देकर कार्य आरम्भ कर दिया है।

—आर्यसमाज तथा महिला एव बाल कल्याण समिति गांधी शताब्दी समारोह ने दिनांक २२ फरवरी ६९ को हलद्वानी जिला नैनीताल के सारे नगर मे मद्यपान के विरोध मे प्रदर्शन किया तथा उस स्थान पर जाकर जहाँ जिला अधिकारी आगामी वर्ष के लिए शराब की दूकानो का नीलाम कर रहे थे विशेष प्रदर्शन किया और ज्ञापन प्रधान मन्त्री भारत सरकार एव आने वाले मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश के लिए हजारों हस्ताक्षर कराकर ५५ पृष्ठो मे प्रस्तुत किए और जिला अधिकारियों से प्रार्थना की कि नैनीताल से ओपन जनरल लाइसेन्स तुरन्त वापिस लिये जाय और भविष्य मे न दिये जाय।

जनता का सहयोग अत्यन्त सराहनीय था। —बांकेलाल कसल

—उन्नाव आर्य स्त्री समाज की ओर से पारिवारिक सत्सग के साथ-साथ ऋषिबोध पर्व बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। उसमे यज्ञादि कार्यक्रमो के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा उनकी देन पर भजनो और उपदेशों का विशेष कार्यक्रम रहा।

—सुमित्रा जौहरी मंत्रिणी

—आर्यसमाज के संस्थापक एवं भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम दृष्टा, वेद धर्म के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस ऋषिबोध दिवस के रूप मे आर्य समाज भवन (केसरगज) मे समस्त आर्यसमाजो की ओर से सम्मिलित रूप मे दिनांक १६-२-६९ रविवार को प्रात ९ बजे श्री रामचन्द्र जी चौधरी अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग की अध्यक्षता में मनाया गया।

इस अवसर पर श्री आचार्य दत्तात्रेय जी वाव्ले ने ऋषि दयानन्द जी के महान् कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया। उन्होंने अनेक धार्मिक ग्रथो का अध्ययन किया, धार्मिक गुरुओ से बात-चीत की। इस घोर तपस्या के बाद ही मूर्ति-पूजा का खण्डन किया। उन्होने बताया कि स्वतन्त्र भारत उनका ऋणी रहेगा। वे दार्शनिक विचारक व्यक्ति थे। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म को विशाल बनाया।

इस अवसर पर सर्व श्री आचार्य भद्रसेन जी, धर्मसिंह कोठारी, श्रीकरण जी शारदा श्री भूदेव शास्त्री आदि महानुभावो ने महर्षि दयानन्द के महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री विमनलाल अहूजा, श्री राधाकृष्ण जी शर्मा, बाल सदन के छात्र छात्राओ एव श्रीमती भार्गव जी आदि के भजन एव कविता भी हुई।

—२१ फरवरी को रमेशचन्द्र गुप्त मन्त्री आर्यसमाज दौलताबाद के पुत्र का नाम करण सस्कार एव श्री प्रकाशचन्द्र के पुत्र का कर्णवेध सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। —मन्त्री

—आर्यसमाज उतरौला (गोंडा) का उत्सव १५ से १८ फरवरी तक समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज नगर मण्डी फतेगज बुलन्दशहर मे ऋषिबोधोत्सव १३ से १६ फरवरी तक समारोह से मनाया गया —शिवनन्दनदास मन्त्री

अन्त मे श्री चौधरी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि मुझ पर जो आर्य समाज का प्रभाव पड़ा है, वह मेरी बाल्याकाल की शिक्षा का है। मैने प्रारम्भ मे आर्य समाज की सस्था मे शिक्षा ग्रहण की थी, उसमे हवन आदि हुआ करते थे। आपने कहा कि आर्यसमाज ने अछूतोद्धार, स्त्री-शिक्षा आदि अनेक कार्य किये। दयानन्द जी मे विलक्षण शक्ति थी उनका ऋण हम पर है। हम उनके पद चिह्नो पर चल कर ही अपने देश को सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं।

अन्त मे श्री प० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री आर्यसमाज ने अध्यक्ष का आभार प्रदर्शित किया एव अन्य सभी महानुभावो को धन्यवाद दिया।

—हरिश्चन्द्र उपमन्त्री

## आ. स. नैनीताल

आर्यसमाज नैनीताल ने ऋषि बोधोत्सव अभूतपूर्व समारोह से मनाया। वार्षिकोत्सव से अधिक उत्साह एव जनसहयोग से ऋषि को श्रद्धाजलि आर्यसमाजियो ने ही नहीं अपितु हर वर्ग के व्यक्तियों ने अर्पित की। सौंज एण्ड ड्रामा डिवीजन भारत सरकार ने सस्वर वेद पाठ से लोगों को आनन्द विभोर कर दिया। यज्ञ के विशेष यजमान प वसुदेव त्रिपाठी असिस्टेन्ट डाइरेक्टर थे।

आर्य समाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव इस वर्ष बडे समारोह से दिनाक २५ मई से २ जून तक मनाया जायेगा, जिसमे महिला सम्मेलन व मद्य-निषेध सम्मेलन बड़े आकर्षक होंगे। माननीय श्री मोरार जी देसाई उप प्रधान मन्त्री भारत सरकार से अध्यक्षता की स्वीकृति प्राप्त होने की पूर्ण सम्भावना है।

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज, महात्मा आनन्द भिक्षु एव श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

—सुमित्रा कन्सल, प्रधान

## निर्वाचन—

—आर्यसमाज कांठ मुरादाबाद
प्रधान-श्री रामेश्वरप्रसाद शास्त्री
मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री ला हरिश्चन्द्र जी

—आर्यसमाज भोगांव (मैंनपुरी)
प्रधान-श्री वैद्य श्रीराम वर्मा
मत्री-श्री विश्वम्भरदयाल मिश्र
कोषाध्यक्ष-श्री हसराज जी

—आर्यस बुलानाला वाराणसी
प्रधान-श्री हरेन्द्रनाथ जी वर्मा
उपप्रधान-श्री आचार्य देवदत्त जी
" " शुकदेवलाल
मन्त्री-श्री सुरेशसिंह जी
कोषा " पुरुषोत्तमदास जी

—आ स बडा बाजार कलकत्ता
प्रधान-श्री सूरजमल जी गुप्त
उपप्रधान-श्री पन्नालाल जी अग्रवाल
" " प्रकाशचन्द्र देवरालिया
मन्त्री-श्री गजानन्द आर्य
कोषा. " महावीरप्रसाद बंसल

—आ स कौडियागज (अलीगढ़)
प्रधान-श्री सुलतानसिंह जी
मन्त्री-श्री रामप्रकाश जी
कोषाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश गर्ग

—आ. स चौक लखनऊ
प्रधान-श्री सत्यपाल जी भाटिया
उपप्रधान-श्रीमती राजदुलारी जी
" -श्री दीनानाथ जी
मन्त्री-श्री ज्ञानकृष्ण जी
उपमन्त्री-श्री छेदीलाल जी
" -श्री अशोक भाटिया
कोषाध्यक्ष-श्री जवाहरलाल जी आर्य

—आ स बकेवर (इटावा)
प्रधान-श्री आर्यभास्कर जी
मन्त्री-श्री रामरत्न जी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री श्रीराम जी आर्य

—आ स खडवा
प्रधान-डा रघुनाथसिंह जी वर्मा
मन्त्री-श्री रामचन्द्र जी आर्य
कोषा " मांगीलाल जी सोनी

—आर्य समाज वादो
प्रधान-श्री वीरेन्द्रसिंह वैद्य
मन्त्री-श्री प्रेमपालसिंह

—आर्यसमाज अमरोहा
प्रधान-श्री देवीप्रसाद टण्डन
मन्त्री-श्री प्रेमबिहरी आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री डा० सुरेन्द्रप्रकाश जी

—आर्यसमाज उझानी (बदायू)
प्रधान-श्री सुनहरीलाल जी मिश्र
मन्त्री-श्री बनवारीलाल जी

—आर्यसमाज बनारस छावनी
प्रधान-श्री नेमचन्द जी
मन्त्री-श्री चमनलाल जी मौर्य
कोषाध्यक्ष-श्री कालकाप्रसाद जी

—आर्यसमाज अगहा (मीरजापुर)
प्रधान-श्री हरनन्दनसिंह एम. ए.
मन्त्री-श्री सरोजकुमार एम एस सी.
कोषाध्यक्ष-श्री जगनन्दनसिंह जी

—आर्यसमाज कोसीकलां (मथुरा)
प्रधान-श्री प्यारेलाल आर्य
उपप्रधान-श्री श्रीराम आर्य
मन्त्री-श्री खेमचन्द आर्य
उपमन्त्री-श्री रामजीवन आर्य
कोषाध्यक्ष-श्री चन्द्रभानु आर्य

—आर्यसमाज ज्वालापुर
प्रधान-श्री खेमचन्द्र आढ़ती
मन्त्री-श्री सत्यपाल जी

—आर्यसमाज कमालगंज
प्रधान-श्री सुभाषचन्द्र एडवोकेट
मन्त्री-श्री सियाराम गुप्त
कोषाध्यक्ष-श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त

—आर्यसमाज कर्णपुरदत्त (फर्रुखाबाद)
प्रधान-श्री गणसिंह जी
मन्त्री-श्री उदयपालसिंह जी
कोषाध्यक्ष-श्री इन्द्रपालसिंह जी

—आ स. चित्रगुप्तगज लश्कर
प्रधान-श्री शिवलाल जी गुप्त
मन्त्री-श्री ओमप्रकाश पारीक
कोषाध्यक्ष-श्री बालकिशन गुप्त

—आर्यसमाज कायमगज
प्रधान-श्री रामरक्षपाल
मन्त्री-श्री वेदव्रत जी
कोषाध्यक्ष-श्री गोपीनाथ जी

## कहानी कुन्ज

(पृष्ठ १० का शेष)

स्टीमर के आने मे आध घण्टे देर थी। महात्मा जी कुटिया सामने चौकी पर आसन लगाये बैठे थे। उनका कुपित और कठोर मुखमण्डल देखकर कोई भी उनसे बोलने का साहस नहीं कर पा रहा था। उनके चार शिष्य उनकी पीठकी ओर हाथ जोडे खडे थे। सभी लोग शान्त थे, केवल कहीं-कहीं से धीरे-धीरे फुसफुसाहट होती रहती थी, किन्तु कोई जोर से बात नहीं करता था। समय तेजी से बीतता गया और अब केवल कुछ ही मिनट शेष थे। इतने मे दूर से स्टीमर आता दिखाई पड़ा। वह बडी मस्ती से अपना भोंपू बजाता काला धुआँ उगलता चला आ रहा था। शनै. शनै उसकी दूरी कम होती गयी और वह अब थोड़ी ही देर मे महात्मा जी के सामन से निकलने वाला था। लोगो के हृदय भावी घटना को देखने के लिये उत्कण्ठित हो धड़कने लगे। वहाँ पर बच्चे भी थे किन्तु वह भी चुपचाप खडे है अन्य लोगो की भाति तत्काल भविष्य में होने वाली घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी की आखें एकदम महात्मा जी की ओर लगी हुई थीं क्योकि किसी भी क्षण कोई विचित्र बात हो सकती थी।

अब स्टीमर तीस-पैंतीस सेकेंड मे ही महात्मा जी के सामने से निकलने वाला था। पता नहीं आज क्यो उसमे कुछ कम यात्री दिखाई पड रहे थे। सम्भवत यात्रियो को इस बात का पता लग गया हो और वे अकाल ही मृत्यु को प्राप्त न होना चाहते हो। तभी एकाएक महात्मा जी अपने आसन से कूदकर उठ बैठे।

अब स्टीमर ठीक उनके सामने से निकल रहा था। दर्शको की आखें उत्सुकता मे डूबने लगीं। सामने ज्योही स्टीमर ने भोंपू बजाया महात्मा जी रौद्ररूप हो आँखें लाल किये एक दो हुकार भरकर अपने मुख को अच्छी तरह पूरे पैमाने से फाडकर बड़े ही वेग के साथ स्टीमर की ओर झपटे। उनका रूप वास्तव मे उस समय दर्शनीय था। वे भस्म से आच्छादित, बड़े-बड़े केश वाले, गले मे कण्ठी और व्याघ्र चर्म धारण किये हाथ मे त्रिशूल की जगह बडा-सा चिमटा लिये पूरे शिव की भांति लग रहे थे। किन्तु वे अभी पन्द्रह बीस कदम ही बढ़े होंगे कि लगभग एक दर्जन से भी अधिक की सख्या मे उनके शिष्य तथा अन्यान्य भक्त लोग लपककर उनके चरणो को पकडकर लिपट गये और "महाराज! बहुत बड़ा अनिष्ट होगा, आप कृपया अपने क्रोध को शान्त कीजिए, आप तो साक्षात् शिव हैं आशुतोष हैं भक्तो को प्रसन्न करिए यह स्टीमर तो क्षुद्र है इस पर दया कीजिए, करुणा वृष्टि उठाइये" आदि कहते हुए उन्हें आगे बढ़ने नहीं दिया। महात्मा जी उन लोगों को डाटते हुए चिमटो से मारते हुए अपने को मुक्त करने को बहुत प्रयत्न किया किन्तु उन लोगो ने महात्मा जी को बिल्कुल न छोड़ा आखिर कुछ देर बाद महात्मा जी का क्रोध शान्त हुआ और वे "बम बम शकर" का नाद करते हुए भक्तों को प्रसन्न कर उनसे मुक्ति पा सके। स्टीमर अब तक काफी आगे निकल चुका था। धीरे-धीरे लोग घर लौटने लगे थे, मै भी सुभाष के साथ घर लौट आया।

वैसे तो इस घटना को हुए लगभग चार साल बीत चुके है फिर भी अभी तक कई लोगो का विश्वास है कि यदि वे शिष्य और भक्त लोग महात्मा जी को न पकडते तो वे स्टीमर को अवश्य ही निगल जाते।

## आवश्यकता

आर्य परिवार का २५ वर्षीय क्षत्रिय वशज गुरुकुल का स्नातक एम० ए० द्वितीय कर रहे युवक को—स्वस्थ, सुन्दर, सुवर्ण, बी ए एम ए दक्ष कन्या चाहिये।

घर पर अच्छी खासी जमीन है। जाति बन्धन तोड़ कर भी संस्कार हो सकेगा।

पता—सत्यदेव आर्य
गढ़ैया, धर्म-निवास
शिकोहाबाद, मैनपुरी (उ. प्र.)

—दिनांक १५-१२-६१ को आर्यसमाज जयपुर मे श्री प० सुरेन्द्र जी शर्मा द्वारा ईसाई कुमारी मरयम्मा के० वी० आत्मजा श्री के० . . शुद्धि सस्कार सम्पन्न हुआ तथा उनका नाम कृष्णा कुमारी रखा गया। मन्त्री

—१५ फरवरी को आर्यसमाज सयोगितागज मे ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्य समाज जुही कानपुर ने दो मुस्लिम महिलाओ की शुद्धि की। —मन्त्री

—९ से १५ फरवरी तक आर्यसमाज मुगलसराय ने ऋषि बोध सप्ताह मनाया। ब्र० सोमदेव जी की कथा हुई। —मन्त्री

—आर्यसमाज कायमगज मे ऋषिबोध समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज अम्बाह (मुरैना) के सस्थापक श्री आप्त स्वामी श्री लाडली प्रसाद जी एडवोकेट का ११ फरवरी को भोपाल मे देहान्त हो गया। —मन्त्री

—आर्य समाज कमालगज में ऋषिबोध सप्ताह समारोह से मनाया गया। कई रोचक कार्यक्रम हुए। —मन्त्री

—२१ से २३ फरवरी तक आर्यसमाज मण्डी फतेहगंज बुलन्दशहर मे शिमला के श्री आचार्य धर्मदेव जी एम ए के प्रभावशाली भाषण हुये। आपने आर्य कन्या इन्टर कालिज व डी ए वी कालेज मे भी व्याख्यान दिया।

—शिवनन्दनदास मन्त्री

—आर्यसमाज हरीपुर का वार्षिकोत्सव २३ से २५ फरवरी तक समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

# स्व. श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार

★

गत जून में मैं टकारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान को देखने के अभिप्राय से गया था और आर्यसमाज मन्दिर मे ही दो दिन निवास भी किया था। वहीं मुझे ज्ञात हुआ कि वैदिक ग्रन्थों के प्रगाढ़ पण्डित तथा पाली के प्रख्यात विद्वान् देहरादून निवासी प० चन्द्रमणि जी अब इस ससार मे नहीं रहे। इस समाचार से मुझे बहुत बड़ा धक्का लगा औ[illegible] यह भावना उत्पन्न हुई कि इनके स्वर्गवास से आर्य समाज मे जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति कठिन है। ये पाणिनी व्याकरण तथा यास्क मुनि रचित वैदिक निरुक्त के मर्मज्ञ थे। इनका मेरा साथ बनारस सेन्ट्रल कारागार मे हुआ था। युद्ध-विरोधी सत्याग्रह मे जिसका प्रारम्भ सन् १९४० ई० मे महात्मा गाधी के देख-रेख मे आचार्य विनोबा भावे ने किया था, लाखो भारतीय जिनमे हम लोग भी थे बन्दी हुये थे। बनारस सेन्ट्रल कारागार संयुक्त प्रान्त के उच्च श्रेणी के राजनैतिक बन्दियों का इन दिनो निवास था। सयोग से हम दोनो एक ही बैरक मे थे। आपसे अनेको व्यक्ति सस्कृत पढते थे। आप वेद पर शका समाधान भी करते थे। राजनैतिक बन्दियो मे आपको प्रतिष्ठा का स्थान प्राप्त था।

इस जेल के प्राय. सब राजनैतिक बन्दियो को सपरिश्रम कारावास का दण्ड मिला था और सबके हिजट्री टिकेट पर काम निर्धारित था। कुछ लोगो को चर्खा कातने का काम दिया गया था। और अन्य लोग बाध बनाते थे। चर्खा कातने वालो को घर की रुई कातने की छूट थी। ये लोग प्रति मास इस कार्य से कुछ धन कमा लेते थे और चर्खा कातने का काम बडी लगन से करते थे। मुझे तथा श्री चन्द्रमणि जी को बाध बटने का काम दिया गया था। जिन लोगो को बाध बटने का काम दिया गया था। वे बाध बटने के काम को नहीं करते थे; क्यों कि अधिकारियो की ओर से कोई कडाई न थी और न किसी को इस काम मे रुचि थी। परन्तु श्री चन्द्रमणि जी बाध बटने मे रुचि रखते थे और अधिकाश समय इस कार्य मे देते थे। तब भी निर्धारित माप मे बाध बना नहीं पाते थे। एक दिन मैंने इनके हिस्ट्री टिकेट को देखा। उसमे जहाँ से ये स्थानान्तरित होकर आये थे और यहा काम की कमी लिखी हुई थी। मैंने इस टिप्पणी को जेल नियम के विरुद्ध समझा और कहा कि यदि भविष्य मे आप के काम मे सुधार न होगा तो आपको बेत की सजा बढाने की अथवा अन्य दण्ड मिल जायगा। आपको यह टिप्पणी कैसे प्राप्त हुई? हम लोग तो कुछ भी काम नहीं करते, फिर भी किसी प्रकार की विरुद्ध टिप्पणी प्राप्त नहीं करते है। इस पर उन्होंने कहा "आप लोग युग के चाल से चल रहे हैं और मै सच्चाई से चल रहा हू। मैने सत्याग्रह किया है और जेल जीवन मे भी किसी स्वार्थवश झूठ नहीं बोलना चाहता हू। टिप्पणी के कोष्ठ मे काम की कमी मेरा लिखाया हुआ है। महात्मागाधी का कथन है कि सत्याग्रहियो को जेल नियमो का पालन करना चाहिए। विरोध केवल वहीं करना चाहिए, जहाँ कोई कार्य आत्म सम्मान के विरुद्ध करना हो।" इस विषय पर मैने जेलर महोदय से बातचीत किया। उन्होने कहा कि आप लोगो से काम लेने मे हम लोग उपेक्षा का व्यवहार कर रहे है। वे जब स्वय हम लोगो के उपेक्षा से लाभ नहीं उठाना चाहते और जब काम कम लिखवाने का ही हठ करते हैं तब हम कैसे उस कोष्ठ को बिना विरुद्ध टिपणी के छोड सकते हैं। यदि उनकी यही अवस्था रही तो किसी दिन उ[illegible] काम की कमी का दण्ड अवश्य मिल जायगा। यह विषय अधीक्षक महोदय के विचाराधीन है। दण्ड से बचने का उपाय है कि वे स्वय कुछ न कहा करे। अथवा जाच के समय वे अनुपस्थित रहा करे और आप उनके हिस्ट्री टिकेट को जाँच करा दिया करे।" इसके पश्चात् अधिकारियो के पास आने-जाने से मैंने उन्हें मा[illegible] दिया और उनके हिजट्री टिकेट को अपने हिजट्री टिकेट के साथ ही जाँच करवा लेता था। स्वर्गीय श्री चन्द्रमणि जी इस उच्च कोटि के सत्य वादी और नियम परायण थे।

जेल से छूटने के कई वर्ष पश्चात् मेरी उनसे भेंट वाराणसी मे सयुक्त प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के बैठक के अवसर पर हुई थी। इस बैठक मे सयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के स्वराज्य युग के अनुकूल नाम करण पर विचार हुआ था। चूंकि मेरे जिले का नाम दासता जनित दोषों के कारण मिर्जापुर पड गया था। मिर्जापुर विदेशी नाम है और स्वदेशी प्रिय जन इस नाम को कदापि पसन्द नहीं करते है। इसका प्राचीन नाम मीरजापुर है। मीर=समुद्र, मीरजा=लक्ष्मी, मीरजापुर=लक्ष्मी का नगर अथवा धन-धान्य पूर्णजन निवास है। सयुक्त प्रान्त आगरा व अवध का नाम करण मैंने "मीरजापुर प्रदेश" प्रस्तावित किया था। यद्यपि यह नाम स्वीकृत नहीं हुआ, फिर भी मीरजापुर की व्याख्या से लोगो को प्रसन्नता हुई। मिर्जापुर के स्थान मे मीरजापुर उपयुक्त सिद्ध हुआ। श्री चन्द्रमणि जी मिर्जापुर को लोप करने और मीरजापुर की प्रतिष्ठा मे प्रसन्न थे। वे अपने आत्मीय वर्ग के प्रति कितने दयालु थे इसका उदाहरण मुझे उनके एक [illegible] हुआ। उन दिनों मेरे जिले में श्री लक्ष्मीनारायण सकलानी डिप्टी कलेक्टर थे। आप ने मुझसे कहा कि मेरे यहाँ एक लडका डिप्टी कलेक्टरी के पद पर मीरजापुर गया है। उसके प्रति अभिभावक के भाव से काम लीजिएगा।

—श्री सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी'
एडवोकेट, मीरजापुर

## आर्य-जगत्

९ से १५ फरवरी तक आर्य समाज फैजाबाद मे ऋषिबोध सप्ताह समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—कृष्णपुरी छुटमलपुर मे ऋषिबोध सप्ताह मनाया गया। —श्रीराम पथिक

—आर्यसमाज कोड़ियागज मे ऋषिबोधोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज सोरो का वार्षिकोत्सव हो गया। —ज्ञानदेव वानप्रस्थी

—आर्यसमाज कासगज मे १० से १५ फरवरी तक ऋषिबोधोत्सव समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज जुही कानपुर का वार्षिकोत्सव ११ से १३ अप्रैल तक होगा। १० अप्रैल को नगर कीर्त्तन निकलेगा। —मन्त्री

—१५ फरवरी को आर्यसमाज हरथला कालोनी मुरादाबाद मे आर्यकुमार सभा का पुरस्कार वितरण हुआ। प्रो० रमेशचन्द्र जी का भाषण हुआ। —मन्त्री

—आर्यसमाज बडगाँव व गोडा ने मिलकर आर्यसमाज गोडा मे दयानन्द बोध सप्ताह मनाया। प्रभात फेरी निकाली। नये सदस्य बनाये। —मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पञीकरण स० एल –६०
फाल्गुन २५ शक १८९० चैत्र कृ० १३
[दिनाङ्क १६ मार्च सन् १९६९]

# आर्य-मित्र
उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

## अमृत वर्षा

### महर्षि दयानन्द ने कहा था–

हर एक गृहस्थ सभासद को उचित है कि वह अपने घर के कामों से समय पाकर जैसा वह घर के लिये पुरुषार्थ करता है उससे कहीं ज्यादा इस समाज की उन्नति के लिये पुरुषार्थ करें और विरक्त वानप्रस्थी, सन्यासी) तो सदा ही समाज की उन्नति में लगे रहें।

इस समाज में सभी सभासदों को परस्पर प्रेमपूर्वक अभिमान, हठ, दुराग्रह और क्रोध आदि दोषों को छोड़कर वैर विरोध से रहित होकर उपकार और मित्र भाव से आत्मवत सबके साथ वर्तना होगा।

जो इन नियमों के अनुकूल चलने वाला धर्मात्मा, सदाचारी हो उस को उत्तम सभासदों में रखना। अन्यों को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना चाहिये। किन्तु यह काम पक्षपात से नहीं अपितु श्रेष्ठ सभासदों की सम्मति से ही करना चाहिये।

★

### इतिहास को आर्यसमाज की देन

'मैंने कई बार आर्यसमाज पर आलोचना भी की है। परन्तु उसने भी कुछ किया है उसके लिये श्रद्धांजलि भी अर्पित करना चाहता हूं। जो लोग हृदय से किसी की प्रशंसा करते हैं उन्हें उसकी आलोचना करने का अधिकार भी प्राप्त होता है! विगत कई वर्षों मे जितनी धार्मिक और राजनीतिक संस्थाएं बनी हैं उनमे से किसी ने भी जनता के विभिन्न वर्गों मे भेदभाव दूर करने के लिये इतना काम नहीं किया जितना कि आर्यसमाज ने। और हमारे देश के इतिहास में उसकी बड़ी देन यह है कि उसने छूत-छात के विरुद्ध एक आन्दोलन किया और जिन्हें समाज ने पांव तले कुचला था उन्हें उठाकर गले से लगाने का प्रयत्न किया।"

–महात्मा गांधी

### वनिता-विवेक

[पृष्ठ ७ का शेष]

८–रात में रोटी या चावल और एक सब्जी और भात के साथ दाल लेनी चाहिए।

भोजनादि के विषय में बच्चों को निम्नलिखित बातो का अभ्यास कराना चाहिए।

१–भोजन खूब चबाकर खाना चाहिए। दांत भगवान् ने भोजन चबाने के लिये ही दिए हैं। यदि तुम दांत से चबाओगी नहीं तो दांत का काम आंत को करना पड़ेगा। और वह कमजोर पड़ जायगी। चबाने के विषय में यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि दूध को खाना चाहिए और रोटी को पीना चाहिए।' चबाने से भोजन में रस आता है। वह शीघ्र पचता है।

२–दिन और रात में कम से कम आठ गिलास पानी पीना चाहिए। पानी का आचमन करना चाहिए।

इस प्रकार अन्य भी बड़े बूढ़ों द्वारा कहे हुए नियमों का ध्यान रखो जीवन को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने के लिए भोजन, व्यायाम आदि का ठीक तरह उपयोग शक्ति, बल, बुद्धि, साहस और करो। आज, अब मैं भगवान से जीवन में सफलता प्रदान करें। प्रार्थना करती हूं कि वह तुम्हें, अच्छा चला जाय........।

## पुस्तक-परिचय

### (१) वेद-सन्देश

लेखिका एवम् प्रकाशिका–श्रीमती सावित्री देवी, द्वारा यू० पी० ग्लास वर्क्स, बहजोई ( जि० मुरादाबाद ) उत्तरप्रदेश
पृष्ठ संख्या १४० मूल्य १ रु० २५ पैसे।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक, श्वेताश्वतर, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक उपनिषदों, मनुस्मृति तथा योगदर्शन के ३५१ मन्त्रों और छन्दों का एक लघु संग्रह है। वेद ज्ञान को साधारण जनता तक सरल पद्यात्मक भाषा में पहुचाने का यह प्रयास सराहनीय है। कुछ मन्त्र अर्थ सहित भी लिखे गये हैं। पुस्तक के अन्त मे अनमोल सन्देश, उत्तम मानुष के १८ लक्षण, दशम द्वार प्राप्ति के दश साधन दोहे रूप मे, मुमुक्षुओं के लिए एकादश नियम तथा यहां देश व कृण्वन्तो विश्वमार्यम् आदि कविताए भी दी गई हैं।

### (२) ईशोपनिषद् व्याख्या

लेखक–वेदानन्द वेदवागीश मूल्य ७५ पैसे, पृष्ठ सं० ५०
प्रकाशक–हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (रोहतक) हरयाणा

ईशोपनिषद् की जो अनेक व्याख्याएं उपलब्ध हैं, उनमे यह एक नई कड़ी है। उपनिषद् जिज्ञासु की शङ्का का समाधान करते हुए परमेश्वर के निकट ले जाते हैं। वेद के कर्मकाण्ड अर्थात् यजुर्वेद के ४०वें अध्याय पर आधारित ईशोपनिषद् (जिसे कहीं-कहीं ईशावास्य उपनिषद् और वेदान्त भी कहा है) का अपना एक विशिष्ट स्थान है। १८ मन्त्रों की व्याख्या में शब्दों के रहस्यों को सुन्दर ढंग से खोला गया है। व्याख्या के अन्त मे जो स्मर्तव्य दिये गये हैं वे व्याख्यान के सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

### (३) विष्णु परिचय अर्थात् प्राकृतिक ज्ञान की अनुपम झांकी

लेखक–छेदालाल मित्तल, वनस्थली विद्यापीठ वनस्थली (राज०)
मूल्य २५ पैसे। पृष्ठ संख्या २०।
प्राप्ति स्थान–रस्तोगी ब्रदर्स, त्रिपोलिया बाजार जयपुर २

समुद्र मन्थन की अति प्रसिद्ध कथा की हमारे धर्म ग्रंथों में जो चर्चा की गई है, उसमें प्राकृतिक ज्ञान की जो अनुपम झांकी है, उसका दर्शन इस लघु पुस्तिका में कराया गया है और उसके प्रमाण में बाल्मीकि तथा तुलसी रामायण विष्णु पुराण के अतिरिक्त वेद मन्त्र को भी आधारित किया गया है। यह लघु पुस्तिका न केवल पठनीय है वरन् नास्तिकों और अवतारवादियों में वितरण के सर्वथा उपयुक्त है।

–'बसन्त'

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०दी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कु. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

'वय जयेम' ] लखनऊ–रविवार चैत्र २ शक १८९१, चैत्र शु० ५ वि० स० २०२६, दि० २३ मार्च १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

## वेदवाणी के द्वारा शुद्ध पवित्र बनो, तेज के लिए दुरिताओ को दूर करो और सौ वर्षों तक आनन्द से रहो

वैश्व देवीं वचस आरभध्व शुद्धा भवन्त शुचय पावका ।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शत हिमा सव वीरा मदेम ॥
[ अथव १२ २ २८ ]

(वचस) सुन्दर तेज के निमित्त (वैश्वदेवीम) सकल दिव्य विषयो वाली [वेद वाणी] (आरभध्वम) पूर्णतय आरम्भ करो ( शुद्धा ) शुद्ध ( शुचय ) पवित्र (भवन्त ) होते हुए (पावका ) पवित्र करने वाले ( दुरिता ) भ्रष्ट ( पदानि ) ठिकानो को ( अति कामन्त ) अतिक्रमण करते हुए ( सव वीर ) सब वीर ( शतम ) सौ ( हिम ) शीत ( मदेम) आनन्द से रहें।

आर्यजन 'जीवेम शरद शतम की कामना करते हैं और ऐसा ही आशीर्वाद अन्यो को भी देते हैं। प्रभु आदेश करते है कि हम शतायु हों और हमारा सौ वष का जीवन शरद या हिम अर्थात शीत ऋतु की भांति शान्ति से युक्त हो। वह जीवन ही क्या है जो मदेम न हो। मस्त जीवन आनन्दमय जीवन के लिये हमे वचस्वी होना होगा। वच तेजोमय सौन्दय शुद्धता और पवित्रता मे अन्तर्निहित है। शुद्ध और पवित्र मानव ही तेजोमय होकर समस्त दुरिताओ को दूर कर सकल आपदाओं को चूर कर, वीर बनता है। शूर वीर ही युग प्रवत्तक होता है। शुद्धता, पवित्रता, वीरता और तेज को धारण करने के लिये सकल दिव्यताओ को प्रदान करने वाली एकमात्र परमेश्वर की वेदवाणी है।

ससार की दुरिताओ को दूर करने वालो ! पहले अपनी दुरिताओं को दूर करो। अपनी आत्मवाणी को सुनो। अपने हृदय में उस अन्तर्यामी के पवित्र आदेश को सुनो। शुद्ध पवित्र बनो, तेजस्वी बनो, वीर और धीर बनो, शान्ति और आनन्द युक्त जीवन व्यतीत करो। पहले स्वयम बनो फिर दूसरों का

— वसन्त

सभा मुख्य उप मन्त्री—

## श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त'

### "वेद वारिधि" उपाधि से विभूषित

ऋषि बोध पर्व पर पण्डित मण्डल का निश्चय और आय जगत के पूज्य पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री द्वारा स्वीकृति
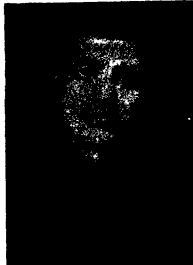
श्री विक्रमादित्य जी वसन्त

जो इस वष रविवार १६ १ ६९ को जिला आय उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के पुन सवसम्मति से मन्त्री निर्वाचित हुए हैं।

समस्त आयजगत मे यह समाचार प्रसन्नता और उत्साह का वधन करेगा कि आय समाज की सेवा मे निरन्तर निस्वाथ रूप से रत, वाणी और लेखनी से सतत वेद प्रचार करने वाले शान्त गभीर और तपस्वी पडित श्री विक्रमादित्य वसन्त सभा मुख्य उपमत्री को वेद वारिधि की उपाधि से विभूषित किया गया है। पण्डित मण्डल के इस निश्चय की जो ऋषि बोधोत्सव पव पर किया गया था स्वीकृति और सूचना पूज्य पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री द्वारा दी गई है।

हम आय्यमित्र परिवार की ओर से श्री वसन्त जी को हार्दिक बधाई देते हैं। —सम्पादक

| वर्ष | अक |
|---|---|
| ७१ | ११ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक पति २५ पैसे

इस अक में पढिए !



सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल ए
सभा-मन्त्री

# अध्यात्म-सुधा

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या–

## तेरा आह्वान–जीवन निर्माण

**वेद मन्त्र–**

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥

[साम० २]

शब्दार्थ—(अग्ने) सुन्दर देव परमात्मन्! (त्वम्) तू (विश्वेषां) सकल (यज्ञानां) यज्ञों का (होता) निष्पादक है। (देवेभि) दिव्यताओं सहित (मानुषे जने) मानवी समुदाय में (हित) समाहित है।

व्याख्या–जिस सुन्दर देव परमात्मा का आत्मा द्वारा आह्वान किया जा रहा है, वह परमात्मा क्या है? जिस ब्रह्म अग्नि मे आत्म-अग्नि समाहित होना चाहती है, वह ब्रह्म अग्नि क्या है? जिस परम देव के दिव्य गुणों पर आत्मा रीझ कर उसके दर्शन् और मिलन को व्याकुल होकर, उसे हृदय की प्रत्येक धड़कन में पुकार रही है, वह परमदेव क्या है, तो साधक साधना मार्ग पर चलते हुए उसके समीपस्थ होने के लिए उस दर्शनीय सुन्दर देव को सम्बोधित करते हुए आत्म स्वरों मे पुकार रहा है–

हे देव! महादेव!! परमदेव!!!

तुम समस्त जगत् के कर्त्ता, धर्त्ता और हरता हो। इस चराचर जगत् मे जो कुछ भी हो रहा है, सब तुम्हारे आदेशानुसार हो रहा है। तुम्हीं जगत् के एकमेव स्वामी हो, कर्णाधार हो, उत्पत्ति, विकास और ह्रास सब तुम्हारे निर्मित नियमानुसार हो रहा है।

'जिस परमात्मा को तुम पुकारते हो, जिसके दर्शन और मिलन के लिए अति आतुर हो उससे क्या प्रयोजन सिद्ध होगा?' ये सासारिक जन जब किसी साधक से ऐसे प्रश्न करते हैं तो विनम्र वाणी मे साधक कह उठता है–

'वह परमात्मा विश्व के यज्ञ का निष्पादक है। उसने अपने इस ससार मे एक सुपावन यज्ञ रचाया है। मै उसके दर्शन और मिलन से नित्य जीवन को सुपावन यज्ञमय बनाना चाहता हू। मैं उसका आह्वान् इसी निमित्त करता हू।'

सासारिक स्वार्थान्ध पुनः पूछते हैं–'यह कैसा यज्ञ है, जिसमे नित्य जन्म है नित्य मरण है, दुःख है, सुख है, पीड़ा है, परिवर्तन है।'

'अबोध! तू अल्पज्ञ है, वह परमदेव सर्वज्ञ है। वह निरंतर ज्ञानयुक्त है और तू अज्ञान तिमिर से आच्छादित है। मैं उस दिव्य देव का सगति करण इसलिए चाहता हू कि मेरा कोयले सम जीवन उस दिव्य मही मे पड़कर दमक उठे। मै उसका आह्वान् जिस पूजा के निमित्त करता हू उसमे आत्मा की निर्मलता और निराभिमान की भावना है। जिस परमदानी का सब कुछ है और जिसको सर्वद वह सबको देता रहता है, उसकी प्रदत्त सम्पत्ति, विद्या, बल को देने में मैं भी सर्वद तत्पर रहूं, यह दिव्य कामना ही तो उसका आह्वान करा रही है।

साधक की ज्ञान दृष्टि काम कर रही है। वह अपने ज्ञान चक्षु से स्पष्ट देख रहा है कि इस ससार मे शरीर के बन्धनों में पड़ा हुआ जीवात्मा क्यों बारम्बार जन्म और मरण के चक्र में घूम रहा है। परमेश्वर तो न्यायकारी है। वह तो कल्याणकारी है। विश्व की प्रत्येक रचना एक दूसरे की पूरक और सहायक है। क्या प्रकृति क्या जड, क्या चेतन सब उस परम देव के यज्ञ मे अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। नदियां अपना जल स्वयम् न पीकर दूसरों को पिलाती हैं। झरना अपनी नहीं दूसरों की प्यास बुझाता है। मेघ अपने लिए वृष्टि नहीं करता, वह तो धरती की तृषा मिटाता है। वनस्पतियां, ओषधियां सब कल्याण कारक हैं। परमार्थ के लिए परमदेव का जो परम यज्ञ हो रहा है, उसमे मानव बनकर मैं अपनी आहुति क्यों नहीं डालता? क्या कारण है कि वह दिव्य देव तो यज्ञ कर रहा है और मैं असुर बनकर केवल निज जीवन के मोह के वशीभूत हुआ अनुचित कर्म कर रहा हू।

साधक की दिव्य दृष्टि देख रही है कि जगत् की समस्त पीड़ा मानव जीवन के यज्ञमय न होने के कारण है। यदि मानवीय जीवन यज्ञीय हो जाए तो आनन्द की सरिता बह निकले। जिन पदार्थों, जीवों और विषयों की आसक्तियों में पड़ा जीवात्मा करुण क्रन्दन करता हुआ भोगों और रोगों से गल सड़ रहा है, वह उस परिधि से बाहर क्यों नहीं आता? परमात्मा को बुलाता है, परमात्मा तो सर्वस्व देता है, मैं ही उसे अपना आत्म-समर्पण नहीं करता।

अपनी ज्ञान आंख से जब सब कुछ स्पष्ट दीखता है तो फिर कैसा संशय, कैसा भ्रम, कैसी चिन्ता और कैसा भय उसके भीतर समाहित रह सकता है।

परम यज्ञ में अपने को आहुत करने के लिये उस परम पुरोहित का वरण करने के लिये आत्मा पुकार उठता है "हे दिव्य देव! मैं जानता हू कि जहां तुम्हारा वास होगा, वहां तुम्हारी दिव्यताएं अवश्य होगी। जो मानव तुम्हारा आह्वान करते हैं, जो तुम्हे पुकारते हैं, जो निरन्तर अपने हृदय सिंहासन पर तुम्हें आसीन करते हैं, वे तुम्हारी दिव्यताओं से सतत प्रदीप्त रहते हैं। भला यह कैसे सम्भव है कि जहा तुम्हारा दिव्य प्रकाश जगमगाए, वहां अन्धकार भी व्याप्त रह जाए। जैसे तेजस्वी सूर्य के उदय होने पर रात्रि का घोर तिमिर स्वत विलीन हो जाता है, ठीक उसी भांति तुम्हारे दर्शन से मेरा अज्ञान तिमिर दूर हो जाएगा। तुम्हारे पावन मिलन से जो जादुई स्पर्श होगा, वह मेरा कायाकल्प कर देगा। मेरे उठने बैठने सोने जागने और कार्य्य करने की शैली में एक विचित्र परिवर्त्तन हो जाएगा। मैं स्वार्थी से परमार्थी बन जाऊँगा, तुम्हारे विराट विश्व यज्ञ मे मेरी जीवन आहुति मेरे जीवन यज्ञ को सफल कर देगी।

हे मेरे आराध्य! तुम्हारे यज्ञ आकर्षण से खिच कर तुम्हारे समीपस्थ होने के लिए अपने जीवन को तुम्हारे मिलन से यज्ञमय बनाने के लिये ही तो तुम्हारा आह्वान् कर रहा हूं।

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त'
'वेदवारिधि'
मुख्य उपमन्त्री आ प्र. सभा

## स्वप्नों में प्रभु आता है

स्वप्नो मे प्रभु आता है।
जब योग की निद्रा सोता हू, चुपके से आन जगाता है ॥
स्वप्नो मे···

मै मुग्ध उस पर होता हूं जब ज्योति रूप दिखाता है।
मैं मन ही मन मुस्काता हू वह हृदय कमल खिलाता है।
मिट जाते हैं मेरे सशय, जब ज्योति मे ज्योति मिलाता है ॥
स्वप्नों मे···

जब तृष्णाए सताती हैं, वह सोम सुधा पिलाता है।
मस्ती मे मै खो जाता हू, वह ऐसा मस्त बनाता है।
मै उसके गीत सुनाता हू, वह मधुमय साज बजाता है ॥
स्वप्नों मे···

जब आँख मिचौनी होती है और ज्योतिमय छिप जाता है।
व्याकुलता मेरी बढ़ जाती है, वह दरश पुन दिखलाता है।
कहीं टूट न जाए स्वप्न मेरा, यह सोच 'वसन्त' घबराता है ॥
स्वप्नो में···

लखनऊ-रविवार २३ मार्च ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् ।

इस ससार मे जीवन सबको प्रिय होता है और मृत्यु सबको अप्रिय होती है। जीवित का लक्षण यह होता है कि वह गतिशील होता है। गति शून्यता ही मृत्यु का प्रतीक है। जिस प्रकार प्राणी जगत् मे जीवन और मृत्यु के क्रम को गतिशीलता और गतिशून्यता से हम मापा करते हैं, उसी प्रकार सस्थाओ के जीवन और मृत्यु का बोध भी हमे उनकी गतिविधियो से होता है।

विश्व की समस्त सस्थायें जो विभिन्न उद्देश्यो को लेकर चलती हैं, अपने को मृत नहीं देखना चाहतीं और दीर्घ जीवन की कामना करती हैं। यही कारण है कि आये दिन हम विभिन्न सस्थाओ को जयन्तियाँ मनाते देखते है। जब कभी किसी सस्था की रजत स्वर्ण या हीरक जयन्ती मनायी जाती है, तो उस सस्था के न केवल कर्णधारो मे, वरन् साधारण सदस्यो मे एक नव उत्साह की लहर जागृत हो उठती है। उन्हे ऐसा बोध होता है कि हम जीवित हैं, हमारी सस्था जीवित है और उसकी आयु का वर्धन हो रहा है।

ससार की असख्य सस्थाओ मे आर्यसमाज भी एक ऐसी ही संस्था है, जिसमे कई जयन्तिया मनाई जा चुकी हैं, और आगे भी मनाई जायेंगी। हमारे आर्य बन्धु अपने साप्ताहिक अधिवेशनो मे तथा उत्सवो मे, नगर कीर्तनो मे और प्रभात फेरियो मे एक जयघोष भी करते हैं "आर्य समाज अमर रहे।" जयघोष भी दो प्रकार के होते हैं। एक जीवित और दूसरे मृत। जो जय-घोष आत्मना विजयोपरान्त लगाये जाते हैं, उनमे जीवन झलकता है क्योंकि उनमे उत्साह के स्वर होते हैं। जो जयघोष केवल खाना पूरी के लिये लगाये जाते हैं, वे उत्साहहीन होने के कारण मृत्यु तुल्य होते हैं। प्रथम प्रकार के जयघोष चूकि जीवन युक्त होते हैं, इसलिये उनसे जन जीवन और उत्साह का सचार होता है और द्वतीय प्रकार के मृत जयघोष केवल वाणी तक ही सीमित रहते हैं। वे सर्वथा प्रभाव हीन होते है। थोथे जयघोष बुलवाने वाले और बोलने वाले इस बात को भली-भाँति जानते है। हम सब इस बात को जानते हैं कि वैदिक धर्म की जय का जयघोष लगाने के उपरान्त जब महर्षि दयानन्द, भारत माता की और गो माता की जय के नारे लगाये जाते हैं तो गो माता की जय बोलने वाले की ध्वनि, नारा लगाने वाले का व्यग कर के व्योम मे सर्वथा विलीन हो जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि बुलवाने और बुलाने वालो की 'गौ' से केवल मौखिक सहानुभूति होती है और उनके कर्म सर्वथा विपरीत होते हैं। जो व्यक्ति न घर पर गाए रखे, और न उसकी सेवा करे, और ग्वाले से भी भैंस का दूध लेकर पिए और पिलाए, वह किस प्रकार उत्साह के साथ ऐसा जयघोष कर सकता है।

जीने की भी एक कला है जिसे न जानने के कारण कभी-कभी जीवित भी मृतक समान हो जाता है। जो जीवन रोग से अच्छादित रहता हो, जिस शरीर को रोगों ने जर्जर कर दिया हो, वहाँ कौन-सी गतिशीलता के दर्शन होगे जिससे नव उत्साह का सचार होगा। जब किसी पशु व व्यक्ति की जीर्ण काया हो जाती है, रोग पीछा नहीं छोडते हैं तो न केवल उसको वरन् देखने वालो को भी यह अन्तरकामना होती है कि जितनी शीघ्र यह मर जाये उतना ही अच्छा है क्योकि यह तो जीवित होते हुए भी एक भार समान है। इसकी पीडा की निवृत्ति तो मृत्यु से ही हो सकती है। इसलिए आवश्यक है कि यदि जिया जाय तो नितान्त स्वस्थ रह कर। जो जितना हृष्ट-पुष्ट होता है, वह जीवन का उतना ही आनन्द लेता है।

हृष्ट-पुष्ट होकर जीवन की जो एक सरल कला है, उससे साधारण जन अनभिज्ञ होने के कारण, जीवित होते हुए भी मृतक समान रहते हैं। जो जन जीवन की कला को जानते हैं और फिर उस कला से युक्त रहते हैं वे सफल जीवन कलाकार होते हैं। जीवन क्या हैं, इसका न केवल ज्ञान ही आवश्यक है वरन् जीवन कैसे जीवन बन कर चलता है, वैसा कर्म भी आवश्यक है। जीवन शरीर और आत्मा के समुच्चय का नाम है, इसलिए प्रत्येक जीवन के लिए दो बातो का ज्ञान होना चाहिये। केवल प्रकृति या वस्तु बोध ही नहीं वरन् उसके साथ आत्म अथवा जीव बोध भी होना चाहिये। रङ्ग और रूप का ज्ञान हो, तूलिका कैसी चलाई जाए इसका भी बोध हो और फिर चित्र बनाया जाए अर्थात् कर्म किया जाए तो सार्थक है। केवल ज्ञान प्राप्ति तक ही सीमित रहा जाए और कर्म शून्यता हो तो वह ज्ञान निरर्थक है। इसके विपरीति अज्ञान के वशीभूत होकर यदि एक चित्र बनाया जाए तो क्या वह सार्थक होगा। यज्ञ से भी यज्ञमय जीवन क्यो नही बन पाते, उसका भी एक मेव कारण यही है कि यज्ञ के शरीर अर्थात् कर्मकाण्ड के भौतिक स्वरूप के पीछे तो हम लट्ठ लिए फिरते हैं किन्तु यज्ञ की आत्मा अर्थात् जो मन्त्र है, उनके अर्थ और मनन से हम सर्वथा दूर रहते हैं।

आर्य समाज रूपी जो एक सस्था है और जिसकी अमरता के हम जय घोष लगाते है, वह जीवित तो है किन्तु उसका जीवन जैसा सशक्त होना चाहिये, वह नहीं है। जिस शक्ति और गतिशीलता के दर्शन होने चाहिये, वे चिन्ह कहाँ है। इस सस्था का भी एक शरीर है और एक आत्मा है। खेदनीय विषय तो यह है कि हमे न तो शरीर का ज्ञान है न आत्मा का और हम अमरता के जय घोष लगाते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि अपने अज्ञान के कारण हम कर्म सर्वथा उसके विपरीत करते हैं। यही कारण है कि दिन प्रतिदिन हम गति शिथिल होकर गति शून्यता अर्थात् मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अपने अज्ञान के कारण हमने सस्था के जीव तत्त्व की अवहेलना की है जिसके फल स्वरूप अनेक कुकर्मों ने सस्था के शरीर को न केवल जर्जर वरन् क्षत विक्षत कर दिया है।

आर्यसमाज के अन्तर्गत जो आज अनेक शिक्षण सस्थाए हैं, अनाथालय हैं, बडे-बडे भवन हैं, और यज्ञशालाए हैं, उनके शरीर मे सिद्धान्त रूप आत्म तत्व की क्या आज घोर अवहेलना नहीं की जा रही है? वेद प्रचार आर्य समाज की आत्मा है क्योकि वेद प्रचार के आधार पर ही आर्य समाज को जगती का आर्यकरण करना है। वेद अध्यात्मवाद के पावन मार्ग से हमें परम तत्व की ओर ले जाता। आज उस आध्यात्मिकता के ह्रास के कारण ही आर्यत्व का लोप हो गया है। अनार्यत्व पनप रहा है और आसक्तिया हमे भोगमुख करके हमारे रोगो की अभिवृद्धि कर रही है जिससे सस्था का शरीर प्रति दिन ही नहीं वरन् पल-पल दुर्बल होता चला जा रहा है और सस्था की मृत्यु मुख खोले द्रुतगति से दौडी चली आ रही है।

आर्य्यसमाज स्थापना दिवस मनाने वाले आर्य बन्धुओ! आओ प्रीतिपूर्वक बैठो और विचारो कि आर्यसमाज की आत्मा को अमर

# पं० विद्याभिक्षु का देहान्त !

अत्यन्त दुःख है कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् अरबी फाजिल श्री पं० विद्याभिक्षु जी एम० ए० प्रिंसिपल हिन्दू कालिज रुदौली (बाराबंकी) का १८ मार्च की शाम को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नारायण स्वामी भवन में, एक लम्बी बीमारी के पश्चात् ५५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। पंडित जी अपनी चिकित्सार्थ यहाँ पधारे हुए थे। आप आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् और वक्ता थे। आप बहुत दिनों से रक्तचाप से पीड़ित थे, परन्तु पिछले दिनों बाराबंकी आर्य समाज के उत्सव पर व्याख्यान दे रहे थे कि अचानक फालिज का आघात हुआ, और तब से अब तक चारपाई से न उठ सके। आपकी अच्छी से अच्छी चिकित्सा हुई, पर दैवी प्रकोप से वह बच न सके। आपका शव उसी रात्रि को ही बस से रुदौली ले जाया गया। और वहाँ उनका अंत्येष्टि-संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया।

—शिवचरणलाल प्रेम (बड़ा बन्धु)

रखने और उसके शरीर को दीर्घ जीवी रखने के लिये आपको क्या करना है। अथर्ववेद की पावन ऋचा मार्गदर्शन करते हुए कह रही है—

"अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथ.। आरोहणमाक्रमण जीवतो जीवतो ऽयनम् ।।" —अथर्व ५-३०-७

अर्थात् अनुकूलता से बुलाया जाकर तू पुनः इस उन्नतिकारक पथपर आ, क्योंकि आरोहण अर्थात् ऊँचा चढ़ना, आक्रमण अर्थात् आगे बढ़ना ही प्रत्येक जीव का जीवन है।

अतएव उन्नति के मार्ग का आरोहण करने के लिए अपने जीवन को परमात्मा के रंग में रंग दो। विश्व के भौतिक प्रवाह की प्रबल धारा में स्वयम् बह जाने के स्थान पर शक्ति से उस प्रचण्ड धारा के प्रवाह को आज मोड़ दो। सादा जीवन, उच्च विचार, समदर्शिता यम नियम पालन, सायं प्रातः सन्ध्या, अग्निहोत्र, प्रभु-भक्ति के सुमधुर भजन, सेवा, करुणा, तप, त्याग आर्यत्व के इन उपकरणों से जीवन को पूर दो। स्वयम् जीवित बनो, आर्य समाज की गति को गतिशील करो और विश्व को नव-जीवन प्रदान करो।

*

## श्री मन्त्री जी का भ्रमण-पुरोगम

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के माननीय मन्त्री श्री पंडित प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम एल ए निम्न लिखित स्थानों में पहुंच रहे हैं। श्री मन्त्री जी के पहुंचने पर भव्य स्वागत किया जाये और सभा के लिये पुष्कल धन राशि भेंट करने की कृपा की जाय।

२६ मार्च ६९ आ स. फीरोजाबाद आर्यनगर।

२७ मार्च ६९ आ स शाहगंज।

२८ मार्च ६९ आ स काशी वाराणसी शहर की समस्त समाजें।

६ अप्रैल १९६९ पुरानी मंडी जनकनगर खालापार आदि शहर सहारनपुर।

—विक्रमादित्य 'वसन्त' उपमन्त्री सभा

## सभा की सूचना

सर्व जिलास्थ आर्यसमाजों को विदित हो कि सभा कार्यालय से मास फरवरी के अन्तिम सप्ताह में पत्र भेजकर निवेदन किया गया था कि उत्तरप्रदेश के मध्यावधि चुनाव में आर्यसमाजी कौन महानुभाव किस-किस दल की ओर से निर्वाचित हुये हैं ? इस प्रकार की सूची बनाकर भेजें—किन्तु खेद का विषय है कि सभा कार्यालय में केवल ५-६ समाजों के उत्तर ही प्राप्त हुए हैं। अतः पुनः निवेदन किया जाता है कि अपने-अपने जिले के निर्वाचित आर्य सज्जनों के नाम पते सहित तुरन्त भेजने की कृपा की जावे जिससे उनकी सूची तैयार की जाए। आशा है समाजें शीघ्रता करेंगी।

## वार्षिक चित्र

१—सभा से वार्षिक फार्म भेजे जा चुके हैं, जिन समाजों में अब तक फार्म न पहुंचे हों, वह शीघ्र लिख कर सभा कार्यालय से मँगाने का कष्ट करें।

२—समस्त समाजों के मन्त्री महोदयों से निवेदन है कि वह चित्रों को भरते समय इसका विशेष रूप से ध्यान रखें कि चित्र के कोई कालम (खाना) खाली तो नहीं रह गये हैं विशेषकर चित्र सं० ४, ६, ७ व ८ के सभी कालम (खाने) भरे होने चाहिये।

## जागृति विशेषांक

आदरणीय सम्पादक जी,

'जागृति अङ्क' में तो 'वसन्त' जी ने ऋग्वेद के 'आत्म जागृति सूत्र' का सारा सारतत्त्व ही मथ कर हम सबके लाभार्थ निकालकर रख दिया है। 'मित्र' के पाठकों के लिये 'जागृति अङ्क' एक अनुपम दिव्य ज्योति सिद्ध होगा जो हम में से अनेकों के भ्रम, तथा अज्ञान अन्धकार को हटाकर सत्य ज्ञान रूपी प्रकाश का दर्शन करायेगा।

यह अङ्क हमारे लिये एक विशिष्ट उपहार है, जिसमें उन्होंने आत्म तथा परमात्म ज्ञान, आत्म तत्त्व, वस्तु तत्त्व, जीव तत्त्व तथा आत्मा का महत्त्व, योग साधना के लिये बाह्य वृत्ति एवं अन्तर्मुखी वृत्ति के सुबोध तथा मार्मिक स्पष्टीकरण के रहस्य को वैज्ञानिक ढंग से समझाने का सफल प्रयत्न किया है।

मैं 'आर्यमित्र' के पाठकों से सानुरोध प्रार्थना करूँगा कि वे ऋग्वेद के 'आत्म जागृति सूत्र' के प्रत्येक मन्त्र के भावार्थ को आत्मसात करने का सुप्रयत्न अवश्यमेव करें, जिसे हमारे पथ-प्रदर्शक श्री 'वसन्त' जी ने उस अङ्क में सुन्दर भावपूर्ण, एवं पाण्डित्य के साथ समझाने का प्रयत्न किया है तथा उन मन्त्रों के गूढ़ रहस्यों को अत्यन्त सरल और सुबोध बना दिया है। हमारा दुर्भाग्य होगा यदि हमने अपने अज्ञान, प्रमाद, असावधानी अथवा भूल के कारण उनका सम्यक् अनुशीलन एवं गम्भीर अध्ययन न कर परमात्मा तथा अपने को ही जानने का सुप्रयत्न न किया। उन्होंने वेद के सर्वोत्कृष्ट सिद्धान्तों को उनका तर्कपूर्ण अध्ययन कर हमारे सन्मुख रखा है। वे निःसंदेह प्रेरणाप्रद तो हैं ही, ऐश्वर्याभिलाषी एवं आत्म जिज्ञासुओं के लिये तो अनमोल रत्न हैं।

—जियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य
२५ रायगंज झांसी
निरीक्षक आर्य कन्या महाविद्यालय, झांसी

## प्राप्तव्य धन

सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सुवकोटि, और ४ आना प्रति सदस्य का प्राप्त होने पर ही प्रतिनिधि स्वीकृत किये जा सकेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभामन्त्री

## वार्षिक विवरण शीघ्र भेजिए

सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखा जाना आरम्भ हो गया है। सभा के मान्य अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, निरीक्षकों, अवैतनिक उपदेशकों, जिला उप सभाओं तथा विभागों के अधिष्ठाताओं से अनुरोध है कि वह अपने कार्य का विवरण २२ मार्च तक अवश्य भेजने की कृपा करें। ताकि शीघ्र ही रिपोर्ट प्रकाशित होकर सेवा में भेजी जा सके।

—विक्रमादित्य 'वसन्त' सभा उपमन्त्री

राज्यो व विधान सभाओं में— ( राजनैतिक समस्याएं )

# संविधान का उल्लंघन तथा अनुशासनहीनता से

# लोकतंत्र को भारी खतरा

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, ससद सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

भारत में लोकतन्त्र अपने जीवन के चौराहे से गुजर रहा है। थोड़ी-सी भूल से वह समाप्त भी हो सकता है और सावधानी बरतने से देश को एक स्वस्थ शासन प्रणाली भी दे सकता है। भारत में इसकी सफलता का प्रभाव विश्व की राजनीति पर भी पड़ेगा। क्योकि दुनिया के एक सबसे बड़े राष्ट्र मे यह प्रणाली कसौटी पर चढ़ी हुई है। लोकतन्त्र की इस पद्धति मे आस्था रखने वाले देश भारत मे होने वाले उतार-चढ़ाव को आज बड़े ध्यान से देख रहे हैं। देश ने जिन हाथों में इसके सफल बनाने का दायित्व सौंपा है, उनकी जिम्मेदारी तो और भी बढ़ जाती है। इसलिए हर कदम बहुत फूक-फूक कर रखना जरूरी है।

## राज्यो व केन्द्र में तनाव

१९६७ के सामान्य निर्वाचनों के बाद जिन राज्यो मे गैर कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बने उनमे और केन्द्रीय सरकार मे कुछ तनाव प्रारम्भ से ही चल पड़े थे। केरल, मद्रास,और पश्चिमी बगाल विशेष रूप से इसमे आगे रहे। भारतीय सविधान निर्माताओ को सम्भवत सविधान बनाते समय कुछ ऐसी कल्पना भी न रही होगी कि कभी आगे चलकर राज्यो की और केन्द्र की सरकार के मतभेद गम्भीर रूप भी धारण कर सकते हैं। कहीं-कहीं तो इसके लिए फिर से सविधान सभा बुलाकर परिवर्तित परिस्थितियो मे अपेक्षित निर्णय लेने की चर्चाए भी तेजी से बल पकड़ रही हैं।

## छोटी-छोटी बाते

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न जिनका केन्द्रीय सरकार राष्ट्रिय एकता की दृष्टि से समाधान खोज रही है, उन मे भी राज्य सरकारो की रुकावटें बाधा बनी हुई हैं। अखिल भारतीय शिक्षा-सेवाए और इजीनियरिंग सेवाए आदि विषयो पर भी इन्हीं सब कारणों से अपेक्षित निर्णय नहीं लिये जा सके। पीछे १९ सितम्बर को केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियो की हड़ताल पर भी केरल मे इसी तरह का गतिरोध पैदा हुआ। जिन कर्मचारियो को उस हड़ताल मे दण्डित किया गया उन्हे पजाब, बंगाल, केरल आदि की सरकारे दण्डित नहीं करना चाहतीं। अभी तो यह विवाद छोटे-छोटे इस तरह के प्रसगों मे ही सामने आये हैं। परन्तु इससे यह तो अवश्य पता

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससदसदस्य

चलता है कि हवा का रुख किधर जा रहा है? शीघ्र ही इसका कोई उचित समाधान न निकाला गया तो राष्ट्रिय अखण्डता सकट मे पड जायेगी।

## बंगाल का मामला

अभी पीछे देश के जिन चार बडे राज्यो मे मध्यावधि चुनाव हुए उनमे बगाल मे सयुक्त मोर्चे की सरकार बनी है। सरकार बनते ही फिर वैसी ही कुछ गम्भीर समस्याए उठ खड़ी हुई हैं। बागडोर सम्भालते ही उन्होंने हिंसात्मक प्रवृत्तियो को उभारने और उनमे भाग लेने वाले नक्सलवादी कैदियो को बिना शर्त रिहा कर दिया। अब राज्यपाल को वापस बुलाने की माग पर बगाल सरकार अड़ गई है।

## विद्रोह का सूचक

पश्चिम बगाल विधान सभा मे जो घटना विधान सभा का उद्घाटन भाषण देते समय राज्यपाल श्री धर्मवीर के साथ घटी, उसने सविधान मे आस्था रखने वाले हर देश-भक्त के सामने एक प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया है। सयुक्त मोर्चे के सदस्यो ने राज्यपाल के सदन मे आने पर खडे होकर सम्मान प्रदर्शित करने के सामान्य शिष्टाचार का भी पालन करना उचित न समझा। राज्यपाल ने सरकार द्वारा तैयार किये भाषण के जिन अशो को अपने विवेक का प्रयोग कर पढने से इन्कार कर दिया उन्हे भी भाषण का भाग मान कर, धन्यवाद प्रस्ताव मे उनकी निन्दा भी साथ ही साथ कर दी। जबकि सविधान ने राज्यपाल को उसका अधिकार दे रखा है। यदि यह अशोभनीय प्रवृत्तियाँ विधान मण्डलो मे बढने लगी तो फिर सामान्य सगठनो मे कैसे अनुशासनहीनता रोकी जा सकती है।

## राष्ट्रपति के अधिकार

गृह मन्त्री श्री चह्वाण ने कुछ दिन पहले जब ससद मे यह वक्तव्य दिया कि ६ मार्च से पहले राज्यपाल को वापस नहीं बुलाया जायगा तो स्पष्ट ही उसमे यह अन्तर्निहित था कि उसके बाद बुला लिया जायेगा। होना यह चाहिये था कि गृहमन्त्री दृढ़ और स्पष्ट भाषा मे कहते राष्ट्रपति जब तक श्री धर्मवीर को बगाल मे रखना आवश्यक समझेंगे तब तक वह वहा रहेंगे। जब आवश्यक समझेंगे तब उन्हे बदला जा सकता है। परन्तु राष्ट्रपति के अधिकार को राज्य सरकार के हाथो मे नहीं सौंपा जा सकता।

## प्रधान मन्त्री की भूल

पश्चिम बगाल के राज्यपाल को वापस बुलाने की माँग राज्य के साम्यवादियो और उसके समर्थकों द्वारा बहुत पहले से की जा रही है। लेकिन इस माग को उस समय और अधिक प्रोत्साहन मिला जब प्रधानमन्त्री दिसम्बर में शान्तिनिकेतन विश्वविद्यालय मे दीक्षान्त भाषण देने गई। उनसे जब वहा इस सम्बन्ध मे पूछा गया तो उन्होने कहा कि अभी तक राज्यपाल को वापस बुलाने के सम्बन्ध मे किसी ने हमे लिख कर ही नहीं दिया है। इससे उन उग्र पथियो ने सोचा क्यो न इसको लिखकर भी भेज दिया जाय। प्रधान मन्त्री ने उस उत्तर को स्वय आमन्त्रित किया। उसी समय यदि वह यह कह देती कि राज्यपाल राष्ट्रपति का प्रतिनिधि है। राष्ट्रपति के अधिकारो को कुछ व्यक्तियो द्वारा अथवा किसी राज्य सरकार द्वारा कैसे चुनौती दी जा सकती है। इससे

[शेष पृष्ठ १२ पर]

# आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य और-

किसी भी सस्था का संस्थापक सस्था की स्थापना का उद्देश्य बताता है और उसका विधान बनाता है। विधान मे परिवर्त्तन हो सकता है उद्देश्य में नहीं। जैसे कोई व्यक्ति एक चिकित्सालय या विद्यालय की स्थापना करता है। वह व्यक्ति उस चिकित्सालय या विद्यालय के उद्देश्यो को लिखता है और विधान भी कि इस सस्था के द्वारा रोगियों की निशुल्क चिकित्सा की जावे और उन्हें दवा दूध फल आदि दिया जावे। या विद्यालय की स्थापना के समय सस्थापक उद्देश्य बताता है कि इस के द्वारा सस्कृत विद्या का शिक्षण दिया जावे या यह बताता है कि इसके द्वारा सरकारी परीक्षाओ का प्रबन्ध किया जावे। अब उस सस्था द्वारा वे ही काम किये जासकते हैं, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उस सस्था के सस्थापक ने उसकी स्थापना की है। हर भला काम चाहे वह कितना ही अच्छा क्यो न हो उस सस्था के द्वारा नहीं किया जा सकता।

## आर्यसमाज की स्थापना

आजकल जो आर्यसमाज के नियम उप नियम चल रहे हैं जिन के आधार पर आर्यसमाज का सठठन चल रहा है, इसको महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने लाहौर मे निर्माण किया था। लाहौर का पहिला रजिस्टर मैने तलाश करके पूज्यपाद महात्मा हसराज जी को दे दिया था, उस प्रथम रजिस्टर मे जहां आर्य समाज के ये नियम उपनियम अंकित है। वह इनको-

## आर्यसमाज के उद्देश्य

यह शब्द लिखा मैंने देखा और महात्मा जी को बताया अर्थात् जिनको आज आर्य समाजी नियम कहते हैं ये आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य हैं, अर्थात् इन की पूर्ति के लिये आर्य समाज नाम की सस्था की स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने की थी, और जो विधान महर्षिवर ने लिखा था उस रजिस्टर में नीचे लिखा था कि एक वर्ष के लिये यह विधान बनाता हू। कार्य चालू करने के लिये इसको यथोचित विज्ञापन देकर बदलना यह आदेश महर्षि का था। पर उद्देश्यो के बदलने का अधिकार किसी को नहीं है।

जो लोग यह समझते हैं कि हर भले काम को करने के लिये आर्य समाज है, महा अन्धकार में स्वय हैं और आर्य समाज को भी अन्धेरे मे ढकेलने वाले वे हैं। आर्य समाज की स्थापना इन मौलिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिये है कि ससार को यह समझाओ कि सब सत्य विद्यायें प्रभु से निकली हैं और सब का आधार प्रभु है। वेद ही सत्यविद्याओ का पुस्तक है, वह वेद प्रभु की वाणी है, वेद मनुष्यकृत नहीं है। वेदों मे जो कुछ लिखा है वह सत्य है। हर समस्या का हल वेदो मे देखो जो वेद में लिखा है वह सिद्धान्त निर्भ्रान्त सत्य है। और ससार को सिखाओ कि सच्चा ईश्वर निराकार निर्विकार है उसी की उपासना करो, झूठे ईश्वर से ससार को हटाओ।

इन कामों के लिये आर्यसमाज की स्थापना महर्षि ने की थी।

जो भी काम दुनिया मे हो रहा हो उस सब मे कूद पड़ो, और आर्य समाज की शक्ति उसमे सब लगा दो और मूल उद्देश्य जिसके कि लिये आर्यसमाज की स्थापना ऋषि ने की थी, वह बट्टे खाते मे डाल दो, यह ऋषिघ्नता का पाप सब पर है।

## दुनिया जानना चाहती है

जब कोई मन चला किसी भी काम मे आर्य समाज को झोकना चाहता है तब वह दो नारे लगाता है।

१—दुनिया जानना चाहती है कि आर्यसमाज इस विषय में क्या कर रहा है।

२—सरकार यह काम करने जा रही है तुम आन्दोलन प्रारम्भ करो और बहती गङ्गा में हाथ धोलो।

बस ये दो नारे लगते ही आज के आर्य समाजी चट उस काम में कूद पड़ते हैं। अगर किसी का मकान गिर जावे तो कोई नारा लगावे कि दुनिया जानना चाहती है कि आर्यसमाज इस बारे मे क्या कर रहा है तो ये आर्य समाजी उस मकान की ईंट ढोने लगेंगे और कहेंगे इसी काम के लिए आर्य समाज की स्थापना है, क्यों कि सारे ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। गिरे हुये मकान की ईंटे उठाना ही परोपकार है।

# आर्यसमाज का नेतृत्व

★श्री आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम.ए वेदाचार्य

सस्था का सचालन जैसे व्यक्तियों के हाथ मे आ जाता है वह अपनी योग्यता से अधिक काम नहीं कर सकता। अकल ही नहीं तो करे क्या। साथ ही हर सचालक सस्था से उन कामों को करना पसन्द करेंगे जिन कामों को चलाने मे उसी को नेतृत्व प्राप्त हो, यह स्वाभाविक भी है साधारण व्यक्ति के लिए। यदि आर्य समाज के जो उद्देश्य महर्षि ने बताये हैं उनके करने मे आर्य समाज को लगाया जावेगा तो नेतृत्व विद्वानो के हाथ मे चला जावेगा। क्योंकि आजकल के आर्य समाज के नेता लोगों के फोटो जेब मे हाथ डाल कर तभी खिच सकते हैं और तभी उनके गले मे मालायें पहनाई जा सकती हैं और उसी समय तक इन नेताओं के जलूस निकल सकते हैं जब तक आर्य समाज को व्यावहारिक साधारण और आन्दोलनात्मक बातों में धकेला जाता रहेगा। सैद्धान्तिक बातों में यदि आर्य समाज को डाला जावेगा तो विद्वानों की पूजा प्रारम्भ हो जावेगी। फिर उन्हें कौन पूछेगा। अतः जब तक आर्य समाज के नेता वेद शास्त्र शून्य सस्कृत काला अक्षर भैंस बराबर जिनके लिये हैं, रहेगी आर्यसमाज के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आर्यसमाज को नहीं लगाया जा सकता है।

## आ० स० का नेतृत्व

१—जितनी धर्म सस्थायें या सम्प्रदाय भी इस विश्व में रहे हैं उन सब के नेता सचालक ऐसे व्यक्ति रहे थे जो केवल उस संस्था का ही कार्य करते थे। उसके अतिरिक्त कोई और काम उनके हाथों मे नहीं था तभी वे धर्म या सस्थायें सफल हुई हैं।

२—नेता मे दूसरा गुण यह चाहिए कि वह अपने धर्म की प्रत्येक बात का सूक्ष्म से सूक्ष्म सिद्धान्त का पूर्ण ज्ञाता हो।

३—नेता मे तीसरा गुण यह होना चाहिए कि वह उसी के लिये सोता हो, उसी के लिए जागता हो। चलते-फिरते भी उसी अपने धर्म या सस्था के भविष्य की चिन्ता करता हो प्रतिक्षण प्रतिपल उसी की धुनि मे रत रहे। कोई और दूसरा काम उसके सोचने के लिये हो ही न।

४—सदाचार आदि गुण भी अनि-वार्य अपेक्षित हैं।

इन चारों गुणों के नाम क्रमश. इस प्रकार हैं—

१—अनन्यता, २—योग्यता, ३—तल्लयता, ४—सदाचार। स्वामी शकराचार्य, महात्मा गांधी, वीर सावरकर और गुरु गोलवलकर आदि में उपर्युक्त चारों गुण कूट-कूट कर भरे थे। अतः उन्होंने अपनी-अपनी सस्थाओं का सफल सचालन किया था।

इससे उल्टी नेता की अयोग्यतायें नीचे लिखी हैं—

१—बहुधन्धिता (अनेक कामों को हाथ मे ले रखना। अनेक सभाओं में मेम्बर बना हो।

( शेष पृष्ठ १२ पर )

# 'प्रेरक तत्व'

प्रेरक तत्त्व उसे कहते हैं जो प्रेरणा देने वाला या किसी कार्य में प्रवृत्त कराने वाला है। इस तत्त्व की महिमा सृष्टि के प्रत्येक भाग में जैसे—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और प्रकाश के तरग आदि मे विद्यमान् है।

जिस प्रकार किसी को भोजन करते हुये देखकर भूख का, पढ़ते हुये विद्यार्थी को देखकर विद्या का और मां, बच्चे को देखकर ममता का ज्ञान होता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति तत्त्वों के प्रवाह क्रम को देखकर प्रेरक का हृदय की क्रिया और उसके स्वांस, प्रस्वास की गति विच्छेद को देखकर जीव शक्ति का तथा जीव-शक्ति मे चेतन को देखकर परमात्मा का अस्तित्व प्रकट होता है। इस अस्तित्व का विज्ञान जानने योग्य है। आइये अब इसे ढूंढ़ा जाय कि वह कहां है। हमारे भौतिक वादी तो आज ब्रह्माण्ड की किरणो तक पहुच गये हैं, परन्तु अभी भी उन्हें इस तथ्य का ज्ञान नहीं हुआ कि प्रकृति में जो गति विद्यमान् है उसका केन्द्र कहा है ? यदि उस गति केन्द्र का पता उन्हें मालूम हो जाता तो नास्तिकों के जीवन की अनेकों समस्याओं का समाधान हो जाता। (परन्तु इस प्रकार का भ्रान्त विश्वास उनके मन मे [जैसे प्रकृति में जो कप आदि क्रियायें विद्यमान् हैं उनका वह अपना गुण है) जब तक रहेगा तब तक वे उसके बारे मे कुछ नहीं जान सकते] उस अस्तित्व के बारे मे 'आध्यात्मिक विज्ञान' का अनुभव अखण्डित है, वह कहता है कि, यदि 'प्रेरक' स्वय भूत का गुण रहता तो कारण से कारण का सलग्न नहीं रहता, अर्थात् विकास का उद्गम तब केवल एक ही कारण द्वारा होता, किन्तु इस प्रकार का नियम अस्तित्व मे कहीं भी देखने को नहीं मिलता। मै यह नहीं कहता कि पदार्थों के गुण नहीं हैं, प्रत्येक पदार्थों मे (उस प्रेरक तत्त्व की कृपा से) प्रत्येक का अपना अपना गुण विद्यमान् है, परन्तु जब तक प्रेरणा प्रदान करने वाली शक्ति का उनमे सयोग नहीं होता तब तक उन पदार्थों के गुण का विकास नहीं होता। जिस प्रकार कृत्रिम यन्त्रो के गुणों का प्रकाश बिना प्राकृतिक उपादान सयोग के नहीं होता। ठीक उसी प्रकार प्राकृतिक सृष्टियो मे गति का होना बिना 'प्रेरक-तत्त्व (परमेश्वर) के नहीं होता। तात्पर्यत. सृष्टि के प्रत्येक पदार्थों मे परस्पर आकर्षणों का लगाव लगे रहने के कारण वे बिल्कुल साफ ही उस सूक्ष्मतर तत्त्व के तरफ हम लोगो का ध्यान आकृष्ट करा रहे हैं कि, परमाणु के सूक्ष्मांश शून्य करण अर्थात् विद्युत-कण (जिसे इलेक्ट्रोन आदि के नाम से कहा जाता है) सब मालूम है, तभी तो उसने पहले भोग्य और उसके बाद भोक्ता को अस्तित्व मे प्रकट किया। इस भोग्य और भोक्ता का विज्ञान "वैदिक सम्पत्ति" के पृष्ठ ११५ १८१ मे बहुत सुन्दर से दिखलाया गया है वहां देख लें।

अब मै यहां पर 'प्रेरक-तत्त्व' के जो प्रधान विरोधी हैं उनके बारे मे थोडा बहुत समालोचना करूंगा।

१--मार्क्सवाद 'गहरे परिवर्त्तन को ही नाश और उत्पत्ति के रूप मानता है, और प्रकृति के किसी भी अश को परिवर्त्तन और विकास के नियम से मुक्त नहीं मानता।"

के अन्दर जो तत्त्व हैं उससे सूक्ष्म मन, मन से सूक्ष्म महतत्त्व=बुद्धि, महतत्त्व=बुद्धि से सूक्ष्म आत्मा और आत्मा से सूक्ष्म 'चेतन तत्त्व' हैं। अब उससे सूक्ष्म कुछ नहीं अर्थात् वही हिरण्यगर्भ का केन्द्र स्थान है। जिसके द्वारा प्रकृति के उन 'सत्, रज और तम' [अर्थात् (मैटर) के प्रोटोन, इलेक्ट्रोन और न्युट्रोन] परमाणुओ मे 'गति' का सचार होने से परिवर्त्तन विज्ञान के आधार पर सर्व प्रकार के रसायनिक उपादानों का उचित रूप मे विकास हो रहा है।

देखिये यदि प्राकृतिक तत्त्वो का निर्माण वैज्ञानिक ढग पर नहीं होता तो समस्त ब्रह्माण्ड का क्रियान्वित होना असभव होता। कहा, कैसा, कब और कितनी मात्रा मे परमाणुओं को जोड़ने से उनके विधिवत् 'रूप, रस, गन्धादि, गुणो का प्रत्यक्ष होगा, उस सर्वज्ञ को

२—एन्गेल्स ने लिखा—

"गति भूत के (अपने) अस्तित्व (रहने) का स्वरूप है। बिना गति के भूत न कभी था और न कभी रहेगा।' Ahti-Duhriht (1878) P 711

३—राहुल साकृत्यायन द्वन्द्रात्मक भौतिकवाद के जादू मे पड कर स्मरण कराते है कि "कारण भी कोई परमार्थ के अर्थ मे नहीं होता—एक बार कारण है तो वह सदा कारण रहेगा, ऐसा प्रतीत मे नहीं मिलता। जिस तरह एक पिता किसी का पुत्र है, उसी तरह हर एक कारण किसी किन्ही पहिले कारण समुदायो की प्रसूति—कार्य होता है।"

वैज्ञानिक भौतिकवाद पृ० ११

१—जब मार्क्सवाद ने गहरे परिवर्त्तन को नाश माना तो फिर उसकी उत्पत्ति किस आधार पर की। और जब प्रकृति के किसी भी अश को परिवर्त्तन और विकास के नियम से मुक्त नहीं मानता तो उसके मत मे चेतन तो प्राकृतिक है, फिर उसके गहरे परिवर्त्तन को नाश क्यो कहा। यदि परिवर्त्तन सर्वत्र विद्यमान् है तो उस (चेतन) का परिवर्त्तन क्यो नही होता ?

*श्री हरिश्चन्द्र वर्मा
मुरारोई, जि वीर भूम प बगाल

२—एन्गेल्स का विचार द्वैतवाद की कसौटी पर थोडी दूर तक सत्य है जैसे बिना गति के भूत कभी नहीं रहता और सयोग वियोग भी भूत का ही होता है। परन्तु किसके आधार पर ? इस ध्रुव को मानने के लिए भौतिक वादियो को बहुत कष्ट होता है क्योकि वे कार्ल मार्क्स की छाया को अभी भी गति के साथ मिला रहे है। गति और भूत दो अलग-अलग तत्त्व हैं, एक भौतिक और दूसरा अ-भौतिक। गति उसे कहते हैं जो एक दूसरे को चलाता है और जो चलता है वह भौतिक तत्व अर्थात् परमाणु (शक्ति) है।

यदि गति, भूत के अस्तित्व का स्वरूप होता तो वैज्ञानिक तरीके पर सृष्टि का निर्माण होना असभव होता (क्योकि विद्युत कण के प्रकाश तरगो मे सोचने और विचारने की शक्ति नहीं है, इसीलिये वे जड है और जो जड हैं, वे सृष्टि के केवल उपादान-कारण हैं। उपादान कारण को वश मे करने वाला एकमात्र 'प्रेरक तत्त्व' है। और वही उसे जोडता तथा तोड़ता भी है)।

यदि उसका वह अपना अस्तित्व रहता तो परस्पर एक दूसरे तत्त्वो के आकर्षण मे सृष्टि के कोई भी पदार्थ जुडे हुए नही रहते, अतएव उनके परस्पर सयोग और एक दूसरे से पराधीन होने के कारण ही अस्तित्व मे इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि गति, भूत के अस्तित्व का स्वरूप नहीं है। उदाहरण स्वरूप जिस तरह 'प्राण' शरीर का 'चेतन, प्रकृति का 'विद्युत-कण, अणुबन्ध का प्रेरक है

उसी तरह 'गति' भूत के अस्तित्व का प्रेरक है। और जिस तरह 'प्राण' शरीर से 'चेतन' प्रकृति से 'विद्युत-कण' अणुयन्त्र से भिन्न है। उसी तरह 'गति' भूत के अस्तित्व के परे हैं।

तात्पर्यंत बिना प्रेरक के परमाणुओ मे गति और बिना उनके गति के एक दूसरे से मिलना तथा बिना मिलन के परिवर्त्तन एव बिना परिवर्त्तन के किन्हीं पदार्थों का अस्तित्त्व मे प्रकट होना असम्भव है।

३—दुःख का विषय है कि आज हम लोगों के सामने राहुल जी नहीं है, वे एक भाषाविद दार्शनिक जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् थे। उन्होंने चेतन को प्राकृतिक सिद्ध करने मे नये-नये तर्क ढूंढ़ निकाले तिस पर भी उन्हें शान्ति नहीं मिली, यहाँ तक कि जिस प्रकार 'हर एक पिता किसी का पुत्र है उसी प्रकार हर एक कारण किसी किन्हीं पहले कारण—समुदायों की प्रसूति—कार्य होता है, इसीलिए कार्य-कारण नियम सिद्ध किये। किन्तु इस प्रकार का नियम अमिश्रित तत्त्वो को छोड केवल रसायनिक उपादानो मे ही देखा जाता है, जैसे—इलेक्ट्रोन और न्युट्रोन के परमाणुओ द्वारा जब 'हाइड्रोजन' कार्बन, रेडियम आदि भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले तत्त्वों का प्रादुर्भाव होता तभी उनके द्वारा रसायनिक परमाणुओ का विकास होता है। फलस्वरूप वे परमाणु, अणु-गुच्छों के रूप मे परिणत होकर यौगिक पदार्थों का (जल, नमक, बर्फ, रस और गन्धादि का) निर्माण करते हैं। इस योग के बनाने में तापमान का खास महत्त्व है। परन्तु उसके अलावा जो किसी को कभी भी कार्य नहीं होते, एवं जो सर्वदा कारण ही बने रहते हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं जैसे— (१) प्रेरक (२) आत्मा, (३) चेतन, (४) विद्या और (५) सत्य। उदाहरण स्वरूप जब हर एक पिता किसी का पुत्र है, तब हर एक गतिमान् कारण भी किसी (प्रेरक) का कार्य है।

## महिला मण्डल

### बढ़ना होगा लेकर कल्पना आर्यवर्त्त महान् की

भारत भू की सतियो जागो, नारी विचलित आज की
सत्य शील का अर्थ न जाने, दशा यह राष्ट्र महान् की

सीता जैसी कितनी नारियां भारत में थी प्रकट हुई
रावण की सम कैद में रहकर, अग्नि परीक्षा मे सफल हुई
बनना सीता हमको बहनों, यही हमारा नारा है
अपनी कन्याओं को सिखाना, शील तुम्हारा प्यारा है
टक्कर लो तुम उन द्रोहियों से, बहनों के अपमान की
सत्य शील ...

सस्कृति की परिचायक सीता, देवी वह गुणवान थी
राज-पाट के सुख को छोड़कर, बनी वह महान थी
शिक्षा लें हम उस नारी से पतिव्रत धर्म निभाना
लव और कुश को पैदा करके शिक्षित स्वय बनाना
बढना होगा लेकर कल्पना, आर्य व्रत महान् की
सत्य शील ..

अग्रेजों की सभ्यता से है, भारत मे लग आग चुकी
आर्य भी अब बने विधर्मी, ऐसी शक्ति जाग चुकी
नारी क्या तू मूक रहेगी, यह तेरा शृंगार नहीं
सीता सम कर्त्तव्य परायण बनना तेरा काम सही
जीजा, दुर्गा, अहिल्या बन, आहुति देना प्राण की
सत्य शील ..

—सुवेश, जयपुर (राजस्थान)

हमारी दृष्टि मे 'आध्यात्मिक विज्ञान के बारे में राहुल जी ने अपने ग्रथो मे व्यर्थ की समस्या उपस्थित की है 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' के पृ० १८१ मे लिखते हैं कि "भूत (भौतिक-तत्त्व) की गति का ही नाम ताप है, और वह गति भूत मे स्वाभाविक है—गति रहित भूत नहीं पाया जा सकता।"

समीक्षा—राहुल जी लिखते हैं "भूत की गति का नाम ही ताप है" लेकिन तत्त्वो मे ताप का आविर्भाव बिना गति के कदापि नहीं हो सकता, जिस तरह केवल (इलेक्ट्रोन) पोजिटिव=घन बिजली से विश्व का विकास नहीं हो सकता, बिना (न्युट्रोन) निगेटिव=ऋण बिजली के, उसी तरह बिना गति के विविध (तापमान) तत्त्वों का गुण प्रकट नहीं हो सकता, क्योंकि, गति और ताप दो अलग-अलग तत्त्व हैं। आज इसी तथ्य को लेकर विश्व में तर्क हो रहा है। भौतिक विज्ञान कहता है, वे दोनो भिन्न-भिन्न तत्त्व नहीं है। अर्थात् गति का नाम ही ताप है, जहाँ गति है वहीं ताप है और जहाँ ताप है वहीं गति है। लेकिन उनके भीतरी रहस्य को अभी भौतिकवादी नहीं समझ पाये हैं। कि ताप तत्त्व बिना गति के क्यों नहीं रहता, हृदय की हरकत बिना जीव के क्यों नहीं चलता, प्रदीप बिना वायु के क्यों नहीं जलता, विमान बिना वैज्ञानिक के क्यो नहीं उड़ता और सयोग-वियोग बिना गति के क्यो नहीं होता? उन सबका मूल उत्तर यही है कि जो जिस के बिना नहीं रह सकता वही उसका 'आत्मा' है।

जिस प्रकार बिना आधार के किसी वस्तु की विद्यमानता नहीं हो सकती, उसी प्रकार बिना गति के ताप की भी तीव्रता नहीं हो सकती। ताप का परमाणु अपने अन्दर टूटता भी है, परन्तु 'प्रेरक' न तो कोई परमाणु है न वह किसी का कार्य है और न वह टूटता ही है, वह तो ताप आदि तत्त्वों का निमित्त कारण है। और वह निमित्त कारण "हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत सदाधार पृथिवी द्यामुतेमा कस्मैदेवाय हविषा विधेम ॥२॥ यजु० अ० १३ म० ४॥

अर्थात्—जो (हिरण्यगर्भः) स्वप्रकाश स्वरूप, और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतन स्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्तत) वर्त्तमान था, (सः) वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्याम्) सूर्यादि का (दाधार) धारण कर रहा है, हमलोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिये (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) भक्ति विशेष किया करें ॥२॥

★

# काव्य कानन

## कैसे ? आती नींद

[ गीत ]

कैसे ? आती नींद देश पर सकट बढते आते !
चारो ओर शत्रु मडराये, लेकर साज विशेले ।
इधर देश मे शोषक बढ़ते कृतघ्न कृमि किबेले !!
भ्रष्टाचार व्यभिचार बढे हैं, रिश्वत का अति रसिया ।
एक ओर पोगों के पिट्ठू, धूर्त धर्म ले धसिया ॥
अनृत अनीति की बाढ़ बढ़ी हैं, प्रलय दृश्य दरशाते ।
कैसे आती नींद देश पर सकट बढ़ते आते ॥

बढ़ी विलासता जन-जन अन्दर, विषय भाव उमडाते !
लाइलौन की साडी महिला, पहन शैर को जाते !!
सन्ध्या हवन भूल अपने निज कर्तव्य बिसराये ।
आर्य सभ्यता गौरव भूले, महर्षि ने बतलाये !!
कुए भङ्ग अब पडी एक सी, प्रमाविक मदमाते ।
कैसे ? आती नींद देश पर सकट बढ़ते आते !!

दीन भूख से होय दीवाने, नभ की ओर निहारे !
उनके बच्चे रहें चिल्लाते, जीवन दुखित विचारे !!
धनपति धन मे चूर हुए हैं, धन उपयोग न लाते ।
देश, दीनों की सेवा भूले, रास-रति-सङ्ग माते ।
श्रमी दुखी, सुखी हैं शोषक, फिर भी बढ़ते पाते ।
कैसे आती नींद देश पर-सकट बढ़ते आते ॥

निष्प्रिय प्राण हुए मानव के, भव्य भाव बिन ऐसे !
धर्म निरपेक्षिक शासन चाहे, मन्द भाव लो वैसे ॥
स्वार्थवश सब नीति रीति गत, ढोल पीटते जाते ।
फिर भी सोते रहे अचेतन, निर्भय नींद घुराते !!
ये दानव के लक्ष सभी हैं, मानव लक्ष मिटाते ।
कैसे ? आती नींद देश पर सकट बढ़ते आते ॥

क्षुध्यातुर हो मरे अन्न बिन, मानुष, आज हजारों !
घास-नीर बिन पशु आदि सब, गो गल चले कटारों !!
क्या ? भारत ये भव्य देवो का, सही आप क्या ? मानें ।
रह गये हैं कहने मात्रिक, गुण-गौरव क्या जानें ॥
समस्या जटिल 'धनसार' आगामी, देख जीव घबराते ।
कैसे ? आती नींद देश पर सकट बढ़ते आते ॥

—कस्तूरचन्द "धनसार" अध्यक्ष आर्यसमाज, पीपाड़ शहर

## अपनी यह भूमि स्वर्ग से महान् है

साहस बटोर कर,
विचारो को जोड कर,
सुख से मुख मोड़कर गति दो सतानो को,
अपने वीरो को ।
जिनके पूर्वजो ने सत्य ज्ञान अपनाया था,
देश को जगाया था ।
वेद को गाया था,
भारत की गरिमा को उन्नत रखने को ।
और इतना ही नहीं,
वैदिक नाद बजाया था,
सत्य ज्ञान फैलाया था ।
पाखडी घबराया था करके परास्त पाखडियो को,
इस पुण्य धरती पर, 'सत्यार्थप्रकाश' फैलाया था ।
अपने उसी पौरुष की सचित पूजी से,
उठकर इस धरती से कर दो विनाश,
अध विश्वास की चाल को,
जिससे सत्य मार्ग मिले,
जन जीवन को ।
जीवन महान है,
जग के पथ प्रदर्शन हेतु,
करता जो दान है,
अस्तु मद छोड़कर,
कुछ काम कर,
भारत भूमि पर कर दो बलिदान प्राण,
अपनी यह भूमि स्वर्ग से महान है ।

—विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

## रानी पद्मिनी

सुनो सुनो भारत की नारी अपनी आज कहानी
हमको इतना गौरव देने कितनो ने की कुर्बानी
देख अलाउद्दीन पद्मिनी का चेहरा दर्पण में
लगा चाहने पा लेने को वह अपने मन ही मन में
रत्नसिंह को करके बन्दी उसने यह कहलाया
उतार लूगा मैं सिर इसका जो न रानी को पाया
भरी पालकी राजपूतो की पहुची युद्ध-निशानी
हार अलाउद्दीन गया पर बढी अजब हैरानी
युद्ध-घोर छिड गया रत्नसिंह हुए विदा प्राणों से
युद्ध भूमि का कोना-कोना पटा यवन की लाशो से
इधर दुर्ग मे सती पद्मिनी ने जौहर धधकाया
उठी चिता की लपट गगन तक सूरज भी शर्माया
धन्य-धन्य चित्तौड बन गया धन्य रतन की रानी
मिला राख का ढेर शत्रु को अमर सिन्दूर निशानी
देखो अब कितना परिवर्तन तुमने है कर डाला
सतियो की पोयी माला को क्षण भर मे बिखरा डाला
फिरतीं गली गली तितली बन अपने बाल बिखारे
रेशम की झीनी चुनरी मे अपना बदन उघारे
बहुत नग्न बनकर हे माता ! बनो न इतना अभिमानी
तुमने अपने हाथों बेंची अपनी लाज पुरानी
जब माता ही डरे पतन से वीर शिवाजी क्यों जन्मे
सीता ही जब रही न जग मे लवकुश बालक हैं सपने
देख रहा संसार दुखी हो मिटता वह गौरव सारा
तुझे चुनौती सुना रहा है रे नारी! ध्रुव का तारा—
जाग-जाग अब घिरी देश पर विपदाओ की अधियारी
बुला रही है रण की भेरी कर लडने की तैयारी ।

—माधुरी "बिन्दु"

## चुने हुए अनमोल मोती

१—जो घटे भी और बढे भी वह चाद है। जो बढती ही जाय वह तृष्णा है। जो न तो घटे और न बढ़े वह किस्मत है और जो घटती ही रहे वह उम्र है।

२—पुराना ईंधन जलाने को, पुराना चावल खाने को, पुराना मित्र विश्वास करने को, और पुराना ग्रथ पढने को लाभदायक एव उपादेय है।

३—मत रख आशा किसी से परन्तु अपने प्रभु से, मत डर किसी से परन्तु अपने पापो से।

४—नशा से बचो क्योंकि यह मनुष्य को पागल बना देता है।

५—मत पी तू विषयों का प्याला, तेरा जीवन है अनमोल रे मानव

६—ससार का उपकार करना अपना मुख्य उद्देश्य बनाओ।

७—दौलत से दवा खरीद सकते हो, तन्दुरुस्ती नहीं।

८—दौलत नर्म बिस्तर दे सकती है, नींद नहीं।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—इन दो बातो को सदा याद रखो—ईश्वर और मौत को।

११—भूल जाओ अपनी नेकी और दूसरो की बदी को।

१२—औरत का दिल वसन्त बहार का नमूना है जिसमे कभी हेमन्त नहीं आता।

१३—किसी का दिल दुखाना महा पाप है।

१४—तन्दुरुस्ती हजार नियामत है।

१५—दुनिया मुसाफिर खाना है यहाँ दिल लगाना मूर्खता है।

१६—गुरु (आचार्य) के पास ब्रह्मचर्य और त्याग के दो अक्षय कोष होते हैं।

१७—अगर चीनी और रेत मिलाकर चीटी के सामने रख दें तो वह चीनी खा लेगी लेकिन रेत नहीं। इसी तरह हस दूध पी लेगा और पानी को पडा रहने देगा। ठीक इसी तरह बुद्धिमान लोग दूसरो के सद्गुणो को तो ले लेते है लेकिन दुर्गुणों को त्याग देते हैं।

१८—स्त्री उस वक्त तक स्त्री है जब तक उसका सतीत्व रूप आभूषण उसके पास सुरक्षित है।

१९—जवानी की भूलें व बदपरहेजियाँ बुढापे मे दुःख देती हैं।

२०—सबसे पवित्र प्रेम वह है जो प्रकट न किया जाय।

२१—अगर तुम किसी का भला न कर सको तो बुरा भी न करो।

२२—कर्जदार कभी सुखी नही रह सकता।

२३—कायर छिपकर और बहादुर सामने आकर वार करता है।

२४—ईश्वर की उपासना मनुष्य का परम धर्म है।

२५—साधु वह नहीं जो घर छोड, संसार को त्याग, दूसरो की कमाई पर जीता है और अकर्मण्य एव आलसी बना रहता है।

२६—आदमी ठगाकर ही ठाकुर बनता है।

२७—बदमाशो का आखिरी पनाहगाह सयासत है।

२८—झूम-झूम धरती इठलाती आज मगन हो गाये रे।

नव वसन्त के पाहुन देखो आज धरा पर आये रे॥

२९—माता पीसनहारी बेटी को पाल सकती है। पर बाप राजा बेटी को नहीं पाल सकता।

३०—स्त्री समझने के लिये नहीं विवाह के लिए बनी है।

३१—लीडर को गम बहुत है मगर आराम के साथ।

३२—छोड़ दो सुनना-सुनाना अब तराना फिल्म के।
आगया है काम करने के जमाना इल्म के॥

३३—माया मरे न मन मरे, मर मर जात शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे कह गये दास कबीर॥

३४—सूरज के पास पहुच जाऊ इच्छा है नीच पतंगे की।

३५—न कड़ुवा बन कि जो चक्खे सो थूके।
न हलुवा बन कि चट कर जाय भूखे।

३६—सार सार की गहि रहे, थोथा देहि उडाय।

—गिरधारीलाल आर्य चौरीचौरा

# उद्बोधन

आर्य कुमारो उठो, ओमध्वज कर मे ले लो,
मानवता का पाठ विश्व को तुम्हें पढाना होगा।

दानवता घन घोर, अविद्या अन्धकार बढता जाता है,
पनप रही है प्रकृति राक्षसी, प्राणी-प्राणी को खाता है।
अरे जा रही लाज, तुम्हारे आर्यत्व की उठो बचालो,
अभी समय है, नहीं तुम्हे आगे पछताना होगा।

आर्यकुमारो उठो ओम ध्वज कर में ले लो।
मानवता का पाठ विश्व को तुम्हें पढ़ाना होगा॥

आज स्वारथी जग स्वारथ में अपना स्वारथ सिद्ध कर रहा,
और झूठ हिंसा के बल ही, पापी अपना पेट भर रहा।
तुम आलस की चादर ताने, पडे सो रहे, आखें खोलो,
चलो ऋषि सदेश, दानवता दम्भ, मिटाना होगा।

आर्यकुमारो उठो, ओम ध्वज कर मे ले लो,

आज सिसकती मानवता का दानवता उपहास उडाये,
धर्म छोड़, माया के वश हो, भाई-भाई से टकराये।
पुत्र पिता की सीख न माने, कहे पिताजी सठियाने हैं,
द्वेष भाव बढ़ रहा परस्पर, फिर उर प्रेम जगाना होगा।

आर्य कुमारो उठो, ओम ध्वज कर मे ले लो,

आज देश मे द्वेष, ईर्ष्या, जन-जन मे बसी हुई है,
नकल उतारे श्वेतांगो की, भारतीय सभ्यता फसी हुई है।
तुम आँखें मूंदे बैठे, कर्त्तव्य भूलकर अब तो चेतो,
मानव हो तो मानव का, कर्त्तव्य निभाना होगा।

आर्य कुमारो उठो, ओम ध्वज कर मे ले लो,
मानवता का पाठ विश्व को तुम्हे पढाना होगा॥

—राजकुमार सक्सेना "राज", शाहजहाँपुर

# आर्यसमाज का उद्देश्य

✱श्री प० जगत्कुमार शास्त्री
'साधु सोमतीर्थ' देहली

१—सन् १८५७ ई० के भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम मे भारत वीरों को पराजय का सामना करना पड़ा। इसका मुख्य कारण था सुदृढ़ सगठन-सूत्र का अभाव। विदेशी गोराशाही के सिर पर बदले का नीच भूत सवार हो गया। सम्पूर्ण भारत मे अग्रेजो का दमन-चक्र जोर से चलने लगा। भारत के घर-घर में हा-हाकार गूज उठा दीर्घकालीन - दासता, अशिक्षा, और सामाजिक कुरीतियो के कारण जनता की अवस्था तो पहिले ही बहुत बुरी थी। अब स्थिति और भी अधिक शोचनीय हो गई। आशा, आश्वासन, नेता और नीति का मानो सर्वथा ही अभाव हो चुका था। जनता मे हीन भावना की मात्रा बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। ईसाइयत और अग्रेजियत का आये दिन बोलबाला होता चला आ रहा था।

२—तब, दया के सागर और आनन्द के भण्डार एक कर्मयोगी सन्यासी ने भारत मे वैदिक ज्योति जगाई। निराशा के घनीभूत मेघ-मण्डलो को उस महात्मा ने छिन्न-भिन्न कर डाला। जीवन, ज्योति और जागृति का उपदेश देकर उस ने भारतवासियो को पुनरपि नव-जीवन से परिपूर्ण कर दिया। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और बौद्धिक सभी क्षेत्रो मे उसने भारी क्रान्ति प्रस्तुत कर दी। आर्य सन्तान का बौद्धिक सम्पर्क अपने उज्ज्वल और गौरव-पूर्ण अतीत के साथ पुनरपि सुस्वस्थ रूप मे सस्थापित हो गया। उस महान् सन्यासी द्वारा प्रसारित आशावाद से उत्साहित होकर भारत के शुभ चिन्तको ने आर्य समाज की स्थापना करके शक्ति-सचय और कार्य सिद्धि का उद्योग फिर से आरम्भ कर दिया।

३—उस महान् सन्यासी का नाम क्या था ? ससार उसे महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप मे जानता है। आधुनिक भारत का सचेतक और सर्वोपरि निर्माता वही था। ईसाइयत, अग्रेजियत और इस्लामियत के विदेशी एव अधार्मिक प्रभाव को हटाकर फिर से शुद्ध स्वदेशी सस्कृति और सत्य सनातन धर्म को सुप्रतिष्ठित एव सुरक्षित करने वाला भी वही था। वह एक परोपकारी महात्मा था। बालब्रह्मचारी था, वेदज्ञ योगी था, सच्चा ईश्वर भक्त था और पाखण्डवादों को जड से उखाडने वाला एक प्रबल तार्किक था।

ऋषि वेद वाले ! प्यारे हमारे।
न अहसान भूलेंगे हरगिज तुम्हारे।

४—महर्षि दयानन्द सरस्वती विशालकाय, हृष्ट - पुष्ट शरीर, गौरवर्ण, ओजस्वी मुख मण्डल के कर्मयोगी, दृढ़व्रती, प्रत्युत्पन्न मति, महा विद्वान्, परोपकारी, सुवक्ता, सुलेखक और सुविचारक आदर्श सन्यासी थे। सचमुच वे एक धर्म मेघ थे, जो कि अविद्या, अन्धकार, राग द्वेष और लोलुपता की धूल उड़ाती हुई भारत-भूमि और अन्धविश्वासो के दावानल मे झुलसती जा रही अखिल मानवता के परित्राण के लिये विद्युत-वेग से उठे। सम्पूर्ण देश मे उपदेश-यात्रा करते हुए गरज-गरज कर बरसे। उन्होने दुखियों को आश्वासन प्रदान किया भूले-भटकों को राह दिखलाई। पाखडियो का सामना किया, सच्चाई को प्रखर रूप मे प्रकट करके मनुष्यमात्र का महान् उपकार किया। हमारा दयानन्द सभी का था।

[यदि कोई सज्जन इस लेख को आंशिक वा अविकल रूप मे उद्धृत करना, अथवा लघु पुस्तक रूप मे प्रकाशित करना चाहे, तो उन्हे पूर्ण स्वीकृति है। —लेखक ]

५—चौदह वर्ष की कोमल आयु मे उस महात्मा ने सच्चे शिव के दर्शन प्राप्त करने का व्रत ग्रहण किया। उन्नीस वर्ष की आयु मे मृत्यु पर विजय पाने का निश्चय किया। बाईस वर्ष के थे, जब इष्ट मित्र, बन्धु-बान्धव और कुटुम्ब परिवार का मोह विसारकर वे कल्याण मार्ग के पथिक बने। अड़तीस वर्ष के थे जब विद्या की भिक्षा मांगने के लिये वे गुरुवर, दण्डी स्वामी श्री विरजानन्द जी के द्वार पर कुण्डी खटखटाने लगे। चियालीस वर्ष के थे, जब श्री गुरु विरजानन्द जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करके वे कार्य क्षेत्र मे कूदे। उनसठ वर्ष के थे, जब उन्होने एक पापात्मा के हाथो विष-पान के पश्चात् सवत् १९४० वि० मे अपने पचभौतिक शरीर को छोड़ा।

६—इतने थोडे समय मे और अत्यन्त व्यस्त एव सघर्षमय जीवन में उन्होंने सैकडों शास्त्रार्थ किये, हजारों व्याख्यान दिये, हजारो पृष्ठो के क्रान्तिकारी और निर्दोष साहित्य का निर्माण किया, आज से सौ वर्ष पहिले, जब यात्रा की आज-कल जैसी सुखद व्यवस्थायें न थीं, तब हजारो मीलो की कष्ट साध्य यात्रायें कीं और देश के कोने-कोने मे पहुंचकर अपने उपदेशामृत से जनता को तृप्त एव कृतार्थ किया। जब कार्य बढ़ा और जनता की ओर से आग्रह किया गया, तब अपने प्रतिनिधि एव उत्तराधिकारी के रूप मे उन्होने अपनी दूरदर्शिता एव कुशल नीतिमत्ता से काम लेकर प्रजातन्त्र वाद के आधार पर अत्यन्त शक्तिशाली आर्यसमाज की स्थापना की। ये सब कार्य उस एक ही महापुरुष ने आज से एक सौ वर्ष पूर्व सम्पादित किये थे। यह चमत्कार ही तो था उसका।

७—महर्षि दयानन्द का जन्म पौष सवत् १८८१ विक्रमी मे काठियावाड़ प्रदेशान्तर्गत मौरवी-राज्य के टकारा नामक एक [illegible] से गाव मे हुआ था। उनका बा[illegible] काल का नाम मूलशकर और उ[illegible] के पूज्य पिता जी का नाम कर्ष[न] जी तिवारी था। श्री कर्षन [जी] समावेदी औदीच्य ब्राह्मण और [illegible] भूमिपति एव साहूकार थे। लेन देन का काम भी करते थे, राज्[य] की ओर से शासनिक अधिकार भी रखते थे।

८—होश सम्भालते ही जं[ो] दृश्य श्री दयानन्द जी ने देखे वह अत्यन्त भयानक थे। उन्होंने आर्यत्व को जजीरो मे बधा हुआ, दीवारो मे घिरा हुआ, छतों के नीचे दबा हुआ, और आत्मविस्मृति की दयनीय दशा मे देखा। मानवता का गला तो तब सर्वत्र ही घोटा जा रहा था। आर्यत्व को नष्ट करने की परिस्थितिया विशेषत निर्मित हो चुकी थीं। विधवाओ, अनाथो, अछूतो और गरीबों का करुण-क्रन्दन समस्त देश मे व्याप्त हो रहा था। अत्यन्त करुण दृश्य जहा तहा दिखाई दे रहे थे।

९—महर्षि दयानन्द ने एक कुशल नीतिज्ञ और निपुण चिकित्सक के समान ही परिस्थितियों को जाचा, समझा। अपने ओजस्वी व्यक्तित्व और गम्भीर अध्ययन, सम्पूर्ण वाग्वैभव और अपूर्व सगठन बल द्वारा वे भारत की गतश्री को लौटाने, एहिक और पारलौकिक उन्नति के आधारभूत वैदिक धर्म को ईश्वर की एक महान् देन के रूप में जात-पात और नीच-ऊँच, रग नस्ल, प्रान्त और प्रदेश आदि-आदि के किसी भेदभाव के बिना ही मनुष्य मात्र तक पहुचाने, अखिल विश्व को एक ही विशाल परिवार के रूप मे परिणत करने के लिये वे मनसा, वाचा, कर्मणा अपने महानतम अनुष्ठान मे जुट गये।

( क्रमशः )

( पृष्ठ ६ का शेष)

२–सिद्धान्तानभिज्ञता (अपने सिद्धान्तो का पूर्ण ज्ञान न होना केवल मोटी-मोटी बातें ही जानता हो ।

३–समयाभावता (अन्यत्र भी जिन्हे लीडरी करनी है । वह कहां की सोचेगा कि हर समय आर्यसमाज का भविष्य सोचेगा ।

४–अव्यक्तित्व (शक्तिशाली होने से मुंह पर कोई कुछ न कहे पर उसके जीवन छिद्रों को जनता जानती हो ।

## प्राचीन आर्यसमाज के नेता

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज जो आर्य समाज के नेता थे, वे केवल आर्य समाज का ही कार्य २४ घण्टे करते थे । सिद्धांतो के पूर्ण ज्ञाता थे । आर्य समाज के अतिरिक्त कोई और काम उन्होंने अपने हाथो मे नहीं लिया, और उनकी धाक आर्य जगत् से बाहर तक थी । वे आर्य समाज के नेता थे ।

## वर्त्तमान आर्यसमाज के नेता

आज आर्यसमाज का नेतृत्व करने वाले कोई कांग्रेस मे प्रतिष्ठा प्राप्त हैं तो कोई जनसघ मे लब्धप्रतिष्ठ हैं । आजकल किसी भी सभा का प्रधान वह व्यक्ति हो सकता है जो कांग्रेस मे या जनसघ मे या गवर्न्मेंट मे कुछ न कुछ शक्ति रखताहो तब उसकी आर्य समाज मे पूजा होगी । यदि मैं किसी असेम्बली का स्पीकर हू किसी सरकार मे मन्त्री हू या कम से कम मै एम एल ए, एम एल. सी या एम पी. हू । तब मुझे आर्य समाज की लीडरी दी जावेगी और यदि मै २४ घण्टे आर्यसमाज का काम करूं कितना ही बड़ा विद्वान् और सस्कृत का वेद का पण्डित हू, तब मेरी प्रतिठा आर्य समाज मे नहीं के बराबर ही रहेगी । अत इस मनोवृत्ति के रहते आर्य समाज अपने उद्देश्यो की पूर्ति मेंत्रिकाल मे भी नही लग सकता है । इसका उद्धार भगवान् ही करेगा ।

## अब भी समझ में आई कि ना

हमारे एक पुराने भजनोपदेशक, ने एक भजन बनाया था, जिस के अन्त मे उपर्युक्त वाक्य वे बोला करते थे । पौराणिकों को सम्बोधन करके । मैं अब आर्य भाइयों के आगे करबद्ध प्रार्थना करता हूं कि आर्यसमाज की दशा पर दया करो और आर्यसमाज का नेतृत्व बदलो । क्या तुम्हे यह दीखता नहीं कि सभाओ में प्रस्ताव पास होते रहते हैं, और होता कुछ नहीं । हो कैसे जब कि सचालकों के पास समय नहीं, वे पचास जगह लीडरी में फंसे हैं, तो वे यहां कर भी कैसे सकते हैं । क्या इतनी मोटी बात भी आर्य भाइयो के समझ में नहीं आ सकती । और जो व्यक्ति इस विषय का ज्ञाता नहीं उसका संचालन वह कैसे कर सकता है यह तो जरा सोचो । वकीलों की ऐसोशियेशन का प्रधान डाक्टर को बनादो और डाक्टरो की ऐसोशियेशन का प्रधान वकील को बना दो तो क्या वह अपना शिर फोडेगा ।

अत. आर्य समाज का नेतृत्व उस के हाथ मे दो जो–

१–सिवा आर्य समाज के कोई और काम करता ही न हो २४ घण्टे सभा मे रह कर सारा जीवन वहीं बिता दे ।

२–बहुधन्धी आदमी की विद्या हो तो वह भी लीडरी मे नष्ट हो जाती है । अतः पूर्ण विद्वान् और केवल आर्य समाज का काम करने वाला व्यक्ति जो अन्यत्र कहीं न हो और हो तो सब जगह से त्याग-पत्र दे दे उसको नेता चुनों तभी कुशल है । ●

# विज्ञान वार्त्ता

## प्रकाश की किरणों से टेलीफोन

मास्को, टेलीफोन सचार के लिये शीघ्र ही एक प्रायोगिक लेसर लाइन चालू की जायेगी । लेसर प्रकाश की किरणों के माध्यम से टेलीफोन किये जाने का पहला प्रयोग चार साल पहले सफलतापूर्वक मास्को मे किया गया ।

प्रकाश किरणो के माध्यम से किये जाने वाले टेलीफोन ऐसे ऊंचे भवनों पर लगाये गये हैं जिनके बीच मे कोई व्यवधान नहीं होता है और जो दृष्टि रेखा की सीधी सीमा में हो । इस नये प्रकार से व्यस्त घटों मे टेलीफोन एक्सचेंजो को राहत दी जा सकेगी ।

बाह्य अन्तरिक्ष मे एक यान से दूसरे यान मे स्पष्ट बातचीत करने के लिए भी यह लेसर प्रकाश किरण टेलीफोन व्यवस्था बहुत ही उपयोगी है । सोवियत सघ मे लेसर किरणो के माध्यम से सगीत, रगीन तथा काले सफेद टेलीविजन प्रसारण करने के प्रयोग भी किये जा रहे हैं ।

लेसर सूर्य की किरणो से अरबो गुना अधिक प्रकाश उत्पन्न कर सकता है लेकिन कभी-कभी यह आसानी से उपलब्ध नहीं होता है । पाले, कोहरे, बर्फ, हिमपात तथा धुन्ध मे प्रकाश या तो जज्ब हो जाता है या बिखर जाता है । इस समय सोवियत वैज्ञानिक हर मौसम मे काम करने वाली प्रकाश किरणों की खोज कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त सोवियत वैज्ञानिक प्रकाश किरणो के बीच मे व्यवधान के बाद भी प्रकाश सचार को बनाये रखने की भी खोज कर रहे हैं ।

## तैरता ट्रैक्टर

मास्को, रूसी सघ के ओन्गा ट्रैक्टर कारखाने ने पी टी १० ट्रैक्टर विकसित किया है । यह ट्रैक्टर नदियो मे शहतीर बहाने के काम को सुचारुरूप से करने के लिये अत्यधिक उपयोगी है । यह ट्रैक्टर १० विभिन्न प्रकार के काम कर सकता है । इस ट्रैक्टर से बर्फ तोडी जा सकती है, लट्ठो को पानी मे धकेला जा सकता है और उन इलाको मे जहा पानी धीरे-धीरे बहता है शहतीर को तेजी से धकेला जा सकता है । इस ट्रैक्टर के प्रयोग बहुत सफल रहे हैं ।

## लोकतन्त्र को भारी खतरा

[पृष्ठ ५ का शेष]

बात साफ हो जाती ।

### गौरव की रक्षा

अब समय आ गया है जब राष्ट्रपति महोदय को अपने इन प्रतिनिधियो के प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए । आज यदि बगाल मे कुछ विरोधियों के कहने से राज्यपाल को वापस बुलाते हैं तो कल दूसरे राज्यो मे भी ऐसी ही माग प्रारम्भ हो जायगी । कुछ दिन पहले बिहार मे श्री कानूनगो की नियुक्ति पर भी ऐसी ही गुत्थी उलझी थी । प्रान्तीय सरकारो के कहने पर राज्यपालों को वापस बुलाने से उस पद की प्रतिष्ठा गिरेगी । उससे तो कहीं अधिक अच्छा है यह पद ही समाप्त कर दिये जाय । अन्यथा जब तक यह पद हैं तब तक उनके गौरव की रक्षा करना हर दृष्टि से आवश्यक है ।

### संविधान का आदर

केन्द्रीय नेता पीछे भी कुछ ऐसी ही भूल कर चुके हैं । प्रधान मन्त्री के निर्वाचन के समय राज्यों के मुख्य मन्त्रियो को दिल्ली मे कांग्रेस पार्टी के ससद सदस्यों को प्रभावित करने के लिये बुला लिया गया । राज्यपालो की नियुक्ति और उनके हटाने न हटाने का प्रश्न जहां राष्ट्रपति के अपने अधिकार मे है वहा प्रधान मन्त्री के निर्वाचन मे भी ससद-सदस्यो पर किसी बाहरी प्रभाव का उपयोग कैसे स्वस्थ्य परम्परा मानी जा सकती है । जन तन्त्र के रक्षक ही यदि सविधान की मान्यताओ की अवहेलना करेंगे तो फिर किसे दोष देंगे । एक-एक करके यदि इसी तरह सवैधानिक धाराओ की धज्जियां उडने लगीं तो जनतन्त्रकहां टिकेगा ?

★

## वार्षिकोत्सव आर्यसमाज न्यावली (मुरादाबाद)

यह गाँव आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक स्वर्गीय श्री मास्टर धर्मसिंह जी की जन्मभूमि है। उनके पुत्र श्री विश्वनाथ जी त्यागी बी. ए एल एल बी आर्य समाज के दीवाने हैं। अपने विचारो के निराले हैं आप हिन्दी और अग्रेजी के उत्तम वक्ता हैं। छोटे पुत्र श्री रामचन्द्र जी शर्मा सगीत भूषण पहले सभा मे प्रचारक थे अब खेती करा रहे हैं। ग्रामो की जनता मे ऋषि की विचारधारा फैलाने के लिये गतवर्ष से इन्होने अपने गांव मे उत्सव प्रारम्भ किये हैं। उत्सव क्या मेला होता है। सहस्रो की सख्या मे ग्रामवासी आते हैं। यह ग्राम त्यागी ब्राह्मणो का है। सब धन सम्पन्न है। श्री रोशनसिंह जी तो अच्छे उद्योगपति हैं। उत्सव मे इनका अच्छा सहयोग रहता है। श्री विश्वनाथ जी का इस क्षेत्र मे अच्छा प्रभाव है।

उत्सव मे श्री कुँवर सुखलाल जी, श्री प० रुद्रदत्त जी, श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री, और मै भी था। श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री प्रकाशवीर त्यागी श्री शिवनाथ जी त्यागी, श्री रामचन्द्र शर्मा, श्री ब्रजपालसिंह शर्मा के गायन हुए। जिला मद्य-निषेध विभाग के आर्गनाइजर श्री जिलेसिह जी ने मद्य-निषेध का सिनेमा दिखाया और श्री सुरेन्द्र जी शुक्ल आधुनिक भीम ने जजीर तोड़ना, मोटर रोकना आदि खेल दिखाये। आर्य समाज भी स्थापित हो गया। अध्यक्षता उत्सव की करते रहे श्री प० शिवशर्मा जी शास्त्रार्थ महारथी के सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्र जी। ऐसे उत्सव प्रत्येक जनपद मे होते रहे तो आर्यसमाज की धूम मच जाये।

—बिहारीलाल शास्त्री

—आ०स०दयानन्द नगर अछोरा (फैजाबाद) का उत्सव दिनाक ३१ मार्च १, २ अप्रैल १९६९ ई० को होना निश्चित हुआ है। —मन्त्री

## आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का २१वाँ वार्षिक महोत्सव

२९, ३०, ३१ मार्च १ अप्रेल १९६९ को होगा।

इस अवसर पर बाहर से श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, श्री स्वा० हरिहरानन्द जी महाराज, श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री, श्री प० रामगोपाल जी शास्त्री दिल्ली श्री प० युधिष्ठिर जी मीमासक दिल्ली, श्री प० सत्यप्रिय जी व्याकरणाचार्य, श्री प० भगवत् शरण जी शर्मा, श्री प० रमेशचन्द्र जी शास्त्री, आदि प्रसिद्ध-प्रसिद्ध महात्मा व विद्वान् पधार रहे हैं। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के भाषण, वाद-विवाद, गीता का आदि श्रवण करने का भी सुअवसर प्राप्त होगा। ब्रह्मयज्ञ, वेदयज्ञ गोमेधयज्ञादि का वैदिक स्वरूप देखने को मिलेगा। इस यज्ञतीर्थ की अनुपम यज्ञशाला एव ब्रह्मचारियो का सस्वर वेदपाठ भारत भर मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

—आचार्य ज्योति.स्वरूप शर्मा

## गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ५७ वाँ वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का आगामी वार्षिक महोत्सव ४, ५, ६, अप्रैल १९६९ को गुरुकुल भूमि मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्यसमाज के अनेक विद्वान् उपदेशक सन्यासी महात्मा तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे है। अनेक सम्मेलनो की योजना भी बनाई जा रही है। देश के नेता और प्रखर वक्ता भी भाग ले रहे हैं। धर्म प्रेमी जनता से प्रार्थना है कि उत्सव मे सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठायें! —प्रधानाचार्य

## उत्सव

आर्यसमाज शाहगज का ४३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ मार्च से २८ मार्च ६९ तक समारोह के साथ मनाया जायगा। जिसमे मुख्य रूप से श्री प० रामानन्द जी शास्त्री, श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री, श्री सत्यदेव जी शास्त्री, श्री वीरेन्द्र जी एव श्री विक्रमसिह जी आदि पधार रहे हैं।

—राधेश्याम आर्य मन्त्री

## आदर्श उपनयन संस्कार

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आर्य समाज सीसामऊ कानपुर के वरिष्ठ उपप्रधान विद्यावाचस्पति, श्री प० लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री सिद्धान्त भूषण वाचस्पति, आयुर्वेद भास्कर के कनिष्ठ पुत्र प्रिय सुधीन्द्र कुमार का उपनयन सस्कार एव वेदारम्भ सस्कार २३-२-६९ को गुरुकुल कागड़ी के उप कुलपति श्री प प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। उपनयन सस्कार श्री प० विद्याभास्कर शास्त्री देहरादून तथा वेदारम्भ सस्कार श्री प. वेदव्रत जी शास्त्री अवस्थी लखनऊ ने सम्पन्न कराया। आचार्य जी का गायत्री मन्त्रोपदेश महत्वपूर्ण था। लगभग दो हजार व्यक्तियो के विशाल समूह के समक्ष हुआ, यह सस्कार अपना विशेष महत्व रखता है। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रायः सभी विद्वानो का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी ने बालक को एक दिन पूर्व आशीर्वाद पुष्प प्रदान किया। देश के अनेक सम्भ्रान्त नेताओ ने लिखित आशीर्वाद भेजे। राष्ट्रपति महोदय का भी लिखित आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

सस्कार के उपरान्त प्रीति भोज समारोह हुआ। जिसमे लगभग ढाई हजार व्यक्तियों ने भोजन किया। पूर्व एक सप्ताह 'अथर्ववेद' पारायण यज्ञ होता रहा। २२-३ ६९ को दिन मे महिला सगीत तथा रात्रि मे कवि सम्मेलन हुआ। 'कवि सम्मेलन' श्री विद्याभास्कर जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे नगर के सभी प्रतिष्ठित कवियो ने भाग लिया।

—शान्ति वेदी विद्यालकार एम ए

## गुरुकुल महाविद्यालय का ६१ वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ६१ वा वार्षिक महोत्सव १० अप्रैल से १३ अप्रैल तक अर्थात् गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को कुल भूमि मे बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा जिसमें शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, विद्वान् कला परिषद, आर्य किशोर सभा आदि सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। दीक्षान्त समारोह के लिये केन्द्रीय शिक्षामंत्री प्रभृति महानुभाव आमन्त्रित हो गये हैं। —प्रकाशचन्द्र मन्त्री सभा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

—आर्यसमाज मऊनाथ भजन (आजमगढ) के तत्वावधान में श्राद्ध सम्बन्धी शास्त्रार्थ ग्राम नूरपुर कैथवलिया (गाजीपुर) मे श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ एवम् श्री लक्ष्मीनारायण जी प्रधानाचार्य सस्कृत पाठशाला खालिसपुर के बीच दि० २६-२-६९ को हुआ। सर्वप्रथम शास्त्री जी ने वेद मन्त्रों के आधार पर यह सिद्ध किया कि श्राद्ध जीवित पितरो का होना चाहिये मृतको का नहीं। विपक्ष के श्री लक्ष्मीनारायण जी वेद शास्त्रों से कोई भी प्रमाण प्रस्तुत करने मे असमर्थ रहे। उपस्थित जनता ने श्री शास्त्री जी के प्रमाण और तर्क को स्वीकार किया। अन्त मे श्री लक्ष्मीनारायण जी प्रीति भोज में सम्मिलित हुए जिससे जनता ने विपक्षी विद्वान् की भी इस विषय मे स्वीकृति मान ली।

—देवशरण मन्त्री

—१ मार्च को आर्य समाज पहासू के सदस्य श्री करनसिंह जी आर्य का देहावसान हो गया। आर्यसमाज ने दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की। तथा शोक सतप्त परिवार के प्रति सवेदना प्रकट की। —बाबूसिंह

–दि० १५-२-१९६९ को श्री आनन्द रामेश्वरप्रसाद हसरानी आर्य कन्या इण्टर कालेज सीतापुर में ऋषिबोधोत्सव पर्व समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। विद्यालय की शिक्षिकाओ तथा छात्राओ द्वारा सम्मिलित रूप से वृहत यज्ञ के पश्चात् पूजनीय माता हसरानी जी द्वारा ओ३म् का ध्वज फहराया गया।

इस अवसर पर पर्व के अनुकूल ही विभिन्न सास्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय की छात्राओ द्वारा प्रस्तुत किये गए।

विद्यालय की शिक्षिकाओं को धार्मिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के प्रमाण-पत्र भी इस अवसर पर वितरित किए गए।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य ने छात्राओं को आशीर्वाद दिया तथा उनकी पूज्य माता जी ने विद्यालय की छात्राओ के कार्यक्रम से प्रभावित होकर विद्यालय को पच्चीस रुपये दान मे दिये। कार्यक्रम प्रस्तुत करनेवाली छात्राओ को पूज्यनीया माताजी द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। इस समारोह मे विद्यालय की प्रबन्ध समिति के सदस्य तथा अनेक आर्य बन्धु एव आर्य बहिनें उपस्थित थी।

प्रधानाचार्या द्वारा आगन्तुक अतिथियो को धन्यवाद प्रकाशन के पश्चात् शान्तिपाठ से कार्यक्रम की समाप्ति हुई। –मा० चौधरी

—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के छात्रो, प्राध्यापको एव कर्मचारियो की यह सम्मिलित सभा हिसार के विख्यात तायल वश के सम्मानित सदस्य श्री आनन्ददेव तायल के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है, स्व० तायल महोदय जहा एक यशस्वी दानवीर थे, वहा वे राष्ट्र तथा समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओ मे से एक सम्मानित स्तम्भ थे, ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके वियोग से सतप्त मित्रो पारिवारिक जनो तथा सम्बन्धियो को धैर्य एव सहनशक्ति प्रदान करे।

## कानपुर-समाचार

इस सप्ताह बाबूपुरवा क्षेत्र कानपुर मे मुस्लिम बस्ती बेगम पुरवा से एक १८ वर्षीय हिन्दू कन्या श्यामादेवी को आर्य नेता श्री देवीदास आर्य के साहसी प्रयत्न से मोहम्मद शरीफ के क्वाटर से बरामद किया गया। यह लडकी तीन साल पहिले मुहल्ला आफीम कोठी से मोहम्मद शरीफ अपहरण करके ले गया था। तब से उसका पता नहीं लग रहा था।

## धर्मवीर लेखराम दिवस

आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर मे आर्य समाज के प्रथम शहीद धर्मवीर प० लेखराम का शहीदी दिवस धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आय प्रधान समाज ने की। वक्ताओ ने धर्मवीर लेखराम के जीवन पर बहुत महत्वपूर्ण भाषण व गीत पेश किये। श्री देवीदास आर्य ने कहा कि आर्यसमाज को आज लेखराम जैसे स्पष्ट वक्ता, निडर व मिशनरी भावना वाले नेताओ की आवश्यकता है। चूकि स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दू समाज को पतित करने के अनेक कार्य-क्रम अपनाये जा रहे हैं। सभा मे सर्व श्री शिवदयाल, मदनलाल चावला, श्रीमती तारादेवी, शीलादेवी उप्पल के भाषण व गीत हुए।

–आर्य समाज भवीसा जि० मुजफ्फरनगर का १० वां वार्षिकोत्सव ३, ४, ५ मार्च को धूम-धाम से मनाया गया।

—अतरसिह आर्य, मन्त्री

—२५ फरवरी से ३ मार्च तक जलालपुर (मेरठ) मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री रामानन्द सन्यासी के परिश्रम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा शहादरा दिल्ली के श्री पडित सुरेन्द्र शर्मा जी थे। इस यज्ञ मे आस-पास के अनेक गॉवो के व्यक्तियो ने सहयोग दिया। श्री प प्रकाशवीर शास्त्री एम पी के पधारने पर इस यज्ञ की महत्ता और भी बढ गयी। —देवदत्त त्यागी मन्त्री आ. स ग्यासपुर

—सकरावा (फर्रुखाबाद) के श्री बल्देवप्रसाद जी के पुत्र चि० राजेन्द्रकुमार का पाणिगृहण सस्कार मथुरा के स्व० केशवदेव जी की आयुष्मती पुत्री विमला के साथ १० मार्च को श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ।

—आदित्यनारायण

—आर्य स्त्री समाज फैजाबाद ने ऋषिबोध सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया। —दयावती गुप्ता

—२५ से २८ फरवरी तक आर्य समाज न्यावली (सभल) का वार्षिकोत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया। इस उत्सव मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री, पडित रुद्रदत्त जी शास्त्री, कुं० सुखलाल जी आदि पधारे थे। उत्सव मे पुरुषो और महिलाओ की अपार भीड होती थी। इस उत्सव का आस-पास के गाव मे बहुत प्रभाव पडा।

—विश्वनाथ त्यागी प्रधान

—आ० स० फ्रीलैंडगज दोहद का ३७ वा वार्षिकोत्सव ६ से ८ मार्च तक समारोह से मनाया गया।

—मन्त्री

## शुभ-विवाह

११ मार्च को आ स हरदोई के अन्तरङ्ग सदस्य श्री शम्भूदयाल जी के सुपुत्र चि० रामसेवक का शुभ विवाह सस्कार सदर बाजार लखनऊ के श्री लक्ष्मीनारायण जी की सुपुत्री आयुष्मती आशा कुमारी के साथ वैदिक रीत्यनुसार हुआ। श्री शम्भूदयालु जी ने १०) और श्री भोलानाथ जी ने ५) रु० आर्य समाज सदर को दान मे दिये।

## निर्वाचन—

–जिला आर्य उप सभा हरदोई
प्रधान-श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री
मन्त्री-श्री अनन्तराम शर्मा (किरतियापुर)
कोषा-श्री रामेश्वरदयाल जी

(शुद्धि)

–अनन्तराम शर्मा मन्त्री

—आ० स० सवायजपुर (हरदोई)
प्रधान-श्री रगीलाल जी आर्य
मन्त्री-श्री सन्तराम जी शुक्ल
कोषा.-श्री सियाराम जी प्रि भा.वि.

# देश विदेश

## नये फैशन वाली लड़कियों के विरुद्ध अभियान

लुसका—जैम्बिया की राजधानी मे घुटनो से ऊँचे साये पहननेवाली लड़कियो के विरुद्ध एक भीषण अभियान चल रहा है।

सरकारी प्रोत्साहन से युवक इन लड़कियो को सड़कों पर पकड लेते हैं उनको नगा कर देते हैं।

जब ये लडकियां पुलिस मे रिपोर्ट लिखाने जाती हैं तो उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी जाती क्योंकि पुलिस कहती है कि उनको कोई शारीरिक क्षति नहीं हुई।

## ब्रिटेन में पौने दो करोड़ व्यक्ति दंत विहीन

लदन—ब्रिटेन में लगभग एक करोड ७० लाख व्यक्ति ऐसे हैं जिनके दांत इतने खराब हैं कि उन को नकली दांत लगवाने चाहिये। किन्तु प्रतिवर्ष कुल ८ लाख ही नकली जबडे बिकते हैं।

एक सरकारी प्रवक्ता के अनुसार ब्रिटेन मे दातो की बीमारी पर प्रतिवर्ष लगभग पौने दो अरब रुपये खर्च होते हैं।

ब्रिटेन की जनसख्या ६ करोड़ से कम है।

## हत्या या दुर्घटना ?

मोलवाविया में कालाराश के पास एक मैदान मे एक शव को देखकर मिलिशिया के जाँचकर्त्ता अधिकारी येग्नेनी गूसेव के सामने यह समस्या खड़ी हुई कि क्या मृत व्यक्ति की हत्या की गई या यह एक दुर्घटना है? शव के समीप ही एक बन्दूक भी प्राप्त हुई। गूसेव ने गोली की उड़ान सम्बन्धी चार सौ से भी अधिक विश्लेषण किये और अन्त मे यह सिद्ध कर दिया कि यह एक दुर्घटना है और दुर्घटना का कारण मटर का एक दाना था। हुआ यू कि मटर का दाना बन्दूक की नली मे घुस गया और नमी की वजह से वह दाना फूल गया। जब बन्दूक चलाई गई तो मटर का दाना चपटा हो गया और बोल्ट मे खराबी पैदा हो गयी। गोली आगे से निकलने के बजाय पीछे से निकली और बन्दूक चलाने वाले की मृत्यु हो गई।

## आर्य कार्यकर्त्ता पर तेजाब फैंक दिया

टकारा मे होलिकोत्सव पर दुर्घटना

टकारा (डाक से) महर्षि महालय टकारा मे होलिकोत्सव बडे समारोह से मनाया गया। प्रात.काल विधिपूर्वक यज्ञ, विशिष्ट मन्त्रो की आहुति तथा कीर्तन आदि का कार्यक्रम हुआ।

प्रवचन मे श्री वेदव्रत शर्मा, हरिश्चन्द्र, श्री वेदभिक्षु तथा श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री सत्यव्रत जी शास्त्री उपाचार्य तथा आचार्य सत्यदेव विद्यालकार ने इस पर्व के वैदिक रूप को स्पष्ट करते हुए वर्तमान् रूप मे सशोधन पर बल दिया।

उत्सव के आनन्द को एक खेद जनक घटना ने उदासी मे बदल दिया। यज्ञ की समाप्ति पर जब उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा श्री विनोद शर्मा महालय के अकाउन्टेण्ट के सुपुत्र श्री सत्यदेव जी विद्यालकार द्वार के समीप सगीत मे मग्न थे। एक दुष्ट व्यक्ति ने न जाने किन व्यक्तियो की प्रेरणा से श्री विनोद शर्मा के सिर पर तेजाब से भरी हुई बोतल उडेल दी जिससे सिर, मुख तथा सब अगो पर एक दम जलन प्रारम्भ हो गई। काले निशान पड गये तथा घाव हो गये।

तत्काल डाक्टरों को बुलाकर उपचार प्रारम्भ किया गया। पुलिस मे इस दुर्घटना की रिपोर्ट भी की गई।

## अश्लील साहित्य का प्रकाशन बढ़ा

नई दिल्ली, ७ मार्च—आज लोक सभा मे श्री प्रकाशवीर शास्त्री के प्रश्न का उत्तर देते हुये गृह विभाग के राज्य मन्त्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने स्वीकार किया कि देश के कई भागो मे अश्लील साहित्य का प्रकाशन बढ़ गया है। राज्य सरकारो से कहा गया है कि वह ऐसे साहित्य के प्रकाशन विक्रय और वितरण के विरुद्ध कानूनी कार्यवाई करें।
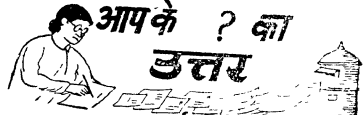
सम्मान योग्य महोदय श्री मन्त्री जी, सादर नमस्ते।

आपके द्वारा लिखे हुए वेद-मन्त्र, आर्यमित्र में पढ़कर उनके भावार्थ अति उत्तम सरल रूप से देखते हुए, हर्ष वा ज्ञान प्राप्त होता है, इसी विद्वत्ता के कारण, हम आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं, आशा है वैदिक ज्ञानानुसार ही उत्तर देने की कृपा करेगे।

१—कहा जाता है कि तीन वेद विदेशी ले गये तो यह कौन से चारों वेद हैं जो कि देखने-सुनने पढने मे आते हैं।

२—जिस गृह मे बच्चा हो या मृत्यु हो जाये तो उस गृह मे गृह स्वामी या अन्य सदस्य दैनिक यज्ञ करने वाले, कितने दिन यज्ञ नहीं करें वा दैनिक बलिवैश्वदेव आहुति भी देनी चाहिये या नहीं। गायत्री यज्ञ करते हुए, गायत्री मन्त्र पढ़कर प्रचोदयात् ओ३म् स्वाहा या प्रचोदयात् स्वाहा कहना चाहिये। इन बातो का प्रश्नोत्तर द्वारा लिखकर भेजने की कृपा करे। और आर्यमित्र मे कुछ गीता के श्लोको की, एव अध्यात्म ज्ञान सक्षेप मे लिखने की भी कृपा करे। यदि आज्ञा देवें तो हम भी कुछ लेख, अध्यात्म ज्ञान के उपलक्ष मे लिखकर भेजने का प्रयत्न करें।

पता—मन्त्रिणी सावित्रीदेवी, यू०पी० ग्लास वर्कस्, बहजोई

१—तीन वेद विदेशी ले गये और ये कौन से चारो वेद हैं ?

इसका उत्तर है कि तीन और चार का पचडा तो यह पहली बार सुनने को मिला, वेद विदेशी ले गये और वेद विदेशो से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मगा लिये। ये चारो वेद विदेशो से मगाये हुए हैं। वेद पुस्तक रूप मे विदेशी ले गये थे परन्तु दाक्षिणात्य पण्डितो को कण्ठस्थ थे अत पुन उनका कण्ठस्थ मन्त्रो मे मिलान कर लिया गया है और वेदो की सत्यता कि वही 'वेद हैं' निश्चित हो चुकी है।

२—"नैत्यिके नास्त्यनध्याये" नित्य कर्म मे अनध्याय नहीं होता। आप किसी भी अवसर पर सुकर्म करते रहे कोई दोष नहीं, न करने पर दोष अवश्य होता है। बच्चा हो उस समय जात-कर्म सस्कार मे यज्ञ। जब मृत्यु हो तो श्मशान मे अन्त्येष्टि सस्कार मे यज्ञ और लौटने पर गृह शुद्धि निमित्त यज्ञ। अत यज्ञ दोनो अवसरो पर करणीय और वैध है। भोजन बनाया जावे, खाया जावे, तो बलिवैश्व देव भी किया जावे, एक बार को न खाया जावे, यह तो हो सकता है, पर खिलाया न जावे, यह सम्भव नहीं।

३—गायत्री मन्त्र के अन्त मे ओ३म् लगाने की आवश्यकता नहीं। क्योकि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी यज्ञ मे सामान्य प्रकरणस्थ मन्त्रो मे तथा दैनिक यज्ञ मे भी किसी मन्त्र के आगे ओ३म् नहीं लगाया

दूसरी बात है कि किस आधार पर ओ३म् लगाया जाता है वह मनुस्मृति का श्लोक खण्ड है। 'ब्रह्मण प्रणव कुर्य्यादादावन्ते च सर्वदा।' इसका आशय है कि जब ब्रह्मचारी वेद पढने गुरु जी के पास आवे तब वेद पढने से पहले और जब वेद पढकर उठने लगे अर्थात् बाद में ओ३म् का उच्चारण करे।

जिन मन्त्रो के अन्त मे ओ३म् लगाने की विधि है, उनमे भी पाणिनि व्याकरण के नियम अनुसार 'प्रणवष्टे' टि को 'ओ३म्' होता है अर्थात् प्रचोदयात् ओ३म् व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। तब फिर 'प्रचोदो३म्' होना चाहिये, न कि प्रचोदयात् ओ३म्। अत 'प्रचोदयात् स्वाहा ही ठीक है।

[ आपके अन्य सुझावो को हमने अंकित कर लिया है और अपनी सुविधानुसार उनको क्रियान्वित करेगे। आप आर्यमित्र मे अपनी रचनाए अवश्य भेजें। नए लेखक व लेखिकाओं को सदैव प्रोत्साहन दिया जाता है। —'वसन्त' ]

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.–६०

चैत्र २ शक १८९१ चैत्र शु० ५
[दिनाङ्क २३ मार्च सन् १९६९]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

## शंका समाधान

### शंका

दीपावली पर प्रकाशित आर्यमित्र साप्ताहिक के ऋषि निर्वाणांक दिनांक २०-१०-६८ में "अथर्ववेद का मृत्यु सूक्त" विषय पर श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश का लेख प्रकाशित हुआ। श्री 'वसन्त' जी ने अपने लेख के प्रथम अनुच्छेद की द्वितीय पंक्ति में लिखा है कि 'मृत्यु स्वाभाविक और पीड़ा रहित है।' श्री वसन्त जी का यह वाक्य कि 'मृत्यु स्वाभाविक है' वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल प्रतीत नहीं होता है।

"मृत्यु 'स्वाभाविक' है अथवा 'नैमित्तिक' यह एक प्रश्न है जिसका स्पष्टीकरण एव समाधान वांछनीय है। 'जीवन' क्या है? मृत्यु क्या है? इस पर विचार करना भी अनिवार्य है। जीवात्मा का शरीर धारण करना 'जीवन' तथा जीवात्मा का शरीर छोड़ना 'मृत्यु' है।

जहां तक मै समझ सका हूं, प्रकृति मे जो गति है वह ईश्वर प्रदत्त होने के कारण स्वाभाविक नहीं वरन् नैमित्तिक है। प्रकृति के परमाणुओं के संयोग से शरीर का निर्माण भी नैमित्तिक है, क्योंकि परमाणु जड़ होने के कारण अपने आप स्वयं मिलकर शरीर का निर्माण नहीं कर सकते हैं। इन परमाणुओं से शरीर निर्माण करने वाली निमित्त रूप में एक अदृश्य सत्ता है, जिसको परमात्मा कहते हैं। क्रमशः जड़ शरीर से चेतन जीवात्मा का सयोग अर्थात् 'जीवन' तथा जीवात्मा का शरीर छोडना अर्थात् 'मृत्यु' स्वाभाविक नहीं है, वरन् नैमित्तिक है जिसका निमित्त परमात्मा है। यह सयोग व वियोग नियम के अन्तर्गत होता है, जिसका नियन्ता परमात्मा है।

अन्ततोगत्वा निष्कर्ष यह निकलता है, कि 'जीवन' व 'मृत्यु' नैमित्तिक है, स्वाभाविक नहीं है।

श्री 'वसन्त' जी 'मृत्यु स्वाभाविक है' कृपया वाक्य का समाधान प्रार्थनीय है। —रामेश्वर दयाल आर्य मन्त्री
आर्यसमाज पिपरगांव, फर्रुखाबाद (उ प्र.)

### समाधान

आपके पत्र मे वर्णित शका का समाधान इस अक मे प्रकाशित किया जा रहा है।

"स्वाभाविक" शब्द का अर्थ "नैमित्तिक" का विलोम नहीं है। यह शब्द साहित्यिक दृष्टि से प्रयोग किया गया है। दार्शनिक दृष्टिकोण से नहीं। जिस प्रकार इन्दुमवती के मरण पर महाराज अज को कविवर कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य मे वर्णित किया है। मरणं प्रकृतिः शरीरिणा विकृतिजीविनमुच्यते बुधैः 'शरीरधारियो की मृत्यु प्रकृति है और विकृति जीवन। अर्थात् शरीर का अपने कारण मे लय होना जीवन प्रकृति और कार्य रूप मे आना जीवन अर्थात् विकृति इस आशा से ही श्री वसन्त जी ने मृत्यु 'स्वाभाविक' है, शब्द का प्रयोग किया है।

दूसरा वाक्य है 'पीड़ा रहित' है। इसी आशय का गीता में भी एक श्लोक है।

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमार यौवनं जरा। तथा देहान्तर प्राप्ति र्धीरस्तत्र न मुह्यति।'

जिस प्रकार शरीरी के शरीर मे कुमारावस्था युवावस्था और जरावस्था का समावेश होता है ठीक उसी प्रकार देहान्तर की प्राप्ति होती है इसमे पीड़ा का कोई प्रश्न नहीं।

प्रकृति के परमाणुओ में गति आना परमात्मनिमित्त से और उसी का नाम जीवन है और गति के अभाव का नाम मृत्यु है। वह गति का अभाव है सुन्दर। सुन्दर को व्यक्त करने वाला उपसर्ग 'सु और अभाव' इन दोनों को जोड़ दिया जावे सु+अभाव इसको भी सु+अभाव=स्वभाव, अर्थात् सुन्दर अभाव वाले को भी स्वाभाविक कहते हैं।

श्री वसन्त जी ने निद्रा का दृष्टान्त दिया है जैसे सोकर प्राणी अपनी थकान दूर करता है और जगकर फिर नव चेतना और स्फूर्ति के साथ कार्य रत हो जाता है उसी पूर्व जीवन की थकान को मिटाने के लिये मृत्यु भी अनिवार्य एव आवश्यक है। अनिवार्य के अर्थ मे यह स्वाभाविक है। स्वभाव का ही निवारण नहीं हो सकता अतः स्वाभाविक शब्द का प्रयोग किया है। इसलिये इसमे कोई शका का अवसर नहीं है।

'स्वाभाविक' शब्द 'अपरिहार्य' का द्योतक है, पीड़ा को दूर करने का प्रतीक है। अतः जो अवश्यम्भावी है, अर्थात् जिसका परिहार नहीं हो सकता उसी अर्थ मे स्वाभाविक का प्रयोग किया है।

[ टिप्पणी–हमारे जिन पाठकों को वेद व वैदिक धर्म सम्बन्धी शंकाएं हो वे कृपया हमें अवश्य भेजें। हम उनका समाधान करने मे सदैव प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। —'वसन्त' ]

## विश्व-वैचित्र्य

### पानी पर पैदल चला जा सकता है

मास्को, सोवियत संघ के कामचात्का पहाड़ों में एक ऐसी झील का पता सोवियत संघ के ज्वालामुखी अनुसन्धान संस्थान ने लगाया है जिस पर आप ठोस जमीन की तरह पैदल चल सकते हैं। यह झील कई मीटर गहरी है और इसे पार करने के लिये नाव की आवश्यकता नहीं पड़ती है बल्कि इसे आप पैदल पार कर सकते हैं।

इस विचित्रता का रहस्य भी वैज्ञानिकों ने खोज लिया है। झील के तल से गैस इतनी तेजी से ऊपर उठती है कि इसके साथ रेत तथा ककड़ भी उठते है और वह झील पर एक सतह बना देते हैं जो आदमी का भार आसानी से उठा लेता है। इस झील पर एक सतह बना देते हैं जो आदमी का भार आसानी से उठा लेता है। इस झील का पानी गर्म है।

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०वी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. मो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

मित्रस्या१ह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

'वयं जयेम' ॥ लखनऊ—रविवार चैत्र ९ शक १८९१, चैत्र शु० १२ वि० सं० २०२६, दि० ३० मार्च १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# मानव शरीरों को हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी और अजेय बनाओ!

## अकाल मृत्यु को मत प्राप्त होओ

**अयं लोकः प्रियतमो देवानाम पराजितः । यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः**
**पुरुष जज्ञिषे ! स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः ॥**

[अथर्व० ५।३०।१७]

( अयम् अपराजित ) यह अपराजित (लोक) गृह ( देवानाम् ) देवताओ का ( प्रियतम ) प्रिय है। ( पुरुष ) कर्मशील मानव ( यस्मैत्वम् ) यत तू ( मृत्यवे प्रविष्ट ) मृत्यु के लिए प्रविष्ट (इह जज्ञिषे) यहां उत्पन्न हुआ है ( च स त्वा ) और वह तुझे (अनु ह्वयामसि) अनुकूलता से पुकारता है (जरस पुरा) वृद्ध होने से पूर्व ( मा मृथा ) मृत्यु को मत प्राप्त हो।

मानव योनि सर्वोत्कृष्ट योनि है। देवजन अपने शरीर रूपी गृह के महत्त्व को जानते हैं। भोगी इस उत्तम नगरी को भोगो और रोगो से नष्ट-भ्रष्ट करते है। योगी योग से इसे अयोध्या बनाते हैं। दिव्य गुणो से अलकृत देवताओं को यह बोध होता है कि मानव तम रूपी गृह ही ऐसा है जिसमे आकर उनकी आत्मा परमात्मा का सुदर्शन प्राप्त करती है। यह दिव्य धाम है जिसमे प्रभु का साक्षात्कार और मिलन होता है। मोह के पाश कटते हैं और मुक्ति के द्वार खुलते हैं।

प्रभु आदेश देते हैं कि हे पुरुष ! इस बात को मत विस्मृतकर कि तेरा मानव शरीर मे आना एक दिन उसमे से जाने के लिए है। जन्म मृत्यु का और योग वियोग का सूचक है। अतएव शरीर माहात्म्य को समझ, उसे भोग से शीघ्र जीर्ण शीर्ण करके नष्ट म कर वरन् पवित्र योग साधना से अपने गृह का सदुपयोग कर।

अनार्य भोगो मे रत रहकर अपनी देव नगरी का, जिसमें आत्मा रूपी स्वर्णिम ज्योति जगमगाती है, सर्वथा नाश करते हैं। आर्य इस हिरण्य कोषा को स्वर्ग बनाते हैं। नारकीय जीवन व्यतीत करने वाले जब आर्यों के हृष्ट-पुष्ट शरीरो को देखते हैं, उनके तेजस्वी और ओजस्वी मुखो को निहारते हैं तो वे उसके आकर्षण से आकृष्ट होकर आर्यत्व को अपनाते हैं। अनार्यत्व शनै शनैः नष्ट और आर्यत्व स्थापित होता चला जाता है।

विश्व का आर्यकरण करने वाले आर्य बन्धु परमेश्वर की इस वाणी को आत्मसात करे और अपने शरीरो को हृष्ट-पुष्ट और तेजस्वी बनाए क्योकि विश्व का कल्याण हमे शारीरिक उन्नति के द्वारा भी करना है।

—'बसन्त'

| वर्ष | अंक |
| --- | --- |
| ७१ | १२ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अंक में पढ़िए !



सपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल. ए.
सभा-मन्त्री

## सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

# ऐसे वर को क्या वरूँ, जो जन्मे और मर जाए।

—श्री विक्रमादित्य जी 'बसन्त' 'वेदवारिधि' मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

## अध्यात्म-सुधा

**वेद मन्त्र—**

अग्नि दूत वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ [साम० ३]

शब्दार्थ—(दूत) दिव्य देवदूत (होतारं) यज्ञ निष्पादक (विश्व वेदस) सर्वज्ञ (अग्नि) सुन्दर परमात्मा का (वृणी महे) वरण करते हैं [जो] (अस्य यज्ञस्य) इस जीवन यज्ञ का (सुक्रतुम) सुक्रतु है, भलीभांति सम्पादन करने वाला है।

व्याख्या—इस ससार मे जो जिसको प्रिय होता है, वह उसका वरण करता है। भौतिक जगत् मे हम नित्य-प्रति वरण के दृश्य देखते हैं। लताएं वृक्षों का वरण करती हैं, नदिया सागरों का वरण करती हैं और भौतिक आसक्तियो में लिप्त सर्वश्रेठ प्राणी भी अज्ञानवश उन जीवों, पदार्थों और विषयों का वरण करता रहता है, जो सेवनीय तो हैं, किन्तु वरणीय नहीं हैं। भौतिक पदार्थ परिवर्त्तनशील हैं और नाशवान् हैं, इसलिए उनके वरण से दुःख का होना स्वाभाविक है, किन्तु जो अजर और अमर तत्त्व हैं, उसके वरण से आनन्द की उपलब्धि होती है। भौतिक जगत् मे जड पदार्थों के वरण से चित्त मे शान्ति नहीं होती। भौतिक पदार्थ अनन्त हैं, विषयों और विकारों की कोई सीमा नहीं, जीव भी असख्य हैं, अतएव भौतिक भोगवाद के वरण से न कभी किसी को तृप्ति हुई है और न हो सकती है।

तृप्ति का एकमेव आधार है चेतन तत्व का वरण। जो शरीरों मे आसक्त न होकर आत्माओं का वरण करते हैं वे आत्मानन्द को प्राप्त होते हैं और जो परम चेतन तत्व का वरण करते हैं वे परमानन्द को प्राप्त होते हैं। साध्वी मीरा ने इसीलिए तो कहा था—"ऐसे वर को क्या वरूँ जो जन्मे और मर जाये।" विप्र पदको धारण करने वाले मेधावी जन संसार में इसीलिए ब्रह्म का वरण करते हैं। वे माया रूपी धेनु का दोहन न कर ब्रह्म रूपी धेनु के दुग्ध की कामना करते हैं।

विश्व का वह अद्वितीय सुन्दर अग्निदेव, परमतत्व परमात्मा कैसा है, जिसका साधक वरण करना चाहता है तो प्रस्तुत मन्त्र उसके लिये कुछ विशेषणों का प्रयोग करता है, जब साधक से कोई प्रश्न करता है "तुम किसके गीत सदा गाते हो?" "तुम किसके विरह में व्याकुल होकर अश्रुपात करते हो? "यह किसके दर्शन और मिलन की असह्य वेदना है जिससे तुम इतने पीड़ित रहते हो?" "वह कौन है जिसके प्रेमपाश मे बन्ध कर तुम छटपटा रहे हो?" "वह कौन है जिससे तुम्हें इतना लगाव हो गया है कि तन मन की सुध भी जाती रही है?" "यह किस का वरण किया है तुमने, जिसने तुम्हारे मनका चैन और रात की निद्रा तक हर ली है?"

प्रेम छिपाये नहीं छिपता, मन की अशान्ति व्याकुलता, पीड़ा, अश्रुपात आदि सब रहस्य खोल देते हैं। साधक जानता है कि भौतिकता में आसक्त और लिप्त तो भौतिक भोगों को विचारते ही हैं और वैसी ही बातें करते हैं। साधक कह उठता है "मैंने जिसका वरण किया है, वह विश्व वेदस है, सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है। वह सर्व व्यापक है, सर्वान्तर्यामी है इस लिए उसकी जानकारी पूर्ण है। मैं एक देशीय हू अल्पज्ञ हू वह सर्वदेशीय है, सब जीवो के हृदय में उसका वास है। वह सब स्थान, नाम, जन्म, भूत, वर्तमान, भविष्य जानता है।

मैंने जिसका वरण किया है, वह होता है, जीवन यज्ञ का निष्पादक है। मैं जब उसका वरण करता हू तो मुझ में उसके दिव्य गुणो का समावेश हो जाता है। मैं उस दिव्य अग्नि मे अगारा बन कर दमकने लगता हू। मै उसके विराट यज्ञ को देख कर अपने जीवन को यज्ञमय बना डालता हू। मैं यज्ञ करता हू, वह कृपा पूर्वक मेरा यज्ञ सफल करता है। वह मेरा हितैषी है। वह सर्वज्ञ होने से सब जानता है कि मेरा हित किस मे है। वह दिव्य देव मुझे ऐसी ही प्रेरणायें देता है जिससे मेरे जीवन यज्ञ का सुन्दर निष्पादन हो। वह दिव्यदेव जिसे मैं आत्मना निरन्तर पुकारता हू, मेरी पुकार सुनता है, वह मेरे पास आता है, वह मुझ पर रीझता है, मेरे आत्म-समर्पण को स्वीकार करता है।

मेरे जीवन यज्ञ को सफल बनाने के निमित वह देव दूत निरन्तर अपने सन्देशों को प्रसारित करता रहता है। मैं जब जीवन के किसी ऐसे दोराहे, अथवा चौराहे पर आ खड़ा होता हूं, जहाँ से ठीक दिशा में आगे बढ़ने के लिए कठिनाई होती है, तो वह मेरा मार्ग सुझाता है, पथ के अन्धकार को दूर करता है। मेरे सकल संशय, भय, चिन्ता को दूर करता है। वह दिव्य सन्देहवाहक अनवरत अपने ज्योतिर्मय

(शेष पृष्ठ १४ पर)

## आई मिलन की रात

सखीरी मेरी, आई मिलन की रात।
ज्योतिर्मय प्रभु मेरा प्रीतम, लाया प्रेम सौगात ॥
सखीरी......

मेरा सोया भाग्य जगाने, दूल्हा आया मुझको ब्याहने।
सूरज चन्दा और तारों की, सग ले बारात ॥
सखीरी.....

लज्जाई मैं, सकुचाई मैं, मन ही मन सखी घबराई मैं।
अन्तर्पट जब खोले पिया ने, प्रेम से की बात ॥
सखीरी......

पवन था अठखेली करता, मधुमय नव उन्माद भरता।
नाच उठा मन मोर मेरा, अङ्ग-अङ्ग हर्षात ॥
सखीरी......

छिटकी हुई थी मधुर चादनी, छेड़ी पिया ने आनन्द रागिनी।
भूल गई सब सुध बुध अपनी, ऐसी मस्ती समात।
सखीरी.....

मेरे पिया की सोम घटाए, मेरे हृदय में रस बरसाएं।
कैसे बताऊँ, कैसी थी वह, सोम सुधा बरसात ॥
सखीरी......

सुन्दर प्रीतम ज्योति वाला, मुझको पिलाता प्रेम प्याला।
मिलन की थी रात नशीली, ज्योति में ज्योति समात ॥
सखीरी......

पाकर मैं आनन्द गन्धि, भूल गई सुमनों की सुगन्धि।
मन उपवन था सुरभित मेरा, ऋतु 'बसन्त' दर्शात ॥
सखीरी......

लखनऊ-रविवार ३० मार्च ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## ईर्ष्याम् मुञ्चामि

इस ससार मे मानवी स्वभाव मे एक बहुत बडा दोष, दुर्गुण और दुर्व्यसन ईर्ष्या का है। मनुष्य जब अपने परिचित अथवा अपरिचित क्षेत्र मे किसी को अपने से अधिक उन्नति [ चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक हो] करते देखता है, तो उसके भीतर असन्तोष की उत्पत्ति होती है। यह असन्तोष पहले कुढन और फिर जलन का रूप धारण कर लेता है। ईर्ष्या एक ऐसी आच है जो ईर्ष्या करने वाले को ही पहले जलाती है। ईर्ष्या की आंच भी बडी विचित्र है, वह सहसा चमककर या धधककर एकदम नहीं जलाती वरन् तिल-तिल करके क्षण-क्षण जलाती है। एकाएक किसी आच मे जलना उतना पीडा जनक नहीं होता जितना कि निरन्तर आग मे जलते रहना।

ईर्ष्या ही इस ससार मे द्वेष की माता है। जब ईर्ष्या उत्पन्न होती है तो समदर्शिता का दृष्टिकोण विषम दर्शिता मे परिवर्तित हो जाता है। जब एक रूप दो रूपो मे विभक्त हो जाता है, तो दोनो ओर से दुर्भावना उत्पन्न होती है। जब दुर्भावनाए उपजती हैं तो विरोध होने लगता है। जैसे ही विरोध का प्रादुर्भाव होता है, वैर अपना रग जमाता मानवी हृदय पर चढते ही सघष का सूत्रपात होता है। सघर्षो मे क्षति विक्षति होती है और क्षत विक्षत होने पर तथा सत्वहीन होने पर विनाश के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह जाता।

ईर्ष्या के इस वैज्ञानिक क्रम का मैंने सविस्तार विश्लेषण इस लिए किया है कि आज आर्यजगत् इस ईर्ष्या रूपी राक्षसी का वरण कर रहा है, जिसके फलस्वरूप द्वेष दुर्भावना, विरोध, वैर और सघर्षो की सीढयो पर चढता हुआ नष्ट-होता हुआ सत्त्वहीन होकर वह मृत्यु की ओर द्रुतगति से अग्रसर हो रहा है। जब तक हम मूल को न पकडें, रोग का निदान न करें, उन कारणों का अन्वेषणन करे जिनसे रोग की उत्पत्ति हुई है, रोग की सफल चिकित्सा नहीं हो सकती। हम सस्थाओ मे उपस्थ सघष रूपी रोगो का निवारण तो करना चाहते हैं, किन्तु जिन कारणों से वह रोग इतना भयकर और उग्र हो गया है उनको खोज निकालने और जड से दूर करने के लिए हम प्रयत्नशील नहीं है। फल स्वरूप 'रोग बढता गया, ज्यों ज्यो दवा की' की कहावत चरितार्थ हो रही है।

लिखन की आवश्यकता नहीं है कि ईर्ष्या पुत्र द्वेष के कारण ही आर्यवर्त्त के चक्रवर्त्ती साम्राज्य का विनाश हो गया। जगदगरु थे वे दीन हीन होकर अविद्या ग्रस्थ हुए और अन्ध विश्वासी बनकर पतित हुए। जिस जाति ने पूरे भू मण्डल पर राज्य किया, वह शताब्दियो तक पराधीनता के लोहपाश मे जकडी रही। परमेश्वर ने अपनी अमृत वाणी वेद मे इसीलिये सत्य का दिग्दशन कराते हुए ईर्ष्या के विषय मे कहा था—

ईर्ष्याया ध्राजि प्रथमा प्रथमस्या उतापराम। अग्नि हृदय्य शोक त ते निर्वापयामसि यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा। यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृत मन ॥ अदो यत्ते हृदि श्रित मनस्क पतयिष्णुकम्। ततस्त ईर्ष्या मुञ्चमि निरूष्माणां दृतेरिव ॥

अथर्व वेद के काण्ड ६ के १८ वें सूक्त के ये प्रथम तीन मन्त्र हैं। इनमें ईर्ष्या रूपी अग्नि और उसको बुझाने के उपाय बताये गये हैं। उपाय वैज्ञानिक क्रम से समझाये गये हैं। ईर्ष्या के फलस्वरूप हृदय मे जो शोक उत्पन्न होता है वह जीवित मनुष्य को भी मृत तुल्य कर देता है। जिस प्रकार भूमि मृत मना है, उसी प्रकार जब ईर्ष्यालु मृत मना हो जाता है अर्थात उसके मन में शिवसकल्पो का विलोप हो जाता है तो उसका मस्तिष्क भी विवेकहीन होकर दूषित विचारो मे रत रहता है जिसके परिणामस्वरूप घोर अनर्थ होते हैं।

ऐसे पतनशील तुच्छ मन से ईर्ष्या को निकालने के लिए परमेश्वर की वेदवाणी ही हमारी एक मात्र सहायता करती है। जैसे किसी धोकनी से ऊषणता को निकाला जाता है ठीक उसी प्रकार ईर्ष्या अग्नि को निकालने के लिए वेद मे कहा गया है—

'जनाद विश्वजनीनात्सिन्धुन-स्पर्य्या भृतम। दूरात्त्वा मन्य उदभृतमीर्ष्याया नाम भेषजम ॥

अग्ने रिवास्य दहतो दावस्य दहत पृथक। एतामेतस्येर्ष्या मुदनाग्निमिव शमय ॥

[अ० ७।४५।१ २]

इन मन्त्रो मे ईर्ष्या की एकमेव औषधि जो बताई गई है, वह है मन्यु अर्थात मनन युक्त विचार। ईर्ष्या सवस्व भस्म करने वाला दावानल है। भौतिक जगत मे अग्नि शान्त होती है जल से क्यो कि जल मे ही उसे शान्त करन की शक्ति है। इर्ष्या की अग्नि भी मननशीलता रूपी जल से शान्त होती है, इसलिए आवश्यक है कि वेदानुसार 'मनो मन्यु बन अर्थात हम मननशील बने। किसका हम मनन करे तो वेद मन्त्रो का क्या कि 'मन्त्र मननात अर्थात मन्त्र ही मनन के लिए है। परमेश्वर की दिव्य अजर वाणी जिसे स्वत वेद ने 'पश्य देवस्य काव्य नममार न जीर्यति' कहा है, उसका एक एक मन्त्र हमें वह प्रेरणा देता है कि वहं अपनी ईर्ष्या रूपी अग्नि को पूर्णतय शान्त करने में समर्थ होता है।

दुर्भाग्य से हमारे क्षेत्र मे ईर्ष्याग्नि की ज्वालायें विकराल रूप धारण कर चुकी हैं और समय की माग है कि हम इसे तुरन्त बुझा दें। जिन तुच्छ व्यक्तियो के मन मे इस समय यह अग्नि प्रज्वलित है, उसके मुझे दो ही कारण दृष्टिगत होते हैं। जहां पर आर्य समाज के साथ शिक्षण सस्थायें हैं (विशेषतया जहा पर स्त्री पाठशालायें अथवा कन्या माध्यमिक उच्चतर विद्यालय अथवा महा विद्यालय हैं) अनाथालय है, विशाल भवन है, वहां पर माया रूपी आसक्ति के कारण अथवा पद लिप्सा के कारण कुर्सियो पर आसीन व्यक्ति पद नहीं त्यागना चाहते और उनके भौतिक सुख की अभिवृद्धि को देखकर जो पदासीन नहीं हैं, वे ईर्ष्या के वशीभूत होकर नित्य नवीन सघर्षो का सृजन कर रहे हैं। दूसरी ओर जिन्होंने अपने तप, सयम और त्याग से अपने को आध्यात्मिक क्षेत्र मे ऊँचा उठा लिया है और जिनकी कीर्ति उन की शुद्धता और पवित्रता के कारण दिन प्रतिदिन चारो दिशाओ मे फैल रही है, उन से अज्ञानवश ईर्ष्यालु होकर, लोकेष्णा के कारण उन पर प्रतिबन्धो की माग लगाकर उनके माग को कटकाकीर्ण बनाने के उपक्रम हमारे कुछ बन्धुओ द्वारा हो रहे है। कैसी विडम्बना है कि स्वयम तो करते नहीं और दूसरो को करने नहीं देते। स्वयम वेदो को पढने पढाते और सुनते सुनाते नहीं और यदि कोई ऐसा तप करता है तो उसके माग मे रोड अटकाते है? ऐसे ईर्ष्यालुओ को कौन वदिक धम का शुभ चिन्तक कह सकता है? वे स्वयम भी जलते हैं और दूसरो को भी जलाते है किन्तु जिन्होने अपने को मनन पूवक शीतल कर लिया है वे स्वयम भी शान्त रहते हैं। और दूसरो को भी शान्ति प्रदान करते हैं।

ईर्ष्या की अग्नि की शान्ति का एकमेव साधन जिस दिव्य मनन मे समाहित है आइये हम उसे अपनाए और आर्य जगत् को महाविनाश की ज्वालाओं से बचाएं।

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के झगड़े निपटाने में महात्मा आनन्दस्वामी जी को पूर्ण सफलता

## सब अभियोग वापस हुये

नई दिल्ली, २०-३-६९—आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद के निश्चय के आधार पर सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अम्बाला छावनी मे घोषित श्री वीरेन्द्र आदि ने पजाब सभा के झगड़े निपटाने के लिए महात्मा आनन्द स्वामी जी को अधिकार दिये थे। उनके अनुसार महात्मा जी ने निम्न प्रकार से आदेश दिये हैं—

१—स्थान-स्थान पर न्यायालयों मे चल रहे अभियोगों से सम्बन्धित व्यक्तियो से अभियोग को वापिस लेने के प्रार्थना-पत्र प्राप्त करके अभियोग वापिस करा दिये हैं।

२—श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री सभा मन्त्री द्वारा पजाब सभा के निर्वाचन के लिए रोहतक मे ३०-३-६९ को रखी बैठक तथा इसी कार्य के लिये डा० हरिप्रकाश जी द्वारा ६-४-६९ को अम्बाला छावनी मे रखी बैठक को भी रद्द कर दिया है। दोनों महानुभावों को आदेश दिया है कि इसी आशय के पत्र वह प्रतिनिधियों को भी लिख दें और महात्मा जी को भी सूचित करें।

३—प्रो० रामसिंह जी आदि पजाब सभा के अधिकारियों को आदेश दिया है कि आगामी निर्वाचन तक वह सब व्यय तथा कार्य महात्मा जी की अनुमति से करेंगे।

४—दीवान रामसरनदास तथा श्री वीरेन्द्र आदि को आदेश दिया है कि आगामी निर्वाचन तक महात्मा जी की आज्ञा के बिना किसी सस्था या सभा कार्यालय पर अधिकार करने की चेष्टा न करें। उन सब सस्थाओं तथा सभा कार्यालय पर महात्मा जी स्वय नियन्त्रण करेंगे।

५—सभा के निर्वाचन के सम्बन्ध में स्थान व तिथि की महात्मा जी शीघ्र घोषणा करेंगे।

—रघुवीरसिंह शास्त्री, सभा-मन्त्री

## आर्यसमाज लकसर (सहारनपुर) का विवाद

**सभा मुख्य उपमन्त्री श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' के सद् प्रयत्नों से समाप्त**

रविवार २३-२-६९ को आर्यसमाज लकसर (जिला सहारनपुर) के निर्वाचन को लेकर विगत कई मासों से जो भयकर विवाद चल रहा था, वह सभा मुख्य उपमन्त्री श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' के सतत प्रयासों और सद् प्रयत्नों से अत्यन्त सद्भावना पूर्ण वातावरण में समाप्त हो गया है। सर्वसम्मति से निर्वाचित पदाधिकारियों की सूची इस प्रकार है—

प्रधान—श्रीमती विद्या भारती
उपप्रधान— " श्री बुद्धसिंह
मन्त्री—श्री रमेशचन्द्रशास्त्री
उपमन्त्री—श्री मक्खनसिंह जी
कोषाध्यक्ष—" मामचन्द जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामनाथ वर्मा
आय-व्यय लेखानिरीक्षक—श्री धर्मसिंह जी

अन्तरङ्ग सदस्य—सर्वश्री चमनलाल, कृष्णलाल, नरेन्द्र कुमार, लाला जयप्रकाश, बुद्धराम, ताराचन्द नाहरसिंह व चेतनदास।

प्रति०—जिलोपसभा सहारनपुर—सर्वश्री दलपति शास्त्री डा० आतमाराम, अमोलक राम, लभाराम

प्रति०—प्रान्तीय सभा, लखनऊ—सर्वश्री दलपति शास्त्री, डा. आतमाराम

---

हम निरन्तर वेदमन्त्रो द्वारा स्वाध्याय करे और अपने को मनन से उच्चता के शिखर पर ले जाए। हमारा सरस सरल सुन्दर जीवन ही जगत् को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् कर सकता है। वेदानुसार ज्ञान प्राप्त कर हम उसे कर्म मे अवतरित करे और द्वेष के महा सिन्धु से अपनी नौकायें पार करने के लिए उस जगदीश्वर से वेद के शब्दो मे ही आतमना प्रार्थना करें—

"द्विषो नो विश्वतो मुखाति नावेव पारय।"

—आर्य समाज जहाँगीराबाद जिला बुलन्दशहर, प्रधान लाला किशनलाल जी आर्य, मन्त्री महाशय मुकटलाल जी, कोषाध्यक्ष महाशय फकीरचन्द्र जी। —मन्त्री

### वार्षिक विवरण शीघ्र भेजिए

सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखा जाना आरम्भ हो गया है। सभा के मान्य अधिकारियों, अन्तरग सदस्यों, निरीक्षको, अवैतनिक उपदेशको, जिला उप सभाओ तथा विभागों के अधिष्ठाताओ से अनुरोध है कि वह अपने कार्य का विवरण २२ मार्च तक अवश्य भेजने की कृपा करें। ताकि शीघ्र ही रिपोर्ट प्रकाशित होकर सेवा मे भेजी जा सके।

—विक्रमादित्य 'वसन्त' सभा उपमन्त्री

### प्राप्तव्य धन

सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सूदकोटि, आर्यमित्र का शेष धन, और ४ आना प्रति सदस्य का प्राप्त होने पर ही प्रतिनिधि स्वीकृत किये जा सकेंगे। —मन्त्री

### निरीक्षक सूचना

मेरठ कमिश्नरी के समस्त आर्यसमाजो एव जिला उप प्रतिनिधि सभाओ को विदित हो कि श्री बलवीरसिंह जी बेधड़क मेरठ निवासी मुख्य निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं। उनके पहुंचने पर आर्यसमाज एव आर्य सस्था तथा उपसभाए निरीक्षण कराने की कृपा करें। सभा की जायदाद पर यदि किसी ने अनधिकृत रूप से कब्जा कर लिया है अथवा जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है, तो उसका भी निरीक्षण कराकर सभा को आख्या भिजवाने की कृपा करें। सभा का प्राप्तव्य धन भी उनको देकर सभा की रसीद प्राप्त करलें।

### शुभ-सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प० धर्मदत्त जी आनन्द ने अपना अमूल्य समय सभा को अवैतनिक रूप से प्रदान किया है। समाजों से आशा है कि वह अपने उत्सवों पर बुलाने के लिए सभा से पत्र-व्यवहार करने की कृपा करेंगी।

### आमन्त्रित कीजिये

उत्सवों एव विवाहोपलक्ष में सभा के निम्न सुयोग्य एव मधुर गायकों को आमंत्रित कर लाभ उठावें।

श्री रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर
श्री धर्मराजसिंह जी
" गजराजसिंह जी
" खेमचन्द्र जी
" ज्ञानप्रकाश जी शर्मा
" मुरलीधर जी
" जयपालसिंह जी
" विन्ध्येश्वरीसिंह जी
" प्रकाशवीर जी शर्मा
" वेदपालसिंह जी

—आर्यसमाज कोटद्वार का निर्वाचन। प्रधान श्री ब्रह्मदेव जी आर्य, उपप्रधान श्री मधुर जी शास्त्री, मन्त्री श्री शमशेरसिंह आर्य उपमन्त्री श्री महेद्रकुमार आर्य कोषाध्यक्ष श्री रामशरणदास आर्य, प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि श्री पं. तोताराम जी जुगड़ाण चुने गये हैं।

# वेद - व्याख्या

## ३६५ उषाकाल दिन और रातें मंगलदायक हों

### नये वर्ष के लिये वेद भगवान् का संदेश मनुष्यमात्र के नाम

—श्री आशुराम आर्य पुरोहित, चण्डीगढ़

सवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृत्वस्ते कल्पन्ता ँ सवत्सरस्ते कल्ताम्। प्रेत्याऽएत्यै सचाञ्च प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुव. सीद। यजुर्वेद २७-४५

शब्दार्थ—हे विद्वान्, तेजस्वी, जिज्ञासु आत्म अग्ने पुरुष! तू (संवत्सर) क्षण महूर्त काल के तुल्य नियम से वर्त्तमान (असि) हैं (परिवत्सरोऽसि) पापाचरण के त्याग से सभी लोग चारो ओर से तेरी शरण लेते हैं (इदावत्सर असि) निश्चय से अच्छे प्रकार वर्त्तमान वर्ष के समान है अन्न के द्वारा तू सबको बसाता है (इद्वत्सरो असि) तू सवत्सर के समान है, तेरे साथ सभी प्राणी आकर बसते है (वत्सर. असि) तू वर्ष के समान है, और पुत्रवत सबको आनन्द देता है (ते उषस. कल्पन्ताम्) तेरे लिए सब (वर्ष के ३६५) उषाकाल प्रभात वेला मे कल्याणकारी होवे। तुझे समर्थ बनावें (ते अहोरात्रा कल्पन्ताम्) तेरे लिये दिन राते मगलदायक हो। (ते अर्धमासा कल्पन्ताम्) तेरे लिये शुक्ल कृष्ण पक्ष (प्रत्येक १५ दिन का पखवाड़ा) समर्थ हो। (ते मासा कल्पन्ताम्) तेरे लिए चैत्र आदि महीने समर्थ हो। सुखकारी हो। (ते ऋतव कल्पन्ताम्) बसन्त आदि ऋतुएँ सभी तेरे लिए समर्थ हो। (ते सवत्सर कल्पताम्) संवत्सर तेरे लिये समर्थ हो। तुझे बनाये, आगे बढाये। (च प्रेत्यै सम् अञ्च) और उत्तम प्राप्ति के लिये, आगे बढने के लिए भली प्रकार सफल हो (च एत्यै प्र, सारय) और तू अच्छी प्रकार जाने के लिये अपने प्रभाव का विस्तार कर, गतिविधि को फैला, शक्ति को बढ़ा। तू (सुपर्ण चित्, सूर्य के समान सुन्दर रक्षा के साधनो का सचय सग्रहकर्त्ता (असि) है (तया देवतया) उस उत्तम गुणयुक्त समय (काल) रूपी देवता के साथ (अगिरस्वत्) सूत्रात्मा प्राण वायु के समान (ध्रुव सीद) दृढ, निश्चित और स्थिर हो।

व्याख्यान—ऐसा उत्साह प्रद, मार्ग प्रदर्शक, मगल आशीर्वाद, शुभ-कामनाये और रहनुमाई कौन दे सकता है। विश्वभर के मानवमात्र को जगत् के प्यारे पिता परमात्मा के बिना, जिसके एक एक शब्द मे मनुष्य जीवन के प्रति उत्थान और अग्रसर होने की भावना कूट-कूटकर भरी है, जिससे अपूर्व बल, रस, सौंदर्य तथा ओज मिल रहा है। इसलिये महर्षि दयानन्द इस मत्र भाष्य पर भावार्थ करते हुए लिख रहे है कि जो आप्त पुरुष व्यर्थ काल नही खोते, सुन्दर नियमो से बर्तते हुए, कर्त्तव्य कर्मो को करते और छोडने योग्य को छोडते जाते है, उनके प्रभात काल, दिन रात, पक्ष महीने, ऋतु सब सुन्दर प्रकार व्यतीत होते है। इसलिए उत्तम गति के लिये प्रयत्न कर, अच्छे मार्ग से चल शुभ गुणो और सुखो का विस्तार करें। सुन्दर लक्षणो वाली वाणी वा स्त्री के सहित धर्म के ग्रहण और अधर्म के त्याग मे दृढ उत्साही सदा होवे। भगवान् का सृष्टि के आरम्भ मे नये सवत्सर पर पहले दिन का मगल उपदेश और इस पर ऋषि दयानन्द का अर्थ व्याख्यान कितना प्रेरणादायक है कि जो लोग कर्त्तव्य कर्मो को करते और दुष्ट कर्मो को त्यागते हुए नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं उनके क्षण-क्षण सदा सुखदायक होते हैं।

### आर्यो! जागो!!

वह दिन जबकि सूर्य की पहली किरण ने धरा को प्रकाशित किया, ब्रह्म दिन का आरम्भ चैत्र सुदि प्रतिपदा का था। जिसका सवत् १९७२९४९-०६९ समाप्त होकर १९ मार्च चैत्र शुक्ला प्रतिपदा बुधवार को ७०वाँ वर्ष आरम्भ हो रहा है। आदि सृष्टि से ही आर्य जाति मे इस नव वर्ष को नये सवत् के रूप मे पर्व मनाये जाने की प्रथा सुरक्षा के साथ आ रही है। जिसका उदाहरण यह है कि राजा विक्रमादित्य का सवत् भी इसी दिन आरम्भ हुआ जिसका २०२५ समाप्त होकर २०२६ आरम्भ हो रहा है और पश्चात् शालीवाहन शक सम्वत् भी इस दिन आरम्भ हुआ जिसका १८९० समाप्त होकर १८९१ आरम्भ हो रहा है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जगत् मे व्यापक दुख को देखकर मनुष्य मात्र को ईश्वर के मार्ग पर चलने और उसके वेद धर्म को ही ससार का धर्म बनाने के लिए आर्य समाज रूपी कल्प वृक्ष को इसी पवित्र दिन सम्वत् १९३२ विक्रम पर बम्बई मे स्थापन किया।

इसलिये आर्यो! जागो, अग्रेजो के नये वर्ष पर बधाई देना छोड कर प्रति वर्ष सृष्टि सम्वत्, विक्रम सम्वत् और आर्यसमाज स्थापना सम्वत् चैत्र शुदि प्रतिपदा को धूम-धाम से मनाया करो। सबको बधाई तथा शुभ-कामनाओ के सन्देश भेजा करो। जिससे वैदिक परम्परा चले और ससार सुखी हो।

नये वर्ष के लिये सबको मगल कामनाओ के साथ बधाई!

## पंजाब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के झगड़े निवटाने के लिए श्री पूज्य महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज का आदेश

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हैदराबाद मे आठ नवम्बर ६८ को आर्य प्रान्तीय सभाओ के झगडे समाप्त करने के सम्बन्ध मे मुझे सर्व सम्मति से एक सर्वाधिकार दिया गया था, और साथ ही यह भी निश्चय हुआ था कि जो न्यायालयो मे अभियोग चल रहे है, सम्बन्धित व्यक्ति तुरन्त वापस ले लें। उपरोक्त सम्मेलन के प्रस्ताव के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, प्रो० रामसिह तथा आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान दीवान रामसरनदास ने इसी आशय के प्रस्ताव को स्वीकार करके आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के झगडे समाप्त करने का मुझे अधिकार दिया। इस अधिकार के आधार पर सम्बन्धित व्यक्तियो को रविवार दि० ९ मार्च ६९ को आदेश दिया था कि वह स्टैम्प पेपर पर टिकिट लगाकर प्रत्येक अभियोग के वापस लेने का लिखकर मुझे ३१ मार्च तक दे दे अन्यथा मुझे आमरण व्रत रखना होगा। प्रसन्नता की बात है कि सब अभियोगो के बारे मे मेरे पास इस प्रकार के पत्र पहुच गये हैं। कितने ही अभियोग लौटा लिये गये हैं और शेष अभियोग लौटाने का कार्य हो रहा है—

महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

आगामी कार्य के सम्बन्ध मे निम्न आदेश देता हू —

(१) आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का अपनी देख रेख मे निर्वाचन कराने की योजना मै बना रहा हु—निर्वाचन तक की व्यवस्था क्या होगी इस पर भी विचार कर रहा हू—शीघ्र ही इसको घोषित कर दूगा।

(२) श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री द्वारा रोहतक मे ३०-३-६९ को निर्वाचन के लिये रखी बैठक तथा डा० हरिप्रकाश जी की ओर से इसी कार्य के लिये ६-४-६९ को अम्बाला छावनी मे इसी कार्य के लिये रखी बैठक को मै रद्द करता हू। अत दोनो महानुभावो को आदेश देता हू कि वह भी विज्ञप्ति द्वारा उक्त बैठक को रद्द करने की घोषणा कर दें और उसकी प्रतियां मुझे भेज दें।

दि० १८-३-६९ —आनन्दस्वामी सरस्वती

# काव्य कानन

## 'नेताओं से'

हे भारत के नेताओ ! कुछ तो कर्त्तव्य निभाओ।
तुम भारत भाग्य विधाता हो जन-जन के दुख के त्राता हो।
तुम जन-जन के प्रतिनिधि होकर सबको सुख शान्ति प्रदाता हो।
मत निज दायित्व भुलाओ। हे भारत के नेताओ। १

भेजा है जनता ने तुमको कि भारत का निर्माण करो।
कर उचित व्यवस्था शासन की सब भांति उचित उत्थान करो।
हो भद्र वही उस पर ही चलो चलाओ—हे भारत ..२

है देश त्रस्त भूखों से और शोषण से।
सब असतुष्ट हैं अब ऐसे शासन से।
जनता के दुःख समूल आज बिनसाओ—हे .....३

सच्चा गणतन्त्र इसे ही क्या कहते हैं।
हो स्वार्थ सिद्धि में लिप्त लोग रहते हैं।
पा करके पद निज मद से मत इठलाओ—हे भारत .. ..४

पद लिप्सा से जनता के ढिग आते हो।
फिर गाय और जनता पै सितम ढाते हो।
यह अक्षम अपराध नहीं दुहराओ—हे भारत ......५

जनता के होकर अगर नहीं चल सकते।
जन भावों का सम्मान नहीं कर सकते।
जनता भी तुम्हे उड़ा देगी शरमाओ—हे भारत......६

है त्याग सादगी नेता का आभूषण।
यदि इसका रहा अभाव तो वे शोषक गण।
जनता को चूस-चूस मत खुशी मनाओ—हे भारत .. ..७

अन्न का संकट आज बढ़ रहा देश के कोने-कोने में।
नहीं तुम्हें है ध्यान मस्त हो महफिल निजी सजाने में।
जनता के धन से मत स्वागत करवाओ
हे भारत के नेताओ कुछ तो कर्त्तव्य निभाओ .....८

रचयिता—सत्यनारायण द्विवेदी गगा जमुनी (बहराइच)

## जागृति

जागृति के गान सजीले जन-जीवन में लहराते
उत्थान उषा का स्वर्णिम सन्देश सहर्ष सुनाते
हृत्कोमल कर्म कमल की शत पखड़ियां खिल जातीं
गुण गौरव गन्ध उपायन हाथों ही हाथ लुटातीं ॥१

मकरन्द पानकर प्यारे मधु भाव भ्रमर मुसकाते
जीवन की आन सफलता ये पुष्प प्रशसा गाते
सद्वृति सौभाग्यमयी सी तज देती स्वप्न निशा के
सुख सुन्दर साज सजाती उद्बोधन उच्च दिशा के ॥२

पौरुष परमाणु प्रभा मे निर्माण नीड की माला
स्वागत सम्मान सजगता की भूमि बांटती हाला
मानो यह बीज वपन का शुचि पर्व उपक्रम प्यारा
वासन्ती शोभा लेकर मधुमास मनोज्ञ पधारा ॥३

उमगाती राष्ट्र रसालों की झूम-झूमकर डाली
जन-मन को राग सुनाती उपलब्धि अनूप पिकाली
मस्ती का मौसम मधुरिम रस-धार धरा बरसाता
अकुर उत्पत्ति प्रथा के पीयूष बृन्द विकसाता ॥४

धर धैर्य धरित्री रवि की कर रही परिक्रमा प्यारी
दिन-रात्रि परस्पर मिलने की करते हैं तैयारी
सक्रान्ति शोभना लाती 'शिवरात्रि' समोद सहेली
व्रत प्रेम धारणा खोलें शकर की 'मूल' पहेली ॥५

तब 'दयानन्द' की मानस लहरी में ज्वार निखरता
शुचिराज हस का प्रतिनिधि बन तर्क विभूति बिचरता
शिव-दर्शन नन्दन वन में साधन का स्रोत सुहाता
कल्याण-कामना क्यारी में बोध-वृक्ष लहराता ॥६

'तमसो मा ज्योतिर्मय' को लेकर पूत पताका
वैदिक विज्ञान विभा से लेकर ही बिदाई राका
जागृति-सन्देश-सृजन से शिवरात्रि तृप्ति बरसावे
प्रिय पावन 'प्रणव' पिता की मधु मिलन प्रभाती गावे।

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए०, फीरोजाबाद

## ★ ★ ★ —निराली निशा— ★ ★ ★

ऋषिवर तेरी निशा निराली आई ···
कर्षण जी ने शिव दर्शन का दृढ़ विश्वास दिलाया
अल्प वयस्क बालक व्रतधारी को उपवास कराया
जागरण मे आवरण की झलक पलक में पाई ·····
गरिमा गान गुणो का गाता जग जिसका बहु वाणी से
स्वरक्षा मे समर्थ नहीं वह तुच्छतम भी प्राणी से
मूसा मौज उड़ाते ऊपर निरख निराशा छाई··· ·
व्रती वीर बन बन वन विचरा शिव सच्चा बतलाया
ब्रजानन्द परिव्राजक पाकर दयानन्द कहलाया
घोर अंधेरी भागी जागी ऊषा की अरुणायी ·· ··
रव स्वराज्य का प्रथम प्रणेता प्रखर शूर सैनानी
सत्य प्रकाश में स्वर्णाङ्कित है जिसकी अमर कहानी
बिमल विचारों बिखरी नूतन तन मन में तरुणायी···
अमर शान्ति के कान्ति दूत हे बदलो अपनी आसन
बने विभूषित वेश देश का दूर हटे दुःशासन
चीर हरण का स्वाद चिखा दो चुप क्यों कुंवर कन्हाई···
भूल के भी 'मूल' धूल के झुकना नहीं सिपाही
त्रिशूल से तुम रक्षा करना रुकना कभी न राही
दम्भ द्रोह के द्वार दमन की दुंदुभि देय सुनाई···
ब्रह्म विद्या ब्रह्मचर्य व्रत वनस्थली वह वृन्दावन है
निर्मल नीर निकुंज पर पुञ्ज प्रकाश का शुभागमन है
छोड़ झमेला आय मेला दो दिन का है भाई ··
सम्मिलन मे सभी समाहित शिव नरदेव मिलेंगे
उर उपवन मे अन्त वसन्त से सुरभित सुमन खिलेंगे।
कोयल कूक कूक कलियों को देगी बिहस बधाई···
वेद दयानन्द के दीपक मे बने हमारी बाती
मन मदिर में अलख जगावे शुचि शकर शिवराती
बजे वेद की विशद विश्व में मोहन मधु शहनाई...

—मदनमोहन एडवोकेट मोंठ (झांसी)

# स्व. डा. सम्पूर्णानन्द

स्व० डा० सम्पूर्णानन्द

लगभग दो मास हुए कि देश से एक ऐसा व्यक्तित्व उठ गया जो शून्य से सत्ता तक आते-आते अपनी अलौकिक बहुमुखी प्रतिभा के कारण भारतीय राष्ट्र के शीर्षस्थ विचारकों की शृंखला की कड़ी बन गया है। यह विश्व इन्द्र लोक से भी अधिक सुखदायक होता यदि मनोकामनाओं को पूरा करने वाला कल्पवृक्ष यहीं कहीं होता ! पर हम सब इस लोक की नियति से अभिशप्त हैं; अभिशप्त हैं इसलिए अभिशाप के दायरे में ही भटकते हैं। और इस अभिशाप का एक भाग है—यादें।

तो याद आ रही है लखनऊ की। सन् ..सभवत. १९५८। 'मासो मार्गशीर्षानां···' के आधार पर प्रतिवर्ष आयोजनीय 'गीता जयन्ती' के पुण्य समारोह पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित थे माननीय डॉक्टर सम्पूर्णानन्द। इस विशिष्ट अतिथि ने उस विशिष्ट अवसर पर एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया। गीता पर मौलिक विचार ? जी हाँ, 'गीता रहस्य' 'गीता मर्म' और 'गीता भाष्य' की परम्परा मे मौलिक विचार। 'गीता' हिन्दू संस्कृति का आधार स्तम्भ और उस आधार स्तम्भ की जयन्ती का व्यापक समारोह, पर डाक्टर साहब कह रहे थे—मुझे दुःख होता है यह देख कर कि जयन्ती गीता की मनायी जा रही है। गीता की जयन्ती मनाना तो मूल को छोड़कर फल और फूल को सींचने का प्रयास करने के समान है। 'गीता' तो फल है, मूल है वेद। 'एकै साधे सब सधै।' जयन्ती तो वेद की मनानी चाहिए, गीता तो यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के दो मन्त्रों की व्याख्या मात्र है। मन्त्र हैं—

ईशावास्यमिद सर्वं
यत्किंचित् जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा
गृध कस्य स्विद्धनम्॥

इस भू-मण्डल के कण-कण मे ईश्वर व्याप्त है, ऐसा मानकर यहाँ के पदार्थो का त्याग-भाव से उपयोग करो, उसमे लिप्त मत होओ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि
जिजीविषेच्छत ँ समाः।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति
न कर्म लिप्यते नरे॥

निस्सग भाव से कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते···' वाला गीता का श्लोक इस वेदमंत्र की छाया ही तो है। उस वेद के महत्त्व की आप जरा कल्पना करें जिसके मात्र दो मन्त्रों पर गीता जैसे ग्रन्थ का प्रणयन हो सका। वह वेद ज्ञान का अक्षय भण्डार है, उस भण्डार की रक्षा आवश्यक है। गीता तो उस भण्डार की एक मयूख-मात्र है। वह भण्डार सुरक्षित रहे, उसका पठन-पाठन हो, अध्ययन-अध्यापन हो, शोध हो, इसकी आवश्यकता है।

भारतीय सस्कृति के आद्य ग्रन्थ वेदो पर उनकी अगाध श्रद्धा थी। पर यह श्रद्धा भावुकतावश या आप्त वचनो पर अंध श्रद्धा के कारण न थी। इस श्रद्धा का आधार था उनका मौलिक चिन्तन। वे विज्ञान के स्नातक थे, सम्भवतः इसी कारण उनकी चिन्तन पद्धति मे वैज्ञानिकता घुल गई थी। किसी बात की तह मे जाना उनका निसर्ग सिद्ध स्वभाव था। उनके इस स्वभाव ने ही कृती सम्पूर्णानन्द से 'गणेश' जैसी कृति की रचना कराई। प्रसग है कि एक बार देवताओ में विवाद छिड़ा कि सब से बड़ा कौन है ? अब इसका निर्णय कैसे हो ? नाइयो की बरात सभी तो ठाकुर। कोई किसी से कम नहीं। सब अपने-अपने बड़प्पन का स्मरण करें। निदान एक प्रतियोगिता के आधार पर निश्चित हुआ कि गणेश जी बड़े हैं। और उन्हें बड़ा स्वीकार किया तो ऐसा किया कि हमारे आज के हर कार्य का प्रारम्भ 'गणेश पूजा' से ही होता है। किसी काम को प्रारम्भ करने का ही दूसरा नाम पड़ गया 'गणेश पूजा' या 'श्रीगणेश' करना।

## जीवन-ज्योति

डॉक्टर साहब ने इस पर विचार किया। भारतीय जन-जीवन मे व्याप्त गणेश के इस बडप्पन को विज्ञान के इस स्नातक ने इतिहास मे टटोला और इतिहास के उस अथाह सागर मे जो तथ्य उनके हाथ लगे वे परम्परा के सस्कारो मे पले हुए सामान्य जन-मानस को चौंका देने के लिए पर्याप्त थे। उन्होंने बताया कि गणेश मूल रूप मे आर्य देवता नहीं है। यह सास्कृतिक सश्लेषण की प्रक्रिया स्वरूप गृहीत हैं। 'गणेश के प्रतीकात्मक स्वरूप मे उनकी महत्ता निहित है। उनके मस्तक पर सूंड की कल्पना की गई है जो हाथ यानी कर्म का प्रतिनिधित्व करती है। देवताओं मे गणेश को बडा इसलिए माना गया है, क्योंकि वे बुद्धि व कर्म मे समन्वय के प्रतीक हैं। मात्र बुद्धि विलास भोग-विलास सदृश ही है, और बुद्धि से असबद्ध कर्म अर्थहीन है।

यादों का सिलसिला जारी है तो याद आ रहा है। भारतीय संस्कृति के सश्लेषणात्मक स्वरूप पर उनका विचार। लोग कहते हैं, भारतीय संस्कृति भगवती भागीरथी की पावनी धारा है जिसमें छोटी और बड़ी अनेक प्रकार की नदियाँ आकर मिलती हैं और मूल धारा को पुष्ट और सम्पन्न बनाती हैं। 'इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो। दोऊ मिलि जब एक बरन भए सुरसरि नाम परो।' डॉक्टर साहब की व्याख्या ध्यान देने योग्य है।

*प्रो० रवीन्द्र अग्निहोत्री,
वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर

उनके विचार मे गगा पवित्र धारा है, उसमे नदियो को ही मिलने दीजिये, गन्दे नालो को मिलाकर पवित्र गगा को अपवित्र मत कीजिये। दूसरी बात, गगा मे कौन-सी नदियाँ मिलती है ? रामगगा मिलती है, यमुना मिलती है, गोमती मिलती है, सोन मिलती है, मीलो का चक्कर काटकर आती हुई ब्रह्मपुत्र भी मिल जाती है, पर नर्मदा नहीं मिलती। क्यो ? क्यों कि इनका बहाव गगा की ओर नहीं। जिन नदियो का बहाव गगा की ओर है, वे ही गगा मे मिलती है। भारतीय सस्कृति भी इसी रूप मे सश्लिष्ट है। उसमे अनुकूल तत्वो का समावेश है और सश्लेषण है पर प्रतिकूल तत्वो को वहाँ कोई स्थान नहीं है।

सम्भवतः बहुत कम लोगों को पता हो कि वाग्देवी की आराधना उन्होंने एक कवि के रूप मे प्रारम्भ की थी। उनकी कविताओ के विषय प्राय देशभक्ति और भक्ति भाव होते थे। गोखले की मृत्यु पर उनके उमड़ते भावों ने जिस कविता का रूप लिया था वह सम्भवतः उनकी पहली प्रकाशित कविता है। नवनीत के फरवरी सन् १९१५ के अङ्क मे प्रकाशित उस कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार थीं—

'देशभक्त देहावसान,
स्वार्थ त्यागि अनन्य कीन्हो,
जाति के हित काज।
ईश संग सम्पूर्ण आनन्द
परि करहिं स्वराज॥'

पर बाद में उन्होंने कविता के स्थान पर गद्य को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और तब वेद से लेकर इतिहास, समाज शास्त्र, ज्योतिष विज्ञान आदि सभी को उनकी प्रतिभा ने अपने में समेट लिया। उनका बौद्धिक धरातल बहुत ऊँचा था, इसीलिए गम्भीर विषयो के वे अद्वितीय लेखक और चिंतक थे। उनकी लेखनशैली गम्भीर, विचार प्रधान और पाण्डित्यपूर्ण होते हुए भी सुगम थी।

लेखक और विचारक के रूप मे सम्पूर्णानन्द जी की प्रतिभा निःसंदेह बहुमुखी थी। जब वे 'कर्मवीर गांधी' और 'महाराज छत्रसाल' जैसी कृतियां रचने लगे तो उन्होंने कथा साहित्य के अनुरूप शैली अपनाई। जीवनी-साहित्य लिखने की ओर प्रवृत्त होने पर हमे 'हर्षवर्द्धन' और 'सम्राट अशोक' जैसे ग्रन्थ मिले। उनके अपने संस्मरण बहुत रोचक हैं जिनमे जहां-तहां हास्य का भी पुट है। मुझे तो ऐसा लगता है कि संस्मरणात्मक लेखों में ही उनकी भाषा बहुत निखरी है। 'जेल संस्मरण' में बन्दियो की 'तिकड़म' इसका उत्तम उदाहरण है।

उनके वैज्ञानिक और साहित्यिक व्यक्तित्व का संगम हमें पृथ्वी के सप्तर्षि मण्डल' और अन्तरिक्ष यात्रा' में मिलता है। उनका विज्ञान कला का विरोधी नहीं बल्कि उसी का एक अंग है। इसी से उनके बौद्धिक समन्वय का परिचय मिलता है। सौंदर्यानुभूति पर उन्होंने जो विचार व्यक्त किये हैं वे आत्मानुभूति का ही फल हो सकते हैं। जरा ध्यान दीजिये, " ····सौंदर्य का सच्चा अनुभव योगी को ही हो सकता है। अविद्या के क्षय होने पर भेदवृत्ति नष्ट हो जाती है और एक अद्वय, अखण्ड, चित्सत्ता अपनी लीला का संवरण करके अपने आपको साक्षात्कार करती है। उसका स्वरूप परमानन्द है।"

राजनीति मे प्रवेश करने पर वे समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हुए। तभी उन्होंने 'समाजवाद' शीर्षक ग्रंथ का प्रणयन किया था। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने इस पर 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक देकर इसे सम्मानित किया था। भाषा और विषयवस्तु की दृष्टि से इसकी गणना उच्चकोटि के राजनैतिक साहित्य मे होती है। स्पष्टोक्ति व विचार-प्रधान लेखन के लिए उनकी ख्याति का आधार यही पुस्तक थी। 'अन्तर्राष्ट्रिय विधान' ने उनकी इस ख्याति को सुदृढ़ बनाया। उनकी समाजवादी विचारधारा ने ही उन्हे स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्रदेव जी के साथ मिलकर कांग्रेस के अन्दर ही 'भारतीय समाजवादी कांग्रेस' की स्थापना के लिये प्रेरित किया था अपने मन की बात कहने में वे किसी लोभ या दबाव से झिझक नहीं सकते थे। इसका अपूर्व उदाहरण है 'ब्राह्मण सावधान'। काशी जैसे ब्राह्मण गढ़ मे बैठकर उन्होने तीन लोक से न्यारी काशी को नितान्त सुरक्षित स्थान मानकर ही तार्किक ढंग से एवं अनुपम निर्भीकता से ब्राह्मण समाज को चेतावनी दी और भारतीय समाज में घुन की तरह व्याप्त 'वर्ण-व्यवस्था' की तीव्र कटु आलोचना की। आलोचना का एकमात्र आधार सदाशयता एवं देशभक्ति ही था।

उनके व्यक्तित्व का एक अपेक्षाकृत कम परिचित अनुद्घाटित

( शेष पृष्ठ १२ पर )

# सुझाव और सम्मतियाँ

## यदि आर्यसमाज की उन्नति चाहते हैं . . . . .

★डा० चन्द्रपाल आर्य
जनकनगर, सहारनपुर

इस विषय पर कई विचार गत आर्यमित्रों में प्रकाशित हुए हैं। मैंने भी विचार किया और यह विचार आर्यमित्र के पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत कर रहा हूं।

१—कुछ व्यक्ति जो किसी पार्टी (राजनीतिज्ञ) से सम्बन्धित हैं, या केवल आर्यसमाज मन्दिर तक ही आध्यात्मिकता का भाव अपने मन में रखते हैं उनका बहिष्कार करना होगा। अर्थात् जो स्वार्थवश आर्यसमाज के हितों को चोट पहुचाता हो उसे पृथक करना होगा।

२—प्रत्येक पदाधिकारी को जो नियुक्त किया जाए सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा संचालित परीक्षा को उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा।

३—आर्यसमाज के रजिस्टर में कम से कम उनका नाम लिखना चाहिये जो आर्यसमाज के नियम, सन्ध्या व यज्ञादि करता हो।

४—महिला, स्त्री आर्यसमाज पृथक नहीं होनी चाहिये अपितु आर्यसमाज मे ही स्त्रियां आएं और सम्मिलित हों, जिससे सत्संग प्रभावी, लाभप्रद बन सकें। पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने सभी धार्मिक ग्रंथो मे लिखा है कि पति-पत्नी सत्संग बैठ कर यज्ञादि कर्म करे। यदि हम स्त्रियों को अलग और हम स्वयं अलग यज्ञादि करेंगे तो हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के विपरीत दिशा में चलेंगे। अत महिला या स्त्री आर्य समाज पृथक न हो। केवल एक ही आर्यसमाज हो जिसमे स्त्री पुरुष सब आएं।

आर्यकुमार सभा अवश्य पृथक होनी चाहिये। क्योंकि आर्यसमाज मे केवल विवाहित स्त्री पुरुष जाएं और कुमार बालक आर्यकुमार सभा या आर्यवीर दल में जाएं। कुमार सभाओं के सत्संग में वानप्रस्थी या सन्यासी आने चाहिये जो कि उन्हें सत् उपदेश दें।

५—आजकल जो पदों के ऊपर झगड़े हो रहे हैं। इसे समाप्त करना चाहिये। परन्तु इसके समाप्ति का यही एक उपाय है कि पदो को योग्यतानुसार दिया जाये। ऐसा न हो कि प्रधान वह व्यक्ति बन जाए जिसे यह भी पता न हो कि आर्यसमाज क्या है? सत्यार्थ प्रकाश क्या है? चाहे वह कितना ही धनी, एम०पी० या एम०एल०ए० हो। जो व्यक्ति वेदों को जानता हो या कम से कम उपनिषद आदि पढ़ी हो उसे ही प्रधान मन्त्री पद देने चाहिये।

योग्यता का चुनाव न० २ में लिखी पद्धति के अनुसार भी किया जा सकता है। जो व्यक्ति उच्च परीक्षा उत्तीर्ण किए हो उसे प्रधान आदि पद दिए जाए। इस प्रकार पद के ऊपर जो लड़ाई झगड़े रोज सुनने में आते हैं, वह न आयेंगे।

६—आर्यसमाजों के साथ जो शिक्षा संस्थाएं लगी हैं या तो उन्हें पृथक कर दिया जाय या उनमें नया आध्यात्मिक मोड़ लाना चाहिये। पिछले वर्ष गिल कालोनी मे आर्य कन्या पाठशाला के मैदान मे बसन्तोत्सव मनाया जा रहा था, वहा पर मैं भी गया जो कुछ मैंने देखा यहां वर्णन नहीं किया जा सकता। क्योंकि एक लड़की पेन्ट कोट पहन कर नाच रही थी। टाई भी लगाए हुए थी। क्या यही आर्य सभ्यता है? हम दूसरों को दोष देते हैं, परन्तु कमी यह है कि हम अपने को नहीं देखते क्या इस प्रकार हमारी उन्नति हो सकती है?

हमें उनका भी बहिष्कार करना होगा जो आर्यसमाज मन्दिर मे टाई बांधकर सत्संग मे आते हैं। और आर्यसमाज की सभी शिक्षा-संस्थाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा

(शेष पृष्ठ १० पर)

# आर्यसमाज का उद्देश्य

( गताक से आगे )

१०—बम्बई निवासी रायबहादुर दादुबा पाण्डु रग जी तथा समस्त देशवासी अनेक भक्तजनो के आग्रह को मानकर तथा अपनी धर्मप्रचार, देश सुधार और वैदिक धर्मोद्धार विषयक प्रगतियो को सुनिश्चित् और चिरस्थायी रूप देने के लिये, श्री महर्षि जी ने चैत्रसुदी पचमी सवत् १९३२ विक्रमी मे शनिवार के दिन, बम्बई नगर के गिरगांव नामक मोहल्ले मे आर्य समाज की स्थापना की। उस समय आर्यसमाज के २८ नियम निर्धारित किये गये थे। इनमे नियम और उपनियम मिलेजुले थे। पीछे लाहौर मे सशोधन करके श्री महर्षि जी ने नियमों और उपनियमों को पृथक् पृथक् कर दिया था।

११—आर्यसमाज की स्थापना मे महर्षि जी के सामने एक ही उद्देश्य था—समस्त हिन्दू जाति के लिये एक ही धर्म की व्यवस्था करना, विभिन्न मत-मतान्तरो मे विभक्त जनों को एक ही सत्य, सनातन और सार्वभौम वैदिक-धर्म में दीक्षित करना, अखिल विश्व मे विशुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रसार करते हुए प्रगाढ़ भ्रातृभाव का प्रसार करना। उन्होंने हिन्दुओं के उन सम्पूर्ण बन्धनों और रूढ़ी रूप मे प्रचलित रस्म-रिवाजों को तोड़ने की प्रबल प्रेरणा की, जिसके कारण धर्म को ढोंग के रूप मे परिवर्तित कर दिया गया था। उन्होंने हिन्दुओ मे उच्च भावना का सचार करने के लिये वह वैज्ञानिक प्रणाली निकाली, जिससे दब्बू कहलाने वाले हिन्दू बलवान और महान् बनें। और हिन्दुओं की छोटी कहलाने वाली जातियों, उपजातियों एव श्रेणियों को ऊपर उठने और आगे बढ़ने का अवसर मिले। कार्य प्रणाली का निश्चय हो जाने के बाद आर्य समाज की स्थापना उनका एक बहुत ही उचित, आवश्यक और स्वाभाविक कदम था। भारतीय जनता के मानदण्ड को ऊँचा करने के लिए आर्य समाज का सहयोग अत्यन्त चमत्कारपूर्ण है।

१२—महर्षि दयानन्द जब तक जीवित रहे, तब तक वे वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये अत्यन्त जागरूक और प्रयत्नशील बने रहे। अपने जीवन-काल मे ही उन्होने अपनी मानवता हितैषिणी प्रगतियो को पूर्ण करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आर्यसमाज को सौंप दिया था। प्रभु की कृपा से अपने कार्यो को फूलते-फलते हुए देखने का अवसर भी उनको मिल गया था पजाब मे अपने मन्तव्यो का प्रसार करनेमे मे जो असाधारण सफलता उन्हें मिली थी, उस पर उन्होने अपना पूर्ण सन्तोष प्रकट किया था। भारत के सभी प्रदेशों और सभी वर्गों मे उनका प्रभूत सम्मान किया जाता था। अमेरिका, जर्मनी, इग्लैण्ड और फ्रास प्रभृति देशो के गण्य-मान्य विद्वानों से उनका मित्रतापूर्ण पत्र-व्यवहार होता था, जो कि अब पुस्तक रूप मे भी छप चुका है। उसके देखने से ज्ञात होता है कि वे आर्य समाज को महान् अन्तर्देशीय आन्दोलन का रूप देना चाहते थे। और विदेशी विद्वानो के सहयोग से कला-कौशल के क्षेत्रो में भी भारत को विशेष प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

१३—भारत मे तो आर्यसमाज की धूम मची ही, परन्तु विदेशो मे भी आर्यसमाज की लहर श्री महर्षि जी के जीवन-काल मे ही पहुच गई थी। जिन दिनों भारत मे आर्य समाज की स्थापना हुई, उन्हीं दिनों कर्नल अल्काट साहब और मैडम बल्वेस्टकी ने मिलकर अमेरिका मे "थ्योसोफिकल-सोसाइटी" अर्थात् "ब्रह्म विद्या प्रचारिणी सभा" की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द जी का देर तक अमेरिकन बन्धुओ के साथ पत्र-व्यवहार चलता रहा था। मेडम बल्वेस्टकी एक रूसी महिला थी। वह कुछ काल तक तिब्बत मे रहकर, यूरोप के देशो की यात्रा करके अमेरिका गई थी। गम्भीरतापूर्ण पत्र-व्यवहार के पश्चात् थ्योसोफिकल सोसाइटी को आर्यसमाज की एक शाखा बना दिया गया था और वैधानिक रूप मे इसकी सार्वजनिक घोषणा भी कर दी गई थी। फिर महर्षि दयानन्द जी के दर्शन और विचार-विमर्श एव भारत भ्रमण करने के लिए वे दोनो भक्त भारत मे पधारे थे। महर्षि जी से उनकी प्रथम भेंट मेरठ नगर मे हुई थी। उस अवसर पर एक विज्ञापन प्रकाशित करके श्री महर्षि जी ने भारत भर के आर्यसमाजो से अनुरोध किया था कि उन दोनों अतिथियों का सर्वत्र ही स्वागत किया जाये।

१४—एक वार काशी मे जब महर्षि दयानन्द जी का भाषण होने वाला था, तब पौराणिकों ने दगे फिसाद की बात बनाकर सरकारी अधिकारियो से उसका निषेध करवा दिया था। तब उस सभा मे कर्नल अल्काट महोदय ने "मूर्त्ति-पूजा खण्डन" विषय पर बहुत प्रभावशाली भाषण अग्रजी मे दिया था। उसका अनुवाद साथ ही साथ श्रोताओ को सुनाया गया था। दूसरे दिन सरसैय्यद अहमद खा प्रभृति सज्जनों के प्रयत्नों से वह सरकारी निषेधाज्ञा वापिस ले ली गई थी और प्रतिदिन महर्षिजी की उपदेश गगा अबाध गति से बहने लगी थी। सर सैय्यद अहमद खा महर्षि दयानन्द जी के एक अत्यन्त प्रेमी भक्त और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्थापक थे। उन दिनो वे काशी मे सिविल सब जज अर्थात् मुन्सिफ के पद पर नियुक्त थे। "थ्योसोफिकल सोसायटी" वालो से कुछ गम्भीर सिद्धान्त-भेद प्रगट होने पर महर्षि जी ने उसकी आर्यसमाज की शाखा होने की मान्यता वापिस ले ली थी।

१५—महर्षि दयानन्द जी के जीवन मे एक विशेष मस्ती भरा उत्साह था। उनकी लेखनी मे बल वाणी में ओज, व्यक्तित्व में प्रभाव और जीवन में अद्भुत आकर्षण था। अपने जीवन मे ही उन्होंने आर्य समाज के प्रचारार्थ बहुत से कर्त्तव्य परायण कार्य कर्त्ताओ, सुयोग्य विद्वानो, उदार हृदय दानी सज्जनो तथा सच्चे सेवकों और अनुयायियो की बहुत बडी सख्या अपने नेतृत्व मे एकत्रित कर ली थी। मुनिवर श्री पडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम ए, श्री पडित भीमसेन जी शर्मा, श्री पण्डित लेखराम जी आर्य मुसाफिर, श्री कन्हैयालाल जी अलखधारी, जस्टिस रानाडे, महात्मा मुन्शीराम वकील जो बाद मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी बने, एव और भी बहुत से सज्जनों ने श्री महर्षि जी के दर्शनो और उपदेशो से कृतार्थ होकर अपनी-अपनी लोकोपकारक प्रगतियों को आरम्भ किया था। आर्यसमाज का जो विस्तार उत्कर्ष और सुदृढ़ सगठन इस समय देखने मे आ रहा है, यह सब महर्षि जी के उन सब प्रेमी भक्तो और अनुयायियो के पुण्य-पुरुषार्थ का ही परिणाम है।

★श्री प० जगत्कुमार शास्त्री
'साधु सोमतीर्थ' देहली

१६—आरम्भ-आरम्भ मे आर्य समाज को बहुत अधिक सघर्ष करना पडा था। पद-पद पर विरोध होता था। स्वार्थी वर्ग बाधायें डालते थे। अज्ञानी लोग आर्य समाज के विषय मे अनेक प्रकार के भ्रम-प्रचार करते थे। भोली-भाली जनता के लिए आर्य समाज के विरुद्ध रूप को देखना और उसके कल्याणकारी परिणामो को आकना तब कठिन हो रहा था। जिन-जिन बातो के लिये तब आर्यसमाज का भारी विरोध किया जाता था, आज तो उन सब को हमारे विरोधी वर्गों ने भी सहर्ष अपना लिया है। आज तो नई पीढ़ी के नव-युवकों के लिए यह स्वीकारने मे भी कठिनाई होगी कि किसी समय जब आर्यसमाज ने एकेश्वरवाद, स्त्री-शिक्षा, गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली, छूत-छात निषेध, शुद्धि, बाल-विवाह निषेध, वृद्ध-विवाह निषेध, विधवा विवाह विधान, समुद्र-यात्रा, आ-

भाषा, स्त्रियो और शूद्रो के वेदाध्ययन, ईसाइयो और मुसलमानो के वैदिक धर्म प्रवेश, कर्मण. वर्ण प्रभृति जग मगलकारी अनुष्ठान आरम्भ किए थे, तब आर्य समाज का भारी विरोध किया गया था। इनके विषय मे शास्त्रार्थ भी होते थे। लेख और ग्रथ भी खण्डन मण्डन मे लिखे जाते थे। इन कार्यों के लिये आर्य समाजियो का सामाजिक बहिष्कार भी किया जाता था।

१७—आज जो परिवर्तित परिस्थितियाँ हमारे सामने हैं, इनके निर्माण के लिये आर्य पुरुषों द्वारा बहुत बड़ा पुरुषार्थ किया गया है। आज की परिस्थिति, जब कि आर्य समाज के प्रायः सभी सिद्धान्तों और मन्तव्यों को भारतीय जनता ने किसी न किसी रूप मे स्वीकार कर लिया है, निस्सन्देह वे आर्य समाज के लिये एक बहुत बड़ी विजय की सूचक है। यह विजय महर्षि दयानन्द और उनके सिद्धातो की विजय है। विश्वासो, मन्तव्यो रस्म-रिवाजों और अर्थवादो की दुनिया मे आर्य समाज ने बहुत थोड़े समय मे ही अद्‌भुत क्रान्ति प्रस्तुत करदी है। भारतीय समाज सुधार आन्दोलन का सम्पूर्ण इतिहास आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास का ही एक अध्याय है। भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का इतिहास आर्य समाज द्वारा प्रस्तुत भूमिकाओ के आधार पर ही लिखा गया है। भारत के क्रान्तिकारियो ने आर्य समाज से प्रेरणा प्राप्त करके ही अपने अद्‌भुत चमत्कार दिखाये थे।

१८—भारतीय शिक्षा-प्रसार आन्दोलन का नेतृत्व तो आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही करता चला आता है। भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे आर्य समाज का अत्यन्त सराहनीय योगदान रहा है। देशभक्ति के अपराध मे जेल जाने और कष्ट उठाने वालो मे आर्यसमाजियो की सख्या सर्वाधिक थी। देश-भक्ति के नशे मे मस्त होकर फाँसी की रस्सी को चूमने वाले महावीरो मे भी आर्य समाजियो की सख्या अत्यन्त सराहनीय है। स्वतन्त्र भारत के राजनीतिक प्रबन्ध मे भी आर्यजन आगे-आगे हैं। साहित्य-निर्माण, पत्रकार-जगत् हिन्दी-भाषा प्रसार, गो-रक्षा-आन्दोलन और विदेशी शक्तियों के प्रहारो से भारतीय सीमाओ के सरक्षण कार्यों मे भी आर्य पुरुष प्रशसनीय सजगता के साथ अपना योगदान दे रहे हैं। भारत के नव-निर्माण मे जनता का नेतृत्व आज भी आर्य समाज के ही हाथ मे है। क्योंकि आर्य समाज का सगठन बहुत उत्तम है। घर-घर और जन-जन तक अपना सन्देश पहुचाने मे आर्य समाज पूर्ण समर्थ है। सहायता, सरक्षण, कष्ट निवारण त्याग, तप और बलिदान के सभी प्रसगो मे आर्यसमाज सदा ही आगे आगे रहा है।

१९—एक बार भारत की विदेशी गोरी सरकार ने आर्य समाज को अपना प्रबल शत्रु समझा था। तब उसने अपने पाशविक बल से हमको मिटाना चाहा था। वह अत्याचारी गोराशाही आज कहा है? फिर एक बार आर्य समाज ने डट कर पटियाले मे सिक्खाशाही का सामना किया था, और पूर्ण विजय प्राप्त की थी। फिर एक बार धौलपुर मे भी आर्यसमाज को सत्याग्रह का बिगुल बजाना पड़ा था। फिर सन् १९३९ ई० मे हैदराबाद दक्षिण की निजामशाही को पछाड़ने मे आर्य समाज ने अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। फिर सिन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए भारत विभाजन की दुर्घटना से कुछ ही काल पूर्व, आर्य समाज ने अपने त्याग, तप, और बलिदान और धर्म प्रेम का ऐतिहासिक परिचय दिया था। आज भी आर्य समाज मे वही उदात्त भावना जागृत है, जो कि इसे अपने महान् प्रवर्त्तक से उत्तराधिकार मे प्राप्त हुई थी। त्याग, तप, सेवा और बलिदान के अवसरो मे पीछे रहना तो हमारा आर्य समाज जानता ही नहीं।

२०—भारत के विभाजन स्वरूप आर्यसमाज को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी है। हमारे वर्षों के कार्य पर भारतीय राजनायको की अन्दोज की गलती से पानी फिर गया है। चोट बिल्कुल नई है। फिर भी आर्य समाज सम्भल चुका है। देश के प्रगतिशील तत्त्वो का नेतृत्व आज भी आर्य समाज के हाथो मे सुरक्षित है। यहां मै आर्य भाइयो को यह भी सूचित कराता हू कि ससार ने आर्यसमाज से बहुत-सी आशायें कर रखी हैं। हमें चाहिए कि यथा शीघ्र ही उन आशाओं को पूर्ण करें। भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों मे शामिल होकर राग-द्वेषपूर्ण कार्यों मे आर्य समाज की शक्तियों को उलझाना आर्यों के लिये उचित नहीं है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिये आर्य समाज से विद्रोह करना तो निन्दनीय भी है।

२१—हमारे महर्षि ने लिखा भी था:—

"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू कि जो तीन काल मे सब को एक-सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसी को मानना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। [सत्यार्थ-प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश]

२२—हमारे महर्षि जी मानवता की व्याख्या इस प्रकार करते है.—

"मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् दूसरो के सुख-दुःख और हानिलाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे, और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सब सामर्थ से धर्मात्माओ की, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणहीन क्यों न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण, और अधर्मी चाहे प्रबल, चक्रवर्ती, समर्थ, महाबलवान् गुणवान् भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति, और अप्रियाचरणसदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके, वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य-पन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवें।"

[सत्यार्थ-प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश]

## निमन्त्रण

२३—आओ हम भी आर्य समाज के सभासद् बनें, क्योंकि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(पृष्ठ ८ का शेष)

की ओर से १ व्यक्ति जो प्रत्येक शिक्षा संस्थाओं में घूमता रहे और निरीक्षण करता रहे, अवश्य होना चाहिये। कम से कम वर्ष मे दो बार निरीक्षण अवश्य होना चाहिये। तभी हम अपने उद्देश्य को फलीभूत देख सकते हैं।

७—प्रत्येक आर्य समाज को वार्षिकोत्सव अवश्यमेव मनाना चाहिये। चाहे वह छोटे रूप में हो। वार्षिकोत्सव पर सन्यासी गण अवश्य निमन्त्रित किए जाएं।

आजकल विज्ञान का युग चल रहा है। प्रचार मे भी मोड़ अवश्य आना चाहिये। १ दिन या २ दिन म्यूजिक लालटेन से भी प्रचार किया जाए तो अच्छा रहेगा।

८—हमें आपसी मतभेद मिटाने होंगे। शिवरात्रि के रोज सभी सम्मिलित भोजन करें, ऐसी प्रथा हमे डालनी चाहिये। हमे अभी से सदस्यता अभियान पर जोर देना चाहिये। आगामी वर्ष परीक्षाओं मे कम से कम चार गुने परीक्षार्थी तैयार करने चाहिये। आर्यसमाज का शताब्दी समारोह शीघ्र ही आ रहा है। इसलिए हमे सदस्यता अभियान जोरों से चलाना चाहिये शुद्धि प्रचार अवश्य होना चाहिये। हम सब का कर्त्तव्य है कि एक वर्ष मे कम से कम १ सदस्य की वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार आर्य समाज का कार्य आज से दुगना हो जायगा। और हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सार्थक कर सकेंगे।

# धार्मिक समस्याएं

## यदि यह न हो तो अच्छा है

★श्री 'कण्व' विद्यार्थी, बरेली

आज आप शीर्षक देख कर चौंक पडे होगे, अर्थात् आश्चर्य मे पड़ गये होंगे, परन्तु आश्चर्य की कोई बात नहीं है। अभी कुछ समय पूर्व महान् वैदिक रिसर्च स्कालर श्री आचार्य विश्वश्रवा. व्यास (एम ए. वेदाचार्य) जी का एक लेख हैदराबाद मे हुये दशम् आर्य महा-सम्मेलन में अखरने वाली चार बातों के सम्बन्ध मे पढ़ा, जिसमे आचार्य जी लिखा था कि यदि यह न होता तो अच्छा था। ठीक इसी प्रकार यदि वह चार बातें अच्छी नहीं थी तो मैं भी कुछ बातें आर्य जगत् के विद्वानो के समक्ष ही नहीं अपितु आर्य समाजों के कार्यकर्त्ताओं के समक्ष भी रख रहा हू और उनसे करबद्ध निवेदन कर रहा हू—

'यदि यह न हो तो अच्छा है।'

प्रत्येक रविवार को समस्त आर्य समाजो में प्रातः यज्ञ एव सध्या, वेद-पाठ, सत्यार्थ प्रकाश पाठ आदि कार्यक्रम चलता है इसके साथ ही कुछ प्रवचन भी हुआ करते हैं। १—बहुदा प्रात काल को यज्ञ, सस्कार विधि, से न होकर अन्य पुस्तकों से होता है, जो न हो तो अच्छा है।

२—प्रातःकाल के यज्ञ मे 'ईश प्रार्थना' के मन्त्र समस्त व्यक्ति बोला करते हैं और वह भी बिना अर्थ से जबकि 'सस्कार विधि' मे महर्षि ने 'ईश-प्रार्थना' मन्त्रों के प्रारम्भ में ही लिख दिया है कि इन मत्रों को केवल एक ही व्यक्ति बोले और अर्थ सहित बोलो। महर्षि के लिख देने के उपरान्त यह प्रथा आर्य समाजों मे प्रचलित क्यों?, यदि यह न हो तो अच्छा है।

३—बहुधा कुछ व्यक्ति मन्त्रों का उच्चारण अशुद्ध करते है, परन्तु हमारे विद्वान् पडित उनके उच्चा-रण को ठीक कराने के स्थान पर यह कहा करते हैं कि परमात्मा हमारी तोतली बोली पर उसी प्रकार प्रसन्न होता है जिस प्रकार माता-पिता बच्चे की तोतली बोली पर। यदि यह न हो तो अच्छा है।

४—बहुधा साप्ताहिक सत्संगों मे प्रवचन आदि होते हैं उनमे हमारे अधिकाश भाई अपने आपस के झगडे लेकर उनकी कथा सुनाने बैठ जाते हैं कि उसने मेरे साथ वह किया और मैंने उसके साथ यह किया आदि-आदि जब कि यह सब को विदित है कि साप्ताहिक सत्सगों मे वे व्यक्ति भी आया करते हैं जो आर्य विचारधारा के नहीं हैं तथा कुछ सीखना चाहते हैं, आर्यसमाज के सिद्धान्तो के विषय में, उनके ऊपर हमारी इन बातों का क्या प्रभाव पड़ेगा? यदि यह न हो तो अच्छा है।

५—अभी इसी वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर बरेली नगर मे आर्यसमाज मे सायंकाल को एक सभा की गई, जिसमें एक कवि महोदय को आमन्त्रित किया गया जिन्होंने ईश्वर के सम्बन्ध मे एक कविता प्रस्तुत की जिसके प्रारम्भ की पक्ति थी—

'निराकार भी तुम और साकार भी तुम।' इस पर उप-स्थित आर्य जनता ने कविता के अन्त मे तालिया बजाकर कविता का स्वागत किया। इसके उपरांत एक अन्य सज्जन ने आकर उनकी कविता की प्रशसा की। क्या यह होना उचित था? भविष्य मे यदि यह न हो तो अच्छा है।

६—पिछले वर्ष आर्य समाज (भूड) बरेली के वार्षिक उत्सव मे प्रातःकाल को हो रहे सत्सग मे एक भजनीक, जिनका आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं था, एक भजन सुनाने के लिए मच पर आये और उनका भजन समाप्त होते ही आर्य जनता ने उनका भारी स्वागत अपनी तालियों द्वारा किया, जबकि भजन का सार था कि 'जीवात्मा' 'परमात्मा' का ही एक अग है। यद्यपि इस पर हमारे पूज्य प० विश्वबन्धु: जी शास्त्री ने अपने प्रवचन में प्रकाश भी डाला था और यह सिद्ध किया कि परमात्मा का अश जीवात्मा नहीं है तथा उन्होंने उपस्थित आर्य जनता को इस सम्बन्ध मे फटकारा भी था, इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हू जबकि वे मुझसे आयु मे कहीं अधिक बडे हैं, यदि कोई अपराध हो तो वे क्षमा करें। परन्तु क्या इस प्रकार के भजनों का करवाना आर्य समाज की वेदी से उचित था? भविष्य मे यदि यह न हो तो अच्छा है।

७—एक आर्यसमाज मे हो रहे सत्सग मे एक सज्जन (सस्कृत मे एम. ए.) कहने लगे कि ऋषि लोगो को मास भक्षण करने का का निषेध नहीं है, वे लोग नि.स-कोच मास भक्षण कर सकते हैं उन पर कोई भी पाप नहीं लगेगा परतु साधारण मनुष्यों को मास भक्षण निषेध है। यद्यपि मैने अपने व्या-ख्यान मे इसका खण्डन किया तथा शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारा इसके साथ-साथ अधिकारियों को भी कुछ कटु शब्द कहने पडे। परन्तु क्या आर्यसमाज की वेदी से यह उचित था? भविष्य मे यदि यह न हो तो अच्छा है।

८—साप्ताहिक सत्सगों मे बहुधा कुछ व्यक्ति आर्यसमाज की बुराई करने बैठ जाते हैं और उसकी कमिया दिखाते हैं। क्या उनको इस धरती पर कोई और जगह नहीं मिली है कि वहा बैठकर वे आर्य समाज की निन्दा कर सकें? क्या वही स्थान वही वेदी, वही साप्ता-हिक सत्सग का समय तथा आर्य समाज के खुले अधिवेशन ही रह गये हैं जहा बैठकर वे आर्यसमाज की निन्दा करते हैं? यह तो सत्य है कि कुछ त्रुटियां हमारे अन्दर है उनको आपस में बैठकर दूर करलें। साप्ताहिक सत्सगों तथा अन्य खुले अधिवेशनों में ही यह वार्तालाप करने की क्या आवश्यकता है? भविष्य में यदि यह न हो तो अच्छा है।

९—बहुधा साप्ताहिक सत्सगों मे कुछ व्यक्ति आर्य विद्वानों की निन्दा करने बैठ जाते हैं। क्या यह उचित है? यदि उनके विचारो में कुछ मतभेद हो तो वे आपस में बैठकर उस मतभेद को दूर करलें। साप्ताहिक सत्सगो मे इस प्रकार के विरोध को प्रदर्शित कर सत्सग के वातावरण को दूषित करने की क्या आवश्यकता है? भविष्य में यदि यह न हो तो अच्छा है।

१०—बहुधा कुछ व्यक्ति जो पहले कॉग्रेसी, जनसघी आदि-आदि हैं तथा बाद मे आर्यसमाजी हैं वे अधिकाशतया आर्यसमाज के उत्सवों को दूषित कर देते हैं तथा अपनी पार्टी के विचारों के आगे आर्य विचारो का खण्डन कर देते हैं। इसका उदाहरण देना मैं उचित नहीं समझता। आशा है समाजों के उत्सवो के प्रबन्धक आदि इन रगे सियारों से सावधान रहेंगे, तथा आर्यसमाज के नाम पर कलक न लगने देंगे। भविष्य में यदि यह न हो तो अच्छा है।

११—आर्य समाज मे हो रहे सत्सग मे एक सज्जन कहने लगे कि हमारे प्राचीन ऋषि मुनि एक-एक हजार वर्ष की समाधि लगा लिया करते थे। इस पर मुझे अपने व्या-ख्यान मे इसका खण्डन करना पड़ा क्या आर्यसमाज की वेदी से इन मिथ्या बातो का प्रचार करना उचित है? यदि ऐसा है तो हम में और पौराणिकों मे अन्तर ही क्या रह गया? भविष्य मे यदि यह न हो तो अच्छा है।

१२—तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वह व्यक्ति जिसका आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध न हो उसको यह पावन वेदी जिसके लिए महर्षि ने विष के प्याले पिये थे, देना ठीक नहीं है। भविष्य मे यदि यह न हो तो अच्छा है। ●

## स्व० डा. सम्पूर्णानन्द

[ पृष्ठ ८ का शेष ]

टित पक्ष है उनके पत्रकारिता का। उन्होने कई पत्रो का सफल सम्पादन किया। सन् १९३५ मे वे काशी के समाजवादी दल के एक हिन्दी साप्ताहिक का सम्पादन करते थे। अग्रेजी 'टु डे' के भी वे सम्पादक रहे। पत्रकारिता के अनमोल स्तभ स्वर्गीय श्री विष्णुराव पराडकर जी के जेल जाने पर 'दैनिक 'आज' का भी उन्होने सम्पादन किया। 'जागरण' और 'मर्यादा' के भी वे सम्पादक रहे।

विचारो से वैज्ञानिक, वृत्ति से अध्यापक, व्यसन से राजनीतिज्ञ—उनके व्यक्तित्व मे इस त्रिवेणी का सगम था। गीता के अठारवे अध्याय से बियालीसवें श्लोक मे वर्णित ब्राह्मण के लक्षण मानो उनमे मूर्तिमान हो उठे थे—

क्षमो दमस्तप. शौच,
क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्य,
ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥

उनकी विद्वत्ता का आदर विद्या मानदण्ड के लिए विख्यात लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हे ससम्मान डी-लिट देकर किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हे 'साहित्यवाचस्पति' की उपाधि प्रदान की थी। पर वे इन उपाधियो से परे थे। वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय तथा काशी विद्यापीठ शिक्षा के क्षेत्र मे किए गये उनके अविस्मरणीय प्रयास हैं जो काल के पृष्ठ पर अमिट हस्ताक्षर बनकर रह गये है। गुप्त जी ने 'साकेत' मे भरत के लिए कहा है, 'सौ वार धन्य वह एक लाल की माई'। आज जैसे उस व्यक्ति की आवृति आवश्यक लग रही है। उस महान् व्यक्तित्व के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते समय एक विचार मन मे कौंध रहा है। राजनीति का लबादा ओढ़े उस इतिहासकार, दार्शनिक, समाज शास्त्री, ज्योतिषी, वैज्ञानिक को मृत कैसे मानें! 'कीर्तियस्य स जीवति'। भावनाओं की यह उलझन सुलझती नहीं दीखती। लगता है यह प्रसग अवसान प्राप्त नहीं करेगा, फिर तो यह पृष्ठ भी अधूरा ही रहेगा।

●

### ग्राम चरथांवल में २१५ ईसाइयो की शुद्धि

[ १ ]

श्री डालचन्द आर्य ने ग्राम चरथावल जि० मुजफर नगर मे एक शुद्धि समारोह का आयोजन किया, जिसमे मुजफरनगर आर्य समाज के मन्त्री श्री कृष्णलाल और बहुत से भाई बहन ट्रक भर कर पहुचे, और समारोह मे भाग लिया। देहली से श्री द्वारिकानाथ जी प्रधान मन्त्री शुद्धि सभा, श्री प्राणनाथ जी मन्त्री राजेन्द्रनगर आर्य समाज, श्री आशानन्द जी, श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, श्री हरिदत्त शर्मा, श्री दीपचन्द जी, श्री रामजीदास कलशाण आदि ने जाकर भाग लिया। सम्मेलन धूम-धाम से मनाया। अनेक विद्वानो के भाषण और भजन हुए। स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री आशिकलाल व ला० कबूलसिह का सराहनीय सहयोग मिला। शुद्धि सस्कार श्री हरप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया जिसमे २१५ ईसाइयो ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। ला० ताराचन्द जी आदि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति मुजफरनगर से पहुचे। ग्राम मे दो दिन तक वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। तत्पश्चात् सहभोज हुआ।

### ग्राम बोढ़ा ( मेरठ ) में २७३ ईसाइयो की शुद्धि

[ २ ]

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री इतवारीलाल आर्य ने दिनांक १६-२-६९ को ग्राम बोढा जि० मेरठ मे एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमे २७३ ईसाइयो ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि सस्कार श्री प० हरप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया। ग्राम मे २ दिन वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। श्री दीपचन्द जी भजनोपदेशक तथा श्री रामजी दास कलशाण प्रधान दलित वर्ग सघ मेरठ, श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने सम्मेलन मे भाग लिया। श्री हरिदत्त शर्मा ने शुद्धि सभा की ओर से शुद्ध होने वाले भाइयो का स्वागत तथा ग्रामवासियो का धन्यवाद किया।

—द्वारकानाथ, प्रधान-मन्त्री

### शुद्धि

केन्द्र अलीगढ, क्षेत्र कोल-खैर मे अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति दिल्ली के प्रचारक श्री काशीनाथ द्वारा निम्न शुद्धियाँ की गई—

१२-२-६९ को ग्राम कमालपुर डा पतेल का नगला जिला अलीगढ मे ६५ स्त्री-पुरुष बालक ईसाई हरिजनो को वैदिक रीत्यनुसार शुद्ध करके उनको प्राचीन हिन्दू जाति मे सम्मिलित किया गया। —रघुबीरशरण आर्य

### निर्वाचन

—आर्य स्त्री समाज फैजाबाद प्रधाना श्रीमती विद्यावती जी मन्त्रा मन्त्रिणी श्रीमती दयावती जी गुप्ता कोषाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी नारग —दयावती गुप्ता

—आर्यसमाज बिलसी (बदायू) प्रधान श्री बन्नेलाल जी, मन्त्री श्री मिश्रीलाल जी गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री विजयप्रकाश जी। —मन्त्री

—आर्यसमाज सभल (मुरादाबाद) प्रधान श्री रत्नप्रकाश जी अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाशचन्द जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री व्रजगोपाल जी रस्तोगी। —मन्त्री

—आर्यसमाज मऊनाथभजन प्रधान श्री धर्मदत्त जी सर्राफ, मन्त्री श्री देवशरण जी, कोषाध्यक्ष श्री कृष्णमुरारी जी। —मन्त्री

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री प्रि० भीमसेन जी वहल सर्व सम्मति से चुने गये हैं। —डा० वेदीराम शर्मा

—आर्य समाज चोढोरा (बुलन्दशहर) प्रधान श्री डा० मङ्गल सेन शर्मा, मन्त्री श्री बाबूलाल जी अध्यापक कोषाध्यक्ष श्री हरदेव जी —मन्त्री

—आर्य समाज कोसीकलां (मथुरा) की ओर से इस वर्ष होलिकोत्सव उत्साह एव सुव्यवस्थित ढग से मनाया गया। जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रचुर घी और सामग्री से आर्य समाज मन्दिरो मे यज्ञ हुआ, जिसमे शहर के गण्य-मान पुरुष सम्मिलित हुए। —मन्त्री

—आर्यसमाज रामगढ़ किरियात ( मीरजापुर ) प्रधान श्री भूपनाथसिह, मन्त्री श्री परीक्षित सिह जी, कोषाध्यक्ष श्री भगवानदास जी। —मन्त्री

—आर्यसमाज श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ प्रधान श्री स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, उप प्रधान डा० नेत्रपाल सिह जी, मन्त्री श्री पूरनमल जी पछी, उपमन्त्री श्री प्रेमपालसिह जी प्रेम, कोषाध्यक्ष श्री नर्मदेश्वर प्रसाद जी शुक्ल। —मन्त्री

—आर्यसमाज देवरिया प्रधान श्री चन्द्रमा प्रकाश जी, उपप्रधान श्री फूलचन्द जी गुप्त, मन्त्री श्री ब्रजपालसिह जी, उपमन्त्री श्री रामनरेशलाल जी, श्रीकृष्णसिह जी, कोषाध्यक्ष श्री डा० सत्यदेव प्रसाद जी। —ब्रजपालसिह मन्त्री

—आर्य समाज देवबन्द, प्रधान श्री ला० बद्रीप्रसाद जी, उपप्रधान श्री शम्भूनाथ जी आहूजा तथा श्री रामस्रूप जी, मन्त्री श्री विश्वम्भर देव शास्त्री एम ए कोषाध्यक्ष श्री बाबूराम जी। —मन्त्री

—आर्य समाज जलालाबाद जिला शाहजहांपुर, श्री प्रधान किशोरीलाल जी आर्य, मन्त्री श्री ओ३म्प्रकाश जी आर्य, कोषाध्यक्ष प्यारेलाल जी। —मन्त्री

—कायमगज के ठाई घाट के तट पर एक मास तक माघ मेला के अवसर पर तहसील आर्य सभा कायमगज की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। इस प्रचार मे नागा साधुओ ने विघ्न डालने का प्रयत्न किया। मगर पुलिस और कुछ उत्साही नवयुवको के प्रयत्न से किसी प्रकार का विघ्न न पड़ा और प्रचार कार्य सफल रहा। —रामरक्षपाल अग्निहोत्री मन्त्री तहसील सभा।

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६९ वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६९ वा वार्षिकोत्सव १०, ११, १२, १३ अप्रैल को बड़ी धूमधाम से मनाया जायगा। इस अवसर पर कई समयोपयोगी सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया है। आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक संख्या मे उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

धर्मपाल विद्यालकार
स० मुख्याधिष्ठाता

## १३ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह

निःशुल्क शिक्षा के प्रमुख केन्द्र गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का ६१ वाँ वार्षिक महोत्सव १० से १३ अप्रैल को गुरुकुल भूमि मे बड़ी धूमधाम से हो रहा है।

इस अवसर पर अनेक सम्मेलनो का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही १३ अप्रैल को भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री वी के आर वी राव द्वारा गुरुकुल के नव स्नातको को दीक्षान्त सन्देश दिया जायेगा।

आपसे प्रार्थना है कि इस अवसर पर पधारकर धर्म लाभ उठावें। —प्रकाशचन्द्र शास्त्री मन्त्री

## गुरुकुल आश्रम खेड़ाखुर्द दिल्ली राज्य

गौ सेवा सदन

आरम्भ हो गया है, जहा आप दूध सूख जाने पर अपनी गाय भेज सकते हैं। गाय व्याने पर गाय आपके स्थान पर भेज दी जायेगी। लाने व पहुचाने का प्रबन्ध आश्रम द्वारा किया जायेगा।

गुरुकुल

आर्ष प्रणाली से गुरुकुल भी चैत्र मास से आरम्भ हो रहा है। जिसके लिए श्री शास्त्री सत्यप्रिय आचार्य अनथक प्रयत्न कर रहे हैं। तथा वह ग्राम-ग्राम घूमकर प्रचार करते हैं तथा भारतीय विचारो व चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हैं।

संन्यास व वानप्रस्थ आश्रम

आश्रम में वानप्रस्थी व सन्यासी रहते हैं। आप भी कुछ समय के लिए रह सकते हैं। आश्रम वासी आपका स्वागत करेंगे।

यह वही स्थान है जहाँ परम पूज्य श्री स्वामी वेदानन्द जी अन्तिम वर्षों मे रहे थे तथा साधना की थी।

## परिक्षतगढ़ में आर्य संमेलन

७-८-९ अप्रैल को श्री महन्त डाक्टर स्वामी जी की देख-रेख मे बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है, जिस मे कुँवर यशपालसिंह एम पी, प० ओ३मप्रकाश जी शास्त्री प० सुखवीरसिंह एम. पी, बेगराज सिंह गायनाचार्य, प० श्याम जी पारासर एम ए बड़े-बड़े विद्वान् पधार रहे हैं।

—मन्त्री आसाराम आर्य

## संस्कार

—श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य कुठिला जिला (हरदोई) के दो पुत्रो के उपनयन सस्कार श्री प० केशवदेव जी शास्त्री महोपदेशक सभा के आचार्यत्व मे वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर श्री पं० अनन्तराम जी शर्मा के सभापतित्व मे दि० १३, १४, १५, मार्च ६९ तक वैदिक प्रचार समारोहपूर्वक होता रहा। —ब्रह्मानन्द आर्य

—श्री प० रगीलाल जी आर्य मन्त्री आर्य समाज सवायजपुर (हरदोई) की नवजात कन्या का नामकरण सस्कार दि. ७-३-६९ ई को श्री अनन्तराम शर्मा मन्त्री जिला सभा द्वारा विधिवत हुआ इसी अवसर पर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव भी तीन दिन तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

—रगीलाल जी आर्य प्रधान

## उत्सव—

—आर्य समाज कासगज का ८४ वाँ वार्षिकोत्सव २५ से २८ अप्रैल तक मनाया जायगा। -मन्त्री

—आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिकोत्सव दि० १६, १७ एव १८ मार्च १९६९ को धूमधाम के साथ मनाया गया।

—सूरजप्रसाद गुप्त मन्त्री

## सार सूचनाएं

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षाए, आर्य सिद्धान्त विशारद, भूषण, रत्न, धर्माचार्य तथा आर्य पुरोहित, आगामी जौलाई ६९ के अन्तिम सप्ताह में होगी। पाठविधि, आवेदन पत्र तथा केन्द्र स्थापना फार्म आदि के लिए परीक्षा मन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ से पत्र-व्यवहार करें।

—परीक्षा मन्त्री

—७ से ९ मार्च तक आर्यसमाज सवायजपुर का वार्षिकोत्सव मनाया गया। श्री अनन्तराम शर्मा व रणजीतसिंह के प्रवचन हुये।

—आर्यसमाज सकरावा ने १३ से १५ फरवरी तक वार्षिकोत्सव मनाया। —मन्त्री

—आर्य समाज गिरिहींडा (मुगेर) ने शिवरात्रि मेला मे प्रचार किया।

—४ मार्च को आर्यसमाज सरकड़ा विशनोई मे होली के उपलक्ष में यज्ञ किया गया और होली के महत्त्व पर उपदेश हुआ। श्री वैद्य प्यारेलाल जी ने भी अपने घर पर यज्ञ कराया। —सोमप्रकाश

—आर्यसमाज राजाबाजार खड्डा जि० देवरिया का ३५ वा वार्षिकोत्सव १२ से १५ मार्च तक मनाया गया, इस वर्ष इस अवसर पर हिन्दी रक्षा सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। —मन्त्री

—आर्य स्त्री समाज अत्रिपुइया इलाहाबाद का वार्षिकोत्सव दि० २२ व २३ फरवरी को बडे समारोह के साथ मनाया गया, जिसमे श्री ओमप्रकाश जी, महात्मा कृष्णदेव जी दिल्ली तथा आचार्या प्रज्ञादेवी का मधुर भाषण तथा ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक का सुन्दर भजनो द्वारा उपदेश हुआ, जिसका प्रभाव अति उत्तम हुआ।

ऋषिबोध सप्ताह ता० ११ से १५ फरवरी तक मनाया गया। जिसमे पंडित बुद्धदेव शास्त्री का सुन्दर प्रवचन हुआ।—कैलाशवती

—आर्यसमाज तथा स्त्री आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर का २२ वा वार्षिकोत्सव एवम् आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्दनगर कानपुर का १० वां वार्षिकोत्सव प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उक्त तीनों सस्थाओं का सयुक्त वार्षिकोत्सव ८ से ११ मई १९६९ तक विशेष समारोह के साथ किया जायगा। —मन्त्री

—गुरुकुल महाविद्यालय सूर्य कुण्ड बदायू का ६६ वा वार्षिक उत्सव दि० २८, २९, ३० मार्च को हो रहा है, जिनमे अनेक शिक्षा प्रद सम्मेलनो के साथ आर्यजगत् प्रसिद्ध सन्यासी विद्वान् उपदेशकों एवम् राजनैतिक नेताओं के व्याख्यान भाषण होगे।

—दि० १९-३-६९ को आर्य समाज आगरा नगर महर्षि दयानन्द मार्ग के प्राँगण मे आर्यसमाज स्थापना दिवस एव नव सवत्सर उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। सभा में आर्य कन्या विद्यालयों की अध्यापिकाए और नगर की अन्य समाजो के विशेषत आर्यसमाज राजामण्डी के सदस्यगण उपस्थित थे। —मन्त्री

—कोसीकला, आर्यसमाज के दि० १६-३-६९ के साप्ताहिक अधिवेशन मे तथा रात्रि को पारिवारिक सत्सग मे देहली के हिन्दुस्तानपत्र दि० २ मार्च ६९ मे रामायण की विलायती समालोचना शीर्षक से प्रकाशित लेख जिसमे भगवान्‌राम भगवती सीता जी तथा भरत, लक्ष्मण, दशरथ महाराज की घोर निन्दा की है, पर रोष और खेद व्यक्त करते हुये एक प्रस्ताव पास हुआ, जिसमे भारत सरकार से २ मार्च के अक को जब्त करने पत्र के मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक एव लेखक के विरुद्ध कार्यवाही करने की माग की गई है। —खेमचन्द आर्य मन्त्री

—२३ जनवरी को आर्यसमाज मुबारकपुर (फैजाबाद) के प्रधान श्री धर्मराज वैद्य की पुत्री कुमारी सौभाग्यप्रदादेवी का पाणिग्रहण सस्कार वैदिक रीति के अनुसार श्रीयुत बाबू जगदीशप्रसाद (सुरहुरपुर) के साथ सम्पन्न हुआ। मन्त्री

—३ मार्च को आर्य समाज मुबारकपुर ने होलिकोत्सव आर्य पर्व पद्धति के अनुसार मनाया।

—मन्त्री

—आर्य समाज खतौली की ओर से आयोजित यह सभा, अपने आय समाज के उप प्रधान, दानी तथा उत्साही कर्मठ कार्य कर्ता श्री लाला सोहनलाल जी किराना मर्चेन्ट के दिनाक ९ मार्च की रात्रि मे हुये आकस्मिक देहावसान पर अपनी गहरी सवेदना तथा उनके शोक सतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

वस्तुत श्री लाला सोहनलाल जी के इस निधन से सामान्यत सम्पूर्ण नगर तथा विशेषत स्थानीय आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है।

साथ ही यह सभा दिवगत आत्मा की सद्‌गति तथा उनके शोक सतप्त परिवार को इस महान् कष्ट के सहन करने की शक्ति व धैय प्रदान करने के लिए प्रभू से प्रार्थना करती है।

—सोहनलाल नागर, मन्त्री

—आय समाज बडगांव द्वारा श्री पद्माकर द्विवेदी के पिता का दाह कर्म सस्कार पूण वैदिक रीति से किया गया।

आ स बडगाव के सदस्यो ने होली का उत्सव तथा मिलन वन्दन तथा इत्र द्वारा धूमधाम से दिनाक ४-३ ६९ को मनाया। —मन्त्री



(पृष्ठ २ का शेष)

धाम से ज्योति प्रसारित करता रहता है और मैं उसे ग्रहण करता रहता हू। मैने ऐसे ही परम दिव्य सन्देहवाहक का वरण किया है।

मैने यह वरण क्यो किया है। मेरी जीवन यात्रा का भी कहीं अन्त है न ? मै वहा तक पहुचना चाहता हू। मैं उसके परम धाम तक जाना चाहता हू। जन्म और मरण के चक्र से निकल कर उससे मुक्त होकर स्वच्छन्द विचरण की मेरी एक चाह है। मैं प्रतिपल, प्रतिक्षण उस आनन्दमय का सगति करण चाहता हू, जब तक शरीर है तब तक यह पूर्णतया सम्भव नहीं है क्योंकि सदैव अन्तर्मुखी नहीं रह सकता, बाह्य जगत् से सम्बन्धित होने के लिए बहिर्मुखी भी होना पड़ता है।

कौन-सा वह माध्यम है जो मुझे उसके परमधाम तक ले जायेगा, जो मेरे प्रियतम से मेरा निरन्तर मिलन करायेगा। वह है मेरा क्रतु, सुक्रतु। मेरे कर्म, सुकर्म ही मुझे वहा तक ले जायेंगे। वह स्वामी विश्व के विराट यज्ञ में निरन्तु सुक्रतु है। जब उस विराट विश्वयज्ञ मे मै अपने सुक्रतु की आहुति देता हू तो मै उस विराट यज्ञ मे अपने कर्त्तव्य को निभाता हू। मेरे जीवन यज्ञ की सफलता मेरे सुक्रतु मे है। मेरे सुक्रतु का एकमात्र सम्बल मेरा दिव्य देव है, जो अपने दिव्य सन्देशों द्वारा निरन्तर मेरा मार्ग दर्शन करते हुये मुझसे श्रेष्ठतम कर्म करवा रहा है, मेरी इच्छाओ को सद्-इच्छाओं में परिणत कर रहा है, मेरे मन के सकल्पों को शिव कर रहा हैं, मस्तिष्क के चिन्तन को सुन्दर कर रहा है, हृदय में स्नेह का सागर भर रहा है, भावनाओं में दिव्यताओ को ओत प्रोत कर रहा हैं, मेधा को सुमेधा कर रहा है, ज्ञान-पूर्वक सकल कर्मो को करवा रहा है।

अत हे जिज्ञासुओ ! मैने ऐसे अनुपम मनोहर देव का वरण किया हैं और मेरी पुकार, प्रार्थना, साधना, वन्दना, अचना, तडप, पीडा सब कुछ उसी एक परम के लिए है।

---

—आर्य समाज शाहगढ़ (अलीगढ) प्रधान श्री महेद्रपालसिह मन्त्री श्री यशपालसिह शास्त्री।

—मन्त्री

## निर्वाचन

—आर्य समाज, नयाबास, दिल्ली प्रधान श्री डा० रामस्वरूप जी, उपप्रधान श्री सोहनलाल जी मेहरा, तथा श्री दयाराम जी, मन्त्री श्री नन्दकिशोर जी, उपमन्त्री श्री राधेश्याम जी तथा श्री प्राणनाथ जी, कोषाध्यक्ष श्री फूलचन्द जी पुस्तकाध्यक्ष श्री भलेराम जी।

—नन्दकिशोर आर्य

—आर्य समाज गाजियाबाद (मेरठ) प्रधान श्री गोपालसिह जी उपप्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य मन्त्री श्री वेदप्रकाश, उप मन्त्री श्री परमानन्द जी तथा रघुनाथ प्रसाद कोषाध्यक्ष श्री काशीराम जी, पुस्तकाध्यक्ष आनन्दस्वरूप जी

—मन्त्री

—आर्यसमाज सोरो, प्रधान सेठ [illegible]लाल जी, उपप्रधान श्री हरिकृष्ण जी आर्य, मन्त्री श्रीमती शान्तिदेवी शर्मा, उपमन्त्री श्री द्वारिकाप्रसाद जी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री हजारीलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश जी।

—शान्तिदेवी मन्त्रिणी

[ १ ]

श्रीमान् सम्पादक जी, सादर नमस्ते !

आपके सतत परिश्रम से सम्पादित आर्यमित्र पठनार्थ प्राप्त होते हैं। आपने आर्यमित्र का स्तर उच्च करने का जो यत्न किया है वह सराहनीय है। अब तो मित्र के लेख गम्भीर सर्वाङ्गपूर्ण और विशेष शिक्षा द आ रहे। श्री 'वसन्त' जी ने इस वर्ष तो और ही अधिक उत्तम-उत्तम शिक्षायें मित्र व उनके विशेषाकों मे निकाली हैं। ऐसे वेदज्ञ कवि व लेखक का आगमन वास्तव मे आर्यजगत् मे वसतागमन है। वेद प्रचार की जो शैली वसन्त जी ने अपनाई है वह प्रशसनीय है। सभी वर्गों के लोगो के लाभार्थ उत्तम कविताए, लेख कहानिया तथा अन्य जानकारी की बातें प्रति सप्ताह मित्रमे प्रकाशित होती रहती हैं, जिससे सभी को लाभ प्राप्त होता है। आशा है आप इस पत्र को और भी अधिक शिक्षाओ से भरपूर करते रहेंगे।

—सत्यनारायण द्विवेदी, गगा जमुनी (बहराइच)

[ २ ]

श्रीमान् माननीय, आदरणीय वसन्त जी,
सादर सप्रेम नमस्ते !

आपके 'आर्यमित्र' की 'अध्यात्म सुधा' का पान कर हृदय गद्-गद् हो जाता है। आत्मा विशेष शान्ति अनुभव करता है। आशा है भविष्य मे भी आप 'परमेश्व की अमृत वाणी' और 'अध्यात्म-सुधा' को विशेष महत्व देंगे।

आप ने १२ जनवरी १९६९ के आर्यमित्र मे पाचवें पृष्ठ के अन्तिम मे प्रश्न किया था कि यदि पाठक चाहेगे तो आगामी अको मे वेदमन्त्रो के आधार पर चर्चा करूँगा।

भला ऐसा कौन-सा पाठक है जो भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता का रस पान न करना चाहता हो। समाधि और स्वप्न के भेद न समझना चाहता हो अर्थात् सभी पाठक ऐसा चाहते होगे, मेरी अपनी ऐसी धारणा है।

अत आप से करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमे आगामी अको मे आध्यात्मिकता का रस पान कराने की कृपा करें। आपकी अतीव कृपा होगी।

—सत्यवीर पुत्र भागमल, टन्डहेडा, मुजफ्फरनगर

---

## आर्य उपसभा लखनऊ का ७०वाँ मासिक अधिवेशन

रविवार ३०-३-१९६९ को सायकाल ५ से ८ बजे तक आर्य समाज गणेशगज के सुसज्जित भव्य हाल मे मनाया जायगा।

कार्य्यक्रम—सामवेद से बृहत् वैदिक यज्ञ, सन्ध्या प्रार्थना, सुमधुर भजन, सिद्धान्त सम्बन्धी व्याख्यान व वेदोपदेश।

कृपया सपरिवार व इष्ट मित्रो सहित पधार कर इस रोचक कार्य्यक्रम से आध्यात्मिक लाभ उठाएँ। यज्ञ प्रेमी सामवेद साथ मे लावें और यज्ञ में सस्वर पाठकर आनन्द प्राप्त करें।

सभा के सदस्यों व सदस्याओं की उपस्थिति अनिवार्य है।

—विक्रमादित्य 'वसन्त' मन्त्री

## आपके ? का उत्तर
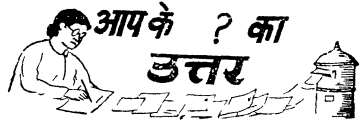
श्रीमान् सम्पादक जी, सप्रेम नमस्ते !

पिछले जनवरी महीने मे 'आर्यमित्र' मे छपे 'वैदिक लाइट' नाम का अग्रेजी पत्र का विज्ञापन देखकर मैने उसका वार्षिक चन्दा वायु डाक द्वारा भेज दिया। आज लगभग आठ महीने हो रहे हैं, न तो 'वैदिक लाइट' का कोई अक ही मिला और न कोई उत्तर ही मिला। इस प्रकार का यह पहला मामला नहीं है। मुझे दो बार पहले भी इसी तरह के अनुभव हुए हैं। आर्यसमाजियो मे इस प्रकार के व्यवहार की मुझे आशा न थी। "वैदिक लाइट" का पता भी खो गया, इसलिये सीधे उनके पास लिखने मे भी असमर्थ हू। हो सके तो "वैदिक लाइट" का पूरा पता शीघ्र भेजने की कृपा करें। कष्ट के लिए क्षमा चाहता हू।

—प्रवासी आर्य समाजी विजेन्द्र शर्मा

—"वैदिक लाइट" पत्र का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा होता है। आप कृपया निम्न लिखित पते से पत्र-व्यवहार करें—
'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली। १

★

### ५ अरब देशो की तुलना में इजरायल आगे

तेल अबीव—अरब देशो की तुलना मे इजरायल की अर्थ व्यवस्था कहीं अधिक मजबूत है। एक सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ है कि ५ अरब देशो की कुल राष्ट्रीय आय ७,५०० करोड रुपये मूल्य की है जबकि केवल इजराइल की कुल राष्ट्रीय आय ३००० करोड रुपये की है। अरब देशो मे जिन पाच देशो के आकडे का सर्वेक्षण मे सम्मिलित किये गये है उनके नाम हैं, मिस्र, जार्डन, सीरिया, ईराक और लेबनान इन देशो की कुल आबादी ५ करोड है जब कि इजरायल की आबादी २५ लाख है।

औद्योगिक उत्पादन मे तो इजरायल इन देशो से कहीं आगे है। अरब देशो का औद्योगिक उत्पादन ९०० करोड रुपये के मूल्य का है जबकि इजरायल का उत्पादन ९८० करोड रुपये मूल्य का है।

सन् १९६७ मे इजरायल की प्रति व्यक्ति आय १२०० कूती गई और लेबनान मे प्रति व्यक्ति आय ४५०० रुपये की थी।

सन् १९६७ मे उक्त पाँच अरब देशो ने ८७० करोड रुपये सेना पर खर्च किये, जबकि उसी वर्ष इजरायल का सैनिक खर्च ४८० करोड रुपये का था। ●

---

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल –६०

चैत्र ९ शक १८९१ चैत्र शु० १२
[दिनाङ्क ३० मार्च सन् १९६९]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

## (१) हनुमान जी बन्दर नहीं थे

ले०–आचार्य डा० श्रीराम आर्य कासगज, मूल्य १५ पैसे
प्रकाशक–वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगज (उत्तरप्रदेश)

इस लघु पुस्तिका में शिवपुराण, भविष्य पुराण, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा आनन्द रामायण के श्लोकों के आधार पर प्रमाणित किया गया है कि हनुमान जी वेदज्ञ तथा राज्य मन्त्री थे। वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगज अपनी खण्डन-मण्डन मालाओ के लिए विख्यात है। यह उसका ३७वां पुष्प है। जो पौराणिक हनुमान जी को बन्दर मानते हैं, उनमे यह पुस्तक वितरण की जानी चाहिये ताकि वे अपने मान्य ग्रथों के प्रमाणों से हनुमान जी को कम से कम मनुष्य तो मान सकें।

## (२) ईसाईयत और उसकी काली करतूतें

ले०–श्री सूर्यबली पाण्डेय, मूल्य २० पैसे
प्रकाशक—आर्यसमाज जौनपुर।

इस लघु पुस्तिका मे ईसाईयत मत की वास्तविकता का वर्णन कराया गया है। ईसाइयों के अराष्ट्रिय कार्य तथा धन के बल से किये जाने प्रकार का भण्डाफोड किया गया है। जो ईसाईयत को मानव धर्म की सेवा का प्रतीक मानते हैं, उन्हे भारतवर्ष मे किये जाने वाले उनके कुकृत्यो की जानकारी इस लघु पुस्तिका से हो सकती है।

## (३) ईसाई पादरियो को चुनौती

प्रकाशक–नगर आर्यसमाज, मण्डी फतहगज बुलन्दशहर

ऋषि बोधोत्सव २०२५ के उपलक्ष मे इस लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। इसमे ईसाई पादरियो से ३६ प्रश्न किये गये हैं। ईसाई पादरियो को शास्त्रार्थ की चुनौती के लिए ये प्रश्न बडे उपयोगी हैं।

## (४) बहादुर वानी

साप्ताहिक राष्ट्र पुरुष का विशेषांक। मूल्य ५० पैसे
प्रकाशक–भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ

इस विशेषाक मे स्व० लालबहादुर जी शास्त्री पर रचे ५२ छन्दो का समावेश है जिनके रचयिता कविवर 'प्रणव' शास्त्री हैं। छन्द वीर रसात्मक है।

## (५) महर्षि श्रद्धाजलि अक

आर्य प्रेमी मासिक पत्रिका अजमेर का विशेषाक। मूल्य २५ पैसे।

इस विशेषाक मे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ की श्रद्धाजलियों का समावेश है। विशेषाक का सम्पादन डा० भवानीलाल भारतीय एम. ए द्वारा किया गया है।

—'वसन्त'

# अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था–

## ज्ञान कैसे होता है?

वेदो को पढ़े विना किसी मनुष्य को यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। विद्वानों की शिक्षा और वेद पढने के विना केवल स्वाभाविक ज्ञान से किसी मनुष्य का निर्वाह नहीं हो सकता। जैसे हम लोग विद्वानों से वेदादि शास्त्रों के अनेक प्रकार के विज्ञान को ग्रहण करके ही पीछे ग्रथो को भी रच सकते हैं वैसे ही ईश्वर के ज्ञान की भी अपेक्षा सब मनुष्यो को अवश्य है। सब मनुष्यो को सहायकारी ज्ञान मे स्वतन्त्रता नहीं है और स्वाभाविक ज्ञान मात्र से विद्या की प्राप्ति किसी को नहीं हो सकती।

## पेड़ में पुस्तकालय

मास्को–उजबेक जनतन्त्र के साईराब गांव में एक ८०० साल पुराना वृक्ष पर्यटको के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। बहुत से पर्यटक रोज इस विशाल पेड को देखने यहां आते है।

इस वृक्ष के तने के खोखले मे इतनी जगह है कि क्रान्ति से पूर्व उसमे एक स्कूल की कक्षाए लगती थीं। सन् १९२० मे साईराब गाव सोवियत का सत्र इसी वृक्ष के तने के खोखले मे हुआ था। बाद मे इस घुडसवार सेना का एक एक पुस्तकालय और फिर इसमे एक दुकान रही। अब इस खोखले को सुरक्षित कर दिया गया है। इसे खाली रखा गया है जिसे देखने प्रतिदिन पर्यटक आते हैं।

## नव वर्ष

मित्रस्याऽह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे॥"

भावार्थ— (१)
सब प्राणियो को रहू देखता,
मित्र की दृष्टि प्यार से।
हम भी एक दूसरे सबको,
देखें मित्र विचार से!!

(२)
हर्षोल्लास भाव सद ले के,
मिलें परस्पर प्रेम से।
बने द्वेष तज विश्व मित्र सब,
शान्ति रहे सुख क्षेम से!!

—कवि कस्तूरचन्द "घनसार" पीपाड़ शहर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०वी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

'वयं अयेम' ] लखनऊ—रविवार चैत्र २३ शक १८९१, वैशाख कृ० १२ वि० सं० २०२६, दि० १३ अप्रैल १९६९ [ हम जीतें

★ परमेश्वर की अमृत वाणी—

## ऋताचारियो ! व्रतधारी बनो और क्षात्र तेज से साम्राज्य स्थापित करो

ऋतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू । धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः ॥
[ ऋ० ८ । २५ । ८ ]

(ऋतावाना) ऋताचारी, सत्य ग्रहण करने वाले (धृतव्रता) व्रत को धारण करने वाले (क्षत्रिया) क्षत्रिय (क्षत्रम्) क्षत्रियता को (आशतु) प्राप्त करते हैं (सुक्रतू) उत्तम कार्य करते हुये (साम्राज्याय) साम्राज्य के निमित्त (नि+सेदतु) निरन्तर प्रयत्न करते हैं।

इस संसार मे क्षत्रिय अपने क्षात्र बल के आधार पर राज्य और साम्राज्य खडे करते हैं। केवल पाशविक शक्ति धारण करने वाले क्षत्रिय नहीं कहलाते। क्षत्रिय वह है जो क्षत्र से युक्त है, जो क्षत होने से किसी का त्राण करे, वह क्षत्रिय है। जो मनुष्य की पीड़ा को आत्मानुभूत करता है जो किसी को पीड़ित देखकर स्वय व्याकुल हो उठता है और पर पीडा हरण के लिए प्रयत्नशील होता है और दूसरों की दु:ख से रक्षा करता है, वही क्षत्रिय होता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यों ने सदैव अनार्यों से युद्ध किए हैं, और मानवी प्रजा की सदैव अनार्यत्व से रक्षा की है। आर्य केवल ब्रह्मज्ञानी ही नहीं होते वरन क्षात्र तेज से भी युक्त होते हैं। शस्त्र और शास्त्र दोनों वे उठाते हैं। अनार्यत्व को मिटाने के लिए और आर्यत्व को स्थापित करने के लिए।

आर्य ऋताचारी होते हैं सत्य को ग्रहण करते हैं और असत्य को त्यागने मे सदैव तत्पर रहते हैं। उनका सारा वाद और विवाद सत्य और असत्य के विचारने के लिए होता है। सत्य को ग्रहण करने के लिए वे सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद का आधार लेते है। सत्य ही उन्हें ब्रह्म व क्षात्र तेज से युक्त करता है और वे श्रेष्ठतम कर्म क्षेत्र मे जो उनका धर्म क्षेत्र होता है, सहर्ष विचरण करते हैं। मानवी प्रजा को वेदनाओं से मुक्ति दिलाने के लिये यदि वे एक ओर ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार करते हैं तो दूसरी ओर अनार्यों को परास्त कर विश्व का आर्य करण करते हैं। आर्य राज्यों, साम्राज्यों व चक्रवर्ती राज्यो को स्थापित करते हुए वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं।

जिन्हें विश्व का आर्य करण करना है, वे ऋताचारी बनकर, परस्पर राग द्वेष से ऊँचा उठकर क्षात्र तेज को धारण करें, अपने शुभ कर्म्मों से अपने आर्यत्व का परिचय दें।

—'बसन्त'

आर्य समाज नैनीताल के निमन्त्रण पर—

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का वार्षिक साधारण वृहदाधिवेशन

### शनिवार व रविवार दिनांक २४ व २५ मई १९६९ को

### आर्य समाज नैनीताल के भव्य हाल में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि सभा का वार्षिक साधारण वृहद् अधिवेशन शनिवार व रविवार दिनांक २४ व २५ मई १९६९ को आर्य समाज नैनीताल में होना निश्चित हुआ है। समस्त आर्य समाजो को चाहिए कि वे अपने प्रतिनिधियों को वृहदाधिवेशन मे अवश्य भेजें और प्रदेश के आर्य सगठन को सुदृढ करें।

जिन आर्य समाजो व जिलोपसभाओ ने अपने वार्षिक चित्र व दशाश नहीं भेजे हैं, उन्हे चाहिये कि वे उन्हे अविलम्ब भेजें ताकि प्रतिनिधियों की स्वीकृति कार्यालय से भेजी जा सके।

याद रखिये यह सभा आपकी अपनी है और इसे सुदृढ़ बनाना आपका पावन कर्त्तव्य है। नैनीताल की शीतल हवायें आपको निमन्त्रण दे रही हैं कि आप आयें और शान्ति व गम्भीरता से शान्त वातावरण मे सभा को उन्नतिशील बनायें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, मन्त्री सभा

| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | १४ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अंक में पढ़िए !



संपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल. ए
सभा-मन्त्री

**वेद मन्त्र–**

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्र मिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥
[ साम० ५ ]

शब्दार्थः–( वः ) तुम्हारे (प्रेष्ठं) परम प्रिय (मित्र इव) मित्र की भांति ( प्रिय ) प्यारे (अतिथिं) अतिथि को (स्तुषे) स्तुति करता हू । (अग्ने) ! सुन्दर तेजस्वी देव ! (रथम) रथ की भांति (वेद्य) प्रतीति के योग्य है ।

व्याख्या–इस मन्त्र मे आत्मना परमात्मा के समीपस्थ होने के लिए परमात्मा को ज्ञानपूर्वक जानने, मानने और पुकारने की बात कही गई है । वह सुन्दर तेजस्वी देव सर्वथा जानने के योग्य है । बिना उसके वास्तविक स्वरूप को जाने उसकी अन्धविश्वास पर आधारित पुकार महत्त्वहीन है । जो उसे ज्ञानपूर्वक जान लेता है, वह अपने को उसके प्रति समर्पित करता है, अन्यथा वाणी से उसका गुणगान करते हुए उसके गुणो से सर्वथाहीन ये साधारण मानव पापो भोगो और कुकृत्यो मे निरतर रत रहते हैं ।

प्रस्तुत मन्त्र कहता है परमेश्वर रथ की भांति बोधनीय है । रथ एक वाहन है, जो यात्री की यात्रा पूरी करता है । रथ मे बैठने वाले को रथ और उसके विषय मे सामान्य ज्ञान होना चाहिए । अज्ञान तो ससार मे भयोत्पादक है । जिन्होने अन्तरिक्ष यान देखे नहीं हैं, उन्हें उसमे यात्रा करने के लिए कहिये, उनके मन मे अज्ञात शकायें उत्पन्न होकर उन्हे भयग्रस्त कर देंगी, किन्तु जिन्हे उसकी जानकारी है जो उसमे यात्रा कर चुके हैं, उनके लिए वह वाहन आनन्दप्रद है । परमेश्वर को जो ज्ञानपूर्वक जान लेते हैं, परमेश्वर उनके लिए एक ऐसा दिव्य वाहन बन जाता है जिसमे बैठ कर अर्थात् निरन्तर उसकी शरण मे रह कर मौज मस्ती, और आनन्द पूर्वक वे अपना जीवन यापन करते हैं ।

साधक जिस परमात्मा को

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या–

# ज्योति में जब ज्योति मिलती अमर होती प्रेम कहानी ।

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' 'वेदवारिधि' मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

पुकारता है, वह उसके विषय में सब कुछ यदि नहीं तो बहुत कुछ जानता है । इस मन्त्र में आत्माग्नि द्वारा जिस ब्रह्माग्नि का आह्वान किया जा रहा है, वह परमेश्वर क्या है, उसके विशेषण क्या हैं, उनको व्यक्त करते हुए सत्य का

पुञ्ज को सतत बुला रही हैं । वह अद्वितीय परमाग्नि क्या है, जिसकी आत्मना स्तुति होती है । जब परमात्मा के किसी सच्चे भक्त से पूछा जाता है, 'ये रात-दिन किस की स्तुति मे तल्लीन रहते हो' तो परमात्मा को अपनी आत्मा में

## अध्यात्म-सुधा
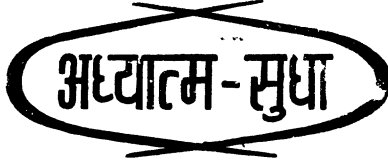
दर्शन कराया जा रहा है । साधक जिस परमात्मा की आत्मना पुकार लगाए हुए हैं, वह केवल उसका ही नहीं है । वह सर्व-व्यापक तो सबका है । न जाने कितनी आत्माएं उस दिव्य मनोहर प्रकाश

ज्ञान ज्योति से देखने वाला एक ही उत्तर देता है 'वह प्रेष्ठ है । परम प्रिय है, उससे बढ़कर और और कोई नहीं है । मैं निज तन, मन, धन सर्वस्व उस पर न्योछावर करने के लिए सदैव तैयार रहता

हूं । मुझे उसके संसार से लगाव भी केवल इसलिए है कि वह मेरे परम प्रिय की रचना है ।'

'कैसा है वह तुम्हारा परम प्रिय ?' जब कोई पुनः पूछता है तो साधक मृदु हास्य से उत्तर देता है, 'मित्रं इव प्रिय' अर्थात् मित्र की भांति प्रिय । मित्र स्नेह का प्रतीक होता है और त्याग स्नेह का प्रतीक होता है । मित्र वह होता है जो दुःखों से हमारा त्राण करता है, कष्टों से निवृत्ति करता है । स्वतः तप करता है, और त्याग से हमें सुखी करता है । जिस प्रकार भौतिक जगत् में सच्चा मित्र वरदान होता है, परिवार में पति मित्र बनता है तो गृहस्थी सुखी होती है । पत्नी सुमित्रा होती है तो मगलप्रद होती है । परस्पर स्नेह और उसके प्रतीक त्याग को अपना कर जीवन स्वर्गमय हो जाता है । वह परमेश्वर भी 'मित्रो असि प्रिय' प्रिय मित्र है । लोगो ! वह सब जीवों का मित्र है । प्रिय मित्र है । वह सर्वस्व देता है, एक समान देता है, बिना किसी भेद-भाव के राग द्वेष के कर्मानुसार और योग्यतानुसार सब को देता है । उस परमप्रिय मित्र जैसा तपस्वी और त्यागी कोई नहीं है ।

'जब सब कुछ देता है, बिना मांगे भी योग्यतानुसार देता है, तो फिर क्यों उस को पुकारते हो ।'

'इसलिए कि मुझे उसके दर्शन की प्यास है । मिलन के बिना व्याकुलता है ।'

"कैसे होगा उसका दर्शन और क्या करोगे उसका दर्शन पाकर ?'

'वह अतिथिम हैं, उसके आने की कोई तिथि नहीं । वह स्वय आता है । ज्यों-ज्यों मै निर्मल होता जाता हू, वह मेरे समीप आता जाता है । यह मेरी देवनगरी अयोध्या भी उसी पावन देव की है । मै स्वतः इसमे अतिथि स्वरूप हू । निरन्तर अनेक देहों मे सतत् विचरण किया है मैंने और आज अतिथि रूप मे उसके निर्मित सुन्दर भवन मे स्थित हूं । इसी पुण्य

(शेष पृष्ठ ११ पर)

## मेरी तेरी प्रीति पुरानी

मेरी तेरी प्रीति पुरानी
इतनी निर्मल इतनी पावन, गङ्गा यमुना का ज्यो पानी ।
मेरी तेरी

जबसे तूने दुनिया बनाई और मेरी काया रचाई ।
रङ्ग-बिरंगे चोले पहनाकर अपनी प्रीति तूने निभाई ।
जो न जानूं मैं गहराई, मेरी ही तो है नादानी ॥
मेरी तेरी

मेरे हृदय मे बैठ सदा तू, पल-पल मुझको पास बुलाए ।
मेरे दिल की हर धड़कन भी तेरा पावन नाम गुंजाए।
ज्योति मे जब ज्योति मिलती, अमर होती प्रेम कहानी ॥
मेरी तेरी

तू अजर तो मै भी अमर हू तू अमर तो मै भी अमर हू ।
तू जो है ज्योति की नगरिया, मैं भी तो ज्योति की डगर हूं ।
मै अनादि तू भी अनादि, तू युवा तो मुझ मे जवानी ॥
मेरी तेरी

सुख शान्ति का है तू दाता, आनन्द घन भी तू बरसाता ।
बनकर चातक मेरे प्रीतम, सोम मेघ से प्यास बुझाता ।
एकमेव आनन्द ही तेरा, है 'वसन्त' की प्रेम निशानी ॥
मेरी तेरी…

लखनऊ-रविवार १३ अप्रैल ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## “ऋतं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये”

आज विश्व मे भ्रष्टाचार का सर्वत्र बोल-बाला है। चाहे राजनैतिक क्षेत्र, चाहे सामाजिक अथवा धार्मिक, सर्वत्र भ्रष्टाचार की गूंज सुनाई देती है। जो राजनीति की भ्रष्ट दलदल में ऊपर से नीचे तक लिप्त हैं वे केवल राजनीति के ही सर्वस्व समझ कर, अपना यह दृष्टिकोण बनाये हुए हैं कि केवल राज सत्ता अपने हाथ मे लेकर ही वे भ्रष्टाचार को दूर कर सकते हैं। जिन्होंने सामाजिक सस्थाओं का ठेका ले रखा है, उनके विचार में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते, सामाजिक क्रान्तियों द्वारा ही भ्रष्टाचार का उन्मूलन किया जा सकता है। धार्मिक क्षेत्र को जिन्होने गुरुपन के नाते विरासत मे पाया है, अथवा जो धर्म के रक्षक स्वयम् बन गये हैं या अन्धविश्वास के कारण या जिन्हे परिस्थितियों ने तथा कथित धर्म पर वास्तव में मत-मतान्तर का स्वामी बना दिया है, उनके विचारानुसार जिस विशेष मत मे उनकी आस्था है और जिस विशिष्ट धर्म पद्धति को उन्होने अपना रखा है, उसके आधार पर ही विश्व मे भद्राचार स्थापित किया जा सकता है।

अपनी-अपनी डफली पर सब अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। रोग बढ़ रहा है ज्यों-ज्यो चिकित्सा की जा रही है। भ्रष्टाचार के कारण साधारण जन जिस नारकीय यन्त्रणाओ को भोग रहे हैं उनका त्राण राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक नेता गणो की वाणियाँ कर सकने मे असमर्थ सिद्ध हो रही हैं। जिस भद्राचार की वाणी से दुहाई दी जाती है, किन्तु यथार्थ मे करनी उल्टी दिखाई देती है, तो उन शब्दों का कोई मूल्य नहीं रह जाता है। हमने एक ऐसे खद्दरधारी राजनैतिक नेता को मच पर व्याख्यान देते हुए सुना। जिसमे आजकल की स्त्रियो के कुत्सित फैशन और भड़कीले वेश-भूषा को लेकर पर्याप्त चर्चा की गई थी, किन्तु जब कुछ दिनो के पश्चात् उनकी पत्नी को लोगो ने ऐसी ही वेश-भूषा और फैशन मे उनके पति के साथ देखा तो लिखने की आवश्यकता नहीं कि उनके शब्दो का कितना व्यापक प्रभाव उन पर रह गया होगा।

सामाजिक जगत् मे प्राय छुआ-छूत लेन-देन, दहेज आदि को लेकर नित्य चर्चा होती रहती है, किन्तु जब चर्चा करने वालो को हम स्वयम् विवाहों पर जात बिरादरी, भाई भतीजावाद, फिजूल खर्ची के चक्कर मे घिरा पाते हैं तो चाहे ये नेतागण जितनी इच्छा हो बोले, उन के शब्द केवल अपने पर ही व्यङ्ग करके व्योम मे विलीन हो जाते है।

धार्मिक जगत् में जिस शुद्धता पवित्रता की चर्चा बड़े जोरो से की जाती है, व्यवहार मे इसका ढिंढोरा पीटने वालो की जीवनी कुछ और ही दृश्य दिखलाती है। अग्रेजो की एक कहावत है, कि गिर्जे के समीप और भगवान् से दूर पूर्णतय चरितार्थ होती है। हम धर्म क्षेत्र मे प्रवृष्ट होते हैं आत्मिक उत्थान के लिए किन्तु वहा ऐसा आत्म-पतन होता है कि तोबा भली। गये थे आसक्तियो से निवृत होने किन्तु हुआ यह कि हम स्वत. आसक्त होकर मझधार मे डूबने लगे। जो स्वयम् डूब रहा है, वह दूसरो की क्या रक्षा करेगा? उसे किस प्रकार उबारेगा?

भ्रष्टाचार अनार्यत्व है और भद्राचार आर्यत्व है। आर्यों पर विश्व के आर्यकरण करने का जो एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व परम पिता परमेश्वर ने रखा हुआ है और जिसकी ओर युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द ने श्रेष्ठजनों का ध्यान आकर्षित किया है, उस चिर साध की पूर्ति के लिए प्रत्येक विवेकशील का पावन कर्तव्य है कि वह स्वत आर्य बने और जिस भद्राचार को जगत् मे देखना चाहता है, उसका शुभारम्भ अपने जीवन से करे। अनार्यत्व का वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर बोध होता है कि भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है विचारो का दूषित होना विचार इसलिये दूषित हैं कि मन के सकल्प शिव नहीं हैं और बुद्धि भ्रष्ट है। इन सबके मूल मे है आत्मा की सद् इच्छाओ का न होना। इच्छाए सद् नहीं हैं क्योकि चित्त के सस्कार भ्रष्ट हैं। अभद्र दर्शन, अभद्र श्रुति, अभद्र भाषण, अभद्र चिन्तन—भीतर-बाहर सब अभद्र ही अभद्र है। क्यो अभद्र है? सुधार क्यो नहीं हो पाता। आत्मा रूपी राजा क्यो व्यसनी और विलासी हो रहा है। मन रूपी सारथी क्यो मदोन्मत्त है, बुद्धि रूपी लगाम क्यो शिथिल है? इन्द्रियाँ क्यो मनमानी करती हुई अपने-अपने विषयों मे आवश्कता से अधिक रत और लिप्त है।

जहा तक मेरी अन्तर्दृष्टि जाती है, मुझे एक ही कारण दृष्टिगत होता है और जिस एक शब्द मे मै 'अन्न' की सज्ञा देता हू। आध्यात्मिक अन्न की बात छोड दीजिये, भौतिक अन्न भी कितना निम्न स्तर को पहुच गया है। पहले किसी नगर के बाह्य क्षेत्र मे एक दो मास की दुकाने होती थीं और मास भक्षण करने वाले वहा चोरी छिपे ऐसे जाते थे मानो दुराचार और वेश्यागमन को जा रहे हो किन्तु आज तो प्रत्येक गली मे मास की दूकान खुली हुई है और पशु मारकर स्वाद से खाने वालो की सख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ रही है और मछली व कबाब आज तो पाश्चात्य रङ्ग मे रगी हमारी माताए बहिने अपने हाथो से मुर्गों की गर्दनें काट रही हैं और मछली व कबाब बनाकर खा रही हैं और खिला रही है। रक्त मे उत्तेजनाए आ रही हैं। जो माता निर्माता भवति थी, वह आज विनाशकर्त्री बन रही है। रक्त की उष्णताएँ रङ्ग ला रही हैं। रहा-सहा भद्राचार भाग रहा है और भ्रष्टाचार की जड़ें मजबूत हो रही हैं। लज्जा से सिर झुक जाता है जब हमारे आर्य बन्धु हमसे इस सम्बन्ध में बहस करते हैं और प्रमाण में कहते हैं कि ऋषि दयानन्द ने रोगियों को छूट दे रखी है धूम्रपान करने वाले और मास भक्षण करने वाले जब ऋषियो को बीच मे लाते हैं और उनको बदनाम करते हैं तो मेरी आत्मा चीत्कार कर उठती है कि मानवीय पतन की कहा पर सीमा है। एक आर्यसमाजी को जब धूम्रपान करने पर प्रतिबन्ध लगाकर सभासद् से वंचित कर दिया गया तो वह अपने रोग की दुहाई देकर ऋषि दयानन्द के प्रमाण से अपील करता है। एक अन्य भाई महात्मा हसराज के जीवन के अन्तिम क्षणो मे उबले हुए मास के रस की बात करते हैं। श्रुति क्या कहती है, इसका ध्यान किसी को नहीं है क्योकि जो स्वत. प्रमाण है उसकी घोर उपेक्षा है और अपने भ्रष्टाचार को हम भद्राचार सिद्ध करने के लिये आप्त पुरुषो तक को बदनाम करने मे नीचता नहीं समझते हम ऐसे भ्रष्ट मति वाले अथवा गुमराह व्यक्तियो के लिये श्रुति का यह प्रमाण देते है—

> “य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।
> गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि॥”
> [अथर्व० काण्ड ८, सूक्त ६ मत्र २३]

अर्थात् जो कच्चा मांस खाते हैं, जो मनुष्यो द्वारा पकाया मास

## आर्य समाजों को आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजो तथा जिलोपसभाओं को सूचित किया जाता है कि अब तक बहुत कम समाजो के वार्षिक चित्र प्राप्त हुये हैं। समाजों व उप सभाओ को चाहिए कि वे अपने वार्षिक चित्र १५ मई तक सभा कार्यालय मे अवश्य भेजदें, ताकि उनकी विधिवत् जाच हो सके तथा प्रतिनिधियों की स्वीकृति भेजी जा सके। १५ मई के पश्चात् आये हुये चित्रों को स्वीकार करने मे सभा को कठिनाई होगी तथा सदिग्ध और अपूर्ण चित्रों के कारण प्रतिनिधियों को मान्यता देना सम्भव नहीं होगा।

२—नियम स० १४ (व) के अनुसार जो एग्रीमेंट समाजों से नोटरी द्वारा प्रकाशित कराके भेजने को लिखा गया था, वह भी शीघ्र भेजने की कृपा करे। अन्यथा सम्बन्धित समाज के प्रतिनिधियो को प्रवेश-पत्र आदि न दिये जा सकेंगे।

३-जिन समाजों पर आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क व एजेंसी का धन विगत वर्षों का शेष है अथवा जो अब तक ग्राहक नहीं बने हैं, उन्हे चाहिये कि वे इस निमित्त सभा कार्यालय को तुरन्त धन भेजें। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समाजों के वार्षिक चित्रों को स्वीकार करने की यह भी एक स्थिति है जिसका समस्त समाजों को अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, एम. एल. ए.
सभा-मन्त्री

### प्राप्तव्य धन

सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सुवकोटि, आर्यमित्र का शेष धन, और ४ आना प्रति सदस्य का प्राप्त होने पर ही प्रतिनिधि स्वीकृत किये जा सकेंगे। —मन्त्री

### वार्षिक विवरण शीघ्र भेजिए

सभा की वार्षिक रिपोर्ट लिखा जाना आरम्भ हो गया है। सभा के मान्य अधिकारियों, अन्तरग सदस्यों, निरीक्षकों, अवैतनिक उपदेशकों, जिला उप सभाओं तथा विभागों के अधिष्ठाताओं से अनुरोध है कि वह अपने कार्य का विवरण शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। ताकि शीघ्र ही रिपोट प्रकाशित होकर सेवा में भेजी जा सके। —विक्रमादित्य 'वसन्त' सभा उपमन्त्री

खाते हैं और जो अण्डे खाते हैं वे शरीर को कब्रिस्तान बनाने वाले हैं उनका नाश कर देना चाहिये।

अन्न ही हमारे जीवन का मूल है, अन्न का स्पष्ट प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। कहावत भी है—'जैसा खाइए अन्न वैसा बने मन' आज यदि मन दूषित है, विचार भ्रष्ट हैं तो मूल मे अन्न है। राज योग के अनुसार जब अन्न का एक अधिक ग्रास भी विकारोत्पादक है तब राजसिक व तामसिक भोजन, प्रातः से सायकाल तक अनेक वार ठूस-ठूस कर खाना, चायपान का व्यसन क्या आर्यत्व का सृजन करेगा? हमारे धर्म मे उपवास अर्थात् निराहार रहने के पीछे आत्मिक शुद्धता और शक्ति की भावना ही तो अन्तर्निहित थी। सात्विक आहार से ही तो सत्व की प्राप्ति होती है। शरीर भोजन के लिए है अथवा भोजन शरीर के लिये है। नपा-तुला सतुलित शुद्ध पवित्र सात्विक आहार ही शिव सकल्पी मन का आधार है। जब तक हम इस भूल को पकड़कर अपना सुधार न करेंगे, विश्व सुधार केवल एक विडम्बना मात्र होगा। संयमित जीवन जो आर्यत्व का आधार है, उसके मूल मे जिस भौतिक और आध्यात्मिक अन्न की हमे आवश्यकता है, आज उसकी ओर हमारा ध्यान जाना चाहिये, यदि हमे आर्यसमाज को दीर्घजीवी रखना है।

आइए! हम अपने-अपने जीवन मे इस ऋत की शरण लें और जनकल्याण को प्राप्त करें।

मान्यवर 'वसन्त' जो, नमस्ते!

मैं ६५ वर्षीय एक सेवक हूं। पूर्व सस्कार तथा आर्यसमाज के सन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी के सम्पर्क से जीवन के ५० वर्ष, सेवा व्रत से व्रती होकर सेवक चला आ रहा है और अन्तिम सांस तक चलेगा।

मैं, वही व्यक्ति हूं जो 'आर्यमित्र' के प्रकाशन के सम्बन्ध मे कुछ न कुछ शिकायत करता रहा। इस समय जब मैं आपके परिश्रम से 'मित्र' कलेवर हर एक पहलुओं से उन्नत पाता हू तो आपके सदृश युवक की दीर्घायु की कामना करता हू और गर्व होता है कि समाज में लगनशील युवक हैं। प्रत्येक अङ्क में आपके द्वारा वेद की झकार पाता हूं—हृदय उछल उठता है। जबकि वर्तमान केवल राजनीति या वैसे ही प्रकरण प्रायः पत्रिकाओ में रहते हैं। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है 'वेद प्रचार'—किन्तु शून्यता का वातावरण है। आपकी रुचि से मैं प्रसन्न हूं—कारण मैं भी वेदप्रचार का तुच्छ सेवक हूं।

जहां पत्रिका की छपाई सुन्दर हो गई है वहां मेरी सम्मति से आप आवरण का कागज थोड़ा अच्छा देने का कष्ट करें। पत्रिका के सुन्दर आवरण एक आकर्षण की वस्तु होती है। आकर्षणीय वस्तु अपनाने की सब की इच्छा भी होती है।

—चन्द्रशेखर प्रधान आर्यसमाज आसनसोल

## महर्षि दयानन्द सरस्वती काशी शास्त्रार्थ की शताब्दी

( शोधपत्र जो प्राप्त हुये )

१—वेदों मे इतिहास नहीं है—श्री प० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति उपकुलपति वि. वि गुरुकुल कांगडी

२—"महर्षि दयानन्द और सांख्य शास्त्र"—श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री, गाजियाबाद।

३—महर्षि दयानन्द तथा पाणिनी पद्धति—श्री प० गोपाल जी शास्त्री दर्शनकेशरी अध्यक्ष काशी पडित सभा

४—'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है'—शास्त्रार्थ महारथी प० विद्यानन्द शर्मा मन्तिकी, वाराणसी।

५—इगलिश लेख "Do the Vedas Permit Serving Beaf to Honoured Yuests"

६—इगलिश लेख "Vedic Conception of Monotheism"

श्री पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री अध्यक्ष अनुसधान विभाग सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली।

७—सृष्टि सवत्, मानव संवत् और वैदिक संवत्—श्री रामपाल तेवतिया एम. ए एल. टी., सिद्धांतशास्त्री, भूपगढ़ी पोष्ट जानी जि. (मेरठ)।

८—इगलिश लेख The Vedas or The Rays of Hope for the Peaceless World" श्री विश्वमित्र वेद्यानम गौरी बिदनूर जि. कोलार (मैसूर)।

इससे पूर्व ६ शोध-पत्र प्राप्त हो चुके थे, जिनका विवरण दिया जा चुका है। अभी कई एक विद्वानों के शोध-पत्र आने की सूचना प्राप्त हो चुकी है।

श्री प० विश्वमित्र जी ने ही हिन्दी शोधपत्रो का इगलिश अनुवाद करने का कठिन कार्य अपने हाथों मे लेकर हमारे ऊपर अपार दया की है। उनका एक अनुवाद, 'देयर इज नो हिस्ट्री इन दी वेदाज' शोधपत्र का प्राप्त हो चुका है। आर्यजगत् के धनीवर्ग ने भी अपना सात्विक धन दान मे देकर कुछ आशा का सचार किया है।

शोधपत्र भेजने वाले विद्वानों एवं महाशयो को बहुत-बहुत धन्यवाद! आशा है दूसरे भाई भी अपनी सहायता का हाथ बढ़ाकर हमारे भारी भार को हल्का बनाने की कृपा करेंगे।

—क्षेमचन्द प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय आर्यसमाज भोजूबीर
वाराणसी कैण्ट

# धर्म शिक्षा और संस्कृत ज्ञान से राष्ट्र को ऊँचा उठाया जाए

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा प्रधान

## सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक कुरीतियों को चुनौती दी जाए

**—श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य**

[ यह व्याख्यान माननीय सभा प्रधान जी द्वारा महर्षि दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्दपुरी ( मोदीनगर ) के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह पर दि० २७-३-६९ को दिया गया था। आर्यसमाज द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ को चाहिये वे पूज्य सभा प्रधान जी के प्रेरणात्मक शब्दो से उत्साहित होकर अपने-अपने विद्यालयो मे धर्म-शिक्षा और सस्कृत शिक्षा को अनिवार्य करे और सांस्कृतिक कार्यक्रमो द्वारा राष्ट्र का अभ्युत्थान करें। —सम्पादक ]

आदरणीय बन्धुओ एव बहनो प्रधानाचार्य व प्रशासक महोदय।

मुझे आज आपके बीच आकर प्रसन्नता हुई कि आपने मुझे अपने बीच आने का मौका दिया। वैसे तो स्कूल एव कालिज जो आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रहे हैं, उनमे जाने का मौका मिलता रहता है और बच्चो का कार्यक्रम देखने का अवसर प्राप्त होता है। यहां भी बच्चो द्वारा की गई पी. टी, अनुशासन का प्रबन्ध और कलात्मक सास्कृतिक कार्यक्रम को देख कर हार्दिक खुशी हुयी, जैसा कि प्रधानाचार्य के द्वारा विदित हुआ कि यह विद्यालय हाई स्कूल तक है, तथा इसके पश्चात् बच्चो को इटर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अन्य विद्यालयो मे जाना पडता है, और वे कह रहे थे कि निश्चित रूप मे यह विद्यालय माध्यमिक विद्यालय मे परिणत होना चाहिए। इससे पूर्व मैं कुछ कहू आप लोगो ने जो मेरा स्वागत किया पी टी का प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम किया, उसका धन्यवाद, किसको दूं, बच्चो को दूं या इनको सिखाने वाले गुरुओ को दूं या प्रधानाचार्य जी को दूं, जिनके इशारो पर अध्यापको एव बच्चो के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। चलो मै इसका धन्यवाद श्री विक्रमादित्य जी बसन्त प्रशासक महोदय को देता हू, जिनके इशारे पर यह समस्त आयोजन हुआ।

जो भी कार्यक्रम हुए वे सभी देश-भक्ति की भावना से पूर्ण थे वैसे जो भी कार्यक्रम होवें वे सब ऐसे ही होने चाहिए, जो देश की उन्नति मे सहायक हो तथा देखने वालो के हृदय मे घर बना ले। वैसे तो कार्यक्रमों मे नाच गाने होते ही रहते हैं, परन्तु समस्त सांस्कृतिक कलात्मक कार्य देश-भक्ति ज्ञान-वर्धक होने चाहिए, जिस से ज्ञान का सचार किया जाये। जो ज्ञान सचार देश-भक्ति सास्कृतिक कार्यक्रमो द्वारा, कला प्रियता के गुण द्वारा घर करले। सास्कृतिक कार्यक्रमो के द्वारा बढ़ावा दिया जा सकता है। जैसा कि प्रधानाचार्य जी ने मुझे बताया कि सास्कृतिक कार्यक्रमो मे यह विद्यालय प्रथम आता रहा है। मुझे यहां के कार्यक्रमो को देखकर प्रसन्नता हुई और मैं कह सकता हू कि ऐसा करना ही चाहिए, और मैं अध्यापको का ध्यान इस ओर आकर्षित करता हू कि सास्कृतिक कार्यक्रमो द्वारा समाज की कुरीतियो को चुनौती दें। और उसे विनोद प्रियता का साधन न बनायें, और इन्हीं कार्यक्रमो द्वारा समाज का सुधार एव देश के प्रति जोश व्यापित करे।

दूसरी बात यह है कि जो आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश है, उसका इतिहास बहुत पुराना है। इस सभा के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश मे १५० हाई स्कूल हैं, १०० इण्टरमीडिएट कालिज हैं। ५० डिग्री कालिज हैं, १३ पोस्ट ग्रेजुएट कालिज है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश मे आर्य प्रतिनिधि सभा शिक्षा क्षेत्र मे पर्याप्त कार्य कर रही है। उत्तर प्रदेश मे आर्य प्रतिनिधि सभा का शिक्षा-क्षेत्र मे दूसरा स्थान है, कभी-कभी निश्चित रूप से इनके सगठन आदि के सम्बन्ध मे कठिनाई आ जाती है और हम उसे निष्पक्षता से सुलझाते हैं।

मैने इस विद्यालय के कुप्रबध के सम्बन्ध मे सुना तो मैने उसकी अपने शिक्षा विभाग के द्वारा जाच करायी तो उसमे यह पाया कि उसमे जो प्रबन्ध कारिणी के सदस्य है, वे रुचि नहीं लेते तथा मुझे इसकी उन्नति के लिए कडुवा फैसला करना पडा। और मैने उचित समझा कि यहाँ की कार्य कारिणी को भग कर दिया जाय, और कार्य कारिणी को भग करके श्री विक्रमादित्य जी वसन्त जो गोविन्दपुरी निवासी हैं, और आजकल लखनऊ मे रह रहे हैं और सभा उप मन्त्री हैं, उन्हे प्रशासक बनाने का अनुरोध किया। मुझे खुशी है कि उन्होने मेरे अनुरोध को स्वीकार किया तथा वह अब बडा दिलचस्पी से लखनऊ मे ही रह कर सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं। इसलिये आज के कार्यक्रम के 'वसन्त' जी ही श्रेय के अधिकारी है, और लखनऊ मे बैठे ही स्कूल की उन्नति के स्वप्न देखते रहते है और बडी अच्छी तरह से कार्य चला रहे है। गोविन्दपुरी मे रहने वाले व गाँव वालो के गौरव से यह विद्यालय हटा नहीं है, इसकी उन्नति हम सबकी उन्नति है। यहा के रहने वालो को इसकी उन्नति के लिये सोचना चाहिये। उसकी कार्यकारिणी के सम्बन्ध मे 'वसन्त' जी से मैंने चर्चा किया और वसन्त जी से कहा कि वह विद्यालय की सब बातो का ध्यान रखें और अब स्कूल की एक ऐसी मैनेजिग कमेटी बनाई जाय जो फिर झगडे न बने, और यह कालेज एक ऐसे मजबूत हाथो मे दे दिया जाय जिसकी कार्यकारिणी बड़ी सूझ-बूझ एव परिश्रम से इसे एक अच्छा इण्टर मीडिएट कालेज बनाने की योजना बनाए। वैसे तो कालेज की बिल्डिंग इतनी है कि वह इण्टर मीडिएट कालेज के हेतु पर्याप्त है। लेकिन आवश्यकता पडने पर वर्ष भर मे गोविन्दपुरी की जनता कुछ न कुछ प्रति वर्ष चन्दा इकट्ठा करके लाया करे। पर इतना मै कह सकता हू कि अगर जनता का सहयोग रहा तो अवश्य ही १९६९ मे तो नहीं १९७० तक इण्टर मीडिएट कालिज बन जायेगा और यहां के बच्चो को इण्टर की शिक्षा के लिये इधर-

उधर जाना नहीं पडेगा ।

तीसरी बात यहाँ के निवासी जो गोविन्दपुरी मे रहते हैं वे पजाबी हैं, तथा अधिकतर उजड कर आये हैं । मै दिल्ली कलकत्ते इधर-उधर गया और देखा ये लोग संस्थाओं और धर्मो मे रुचि रखते हैं । मैने दिल्ली मे देखा जबकि वे आये थे तो उन्होने भगवान् का घर गुरुद्वारा बनाया । मैने दिल्ली में पूछा कि भाई 'पहले अपना घर बनाओ गुरुद्वारा क्यो बनाते हो' हम मे कोई पेशावर से आया है कोई लाहौर से, तो कोई कहीं अन्य से इसी प्रकार हम आये हैं अगर हम वहीं पर रामलाल के बजाय मोहम्मद अली नाम रखा लेते तो हमारे वहीं मकान होते, परन्तु 'हमने मकान छोड़ने पसन्द किये अपना धर्म नहीं ।' अपनी जमीन जायदाद छोड़ सकने पर हम क्या अब अपने धर्म को छोड सकते हैं, इस प्रकार इनका साहस है, जैसी इनकी धर्म सस्थाए होती हैं, वैसे ही यह विद्यालय भी आप सबका है । गोविन्दपुरी तथा आस-पास की जनता इस विद्यालय को पनपायेंगी कोई शक्ति न लगा छोडेंगी और यह दिखा देंगे कि यह महर्षि दयानन्द कालिज है ।

आज मै आ रहा था तो मुझे मालूम हुआ कि गृह मन्त्री साहब मोदीनगर मे आ रहे है, तो मैने देखा कि गेट बना हुआ था जिस पर अग्रेजों मे ( वेल कम ) लिखा था । जब मैने देखा कि अब अग्रेज चला गया है, शायद आगे कहीं हिन्दी मे ही लिखा होगा । डिग्री कालेज के सामने एक गेट बना था उस पर भी अग्रेजी मे इसी प्रकार ही लिखा देखा तो मुझे बडा दु ख हुआ ।

उत्तरप्रदेश सरकार ने हिन्दी को राज्य भाषा स्वीकार किया है गगा और यमुना के बीच का क्षेत्र राम व कृष्ण का देश है । जहाँ पर अधिकतर आदमी हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी ही जानते है और हिन्दी ही मातृभाषा है । उत्तरप्रदेश मे मिल मालिक अग्रेजी से चिपटे रहे है । मैं तो अपने नौजवानो से कहता हू अगर तुम्हारे अन्दर अपनत्व है तो अग्रेजी के साइन बोर्डों को जहाँ भी मिले हटा दो । यदि मुकदमा चले या कोई बात हो तो प्रकाशवीर शास्त्री का नाम लो जो भी होगा वह अपने आप मै निपट लूगा ।

मेरे सामने मोदीनगर की श्मशान भूमि की बात आई कि उसने श्मशान भूमि को अपने मिल मे घेर लिया है । मैंने कहा मुझे उनसे नफरत है जो दलाली की बातें करते है । अपना काम निकालने के लिये । अरे हिन्दुओ श्मशान की भूमि को पूजीपति हाथ लगाता है। इस पर मुझे खुशी होनी कि समस्त हिन्दू उस पूजीपति के सामने लेट जाते और कहते इस पर फावड़ा तब तक नहीं चल सकता जब तक हममे प्राण का सचार है और यही पूजीपति यहां म्युनिसिपैलटी भी नही बनने देता है । मिनिस्टरो को पकड़ लेता है । और मेरी समझ मे नहीं आता कि यहाँ कितनी सस्थाए है यह किसी को भी पनपने नहीं देता । जब राष्ट्रपति शासन था तो हमने यहा म्युनिसिपैलिटी मजूर कराई क्योंकि इसके बिना वर्ष में करोडो रुपयो का सरकार का नुकसान होता है तो यहा से १६ सस्थाओ से रिपोर्ट पहुची कि यदि यहा म्युनिसिपलटी बन जायेगी तो मजदूरो पर टैक्स बढ जायेगा, हम समझते थे कि यहा सस्थाए न होगी इसलिये हमने कहा यह सब गलत है । इस पर राज्यपाल महोदय ने कहा मै क्या करूँ यहाँ कुछ राजनीतिक सस्थाए हैं और कुछ मोदी की अपनी । श्री के० सी० जोशी ने कहा कि कांग्रेस कमेटी ने भी लिखा है । मैने कहा छोटे बच्चो ने भी तो लिखा होगा, बच्चो मे हम उत्साह भरेगे जो हमारे रास्ते पर चलेंगे उनको मार्ग दिखाना चाहिये । ये पूजीपति अपने सामानो की भी कीमत किसी की भी परवाह न करके स्वयम् कीमत तय करते है । यह सब पूजी की लड़ाई है । किसान को उसके हक दिये जांय, जब मोदी अपने कपड़े की कीमत तय कर सकता है तो किसान गेहू या ईट का भाव तय नहीं कर सकता है । जिस दिन किसान डट कर खडा हो जायेगा तो ऐसा नहीं हो सकता कि किसान का भाव लखनऊ मे बैठ कर तय हो और किसान भी अब धीरे-धीरे जाग कर खडा हो रहा है । पूंजीपति समझता है । कि मजदूर और पूंजीपति अलग-अलग है । उनका नुकसान दो लाख का होना चाहिए गवर्नमेंट का दो करोड़ का वह पैसा भी हमारा है । परन्तु मील मालिक की मेहरबानी पर नहीं बल्कि मजदूर का हिस्सा बीच में ही होना चाहिए ताकि उस नुकसान को मजदूर अपना नुकसान समझे ।

अगर नई पीढी इस आवाज को नहीं समझेगी तो पथ-भ्रष्ट हो जायेंगे, पाकिस्तान की हालत हम देख चुके हैं । और फिर हिन्दुस्तान को देख रहे हैं, जो जिसे मिलना चाहिए, वह उसे मिले, अब रहने वालो को स्वतन्त्रता का सुख मिले । जब महर्षि दयानन्द विद्यालय के छात्रो को सभी सुविधायें दी जायेंगी तो श्री टीकमसिंह प्रधानाचार्य ने बताया कि हाई स्कूल परीक्षा का परिणाम ८२ प्रतिशत रहा, तो आगे भी रहेगा। मैं चाहता हू कि वह आगे और भी अच्छा रहे, आस-पास के लोग उत्सुक रहे, कि अपने बच्चो को महर्षि दयानन्द मे ले जाकर दाखिल करवायें । सरदार प्रतापसिंह अपने बच्चो को चण्डीगढ़ मे डी ए वी स्कूल मे पढ़ाता था तथा प्रिंसिपल श्री हरीराम ने कहा यहाँ बच्चे के लिये सध्या हवन करना अनिवार्य हैं । सरदार ने प्रिंसीपल मे कहा भगवान् का नाम लेना ही तो सिखाओगे कोई डाका मारना नहीं ।

मै प्रधानाचार्य से भी यही चाहूंगा कि यहा इस समय से धर्म शिक्षा और सस्कृत अनिवार्य रूप से होगी, इगलैण्ड मे एक विद्यार्थी से कहा गया कि किस विषय पर बोलोगे, बच्चा हिन्दुस्तानी था । उसने कहा शेक्सपीयर पर बोलूँगा, उन्होने कहा शेक्सपीयर के बारे में तो हम भी बहुत जानते हैं। कालिदास पर बोलो, तो उसने कहा कौन कालिदास तो उन्होने कहा कौन कालिदास तो उन्होने कहा कि क्या अपने देश की सस्कृति को भी नहीं जानते, इसलिये मै चाहूगा, धर्म-शिक्षा और सस्कृत शिक्षा इस विद्यालय में अनिवार्य रूप से दी जाये इन शब्दो के साथ मै पुन: प्रधानाचार्य वसन्त जी गोविन्दपुरी एव आस-पास की जनता एव आये हुए महानुभावो को हार्दिक धन्यवाद देता हू । ●

## गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश वेदारम्भ संस्कार

अपने प्रिय बालको को गुरुकुल की प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आधार पर प्रविष्ट करने वाले सज्जनो को यह सूचना देते हुये हर्ष होता है कि इस वर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में उत्सव के अवसर पर नवीन छात्रों का प्रवेश होगा । स्वच्छ वातावरण उपयोगी शिक्षा, रहन-सहन की सुव्यवस्था, प्राचीन आश्रम प्रणाली का वातावरण को देखते हुये प्रत्येक के लिये आकर्षक गुरुकुल में अपने बच्चो को प्रविष्ट कराए । नियमावली तत्काल महाविद्यालय के पते पर पत्र भेज कर मंगावें । स्थान कम है । अत. शीघ्रता करें ।

गुरुकुल के उत्सव पर सपरिवार पधार कर धर्म लाभ उठावें ।

—प्रकाशचन्द्र शास्त्री
मन्त्री-सभा

—आर्यसमाज अमोली (फतेहपुर) का उत्सव १७ और १८ मई को होगा । —मन्त्री

—आर्य समाज मुगलसराय का उत्सव १० से १३ अप्रैल तक मनाया जायगा । —मन्त्री

—१९ मार्च को आर्यसमाज सौरिख नें आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया ।

—स्वामी अनुभवानन्द

# वृष्टि यज्ञ के कतिपय परीक्षणों का संक्षिप्त विवरण

( गताङ्क से आगे )

★श्री प० वीरसेन वेदश्रमी, वेद-सदन, महारानी पथ, इंदौर २ म प्र

[८] खण्डवा—सन् १९६६ का वर्ष देश में भयकर अवर्षण का था। अवर्षण के कारण सूखा की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। खण्डवा के तालाब पूर्ण रूप से सूख गये थे और उनमे जमीन में दरारें भी पड गई थीं। ऐसी स्थिति में स्थानीय आर्य समाज के कार्यकर्ता और नगर वासियों ने दिनाक ११ से १८ जुलाई तक वृष्टि यज्ञ कराया इससे पूर्व वर्षा यहां बिलकुल नहीं हुई थी। मेघ ऊपर के क्षेत्र से चले जाते थे। दिनांक ११ को यज्ञ प्रारम्भ होने पर सायकाल यज्ञ समाप्त होते ही जोर से वर्षा प्रारम्भ हो गई। आसपास के भी क्षेत्र मे वर्षा होने लगी। अन्य दिवस भी वर्षा हुई। कुल ४।। इच वर्षा यज्ञ के दिनो मे हुई। इसमे व्यय ३५००) हुआ।

(९) बिलासपुर ( म प्र )—सन् १९६६ मे अवर्षण के कारण जब सितम्बर मास में छत्तीसगढ़ क्षेत्र की धान की फसल नष्ट होने को थी। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज बिलासपुर ने वृष्टि यज्ञ का आयोजन कराया। यज्ञ ३ से ११ अक्तूबर तक सम्पन्न हुआ। मध्य प्रदेश के मानसून समाप्त होने की सूचना आकाशवाणी से हो चुकी थी। ऐसी स्थिति मे प्रयत्न करना अपना कर्त्तव्य हैं तथा परिणाम जो भी होगा वह अपने अनुसंधान मे सहायक होगा, इस आशा से वृष्टि यज्ञ का प्रयोग किया। दिनाक १२ अक्तूबर को बिलासपुर के पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण क्षेत्र के लगभग ४०,००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे अच्छी वर्षा पड़ी, किन्तु बिलासपुर नगर मे बहुत कम वर्षा हुई। जिससे फसल नष्ट होने से बच गई ऐसा ज्ञात होता है कि इस यज्ञ के प्रभाव से पूर्वीय क्षेत्र से मानसून का संचालन हुआ था। यदि २-३ दिन और यज्ञ होता तो उसका और अधिक आकर्षण होने से बिलासपुर में तथा इसके पश्चिमी क्षेत्र मे भी वर्षा व्याप्त हो जाती। इस यज्ञ मे व्यय ३५००) हुआ।

## सन् १९६७ में ३ परीक्षण

(१०) दिल्ली—सन् १९६७ में दि० ७ से १२ फरवरी को पजाबी बाग मे श्री कपिल मुनिजी राजपाल तथा उनके भाइयों ने राष्ट्र हित की कामना से वृष्टि यज्ञ करवाया। दि० ८ को दिल्ली के ऊपर का सम्पूर्ण आकाश बादलो से आच्छादित हो गया था, और शीघ्र ही वर्षा की आशा हो गई। परन्तु इस स्थिति के पश्चात् दि० ९-१० को काश्मीर की घाटियों मे वर्षा प्रारम्भ हो जाने से वायु का प्रवाह उत्तर एवम् पश्चिम की ओर अधिक वेग से हो गया,जिससे यहाँ के बादलो का सचय क्रमश: घट गया। पुन. बादलो के प्रारम्भ से निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होने से उत्तरोत्तर सुधार होकर दिनाक १९ फरवरी को दिल्ली क्षेत्र मे प्रात अच्छी वर्षा हुई। यज्ञ समय में तत्काल जो लाभ दीखने की आशा थी उसमे पूर्वोक्त प्राकृतिक कारणों से विलम्ब हो जाने से सामान्य जनता को उस समय निराशा भी हुई। यह परीक्षण भी अवर्षण की स्थिति एव बिना वर्षा के मौसम की स्थिति का ही था। उपरोक्त विपरीत स्थिति हो जाने पर आवश्यकता इस बात की भी थी कि यज्ञ ४-५ दिन और बढ़ाया जाता परन्तु समय एव द्रव्य की अपेक्षा से आगे नहीं चलाया जा सका। अतः उतने मात्र यज्ञसे पुन अनुकूल स्थिति निर्माण में कुछ विलम्ब से वर्षा सम्पन्न हो गई और फसल को लाभ हो गया। इस यज्ञ मे रू. ६०००) व्यय हुआ। यज्ञ सम्बन्धी अन्य बाह्य कार्यों का व्यय अतिरिक्त हुआ।

(११) अजमेर—सन् १९६७ में जुलाई २४ से ३० तक श्री हकीम वीरूमल जी आर्यप्रेमी ने अजमेर मे वृष्टि के अभाव के कारण वृष्टि यज्ञ करवाया। यज्ञ क्रिया के मध्य मे ही २ दिन ऐसी वर्षा हुई कि वेदी एव यज्ञ कर्त्ता अच्छी प्रकार भीग गए। अन्तिम दिवस दिनांक ३० को बादल थे। आकाश मेघाच्छन्न रहा। कभी-कभी हलकी फुहारे हुई परन्तु इस दिन विशेष वर्षा नहीं हुई। आस-पास के क्षेत्र मे वर्षा अच्छी हुई और अजमेर मे भी ३ दिन बाद अच्छी वर्षा हो गई। इस यज्ञ मे लगभग १५००) रु व्यय हुआ।

**वैदिक अनुसन्धान**

(१२) शाहपुरा (जिला—भीलवाड़ा—राजस्थान)—सन् १९६७ मे अगस्त ४ से १० तक स्थानीय आर्य समाज ने वर्षा के अभाव को दूर करने के लिए यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ प्रारम्भ होने के दूसरे ही दिन से वर्षा प्रारम्भ हो गई और ता० १० तक के मध्य कई बार वर्षा हुई। बाद को भी समय-समय पर वर्षा होती रही। इस यज्ञ मे लगभग २०००) रु व्यय हुआ।

## सन् १९६८ मे ६ प्रयोग

(१३) ग्राम वर्धा (जिला विदिशा) (म प्र.)—सन् १९६८ के जून मास के प्रथम सप्ताह मे यज्ञ हुआ। यह ग्रीष्म ऋतु का ही समय था। यज्ञ का उद्देश यद्यपि वर्षा का नहीं था तथापि "यज्ञाद्भवति पर्जन्य.'—इस नियम के अनुसार बादल उत्पन्न हुये दिनाक ३, ४ व ५ को कुछ बूंदे इस ग्राम मे भी पडीं और समीप के ग्राम मे वर्षा कुछ अधिक हुई इस यज्ञ मे लगभग १२००) रु० व्यय हुआ।

(१४) ग्राम ललरिया (जिला-विदिशा)—सन् १९६८ के जून मास मे १२ से १४ जून को यह यज्ञ सम्पन्न हुआ। यह ग्रीष्म ऋतु का ही समय था। यज्ञ वर्षा कराने के उद्देश्य से नहीं किया था तथापि—'यज्ञाद्भवति पर्जन्य.'—यज्ञ से बादल होते हैं, इस नियम के अनुसार बादल उत्पन्न हुये और दिनाक १३ जून को साय यज्ञ समय मे इतनी अधिक वर्षा हुई कि यज्ञशाला मे पानी भर गया। अग्नि भी बुझ गई। यज्ञ कर्त्ता भी अत्यधिक भीग गये। शामियाना भी गिर गया। यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व बादल नहीं थे और दिनाक १२ को भी यज्ञ के समय आकाश स्वच्छ ही था। इस यज्ञ मे लगभग ७५०) रु व्यय हुआ।

(१५) शाहपुरा जिला भीलवाडा—राजस्थान)—सन् १९६८ के जून २८ से १० जुलाई तक वृष्टि यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनाक ४, ५, ६, ८ एव ९ को शाहपुरा मे वर्षा हुई तथा दिनाक ७ को शाहपुरा से ७-८ मील की दूरी पर वर्षा हुई थी। बाद को वर्षा कम मात्रा मे अत्यल्प हुई।

(१६) शाहपुरा ( जिला-भीलवाडा)—सन् १९६८ मे वर्षा ऋतु मे वर्षा की कमी होने से अक्टूबर मास की फसलें नष्ट होने को थी और राजस्थान सरकार ने भी राजस्थान मे अकाल की घोषणा जलाभाव के कारण कर

[ क्रमश ]

# काव्य कानन

## मैं नहीं भगवान देखा

मन्दिरो में अर्चना की, वन्दना की,
द्रव्य दी, सुप्रसाद खाया,
पर वहां कुछ भी न देखा, कुछ न पाया
जप किया अरु तप किया, व्रत–
एक नहीं अनेक पाले,
यज्ञ मे हो सम्मिलत मैं,
फेर डाले लक्ष माले।
मै नहीं भगवान देखा ॥
एक ने मुझ से कहा कि–
तीर्थों मे ईश का है वास होता,
शान्ति मिलती जीव को–
और मुक्ति का अभास होता।
घूम डाला मै गली मे तीर्थों की,
हर जगह इसान का व्यापार देखा,
हायरे भगवान के दरबार में भी—
द्रव्य का बाजार देखा।
मैं नहीं भगवान देखा ॥
देख डाला मै पुजारी द्रव्य पर—
धनवान की जयकार करते,
देख डाला जटाधारी—
माल पूआ दूध का फरहार करते
देख डाला पण्डितों को फूल—
अक्षत बीच केवल द्रव्य ही टटोलते,
मैं हुआ हैरान कि धनवान से—
भगवान आकर बोलते ?
मैं नहीं भगवान् देखा ॥
एक दिन मैं जा रहा था, गा रहा था–
एक फक्कड़ यों मिला,
मैं रुका, कुछ स्वर निराला—
गीत था, इन्सान में भगवान है खोजो भला।
जा रहा वह मस्त में भी–
देखने भगवान उसके द्वार पहुचा,
अर्थ कहने का ये मेरा–
ससयों से मैं वहां बेजार पहुचा,
देखते ही वह मुझे हँसने लगा,
और बोला आ मेरा भगवान तू है।
एक ही रोटी रखी थी, साग उस पर–
दे कहा अब आज का मेहमान तू है।
मैं वहीं भगवान देखा ॥
अब समझ पाया कि है भगवान,
बस इन्सान के उस भाव मे,
दीनता पर तरस खाना, और सेवा–
की अनोखी चाव में,
खोजना बेकार है भगवान को,
विश्वासियों ससार मे,
दीख जाता है अरे, भगवान निश्चय–
दीनता और दीन के ही प्यार में ॥
मैं नहीं भगवान देखा ॥

—रामअचल पाण्डेय 'सेवक', मेंहदावल

## चकोर-वृत्ति

'चकोर' बन, हृदय, में जायेगी वृत्ति।
तब ज्योति, पिया को, यह पायेगी वृत्ति ॥
हृदय गुफा के भीतर, आनन्द भरा है।
ज्ञान अग्नि का दूत, द्वार पै खड़ा है ॥
सत्य से अविनाशी, गृह पायेगी वृत्ति।
जब योग निद्रा मे, सो जायेगी वृत्ति।
तब मोक्ष, आनन्द, फल पायेगी वृत्ति ॥
चकोरा, बन हृदय···॥
वैदिक ज्ञान का मन, परवाना बन जा
ईश्वर प्रेम का ही, मस्ताना बन जा।
तब ही, रूप अपना, अपनायेगी वृत्ति।
अनन्य, भक्ति में, रम जायेगी वृत्ति।
तब झूम-झूम, ओ३म्, गुण गायेगी वृत्ति ॥
चकोरा···
मानव के पिण्ड मे ही, ब्रह्माण्ड बसा है।
मृत्यु निमत्रण से ना, कोई बचा है।
आत्म, सग प्रीत ही, सुख पायेगी वृत्ति ॥
पपीहा, ही भाव, बनायेगी वृत्ति।
तब स्वात, बूंद अमृत, को पायेगी वृत्ति ॥
चकोर···
विषयों से तोड़ वृत्ति, प्रभु संग जोड़ लो।
अमर पद पाने को ही, बहिर्मुख मोड़ लो।
त्रिवेणी, नदिया मे, नहायेगी वृत्ति।
जब 'दासी' सुरति संग, मिल जायेगी वृत्ति।
तब ब्रह्म, मय ही रूप, हो जायेगी वृत्ति ॥
चकोर··· ॥

—सावित्री, बहजोई

## अन्तर्वेदना

ले चल मुझ को मेरे मनुवा, जहां प्रभु का वास है।
व्याकुल हूं मैं जिसके बिना, लगी दर्शन की प्यास है ॥
मेरे हृदय की कुञ्ज गली मे, छाया है अतिशय अंधियारा।
कैसे पहुचूं पास पिया के, जो है मेरा प्रीतम प्यारा।
देखूं कैसे उस ज्योति को, विमल जिसका प्रकाश है ॥
ले चल···
मेरे हृदय की हर धड़कन तो, पल-पल मुझसे यह कहती है।
हो पवित्र उस प्रीतम जैसी, विरह वेदना क्यों सहती है।
कालिमा तू धो दे अपनी, अश्रु जल तेरे पास है ॥
ले चल···
ऐसा सुना है मैंने सखीरी, करुणामय है अन्तर्यामी।
जो पुकारे दिल से उसको, होता नहीं वह पथ से प्रगामी ॥
लेता है वह कठिन परीक्षा, देता विजय विश्वास है ॥
ले चल···
राग द्वेष छल और कपट को दूर किया जीवन से अपने।
देखती मैं निश दिन प्रीतम, मिलन के मधुमय सपने।
'कमलेश' जो है दासी उसकी, तो वह भी उसका दास है।
ले चल···

—सुश्री कमलेश बजाज, लखनऊ

# संध्या के अघमर्षण मन्त्र

सहस्रो वर्षों से सोई हुई आर्य जाति को जगाने वाले, पतितोद्धारक, विद्यार्क प्रकाशक, वैदिक धर्मोद्धारक, सन्मार्ग-प्रदर्शक, ऋषियो के महर्षि, आचार्यों के आचार्य, पितृतुल्य गुरुदेव दयानन्द जी महाराज ने वैदिक धर्म को भूले-भटके, दासता मे पड़े हुये अत्याचार व असह्य दुःखद्वन्द्वो को सहन करने वाले लोगो के लिए बढ़ते हुए पापो के विमोचन करणार्थ सध्या हवन की प्राचीन प्रणाली को पुन स्थापित किया। इस युग दृष्टा महर्षि ने वैदिक सन्ध्या मे अघमर्षण के तीन मन्त्रो को रखा जो ऋग्वेद के१० वें मण्डल १९० सूक्त १-२-३ मन्त्र हैं—

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्य जायत ततो रात्र्य जायत। तत. समुद्रो अर्णव.॥१॥

ओ३म् समुद्रार्दर्णवादधि सवत्सरोऽजायत अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥

ओ३म् सूर्याचन्द्र मसौ धाता यथा पूर्वम कल्पयत्। दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्त रिक्ष मथो स्व.॥३॥ [ऋ. म १० सू. १९० म. १-२-३]

महर्षि भाष्य.—(धाता) सब जगत् का धारण और पोषण करने वाला और (वशी) सब को वश में करने वाला (यथापूर्वम्) जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान मे जगत् के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्व कल्प की सृष्टि मे जगत् की रचना थी और जैसे जीवों के पाप-पुण्य से उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियो के देह बनाये हैं (सूर्याचन्द्र मसौ) जैसे पूर्वकल्प मे सूर्य-चन्द्र लोक रचे थे—वैसे ही इस कल्प मे भी रचे हैं (दिवम्) जैसा कि पूर्व कल्प में सूर्यादि का प्रकाश रचा था वैसा इस कल्प मे भी रचा है तथा (पृथिवीम्) जैसी यह पृथ्वी प्रत्यक्ष दीखती (अन्तरिक्षम्) जैसा पृथ्वी और सूर्य लोक के बीच में पोलापन है (स्व.) जितने आकाश के बीच मे लोक है उनको (अकल्पयत्) ईश्वर ने रचा है। जैसे अनादिकाल से लोक लोकान्तरों को जगदीश्वर बनाया करता है वैसे ही अब भी बनाये हैं—और आगे भी बनावेगा क्योंकि ईश्वर का ज्ञान विपरीत कभी नहीं होता किन्तु पूर्ण और अनन्त रहने से सर्वदा एक रस ही रहता है। उसमे वृद्धि, क्षय और उल्टापन नहीं होता। इसी कारण (यथा पूर्वमकल्पयत्) इस पद का ग्रहण किया है।

(विश्वस्यमिषन) उसी ईश्वर ने सहज स्वभाव से जगत् के रात्री दिवस, घटिका, पल और क्षण आदि को जैसे पूर्व थे वैसे ही (विदधद्) रचे हैं इसमे कोई ऐसी शका करे कि ईश्वर ने किस वस्तु से जगत् को रचा है, उसका उत्तर यह है कि अभीद्धात्तपस ईश्वर ने अपने अनन्त सामर्थ्य से सब जगत् को रचा है जो कि ईश्वर के प्रकाश से जगत् का कारण प्रकाशित और सब जगत् के बनाने की सामग्री ईश्वर के आधीन है (ऋतम्) उसी अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या का खजाना वेदशास्त्र को प्रकाशित किया, जैसा पूर्व सृष्टि मे प्रकाशित था और आगे के कल्पो मे भी इसी प्रकार वेदो का प्रकाश करेगा (सत्यम्) जो त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व रज और तमोगुण से युक्त जिसके नाम अव्यक्त अव्याकृत सत् प्रधान जो प्रकृति है जो स्थूल और सूक्ष्म जगत् का कारण है सो भी अध्य जायत) अर्थात् कार्य रूप होके पूर्व कल्प के समान उत्पन्न हुआ है (ततो रात्र्य जायत.) उसी ईश्वर के सामर्थ्य से हजार चतुर्युगी प्रमाण से रात्री कहाती है सो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है इस में ऋग्वेद का प्रमाण है कि जब जब विद्यमान सृष्टि होती है इसके पूर्व सब आकाश अन्धकार रूप रहता है और उसी अन्धकार मे जगत् के पदार्थ और सब जीव उसमे ढके हुए रहते हैं उसी का नाम महारात्री है [तत समुद्रो अर्णव] तदनन्तर उसी सामर्थ्य से पृथ्वी और मेघ मण्डल मे जो महा समुद्र है सो भी पूर्व सृष्टि के सदृश ही उत्पन्न हुआ है (समुद्रादर्ण वादधि सवत्सरो अजायत) उसी समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् (सवत्सर) अर्थात् क्षण मुहूर्त प्रहर आदि काल भी पूर्व सृष्टि के समान उत्पन्न हुआ है। वेद से लेके पृथ्वी पर्यन्त जो यह जगत् है सो ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके सबमे व्यापक होके अन्तर्यामी रूप से सबके पाप-पुण्यो को देखता हुआ पक्षपात छोड़ सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। ऐसा निश्चित ज्ञान के ईश्वर से भय करके सब मनुष्यो को उचित है कि मन कर्म और वचन से पाप कर्मों को कभी न करें इसी का नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्त करण के कर्मो को देख रहा है इससे पाप कर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड देवें।'

★ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री
गुरुकुल सिरसागज, मैनपुरी

# नैतिक उत्थान आन्दोलन

'लोभ. पापस्य कारणम्'

वास्तव यदि देखा जाय तो लोभ ही पाप का कारण है यदि ससार मे कोई भी लोभ न करे तो पाप का प्रादुर्भाव हो ही नहीं सकता लोभ ही पाप का मूल कारण क्यो है इसका एक दृष्टान्त पाठको के समक्ष रखता हूं।

काशी से एक पडित पढकर घर आये, सभी ग्रामवासियो ने बड़ा सम्मान किया, जब दो तीन दिन व्यतीत हुये कि पण्डित जी की पत्नी ने पूछा, कि पतिदेव! कृपा कर यह बतलाइये कि 'पाप का बाप कौन है' पडित जी मौन, तब पत्नी बोली कि आप तो कुछ भी न पढे, पुन जाकर भ... भाति , पडित जी को ब... लज्जा , और घर से वह च... दिये। मार्ग मे जो उन्हे मिल... उसी से इस प्रश्न का उत्तर पूछ... एक दिन एक वेश्या ने कहा, मह... राज आप क्या चाहते हैं? पडि... जी ने अपने प्रश्न का उत्तर पूछा वेश्या बोली महाराज आप को इ... का उत्तर मै दूंगी, परन्तु यदि आ... मेरी एक छोटी-सी प्रार्थना स्वीका... कर लें। पडित जी बोले वह क्या वेश्या ने कहा महाराज आप अप... हाथ से बनाकर मेरे यहा भोज... कर लिया करें, सामान मैं आपक... दे दिया करूँगी तथा प्रतिदिन एक अशर्फी दूंगी। महाराज अब आ... ने प्रश्न को भूल वहीं रहने लगे कुछ दिनो के अनन्तर वेश्या... कहा महाराज अबकी बार प्रति... दिन दो अशर्फियां दिया करूँगी यदि आप मेरे हाथ का भोजन कर लें मैं स्नानादि कर शुद्ध रीति से भोजन बनाऊँगी। आपको प्रतिदिन भोजन बनाने मे भी कष्ट होता है पण्डित पर तो लोभ सवार हो ही गया था, अतः जब पण्डित भोजन करने ही बैठा कि वेश्या ने एक तमाचा उसके गाल पर मारा कि मूर्ख! यही [लोभ] तो पाप का बाप है जो तू मेरे हाथ का भोजन करने को उद्यत हो गया।

लोभो नृणा पिता माता न
लोभाच्चपर कियत्।
यथा लुब्धोद्विजः कश्चिद्
भोजन वेश्यायऽचरेत्॥

अब पाठक जान गये होंगे कि लोभ ही पाप का कारण है। अतः प्रत्येक मनुष्य लोभ से बचता रहे जितना लोभ से बचेगा पापों से छुटकारा मिलेगा। पाठक जानना चाहेंगे कि जब पापो का बाप होता है तो मा भी अवश्य होती है अत उससे भी बचना चाहिए, अन्यथा सत्यानाश हो जायेगा। किससे बचना है पाप की माता 'शराब'

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# मन्द प्रकाश फिर चमक सकता है

२९ सितम्बर १९६८ मे आर्य [मि]त्र मे एक लेख 'प्रकाश जो अब [म]न्द पड़ गया है' मे आर्यसमाज [क]ी वर्तमान स्थिति का सिंहाव-[ल]ोकन हुआ है। लेखक की [स]म्मति में आर्यसमाज मे उचित [औ]र उत्तरदायित्वपूर्ण नेतृत्व का [अ]भाव है जिसे प्रत्येक विचारशील [आ]र्य स्वीकार करेगा। वर्तमान [स्थि]ति को सुधारने हेतु कुछ सुझाव [भ]ी बताये गये हैं जो पाठकगण के [स]ामने हैं, परन्तु विद्वान् लेखक ने उत्तरदायित्वपूर्ण नेतृत्व के अभाव के कारणों की मीमासा करने का [क]ष्ट नहीं किया है। वर्तमान लेख इसी दशा मे एक प्रयत्न है।

यह कहा जाता है कि नेता जन्म से होते हैं बनाये नहीं जाते। इस किम्वदन्ति मे सत्य का केवल इतना ही अश प्रतीत होता है कि नवजात बालक, अपने साथ पिछले जन्मों के सस्कार लेकर आता है जो विकसित बालक मे एक विशेषता और व्यक्तित्व उत्पन्न कर देता है। वैदिक धर्म हमे सिखाता है कि नवजात बालक को ऐसे वातावरण मे रक्खा जावे कि उसकी अच्छी प्रवृत्तियो का विकास हो। इसीलिये १६ संस्कारों का महत्व है। अन्यथा कितना ही संस्कारी बालक क्यों न हो यदि उसको मानव सम्पर्क से अलग रक्खा जावे तो वह मानव आकृति मे निरा पशु ही रहेगा। केवल शिक्षा-दीक्षा विद्या और सामाजिक वातावरण ही एक मानव बालक को पशुपन से उठाकर शूद्र, वैश्य, क्षत्री और ब्राह्मण पद पर आसीन कर देता है अतः मनोवाछित मानव सम्पर्क, उच्च वातावरण, विद्या और उचित समय पर सस्कारो का प्रभाव अपना महत्त्व रखते हैं। यह भी सत्य हो है जिस प्रकार एक प्रकार के बीज धरती मे वपन होने पर उचित देख भाल करते रहने पर भी बीज के अकुरों के साथ अन्य अन्य प्रकार की अनिष्ट घास आदि भी उगने लगती हैं जिनका निराकरण आवश्यक हो जाता है उसी प्रकार बालक मे अच्छी प्रवृत्तियो के विकास के साथ ही पिछले जन्म की अनेक बुरी प्रवृत्तिया भी उभरने लगती हैं, उन्हीं बुरी प्रवृत्तियो के पल्लवन को रोकने के लिये शिक्षा दीक्षा की अनेक रीतियो का महत्त्व बढ़ जाता है। जितने अश मे हम बालक को पूर्णरूप से उचित दशा मे विकसित करने मे प्रयत्नशील रहते हैं उतने ही अश मे हम उस बालक को सफल मनुष्य बनाने मे सफल होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसी कारण से पुरुषार्थ को प्रारब्ध से बड़ा माना है और हम सबको पुरुषार्थी बनने का आदेश दिया है। अति प्राचीन काल से मानव को मानव बनाने के लिये सफल प्रयत्न होते रहे हैं और आर्यसमाज के आदिम काल से

व्यक्तिगत रूप से तथा समष्टिगत रूप से डी. ए. वी. कालिज लाहौर कन्या महाविद्यालय जालधर, गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल वृन्दावन आदि के समान कारखाने मानव निर्माण के लिये खोले गये थे, जब कि परिस्थितिया पूर्ण रूप से अनुकूल भी नहीं थीं, फिर भी आर्य ससार को सतोष है कि उसे केवल अपने प्रयत्न के अनुरूप ही नहीं किन्तु प्रयत्न की अपेक्षा से कहीं अधिक सफलता प्राप्त हुई है। अब भी यदि आर्यसमाज जीवन यात्रा मे सफल होना चाहता है तो उसको शत प्रतिशत स्वावलम्बी होकर चिर परीक्षित शिक्षणालयों की शरण लेना ही पड़ेगी। परन्तु इस लेख का अभिप्राय उचित सस्कारो और वातावरण के अन्य क्षेत्रो मे से केवल आर्यसमाज के सगठन की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना है।

यह सर्व विदित है कि जन समुदाय के एक क्षेत्र मे एक प्रधान नगर बन जाता है जो उस क्षेत्र की अनेक प्रवृत्तियो का केन्द्र बन जाता है। इस तथ्य से लाभ उठाकर राजनैतिक दलो एव सांस्कृतिक प्रवृत्तियो के केन्द्र नगरों मे स्थापित हो जाते हैं जहां से पर्याप्त प्रेरणायें सम्बन्धित क्षेत्रो को मिलती रहती हैं। परन्तु एक अभागे आर्य समाज का अब ऐसा सगठन है जिसने नगर की इकाई की उपेक्षा की है। जिन नगरो मे आर्यसमाज एक ही केन्द्र है उसके सभासदो की दृष्टि नगर भर के जन समुदाय की ओर रहती है और वह अपनी शक्ति भर आर्यसमाज की विचारधारा के फैलाने मे प्रयत्नशील रहता है। परन्तु जिन नगरो मे किन्हीं कारणो से एक के स्थान मे अनेक आर्य समाजें स्थापित हो गई हैं और जो ईश्वर भक्ति और उपासना के अतिरिक्त शिक्षा प्रसार और आर्यसमाजी विचारधारा के प्रसार का कार्य भी स्वतन्त्र रूप से करती है उन समाजो के सभासदों मे प्रायः दृष्टिकोण की व्यापकता का अभाव सा पाया जाता है और कृण्वन्तो विश्व मार्यम् की घोषणा करने वाला सगठन अपने सगठन की त्रुटि के कारण तथा प्रजातन्त्र के अवैदिक अर्थ अपनाने के कारण एक ही नगर मे अनेक टुकड़ियो मे बटे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। नगर के दृष्टिकोण से आर्यसमाज की कोई भी प्रवृत्ति इस रूप मे नहीं हो पाती जिसमे नगर के सभी आर्य [पुरुषो का सहयोग सम्मिलित हो]। फल यह होता है कि नगर का एक-एक समाज अपने-अपने प्रति सीमित साधनो के कारण नगर के प्रभावशाली तथा सामान्य जनता के बहुत छोटे अंश से ही अपना सम्पर्क स्थापित कर पाता है और समष्टि रूप से आर्य समाज का कोई भी प्रभाव नगर की जनता पर नहीं पड़ता। नगर में आर्यसमाज के किसी केन्द्रीय सगठन के प्रभाव मे उसके कार्यकर्त्ता अपने व्यक्तित्व के उस विकास से वचित रह जाते हैं जो वह आर्य समाजी रहते हुए नगर के पथ प्रदर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर सकें। इन न्यूनता को अनुभव कर के अब अनेक नगरो मे आर्य केंद्रीय सभाएं स्थापित होने लगी हैं परन्तु प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें इन सभाओ के विकास के प्रति भी उपेक्षा की दृष्टि रखती हैं और सबका सगठन भिन्न-भिन्न प्रणालियों पर होता जा रहा है जो कालान्तर मे आर्यसमाज को प्रगति के लिये एक सिरदर्द हो सकता है। समय की मांग है कि प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें ऐसी केन्द्रीय सगठनों को समान रूप मे विकसित होने के लिये कुछ नियम बनाकर उनको अपने सगठन का एक अग बनावें ताकि एक आर्यसभासद को विकसित होने का शुद्ध मार्ग प्राप्त हो सके और सही अर्थो मे नगर का प्रतिनिधित्व अपने प्रान्तीय सगठन मे कर सके।

आर्यसमाज के सगठन मे जिस प्रकार नगर की इकाई की उपेक्षा है उसी प्रकार उसमे अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अभाव भी खटकता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तो ससार की समस्त आर्य सगठनों की शिरोमणि सगठन है जो आपद्धर्म के रूप मे भारत की प्रतिनिधि सभाओं का भी नेतृत्व करती है। दोनो कार्य एक ही सगठन द्वारा न्याय और उत्तरदायित्व पूर्ण रूप से नहीं हो सकते जबकि अलग-अलग सगठनों के लिये जन और धन तथा कार्यक्रम का विस्तृत क्षेत्र पड़ा हुआ है। यह बात अपनी जगह पर ठीक ही है कि कुछ प्रभावशाली व्यक्ति विशेष अनेक सगठनों मे रहकर भी अपने गुणों का परिचय देते हैं परन्तु श्रम विभाग के नाते अखिल भारतीय

## नैतिक उत्थान आन्दोलन

( पृष्ठ ९ का शेष )

जिसको सस्कृत मे 'सुरा' कहते हैं, यही पापो की माता है इसी ने बड़े-बड़े महान् अनर्थ मनुष्यो से करवा डाले हैं। तब भी लोग इसे अपनाये हुए हैं। करोडो रुपया प्रति दिन इस को पीने मे खर्च किया जाता है सरकार के शराब के ठेके खुले हुए हैं, परन्तु इनको यह नहीं मालूम कि यह अकेली शराब ही कितने बड़े-बड़े अनर्थ करवा डालती है ? इसी के पीने के कारण कितने मनुष्य पापी हो जाते हैं, इसका दृष्टान्त देकर उपसहार करते हुए लेखनी को विराम देता हू—

एक राजा ने एक पण्डित के उपदेशों को सुनकर सब पापो को उसी दिन से छोड़ दिया, परन्तु शराब पीना न छोडा। पण्डित ने कहा यही तो पापो की जड़ है। राजा बोला यह कैसे हो सकता है। जब तक अनुभव न कर लें कैसे मान लें कि शराब ही पाप की जड है, क्योंकि शुद्ध अगूर से बनती है। अत कोई दोष नहीं। पण्डित ने कहा कि अच्छा क्या इस स्त्री के साथ काम कर सकते हैं राजा ने कहा पर स्त्री के साथ करने से पाप लगेगा, फिर ब्राह्मण है। क्या इस बुढ्ढे का सिर काट सकते हो ? राजा ने कहा हत्या पाप लगेगा। ब्राह्मण ने फिर कहा कि मास खा सकते हो? राजा ने उत्तर दिया यह अभक्ष्य पदार्थ है मैं नहीं खा सकता। तलवार, मास, बुड्ढा और रूपवती तरुण स्त्री चारो एक एकान्त कमरे मे थे। ब्राह्मण ने पूछा शराब पियोगे ? राजा ने कहा अवश्य इसमे कोई दोष नहीं कहकर शराब पीली और ब्राह्मण ने राजा को उसी कमरे मे रहने के लिये कह दिया। थोडी देर मे राजा को नशे मे कुछ सुधबुध न रही। रखा हुआ मास खाने लगा फिर कामवासना भी रूपवती को देखकर जागृत हुई, वह उसके पास गया। स्त्री ने कहा कि यह बुड्ढा बैठा है यहाँ लज्जा आती है राजा ने समीपवर्ती तलबार को उठाकर बुड्ढे की गर्दन काट दी और स्त्री से विषय भोग कर वही एक पलग पर सो गया। नशा उतरने पर उसे होश आया तो अपने कृत कर्म पर अत्यन्त पछताने लगा।

अब पाठक समझ गये होगे कि यही विवेकहारिणी है इसीसे (विवेक शून्यता से) पाप पुण्यो का कोई ज्ञान नहीं रहता। अत किसी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिये। यदि पाप से छुटकारा पाकर विश्व सुख और शान्ति को प्राप्त कर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' नारा सफल करना चाहते हो तो वैदिक धर्म की शरण लेकर उसकी रक्षा करके तद्वत् आचरण करो। सब मत-मतान्तरो को समूल नष्ट कर दो जो वेद विरुद्ध है, इसी मे विश्व का कल्याण निहित है, सुख - शान्ति निहित है।

---

आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सगठनो के वर्गीकरण होने पर ही आर्यसमाज के सगठन उचित रूप मे अपना विकास कर सकेंगे और ऐसा होने पर ही हम अखिल भारतीय तथा सार्वदेशिक स्तर पर अपने नेताओ के निर्माण मे भी अपने सगठनो द्वारा सहायक हो सकते है।

—चन्द्र सहाय प्रधान
केन्द्रीय आर्यसमाज बरेली

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

भवन मे उस सुन्दर देव का दर्शन होगा। जब मन वचन कर्म से निरन्तर पवित्र होकर अन्तर्मुखी होऊँगा। समाधि स्थिति मे लीन हो जाऊँगा तो उस दिव्य अतिथि की दिव्य ज्योति का दर्शन होगा बहिर्मुखी होकर वह ज्योति दर्शन पुन पाने को लालाइत होऊँगा। वह अतिथि पुन झलक दिखाएगा। मन मन्दिर मे उसकी अलख होगी वह मेरा पूजनीय अतिथि मेरे हृदय सिंहासन पर विराजमान होगा। वह दिव्य वाचस्पति अपने दिव्य सन्देशो का प्रसारण करेगा, जिन्हे धारणकर मैं पुन भौतिक जगत् के कर्मो मे लीन हो जाऊँगा। वह दिव्य अतिथि बारम्बार जीवन मे आता रहेगा और मैं पूजनीय की पूजा करता रहूगा।

'कब तक यह क्रम चलेगा।'

'तब तक, जब तक कि मेरी आत्म ज्योति उस दिव्य ज्योति मे समाहित नहीं हो जाएगी। मेरी भौतिक देह नष्ट हो जाएगी, पर मेरी सच्ची प्रणय कथा अमर हो जाएगी।

### उत्सव

आर्यसमाज रामपुर का ७१ वां वार्षिकोत्सव दि० १९, २० व २१ मई सन् १९६९ को अपूर्व समारोह के साथ मनाया जा रहा है। आर्य समाज के अनेक विद्वान् उपदेशक, सन्यासी महात्मा तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अनेक सम्मेलनो तथा प्रदर्शनों की योजना भी बनाई जा रही है। देश के नेता और प्रखर वक्ता भी भाग ले रहे हैं। प्रभो जनता से प्रार्थना है कि उत्सव पर सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

—सहदेव शरण आर्य, मन्त्री

—(क) आर्य समाज, शाहजहाँपुर रजि० का ८७ वाँ वार्षिकोत्सव दि० २ मई से ५ मई तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त सन्यासी, महात्मा, विद्वान् भजनोपदेशक पधार रहे हैं। पुस्तक विक्रेता आमन्त्रित हैं।

(ख) आर्यसमाज, शाहजहापुर जि० के समस्त आर्य नरनारियो की यह सभा मूर्धन्य विद्वान्, शिक्षा शास्त्री ओजस्वी वक्ता तथा मौलिक चिन्तक श्री विद्या भिक्षु आर्य के आकस्मिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। ईश्वर से दिवगत आत्मा की सद्गति तथा शोक सतप्त परिवार के इस कष्ट सहन करने की क्षमता प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

—राजेन्द्र शर्मा, मन्त्री

—आर्य समाज फतेहगढ़ का वार्षिकोत्स दिनाक १० से १४ मई तक मनाया जायगा। —मन्त्री

—आर्यसमाज औरगाबाद का ४१ वाँ वार्षिकोत्व ४ से ६ मार्च तक मनाया गया। —मन्त्री

आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में—

### अथर्व वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

१४ अप्रैल से १७ अप्रैल १९६९ तक

गत वर्षो की भाति आश्रम का वार्षिकोत्सव इस वर्ष भी आश्रम की पुण्य भूमि मे जिज्ञासुओं की अध्यात्म पिपासा को शान्त करने के हेतु मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर अथर्ववेद के पुनीत मन्त्रो से एक महान् यज्ञ रचाया जा रहा है। उत्सव पर आध्यात्मिक शकाओ को निवृत्ति कर सरल मार्ग का प्रदर्शन कराने वाले अनुभवी विद्वान् और विरक्त जन पधार रहे है।

इस शुभ समागम से लाभ उठाने के लिए हम आपको सानुरोध निमन्त्रित करते हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति १७ अप्रैल १९३९ को प्रात ९ बजे होगी।

—ज्योति प्रसाद, —मन्त्री

### नए बालकों का प्रवेश

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग मे नये बालको का प्रवेश वार्षिकोत्सव पर १० से १३ अप्रैल १९६९ तक होगा। गुरुकुल की उपाधिया सरकार और विश्वविद्यालयो द्वारा स्वीकृत है। आश्रम-प्रणाली, शुद्ध जलवायु, उत्तम आचार-व्यवहार इस सस्था की मुख्य विशेषताए हैं। प्रवेशार्थ प्रार्थना-पत्र तथा नियमावली आचार्य गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय जिला सहारनपुर से मगाये जा सकते हैं।

—प्रियव्रत शास्त्री आचार्य

## निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०) की ओर से १५० पृष्ठो के, केवल चालीस पैसे मे प्राप्त सार्वदेशिक साप्ताहिक के विशेषाक–

"हम क्या खायें"

के विषय पर स्कूलो के छात्र छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। छात्र छात्रायें इस पुस्तक को ग्रीष्म अवकाश मे पढ़कर इसका सार सुन्दर अक्षरों मे फुलस्केप साइज के चार पृष्ठों मे अपने हाथ से स्याही से कागज के एक ओर ही लिखकर १० जुलाई १९६९ तक परिषद् कार्यालय १६५४, कूचा दखिनीराय दरियागंज दिल्ली–६ के पते पर भेज दें। विजेता प्रथम द्वितीय और तृतीय छात्र छात्राओं को अलग-अलग पारितोषिक तथा अन्यो को सुन्दर प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। आशा है माता-पिता गुरुजन बच्चों को प्रेरित कर अधिक से अधिक निबन्ध लिखवाकर भेजेंगे।

—देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक
प्रधान

## शुद्धि

आर्यसमाज जयपुर

वि०२३-३-६९ को प्रातः काल एक युवक वासिक खां की शुद्धि श्री उग्रसेन जीलेखी चाटर्ड एकाउन्टेन्ट,प्रधान आर्यसमाज जयपुर के प्रयत्न से व श्री सुरेन्द्र जी शर्मा के आचार्यत्व में वैदिक रीति के अनुसार की गई। अनेक महिलाओं तथा अधिकारियो व सदस्यों ने भाग लिया। इसी दिन सायंकाल १ ब्राह्मण महिला का भी विवाह सस्कार हुआ।

## आ०स० स्थापना दिवस

—दि० १९-३-६९ को आर्य समाज गोण्डा में आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातः प्रभातफेरी निकाली गई तथा हवन यज्ञ हुआ सायकाल श्री क्षेमचन्द जी भजनोपदेशक के भजन तथा व्याख्यान हुये। —मन्त्री

—आर्यसमाज प्रेमनगर (देहरादून) मे १९ से २७ मार्च तक 'यजुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ' का आयोजन किया गया। पूर्णाहुति रामनवमी के दिन २७ मार्च को हुई। इसी बीच २३ मार्च को आ०स० स्थापना दिवस मनाया गया। —कृष्णदेव शर्मा

—आर्यसमाज स्थापना दिवस तथा नव सवत्सर दि० १६, १७, १८, १९ मार्च सन् १९६९ को जयपुर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से सम्मिलित रूप से ससमारोह मनाया गया।—दौलतराम शर्मा

—आर्य मेला प्रचार समिति शिवशकरी मीर्जापुर की ओर से रामनवमी को शिवशंकरी मेले मे २ दिन का 'मेला प्रचार शिविर' का आयोजन किया गया जिसमे ६० आर्य वीरो ने भाग लिया।

१–अनाथ बच्चों को उनके माता-पिता को दिया गया।

२–५००) नकद आर्य धर्म शाला हेतु प्राप्त हुआ।

३–श्री प०सत्यदेव जी शास्त्री श्री आनन्दप्रकाशजी सचालक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश, श्री महानन्द सिंह, श्री विश्रामसिंह व श्री हीरासिंह का उपदेश व भजन हुआ।

—बेचनसिंह शिविराध्यक्ष

—शोक है मेरे पूज्य भ्राता श्री गोविन्दराम चन्दोला का देहावसान ता० २५ मार्च ६९ (रात्रि) मे हो गया है। ईश्वर दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—दामोदरप्रसाद चन्दोला

## आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह

इस वर्ष २१ मार्च से २३ मार्च तक आर्यसमाज लल्लापुरा का वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। २५ वर्ष पूरे हो जाने से यह उत्सव रजत जयन्ती के रूप मे आयोजित था। इस अवसर पर उत्सव के पूर्व कई दिन से आर्य जगत् के महान् संन्यासी, कर्मठता की मूर्ति श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी तथा शास्त्रार्थ महारथी प० शाति प्रकाश जी द्वारा वेदकथा एव व्याख्यान का आयोजन था। वार्षिकोत्सव २० मार्च के नगर कीर्तन के पश्चात् नित्यप्रति चेतगज स्थित बिक्री कार्यालय के विशाल मैदान मे सायकाल ६ बजे से १२ बजे रात्रि तक बडे समारोहपूर्वक होता रहा है। इस अभूतपूर्व धार्मिक आयोजन मे उपर्युक्त विद्वानो के अतिरिक्त शास्त्रार्थ महारथी, श्री प ओमप्रकाश जी शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा, सन्यासी श्री आत्मानन्द जी मेरठ, तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा० महानन्दसिंह, ठा० हीरासिह भजनोपदेशकों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

## आर्य युवक सम्मेलन वाराणसी

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी की रजत जयन्ती के अवसर पर आयोजित जिला आर्य युवक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री श्याम मोहन अग्रवाल, नगर प्रमुख, वाराणसी ने कहा कि आज हमारे समाज में हर क्षेत्रों मे अविश्वास, स्वार्थपरता एव विशृंखलता का बोलबाला है। इसीलिए राष्ट्रीयता, धर्म-सस्कृति का ह्रास होता जा रहा है। आपने आर्य युवको का आह्वान करते हुए कहा कि बिना युवको के कटिबद्ध ए राष्ट्र की रक्षा नहीं हो सकेगी।

आर्य विद्वान् श्री ओम्प्रकाश शास्त्री ने युवको से अपील की कि वे जीवन मे, महर्षि दयानन्द और महात्मा गान्धी के 'स्वदेशी' के नारे को व्यवहृत करें, तभी राष्ट्रीय भावनाओं की रक्षा हो सकेगी।

आर्य युवक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री डा० ज्योतिर्मित्र आचार्य ने कहा कि आज युवक-विद्यार्थी समाज के असन्तोष का मूल कारण प्रार्थमिक शिक्षा की खराबी, अध्यापको की गैर जिम्मेदारी, छात्रो का गुरुजनो के प्रति अश्रद्धा का होना है।

बिना धर्मशास्त्रो की शिक्षा के विद्यार्थियो-युवको से अच्छे चरित्र की अपेक्षा गलत होगी। आपने धार्मिक ग्रन्थो के पठन-पाठन के लिये 'सस्कृत' को अनिवार्य कुंजी बताया।

इसके अतिरिक्त सम्मेलन में श्री धर्मानन्द जी, श्री राधेमोहन इलाहाबाद, श्री पारसनाथसिह जगीगज ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

## २–पारित प्रस्ताव

सम्मेलन मे अराष्ट्रीय ईसाई पादरियो की कार्यवाईयो एवं तत्सम्बन्धी भारत सरकार की नीति के विरोध मे, तथा वर्तमान शिक्षा पद्धति के विरोध मे, सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया।

—सयोजक



## आवश्यकता

एक सुन्दर सुशील, स्वस्थ गृह कार्य में दक्ष, एम० ए० पास २१ वर्षीया आर्य कन्या के लिए एक २४-२५ वर्षीय ग्रेजुयेट सदाचारी स्वस्थ, निरामिष भोजी आर्य बारोजगार मैढ़ राजपूत वर की आवश्यकता है। पत्र-व्यवहार का पता–
श्री १२ आर्यमित्र लखनऊ।

## एक लोटा पानी ३ हजार रु० में बिका

भुवनेश्वर, प्राचीन भुवनेश्वर में स्थित ऐतिहासिक मरीच कुण्ड झरने का एक लोटा पानी यहां अशोकाष्टमी के दिन सन्तान प्राप्ति की इच्छुक भावी माताओ के समक्ष ३ हजार रुपये मे नीलाम हुआ।

ऐसी किंवदन्ती प्रचलित है कि यदि कोई बांझ महिला इस पवित्र दिन पर इस झरने के पानी के प्रथम लोटे का जल प्राप्त कर लेती है, तो उसे शीघ्र ही सन्तान प्राप्त हो जाती है।

अपनी मातृत्व की क्षुधा शांत करने के लिये भारी सख्या में निःसन्तान महिलाए वहा बहुत सवेरे से ही झरने पर एकत्रित हो गई थीं। वहां प्रति वर्ष इस दिन पानी का प्रथम लोटा नीलाम किया जाता है।

## महिला ने अजगर मारा

कटक, एक ग्रामीण महिला ने यहां से २० मील दूर डालीजाड़ा नामक जगल मे एक दस फुट [१० फुट] लम्बे अजगर को मार डाला। बताया जाता है कि अजगर घास मे छिपा रहने के कारण महिला ने उसे पेड़ का तना समझा किन्तु ज्यो ही वह उसके निकट आयी, अजगर ने महिला को पकड़ लिया, और धीरे-धीरे पैर की ओर से निगलना शुरू किया। महिला ने साहस नहीं छोड़ा व सामने पड़े कुदाल को उठाकर अजगर के मुंह एव गर्दन पर प्रहार करना शुरू कर दिया कुछ ही समय मे गर्दन कट गई और महिला ने अपने को छुड़ा लिया।

अजगर तो मर गया, लेकिन महिला भी बेहोश हो गई। रात को जब उसके घर वाले जगल मे खोजने निकले तो अचेत अवस्था मे ही उठाकर उसे अस्पताल पहुचाया। बताया जाता है कि महिला बिल्कुल स्वस्थ है।

## संस्कृत को त्रिभाषी शिक्षा फार्मूले में स्थान दिया जाए
—डा० कर्णसिंह

नई दिल्ली। केन्द्रीय पर्यटन मन्त्री डाक्टर कर्णसिंह ने इस बात पर बल दिया है कि त्रिभाषी शिक्षा फार्मूले मे सस्कृत को भी स्थान दिया जाये। श्री कर्णसिंह यहाँ लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ मे दीक्षांत भाषण कर रहे थे।

उन्होने कहा कि सस्कृत हमारे देश की ऐसी निधि है, जिसकी सेवा करके हम गौरव प्राप्त कर सकते हैं। सस्कृत के ज्ञान को व्यापक बनाने के लिए देश भर मे सस्कृत शिक्षा-सस्थाओ की आवश्यकता है।

महाराज कर्णसिंह ने कहा कि स्व. लाल बहादुर शास्त्री का सस्कृत प्रेम संसार मे प्रसिद्ध है। इस सस्था द्वारा जो कार्य सस्कृत शिक्षा की दिशा मे किया जा रहा है, वह आगे बढ़े और स्व. शास्त्री के सपनो को पूरा करने मे सफल हो।

### श्री शालवाले का भाषण

विद्यापीठ मे प्रथम स्नातक सम्मेलन हुआ। इसका उद्घाटन ससद-सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले ने किया।

श्री शालवाले ने कहा कि स्नातकों का यह कर्त्तव्य है कि वे यहां से शिक्षा प्राप्त करके देशवासियो में सस्कृत का प्रचार करे। समाज मे आज फैले हुये अन्धकार को मिटाना आवश्यक है।

## दिल्ली में देवी-दर्शन करते हुए ४० व्यक्ति घायल

नई दिल्ली। पुरानी दिल्ली मे एक मकान का छज्जा गिर जाने से ४० व्यक्ति जिनमे स्त्रियां और बच्चे भी थे, घायल हो गये। इनमें ३३ की दशा गम्भीर है। इनमें ४ स्त्रियां और ५ बच्चे भी शामिल हैं।

बताया जाता है कि इस मकान मे 'एक स्त्री को देवी के आने' की चर्चा सुनकर मुहल्ले वालो की भारी भीड देवी दर्शन के लिये इकट्ठी हो गई। मकान पुराना था। इसलिये लोगों का बोझ बढ़ने के कारण दूसरी मजिल का छज्जा गिर गया उसके साथ ही पहली मजिल का छज्जा भी बैठ गया, और नीचे की मजिल मे सोये हुए कुछ व्यक्ति भी मलवे के नीचे दब गये।

## पूर्व जन्म का हाल बताने वाली लड़की

रोहतक। हाल में ही पुनर्जन्म की एक घटना सामने आई है। पहरावर गाव के प. धनपाल के यहाँ ४ वर्ष पूर्व एक कन्या ने जन्म लिया था। यह लड़की अब अपने पिछले जन्म की प्रत्येक घटना बताती है। उसने कई बार कहा कि मैं पिछले जन्म मे श्री ज्ञानचन्द्र की लडकी हू। मेरी माता का नाम ओमवति है। मैं छठी कक्षा मे पढ़ती थी। मेरा नाम ज्ञानो था। लड़की ने अपने वर्त्तमान पिता से कई बार कहा कि आप मुझे शिमला ले चलें। मैं शिमला मे अपने पूर्व पिता से मिलना चाहती हू, शिमला में हमारे मकान का नम्बर २ था।

## अमरीका ने मंगल ग्रह पर नया यान छोड़ा

फ्लोरेडा, २८ मार्च को अमरीका ने मगल ग्रह की ओर एक अन्तरिक्ष उपग्रह मैरिनर—७ छोडा जो ५ अगस्त को मगल ग्रह से २ हजार मील की दूरी से फोटो लेगा। इसका उद्देश्य मगल ग्रह का अध्ययन करना है, और उसमे जीवन के सम्बन्ध मे पता लगाना है। यह यान मानव रहित है।

## पहले जो जेल जाता था वह अब अन्यों को जेल भेजता है

नई दिल्ली, 'पहले जो जेल जाता था वह अब औरो को जेल भेजता है, शायद इसी कारण विद्यार्थी हंस रहे हैं।'

यह मत मेरठ विश्वविद्यालय के उप कुलपति डा० रामकरणसिंह ने यहा से लगभग तीन मील दूर मोदीनगर मे मुलतानीमल मोदी कालेज मे व्यक्त किया।

गृहमन्त्री श्री यशवन्तराव चौह्वाण का परिचय कराते हुए जब उन्होने कहा कि छात्र जीवन मे वे जेल गये थे तो, विद्यार्थी हंसने लगे— इस पर डा० सिंह ने उपरोक्त मत व्यक्त किया।

परिचय के समय स्वय श्री चह्वाण भी हंसने लगे। [भारती]

## अमरीका ने शुक्रग्रह पर अन्तरिक्ष यान छोड़ा

केपकैनेडी फ्लोरिडा, अमरीका ने यह जानने के लिए कि शुक्रग्रह पर जीवित रहा जा सकता है अथवा नहीं, अन्तरिक्ष मे मैरिनर अन्तरिक्ष यान छोड़ा।

मानव रहित मैरिनर—७ अतरिक्ष यान मे विशेष कैमरे और उपकरण लगे हैं और यह ४ मास की यात्रा के बाद ५ अगस्त को उपग्रह से दो हजार मील की दूरी से गुजरेगा।

## अबोहर में विष देने से १० गाये मर गईं

नगर मे हडताल व भारी रोष

अबोहर—यहां रामनवमी के दिन किसी नीच व्यक्ति ने गायों को विष खिला दिया, जिससे दस गायें तडप-तडप कर मर गई इस समाचार के मिलते ही नगर मे भारी रोष और क्षोभ व्याप्त हो गया और बाजारो मे हडताल हो गई।

पुलिस मामले की जांच कर रही है। अभियुक्त अभी पकडे नहीं जा सके।

एकांकी—

# अमरत्व की खोज

(गतांक से आगे)

मूलशंकर—कैसा व्रत ? क्या करना होगा मां! उससे क्या लाभ है माता जी !

माता—बेटा ! रात्रिभर जागरण कर शिव की पूजा करनी होगी भूखा रहना होगा। शिव जी की पूजा से भगवान् शिव प्रसन्न होकर ज्ञान बुद्धि, विद्या, धन, आयु, तेज यश और बल देंगे।

मूल०—अच्छा ! तब तो मैं अवश्य व्रत रखूंगा चलो मा कथा में उनके घर चलें न ! और क्यों माता जी आज वह कथा क्यों करवा रहे हैं कल शिवरात्रि को ठीक रहता।

माता—बेटा ! आज ब्रह्मदेव जी का जन्म दिवस है,इसी उपलक्ष मे वह कथा करवा रहे हैं, चलो बेटा अब हम सब चलें।

(सब कथा सुनने चले जाते हैं)

(स्थान एक विशाल भवन है बहुत से स्त्री-पुरुष कथा सुनने के लिए आये हुए हैं। पुरुषों और स्त्रियों, बच्चों के बैठने के लिए अलग-अलग प्रबन्ध है। भवन श्रोताओ से खचाखच भरा हुआ है,पंडित जी चौकी पर कथा पुस्तक लिये बैठे हैं)

पंडित—सब एक स्वर मे मिल कर यह प्रार्थना बोलें—

हे सर्व रक्षक 'ओ३म्'
तुमको वार-वार प्रणाम है।
सब प्राणियों के प्राणदाता !
"भू." तुम्हारा नाम है ॥
दुःख दूर करने से "भुव" ही
नाम धारण हो किये।
"स्व." आपको ही जानकर
सब ध्यान करते जन हिये ॥१

'तत्' है विशेषण आपका
जग को बनाया आपने।
'सवितुर्वरेण्य' हो प्रभो
सत्पथ दिखाया आपने ॥
विज्ञानवेत्ता हो पिता
'भर्ग' स्वय अज्ञेय हो।
'देवस्य तेरा ध्यान करता
ही रहू यह ध्येय हो ॥२

अतएव भगवन् 'धीमहि'
निर्मल 'धियः' कर दो प्रभो!
विद्या निधि को मागता
भरपूर करदे हे प्रभो ॥
'योन' सुपथ मे शीघ्र ही
प्रेरित करो इस चित्तको।
आयु यशोबल दीजिये भक्ति,
तेज, भक्ति, वित्त को ॥३

'प्रचोदयात्' धर्मादि मे
पूर्ण हमको कीजिये।
दुर्गुण समाये जो हुए हैं
दूर उनको कीजिये ॥
श्रद्धेय मे श्रद्धा सदा
रखना सभी को चाहिये।
निज देश रक्षा धर्म पर
बलिदान होना चाहिये ॥४

( प्रार्थना के बाद १ घंटे तक कथा का आयोजन चलता है तदनन्तर कार्यक्रम समाप्त हो जाता है )

## कहानी-कुञ्ज

ओमप्रकाश ब्रह्मदेव—श्री कर्षन जी को प्रसाद लाकर दे दो जिससे शीघ्र वितरण कर दिया जावे।

ब्रह्मदेव—( प्रसाद का थाल कर्षन जी को देते हुए ) लीजिये भाई साहब सब मे वितरण कीजिये।

( कुछ विशेष व्यक्तियो के अतिरिक्त सब श्रोता अपने अपने घर चले जाते है)।

अमयदेव-(ठहरे हुए व्यक्तियो से) चलिये आप सब लोग अन्दर बैठिये भोजन तैयार है। ( सब चले जाते हैं)

( शिवरात्रि का दिन। सभी आज प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। मूल शंकर भाई बहिनो के साथ माता के समीप बैठकर कुछ वार्तालाप कर रहा है, कर्षन जी आगन मे टहल रहे हैं, सन्ध्या का समय है)

कर्षन—बेटा मूलशंकर ! चलो शिव मन्दिर मे जल भरकर लोटा आदि ले चलो समय हो गया है।

यशोदा—पतिदेव ! मेरा कहना मान लीजिये इसे वहाँ नींद सतावेगी और भूख लगेगी।

कर्षन—( सान्त्वना देते हुये ) देवि ! धर्म बन्धन निभाना अपने कुल की मर्यादा है उसका पालन हमे करना चाहिये।

यशोदा—जैसी आपकी इच्छा।

मूल—चलो पिता जी

कर्षन—चलो बेटा !

(दोनों का मन्दिर के लिये प्रस्थान)

(मन्दिर बाहर और अन्दर से खचाखच भरा हुआ है, पुजारी जी मन्दिर की व्यवस्था मे सलग्न हैं कर्षन जी को देखकर सब नमस्ते करते हैं )

पुजारी—आइये ! आइये ! पण्डित जी बैठिये (मूलशंकर की ओर सकेत करते हुए) यही आपके बड़े सुपुत्र हैं।

कर्षन—(बैठते हुए ) हां यही है पुजारी जी (पुत्र से) प्रणाम करो बेटा ! ( बालक प्रणाम करता है)।

मूल०—(स्वागत) अब शिव के दर्शन हो गये। रात्रि भर जाग कर शिव जी की भक्ति करनी है, फिर भगवान् शिव प्रसन्न होकर वरदान देंगे, आज मेरा बड़ा सौभाग्य है ( धीरे-धीरे समय अधिक हो जाने पर सब सो जाते हैं मूल के पिता भी खर्राटे ले रहे हैं, अकेला मूल ही जाग रहा है। सहसा बिल से चूहा निकल कर शिवलिंग के चारो ओर घूमता है और चढ़ा हुआ प्रसाद खाने लगता है।

मूल०—(स्वागत) (चूहे के कृत्य को देखते हुए) अरे ! यह चूहा शिव जी पर चढ़े मिठाई खा रहा है, अब इसकी मौत आ गई है।

(बहुत देर के बाद) अरे ! यह चूहा तो अब तक भी नहीं मरा ! (अपने आपसे प्रश्न करते हुए) क्या वह वही महादेव हैं जो दैत्यों का संहार करता है ? डमरू बजाता है, कैलाश पर्वत पर रहता है।

(पिता को जगाते हुए) देखो यह चूहा मिठाई खा रहा है और शिव जी पर घूम रहा है। क्या शिव जी मे शक्ति नहीं जो अपने ऊपर से चूहे को मार भगावे ? यह क्या दैत्यों का संहार करता होगा ? मैं तो सोचता था कि चूहा अभी मरने वाला है, परन्तु इसका तो कुछ भी न बिगड़ा ?

कर्षन—बेटा ! यह सच्चा महादेव नहीं है, यह शिवलिंग तो उसकी प्रतिमा का एक रूप है। सच्चा महादेव तो कैलास पर रहता है।

मूल०—फिर इस पत्थर की पूजा करने से क्या लाभ ? उस सच्चे शिव को ही पाना चाहिए। जिससे मनो-कामना पूरी हो।

कर्षन—बेटा आज तक उसका किसने पार पाया है। सतयुग के पुरुषों ने ही उसे देखा था। उसके पाने के लिए बड़ी कठिन तपस्या करनी पड़ती है, बड़े-बड़े ऋषि महर्षि उसका ध्यान करते-करते पार न पा सके तो हम साधारण पुरुषो की तो बात ही क्या ? इसी से सन्तोष करना चाहिए।

मूल—पिता जी मुझे घर भेज दीजिए मुझे नींद आ रही है और ठण्ड भी लग रही है।

कर्षन—( एक व्यक्ति साथ बालक को घर भेजते हुए ) देखो ! घर जाकर भोजन मत करना वरना व्रत भग हो जावेगा।

मूल—(स्वगत) मैं उस सच्चे शिव को अवश्य ही पाऊँगा कलियुग मे शिव के दर्शन नहीं हो सकते ? पिता जी की कैसी विचित्र बात है ? (द्वार खटखटाते हुए) मां!!! (क्रमशः)

✱श्री प० धर्मदेव आर्य शास्त्री
पोलायकलाँ, जि० शाजापुर म. प्र

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल -६०
चैत्र २३ शक १८९१ वैशाख कृ० १२
[दिनाङ्क १३ अप्रैल सन् १९६९]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता-'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्य्यमित्र"

## अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था-

## विवाह कब करें ?

★

जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धि, बल, पराक्रमयुक्त विद्वान् और श्रीमान् करना चाहें, वे सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और पच्चीसवें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह कभी न करें।

यही सब सुधार का सुधार, सब सौभाग्यो का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है कि इस अवस्था में ब्रह्मचर्य रख के अपने सन्तानो को विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें कि जिससे उत्तम सन्तान होवे।

## साहित्य-समीक्षा

### तपोभूमि' का उपनिषद् अंक मूल्य ५)

सत्य प्रकाशन मथुरा उपयोगी और सस्ता सत्साहित्य प्रकाशन में निरन्तर कई वर्षों से साधना रत है। इसके द्वारा शारीरिक आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका आर्य जगत् में सर्वाधिक लोक प्रिय मासिक 'तपोभूमि' का प्रकाशन विगत १६ वर्षों से किया जा रहा है और प्रत्येक वर्ष अनेक विशेषांक जो स्थायी साहित्य का महत्व रखते हैं, निकाले गये हैं।

इस वर्ष नव सवत्सर एव आर्य समाज स्थापना दिवस के पुण्य पर्व पर 'तपोभूमि' ने अपना वृहदांक 'उपनिषद् अंक' भेंट किया है। इसमे ६ उपनिषद् [ईशोपनिषद्, केनोपनिषद् कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् तथा माण्डूक्योपनिषद् ] जिनका भाष्य स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा किया गया था, (और जिसको संशोधित कर निखारने का श्रेय स्वामी वेदानन्द जी को है) दिये गये हैं। यह भाष्य जिसका प्रकाशन पहले 'राजपाल एण्ड सन्स' द्वारा किया गया था, वर्षों से अनुपलब्ध था। 'तपोभूमि' ने इसका प्रकाशन कर इस अभाव की पूर्ति की है। आर्य जगत् इस निमित्त सत्य प्रकाशन का सदैव आभारी रहेगा।

आत्मिक बल और मानसिक शान्ति के लिये प्रत्येक आर्य परिवार में इस 'उपनिषद् अंक' का होना अनिवार्य है।

-'वसन्त'

## विश्व-वैचित्र्य

### रंगीन बादल !

पेरिस योरुपीय अन्तरिक्ष खोज सगठन ने घोषणा की है कि उसके एक कृत्रिम उपग्रह ने ४३ हजार मील की ऊँचाई पर परमाणु 'बेरियम' छोड़कर एक रंगीन बादल बनाया गया है। गहरे लाल और हरे रंग का यह बादल अमरीका के ऊपर २ हजार वर्गमील के क्षेत्र में २२ मिनट तक दिखाई देता रहा।

### विचित्र बच्चे का जन्म

बंगा, बंगा-फगवाड़ा रोड पर मौजा बहुआ मे एक हरिजन के घर एक विचित्र बच्चे का जन्म हुआ है, जो समाधि लगाए हुए है। लोग दूर-दूर से इस बच्चे को देखने आ रहे हैं और चढ़ावा चढ़ रहा है।

### चमत्कार !

शिमला, यहां से १० मील दूर निकटवर्ती गांव चलाटी में एक अन्धे हरिजन सुरजन ~~को नेत्र ज्योति~~ नाटकीय ढंग से पुनः प्राप्त होने की सूचना मिली है।

बताया जाता है कि यह व्यक्ति ५ वर्ष पूर्व अपनी आंखें खो बैठा था। विगत दिनों वह अचानक फिसल कर खड्ड में जा गिरा और बेहोश हो गया, परन्तु जब पुन. होश में आया तो उसको नेत्र ज्योति उसे वापस मिल चुकी थी।

### श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक की, सहायता कीजिए !

आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, आजकल अपने आश्रम वेद सस्थान नजीबाबाद में श्लेष्म ज्वर से पीड़ित हैं। चिकित्सकों ने उपचार के साथ-साथ पूर्ण विश्राम की सलाह दी है। अर्थाभाव के कारण उनके स्वास्थ्य लाभ मे बाधा पड़ रही है। आर्य जगत् का कर्त्तव्य है अपने मान्य सन्यासी, उपदेशकों के अमूल्य जीवन का ध्यान रखे। अपने जीवन को वेद प्रचार के लिए अर्पित करने वाले व्यक्तियों को रोगाक्रान्त होने पर चिकित्सा के लिए पैसे न हों यह आर्यों के लिए लज्जा की बात होगी। विगत दिनों आर्य समाज चौक प्रयाग ने चिकित्सा के लिए १००) रुपये भेजे हैं, किन्तु यह पर्याप्त नहीं हैं।

अतएव समर्थ धर्म बन्धुओं और आर्य समाजों से प्रार्थना है कि श्री स्वामी जी की चिकित्सा के लिए तत्काल सहायता करें।

स्वामी जी का पता:—

श्री वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद,
बिजनौर उ. प्र.
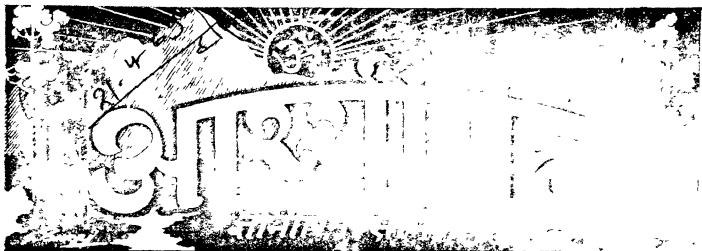
राधेमोहन
मन्त्री
आर्य समाज चौक
प्रयाग

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०वी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ] लखनऊ–रविवार चैत्र ३० शक १८९१, वैशाख शु० ४ वि० सं० २०२६, दि० २० अप्रैल १९६९ [ हम कीर्ते

परमेश्वर की अमृत वाणी–

# वाणी को ज्ञान से तीक्ष्ण करो किंतु उसे देवी बना कर शान्ति प्राप्त करो

इय या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता ।
ययैव ससृजे घोर तयैव शान्तिरस्तु न. ॥

—अथर्व० १९।९।३

(इयम् या) यह जो (ब्रह्मसंशिता) ज्ञान से तीक्ष्ण की हुई (परमेष्ठिनी) अत्यन्त शक्तिशालिनी (वाग्देवी) वाणी की देवी है (यया एव घोरम्) जिसके माध्यम से घोर उत्पात (ससृजे) उत्पन्न होते हैं (तया एव न) उसके द्वारा ही हमारी (शान्ति अस्तु) शान्ति हो।

साक्षरता केवल आर्यों के पास ही नहीं वरन् अनार्यों के पास भी होती है। वेदों और अन्य शास्त्रों की विद्या को वेदज्ञ ही नहीं, किन्तु असुर भी प्राप्त करते हैं। अन्तर केवल इतना होता है कि जहाँ आर्य विद्यावान् होकर जीवन में शान्ति प्राप्त करते हैं वहाँ अनार्य उस विद्या का दुरुपयोग कर उसे संघर्ष का साधन बनाते हैं। आर्य विद्या से उत्तेजनाओं का दमन करते हैं, किन्तु अनार्य इसे उत्तेजना का माध्यम बनाते हैं।

वाणी मानव के लिये परमेश्वर की एक बहुत बड़ी देन है। अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिये एक सुन्दर साधन है। जिन्होंने वेद ज्ञान से, विश्व के रहस्य को जाना है। "ऋच वाच प्रपद्ये" और 'वागोजा' के सूत्र को पकड़ा है, उनकी वाणी ओजोमयी होकर भी शान्ति देने वाली होती है, क्योंकि ज्ञानपूर्वक अपने जीवन का निर्माण कर आर्य जब देवता स्वरूप हो जाते हैं, तो यह शक्तिशालिनी वाणी भी देवी रूपा हो जाती है। अनार्यों का वाणी पर न कभी नियन्त्रण हुआ है और न कभी होगा क्योंकि उनके भीतर उत्तेजना की चिनगारी सदैव सुलगती रहती है। जिन्होंने विद्या को केवल जीविका उपार्जन का निमित्त बना रखा है, जो केवल स्वार्थान्ध हैं जिन्हें केवल भौतिक माया से लगाव है, वे स्वार्थ सिद्धि न होते देख तुरन्त उत्तेजित हो उठते हैं जिसके फलस्वरूप उनकी वाणी राक्षसी स्वरूपा होकर जगत मे घोर संघर्षों और सर्वनाशों का कारण बनती है।

विश्व का आर्यकरण करने के लिये जहाँ तेजस्विनी वाणी की आवश्यकता है, वहाँ मधुमय शान्तिप्रद वाग्देवी का होना भी अनिवार्य है।

—'वसन्त'

# सभा का वार्षिक अधिवेशन

## शनिवार २४ व रविवार २५ मई १९६९

### को नैनीताल में हो रहा है

कृपया इन तिथियों को याद रखिये–यदि आपकी आर्यसमाज व जिलोपसभा का दशांश और वार्षिक चित्र अभी सभा को नहीं भेजा गया है, तो कृपया तुरन्त भेजें।

विलम्ब से प्राप्त अधूरे चित्रों अथवा समय से दशांश आदि प्राप्त न होने के कारण प्रतिनिधियों को स्वीकार करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

समाजें अपने उत्तर दायित्व को समझें और १५ मई '६९ तक अपने वार्षिक चित्र व दशांश आदि भेज कर प्रतिनिधियों की स्वीकृति प्राप्त कर लें कि समस्त विवरण ठीक दिया गया है और अधिकारियों के हस्ताक्षर आदि यथा स्थान पर ठीक प्रकार से कर दिये गये हैं। यदि आप ऐसा करेंगे तो न केवल पत्र-व्यवहार के अनावश्यक व्यय से सभा के धन की रक्षा करेंगे, वरन् सभा के कार्य की सुचारुता मे भी अपना योग दान देंगे।

मत भूलिये कि यह सभा आपकी अपनी है। सभा को गतिशील, सुव्यवस्थित और सुसगठित करने के लिये सुयोग्य प्रतिनिधियों को भेजिये। केवल चुनाव के लिये ही नहीं, आर्यसमाज के काम को विस्तार देने के लिये ठोस योजनाओं को भी साथ लेकर आइये और उन्हें क्रियान्वित करने के लिये कार्यक्रम बनाइये।

नैनीताल के आर्य बन्धु आपका महर्ष स्वागत करने को तत्पर हो रहे हैं। अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिनिधियों को 'नैनीताल चलो' की प्रेरणा दीजिये।

वर्ष ७१
वार्षिक
छमाही
विदेश मे
एक प्रति २५ पैसे

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

# प्रेम चन्द्रिका निश दिन हरती जीवन का सब द्वेष अँधेरा

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' 'वेदवारिधि' मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

**वेद मन्त्र—**

त्व नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अराते· । उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ [साम० ६]

शब्दार्थ—(अग्ने !) सुन्दर तेजस्वी परमात्मा ! (त्वम) तू (नः) हमे (महोभि) श्रेष्ठताओं द्वारा (विश्वस्या) सर्व प्रकार की (अरातेः) कृपणता (उत) तथा (मर्त्यस्य) मरणशील (द्विष) द्वेष से (पाहि) सुरक्षित कर ।

व्याख्या—परमेश्वर की इस सृष्टि में कोई भी वस्तु निष्प्रयोजन नहीं है । प्रत्येक जड़-चेतन का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है । हम भले ही अज्ञान के कारण किसी वस्तु को निरर्थक समझें परन्तु उसका भी अपना एक उपयोग है । जो वस्तु किसी के लिये यदि सार्थक नहीं है, तो उसका यह अर्थ नहीं है कि वह तथ्य हीन है, क्योंकि वह किसी और के लिये नितांत उपयोगी हो सकती है । परमेश्वर के ज्योतिर्मय जगत् मे सूर्य, चन्द्र और सितारो का यदि अपना विशेष प्रयोजन है । अग्नि, वायु, जल, धरती और आकाश का यदि कोई महत्त्व है, अनन्त योनियों में परिधित जीवात्माओ का यदि कोई उद्देश्य है तो चेतनों मे सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों की सर्व श्रेष्ठता का भी कोई रहस्य अवश्य है । जो ज्ञान पूर्वक मानवी जीवन के रहस्य को जान लेते हैं, वे बारम्बार आवागमन के चक्र से छूटने के लिये उस परम शक्ति का आह्वान करते हैं जो सकल ससार का नियन्त्रण करती है । जो कर्मफल प्रदान करता है, जो अजेय है और जो न्यायकारी है ।

अन्य प्राणियो की भांति मानव का शरीर भी मरणशील है । ऊँचाई पर चढ़कर जो फिसल कर गिर जाते है, उन्हें न केवल शारीरिक वरन् मानसिक पीड़ा भी होती है । ऊपर चढ़ना कठिन है, परन्तु फिसलना व गिरना सरल है । चढ़ने मे श्रम है, एक-एक कदम करके आगे बढ़ा जाता है, किन्तु एक पग भी यदि फिसलता है तो लुढ़कता हुआ व्यक्ति कहीं बहुत नीचे जा पहुचता है । ऊँचा उठने व चढ़ने मे किसी सशक्त व सम्बल की भी सतत आवश्यकता होती है किन्तु नीचे गिरने के लिए धक्का या क्षणिक फिसलना भी पर्याप्त होता है ।

मानव शरीर एक ऐसा दोराहा है जहां से एक मार्ग योग की शिखरता की ओर जाता है तो दूसरा भोग की खाई की ओर जाता है । पशु, पक्षी, कीट, पतग की
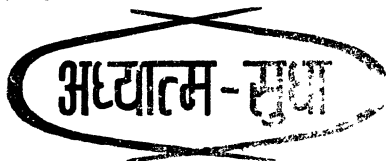
भोगात्मक योनियो मे से अपने कुकर्मो की कैद काट कर जीवात्मा जब पुन· मानव योनि मे आ जाता है तो वह योग और भोग की सयुक्त सीमा पर खडा होता है । कर्म करने मे स्वतन्त्र होने के कारण यह उस पर निर्भर है कि भोगात्मक पाशविक वृत्तियो को अपना कर पुनः भोग योनियों में वापस लौट जाए अथवा विवेक को उदित योग मार्गी बन, चतुर्युगी तक मोक्ष का आनन्द ले ।

जो मानव जीवन के इस रहस्य को समझते हैं वे योग साधना मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलते हैं । मायावी छलनायें उन्हे भूल भुलैय्यां में नहीं डाल सकतीं । ऊँचा उठना और ऊँचा उठकर सर्व महान् परमेश्वर के समीपस्थ होना ही उनके जीवन का लक्ष्य होता है । ऊँचा उठने मे उनका सम्बल सर्व शक्तिमान होना है, इसीलिये साधक केवल उस परम हितकारी को ही पुकारते हैं । पुकार भी उनकी निष्प्रयोजन न होगी । केवल तोते की भांति वे नाम रटन नहीं लगाते । उनकी पुकार सच्ची होती है । अन्तर्वेदना के स्वर उसमे से फूटते हैं । योग पथ की बाधाओं को वे भलीभाँति जानते हैं । क्योंकि उन्होने अपने ज्ञान चक्षु खोल रखे हैं । उन्हे मार्ग के कटक दिखाई देते हैं । जब स्वयम् नहीं निकाल पाते तो प्रभु को, सहायतार्थ पुकारते हैं, 'पाहि' 'पाहि' 'रक्षा करो' 'रक्षा करो' 'प्रभो ! मैं निर्बल हू, निस्सहाय हू, निराश्रित हू, मेरी रक्षा करो ।'

'प्रभो ! ये वे शत्रु हैं जो मेरा मार्ग रोके खड़े हैं । जो आप के पावन दर्शनों से मुझे वञ्चित किए हुये हैं । इन्हें हटाइये मेरे पथ से हटाइये ।'

'प्रभो ! यह मेरा प्रबल शत्रु द्वेष है । मेरे भीतर की ईर्ष्या ने इसे उत्पन्न किया है । यह दुर्भावना का जनक, वैर का भाई, विरोध का सखा और शत्रुता का पति है । मानव-मानव में जीव-जीव में विभिन्नता विषमता का पान कराने वाला यही चाण्डाल है । प्रभो, मै तुम्हारे समीपस्थ होकर समता का सोपान चाहता हू और एक यह है कि जो मुझे विवश कर विषपान कराना चाहता है ।'

'प्रभो ! तुम समदर्शी हो । सामर्थवान हो । चाहो तो मुझे भी समदर्शी बना कर भवसिन्धु से पार करा सकते हो । प्रभो ! तुम पारस

[ शेष पृष्ठ १० पर ]

# प्रेम नगर में वास है मेरा

★

प्रेम नगर में वास है मेरा ।
प्रेम गली और प्रेम मुहल्ला, प्रेम भवन में मेरा डेरा ॥
प्रेम ... ...

प्रेम सखा और प्रेम पड़ौसी, प्रेममय सब वातावरण है ।
उदित होता प्रेम गगन में, प्रेम चन्दा प्रेम अरुण है ।
प्रेम चन्द्रिका निशदिन हरती, जीवन का सब द्वेष अंधेरा ॥
प्रेम ... ...

प्रेम की पावन सरिता का प्रेम जल अतिशय सुखदाई ।
सींचता है प्रेम की बगिया, भेदभाव की पाटता खाई ।
प्रेम के सुरभित सुमनों में, मिलता है आनन्द घनेरा ॥
प्रेम ... ...

प्रेम भाव सजोकर हृदय में, करता हूं मैं प्रेम की क्रीड़ा ।
पान करता प्रेम सुधा का, हरता पल-पल सब की पीड़ा ।
तृप्त होती आत्मा मेरी, मधुमय शीतल प्रेम बसेरा ॥
प्रेम ... ...

करता है प्रभु प्रेम की वर्षा, भर जाता है प्रेम का सिन्धु ।
हो तरंगित प्रेम लहर से, निर्मल होता जीवन बिन्दु ॥
प्रेम की मादक मस्ती में 'वसन्त' पाता दर्शन तेरा ॥
प्रेम ... ...

लखनऊ-रविवार २० अप्रैल ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## सर्वस्य पश्यतः प्रियं कृणु

पुरी के शकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने पटना के विश्व हिन्दु सम्मेलन के अधिवेशन में अस्पृश्यता के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका देश भर में घोर विरोध हुआ है। लोक सभा मे इस विषय पर गरमागर्म बहस हुई है। कुछ सदस्यों ने उन को बन्दी बना लेने की भी माँग की है। गृहमन्त्री श्री चह्वाण ने आश्वासन भी दिया है कि वे बिहार सरकार के साथ यह मामला दृढ़तापूर्वक उठायेंगे। उन्होंने स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि श्री शकराचार्य ने हरिजनों के विषय में जो कहा,वह न केवल अवैध है वरन् देश मे भयानक स्थिति भी उत्पन्न कर सकता है। अतएव कानून के अनुसार श्री शकराचार्य के विरुद्ध जो भी कार्यवाही सम्भव होगी को जायगी।

इधर श्री शकराचार्य ने पटना में पत्रकारो से बातचीत करते हुए पुनः कहा है कि वे अपने पक्ष पर अडिग हैं। सरकार चाहे तो उन्हे फांसी पर चढा दे। अपना स्पष्टी करण देते हुए उन्होने कहा "हिन्दू धर्म छुआछूत को मानता है और कुछ लोगो को जन्म से अछूत मानता है। अत मै शास्त्रो मे लिखी बातो के विरुद्ध नहीं जा सकता। मै कानून को माननेवाला नागरिक हू, कानून तोडना नही चाहता, परन्तु सरकार के कानून और अपने धर्म दोनो को मानने का मुझे पूरा अधिकार है। श्री करपात्री जी ने भी शकराचार्य के मत का समर्थन किया है। अन्य पौराणिक भाई भी ऐसा समर्थन कर सकते हैं, क्योंकि बात एक शंकराचार्य की ही नहीं है, इस विषय मे अज्ञान के फलस्वरूप रूढ़िवादी व्यवस्था ही निन्दनीय है।

श्री शकराचार्य का हमारे देश के धार्मिक क्षेत्र मे एक विशेष स्थान है। आज से लगभग १३०० वर्ष पूर्व एक आदि शकराचार्य ने नास्तिक बौद्धों को शास्त्रार्थ मे परास्त कर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक वेदो का नाद गुंजाया था और आस्तिकता का प्रचार किया था। पहले एक शकराचार्य थे, अब चार हैं जिनमे पुरी के भी एक हैं जो शकराचार्य की गद्दी पर बैठने से पूर्व जयपुर के सस्कृत कालेज के प्रधानाचार्य थे अतएव वे सस्कृतज्ञ हैं। जब वे धर्म गद्दी पर बैठकर धर्म परायण जनता का पथ-प्रदर्शन करते हैं तो यह निश्चित है कि उन्होंने धार्मिक ग्रन्थों का भी अध्ययन भलीभाति किया होगा। पुराणो व अन्य शास्त्रो मे भक्त रविदास चमार, भक्त सदना कसाई व भक्त नन्दा नाई के भगवत् साक्षात्कार व मुक्त होने की जो कथाए हैं, उन्हे भी सम्भवत भलीभाति पढा होगा। वे हृदय से यह भी स्वीकार करते होगे कि हरिजन व अछूत कहे जाने वाले मानव भी ईश्वर पुत्र हैं, और उन्हे भी ईश्वर का साक्षात्कार करने एवम् मुक्ति प्राप्त करने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक ब्राह्मण, क्षत्रिय एव वैश्य को है। श्री शकराचार्य जी इस बात की भी उपेक्षा नही कर सकते कि हिन्दू धर्म व्यवस्था का उद्देश्य घृणा नहीं है।

विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन मे शुद्धि का समर्थन इस बात का साक्षात प्रमाण हैं। जब लोभ वश व बलात मुस्लिम व ईसाई बनाये गये बन्धुओं को पुनः हिन्दू धर्म में लाये जाने का प्रबल समर्थन भी शंकराचार्य द्वारा किया गया है तो उनके द्वारा प्रचारित राम नाम लेने वाले और शिखा धारी हरिजनों के विरुद्ध प्रलाप क्या अर्थ विहीन नहीं हो जाता और यह सिद्ध नहीं करता कि शास्त्रों के ज्ञाता होते हुए भी वे अन्धविश्वासों से ऊपर नहीं उठ सके हैं।

श्री शकराचार्य के वक्तव्य से हरिजनों मे जो क्षोभ उत्पन्न हुआ है, उसका पूरा-पूरा लाभ उनके मत परिवर्तन मे विदेशी पादरियों और मुल्लाओं द्वारा किया जायगा। राजनैतिक स्तर पर भी भडकाया जाना सम्भव है। इन कारणों को यदि हम एक ओर रख कर केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही देखें तो हमें यह बोध होगा कि धर्म गद्दी पर बैठ कर इस प्रकार असत्य वादन करना नितान्त अशोभनीय है। हिन्दू धर्म का जयजयकार लगाने वाले श्री शकराचार्य ने सम्भवत कुछ वेदाध्ययन भी किया होगा और उन्होने इस मन्त्र को भी पढ़ा होगा—

> अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते
> संभ्रांतरो वा वृधुः सौभगाय।
> युवा पिता स्वपा रुद्र एषा सुदुघा।
> पृश्नि सुदिना मरुद्भ्यः ॥
> [ऋ० ५।६०।५]

अर्थात् इनमे से जन्म से कोई छोटा-बडा नहीं है। सब मनुष्य भाई-भाई हैं, क्योकि परमेश्वर उन सबका पिता और पृथिवी माता है। ऐसा मान कर व्यवहार करने से ही मनुष्यो की वृद्धि होती है। अथर्ववेद का सम्मनस्य सूक्त भी यदि उन्होने पढा होगा तो उन्हे विदित होगा कि परमेश्वर ने मानव से घृणा नहीं वरन् प्रेम करने का आदेश दिया है।

वेद का अज्ञान ही सकल भ्रान्तियो का मूल है। महर्षि स्वामी दयानन्द की देश को सबसे बड़ी देन यही है कि वेद जो सत्य-विद्याओ का पुस्तक है, उसके अनुसार ही बोलो और चलो। आर्य समाज की वेदी से इस लिए बार-म्बार हमें यह घोषणा करनी पड़ती है कि वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार होती है, जन्मानुसार नहीं। शूद्र कुल मे उत्पन्न बालक भी द्विज हो सकता है, और ब्राह्मण कुल में उत्पन्न पथ-भ्रष्ट पापी को भी शूद्र की सज्ञा दी जा सकती है।

आर्यसमाजो द्वारा सर्वत्र श्री शकराचार्य के वक्तव्य का जो विरोध किया गया है वह सर्वथा उपयुक्त है। हरिजन कहने से भले ही किसी को उसके अछूत होने का आभास होता हो, किन्तु आर्य बन कर आर्य कहने और कहलवाने पर तो संशय भी शेष नहीं रह जाता। श्री शंकराचार्य जी को यह भलीभांति समझ लेना चाहिये कि जो मत धर्म के नाम पर मनुष्य-मनुष्य मे भेदभाव की दीवारें खडी करता है, वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। यदि शकराचार्य जी वेदज्ञ भी हैं तो वेदो की बात जो परमात्मा का आदेश है, उसे मानें और तत्काल अपने वक्तव्य को वापस लेकर अपनी सत्य प्रियता का परिचय दें। उससे ऊपर उठ कर वे अपनी आत्मा की ध्वनि को भी सुने, और यदि उन का परमात्मा उन्हे विषम दर्शिता के स्थान पर उन्हे समदर्शिता का दिव्य सन्देश देता हो तो वे उसके अनुसार चलें, भले ही उन्हें गद्दी छोडने का बडा त्याग भी करना पडे।

हमे विश्वास है कि मानव जब अपनी भूल सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लेता है तो उसकी प्रतिष्ठा मे चार चाँद लग जाते है। वे भले ही हरिजनो के लिए कोई अस्पताल खोलें या न खोलें, कोई धर्मशाला या मन्दिर बनवायें या न बनवायें, किन्तु इस वेदमन्त्र को ध्यान मे रखकर सब को स्वीकार कर सबके प्रिय अवश्य बनें।

> प्रियं मा कृणु देवेषु
> प्रियं राजसु मा कृणु।
> प्रियं सर्वस्य पश्यत
> उत शूद्र उतार्ये ॥

(अर्थात् मुझे ब्राह्मणो मे प्यारा कर। मुझे क्षत्रियो मे, शूद्र वर्ग मे तथा वैश्य वर्ग मे प्रिय बना। मुझे सब देखने वालो का प्रिय बना)

(शेष पृष्ठ ४ पर)

## श्री पं नरेन्द्र जी, प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण का वक्तव्य

हिन्दू धर्म सम्मेलन पटना के अधिवेशन के अवसर पर जगद्-गुरु शकराचार्य निरजनदेव तीर्थपुरी ने भाषण देते हुए धर्म ग्रन्थों के आधार पर छूत-छात को धर्म का एक अग है कहा है और अछूत, जन्म के कारण अछूत ही रहेगा, वक्तव्य दिया है। इस प्रकार शकराचार्य जी ने विश्वव्यापी हिन्दू धर्म को सारे जगत् में न केवल अपमानित और कलकित किया है, अपितु शकराचार्य के उस पुनीत पीठ की प्रतिष्ठा को भी भरपूर आघात पहुचाकर करोड़ो हिन्दू जनता के मन से उनके प्रति श्रद्धा मे कमी की है।

मध्यकालीन समय के कतिपय धर्म व्याख्याताओ ने हिन्दू धर्म मे सकीर्णता की भावना उत्पन्न करके लोगो को हिन्दू धर्म से विमुख किया। वेद आदि धर्म ग्रथो और भारतीय सविधान की मान्यताओं के प्रतिकूल वक्तव्य देकर शकराचार्य जी ने हिन्दू धर्म को आघात पहुचानेवाले तत्वो को सहारा दिया है जो हिन्दू धर्म के मानवतावादी विशाल दृष्टिकोण को चुनौती के समान है। उन्हे इतिहास के प्रति अपने इस वक्तव्य के लिए उत्तरदायी होना पडेगा। उन्हो ने जिन ग्रन्थो के आधार पर इस प्रकार का वक्तव्य दिया है उसे आज भारत के सर्व हिन्दू धर्मावलम्बियो को आघात के समान है। भविष्य मे वे इस प्रकार का अनुत्तरदायित्वपूर्ण वक्तव्य देने मे सावधानी बरतेंगे।

मै आर्य (हिन्दू) भाइयो से कहना चाहता हू कि श्री शकराचार्य जी के वक्तव्य पर गम्भीरता पूर्वक विचार करे और उसके प्रतिकार के लिये हम सब कटिबद्ध हो जायें जिससे कि हिन्दू समाज का भविष्य गौरवपूर्ण बना रहे।

[ २ ]

वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर (अम्बाला) के सन्यासी वानप्रस्थी उपाध्याय छात्रो तथा कर्मचारियों की सभा में श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने अध्यक्ष के रूप मे पुरी के स्वामी शकराचार्य के घटना के उस वक्तव्य पर महान् खेद प्रकट किया, जिसमे कि उन्होने छूत-छात के हटाने को हिन्दू धर्म पर आक्रमण कहा है। उक्त स्वामी जी को इस बात का पूर्ण ज्ञान होगा कि उनके धर्म ग्रन्थों मे गुण, कर्म स्वभाव, के कारण वेश्यागर्भोत्पन्न तक व्यक्तियों को महामुनि की उपाधि से विभूषित किया गया। आर्यसमाज का स्वर्णिम इतिहास इस बात का साक्षी है कि अर्थ और विद्या की दृष्टि से पिछडे हुए आर्यो और हिन्दू भाई (जिनको भूल से हरिजन नाम दिया गया है) विशाल हिन्दूसमाज का बलवान अङ्ग है, इनमे से वेदो के विद्वान् सस्कृत के महा पडित सुयोग्य पुरोहित गायनाचार्य एव प्रसिद्ध गुरुकुल विश्वविद्यालयों के आचार्य तथा डी ए वी कालेजो के मुख्याधिष्ठाता तथा प्रिंसिपल के रूप मे हिन्दू समाज की सेवा करते रहे हैं यहीं तक नहीं अपितु लोक सभा के सदस्य, विधानसभाओ तथा विधान परिषदो के सदस्य के रूप मे हमारे सहयोगी रहे हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि सनातन धर्म जगत् हिन्दू सभा विशेषतया आर्यसमाज के नेताओ ने स्वामी जी के उन शब्दो का घोर विरोध किया है, इसलिये राजनैतिक नेताओं का इस बात को बहुत उछाल-उछाल कर निकृष्ट राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिये इसे स्टण्ट नहीं बनाना चाहिए।

—विश्वबन्धु शास्त्री
वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर ( अम्बाला )

(पृष्ठ ३ का शेष)

यदि अब भी अपरिहार्य अथवा दुराग्रह ही उनको प्रिय हो तो हम आर्य जगत् के कर्णधारो से विशेषतया सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से विनम्र निवेदन करेंगे कि वे जगद्गुरु कहलाने वाले परन्तु ऐसे सकीर्ण विचार रखने वालों को आर्य समाज की पवित्र वेदी कदापि न दें और नहीं उन्हें व्यर्थ की कोई मान्यता दें। जैसी अब तक दी जाती रही है।

## आर्य समाजों को आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजो तथा जिलोपसभाओं को सूचित किया जाता है कि अब तक बहुत कम समाजों के वार्षिक चित्र प्राप्त हुये हैं। समाजों व उप सभाओं को चाहिए कि वे अपने वार्षिक चित्र १५ मई तक सभा कार्यालय मे अवश्य भेजदें, ताकि उनकी विधिवत् जाच हो सके तथा प्रतिनिधियों की स्वीकृति भेजी जा सके। १५ मई के पश्चात् आये हुये चित्रों को स्वीकार करने मे सभा को कठिनाई होगी तथा सदिग्ध और अपूर्ण चित्रों के कारण प्रतिनिधियो को मान्यता देना सम्भव नहीं होगा।

२—नियम स० १४ (द) के अनुसार जो एग्रीमेंट समाजों से नोटरी द्वारा प्रकाशित कराके भेजने को लिखा गया था, वह भी शीघ्र भेजने की कृपा करें। अन्यथा सम्बन्धित समाज के प्रतिनिधियो को प्रवेश-पत्र आदि न दिये जा सकेंगे।

३-जिन समाजो पर आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क व एजेंसी का धन विगत वर्षो का शेष है अथवा जो अब तक ग्राहक नहीं बने हैं, उन्हे चाहिये कि वे इस निमित्त सभा कार्यालय को तुरन्त धन भेजें। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समाजो के वार्षिक चित्रो को स्वीकार करने की यह भी एक स्थिति है जिसका समस्त समाजों को अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, एम. एल. ए.
सभा-मन्त्री

[ ३ ]

नई दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महासचिव संसद सदस्य श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने पुरी के शकराचार्य द्वारा छुआछूत का समर्थन किये जाने पर खेद प्रकट करते हुए चुनौती दी है कि छुआछूत शास्त्रसम्मत कदापि नहीं है।

आर्यसमाज ने सबसे पहले जन्मना जाति प्रथा का विरोध करके गुण कर्म व स्वभाव के आधार पर जाति प्रथा को महत्त्व दिया। आर्यसमाज ने अनेक तथाकथित शूद्रों को विद्वान् बनाकर पण्डितों की श्रेणी मे बैठाया जिन्होंने अपनी विद्वत्ता की धाक जमाई।

हिन्दू मात्र एक है तथा उन्हें ऊँच-नीच की श्रेणी में विभाजित करना सर्वथा अदूरदर्शी कदम होगा। श्री शकराचार्य जी को हिन्दू सगठन मे दरार डालने वाला ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये।

## आर्य समाज बुलन्दशहर का प्रस्ताव

—दिनाक ६-४-१९६९ के आर्यसमाज बुलन्दशहर के इस साप्ताहिक अधिवेशन मे यह जानकर कि पुरी के श्री शकराचार्य जी ने विश्व हिन्दू परिषद् के मच मे जिसका उद्देश्य हिन्दू जाति को सगठित करके वेद के झण्डे के नीचे एकत्रित करना है, अछूत सम्बन्धी कि अस्पृश्यता वेद, शास्त्रानुमोदित है। उनका ऐसा कथन वेद तथा शास्त्रो के सर्वथा विरुद्ध है। यदि मच के उद्देश्य से वह सहमत नहीं थे, तो उनको उस मन्च से बोलना ही नहीं वहाँ जाना भी नहीं चाहिए था। ऐसे ही वचनो से हिन्दू जाति के लाल अरमान न सहकर ईसाइयों, मुसलमानो के चगुल मे फंस रहे है। अत यह अधिवेशन श्री शकराचार्य के २९-३-१९६९ को द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू धर्म सम्मेलन मे उदघाटन भाषण से कहे हुये उक्त कथन को वेद-शास्त्रो के सर्वथा विरुद्ध, मिथ्या, निर्मूल, निराधार, असहनीय तथा घृणित व निन्दनीय बताता है जिससे देश की शान्ति और एकता को खतरा पहुँचा है।

—शिवलाल वर्मा, प्रधान, बनारसीदास शर्मा, मन्त्री
आर्य समाज बुलन्दशहर

# सुखी गृहस्थाश्रम का रहस्य

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम कहलाते हैं। इन आश्रमो मे गृहाश्रम सबसे ज्येष्ठ एव श्रेष्ठ है। मनु महाराज ने लिखा है—

यथा नदी नदा सर्वे
सागरे यान्ति सस्थितिम्।
तथैवाश्रमिया सर्वे गृहस्थे
यान्ति सस्थितिम्॥

अर्थात् "जैसे नदी और बडे-बडे नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते। वैसे ही गृहस्थ ही के आश्रय सब आश्रम स्थिर रहते हैं। बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता। इसलिये जितना कुछ व्यवहार ससार मे है उसका आधार गृहाश्रम न होता तो सन्तानो [illegible] के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहाँ से [illegible] सकते? जो गृहाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है और जो प्रशसा करता है वही प्रशसनीय है"

[सत्यार्थ प्रकाश]

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज के वैज्ञानिक एव प्रगतिशील युग मे दहेज जैसी कुरीति ने घर कर लिया है। इस कुरीति के कारण अधिकाश अनमेल विवाह होते हैं जिनका परिणाम अच्छा नहीं निकलता। कालान्तर मे पति पत्नी से तग आ जाता है, और पत्नी पति से तग आ जाती है। वह गृहाश्रम जिसमे स्त्री और पुरुष ने सुख प्राप्ति के लिए प्रवृष्ट किया था, दु:ख का साधन बन जाता है। अनमेल विवाह के विषय मे ऋषिवर दयानन्द जी महाराज लिखते हैं—

'चाहे मरण पर्यन्त कन्या पिता के घर मे बिना विवाह के बैठी भी रहे परन्तु गुणहीन, असदृश, दुष्ट-पुरुष के साथ कन्या का विवाह कभी न करें, और वर कन्या भी अपने आप समसदृश के साथ ही विवाह करें।'

गृहाश्रम के सुख का मूल कारण ब्र[illegible] और स्वयवर विवाह है।

स्वयवर विवाह—लडका अपने सदृश [illegible], स्वभाव वाली लड[illegible] लडकी [illegible] अपने सदृश [illegible] स्वभाव वाले लडके का [illegible] विवाह करना स्वयवर विवाह कहलाता है।

ब्रह्मचर्य—[illegible] ब्रह्मचारी होता है [illegible] बसता हुआ भी ब्रह्म[illegible] कहलाता है। गृहाश्रम मे प[illegible] सन्तानोत्पत्ति [illegible] चाहिये वासना पूर्ति [illegible] नहीं।

गृहाश्रम सुख का साधन कैसे बने इसका उपाय [illegible] भगवान ने अधोलिखित [illegible] वर्णित है—

देने वा[illegible] जगत का उत्पन्न क[illegible] ऐश्वर्य का देने [illegible] जगत का धारण [illegible], वही [illegible] के बीच मे स[illegible]। [illegible] और विद्वान् ने [illegible] और [illegible] पर-स्पर [illegible] तथा उद्योगी [illegible] तरह [illegible] नाशमादि से [illegible] धर्म को करेंगे। [illegible] के [illegible]। [illegible] उत्पन्न करेंगे, [illegible]। इ[illegible] प्रकार [illegible] की साक्षी से [illegible] इन नियमो का ठीक-ठीक पालन करेंगे। दूसरी स्त्री और दूसरे पुरुष से मन से भी व्य-

## गहरे पानी पैठ

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं
मया पत्या जरदष्टिर्यथास।
भगो अर्य्यमा सविता पुरन्धिर्मह्य
त्वादुर्गार्हपत्याय देवा॥

उपरोक्त मन्त्र का अर्थ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस प्रकार किया है–'हे स्त्री! मै सौभाग्य अर्थात् गृहाश्रम मे सुख के लिये तेरा हस्त ग्रहण करता हू। और इस बात की प्रतिज्ञा करता हू कि जो काम तुझको अप्रिय होगा उसको मै न करूगा। ऐसे ही स्त्री भी पुरुष से कहे कि जो व्यवहार आपको अप्रिय होगा उसको मै कभी न करूंगी। और हम दोनो व्यभिचारादि दोष रहित होके वृद्धावस्थापर्यन्त परस्पर आनन्द के व्यवहारो को करेगे। हमारी इस प्रतिज्ञा को लोग सत्य जानें कि इससे उल्टा काम कभी न किया जायेगा। जो ऐश्वर्यवान् सब जीवों के पाप-पुण्य के फलों को यथावत्

भिचार न करेंगे। हे विद्वान् लोगों! तुम भी हमारे साक्षी रहो कि हम दोनो गृहाश्रम के लिये विवाह करते हैं। फिर स्त्री कहे कि मै अपने पति को छोडके मन वचन और कर्म से भी दूसरे पुरुष को पति न मानूगी। तथा पुरुष भी प्रतिज्ञा करे कि मैं इसके सिवाय दूसरी स्त्री को अपने मन-कर्म और वचन से भी न चाहूगा।

उपरोक्त मन्त्र मे निर्देश दिया गया है—

१–पति-पत्नी कभी भी ऐसा काम न करे जो एक दूसरे को अप्रिय हो। अप्रियाचरण पारस्परिक मन-मुटाव को जन्म देता है। इससे बचने का उपाय है कि जो भी कोई कार्य किया जाय वह एक दूसरे के परामर्श से किया जाय।

२–पति-पत्नी परस्पर प्रीति करें। केवल पत्नी ही नहीं अपितु पति भी पत्नी को प्यार करे। दोनो मे पारस्परिक आकर्षण हो।

३–पति पत्नी उद्योगी बने। उद्योगि[illegible] लक्ष्मी अर्थात [illegible]) [illegible] उद्यम करने वा[illegible] होती है।

४–[illegible] आपस [illegible] से [illegible] हो जाता है।

[illegible] श्री [illegible] जी
दयानन्द भवन, मुजफ्फरनगर

५–पति-पत्नी धर्म मे प्रवृत्त रहे। धर्म का अर्थ है [illegible] तथा न्याय का [illegible] करना। सुखस्य मूल धर्म—[illegible] धर्म है।

६–[illegible] सदैव ऐसा व्यवहार करें जिससे जगत् का उपकार हो।

७–धर्म से सन्तानोत्पत्ति करना अर्थात् ऋतु गामित्व से सन्तानो की उत्पत्ति करना और गर्भस्थिति की पीछे एक वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य का पालन करना।

८–सन्तानो को सुशिक्षित करना। आचार्य चाणक्य ने कहा है—माता शत्रु पिता वैरी,
येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभा मध्ये,
हस मध्ये बकोयथा।

वे माता पिता अपने सन्तानो के पूर्ण बैरी हैं जिन्होने उनको विद्या की प्राप्ति नहीं कराई। वे विद्वानो की सभा मे ऐसे तिरस्कृत होते है जैसे हस के बीच बगुला।

९–पति अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी पत्नी को मन वचन और कर्म से न चाहे और पत्नी भी अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष को मन, कर्म और वचन से न चाहे।

अर्थात् पति का धर्म पत्नीव्रत का पालन करना है और पत्नी का धर्म पतिव्रत का पालन करना है। पत्नी का पूजनीय देव पति और पति की पूजनीय अर्थात् सत्कार करने योग्य देवी पत्नी है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# सूर्य के समान जगमगाएं

आर्य समाज की स्थापना १८७५ ई० मे बम्बई मे हुई थी। इसको पूरे ९४ वर्ष हो गये। सन् १९७५ मे स्थापना शताब्दी मनानी है! आर्य समाज के स्वरूप को समझ कर स्थापना शताब्दी तक उसकी उन्नति एव प्रगति के लिये पूरा प्रयत्न होना चाहिए! आर्य समाज कोई नवीन मत, या सम्प्रदाय या धर्म नहीं है। इसका उद्देश्य केवल प्राचीन वैदिक धर्म को सारे विश्व मे प्रचारित करना है। महर्षि दयानन्द ने अपने व्यक्तिगत स्वरूप को आर्य समाज और धर्म प्रचार मे सदैव पृथक रखा। ईसाई ईसा के मानने वाले हैं, मुसलमान मुहम्मद साहब के आर्यसमाज वाले महर्षि के अनुयायी हैं; परन्तु अपने आप को दयानंदी कहने या कहलवाने मे अपमान समझते हैं। महर्षि के प्रचार की यही एक व्यवस्था ऐसी है, जो उनको ससार के धर्म प्रचार को और संस्कारों को ऊंचा उठा देती है। महर्षि ने अपने व्यक्तिगत स्वरूप को पृथक् रखा उसके साथ आर्यसमाज की रूप रेखा ऐसी विशाल निर्धारित की जिसके उद्देश्य और नियमों के अन्तर्गत सारी विचारधाराओं का आर्य समाज के उद्देश्यों में सासारिक अभ्युदय और निःश्रेयस या मोक्ष दोनों का समावेश है। धर्म के क्षेत्र में जीवन का कोई कार्य बाहर नहीं है! और न कोई देश काल इसके प्रभाव से पृथक् रह सकता है। राजा और प्रजा का सम्बन्ध भी धर्म के अन्तर्गत होना चाहिये और इस दृष्टि से राज्य की नीति भी धर्म के अन्तर्गत है! महर्षि ने राज्य नीति को राज्य धर्म के नाम से भी सम्बोधित किया है। व्यक्तियो के निर्माण के लिये शिक्षा संस्कार यज्ञ और योग आवश्यक हैं। इनका स्वरूप भी धर्म से ही सम्बन्धित है। और ये भी धर्म के अन्तर्गत हैं। समाज का निर्माण या समाज का ढांचा भी धर्म का एक अग है। और इस दृष्टि से समाज सम्बन्धी सारे प्रश्न धर्म के ही अग हैं। समाज की व्यवस्था के लिए दण्ड विधान, न्याय व्यवस्था भी धर्म के आधार पर हो सकती है। इस प्रकार यह बात भलीभांति विदित हो जाती है कि महर्षि दयानन्द ने जिस वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये आर्यसमाज की स्थापना की थी, उसके क्षेत्र और प्रभाव
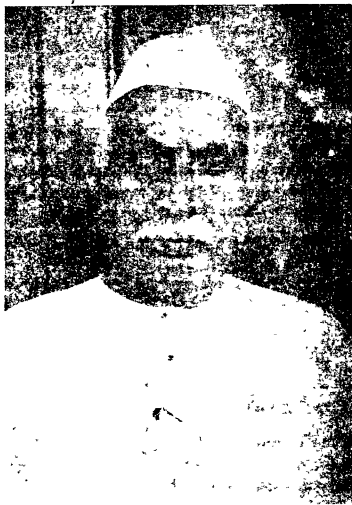
श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट

से व्यक्तियों के उत्थान और समाज के निर्माण सम्बन्धी सब प्रश्न घनिष्ट रूप से सम्बन्धित हैं।

आर्य समाज के स्वरूप को सरलता से समझने के लिये निम्न भाष्य समझ सकते हैं।

(१) प्राचीनता पर आधारित (२) तर्क का पूर्ण समावेश (३) व्यावहारिक जीवन से सर्वांग पूर्ण सम्बन्धित। प्राचीनता पर आधारित होने की दृष्टि से महर्षि ने आर्य समाज के पहले नियम में ईश्वर को आदि मूल एवं वेदों को ईश्वर की वाणी बतलाया है। आर्य समाज के नियमों में सबसे अधिक बल ३ बातो पर है। ईश्वर सब सत्य विद्याओ का आदि मूल है। वेद ईश्वर का ज्ञान है। और उनका पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है। और संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है। आदि मूल परमधर्म और मुख्य उद्देश्य को लक्ष्य मे रख कर आर्य समाज का स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। बिना ईश्वर के स्वरूप को समझे बिना वेदों के स्वाध्याय को समझे मनुष्य को अपने धर्म और कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं हो सकता। एवं कर्त्तव्य का ज्ञान होना भी निष्प्रयोजन है यदि वह अपने ज्ञान और सामर्थ्य को ससार के उपकार के लिये प्रयोग में नहीं लाये।

संसार के उपकार को मुख्य उद्देश्य होने में ये बात भली-भांति विदित हो जाती है कि आर्यसमाज का सम्बन्ध किसी देश, विदेश या जाति विशेष, या काल विशेष से नहीं।

परोपकार की जो परिभाषा महर्षि ने आर्यसमाज के ६ठे नियम मे दी है उससे भी यह विदित होता है कि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य

★श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आ.प्र. सभा
दिल्ली

प्रत्येक व्यक्ति का निर्माण करना और व्यक्तियो के निर्माण से ही ससार का उपकार सम्भव है। महर्षि ने लिखा है कि ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक मानसिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। शब्द 'करना' बड़े महत्त्व का है। यदि महर्षि करना के स्थान पर कराना लिखते तो सम्भव था कि व्यक्तियों को अपनी उन्नति की ओर ध्यान न जाता वह दूसरो को उन्नति कराने में अपना कर्तव्य समझ बैठते! यह प्रकट है कि आर्यसमाज का लक्ष्य व्यक्ति निर्माण और व्यक्तियों के निर्माण से समाज का निर्माण है। चारों प्रकार की उन्नति पर साथ-साथ बल देना भी महर्षि के महान् उद्देश्य को और आर्यसमाज के महत्त्व को भलीभांति प्रकट करना शारीरिक उन्नति, मानसिक उन्नति दोनों अनिवार्य हैं। इन दोनों के साथ आत्मिक उन्नति भी अति आवश्यक है। और तीनों प्रकार की उन्नति के समन्वय से सामाजिक उन्नति सम्भव हो सकती है। आज ससार मे शारीरिक उन्नति की ओर ध्यान है, मानसिक उन्नति के लिये भी कुछ व्यवस्था है। परन्तु आत्मा की ओर ध्यान न देने से न शारीरिक उन्नति पूर्ण होती है और न मानसिक, एक दृष्टि से आत्मा की अवहेलना करने से शारीरिक बल और मानसिक बल की वृद्धि मे कभी-कभी जीवन की मर्यादा मे विघ्न पड़ जाता है आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान

(शेष पृष्ठ १० पर)

# वृष्टि यज्ञ के कतिपय परीक्षणों का संक्षिप्त विवरण

( गताङ्क से आगे )

★श्री प० वीरसेन वेदश्रमी, वेद-सदन, महारानी पथ, इदौर २ म प्र

दी थी । ऐसी स्थिति मे जब वर्षा की ऋतु समाप्त हो चुकी थी और जल की पूर्ति का अन्य कोई उपाय नहीं था, तब केवल परमात्मा से प्रार्थना यज्ञ द्वारा करने का निश्चय राजाधिराज श्री सुदर्शनदेव जी–शाहपुरा ने तथा श्रीमती अ सौ महारानी सा ने किया । यह वृष्टि यज्ञ ३ सितम्बर से १७ सितम्बर तक श्री राजाधिराज एव श्रीमती महारानी ने अत्यन्त श्रद्धा एव प्रेम से अपने व्यय से स्वय यजमान बन कर किया । अगस्त मास मे बादल भी आकाश मे नहीं दीखते थे। दि० २ सितम्बर को भी आकाश स्वच्छ था । परन्तु यज्ञ प्रारम्भ होने पर प्रथम दिवस दिनाक ३ सितम्बर से बादल प्रकट होने लगे और वर्षा होने की प्रबल सम्भावना भी होती रही। प्रतिदिन ११ बजे से साय ६ बजे तक बादल अच्छी स्थिति मे रहते । कभी रात्रि के ९ व १० बजे क भी रहते, कभी और अधि . मय भी शेष समय नहीं रहते ।

दि० १३ को जयपुर आकाश वाणी केन्द्र से सूचना प्रसारित हुई कि पूर्वी राजस्थान मे वर्षा होगी। दि० १३ व १५ को शाहपुरा मे रात्रि मे बादल रहे। दि० १३, १४, १५ व १६ को रात्रि मे आग्नेय कोण एव दक्षिण दिशा मे आकाश मे बिजली की चमक दूर पर दीखती थी जिससे उस दिशा मे बादल एव वर्षा होना ज्ञात होता था । उदयपुर, भीलवाड़ा, एव चित्तौड मे वर्षा की सूचना भी लोगो से प्राप्त हुई थी परन्तु शाहपुरा के क्षेत्र मे वर्षा नहीं हुई थी।

दि० १४ को कुछ बूंदें शाहपुरा मे पड़ी थी तथा दिनाक १८ को प्रात. १० बजे से बादलों का अत्यधिक सचय होना प्रारम्भ हो गया था हवा भी पूर्वी चलती रही दोपहर को बादलों से सर्वत्र छाया ही हो गई थी और ३-४ बजे कुछ हलकी सी बौछार १-२ मिनट के लिये पडी थी । पुन बादल शाम तक कम हो गये । इसप्रकार शाहपुरा के क्षेत्र को इस यज्ञ से मेघ निर्माण का ही परिमाण दृष्टि गोचर हुआ, परन्तु शाहपुरा से ५०-६० मील से आगे के पूर्वीय सुदीर्घ भूभाग मे उत्तरोत्तर अधिकाधिक वर्षा सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के क्षेत्र मे इतनी अधिक दृष्टिगोचर हुई कि नदी, ताल, नाले, गढ़े खेत सब पानी से भर गये थे । क्योकि इस यज्ञ के प्रभाव से सुदूर पूर्व दिशा से मानसून का आकर्षण होने से उत्तरोत्तर पूर्वीय भाग मे वर्षा की अधिकता और प्राथमिकता थी। यज्ञ के प्रभाव से मानसून चलने का क्रम पूर्वीय क्षेत्र से प्रारम्भ हुआ था उसके आकर्षण केन्द्र शाहपुरा तक उसके पहुचने मे मध्य के क्षेत्र मे वर्षा हो जाने से क्षति हो गई और जब तक उसने शाहपुरा मे प्रवेश किया तो उसके १ दिन पूर्व ही यज्ञ समाप्त हो जाने से मानसून का आकर्षण केन्द्र विशृखल हो जाने से और अधिक प्रभाव नहीं हो सका। यदि शाहपुरा से पश्चिम दिशा मे अजमेर मे भी इसी समय या १२ १३ सितम्बर से यज्ञ होता तो मानसून को शाहपुरा क्षेत्र से आगे भी आकर्षण करने को बल प्राप्त होता और शाहपुरा मे अच्छी वृष्टि हो सकती थी । परन्तु यह करना उस समय हमारी सामर्थ्य मे नहीं था। वर्षा समाप्त हो जाने की स्थिति मे आकाश मे जलीय सचय समाप्त प्रायः हो जाने से पुन मानसून के आकर्षण की अन्तिम सीमा यज्ञ स्थली ही रह जाती है उससे वहां मानसून का वेग एवं प्रवाह न्यून हो जाने से वर्षा अत्यल्प ही होती है । यह तात्कालिक मानसून मध्य के क्षेत्रो मे बरसने से भी अपनी शक्ति क्षीण कर चुका था । अत दोनो ही कारणो से स्थानीय लाभ कम हुआ परन्तु देश के एक बहुत बडे भाग को उससे अवश्य लाभ हुआ । अन्यथा कई प्रान्तो मे अकाल की स्थिति उत्पन्न होती।

(१७) ग्राम–खरोरा–[जिला रायपुर]–सन् १९६८ मे सितम्बर २४ से ३० तक वृष्टि यज्ञ का आयोजन आर्य समाज खरोरा ने किया । यहाँ वृष्टि के न होने से फसल के नष्ट होने की सम्भावना थी । दिनाक २३ को बादल आकाश मे नहीं थे । दिनाक २४ को प्रात यज्ञ समाप्त होने के बाद दिन मे बादल विशेष उत्पन्न हुए। दिनाक २५ को साय यज्ञ समय मे बादलो की घटाये उमडने लगीं और यज्ञ पूर्ण होते ही १।। घण्टा तक खूब जोर से मूसलाधार वर्षा हुई । दिनाक २६ को पश्चिम दिशा के ग्रामो मे वर्षा हुई । दि० २७ को रात्रि को खरोरा ग्राम मे कुछ वर्षा हुई । तथा दक्षिण व पश्चिम दिशा के समीपवर्ती ग्रामो मे अच्छी वर्षा हुई। दिनाक २८ को दक्षिण व उत्तर दिशा मे वर्षा हुई । ३० को पूर्णाहुति के बाद सायकाल उत्तर व पश्चिम के अतिनिकट के क्षेत्रो मे भी जोरो से वर्षा हुई तथा बाद को दो तीन दिन तक खरोरा व समीप के क्षेत्रो मे वर्षा होती रही । इस यज्ञ मे लगभग ३०००) रु० व्यय हुआ ।

[१८] ग्राम-आटौना [जिला-कोटा]–सन् १९६८ मे ४ से ६ अक्तूबर तक वृष्टि यज्ञ स्थानीय आर्यसमाज ने सम्पन्न कराया । वर्षा के अभाव को दूर करने के लिये ही यज्ञ आयोजित किया था । यज्ञ के दिनो मे बादलो की घटायें उत्पन्न हुई । दिनाक ६ को हल्की बूंदे भी पड़ी थीं । पुन ७ व ८ को वर्षा भी हुई । यज्ञ के इर्द गिर्द मे भी ४-५ मील दूर के क्षेत्रो मे भी वर्षा हुई थी । इस यज्ञ मे लगभग ३००) रु० व्यय हुआ ।

उपरोक्त परीक्षण यज्ञ मेरे द्वारा सम्पन्न हुए हैं । अन्य भी अनेक व्यक्तियो ने अनेक स्थानो पर वर्षा के लिये यज्ञ किये है, उनमे भी प्राय पूर्ण रूप मे या आशिक सफलता अवश्य हुई है । इसी प्रकार अति वृष्टि को रोकने के भी परीक्षण किये है । परन्तु आज का युग प्रत्येक बात को नवीन रूप मे, वैज्ञानिक स्वरूप मे देखना चाहता है और उसीको मानना भी चाहता है । अत. आज सर्वाधिक आवश्यकता हमे यह अनुभव हो रही है कि हम अपनी "वैदिक-विज्ञान- अनुसन्धान प्रयोगशाला" स्थापित कर वर्त्तमान विज्ञान के अनुसार परीक्षण करे और उसके परिणामो को विश्व के वैज्ञानिकों के सम्मुख उपस्थित करे । यह कार्य २५,०००) के प्राथमिक व्यय से प्रारम्भ हो सकता है। जितनी शीघ्र इसकी पूर्ति होगी उतनी ही शीघ्र हम प्रयोगशाला का कार्य प्रारम्भ कर सकने मे समर्थ होगे । [क्रमश.]

## राधिकेश राधा रहस्य

[ महाकवि स्वर्गीय श्री प० नाथूरामशकर शर्मा (शकर) ]

**दोहा**

अज की माया है अजा, सनजा [illegible] ।
राधिकेश राधा रमे, 'शकर' यों रच रास ॥

**कवित्त घनाक्षरी**

'शङ्कर अखण्ड एक [illegible] की एकता ने,
[illegible] साधन अनेकता का साधा है।
तारतम्यता के साथ [illegible] की बनावट मे,
पोल और ठोस का प्रयोग आधा-आधा है ॥
नाम रूप,ज्ञान से,क्रिया की कर्म कल्पना से,
नित्य निरुपाधि चिदानन्द मे न बाधा है ।
सामाधिक धारणा मे ऐसा ध्रुव ध्यान है तो,
पुरुष मुकुंद है, प्रकृति प्यारी राधा है ॥

नोटः—निखिल शास्त्र निष्णात गुरुवर श्री काशीनाथ जी महाराज ने इस पद्य की भूरि-भूरि सराहना की थी । और अपने आशीर्वाद मे श्री शङ्कर जी को 'सरस्वती' की उपाधि प्रदान की थी ।

आशीर्वाद इस प्रकार है—

शङ्कर प्रणमन् काशी-नाथोऽहं द्विजसत्तमः ।
काव्य-दर्शन सजात-चमत्कारो निवेदये ॥
नून सरस्वती नाथूराम-शङ्कर पण्डितः ।
अन्यथेदृश पद्यानि को निर्मिमीत मानवः ॥

—रामस्वरूप शास्त्री

## ईश्वर में प्रणिधान करो

ए मानव तू व्यर्थ खडा क्या यहां तमाशा देख रहा है,
ईश्वर सदा सखा है तेरा क्यों उद्यम से भाग रहा है ।
मानवता का मान करो तुम क्रान्ति-शख का नाद करो,
जनता का उपकार करो परमेश्वर मे प्रणिधान करो ॥१
दूर किया पाखड विश्व से जिसने सच्चा ज्ञान दिया है,
वेदो का करके प्रकाश अज्ञान अंधेरा नष्ट किया है ।
दयानन्द की कीर्ति-कौमुदी का जग मे विस्तार करो,
निराकार ईश्वर को जानो उसमें ही प्रणिधान करो ॥२
भव-वारी मे जो रहकर भी कमल पत्र सम ही रहता है,
ऐहिक माया छोड वही सच्चा सुख स्वन. प्राप्त [illegible] है ।
परम पिता के तुम पुत्र हो उसका ही अब ध्यान करो ।
हो वियुक्त विषयो के बन्धन से उसमे प्रणिधान करो ॥३
प्रतिमा [illegible] साकार नहीं वह प्रभु तो कण-कण मे रहता है,
मूर्ख मनुज मन्दिर को दौडे पर [illegible] सदा रमता है ।
पुण्य कमाओ तुम अनन्त [illegible] कर्म पाप से सदा डरो ।
निराकार सच्चिदानन्द [illegible] ईश्वर में प्रणिधान करो ॥४

—प्रशस्यमित्र शास्त्री, शास्त्रीनगर २३/३ कानपुर

# महान् दयानन्द

## दानी दयानन्द

★

सत्य की ज्योति, वेद का ज्ञान,
दिया ऋषि दयानन्द ने दान ।
सिखाया हमको वैदिक धर्म,
बताया शास्त्र-विहित शुभकर्म,
जताया श्रुति स्मृतियो का मर्म,
करो सब एकेश्वर गुणगान ।
सत्य की ज्योति वेद का ज्ञान ।१।
अविद्या रोती फिरे अनाथ,
भारती फिर से हुई सनाथ,
धर्म पाकर तुझ-सा प्रिय नाथ,
मुदित मन करता फिरे बखान ।
दिया ऋषि दयानन्द ने दान ।२।
योग का मार्ग ब्रह्म की भक्ति,
देह मे ब्रह्मचर्य की शक्ति,
यज्ञ, तप, सयम मे आसक्ति,
प्रेम-पीयूष कराया पान ।
सत्य की ज्योति वेद का ज्ञान ।३।
सुसन्ध्या गायत्री का जाप,
शुद्ध सच्चा जीवन निष्पाप,
मिटाये दुख दायक त्रय ताप,
चढाकर शाति शकट के यान ।
दिया ऋषि दयानन्द ने दान ।४।
सही पत्थर ईटों की मार,
कर्ण की चली क्रूर तलवार,
न था मन मे प्रतिशोध विचार,
अहिंसा व्रत का सदनुष्ठान ।
सत्य की ज्योति वेद का ज्ञान ।५।
महा-मेधा से तू चैतन्य,
सुमति का सागर तू था धन्य,
न पाया तुझ-सा कोई अन्य,
बढाया मानवता का मान ।
दिया ऋषि दयानन्द ने दान ।६।
महासागर से भी गम्भीर,
कीर्ति तेरी अम्बर को चीर,
त्रिलोकी पार गई, मतिधीर !
नहीं कोई तेरा उपमान ।
सत्य की ज्योति वेद का ज्ञान ।७।
चढाकर बुद्धिवाद की शाण,
मनो पर मारी तर्क-कृपाण,
[illegible] लेकर प्राण,
बचाई आर्य जाति की शान ।
सत्य की ज्योति वेद का ज्ञान ।८।

दिया ऋषि दयानन्द ने दान ।

—रामस्वरूप शास्त्री, काव्यतीर्थ, आनन्दपर्वत दिल्ली

# अस्पृश्यता निवारण

श्री शंकराचार्य महाराज की यह घोषणा कि जन्मना कुछ लोग अछूत हैं कोई नई बात नहीं है। भारत के इतिहास में कुछ लोगों को जन्मना अछूत समझने और सामाजिक सुविधाओं से सब प्रकार वंचित रखने के लिए यत्न बहुत दिनों से चला आ रहा है। इस कुचक्र के विरोध का इतिहास भी उतना ही पुराना है। यद्यपि छुआ छूत विरोधियों को अधिक सफलता नहीं मिली है फिर भी यह आज तक किसी न किसी रूप में विद्यमान है। इसका सक्रिय विरोध भगवान् बुद्ध, भगवान् महावीर, गुरुनानक देव, सन्त कबीर, गुरु गोविन्दसिंह आदि ने किया, परन्तु जड़ से यह उनके समाज से भी न गई। स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, राजाराम मोहनराय तथा महात्मागांधी आदि का प्रयत्न अभी तक पूर्ण रूपेण सफल नहीं हुआ है। इस देश में छुआ छूत आज भी अपने नग्न रूप में विद्यमान है। जहां कहीं छुआ-छूत मानने वालों की जैसी चल जाती है, वहां वे वैसा अब भी कर बैठते हैं। इस व्यवहार में गरीब मारे जाते हैं और अमीर हलुवा पूड़ी खाते हैं। यद्यपि यह बहुत कम लोगों के भावना का प्रश्न रह गया है, फिर भी ढोंग रूप में यह अनर्थकारी ही है। गत वर्ष मे कई मास रामनगर [वाराणसी] में बीमार अस्पताल में भरती था। मेरे पास के कई शैय्याओं पर कई जात्याभिमानी साधन सम्पन्न व्यक्ति आये और गये। इनमें अपने स्वार्थ में कोई छुआ-छूत न थी, परन्तु अंत नीच थी, भावना का दम्भ सब में था। जहाँ इनका स्वार्थ न होता वहाँ ये अपने छुआ-छूत के व्यवहार से दूसरों को अपमानित करने में सकोच न करते। यहाँ एक ऐसा रोगी शैय्याशाही हुआ जो अपने लिए किसी प्रकार का छुआ-छूत नहीं बरतता था परन्तु इसमें आत्मभिमान इतना था कि दिन-रात छुआ-छूत के प्रचार में ही लगा रहता था। सयोग से हम लोगों के पास ही एक गरीब हिन्दू की शैय्या लग गई। उसकी दयनीय दशा के कारण मैंने उसको निःशुल्क भोजनालय में भोजन देने के लिए डाक्टर महोदय से कहा। उन्होंने कहा कि इसको अवश्य निःशुल्क भोजन मिलेगा। इस पर उसने अपनी गरीबी पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि मैं गुरुमुख हो गया हूं और कण्ठी पहिने हूं। यहां सब जाति का छुआ हुआ भोजन न कर सकूंगा। डाक्टर महोदय ने कहा कि भाई किसी प्रकार भोजन का प्रबन्ध कर सकते हो तो निःशुल्क भोजन न लो। जब न कर सकना तो एक दिन

## [illegible] समस्याएं

पहले बता देना ताकि दूसरे दिन से भोजन मिलने लगे। अच्छे होने से लगभग एक मास लगे। एक दो दिन के पश्चात् छुआ-छूत का भूत उतर गया। और निःशुल्क भोजन ही नहीं लेने लगे बल्कि जिस जात्याभिमानी ने इन्हें बहकाया था उसी की भांति छुआ-छूत को तोड़ बैठे। गत आबू रोड सर्वोदय सम्मेलन में जा रहा था। दिल्ली स्टेशन पर एक बंगाली मित्र ने भोजन के सम्बन्ध में मुझ से पूंछा। मैंने कहा कि स्टेशन के निरामिष भोजनालय में भोजन करूँगा। उन्होंने कहा कि मैं भी भोजन वहीं करूँगा, क्योंकि वहां बहुत ही शुद्ध प्रबन्ध है। हम दोनों व्यक्तियों को देख कर व्यवस्थापक ने एक ब्राह्मण कर्मचारी को भोजन परोसने के लिए कह दिया। बातचीत में ब्राह्मण बंगाली मित्र ने कहा कि वे ब्राह्मणेतर जाति के हाथ का भोजन पसन्द नहीं करते हैं

★श्री सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी'
एडवोकेट, मीरजापुर

और जहाँ कहीं ब्राह्मणेतर जाति के हाथ का ही भोजन सम्भव होता है, वहाँ वे ब्राह्मण परोसने वाले पर ही सन्तोष करते हैं। आज के भोजन के परोसने का कार्य उनके परामर्श से ब्राह्मण द्वारा हुआ था। ये हैं छुआ-छूत के रूप जो हिन्दू समाज में चल रहे हैं। अपने ग्राम एवं नगरों से बाहर जाने-आने वालों में छुआ-छूत का व्यवहार प्रायः नष्ट हो चुका है। ये होटलों में बिना किसी सकोच के खाते-पीते हैं, फिर भी जब ये अपने घर आते हैं तब छुआ-छूत का कुछ रूप बना लेते हैं। छुआ-छूत इस समय प्रायः स्वार्थ के साथ चल रहा है। एक बार काशी में कांग्रेस कैम्प लगा था। उस समय मैं भी कांग्रेस कार्यों में सक्रिय भाग लेता था। कुछ चमार युवक मेरे साथ थे। कुछ ब्राह्मण अतिथियों ने उनके साथ पंक्ति में भोजन करना न पसन्द किया और इस कारण कुछ अप्रिय विवाद भी हुए। इस विवाद के कुछ वर्षों बाद यही चमार युवक विधायक निर्वाचित हुये। इनकी पदोन्नति से

[ शेष पृष्ठ ११ ]

# भर्‌म-भ्रांति-भेद !

जगत् गुरु बन बैठा देखो ?
भरा उसी में भ्रांति-भेद !
विश्व हिन्दु धर्म सम्मेलन, पटना में ये हुआ विशेष।
शङ्कराचार्य पुरी के आये, जगत् गुरु का पहिना वेष ॥
वेद विरुद्ध दिया था भाषण, छुआछूत की भरी सरोट।
साम्प्रदायिकता फैलाते अपने धर्म-ग्रन्थ की ओट ॥
पहुचाये आघात असह्य, हुआ असीम लाखों जन खेद।
जगत् गुरु बन बैठा देखो ?
भरा उसी में भ्रान्ति - भेद ॥१॥
छुआ-छूत का कहीं सरक्षण नहीं किया है वैदिक ग्रन्थ।
ये तो पीछे किये उन्होंने, वेद विरुद्ध बनाये पन्थ ॥
वेदाधिकार दिया है सबको, 'समानो मन्त्र समानम् एक।
समानी व आकूति समाना" कितना सुन्दर भव्य लेख ॥
पढ़ा सुना देखा भी नाही, अरबों वर्ष पहले का वेद—
जगत् गुरु बन बैठा देखो ?
भरा उसी मे भ्रांति भेद ॥२
दयानन्द के युग में किसे— जगत् गुरु का ले अभिमान।
कहाँ ठहरेगी कृत्रिम बाते, पन्थवादि फैलाते ज्ञान ॥
भारत का बरबाद हुआ जब, छुआछूत का तबसे रोग।
गये पिछड़ते दीन उजड़ते, भोगे जिनका अब वो भोग ॥
फिर भी करते जा रहे है, देश विभाजन करते छेद।
जगत् गुरु बन बैठा देखो ?
भरा उसी में भ्रांति-भेद ॥३
कैसे? उन्नति हो भारत की, मानव है जिन रखते दूर।
अस्पृश्यता को लेकर चलने, मानवता के दुश्मन जरूर ॥
ओ पुरी के शंकराचार्य जी! जगत् गुरु हो सबके आप।
तो फिर भिन्नता क्यों? बतलाते, पढ़ न सके घनसार सन्ताप ॥
होगी अवश्य देश में हानी—दिखा रहे हैं भाव-समेद ॥
जगत् गुरु बन बैठा देखो ?
भरा उसी मे भ्रान्ति भेद ॥४

—कवि कस्तूरचन्द "घनसार" पीपाड़ शहर (राजस्थान)

## अध्यात्म-सुधा
(पृष्ठ २ का शेष)

हो,मै भले ही किसी वधिक का लोहा हू, परन्तु आपका दिव्य स्पर्श पाकर मै तो खरा कचन बन सकता हू।'

'प्रभो ! आपतो पवित्रता की वेगवती धारा हो । आनन्द के सिन्धु हो । मै भले ही पाप वासना की गन्दी नाली होऊ,किन्तु आपकी पवित्र सोम-धारा का वरण करने से मै भी तो पावन हो जाऊँगा और आनन्द-सिन्धु मे ऐसा ढलमुल जाऊगा कि मेरी समस्त कालिमा धुल जायेगी, और मै नितान्त श्वेत बनकर चमक उठूँगा।'

'प्रभो ! यह दूसरी वैरिन अदानता है। ये देना नहीं लेना जानती है। देने से सुख मिलता है, शान्ति मिलती है। केवल लेने मे तो स्वार्थ है। जिसमे दुःख और अशान्ति है।'

'प्रभो ! मेरी आत्मा की यह स्वार्थ वृत्ति ही मेरी शत्रुणी है। प्रभो ! आप परमदानी है। आपके समीपस्थ होने के लिये मै परमार्थी बनना चाहता हू। सर्वस्व लुटाना चाहता हू, परन्तु यह पिशाचनी मेरा मार्ग रोके खडी है। प्रभो ! इसे मेरे पथ से हटा दो। जैसे आप जगत् मे दानशील हैं, वैसे मै भी बन जाऊँ।'

प्रभो ! मेरा इस ससार मे है ही क्या। जो कुछ आपका है, उसे आपके पुत्रो और पुत्रियो को देने मे, बाँटने मे मेरा लगता ही क्या है। मेरा शरीर भी तो आपकी ही वस्तु है। जग-सेवा के लिये आपने मुझे जो तन, मन, धन दिया है, उन्हे आपको आज्ञानुसार दे देने मे मुझे कोई सकोच नहीं है, और यदि है तो वह अमानत मे ख्यानत है।'

सच्चे हृदय की पुकार सुनने वाला सुनता है। कृपणता और द्वेष के परदे हट जाते है। और शरीर रूपी रथ मे जो परमप्रिय परमात्मा बैठा हुआ है, वह साधक को स्पष्ट दिखाई देता है। द्वेष और अदानता ही आत्मा के मल हैं, जिनके दूर होते ही आत्मा निर्मल हो जाती है और परमेश्वर की ज्योति की चमक त्यों ही उस पर पड़ती है, वह जगमगाने लगती है।

## सूर्य्य के समान जगमगाएं
(पृष्ठ ६ का शेष)

आकर्षित करना महर्षि का सबसे बड़ा उपकार और आविष्कार है।

### महर्षि के ३ रूप

महर्षि दयानन्द शिक्षक, चिकित्सक और समीक्षक थे। शिक्षक इस आधार पर थे कि वे प्राचीन वेदो के ज्ञान का प्रचार करना चाहते थे और इस शिक्षा के प्रचार से ससार मे फैली हुई त्रुटियो का निराकरण चाहते थे। इसलिए वे समीक्षक थे, बिना समीक्षा के न शिक्षा पूर्ण हो सकती है न चिकित्सा। अध्यापक शिष्य को उसकी भूल का बोध कराकर ही सच्ची शिक्षा का ज्ञान करा सकता है। इसी प्रकार चिकित्सक औषधि के प्रयोग के पूर्व रोग के कीटाणुओ को दूर करता है। पेट साफ करने से ही उपचार सफल होता है। शिक्षा चिकित्सा, और समीक्षा को साथ-साथ समझ लेने से हम महर्षि की खण्डनात्मक प्रणाली के महत्त्व को समझ सकते हैं। जिस प्रकार नवीन भवन के निर्माण के पूर्व उसकी बुनियाद को ठीक करना आवश्यक है, इसी प्रकार सच्चे धर्म प्रचार के लिये असत्य या भ्रम मूलक विचारो का निराकरण आवश्यक है।

### बिजली घर

आजकल बिजली का युग है। बिजली का चमत्कार कई प्रकार से दृष्टिगोचर हो रहा है। विद्युत के प्रयोग को सफल बनाने के निम्नलिखित अग आवश्यक होते हैं।

१—पावर हाऊस या बिजली घर जहा बिजली का उत्पादन होता है।

२—डिस्ट्रीब्यूटिव वायर अर्थात् विद्युत को पहुचाने के साधन।

३—फिटिंग अर्थात् बिजली के प्रयोग की तैयारी।

४—कनैक्सन—फिटिंग हो जाने के बाद पावर हाऊस से सम्बन्ध जोडना।

(५) यूटिलाइजेशन अर्थात् बिजली को प्रयोग मे लाना।

(६) प्रीकौशन अर्थात् सारी बिजली को त्रुटि से बचाना इस प्रक्रिया को समझ लेने से आर्य समाज का और वैदिक धर्म का स्वरूप भलीभाति समझ मे आ जाता है।

ईश्वर और वेद पावर हाऊस है। उनका पढ़ना-पढाना सुनना-सुनाना विस्तार के साधन हैं। शिक्षा, सस्कार और यज्ञफिटिंग है। योग का अभिप्राय कनैक्शन है। योग से व्यावहारिक जीवन में लाभ उठाना अर्थात् ईश्वर का व्यापक और न्यायकारी समझकर कार्य करना इस ज्ञान को प्रयोग मे लाना है। चरित्रदोष से बचे रहना सुरक्षा है। यदि हम इस दृष्टिकोण से आर्यसमाज और वैदिक धर्म को समझें तो हम प्राचीन वेदो के प्रकाश को समझ सकेंगे और रूढि-वाद वा अन्धविश्वास वंश परम्परा होती आई है, और होती है। मन की त्रुटियों से सुरक्षित रहेंगे। हम इस लेख को ऋग्वेद के एक मन्त्र से बिजली घर की बात भलीभाति समझ मे आ जाती है।

अहमिद्धि पितुष्परि
मेधामृतस्य जग्रभ।
अह सूर्य इवाजनि॥
—ऋ० ८-६-१०

शब्दार्थ—( अह इत ) मैने तो (हि) निश्चय से [ पितु ] पालक अपने ऋतस्य] सत्यस्वरूप परमेश्वर की [मेधा] धारण वती बुद्धि को [ परिजग्रभ ] सब तरफ से ग्रहण कर लिया है अत [अह] मै [सूर्य इव] सूर्य के समान[अजनि] हो गया हू।

★

श्रीमान् सम्पादक आर्यमित्र,

नमस्ते !

मै एक वर्ष से आर्यमित्र पढ रही हू। उसमे वेदमन्त्रो की व्याख्या तथा कविता आदि व लेखो को पढकर आत्म-तृप्ति होती है व मन प्रसन्न हो जाता है और आत्मा को आनन्द प्राप्त होता है—श्री वसन्त जी को विद्यावारिधि की उपाधि मिली है। कटरा स्त्री समाज उनको बधाई देतीहै—उनके जो लेख मित्र मे निकलते हैं, वह प्रशसा के योग्य हैं—

—शान्तिदेवी आर्य
आर्य स्त्री समाज कटरा, प्रयाग।

## धार्मिक समस्याएं

[ पृष्ठ ९ का शेष ]

लाभ उठाने के लिए वही ब्राह्मण क्षत्री व्यवहार मे इतना नम्र हुए कि इनके जठे बर्तनो तक को उठाने मे गौरव प्रदर्शित करने में सकोच विहीन हो गये। ये सब वर्तमान छुआ-छूत के रूप हैं जिनपर अस्पृश्यता आधारित है। छुआ-छूत का व्यवहार न किसी धार्मिक व्यवस्था पर आधारित है और न इसके व्यवहार मे कोई भावना कार्य कर रही है। तो यह रूढि गत एक दूसरे को नीच समझने वालो के स्वार्थ मे चल रही है। जिन दिनो काशी मे हरिजन मदिर प्रवेश सत्याग्रह चल रहा था, मै भी इसमें रुचि लेता था। मन्दिर प्रवेश का विरोध पुजारी, पण्डे, दुकानदार तथा माली आदि नहीं कर रहे थे। ये चाहते थे कि मन्दिरों मे हरिजनो को निर्बाध आने दिया जाय, क्योकि इनके आने से उन लोगो की आय वृद्धि होती है। विरोध तो वे लोग कर रहे थे जिनके पालन-पोषण का प्रबन्ध उन पूजीपतियो की ओर से था जो आत्याभिमान में धन मद गर्वित ऊँच-नीच की भावनाओं से प्रेरित थे। ये सामाजिक असमानता से लाभ उठाते हैं ये सामाजिक समानता में अपने वल गत स्वार्थ की हानि समझते हैं। यह वर्ग सब प्रकार के सुधारों का विरोधी है। इस कारण किसी सुधार के विरोध का भाव व्यक्त हो जाने से किसी प्रकार का रोष प्रकट करने की अपेक्षा उस सुधार कार्य में अधिक मनोयोग से काम करना चाहिए।

हरिजनोद्धार कार्य के इतिहास से विदित है कि जिस युग मे इस दिशा मे जितना ही अधिक कार्य हुआ है देश प्रगति के मार्ग पर उतना ही अग्रसर हुआ है। गुरु गोविन्दसिंह जी ने सिक्ख समुदाय का निर्माण जातिभेद से ऊपर उठ कर किया। इसके परिणाम स्वरूप हिन्दू सगठित हुए और बन्दा बैरागी ने इनके पुत्रो के बलिदान का प्रतिशोध सूबा सरहिन्द को प्रज्ज्वलित अग्नि मे जीवन्त भूनकर लिया तथा पजाब मे विदेशी मुगल साम्राज्य समाप्त कर हिन्दू राज की स्थापना की। दक्षिण मे शिवा जी महाराज ने सेना मे केवल क्षत्रियो को लडने के कार्य मे लगाना समाप्त किया। इन्होंने अपनी सेना मे सब वर्णों की भर्ती की और दक्षिण भारत मे मुगल सम्राट औरङ्गजेब के दांत खट्टेकर दिये। इनके परवर्ती मरहठो ने सर्वदलीय सगठन द्वारा एक वार दिल्ली तक पर अधिकार कर लिया ब्रिटिश राज्य मे जिस दल ने अछूतोद्धार को अपनाया उतने भारतीय समाज की चमत्कारिक उन्नति की। बगाल मे ब्रह्म समाज की लोकप्रियता का मुख्य कारण सर्वदलीय भाव ही था। आर्यसमाज के उत्थान का भी कारण सबके लिये विद्या एव सद् व्यवहार के मार्ग को खोल देना ही है। आर्य समाज का उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' ने छुआ-छूत से दबे हुए अनेको व्यक्तियो के हृदय कमल को विकसित कर दिया। जहां-कहीं आर्य जन जातीय भेदभाव के ऊपर चल रहे हैं। आर्यसमाज चरमोन्नति पर है। भारत मे स्वराज्य भारतीय एकता का परिणाम कहा जाता है। इस एकता सूत्र के सचालक महात्मा गांधी थे। उन्हों ने हरिजनोद्धार पर अपना मत व्यक्त करते हुये कहा है कि हरिजनोद्धार कार्य इतना महत्वपूर्ण है कि स्वराज्य टाला जा सकता है, परन्तु हरिजनोद्धार कार्य टाला नहीं जा सकता है। हरिजनोद्धार को उन्होंने स्वराज्य की कुंजी कहा है। इस कारण जब तक भारत मे ऐसे लोग हैं जो कुछ भारतीयों को जन्मना अछूत समझते, भारत में पूर्ण स्वराज्य नहीं [illegible]ना चाहिये, स्वराज्य तो उस समय पूर्ण होगा जब प्रत्येक भारतीय एक दूसरे को स्वबन्धु समझेगा और उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेगा। जब तक किसी देशवासी के हृदय मे किसी व्यक्ति के प्रति जन्मना अछूत का भाव बना रहेगा व्यवहार मे समानता कभी नहीं आवेगी और सामाजिक कुरीतियाँ जो छुआ-छूत के व्यवहार मे समाज मे घुस आई हैं और भारतीय जनता को विशृङ्खलित किये हुए हैं, कभी दूर नहीं होगी। बिना इनके दूर हुये भारतीय स्वदेश मे तथा विदेश मे अपनी प्रतिष्ठा स्थापित न कर सकेंगे और राष्ट्रियता का वह स्वरूप, जिससे भारत की सच्ची आत्मा का गौरव प्रकट होगा, कभी शुद्ध रूप में निखरित न होगा।

अत: इस युग में किसी भारतीय के प्रति किसी व्यक्ति का यह भाव बना रहना कि अमुक व्यक्ति जन्मना अछूत है समाज सुधारकों के लिए असह्य होना चाहिये। चूंकि यह वैचारिक क्रान्ति का युग है। अतः सद् विचारों को सद् व्यवहार का रूप देकर प्रचार करने की आवश्यकता है ताकि इस देश मे विचार से भी किसी को जन्मना अछूत समझने वाला कोई व्यक्ति न रह जाय।

●

## निर्वाचन-

—आर्य समाज रेगबाग, लखनऊ। प्रधान श्री धनीराम गान्धी उप प्रधान श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' मन्त्री श्री दीनानाथ जी कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्रनाथ शर्मा आय-व्यय निरीक्षक श्री ओमप्रकाश सेठ।

—आर्य समाज बलरामपुर श्री द्वारिकाप्रसाद प्रधान, श्री सुन्दरलाल अग्निहोत्री उपप्रधान, श्री शत्रुघ्नलाल उप प्रधान, श्री रमाकान्त मिश्र मन्त्री, श्री राम-अभिलाख तिवारी व श्री राम-प्रसाद जी वर्मा उपमन्त्री, श्री दीनानाथ जी कपूर कोषाध्यक्ष।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ, प्रधान श्री यशपाल जी शास्त्री गभीरी, उपप्रधान श्री सुलतानसिंह जी कोडियागज व श्री माता सरलादेवी जी शास्त्री तथा श्री शिवदेव जी वकील हाथरस, मन्त्री श्री महेन्द्रपालसिंह जी वैद्य अलीगढ, उप मन्त्री श्री बाबूराम जी साधु आश्रम व श्री मोहनलाल जी सक्सेना अलीगढ तथा श्री माता दुर्गादेवी जी अलीगढ़, कोषाध्यक्ष श्री लाला प्यारेलाल जी आर्य अलीगढ, निरीक्षक श्री मास्टर सरदारसिंह जी सिकन्दर-पुर। —मन्त्री

—आर्य स्त्री समाज कांठ, प्रधाना श्रीमती विद्यावती जी शर्मा, मन्त्रिणी—श्रीमती शान्तिदेवी आर्या, उप मन्त्रिणी श्रीमती हीराकली जी, कोषाध्यक्षा श्रीमती विद्यावती जी गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती सावित्रीदेवी गुप्ता, निरीक्षिका श्रीमती सत्यवती जी

—आर्यसमाज सहतवार प्रधान श्री अवधेशप्रसाद, मन्त्री श्री सुदर्शनसिंह, पुस्काध्यक्ष श्री ओंकारनाथ मिश्र, कोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश आर्य।

—आर्यसमाज साहूपुरी वाराणसी, प्रधान श्री बेचनसिंह,-उपप्रधान श्री डा० रामखेलावन आर्य मन्त्री श्री विसर्जनसिंह, उपमन्त्री श्री महादेवप्रसाद, कोषाध्यक्ष श्री बशनारायण [illegible]।

—बेचनसिंह

—आर्य समाज [illegible] प्रधान श्री बाबूराम जी चौरसिया, उप प्रधान श्री प० सुरेन्द्रनाथ जी चौबे मन्त्री स्वामी अनुभवानन्द सरस्वती कोषाध्यक्ष श्री कुन्दमेन जी गुप्त पुस्तकाध्यक्ष श्री रामनाथ जी राठौर।

## गहरे पानी पैठ

(पृष्ठ ५ का शेष)

(१०) जीवों के पाप-पुण्य के फलो को यथावत् देने वाले परमेश्वर और विद्वानो को साक्षी समझ कर सदैव पति पत्नी उपरोक्त बातों का पालन करे।

यदि पतिपत्नी उपरोक्त वेद द्वारा निर्दिष्ट उपाय का पूर्णरूप से पालन करें तो गृहाश्रम सुख का साधन बन सकता है अन्यथा नहीं। परमात्मा कृपा करे कि समस्त गृहाश्रमी वेदोक्त नियमों का पालन कर सुख लाभ उठायें।

★

# दान सूची आर्य प्रतिनिधि सभा

१ जनवरी सन् १९६९ से ३१ मार्च सन् १९६९ तक सभा को निम्नलिखित दान प्राप्त हुआ सभा दानी महानुभावो की आभारी है और धन्यवाद देती है। तथा आशा करती है कि भविष्य मे दानी महानुभाव सभा की उदारतापूर्वक सहायता करते रहेगे।

श्री मन्त्री आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर ५००)
" बैजनाथ प्रसाद गुप्त कालीबाडी मुट्ठीगज इलाहाबाद १०)
" बा मदनलाल जी नरही लखनऊ २५०)
" मन्त्री आ स सोमल चौड (गढवाल) २१)
" मलागी स्त्री आर्यसमाज गाजियाबाद १०)
" मन्त्री जी " धमण्डपुर ५)
" " आ स दीक्षितपुर पचपेडा १०)
" रमेशचन्द्र जी शास्त्री लुक्सर ५०)
" मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर ४७ ५७
" प्रधान जी आ स अहिरौला बरेली २८ २०
" मन्त्री आ स. थानाभवन ५)
" डा आदित्यकिशोर शर्मा १ डी बैली रोड इलाहाबाद ५)
" डा रा स लाल मैडीकल आफीसर हरपालपुर १०)
" मन्त्री आ स कोटडी टाग सनेह भावर कुम्भीचौड गढवाख १७)
" मन्त्री आ स देवबन्द सहारनपुर २२)
" " उत्तरी झडी चौड कोटद्वार (गढवाल) १४ २५
" " डोईवाला देहरादून ३९ ९०
" " रुहालकी किशनपुर सहारनपुर १४ ००
" " बदायूं ५३ २५
" " भर्थना (इटावा) २२ २५
" " चोपन मिर्जापुर २०)
" " जुवा गढवाल १४७५
" " रसूलपुर कलां १०)
" " मुरादनगर मेरठ ५०)
" मुख्याधिष्ठाता नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय फैजाबाद २०)
" मन्त्री आ स हर्षा अलीगढ ८ ६०
" " शाहगढ अलीगढ १३
" " जसपुर नैनीताल ५०)
" " वस्यूगा पौडी गढवाल १२ ५०
" " भगवानपुर सहारनपुर १०)
" " चन्दौसी मुरादाबाद १२)
" " औरगाबाद सहारनपुर १०)
" " सरकड़ा विश्नोई मुरादाबाद १०)
" " रामपुर मनिहारिन सहारनपुर २०)
" मलाणी स्त्री आ स बहजोई मुरादाबाद १०)
" " बिहारीपुर बरेली २७)
" मन्त्री आर्यसमाज नवाबगज गोंडा १२)
" " देवगांव आजमगढ़ १५ ५०
" " दौराला मेरठ ५९)
" " शामली गढवाल २४ ४०
" " ध्रुवपुर पौडी गढवाल १९ ५०
" " रामसनेही घाट बाराबकी १२ २५
" " रामगढ मिर्जापुर १३)
" " सिकन्दराबाद ५७ २५
" सेवाराम आर्य दीवालहेडी देवबन्द ११०
" स्त्री आ स नई मण्डी मुजफ्फरनगर ३५ ४०
" मन्त्री आ स कर्णवास बुलन्दशहर ११)
" " शाहजहापुर ६३ २०
" " फेराहेडी २६)
" " गोपीवाला मुरादाबाद १५)
" " बलिया १०)
" " भूड बरेली २७.५०
" " धिमश्री आगरा १२)
" " उझयानी बदायूं २५ ५०
" " रसड़ा बलिया ११ ५०
जिला उप सभा अलीगढ २)
श्री मन्त्री आ स कासिमपुर हरदोई १७ ५०
" " जोली ग्रान्ट ४)
" " बागपत मेरठ ३७ ५०
" " आयुध निर्माणी मेरठ २५)
" " मण्डल जमोली गढवाल १४ ५०
" " बडगाव गोंड. ५१ ५०
" " हसनगजपार लखनऊ १५)
" " कुढनी कानपुर १३ २५

—देवेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

---

—खतौली आर्यसमाज शूगर मिल, खतौली, प्रधान श्री मलेख चन्द जी खावसारी वाले मुख्य उपप्रधान श्री चौ० गगासहाय उपप्रधान श्री भगवानदास मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष सेवकराम याली।

—आर्य समाज गगा जमुनी श्री रामछवीले शुक्ल प्रधान, श्री रामनरेश उपप्रधान, श्री प्रेमनारायण मन्त्री, श्री सत्यनारायण उपमन्त्री, श्री ओ३म प्रकाश कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई
प्रधान-श्री अर्जुनभाई कुवरजी पटेल
उपप्रधान-श्री प्रो.जगदीशचन्द्र बहल
श्री नारायणदास जुनेजा
मन्त्री-श्री नवीचन्द्रजी ज. पाल
सह मन्त्री-श्री विश्वबन्धुजी सिघल
तथा श्री चमनलाल महाशय
कोषाध्यक्ष-श्री इन्द्रबलजी मलहोत्रा
—मन्त्री

—आ०स० मैनपुरी
प्रधान-श्री नाथूराम आर्य
उपप्रधान-श्री रमेशचन्द्र वर्मा एडवोकेट
मन्त्री-श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र
उपमन्त्री-श्री सुरेशचन्द्र सक्सेना
कोषाध्यक्ष-श्री सुरेशचन्द्र दुबे
—मन्त्री

-आ०स०रेलबाजार छावनी कानपुर
प्रधान-श्री होशियारसिंह मलिक
उपप्रधान-श्री ईश्वरदास मलहोत्रा
मन्त्री- ,, शम्भूराय शास्त्री
उपमन्त्री-,, रामचन्द्र शर्मा
कोषा -श्री प्रेमविहारीलाल
—मन्त्री

—आर्यसमाज आयुध निर्माणी मुरादनगर।
श्री राजमणि जी शर्मा प्रधान, श्री बी. बी. धवन जी उप प्रधान, श्री विद्याधर गहलोत जी उप प्रधान, श्री तारादत्त जी शर्मा मन्त्री, श्री रमाशंकर सिंह जी उपमन्त्री, श्री रामप्रसाद जी प्रचार मन्त्री।

—आर्य समाज लखीमपुर खीरी, श्री रामचन्द्र एडवोकेट एम. एल सी प्रधान, श्री कैलाश ब्रह्म उप प्रधान, श्री कैलाशचन्द्र आपका अधिवक्ता मन्त्री, श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह एम ए. उपमन्त्री, श्री तिलकधारी सिंह एम एस सी कोषाध्यक्ष, रसायन विभागाध्यक्ष, श्री बिहारीलाल पुस्तकाध्यक्ष, श्री शिवनारायण जी एडवोकेट अन्तरग सदस्य, श्री शिवरतनलाल एम. ए. अन्तरग सदस्य, श्री रामअवतार अन्तरग सदस्य।
—वीरेन्द्र बहादुर सिंह उपमन्त्री

—श्री श्रद्धानन्द अनाथालय की प्रबन्धकारिणी सभा का निर्वाचन। प्रधान श्री तेज कृष्ण कौल, प्रधान आर्यसमाज (पदेन)। मन्त्री एवं अधिष्ठाता श्री देवदत्त बाली, पत्रकार। सहायक मन्त्री एवं अधिष्ठाता श्री कृष्णलाल। सहायक अधिष्ठात्री महिला विभाग श्रीमती सुशीला बगाई। कोषाध्यक्ष श्री शशिमोहन। देवदत्त बाली अधिष्ठाता।

—आर्यसमाज सयोगितागज। प्रधान श्री डा० हरीश गुप्त, उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद वैदिक सह उप प्रधान श्रीमती लीलादेवी हक्सर, मन्त्री श्री रूपकिशोर जी काकर, सह मन्त्री श्री नामदेव जी उपमन्त्री श्री किशोर जी कौशल, कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण जी खण्डेलवाल, पुस्तकाध्यक्ष कुमारी सुभद्राकुमारी।

—आर्यसमाज चांदपुर
प्रधान-श्री सोमदेव त्यागी
उपप्रधान-श्री भूषणशरण
मन्त्री-श्री सत्यप्रकाश
उपमन्त्री-श्री रामकुमार वर्मा
कोषा.-श्री वेदप्रकाश
—मन्त्री

## सार-सूचनाएं

होशियारपुर–पंजाब विश्वविद्यालय के विश्वेश्वरानन्द संस्थान, साधुआश्रम मे विशारद की कक्षाए खोलने का निर्णय कर लिया गया है। संस्थान मे शास्त्री तथा आचार्य की कक्षाए पहले से ही चलती हैं। विशारद की कक्षाए १९६९-७० के सत्र से प्रारम्भ कर दी जाएगी।

—इन्द्रदत्त उनियाल

## नवीन प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार मे १ जौलाई से नया प्रवेश हो रहा है, विद्यालय मे पढने वाले छात्रो को भोजन, निवास, पुस्तकादि सभी वस्तुए नि शुल्क दी जाती हैं, अत उपदेशक बनने के इच्छुक सज्जन जो १६ वर्ष से अधिक आयु के हो तथा संस्कृत सहित मैट्रिक अथवा तत्सम योग्यता वाले हो वे शीघ्र ही आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) पते पर पत्र व्यवहार करे।

## निर्वाचन–

—आर्यसमाज अबोहर (पंजाब)

प्रधान—श्री घनश्यामदास
उपप्रधान—श्री नानकचन्द जी
„ „ धनीराम जी
मन्त्री— „ राजकुमार जी
उपमन्त्री—श्री चरणदास जी

—आर्यसमाज सरदारपुरा जोधपुर

प्रधान—श्री सरदारीलाल जी खन्ना
मन्त्री—श्री हरेन्द्रकुमार गुप्त

—मन्त्री

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा इलाहाबाद

प्रधान—श्री राजाराज गुप्त
उपप्रधान—सर्वश्री भगवानदास जी औबेराय, खजानसिंह जी, जगदीशचन्द्र जी जौहरी, अभयकृष्ण जौहरी श्रीमती ऊषादेवी जी
मन्त्री-श्री बेनीमाधवदेव सिनहा
उपमन्त्री—सर्वश्री ब्रजमोहनलालजी हरिश्चन्द्र जी साहू, कमलाप्रसादजी रामकृष्ण जी, श्रीमती सरलापालजी
कोषाध्यक्ष—श्री देवराज जी

—आर्यसमाज सदरबाजार झासी

प्रधान—श्री शान्तिप्रसाद जी
उपप्रधान—श्री उदयभान जी
„ डा. इन्द्रसेन जी गुलाटी

# आर्य-जगत

मन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र बाधवा
उपमन्त्री—श्री वेदप्रकाश जी
कोषाध्यक्ष—„ रामरिक्षपाल जी

—आर्यसमाज गाजीपुर

प्रधान—श्री महावीर सावजी
उपप्रधान—श्री ओकारनाथ वर्मा
" — „ गोपाल जी करोरी
मन्त्री—श्री दयाशकर वर्मा
उप मन्त्री—श्री गोरखनाथ अग्रवाल
कोषाध्यक्ष—„ रामजीप्रसाद आर्य

—आ स रानी मण्डी अत्रिसुइया रोड इलाहाबाद

प्रधान—श्री प्रेमनारायण वार्षिनी
उपप्रधान—डा० आदित्यकिशोर वर्मा
„ श्री पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव
मन्त्री—„ इकबालबहादुरसिंह
उपमन्त्री—श्री रामसमुझलाल
„ —श्री शरदकुमार
कोषाध्यक्ष—श्री जयदेवलाल जी

—मन्त्री

—आर्य स्त्री समाज अत्रिसुइया इलाहाबाद

प्रधाना—सर्वश्री कृष्णादेवी जी
उप प्रधाना—कौशिल्या देवी जी
„ सुशीलादेवी जी
„ रूपरानी देवीजी
मन्त्रिणी—कैलाशपती देवी
उप मन्त्रिणी—ओमवती देवी
„ राजरानी पुरी
„ सोनादेवी
कोषाध्यक्षा—ब्रह्मादेवी
उप " शोभारानीदेवी
„ „ श्यामकुमारी देवी
पुस्तकाध्यक्षा—रामकली देवी
पुरोहिता—सुभद्रादेवी

—मन्त्रिणी

—स्त्री आर्यसमाज कटरा प्रयाग

प्रधाना—श्री सरला पाल जी
मन्त्रिणी—जी सावित्री साहू जी
कोषाध्यक्षा—श्री उषादेवी जी

—मन्त्रिणी

—जिला आर्य उपसभा एटा

प्रधान—श्री मथुराप्रसाद वानप्रस्थ
उपप्रधान-डा. श्रीराम जी आर्य

## सूचना शिक्षा विभाग

श्री जयदेव जी निरीक्षक आर्य विद्यालय जहा भी हो वहाँ से तुरन्त इस कार्यालय को चले आवे। क्योकि उनके पत्र से विदित हुआ है कि बोर्ड की परीक्षाओ के कारण निरीक्षण कार्य नहीं हो पा रहा है।

—रामबहादुर मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश

मन्त्री—श्री सेवतीलाल आर्य सि.शा.
उपमन्त्री—श्री वेदप्रकाश अग्निहोत्री
कोषा —श्री प० सत्यदेव उपाध्याय

—आर्यसमाज किरावली (आगरा)

प्रधान—श्री ओकारनाथ शर्मा
मन्त्री—श्री प्रेमचन्द बंसल
कोषाध्यक्ष—श्री कैलाशनाथ गोयल

—आर्यसमाज कैन्टूनमैण्ट सदर बाजार लखनऊ

प्रधान—श्री रघुवरदयाल आर्य
उपप्रधान—श्री केदारनाथ जी
मन्त्री-श्री सच्चिदानन्द एम.एल.ए.
उपमन्त्री—डा० त्रिलोकीनाथ जी
कोषाध्यक्ष—श्री रामअचल आर्य

—आर्यसमाज छोटी सादडी

प्रधान—श्री मेरूलाल जी शर्मा
मन्त्री—श्री विनयचन्द पन्चोरी
कोषाध्यक्ष—श्री नन्दकिशोर जी

—मन्त्री

—आर्य स्त्री समाज मुजफ्फरनगर

प्रधाना—श्रीमती सावित्री देवी
उपप्रधाना—„ शकुन्तला जी
„ „ मगनमूर्ति जी
मन्त्रिणी— „ तारावती जी
उप मन्त्राणी—„ इन्द्रावती जी
कोषाध्यक्षा—„ दर्शनदेवी जी

—ग्राम दादरी डाकघर मकौती टाण्डा जि० मेरठ मे आर्यसमाज का प्रथम समारोह १८, १९, २० मार्च ६९ को बडी धूमधाम मे सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ—

प्रधान—श्री तीर्थसिंह जी
मन्त्री— „ राजबल वर्मा

## शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज चौक लखनऊ–३ की रविवार १३-४-६९ को हुई साप्ताहिक अधिवेशन की साधारण सभा बैठक मे तीन प्रियजनों की असामयिक मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया गया।

(१) मास १९-३-६९ को समाज की उप प्रधाना श्रीमती राजदुलारी जी पूज्य चाची माता लीलावती जी का ६५ वर्ष की आयु मे दिल्ली मे देहान्त हो गया। इन चाची जी ने ही हमारी उप प्रधाना जी का पालन-पोषण किया था।

(२) हमारे सम्मानित सदस्य मास्टर मैकूलाल जी के १८ वर्षीय युवा पुत्र का ४-४-६९ को हैजे की एक ही दिन की बीमारी मे शरीरात हो गया।

(३) हमारे वयोवृद्ध पूर्व प्रधान श्री हवेलीराम जी की पुत्री श्रीमती सुशीलादेवी का लगभग ४० वर्ष की आयु मे ९-४-६९ को प्रात जगाधरी मे स्वर्गवास एकाएकी हो गया।

इन तीनों दिवगत आत्माओं के लिये परम पिता परमात्मा से शान्ति की करबद्ध प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवारो को हार्दिक समवेदना प्रकट की गयी।

—ज्ञानकृष्ण अग्रवाल, मन्त्री

—आर्यसमाज कायमगज ने अपने भूतपूर्व मन्त्री श्री रामचन्द्र जी आर्य की असामयिक मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

—मन्त्री

—आर्य समाज रेलबाजार छावनी, कानपुर। भूतपूर्व प्रधान एव कर्मठ सदस्य श्री शिवशकरलाल जी के कनिष्ठ पुत्र श्री मुन्ना एव इस समाज के अन्तरङ्ग सदस्य श्री महावीरप्रसाद सिंह यादव के अल्पायु मे आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—[illegible] शास्त्री

—[illegible] अहमदाबाद [illegible] वार्षिक [illegible] तीन दिन [illegible] वर्ष के अनुसार धूमधाम से होगा।

—मोतीसिंह विजयसिंह मन्त्री

## अजमेर क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन

दि० ९ से १३ मई तक अजमेर मे क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन होने की पूरे जोर शोर से तैयारियां की जा रही हैं। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन, दलितोद्धार मद्यबन्दी सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि आयोजित किये जा रहे हैं। सम्मेलन की सफलता के लिए श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती, श्री महात्मा रामचन्द्र जी 'वीर', श्री गौरीशंकर जी आचार्य, श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी भू पू मन्त्री राजस्थान, श्री विश्वम्भरनाथ जोशी मन्त्री समाज कल्याण राज० आदि-आदि महानुभाव पधार रहे हैं। सम्मेलन के अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ भी सम्पन्न होगा।

## आवश्यक सूचना

आर्यजगत् में यह समाचार प्रसन्नता से सुना जायगा कि सिद्धान्त मार्तण्ड शास्त्रार्थ केसरी श्री अमरस्वामी सरस्वती जी (ठाकुर अमरसिंह जी आर्यपथिक) की आंखों का आपरेशन अत्यन्त सफलता के साथ हो गया। इसके लिये भिवानी के डाक्टर श्री पुरुषोत्तमदत्त जी गिरिधर बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने श्री स्वामीजी की हरेक प्रकार से सेवा की। श्री स्वामीजी को भी हम बधाई दिये बिना नहीं रह सकते। अब वे समाज की सेवा बिना किसी रुकावट के कर सकेंगे। उन्होंने समाज की सेवा का काम प्रारम्भ कर दिया है और उज्जैन मे कुम्भ के मेले पर प्रचारार्थ जा रहे हैं। पूरा मई मास उनका मध्यप्रदेश के प्रचार में व्यतीत होगा। —रामस्वरूप शास्त्री

संन्यास आश्रम, गाजियाबाद

## प्रान्तीय आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक माननीय श्री ओमप्रकाश त्यागी ससद सदस्य २२ मार्च को वाराणसी पधारे। उनके परामर्श से श्री आनन्द प्रकाश संचालक आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश ने आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित नियुक्तिया की।

श्री अवध बिहारीलाल खन्ना, वाराणसी, सहायक सचालक (केन्द्र)
,, बेचनसिंह, मिर्जापुर, सहायक सचालक, पूर्वीक्षेत्र
,, देवीप्रसाद जी, मेरठ, सहायक सचालक पच्छिमी क्षेत्र
,, रघुनाथसिंह जी, सीतापुर, सहायक सचालक, मध्यक्षेत्र
,, अवध बिहारीलाल खन्ना, वाराणसी, मन्त्री
,, जीवितराम सिंह, वाराणसी, कोषाध्यक्ष
,, काशीनाथ जी शास्त्री, जौनपुर, मुख्य निरीक्षक
,, शम्भोलाल जी, मुरादाबाद, शिक्षक
,, रामजी प्रसाश आर्य भिक्षु, बौद्धिकाध्यक्ष

—आनन्दप्रकाश सचालक

—आर्यसमाज मानपुर बाराबकी का प्रथम वार्षिक उत्सव २६ २७, २८ फरवरी सन् १९६९ ई० को सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वश्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री के विभिन्न विषयो पर प्रवचन हुए तथा श्री खेमचन्द जी के भजन हुए। निर्वाचन—

प्रधान—श्री शम्भूदत्त जी, उपप्रधान—श्री रामआसरे जी, मन्त्री श्री रामसिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री बैजनाथ आर्य। —मन्त्री

—आर्यसमाज खण्डवा पूर्व निमाड़ मे दि० २७-३-६९ को श्री सेठ कन्हैयालाल उपप्रधान आ स की अध्यक्षता में रामनवमी पर्व मनाया गया। —मन्त्री

एकांकी—

# अमरत्व की खोज

(गतांक से आगे)

माता—बेटा ! देख मैने पहले ही कहा था कि तू न जा परन्तु तू न माना। क्या भूख लगी है ? ( मूल के साथ आया व्यक्ति पुनः मन्दिर को लौट जाता है ) आ ! अन्दर बैठ जा बेटा ठड भी लग रही होगी। ( माता बालक को भोजन देते हुये ) बेटा ! अपने पिता से भोजन का मत कहना वरना तुझे मारेंगे। (बालक भोजन करता है ) ।

( प्रथम दृश्य समाप्त )

## द्वितीय दृश्य

(विशूचिका बीमारी से सुमित्रा ग्रस्त है। परिवार के सब लोग दौड़-धूप में लगे हुए हैं यशोदा पुत्री की हालत देखकर आंसू बहा रही है निकटवर्ती पड़ोसियो मे भी सन्नाटा-सा छाया हुआ है। डाक्टर सहित सब परिवार के लोग सुमित्रा के पास बैठे हुए हैं ) ।

कर्षन—डाक्टर साहब! अचानक लड़की को कई बार वमन हुआ तभी से बेहोश-सी है जल्दी करिये, कोई अच्छी सी दवा दे दीजिए जिससे इसकी हालत मे सुधार हो।

डाक्टर—अच्छा तो इसे विशूचिका का इजेक्शन लगाये देता हू। (सहसा मूलशकर चुपचाप बाहर से घर मे आकर माता के पास आकर बैठ जाता है ) ।

मूल—(सब लोगो की उदासीनता को देखकर धीरे से )मां! तुम क्यो रो रही हो ? ये कौन हैं मां ? बहन को क्या हो गया है !

यशोदा—बेटा ये डाक्टरसाहब हैं, तुम्हारी बहिन की चिकित्सा करने आये हैं। सुमित्रा को हैजा हो गया है अब भगवान् ही रक्षक है। बहुत देर से बेहोश हैं।

सुमित्रा—( आंख खोलकर ) मां ! पिता जी ! भैय्या ! अब तुम सब लोगो के अन्तिम दर्शन हैं। सबको नमस्ते दुखीमत होना। इतना ही भोग भोगना था (लम्बी श्वास छोड़ते हुए प्राण निकल जाते हैं आंखें पुनः बन्द हो जाती है )

कर्षन—और यशोदा—बेटी !

डाक्टर—( नाडी देखते हुए ) शिव ! शिव ! यह तो चल बसी।

[ सब रोने लगते हैं ]

मूल०—( स्वगत ) यह क्या एक दिन सबको इसी प्रकार मरना पडता है ? इससे छूटने का कोई उपाय नहीं इस ससार मे कुछ भी नहीं यह मिथ्या असार ससार है। अब क्या करू किससे अमर होने का उपाय पूछू ?

एक प्रतिवेशी—[मूलशकर को धिक्कारते हुए एक व्यक्ति से] यह कितना दुष्ट है यार ! सारे घर वाले रो रहे हैं, यह चुपचाप खड़ा है। इसे रोना भी नहीं आता। [गांव के सब लोग एकत्र हो जाते हैं] ।

सब—[चार व्यक्ति अर्थी को

उठाकर चलते हैं, शेष सब पीछे-पीछे अत्यन्त उदासीन हो श्मशान की ओर जाते हुये] शिव का नाम सत्य है ।।

[द्वितीय दृश्य समाप्त]

## तृतीय दृश्य

[गांव के बाहर का स्थान। मूल शङ्कर अकेला दो दिन का भूखा विचार मग्न है कि किससे मृत्यु से बचने का उपाय पूछू। मृत्यु समय कहाँ औषधि ढूंढ़ता फिरूँगा, शाम का समय है। सूर्य अस्ताचल को जाने वाला है सहसा गोपाल कृष्ण एक मार्ग से आकर उसे मिल जाता है। ]

गोपाल०—क्यों भैय्या मूल ! कैसे उदास खडे हो ? [ समझाते हुये ] भाई ! यह तो ससार है आना जाना लगा ही रहता है अब तो संतोष ही करना चाहिये भैय्या प्रभु की ऐसी ही इच्छा थी।

[ मूल रोने लगता है ]

गोपाल—भैय्या मूल ! रोओ मत (मूल के आसू अपने हाथ से पोछते हुए ) चुप हो जाओ मूल ! उस कैलाशपति की माया को हम क्या जाने वह जो सोचता है वही करता है।

मूल०—भ्राता जी ! आप जो कहते है, वह तो सब ठीक है परन्तु मुझे यह अन्त. वेदना हो रही है कि एक दिन सबको उसी प्रकार मरना पड़ेगा, इससे किस प्रकार बचूगा ? भ्राता जी! मेरी आन्तरिक पीडा को समझते हो तो यह बताओ कि "अमर होने का क्या उपाय है और सच्चा शिव कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?"

गोपाल—योग ही अमर होने का मार्ग व शिव प्राप्ति का साधन है। आत्मा को परमात्मा में लीन कर देना योग कहलाता है। योग के आठ अग होते हैं उन्हीं के पालन से परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मूल०—वह योग के आठ अग कौन-कौन से होते है, और किससे सीखे जाते हैं, क्योकि विना गुरु के ज्ञान की प्राप्ति असम्भव है।

गोपाल०—"यम, नियमासन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधयोऽष्टा वंगानि ।।१।। अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहा यमा ।।२।। शौचसन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि-नियमा" ।।३।। यह पातजल-योग-दर्शन के सूत्र हैं। प्रथम सूत्र मे योग के आठ अगो का विवेचन है। योगी लोग पहाडो मे रहते हैं उन्हीं से यह सीख सकते हैं। (प्रेम मयी दृष्टि से व आश्चर्य से मूल को देखते हुये) भैय्या ! तुमतो बड़े बुद्धिमान बालक हो एक दिन अवश्य महान् बनोगे। ऐसी-ऐसी कहाँ से बातें सोचते हो ? मैने बडो-बडो को देखा है किसी के दिमाग मे ऐसी बातें नहीं उपजती। ऐसी बातें सोचने वाले विरले ही होते है।

मूल०—भ्राता जी ! क्या योगियो के अतिरिक्त भी इनको कोई बतला सकता है ?

गोपाल—क्या वैरागी होने की इच्छा है ! सावधान ! तुम मुझे

*श्री प० धर्मदेव आर्य शास्त्री पोलायकलाँ, जि० शाजापुर म. प्र.

मरवाना चाहते हो ? कहीं तुम घर से भाग गये तो मेरी बहुत दुर्दशा होगी।

मूल०—भला कभी ऐसा हो सकता है, आप मेरी आदत को जानते नहीं, भ्राता जी यही बात और बता दीजिए फिर चाहे कोई बात मैं पूछूं तब भी मत बताना अब आपकी इच्छा !

गोपाल०—(दयार्द्र होते हुए) भैय्या रोओ मत क्यों बार-बार अश्रु जल के घड़े उडेलते हो (अपने हाथ से अश्रु पोंछकर ) लो सुनो! साधु महात्मा ही इन क्रियाओं को कुछ-कुछ जानते हैं। तुम्हारी कितनी कुशाग्र मति है भैय्या तुम पढने, खेलने, सुन्दरता, स्वस्थता, विचार शक्ति आदि सभी में तो अग्रणी हो, क्या ही अच्छा होता कि जिस माता की गोद से तुमने जन्म लिया उसी से मैं भी लेता ! [आगे बढकर मूल को गले लगा लेते है ] ।

(सहसा एक व्यक्ति का आना)

व्यक्ति—गोपाल कृष्ण जी ! यहा क्या कर रहे हो तुम्हारे पिता जी कब से तुम्हे खोज रहे हैं ?

गोपाल०—[ मूलशङ्कर से ] अच्छा भैय्या मूल ! फिर मिलेंगे।

[ तीनो का प्रस्थान ]

[ क्रमशः ]

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल.–६०

चैत्र ३० शक १८९१ वैशाख शु० ४
[दिनाङ्क २० अप्रैल सन् १९६९]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

## गोरक्षा-आन्दोलन

### चेतावनी

गो-माता की नृशंस हत्या बूचड़खानों में होती है।
करुण दृश्य यह देख मातृ भारत भी खड़ी रोती है।
अति उष्ण नीर से पहले गौ की खाल साफ की जाती है।
फिर तो बेंतों की चोटो से वह अधिक नरम की जाती है।
जब खाल मुलायम हो जाती और रक्त दौड़ने लगता है।
तब उसे खींच ली जाती है फिर गर्दन काटा जाता है।
फिर बोटी-बोटी काट माँस डिब्बों मे भर दिया जाता है।
गो-माँस बेंच कर चमड़ों से फैशन को बढ़ाया जाता है।
कुछ दवा खिलाकर गायो के गर्भ भी गिराये जाते हैं।
गर्भस्थ बाल जो खिले नहीं वे सुमन मिटाये जाते हैं।
नव जात बाल गो-माता का बलिवेदी पर चढ़ जाता है।
यह दृश्य देख करके सुजनों का हृदय सहम-सा जाता है।
जिस भारत मे दूध, दही और घी की नदियां बहती थीं।
आज वहीं गो-माता के शोणित की नदियां बहती हैं।
गो-माता कहती वत्स ! तुम्हे क्या इसीलिये हमने पाला।
हत्यारे हम पर छुरी चलायें पर तुम सब देखते रहो।
गोपाल कृष्ण की सन्तानो है अब सोने का समय नहीं।
माता पापियो से पीड़ित है अब यह सहने का समय नहीं।
बन करके तूफान उठो अब हत्यारों का नाश करो।
माता का उद्धार करो भारत का सुखद विकास करो।
एक बूंद भी अब गो-शोणित नहीं धरा पर बहने पाये।
अत्याचारी और कृतघ्नी सुख से कभी न रहने पाये।
उठो ! देश के सच्चे प्रहरी सब मिल गौ की रक्षा कर लो।
भारत के ऐश्वर्य और स्वर्णिम गौरव की रक्षा कर लो॥

## चयनिका

### जीवन क्या है ?

१–बसन्त ऋतु की मादकता मे एक पेंड की डाली पर बैठी बुलबुल बोली "जीवन अति मधुर संगीत है।"
२–बाढ के कारण गिरे घर को उठाता हुआ मनुष्य बोला "जीवन एक संग्राम है।"
३–नव विकसित कलिका गुनगुनाई "विकास ही जीवन है।"
४–कठिन परिश्रम के बावजूद मजदूर चिथड़ों में था बोला "जीवन एक निष्फल श्रम है।"
५–संसार से अपरिचित राजकुमार बोला "जीवन फूलों की सेज है।"
६–डाकुओं का सरदार बोला "धन सचय ही जीवन हैं।"
७–उड़ता पक्षी बोला "स्वतन्त्रता ही जीवन है।"
८–एक साधु बोला "जीवन अपूर्ण स्वप्न है।"
९–ज्योति पर मड़राते शलभों की भनभनाहट थी, प्रकाश ही जीवन है।"
१०–पिंजड़े का पक्षी रोया "जीवन केवल बन्धन है।"

—सत्यनारायण द्विवेदी "विजय" गंगा जमुनी

## संस्था-परिचय

### आर्य सेवा संघ, रसूलपुर जाहिद

२ अक्तूबर १९६७ को श्री डा. ओमपाल शास्त्री 'आर्य सचेत' ने कुछ अन्य समाज सेवी व्यक्तियों के सहयोग से 'आर्य सेवा संघ' का गठन किया। परन्तु कुछ कारणो से सस्था जून ६८ तक कोई भी कार्य न कर सकी। जून ६८ मे सस्था का पंजीकरण कराया गया। पंजी करण के साथ ही संघ ने अपना कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। वैदिक साहित्य के परिचय और स्वाध्याय हेतु सघ ने धार्मिक परीक्षायें प्रारम्भ की जिसमें सघ को पर्याप्त सफलता मिली। साथ ही एक धर्मार्थ औषधालय 'श्री दयानन्द धर्मार्थ औषधालय' के नाम से चालू किया, जिससे प्रति मास लगभग ५००, ६०० रोगी लाभ उठाते हैं। एक आर्य सेवासघ पुस्तकालय भी खोला, जिसमें कई पत्र 'आर्यमित्र, सार्वदेशिक, तपोभूमि, वेद-प्रकाश, गोधन, सघ दर्शन, हिन्दुस्तान आते हैं, और बहुत से व्यक्ति इस पुस्तकालय से लाभ उठाते हैं। पुस्तकालय मे लगभग ८००) रुपयो की पुस्तकें हैं, जो दानी महानुभावो ने दान स्वरूप दी हैं। अभी जनवरी ६९ से सघ ने 'कर्मयुग' मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया है।

सघ की इस सफलता का रहस्य डॉ० ओमपाल शास्त्री 'आर्य सचेत' की लगन, सतत प्रयत्नशीलता है, इसके साथ सघ के अध्यक्ष, ब्रह्मचारी डा० ज्ञानप्रकाश शास्त्री प्रभारी चिकित्साधिकारी टी. बी. आई. हास्पिटल किदवईनगर कानपुर का सहयोग जो सघमंत्री को मिला है, वह अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

परन्तु दुख है कि इस सस्था को आर्य विद्वानो ने कुछ भी तो सहयोग नहीं दिया। सघ शहरी चकाचौंध से दूर है। ग्रामीण वातावरण मे यह संस्था वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार मे रत हैं। सघ मन्त्री ने सघ कार्य मे अपने पास से लगभग ३०००) रु० लगा रक्खा है। सघ की योजना विशाल है। इस योजना को सफलता के लिए धनीमानी व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता है। क्या धनीमानी इस सस्था की सहायता करेंगे, और महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार करायेंगे।

विश्व का आर्यकरण करने से पहले भारत के ग्रामो का आर्यकरण करना होगा, और इसके लिये इस ग्रामीण सस्था की तन-मन-धन से सहायता करें। —आसाराम, प्रधान

आर्य सेवासघ, रसूलपुर जाहिद, पो० रसूलपुर कनौनी (आनी) मेरठ (उ० प्र०)

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०वी० आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

वय जयेम ] लखनऊ-रविवार वैशाख शक १८९१, वैशाख शु० १० वि० स० २०२६, दि० २७ अप्रैल १९६९ [ हम जीतें

## परमेश्वर की अमृतवाणी

### शत्रुओं को घेर कर मारो और बहु-विजयी बन कर आनन्द धारा प्रवाहित करो

यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रूमभीत्य ।
स पवस्व सहस्त्रजित ॥ [साम० ९७८]

भावार्थ—(य) जो (शत्रुम्) शत्रुओ को (अभीत्य) घेर कर (हन्ति) मारता है (जिनाति) विजयी होता है (न जीयते) पराजित नहीं होता है (स) वह (सहस्त्रजित) बहु विजयी (पवस्व) [पवित्र सोम धारा] प्रवाहित करता है।

विश्व विजयी बन कर चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने से पूर्व आत्मा विजयी बनाना पडता है। सतुलित और सयमित जीवन के आधार पर जो जीवन के षड्‌रिपुओ को अपने जीवन सदन मे वैराग्य, ब्रह्मचर्य, ज्ञान, श्री, यश और स्नेह की परिधि मे घेर कर परास्त करता है, ऐसा आत्म विजयी सदैव जीतता है। विकार वासनाएँ, तृष्णाएँ, प्रलोभन, भय और शरीर मरण ऐसे आत्म विजयी को किसी भी क्षेत्र मे परास्त नहीं कर सकते।

जीवन के भीतर, बाहर सब मोर्चों पर विजय प्राप्त करने वाला बहु विजयी आत्मवीर को विजय का रहस्य परमेश्वर का सोपान है। ज्ञान और कर्म से परमेश्वर के समीपस्थ होकर जब आनन्दमयी शक्ति उसे प्राप्त होती है, तो आनन्द मग्न होकर वह सर्वत्र विजय पर विजय सम्पादित करता चला जाता है।

ऐसा अमृत पुत्र ही ईश्वरीय कार्यों को अपने हाथ मे ले कर भौतिक जगत् मे असुरो और राक्षसों को, अज्ञानियों और विधर्मियों को शस्त्र और शास्त्र से परास्त करता हुआ, परमात्मा के आनन्द की धारा को जगत् मे प्रवाहित करता है, तथा विश्व का आर्यकरण करके परमात्मा के आदेश को पूरा करता है।

—'वसन्त'

सहारनपुर में सभा मन्त्री-

# श्री पं. प्रेमचन्द्र जी शर्मा का भव्य स्वागत

## एवं ४०००) रुपयों की थैली भेंट

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा सदस्य विधान सभा पूर्वीय क्षेत्र का दौरा करने के उपरान्त सहारनपुर पहुचे। खालापार आर्यसमाज सहारनपुर का वाद कई वर्षों से जो अदालतो मे चल रहे थे, उन्हे वापस कराने का आदेश देकर उचित निर्णय किया और समस्त विवाद समाप्त कराये।

आर्यसमाज खालापार ने श्री प प्रेमचन्द्र जी शर्मा सभा मन्त्री का भव्य स्वागत करने क पश्चात् श्री प०प्रेमचन्द्रजी शर्मा एम एल ए ३०००) तीन हजार रुपयो की थैली सभा को वेद-प्रचारार्थ प्रदान की।

२—आर्यसमाज पुरानी मण्डी सहारनपुर का वाद जो कई वर्षों का था, उसका भी निर्णय कर विवाद समाप्त कराया और नवीन निर्वाचन कराने की घोषणा की गई।

३—आर्यसमाज खलासी लाइन का निरीक्षण किया।

४—स्व श्री हरनामसिंह जी ओवरसियर प्रदत्त कोठी का निरीक्षण किया, कोठी के किरायेदारो से सम्पर्क स्थापित कर कोठी के किराये की उचित व्यवस्था की।

५—आर्यसमाज फेराहेडी [ सहारनपुर ] से सभा को भवन की बिक्री का १०००) रुपये प्राप्त हुआ। सभा सहारनपुर के आर्य भाइयो के इस सहयोग के लिये धन्यवाद देती है।

नये ...लील ...व किया ...प्रतिबन्ध ...वेश-भूषा ...कामोत्पा-

वर्ष ७१ | अक १६

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे १०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अंक में पढ़िए !



सपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल ए.
सभा-मन्त्री

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

# तड़पत निश दिन बिन दर्शन के, मैं विरहन दुखियारी

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' 'वेदवारिधि' मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

**वेद मन्त्र—**

एह्यू षु ब्रवाणि ते ऽग्न इत्थे-
तरा गिरः । एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥
[ साम० ७]

शब्दार्थ—(अग्ने) हे सुन्दर देव परमात्मन् ! (ते) तेरे प्रति (इत्या) इस प्रकार (इतरा) अन्य बातें (सु) सुन्दर (ब्रवाणि) बोलूं (एभिः) इन (इन्दुभिः) सोम बून्दों मे (वर्धास) वर्धित होता हुआ (ऊ) और (आ इहि) आ, आगे आ।

व्याख्या—परमात्मा का आह्वान् पवित्रात्मा द्वारा किया जाता है। जब पुकारने पर, बारम्बार पुकारने पर भी परमात्मा का जोतिमय दर्शन नहीं होता, तब साधक का दोष न परमात्मा को देना और नहीं दुर्भाग्य को कोसता निराश भी नहीं होना। [illegible]मा पर अटूट आस्था उसे स्पष्ट अन्तर्बोध परमात्मा दर्शन देना [illegible]ता है। वह तो स्वयम् [illegible] वहीं आता है जहां नितान्त शुद्धता है, पवित्रता है, शान्ति है, स्थिरता है।

कहीं मेरे भीतर कोई खोट तो नहीं है जो मेरे पवित्र प्रीतम के मिलन मे बाधक हो रही है। मलिनता का वह कौन-सा आवरण है पर्दा है जिसने स्वामी के दर्शन को ओझल कर रखा है। शुद्धता, पवित्रता और स्थिरता के लिये ही तो साधक ने अपने आप को यम नियम की भट्टी मे तपाया है। सामाजिक और आत्मिक शुचिता को प्राप्त होकर आसन को स्थिर किया है, प्राणो का वशीकरण किया है, चित्त की वृत्तियों का निरोध किया है। शुद्ध और बुद्ध परमात्मा का ध्यान किया है। धारणा को परिपक्व किया है। समाधिस्थ हो कर आत्म-दर्शन भी किया है। अपने स्वरूप मे समाधिष्ठ होकर दिव्य ब्रह्म मे समाहित होने की जो आकाक्षा शेष है उसकी पूर्ति न होते देख, व्याकुलता अन्तर्वेदना बन कर नयनो से धारा बन कर बहने लगती है। मन के निर्मल दर्पण मे साधक को अपना प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होता है। वह स्पष्ट रूप मे देखता है कि अभी मेरे भीतर क्या त्रुटि है, क्या अभाव है। निर्मलता मे भी कहीं-कहीं मल के धब्बे पडे हुए हैं।

साधक और प्रयासरत हो जाता है। वह अन्य किसी को न गहराई मे, सूक्ष्मता से देखता है और कालिमा को पोछने के लिये उद्यत हो जाता है। पाप ही मन दर्पण की कालिमा है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म पाप जो शेष है उसके लिये सच्चे हृदय मे जब पश्चाताप किया जाता है तो नेत्र छलछला उठते हैं। आत्मना जब प्रायश्चित किया जाता है, तो नेत्र जल प्रवाह धारा

## अध्यात्म-सुधा

बुरा कहता है, न ही किसी की बुराई देखता है। साधक कबीर के शब्दो मे—

'बुरा जो देखन मै चला,
बुरा न दीख्यो कोई।
अपना मन जो देख्यो,
मुझसे बुरा न कोई ॥'

के अनुसार साधक अपने मन दर्पण की कालिमा को और गह- का रूप ले लेता है। पापविमोचन आत्मना प्रायश्चित्त से ही होता है, और अन्तर्पीडा जब अश्रुओ मे व्यक्त होती है तो अन्तःकरण की कालिमा धुल जाने के कारण, वह चमकने और दमकने लगता है। परमात्मा का सच्चा उपासक तत्व ज्ञान मे युक्त होने के कारण मर्मज्ञ होता है। वह अपनी दुर्बलताओं को छिपाता नहीं, उन्हे दूर करने के लिये सर्व शक्तिमान् से शक्ति का दान मांगता है। वह पुकार उठता है—'ऐहि' 'आ+इहि' अर्थात् आ, आजा, मेरे सर्व शक्तिमान् स्वामी आजा 'अग्न ऐहि' सुन्दर सरस परमात्मा, दिव्य देव तू आजा, आजा, अब तो मेरे सम्मुख आजा। देख मै आंसू बहा रहा हू। अपनी करनी पर पछता रहा हू। अपने अन्तःकरण की मलिनता को दूर कर रहा हूं, तेरी प्राप्ति के लिये बिन्दु रूपी मोतियों को लुटा रहा हू। 'एभिर्वर्धास इन्दुभि' मेरे बढ़ते हुए, छलछलाते हुए, बहते हुए इन सोम बिन्दुओं मे मै जहां जहां पवित्र होकर आगे बढ रहा हू तेरी ओर कदम बढ़ा रहा हू, वहा तू भी बढ़ कर आगे हो।

स्नेह का आनन्द ही तभी मिलता है, जब दोनो ओर एक जैसी लगन हो। जब भौतिक जगत् मे एक दूसरे से प्रेम करने वाले दर्शन के लिए परस्पर व्याकुल होकर आगे बढते हैं तो पथ मे मिलन कितना आनन्दप्रद होता है, यह अनुभूति से सम्बन्धित है। मैं तेरे लिये व्याकुल था, बिना दर्शन के बेचैन था इस लिए चल पड़ा।'

मधुमय मिलन के पहले ज्योतिर्मय दर्शन है। जिसके दर्शन से तृप्ति होती है, जिसके मिलन से आनन्द मिलता है, उसके लिये आगे बढता हुआ प्रेमी मधुर कल्पनायें सजोये चलता है। जब दर्शन होगा, मिलन होगा, मै अपने प्रियतम से यह कहूगा, ऐसे बोलूगा, प्रिय वचनो का आदान-प्रदान करूंगा। ऐसी मधुर कल्पनायें अन्तःकरण को पुलकित करती हैं। इसीलिये साधक कह रहा है, 'ते' [तेरे प्राप्ति] 'इत्था' [इस प्रकार] 'सु+ब्रवाणि' [सुन्दरतापूर्वक बोलू]

केवल ज्योतिर्मय के दिव्य दर्शन का आह्वान ही नहीं, केवल मिलन की चाह ही वरन् मधुर-मधुर बोलने की भी कामना होती है साधक की। शीतल मधुमय वचन ही आनन्द वृष्टि करते है।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

## मैं दुखिया प्रभु शरण तिहारी

मै दुखिया प्रभु शरण तिहारी।
तड़प निश दिन बिन दर्शन के मै विरहिन दुखियारी।
जलती रहू पर राख बनू न, [illegible]
[illegible] मै पल-पल तेरी [illegible]
चैन पाने अपने मन का, भटक [illegible] मारी।
होश नहीं है अपने मन का [illegible] है बिमारी।
[illegible] मै जाऊ कहां पर [illegible]
मै तो [illegible] गई तेरे [illegible] मे, [illegible] माहे बावरी।
पाप मलिन यह आतमा मेरी, [illegible]
मन अन्तर की पीड़ा को [illegible]
तुम ही तो प्रभु मेरे स्वामी, परम [illegible] हितकारी।
'वसन्त' कहे राह दिखाओ, दूर करो अंधियारी।
मै दुखिया ... ... ..

लखनऊ-रविवार २७ अप्रैल ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## तम् कुलिशेन वृक्षम् इव वृश्चामि

वैसाखी १३ अप्रैल १९६९ को अमृतसर (पजाब) मे जलियाँ वालाबाग के शहीदो को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए एक सार्वजनिक सभा मे भाषण करते हुए भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा जी ने कहा कि देश इस समय अनन्त कठिनाइयो से घिरा हुआ है। आप ने समस्याओं के निराकरण करने के लिये महात्मा गाधी द्वारा प्रदर्शित अहिसा मार्ग की भी चर्चा की और कहा कि उस मार्ग मे हिंसा और प्रतिशोध के लिए कोई स्थान नहीं था तथा आज भी हम उस मार्ग पर चलकर अपना उद्देश्य प्राप्त कर सकते हैं।

प्रधान मन्त्री ने बिल्कुल सत्य कहा है कि इस समय देश मे समस्याए ही समस्याए है और उनका निराकरण करना आवश्यक है। जलियाँवाला बाग के शहीदो के बलिदान के कारण देश स्वतन्त्र हुआ था, आज भी देश की रक्षा के लिये उसी भावना की आवश्यकता है। राष्ट्र की रक्षा बिना तप और त्याग के नहीं होती। पुरुषार्थ भी करना पड़ता है और समय आने पर अपना बलिदान भी देना पड़ता है।

दुर्भाग्य से इस समय देश मे जितनी भी असख्य समस्याए है उनके मूल मे भ्रष्टाचार है। आज सदाचार का सवथा लोप हो गया है और भ्रष्टाचार दिन दूना और रात चौगुनी उन्नति करता चला जाता है। भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा का अनुमान हम कलकत्ता की उस पाशविक अमानवीय दुर्घटना से लगा सकते है जिसकी जाच की वहाँ के प्रमुख नागरिको डा० सतेन बोस, प्रमुख लेखक डा० रमेशचन्द्र मोजमदार, जनसघी नेता डा० देवप्रसाद घोष और प्रमुख साहित्यकार डा०श्री कुमार बैनर्जी द्वारा एक सयुक्त वक्तव्य द्वारा की गई है।

समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचार के अनुसार ६ अप्रैल को कलकत्ता एक सगीत सम्मेलन पर न केवल हुल्लडबाजी हुई, कारो और बसो को आग लगाई गई। सम्पत्ति को क्षति पहुचाई गई और स्त्रियो पर आक्रमण किये गये। गुण्डो ने सैकडो स्त्रियो को निर्वसन कर दिया, अनेक स्त्रियो ने शील रक्षा के निमित्त झील मे कूदकर प्राण देना उचित समझा। यद्यपि बिना विस्तृत जाच किये तथ्यो का बोध नही होगा तथापि दूसरे दिन प्रात झील के क्षेत्र मे सैकडो साड़ियो और अगियो का मिलना तथा क्षेत्र के सम्भ्रान्त लोगो का नगी स्त्रियो को शरण देना इस बात का परिचायक है कि एक भयकर दुर्घटना घटित हुई है।

कलकत्ता की विशाल नगरी मे हुल्लड बाजी तो एक दैनिक क्रिया हो गई है, किन्तु स्त्रियो के साथ इस प्रकार का नियोजित दुर्व्यवहार सकेत करता है कि आज हमारे चरित्र का कितना अध पतन हो चुका है और हम किस ओर जा रहे हैं। लिखने की आवश्यकता नहीं कि इस समय सम्पूर्ण राष्ट्र व्यसन और विलास की अग्नि मे जल रहा है। जिसे देखो वह माया और भोग के पीछे पागल हो रहा है। मानवता का विनाश हो रहा है। और राक्षसी वृत्तिया उभर रही हैं।

न्याय की मांग है कि इस प्रकार के अपराध करने वाले धूर्तो को कठोर दण्ड दिया जाए। वेद जो परमेश्वर की दिव्य वाणी है, इस सदर्भ मे हमारा पथ-प्रदर्शन करते हुए कहता है—

**इद मिन्द्र श्रृणुहि सोमप यत्वा हृदा शोचता जो हवीमि। वृश्चामि तं कुलि शेनेव वृक्षं यो अस्माक मन इदं हिनस्ति॥**

१२-३

अर्थात् (सोमप इन्द्र) हे सोम रक्षक इन्द्र! राजन!! (यत्) जो (त्वा) तुझको (शोचता) शोकपूर्ण (हृदा) हृदय से (जोहवीमि) बारम्बार कहता हू। (इदम्) इसको (श्रृणुहि) सुन (य) जो (अस्माकम्) हमारे (इदम्) इस (मन) मन को (हिनस्ति) मारता है (तम्) उसको (कुलिशेन) कुल्हाडे से (वृक्षम् इव) वृक्ष की भांति (वृश्चामि] काटता हू।

वैदिक राष्ट्र मे इसी लिये धूर्त्तो को कठोर दण्ड दिया जाता था, क्योकि धूर्त्त सदैव जनता के मन को दुर्बल करते रहते है। इस प्रकार की दुर्घटनाओ से या भयो की विभीषिकाओ से जनता मे घबराहट उत्पन्न करते है, जिसके कारण निराशा होती है। जनता हतोत्साहित होती है। अतएव राष्ट्ररक्षा के लिये ऐसे दुष्टो को कठोर दण्ड देना चाहिये।

समस्या का एक दूसरा दृष्टिकोण भी है। जलिया वाले बाग के जिन शहीदो को सम्पूर्ण राष्ट्र ने १३-४-६९ को वैशाखी के दिन श्रद्धाजलि अर्पित की है। वे कौन थे, तो थोडे से शब्दो मे कहा जा सकता है 'अग्नि समान राष्ट्र के तेजस्वी सैनिक" सीधा-साधा सरल जीवन, ईश्वर प्रेम और राष्ट्र के लिए हँसते-हँसते जीवन अर्पित करने का दृढ सकल्प ये सब जिस माध्यम से आते हैं आज उसकी घोर उपेक्षा है। भड़कीले वस्त्र, अर्द्ध नग्नता, कृत्रिम फैशन की, भरमार, गन्दे दृश्य, अश्लीलगान क्या सदाचार का सृजन करते है, अथवा काम वृत्तियो को उद्दीप्त करते है?

जहाँ दृढता पूवक उन गुण्डो को जो कलकत्ता के लज्जाजनक काण्ड के अपराधी हैं, घोर दण्डित किया जाये, वहां उसी दृढ़ता से राष्ट्र मे चरित्र निर्माण के लिये भी कुछ किया जाये। अश्लील चल-चित्रो का प्रदर्शन बन्द किया जाये-गन्दे गीतो पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। गन्दी वेश-भूषा और फैशन के नाम पर कामोत्पादक प्रसाधनो को समाप्त किया जाये। केवल सरकार पर ही आश्रित नहीं वरन् अपने गृहो मे प्रत्येक गृहपति आज राष्ट्र-रक्षा के लिये यह दृढ़ व्रत ले। धर्म परायण होकर सीधा सरल जीवन स्वयम् व्यतीत करे, और अपने परिवारो मे इस मर्यादा को चलवाए।

शहीदो का लहू पुकार-पुकार कर कह रहा है कि जिस स्वाधीनता के लिये उन्होने प्राण अर्पित किये है, उसकी रक्षा के निमित्त उन्हे केवल मौखिक श्रद्धाजलियाँ ही नहीं वरन् अपने क्रियात्मक जीवन से उन्हे मन रूपी पुष्प अर्पित करो। उनके द्वारा प्रदर्शित तप और त्याग के मार्ग पर चलो। स्वत जागरूक होकर इन राष्ट्र विरोधी तत्त्वो को समूल नष्ट कर दो।

★

# ८३ वें बृहदधिवेशन का विज्ञापन

## उत्तर प्रदेशीय सभान्तर्गत आर्यसमाजों के मन्त्री गण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयो की सेवा में—

श्रीमन्नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ८३वां वार्षिक साधारण अधिवेशन मिति ज्येष्ठ शु० ८-९ सवत् २०२६ वि० ज्येष्ठ ३, ४ शक स० १८९१ वि० २४ व २५ मई १९६९ ई० दिन शनिवार व रविवार स्थान आर्यसमाज मन्दिर नैनीताल मे होगा। साधारण अधिवेशन दि० २४-५-६९ की प्रथम बैठक ३ बजे मध्यान्ह से प्रारम्भ होगी।

आशा है कि आर्यसमाजों एव आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन मे सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेगे।

### प्रवेशनीय विषय-सूची—

१—उपस्थिति।
२—ईश प्रार्थना।
३—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी ६८ से ३१ दिसम्बर १९६८ तक आय-व्यय लेखा सहित स्वीकृत्यर्थ।
४—आगामी वर्ष सन् १९७० के लिये बजट स्वीकृत्यर्थ।
५—सभा के पदाधिकारियों एव अन्तरङ्ग सदस्यो का निर्वाचन।
६—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नियम स० ४४(इ)के अनुसार ६ प्रतिनिधियों का निर्वाचन।
७—आय-व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति।
८—सभा नियम स० ८ (ए) के अनुसार ३ प्रतिष्ठित सभासदों का निर्वाचन।
९—सभा नियम धारा २१ (६) के अनुसार प्रस्तुत अन्य विषय।

टिप्पणी (१) आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास, भोजनादि की व्यवस्था आर्यसमाज नैनीताल द्वारा की गई है।
(२) नवीन अन्तरङ्ग की बैठक अधिवेशन की समाप्ति पर होगी।
(३) सभा की वार्षिक रिपोर्ट के सम्बन्ध मे जो प्रश्न हो वे १५ मई तक सभा कार्यालय लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें, जिससे उनका उत्तर तैयार कर अधिवेशन मे प्रस्तुत किया जा सके। समय के उपरान्त आने वाले प्रश्नों के उत्तर देने मे कठिनाई होगी।

## बृहदधिवेशन का कार्यक्रम

### २४ मई १९६९ दिन शनिवार

प्रात—७ से ८॥ तक सध्या यज्ञ, ९ से ११ तक प्रवचन।
अपराह्न—३ से ६ बजे तक बृहदधिवेशन की प्रथम बैठक।
साय—६ से ८ बजे तक नित्य कर्म, सन्ध्या, भोजनादि। तत्पश्चात् प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की प्रथम बैठक विशेष पण्डाल मे।

### २५ मई १९६९ दिन रविवार

प्रात—६॥ से ७॥ बजे तक सम्मिलित सध्या यज्ञ।
,, ९ बजे से बृहदधिवेशन की द्वितीय बैठक तथा नवीन अधिकारियों द्वारा कार्य भार ग्रहण

निवेदक—
१५—४—६९ —प्रेमचन्द्र शर्मा एम एल ए.
सभामन्त्री

## सभा का वार्षिक बृहद् अधिवेशन

### शनिवार २४ व रविवार २५ मई १९६९

### को नैनीताल में होने जा रहा है

सभा का अन्तरग अधिवेशन शुक्रवार २३ मई १९६९ को मध्याह्न दो बजे होगा।

(१) समाजें दशांश व वार्षिक चित्र शीघ्र भेजें। अन्तिम तिथि वार्षिक चित्रो के भेजने की १५ मई है। विलम्ब से प्राप्त चित्र यदि अधूरे होगे अथवा गलत भरे होगे तो प्रतिनिधि स्वीकार न हो सकेंगे। अतएव चित्र और दशांश समय के भीतर भेजिये और कठिनाई से बचिए।

(२) प्रतिनिधि शुल्क ५)कर देने का प्रस्ताव अन्तरङ्ग मे प्रस्तुत है। अतएव प्रतिनिधिगण ५) प्रतिनिधि शुल्क की तैयारी से आए ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें असुविधा न हो।

(३) प्रतिनिधि गण नैनीताल जाने के लिये काठगोदाम तक उन दिनों मिलने वाले हिल कन्सेशन टिकट का लाभ उठाए। प्रतिनिधि हलद्वानी स्टेशन पर उतरकर निकटवर्ती आर्यसमाज मन्दिर हलद्वानी मे पहुचें। वहां स्नान और प्रात काल के जलपान की व्यवस्था २३ और २४ मई ६९ दोनो दिन रहेगी। आर्यसमाज के निकट से ही नैनीताल की बसे हर २५ मिनट पर छूटती रहती हैं। नैनीताल बस स्टैण्ड पर आर्यसमाज के कार्यकर्ता प्रतिनिधियो के स्वागत और सहायतार्थ उपस्थित रहेगे।

समाजें, प्रतिनिधि महोदय, एवम् अन्तरङ्ग सदस्य इन बातों को नोट करे और अधिवेशन में चलने की तैयारी करें।

## सिंहावलोकन

# श्री माधवाचार्य जी का श्राद्ध मण्डन

अभी कल्याण का "परलोक पुनर्जन्मांक" विशेषांक प्रकाशित हुआ है। प्रभूत पठनीय सामग्री से यह अंक प्रतिष्ठित है। श्राद्ध के समर्थन मे श्री माधवाचार्य जी का लेख भी है। श्री मा० चा० जी की यह विशेष शैली है—शास्त्रार्थ मे भी लेखो मे भी—

१—प्रस्तुत विषय की ओर से ध्यान हटाना।

२—प्रतिपक्षी के पक्ष को अपने मन माने ढग पर वर्णन कर उत्तर देना।

३—झूठे उदाहरण और हेत्वाभासो से अपने पक्ष को पुष्ट करना।

इसी शैली का यह लेख भी है। पितर क्या हैं? शास्त्रो मे उनका कैसा वर्णन है आदि विचारो को छोड़कर जीव के अदृश्यत्व की ओर चल पडे। जीव को दृटि का विषय न आर्य समाजी मानते है न जैन। ये ही मृत श्राद्ध नहीं मानते। रहे चार्वाक वे तो जीव को ही नहीं मानते।

आपका पक्ष है कि पितर अदृश्य है, परन्तु पवित्र सूक्ष्म दृष्टि वालो को दीख ते भी है। श्रीमती सीता जी को दशरथ जी दीखे और भीष्म जी को शान्तनु महाराज का हाथ दीखा। पर यह तो बताइये कि भगवान् राम तो अवतार थे, उन्हे भी दशरथ जी नहीं दिखाई दिये, और मन्त्रदृष्टा वसिष्ठ जी को भी नहीं दीख पड़े। वस्तुत यहा तो कवि ने यह सिद्ध किया है कि ऐसे वहम स्त्रियो को ही आ घेरते हैं। ऐसा ही वहम भीष्म जी का भी है। अन्यथा महाराज शान्तनु व्यास जी को योगिराज कृष्ण जी को भी दिखाई पड़ते।

पितर अदृश्य हैं, सूक्ष्म हैं, जब यह मान लिया गया तो देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। सूक्ष्म शरीर भी है पर दीखता नहीं।

मुख्य प्रश्न तो दो हैं। जिन्हे न आपने छुआ और न आपके साथी श्री प० दीनानाथ जी सारस्वत ने छुआ।

यद्यपि श्री सारस्वत जी का लेख माधवाचार्य जी के लेख की तुलना मे बहुत बढ़िया, युक्ति प्रमाणों से सुसज्जित है।

प्रश्न यह है कि देवताओ की तरह ही पितर भी एक स्वतन्त्र समुदाय है, वा प्रत्येक जीव मरकर पितर बन जाता है।

यदि देवताओ की तरह पितर भी एक योनि है तो उनका पूजन यजन देव वत् होने से क्या-क्या लाभ हैं। इसे सिद्ध करना और यदि प्रत्येक जीव पितर बन जाता है तो पुनर्जन्म किस का होता है? यदि पुनर्जन्म हो गया तो उनका श्राद्ध मे आना कैसा?

देव और पितर जैसा कि पुराणो मे वर्णन है चेतन हैं वा जड पदार्थ? वेदो के महान् अन्वेषक श्री प० सत्यव्रत जी सामश्रमी ने तो ऐतरेयालोचन मे देवताओ को जड प्राकृत पदार्थ सिद्ध किया है। तब ऐसी ही प्राकृति शक्तियाँ पितर है। द्यौलोक की प्राकृति शक्तियाँ देव और चन्द्र कक्षा की (रवियुक्त) प्राकृत शक्तिया पितर है।

दूसरा मूल प्रश्न है कि एक व्यक्ति का किया कर्म फल दूसरे व्यक्ति को मिल सकता है वा नहीं। मरणोपरान्त पुत्रादि अपने कर्मों से परलोक प्राप्त जीव के सस्कारो को प्रभावित कर सकते हैं वा नहीं? यदि कर सकते हैं तो विधाता की सृष्टि मे अंधेर छा जायगा। स्वकृत कर्म फल की

❀श्री बिहारीलाल शास्त्री

हानि होगी। और परकृत कर्म फला वाप्ति मे अकृत कर्म फलाभ्युपगम होगा। कर्म फल का सिद्धान्त बिखर जायगा। श्री माधवाचार्य जी कहते है पितर दीखते नहीं, और श्री दीनानाथ जी ने वेद मन्त्र प्रस्तुत किया है। उससे सिद्ध होता है कि पितर आकर आसन पर बैठते है। देखिये मन्त्र—

आयन्तु न पितर सोम्यासोऽग्निष्वात्ता पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु ते ऽवन्त्वस्मान्।

य १९/५८।

सोम पान योग, ज्ञानाग्नि मे तप्त हमारे पितरदेव यानो मे इस यज्ञ मे आवे और स्वधा से प्रसन्न हुए हमसे बात चीत करें और हमारी रक्षा करे।

अब बताइये कि मेरे पिता कभी आकर बात चीत करते हे? दिखाई तो नहीं देते, परन्तु बातचीत करते है यह आश्चर्य जी? यह गोरख धन्धा है? यदि जीवित पितर मान लिये जाय तो सारी सगति बैठ जाती है। सोम पान करने वाले ज्ञानाग्नि दग्ध, तपस्वी वानप्रस्थी विद्वान् यज्ञो मे आवें और उपदेश करे।

इस अध्याय के पितृ सम्बन्धी सब ही मन्त्रो पर गम्भीरता से विचार होना है। स्वधा क्या है? बर्हि क्या है? आदि।

योगी और आध्यात्मिक लोगो का यह मननीय विषय है।

आचार्य जी ने मृतो के प्रति सम्मान करने को भी श्राद्ध मे जोड दिया है। मृतक के प्रति सम्मान प्रकट करके वा स्मारक

# आस का सूरज

अरमानो की लिये धरोहर मै चुपचाप चला जाता था
कौन जानता था कि मग मे आस का सूरज ढल जायेगा

कावा और कर्वला काशी अमर बने तीरथ जगती के
कर्म करो मनसा वाचा से है सोपान नवल भक्ति के
आसू की बहती धारो को समझो गगा का पानी है
धुल जायगा कलुष हृदय का कौन कहाँ इनका सानी है
क्या विश्वास कि इस मेले मे कौन लुटेरा छल जायेगा ॥

अनुभव का अम्बार समेटे आज बुढापा चला आ रहा
जीवन के सुनसान क्षितिज पर पथ बटोही गीत गा रहा
मानस की माटी से निर्मित अटका हुआ दिया जलने दो
निश्वासो की तरल धरा पर करुणा का अंकुर पलने दो।
किसे पता है साध्य रवि कब तम की रोली मल जायेगा ॥

पाहन पूजे से मिलता क्या इन्सानी माटी को पूजो
रेती मे उपवन खिलता क्या कटुता की आँधी मे जूझो
दिल के जख्मो को सहलाकर ममता की शबनम बिखरा दो
मीठे बोलो मे मुखरित हो ऐसी तुम सरगम बिखरा दो
क्या जाने विश्वास का पर्वत किस क्षण किस पल हिल जायेगा ॥

—राजेन्द्र श्रीवास्तव, बीना

# आइए हम देव भाषा संस्कृत पढ़ें
## द्वितीय पाठः

दिनांक १६-३-६९ मे प्रकाशित प्रथम पाठ मे ३ वचन, ३ लिङ्ग और ३ पुरुषों की चर्चा की गई थी और उदाहरण देकर उनके भेद को समझाया गया था। थोड़े से शब्दार्थों का भी स्मरण कराया गया था। अब आगे पढ़िए]

### लिंग और वचन का प्रयोग

| लिङ्ग | एक वचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| पुल्लिङ्ग— | बालक | बालकौ | बालका |
| | [एक लड़का] | [दो लड़के] | [३ या बहुत लड़के] |
| स्त्रीलिङ्ग— | बालिका | बालिके | बालिकाः |
| | [एक लड़की] | [दो लड़कियां] | [३ या बहुत लड़कियां |
| नपुंसक लिङ्ग— | फलम् | फले | फलानि |
| | [एक फल] | [दो फल] | [३ या बहुत से फल] |

### लिंग भेद समझिए

| पुल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|---|---|
| १. अज [बकरा] | २ अजा [बकरी] |
| ३ कुक्कुट [मुर्गा] | ४ कुक्कुटी [मुर्गी] |
| ५. वृषभ [बैल] | ६ गौ [गाय] |
| ७. अश्व. [घोडा] | ८ बडवा [घोडी] |

टिप्पणी—पुस्तकम् [पुस्तक] फलम् [फल] इत्यादि नपुंसक लिङ्ग की श्रेणी मे आते है।

### क्रिया प्रयोग के लिए इन शब्दार्थों को कण्ठस्थ कीजिये

| | |
|---|---|
| गच्छति = जाता है। | आगच्छति = आता है। |
| तिष्ठति = बैठता है। | उत्तिष्ठति = उठता है। |
| धावति = दौड़ता है। | पतति = गिरता है। |
| पठति = पढ़ता है। | लिखति = लिखता है। |
| खादति = खाता है। | पिबति = पीना है। |
| भवति = होता है। | नश्यति = नष्ट, होता है। |
| सृजति = उत्पन्न करता है। | रक्षति = रक्षा करता है। |
| जिघ्रति = सूँघता है। | वदति = बोलता है। |
| नृत्यति = नाचता है। | कुप्यति = क्रोध करता है। |
| हरति = चुराता है। | धाति = धारण करता है। |

—'वसन्त'

[पृ० ५ का शेष]

बनाकर हम अपनी कृतज्ञता को सद्भावना को दृढ़ करते हैं। मृत पर इस का कोई प्रभाव नहीं। और श्राद्ध से मृत की आत्मा को लाभ पहुंचाने के लिये दोनों मे महान् भेद है।

ऋषि दयानन्द का दाह कर्म जहा अना सागर पर हुआ था, वहाँ यज्ञशाला है, और यज्ञ होता है। इसी को माधव जी कहते हैं। कि आप स्वामी [illegible] जी की चिता पर सदा [illegible] जलाते है। कैसी तोड़ मरोड़ की है आचार्य जी ने! [illegible], इधर की उधर लगाना यह इनके लेखो मे खूबी है।

फिर क्या है और उनको हमारे कृत कर्म की प्राप्ति होती है मरने पर इसे सिद्ध करे, माधव जी वा सारस्वत जी।

श्री सम्पादक महोदय, सप्रेम नमस्ते!

'आर्य्यमित्र' का मै नया ग्राहक हू। जब से 'आर्य्यमित्र' शुरू हुआ है, एक-एक अक की पठन सामग्री मेरे मन को सन्तोष देती है। वस्तुत मुख पृष्ठ की वेद मन्त्र व्याख्या व आध्यात्म-सुधा के पाठ को जब सुबह उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पढ़ने लगता हू बस खो जाता हू। ऐसी सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या का सरल शब्दो मे व रोचक शैली मे पढने मे बडा ही आनन्द अनुभव करता हू।

सम्पादक जी! 'आर्य्यमित्र' मे जो सस्कृत स्तम्भ शुरू किया था, वह बन्द क्यो कर दिया? यह स्तम्भ 'आर्य्यमित्र' की प्रगति में तथा वैदिक साहित्य के प्रचार मे बहुत योग दे सकता है। हमारे जैसे कम पढे व्यक्ति सस्कृत जैसी देव भाषा सीखने से वचित हो गये। आशा है, फिर से यथावत यह स्तम्भ शुरू करेंगे।

धन्यवाद! आपका

—पूनमचन्द मूलचन्द आर्य, अहमदाबाद-२

उत्तर—[१] 'आर्य्यमित्र' प्रकाशन स्तर को उच्च करने का श्रेय निस्सन्देह श्री वसन्त जी को ही है। हम इसे और भी उत्तम कर सकें इसके लिये समस्त पाठको व लेखको का हमें और अधिक सहयोग प्राप्त होना चाहिए। यदि 'आर्य्यमित्र' आपको अच्छा लगता हैं तो आप इसके नये ग्राहक बनाए व विज्ञापन दिलाए।

[२] इस अङ्क से सस्कृत स्तम्भ का पुनरारम्भ किया जा रहा है। शीर्षक ब्लाक उपलब्ध न होने के कारण प्रकाशन रोक दिया गया था। हमारे अनेक पाठको के इस सम्बन्ध मे पत्र प्राप्त हुए हैं। हम पाठको को विश्वास दिलाते हैं कि यथासम्भव प्रत्येक अक मे यह स्तम्भ नियमित रूप से दिया जाएगा। —सम्पादक

## आर्य समाजो को आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजो तथा जिलोपसभाओ को सूचित किया जाता है कि अब तक बहुत कम समाजो के वार्षिक चित्र प्राप्त हुये हैं। समाजों व उप सभाओ को चाहिए कि वे अपने वार्षिक चित्र १५ मई तक सभा कार्यालय मे अवश्य भेजवें, ताकि उनकी विधिवत् जाच हो सके तथा प्रतिनिधियों की स्वीकृति भेजी जा सके। १५ मई के पश्चात् आये हुये चित्रों को स्वीकार करने मे सभा को कठिनाई होगी तथा सदिग्ध और अपूर्ण चित्रों के कारण प्रतिनिधियो को मान्यता देना सम्भव नहीं होगा।

२—नियम स० १४ (द) के अनुसार जो एग्रीमेंट समाजों से नोटरी द्वारा प्रकाशित कराके भेजने को लिखा गया था, वह भी शीघ्र भेजने की कृपा करे। अन्यथा सम्बन्धित समाज के प्रतिनिधियो को प्रवेश-पत्र आदि न दिये जा सकेंगे।

३—जिन समाजो पर आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क व एजेंसी का धन विगत वर्षों का शेष है, अथवा जो अब तक ग्राहक नहीं बने है, या जिन्होने आर्यमित्र बन्द कर दिया है उन्हें चाहिये कि वे इस निमित्त आर्यमित्र कार्यालय को तुरन्त धन भेजें। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समाजो के वार्षिक चित्रों को स्वीकार करने की यह भी एक स्थिति है, जिसका समस्त समाजों को अवश्य ध्यान रखना चाहिए। —प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा-मन्त्री

# स्वर्गीय पं. गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय

### अनवरत लेखक–

जो लिखते-लिखते ही कलम हाथ में लिये हुए एक लम्बी नींद २९ अगस्त को गङ्गा-यमुना और सरस्वती के सगम प्रयाग राज मे सो गये। उनके लेखों मे सचमुच ही गगा, यमुना और सरस्वती का सगम था और उनका जीवन यागमय था। उनके लेखों मे गगा जैसा प्रसाद गुणयुक्त प्रवाह था, यमुना जैसा तटबन्ध युक्त सयम और सरस्वती जैसी अन्तर्गभीरा ज्ञान धारा प्रवाहित होती थी। मुझे ऐसा लगता है कि अभी भी वे जहां कहीं भी हैं, लेखनी उनके हाथ से छूटी नहीं है–हाथ ही केवल कुछ क्षण के लिये जो ब्रह्मा के एक क्षण का भी एक बहुत छोटा-सा भाग ही हो सकता है–रुक गया है, किन्तु लेखनी द्वारा खचित रेखाएँ और प्रेरणाएँ उनकी ज्ञान वृष्टि के सम्मुख स्पष्ट दिखाई पड़ रही हैं, और पता नहीं कहां और कब और किस रूप मे उन्हीं रेखाओ के अनुक्रम में फिर वह लेखनी आगे बढ़ चलेगी। भगवान् करे ऐसा ही हो, और उस लेखनी का अवतरण आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के आदर्शों तथा मानव हितकारी उच्च सिद्धान्तो के क्षेत्रो में ही हो।

यो तो जब कभी उनका लिखा हुआ कोई ग्रन्थ मुझे मिल जाता तो मैं उसे सरसरी वृष्टि से देख ही लेता था, किन्तु कुछ ग्रन्थो पर उन्हे पुरस्कार भी प्राप्त हुए थे। और उनमे उनकी लिखी एक पुस्तक 'वैदिक सस्कृति' है जिसपर उन्हे स्व० प० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधारा द्वारा प्रदत्त ५००) रु० का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस पुरस्कार के निर्णायको मे से एक मै भी था। अतः मुझे पुरस्कार प्रतियोगिता मे आए हुए सभी पुस्तको को सूक्ष्म वृष्टि से देखने का अवसर मिला और मैं उपाध्याय जी की विवेचना शैली से विशेष रूप से परिचित हुआ। उनकी शैली न्यायदर्शन के पञ्चावयवों से युक्त तर्क की शास्त्रीय शैली न होकर सर्व साधारण के लिये बोधगम्य सरल प्रतीकात्मक शैली थी। इसीलिये उनके द्वारा लिखे गये विचारात्मक गम्भीर ग्रन्थो के साथ ही साथ उनके लिखे हुए प्रचारात्मक छोटे-छोटे ट्रैक्ट भी बहुत लोकप्रिय हुए।

### लगन के आर्य व्यक्ति–

उपाध्याय जी के समय के कुछ आगे-पीछे के काल मे आर्य

समाज के क्षेत्र मे पांच अच्छे विचारक विद्वान और विशेष लब्ध प्रतिष्ठ ऐसे व्यक्ति हुए है जिनके निकट सम्पर्क मे मैं आया और जिनके विचारो को मै अधिक मान की दृष्टि से देखता था। तथा वे पाँचो भी मुझ पर दया नहीं करते अधिक भरोसा रखते थे। वे पाच थे–[१] महात्मा नारायणस्वामी जी, [२] प० घासीराम जी एम ए, [३] प० गगाप्रसाद जी चीफ जज, [४] प्रिंसिपल दीवानचन्द्र जी, एम ए, और पाँचवें प० गगाप्रसाद उपाध्याय एम ए., पाचो ही क्रम से अब स्मरण मात्र शेष हैं। उपाध्याय जी के भरोसे की एक घटना याद है। सन् १९४१-४२ की बात है। उपाध्याय जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान थे। सभा के कोषाध्यक्ष स्व प० रामचन्द्र जी शर्मा ने अपने पास से भी कुछ रुपया ऋणरूप मे सभा को देकर लखनऊ के सभा-भवन के लिये एक कोठी खरीदवा दी थी। किन्तु प० रामचन्द्र जी का ऋण चुकाया जाने से पूर्व ही प० रामचन्द्र जी शर्मा का देहान्त हो गया। उपाध्याय जी ने मुझे पत्र लिखा कि ऐसी दशा मे हमें शर्मा जी का ऋण उनकी विधवा पत्नी को शीघ्र ही वापिस करना चाहिये, अत धनसग्रहार्थ डेपूटेशन

श्री आचार्य बृहस्पति शास्त्री
वेद शिरोमणि, देहरादून

की कोई योजना बनाइये। मैं उन दिनो अपने मातृ वियुक्त बच्चो के साथ मुजफ्फरनगर मे था। मैंने मुजफ्फरनगर, सहारनपुर और मेरठ–इन तीन पश्चिमी जिलो के दौरे का प्रोग्राम बनाकर उपाध्याय जी को लिखकर मुजफ्फरनगर बुला लिया। मै आज तक मु०नगर और सहारनपुर जिलो के उन आर्य बन्धुओ को बडे स्नेह और आदर के साथ स्मरण करता हू जिन्होने लगभग १४–१५ हजार रुपया सग्रह करके अपने उदार हाथो मे हमारी झोली को भर दिया। मेरठ मे भी मुझे उपाध्याय जी के साथ जाना था, किन्तु एक दिन जबकि हम रुडकी आर्यसमाज मन्दिर मे ठहरे हुए थे, प्रातःकालीन सध्या हवन से उठने के पश्चात् उपाध्याय जी मुझ से पूछ बैठे कि मै कुछ उदास क्यो हू। मैंने उन्हे बताया कि मैं अपनी सवा साल की मातृ हीन छोटी बच्ची को बीमारी की दशा मे छोडकर आया था। उपाध्याय जी के आग्रह पर मै उसे देखने के लिये मुजफ्फरनगर आया तो बच्ची अन्तिम श्वास ले रही थी। उसका अन्त्येष्टि सस्कार करके जब ७-८ घण्टे के पश्चात् ही रुडकी वापिस पहुचा तो उपाध्याय जी ने कहा कि मै अपना घर देखू। वे अकेले ही जो कुछ थोडा-सा कार्य शेष है मेरठ जिले मे कर लेंगे, और उसे पूरा करके उन्होने सभा को ऋण मुक्त किया। उपाध्याय जी ऐसे सच्चे, लगन वाले और सहृदय उदार आर्य व्यक्ति थे।

### श्रद्धांजलि–

उनके विषय मे आज सस्मरण और श्रद्धाजलियां प्रका-

(शेष पृष्ठ ८ के नीचे)

# काव्य कानन | आर्यों जागो! उठो! कर्त्तव्य पालन करो

श्रेष्ठतम ससार मे जिसके सर्वदा कर्म्म हो
सर्व हितकारी सनातन मान्य वैदिक धर्म्म हो
'आर्य' कहलाता वही मत दम्भ उर मिथ्या भरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

श्रेष्ठ पुरुषो का बना समुदाय आर्यसमाज है ।
बच नहीं सकता इसी मे दुष्ट दानव राज है ।।
महर्षि ! द्वारा बताये मार्ग हित जीओ मरो ।
आर्यो जागो ! उठो !! कर्त्तव्य का पालन करो।।

जानते सब प्राणियो के जग सम्यक् रूप से ।
प्रेरणा शक्ति बिना निश्चेष्ठ होत अनूप से ।।
हठ-दुराग्रह की भट्टी के बीच पड मत जल मरो ।
आर्यो जागो ! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

सस्थाओ मे शिरोमणि आपका स्थान है ।
शुद्ध मस्तिष्क बाजते फिर क्यो न विकृतिहान है ।।
स्वार्थ से निर्लिप्त रह वेदोक्त आदर्शता वरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

शुद्ध सिर से पाय बल होता सुचारु काम है ।
विकृति आ जाय तो सब चेष्टा हो बाम है ।।
स्वय देश समाज को भी नाश ही समझो खरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो।।

देखिए इतिहास के अध्याय पन्ने खोल है ।
पता सब लग जायगा कह रहे मानो बोल है ।।
देखते प्रत्यक्ष प्रतिदिन दुष्ट भावो को हरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

आज जाति देश की नैया भवर मे है फसी ।
सोचिये गम्भीरता से छोडकर रस्सा-कसी ।।
प्रार्थना विनम्र हमारी विश्व हित सम्मुख धरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

वेद और समाज के सद् प्रेरणा ऊपर चलो ।
हार अथवा जीत पर न कीजिये हुल्लड-हतो ।।
स्वार्थ की होली जला-न ध्यान गद्दी का धरो ।
आर्यो जागो! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

हो यदि सच्चे समाजी कर दिखावो काम को ।
रख सदैव ईमानदारी तज उपाधि नाम को ।।
हो नहीं 'सम्मर्थ-सचेतक"-पद बिना हठ पर हरो ।
आर्यो जागो! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

स्वय सुहृदय टटोले और खोजे दोष को ।
जहां तक निर्लिप्त हैं हम त्याग सोवे रोष को ।।
आग्रह करता हू सभी 'बढकर' ऋषिकिकरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

भूलना कर्त्तव्य पथ करना कराना नाश है ।
देखकर हँसते विपक्षी जल रहा आवास है ।।
व्यर्थ है झगडा पदो का काम की खातिर लगो ।
आर्यो जागो ! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

आर्य-सन्यासी प्रचारक कमर कस आगे बढ़े ।
साध चुप किस भांति बैठे पड रहे विघटन गढ़े ।।
देखते कब तक रहोगे ब्रह्म चिंतन पर हरो ।
आर्यो जागो! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

वेद ऐसे कह रहे हैं 'सत्य'-बहरे कान खोले ।
किंतु उल्टा न्याय निद्रा न यति विद्वान खोले ।।
चार दिन की चांदनी है जरा ईश्वर से डरो ।
आर्यो जागो! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

ओ३म् की पावन पताका आर्यो कर में उठावो ।
वेद ऋषि सदेश की जा अलख घर-घर मे जगावो ।।
सत्य की हत्या करो मत तोल 'हठ' बाजार खरो ।
आर्यो जागो! उठो! ! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

अन्त क्या? होके रहेगा कहो यह किसको पता है ।
है प्रभु कर पार नैया हाथ तेरे सब सत्ता है ।।
दे सभी को शुद्ध मेधा शरण में तेरी पडो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।

कौन ? जलती आग मे अपना कलेवर झोक देवे ।
अमर हो बलिदान देकर प्रलय ज्वाला रोक देवे ।।
गगन भेदी घोष सुन यह अम्ब कायरता हरो ।
आर्यो जागो! उठो!! कर्त्तव्य का पालन करो ।।

—अम्बादान आर्य, कवि-कुटीर कुरडायाँ, राजस्थान—

(पृष्ठ ७ का शेष)

शित हुयी हैं जो उपयुक्त और आवश्यक थीं । किन्तु सच्ची श्रद्धाञ्जलि यह होगी कि आर्यबन्धु उनके आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थो का स्वाध्याय, महर्षिकृत ग्रन्थो के प्रकाश मे करे और करावें । तथा ट्रैक्टों का प्रचार और प्रसार करने में उनके प्रकाशक और व्यवस्थापक उनके पुत्र श्री विश्वप्रकाश जी को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करे । आर्य समाज के साधु सन्यासी और उपदेशको तथा भजनीको के प्रति मेरे हृदय मे बहुत उच्च स्थान है । साथ ही मै आर्य साहित्य के प्रकाशको और विक्रेताओ की सेवाओं को भी बहुमूल्य और आवश्यक मानता हूं । इलाहाबाद कमिश्नरी के ही एक जिला समाज के उत्सव पर दो तीन वर्ष हुए मैं गया हुआ था । उपदेशकों के भोजन सत्कार आदि की सभी उत्तम व्यवस्था थी । उपाध्याय जी के एक पौत्र भी उनकी पुस्तकें प्रचारार्थ लाये थे । जो उत्सव का ही एक अति आवश्यक अग है । बच्चे की लगन और आर्य साहित्य के प्रचार के प्रचार के प्रति उत्साह था । किन्तु अन्तिम दिन जब उस बच्चे का ७।।) रुपये भोजन का हिसाब हो रहा था तो मुझे कुछ शोभनीय नहीं जचा। हमें चाहिये कि हम आर्यसमाज के नत्रोदित साहित्कारों, प्रकाशकों और विक्रेताओं को भी वैदिक धर्म के अन्यतम प्रचारक और प्रसारक मानकर उन्हें सत्कृत और प्रोत्साहित करें । यह भी सच्ची श्रद्धांजलि होगी जिससे जीवित और मृत के दोनों का समान रूप से श्राद्ध होगा ।

## बहनों की बातें ( ६ )

बचपन में एक कहानी सुनी थी। एक था विशाल कांच का महल। उसमे भटकता हुआ कहीं से एक कुत्ता घुस आया। हजारो कांच के टुकड़ो मे अपनी शक्ल देख कर वह चौंका। उसने जिधर नजर डाली हजारो कुत्ते दिखाई दिये। उसने समझा कि ये सब कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे, और उसे मार डालेंगे। अपनी भी शान दिखाने के लिये वह भूकने लगा। उसे भी कुत्ते भूंकते हुए दिखाई दिये। उसकी ही आवाज की प्रतिध्वनि उसके ही कानो मे आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भूंका। सब कुत्ते अधिक जोर से भूंकते हुये दिखाई देने लगे। आखिर वह उन कुत्तो पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा, जोर, शोर से उछला, कूदा भूंका और चिल्लाया। अन्त मे गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद दूसरा कुत्ता उस महल मे आया। उसको भी हजारो कुत्ते दिखाई दिये। वह डरा नहीं, धार से अपनी दुम हिलाई। सभी कुत्तो की दुम हिलते दिखाई दी। वह खूब खुश हुआ और प्रसन्नता से उसकी ओर दुम हिलाते हुये आगे बढ़ने लगा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते आगे बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला कूदा। अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूंछ हिलाता हुआ चला गया।

फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन भारती घर पहुची हुई बालिका मण्डली के सम्मुख उपर्युक्त दृष्टात देते हुए सरला बहन ने उन्हे होली पर्व पर एकता, प्रेम, बन्धुता और समता की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न किया। सचमुच वसन्तोत्सव मनाना है तो समाज मे नया जीवन पैदा करके यह त्योहार मनाना चाहिए। अगर काम दहन करना है तो ब्रह्मचर्य व्रत, सरल जीवन धारण करके पवित्र बनाना चाहिये। होली के दिनो मे शहरो और गांवो की सफाई मे हम अपना समय बिता सकते है। लड़के कसरत करने और बहादुरी के मरदाने खेल खेलने मे तथा शराब के व्यसन मे फंसे हुये लोगो के मुहल्लो मे जाकर उन्हे व्यक्तिगत उपदेश देने का कार्य कर सकते है। होली का पर्व आत्म शुद्धि और नवजीवन का पर्व है। द्वेष की अग्नि को मिटाना होगा। जानती हो 'मनोरमा' आज हमारा पारिवारिक जीवन छिन्न-भिन्न हो गया है। पारस्परिक सद्भावना नष्ट हो गई है। भाई-बहन पिता पुत्र, माता बेटी आज एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी बन गये है। इसका कारण क्या है ? हम भी उन कुत्तो की तरह दुनिया रूपी इस कांच के महल मे घुस आये है। हमारे स्वभाव की छाया उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला' 'आप बुरे तो जग बुरा'

## वनिता विवेक

# परिवार सुखी कैसे हो?

★श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्का[र]
एम ए एल-टी, गोरखपु[र]

हमारे परिवारो मे और समाज मे निन्दा का दोष काफी दिखाई देता है। निन्दा सिर्फ पीठ पीछे जिन्दा रहती है। उससे किसी का भी लाभ तो नहीं होता परन्तु किसी व्यक्ति के विषय मे हम दूसरो की सम्मति या भावना खराब कर देते हैं। परिवार मे यह निन्दा का दोष एक दूसरे को लड़ाने मे बहुत सहयोग देता है। जो व्यक्ति निन्दा करता है उसका मुख और मन खराब होता है और जिसकी निन्दा या चुगली की जाती है उसकी कोई हानि नहीं होती। सन्त लोगो ने अपनी नैतिक शिक्षा मे जो बातें बताई है वहां 'पर स्त्री को माता के समान समझो' पराया माल न न छुओ, और किसी की निन्दा न करो' यह तीन बातें मुख्य हैं। मेरा अभिप्राय यह है कि परिवार मे प्रेम रखने के लिये पुरुषो की अपेक्षा हमारा कर्तव्य अधिक है और उसमे पहली बात निन्दा से बचने की है।

अपनी बात को बढाते हुये उन्होने कहा कि परिवारो मे साधारणतया प्रत्येक स्त्री यह अनुभव करती है कि जब मै बहू थी तो सास अच्छी नहीं मिली और जब मै सास बनी तो बहू अच्छी न मिली। जानती हो मधु, इसका कारण ? इसका सबसे मुख्य कारण अधिकार भावना है। अपनी इस अधिकार भावना की पूर्ति के साथ मनुष्य नहीं चाहता कि दूसरे भी इसके अधिकारी बनें। मै एक घटना तुम्हे बताती हू। एक अच्छे समृद्ध घराने के एक नवयुवक का विवाह हुआ। विवाह से पूर्व उस घर मे बड़ा स्नेह था। भोजन के बाद सब इकट्ठे होते, गप्प लगती, रेडियो सुनते, दिन मे साथ मिल कर खाते-पीते आनन्दमय वातावरण था। विवाह के बाद परिस्थिति बदली और वह नवयुवक अब परिवार के लोगो को छोड़ अपनी बीबी के घर में चला जाता वहीं खाना खाता, रात बिताता, सबेरे बिना किसी से मिले जुले वह अपने काम पर चला जाता। धीरे-धीरे इस व्यवहार के परिणाम स्वरूप ईर्ष्या, द्वेष, व्यग, कटाक्ष और खुला विरोध बढ़ा। सास बहू से बुरा भला कहने लगी, बहू ने उसकी आलोचना प्रारम्भ की। वास्तव मे दोषी कौन था ? विचार करने पर पता चलेगा कि स्त्री के आने से पूर्व जो परिवार मे आनन्द था उसका स्थान खाली हो गया। अर्थात् स्त्री ने आकर ऐसी न्यूनता पैदा कर दी जिस न्यूनता की पूर्ति के लिये वैमनस्य को आना पड़ा। और यह वैमनस्य सघर्ष का कारण बना। और इस वैमनस्य को रोकने मे स्त्री का पार्ट अधिक उपयोगी हो सक[ता] था। यदि वह स्त्री अपने आन[न्द] मे अपने माता पिता और भ[ाई] बहनो को सम्मिलित कर लेने [की] प्रेरणा दे देती तो यह दुखद प्र[ति]क्रिया न होती। इन दोनों [का] यह कर्तव्य था कि वे खाने मे च[ाय] मे, रेडियो सुनने और वार्तालाप [में] घर के अन्य छोटे मोटे कामो [में] घर वालो का साथ देते तो परि[]वार मे वैमनस्य न आता। य[ह] काम और उत्तरदायित्व पुरुष [की] अपेक्षा स्त्री का अधिक है। क्यो[ंकि] वही घर की स्वामिनी है।

पारिवारिक स्नेह के लि[ए] सघर्ष से बचने के लिए मनोवैज्ञा[]निक कारण को हम स्त्रियों [को] समझ लेना चाहिए। बहुत बा[र] सास अपनी हीन ग्रंथी ( इन्फि[रि]योरिटी कम्पलैक्स ) के कार[ण] आलोचना या विरोध करने लगत[ी] है। ऐसे समय उससे, सघर्ष करने [या] चिढाने लड़ने के स्थान पर उसक[ा] उत्तर न देकर उसके साथ इतन[ा] अच्छा व्यवहार करना चाहिए कि उसे नाराज होने का अवसर ही [न] मिले। उदाहरण के लिए घर [के] काम काज को सुचारु रूप से कर[ने] के कारण बहू की प्रशसा होते दे[ख] यदि सास ईर्ष्या करती है त[ो] बहू को सुष्टुता कारण अपनी सास को बताना चाहिये और श्रेय उ[से] ही देते रहना चाहिये। इससे कुछ बनता और बिगड़ता तो है नहीं [,] सास प्रसन्न भी हो जायगी।

सास को भी बहू की छोटी छोटी भूलो की उपेक्षा करनी चाहिये। दाल तरकारी मे नमक अधिक पड़ जाने, किसी वस्तु के गिर कर टूट जाने, किसी काम के समय पर न हो सकने पर बहू का अपमान न करना चाहिये। किसी भी अपराध के लिये सबके सामने उसे लज्जित करना उचित नहीं। बहू को सुघड और व्यवस्थित आलोचना या निन्दा से नहीं, सहानुभूति से बनाया जा सकता है। [ क्रमश. ]

# प्रस्ताव और सम्मतियाँ

# वेद रक्षा निधि

## एक योजना

★श्री पन्नालाल परिहार, श्री शारदा सदन, पावटा-ए जोधपुर

वर्तमान काल की विपरीत ग्रु मे वेद का केवल नाममात्र । पुस्तकस्थ विद्या शेष है । भारत थोडे से घरानो को छोडकर वेदपाठी ब्राह्मण कुलो मे वेद का ठन-पाठन लुप्त होता जा रहा है । भौतिक विज्ञान के कराल बवडर वेद ज्ञान उड जाने की गम्भीर ाशका है । अभी भी कुछ लोग द परम्परा के लकीर के फकीर ाने दिखाई देते हैं,परन्तु आनेवाली ोढ़ी के लोग इसे भी भूल जावेंगे ऐसा भयकर अनुमान है । हमारी ाचीनतम सस्कृति सभ्यता का आधार, ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, मानव स्तिष्क से ओझल होने वाला है ौर होता जा रहा है । हम चाहे कतनी दुहाई वेद प्रचार, रक्षा की , पर यह लोगो के गले नहीं उतरती । अत यदि इस अनुपम अमूल्य धरोहर वेद निधि को बचाना है तो निम्न प्रस्ताव पर ार्य बन्धु वेद प्रेमी अवश्य ध्यान देकर कार्य करे । अस्तु ! समय हते चेतें ।

### योजना

वेद रक्षा की योजना इस प्रकार है–

(१) वेद रक्षा निधि (कोष) बनाया जावे । उसमे पाच लाख रुपया एकत्र किया जावे ।

(२) यह कोष सार्वदेशिक सभा के सरक्षण मे ट्रस्ट रूप मे रहे ।

(३) इसके सग्रहकर्त्ता परिश्रमी, लगन वाले विद्वान् आर्य सज्जन हो । मेरे विचार मे पाँच सदस्य भारत मे भ्रमण कर इस राशि को एकत्र करे। मेरा प्रस्ताव इन व्यक्तियो का है–

१ श्री वीरसेनजी वेदश्रमी सयोजक
२ श्री युधिष्ठिर मीमासक
३ श्री भगवानस्वरूप न्यायभूषण
४. श्री धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड
५ श्री सत्यानन्द वेद वागीश

(४) इनके भ्रमण का व्यय सार्वदेशिक सभा वहन करे ।

(५) एक वर्ष में उक्त राशि एकत्र होनी चाहिये ।

(६) धन का उपयोग.—

एकत्र राशि का उपयोग इस प्रकार सार्वदेशिक सभा के निर्देश अनुसार हो ।

(१) उक्त पाच सज्जन अथवा दो तीन ही देश भर मे विशेषत: बनारस, महाराष्ट्र, बम्बई, मद्रास और गुजरात मे वेदज्ञ घरानों के प्रतिष्ठित वेदपाठी पडितो से सम्पर्क स्थापित करे और

(२) वेद का सस्वर टेप रेकार्ड करे ।

(३) टेप रिकार्डिंग का विशेषज्ञ इस दल के साथ मे रहे ।

(४) टेप रिकार्ड फिल्म, मशीन का व्यय पहले से ही अनुमानित हो ।

(५) गुजरात मे सामवेद, गायन सस्वर पाठ, अब भी कुछ घरानो मे होता है ।

(६) महाराष्ट्र मे ऋग्वेद का सस्वर पाठ, जटा, माला दण्ड ध्वजा आदि प्रणाली से होता है ।

(७) यजुर्वेद का पाठ बनारस और उत्तर प्रदेश के कई स्थानो मे उपलब्ध हो सकता है ।

(८) अथर्ववेद का प्रचलन बहुत थोड़ा है, वह भी केवल महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ अथर्व वेद शौनक, पिप्लाद घरानों मे है।

(९) इदौर के श्री प० वीरसेन वेदश्रमी ने प्राचीन परम्परानुसार बड़े परिश्रम से मन्त्रो के उच्चारण का अभ्यास विविध प्रकार से किया है । उनका प्रदर्शन स्थान-स्थान पर होता रहता है । साथ ही उन्होंने वृष्टियज्ञ की योजना भी हाथ मे ले रखी है । तथा कई परीक्षण भी किये हैं । लोग साथ देवें तो बहुत देश व्यापी उपयोगी कार्य हो सकता है । इसी प्रकार अब भी कई वेदपाठी मिल जावेंगे । जल्दी करो वरना यह पीढ़ी भी अन्तरध्यान हो जावेगी, तो वेद का सस्वर सुनना सुनाना दुर्लभ या असभव हो जायेगा । स्वर्गीय शास्त्रीय सगीत मार्तण्ड श्री ओकारनाथ ठाकुर ने कुछ वेद मन्त्रो का साम गान के रूप मे अभ्यास व प्रदर्शन किया था, परन्तु यह विद्या भी दिवगत विद्वान् के साथ चली गई । भगवान् न करे ऐसा ही हमारे साथ फिर न हो ।

(१०) अत सामवेद का गायन तथा सम्भव रिकार्ड करा लिया जावे ।

(११) रेकार्डो की विक्री भी खूब होने की आशा है । व्यवसायी लोग आगे आवेगे । धर्म प्रेमी वेद ध्वनि सुनकर प्रत्येक घर मे अहोभाग्य समझेंगे ।

(१२) समस्त वेदमन्त्रो (सहिता) का पूर्ण रेकार्ड कोष ( सार्वदेशिक सभा ) दिल्ली मे रहे । जहा से डुप्लीकेट रिकार्डिंग तैयार होते रहेगे और प्रचारित होगे । यह भी व्यवसाय रहेगा ।

(१३) सर्व प्रथम तो बात यह है कि इस वेदोद्धार पुनीत योजना को आगे बढ़ाने के वाले पाँच वीर आगे आवें । जैसे गुरु गोविन्दसिह के सामने पाँच प्यारा आये थे । क्या आर्य जगत् मे है कोई व्यक्ति जो इस बीड़े को उठावे । क्या किसी आर्य प्रेमी वेद प्रेमी मे कुछ जोश बाकी है ? अथवा केवल कृण्वन्तो विश्व मार्यम् का नारा लगाना ही पर्याप्त समझते हैं ? कहने को तो आर्य समाज का नियम पाठ होता है कि वेद का पढना-पढ़ाना सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है । परन्तु अब परीक्षा की घड़ी आई है । कोई माई का लाल आगे आवे तो जानें । अधिक क्या कहे ।

( १४ ) विशेष— शास्त्रीय सगीतज्ञो द्वारा वेद मन्त्रो मे चुने हुये वेद मन्त्रो को वर्त्तमान राग-रागिनियो मे गवाया और रेकार्ड कराया जावे । इससे वेद प्रचार होगा । यह स्थायी साहित्य का काम देगा । अब प्राचीन साम वेदीय गान को नारदीय पद्धति से हाहू-हाहू करना वृथा है । वह विद्या तो लुप्त हो चुकी है । ऐसा हमारा अनुमान है । खेद का विषय है । धर्म सकट है । भगवान् रक्षा करे ।

# "ओ३म्-ध्वज"

★

एक नहीं अरबो हाथो मे, लेकरके फहरायेंगे।
ओ३म् विश्व का प्यारा झडा, ले नभ मे लहरायेंगे ॥ १ ॥

इस झडे को लिये हाथ मे,
सबको राह दिखा दूँगा।
वेदो के पथ पर चलने को।
सबको आज सिखा दूँगा।
दयानन्द-सन्देश लिया हू।
आया विश्व जगाने को ॥
कायरता, छल-दम्भ द्वेष को।
जग से दूर भगाने को ॥

इस झडे के लिये आर्य जन, जीवन-पुष्प चढ़ायेंगे।
ओ३म विश्व का प्यारा झडा, ले नभ मे लहरायेंगे ॥ २ ॥

पौराणिक-पाखड देश से,
मिलकर आज हटाना है ॥
ऋषिवर की वाणी को लेकर।
गीत बना कर गाना है ॥
इस प्यारे झडे के नीचे।
आर्य दल मिल आ जाओ ॥
उठो-उठो ऐ दुनियाँ वालो।
मिलकर वेद-गीत गाओ ॥

हो तिब्बत् जापान देश या भारत मित्र कहायेंगे।
ओ३म् विश्व का प्यारा झडा, ले नभ मे लह[illegible] ३

इस पावन झडे के नीचे,
दयानन्द बलिदान हुआ ॥
उसी तपस्वी के कारण।
यह सारा [illegible] जहान हुआ।
गले-गले मिल जाओ आकर,
गीत खुशी से गाते है ॥
इस झडे का [illegible]
'हिमकर' [illegible] है ॥

जन-जीवन की सेवा करके, आर्यसमाज [illegible]।
ओ३म् विश्व का प्यारा झडा ले नभ मे लहरायेंगे। ४ ॥

—ब्र० प० धर्मेन्द्रकुमार "हिमकर"

## वेदोपदेश

# वेद ज्ञानदाता ईश्वर की उपासना करो

**सखायो ब्रह्मवाहसेऽर्चत प्र च गायत।**
**स हि नः प्रमतिर्मही ॥ ऋग्वेद ॥**

पदार्थ—हे (सखाय) मित्रो! (ब्रह्मवाहसे) वेद और वैदिक ज्ञान के धारण करने वाले, तथा उन वेदो को हमारे कानो तक पहुचाने वाले परमात्मा की (अर्चत) स्तुति प्रार्थना रूप पूजा करो (च) और (प्रगायत) उसी प्रभु का गान करो (हि) क्योकि (स) वह जगदीश हमारा (प्रमति) सच्चा बन्धु है, अथवा वह परमात्मा ही हमारा (महीप्रमति) बडी बुद्धि है।

**पद्यानुवाद—**

॥ इन्द्रविजय भगणात्मक छन्द ॥

[ १ ]

मान सखा! प्रभु विश्व विनायक,
हेतु सभी जग वेद रचाये।
धारण-ज्ञान किये ऋषि पावन,
लेकर वैदिक ज्ञान सुनाये ॥
है सब के सद-धर्म यही जन,
धार चले तब सो मति पाये।
माता-पिता प्रभु बन्धु सखा प्रिय,
गायन के वहि योग्य कहाये ॥

[ २ ]

देव सभी मिल गान करे
परमेश्वर पालिक पूज्य वही है।
होय परायण भक्ति करे सद,
सो वर सज्जन जान सही है ॥
ईश्वर भक्ति बिना कवि-कोविद,
[illegible] वैदिक ज्ञान नही है।
हे नर! अर्चत देव वही प्रभु,
जासु कृपा वर बुद्धि लही है ॥

कवि—कस्तूरचन्द 'घनसार'

## ब्रह्मदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अखिल ब्रह्मदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का चतुर्थ महा सम्मेलन १ मई से ३ मई १९६९ माडले मे सम्पन्न होना निश्चित हुआ है। इस शुभावसर पर आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। यदि आना सम्भव न हो सके तो अपने शुभ विचार तथा आशीर्वाद द्वारा हमारे इस सम्मेलन को सफल बनाने मे सहायक होने की कृपा करें।

—डाक्टर ओ३म्प्रकाश, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा वर्मा रगून

## मोहन आश्रम हरिद्वार में ऋषिमेला

दि० ८ से ११ अप्रैल १९६९ तक प्रतिवर्ष की भाँति ऋषि मेला से उत्सव मनाया गया।

नित्य पावन वेद मन्त्रो के साथ महात्मा आनन्द भिक्षु जी की अध्यक्षता में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आश्रमाध्यक्ष महात्मा आनन्द स्वामी, प० रुद्रदत्त शास्त्री देहरादून, प० शिवदयालु, जी प० सुखदेव विद्यावाचस्पति, ज्ञानी पिण्डीदास जी व प० ऋषिराम जी बी ए. आर्य मिश्नरी, आचार्य बृहस्पति जी के भाषण व प्रवचन हुए तथा ब्र. महेशचन्द्र जी ने मधुर सगीत प्रस्तुत किये।

—शिवदयालु

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ की ओर से ४ अप्रैल से तहसील अतरौली के ग्रामो मे प्रति दिन वैदिक धर्म का प्रचार किया जा रहा है। यह क्रम १ मई तक चलेगा। —मन्त्री

—आर्यसमाज कालपी ने झाँसी के दैनिक जागरण के सचालक श्री जयचन्द जी आर्य की धर्मशीला धर्म पत्नी के देहावसान पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया है। —उपमन्त्री

—आर्यसमाज पुनपुन [पटना] का उत्सव २ से ५ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया गया। -मन्त्री

—आर्य साधु वैदिक साधन आश्रम पो० लाडवा (करनाल) का १४ वां वार्षिक उत्सव ४ अप्रैल से ८ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। —स्वामी अभयानन्द

—आर्यसमाज किशनगज [मिल एरिया दिल्ली का उत्सव ३० मार्च से ६ अप्रैल तक समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर निम्न विद्वानो ने प्रवचनो एव ओजस्वी सारगर्भित भाषणो से इस क्षेत्र के आर्यजनो को महान् लाभ पहुचाया और वेद के प्रचार, प्रसार मे महान् योग दिया जिनके हम आभारी है।
प. श्री शिवकुमार शास्त्री एम पी
प „ ओमप्रकाश त्यागी „
अचार्य विश्वश्रवा एम ए वेदाचार्य
„ प० वैद्यनाथ शास्त्री एम ए
प्रो० श्यामराव जी एम० ए०
प्रो० रत्नसिह एम०ए०
प श्री सत्यपाल शास्त्री एम ए
प श्री विश्ववर्धन वेदालकार
प श्री रमेशचन्द्रशास्त्री दर्शनाचार्य
प श्री पुरुषोत्तम एम ए आदि

—सिरोबी (फर्रुखाबाद) के सेठ लाला रामनारायण जी के सुपुत्र चिरजीव विनोदकुमार जी का विवाह लाला बाबूरामजी ग्राम विधूना की सुपुत्री श्री ओमकुमारी के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। विवाह सस्कार प० विद्याराम जी शास्त्री जी ने वैदिक विधि से कराया, सेठ जी ने २१) विधूना आर्यसमाज को दान दिये। —मन्त्री

—आर्यसमाज विधूना [इटावा]
प्रधान-श्री सेठ बद्रीप्रसाद गुप्त
उपप्रधान-श्री गगाचरण सर्राफ
मन्त्री-श्री वैद्य पुरुषोत्तम देव
उपमन्त्री-श्री सतोषकुमार अध्यापक

—अखिल भारतीय स्नातक मण्डल गुरुकुल कागड़ी
प्रधान-श्री प्रो वेदव्रत वेदालकार
उपप्रधान-श्री शान्तिस्वरूप मेहता
„ श्री रामेश्वर स्नातक सिद्धान्तालकार
मन्त्री-डा० निरूपण विद्यालकार
उपमन्त्री-श्री विनोदचन्द्र „
„ श्री जयदेव वेदालकार
कोषा -श्री बलदेव आयुर्वेदालकार

समारोह के अन्त मे वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् वयोवृद्ध स्नातक तथा मण्डल के भू पू उपप्रधान श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने नव निर्वाचित अधिकारियो के प्रति शुभ-कामनायें प्रकट कीं।

—डा निरूपण विद्यालकार मन्त्री

—आर्यसमाज हाथरस
प्रधान-श्री सुरेशचन्द्र वैद्य
उपप्रधान-श्री बालमुकन्द दीक्षित
„ „ होमदत्त व्यास
मन्त्री-श्री किशोरीलाल भटनागर
उपमन्त्री-श्री लक्ष्मीचन्द्र शर्मा एम ए
„ „ ओमप्रकाश गुप्ता
„ „ लक्ष्मीनारायण शर्मा
कोषा-रघुनन्दन शर्मा वैद्य शास्त्री
पुस्तकाध्यक्ष-श्री विजयदेव शर्मा
निरीक्षक-श्री राधारमन दोबारावाल

—आर्यसमाज हरदोई
प्रधान-श्री प० रघुनन्दन जी शर्मा
उपप्रधान-श्री डा० पूर्णदेव जी
„ „ „ केशवदेव पाडिया
मन्त्री-श्री रामेश्वरदयाल [शुद्धि]
उप मन्त्री-श्री कु आदित्यविक्रमसिह
„ श्री प्रकाशचन्द्र शुक्ल
कोषाध्यक्ष-श्री प० आर्य्य चन्द्र
पुस्तकाध्यक्ष-श्री कैलाशनाथ मिश्र

—आर्यसमाज रुदौली
अध्यक्ष-श्री मुकटबिहारीलाल
उपाध्यक्ष श्री पाटनदीन
मन्त्री-श्री देवेन्द्र शर्मा
मुख्य उपमन्त्री-श्री प० दुर्गाप्रसाद भट्ट
उपमन्त्री-श्री राजाराम
कोषा-श्री शिवशरणदास

—महिला आ. स दयानन्द-नगर गाजियाबाद
प्रधाना श्रीमती सत्यवती जी
उपप्रधाना- „ सरस्वती देवी जी
मन्त्रिणी- „ इन्द्रावती जी
उप मन्त्रिणी-„ शकुन्तलादेवी जी
कोषा - „ विद्यावती जी
पुस्तका. - „ शान्ता जी

---आर्यसमाज मनियर बलिया
प्रधान-श्री विन्ध्याचललाल
मन्त्री-श्री रामजीप्रसाद गुप्त
उपमन्त्री-श्री उदयवीरप्रसाद गुप्त
कोषा-श्री रामेश्वरप्रसाद आर्य

---जिला आर्य उपसभा मीरजापुर
प्रधान-श्री आशाराम जी पांडेय
उपप्रधान-श्री रमाशकरसिह वकील
„ -श्री हीरालाल शर्मा
मन्त्री-श्री बेचनसिह जी
उपमन्त्री-श्री शिवमन्दिरसिह
„ - „ हीरालाल वर्मा
कोषा - „ मोहनसिह
प्रचार मन्त्री-श्री सूर्यदेव शर्मा
निरीक्षक-श्री यज्ञनारायणसिह
----बेचनसिह मन्त्री

--आ स थाना दरियावगज [एटा]
प्रधान-श्री मुन्नालाल जी
उपप्रधान--श्री रामप्रकाश जी
मन्त्री-श्री अशर्फीलाल जी
उपमन्त्री-„ रामचन्द्रजी
कोषाध्यक्ष-श्री रामेश्वरदयाल जी
—मन्त्री

—आर्यसमाज उस्का बाजार जि० बस्ती का ३३वा वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ अप्रैल सन् १९६९ ई. को समारोहपूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

## आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

दिनांक ९-४-६९ को आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री बृजविहारी जी की अध्यक्षता मे हुई साधारण सभा मे सर्वमतेन प्रस्ताव –

आर्य सन्यासियो, वानप्रस्थो एव साधको की प्रमुख धार्मिक संस्था, पटना विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन मे पुरी मठाधीश्वर श्री शकराचार्य जी के अध्यक्षीय भाषण तथा अ० भा० राम राज्य परिषद् के संस्थापक श्री स्वामी करपात्री जी के वक्तव्य मे प्रकाशित अस्पृश्यता सम्बन्धी हिन्दू शास्त्रो की तथा कथित मान्यता का घोर विरोध करती है।

हिन्दू धर्म के सर्व सम्मत प्रधान धर्म ग्रन्थ वेद हैं। तथा उनके प्रकाश मे ऋषियो द्वारा लिखित ब्राह्मण, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्र हैं। वेदों तथा इन वैदिक शास्त्रो मे अस्पृश्यता (छूत-छात) जात-पांत तथा जन्म मूलक वर्ण भेद के लिये लेशमात्र भी स्थान नहीं है।

ऋग्वेद मे स्पष्ट लिखा है "अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ऐतेसभ्रातरो वावृधु. सौभगाय। युवा पिता स्वपारुद्र एषा सुदुघा पृश्नि सुदिना मरुद्भ्य ॥' अर्थात् सब मनुष्य आपस मे भाई-भाई हैं। उनके जन्म, देश, रग आदि के कारण कोई छोटा बड़ा नहीं इत्यादि।

इसी प्रकार यजुर्वेद मे 'यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य ब्रह्म राजन्याभ्या शूद्रायचार्याय च स्वाय चारणाय च।' अर्थात् कल्याणी वेदवाणी का उपदेश परमात्मा की ओर से बिना किसी भी भेदभाव के ससार के सर्व मानवो के लिये है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र तथा जगली जातियो आदि सबके लिए वेद पढ़ने और इस निमित्त यज्ञोपवीत धारण करने, पञ्च यज्ञ व षोडश सस्कार करने का समान अधिकार है।

'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ता' यहां पर भी वेद मे ससार के सब प्राणियो को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश है। किसी के प्रति जन्म, जाति, देश रग, के आधार पर घृणा करना या किसी को अस्पृश्य समझना पाप है।

वेद मे स्पष्ट सबको समान रूप से खान-पान आदि व्यवहार करने का आदेश है। यथा समानि प्रपा सहनो अन्नभोग०।

मध्यकाल मे कुछ नासमझ पन्थई स्वार्थी लोगो ने अपने मनमाने स्मृति आदि ग्रथ रचकर आर्य हिन्दू जाति के माथे पर यह छूत-छात, ऊँच-नीच का कलक लगाया है।

आज के इस बुद्धिवाद के युग मे इन कलुषित पन्थई ग्रन्थो को मान्यता देना और इनको धर्म शास्त्र के नाम से पुकारना कट्टर पन्थी विवेक शून्य हिन्दू जनो का दयनीय एव भर्त्सनीय कृत्य है।

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) पुरी के शकराचार्य जी तथा श्री स्वामी करपात्री जी से अनुरोध करता है कि वह अपने इन धर्म, समाज एव राष्ट्र विरोधी वक्तव्यों पर वैदिक शास्त्रो के प्रकाश मे एक बार गम्भीरता पूर्वक निष्पक्ष होकर विचार करें और आर्य हिन्दू जाति को ससार की दृष्टि मे अधिक हास्यास्पद बनाने की भयकर भूल न करे। इस प्रकार की भयकर भूलो के परिणाम (देश की पराधीनता एव विभाजन) आर्य हिन्दू जाति पहले ही बहुत भुगत चुकी है।

यह आश्रम भारत सरकार तथा विचारशील जनता मे अनुरोध करता है कि वह श्री शकराचार्य जी तथा श्री करपात्री जी को विवश करे कि वह इन अपने विषैले वक्तव्यो के लिये क्षमा मांगते हुवे स्पष्ट रूपेण इन्हे वापस ले, और उचित प्रायश्चित्त करे और यदि वह अपना हठ धर्म न छोडें तो इनके विरुद्ध निश्चय कडी कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिये।

–ज्योतिप्रसाद, मन्त्री

श्रीयुत 'वसन्त' जी, नमस्ते!

'वेद वारिधि' उपाधि प्राप्त करने के उपलक्ष मे मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आपकी वेद व्याख्यायें अत्यन्त रोचक, ज्ञान वर्धक एव स्वाध्याय योग्य होती हैं। सामान्य पाठक भी इनको पढकर वेद के अभिप्राय को समझने मे सफल हो जाता है। अस्तु!

–डा० भवानीलाल भारतीय एम ए पी-एच-डी
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गवर्नमेन्ट कालेज
पाली [ राजस्थान [

श्रीमान् मन्त्री जी, सादर नमस्ते!

श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' जी के हम लोग बडे आभारी हैं कि उनके 'आर्यमित्र' मे आध्यात्मिक विषय बडे महत्त्वपूर्ण व सच्चे आर्य बनाने के लिये उपयोगी हैं। ऐसे विद्वानों से ही आर्यसमाज का उत्थान हो सकता है। आशा है कि वे जल्दी ही सन्यास लेकर स्वा. दयानन्द जी की तरह देश में वैदिक नाद बजाकर फिर से ठडे लोहे को गर्म करके विश्व का उद्धार करेंगे और गुरुकुलो मे से हर साल कम से कम एक ब्रह्मचारी जो आजन्म ब्रह्मचर्य रहकर वेद पढ़कर ससार का उपकार करे यह मेरी हार्दिक भावना है। जिसे न मालूम ईश्वर कब पूरा करेंगे। आपसे ऐसी आशा कर रहा हूं कि ऐसी कोशिश करेंगे और विद्या सभा को चेतावेंगे। मेरी भावना को प्रसार करने मे योग देंगे।

–सोनपाल आर्य कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज इगलास

## कहानी कुन्ज

[पृष्ठ १५ का शेष]

कर्षन-सुनो देवी ! अमुक गाँव की एक १५ वर्षीय कौशिक ब्राह्मण की बालिका है, बहुत सुशील बुद्धिमती, मेधावती, चरित्रवती, कार्य कुशला, सुशिक्षिता कन्या है। आज ही मुझे लडकी का पिता मिला था। उसने मुझसे लडकी का विवाह मूलशंकर से करने को कहा। उन्होंने मूलशंकर को देख भी रखा थी। मैने २० वर्ष बताया। [मूलशंकर सहसा दीवार के पीछे खडे होकर सब बाते सुन रहा था] बोलो देवी विवाह की सम्मति ठीक है न ?

यशोदा--हाँ पतिदेव ! बहुत सुन्दर अवसर है इस अवसर को हाथ से न जाने दीजिये अब शीघ्र ही एक दो मास मे विवाह कर दीजिये। चलो प्यासों की प्यास बुझी। बुढ़ापे के सहारे के मिलने की आशा हुई परमात्मा जो करता है सो ठीक ही करता है।

मूल -[स्वगत] ओहो! माता जी,पिताजी तो परस्पर मेरे विवाह करने की ठान रहे हैं अब क्या करना चाहिये ? अब यही उचित है कि शीघ्र ही भाग जाऊँ अन्यथा फिर बन्धन मे पड़ जाऊँगा। और बन्धन मे पड़कर विवाह करके भागूंगा तो बेचारी अबला लडकी का जीवन बरबाद हो जावेगा। अतः शीघ्र ही भाग जाना उचित है। [घर मे प्रवेश करते हुये]

पिता जी!—आज आपसे एक प्रार्थना करता हू क्या आप स्वीकार करेंगे ?

कर्षन—कहो बेटा ! सामर्थ्यानुसार अवश्य तुम्हारी इच्छा पूर्ति करूँगा।

मूल०—पिता जी मुझे काशी पढ़ने भेज दीजिये, सुना है काशी विद्या का केन्द्र है। बडे-बडे धुरन्धर विद्वान् वहाँ रहते है। मै वहाँ भली भाँति विद्या ग्रहण कर सकूगा।

कर्षन—सुनो बेटा ! तुम यहीं पढ़ो, हमे तुम से नौकरी कराना तो है नहीं, जो अधिक पढावें अपने जीवनोपयोगी शिक्षा तो यहीं पढ़ लोगे। और सुनो हम तुम्हारे लिये अमुक गाव के विद्यापति की लडकी से विवाह तय कर आये हैं, वह मानता नहीं जल्दी कर रहा है। और हमारा भी कर्तव्य है कि तुम्हे शिक्षा दिलाकर तुम्हारा विवाह करदें।

मूल०—[पिता के चरणो पर गिरकर] पिता जी चाहे काशी न भेजिये, मै यहीं पढूगा, परन्तु आप अभी विवाह न कीजिये। एक वर्ष परीश्रम से पढ़ लेने दीजिये, फिर आप जो चाहे सो करे, अब आपकी इच्छा।

कर्षन—अच्छा बेटा ! मै कार्य से बाहर जा रहा हू। मै लडकी के पिता से एक वर्ष रुकने को कह दूँगा। [चले जाते हैं]

मूल०—[स्वगत] अब दो-तीन दिन मे ही भाग जाना चाहिये अन्यथा विवाह के बन्धन मे पड़ जाऊँगा, अभी न करूँगा एक वर्ष बाद विवाह करेंगे बस ! मैने अपना निश्चय कर लिया।

[ २ ]

[राजपुरुष- चारों ओर मूलशंकर का अन्वेषण कर रहे है। मूलशंकर एक मन्दिर के समीप वर्ती वट वृक्ष पर छुपा हुआ है, कर्षन जी पुत्र के अभाव मे शोक से व्याकुल एव क्रोध से लाल हो रहे हैं]

कर्षन—[राजपुरुषो से] क्या तुम्हारी आखें फूट गई थीं, जो वह कुल कलंकी भाग गया। यह सब तुम्हारी लापरवाही है। तुम अपने कर्त्तव्य का पालन भी नहीं कर सकते हो, हराम का माल ही खाना जानते हो ? लज्जा नहीं आती ? परसों ही तो सिद्ध पुर मेले से पकड कर उसे लाये थे। बेचारे रामनाथ वैरागी की दया से उसे खोज पाया था, अब तुमने लापरवाही कर भगा दिया ? खोजो उसे जल्दी से !

राजपुरुष—[परस्पर] बन्धु ! सारी गलती कर्षन तिवारी की है। अपने लडके पर स्वय नियन्त्रण रखता नहीं, हम पर आज्ञा चलाता है, लडका माने कैसे नही ? अच्छी अच्छी तरह मरम्मत करदे तो अकल ठिकाने आ जावे। (मन्दिर के समीप पहुचते हैं) यहाँ भी तो नहीं [मन्दिर मे प्रवेश करते हैं] यहाँ भी नहीं, अब कहाँ खोजें ! चलो कहीं अन्यत्र चलते हैं [चले जाते हैं]

मूल०—[कर बद्धाञ्जलि प्रभु से प्रार्थना करते हुये] ए करुणागार दीनदयाकर, पतित पावन, विद्यार्क प्रकाशक परमात्मन् ! आपने मुझ पर महती कृपा की जो इन राजपुरुषो ने ऊपर नहीं देखा, अन्यथा आज न जाने मेरी क्या दशा होती। प्रभो ! मुझे अपने अभीष्ट मार्ग का दिग्दर्शन करो पिता ! अब आपकी ही शरण मे हू। [आकाशवाणी 'आत्मा की आवाज'] 'अभी बहुत कष्ट सहने पड़ेंगे, भूखा भी रहना पड़ेगा, बडे बड़े जानवरो, अनेक यातनाओ का सामना करना पड़ेगा, तुम्हारे अभीष्ट कार्य मे अनेक विघ्न आवेंगे, जब तू अपने पथ से विचलित न होगा तब तुझे अपना अभीष्ट मार्ग मिल जावेगा। कष्ट सहिष्णुता की सामर्थ्य है ? यदि हो तो आगे कार्य क्षेत्र मे पाव रख वरन् घर चला जा।

मूल०—अरे यह कौन ऐसी सारी बातें मुझसे कह रहा है यहाँ तो कोई नहीं। ए परम शक्ति ! मै तुम्हे तो जानता नहीं, तुम कौन हो ? जो मुझसे ऐसी बातें कह रही हो, तुम्हे प्रणाम है। मुझे अपने इष्ट मार्ग की प्राप्ति कराइये। [प्रभु चिन्तन करते हुए सायकाल हो जाता है। मूल सुबह से भूखा है, परन्तु फिर भी 'न्याय्यात्पथ प्रविचलति पद न धीरा' के अनुसार वृक्ष से उतर कर चल देता है] पटाक्षेप

(गतांक से आगे)

[ मूलशंकर के चाचा कई दिनों से बीमार है। आज उनके जीवन का अन्तिम दिन है। मृत्यु से पूर्व मनुष्य की स्मृति एक बार साफ हो जाती है। नानाप्रकार के जीवन भर के कृत कर्म एक-एक कर चल चित्रवत् सामने आ जाते हैं। वही दशा मूल के चाचा की है। ]

चाचा—दयाल ! आओ मुझे मेरे समीप बैठ जाओ। तुमसे कुछ बाते कर लूं प्यार कर लूं। बेटा मूल ! आज मेरे जीवन का अन्तिम दिन है, डाक्टर बेचारे औषधि करते-करते हार गये। अब परमपिता कैलाशपति शंकर की यही इच्छा है कि जिस प्रकार द्विज पुराने यज्ञोपवीत को त्याग कर नया धारण कर लेते हैं वैसे ही मैं यह शरीर त्यागकर नया धारण कर लूंगा।

मूल०—चाचा जी ऐसी बाते आप क्यो करते है। शास्त्र तो मनुष्य की आयु १०० वर्ष तक बताते हैं, फिर अभी तो आपकी आयु ४०-५० वर्ष की ही है, अभी कहाँ आपका शरीर पुराना हो गया अशुभ शंका न कीजिये चाचा जी!

चाचा—तुम्हारी बात सत्य है बेटा तथापि रोगग्रस्त होने से शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। आजा मुन्ना समीप आजा तुझे प्यार कर लूं। ( मूलशंकर पास मे खिसक जाता है) हाँ, अब ठीक है ( कपोल चुम्बन कर शिर पर हाथ फेरते है फिर रोने लगते हैं )।

मूल०—चाचा जी क्यो रोते है, क्या तकलीफ हो रही है ( मूल चाचा के आंसू पोंछता है) डाक्टर को बुला लाऊँ ? (परिवार के सब लोग उदासीन बैठे हैं। )

चाचा-बैठे रहो मुन्ना ! कोई कष्ट नहीं और यदि है भी तो उसे डाक्टर ठीक नहीं कर सकता। मनुष्य अकेला ससार मे आता है अकेला ही जाता है अपनी भोग विलास सामग्री की प्राप्ति के लिये प्राणपण से धन कमाता है और

## एकांकी—

# अमरत्व की खोज

ईश्वर का नाम तक नहीं लेता अन्त मे मृत्यु समय पछताता है। केवल मनुष्य का कर्म ही जीवात्मा के साथ जाता है।

[ उदासीनता मे गाते हुए ]

प्रभु से माँग तू ही,
देगा वरदान वही,
नाम समदर्शी रखा,
शिव है सबका सखा ॥ टेक
पाप, पाखण्ड छोड,
मिथ्या भाषण को छोड।
कटु वाणी को छोड,
मृदु वाणी को बोल ॥
सद उपदेश बोल,
मिथ्या पथ पोल खोल,
समय तेरा अनमोल,
प्रभु भक्ति रस घोल ॥
भक्ति रस पान किया,
शिव है सब का सखा ॥
प्रभु से०

मूल०—हाँ चाचा जी इस ससार मे दुःख ही दुःख है कुछ भी सुख नहीं आप सत्य कहते हैं चाचा जी !

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे,
नारी गृहे द्वार जनो श्मशाने।
देहश्चितायां त्वयिवीत चिन्त
[illegible] जीव एक ॥

चाचा—( परिवार के लोगो को देखकर ) अच्छा बेटा मूल ! महान ! [illegible] ! अच्छा भाई ! अच्छा बच्चो ! ( ऊँचे स्वर मे ) शिवायोनम

( प्राण निकल जाते है )

( सब रोने लगते हैं। रोने की आवाज सुनकर सब निकटवर्ती पडोसी आगन मे आ जाते है, मृत्यु समाचार सारे गाव मे फल जाता है )

# कहानी-कुञ्ज

चार दिन का ये मेला,
दुनिया एक झमेला।
जाता जीव अकेला,
कर्म साथ धकेला।
आया था तू अकेला,
जायेगा भी अकेला।
शुभाशुभ तेरे साथ,
कर्म जाता अकेला ॥
शुभ तू कर्म कमा,
जीवन उच्च बना ॥
प्रभु से० ॥
शरण उसकी रहेगा,
भक्ति उसकी करेगा।
आज्ञा उसकी मानेगा—
दुख सारा टलेगा।
पाप-पुण्य करेगा,
प्रभु न्याय करेगा।
इच्छा पूर्ति करेगा,
वही प्यार करेगा ॥
प्रभु को याद करो,
पर पीड़ा को हरो ॥
प्रभु से० ॥

एक व्यक्ति—बड़ा बुरा हुआ। बेचारे कर्षन जी की लडकी का देहान्त एक वर्ष पहले ही हुआ था कि अब इसके भाई को भी काल ने आ दबोचा। बेचारे कर्षन जी के परिवार को भगवान् न जाने इतना क्यो दुःख दे रहा है (गोपाल और प्रतिवेशी के भी आंसू आ जाते हैं )

गोपाल०—( आंसू पोंछकर प्रतिवेशी मे ) देखो यह बेचारा मूलशंकर कितनी देर से रो रहा है इसकी आखें भी फूल गई।

एक वृद्ध—सुनो भाई अब रोने से क्या होना है जो होना था सो हो गया भगवान की ऐसी ही मर्जी थी, उसके नियम को कौन टाल सकता है ? अर्थी बनाओ अब बिचारे के शरीर का ठीक प्रकार से दाह कर दे भगवान् उसकी आत्मा को अच्छी योनि मे जन्म दे। उसकी आत्मा सुखी हो। बड़ा भला आदमी था बिचारा।

सब—(अनेकों मनुष्यो की भीड़ अर्थी के पीछे पीछे जाते हुए) सभी बोलो मु[illegible] शिव नाम सत्य है ! ! ! ( [illegible] स्थान पर ही बैठा है। )

मू० ०—(आंसू पोंछकर स्वगत अब घर मे नहीं रहना चाहिये चारों ओर दुःख ही दुःख है जब तक शरीर मे [illegible] तभी तक शिव का पता लगाना अमर होने का मार्ग ढूंढना [illegible] छोड भाग जाना चाहिये, परन्तु [illegible] किस प्रकार [illegible] सिद्धार्थ की तरह [illegible] उचित है।

( तृतीय दृश्य समाप्त )

—श्री प० [illegible] आर्य शास्त्री पोलायकलां, जि० शाजापुर म प्र.

### चतुर्थ दृश्य

( मूलशंकर अब इन दो घटनाओ को देखकर हर समय घर से बाहर रहकर भागने का प्रयत्न करता है। [illegible] पुत्र की इस स्थिति को देखकर चिन्ता मग्न हैं इसीलिये [illegible] विवाह की तैयारी में लगे हुए है जिससे मूलशंकर बन्धन मे पड़कर घर से भाग न सके )।

कर्षन-[ अपनी पत्नी से ] देवी [illegible] कहाँ गया है ?

यशोदा—पता नहीं कहीं बाहर ही गया है।

कर्षन—[illegible] मै बहुत परेशान हो [illegible] अब मै लडके का विवाह [illegible] उचित समझता [illegible] क्योंकि [illegible] तो बिल्कुल [illegible] हो गया है। विवाह हो [illegible] पड [illegible] ही [illegible]।

यशोदा—[illegible] जी आप कह रहे हैं [illegible] दिनो से विचार कर रही [illegible] हमारा सबसे बड़ा पुत्र [illegible] का एकमात्र सहारा [illegible] कृपा से अपन पास [illegible] जैसे भी [illegible] हम देखते हुवे [illegible] सकेंगे।

[शेष पृष्ठ १४ पर]

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल.–६०
वैशाख ७ शक १८९१ वैशाख शु० १०
[दिनाङ्क २७ अप्रैल सन् १९६९]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

## अमृत वर्षा

### महर्षि दयानन्द ने कहा था–

### धर्म एक है, सत्याचरण के लिए पुरुषार्थ करो

१–सब मनुष्यों के लिए धर्म और अधर्म एक ही है, दो नहीं जो कोई इसमें भेद करे तो उसको अज्ञानी और मिथ्यावादी ही समझना चाहिए।

२–मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने जितना सामर्थ्य दे रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करें। उसके उपरान्त ईश्वर के सहाय की इच्छा करना चाहिए। मनुष्यो मे सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि मनुष्यो को अपने पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण करना चाहिए। जैसे कोई मनुष्य आंख वाले पुरुष को ही किसी चीज को दिखला सकता है, अन्धे को नहीं, इसी रीति से जो मनुष्य सत्य भाव,पुरुषार्थ से धर्म को किया चाहता है, उस पर ईश्वर भी कृपा करता है, अन्य पर नहीं क्योकि ईश्वर ने धर्म करने के लिए बुद्धि आदि बढ़ने के साधन जीव के साथ रखे हैं। जब जीव उनसे पूर्ण पुरुषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं क्योकि सब जीव कर्म करने में स्वाधीन और पापो के फल भोगने में कुछ पराधीन भी हैं।

### अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

मधुर कल्पनाओं मे रमण करता हुआ साधक, मस्ती में झूमता और गाता हुआ बढ़ता चला जाता है। वह आनन्द के गीतो और भजनों मे आत्मा की चीत्कार और पुकार को गुंजा रहा है। वह अन्तर्यामी सब कुछ देख रहा है, सुन रहा है और समझ रहा है। इधर शुद्ध पवित्र आत्मा निरंतर मस्त होकर ऊँचा उठ रहा है, और क्रमानुसार आगे बढ़ रहा है, उधर परम प्रिय निर्मल आत्मा पर रीझ कर उसे दर्शन देने के लिये उसकी ओर उसी क्रम से बढ रहा है। यह वह रहस्य है जिसका वास्तविक बोध साधना पथ पर चलने वाले साधक साधिका को स्वतः होता है। श्रवण और पठन तो केवल अनुभूति देते हैं। जिसकी अनुभूति मे ही इतना रस है, उसका साक्षात्कार कितना सरस है, यह वाणी और लेखनी से सदैव परे रहता है।

## साहित्य-समीक्षण

### (१) महात्मा गांधी अंक–मूल्य ५)

प्रकाशक–विश्व ज्योति, साधुआश्रम, होशियारपुर

विश्वज्योति मासिक पत्रिका के अप्रैल १९६९ का यह विशेषाङ्क है। इस विशेषाङ्क में १८ निबन्ध एवं लेख, ६ कवितायें, एक कहानी तथा महात्मा गांधी के जीवन से सम्बन्धित प्रसंग, घटनाओं, और विचारों का संकलन है। विशेषांक के अन्त में ईशोपनिषद एवम् गीता के श्लोक भावार्थ सहित दिये हुये हैं। लगभग ३०० पृष्ठों का यह विशेषाक न केवल गाधी जी के जीवन एवम् उनकी विचारधारा पर प्रकाश डालता है, वरन् आध्यात्मिक रस का भी सचार करता है। हिन्दी पुस्तकालयों के लिये विशेष रूप से यह विशेषाक उपयोगी है।

### (२) ज्ञानकुन्ज

प्रकाशक–डी. ए. वी. कालिज अम्बालानगर

फरवरी १९६९ में प्रकाशित इस ज्ञानकुज के संस्कृत, हिन्दी पजाबी और अग्रेजी चार विभाग हैं, जिनमे ११० रचनाओं का सकलन है। आर्यसमाज के विद्यालयों द्वारा जो अपनी पत्रिकायें प्रकाशित की जाती हैं, उनके सम्मुख छपाई, सफाई और सुन्दर विषयो के सकलन के कारण यह पत्रिका अपना आदर्श उपस्थित करती है।

### (३) महर्षि श्रद्धांजलि अंक–मूल्य ५० पैसे

आर्य प्रेमी मासिक अजमेर द्वारा प्रकाशित यह विशेषाक महर्षि दयानन्द प्रशस्ति अक हैं, जिसका सम्पादन गवर्नमेन्ट कालेज, पाली [राजस्थान] के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तथा आर्य जगत् के यशस्वी लेखक डा० भवानीलाल भारतीय, एम. ए. पी. एच. डी द्वारा किया गया है। महर्षि दयानन्द के चरितामृत का पान जिन्हें गद्य और पद्य दोनो मे करना हो उनके लिये यह विशेषाक कामधेनु-सा महत्व रखता है। सस्कृत के सुन्दर श्लोकों का जो सरस भाषानुवाद किया गया है प्रशंसनीय है। संस्कृतज्ञ ऋषि प्रेमियों के लिए यह विशेषांक विशेष पठनीय है।

### (४) एकादशी रहस्य–मूल्य ६ पैसे

लेखक—रामचरित्र पाण्डेय, साहित्यरत्न, बी. ए. एल. टी. आर्योपदेशक, ५५२/१ राजेन्द्रनगर, लखनऊ।

प्रकाशक—श्री जगदीशप्रसाद, चित्रगुप्तनगर, लखनऊ।

६ पृष्ठो की इस लघु पुस्तिका मे एकादशी व्रत के रहस्य को बड़े ही सरल और रोचक ढंग से समझाया गया है। यह लघु पुस्तिका पौराणिक बन्धुओ मे प्रचारात्मक दृष्टिकोण से सर्वथा वितरणीय है। व्रत, नियम के अन्तर्गत अज्ञान का आवरण हटाकर जो वैदिक ज्योति दिखाई गई है, वह सबका सत्य पथ-प्रदर्शन करती है।

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए मं०डी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

ओ३म् **आर्य-मित्र** ओ३म्

'वय जयेम' ] लखनऊ—रविवार वैशाख १४ शक १८९१, ज्येष्ठ कृ० २ वि० स० २०२६, दि० ४ मई १९६९ [ हम जीतें

*परमेश्वर की अमृतवाणी—*

# निष्पाप बनो

**यविजाग्रद्यदि स्वपन्नेन एनस्योऽकरम । भूत मा तस्माद् भव्य च द्रुपदादिव मुञ्चताम् ।। [अथर्ववेद ६।११५।२]**

[यदि जाग्रन] यदि जागते हुये, [यदि स्वप्न] यदि सोते हुये, स्वप्नावस्था मे [एनस्य एन] पाप के साधनो से पाप [अकर] किये हो [भूत, भव्य] भूत कालीन हो अथवा भविष्य गामी हो [द्रुपदात इव] खूटे से छूटने के समान [मा मुञ्चताम] मुझे छुडावे, मुझ से छूटें।

आर्यों ` समस्त साधना निष्पापता के लिए होती हैं। आत्मा शरीर धारी होने के कारण शरीर का निरन्तर सर्गातिकरण करता है। शरीर विकार जन्य होने के कारण आत्मा मे उसके सगतिकरण से, मलिनता आती [illegible] और पुरुषार्थ को छोड कर, पाप रूपी साधनो से जब आत्मा पतित हो जाता है तो जागृत और स्वप्नावस्था में पापों का सृजन करता रहता है। वर्तमान मे भूत के पापमय चित्र उसे भविष्य के लिये भी पाप रूपी प्रेरणायें प्रदान करते रहते हैं, जिसके फल स्वरूप वह सतत गिरता ही चला जाता है।

पाप मन का विषय है। मन के सकल्पों को भ्रष्ट करने वाला भी पाप ही है। जन्म-मरण के बन्धनो मे डालने वाला भी यह दुष्ट पाप ही है। बन्धनो मे पीडा है और दुख है। जैसे खूटे से बँधा हुआ पशु जब खूँटे से खुलता है तो स्वच्छन्द होकर विचरण करता तथा मुदित प्रमुदित होता है, वैसे ही मानव का मन जब शिव सकल्पी बनता है, मननशील होता है तो शरीर मरणोपरान्त आत्मा मोक्ष को प्राप्त होकर स्वच्छन्द विचरण कर आनन्वित होता है।

आर्य ज्ञान मार्गी होते हैं। वे वेद माता का स्तवन करते हैं। परमेश्वर की यह अमृतवाणी उन्हे सत्यका साक्षात्कार कराती है, प्रार्थना निष्पाप बनाती है और सुकर्म मुक्ति प्रदान कर परमेश्वर के परमधाम पर ले जाते हैं।

—'वसन्त'

आर्यसमाज की महान् विभूति—

*राष्ट्र की नींव का पत्थर-त्यागी, तपस्वी,*

# अमर महात्मा हंसराज जी

★

जन्म दिवस १९ अप्रैल १८६४ ई
शरीरान्त १५ नवम्बर १९३८ ई,
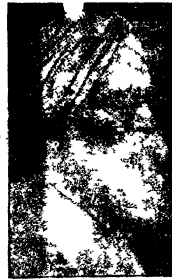
उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजो द्वारा २० अप्रैल १९६९ ई० को महात्मा हसराज दिवस मनाया गया। आर्यसमाजो के साप्ताहिक अधिवेशनों में महात्मा जी के जीवन की घटनाओ का उल्लेख किया गया, उनके तप त्याग की चर्चा की गई और श्रद्धांजलिया अर्पित की गयी।

विश्व मे मौखिक गुणगान मे न कभी कुछ हुआ है और न होगा सच्ची श्रद्धाजलि तो तदनुकूल जीवन ही दे सकता है। आर्य समाज के सिद्धान्तों और मान्यताओं को महात्मा हसराज जी ने अपने आचरण का रूप दिया है। उनके तप और त्याग से विभोर होकर यदि हम उन्हे श्रद्धा के सुमन अर्पित करना चाहते है तो केवल आर्यसमाज मे प्रवेश ही नहीं, वरन आर्यसमाज को अपने भीतर प्रवेश कराइये। तप और त्याग का मार्ग हमे पुकार रहा है।

आइये हम भी बलिदान पथ पर चले और अमरत्व को धारण करें।

वर्ष ७१ | अंक १७

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अंक में पढ़िए !



सपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम. एल. ए.
सभा-मन्त्री

# अध्यात्म-सुधा

**वेद मन्त्र—**

आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित्सधस्थात् । अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ [साम० ८]

शब्दार्थ—(वत्स) बाल बुद्धि होकर (परमात् चित्) सर्वोच्च (सधस्थात्) सह-स्थान, योग भूमि, समाधि स्थल से (ते मनः) तेरे मन को (आयमत्) आकर्षित करे, वश मे करे। (अग्ने) सुन्दर देव (त्वां) तुम्हें (गिरा) वाणी से (कामये) चाहता हूं।

व्याख्या—परमात्मा का परम-धाम बहुत ऊंचा है। साधक वहाँ तक पहुच कर अपने परम प्रिय का का दर्शन करना चाहता है। साधक वहाँ तक पहुंच सकने में अपने को असमर्थ पाता हैं। योग साधना में वह शिशु तुल्य है। शिशु अबोध है, अधिक जानकारी भी नहीं है, ऊपर चढ़ नहीं सकता, दौड़ नहीं सकता, चल नहीं सकता, घुटनों के बल सरक नहीं सकता, ठीक से बैठ भी नहीं सकता। वह तो प्रेम दृष्टि से अपने माता पिता को देखता है। मुख से ठीक बोल नहीं पाता इसीलिये 'हूं' 'हां' ही करता है, कुछ अधिक हुआ तो तोतली बोली बोल लेता है। माता पिता बच्चे की तोतली बोली ही नहीं, उसकी मूक भाषा को जो नयनो से व्यक्त हो रही हैं, समझते हैं, उनके दिल मे भी स्नेह उमड़ आता है, वे लपक कर वात्सल्य भाव से वत्स को गोद मे उठा लेते हैं, शिशु आनन्द विभोर हो जाता है।

शिशु नीचे खड़ा अपनी मां को पुकार रहा है। मां कई मञ्जिल ऊपर छत पर खड़ी है। यदि बच्चे की पुकार सच्ची है, वह दिल्लगी नहीं कर रहा, वह वास्तव में ऊपर माँ के पास जाना चाहता है। माँ बच्चे के मनोभाव को समझती है। यदि बच्चे की इच्छा माँ के पास ऊपर जाने की है, पर वह अशक्त है, ठीक से सीढ़ियाँ चढ़ नहीं पाता, अथवा उसके गिरने का भय है तो माँ स्वतः नीचे आती है, वत्स की उङ्गली पकड़ती है, आवश्यकता पड़े तो गोदी में भी उठा कर ले जाती है।

जब भौतिक जगत् में माता और पिता इतने उदार होते हैं, तब क्या आध्यात्मिक जगत् मे वह परम पिता और आनन्दमयी माँ क्या हमें ऐसा शिशुवत स्नेह नहीं देते? देते हैं, किन्तु उसके लिये सच्ची पुकार होनी चाहिये। परमात्मा का धाम ऊंचा है, तो क्या हुआ? परमात्मा तो स्वयम् साधक को ऊपर उठा कर ले जाता है, पर यह सब तब होता है, जब आत्मना इच्छा होती है। साधक ने सन्तों और ज्ञानियों से सुना है, पुस्तकों में पढ़ा है, उसका श्रुत और पठित ज्ञान उसे बताता है कि परम प्रिय देव का सुदर्शन समाधि में होता है। समाधि कठोर तप माँगती है। अष्टाङ्ग योग के लिये न जाने कितने अनुष्ठान करने पड़ते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान के उपरान्त समाधि की स्थिति आती है।

हे परम प्रिय! तुम्हारे इस 'परम सधस्थ' तक कैसे पहुंचूं। मैं तो नन्हा अबोध और अशक्त बालक, बालिका हूं, इतनी कष्ट साध्य यात्रा मेरे लिये कैसे सम्भव है। यम और नियमों का पालन तो दूर रहा, मुझे उसका ज्ञान तक नहीं है। आसन क्या है जब यह भी नहीं जानता, तब उसकी स्थिरता क्या करूँ। प्राणायाम भी मैं क्या जानू? आपने

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

## बिन दर्शन मैं चैन न पाऊँ जग सोए तो मैं प्रभु जागूँ।

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' 'वेदवारिधि' मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

मुझे स्वाभाविक रूप से जीवन के निमित्त जो प्राणमय श्वास दिया है, मेरी पहुंच तो बस वहीं तक है। प्रत्याहार की तो चर्चा भी नहीं कर सकता। विषयों से उपरति कैसी, मुझे तो ठीक से विषयो की उत्पत्ति का भी पता नहीं है। मैं निरा मन्द बुद्धि का बालक बालिका धारणा ध्यान भी तो नहीं समझ पाता।

मैं तो प्रभु बस एक बात जानता हूं। तुम मेरे परमप्रिय हो और मैं तुम्हें दिलोजान से चाहता हूं। मेरे दिल की प्रत्येक धड़कन तुम्हारा पावन नाम उच्चारती है। मैं तुम्हारी किसी वस्तु को नहीं वरन् तुम्हें चाहता हूं। इसीलिये मैं तुमसे केवल तुमको मांगता हूं और मुझे विश्वास है कि तुम आओगे, अवश्य आओगे। आत्मना तुम्हारा सुपावन दर्शन और आनन्दमय मिलन चाहता हूं। मैं तुम्हारी प्यारी गोदी में चढ़ना चाहता हूं। मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूं। लुक्का छिपी, आंख मिचौनी का

(शेष पृष्ठ १५ पर)

## तुम से तुम को मांगूं

मैं तो तुम से तुम को मांगूं।
बिन दर्शन मैं चैन न पाऊं, जग सोये तो मैं प्रभु जागूं ॥
मैं तो ...
न मैं तुमसे सोना मांगूं,
न मैं तुमसे चांदी मांगूं।
हीरे जवाहर रत्न न मांगूं
धन सन्तति व पशु भी न मांगूं
तुम ही तो अनमोल जगत् मे, इसीलिये तो तुमको मांगू ॥
मैं तो ...
जो नश्वर हैं इस दुनिया में,
जिनमें है सन्ताप झलकता।
जो डसते हैं विषधर बनकर,
जिनमें है दुख दर्द ही मिलता।
विषमय इन विषयों से हर दम, दूर-दूर अति दूर मैं भागूं ॥
मैं तो ...
मैं तो हू प्रभु योग का राही,
तेरे दर्शन का मतवाला।
पीता हू मैं सोम सुधा का,
निश दिन भर-भर अमृत प्याला ॥
आनन्द मय जीवन मस्ती में, मेरे स्वामी मैं अनुरागू ॥
मैं तो ...
ज्योतिर्मय हे मेरे स्वामी,
मेरे नियन्ता, अन्तर्यामी।
देख-देख तेरे कर्मों को,
मैं बना तेरा अनुगामी।
कहे 'वसन्त' दास अकिञ्चन, जैसे लगाए वैसे लागूं ॥
मैं तो ...

लखनऊ-रविवार ४ मई ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## पिब सोमिन्द्र !

●

अभी कुछ दिवस पूर्व डा० सुशीला नैयर ने पौड़ी [गढ़वाल] मे मदिरा के ठेके दिये जाने के विरुद्ध अनशन किया था, जिसे अब उन्होंने उ. प्र. के मुख्य मन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त के आश्वासन पर समाप्त कर दिया है। श्रीमती सुशीला नैयर की माग थी कि कोटद्वार, लैंसडाउन, और सतपुली मे मदिरा की दुकानें बन्द करा दी जाएं। समाचारपत्रों मे प्रकाशित समाचारों के अनुसार वहाँ की महिलाए यथेष्ट समय से इसके विरुद्ध आन्दोलन कर रही थीं, परन्तु आय मे कमी होने के भय से आबकारी विभाग इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

श्रीमती सुशीला नैय्यर के अनशन की क्या प्रतिक्रिया होगी और उसमें उन्हें कहाँ तक सफलता मिलेगी, यह तो भविष्य बतलायेगा वास्तविकता यह है कि उत्तरप्रदेश के आबकारी विभाग ने गत ५, ६ वर्षों में पर्वतीय जिलो मे अनेक लाइसेन्स जारी किये हैं, जिसके कारण मदिरा की अनेक दुकानें खुल गई हैं। जिन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों के दौरे किये हैं, उन्होंने इस बात को देखा होगा कि धार्मिक तीर्थों को जाने वाले मार्ग के अनेक मोटर अड्डे ऐसे भी हैं जहां शराब के ठेके की दुकानें खुली हुई हैं। लिखने की आवश्यकता नहीं कि जनता से अधिक बस ड्राइवर इन दुकानों का उपयोग करते हैं क्योंकि मदिरापान मोटर बस ड्राइवरो का व्यसन बन चुका है। अनेक दुर्घटनाओं के मूल मे बस चालको का मदिरा पान ही रहता है। भले ही ऐसे तर्क दिये जाए कि अगर ठेके की दुकानें न भी हो तो भी बस मोटर चालक देशी शराब अवश्य पीएगे, किन्तु यह तो दोष का समाधान नहीं हो सकता। ठेके की मदिरा भी तो आखिर मदिरा ही है, कोई अमृत तो नहीं।

इस अर्थ प्रधान युग मे सत्य तो यह है कि प्रत्येक वस्तु का एक व्यावसायिक रूप हो गया है। सरकारी मदिरा के ठेके चूकि आय-वृद्धि के साधन है, इसलिये नशाबन्दी की समस्या आज भी गम्भीर बनी हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इधर २० वर्षो मे मदिरा पान का व्यसन जितना द्रुत गति से बढ़ा है, उतना विदेशी शासन के सैकड़ो वर्षो मे भी नहीं बढ़ा था। क्या देशी और क्या विदेशी दोनो प्रकार की मदिराओ की बिक्री के आंकड़े दिन दूने और रात चौगुने बढ़ते चले जा रहे हैं। भारत की राजधानी में तो मदिरा पान एक साधारण बात है और नित्यकर्म है न केवल विदेशियों की वरन् देशियों के भोजन का भी वह एक अङ्ग बन चुकी है।

गांधी जी के उच्च आदर्शों को एक ओर रखकर, केवल व्यवसायी वृत्ति से मदिरापान को बढ़ावा देना कहां तक देश के लिये हितकर है, इस मदिरा पान से कितने घर बरबाद हो रहे हैं, राष्ट्रिय स्वास्थ्य किस सीमा तक पतित हो रहा है, ये सब बातें केवल सरकार के लिये ही नहीं वरन् जनता के लिए भी विचारणीय होनी चाहिये। इस उद्देश्य को सामने रखकर मदिरापान का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है।

प्रत्येक मदिरापान करने वाला यह जानता है कि पहले वह शराब पीता है, फिर शराब उसे पीती है यह बोध होते हुये भी कि यह कोई अच्छी वस्तु नहीं है, इससे तन, मन धन का सत्यानाश हो जाता है, घर बरबाद हो जाता है, मान सम्मान चला जाता है, दुर्दशा होती है, भयकर रोग आ घेरते है, वह इस नाशिनी को छोड़ नही पाता और एक ही उत्तर देता है "छूटती नहीं काफिर मुह से लगी हुई है"। प्राणान्त भले ही हो जाए किन्तु मदिरापान करनेवाला सुरा-सुराही नहीं छोड़ पाता।

दुर्भाग्य की बात तो यह है कि आज धार्मिक सस्थाओ मे भी जिन का बोलबाला है वे भी इस दुर्व्यसन से ग्रसित हैं। व्यवसायी वृत्ति आज धार्मिक सस्थाओ मे भी घर कर गई है जिसके परिणामस्वरूप धन के लोभ मे न केवल धनिको को उन सस्थाओ का सदस्य बनाया जाता है, वरन् उनकी बागडोर तक उनके हाथ मे दे दी जाती है। दुष्परिणाम जब सम्मुख आता है तो सज्जन रोते हैं पर—

"तब पछ- ताए होत क्या।
जब चिड़ियां चुग गईं खेत॥"

मनुष्य मदिरापान क्यो करता है ? मनोवैज्ञानिक एक ही उत्तर देते हैं 'मस्ती के लिये' मनुष्य आनन्द चाहता हैं। आनन्द के लिये वह चिन्ता विहीन होना चाहता है। यदि चिन्ता न भी हो तो भी सामान्य जीवन से ऊपर उठकर वह मस्ती चाहता है। जीवन के कुछ ऐसे मादक क्षण जिनमे उस की आत्मा को आनन्द मिले। प्रथम तो मस्ती के शौक के कारण या दु.खदर्द भुलाने के लिये मनुष्य मदिरा पान करता है, फिर एक ऐसी स्थिति आती है कि यह तलब बनकर उसकी दुर्गति करती है। कुछ क्षणो की यह मस्ती बाद के क्षणो के लिये बहुत महँगी पड़ती है।

अधिक मदिरापान करने वाला बहकी-बहकी बातें करता है, गली और नालियो में ठोकरे खाता है, और गिरता है। थोड़ी पीने वाला भी अपना नियन्त्रण खोता है। क्योंकि मदिरा मानव के मस्तिष्क और हृदय को प्रभावित करती है केवल मानव ही नहीं पशु और पक्षियो को भी यदि मदिरापान करवा दिया जाए तो उनकी अस्वाभाविक चेष्टायें भी प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगत होती हैं। विचारणीय बात यह है कि जब मनुष्य अपना मानसिक सतुलन खो देता है, तब पागल और उसमे क्या भेद रह जाता है। मैने एक विवाह मे एक ऐसा भद्दा दृश्य देखा कि कन्या के पिता ने इतना मदिरापान किया कि बरात आने पर अपना मानसिक सतुलन खो देने के कारण वह अपनी ही कन्या से कुचेष्टायें करने लगा और उसे बल पूर्वक वहा से हटा देना पड़ा।

आर्यों और अनार्यों मे एक भेद यही था कि जहाँ अनार्य इस भौतिक सुरापान से मस्ती मे खो कर दुराचार करते थे, वहाँ आर्य आध्यात्मिक सोपान से आनन्द को प्राप्त होकर सदाचार मे प्रवृत होते थे। यदि भौतिक पदार्थों के पान से मस्ती मिलती है तो उस आनन्द स्वरूप परमात्मा के समीपस्थ हो कर क्या हमे शाश्वत आनन्द नहीं मिल सकता ? आज भले ही आर्यों के सोम को हम मदिरा की सज्ञा देकर अपने को स्वयम् कलंकित करें, परन्तु वास्तविकता यह है कि ओम् का सोम वह भक्तिमय आनन्द था, जिसका आर्य जन पान करते व कराते थे। परमेश्वर की अमृतवाणी कहती है—

"सोम मन्यते पपिवानयत् संपिषन्त्योषधिम्। सोम य ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिव.॥"

[ अथर्व० १४-१-३ ]

अर्थात् औषधियो का सार ही केवल सोम नहीं है। सोम तो वह है जो ब्रह्म ज्ञानियो को सत्य ज्ञान के मन्थन से प्राप्त होता है।

परमात्मा आनन्दमय है। वह अपने अमृत पुत्रो और पुत्रियो को आनन्द रस पान कराना चाहता है। परमात्मा ने इसीलिये भीतर बाहर सर्वत्र आनन्द की धारायें प्रवाहित कर रखी है। यदि हम इन आनन्द धाराओ का आस्वादन नहीं कर पाते तो यह हमारी दुर्बलता है, उस मे उस आनन्ददाता

## असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन का विज्ञापन

### उत्तरप्रदेशीय समान्तर्गत आर्यसमाजो एवं आर्योपप्रतिनिधि समाओं के मन्त्रीगण तथा प्रतिनिधि महोदयों को सेवा में–

श्रीमन् महोदय नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का असाधारण (नैमित्तिक) वृहदधिवेशन मिति ज्येष्ठ शुक्ल ८ व ९ स २०२६ वि० ज्येष्ठ ३ व ४ शक संवत् १८९१ तदनुसार दि. २४ व २५ मई सन् १९६९ ई दिन शनिवार व रविवार को स्थान आर्यसमाज मन्दिर नैनीताल में समय मध्याह्न ४ बजे से होगा।

आशा है कि आर्यसमाजों एव आर्य उप प्रतिनिधि समाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन मे सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

### प्रवेशनीय विषय सूची-

–उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक-प्रस्ताव।

२–स्वागताध्यक्ष एव सभापति के भाषण।

३–अन्तरङ्ग समा दि० ७-८-६८ के नि० स० १७ एव १२ १-६९ के नि० सं० १४ के अनुसार आर्यसमाजों की स्थानीय सम्पत्ति की समस्त आय पर दशांश लिया जाया करे–नियम सं० १६ (१) के साथ स्वीकारार्थ।

निवेदक—

**प्रेमचन्द्र शर्मा** एम. एल. ए.

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

नारायणस्वामी भवन, लखनऊ

दि० ५-४-६९ ई०

## सभा का वार्षिक वृहद् अधिवेशन

### शनिवार २४ व रविवार २५ मई १९६९

### को नैनीताल में होने जा रहा है

सभा का अन्तरंग अधिवेशन शुक्रवार २३ मई १९६९ को मध्याह्न दो बजे होगा।

(१) समाजें दशांश व वार्षिक चित्र शीघ्र भेजें। अन्तिम तिथि वार्षिक चित्रों के भेजने की १५ मई है। विलम्ब से प्राप्त चित्र यदि अधूरे होंगे अथवा गलत भरे होंगे तो प्रतिनिधि स्वीकार न हो सकेंगे। अतएव चित्र और दशांश समय के भीतर भेजिये और कठिनाई से बचिए।

(२) प्रतिनिधि शुल्क ५) कर देने का प्रस्ताव अन्तरङ्ग में प्रस्तुत है। अतएव प्रतिनिधिगण ५) प्रतिनिधि शुल्क की तैयारी से आएं ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें असुविधा न हो।

(३) प्रतिनिधि गण नैनीताल जाने के लिये काठगोदाम तक उन दिनों मिलने वाले हिल कन्सेशन टिकट का लाभ उठाएं। प्रतिनिधि हलद्वानी स्टेशन पर उतरकर निकटवर्ती आर्यसमाज मन्दिर हलद्वानी मे पहुंचें। वहां स्नान और प्रातःकाल के जलपान की व्यवस्था २३ और २४ मई ६९ दोनों दिन रहेगी। आर्यसमाज के निकट से ही नैनीताल की बसें हर २५ मिनट पर छूटती रहती हैं। नैनीताल बस स्टैण्ड पर आर्यसमाज के कार्यकर्ता प्रतिनिधियों के स्वागत और सहायतार्थ उपस्थित रहेंगे।

समाजें, प्रतिनिधि महोदय, एवम् अन्तरङ्ग सदस्य इन बातों को नोट करें और अधिवेशन में चलने की तैयारी करें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
मुख्य उप मन्त्री सभा

कोई का बोध नहीं है।

परमेश्वर की अमृतवाणी ने कर्मशीलों को इसी आनन्द को पकाने, पाने और पचाने की प्रेरणा देते हुये कहा था–

"अश्विभ्यां पच्यस्व, सरस्वत्यै पच्यस्व इन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व।

वायुस्पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क सोमो अतिस्रुतः। इन्द्रस्य युज्य सखा॥"

अतएव समस्त आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे वेद वाणी को सुनें और परमात्मा के आदेशानुसार उस सोम का सेवन करें, और करायें। स्वयम् पवित्र बनें और सबको पवित्र बनायें। उस परमेन्द्र से अपने को युक्त करें। और दूसरों को करायें यदि हम दृढ़ता से इस व्रत को अपना सके तो राष्ट्र का ही नहीं, विश्व का भी कल्याण कर सकते हैं। जन-भावना को जागृत करने पर जब जन मदिरापान से स्वयम् विमुख हो जायेंगे, तब देशी विदेशी मदिरा का निर्माण व उसके ठेके स्वतः बन्द हो जयेंगे।

आर्यो ! उठो !! इन्द्र बनो। सुनों वह परमेन्द्र क्या कह रहा है "पिब सोमेन्द्र।" अर्थात् हे इन्द्रियों के स्वामी इन्द्र! इस सोम को पी।

## अपनी सभा को सुशक्तिवान बनाइए

'आर्य्यमित्र' में प्रकाशित सूचनाओं तथा सभा के द्वारा प्रसारित परिपत्रों के आधार पर सब आर्यसमाजों को यह बोध हो गया होगा कि सभा का वृहद् अधिवेशन नैनीताल में शनिवार २४ व रविवार २५ मई १९६९ को होने जा रहा है।

सभा का नव निर्माण प्रत्येक वर्ष सभा में पधारे हुये प्रतिनिधियों के आधार पर होता है, इसलिये सभा उत्तरप्रदेश के समस्त आर्य समाजों की अपनी ही सभा है। बिना उनके सहयोग के सभा का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। सभा को सुसंगठित करना प्रयेक आर्यसमाज का वैधानिक ही नहीं नैतिक कर्तव्य भी है। अतएव समाजों को चाहिए

१—अपना दशांश और वार्षिक चित्र यदि अब तक न भेजे हों तो तुरन्त भेजें। असुविधा से बचने के लिये १५ मई ६९ तक यह कार्य्य अवश्य करें।

२—सुयोग्य प्रतिनिधियों को प्रतिनिधित्व के लिये चुनिए और अधिवेशन में अवश्य भेजिए।

३—केवल निर्वाचन ही नहीं, प्रान्त के आर्य सङ्गठन को सुदृढ़ करने के लिये शान्ति पूर्वक विचार करने के लिये भी तैय्यार हो कर आइये।

विस्तृत जानकारी के लिये आगामी अङ्क में प्रकाशित विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।

--विक्रमादित्य 'वसन्त' मुख्योपमन्त्री सभा

## सभा से सम्बन्धित विद्यालयों के लिये आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित शिक्षा सस्थाओं के प्रबन्धकों एव प्रधानाचार्यों से अनुरोध है कि २४ मई दिन शनिवार को आर्यसमाज नैनीताल में रात्रि ८ बजे से माननीय श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य की अध्यक्षता में सम्मेलन होगा।

सम्मेलन की सफलता के लिये आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।

रामबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग

# शास्त्रार्थ कचौरा

कचौरा जि० अलीगढ़ में पौराणिको ने यज्ञ कराया था। उसमे पूज्य श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज अपने दल के साथ पधारे थे। इस अवसर पर पौराणिकों ने स्थानीय आर्यसमाजियो को शास्त्रार्थ की चुनौती दी, अत आर्य भाई उझानी से मुझे बुलाकर ले गये।

पौराणिको के पण्डाल मे तो शास्त्रार्थ इसलिये नहीं हुआ कि वहा आर्य पण्डित को कुर्सी पर नहीं बैठने दिया गया। कहा गया कि श्री करपात्री जी के सामने कोई कुरसी पर नहीं बैठ सकता। अतः जनता के जोर डालने पर पौराणिक मण्डल शास्त्रार्थ करने पर विवश हुआ और आर्यसमाज के सभा मण्डप मे शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ।

श्री करपात्री जी के साथी व्याकरणाचार्य श्री प. चन्द्रशेखरजी पौराणिक पक्ष से शास्त्रार्थ करने वाले थे और आर्यसमाज की ओर से यह लेखक था।

श्री चन्द्र शेखर जी ही इस समय पुरी के शङ्कराचार्य श्री निरजनदेव जी हैं।

पौ०प०—आर्याभिविनय पुस्तक स्वामी दयानन्द की बनाई हुई है इसमे लिखा है—

"मेरे सोम रसो को हे ईश्वर सर्वात्मा से पान करो"

क्या निराकार सोम रस पान करता है ? यह ईश्वर को भोग लगाना नहीं तो क्या है ? हम श्री ठाकुर जी को भोग लगाते हैं तो आक्षेप करते हो और आप निराकार को सोम रस पिला रहे हो तो कुछ नहीं ? निराकार सोमरस कैसे पी रहा है। हमारे भगवान् तो साकार हैं हमारा भोग लगाना तो उचित ही है।

आर्य प०—महाराज ! वास्तव में तो निराकार ही खाता पीता है, साकार नहीं। जिस समय शरीर से यह निराकार जीवात्मा निकल जाता है तब यह साकार शरीर कुछ भी नहीं खाता-पीता। निराकार ईश्वर सब मे व्यापक है। वह सोम रस मे व्यापक है। इसी कारण यहा सर्वात्मा शब्द का प्रयोग हुआ है। सर्व व्यापक ईश्वर को हमारे अर्पित सोम रस का ज्ञान है। सर्वज्ञत्व से वह पान करता है। यह ज्ञान रूपी पान एक अलकारिक वाक्य है। देखिए वेदान्त दर्शन मे ईश्वर को "अत्ता" खाने वाला कहा है।

"अत्ताचराचरग्रहणात्"

क्योकि वह ईश्वर सर्वव्यापक होने से सब का अत्ता अर्थात् खाने वाला है।

आपके मान्य पुस्तक वेदान्त का वचन है यह।

पौ०प०-ईश्वर साकार ही भोग ग्रहण करता है, निराकार को भोजन की आवश्यकता नहीं। और सत्यार्थप्रकाश मे लिखा है-सोमसद पितरस्तृपन्ताम्" यह चन्द्रलोक मे रहने वाले पितरो का तर्पण नहीं है तो क्या है ? आर्यसमाजियो के गुरु अपने ग्रन्थ मे पितरो का तर्पण मानते हैं, परन्तु आर्य समाजी पितृ श्राद्ध का खण्डन करते हैं। यह अपने ग्रन्थो का अपने गुरु का विरोध है।

आ० प०-पण्डित जी, निराकार भगवान् सर्वव्यापक हैं साकार सर्व व्यापक हो ही नही सकता। जिसे खाने-पीने की आवश्यकता होती है वह भगवान् नहीं हो सकता। भगवान् सब आवश्यकताओ और इच्छाओं से मुक्त है पूर्ण काम है। वह अपनी सर्वज्ञता से हमारे तैयार किये सोम रस शुद्ध प्रेम भावो को जानता है, स्वीकार करता है यहाँ सोम रस कोई भौतिक पदार्थ नहीं। किन्तु इस मन्त्र मे उस सोम रस का सकेत है जिसे वेद ने कहा है—

सोमं यत्ब्राह्मणा विदुर्नतस्या-पूनाति कश्चन।

वह सोमरस जिसे ब्राह्मण जानते है, उसको कोई नहीं खाता। अर्थात् वह है शुद्ध ब्रह्मज्ञान, आध्यात्मिकता भगवान् प्रेम उसका रस तो ब्रह्मनिष्ठ ही ले सकता है। उसी प्रेम भाव को यहाँ भक्त अपने इष्टदेव के अर्पण कर रहा है। और सोमसद् पितरो के तर्पण से पहले यह जानना चाहिये कि पितर हैं क्या ?

देखिये, श्री उव्वर और महीधर जी के यजुर्वेद भाष्य मे लिखा है।

"ऋतवो वै पितर"

ये छै ऋतुये पितर हैं। इन्हीं को वेद मे कहा है नमो वः पितर: शोषाय नमोव पितरो रसाय आदि।

ये ऋतुयें चन्द्रमा से सम्बद्ध हैं। अत सोमसद् कही गई हैं।

ऋतु ऋतु पर यज्ञ करके इन पितरो को तृप्त करो, तो कोई रोग नहीं फैलेगा। प्रकृति मे विकार नहीं होगा।

यदि सब मरने वाले चन्द्रलोक मे जाकर पितर बन जाते हैं तो पुनर्जन्म किसका होता है ? और चन्द्र लोक मे जन्म लेने वालो का तृप्ति का प्रबन्ध हम क्यो करें, प्रजापति भगवान् सबका प्रबन्ध तत कर्मानुसार करते ही हैं। पण्डित जी महाराज कर्मों का फल सस्कारो द्वारा ही मिलता है। सस्कार शूक्ष्म शरीर पर स्वकृत कर्म से पडते हैं। परकृत कर्म से नहीं। मृतक-श्राद्ध मान लेने से स्वकृत कर्मफल हानि और परकृत कर्म फलाप्ति मे दो दोष आते हैं, और कर्म सिद्धात को दूषित कर देते है। क्या तमाशा है कि अपनो की तो सुधबुध है नहीं दौडते चन्द्र तलक थाल लिये पितरो को।

देश के सहस्रो बालक भूख से बेचैन होकर ईसाई बनते हैं आप चन्द्रलोक की प्रजा का पालन

★श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री
शास्त्रार्थ महारथी

करने चले है। इस पर श्री पण्डित जी क्षुब्ध हो गये कि उनकी बात को तमाशा कह दिया। उनसे बहुतेरा अनुनय विनय किया कि तमाशा शब्द अपशब्द वा कोई गाली नहीं है, उर्दू का शब्द है क्रीड़ा व खेल के अर्थ मे। पर वे न माने क्रोध मे भरे हुए अपने पुस्तक भी मेज पर छोड़ कर चल दिये।

इस शास्त्रार्थ के बाद वे फिर कभी यहाँ नहीं पधारे और आर्य समाज की चहुमुखी उन्नति हो उठी। समाज मन्दिर बना। पाठशाला खुली उत्सव होते रहे और अब भी समाज चैतन्य है।

अब सुना है कि श्रीमान् जी ने अस्पृश्यता रक्षार्थ शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। आर्य समाज भी वर्तमान रूढ़िगत अस्पृश्यता का विरोधी है। हमे ऐसे शास्त्रार्थ स्वीकार हैं। जो शास्त्रार्थ करना चाहें वे आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली को लिखें। हमारे पास सुयोग्य शास्त्रार्थ महारथी हैं—

१—श्री आचार्य विश्वबन्धु जी।

२—श्री व्याकरणाचार्य प० विशुद्धानन्द जी शास्त्री एम ए

३—श्री आचार्य विश्वश्रवा जी तो प्रसिद्ध ही हैं, उनकी पत्नी हैं वेदाचार्या श्रीमती जी, श्रीमती निर्मलादेवी जी सा. पु तथा

[ शेष पृष्ठ १६ पर ]

जौहर मेले के अवसर पर—

# जौहर स्थली चित्तौड़गढ़

★श्री यज्ञदेव जी वेदवागीश
एम० ए०

भारतीय इतिहास के विख्यात स्थल अतीत मेदपाट और अद्यतन राजस्थान के इस महिमामय शिवि जनपद की मुख्य स्थली चित्रांगद मौर्य की रङ्गभूमि प्रतापी सूर्यवंशियों की प्रेम और शौर्य से पूर्ण लीलाभूमि, हुतात्माओं, रणबांकुरो, वीरो, सती शिरोमणियो एवं अनेक अमर ऐतिहासिक प्रसङ्गों की यह क्रीड़ा-भूमि चित्तौड़गढ़ जिसके रग-रग मे उत्साह एवं कण-कण मे रुधिर प्रवाह है। आज भी अतीत की जगमग स्मृतियों द्वारा भौतिक देश और काल को मानो चुनौती देता हुआ पवित्र बलिदान की प्रेरणा दे रहा है।

इसी शौर्य गाथाओं के प्रतीक चित्तौड़गढ़ के विशाल वक्षस्थल पर अपनी सस्कृति, कुल मर्यादा, अपने देश के गौरव, मातृभूमि की रक्षा के लिए जाति सम्मान एव वधुओं के पतिव्रत धर्म के रक्षार्थ हृदयद्रावक तीन बड़े जौहर के भयङ्कर व्रत विभिन्न कालो मे सम्पन्न हुए।

जौहर उस समय किया जाता था, जब युद्ध मे जीवन की कोई आशा नहीं रहती थी। आबाल, वृद्ध राजपूत केसरिया बाना पहन तथा नङ्गी तलवारें लेकर अन्तिम बार दुर्ग के बाहर मिटने और मिटाने के लिये निकलने को तैयार हो जाते थे। और क्षत्रिणियाँ अपने पतिव्रत धर्म की रक्षार्थ और युद्ध मे जाने वाले वीरो का साहस बढाने के लिये उनके सामने धधकती चिता की भयङ्कर ज्वाला मे दीपशिखा पर पतङ्गो की तरह कूद कर भस्म हो जाती थीं।

प्रथम जौहर १३०३ मे हुआ था, जब राणा लक्ष्मणसिंह के सब पुत्र एक-एक करके समर क्षेत्र मे अगणित मुसलमानो को भयङ्कर साँप की फुफकारती हुई तलवारो से कटते हुये स्वय भी वीरगति को प्राप्त हुये, तब राणा लक्ष्मणसिंह ने केसरिया बाना पहन जौहर की तैयारी करवायी।

जौहर का हृदय विदारक कार्य प्रारम्भ हो गया। राजपूतो ने कठिन परिश्रम कर धूप, चन्दन आम और गुग्गुल की सुगन्धित लकड़ियो की एक विशाल चिता बनाई। उस पर मनो घी, तैल आदि अनेक बहुमान पदार्थ छिडक दिये गये। वीर राजपूत केसरिया वस्त्र धारण कर चिता के चारो ओर बैठ गये। चिता मे आग लगा दी गई। देखते ही देखते पद्मिनी सहचारियो को लेकर चबूतरे पर खडी हो गयीं। भाई ने बहन को, पुत्र ने माता को, पिता ने कन्या को और पति ने पत्नी को देखा, किन्तु जैसे के तैसे स्थिर रहे। हिल न सके। पारिवारिक प्रेम को देश प्रेम ने दबा लिया। राजपूतो ने साँस रोक ली, तारे गगन की छाती से चिपक

गये, दिशा सिहर कर दबक गई। आग हाहाकार करती हुई, हहराती हुई पद्मिनी का रूप ज्वाला मे पचाने के लिये आकाश की छाती जलने लगी। रूप यौवन के साथ पद्मिनी का शरीर घास-फूस की तरह जलने लगा। वीर ललनायें एक पर एक आग मे कूद कर मौत को ललकारने लगीं। आसमान टूट कर गिरा नहीं, चाँद फूट कर गिरा नहीं, पृथ्वी फटी नहीं, दुनिया घटी नहीं किन्तु चित्तौड की वीर रानियाँ जल कर राख हो गयीं। सतीत्व की रक्षा का अमोघ अस्त्र मृत्यु है।

अपनी माँ बहनो को इस प्रकार मृत्यु के मुख मे जाते देख राजपूतो की आखो से चिन्गारियाँ निकलने लगीं, भौहे तन गईं, चेहरे तमतमा उठे, चिता की राख को शरीर मे मल लिया। नङ्गी तलवारे आकाश मे चमचमायीं और दूसरे क्षण वे अपने गौरव की रक्षा के लिये घायल सिंह की तरह वैरी दल पर टूट पड़े, और गाजर मूली की तरह काटने लगे। अलाउद्दीन की विशाल सेना के सामने सौ-पचास राजपूतों की गणना ही क्या? प्रत्येक राजपूत अपनी अन्तिम श्वास तक लड़ता रहा। किसी ने भी अपनी जीवन रक्षा कर अपने को तथा चित्तौड़ को कलंकित नहीं किया। जौहर का भयकर व्रत समाप्त हो गया। राजपूतों की वह शोणित गङ्गा तो दो दिन में सूख गई होगी। और चिता की वह आग भी बुझ गई होगी, किन्तु वह गरम रक्त अब भी रगो मे प्रवाहित है, और वह आग आज भी हृदय में धधक रही है बुझे तो कैसे।

सम्राट अलाउद्दीन के छत्र पर जो कलक का धब्बा लगा वह आज तक नहीं मिटा। आज भी उस हृदयहीन हत्यारे को हिन्दू मुसलमान घृणित विजयी के नाम पर थूक देते हैं।

द्वितीय जौहर १५३५ मे हुआ, जब गुजरात के बादशाह बहादुर शाह ने चित्तौड पर चढ़ाई कर दी। तब महाराणा सांगा की सबसे छोटी पत्नी महाराणी करुणा वती ने सैन्य सचालन का कार्य अपने हाथ मे ले रणबाँकुरे वीरो मे वीर रस भर बहादुरशाह का सामना कर युद्ध की गौरव लीला प्रारम्भ की। लेकिन वरुणालय की तरह उमडी हुई बहादुरशाह की सेना को रोकना उनके लिये असम्भव था। वीर निराश हो गये। इस पर महल मे बैठी महाराणी बहुत समय तक देश की रक्षा का विचार करती रहीं। इसी उधेड़ बुन में उसे मुगल-सम्राट् हुमायूँ का नाम याद आ गया। उस दिन रक्षा-बन्धन का दिन था। रानी ने एक राखी और अपना दूत हुमायूँ के पास भेजा और उससे सहायता माँगी। हुमायूँ उस समय आगरे में नहीं था, वह शेरशाह से युद्ध लड़ रहा था। करुणा का सन्देश मिलते ही उसने युद्ध बन्द कर दिया और सेना लेकर चित्तौड़ की ओर लपका। परन्तु उसके आने में देर हो गई। और वह करुणा की सहायता न कर सका।

जौहर की तैयारिया होने लगी, पद्मिनी की तरह आज करुणा भी असख्य राजपूत महिलाओ की अग्रणी बनकर लकड़ियों के गगनचुम्बी ढेर पर बैठ गयीं। धाँय-धाँय करती हुई चिता जलने और आकाश को छूने का प्रयत्न करने लगी। पल भर में रूप यौवन और लावण्य का अन्त हो गया। कुछ भी शेष न रहा। दृश्य बड़ा ही रोमांचकारी, व्योम विदारक करुणास्पद और भयावह था। धुआँ आकाश की ओर जाने लगा, मानो वह बहादुर शाह की बरबरता धर्मान्धता, और साथ ही राजपूत वीर बालाओं के दु:खप्रद किन्तु उज्ज्वल बलिदान की सूचना, ईश्वर को देने जा रहे हो।

इधर वीरगण मतवाले होकर फिर से सिंहनाद कर शत्रुओ के दिलों को दहलाने लगे। रणभेरी फिर बज उठी, और चमचमाती हुई नङ्गी तलवारे शत्रुओं का रक्त पीने के लिये आकाश मे घूमने लगी। भूखे बाघ की तरह राजपूत वीर मुसलमानो पर टूट पड़े। और हजारों को तलवारो के घाट उतार दिया स्वय भी कटे हुए धान की तरह रणक्षेत्र पर लौट गये।

[ शेष पृष्ठ ११ पर ]

हैदराबाद आर्य महा सम्मेलन के शान्ति प्रस्ताव के सम्बन्ध मे श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी का एक विस्तृत लेख आर्यमित्र के दिनांक ६ अप्रैल के अङ्क में प्रकाशित हुआ है। उस लेख के पढ़ने के पश्चात् मेरे मस्तिष्क मे कुछ विचार उत्पन्न हुये, जिन्हें मैं आर्य जनता की सेवा मे उपस्थित करता हूं:—

१—श्री आचार्य जी ने सार्व देशिक सभा के विधान के सम्बन्ध मे लिखते हुये यह लिखा है कि—

'तब वह विचार पैदा हुआ कि भारत के सबसे बड़े प्रान्त उत्तर प्रदेश के भी दस प्रतिनिधि और एक छोटे-से प्रान्त पजाब के भी दस प्रतिनिधि। यह बात ठीक नहीं। अतः जैसे अन्य छोटे मध्य-प्रदेश मध्य भारत बंगाल आदि के दो या तीन या पांच प्रतिनिधि सार्वदेशिक मे आते हैं वैसे ही पजाब के प्रतिनिधियों की सख्या भी कम करनी चाहिये। इस विचार से प्रेरित होकर सार्वदेशिक सभा के विधान मे यह परिवर्त्तन किया गया कि प्रान्तीय सभाओं मे जितने मेम्बर उनकी समाजों मे हों उनके पच मांस प्रतिनिधि सार्वदेशिक मे जावें।"

मैं इस विवाद मे नहीं पड़ना चाहता कि विधान मे यह परिवर्त्तन किस उद्देश्य से किया गया। हां, यह निवेदन करना चाहता हू कि 'पचमाश' नहीं 'पांच प्रतिशत' अधिक से अधिक पन्द्रह यह परिवर्तन हुआ था। वही अब भी विद्यमान है। मैं समझता हू श्री आचार्य जी ने पचमाश शब्द भूल से लिखा, या गणित की अनभिज्ञता से पचमाश और पाच प्रतिशत का अन्तर नहीं समझा। अथवा यह भी हो सकता है कि प्रान्तीय सभाओं द्वारा सार्वदेशिक सभा को पचमाश दिया जाता है वही शब्द श्री आचार्य जी के मस्तिष्क मे था, वही लिख गये। जो भी हो यह भूल है।

# शांति प्रस्ताव के विषय में

—श्री भगवान स्वरूप न्यायभूषण, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, अजमेर

२—श्री आचार्य जी के मस्तिष्क मे उत्तर प्रदेश और पजाब की बातें फिर रही थीं, अतः उन्हीं पर विचार व्यक्त किया, परन्तु और भी समस्यायें हैं, जिन पर सार्वदेशिक सभा को विचार करना आवश्यक है। जैसा कि श्री आचार्य जी ने लिखा है कि पहले प्रान्तीय सभायें सार्वदेशिक सभा को बनाती थीं अब सार्वदेशिक सभा प्रान्तीय सभाओं के बनाने का काम हाथ मे लेने लगी। इसके अनुसार प्रान्तीय सभायें बननी चाहिए थीं, परन्तु किसी सिद्धान्त पर यह कार्य नहीं चल रहा है। उदाहरणार्थ—

क—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में पहिले मालवा की आर्य समाजें भी सम्मिलित थीं। जब मध्य भारत अलग प्रान्त बना तो सार्वदेशिक सभा ने मध्य भारत के आर्य प्रतिनिधि स्वीकार करके ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल आदि की आर्य समाजो का मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा बना दिया। और राजस्थान की सभा मे राजस्थान की आर्य समाजे रहीं। परन्तु अब जब कि मध्य भारत समाप्त हो गया और एक मध्य प्रदेश प्रान्त बन गया तो मध्य भारत की प्रतिनिधि सभा का अस्तित्व मध्य प्रदेश मे विलीन हो जाना चाहिए था, परन्तु अभी भी दोनों प्रतिनिधि सभाये विद्यमान हैं।

ख—जब निजाम स्टेट थी तो उस राज्य की समाजो से मध्य दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा बनी। निजाम राज्य समाप्त होने पर उस राज्य का कुछ भाग महाराष्ट्र मे मिल गया और कुछ का अपना आन्ध्र प्रदेश बना। सिद्धात यह रक्खा गया था कि भारत सरकार के प्रान्तो के अनुसार प्रतिनिधि सभायें भी रहें। इस सिद्धान्त के अनुसार वर्तमान मध्यदक्षिण प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत उन समाजो को जो महाराष्ट्र प्रान्त मे हैं महाराष्ट्र में आ जाना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। वही क्रम चल रहा है। जो निजाम स्टेट के समय में था।

ग—मुम्बई प्रदेश के भारत सरकार ने दो भाग कर दिये। महाराष्ट्र और गुजरात। एक थी राजधानी मुम्बई मे और दूसरे थी अहमदाबाद मे। अत. पूर्व निश्चित सिद्धान्त के अनुसार दो प्रतिनिधि सभायें महाराष्ट्र और गुजरात की होनी चाहिए। परन्तु गुजरात प्रान्त की प्रतिनिधि सभा को सार्वदेशिक सभा ने मान्यता नहीं दी। होना यह चाहिये कि मध्य दक्षिण प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत जो आर्य समाजे महाराष्ट्र मे है, उन्हे मध्य दक्षिण सभा से पृथक् कर महाराष्ट्र सभा मे कर दिया जाय, इस प्रकार मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र की आर्य समाजो की हो, और गुजरात प्रान्त की आर्य समाजो की आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात होवे। मध्य दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र की आर्य समाजों का समूह होवे। इसका नाम चाहे आन्ध्र प्रदेश आ. प्र सभा रक्खा जाय, अथवा मध्य दक्षिण जो नाम है, उसे रहने दिया जाय।

घ—पंजाब के भी अब नवीन दो भाग हो गये हैं। हरियाना और पजाब। प्राय. हरियाना और पजाब का सघर्ष भी रहता है अत उनके भी दो प्रतिनिधि सभायें हरियाना और पजाब की कर दी जाय।

इस प्रकार सिद्धान्त के आधार पर पुनर्गठन होना आवश्यक है। जब तक ऐसा नहीं होगा सघर्ष लगा ही रहेगा।

३—आचार्य जी ने अपने लेख मे प्रादेशिक सभा की ओर भी सकेत किया है। अभी ६ अप्रैल के आर्य जगत् मे प्रादेशिक सभा के निर्वाचन का विवरण प्रकाशित हुआ है। उससे ज्ञात हुआ है कि प्रादेशिक सभा ने अपने निर्वाचन में सार्वदेशिक सभा के लिये चौदह प्रतिनिधि चुने हैं। अत यह स्पष्ट है कि प्रादेशिक सभा सार्वदेशिक से सम्बन्द्ध है। नियम पूर्वक उस सभा के प्रतिनिधि सार्वदेशिक में सम्मिलित होंगे। अत उसके सम्बन्ध मे किसी प्रकार की शका करना व्यर्थ है।

४—श्री आचार्य जी ने सुझाव दिया है कि पजाब प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा का इस वर्ष निर्वाचन न होवे, श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज नामांकन कर दें। मैं भी इस सुझाव से सहमत हू, और मेरी यह दृढ़ सम्मति है कि ऐसा करने से सघर्ष बहुत कुछ टल जायगा, और निकट भविष्य मे शान्ति पूर्वक कार्य होने लगेगा। प्रभु ऐसा करे।

# धार्मिक समस्याएं

## आर्यो ! ऋषि का आदेश अभी अज्ञात है

★ ले० परिव्राजकाचार्य वेद स्वामी मेधार्थी सरस्वती एम० ए० सामवाचस्पति, विद्यालकार, पालिरत्न-पडधरी (सौराष्ट्र)

आर्य समाज द्वारा किये गये यज्ञों मे सर्वत्र ५ वार अयन्त इध्म०—इस आर्ष वचन (वेद मन्त्र नहीं है) द्वारा घी की आहुति दी जाती है। आश्चर्य यह है कि आज तक किसी भी अखण्ड विद्वान् ने इस भूल पर ध्यान नहीं दिया। इस भूल का आधार यह है कि संस्कार-विधि की छोटी-सी भूमिका को ध्यान पूर्वक पढ़ा नहीं जाता एव गायत्री के साथ तीन व्याहृति लगाकर आहुति देना भी इसी लिये चालू है। ऋषि दयानन्द ने भूमिका मे लिखा है कि 'सामान्य प्रकरण, में जो विधि लिखी है वह जहाँ-जहाँ की जायगी, वहाँ-वहाँ पृष्ठ पंक्ति देकर हम संकेत करेंगे। हम सबने गलती से 'सामान्य प्रकरण को ही 'दैनिक यज्ञ विधि' समझ लिया और भूल मे भटक गये हैं।

ऋषि दयानन्द ने संस्कार विधि के उपनयन प्रकरण मे अयन्त इध्म० ५ वार घृताहुति डालना मना किया है। इसी प्रकार वेदारम्भ, समावर्त्तन गृहस्थ और वानप्रस्थ प्रकरण मे बिलकुल निषेध किया है। वेदारम्भ द्वारा ब्रह्मचारी को, समावर्त्तन द्वारा अविवाहित युवक को, गृहस्थाश्रम प्रकरण द्वारा विवाहित सद्गृहस्थ को और अन्त मे गृहस्थ से मुक्त होने वाले सपत्नीक वानप्रस्थ को ५ वार अयन्तइध्म० द्वारा घृताहुति डालने का स्पष्ट निषेध किया है।

हां, एक बार समिदाधान में सर्वत्र बोल कर आहुति देने का विधान ऋषि दयानन्द ने स्वीकार किया है।

हम सब दयानन्द के अनुयायी हैं। अतः

"असत्य छोड़ने के लिये सदा उद्यत रहना चाहिये।" यह न सोचना चाहिये कि यह मेधार्थी कौन होता है, हमारी भूल को बताने वाला, सचमुच मेरे ऊपर ही ऋषि का वरदहस्त है ऐसा दीखता है। तभी तो विचित्र बातें बताता हूं।

अब प्रश्न यह होता है कि फिर यह ५ वार अयन्त इध्म० से घृत की आहुति कब कहाँ डाली जाय। इसके लिये ऋषि दयानन्द ने बिलकुल स्पष्ट जहाँ लिखा है कि 'समस्त विधि करे' वहां ही इस आर्ष वाक्य का उपयोग है। जैसा गर्भाधान सीमतोन्नयन, पुसवन, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूडाकर्म, और कर्णभेद। कृपया संस्कार विधि खोलिये। हठ छोड़िये। भूल सुधारिये। अन्यथा अविधि से अवनत ही होंगे। अन्य भी भूलें है। आर्य जनता सुधार चाहेगी तो बता दूंगा।

★



# काव्य कानन

## परमेश्वर का अर्चन

प्रचण्डोमार्त्तण्डः क्षिपति निज तेजः प्रतिदिनम्,
विभर्तीयं क्षोणि. सकल भुवनं धान्य जननी।
निशामध्ये ज्योत्स्नां विसृजति धरायां शशधरा,
समीरः शीतः ससरति सतत शान्ति सुखदः ॥१॥

दिन में अपनी प्रखर किरणों को फेंकने वाला यह सूर्य, सारे संसार के अन्नद्वारा पोषण करने वाली यह पृथिवी तथा रात्रि में इस पृथिवी पर अपनी चन्द्रिका बिखेरने वाला यह चन्द्र एवं शीतल और सुखदायक मन्द मन्द गमन करने वाला यह पवन—

महीध्रोऽयम्प्रांशुर्जलधर वृतस्तुङ्ग शिखरः,
महारत्नै र्व्याप्तो जलनिधिरसौ सान्द्र सलिलः।
अरण्यानी नानाद्रुमकुसुम शोभां बहुविधाम्,
दधातीयं दन्तावल चपल शार्दूल वसती ॥२

बादलों से आच्छादित उत्तुङ्ग शिखर वाले ये बड़े-बड़े पर्वत, बहुमूल्य रत्नों से व्याप्त ये गहरे समुद्र तथा विशाल हाथियों और चचल व्याघ्रादि हिंसक पशुओं के निवास भूत ये घोर घने जंगल जो विविध प्रकार के वृक्षों वनस्पतियों एव पुष्पादि से युक्त हैं।

महाशक्तेर्विष्णोरतुलितमहिम्नो भगवतः,
जगत्कर्त्तुः सत्तां नयनपदवीं विश्वरचनाम्।
विचित्रामालोक्याऽनुभवति न को निर्मलमनाः,
परशो ध्यातव्यः सइह जनन व्याधिहरणः ॥३

शक्तिशाली, महामहिमावान्, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्त्ता भगवान् के विश्व की इन विचित्र रचनाओं को देखकर किस निर्मल हृदय वाले व्यक्ति को उसकी सत्ता का बोध नहीं होता है ? हमें उस परमेश्वर का जो जन्मरूपी व्याधि को दूरकर मुक्ति का दाता है, ध्यान करना ही चाहिये। इसीलिये तो—

अतएव—
प्रभाते विष्टेऽस्मिन् रविरुदय शैलम्प्रतिगत,
तरूणामुच्चा नामुपरि खगवृन्दैर्विलसितम्।
मनोज्ञो वेशन्तो जलपति रतिं पद्म बहुल,
जनोऽन्यस्तत्रस्थो न जति परमानन्द शरणम् ॥४॥

इस सुप्रभात वेला में जबकि सूर्य उदयाचल को प्राप्त हो रहे हैं तथा विशाल ऊँचे वृक्षों पर पक्षिसमूह विराजमान हैं एवं जहाँ कमल दल से पूर्ण मनोरम सरोवर आनन्द उत्पन्न कर रहा है, वहाँ पर बैठा हुआ कोई व्यक्ति परमेश्वर की अर्चना कर रहा है।

—प्रशस्यमित्र शास्त्री, शास्त्रीनगर, २३/३कानपुर

# सुझाव और सम्मतियाँ

## एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योजना को सफल बनाइए—

# उपाध्याय पुरस्कार निधि

आर्यजगत् के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक उपप्रधान और मन्त्री, उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक प्रधानादि रूपों मे मान्य नेता और लब्धप्रतिष्ठ उत्कृष्ट साहित्यकार दिवगत श्री प. गगाप्रसाद जी उपाध्याय का नाम लेते ही मेरी अनेक सुखप्रद स्मृनिया जाग उठती हैं। मै अपना बड़ा सौभाग्य समझता हू कि उन जैसे एक अत्यन्त उच्चकोटि के मनीषी अत्यधिक परिश्रमी गुणग्राहक सहृदय निश्छल विद्वान् के साथ मेरा गत लगभग ३० वर्षों से घनिष्ट सम्पर्क रहा जिससे सार्वदेशिक सभा के उनके मान्य मन्त्री और मेरे सह मन्त्री के सम्बन्ध मे सहवास के कारण अत्यन्त आत्मीयता आ गई। आप ने आर्योदय काव्यम्, शाकर भाष्यालोचन ( जिसकी भूमिका उनके सप्रेम अनुरोध पर मैने लिखी ) वैदिक कल्चर तथा जीवन चक्र इत्यादि उत्कृष्ट ग्रथो मे उन्होने मेरा सप्रेम स्मरण भूमिकादि मे एक सहयोगी परामर्शदाता के रूप मे किया। इस छोटे-से लेख को लिखते हुये उनके अनेक बहुमूल्य पत्र मेरे सम्मुख हैं, जिनसे अपने प्रति उनके आत्मीयता, पूर्ण प्रेम और विश्वास को देखकर मै गद्‌गद हो जाता हू। १६-८-६५ के पत्र मे उन्होंने यह लिखने की कृपा की है कि "बात यह हे एक आपको छोड़ कर कोई ऐसा दिखाई नहीं पड़ता जो मेरे लिये कष्ट करके परामर्श दे। इसीलिये कष्ट देता रहता हू। आपके सभी सुझाव समीचीन उपयोगी और कार्य के हैं' अपने २१-१०-६६ के पत्र मे मान्य उपाध्याय जी ने लिखने की कृपा की है—ऋक् सूक्त विशति-तैयार है, परन्तु छपेगी तभी जब आप अच्छी तरह देखकर पास कर देंगे चाहे जितना ही विलम्ब हो जाये।" मैं उनके विषय मे अन्य सस्मरण फिर कभी लिखूंगा। अभी तो मैं यह निवेदन करना चाहता हू कि—आस्तिकवाद अद्वैतवाद, शाकर भाष्यालोचन, वैदिक कल्चर, फिलास्फी आफ दयानन्द जीवात्मा, आर्योदय काव्यम् ( भाग २ ) आर्य स्मृति इत्यादि अनेक उत्तम ग्रन्थों के निर्माण द्वारा आर्यजगत् के धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक साहित्य में अत्यन्त प्रशसनीय श्री वृद्धि करने वाले मान्य उपाध्याय जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये आर्य समाज चौक प्रयाग ने जो गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार निधि की योजना प्रस्तुत की हे, मैं उसका प्रबल अनुमोदन करते हुए समस्त धर्म तथा उत्कृष्ट साहित्य प्रेमी नर नारियो से उसमे योगदान की अभ्यर्थना करता हू। इस योजना मे अभी २५०००) की राशि एकत्र करने का निश्चय किया गया है जो स्थिरनिधि मे जमा की जायगी इसके सूद से लगभग १५००) की वर्ष मे आय होगी। इससे १२००) वर्ष के प्रमुख साहित्य निर्माता को पुरस्कार रूप मे भेंट किया जायगा और शेष ३००) अन्य प्रबन्धादि मे व्यय होगा।

वैदिक धर्म और सस्कृति के देश-विदेश मे प्रचार के लिए मान्य उपाध्याय जी द्वारा निर्मित साहित्य के सन न उत्कृष्ट साहित्य की आज सबसे अधिक आवश्यकता है, उसके बिना शिक्षित वर्ग मे प्रचार असम्भव है। ऐसे उत्तम साहित्य हेतु सुयोग्य लेखको को प्रोत्साहित करने के लिये प्रस्तुत इस योजना को सफल बनाने के लिये सभी धर्म और साहित्य प्रेमियों का क्रियात्मक सहयोग अपेक्षित है। भारत और विदेशों मे आर्यसमाजो की सख्या ५००० से कम न होगी। ऐसा मेरा अनुमान है, इनमे से अनेक आर्थिक दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न ह जिनके लिये इतनी महत्त्वपूर्ण योजना की सफलता के लिये १००) २००) देना कुछ भी कठिन नहीं है। धनीमानी सदस्यो और सहायको द्वारा सैकड़ो रुपया सुगमता से दिलाये जा सकते है। यदि इस ओर कुछ भी ध्यान दिया जाए तो अधिक से अधिक मान्य उपाध्याय जी की प्रथम निधन तिथि ( २९ अगस्त १९६९ तक ) यह २५०००) की राशि सुगमता से इकट्ठी की जा सकती है जिससे इस महत्त्वपूर्ण साहित्यिक योजना को निकट भविष्य मे क्रियात्मक रूप दिया जा सके। मै आशा करता हूं कि मेरा यह निवेदन व्यर्थ न जावेगा। और उपाध्याय जी तथा आर्य धर्म और सस्कृति का प्रत्येक प्रेमी इस निधि के लिये अपना दान इस निधि के सयोजक श्री राधेमोहन जी, सयोजक-उपाध्याय स्मारक निधि चौक, प्रयाग उ० प्र० के नाम पर भेजना अपना कर्तव्य समझेगा।

—धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड
आनन्द कुटीर ज्वालापुर
उत्तरप्रदेश

स्व. श्रद्धेय पं० गंगाप्रसाद जी के प्रति—

## श्रद्धाञ्जलि

जिनकी थी प्रभु प्रदत्त प्रतिभा, सर्वतोमुखी अति ही विचित्र
था आदरणीय, प्रशसनीय, वरणीय विमल जिनका चरित्र
अरविन्द सुमन के सदृश सतत, जो थे स्वगेह मे हो विरक्त
वैदिक विवेक-प्रतिपादनार्थ, जो थे वक्ता लेखक सशक्त

जो आर्य जाति-उत्थान-हेतु, करते रहते थे बहु उपाय
वे विदा हुए परलोक हाय! गंगाप्रसाद जी उपाध्याय
उर्दू, अरबी, फारसी, आंग्ल, हिन्दी सस्कृतादि के ज्ञाता
'जीवात्मा' 'आस्तिकवाद' आदि सद्‌ग्रन्थो के थे निर्माता

जिनकी कृतियों का बड़े-बड़े, विद्वानो ने गुणगान किया
देवादि पुरस्कारो द्वारा, श्रद्धापूर्वक सम्मान दिया
कितने जन सने हुए थे अघ, अज्ञान अविद्या के दल-दल में
धन, धर्म लुटाते थे फसकर, खल प्रपचियों के चंगुल में

निज प्रवचन, लेखों के द्वारा, मन के सारे सशय धोये
आरूढ़ वेद पथ पर करके, सब दुख, दारिद्रय, दुरित खोये
जिनके सुयोग से स्वस्थ हुई, कितनी ही आर्य सस्थाएं
प्रिय आर्यसमाज अभ्युदय हित स्वयमेव तजे सुख-सुविधाएं

ऋषि दयानन्द का मैं उनको दृढ़ अनुयायी अनुकूल कहू
भव जल-निधि के उनको अलिप्त, मधुदानी सरसिज फूल कहूं
अथवा अधर्म अघ-उन्मूलक, उनको मैं शम्भु-त्रिशूल कहूं
या उन्हें कहू श्री 'उपाध्याय' गुरुदेव शान्ति-सुखमूल कहूं

अब भी होगे उत्सव विशाल, सम्मेलन आदिक होगे कहीं
होगे विद्वान् अनेक वहाँ, हा! 'उपाध्याय जी' होंगे नहीं
पर, मार्ग प्रदर्शक ज्योतिस्तम्भ सम उनका है जीवन चरित्र
उनके समान सब आर्य बन्धु आचरण करे अपने पवित्र

—प्रकाशचन्द्र कविरत्न, पहाड़गज, अजमेर

# चमड़े का व्यापार

आज प्रगति के युग मे हमारे शासक चमड़े के व्यापार को ही प्रोत्साहन दे रहे हैं। कितने संघर्ष तथा बलिदान होने पर भी कागजी कार्यवाही होकर रह गयी। हमारे नेताओं को भय है कि अगर चमड़े व मांस का व्यापार बन्द हो गया, तो भारतवासी भूखों मर जायेंगे। अस्तु वही रोग जनता में भी पनप रहा है। कहावत है कि

'यथा राजा तथा प्रजा'

विवाह सस्कार मे ९० प्रतिशत व्यक्ति सफेद चमडे को ही विशेषता देते हैं। खेद तो मुझे उन आर्य भाइयो पर है, जो अपने को वैदिक धर्मावलम्बी बतलाते हैं, पर उनके व्यवहार देखें जायें तो इसके सर्वथा विपरीत हैं।

यदि किसी आर्य कन्या का विवाह करना है, तो डिग्री के साथ उसका सफेद चमडा होना बहुत आवश्यक है। मेरी समझ मे नहीं आता कि भारतवर्ष इंगलैण्ड नहीं कि हर व्यक्ति सफेद हो। मेरे आर्य कहलाने वाले बन्धु अपने भविष्य निर्माण के लिये अयोग्य कन्या नहीं चाहते, बल्कि सदाचार तथा धार्मिक विचारों पर रंग को ही प्राथमिकता दी जाती है। मातृ शक्ति का उपहास हो रहा है।

एक कथा है कि राजा जनक की सभा लगी थी, बड़े-बड़े विद्वान् ऋषि मुनि पधारे हुये थे, 'अष्टावक्र' जो एक ऋषि के पुत्र थे, सभा में पधारे, वह बहुत विद्वान् थे, परन्तु उनके नाम से ही उनकी सूरत का आभास होता है, जैसा कि उनके शरीर पर आठ कुबडे थे। जब वह सभा में पधारे, सारी सभा हस पडी, यहा तक कि राजा जनक को भी हंसी आ गई। ऋषि जी तुरन्त लौट पड़े, यह दृश्य देख कर राजा जनक दौड़े और क्षमा-याचना करने लगे, कहा ऋषिवर आपका कौन-सा अपमान हुआ जो आप लौट जाने को प्रस्तुत हैं। उन्होने उत्तर दिया कि राजन् तेरी सभा को मैंने धर्म सभा सुना था उसी को देखने मैं आया था, किन्तु यहाँ आने पर मुझे ज्ञात हुआ कि यह तो चमार सभा है, जहाँ मेरे रूप को ही देखकर सब लोग हस पड़े, मेरी विद्वत्ता की कोई परीक्षा नहीं ली गई। अन्त मे शास्त्रार्थ का निर्णय हुआ और कहते हैं कि राजा जनक को 'अष्टावक्र से' हार माननी पड़ी।

किन्तु वर्तमान काल में गुणों का आदर न करके केवल फैशन एवं रूप का ही आदर होता है। जिसका दुष्परिणाम सम्मुख है, कन्याएं बाल्यकाल से ही अपने को सुन्दरी बनाने मे प्रयत्नशील रहती हैं। लज्जा जो स्त्री का प्यारा भूषण था, उससे भी पृथक हो रही है, इसका दायित्व पुरुषों पर है, यदि अब भी पश्चिमी सभ्यता को तिलांजलि दे दी जाये तो पुनः इसी भारतवर्ष मे सीता, सावित्री पैदा होने लग जायें। प्रभु से प्रार्थना है कि हमे सद्‌बुद्धि प्रदान करे।

—'एक अज्ञात बहन'

# प्रार्थना

रम रहा विश्व के कण-कण मे,<br>
प्रभु तेरी शान निराली है।<br>
जड़ चेतन सारी सृष्टि में,<br>
कोई जगह न तुझसे खाली है॥

हे अखिल विश्व के संचालक,<br>
अद्वैत अगोचर अविनाशी,<br>
आनन्द लुटाते हो प्रतिक्षण,<br>
सत चित आनन्द घन सुखराशी॥

ब्रह्माण्ड है तेरा क्रीड़ा स्थल,<br>
तू इस बगिया का माली है।

सूरज और चाँद चमकते हैं,<br>
नित तेरी ज्योति प्रखर पाकर।<br>
मुसकातीं कलियाँ बागों मे,<br>
तेरी गौरव गाथा गाकर॥

ये वृक्ष लताए वन, उपवन,<br>
सब मे तेरी हरियाली है।

करदो पुनीत जीवन उज्ज्वल,<br>
प्रति दिन यह विनय सुनाती हू।<br>
प्रभु तेरी पावन महिमा के,<br>
मैं गीत हमेशा गाती हूं॥

फिर पुष्पलता के हृदय भवन का,<br>
ये सिंहासन क्यो खाली है।<br>
रम रहा विश्व के कण-कण में<br>
प्रभु तेरी शान निराली है॥

—पुष्पलता, नरही, लखनऊ

## श्री जयचन्द जी की पत्नी का देहावसान !

झाँसी जिले की विभूति प्रसिद्ध आर्य नेता दैनिक जागरण, झांसी के सचालक, जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी के पूर्व प्रधान एव आर्य समाज, शहर, झासी के प्रधान माननीय श्री बाबू जयचन्द्र जी आर्य की धर्म-पत्नी श्रीमती कौशल्यादेवी जी आर्या का दुखद निधन दिनांक ५-४-१९६९ शनिवार को रात्रि मे २-३० बजे पटना मे लगभग ८ माह की कैंसर की बीमारी के पश्चात् हो गया। आपका शव पटना से झासी कार द्वारा दिनाक ७-४-६९ को प्रातःकाल लाया गया। आपका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार श्याम चोपड़ा श्मशानघाट पर किया गया। माता कौशल्यादेवी अपने पति की ही भाँति पूर्णरूपेण आर्या थीं। आपके परिवार में नित्य यज्ञ होता है। माता जी दीर्घकाल तक स्त्री आर्यसमाज मोखनबाग की प्रधाना रहीं। आप के परिवार में वैदिक धर्म के प्रति बड़ी लगन तथा उत्साह है। आप बीमारी की दशा में भी अभी नवम्बर ६८ में हुए दशम आर्य महासम्मेलन में भाग लेने हेतु स्पेशल ट्रेन द्वारा अपने पति श्री बाबू जयचन्द्र जी के साथ गई थीं।

आपने अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ा है जिनमे दो पुत्र, पुत्र बधुए, तीन पुत्रियाँ तथा अन्य सदस्य सम्मिलित हैं।

आपके असामयिक निधन से झाँसी जिले की आर्य समाजों को जो क्षति हुई है, वह सर्वथा अपूर्णनीय है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपकी पुण्यात्मा को सद्‌गति प्रदान करे तथा इस महान शोक को सहन करने की शक्ति आपके पारिवारिक जनों को प्रदान करे।

झांसी जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा की ओर से मैं आपको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

--बेवारीलाल आर्य मन्त्री<br>
जिला आर्य उप प्र.नि. सभा झांसी

# आइए, हम देव भाषा संस्कृत पढ़ें

## तृतीय पाठः

### विशेष्य और विशेषण

[ संस्कृत मे विशेषण और विशेष्य के लिङ्ग तथा वचन मे सदा समानता होती है। नीचे लिखे उदाहरणों से इसे भलीभांति समझिए। इस बात पर ध्यान दीजिए कि विशेषण सदा विशेष्य के अनुसार होता है। जैसे लिंग, वचन, कारक विशेष्य मे होता है, वैसा ही विशेषण मे होता है। ]

| | | |
|---|---|---|
| [१] | विमलं जलम् | स्वच्छ जल |
| [२] | नीलं गगनम् | नीला आकाश |
| [३] | कोमल कुसुमम् | कोमल फूल |
| [४] | पुराण गृहम् | पुराना घर |
| [५] | साधु पुरुष | सज्जन पुरुष |
| [६] | साध्वी सीता | पतिव्रता सीता |
| [७] | रमणीय समय. | सुन्दर समय |
| [८] | साधु शीलम् | सुन्दर आचरण |
| [९] | महत् कुलम् | बडा कुल |
| [१०] | कोमल स्वभाव. | कोमल स्वभाव |
| [११] | बहूनि फलानि | बहुत से फल |
| [१२] | महती सभा | बड़ी सभा |
| [१३] | स बालक | वह लडका |
| [१४] | सा बालिका | वह लडकी |
| [१५] | अय बालक | यह लडका |
| [१६] | इय बालिका | यह लडकी |
| [१७] | इद फलम् | यह फल |
| [१८] | महान् वृक्ष. | बडा पेड |
| [१९] | बहव बालका. | बहुत लडके |
| [२०] | बह्व्य बालिका. | बहुत सी लडकियाँ |
| [२१] | तत् फलम् | वह फल |
| [२२] | कोमला वाणी | कोमल वाणी |
| [२३] | द्वे फले | दो फल |
| [२४] | तिस्र कन्या. | तीन लडकियाँ |

विशेषणो का निम्न लिखित रूप समझिए—

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | विशाल, | विशाला, | विशालम्। |
| (२) | उत्तम, | उत्तमा, | उत्तमम्। |
| (३) | नवीन, | नवीना, | नवीनम्। |
| (४) | सुन्दर, | सुन्दरी, | सुन्दरम्। |
| (५) | कृष्ण., | कृष्णा, | कृष्णम्। |
| (६) | हरित, | हरिता, | हरितम्। |
| (७) | रक्त, | रक्ता, | रक्तम्। |

रिक्त स्थानो को भरिये और विशेषण प्रयोग का अभ्यास कीजिए—

| | | |
|---|---|---|
| ··· नारी | ·· पुस्तकम् | · गृहम् |
| · पुष्पम्, | · वनम् | · नगरम् |
| ·· काक | · शुक. | मयूर |
| ··· वस्त्रम् | हस्ती | ·· कन्या |
| · जलम् | गौ। | कुक्कुर. |
| ·· कम्बलम् | नारी | लता |

—'वसन्त'

## जौहरस्थली चित्तौड़गढ़

(पृष्ठ ६ का शेष)

तीसरा जौहर उदयसिंह की उत्तरोत्तर बढती हुई शक्ति को देखकर जब बादशाह अकबर को सन् १५६७ मे चित्तौड पर धावा करने पर निश्चय हुआ। टिड्डी दल की तरह उमड़ी हुई असख्य मुगल सेना से घिरा हुआ देख उदयसिंह ने अपने सरदारो की सभा मे विचार-विमर्श कर चित्तौड दुर्ग की रक्षा का भार बदनौर के जयमल और आमेट के पत्ता को सौंप कर कुछ सरदारो को साथ ले अरावली की पहाडियो मे चले गये। किले की रक्षा के लिये केवल ८००० राजपूत शेष रहे।

युद्ध प्रारम्भ हुआ। अकबर की सेना सुरग लगाकर किले को तोड़ने का प्रयत्न करने लगी। एक सुरग मे १२० मन बारूद तथा दूसरी मे ८० मन बारूद भरकर किले की दीवार को उडा दिया। बडे-बडे पत्थरो खण्ड कोसों तक उड़गये और मनुष्यों के समूह के समूह नष्ट हो गये। एक रात्रि को जयमल मशाल जलाकर दीवार की मरम्मत करा रहा था कि अकबर ने ताककर बन्दूक मारी इससे वह लगडा हो गया। जयमल के बेकार होते ही, राजपूतो ने अपने बच्चो स्त्रियो को जौहर करने की आज्ञा दे दी। फिर क्या था। किले के भीतर से लाल ज्वालाए निकलने लगीं। इसका कारण पूछने पर आमेट के राजा भगवानदास ने अकबर से कहा अब तैयार हो जाइये। राजपूतो ने जौहर कर डाला है पल किले के फाटक खुलेंगे।

दूसरे दिन प्रात काल होते ही अकबर की सेना ने दुर्ग पर हमला किया। राजपूतो ने भी दुर्ग के द्वार खोल दिये और भूखे भेडियो की तरह यवनो पर टूट पडे। जयमल की टाग टूटी हुई थी वह इस योग्य नही था कि अपनी पूरी शक्ति से युद्ध करता। फिर भी देश के नाम पर मर मिटने वालो मे वह सबसे आगे था। वह कल्ला नामक एक सम्बन्धी के कधे पर बैठकर अपनी युद्ध की उत्कट अभिलाषा पूर्ण करने को उद्यत हो गया। दोनो ही नङ्गी तलवारें ले भीषण युद्ध करते हुये हनुमान पोल और भैरव पोल के बीच मारे गये। जयमल के मरते ही पत्ता भयङ्कर नर सहार करने लगा। तोपें गरजने उन्मत्त शरीर चिल्लाने हाथी चिघाडने और घायल वीर कराहने लगे। पत्ता के खड्ग प्रहार से सेना को काफूर की तरह उड़ते देख अकबर के होश उड़ गये। उसी समय उसने सिखलाये हुये हाथियो को छोड देने का आदेश दिया जो कुचल कुचल कर राजपूतो का सहार करने लगे। राजपूतों ने भी मुगल सेना छोड हाथियो की सूण्ड और दात काट-काटकर गिराना प्रारम्भ किया, हाथी भी दोनो तरफ के योद्धाओ को कुचलते हुये प्राण लेकर भाग निकले। इसी दौड़ धूप में एक हाथी ने पत्ता को सूण्ड से पकड़कर जमीन पर दे मारा जिससे वह वहीं मरकर वीरगति को प्राप्त हुआ।

राजपूतो ने यह जौहर चित्तौड़ मे तीसरी बार किया था क्षत्राणियो के अतिरिक्त इस वक्त छोटे-छोटे दुधमुहे बालक-बालिकाएँ भी अग्नि की भेट हुई थीं, इसी प्रकार अनेक रूप पिपासित हृदयहीन सम्राटो के कारण चित्तोड का उत्फुल नगर भयङ्कर वीरान हुआ। भारत के रजवाडे कान मे तेल डालकर पडे रहे। किन्तु चित्तोड के बलिदान की पवित्र कहानी आज भी दिशाओ मे गूज रही है। [illegible] तलवारो की चकाचौंध से और लडते हुये वीरो के [illegible] स्वाभिमान की रक्षा [illegible] नही। [illegible] मुह सामने [illegible] विषधरो के फणो को रौंदते हुये सपूत [illegible] नहीं। [illegible] मे पृथ्वी को कँपाते हुये भालो बर्छियो की तीव्र नोको से अपनी छाती से अडाते हुए रण यात्रा वीर पुरुष करते हैं

## निर्वाचन–

–आर्यसमाज परमानन्द बस्ती रथखाना बीकानेर।

प्रधान श्री अमरनाथ जी
उपप्रधान–श्री सुधीन्द्रकुमार जी
" श्री बल्देवकृष्ण जी
" श्री सुशीला जी वैद्या
मन्त्री–श्री प्रो० प्रतापसिंह जी
उप मन्त्री-श्री जयदेव जी आर्य
" श्री हरभगवान जी
कोषाध्यक्ष–श्री शिवनारायण जी

–आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर।

प्रधान–श्री यशपाल जी
मन्त्री–श्री रणजीतसिंह जी यादव

–आर्य समाज कर्णपुरवत्त (फर्रुखाबाद)।

प्रधान–श्री गयासिंह जी
मन्त्री–श्री उदयपाल सिंह जी

–आर्य समाज चौक प्रयाग

प्रधान–श्री खजानसिंह जी
उप प्रधान–श्री विश्वप्रकाश जी
" श्री मूलचन्द जी अवस्थी
" श्री गगाप्रसाद जी
" श्री डा सीताराम मलिक
" श्री बैजनाथप्रसाद गुप्त
मन्त्री–श्री राधेमोहन जी
उपमन्त्री–सर्व श्री डा विमलेश जी
" हरिमोहनलाल जी
" बृजमोहनलाल जी
" विनयकुमार जी
" मदनमोहन जी
कोषाध्यक्ष–श्री कृष्णाप्रसाद जी

–राधेमोहन मन्त्री

–आर्यसमाज बलरामपुर (गोडा)

प्रधान–श्री द्वारिकाप्रसाद शुक्ल
उपप्रधान–सुन्दरलाल अग्निहोत्री
" श्री शत्रुघ्नलाल जी
मन्त्री श्री रमाकान्त मिश्र

–मन्त्री

–आर्यसमाज गोरखपुर छावनी (स्थित मोहद्दीपुर।

प्रधान–श्री रामाश्रय प्रसाद
उप प्रधान-श्री पी आर. छावड़ा
मन्त्री श्री तिलेश्वर प्रसाद
उपमन्त्री-श्री उमाशकर
कोषाध्यक्ष-श्री रामकिशुन

–आर्यसमाज चुनार।

प्रधान–श्री डा० श्यामनाथ शर्मा

उपप्रधान श्री डा बाबूनन्दन जी कुशवाहा।
मन्त्री-श्री प० द्वारिकानाथ पाण्डे
उप मन्त्री- श्री वैजनाथ प्रसाद
कोषाध्यक्ष-श्री अनन्तराम आर्य

–महिला आर्यसमाज आगरा छावनी।

प्रधान श्रीमती यशोदा जी पुरी
उपप्रधाना–श्रीमती पद्मावती जी
मन्त्राणी-श्रीमती सावित्रीदेवी भाटिका
उप मन्त्राणी श्रीमती कृष्णादेवी जी
कोषाध्यक्षा-श्रीमती अहूतदेवी जी

–आर्यसमाज सासनी (अलीगढ)

प्रधान-श्री गयाप्रसाद आर्य
उपप्रधान-श्री प्रकाशचन्द्र गुप्ता
मन्त्री-श्री गिरधरलाल भार्गव
उपमन्त्री श्री रतीशचन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्ष-श्री प्रेमप्रकाश आर्य

–आर्यसमाज रेल कारखाना वाराणसी।

प्रधान-श्री देवेन्द्र जी तनेजा
मन्त्री-श्री सीताराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर शर्मा
पुस्तकाध्यक्ष-श्री दर्शनलाल जी
–सीताराम आर्य मन्त्री, आ० स०

–आर्यसमाज सुहागपुर (हरदोई) की सभा डा०प्यारेलाल श्रीवास्तव होम्योपैथ हरदोई की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति दे और उनके दुखी परिवार को धैर्य तथा शान्ति प्रदान करे।

–रामनरेश मन्त्री

–२३ मार्च को आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान मे एक वृहद सार्वजनिक सभा डा० वाराणसीप्रसाद जी प्रधान हरिजन आश्रम के सभापतित्व मे आर्य समाज कटरा मे सम्पन्न हुई। सभा मे हिन्दू एकता की आवश्यकता एवं उपायो के सम्बन्ध मे विचार पूर्ण भाषण हुए तथा आर्यसमाज के इस सिद्धान्त की बलपूर्वक घोषणा की गई कि आर्यसमाज अछूत कहलाने वाले भाइयो को हिन्दू जाति का एक अभिन्न, आवश्यक एवम् उपयोगी अग समझता आया है तथा उन्हे सदा प्रेमपूर्वक गले लगाता है।

पश्चात् अछूत कहे जाने वाले भाइयों के प्रतिनिधियो के साथ एक सौ से अधिक व्यक्तियो का सहभोज हुआ।

३० मार्च को आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान मे इलाहाबाद जिला आर्य सम्मेलन सिरसा ग्राम मे हुआ।

–बेनीमाधवदेव सिनहा मन्त्री

–आर्यसमाज गया का ४६ वां वार्षिकोत्सव दि० २७ मार्च से ३० मार्च तक बहुत धूमधाम के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न वक्ताओ के भाषण हुये। सर्वश्री स्वामी आनन्दगिरि, ओ३म् प्रकाश वर्मा, श्रीमती प्रज्ञादेवी वाराणसी, आचार्य प० रामानन्द शास्त्री, प० गगाधर शास्त्री, रामनारायण शास्त्री, श्री सुरेन्द्र सिह तूफान, ठा० जयपालसिह, श्री हरिप्रसाद शास्त्री पटना।

–आर्यसमाज देवबन्द ने इस वर्ष चौदस के मेले मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। –मन्त्री

–आर्य समाज जहानाबाद [गया] का उत्सव सानन्द सम्पन्न हो गया। –मन्त्री

–आर्य समाज चौक के उप प्रधान तथा कर्मठ आर्य श्री गगाप्रसाद जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री शिवप्रसाद जी को एक कालेज के उत्सव में किसी अज्ञात व्यक्ति ने अकारण दि० २७ जनवरी को गोली मार दी थी, जिसका ४ फरवरी को मेडिकल कालेज प्रयाग के चिकित्सालय मे दुखद देहावसान हो गया।

दिनांक ६ फरवरी को आपके निवास पर शान्ति यज्ञ हुआ। यज्ञोपरान्त आपने नगर की विभिन्न संस्थाओ को १३००) दान में दिये।

–आर्यसमाज भोगाव मे वेद प्रचार सप्ताह पारिवारिक सत्संग द्वारा बडे उत्साह से मनाया गया। तथा वेद पाठ किया गया। श्री श्रीराम जी गुप्त के पौत्र के आकस्मिक निधन पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवगत आत्मा को सदगति तथा उसके शोक सतप्त परिवार को शान्ति प्रदान करे। –मन्त्री

### श्री बैजनाथ प्रसाद जी गुप्त स्वस्थ तथा ५०१) का दान

आर्यसमाज चौक प्रयाग के उपप्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के निरीक्षक श्री बैजनाथप्रसाद जी गुप्त ने अपनी लम्बी बीमारी से उठने के पश्चात् एक वृहद यज्ञ करके ५०१) रुपया विभिन्न सस्थाओ को दान दिया।

–मन्त्री

### आदर्श शुभ विवाह

बाहर से आई हुई कुमारी फूलवती जो २२-२३ दिन से आर्य समाज बुलन्दशहर की सरक्षकता में थी और जिसकी सिटी मजिस्ट्रेट बुलन्दशहर से आदेश प्राप्त करने के पश्चात् दिनाक ८-४-१९६९ साय ५ बजे श्री नरेन्द्रपालसिंह जो बिक्रीकर कार्यालय में कर्मचारी हैं वैदिक रीति से विवाह सस्कार कराया गया जिसमे लगभग सभी सम्प्रदाय के २००-२५० पुरुष व महिलाओं ने उत्साह व प्रेम के साथ भाग लिया और भूरि-भूरि प्रशसा की जिसका नगर पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। –शिवलाल वर्मा प्रधान

–बनारसीदास शर्मा मन्त्री

## श्री देवेन्द्र जी आर्य को भतीजे का शोक !

अत्यन्त दुःख है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री सेठ देवेन्द्र जी आर्य सरायतरीन (मुरादाबाद) के १२-१३ वर्षीय भतीजे प्रिय शरदकुमार का प्रेशर मशीन से एक्सीडेण्ट हो जाने से असमय और अनायास देहावसान हो गया ! बालक शरद कुमार अत्यन्त प्रखर बुद्धि का होनहार छात्र था और पढ़ने मे बड़ा दक्ष था। वह प्रतिदिन पढ़ने साइकिल पर सम्भल जाया करता था, पर होनी ने उसे उस दिन मशीन से टकरा दिया और उसका दुःखद अन्त हो गया। जिस दिन यह दुर्घटना हुई, उसी दिन श्रीदेवेन्द्र जी लखनऊ आये हुए थे, और सभा के कोष विभाग का कार्य देख रहे थे। उन्हें रात को १२ बजे तार से उस एक्सीडेण्ट का समाचार मिला और वे प्रातः ही स्यालदा एक्सप्रेस से चल पड़े, परन्तु वहाँ तो एक दिन पूर्व ही प्यारा शरद अपनी अन्तिम लीला सवरण कर चुका था। हम श्री देवेन्द्र जी के महान् शोक मे सभा, आर्य्यमित्र और आर्यजगत् की ओर से सवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और शोक-सतप्त परिवार को इस अनभ्र वज्रपात सहने की शक्ति प्रदान करे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल ए. सभा मन्त्री

## आर्यसमाज सरायतरीन का शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सरायतरीन-हयातनगर की साधारण सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री सेठ देवेन्द्र जी आर्य के १३ वर्षीय होनहार भतीजे शरद्कुमार के प्रेशर मशीन से एक्सीडेण्ट हो जाने से देहावसान हो जाने पर शोक प्रकट करती है, तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा के लिये शान्ति प्रदान करने के लिये प्रार्थना करती है, तथा उनके शोकातुर परिवार से सहानुभूति रखती हुई प्रभु से यह भी विनय करती है कि उनके शोकातुर परिवार को धैर्य शक्ति प्रदान करे।" —विजय आर्य

कायर पुरुष नहीं। उनकी वीर वाणी नहीं तोपों की गडगड़ाहट में गरजती है और राजपूतों का स्वाभिमान हथियारों की प्रखर धारा में चमकता है।

अतः वर्चस्व एवम् जातीय जागरण के महान् संक्रमण युग में हिमालय से कन्या कुमारी तक भारतीय राष्ट्र की परिपक्व नैतिक नीति बनाने के लिये विश्वबन्धुत्व वैदिक सस्कृति के आदर्शोन्मुख व्यवहार क्रियान्वित करने, क्षात्र धर्म की पुनः वर्चस्व स्थापनार्थ भारतीय अन्तर्रात्मा के अमर प्रसगों, अजर आख्यानों स्मरणीय घटनाओं को अपने चिरन्तन आदर्शों के मूर्तस्वरूप चित्तौडगढ़ के मौन किन्तु इतिहास आकुल प्रॉगण में आयोजित जौहर मेले में राष्ट्र सुरक्षा एवम् पवित्र आत्मा बलिदान का स्वर्णिम सङ्कल्प लेकर 'वयन् राष्ट्रे जागृयाम की ज्योति प्रकाशित करे।

★

## उत्सव

—आर्य समाज समस्तीपुर का उत्सव ११ से १५ जुलाई तक मनाया जायगा। —मन्त्री

—१, २, ३ जून को आर्य समाज भोजपुर खेडी का उत्सव समारोह से मनाया जायगा। —मन्त्री

## आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर का महोत्सव

आर्यसमाज, स्त्री आर्यसमाज तथा आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्दनगर कानपुर का महोत्सव ८ से ११ मई ६९ को विद्यालय भवन मैदान मे समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् नेता सर्व श्री आचार्य विश्वश्रवा जी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री रामगोपाल शालवाले, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री प०शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, प्रो० रतनसिंह, प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा सभामन्त्री, राजपाल मदनमोहन चिमटा मण्डली, जोरावरसिंह, श्रीमती प्रभावती आदि पधार रहे हैं।

८ मई बृहस्पतिवार सायं ५ बजे समाज मन्दिर से नगर कीर्तन निकाला जायेगा। महोत्सव की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य करेंगे। —शिवदयाल मन्त्री

## काशी आर्य समाज का ८८ वां वार्षिकोत्सव

काशी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ता० ८, ९, १०, ११ मई को टाउनहाल के मैदान मे बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। जिसमें प्रसिद्ध विद्वान् उपदेशक सन्यासी पधार रहे हैं।

शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल शास्त्री, स्वामी आनन्द गिरि, तर्क शिरोमणि प० विद्यानन्द, भजनोपदेशक ठा० इन्द्रदेव सिंह, कुंवर श्री नन्दलाल, ठा० महिपालसिंह आदि आ रहे हैं।

## सार सूचनाएं

—आर्य समाज कुकरा टाउन (खीरी) का मन्दिर बनना शुरू हो गया है। दानी महोदयो की सहायता पहुंचनी चाहिए। —मन्त्री

—आर्य समाज संयोगिता गञ्ज इन्दौर का हीरक जयन्ती महोत्सव मई के अन्तिम सप्ताह में मनाया जायगा। —मन्त्री

—कन्या गुरुकुल हरिद्वार में कन्याओं के प्रवेश के लिये आवेदन पत्र आमन्त्रित किये गये हैं। —आचार्य

—आर्यसमाज साडी (हरदोई) का वार्षिकोत्सव १६ से १९ अप्रैल तक समारोह से मनाया गया। श्री प० केशवदेव जी शास्त्री, श्री रत्न जी वानप्रस्थी और श्री ब्रह्मानन्द भजनोपदेशक के व्याख्यान और भजन हुये। —मन्त्री

—आर्यसमाज बाराबकी ने श्री प० आनन्द भिक्षु जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया है। —मन्त्री

—आर्यसमाज श्रीचक्रपुर (फर्रुखाबाद के श्री अमरपालसिंह जी की पुत्री का नामकरण सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। —मैकूलाल

—आर्य स्त्री समाज बुढ़ाना द्वार मेरठ ने श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —सावित्रीदेवी

—६ अप्रैल को बक्सर (बिहार) के श्री कहैन्यालाल जी तथा जीवनलाल सर्राफ का यज्ञोपवीत सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। —मन्त्री

—आर्य समाज मुगलसराय का ५१ वां वार्षिकोत्सव १० से १३ अप्रैल तक समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—२० अप्रैल को वेद प्रचार मण्डल गोविन्दनगर कानपुर का साप्ताहिक सत्सग श्री गोपालदास जी गाँधी के निवास पर हुआ। इसी अवसर पर आपके पौत्र का नामकरण व मुण्डन सस्कार हुआ। —जातिभूषण मन्त्री

—२४, २५ मार्च को श्री नन्दलाल जी ने आर्य समाज पिपरगांव मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। —मन्त्री

—४ अप्रैल को पिपर गाँव के श्री डा० शान्तिस्वरूप जी की पुत्री का नामकरण सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। —मन्त्री

—सार्वभौम आर्य परिव्राजक संघ की अत्यावश्यक बैठक आर्य वानप्रस्थ-सन्यासाश्रम ज्वालापुर मे श्री पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता मे हुई जिसमे निम्न निर्णय हुये।

१—समस्त आर्य समाजो एव आर्य प्रतिनिधि सभाओ के अन्तर्गत एव पारस्परिक विवादों को समाप्त करने व कराने का सतत यत्न करना।

२—समस्त आर्य सन्यासियो की मण्डी मे प्रशिक्षण कर आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रचार की व्यवस्था करना।

३—दिल्ली में आर्य सन्यासी संघ के अन्तर्गत आर्य सन्यासियों के लिये स्थाई प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया।

—स्वामी आत्मानन्द तीर्थ, मन्त्री

## निर्वाचन—

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखीमपुर-खीरी

प्रधान—श्री निर्मलचन्द्र राठी गोला
उपप्रधान-„ कैलाशचन्द्र आयकर अधिवक्ता
मन्त्री—श्री वीरेन्द्रबहादुरसिंह एम ए.
मुख्य उपमन्त्री-श्री ओमप्रकाश आर्य पलिया
उपमन्त्री—श्री फकीरचन्द्र लखीमपुर
पुस्तका.-श्री हरनारायण कुकराटाउन
—वीरेन्द्र बहादुरसिंह मन्त्री

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून

प्रधान—श्री प० तेजकृष्ण की कौल (देहरादून)
उपप्रधान—श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य "
तथा आनन्दकुमार विकासनगर
मन्त्री—श्री देवदत्त बाली, देहरादून
उपमन्त्री-श्री राजपालसिंह डोईबाला
श्री दलीपसिंह,देहरादून
कोषाध्यक्ष—श्री भगतसिंह,डोईवाला
निरीक्षक-श्री यशपाल आर्य देहरादून
—देवदत्त बाली मन्त्री

—आर्यसमाज जगतपुर

प्रधान- श्री रघुवीरसिंह जो
मन्त्री—श्री लालाराम जी
—मन्त्री

—आर्यसमाज शिविल लाइन्स सहारनपुर। प्रधान श्री चण्डी प्रसाद जी, उपप्रधान श्री हरिचन्द्र शर्मा, मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र जी, उपमन्त्री श्री सतीशकुमार जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री चरणजीतलाल जी
—मन्त्री

—आर्यसमाज मुरादाबाद

प्रधान—श्री हरिदत्तजी शास्त्री
उपप्रधान—श्री धर्मवीर आयुर्वेदालकार
„ „ डा० हसराज चोपड़ा
मन्त्री—श्री महेशचन्द्र आर्य
उप मन्त्री—श्री रवीन्द्रकुमार जी
„ —श्री ब्रह्मदत्त जी
कोषाध्यक्ष-चौ उमरावसिंह वर्मा
पुस्तकाध्यक्ष-श्री सुमेरसिंह जी
—महेशचन्द्र आर्य मन्त्री

—जिला उप सभा इटावा

प्रधान—श्री श्यामजी आर्य
उपप्रधान-श्री रघुवशराय एम ए
मन्त्री—श्री प्रतापसिंह एम ए.
उप मन्त्री—श्री उमेशचन्द्र स्नातक
कोषाध्यक्ष—„ चन्द्रनारायण दीक्षित
—मन्त्री

—आर्यस० लाजपतनगर कानपुर

प्रधान—श्री भगतनारायण, मलिक
उपप्रधान—श्री इन्द्रदेव कपूर
„ „ डा० दुर्गादास
मन्त्री—श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य
सहा. मन्त्री-श्री मनोहरलाल
उपमन्त्री—श्रीमती रतनदेवी मलिक
कोषा -श्री ब्रह्मप्रकाश नागरथ
—राजेन्द्र प्रसाद आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी

प्रधान-श्री रामकृष्ण आर्य
उपप्रधान—श्री आनन्दप्रकाश जी
मन्त्री—श्री मेवालाल आर्य
उपमन्त्री—श्री प्रकाशनारायण आर्य
प्रचार मन्त्री—श्री गोपालदास आर्य
कोषा —श्री बुद्धदेव जो आर्य
पुस्तका —श्री जगतनारायण मौर्य
—मेवालाल आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज भैंसा भीष्मनगर

प्रधान-श्री बुद्धसिंह आर्य
उपप्रधान-श्री शेरसिंह जी आर्य
मन्त्री „ सोमदत्त जी शर्मा
उपमन्त्री—" हरस्वरूप जी आर्य
कोषा. —„ रामशकर जी आर्य
—सोमदत्त शास्त्री मन्त्री

## हवाई जहाज से भेजने लायक बिजलीघर

लन्दन—ब्रिटेन की एक फर्म ने वायुयान से भेजे जाने योग्य एक छोटा-सा बिजली घर तैयार किया है। मोटरगाडी के ठेले पर प्रयुक्त होवे वाले बिजली घर से यह नया बिजली घर क्षेत्रफल मे आधा और वजन मे एक तिहाई है।

इसका वजन कम करने के लिए इसमे विशेष प्रकार के हल्के धातु को ढाली हुई चद्दरें प्रयुक्त की गई हैं। यह बिजलीघर ४० किलोवाट बिजली प्रजनन करता है और इसे चालू करने के लिये इच्छानुसार बिजली या वाष्प शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है। यह बिजली घर सर्द और गर्म दोनों प्रकार के देशों मे काम कर सकता है।

## सागर में अनुसंधान शाला

मास्को—पानी की सतह से ७५ फुट नीचे काले सागर मे रूस की एक अनुसन्धानशाला काम कर रही है।

यह अनुसन्धानशाला दो गोला कार इस्पाती कमरो की बनी है। बाहर की दुनिया से बातचीत करने के लिये इसमे टेलीफोन लगा है।

अनुसधानशाला का मुख्य उद्देश्य समुद्र मे पाये जाने वाले जीवधारियो का अध्ययन करना बताया गया है।

यद्यपि अनुसन्धानशाला पनडुब्यिो के सिद्धान्त पर ही स्थापित की गई है, इसकी विशेषता यह है कि एक ही जगह स्थिर है।

## खिलाड़ी कैदी जेल से बाहर फुटवाल मैच मे

मेलबर्न—न्यू साउथवेल्स की गोल बर्न नामक जेल के अधिकारियो ने अपने कैदियों को एक फुटबाल मैच मे भाग लेने के लिये छुट्टी दे दी।

कैदी खिलाड़ियो के प्रतिद्वन्दी न्यू साउथवेल्स के प्रसिद्ध फुटबाल खिलाडी थे।

कैदी खिलाड़ियो की देखभाल के लिये जेल के दो वार्डर साथ में भेजे गये थे।

## नेपोलियन पिस्तौल ३६००० रुपए मे

पेरिस—जो शस्त्र निर्माता नैपोलियन के लिये शस्त्रास्त्र बनाता था उसकी बनाई एक पिस्तौल एक नीलाम मे ३६०००) रुपए मे विकी है।

शस्त्र निर्माता का नाम था बूते लापेज। यह नीलाम अभी उस दिन लन्दन की 'हालैंड एण्ड हालैण्ड' कम्पनी ने किया था।

खरीदार का नाम पता नहीं मालूम हो सका।

## भूतो ने विवाह रुकवा दिया

नई दिल्ली, यहा एक विवाह के अवसर पर बारात आ जाने के बाद उसके पिता और दुल्हन के पिता तथा ५ अन्य व्यक्तियो को रात हवालात मे काटनी पड़ी।

बताया जाता है कि जब बारात लड़की वालो के घर पहुची तो लडकी के पिता ने इस आधार पर विवाह करने से इकार कर दिया कि लडके लड़की की आयु मे बडा अन्तर है, तथा दूल्हा के मकान मे भूत रहते हैं। इस पर दोनो पक्षो मे झगड़ा हो गया और पुलिस दोनों पक्षो के कुछ व्यक्तियो को पकड़ ले कर गई।

## छत गिरने से ११ बराती मरे ६० घायल

मेरठ, यहाँ एक विवाहोत्सव की शहनाइया शोक मे परिणत हो गई, जब कि एक मकान की छत गिरने से ११ बराती मारे गये और ६० घायल हो गये। इस मकान मे बाहर से आई हुई बारात ठहरी हुई थी। अचानक छत गिरने से विवाह की खुशियां मातम मे बदल गई।

जो व्यक्ति मारे गये उन मे अधिकाश सख्या बच्चो की है। ६० घायलो में से कुछ की दशा गम्भीर है। इस दुर्घटना से सारे शहर मे कोहराम मच गया है।

## ७ हजार रुपये में भैंस

अमृतसर, यहां पर विगत दिनो पशुओ की मण्डी में एक भैंस ७ हजार रुपये मे बिकी, इस से पूर्व इस मण्डी मे अधिक से अधिक ३ हजार रुपये में भैंस बिक चुकी है। भैंस के मूल्य का यह रिकार्ड नया बताया जाता है।

## साधु के थैले से बच्चे का शव मिला

पटना, पुलिस ने यहाँ एक साधु के थैले से एक बच्चे का शव बरामद किया है। साधु का कहना है कि वह काली माता को प्रसन्न करने के लिये बच्चे के शव का पूजा मे प्रयोग करना चाहता था।

## अंग्रेज ठग गिरफ्तार

दारजीलिंग, एक ब्रिटिश नागरिक आर्थर मालोने को पुलिस ने आज यहाँ विदेशियो को सिक्किम में प्रवेश होने के नकली परमिट जारी करने के आरोप मे गिरफ्तार कर लिया। बताया जाता है कि वह एक परमिट के बदले ५०) प्राप्त करता था।

स्थानीय अधिकारियो के अनुसार आर्थर न केवल विदेश मन्त्रालय के अधिकारियो के नकली हस्ताक्षर ही करता था बल्कि उसने रबड की नकली मोहरे भी बनवा रखीं थी।

रहस्य उस समय खुला जब नकली हस्ताक्षरो के बारे मे अधिकारियो को कुछ सन्देह हुआ।

## बहुत से सिख यात्री पाकिस्तान मे बाजार लगा कर माल बेचते रहे

अम्बाला नगर, हरियाणा अकाली दल के महामन्त्री श्री करतार सिह टक्कर ने एक वक्तव्य मे कहा है कि पजा साहिब की यात्रा पर गये बहुत से सिख यात्री अपने साथ काफी सामान ले गये थे, और वहा बाजार लगाकर वह माल बेचते रहे।

आपने कहा बहुत से सिख नेता पाकिस्तान के नेताओं की प्रशंसा मे वक्तव्य भाषण और टेप-रिकार्ड करवा कर आये हैं, परन्तु अब भारत वापस आकर पाकिस्तान के विरुद्ध वक्तव्य दे रहे हैं। इस प्रकार उन्होने दोनों देशो से धोखा किया है।

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

खेल कितना सुन्दर है। तुम छिपो मै खोजू। मैं छिपू और तुम खोजो मै दौड़ू तुम पकड़ो तुम दौडो और मैं पकड़ू।

बालक की बाल क्रियाओं पर माता-पिता मुग्ध होते हैं। उसकी सरलता उन्हें मोह लेती है। वे उस पर रीझ जाते हैं—चूम-चूमकर बच्चे के गाल लाल कर देते है। बालक की तोतली भाषा भी उन्हें कितनी प्रिय लगती है।

आत्मा जब ऐसे ही निष्पाप निष्कपट और सरल हो जाता है तब वह परमपिता और माता भी मुग्ध हो जाते हैं। आत्मा रूपी वत्स की सरल कियाए उस परम को खींचती हैं, अपने प्रति आकर्षित करती हैं।

प्रभो! मै चूंकि तुम्हें आत्मना चाहता हू, इसलिये वैखरी वाणी से ही नहीं, मध्यमा से ही नहीं, पश्यन्ती और परा से भी पुकार रहा हू। दार्शनिक तुम्हारी बुद्धि पूर्वक विवेचना करते हैं। वैज्ञानिक तुम्हारी उपयोगिताओ की बातें करते हैं, परन्तु मै तो प्रभु तुम पर ऐसा रीझा हुआ हू कि बस तुम तुम ही तुम हो मेरे इस जीवन मे सगीतज्ञ तुम्हारे नाम पर बनाये हुए भजनो को अलापते हैं, मधुर-मधुर स्वर छेड़ते हैं, समा बाधते हैं, किन्तु मैं तो सुर और स्वर की गति नहीं जानता—मैं तो केवल तुम्हे भजता हू—मुझे तो केवल भजन आता है।

हे परमप्रिय सुन्दर देव! यदि मेरी बाल चेष्टाए तुम्हारे मन को मोह रही हे तो आओ, चले आओ मुझे अपने 'परम सदन' मे ले चलो। मुझे सीधा उस परम समाधि मे ले चलो, जहाँ मैं तुम्हारे सुवर्ण को देख सकू। ज्योतिर्मय लालिमा मे मै भी लाल ही लाल हो जाऊँ। बोलो, आओगे न?

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल –६०

वैशाख १४ शक १८९१ ज्येष्ठ कृ० २
[ दिनाङ्क ४ मई सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य · २५९९३ तार । 'आर्य्यमित्र"

## अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था–

### विद्वानों का सम्मान करो
### शङ्काओं का निवारण करो
### एक परमेश्वर की उपासना करो

(१) जो हमारे बीच मे विद्वान् और ब्रह्म के जाननेवाले धर्मात्मा मनुष्य है, उन्हीं के वचनो मे विश्वास करो और उनको प्रीति व अप्रीति से श्री वा लज्जा से, भय अथवा प्रतिज्ञा से सदा दान देते रहो तथा विद्या दान सदा करते जाओ।

(२) जब तुमको किसी बात मे सन्देह हो, तब पूर्ण विद्वान् पक्षपात रहित, धर्मात्मा मनुष्यो से पूछ के शङ्का निवारण सदा करते रहो। वे लोग जिस प्रकार से जिस-जिस धर्म काम में चलते होवें, वैसे ही तुम भी चलो। यही आदेश अर्थात् अविद्या को हटा के उसके स्थान में विद्या का और अधर्म को हटा के धर्म का स्थापन करना है। इसी को उपदेश और शिक्षा भी कहते हैं।

(३) इसी प्रकार शुभ लक्षणों को ग्रहण करके एक परमेश्वर ही की सदा उपासना करो।

### (१) कुरान दर्पण मूल्य २) रु०

प्रकाशक–वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगज (उ०प्र०)
ग्रन्थकार–आचार्य डा० श्रीराम आर्य

१७८ पृष्ठो की यह पुस्तक केवल आर्यसमाजियो के लिये है। खण्डन-मण्डन ग्रन्थ माला का यह २६ वां पुष्प है। इसमे २० विभिन्न विषयों पर कुरान का परिचय कराया गया है। पुस्तक ज्ञान वर्द्धक है और शास्त्रार्थ करने वालों के लिये विशेष रूप से उपयोगी है।

### (२) डंके की चोट से ऐलान–मूल्य २रु.५० पै.

लेखक–हरिसिंह आर्य, जवाहरगेट गाजियाबाद २६६ पृष्ठों की इस पुस्तक मे भारतीय इतिहास की सच्चाई व्यक्त की गई है। पांच भागों के ३९ अध्यायों मे आर्यव्रत के प्रारम्भ से १९६२ तक के इतिहास की वास्तविकता को व्यक्त किया गया है।

## विनोद-विन्दु

२४ व २५ मई ६९ को सभा का साधारण अधिवेशन नैनीताल का निमन्त्रण आ रहा है–

### निरखो नैनीताल निराला

★

आज नहीं तो काल, निश्चित जाना नैनीताल
सफर समझो सिर्फ नाम का स्टेशन है काठगोदाम का
विना टिकिट मत बैठो वर्ना, खूब खिचेगी खाल

बेबस बस से जाना ऊपर, कोई नहीं रहेगा भूखर
लेके लल्ला-लल्ली पल्ली, तल्ली मल्लीताल

बडे जोर का जहं पर जाडा, आर्यो का बेजोड अखाड़ा
देखना है उच्च शिखर पर, गलती किसकी दाल–

दो दिन का है देखो मेला, जग का झूठा छोड झमेला
जाप अकेला मार ढकेला, काल बडा विकराल–

श्रेष्ठ प्रभु के गीत मिलेंगे, श्रेष्ठ प्रीति के मीत मिलेंगे
मस्ती की बस्ती मे बजती, जहं ढोलक खडताल–

प्राधान्य प्रियतम पुज प्रकाश है, चन्द्र चारु चमकत अकाश है
निर्विरोध करो निर्वाचन, चमको चौगुन चाल–

जहर का किसने जाम पिया है, किसने कितना अजाम दिया है
ऋषि ऋण किस पर शेष कितना, सबसे यही सवाल–

वसन्त बहारें वहां मिलेंगीं, मन की मुकलित कलीं खिलेंगी
भरा रहेगा आनन्द से नित, दयानन्द का हाल–

निरखो नैनीताल निराला, अधिवेशन आध्यात्मिक आला
श्रद्धा सुमन सजोये 'मोहन' डाल विजय की माल–

–मदनमोहन एडवोकेट मोठ (झांसी)

### कचौरा शास्त्रार्थ

(पृष्ठ ५ का शेष)

दर्शन आचार्या और एम०ए०, श्रीमती सावित्री देवी जी सा. आ. एम ए आदि देवियां भी है।

परन्तु निवेदन यह है कि क्या गोरक्षा का काम पूर्ण हो गया। प्रथम गोरक्षा कर लो तब अस्पृश्यता की रक्षा को देखना।

आज आर्यसमाज और सनातन धर्मियो के शास्त्रार्थ की बात बिलकुल अनुपयुक्त है। हिन्दू जाति मिट रही है। न वेद रहेंगे न नारायण। ईसाई प्रचार के निरोध मे सब शक्ति लगानी चाहिये। घर की बातें फिर होती रहेगी। पहले गौ और गौभक्तो की रक्षा करो। श्रीमद्भागवत द्वारा रक्षा हो या सत्यार्थप्रकाश द्वारा। आर्य जाति का रक्षण और वर्द्धन होना चाहिये।

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित।

'चर्व जवेम' ] लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ ४ शक १८९१, ज्येष्ठ शु० १ वि० स० २०२६, दि० २५ मई १९६९ [ हम जीतें

## परमेश्वर की अमृतवाणी—

## पाप रहित होकर ऐश्वर्यशाली बनो और सर्वत्र विजय प्राप्त करो

अजैष्माद्यासनामाद्याभूमानागासो वयम् [अथर्व० १६।६।१]

[१] (अद्य अजैष्म) आज अजेय हो गये हैं।
[२] (अद्य असनाम) आज ऐश्वर्य शाली हो गये हैं।
[३] (वयम् अनागस. अभूम) हम पाप रहित हो गये हैं।

आर्य सदैव विजयी होते हैं, क्योंकि वे ऋताचारी होते हैं। सत्य की सदैव विजय होती है। आर्य सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सदैव उद्यत रहते हैं। सत्य पथ प्रदर्शन सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद करता है जो परमेश्वर की अमृतवाणी है। सत्य पथानुगामी आर्य सदैव अजेय होते हैं। भौतिक पाशविक शक्ति भले ही उनके तन को क्षत विक्षत करदे परन्तु उनका मन कदापि पराजित नहीं होता। मन के हारे हार होती है और मन के जीते जीत। आर्य चूकि सत्य ज्ञान को आत्मसात् करते हैं इसलिये वे अथर्वा होते हैं। उनका मन कभी डांवाडोल नहीं होता। ऐसे सत्यशील स्थिर और अडिग आर्यों के पग विजय श्री सदैव चूमती है।

आर्य वैभव सम्पन्न होते हैं। वे दीन और हीन नहीं होते। वे 'अदीना स्याम' में आस्था रखते हैं, और सत्यमार्गी होने के कारण पुरुषार्थ मे विश्वास रखते हैं। अपने बाहुबल और बुद्धि पर आश्रित होकर भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त कर वे स्वस्तिमय जीवन व्यतीत करते हैं। वे भौतिक धन का अर्जन करते हैं, किन्तु छल कपट से नहीं पुरुषार्थ से और उसके साथ ही साथ अपने भीतर प्रभु भक्ति से आध्यात्मिक पूंजी का भी सग्रह करते हैं। आर्यों के ऐश्वर्यों मे भौतिक सुख, मानसिक शांति और आत्मिक आह्लाद का समन्वय होता है।

आर्य निष्पाप होते हैं। उन की विजय और श्री की आधार शिला निष्पापता है। उनकी सकल साधना निष्पापता के लिये होती है। वे पाप को नहीं पुण्य को अङ्गीकार करते हैं। उनका आराध्य परमात्मा 'शुद्धम अपापविद्धम' है तो भला वे कैसे अशुद्ध और पापी हो सकते हैं। आत्मना परमात्मा मुखी हो जिस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का वे निरन्तर सङ्गति करण करते हैं, वही परमात्मा उन्हें अजेय, वैभव सम्पन्न और पवित्र बनाता है।

ऐसे अजेय, वैभवशाली और पवित्र आर्यों को देख कर जन समूह उनके प्रति विशेष रूप से आकर्षित होता है, और सज्जन बनने के लिये भीरुता, दीनता, हीनता अशुद्धता का परित्याग कर अनार्यत्व से आर्यत्व की ओर द्रुति गति से अग्रसर होता है। ज्यों-ज्यों आर्यत्व की धारा का प्रवाह वेगवती होता है, अनार्यत्व उससे दूर बहता चला जाता है, और एक दिन समस्त ससार का आर्यकरण हो जाता है। —'वसन्त'—

## नैनीताल में पधारने वाले सभा प्रतिनिधियों को आर्यमित्र का प्रेम पूरित वेद सन्देश

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्।
इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि॥
—अथर्व ६-४०-३

( इन्द्र ) सर्वशक्तिमान् परमात्मन् ( न ) हम सब के लिये (अधरात्, नीचे से (अनमित्र) निर्वैरता द्वेष शून्यता(कृधि करो) (उत्तरात्) ऊपर से (अनमित्र कृधि) शत्रु रहित करो (पश्चात्) पीछे से (अनमित्र कृधि) शत्रु रहित करो (पुर ) सामने से (न ) हम सबको (अनमित्र कृधि) शत्रु रहित करो।

१—सगठन मे आर्यत्व की विजय है। विघटन में आर्यत्व की पराजय है।
२—सगठन का आधार मैत्रीभाव है।
३—मित्रता स्नेह की प्रतीक है।
४—स्नेह का प्रतीक त्याग है।

हम सब विश्व का आर्य्यकरण चाहते हैं। उसके लिये हमारा व्यापक सगठन होना अनिवार्य है। सगठन मित्रता की नींव पर खड़ा होता है। इसलिये आज समय की आवश्यकता है कि हम विघटन को पूर्ण शक्ति से तुरन्त रोकें।

राग द्वेष छल कपट की होली जलाकर एक दूसरे के गले मिलें उस महान् ध्येय की प्राप्ति के लिये जिसके लिये महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, महात्मा हसराज आदि महान् विभूतियो ने अपना बलिदान दिया है।

यदि हमे आर्यसमाज से, आर्यसमाजो द्वारा सगठित सभाओं से प्रेम है और हम उनके माध्यम से विश्व का आर्य्य करण करना चाहते हैं तो हम बलिदान के पावन पथ पर चलकर अपने प्रेम का परिचय दें। हमारा वैदिक धर्म का प्रेम हमसे बलिदान मांगता है महान् विभूतियों ने जीवन बलिदान कर दिये तो क्या आज हम द्वेष का, पदलिप्सा का, लोकैषणा का बलिदान नहीं कर सकते?

आइए, मित्र भाव से सस्नेह एक दूसरे को देखिए और त्याग भाव से अनुकरणीय चरित्र का प्रदर्शन करते हुए जगत् को दिखला दीजिए कि—

हम सब श्रेष्ठ हैं।
हम सब एक हैं। हमारी विजय निश्चित है।

वर्ष ७१ | अंक २०

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अंक में पढ़िए !



सपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल ए.
सभा-मन्त्री

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

# नहीं रीझता और किसी की सुन्दरता पर मनुवा मेरा

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' वेदवारिधि', मुख्य उपमन्त्री आ. प्र. सभा

## अध्यात्म-सुधा

**वेद मन्त्र—**

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैर मित्र मर्दय ॥ [साम० ११]

शब्दार्थ—( अग्ने ) प्रकाश स्वरूप दिव्य ( देव ) उपास्यदेव ( ते ओजसे ) तुम ओजस्वरूप को (कृष्टयः) आकर्षित होकर ( नमः गृणन्ति ) गुनगुनाते हुए नम्रता पूर्वक अभिवादन करते हैं। (अमैः) मलिनता युक्त (अमित्रम्) शत्रु समूह को (अर्दय) नष्ट कर दे।

व्याख्या—प्रकाश स्वरूप परमात्मा ही साधक का सच्चा उपासक देव है। प्रकाश मय सौन्दर्य पुञ्ज है। उसके सौंदर्य में एक दिव्य आकर्षण है, जो साधकों को निरन्तर अपने समीप आने का निमन्त्रण देता है। विश्व में हम प्रतिदिन देखते हैं कि पहले कोई किसी के गुणों का गुणगान सुनने से उस के गुणों के प्रति आकर्षित होता है। उस गुण आकर्षण से हृदय में प्रीति के अंकुर उपजते हैं। प्रीति दर्शन की तृषा को उत्पन्न करती है। जब प्रयत्न पूर्वक साक्षात्कार हो जाता है तब उन गुणों को प्रत्यक्ष अपने आराध्य देव में देख कर साधक का हृदय उल्लासमय हो जाता है। स्तुति से स्तुत्य के प्रति प्रीति का वर्धन होता है। प्रार्थना से आत्म निर्मलता आती है, अभिमान नष्ट होता है, और उपास्य के गुणो का उपासक मे समावेश हो जाता है। गुणगान करते-करते स्वयम् गुणों को ग्रहण करता हुआ उपासक उपास्य के समीपस्थ हो जाता है।

ज्ञान से अलंकृत आत्मा, श्रेष्ठतम कर्म करने वाली आत्मा उस सौन्दर्य मय ओजस्वी दिव्य देव के प्रति पूर्णतया आकर्षित है। सूर्य, चन्द्र, सितारो मे उस दिव्य तेजोमय की दिव्य ज्योति अनुपमेय है। एक-एक रूप में उस सौंदर्यमय का रूप प्रतिविम्बित होता दिखाई देता है। एक-एक कृति में उस अद्वितीय कर्त्ता के ओज की झलक दिखाई देती है। बाहर जो विराट है, भीतर वही सूक्ष्म रूप से ज्योति पुन्जों का जो मनोहर दर्शन साधक को होता है, उसके कारण वह उस सुन्दर देव पर दिलो जान से मुग्ध हो जाता है। भौतिक आकर्षण से खिंच कर जगत् में जब लोग उन्मत्त हो जाते हैं। प्रेमान्ध हो जाते हैं तो जो सौन्दर्यों का सौन्दर्य है, उस परम सौन्दर्य की एक झलक देख लेने पर साधक ऐसा आकर्षित होता है कि उसे बाह्य जगत् के समस्त स्थूल सौन्दर्य फीके लगने लगते हैं।

जहाँ प्रीति होती है, वहाँ अभिवादन होता है। नम्रता होती है, विनम्रता होती है। वहाँ न द्वेष होता है, न वैर होता है, न कोई दुर्भावना होती है। वहाँ बुराई नहीं केवल अच्छाई ही अच्छाई दृष्टि गत होती है। वहाँ दोष नहीं खोजे जाते। वहाँ तो केवल गुण ही गुण देखे जाते हैं। जहाँ परस्पर विशुद्ध स्नेह होता है वहाँ एक दूसरे के दर्शन होते ही परस्पर विनम्र अभिवादन होता है। वहाँ छोटे बड़े का कोई प्रश्न नहीं होता। वहाँ पहले और बाद का कोई सवाल नहीं उठता। जब स्नेह होता है, दर्शन और मिलन की चाह होती है, तो दोनों ओर से सम प्रयत्न होता है। यदि विशुद्ध कामना से प्रेम विभोर होकर साधक उपास्य देव के समीप जाना चाहता है तो वह परम सौन्दर्य पुञ्ज भी उसके निकट आता है। वह स्वयम् आता है, प्रीति उसे भी खींच लाती है।

प्रीति का एक लक्षण और भी है, और वह है आनन्द की अनुभूति। मस्ती छाई रहती है प्रीति करने वाले में। भौतिक विकार वासनाओं को जिन्होंने प्रेम की संज्ञा दे रखी है, वे प्रीति का महत्व न कभी समझ सके हैं न कभी समझेंगे। विकारवासना युक्त जीवन में उल्लास और मस्ती कहाँ? भोगों में तो रोग हैं, और रोगों के कारण शोक हैं। वहाँ केवल आत्मना योग है, वहाँ भोग रूपी स्वार्थ नहीं है, वहाँ विशुद्ध प्रेम उल्लास का संचार करता है। प्रीति की इस गहराई का कोई माप दण्ड यदि है तो वह आनन्द है जो भीतर पूरा भर जाने पर बाहर भी छलक पड़ता है। प्रत्येक गति प्रत्येक चेष्टा उस आनन्द को व्यक्त करती है। ऐसा मस्त साधक ही गुनगुनाता है, उस के मुख से मस्ती के स्वर फूट निकलते हैं, प्रथम गुनगुनाहट कुछ स्पष्ट कुछ अस्पष्ट। तत्पश्चात् हृदय के भाव वाणी से व्यक्त हो उठते हैं, जिन्हें साक्षरता के आधार पर लिपिबद्ध कर लिया जाता है।

यदि सौंदर्य पुञ्ज के दर्शन नहीं होते तो क्या कारण है। साधक भीतर खोजाता है और उसे उत्तर मिल जाता है। मलिन शत्रुओं का एक शक्तिशाली समूह है जो परस्पर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

## कर मेरा मंगल

मन मेरे कर मेरा मंगल।
ज्योतिर्मय जो धाम प्रभु का, उसकी ओर मुझे तू ले चल।
मन मेरे···

तोड़ मननमय निज शक्ति से,
मोह माया के दुखमय बन्धन।
तज दे विषयों की आसक्ति,
सुलझाते जीवन की उलझन।
पान करा तू सोम सुधा का और चखा शान्ति का मधुर फल।
मन मेरे···

भटक रहा हूं अंधियारे मे,
युग युगों से मैं एकाकी।'
निर्मल होकर तू भी बन जा
मेरे पथ का सुन्दर साथी।
सदा बढ़ूं ज्योति के पथ पर, पाकर तेरा पावन सम्बल ॥
मन मेरे···

मेरे स्वामी की दुनिया में,
बहती है आनन्द की धारा।
पहुंचकर ही उस धारा में।
मिलता है सरिता का किनारा।
रहे 'वसन्त' आनन्द मगन जब, काहे होवे तू फिर चंचल ॥
मन मेरे···

लखनऊ-रविवार २५ मई ८९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## पथः मा प्रगाम

आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण वृहदधिवेशन इस वर्ष नैनीताल मे हो रहा है। नैनीताल एक पर्वतीय और दर्शनीय स्थान है। प्रत्येक वर्ष उत्तरप्रदेश से और बाहर के प्रदेशो से सैकड़ों यात्री यहाँ भ्रमणार्थ एवम् स्वास्थ्य लाभ के लिये ग्रीष्म ऋतु मे आते हैं। विदेशी यात्री भी आते हैं। नैनीताल की रमणीयता विख्यात है। ऐसे भव्य स्थल पर सभा का वार्षिक वृहद अधिवेशन होना गौरव की बात है। प्रतिनिधियो के लिये दोहरा आकर्षण है, एक सभा का वृहद अधिवेशन और दूसरा नैनीताल की रमणीयता का दर्शन। आ०स० नैनीताल का इस अवसर पर वार्षिकोत्सव होना एक तीसरा आकर्षण भी है। आर्यसमाज नैनीताल ने इस वर्ष सभा का वृहद अधिवेशन के लिये जो निमन्त्रण दिया है, उसके लिये जहां सभा आभार प्रकट करेगी, वहा समस्त प्रतिनिधियो को भी कृतज्ञ होना चाहिये।

पर्वतीय स्थान सुन्दर व शान्त होते हैं। प्रकृति के अद्वितीय सौन्दर्य को देखकर उस परम कर्त्ता का बोध होता है। 'रूप रूप प्रतिरूपो बभूव' एक एक कृति में उस परम सौन्दर्यमय का सौन्दर्य झलकता है यही कारण था कि वैदिक काल में साधक साधना के लिये पर्वतीय स्थानों का चयन करते थे। पर्वतीय रमकर भव्य और शान्त स्थान में अपने हृदयो मे परमेश्वर का ध्यान करते हुये अपनी आत्मा को पारदर्शी बनाते हुये उस परम ब्रह्म शिव को प्राप्त करते थे। परमेश्वर की अमृत वाणी वेद की एक ऋचा भी यही कहती है—

'उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदी नाम्। धिया विप्रोऽअजायत॥
—य० २६-१५

विप्र बनने का ही परमेश्वर ने अपने अमृत पुत्र और पुत्रियो को आदेश दिया है 'दिप्र पद वधाना' हमे विप्र पद को धारण करना है और उसके लिये 'यज्ञस्य धाम प्रथम मनन्त' यज्ञ के प्रथम धाम का मनन करना है। यज्ञ का प्रथम धाम शोधन है, दूसरा बोधन अर्थात ज्ञान और तीसरा व्यापन अर्थात् यश है। पवित्रता और शुद्धता ही श्रेष्ठतम कर्म की आधार शिला है इसलिये आर्य उठने-बैठते सोते-जागते सर्व प्रथम जिसका निरन्तर मनन करते है, वह है शुचिता। यह शुचिता ही है जो भीतर का ज्ञान चक्षु खोलती है, और ब्रह्म लोक तक ले जाकर यशस्वी बनाती है।

शुचिताएँ भी दो प्रकार की हैं, एक जिसे आत्म शुचिता कहते हैं और दूसरी जिसे सामाजिक शुचिता से सम्बोधित किया जाता है। यम व नियम उन्हीं का नाम है। अहिंसा अर्थात् किसी को कष्ट क्लेश व पीड़ा न पहुचाना, अस्तेय अर्थात् चोरी न करना, ब्रह्मचर्य अर्थात् यौन शुचिता, अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक सग्रह न करना, और सत्य व्यवहार, ये समस्त सामाजिक शुचिताएँ हैं। जब तक शोधन नहीं होता, आर्यत्व पास नहीं फटकता।

आत्मा अपने स्वरूप मे शुद्ध और पवित्र है। शरीरधारी होने के कारण जो प्रकृति जन्य है और प्राकृतिक होने के कारण जो विकारमय है, परिवर्त्तनशील है, उस शरीर के मलीकरण के कारण ही आत्मा मे मलिनता उत्पन्न हो जाती है। स्वार्थी होकर ही दुर्भावनाएं द्वेष, दुर्बल, दुर्व्यसन अपनाए जाते हैं। इन सबको दूर कर परमार्थ मे प्रवृत्त होना ही आत्मशोधन है और परमेश्वर के अमृत पुत्र आर्य इसीलिये शोधन का निरन्तर मनन करते रहते हैं क्योंकि यह शोधन की ही सीढ़ी है जो उन्नति की सीढ़ियो पर चढ़ाकर उज्ज्वल कीर्ति के शिखर पर ले जाती है। इन पांच सीढियो पर चढ़ने की प्रेरणा केवल परमेश्वर देता है, परमेश्वर की अमृतवाणी वेद देती है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाजियो के नियम मे वेद का पढना पढाना सुनना-सुनाना इसीलिये परम धर्म कहा है और धर्म वही होता है जो कर्म होता है। आचार को इसी लिये परम धर्म की सज्ञा दी गई है, जो आर्यसमाजी इस परम धर्म को आचरण का रूप देते हैं अर्थात् जो वेद का पठन-पाठन श्रवण श्रावण करते है और कराते हैं वे भलीभाति जानते है कि "मन्त्र श्रुत्यं चरामसि' के अनुसार जीवन के शोधन के लिए उसे मन्त्रमय बनाना पड़ता है। वेद मन्त्रो को पुस्तको से उठाकर मस्तिष्क मे रखना पड़ता है "ऋचोनामस्मि, यजूंषि नामस्मि, सामानि नामस्मि" वेदज्ञ ही अपने आपको कह सकता है। जिसने मन्त्रो को अपने विचार केन्द्र मे रखकर उन्हे भावना केन्द्र तक निरन्तर मननकर, शब्दशः ही नहीं अक्षरश धारण करके अपने आपको शुचिता के केन्द्र मे केन्द्रित किया है।

वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। व्रताचारी होने के लिये पवित्रता की नाभि मे अधिष्ठित होना पड़ता है। वेद मन्त्रो का शब्दार्थ बाह्य द्वार तक पहुचाता है। मन्त्र के भीतर की पहुच तो मनन मे है। जितना-जितना अधिक मनन उतना-उतना मन्त्र का रहस्य खुलेगा और मन्त्र की अन्तर्निहित शक्ति की प्राप्ति होगी। ऋग्वेद की एक ऋचा है—"पच पदानि रूपो अन्वरो ह चतुष्पदी मन्वी ये व्रतेन। अक्षरेण प्रतिमिम एताम ऋतस्य नाभावधि स पुनाभि॥" ऋत की नाभि मे केन्द्रित करने वाला और सम्यक पवित्रतायें देने वाली वेद की पावमानी ऋचायें हैं। जो व्रती बन कर उनका अक्षरश मनन करते है, वे ही यम और नियम की पांचो सीढियो पर चढ कर, चरित्रवान बनते है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यों की सस्था है। प्रादेशिक सस्था होने के कारण यह प्रदेशस्थ समस्त समाजों का प्रतिनिधित्व करती है। इसका सुन्दर सगठन, योग्य सचालन समस्त समाओ के लिये प्रेरणाप्रद हो सकता है, इसलिये समस्त प्रतिनिधियो का प्रथम पावन कर्त्तव्य है इसे आदर्शमय बनाना। आदर्श के वृहद् स्वरूप का दर्शन हमे सभा के वृहद्धिवेशन मे होता है, जहा प्रदेश के सैकडो प्रतिनिधि साथ साथ मिल कर बैठते हैं। चूंकि वृहदधिवेशन मे वार्षिक निर्वाचन भी होता है, और दुर्भाग्य से देश के राजनैतिक दलो ने निर्वाचन के लिये जो मलिनतायें अपनाई जाती हैं, उसकी छाप भी सभा के प्रतिनिधियो पर लगनी स्वाभाविक है, जिसके कारण चुनाव को ही सर्वस्व समझ कर प्रतिनिधि गण अपना सारा ध्यान उधर ही केन्द्रित करते है जिसके फलस्वरूप कभी-कभी ऐसे दृश्य भी देखने मे आते है, जो शोभायमान नहीं होते। गत वर्ष सिरसागज का वह दृश्य जिसमे घोर अशान्ति के कारण सभा प्रधान जी

### छुट्टी की सूचना

सभा के वृहदधिवेशन के कारण आर्यमित्र कार्यालय तथा सभा कार्यालय नैनीताल जा रहे हैं। अतः १ जून का अङ्क बन्द रहेगा। आगामी अब ८ जून का अङ्क निकलेगा, पाठक कृपया नोट कर लें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
मुख्य उप मन्त्री सभा

द्वारा कार्यवाही को अनिश्चित काल के लिये स्थगित करना पडा था, भुलाये से भी नहीं भूलता। वृन्दावन गुरुकुल के शान्त वातावरण मे उसका प्रेम पूर्वक सम्पन्न हो जाना ही हमारे लिये गौरवशाली था। चुनाव वृहदाधिवेशन का एक अङ्ग है, सर्वाङ्ग नहीं, इसे हमारे प्रतिनिधियो को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिये। चुनाव तो एक वार्षिक व्यवस्था मात्र है। सुयोग्य कर्मशीलो को जो समाज के कार्य को आगे बढ़ाने वाले हैं अवश्य पदासीन कीजिये। व्यक्तिवाद और दलबन्दी से ऊंचा उठाकर। किन्तु समाज के सम्मुख जो अन्य भीषण समस्यायें हैं, उन पर भी तो शान्ति से विचार करना आवश्यक है।

आज हमारे सम्मुख एक चुनौती है, जिसे हमे स्वीकार करना है। विधर्मी आज नाना प्रकार के षड्यन्त्रों से भोली-भाली ज्ञानविहीन जाति को पथभ्रष्ट कर हमसे दूर लिये जा रहे हैं। अनैतिकता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। सर्वत्र विनाश ही विनाश का साम्राज्य आच्छादित है। ऐसे में जिस समाज पर विचार शीलों का ध्यान केन्द्रित है, वह आपस की फूट, दलबन्दी और आसक्तियों से विघटित हो रहा है। उसे भव्य रूप से सुसगठित करने की सर्वोपरि आवश्यकता है। प्रतिनिधि गण नैनीताल के शांत वातावरण मे शांति पूर्वक इन बातों को सोचें, विचारें, और निर्णय करें कि हमे आज अपना विनाश चाहिये या निर्माण। सगठन चाहिए कि विघटन। विश्व का आर्यकरण करने के लिये दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को साकार करना चाहिए, अथवा उसकी जड़ खोद देनी चाहिए।

नैनीताल के वृहदाधिवेशन मे एक प्रतिज्ञा कीजिये 'पथ मा प्रगाम।' हमे पथ से प्रगमन नहीं करना है। आर्यत्व का त्याग कदापि भी नहीं करना है। हमे आर्यसमाज को सुसगठित करना है। एक भी भ्रष्ट चित्र प्रस्तुत नहीं करना है। गन्दी पार्टीबाजी से ऊपर उठना है। सुयोग्य अर्पित जीवनों को बिना किसी भेद भाव के ऊपर बढाना है। विघटन कारियों को न केवल किसी प्रकार से सहयोग देना है, वरन उनको भी प्रीतिपूर्वक आर्य सगठन के महत्व को दर्शाकर, उनके दृष्टिकोण को बदलना है। पुरुषार्थ करना हमारा काम है फल देना परमात्मा का। परमात्मा का नाम लेकर हमे कर्मशील होकर अपने काम को आगे बढाना है। हम जब अपनी सहायता स्वय करेंगे तो वह हमारी सहायता अवश्य करेगा "इन्द्र इच्चरतः सखा।' वह परम सखा हमारा सहायक है। हमारी यह आस्था होनी ही चाहिये।

## उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास जी–

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के ७६ वे वृहदाधिवेशन सन १९६२ के अवसर पर आर्य्य समाज नैनीताल मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति दे रहे है।

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

सगठित है वह आगे नहीं बढने देता। मार्ग रोके खडा है। समस्त दिशाओ को घेर रखा है, चक्र-व्यूह रचना कर रखी है। एक ओर काम है, दूसरी ओर क्रोध है, तीसरी दिशा मे लोभ है, चौथी में मोह, नीचे द्वेष वृत्ति है, ऊपर अहंकार है। साधक को एक साथ ६ दिशाओ मे खडे इस शत्रु समूह से जूझना है, वह अपने को निर्बल पाता है। एक से जूझता है तो सबके सब उस पर आक्रमण कर बठते हैं। ज्ञान चक्षु से वह स्पष्ट देखता है कि ये सब उस सर्वशक्तिमान के सम्मुख नहीं टिक सकते। उसकी शक्ति प्राप्त होते ही इनको तुरन्त जीवन सदन से बाहर निकाला जा सकता है इसलिये जिस सुन्दर आराध्य देव के प्रति वह आकर्षित है, जिसका मस्ती मे वह गुणगान करता है, जिसको नित्य हाथ जोड कर शीष नवाता है, उसी दिव्य देव से प्रार्थना करता है कि हे सुपावन निर्मल प्रभु! मेरे इस शत्रु समूह को नष्ट करदे ताकि मैं निर्मल होकर तेरा पावन सुदर्शन प्राप्त कर सकूं।

# श्री महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज

"पश्य सूर्यस्य श्रेमाण यो न तन्द्रयते चरन" ( शतपथ )

पूज्य महात्मा नारायणस्वामी जी

"सूय के परिश्रम को देखो जो [बराबर] चलता [प्रकाश और जीवन देता] हुआ नहीं थकता।' शतपथ ब्राह्मण की इस सूक्ति को हमने महात्मा नारायण स्वामी के जीवन मे चरिताथ होते देखा। एक व्यक्ति अत्यन्त साधारण परिस्थितियों मे जन्म लेकर, अत्यन्त साधारण शिक्षा प्राप्त कर, अति सामान्य गृहस्थी बन कर और एक अत्यन्त सामान्य नोकरी कर के अपने उदात्त विचार, दृढ सकल्प, प्रबल इच्छा शक्ति, अदम्य उत्साह, असाधारण लगन और अनुपम अध्यवसाय से एक आदश व्यक्ति और समाज का नेता बन सकता है। श्री स्वामी जी का जीवन इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। स्वामी जी के माता पिता साधारण स्थिति के दम्पती थे, जो अपने पुत्र को अच्छी शिक्षा दिलाकर ऊची नोकरी दिलाने का स्वप्न भी न देख सकते थे। वे उसे एक जीवित और कमठ समाज के नेता पद पर पहुचा सकेगे यह तो उनकी कल्पना के भी बाहर रहा होगा। हो सकता है कि अपनी शिशु और कुमार अवस्था मे स्वामी जी को भी इन बातो का आभास न हुआ हो। लेकिन युवावस्था मे प्रेरणा मिली और चेतना हो गई। निश्चय कर लिया कि स्वाध्याय करके ज्ञान प्राप्त करना और वितरित करना है, आयसमाज का काय कर्ता बनकर उसके उन्नयन मे सहयोग देना है, और अन्त मे आत्म-साधन करना है। ऐसी भावनायें अनेको के मन मे उठती हैं, पर वे मूर्तरूप नहीं ले पातीं। स्वामी जी के जीवन मे उन्होने मूर्तरूप लिया। वे अपने तीनों लक्ष्यों में सफल हुए और जनसाधारण के लिये उदाहरण बन गये। "विघ्नै पुन पुनरपि प्रतिहन्यमाना प्रारभ्य चोत्तमजन न परित्यजन्ति' और न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीरा" कहावतें स्वामी जी के जीवन में सच्ची हो गईं।

स्वामी जी का जीवन बडा नियमित था—एक अच्छी घडी जैसा। हमे स्मरण है हम उनके भ्रमण के लिये जाने को देख कर समय का पता लगाते थे। उनकी सारी दिनचर्या नियमित और व्यवस्थित रहती थी। उनका रहन-सहन, वेष भूषा, बात चीत, वास स्थान मे वस्तुओं का सचय करना और रखना सब नियम और व्यवस्था के साथ होते थे।

विद्यार्थी जीवन मे साधारण उर्दू और नहीं के बराबर हिन्दी सीख कर ही "स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम" के आदर्श पर चल कर स्वामी जी ने दर्शन उपनिषद् और वेदो के रहस्यो मे प्रवेश करने की क्षमता प्राप्त की थी। उनके उपनिषदो के भाष्य और आत्म दशन इस बात के प्रमाण हैं। उनके प्रवचन चालू विषयो पर न होकर गम्भीर विषयो पर होते थे और जनता उन्हे रुचि तथा श्रद्धा से सुनकर लाभान्वित होती थी।

स्वामी जी आलोचना और तू-तू मैं मैं मे विश्वास न कर निर्माण काय मे लगे रहते थे। आय समाज का सबसे पुराना और हिन्दी मे लगातार चलने वाले सबसे पुरानो मे एक 'आर्यमित्र साप्ताहिक,गुरुकुल वृन्दावन, उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा १९२५ म हुआ आर्यो का सबसे महत्वपूण मथुरा का दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव हैदराबाद का आय सत्याग्रह उनके अनेक ग्रन्थ और रामगढ का नारायण आश्रम इस बात के उदाहरण हैं।

स्वामी जी का जीवन वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि का एक अच्छा उदाहरण था। वे एक कड शासक थे—नियम मे रखने वाले और स्वय रहने वाले। हर
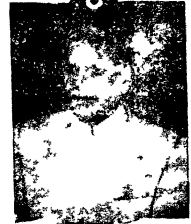
लेखक—
श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री
उपप्रधान आय प्रतिनिधिसभा उ प्र
विजिटर गुरुकुल विश्ववि, कागडी

एक व्यक्ति उनके पास जाने और बात करने का साहस न कर सकता था। उनमे शासक का तेज था पर उसके अन्दर वात्सल्य, सहानुभूति और मनुष्यता की सरिता बहती थी।

हमे श्री स्वामी जी के सम्पर्क मे कभी दूर कभी समीप लगभग ३५ वष तक रहने का सौभाग्य मिला। उनका जीवन हमारे लिये प्रेरणा का स्रोत रहा। उनसे बहुत कुछ सीखना चाहा और थोडा सा सीखा भी। वे एक आदश पुरुष थे और उनका जीवन व्यक्ति और समाज के लिये प्रकाश स्तम्भ रूप है।

# सभाधिवेशन

वार्षिक सभा का है अधिवेशन,
कर्त्ता धर्त्ता हैं जिसके बाकेलाल
जगह भी खुश फिजां व पुर रौनक
नाम जिसका है नैनीताल
इस चुनाव के अखाडे मे
देखिये कौन ठोकते हैं ताल
दर्दे दिल देखने वाला न कोई
जायें क्यो फिर वहां बिहारीलाल

प्रिय प्रतिनिधि गण !

चुनाव मे स्थायित्व न रहने से काम ठीक नहीं हो पाता। अत. अधिकारियो मे अधिक फेर बदल न हो तो अच्छा है। अन्तरङ्ग सदस्य वे ही चुने जायें जो अपने मण्डल मे कुछ समय दे सकें।

हा, उन अधिकारियो के चुनने पर अवश्य विचार किया जाये कि जो सभा के लिये न तो कुछ धन ही लाये और न कोई विशेष कार्य ही किया।

—बिहारीलाल शास्त्री

# दोषारोपण

दोष नियति को क्यो देते हो निजी चाल से मात है,
तुमने अपनी बात न जानी तब ही तो यह बात है ॥१॥

तभी सोचना था परदेशी को तुमने जब दोष लगाया
बुला स्वदेशी को सिंहासन सौंपा, सिर पर ताज सजाया
देखा अपने से अपनो पर कितनी भारी घात हुई है ।२।

सोच रहे थे नन्दन वन मे खुले पिकी के बन्धन,
गायेगी पञ्चम के स्वर में किन्तु हो रहा क्रन्दन
भाव कमल मुरझाये ऐसे दिन ही मे ज्यो रात है ॥३॥

लहराये जय-केतु वाद्य वृन्दो ने मंगल गाये
जन गण ने गणतन्त्र मनाया घृत के दीप जलाये
प्रजातन्त्र तो पथ भ्रष्ट है पगदण्डी अज्ञात है ॥४॥

शून्य दिशा मे भटक रही है वह वासन्ती आशा
किसी कक्ष मे शयन कर रही निर्माणो की परिभाषा
भ्रष्टाचारी विषम वेदना की विषमय बरसात है ॥५॥

धर्मराज बन तुम तो पहिले थे तटस्थ से मौन खडे
किस शकुनी के बहकाने से द्यूत शृंखला में जकड़े
लाज द्रौपदी रखी दाव पर क्या यह भी खैरात है ॥६॥

लाल, जवाहर, हीरा, मोती करते गये किनारा
काच अश की आभा से ही सज्जित महल हमारा
चाटुकारिता प्रतिभा दीपक लौ का झझावात हुई ॥७॥

महा काव्य की करो न चर्चा काव्य प्रबन्ध जगाओ
भूत भविष्यत छोड़ गीत कवि वर्तमान के गाओ
युग-निर्माता युग-विनाश को करता क्यों प्रणिपात है ॥८॥

—कविवर प्रणव शास्त्री एम. ए., फीरोजाबाद

# वैदिक अनुसन्धान

वाक् एवम् बौद्धिक शक्ति के विकास में—

## यज्ञ चिकित्सा पद्धति की एक आश्चर्यजनक सफलता

वैदिक वृष्टि विज्ञान सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता श्री प० वीरसेन वेदश्रमी वेदसदन, महारानी रोड, इन्दौर ने अपने यज्ञों के आयोजनों के अवसर पर अनेक रोगियों को आश्चर्यजनकरूप से लाभ होते देख कर अपना अनुसन्धान क्षेत्र शारीरिक चिकित्सा की ओर भी करना निश्चय किया है।

अभी गत अप्रैल माह मे १५ से २८ तक सूरतनगर में लक्षाहुति गायत्री महायज्ञ सम्पन्न आपने कराया। वहां पर ११ वर्ष की जन्म से गूगी एवं नासमझ ज्योति नाम की कन्या का यज्ञद्वारा आपने उपचार किया, और वह अच्छी होकर बोलने एवम् समझने लगी। इस कन्या की चिकित्सा उसके पिता श्री ने अनेक वैद्य एव डाक्टरो से कराई थी, और कुछ भी सफलता प्राप्त नहीं हुई थी।

यज्ञ द्वारा ११ दिन तक उपचार हुआ। प्रतिदिन ३ घण्टा उपचार किया जाता था। उसमे ५-६ दिन के यज्ञ के उपचार में वाक् शक्ति एवं बौद्धिक शक्ति का क्रमश उत्तरोत्तर विकास दृष्टिगोचर होने लगा, और वह प्रश्नों का उत्तर देने एव कार्य करने में समर्थ होती गई। ज्योति के पिता भूपेन्द्र अम्बाराम मोदी सूरत से २ मील दूर उत्राण ग्राम के उत्राण स्टेशन मे कार्य करते हैं।

श्री प० वीरसेन वेदश्रमी ने सन् १९६६ मे जयपुर एव खण्डवा के अपने वृष्टि यज्ञा के अवसर पर बने यजमानों का रोगों से मुक्त होने में आश्चर्य जनक लाभ अनुभव किया था। इसी प्रकार से सन् १९६१ में वाक शक्ति के विकास में यज्ञ का लाभ देखा था। आपने ऋग्वेद का "यज्ञेनवाचः पदवीयमायन्" तथा, यजुर्वेद के—"वाक् च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्" आदि मन्त्र यज्ञ से वाक् एवम् बुद्धि शक्ति के विकास होने के लिये उपस्थित किये।

श्री प० वीरसेन वेदश्रमी एक विशेष यज्ञ का आयोजन करके कतिपय मूक एव अविकसित मस्तिष्क के व्यक्तियो पर इस यज्ञ पद्धति का परीक्षण करना चाहते हैं। यदि इस कार्य में सफलता प्राप्त हो गई तो विश्व के सामने एक नई चिकित्सा का प्रादुर्भाव हो सकेगा।

—विश्वबन्धु शर्मा
वेद-सदन
महारानी, पथ इन्दौर

## जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति प्रयाग का गठन

देववाणी संस्कृत के प्रचार और प्रसार के हेतु दिनाक ११-५-६९ को आर्य समाज मन्दिर चौक प्रयाग में जिज्ञासु "सरलतम सस्कृत प्रचार समिति का गठन किया, और निम्नलिखित सरक्षको तथा पदाधिकारियो को मनोनीत किया।

सरक्षक—श्री ए. वी. लाल, उप कुलपति प्रयाग विश्वविद्यालय व श्री प. युधिष्ठिर मीमांसक, तथा श्री प सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी। प्रधान श्री डा० सत्यप्रकाश जी, उप प्रधान श्री खजानसिंह जी, मंत्री श्री राधेमोहन जी, उपमन्त्री श्री प.मूलचन्द अवस्थी, कोषाध्यक्ष श्री गंगाप्रसाद जी।

—राधेमोहन मन्त्री

# उत्थान या पतन

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती दूरदृष्टा ऋषि थे। उन्होंने विनाशोन्मुख आर्य जाति के बचाने के लिये कई फ्रन्ट खोल रक्खे थे। ईसाइयो से अलग, मुसलमानो से अलग, जैनियों-पुराण-पन्थियो से अलग और अद्वैतवादियो से अलग-अलग। कम्युनिस्टो का बोलबाला उस समय कम था, नहीं तो मेरे विचार से एक फ्रन्ट वे इसके लिये भी अवश्य खोलते। समाज मे उस समय अधिक विपन्नता और विषमता होते हुये भी लोगो का झुकाव धर्म की ओर अधिक था, क्योंकि प्रवृत्ति भौतिकवादी इतनी नहीं थी, जितनी कि आज है। लोग दुखी रहकर भी धर्म से चिपके रहना अधिक पसन्द करते थे। भारतीय सन्त समाज ने जीवन के श्रेय मार्ग को अधिक प्रोत्साहित कर रखा था जिसका नतीजा यह था कि लोगों को 'रूखा सूखा खाय के ठण्डा पानी पी' पर तो सन्तोष था, पर धर्म की मान्यताओ को छोड़ना उनके लिये दुष्कर ही नहीं कष्टकर भी था। मध्ययुग के लेटर पीरियड से लेकर अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान तक की अधिकाश ऐतिहासिक बलिदानी घटनाओ का आधार धार्मिक था और इन कई सौ वर्षों की अवधि मे आर्य जाति के जितने भी बलिदान हुए उनमे धार्मिक पुट ही अधिक था, चाहे जिन्दा चिता मे जलने वाली १४ हजार रानियाँ हो चाहे सीने पर गोली खाने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द हो। सघर्ष का मूल धार्मिक था आर्थिक नहीं। स्वामी जी ने इस समकालीन स्थिति को खूब समझा था, और इसीलिये उन्होंने धार्मिक क्षेत्र मे आर्य जाति की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिये प्रभु की उस अमरवाणी 'वेद' का आश्रय लिया जो वास्तव मे सच्चे धर्म की मान्यताओं का एकमेव स्रोत है। वास्तव मे हमारी मान्यताओं का आधार है भी यही। चूंकि वेद का ज्ञान शाश्वत है, इसीलिये हमारी मान्यतायें भी शाश्वत हैं और हमारा प्रयास भी यही होना चाहिए कि हम कभी भी इस शाश्वत परम्परा से विलग न होने पावें। स्वामी जी का कहना यही था कि धर्म के मूल तत्व एक हैं, और मानव मात्र का मौलिकता की दृष्टि से धर्म ही एक ही है जिससे समन्वय या समझौतावादी प्रवृत्तियो की गुन्जाइश नहीं है, क्योंकि समन्वय या समझौता होता ही वहीं है, जहाँ एकत्व का नहीं अनेकत्व का विधान हो। आर्य समाज इसी प्रवृत्ति को लेकर पैदा हुआ, पनपा और खूब बढा और उसने धर्म की दिशा मे एक सर्वतन्त्र, सार्वभौम, देशकाल की सीमाओ से रहित, ईश्वरीय शाश्वत नियमो के आधार पर मानव कल्याणकारी परम्पराओ को जन्म दिया और ऐसा लगने लगा मानो समूचा विश्व इस शाश्वत सत्य को जल्दी ही ग्रहण

कर लेगा और समाज अपने एकदेशीय मतमतान्तरो के मतभेदो को भुलाकर एक ही धर्म [वैदिक धर्म] के नीचे आ जायेगा। स्वामी जी का मन्तव्य यही था, उन्होने यह कभी नहीं कहा कि सारा विश्व आर्य समाजी हो जाये क्योकि आर्य समाज स्वय एक उद्देश्य नहीं है, साधन है। उन्होने नियमो मे हमे बताया।

"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' अर्थात् आगे चलकर उन्होने और स्पष्ट करते हुये बताया—'अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना'। प्रश्न यह है कि जो व्यक्ति जाति शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत हो, और आर्यसमाजी न हो तो क्या आर्य समाज का उद्देश्य पूरा हो जाता है' प्रश्न बडा कठिन है और इस पर कभी अलग से विचार किया जायेगा, यहाँ मौलिक विषय से आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति का सम्बन्ध होने के कारण दो प्रश्न सामने आते हैं यदि ससार का उपकार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है तो इसमे हम काफी सफल हो गये हैं। आ स ने सुधार के क्षेत्र मे बडे क्रान्तिकारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये, सुधार भी उपकार है और इस दृष्टि से आर्य जाति के उत्थान के लिये इस सस्था ने बडा उपकार किया है।

सबसे बडी चीज यह हुई कि उत्थान के लिये सुधार की आवश्यकता महसूस हुई, और सुधार इन्ही लाइनो पर हुआ, अथवा हो रहा है जिन्हे स्वामी जी ने प्रतिपादित किया था। आज सुधार का कार्य शासन व्यवस्था ने ले लिया है, और सस्थाओ ने ले लिया है, उनके पास साधन हैं, शक्ति है, यदि आ स के पास यही साधन और शक्ति हो तो वह अच्छे ढग पर कार्य कर सकता है, परन्तु फिर भी दूसरा प्रश्न सामने आता है वह यह है कि इतना सुधार और कार्य होने के बाद भी क्या वास्तव मे हम स्वामी जी की परिभाषा मे "शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लक्ष्य मे सफल हुये हैं।"

इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करने पर यह स्पष्ट होगा कि शारीरिक और सामाजिक उन्नति तो भौतिकवाद से सम्बन्ध रखती है जब कि आत्मिक उन्नति का सम्बन्ध पूर्णतया अध्यात्म से है। यदि स्वामी जी केवल शारीरिक और सामाजिक उन्नति को ही उपकार का आधार मान लेते तो वह उन्नति अधूरी होती खास तौर से उन लोगो के लिये जो जडवाद के साथ साथ चेतन तत्व को भी मानते हैं। स्वामी जी ऋषि थे उन्होने जडवाद की उन्नति के साथ-साथ चेतनवाद की उन्नति को समानान्तर प्रश्रय दिया

*श्री इन्द्रदेव जी शर्मा एम ए
साहित्याचार्य
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

क्योकि उनकी दृष्टि मे जीवन केवल शरीर का ही नाम नहीं है, उसके अन्तरतम मे स्थित एक चेतन सत्ता है, जिसकी उन्नति भी आवश्यक है, अन्यथा उन्नति अधूरी है एकागी है—

## भौतिकवाद बनाम आस्तिकवाद

जीवात्मा शरीर के माध्यम से भौतिक सुखो का उपभोग करता है, किन्तु प्रभु का आनन्द प्राप्त करने के लिये उसे इस माध्यम की आवश्यकता नहीं ह उसकी आत्मा सत्कर्मों द्वारा स्वय अपनी इतनी उन्नति कर सकती ह कि शरीर के बिना भी उसे प्रभु का सान्निध्य और आनन्द प्राप्त हो सके। लेकिन कार्य करने के लिये शरीर की आवश्यकता है, कार्य क्षेत्र भी अनिवार्य है, और यदि कर्मक्षेत्र [ससार] मे सुखो की उपलब्धि न हो तो शरीर रखने या सासारिक कार्यो के करने मे कोई दिलचस्पी क्यो ले। अगर जिह्वा का स्वाद न हो तो कोई भोजन क्यो करे, और भोजन मे पटरस क्यो बनावे। अर्थात दोनो ही कार्य सापेक्ष्य हे। ईश्वर की प्राप्ति अ न आत्मिक उन्नति, और सामाजिक कम अर्थात् शारीरिक और सामाजिक उन्नति वेद मे स्थान स्थान पर आत्मिक उन्नति के साथ साथ सामाजिक समृद्धि, शारीरिक बलवृद्धि आदि के लिये जो प्रार्थनाये आती हैं उनका भाव यही है कि भौतिक और आत्मिक उन्नतिया समानरूप से चलती रहे तभी जीव का

# महिला मण्डल

## "कन्या वरदान या अभिशाप"

यह एक प्रश्न है, जो मन मे उठा करता है-कि कन्या अभिशाप है या वरदान। यदि हम कन्या नहीं चाहते तो भविष्य मे माता कहां से आयेगी ? जैसा कहा है—माता निर्माता भवति, किन्तु खेद है कि जो दशा आज से सौ वर्ष पहले थी, वही आज भी विद्यमान है।

ससार परिवर्तन शील है, और दृष्टिगोचर भी हो रहा है। जो स्त्रियां अबला कहकर जेल मे बन्द रहती थीं, वह आज पुरुषो के कन्धे से कन्धा मिलाये मैदान मे हैं, किंतु एक रोग जो पहले था, वह आज प्रगति पर है। जिसका नाम 'दहेज प्रथा' है। बड़े-बड़े विद्वान् लेखक तथा प्रचारक इस रोग की निवृत्ति मे लगे रहे, पर मर्ज बढ़ता गया ज्यो ज्यो दवा की, वाली कहावत चरितार्थ होती है।

कुछ वर्ष पूर्व कन्या के पिता को कन्या के विवाह मे दो चार हजार की ही डिग्री होती थी, पर वर्तमान काल मे तो फैशन के साथ साथ दहेज भी दिन दूना बढ़ रहा है। एक बी ए या एम ए वर का मूल्य जो धनोपार्जन करता हो, दस और पन्द्रह हजार हो गया है, जिसका अदा करना एक साधारण व्यक्ति की सामर्थ्य से बाहर है। यह हमारे आर्य बन्धुओं के लिये एक विचारणीय विषय है।

यदि आर्य परिवार मे ही यह सम्बन्ध सम्पन्न होने लगते तो समस्या कुछ सुलझ जाती, पर इस विषय पर कोई ध्यान देना नहीं चाहता। कन्या पक्ष वाला अपनी सामर्थ्यानुसार तो देगा ही, और देना भी चाहिये, किन्तु वर का विक्रय करना कहां की सभ्यता है। इसी रोग का ग्रास बनकर कितनी योग्य कन्याओ को अविवाहित रहना पडता है। सभी 'सुलभा' नहीं हो सकतीं।

कहावत है कि-एक राजा के राज्य मे रात्रि मे पानी सूख जाता था, राजा बहुत चिन्तित रहता था। एक दिन एक ऋषि आ गये, राजा ने उनसे प्रश्न किया कि महाराज मेरे कौन से पाप के फलस्वरूप कुँओ मे जल सूख जाता है। ऋषि ने उत्तर दिया कि तेरी युवा कन्या अविवाहित बैठी है, उसी का यह दुष्परिणाम है।

महर्षि भी यही कहते थे, कि जो धन पत्थर के निर्माण मे व्यय करते हो, उस धन से युवा कन्याओं का विवाह कर दो।

महात्माओं का ऐसा कथन है कि जिस राज्य मे गौ, कन्या क्रन्दन करती हो, जहाँ स्त्रियो का चरित्र सुरक्षित नहीं, उस राज्य की प्रजा कभी भी सुखी तथा समृद्धशाली नहीं हो सकती।

प्रभु से प्रार्थना है कि इस नारी जाति पर दया करें।।

—'एक अज्ञात बहन'

---

कल्याण है। स्वामी जी ने इसी मध्यम मार्ग को ससार का उपकार करना बतलाया। लेख के पूर्व भाग मे जो स्थिति बतलाई गई है,वह यह है कि उस समय धार्मिक झुकाव अधिक था। भौतिक समृद्धि की ओर ध्यान अधिक नहीं था। आज स्थिति यह है कि प्रवृति भौतिकवादी अधिक हो गई है, आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान नहीं है। स्थितियां दोनों ही एकांगी हैं अपूर्ण हैं। परिणाम यह है कि न तब शांति थी न अब शांति है। अपूर्ण

# महान् दयानन्द

## ऋषिवर की गुरु-भक्ति

ऋषि दयानन्द जी सरस्वती,<br>
पढ़ रहे उन दिनों थे विद्या।<br>
गुरु वृजानन्द की कुटिया में,<br>
हो रही अवतरित थी विद्या।।

एक बार ऋषि दयानन्द ने,<br>
झाडू कुटिया मध्य लगाई।<br>
एकत्र किया कूड़ा कर्कट,<br>
दिया द्वार पर ढेर बनाई।।

अन्य काम आ गया सामने,<br>
ऋषि जा उसमे आबद्ध हुये।<br>
गुरुदेव द्वार से जब निकले,<br>
सहसा ही वह क्रुद्ध हुये।।

लग गये पैर थे कूड़े से,<br>
इसलिये उन्हें था रोष हुआ।<br>
गुरुवर थे प्रज्ञाचक्षु पूज्य,<br>
था कहीं-नहीं कुछ दोष हुआ।।

शीघ्र पुकारा दयानन्द को,<br>
उबल पड़े लेकर गुरुताई।<br>
दो चार थप्पड़ों से तुरन्त,<br>
सीख भरी की पुण्य पिटाई।।

शान्त हुआ जब क्रोध देव का,<br>
जा पकड़े पद दयानन्द ने।।<br>
होकर विनम्र, कुछ शब्द कहे,<br>
किया हर्ष सुन दयानन्द ने।।

गुरुदेव आप हैं क्षीणकाय,<br>
मेरा शरीर है बलधारी।<br>
हैं आप पीटते हाथों से,<br>
लेते हैं कष्ट स्वय भारी।।

उपयोग करें गुरु डण्डे का,<br>
सदा उसी से हमे पीटिये।<br>
देव कृपा मैं सबल स्वस्थ हूं,<br>
निज कर को मत कष्ट दीजिये।।

वही पुरातन प्रिय परम्परा,<br>
जब शिष्य जनों अपनाओगे।<br>
तब दयानन्द की सबल देह,<br>
उनकी-सी विद्या पाओगे।।

दयानन्द ऋषिवर के समान,<br>
अनुशासन में ढल जाओगे।<br>
वैदिक धर्मी आर्य बन्धुओ,<br>
फिर विश्व गुरु पद पाओगे।।

—देवनारायण भारद्वाज,<br>
उपमन्त्री आर्य समाज अलीगढ़

# सत्य का होता वेड़ा पार

काव्य कानन

( मानव धर्म-शास्त्र के आधार पर )—श्री जगत्कुमार शास्त्री, 'साधुसोम तीर्थ' देहल

करे जिसका पालन विद्वान्,
निरन्तर राग-द्वेष से शून्य।
मनुज मन का शुचितम आधार,
वही है धर्म, वही है पुण्य ॥१॥

नहीं शुभ अधिक कामना-जाल,
नहीं शुभ हो जाना निष्काम।
काम है वेद बोध का मूल,
काम है कर्म-योग का धाम ॥२॥

कामना सकल्पो की खान,
यज्ञ के शिव-सकल्पाधार।
सभी यम नियम, धर्म, शुभ कर्म,
हैं शिव सकल्पो के विस्तार ॥३॥

नहीं कोई ऐसा कहीं विधान,
कामना नहीं है, जिसका मूल।
शुभाशुभ ससृति के सब खेल,
हैं कामज जग मे सूक्ष्म-स्थूल ॥४॥

वेद है अखिल धर्म का मूल,
धर्म है वैदिक-स्मार्त-विधान '
धर्म है सत्पुरुषों का आचार,
धर्म है आत्म-तोष-प्रद-ज्ञान ॥५॥

जगत् का ज्ञाताज्ञात स्वरूप,
सकल देखे परखें मतिमान।
चलें सब वेद - विधा-अनुसार,
धर्म-धर बनकर निष्ठावान् ॥६॥

चलें जो वैदिक धर्म-अनुसार,
प्रपालें वैदिक-स्मार्त विधान।
वही पाते हैं जग मे मान,
उन्हीं का होता है कल्याण ॥७॥

कुतर्कों के होकर वशीभूत,
करे जो श्रौत-स्मार्त-पथरोध।
वह द्विज है बहिष्कार के योग्य,
वेद-निन्दक, खल, परम-अबोध ॥८॥

वेद और वैदिक स्मार्त-विधान,
सकल सत्पुरुषो के व्यवहार,
मनुज के अभिकामित-शुभ-कर्म
धर्म के हैं ये लक्षण चार ॥९॥

नहीं जो अर्थ-काम-आसक्त,
उन्हीं के लिये है धर्म विधान।
करें जो सत्य-धर्म की खोज,
वेद को वरे परम-प्रमाण "१०॥

जहा बजते थे सुख के ढोल,
वहाँ मातम के मेले हैं।
जहाँ थे रुदन, शोक, सन्ताप,
वहा अब सुख के रेले हैं ॥११॥

करो सत्पुरुषों का सत्सङ्ग,
जपो नित'ओ३म्'प्रभु का नाम।
गहो दृढ़ता से मानव धर्म,
बनेंगे बिगड़े काम तमाम ॥१२॥

भोग मे सदा रोग का वास,
योग मे सुख का मूल निगूढ।
निरोधी चित-वृत्ति-विस्तार,
बनो मत पापी, चचल, मूढ ॥१३॥

करो दुर्जनता का सहार,
हृदय मे विश्व प्रेम लो धार।
विश्व है सकल एक परिवार,
यही है मगल-मूल-विचार ॥१४॥

करे जो वेद-धर्म का त्याग,
चलें जो भ्रष्ट मार्ग के बीच।
आलसी, पेटु वे नर-नार,
समाते काल-गाल मे नीच ॥१५॥

जो करना चाहें अमृत भोग,
बिसारें पाप, ताप, भय, रोग।
चलें वैदिक-पथ पर सब लोग,
वे धारे शुचितर वैदिक योग ॥१६॥

उपासें पावन सविता-देव,
करें निज मन मन्दिर की शोध।
बिसारें काम, क्रोध, मद लोभ,
घटाए जग मे वैर-विरोध ॥१७॥

न घबरावें सकट को देख,
न बिसरावें सुख मे प्रभु-याद।
तजें ममता धारें समभाव,
सदा नहीं रहते हर्ष विषाद ॥१८॥

प्रथम होता पापी-विस्तार,
भोगता भोग रचाता रास।
कभी कुछ होती उसकी जीत,
समूल होता फिर उसका नाश ॥१९॥

जगत् का यही सनातन धर्म,
सत्य का होता बेड़ा पार।
मगर पापी की भरकर नाव,
डूब जाती है बीच मझार ॥२०॥

कहां है रावण का परिवार ?
कहाँ है बली ? कहाँ है कस ?
सुयश है राम-कृष्ण का शेष,
तिरोहित हो गये पापी वंश ॥२१॥

करें तप, त्याग, यज्ञ, व्रत, नियम,
फिरे या वेद शास्त्र गाते ॥
जो होते दुष्ट भाव के विप्र,
नहीं वे सिद्धिको पाते ॥२२॥

सभी से बोलो मीठे बोल,
करो सत्पुरुषो का सम्मान।
अभिवादन के फल हैं चार—
आयु विद्या, बल, सुयश महान् ॥२३॥

करो शुभ यज्ञो का विस्तार,
हरो दुःखियो के भय सन्ताप।
वही होते भव-जल - निधि पार,
जो होते भक्त-प्रवर निष्पाप ॥२४॥

# गोरक्षा-आन्दोलन

## 'गो मां'

ऐसा जनमत करो जागरण
प्रजातन्त्र का रूप दिखा दो।
उठो-उठो गो मा के सेवक
गोहत्या का नाम मिटा दो ॥

प्रजातन्त्र का सुन्दर मन्दिर
शोभित भारत की धरती पर।
फिर क्यों नगा नाच रही है
तानाशाही गडिका बरबर ॥

आज देश स्वतन्त्र खड़ा है
फिर भी गोसग दुर्व्योहार।
वशज होकर राम-कृष्ण के—
क्यो कर सहते अत्याचार ॥

भारत मां देवों की जननी
फिर भी गो मां का खून बहे।
और समझ कर हौवा—
'सेकुलरवाद' को हम चुपचाप सहे ॥

कहो कलेजा ना फट जाता
निज को हिन्दू कहने वालो ?
गग नीर से नित्य नहाकर
सिर पर चन्दन मलने वालो ॥

गो-पालको की अखण्ड धारा
मे अपना भी बूद मिला लो।
तन मन धन जीवन सब देकर
गो माता को आज बचा लो ॥

गो माता साकार धर्म है
इसको ही अब अपनाना है।
हिन्दू तुमको प्राण गवाकर
इसको ही आज बचाना है ॥

—नाथशरण श्रीवास्तव, कानपुर

---

जो धारण करते परम पुरुषार्थ,
हिय मे जिनके विमल-विवेक।
उन्हीं के हैं सब लोक-परलोक,
मुक्ति-पद, सौ की बात है एक ॥२५॥

बढ़ाओ प्रेम-भाव की बेल,
रचाओ यज्ञ, करो शुभ-कर्म।
चतुर्विध वर्णाश्रम के धर्म,
यही है कर्म योग का मर्म ॥२६॥

मनुज ! कर मानवता-विस्तार,
मनुज ! कर मानवता से प्रेम।
मनुज ! कर सत्य सुधा का पान,
तेरा नित होगा कुशल-क्षेम ॥२७॥

# आइए, हम देव भाषा संस्कृत पढ़ें

## षड्दशः पाठः

## शब्द प्रयोग परिचय

### रिक्त स्थानों को भरिए

| | |
|---|---|
| - - - - कूजति। | गज· - - - - - । |
| - - - - गजति। | शुक: - - - - । |
| - - - - धावति। | वानर. - - - - । |
| बालकौ — — —। | - - - - धावत· । |
| कोकिलौ - - - । | — - - - रटतः। |
| अश्वौ - - - । | - - - - खादतः। |
| — — — खादन्ति। | अश्वाः - - - - । |
| - - - - गर्जन्ति। | गजा. — — — — । |
| — — — पठन्ति। | शुकाः — — — । |

### प्रश्नोत्तर शैली में बोलने का अभ्यास कीजिए

| | प्रश्न | उत्तर |
|---|---|---|
| १ | त्वं किं करोषि ? | अहम् जलम् पिबामि। |
| | [तुम क्या करते हो ?] | [मै जल पीता हू] |
| २ | अहम् किं करोमि ? | त्वम् पुस्तकम् पठसि। |
| | [मैं क्या करता हू ?] | [तुम पुस्तक पढ़ते हो] |
| ३ | सः किं करोति ? | स· क्रीडति। |
| | [वह क्या करता है ?] | [वह खेलता है] |
| ४ | तौ किं कुरुत. ? | तौ लिखत। |
| | [वे दो क्या करते हैं] | [वे दो लिखते है] |
| ५ | युवां किं कुरुथ ? | अवां फल न खाव। |
| | [तुम दो क्या करते हो ?] | [हम दोनों फल खाते हैं] |
| ६ | अवा किं कुर्व· ? | युवाम् हसथः। |
| | [हम दो क्या करते हैं ?] | [तुम दोनों हसते हो] |
| ७. | ते किं कुर्वन्ति ? | ते धावन्ति। |
| | [वे क्या करते हैं ?] | [वे दौड़ते हैं] |
| ८. | यूय किं कुरुथ ? | वयम् जलम् पिबाम। |
| | [तुम क्या करते हो ?] | [हम सब जल पीते हैं] |
| ९ | वयम् किं कुर्म ? | युय पठथ |
| | [हम सब क्या करते हैं ?] | [तुम पढ़ते हो] |

### इन्हें ध्यान से देखिए और कण्ठस्थ कीजिये—

| | प्रथम पुरुष | मध्यम पुरुष | उत्तम पुरुष |
|---|---|---|---|
| एक वचन | करोति | करोषि | करोमि |
| द्विवचन | कुरुतः | कुरुथः | कुर्वः |
| बहु वचन | कुर्वन्ति | कुरुथ | कुर्मः |

## आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर प्रगति पथ पर

आश्रम का गंगा किनारे महिला घाट भी बनकर तैय्यार हो गया है। आश्रम के अन्दर की सडक भी पक्की बन गई है।

आश्रम मे एलोपैथिक होम्योपैथिक चिकित्सालय तो पूर्व से ही हैं,अब आयुर्वेदिक चिकित्सालय की भी व्यवस्था की जा रही है।

रेलवे स्टेशन तथा आश्रम के बीच लगभग ९ बीघा भूमि ५६ हजार रुपये मे क्रय करके द्वितीय शाखा आश्रम का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है।

लगभग ७५ नये कुटीर बनाये जा रहे है। आश्रम का सत्सग भवन भी विस्तृत किया गया है जिस मे ५०० साधक-साधकाए सुगमता पूर्वक बैठ सकें।

अब आश्रम मे कुटीरो की सख्या बढ़कर ३०० से ऊपर हो जावेगी। —शिवदयालु

## मोहनाश्रम हरिद्वार प्रगति पथ पर

आश्रम का भव्य द्वार माता सत्यवती सेठानी धर्मपत्नी स्व० सेठ रामकिशोरजी देहरादून ने ७०००) रु० की लागत मे बनवाया है और मुन्शी रामशरण जी ने ४०००) लगाकर यज्ञशाला के चबूतरो को बहुत विशाल रूप दे दिया है तो सेठ ओम्प्रकाश महरा बम्बई वाले यज्ञ के निकट एक सुन्दर सत्सग भवन २५ हाजर रुपये की लागत से बनवा रहे हैं।

श्री बीरावाली व श्री अनन्ता देवी देहली निवासी ने लगभग २० हजार रुपये की लागत से दो सुन्दर कुटीर बनवाये हैं।

आश्रम मे २५ व्यक्ति तो स्थायी रूप से निरन्तर निवास करते हैं और ग्रीष्मादि ऋतुओ मे यह सख्या बढ़कर चौगुनी हो जाती है।

देहली के श्री प. महेन्द्र शास्त्रीजी के आध्यात्मिक प्रवचनों की समाप्ति पर श्री पं० शिवदयालु जी मेरठ ने कठोपनिषद् प्रारम्भ कर दी है। कथा रोचक व प्रभावपूर्ण होती है।

—सच्चिदानन्द तीर्थ
अधिष्ठाता

## शिवाश्रम का वार्षिकोत्सव

श्री शिव आश्रम हरिद्वार का १२ वा वार्षिकोत्सव दि० २५ से २८ अप्रैल तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव पर महात्मा आनन्दस्वामी जी के निरन्तर मार्मिक प्रभावपूर्ण प्रवचन होते रहे उत्सव पर डा० रामनाथ आचार्य सस्कृत विभाग, प० सुखदेव शास्त्री आचार्य दर्शन विभाग, वेदप्रकाश शास्त्री प्राध्यापक सस्कृत विभाग एव राजेश शास्त्री प्राध्यापक वेद गुरुकुलविश्व विद्यालय कागडी, प शिवदयालु जी व श्री इन्द्रराज जी आदि मेरठ के प्रभावशाली भाषण हुये।

आश्रम के प्रधान श्री नरोत्तम शरण शारदा काठगोदाम व श्री ज्ञाननाथ बसल मैनेजर कपड़ा मिल सहारनपुर व आश्रम सस्थापक स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी का प्रयत्न सराहनीय है। रूढिवाद के इस गढ़ मे आर्यसमाज का प्रचार करने का श्रेय इस शिवाश्रम को ही है।

—शिवानन्द सरस्वती

## दानी महानुभाव सावधान रहें

मालूम हुआ हे कि किसी ने अखिल भारतीय श्रद्धानन्द साल्वेशन मिशन' के नाम से एक सस्था चलाई हुई है जिसके लिये लोगों से धन भी एकत्रित किया जा रहा है। इस सस्था का नाम अखिल-भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर से बहुत मिलता जुलता है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि 'अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर' एक पृथक पुरानी एव रजिस्टर्ड सस्था है। इसलिये दान देते समय वे ध्यान रखे कि यह दोनों सस्थाएं एक ही नहीं है, परन्तु भिन्न-भिन्न हैं।

रामदास अध्यक्ष अखिलभारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन
होश्यारपुर

## सरलतम् विधि से संस्कृत सीखने की निःशुल्क कक्षाएँ

आगामी १ जून से ३ मास के लिये विना रटे सरलतम विधि से सस्कृत पठन-पाठन का शिविर जिज्ञासु सरलतम् सस्कृत प्रचार समिति, आर्यसमाज चौक के तत्वावधान मे आरम्भ किया जा रहा है। इस आयोजन मे डाक्टर, वकील, व्यापारी, अध्यापक तथा विद्यार्थी आदि सभी भाग ले सकते हैं। और किसी भी मत या सम्प्रदाय के व्यक्ति के लिये प्रतिबन्ध न रहेगा।

पुरुषो के लिये कक्षाए आर्य समाज मन्दिर चौक मे प्रात काल ६-३० बजे से ७-३० बजे तक और देवियो के लिये सायकाल ५ से ६ बजे तक आर्य कन्या इन्टर कालेज मे प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। विशेष जानकारी के लिये मन्त्री जी से सम्पर्क स्थापित कीजिये।

—राधेमोहन मन्त्री
आर्यसमाज चौक, प्रयाग

## सार सूचनाएँ

२१ से २३ जून तक आ. स. थापरनगर मेरठ मे अखिल भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद की स्थापना होगी।

—आनन्दप्रकाश मन्त्री

## विचार गोष्ठी

मथुरा—११ मई। अराष्ट्रि प्रचार निरोध समिति की वि गोष्ठी मे जो आर्य उप प्रतिनि सभा जिला मथुरा के तत्वावध मे बुलाई गई थी अनेक बाहर त जिला सभा के गण्यमान्य व्यक्ति ने भाग लिया। श्री प बालदिवा जी हम उप प्रधान सचालक स देशिक सभा दिल्ली तथा डा रा वीरशरण जी मुख्य सघठक अर ष्ट्रिय प्रचार निरोध उत्तरप्रदेश श्री नरदेव जी स्नातक ससत्सद की अध्यक्षता मे विचार गोष्ठी समारम्भ किया। इस अवसर भरतपुर इण्डस्ट्रीज के सचालक सेठ शान्तीस्वरूप जी गोयल ने समिति के महत्त्वपूर्ण कार्यक्र को देखते हुए सर्वात्मना महयं देने का वचन दिया।

श्री बाल दिवकार जी हस सरकार को चेतावनी देते जनता से सस्कृति के रक्षार्थ प्रकार की तपश्चर्या से गुजरने अनुरोध करते हुये कहा-भारत सस्कृति तप, और त्याग के उ आदर्शों पर अवलम्बित है। भौतिकवाद के भोग पूर्ण प्रभा यदि अपनी ओर आकर्षित करने सफल हो जाते हैं तो आपका कलकित हो जायगा।

श्री डा० रघुवीरशरण जी कहा-मथुरा जिले मे प्रति आठ-उ दस-दस मोल पर ईसाई अराष्ट्रि तत्वो मे धर्म की आड लेकर रा विरोधी कार्यवाहियो के सार्वज क्षेत्र मे अड्डे खोल दिये हैं उ आर्थिक कमजोरी का लाभ उठा निर्धनो को धर्म परिवर्तन के लि तैयार कर लिया जाता है। समझता हू जिले भर के हिन्दूम का यह कर्त्तव्य है कि इस समि की तन-मन धन से सहायता करे

समिति के मन्त्री श्री सुरेशच जी ने इस महान् यज्ञ को सप करने के लिये पचास हजार रुप के सग्रह करने की अपील क इस कार्य को अविलम्ब पूर्ण क का निश्चय हुआ।

—सुरेशचन्द्र आर्य म

## निर्वाचन

--आर्यसमाज भीमगज मण्डी टा जकशन ।

ान श्री रघुनाथप्रसाद ओबेराय प्रधान श्री जीयालाल वर्मा न्त्री श्री विश्वम्भरनाथ कौशल पमन्त्री श्री ओमप्रकाश वासुदेव " " आनन्दराव सप्रे षाध्यक्ष,, देवीदयाल तकाध्यक्ष श्री लक्ष्मणदास गुलाटी रीक्षक ,, रतनलाल नागल

--विश्वम्भरनाथ कौशल मन्त्री

--आर्यसमाज चन्दौली (वारा-सी) प्रधान श्री मंगलाप्रसाद जी प प्रधान श्री मिश्रीलाल जी ास्त्री, मन्त्री श्री दीनदयाल जी ार्य, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रप्रताप ो गुप्त ।

--मन्त्री आर्यसमाज चन्दौली

--आर्यसमाज कोटा । प्रधान ी डा. सा. राजबहादुर जी, उप धान श्री गोविन्दलाल जी, ब ी हरिवल्लभ जी तथा श्रीमती क्षिणादेवी जी, मन्त्री श्री गोपी ल्लभ जी, उपमन्त्री श्री रामस्वरूप ो, व श्री पूरणचन्द जी तथा श्री ीशकुमार जी, प्रचार मन्त्री श्री रिश्चन्द्र जी, कोषाध्यक्ष श्री ानलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री भुदयाल जी ।

--मागीलाल मन्त्री

## उत्सव

--८ से ११ जून तक आर्य माज सभल का वार्षिकोत्सव ोगा । इस अवसर पर गो रक्षा ाष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी होगे ।

मन्त्री

--आर्य समाज कर्णपुरवस्त फर्रुखाबाद]के मन्त्री श्री उदयपाल सह की पुत्री का शुभ विवाह दनाक २८-४-६९ ई० को वैदिक ीत्यनुसार श्री पं अनन्तराम जी, था श्री म० रणजीतसिंह जी हरदोई] तथा श्री प. रामभरोसे ाल जी पुरोहित द्वारा सम्पन्न ुआ, इस सस्कार का प्रभाव उप-स्थित नरनारियो पर बहुत अच्छा ड़ा ।

--गयासिंह प्रधान

--२१ अप्रैल को आर्य समाज सोरों के पुरोहित श्री ज्ञानदेव जी वानप्रस्थी ने पिलुवा [एटा] मे श्री भाई दयाल जी की पुत्री का पाणिग्रहण सस्कार वैदिक रीति से कराया । १२ मई को बदरिया सोरो मे श्री मोर मुकुट के यहाँ यज्ञ कराया ।

--शातिदेवी शर्मा मन्त्री

--२१ अप्रैल को आर्य समाज सोरो की मन्त्रिणी श्रीमती शान्ति देवी जी ने विभिन्न स्कूलो मे वैदिक रीति से यज्ञ कराया ।

--मन्त्री

--आर्यसमाज खडवा की ओर से समाज के स्थाई प्रचारक सुख-राम आर्य सि० शास्त्री ने दि० २३ अप्रैल से ११ मई ६९ तक विभिन्न स्थानों मे वेद प्रचार किया ।

--बसन्तलाल प्रचार मन्त्री

## शोक प्रस्ताव

--राष्ट्रपति जाकिर हुसैन के निधन पर निम्न आर्य समाजो ने शोक सहानुभूति के प्रस्ताव पारित किये हैं--

आर्यसमाज अजमेर, आर्यसमाज खालापार सहारनपुर, आर्य समाज सभल, आर्य समाज बनारस छावनी आर्य समाज कलकत्ता, आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी ।

--दुःख है कि आर्यवीर जालधर के सम्पादक श्री पं० मेहरचन्द्र जी शर्मा का एक लम्बी बीमारी के पश्चात् १२ मई को देहान्त हो गया । --ओमप्रकाश शर्मा

--परम त्यागी उच्चकोटि के सन्यासी ब्रह्मानन्द जी महाराज, देहली, कृपा करके आगरा पधारे और दिनाक ७ से ११ मई तक वैदिक प्रवचनों की अमृत वर्षा की । प्रात: वेद मण्डल पालीवाल पार्क के खुले मैदान में तथा रात्रि को ८ से ९॥ तक आर्यसमाज आगरा नगर फ्री गज में । उनके प्रवचनो को सुनने के लिये बहुत बड़ी सख्या में स्त्री पुरुष इकट्ठे हुये और उनके सरल भाषा और आकर्षक शैली में वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन से अत्यन्त प्रभावित हुये । स्वामीजी ने जनता के आग्रह पर भी कुछ भेंट नहीं ली । श्री स्वामी जी अपनी आयु के ९९ वर्ष पूर्ण करके १०० वें वर्ष मे चल रहे हैं और स्वस्थ हैं । इस आयु में भी वे वेदो का सन्देश उत्साह के साथ सारे भारत वर्ष में फैला रहे हैं ।

## ग्राम गढ़िया जिला एटा में बाबू खाँ के परिवार की शुद्धि

शुद्धि सभा के उपदेशक श्री पं० गगालाल जी के प्रयत्न से ग्राम गढिया जिला एटा मे ७ ४-६९ को बाबू खां के परिवार के ८ सदस्यों का श्री प हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी द्वारा शुद्धि सस्कार हुआ, और उन्हे उनकी पुरातन राजपूत जाति मे सम्मिलित किया गया । दिल्ली से श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष ने जाकर भाग लिया । ग्राम सहोरी के ठा. महरवानसिंह, ठा. भगवानसिंह, ओमदपुर से मा पोहपसिंह, नगला अमरसिंह से ठा. देवीसिंह हाकिमसिंह तथा ठा सुन्दरसिंह आदि अनेक ठाकुर ब्राह्मण सम्मिलित हुए ।

## कस्बा शाहपुर जिला मुजफ्फरनगर में १७६ ईसाइयो की शुद्धि

दिनांक १३-४-६९ को श्री डालचन्द आर्य उपदेशक के प्रयत्न से शाह पुर जिला मुजफ्फरनगर मे १७६ ईसाइयो को श्री हरि-प्रसाद जी वानप्रस्थी द्वारा शुद्धि सस्कार कराकर उनकी पुरातन बाल्मीकि जाति मे प्रविष्ट किया गया । दिल्ली से श्री द्वारिका-प्रसाद प्रधान मन्त्री गोकलचन्द जी आर्य समाज राजेन्द्रनगर, तथा हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष शुद्धि सभा ने जाकर भाग लिया । स्थानीय प विजय पाल शर्मा आदि कीर्तन मण्डल सनातन धर्मी सम्मिलित हुए । और पूर्ण सहयोग दिया ।

--द्वारिका नाथ प्रधान मन्त्री

## अलीगढ़ जिले में शुद्धियाँ

अलीगढ़ के केन्द्र पर तहसील इगलास के प्रचारक श्री काशी-नाथ द्वारा ६० ईसाइयों को वैदिक रीत्यनुसार शुद्ध करके उनकी प्राचीन हिन्दू हरिजन जाति मे सम्मिलित किया गया:

विवरण---

१४-४-६९ को ग्राम भुजपुरा, डा. कोल जिला अलीगढ़ में ७ पुरुष, १३ स्त्रियां, १० बालक शुद्ध हुए=३० ।

२२-४-६९ को ग्राम गलसपुर डा० फगोई जिला अलीगढ़ में १२ पुरुष, ११ स्त्रियां ७ बालकों को--३० योग ६०

--रघुवीरशरण आर्य, मुख्य संगठक उ. प्र.

# आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला लखनऊ

जिला उप सभा की स्थापना सन् १९४१ मे हुई। उप सभा मे इस समय २६ समाजें प्रविष्ट हैं। उप सभा का कार्यालय आर्यसमाज गणेशगज मन्दिर में है। सभा के वर्त्तमान अधिकारी ये हैं—

१ प्रधान श्री कृष्णबलदेव जी २ उप प्रधान श्री दीवानचन्द जी गांधी ३ उपप्रधान श्रीमती सुभद्रा देवी ४ मन्त्री श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' ५ उपमन्त्री श्री पृथ्वी राज जी वरमानी ६ उपमन्त्री श्री रामचरित्र जी पाण्डेय ७ उपमन्त्री श्री तिलकराज जी गुप्त ८ श्री भूपेन्द्रनाथ पाल ९. कोषाध्यक्ष श्री मुनीन्द्रकुमार जी वर्मा १० पुस्तकाध्यक्ष श्री अशोककुमार जी ११. आय-व्यय निरीक्षक श्री ज्ञानचन्द्र जी मल्होत्रा तथा विभिन्न समाजों से १७ अन्तरङ्ग सदस्य व सदस्या हैं।

उप सभा की अन्तरङ्ग प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को नियमित रूप से होती है।

साप्ताहिक प्रचार योजना—आर्य समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों में उप सभा के १९ अवैतनिक उपदेशक महानुभाव समय-समय पर पधार पर प्रचार व उपदेश करते हैं।

मासिक प्रचार योजना—लखनऊ शहर की आर्य समाज के निमन्त्रण पर प्रति मास के अन्तिम रविवार के दिन मासिक अधिवेशन वर्ष पर्यन्त किया जाता है। सैकड़ों की संख्या में आर्य नर-नारी भाग लेते रहे हैं।

पर्व प्रचार—उप सभा के तत्वाधान में विभिन्न आर्य समाजों में सम्मिलित रूप से निम्नलिखित पर्व मनाये जाते हैं—

१ श्रावणी
२. कृष्ण जन्माष्टमी
३ ऋषि निर्माण
४ ऋषि बोध
५. श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह
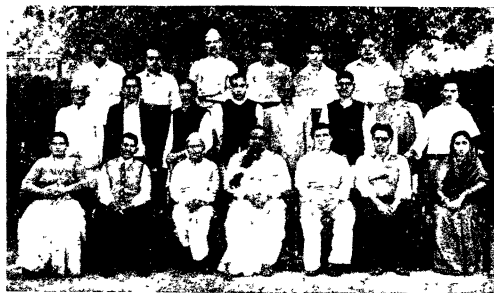
सन् १९६६ के पदाधिकारी व अन्तरङ्ग सदस्य

जिलोपसभा द्वारा प्रत्येक वर्ष अपनी वार्षिक कार्यवाही का सचित्र विवरण प्रकाशित किया जाता है।

उपर्युक्त पर्वों के अतिरिक्त मकर सक्रांति, वसन्त पचमी, लेखराम तृतीया, होलिकोत्सव तथा सीताष्टमी पर्व विभिन्न समाजें अपने क्षेत्र मे उत्साहपूर्वक मनाती हैं। जिसमे सभा पूर्ण सहयोग देती है।

## संस्था-परिचय

दिनाक १५ २-६९ को अमीनुद्दौलापार्क लखनऊ मे विशाल स्तर पर ऋषि-मेले का आयोजन किया गया था, जिसमे सायकाल ५ बजे से ९ बजे रात्रि तक यज्ञ, भजन एव व्याख्यान हुए।

बाल सम्मेलन—प्रत्येक वर्ष उप सभा की ओर से बालक बालिकाओं के अनेक सुरुचिपूर्ण कार्यक्रम रखे जाते हैं, जिनमें बच्चे विशेष रूप से भाग लेते हैं। और ऋषि-निर्माण पर्व पर सब बच्चों को पुरस्कार दिया जाता है।

उपदेशक सम्मेलन—प्रत्येक वर्ष अवैतनिक उपदेशकों एव कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन किया जाता है और प्रचार विषयक योजना बनाई जाती है।

प्रत्येक वर्ष सभा की ओर से ग्राम प्रचार की योजना बनाई जाती है, जिनमें उप सभा के श्री प्रधान जी, मन्त्री जी, उपमन्त्री पहुच कर प्रचार करते हैं। तथा समाजों की कठिनाइयों को जा कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

उप सभा का प्रचार का विज्ञप्तियों एवं पुस्तकों की बिक्री द्वारा भी किया जाता है, जिसका जनता पर प्रभाव काफी पड़ता है।

उप सभा की ओर से परिवारों में वैदिक संस्कारों एवं यज्ञों पर अधिक बल दिया जाता है। सभा का वार्षिक व्यय लगभग ३०००) है। सभा की स्थिर निधि १०००) है, सभा के पास अपना हारमोनियम व लाऊड स्पीकर सैट है।

—श्रीमती राजरानी

## सम्पादक के पत्र

(पृष्ठ १६ का शेष)

जब तक हम छोटे-छोटे बच्चों को वैदिक धर्म के बारे में जानकारी नहीं देंगे तो हमारे जगत्गुरु महर्षि दयानन्द का लक्ष्य कौन पूर्ण करेगा।

आशा है आप मेरे सुझाव पर अवश्य ध्यान देने का कष्ट करेंगे।

क्योंकि मै यह महसूस कर रहा हू कि बच्चे वैदिक धर्म से विमुख होते जा रहे हैं और अनुशासन का पालन नहीं कर रहे हैं। अनुशासनहीन हो रहे हैं।

उस पत्रिका में देश भर में जितनी भी आर्य कुमार सभायें हैं उनके पते भी प्रकाशित करे। और आर्य कुमार समाओं का एक सगठन बनाने की कृपा करे। जिससे हम आर्य कुमार एक दूसरे के निकट आ सके और उस पत्रिका मे आर्य कुमारो की समस्त सूचनायें प्रकाशित करें।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका अवश्य उन्नति करेगी। और महर्षि दयानन्द का लक्ष्य पूरा करने में सहायक होगी।

पत्र का उत्तर अवश्य दें चाहे आर्यमित्र के द्वारा और चाहे आप मेरे को दें।

यह मै आपको अपने हृदय के भाव सहित लिख रहा हू। आप इसको ठीक तरह आर्यमित्र मे छपवाने कष्ट भी करें।

—योगेन्द्र व्यास
२२४/ए रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद [उ. प्र.]

## बिना ट्यूब का टेलीविजन सेट

टोकियो—एक जापानी कम्पनी ने एक ऐसा टेलीविजन सेट तैयार किया है जिसमे ट्यूब की आवश्यकता नहीं और जिसको दीवार के सहारे लटकाया जा सकता है।

यह सेट १०० मिलीमीटर लम्बा और ७५ मिलीमीटर चौड़ा है। आशा है कि अगले तीन-चार साल मे यह बाजार मे बिकने लगेगा।

# देश विदेश

## मां द्वारा ७ बच्चों की हत्या

मेमार्स, फ्रांस, एक स्थानीय महिला ने पुलिस के सामने स्वीकार किया है कि उसने गत १५ वर्षों में ७ बच्चों की हत्या की है।

पुलिस ने बताया कि महिला के ३ बच्चे जीवित हैं। पुलिस ने पड़ोसियों द्वारा लगातार शिकायत किये जाने के बाद उससे पूछताछ की। पुलिस का कहना है कि उनमे से दो के अवशेष उसके बाग मे ही पाये गये। इस महिला ने, जिसका नाम केवल श्रीमती एल. ही पता लगा है, पुलिस को बताया कि उसने १५ वर्ष पूर्व नवजात जुड़वां बच्चों को मार दिया था। उसके बाद वर्ष मे भी उसने अपने ५ बच्चों को जन्म लेते ही मार दिया था।

## स्वप्न साकार

नई दिल्ली, एक जापानी युवक तथा युवती ने दिल्ली के एक मंदिर में भारतीय ढंग से विवाह कराकर अपना स्वप्न पूरा किया।

२४ वर्षीय जापानी युवती कुमारी कुराशिमा तथा २६ वर्षीय श्री हतुशु सोने ने भारतीय परिधान पहन कर भारतीय परम्परा के अनुसार विवाह किया। दोनों का कोई भी सम्बन्धी इस अवसर पर उपस्थित न था। अतः कन्यादान भारतीय पर्यटन विभाग के एक अधिकरी ने किया। शादी के बाद नवदम्पति ने प्रसन्नता प्रकट करते हुये कहा कि बुद्ध धर्म के जन्म स्थान पर विवाह करने का हमारा स्वप्न पूरा हो गया है।'

## जर्मनी में मक्खन का पर्वत

बान—जर्मनी में मक्खन का एक पर्वत है—इस अर्थ में कि इस देश में इतना मक्खन जमा हो गया है कि सरकार को चिन्ता हो रही है कि इसको किस प्रकार दूर या कम किया जाय।

मक्खन की कुल मात्रा कितनी है, इसके सम्बन्ध में पूरे आंकड़े प्राप्त नहीं है। लेकिन यह मात्रा कितनी हो सकती है इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि सरकार की ओर से तीन तरकीबो पर अमल करने के बाद इस में १२ हजार टन की कमी हो सकेगी।

ये तीन तरकीबें हैं—

(१) जर्मनी की सेना ने अपनी आवश्यकता से अधिक मक्खन खरीदने का निश्चय किया है। पहले की अपेक्षा मक्खन की कीमत मे भारी कमी कर दी गई है।

(२) अस्पताल वृद्ध व्यक्तियों के शरण गृह, युवक केन्द्र आदि भी कीमत मे की गई कटौती से लाभ उठाने वाले हैं और अपने-अपने मक्खन भण्डार को बढ़ाने वाले हैं।

(३) जर्मन समाज कल्याण केन्द्र ने बड़े पैमाने पर मक्खन खरीद कर अपेक्षतया निर्धन व्यक्तियो मे इसके वितरण की योजना बनाई है।

यह मक्खन तीन रुपये प्रति किलो बिकेगा।

## बर्मी लड़की पिछले जन्म में सैनिक थी

रंगून। एक सात वर्षीय बर्मी कन्या अपने पिछले जन्म के सम्बन्धियों से मिलना चाहती है।

उसका नाम खिन सान थिन है। लेकिन उसका दावा है कि पूर्व जन्म मे यह मांग सीन थी। वह भारतीय सेना के एक दस्ते में सैनिक थी। १९४५ मे जब मित्र राष्ट्रीय सेनायें पुन बर्मा मे प्रविष्ट हुईं तब यह मारी गई।

उसका कहना है कि उस जन्म मे यह रंगून के कन्दागले क्वार्टर मे पैदा हुई थी।

उसने अपने पूर्व जन्म की घटनाये विस्तार पूर्वक बताई हैं। उसके बर्मी पिता का नाम को फो हुला और माता का नाम मा मा प्यू था।

उसका विश्वास है कि छह बच्चों के परिवार में वह अकेला पुत्र था। वह बहुत सरलता से पिछले जन्म की अपनी बहनों के नाम बताती है।

उसका कहना है कि पिछले जन्म में वह लड़का था, वह अपने माता पिता को तले हुये केक बेचने मे सहायता देता था। १८ वर्ष की उम्र मे वह सेना मे भर्ती हो गया। जब जापान ने बर्मा पर आक्रमण किया तब वह फौज से भागकर भारत चला गया।

## अब दिल की तरह नया जिगर भी

लंदन—डर्बीशियर के एक अस्पताल मे एक रोगी के पुराने जिगर को निकाल कर नये जिगर लगाने का आपरेशन किया गया है।

आपरेशन में १६ सर्जनो ने हिस्सा लिया और इसको पूरा करने में पाच घण्टे लगे।

अस्पताल के अधिकारियों ने रोगी का नाम पता बताने से इनकार कर दिया है। सम्भवतः उनको अभी तक यह विश्वास नहीं है कि रोगी जीवित रह सकेगा। यह अपनी तरह का पहला आपरेशन कहा जाता है।

## हकलाने के इलाज के लिए गोली

हैम्बर्ग यहाँ के एक मनोवैज्ञानिक डाक्टर एच. डी. पैल्ट्ज ने एक ऐसी गोली तैयार की जिससे हकलाने वाले बच्चों का इलाज किया जा सकता है।

उन्होने लगभग ६० बच्चो पर दो वर्ष तक इस औषधि का परीक्षण किया। उनमें से आधे से अधिक बच्चे अब सामान्य रूप से बोलने लगे हैं।

यह गोली पश्चिम जर्मनी में अब बाजार मे बेची जाने लगी है। डा. पैल्ट्ज का कहना है कि हकलाने की आदत किसी आघात से या बचो के गलत ढग से पालने के कारण पड जाती है। जैसे अधिक सख्ती या अधिक लाड़ प्यार।

## रूस द्वारा चन्द्रमा पर जल्दी ही यान भेजने की सम्भावना

मास्को—रूस द्वारा जल्दी ही चन्द्रमा पर मानवरहित यान उतारने का प्रयत्न किये जाने की सम्भावना है।

रूस सम्भवतः पहले चन्द्रमा के कक्ष में एक मानव रहित अन्तरिक्ष यान छोड़ेगा उसके बाद चन्द्रमा पर जाने वाले यान को उससे अलग कर दिया जायगा। और उसे चन्द्रमा की सतह पर उतार दिया जायगा।

इसके बाद यह यान स्वयं चन्द्रमा पर से वापस आ जायगा। और कक्ष में चक्कर काटने वाले अन्तरिक्ष यान से जुड़ जायगा, और फिर अन्तरिक्ष यान को पृथ्वी पर उतार लिया जायगा, ऐसा यहाँ के विश्वस्त सूत्रों का कहना है।

## पाकिस्तान को रूसी सैनिक सहायता में अन्य कम्युनिस्ट देशो का योग

लंदन—रूस द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली सैनिक सहायता में कितना भाग पूर्वी जर्मनी और अन्य कम्युनिस्ट देशों का है, इस विषय मे यहा के राजनयिक क्षेत्रो मे विभिन्न अनुमान लगाए जा रहे हैं।

यदि पिछले २० वर्ष का इतिहास देखा जाय तो रूस जब किसी देश को शस्त्र देता है, तो उसमें काफी बडा हिस्सा उसके यूरोपीय अनुयायियो का होता है।

इस विषय मे सभी राजनयिक सूत्र सहमत हैं कि पेचीदा साधन जैसे रेडार, कम्प्यूटर आदि साधारणत पूर्वी जर्मनी द्वारा दिये जाते हैं।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल –६०

ज्येष्ठ ४ शक १८९१ ज्येष्ठ शु० ९
[ दिनाङ्क २५ मई सन १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. [illegible]
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

# अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था–

## ब्रह्मचर्य का महत्व और रक्षण

"देखो, जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसके रक्षण की रीति यही है कि विषयों की कथा विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें। जिसके शरीर में वीर्य्य नहीं होता वह महा कुलक्षणी, दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

जो विवाह करना ही न चाहें और मरण पर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकते हों तो भले ही रहें परन्तु यह काम पूर्ण विद्या बल वाले जितेन्द्रिय और योगी स्त्री और पुरुष का है। यह बड़ा कठिन काम है जो काम के वेग को थाम के इन्द्रियों को अपने वश में रखना है।

# पुस्तक-परिचय

## (१) युग निर्माण

ले०–श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट,
पता–माईथान, आगरा
पृष्ठ सं० ११६ मूल्य २.५०

इस पुस्तक में युग निर्माण के लिये आवश्यकताओं का विवेचन किया गया है। पुस्तक के ५ प्रमुख भाग हैं जिनके नामकरण इस प्रकार किये गये हैं–

अरमान का युग, विज्ञान का युग, सामान का युग, निर्माण का युग, ईमान का युग।

पुस्तक के लेखक सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान हैं। 'आचार परमो धर्म' पर आधारित यह पुस्तक नैतिक उत्थान में बहुत सहायक है। आज जिस राष्ट्रिय चरित्र का हमें अभाव लक्षित होता है, उसकी पूर्ति इस पुस्तक के पठन-पाठन से हो सकती है।

## (२) योग और स्वास्थ्य

ले०–[illegible]
प्रकाशक-आदर्श साहित्य निकेतन, अजमेर
पृष्ठ सं० २६१ मूल्य १.५०

योग और स्वास्थ्य पर अभी तक जितना साहित्य उपलब्ध है, उसमें यह पुस्तक निस्सन्देह सर्वश्रेष्ठ है। पुस्तक में जिन विषयों का संकलन है, उनमें 'योग ही रोग का नाशक है' 'योगासनों के करने की विधि तथा उनके लाभ' 'प्राणायाम और विधि' 'यौगिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा' आदि हैं। जिस सुन्दर सरल ढंग से यह पुस्तक लिखी गई है, उसके लिये लेखक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है। गागर में सागर भर दिया गया है। प्रत्येक आर्य परिवार में ही नहीं वरन् सुन्दर स्वास्थ्य की कामना करने वाले प्रत्येक परिवार में यह पुस्तक अवश्य होनी चाहिये।

इतने कम दाम में इतनी उपयोगी पुस्तक छापकर जनता को बलशाली बनाने के लिये जो उद्योग किया गया है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है।

–'[illegible]'

# सम्पादक के पत्र

## एक योजना

श्रीमान् सम्पादक जी,
नमस्ते !

मैं ३ वर्ष से नियमित रूप से आर्यमित्र पढ़ रहा हू। आपको पत्र का टाइप सुधारने के लिये बहुत धन्यवाद !

आप पत्र के अन्दर एक योजना और प्रकाशित करने का कष्ट करें। [illegible] विज्ञान प्रतियोगिता की [illegible] नहीं तो ज्ञान वर्द्धन के लिये कोई योजना। और आर्यमित्र के ऊपर के कवर को आकर्षित बनायें।

जागृति अङ्क मैंने पूर्णरूप से पढ़ा। बहुत ही अच्छे लेख लगे। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद !

पत्र को सुन्दर अवश्य बनायें। विश्व में जितना अधिक हमारे आर्यमित्र का प्रचार होगा उतना ही हमारे महर्षि दयानन्द का लक्ष्य पूर्ण होगा।

आप अपने यहाँ से बच्चों के लिये भी कोई पत्रिका प्रकाशित करने का कष्ट करें।

जिससे बच्चे भी वैदिक धर्म के बारे में जान सकें, क्योंकि हमारे इस आर्यमित्र में बड़े-बड़े लेख और मन्त्र प्रकाशित होते हैं। जिन्हें बच्चे समझते नहीं हैं।

आप उस पत्रिका में संस्कृत के मन्त्रों का अनुवाद और वैदिक धर्म की रक्षा करने वाले सेनानियों के बारे में जैसे स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम इत्यादि महापुरुषों के बारे में छोटी-छोटी कहानियाँ और नाटक महापुरुषों के आधार पर।

यह सब मैं आपको सुझाव के रूप में लिख रहा हूं। क्योंकि हमारे लोगों के आगे यह की समस्या बहुत ही होती है। अगर हो सके तो प्रकाशित करें। सब आर्यसमाजी और आर्य कुमार सभाओं से भी सहयोग लें। जिससे वैदिक धर्म के प्रेमी आपको सहयोग दें।

क्योंकि आज कोई भी [illegible] आर्यसमाज के बारे में [illegible] कोई भी जानकारी नहीं [illegible]

[शेष पृष्ठ १[illegible] पर]

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

'वय अयेम' ] लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ १८ शक १८९१ शुद्ध आषाढ कृ० ९ वि० स० २०२६, दि० ८ जून १९६९ [ हुम जीर्ते

# आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली का

# नव निर्वाचन सम्पन्न

★
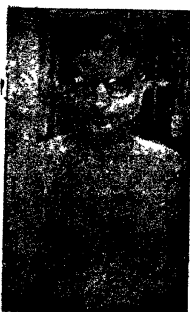
श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

★  ★

श्री प्रोफेसर रामसिह जी एम ए
प्रधान सावदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री
मुख्य उपप्रधान सार्वदेशिक आ प्र. सभा दिल्ली
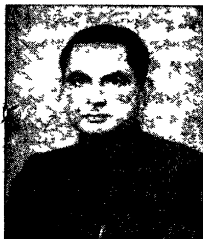
श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

आय प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री प० शिव कुमार जी शास्त्री ससद सदस्य, और प्रधान मन्त्री श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम एल ए निर्वाचित हुए।

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री प्रोफसर रामसिह जी एम० ए० तथा मुख्य उपप्रधान श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य और प्रधान मन्त्री श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम०ए० चुने गये।

दोनों आर्य प्रतिनिधि सभाओ के नव निर्वाचित प्रधान व मन्त्रियों व अन्य पदाधिकारियो एव अन्तरङ्ग सदस्यो को 'आर्य्यमित्र' की हार्दिक बधाई।

श्री प्रि महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री
मन्त्री सावदेशिक आ प्र सभा

वर्ष ७१ | अक २१

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

इस अक मे पढिए !



सपादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
एम एल ए
सभा-मन्त्री

सामवेद की धाराप्रवाह व्याख्या—

# मन मन्दिर के अन्धकार में दीजो ज्योति दान

**वेद मन्त्र—**

दूतं वो विश्व वेद सं हव्य वाहम मर्त्यम् ।
यजिष्ठ मृञ्ज से गिरा ।।
[साम० १२]

शब्दार्थ—( विश्व वेद सम् ) सर्वज्ञ ( हव्य वाहम् ) हव्य वहन करने वाला ( अमर्त्यम् ) मरण रहित ( यजिष्ठम् ) अतिशय पूजनीय ( वः ) तुम ( दूतं ) सन्देश वाहक को ( गिरा ) वाणी द्वारा ( ऋञ्जसे ) रिझाता हूं ।

व्याख्या—परम आराध्य देव परमात्मा जिसका स्तुति गान अपनी वाणी से निरन्तर साधक करता रहता है, जिसके गुणों और कर्मों पर रीझ कर अपने गुणों और कर्मों को तदनुसार बनाकर वह उसे रिझाना चाहता है, वह परम दिव्य देव साधक का हितकारी है, किन्तु अपनी अल्पज्ञता वश वह कभी-कभी परमेश्वर द्वारा प्रदत्त कर्मफल जो साधक की मनोभावनाओं के प्रतिकूल होता है, को देख कर उदासीन हो जाता है। यह उदासीनता और निराशा स्थायी नहीं क्षणिक होती है। साधक को तुरन्त आभास होता है कि वह परम कल्याणकारी तो सर्वज्ञ है। मेरा हित किस में है वह मुझ से अच्छा जानता है, इस लिये वह अटूट श्रद्धा से पुनः अपने आपको प्रभु के अर्पित कर देता है।

एक साधक पूर्ण लगन के साथ अपनी निष्ठा सहित किसी सार्वजनिक कार्य को करता है। परन्तु पूर्व कर्मानुसार अपने कर्म के फल को भोगने के लिये विवश होकर उसे जब दुःखों का सामना करना पड़ता है—

"भगवन ! मेरी निस्वार्थ सेवा का यह प्रतिफल ।" उसकी आत्मा चीत्कार कर उठती है। आत्मा की इस सच्ची पुकार का वह सर्वज्ञ तुरन्त उत्तर देता है। वह दिव्य देव दूत अपने दिव्य सन्देश का प्रसारण करते हुए कहता है—'वत्स ! यह तेरी परीक्षा है। मैं सर्वज्ञ हूं ! सर्वज्ञाता हूं। तुम्हारा हित किस में है, यह में भलीभांति जानता हूं। तुम्हारे किस पूर्व कर्म का तुम्हें यह प्रतिफल मिला है, तुम नहीं जानते। इसलिये न अधीर होओ, न अशान्त। परमार्थ के पथ पर चलने वालों को तो इससे भी भयंकर दुःख व कष्ट झेलने पड़े हैं। तुम्हारे निर्वाण के लिये मुझे तुम्हारे पूर्व कर्मफलों को शीघ्रातिशीघ्र प्रदान कर तुम्हारे मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करना है। जिन बन्धनों में तुम्हें दुःख की अनुभूति होती है, उन्हें काट कर तुम्हारे मुक्ति मार्ग के लिए ही मेरा यह न्याय है।

दिव्य दूत का यह सन्देश सुन कर साधक उसके प्रति नतमस्तक हो जाता है। वह पुनः उस हव्य वाहम के गुणगान करने लगता है वह अपने आपको शुद्ध पवित्र बनाकर उस परम वाहम को हव्य रूप में अर्पित कर देता है। वह हव्य वाहक है। जो आत्मा निर्मल होकर उसके प्रति समर्पित हो जाता है, वह परमदेव उसका वहन करता है, उसके समर्पण को स्वीकार कर उसके पुनीत पथ-प्रदर्शन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है।

जो विश्व में उपकारी होता है, परोपकारी होता है, जो अपना तन मन धन सर्वस्व लोक कल्याण को अर्पित करता है वह इस भौतिक जगत् में यजिष्ठम् होता है, पूजनीय, अतिशोय आदरणीय हो जाता है। वह परमदेव विश्व के जीवों को सर्वस्व देता है। भौतिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्यों को वह निरन्तर मुक्त हस्त से प्रदान करता रहता है इसलिये विश्व का वह परम दानी, परम सौभाग्य सर्वाहिशम पूजनीय है।

वह पूजनीय जिसका संगति करण साधक पल-पल चाहता है अमर्त्यम् है। वह मरण रहित है क्योंकि वह अकायम् है, नस नाड़ी के बन्धन में नहीं है। साधक शरीर धारी है इसलिये शरीर रूप में वह मरण धर्मा है। वह भी अमर्त्यमय होना चाहता है अपने साध्य की भांति इसलिये वह भी जगत् में दानशीलता से हव्यवाहम् होकर यजिष्ठ बनता है।

साधक जिस परमदेव के दिव्य गुणों पर रीझा हुआ है, वह उन्हीं गुणों को धारण कर अपने स्वामी को हर्षित करना चाहता है। वह चाहता है कि सुन्दरदेव उस पर रीझ जाए। वह दिव्य देव दूत अपने पावन सन्देशों का प्रसारण कर उसे अपने समान उच्चता पर ले जाए।

वाणी मनोभावों को व्यक्त करने का साधक है। परा पश्यन्ती मध्यमा और वैखरी उसके विभिन्न रूप हैं। अन्तर्मुखी होकर जिस परा और पश्यन्ती द्वारा वह आत्म विभोर होता है, बहिर्मुखी होकर

[शेष पृष्ठ १६ पर]

—श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त'
'वेदवारिधि'

## अध्यात्म-सुधा

## दूर करो अज्ञान !

प्रभु जी मेरे दूर करो अज्ञान।
मन मन्दिर के अन्धकार में,
दी जो ज्योति दान ।।
प्रभु जी···

मोह माया के बन्धनों में,
तड़पत मेरे प्राण।
कैसे आऊँ पास तुम्हारे,
पंख विहीन समान ।।
प्रभु जी···

काम क्रोध ने छलनी कीनो,
निर्बल मोह को जान।
जल जलकर मैं राख भयो हूं
छूटो नहीं अभिमान ।।
प्रभु जी···

पार उतरने भवसिन्धु से
शक्ति दे दो महान्।
करे 'वसन्त' यह विनती तुम से
सुन लो करुणा निधान ।।
प्रभु जी···

लखनऊ-रविवार ८ जून ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## दिव्या अंगारा

★

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ३४ वें सूक्त मे मानव को जुआ खेलने का निषेध किया गया है। इस सूक्त के मन्त्र ९ में जुए के पासों को आग के शोलों से उपमा दी गई है। मन्त्र में कहा गया है—"दिव्या अंगारा इरिणे न्युप्ताः। शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥"

अर्थात् जुआ खेल के पास तो अग्नि की भीषण ज्वालाएं हैं। जो ठण्डे होने पर हृदय को जला देने की क्षमता रखते हैं। इसी सूक्त के मन्त्र ११ में एक जुआरी की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहा गया है—

"पूर्वाह्णे अश्वान्यु युजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते।
वृषलः पपाद ॥"

अर्थात् प्रातःकाल सुन्दर रथ में जो घोड़ों से युक्त है, उसमें बैठने वाला एक जुआबाज सायंकाल जब अपना सब कुछ लुटाकर शीत निवारण के लिये अग्नि के पास बैठता है, तो उसकी दुर्दशा कितनी दयनीय होती है।

हम सब इस बात को भलीभांति जानते हैं कि जुआ खेलना एक दुर्व्यसन है। जो इस में लिप्त हो जाता है, वह अपना सर्वस्व लुटा बैठता है, और निरन्तर दीन हीन स्थिति में रहता है। वैसे जुआ खेलना एक अपराध भी है। और ताश के पत्तों पर बाजी लगा कर खेलने वाले जब पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं तो लाज के मारे बाजार मे मुख ढांप कर चलते हैं।

मानवी स्वभाव में एक विशेषता है कि सब कुछ जानते और समझते हुए भी वह अपनी इच्छाओ की पूर्ति के लिये अपने मस्तिष्क का दुरुपयोग करता है। हमने देखा है कि वैसे मानव नग्नता की विशेषतया महिलाओं की वेष-भूषा को लेकर आलोचना करता है, किन्तु व्यवहार मे दूषित मनोवृत्तियो के कारण घर मे ऐसे देवी देवताओ के चित्र टांगता है, जो अश्लीलता को भी मात करते हैं। हमने अनेक परिवारों मे जब माता सीता और पारवती को अर्धनग्न वेष-भूषाओं के चित्रों में देखा तो जहां चित्रकार की दूषित मनोवृत्तियो का ध्यान आया वहाँ ऐसे चित्रों की बिक्री करने वाले और खरीदने वालों की मनोभावनाओं को भी दोषी पाया।

यही अवस्था जुआ को लेकर हुई है। सट्टा खेलना, घुड़दौड़ में बाजी लगाना, इसी जुए के रूपान्तर हैं। इन कड़ियों में एक नई कड़ी जुड़ गई है, लाटरियों की। चूंकि अब उसे सरकार द्वारा सचालित किया जा रहा है, इस लिये हमने पाठकों को वेद की जानकारी देते हुये ही कुछ निवेदन करना आवश्यक समझा है।

आज देश मे लाखों रुपए की लाटरियों की सर्वत्रचर्चा हो रही हैं। चाहे किसी कार्यालय मे जाइये चाहे बाजार में, एक रुपये के टिकट से लाखों कमाइये। जिसे देखो वह टिकट पर टिकट खरीद रहा है। एक आशा सजोये कि उसे पुरस्कार मिलेगा ही। भारतवर्ष की अनेक प्रादेशिक सरकारों ने अपने-अपने प्रदेश की लाटरियां जारी कर दी हैं, क्योंकि इनसे अत्यधिक आर्थिक लाभ है। लाखों रुपये का लाभ प्रत्येक नई लाटरी में है, और चूंकि इससे प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ होती है, अतएव इसे सर्वत्र प्रोत्साहन दिया जा रहा है। हर नई लाटरी योजना मे पुरस्कारो की घोषणा अधिकाधिक की जा रही है, ताकि उसके आकर्षण से टिकटो की बिक्री बहुत हो।

जहाँ तक किसी राज्य को अपनी व्यवस्था चलाने के लिये प्रजा पर उचित कर आदि लगाने की व्यवस्था है वह बात तो समझ मे आ सकती है, और उसकी उपेक्षा भी नहीं हो सकती क्योकि प्रत्येक राज्य को अपना राज्य कार्य्य चलाने के लिये धन चाहिये जो प्रजा से ही मिल सकता है, किन्तु राज्य कोष की वृद्धि यदि ऐसे साधनो से की जाय जो जनता को पुरुषार्थहीन और निष्क्रय बनाये, तो उसके सम्बन्ध में सोचना आवश्यक हो जाता है और प्रजा व राजा के हित मे उचित मार्ग दर्शन कराना भी पत्रकारिता के नाते अनिवार्य हो जाता है।

लाटरी की सर्व प्रथम मानसिक प्रतिक्रिया यह होती है कि मनुष्य पुरुषार्थ को हेय और भाग्य को ही प्रमुख समझने लगता है। पुरुषार्थी अपनी शक्ति पर आश्रित होता है। वह अपने बाहुबल पर विश्वास करता है और अपनी बुद्धि के अनुसार दिन भर सशक्त श्रम कर धनोपार्जन करता है। इसके सर्वथा विपरीत जुआरी अपनी शक्ति का व्यय श्रम में न कर अपने भाग्य को परीक्षा की कसौटी पर कसता रहता है। जब कुछ प्राप्त हो जाता है तो भाग्य की सराहना करता है और चला जाने पर दुर्भाग्य को कोसता है। ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो अपने परिवार की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के निमित्त पहले श्रम करते थे किन्तु अब लाटरी के टिकट खरीद कर भाग्य आजमाने के लिये हाथ पर हाथ रखे बैठते हैं।

वेद ने पुरुषार्थ की सर्वतः सराहना की है "इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह:।" और व्यसन विलास की "वृतौ यमस्यमानुगा" निन्दा की है। जब मध्यम श्रेणी का व्यक्ति अपनी साधारण कमाई के एक भाग को लाटरी मे लगाकर कई दिनो तक मधुर आशाओ को सजोए और अपना पुरस्कार न निकलने पर निराश होकर माथा पकड़कर बैठ जाए और बारम्बार ऐसा होने पर दुर्भाग्य को कोसे तो उसकी यह मनोव्यथा उसके स्वास्थ्य के लिये कितनी घातक हो सकती है, इसका प्रत्यक्ष अनुमान लगाया जा सकता है अथवा जो भुक्तभोगी हैं उनसे पूछा जा सकता है।

स्वतन्त्र राष्ट्र को सुखी और समृद्ध बनाने के लिये आलस्य और प्रमाद नहीं पुरुषार्थ की आवश्यकता है। आज भी देहातों में ऐसे दृश्य सर्वत्र दृष्टिगत होते हैं जहाँ वृद्ध सज्जन हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और कोई कार्य्य नहीं करते। जापान से आये एक शिष्ट मण्डल को जब सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाशनारायण किसी ग्राम को दिखाने के लिये ले गये और भारत की निर्धनता का बखान किया और शिष्ट मण्डल ने उसका एक ही उत्तर दिया था और वह था "अकर्मण्यता" स्पष्ट शब्दो में जब यह कहा गया कि यदि और कुछ नहीं तो कम से कम वृद्ध व्यक्ति अपने ग्राम की स्वच्छता तो कर सकते हैं। गन्दगी पास बह रही है और एक वे हैं कि जो उसके पास चुपचाप खटिया डाले लेटे हैं।

लाखों टिकट खरीदने वालों मे जिन कुछ व्यक्तियो को बिना श्रम किये जो राशि प्राप्त हो जाती है, उसका सदुपयोग भी होता होगा, इसमें भी सन्देह की गुंजाइश है। यदि किसी को लाखों रुपया अनायास ही मिल जाये तो या तो उसके मद में अपने छोटे-मोटे काम को भी तिलांजलि देकर उसपर ही आश्रित हो जाए अथवा जब तक उसका व्यय आवश्यकता के बिना न करले तो कैसे तृप्ति हो सकती है। यदि वह उसको कजूस वृत्ति होने के कारण बैंक में भी जमा कर दे और उसके निधन पर

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली का नवीन निर्वाचन

१–श्री प्रो० रामसिंह जी एम ए, प्रधान
२– ,, प्रकाशवीर जी शास्त्री, संसद सदस्य, नई दिल्ली उपप्रधान
३– ,, चौ० देशराज जी, नई देहली ,,
४– ,, नरदेव जी स्नातक संसद सदस्य नई देहली ,
५– ,, राजेन्द्रसिंह जी मलिक कलकत्ता ,,
६– ,, प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम ए अलीगढ मन्त्री
७– ,, उमेशचन्द्र जी स्नातक एम ए हलद्वानी उप मन्त्री
८– ,, जगीलाल जी कलकत्ता ,
९– ,, अम्बिकाप्रसाद जी सिन्हा बिहार ,,
१०–श्री वेणीभाई जी आर्य अहमदाबाद ,,
११– ,, शिवचरनदास जी देहली, कोषाध्यक्ष
१२– ,, आ० विश्वश्रवा जी व्यास बरेली, पुस्तकाध्यक्ष

## अन्तरंग सदस्य

१३– ,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम एल ए हाथरस, उ प्र
१४– ,, धर्मेन्द्रसिंह जी देहरादून, उ प्र
१५– ,, रामनारायण जी शास्त्री बिहार
१६– ,, रामनगीना जी पाण्डेय बंगाल
१७– ,, हरगोविन्द जी काचवाला, बम्बई
१८– ,, राधेलाल जी आर्य, बम्बई, आजीवन सदस्य
१९– ,, प० शिवकुमार जी शास्त्री, नई दिल्ली
२०–श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री, अलीगढ़
२१-२२–दो सदस्य सुरक्षित आ प्र सभा, पंजाब
२३–एक सदस्य सुरक्षित आ प्र सभा, पंजाब
२४–,, ,, ,, ,, ,, राजस्थान
२५–,, ,, ,, ,, ,, मध्यप्रदेश
२६–,, ,, , ,, ,, मध्यभारत
२७–,, ,, ,, ,, ,, मध्य दक्षिण

—उमेशचन्द्र स्नातक, उपमन्त्री
सार्वदेशिक सभा

वह राशि उसके उत्तराधिकारियों को प्राप्त हो जाये तो 'माले मुफ्त दिले बेरहम' से उसके दुर्व्यसनों में व्यय होने के अतिरिक्त और हो भी क्या सकता है।

यह एक वास्तविकता है कि संतोष पुरुषार्थ की कमाई से होता है। गाढे पसीने की कमाई की ही कद्र होती है। धर्म से अर्जित पूंजी ही धार्मिक प्रेरणाए देती हैं। जिस धन के अर्जित करने के लिये श्रम किया जाता है, उसे व्यय लुटाने के पूर्व कोई भी व्यक्ति सैकडों बार सोचता है किन्तु पाप कमाई तो जैसे आती है, वैसे जाती है। जुआरियों का जीवन सदैव अशान्त, अस्थिर और दुःखी रहता है।

अतएव लाटरी भी जुआ का एक प्रतिरूप है और वैदिक मर्यादाओं के प्रतिकूल है। एक रुपये का टिकट लेकर मानसिक अशांति मोल लेना अथवा अपनी आय के अधिकांश भाग को उसमें बर्बाद करना और पुरुषार्थ विहीन होकर भाग्यवादी बन जाना कोई बुद्धि युक्त बात नहीं है।

हम चाहेंगे कि हमारी जनता और उसके कर्णधार वैदिक विचार धारा को लक्ष्य में रखते हुए अपने अपने कर्त्तव्यों को जानने के लिये इस प्रथा पर पुनः विचार करें और जो बात राष्ट्र हित में हो, उसे अपनाए। ★

# सभा के कतिपय पदाधिकारी

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री
उप प्रधान सभा

श्रीमती देवी शास्त्री वेदाचार्या
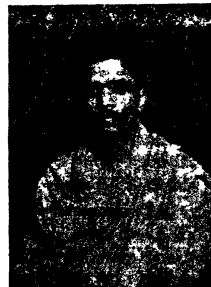
श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक, उपमन्त्री
सार्वदेशिक आ प्र सभा व
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

श्री ईश्वरदयालु जी आर्य
उप प्रधान सभा
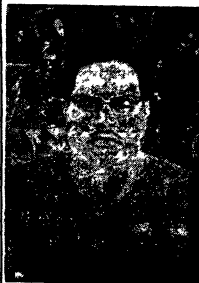
श्री निर्मलचन्द्र जी राठी
स० अधि० आर्यभास्कर प्रेस

श्री साहू हरप्रसाद जी आर्य
अधिष्ठाता भू-सम्पत्ति विभाग

# आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के नव-निर्वाचित पदाधिकारी एवं अन्तरङ्ग सदस्य १९६९

१. श्री शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, १८८, नार्थ एवेन्यू नई देहली — प्रधान
२. „ प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम. ए. कुलपति कन्या गुरुकुल महा विद्यालय हाथरस (अलीगढ़) — उपप्रधान
३. श्रीमती देवी शास्त्री वेदाचार्य, ९९ बाजार मोतीलाल बरेली „
४. श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री, कुन्दनलाल मन्दिर के पास, आर्यनगर, मूढ़ बरेली „
५. „ ईश्वरदयालु जी आर्य, भाटान, बिजनौर „
६. „ प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम. एल. ए हाथरस (अलीगढ़) — मन्त्री
७. „ धर्मेन्द्रसिंह जी एम. ए., १२/१ भगवानदास क्वार्टर, देहरादून — उपमन्त्री
८. „ उमेशचन्द्र जी स्नातक एम ए, पन्त-भवन हल्द्वानी „
९. „ आशाराम जी पांडेय, टटिहाई रोड, मीरजापुर „
१०. „ सुरेशचन्द्र जी आर्य बी. ए एल-एल बी कोसीकलां मथुरा „
११. „ मदनलालजी आर्य, ११० रामतीर्थ मार्ग, लखनऊ — कोषाध्यक्ष
१२. „ देवेन्द्र जी आर्य, सरायतरीन मुरादाबाद — स० „
१३. „ नरदेव जी स्नातक ससद सदस्य गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन [मथुरा] — पुस्तकाध्यक्ष
१४ „ विशुद्धानन्द जी शास्त्री एम ए आनन्द मन्दिरम् कूचा पाड़ी-बदायूं — स० „

## अन्तरंग सदस्य

१५. श्री राममोहन जी आर्य, आलोक प्रेस, मुरादाबाद
१६ „ रामप्रसाद जी आर्य, मैंडू [ अलीगढ़ ]
१७. „ मोहनलाल जी, आर्यसमाज अलीगढ़
१८. „ रूपकिशोर जी „ फतेहपुर
१९. „ हरिशङ्कर जी शर्मा, ११० मनीराम बास, कोसीकला [ मथुरा ]
२०. „ महेशचन्द्र जी शर्मा, आर्यसमाज मारेहरा [ एटा ]
२१. „ देशराज जी आर्यसमाज फैजाबाद
२२. „ कालिकाप्रसाद जी तिवारी, आर्यसमाज नामनेर आगरा
२३. „ विद्याधर जी शर्मा १०८ परमट, कानपुर
२४. „ विक्रमादित्य जी 'बसन्त', ६ ट्रस्ट कालोनी, लखनऊ
२५. " अतरसिंहजी आर्य, भारतीय इंजीनियरिंग वर्क्स, शामली, मु.नगर
२६. „ निर्मलचन्द्र जी राठी, गोलागोकरननाथ, (लखीमपुर-खीरी)
२७. „ आनन्दप्रकाश जी आर्यसमाज सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)
२८. „ दयाराम जी गौड़, आर्यसमाज शिकोहाबाद (मैनपुरी)
२९. „ शिवनारायण जी वेदपाठी, बढ़नी बाजार (बस्ती)
३०. „ खेमसिंह जी आर्य, ५४८ बिछिया, रेलवे कालोनी, गोरखपुर
३१. „ राधेमोहन जी, आर्यसमाज चौक, इलाहाबाद
३२. „ वेदारीलाल जी आर्य, ७१ रतनपुरा, नगरा [ झांसी ]
३३. „ ब्रह्मदत्त जी एडवोकेट, फर्रुखाबाद
३४. „ हरप्रसाद जी आर्य, धमौरा, [ रामपुर ]
३५. „ चन्द्रनारायण जी एम.ए एडवोकेट, १६८ सिविल लाइन्स बरेली
३६. „ डा० मुन्नालाल जी मिश्र, मिश्री टोला, नयाशहर, इटावा
३७ „ श्रीराम जी शर्मा शहबाजपुर [ बदायूं ]
३८. „ रामरग जी शर्मा, सी के १/१२ गगा महल, वाराणसी
३९. „ धर्मपाल जी शास्त्री, आर्यसमाज देहरादून
४० „ सूर्यदेव जी शर्मा जंराम गिरि का बगीचा, मीरजापुर
४१ „ वीरेन्द्र जी शास्त्री, आर्यसमाज रायबरेली
४२ „ अमृतलाल, आर्यसमाज हल्द्वानी [ नैनीताल ]
४३. „ श्यामप्यारे जी सि० शास्त्री आर्यसमाज उन्नाव
४४. „ रणबीरसिंह जी आर्यसमाज बिजनौर
४५ „ फूलचन्द जी आर्य एम ए आर्यसमाज खालापार, सहारनपुर
४६. „ राजेन्द्रप्रसाद आर्य, स्टेशनरोड सहारनपुर,
४७. „ रामेश्वरदयालु जी [ शुद्धि बाबू ], आर्यसमाज हरदोई
४८. „ गगाधर जी शर्मा, आर्यसमाज सीतापुर
४९. „ रामेश्वरप्रसाद जी „ बलिया
५० „ रामबहादुर जी एडवोकेट, पूरनपुर [ पीलीभीत ]
५१. „ मुरारीलाल जी, चमकनी, बहादुरगज, शाहजहांपुर
५२. „ इन्द्रराज जी, आर्यसमाज शहर मेरठ
५३. „ रघुनन्दनस्वरूप जी एम ए, एल-एल बी. १९३ देहली रोड, मेरठ
५४. „ श्रीमती कृत्स्नाचन्द्रा वार्ष्णेय, स्त्री आर्यसमाज गोंडा
५५. „ बलवीरसिंह बेधडक आ०स० हापुड [मेरठ] [आजमगढ़ क्षेत्र]
५६ „ शान्तिप्रकाश जी प्रेम आ स. सॉवली आदि पचपुरी, गढ़वाल
५७ „ प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य १ कैनिङ्ग लैन, नई देहली
५८ „ आ० विश्वश्रवा जी व्यास, ९९ बाजार मोतीलाल, बरेली
५९ „ श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री मुख्याधिष्ठात्री कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस [अलीगढ़]
६०. श्री ओमप्रकाश जी आर्य, प्रकाश फार्म, पलियाकलां [लखीमपुर]
६१. „ फूलसिंह जी आर्य आर्यसमाज शिकोहाबाद [मैनपुरी]

## गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन विद्यार्य सभा के लिये निम्नलिखित ६ सदस्य निर्वाचित हुए—

१—श्री पं० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम ए. कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस [ अलीगढ़ ]
२— „ „ उमेशचन्द्र जी स्नातक, एम ए. पन्त भवन हल्द्वानी [नैनीताल]
३— „ „ हरिशकर जी शर्मा, ११० मनीराम बास-कोसीकलां [मथुरा]
४— „ „ निरजनदेव जी शास्त्री, [ मुजफ्फरनगर ]
५— „ आ० विश्वश्रवाः जी ९९ बाजार मोतीलाल, [ बरेली ]
६— „ ठा० फूलनसिंह जी, आर्यसमाज शिकोहाबाद [मैनपुरी]

—प्रेमचन्द्र शर्मा एल एल. ए., सभा मन्त्री

## सभा विभागों का कार्य वितरण

१. आर्यसमाज रक्षा विभाग
२. उपदेश विभाग
३. अराष्ट्रिय प्रचार विभाग — सभा कार्यालय के साथ
४. अनाथ रक्षा विभाग
५. गौकृष्यादि रक्षिणी सभा
६. शुद्धि विभाग—श्री आ० विशुद्धानन्द जी शास्त्री एम ए, बदायूं
७. महिला प्रचार मण्डल—श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री
८. घासीराम प्रकाशन विभाग—श्री आचार्य विश्वश्रवाः एम. ए., बरेली
९. नायक जाति सुधार विभाग-,, उमेशचन्द्र जी स्नातक एम ए.
१०. प्रदेशीय आर्य वीर दल—श्री राममोहन जी
११. आर्यमित्र—श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम. ए र ए, सभा मन्त्री
१२. भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस—अधिष्ठाता-श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा
स० ,, ,, निर्मलचन्द्र जी राठी
१३ भू-सम्पत्ति विभाग—अधिष्ठाता—श्री साहू हरप्रसाद जी
१४. जातिभेद निवारक आर्य परिवार संघ—श्री ओम्प्रकाश जी बरेली
१५. शम्भूनाथ रामेश्वरीदेवी पुस्तकालय मुरादाली श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक
१६. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर—अध्यक्ष श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री
स० " श्री ठा० फूलनसिंह जी
१७. हरिद्वार आ०स०मन्दिर निर्माण समिति-श्री प धर्मपाल जी विद्यालंकार
१८. समाजकल्याण विभाग—श्री ईश्वरदयालु जी आर्य
१९. नारायणस्वामी आश्रम रामगढ़—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक
२०. वैदिक आश्रम अलीगढ़—श्री कृष्णचन्द्र राजौरिया
२१. विरजानन्द स्मारक मथुरा—श्री रमेशचन्द्र जी एडवोकेट

## संस्थाओं के लिये प्रतिनिधि

१. कन्या गुरुकुल हाथरस—श्री रामप्रसाद जी
२. गुरुकुल बिरालसी—श्री अतरसिंह जी
३. वैदिक पुत्री पाठशाला नई मण्डी मु. नगर—श्री निरञ्जनदेव शास्त्री
४. पार्वती आर्य कन्या पाठशाला बदायूं—श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री
५. व्रजरत्न सु आ. क पाठ. सम्भल— " देवेन्द्र जी आर्य
,, राममोहन जी
६. आर्य विद्या सभा काशी-[१] श्री आ० विश्वश्रवाः जी
[२] ,, आशाराम जी पांडेय
[३] ,, रामरंग जी शर्मा
७. आर्य कन्या पाठशाला अल्मोड़ा-[१] श्री डा० अमृतनाथ जी
[२] ,, उमेशचन्द्र जी स्नातक
८ आर्य कन्या पाठशाला दिल्ली—[१] ,, विशुद्धानन्द जी शास्त्री
[२] ,, हरिशंकर जी शर्मा
९. ,, ,, ,, काशीपुर-[१] ,, उमेशचन्द्र जी स्नातक
१०. ,, ,, ,, रामनगर—श्री ब्रह्मदत्त जी द्विवेदी
११ आर्य विद्या सभा आजमगढ़—श्री बटुकप्रसाद जी वैद्य मिर्जापुर

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल ए सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व प्रधान-

# श्री मदनमोहन वर्मा का देहान्त!

श्री मदनमोहन जी वर्मा

आर्यजगत् में यह समाचार दु:ख के साथ पढ़ा जायगा कि उत्तरप्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व प्रधान श्री मदनमोहन जी वर्मा का ७८ वर्ष की आयु में फैजाबाद जिला अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने के कारण २७ मई को दो बजे दिन मे देहान्त हो गया। श्री वर्मा जी प्रातःकाल बिल्कुल स्वस्थ थे।

उन्होंने नित्यकर्म यज्ञादि से निवृत्त होकर मुकदमे की तैयारी की और न्यायालय गये। वहां वे एक मुकदमे की पैरवी कर रहे थे कि अचानक उन्हें दिल का दौरा हुआ और वे बेहोश हो गये। तुरन्त उन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया। सिविल सर्जन तथा योग्य डाक्टरों ने उनकी चिकित्सा प्रारम्भ की, ऑक्सीजन दिया गया। पर श्री वर्मा जी ने एक घण्टे के अन्दर ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। बेहोशी के समय वे हरि ओम् हरि ओम् बोल रहे थे।

श्री वर्मा जी ने अपने प्रधान काल में सभा की जो सेवा की वह भुलाई नहीं जा सकती। उन्होंने सारे प्रान्त का दौरा किया, जिसने भी सभा के लिये कुछ देने का वचन दिया,वर्मा जी वहां पहुंच गये। इस तरह उन्होंने हजारों रुपये सभा को लाकर दिए। श्री वर्मा जी के कोई पुत्र-पुत्री नहीं है,उनकी धर्मशीला धर्म पत्नी अभी १॥ वर्ष पूर्व ही उनका साथ और हाथ छोड़ कर सदैव के लिये उनसे विदा ले गई थीं। उनकी मृत्यु पर वर्मा जी ने फैजाबाद आर्य कन्या इण्टर कालिज को २० हजार रुपया दान में दिया था। वे अच्छे वक्ता, कुशल लेखक और मधुर स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी वाणी सरस और मधुर थी, वे अपने स्वभाव से विरोधियों को भी अपना बना लेते थे।

## अन्तिम संस्कार

श्री मदनमोहन वर्मा की अन्त्येष्टि क्रिया जनवरा घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुई। उनकी शव यात्रा सायंकाल ५ बजे प्रारम्भ हुई। स्थान-स्थान पर उन्हें नागरिकों ने भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं। उनके शोक में समस्त बाजार बन्द रहा। श्री वर्मा जी का शव तिरंगे झण्डे में लपेटा गया था। मृत्यु से पूर्व उन्हें अपनी मृत्यु का आभास हो गया था, उन्होंने डाक्टरों को दवा और आक्सीजन देने से मना किया, और कहा ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। अब दवा की आवश्यकता नहीं है यह कहते हुये उन्होंने अपने भतीजे को सेफ की चाभी और पर्स दे दिया।

# सनातन माता और पिता

**त्वं हि नः पिता वसो,**
**त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।**
**अधा ते सुम्नमीमहे ।।**
ऋ० ८-९८-११

शब्दार्थ–( वसो ) हे सबको बसाने वाले [ शतक्रतो ] हे नाना प्रकार के शुभ कर्मों के प्रेरक और प्रसाधक प्रभो ! [त्वम्] तू [हि] ही (न ) हमारा (पिता) पिता है और(त्वम)तू ही [माता] हमारी माता है । [ अधा ] इसलिये हम [ते] तेरी [सुम्नम्] महिमा का [ई महे] विचार करते हैं, ध्यान करते हैं ।

भावार्थ—हे सबके उत्पत्ति एव स्थिति कर्त्ता, अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव से युक्त परमेश्वर ! आप ही हमारे सत्य,सनातन माता पिता, बन्धु और सखा हैं । आपकी महिमा का ही विचार, वर्णन और ध्यान हम निरन्तर किया करते हैं ।

**प्रवचन**

हे जगदीश्वर ! तू सबका आवासदाता है। तू ही सबकी उत्पत्ति, स्थिति और सहार करने वाला है । सूर्य, चन्द्र और तारागण आदि ग्रहो और उपग्रहो का, तथा इस सुविस्तृत वसुन्धरा का धारक तू ही है । तूने ही ये सब फल-फूल बनाये हैं। तू ने ही ये सब खेल रचाये हैं। पत्ता-पत्ता तेरी सत्ता और महत्ता का पता दे रहा है। कण-कण में तेरी ज्योति जगमगा रही है ।

तू ही हमारा-पिता है। जीवन दाता भी तू ही है और जन्मदाता भी तू ही है। हे नाथ ! हमारा पालक-पोषक भी तू ही है। सब अवस्थाओ और सब स्थानो एवम् सब कालो में तू ही हमारा रक्षक है। तेरे रक्षा साधनों का कोई ओर-छोर नहीं है। तेरे कोष भर-पूर हैं। तेरी शक्तियां असीम हैं। हमारा एक लौकिक पिता तो है ही; परन्तु सच्चा पिता तो तू ही है। तू तो पिता का भी पिता है।

हे नाथ ! तू ही हमारी माता भी है। जिस प्रकार हमारी ससारी माता हमसे स्नेह करती है, अपना दूध पिलाकर हमारा पोषण करती है और सदा ही हमारे मगल की कामना किया करती है,हमे यशस्वी और सन्मान का अधिकारी बनाने के लिये सदा ही प्रयत्नशील रहती है, उसी प्रकार तू भी हमारे पोषण मगल लालन-पालन, यश उत्थान और कल्याण के अनन्त उपायो का विधायक है ।

हे देव ! विविध प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करके, तू नित्य ही हमारा कल्याण किया करता है। हे दयामय ! यदि अपने अज्ञान-वश, हम कभी आपके सब हित-कारी कार्यो का वास्तविक मर्म न समझकर, रोने और चिल्लाने मे, अथवा आपके शुभ कार्यों मे दोष निकालने मे ही लगे रहे, तो बुरा न मान जाना। हे हमारी सनातन मा ! तेरा थोडी देर का वियोग भी हमारे लिये बहुत कष्टदायक और असह्य होता है। हमारी दीनता, हीनता और चचलता सब कुछ तू तो जानती ही है। हम क्या चाहें ? हम तो यह भी नहीं जानते । हे मा ! यदि कभी किसी अनुचित कर्म वा अभद्र वस्तु की याचना करे, तो हमारी उस याचना को अस्वीकार कर देना ।

हे सकल सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मन् ! तू तो सैकडो, सहस्रो, नहीं नहीं, असख्य और अनन्त प्रगतियो का सचालक है। सब शुभ कर्मो का प्रेरक तू ही है। सब सफलताओ का प्रदाता तू ही है। सब सत्य विद्याओ का आविर्मूल तू ही है। तू बडों से भी बडा है। तू पिताओ का भी पिता है। तू गुरुओ का भी गुरु है। तू राजाओं का भी राजा है। सब दुष्टो और दुष्टताओ का भी निवा-रक तू ही है। सब नियमो का नियामक तू ही है। सब विधानो का विधायक तू ही है ।

हे सर्वशक्तिशालिन ! तू त्रिकाला-बाधित है। तू अनादि है, अनन्त है, सर्वोपरि है। देश, काल और दिशा, कोई भी, तेरा प्रतिबन्धक नहीं है। हे पितु, मात, स्वामी, सहायक और सखा ! हम तेरे बालक, अपनी तोतली बोली मे, तेरी महिमा के गीत प्राय गाया करते हैं। हम बारम्बार तेरे नाम की माला जपा करते हैं। तेरे साथ अपने सनातन सम्बन्धो की अनुभूति प्राप्त करके, आत्म गौरव का अनु-भव भी हमको प्राय होता ही रहता है। हे विश्वेश्वर ! तेरी जय हो। तेरी जय हो। तेरी जय हो। जय हो। जय हो। जय हो।

दयामय ! तेरी ही जय हो।
न हमको कोई भी भय हो ।।

हे दयानिधे ! कभी-कभी हम प्रकृति के बन्धनो मे फस जाते हैं। सासारिक मोह माया और विषय वासनाओ के दल हमे घर लते है। तब, हम आपकी पवित्र सत्ता और महत्ता को भी भूल जाते हैं। परन्तु हे दीनानाथ ! हम पर अपनी कृपा सदैव बनाये रखना। हमारी भूलो को सुधार देना। पाप के पक मे फसने से हमे सदैव बचाते रहना ।

कैसे अभागे हैं, वे जो किसी कारणवशात माता पिता के लाड और प्यार से वचित हो जाते हैं ? लौकिक माता पिता अपनी-अपनी सन्तान के प्रति जो अनुराग रखते हैं। और जो-जो कष्ट अपनी सतान के पालन-पोषण के लिये सहन करते है, एव जो त्याग, तप और बलिदान का परिचय अपनी सन्तान के हित के लिये देते रहते हैं। माता जो विशेष रूप मे प्रेम की ही देवी है वेद ने भक्त और भगवान के पारस्परिक सम्बन्धों को माता-पिता और सन्तान के रूप में चित्रित किया है। भगवान का

श्री प० जगत्कुमार शास्त्री
'साधु सोमतीर्थ', देहली

पिता के रूप मे तो अन्य मत-मता-न्तरो मे भी स्वीकारा गया है, परन्तु माता के रूप मे भगवान् का चित्रण ससार के धार्मिक साहित्य मे एकमात्र वेद ने ही किया है। यह वैदिक भक्तिवाद की एक बहुत बडी विशेषता है। माता और सन्तान के पारस्परिक प्रेम का प्रतीक सात्विक प्रेम की पराकाष्ठा है। प्रभु का यह परम प्रेम ही तो भक्तो का सब कुछ है।

वह व्यक्ति तो सर्वथा ही अशिष्ट, अयोग्य, और निन्दा का पात्र है, जो अपने कृपालु स्नेह-सिक्त, कर्त्तव्य-निष्ठ और उदार-हृदय माता-पिता के प्रति अकृत-ज्ञता, शुष्कता, निष्ठुरता अथवा निरादर के भाव प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार जो लोग, उस परम पिता परमात्मा के विषय मे अकृत-ज्ञता और निष्ठुरता के भाव रखें और नास्तिकता प्रदर्शित करे, वे भी एक प्रकार से अपनी अशिष्टता को ही प्रगट करते हैं। जैसे माता-पिता के आज्ञाकारी होना, सभी पुत्रो और पुत्रियो के लिये आवश्यक है, वैसे ही सब मनुष्यो को उचित है कि वे भगवान के आज्ञा-कारी बनकर अपना-अपना जीवन सफल करे। प्राकृतिक नियमो, वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो और शिष्ट-मर्यादाओ का उल्लघन कोई कभी न करे। अखिल मानवता के कल्याण का मूल-मन्त्र यही है।

# महा प्रणवीर महाराणा प्रताप

श्री मनुदेव 'अभय'
विद्यावाचस्पति, इंदौर

पाश्चात्य समाज-दर्शन से प्रभावित भारतीय इतिहासकार हमारे देश की ऐतिहासिक घटनाओं का चिन्तन विशिष्ट ढग से करते हैं। ऐसे पश्चिमोन्मुखी इतिहासज्ञ हमारे देश के इतिहास से खूब खिलवाड़कर चुके हैं। साम्राज्यवादी शक्तियों का यह सिद्धान्त है कि वे जब किसी देश को राजनैतिक धरातल पर परतन्त्र करना चाहते हैं तब वे सर्वप्रथम वहा का इतिहास भ्रष्ट कर देते हैं। इससे विजित राष्ट्रों अथवा जातियों में अपने इतिहास तथा महापुरुषों के प्रति गौरव, स्वाभिमान एवं स्व-राष्ट्र प्रेम सदा के लिये समाप्त हो जाता है। राजनैतिक परतन्त्रता की अपेक्षा मानसिक परतन्त्रता अधिक भयानक एव दुःखदायी होती है। इसलिये इस स्वतन्त्र राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये सेना की अपेक्षा शुद्ध एव सत्य इतिहास की रचना अत्यन्त आवश्यक है।

जैसा कि हम ऊपर उल्लेख कर आये हैं, भारतीय इतिहासकारों द्वारा परतन्त्रता के युग मे हमारे धार्मिक, सामाजिक एव राष्ट्रिय महापुरुषों के जीवन-दर्शनों के साथ अन्यायपूर्ण खिलवाड़ या उपहास किया गया है। प्रसंगवश आज हम यहां हमारे चरित्रनायक सूर्यवंशीय महाराणा प्रताप के त्याग, बलिदान एवं राष्ट्र प्रेम के कतिपय तथ्य प्रस्तुत करेंगे।

महाराणा प्रताप का स्मरण होते ही चित्तौड़ गढ़, धूर्त, वंचक एव साम्राज्यवादी रक्त पिपासु अकबर तथा रामभक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी का स्मरण हो आता है। अकबर-कालीन इतिहास को पक्षपात रहित दृष्टिकोण से अध्ययन करने के पश्चात् यही निष्कर्ष निकलता है कि अकबर ने राष्ट्रिय हित की दृष्टि से तलवार के धनी महाराणा प्रताप को राजनीतिक उत्पीड़न तथा भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी को आध्यात्मिक पीड़ा पहुंचाने में ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। यदि गोस्वामी तुलसीदास जी आध्यात्मिकता की रक्षा के लिये अपनी बुद्धि चातुर्य का प्रयोग नहीं करते, तो अकबर के वचक राज्य काल में हमे रामचरित-मानस के समान महान् काव्य प्राप्त नहीं होता। क्या यह उपहास का विषय नहीं है कि ऐसे खल सम्राट को
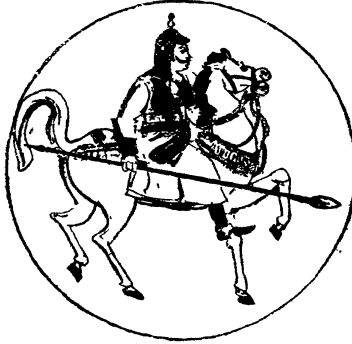
[ महाराणा प्रताप—जिनकी जयन्ती ३१ मई १९६९ को मनाई गई ]

अधीन आ जाने के अनेकानेक प्रलोभन, आकर्षण, धमकियां तथा छल कपटों का प्रयोग किया, परन्तु स्वतन्त्रता में जन्मा, आजीवन स्वतन्त्रता-प्रेमी एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु अपने उष्ण रक्त की एक-एक बूंद बहा देने वाले प्रताप भला अकबर की पराधीनता कैसे स्वीकार कर सकता था?

अकबर ने महाराणा प्रताप के

आज भी राष्ट्रिय एव उदार माना जाता है? क्या अकबर उदार-राष्ट्रियता के प्रति असहिष्णु एव संकुचित मनोवृत्ति वाला बादशाह प्रतीत नहीं होता?

महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात् क्षत्रिय कुल दीपक प्रताप को मेवाड़ राज्य अत्यन्त अव्यवस्थित एव हीन दशा का प्राप्त हुआ था। प्रताप के सिंहासनारूढ़ के क्षण से ही प्रताप की स्वतन्त्रता अकबर की आखों में कांटों की तरह खटकती रहती थी। अकबर ने महाराणा प्रताप को अपने साथ कौन-सा अच्छा व्यवहार किया? उसने शक्तिसिंह को अपनी ओर मिलाया, मानसिंह का फूफा बनने के लिये उसने भारमल की पुत्री जोधा बाई से विवाह किया, प्रताप की सेना के कई राजपूत सरदारों को अपनी सेना में ऊँचे-ऊँचे पदों पर रखा, हल्दीघाटी के मैदान में राणाप्रताप के प्राण तक लेने का षड्यन्त्र रचा। हिन्दुओं को धोखा देने के लिये वह स्वयं एक साम्प्रदायिक मत 'दीन इलाही' का प्रवर्तक बन बैठा। धूर्त एवं साम्राज्य लिप्सु लोग अकबर के समान ही गिरगिट की तरह रंग बदल बदलकर अपने शत्रु को, बहुसंख्यक जाति को मानसिक रूप से परतन्त्र बनाया करते हैं। हल्दी घाटी के महान् युद्ध सन् १५७६ में झाला नरेश के आत्मत्याग के फल स्वरूप ही आज देश का इतिहास कुछ बदला हुआ मिलता है। यद्यपि राणाप्रताप की तलवार की वार से सलीम बालोंबाल बच गया परन्तु उसके महावत को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। मानसिंह से बात करना तो क्या, उस कुलघाती एव पतनगामी के साथ नीचे बैठने मे भी राणाप्रताप के सिर में दर्द तक होने लगता था। अग्रेजों से स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये लोगों ने सेनानियों को जो आर्थिक सहायता प्रदान की, उसके सम्मुख राष्ट्रप्रेमी स्वतन्त्रता के पुजारी दानवीर भामाशाह का दान सात्विक दान एवं सर्वोच्च कोटि का दान सिद्ध होता है।

अकबर के ही सम्मुख उसकी राष्ट्रघाती नीतियां असफल होने लगीं। भाई शक्तिसिंह का हृदय परिवर्तन हुआ, उसे अपने कुकृत्यों के प्रति ग्लानि हुई और वह पुनः महाराणा प्रताप की शरण में आ गया। कछवाहा राजपूत सरदारों मे से अनेक सरदार अकबर की सेना से हटकर प्रताप की सेना में आ मिले, राणा प्रताप का त्याग रंग लाया, भामाशाह के सात्विक दान ने अकबर के स्वप्नों को चकनाचूर कर दिया। उसका दीन इलाही सम्प्रदाय उसके हाथों दफना दिया गया। इस एक राष्ट्रघाती एवं धूर्त व्यक्ति का पतन कुछ ही वर्षों में प्रजा के सम्मुख हो गया था। विदेशी मुगलों को अब कोई भी रास्ता ढूंढे नहीं मिल रहा था, यह ध्रुव सत्य है कि जो जैसा बोयेगा, वह वैसा ही काटेगा।

प्रामाणिक इतिहास के आधार पर ज्ञात होता है कि सन् १५३०

( शेष पृष्ठ १२ पर )

संरक्षणदाताओं को भी राष्ट्र जनसमूह कुचल डालेगा—

उघरे अन्त न होय निबाहू,
कालनेमि रावण जिमि र

# गालिब शताब्दी का महत्व

अभी १ अप्रैल सन् ६९ के आर्यमार्त्तण्ड में विद्वद्वर श्री डा० भवानीलाल भारतीय का लेख पढ़ा "गालिब शताब्दी समारोह का औचित्य" इस लेख मे श्री भारतीय जी ने कई प्रश्न उठाये हैं। गालिब की कविता का जन-जीवन से क्या सम्बन्ध ? गालिब की कविता से क्या शिक्षा मिलती है ? हिन्दी संस्कृत के कवियों का जन्म समारोह क्यों नहीं आदि-आदि। पर भारतीय जी आर्यसमाजी हैं। वे गालिब के महत्त्व को कैसे समझ सकते हैं। जो खूबी बाल्मीकि व्यास, कालिदास, भवभूति, सूर, और तुलसी में नहीं थी, वह गालिब साहब मे थी। वह खूबी थी कि वे मुसलमान थे। चाहे नाममात्र के ही सही पर मुसलमान थे। उन्होंने शराब की तारीफ में कमाल कर दिखाये, बहिश्त का मजाक उड़ाया। शराब की तारीफ कलम से ही नहीं करी कर्म से भी करी। डटकर पी। मगर वे मुसलमान थे, इसलिये हर कांग्रेसी के लिये पूज्य थे। सर्व गुण निधान थे। हिन्दू की हरयानवी भैंस सो अधिक होती है कांग्रेसी के लिये मुसलमान की कुतिया भी। मजनू की निगाह में लैला का काला ऊँट बहिश्त के बुराक से बढ़कर है।

गालिब कैसे थे, क्या थे। उन की कविता के आदर्श क्या थे उसमें जन-जीवन को सुप्रभावित करने वाली सामग्री है या नहीं, गालिब साहब का चरित्र क्या था आदि प्रश्नो से कांग्रेस सरकार को क्या मतलब। केन्द्र केमुसलमान मन्त्रियों को छोड़कर शायद ही कोई मन्त्री गालिब साहब की शायरी से परिचित हो। मगर गालिब साहब मुसलमान थे, और किसी भी अदा पर मुसलमान मुस्करा दें तो कांग्रेसी के हृदय की कली खिल जाती है। उसके सात पुरखा तर जाते हैं। यह है सच्चा प्रेम, असली इश्क कांग्रेसी का मुसलमानो के लिये।

अगर आं तुर्के शीराजी,
बदस्त आरद दिले मारा।
बखाले हिन्दुअश बख़शम्,
समरकन्दो बुखारा रा॥

यदि वह शीराज का रहने वाला, तुर्क (माशूक) मेरे दिल को हाथ में ले ले तो उसके (कपोल) काले तिल पर समरकन्द और बुखारा को निछावर कर डालू।

हाफिज के इस शेर पर समर कन्द और बुखारा के विजेता तैमूर आश्चर्य मे रह गया था।

इश्क है ही ऐसी चीज उसमे औचित्य अनौचित्य नहीं देखा जाता। पर इसी इश्क का माशूक पर भी कुछ प्रभाव हुआ है ? बिल्कुल नहीं। उर्दू की सारी कविता मे माशूक को कठोर हृदय बेवफा दिखाया गया है। और आशिक साहब बिस्मिल तड़पते हुये। जिस वोट की आशा में कांग्रेसी नेता मुसलमानों की चिरौरी करते रहते हैं वह वोट मिलता है कम्यूनिस्ट को, रिपब्लिकन को, ससोशलिस्ट को या मुसलमान को अन्तिम स्थान है कांग्रेसी का मुस्लिम माशूक की बज्म् में।

तो फिर कांग्रेसी क्यों फिदा है ? किस अदा पर रीझ रहा है ? कोई अदा फदा नहीं। गाधी बाबा और नेहरू चाचा की आज्ञा है।

हमने एक बार एक लेख लिखा था "कोयलो की धुलाई" पूज्य महात्मा जी से निवेदन किया था कि कोयले साबुन से धोकर सफेद नहीं किये जा सकते।

"धोये हू सौ बेर के कोयला होय न सेत।"

मुसलमान खुशामदों से नहीं मान सकते। पर महात्मा जी मुस्लिम सन्तुष्टीकरण मे लगे रहे और हिन्दू-मुस्लिम एकता तो न हुई देश भी एक न रहा। लाखों हिन्दू मारे गये। बेघरबार हुये, स्त्रियो की इज्जत लुटी। मुसलमान को सन्तुष्ट ३ काल में नहीं किया जा सकता। उसकी मागें बढ़ती ही जायेंगी।

वह एक बार यह जान ले कि आप दब्बू हैं बस फिर तब तक दबायेगा कि जब तक एक बूंद भी अर्क रहेगा। अतः खुशामद की, तुष्टीकरण की, दब्बूपन की कोई सीमा भी होनी चाहिये। पाकिस्तान बन गया अब सब साम्प्रदायिकता समाप्त हो जानी चाहिये। पर नहीं, साम्प्रदायिकता इन २२ बर्षो मे बीसों वार उभरी है; कभी रसूल के बाल के नाम पर, कभी उर्दू के नाम पर, कभी बाजे पर और मुस्लिम यूनिवर्सिटी तो साम्प्रदायिकता का विश्राम निकेतन ही है।

## सामयिक समस्याएँ

अभी उत्तरप्रदेश विधान सभा मे हिन्दी में शपथ लेने पर साम्प्रदायिकता ने फन फटफटाया। पर उत्तरप्रदेश के नेता डरे नहीं। पर केन्द्र के नेताओ ने इस सर्प को सहारा दिया। इन्दिरा जी को दुःख हुआ कि इस सर्प को दूध का कटोरा नहीं दिया गया। कांग्रेसियो सोशलिस्टों आदि सब सुन लो ! साम्प्रदायिक मांगें देश के लिये घातक हैं। इन मागों की कोई सीमा बनानी पड़ेगी। राष्ट्रियता के कुछ आधारभूत सिद्धान्त होने चाहिये। अन्यथा राष्ट्रियता को साम्प्रदायिकता क्षत-विक्षत कर डालेगी। और यह भी समझ लो कि अब तुम्हारे स्वार्थों को भी जनता जानती जाती है। साम्प्रदायिकता के साथ साम्प्रदायिकता के

## बहुत जरूरी

देश स्वतन्त्र हो गया। धार्मि सामाजिक जाग्रति भी हुई है प आज भी हिन्दुओ द्वारा उन ल की कब्रें पूंजी जा रही हैं कि

श्री प० बिहारीलाल जी शार

भारत में हिन्दू धर्म का विन करने, यहाँ की धन सम्पत्ति लू यहाँ की महिलाओं को दासि बनाने को यहाँ सेना लेकर आ मणकर्त्ता होकर आये थे। बहरा का मसऊद गाजी मिया, बालेमि ऐसा ही भारत शत्रु था। उस कब्र पर आज भी लाखों हिन्दू प्र वर्ष जाकर उसकी कब्र को पू इससे बढ़कर आत्महीनता, आर धिक्कार और क्या होगा ?

गावो में पचायतें कराव बिरादरी द्वारा ऐसे हिन्दुओं समझवाना चाहिये और जो जा भी चाहें उन्हे बहराइच की कब्र हटाकर महाराज सुहेलदेव जी मूर्ति पर भेजना चाहिये जो नगर से थोड़ी ही दूर पर कुटिल नदी के तट पर स्थापित है।

# काव्य कानन

## आशा-गीत

हास्य के अभियान मे पुरुषार्थ करने के लिये,
स्नेह के वरदान से विष भी अमृत हो चला ॥
[illegible] के आघात की दारुण व्यथा,
किसको शोभा का हरण होता नहीं ।
आश बन्धन की शिथिलता को कभी,
कौन है जो अश्रु से धोता नहीं ॥
बिरह से तपते पथिक को चैन देने के लिये,
अव्यक्तता को बदल करके बादल हो चला ॥ स्नेह के
[illegible]मिनी मे सकुचे कमल की भावना,
ऊषा की चुनरी पहिन मुसका चली ।
हेमन्त के उजडे बगीचो की लता,
'बसन्त' की पवन से सरसा चली ॥
भक्ति की अनुपम कथा निर्मल बनाने के लिये,
मीरा का गरल प्याला सुधारस हो चला ॥ स्नेह के
[illegible]कार में यह है अनूठी लालिमा,
विष को भी आकण्ठ तक पीना पडे ।
एक हृदि ग्रन्थि मे यह कालिमा,
आसुओं के क्षार को पीना पडे ॥
अम्बुज के ढलकते आँसुओं को परिमृट करने के लिए
ऊषा सहित दारुण दिवाकर भी दया करने चला ॥ स्नेह के
[illegible] सुमनवत् मृदु तेरा हृदय,
क्षोभित कर सकेगा पाषाण को ।
कठोर होगा वज्र से इनका हृदय,
पिघल जायेगा तरल मुस्कान को ॥
फूल चुनकर मालिनी अध्यात्म पूजा के लिये,
आज इसका शिथिल पग द्रुति तर हो चलो ॥ स्नेह के

—रवीन्द्रकुमार, बरेली

## अभिलाषा

करो मम जीवन शुद्ध पुनीत ।
[illegible]ज्ञान का बनू पुजारी,
तेरे शुभ गुण गाऊँ,
पाप-कलाप हृदय से तज दू,
शुद्ध विचार बनाऊँ ॥
राग-द्वेष-मद-मोह विगत हो,
मेरा हृदय विनीत ॥१॥
करो मम जीवन शुद्ध पुनीत ॥

शुभ-दिव्य-भाव परिपूरित
शुद्ध शतायु कृपा-निधि !
आत्म यज्ञ मे रहू निरन्तर,
निरत सप्रेम यथा-विधि ॥
तेरे ही आराधन मे हो,
जीवन सकल व्यतीत ॥२॥
करो मम जीवन शुद्ध पुनीत ॥

प्रशस्त जीवन-पथ मेरा,
विघ्न बन्ध कट जावे ।
तव प्रकाश से हृदय कुंज का,
तम तमारि ! मिट जावे ॥
नस-नस, रोम-रोम से गाऊँ
तेरे मधुमय ! गीत ॥३॥
करो मम जीवन शुद्ध पुनीत ।

—प्रभावी लाल शर्मा, अतरौली

## तीन की महत्ता

ओं निज प्रभू का नाम है तीन अक्षरो से बना ।
वेदो मे महिमा इसकी है ऋषि-मुनियो ने जपा ॥
अकार उकार मकार से ओंकार प्रभू का नाम है ।
सत् चित आनन्द है आनन्द मुक्ति धाम है ॥
ब्रह्मा विष्णु और महेश गौणिक प्रभू के नाम हैं ।
कर्ता-धर्ता और हरता सब प्रभू के काम हैं ।
वेदो का जो सार है गुरु-मन्त्र गायत्री दिया ।
भू र्भुव स्व तीन महाव्याहृतियों से भरा ।
भू प्राणाधार है मानव जीवन का सार है ।
भुव विनाशक दु ख का भय का छुडावन हार है ॥
स्व सुख का स्वरूप है तीन पादो का यह जाप ।
विकसित होवे बुद्धि मन आने न पाये कोई ताप ।
हैं तत्व तीन अनादि से मानता जिनको समाज ।
प्रकृति-जीव-परमात्मा सिद्धान्त उच्चतम ऋषिराज ।
रज तम और सत हैं प्रकृति के गुण यह तीन ।
जीव है सत चित आनन्द आनन्द से बिलकुल विहीन ।
प्रकृति के भोगो में फसकर जीव दु ख उठायेगा ।
परमात्मा की भक्ति से मोक्ष पद को पायेगा ।
मन-वचन और कर्म मे होवे सदा समानता ।
ज्ञान - कर्म उपासना मोक्ष का है रास्ता ।
कर्म - अकर्म विकर्म के भेद को है जानना ।
अपने प्रति कर्त्तव्य तीन हैं उन्हें पहचानना ।
बल पवित्रता व यश का मन मे सदा सचार हो ।
व्यवहार-आचार-शुभ विचार से जीवन नैया पार हो ॥
तीन लोक तीन शरीर यज्ञोपवीत की तारें तीन ।
तीन ऋणो से उऋण होना आचमन करते हैं तीन ।
माता-पिता आचार्य का हर देश मे सनमान हो ।
गुण कर्म स्वभाव के आधार पर पहचान हो ।
तीन ही सन्ताप हैं भौतिक दैविक आध्यात्मिक ।
उन्नति के तीन पथ शारीरिक सामाजिक आत्मिक ।
स्वस्थ जीवन के लिए तीन प्राणायाम हैं ।
रेचक पूर्क स्तम्भवृत्ति ब्रह्मचर्य के यह प्राण हैं ॥
प्रार्थना स्तुति उपासना नित्य-कर्म जीवन अग हों ।
सताप मिट जायें सदा परमात्मा जब सग हो ।
सगती-कर्ण देवपूजा दान यज्ञ के तीन भाग ।
शान्ति-शान्ति-शान्ति का इच्छुक रहता हर समाज ।
तीन ही प्रकार के ऋषि अर्थ वेदो के किये ।
अदृश्य-दृश्य-ज्ञानगोचर ज्ञान के चक्षु खुले ।
बाल्य-यौवन-वृद्ध अवस्था मे वेद ही आधार हो ।
वेद ईश्वरीय-ज्ञान है और वेद का परचार हो ।
तीन ही हैं ओत प्रोत तीन से कुछ भिन्न नही ।
मानव शरीर में आत्मा परमात्मा मिलता यहीं ।
तीन की महत्ता विलक्षण वाणी से न हो सके ।
लेखनी हरिवंश की चैन से न लो सके ।

—[illegible]

## कहानी-कुञ्ज

# संगम

छुट्टी का सायरन बोला। मजदूर अपना-अपना काम छोड़ छोटेछोटे गुटों मे अपने-अपने घर चल दिये। दीनू भी साफी से पसीना पोछ कर चल दिया अपनी झोपड़ी की तरफ। मोती द्वार पर बैठा उसका इन्तजार कर रहा होगा। जैसे ही वह पहुचेगा मोती प्यार से उसमे लिपट जायगा।

★ओ३मप्रकाश 'चचल'

दीनू की उम्र करीब पचास-पचपन वर्ष के लगभग है। बस्ती के छोर पर उसकी झोंपड़ी है। लोग उसे बहुरूपिया झोंपडी कहते हैं क्योंकि मौसम के साथ ही साथ उसकी भी कायापलट होती रहती है। गर्मियों में जब अन्धड़ चलते हैं तो उसका फूस का छप्पर उड जाता है और तब नीला आकाश उसकी छत होता है। और बरसात मे उसकी झोंपड़ी अच्छा खासा तालाब बन जाती है। बरसाती कीड़े उसमें अपना अड्डा जमा लेते हैं और मेंढक वक्त बेवक्त अपना राग अलापते रहते हैं। ऐसी अवस्था में दीनू अपनी रातें पास ही पीपल के पेड़ के नीचे बनी मजार मे पड़कर काटता है। दिन की उसे चिन्ता नहीं रहती क्योंकि दिन भर वह पल्ली पार की सूत की मिल मे काम में व्यस्त रहता है। सामान के नाम पर एक टूटी खटिया, एक पुराना तसला और दो मिट्टी की मलरियां झोंपडी मे लावारिस-सी पड़ी रहती हैं। दीनू के आगे-पीछे कोई नहीं है। दो-एक दूर के रिश्तेदार हैं, पर उनसे उसकी बनती नहीं है, क्योंकि वह हमेशा उससे दुनियादारी की ही बातें करते हैं। और वह नहीं चाहता कि अब जीवन के अन्तिम क्षणों में मायामोह मे फँसे। वैसे वह बहुत ही मृदु स्वभाव का है, और पूरी बस्ती उसे चाहती है, और वह बस्ती को ही अपना परिवार समझता है। बस्ती के बच्चे उसे काका कहते हैं।

चार साल पहले वह कहीं से एक पिल्ले को पकड़ लाया था, और अब वह पिल्ला एक तन्दुरस्त, वफादार कुत्ता बन गया है, जिसे वह मोती के नाम से पुकारता है। मोती से उसे विशेष अनुराग है। वह उसे अपना बेटा कहता है।

अपने और मोती के खाने लायक वह मजे से कमा लेता है। जो मन में आता है वह खाता है। जोड़ कर रखना उसने सीखा नहीं है, और जोड़े भी तो किसके लिये? वैसे दो सौ रुपये उसकी धोती के फेंट में हर समय बंधे रहते हैं, क्योंकि पता नहीं कब उसकी सांस रुक जाय, तब कम से कम मुहल्ला पडौस के लोग मिलकर उसे फूंक तो देंगे। वह नहीं चाहता कि मरने के बाद उसकी लाश को दफनाने के लिये लोगो को चन्दा इकठ्ठा करना पड़े, इस लिये उसने उसका प्रबन्ध पहले ही रख छोड़ा है। अपनी पचपन वर्ष की जिन्दगी मे उसने आज तक किसी का दिल नहीं दुखाया, लेकिन फिर भी लोग उसके साथ धोखा करते आये हैं। उसने बहुत जमाना देखा है। दुनिया की सभी ठगी-बेढगी चालो से वह परिचित है, इसीलिये लोगबाग उसके पास अक्सर अपनी उलझी समस्यायें लेकर आ जाते हैं।

रायसाहब भी मुहल्ले के गिने चुने आदमियों मे से हैं। या यों कहिये कि वह मुहल्ले की एक हस्ती हैं। उन्हें रिटायर्ड हुये आठ साल हो गये लेकिन उनका रौब वही है जो नौकरी के समय था। लोग अब भी उन्हें डिप्टी साहब कहते हैं। आलीशान बंगला है, नौकर चाकर हैं, लाखों का बैंक बैलेन्स हैं, दो लड़के हैं एक डाक्टर है और दूसरा वकील। दो बहुएँ और हँसते खेलते नाती-नातिन हैं। चारों तरफ उनके नाम का दबदबा है।

दीनू, रायसाहब को एक आँख नहीं भाता। बात कोई जादा नहीं बस इतनी है कि दीनू का कुत्ता मोती, उनके कुत्ते को जब भी मौका लगता है धर दबाता है। अच्छी खासी उसकी रगड़ाई कर देता है। और जब बच्चे मोती की जीत पर तालियाँ पीटते हैं तो उनके सीने मे सुइयों सी चुभने लगती हैं। उनका चेहरा तमतमा जाता है। भला एक गरीब मजदूर का कुत्ता उनके कुत्ते को हरा दे। क्या यह शर्म की बात नहीं है? जब भी उनका कुत्ता मोती से पिट कर आता है तो वह अपना अपमान समझ कर गुस्से से दांत पीस लेते हैं। इसी कारण वह कई कुत्ते बदल चुके हैं। बड़े-बड़े कीमती और ऊँची नस्ल के कुत्ते वह अपने यहां रख चुके हैं, और निरा गोश्त उन्हें खिलाया है। फिर भी मोती को कोई न हरा सका है। अब बड़ी उम्मीदों से 'बुलडाग' लाये थे, और खूब उसकी चराई की थी लेकिन फिर भी वह मोती से मार खाकर भाग आया था। गनीमत थी कि उस वक्त किसी ने उसके कुत्ते को पिटते नहीं देखा था। अब दीनू से ज्यादा मोती उनकी आँखों को खटकता है। वह कई बार दीनू से कह चुके हैं कि वह अपने कुत्ते को जाकर कहीं छोड़ आवे या बाँध कर हर समय रखे। पर भला यह कैसे सम्भव है? कुत्ते को तो वह छोड़ ही नहीं सकता है और रही बाँधने की बात सो चौबीस घण्टे बाँध कर रखना भी मुमकिन नहीं है।

आज रायसाहब बड़ी उम्मीदों से एक नया कुत्ता लाए हैं। लम्बा-चौडा अलसेसियन! रायसाहब ने सोच लिया है कि आज वह अवश्य ही अपने रौकी से मोती की बोटी-बोटी नुचवा देंगे।

उन्होंने कन्धे पर बन्दूक टांगी और रौकी की जजीर खोल उसे लेकर चल दिये दीनू की झोपड़ी की तरफ।

वह शीघ्रता से कदम बढ़ाने लगा। उसने सोचा अब घर जाकर क्या रोटी पकाऊँगा! यह सोच उसने सडक किनारे बैठी रोटी वाली बुढ़िया से अपने और मोती के लिये रोटी ले ली। और एक कुल्हड़ मे दाल भरवाकर वह चल दिया द्रुतगति से। अभी वह मुहल्ले के छोर पर ही था कि एक बच्चा दौडा-दौडा आया और बोला—"दीनू काका तुम्हारे मोती को कोठी वाले बाबू ने बन्दूक से मार दिया।" यह सुनते ही दीनू हतप्रभ-सा रह गया उस बच्चे की बात पर विश्वास न हुआ। इतने मे ही एक लडका और आ गया—"अरे दीनू काका तुम्हारे मोती को राय साहब ने गोली मार दी। मैं स्कूल से आ रहा था कि मैंने देखा मोती और रायसाहब के कुत्ते में लड़ाई हो रही थी। उनका कुत्ता ऊपर था और मोती नीचे। वह बड़े खुश हो रहे थे। फिर अचानक न जाने क्या हुआ कि मोती ने उनके कुत्ते को नीचे धर दबाया और उसका गला पकड़ लिया। उनका कुत्ता फड़फड़ाने लगा। उन्होंने मोती के कई ईटें मारीं पर उसने उनके कुत्ते को न छोड़ा, तब उन्होंने उसे गोली मार दी।" लड़का एक सास मे ही कह गया। दीनू के हाथ से रोटी छूट गई। वह बेतहाशा पागलों की तरह बस्ती की ओर भागा। वहा पहुच कर पता चला कि खबर ठीक थी। उसका मोती मर चुका था और कुछ ही समय पहले उसे चुगी की कूड़ा-गाड़ी उठाकर ले गई थी।

## सभा का पत्र श्री मन्त्री जी आर्य समाज फैजाबाद के नाम

श्री मन्त्री जी आर्यसमाज फैजाबाद,

आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान और उत्तरप्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मदनमोहन जी वर्मा का निधन समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। इस दुःखद समाचार को सुनते ही सभा कार्यालय, आर्यमित्र कार्यालय और आर्यभास्कर प्रेस बन्द कर दिये गये। आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य और आर्य भास्कर प्रेस के सहायक अधिष्ठाता श्री निर्मलचन्द्र जी राठी की अध्यक्षता मे शोक सभा, सभा-भवन मे हुई। श्री राठी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री वर्मा जी की प्रशसा करते हुये कहा कि वे दृढ़ आर्य थे, उन्होने ४ वर्षों तक सभा के कार्यों का सम्पादन किया। सभा के लिये उन्होंने सारे प्रान्त मे दौरा किया, और पर्याप्त धन राशि सभा को लाकर दी। श्री वर्मा जी एडवोकेट, राजनीतिज्ञ एव सफल प्रधान सावित हुए। वह अच्छे वक्ता और अच्छे लेखक थे। उनकी वाणी मे माधुर्य था, लोगों को आकर्षित करने की शक्ति थी। इसके पश्चात् सब लोगो ने मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वे दिवगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

## आर्यसमाज की महती क्षति

आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री मदनमोहन वर्मा वृहदधिवेशन मे सम्मिलित होने के लिये नैनीताल इस वर्ष जा रहे थे। तो मार्ग मे ही उनका दिल घबराने लगा और वे लौट कर शीघ्र फैजाबाद वापिस आ गये। २५ मई को जब मैं उनसे मिला तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था लेकिन सुधर रहा था। मैंने उनसे पूर्ण विश्राम के लिये प्रर्थना की। २७ मई को जब वह कचहरी गये, दो मुकदमों में बहस कर चुके तो दिल घबड़ाने लगा और बेहोश हो गये। उसी अवस्था मे सदर अस्पताल फैजाबाद मे लाये गये। डाक्टरों ने इन्जेक्शन दिये। आक्सीजन सुघाई, मगर किसी से कुछ लाभ न हुआ, और दिन के दो बजे सदर अस्पताल फैजाबाद मे उनका देहान्त हो गया। सारे शहर में हड़ताल रही।

सन् १९२७ ई० में जब मैं गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक होकर आया तब मैने श्री मदनमोहन वर्मा को तत्परता से आर्यसमाज का कार्य करते देखा। तब से आज तक अर्थात् ४२ वर्ष निरन्तर आर्य समाज की सेवा करते रहे। प्रायः प्रधान पद पर ही रहते थे। उनमें अनेक गुण मैंने देखे जिनसे वह उन्नति के शिखर पर पहुच गये, उन गुणो का धारण करना ही उनकी वास्तविक श्रद्धांजलि है। वे गुण ये हैं। (१) वीरता (२) साहस (३) प्रसन्नवदनता (४) सर्व प्रियता (५) मधुरभाषिता (६) विनोद प्रियता (७) नेतृत्व का गुण (८) उत्तम कला (९) उत्कृष्ट वकील (१०) स्वस्थ शरीर (११) उद्यमी (१२) प्रत्युत्पन्न मति (१३) धैर्यशाली (१४) अनुशासन प्रिय (१५) प्रबन्ध पटु (१६) सयमी (१७) ईमानदार (१८) व्यवहार कुशल (१९) सुलह पसन्द (२०) महर्षि के अनन्य भक्त (२१) भारतीय सस्कृति तथा सस्कृत के प्रेमी (२२) महत्वाकांक्षी (२३) ईश्वर भक्त (२४) सम्विधान विशेषज्ञ (२५) वैदिक धर्म मे अटूट श्रद्धा।

—कृष्णदत्त आयुर्वेदालकार

## हा! मदनमोहन जी वर्मा

श्रीयुत मदनमोहन जी वर्मा, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, के आकस्मिक देहावसान का दुःखद समाचार सुनकर हम सब स्तब्ध रह गये। राजनीति विधि विधान, और धर्मनीति में व्यवहार कुशल श्रीयुत वर्मा जी ने स्पृहणीय लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी। उनका अभाव हम सबको बहुत काल तक खटकता रहेगा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक सन्तप्त परिवार मित्रों आदि को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—विजयपाल शास्त्री
सं. मन्त्री आ०स० मेस्टनरोड
कानपुर

## संगम

दुःख और क्रोध से उसने मुट्ठी मींच ली। वह रायसाहब की कोठी की तरफ चल दिया। द्वार पर ही रायसाहब खड़े थे। उसे देखते ही वह गुस्से से चीखे क्यों आया है यहाँ? मैने मारा है तेरे कुत्ते को। पता है, मेरे पांच सौ के कुत्ते को उसने घायल कर दिया है। भाग जा यहा से नहीं तो अभी कुत्ते को ही मारा है अब ज्यादा गड़बड़ की तो सारा रुपया ले लूगा, जो मेरे कुत्ते की दवा-दारू पर खर्च होगा।"

दीनू उनके तमतमाये चेहरे को देखकर सहम गया। वह उनसे बहुत कुछ कहना चाहता था पर उसकी आवाज घुट कर रह गई। वह बड़ी मुश्किल से कह पाया—"माफ करना बाबू जी, मेरे कुत्ते के कारण आपको बहुत तकलीफ उठानी पडी। बड़ा उपकार किया आपने मेरे ऊपर जो उसे मार दिया। सचमुच मेरी ही गल्ती थी। भला एक गरीब आदमी को क्या हक है कि वह कुत्ता पाले। सचमुच में अपनी औकात भूल गया था। कुत्ता पालना तो आप जैसे बड़े आदमी का काम है। अच्छा राम-राम बाबू जी।" और वह एक दम लौट पड़ा।

उसने बहुत कोशिश की अपने आँसुओं को रोकने की पर न रोक सका। कई बूद भूमि पर टपक पड़ी। यह आँसू की बूँदें ठीक उसी जगह गिरीं जहाँ कुछ देर पहले मोती ने तड़फते हुए दम तोड़ा था।

मिट्टी मे मिली खून की बूँदो और आसुओ का सगम हो गया, और दीनू अपने झुर्री पड़े गालो पर बह आये आसुओं को पोंछता हुआ उदास, लुटा खोया-सा बढ़ चला अपनी झोपड़ी की तरफ।

## महाराणा प्रताप

( पृष्ठ ८ का शेष )

तक महाराणा प्रताप ने चित्तौड़, अजमेर, तथा मांडलगढ़ के अतिरिक्त मेवाड़ को पूर्णरूपेण अपने अधिकार में ले लिया था। प्रणवीर राणा प्रताप के वैभवपूर्ण राज्य को देख कर अकबर मन ही मन कुढ़ता रहता था। मेवाड़ की सम्पूर्ण प्रजा राणाप्रताप के साथ थी।

सन् १५९० तक राणा प्रताप अत्यधिक वृद्ध हो गये थे। उन्होने वीरो की भांति मृत्यु को सवरण किया। राणा प्रताप के गुण गौरव के विषय मे आज भी यह प्रसिद्ध है कि—

माई एहड़ा पून जण,
ज्यो राणों परताप।
अकबर सूत्यों चौंकियों,
जाण सिरहाने सांप॥

आज इस स्वतन्त्र राष्ट्र के वासियों को राणाप्रताप के शौर्य, साहस, धैर्य एवं आत्मविश्वास से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये। हम राष्ट्रियता की मद में अभी भी अल्पसख्यक, बहुसंख्यक, हरिजन-गिरिजन अथवा भाषावार के उन्माद से ग्रसित हैं। हमें महाराणा प्रताप के जीवन से एक राष्ट्र एक भाषा, एक सभ्यता और एक सस्कृति स्थापित करने की शिक्षा लेना है। इतना होने पर ही हम देश की ५५ करोड़ जनता को सबल, स्वतन्त्र, स्वावलम्बी एवं स्वाभिमानी राष्ट्र प्रदान कर सकेंगे।

## कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

कन्या गुरुकुल महा विद्यालय देहरादून अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय स्त्री शिक्षण संस्था है। जो कि गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। यहाँ पर प्रथम श्रेणी से बी ए तक [विद्यालंकार] की शिक्षा का प्रबन्ध है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका, वर्ग छात्रावास एवं पुस्तकालय की व्यवस्था है। छात्राओं के लिये पढ़ाई के अलावा चित्रकला, संगीत विभिन्न प्रकार के खेल, सिलाई, कटाई, गृहविज्ञान एवं साइंस आदि के शिक्षण की सुन्दर व्यवस्था है। शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता।

१ जुलाई से नवीन कन्याओं का प्रवेश प्रारम्भ है। संस्कृत लेकर मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रायें भी प्रथम वर्ष मे प्रविष्ठ हो सकेगी। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५० नये पैसे भेजकर नियमावली मँगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर आचार्या

## सार-सूचनाएं

—गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर का नवीन सत्र १ जौलाई से प्रारम्भ हो रहा है। यहा आर्य सिद्धान्तो के साथ-साथ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री परीक्षाए भी दिलाई जाती हैं। प्रवेश १ जौलाई से प्रारम्भ होगा। प्रवेश योग्यता कक्षा ५ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, प्रवेशार्थी निम्न पते से पत्र-व्यवहार करे।

—हरवंशसिंह मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद
जिला—बुलन्दशहर

—समस्त आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वे अपने शहर एवं जिले के आर्यकुमार सभाओं की सूची भेजने का कष्ट करें। जिससे कि समस्त आर्यकुमार सभाओं को 'भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्' के होने वाले संगठन में निमंत्रित किया जा सके।

भारतवर्षीय परिषद का निर्माण दि० २१, २२, २३ जून को थापर नगर मेरठ मे होगा। पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

आनन्दप्रकाश आर्य
२८ खिड़की बाजार हापुड
(मेरठ)

## उत्सव—

—आर्यसमाज बिसवा (सीतापुर) का वार्षिक उत्सव ८ से ११ जून ६९ तक मनाया जायगा। श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री बरेली, श्री प० राजाराम शास्त्री की उपस्थिति प्रार्थनीय है। —गुरदीनलाल आर्य

—आर्य समाज भगवानपुर (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव १४ से १६ जून तक होगा। —मन्त्री

—१७ से १९ मई तक आर्य समाज नानापेठ पूना का वार्षिकोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। इसके साथ बाल सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन भी हुये।

—मन्त्री

—२१ अप्रैल को मास्टर हरीचन्द की सुपुत्री ऊषादेवी का पाणिग्रहण संस्कार आर्य समाज फेराहेडी के मन्त्री जी ने वैदिक रीति से कराया। —मन्त्री

—आर्यसमाज सहतवार का २५ वाँ वार्षिकोत्सव १८ से २१ मई तक समारोह से मनाया गया।

—मन्त्री

—आर्य समाज सहतवार के मन्त्री श्री सुदर्शनसिंह के सुपुत्र वेद प्रकाश व भतीजा ओमप्रकाश का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ।

—१७ मई को श्री बलवीर सिंह जी बेधड़क मुख्य निरीक्षक ने आर्य समाज भगवानपुर [सहारनपुर] का निरीक्षण किया। कई उपयोगी सुझाव दिये।

—मन्त्री

—आर्य समाज पुरानी मण्डी सहारनपुर ने राष्ट्रपति श्री जाकर हुसैन की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया है।

—मन्त्री

## निर्वाचन—

—जिला उपसभा रामपुर
प्रधान—श्री जगदेवसिंह आर्य
उपप्रधान—श्री साहू हरप्रसाद आर्य
मन्त्री—श्री कन्हैयालाल मुमुक्षु
उपमन्त्री-,, राममूर्ति जी
कोषाध्यक्ष—श्री अतरसिंह जी

—मन्त्री

—आर्यसमाज तिलियानी (मैनपुरी)
प्रधान—श्री धनीराम जी
उपप्रधान—मा० बाबूराम जी
मन्त्री—डा सोनेलाल शाक्य 'सुमन'
उपमन्त्री—श्री श्रीराम जी शाक्य
कोषाध्यक्ष—,, वैद्य पुरन्दरसिंह

—मन्त्री

—आर्यसमाज दयानन्द नगर अछोरा
प्रधान—श्री जगन्नाथप्रसाद वैद्य वि०
उपप्रधान-,, भगौतीसिंह
कोषा —,, रामदयाल यादव
मन्त्री— ,, सतपाल तिवारी
उपमत्री—श्री सूर्यनारायण

—मन्त्री

—जिला आर्य उपप्रतिनिनिधि सभा फर्रुखाबाद
प्रधान—श्री श्रीराम गुप्त वकील याकूतगंज
उपप्रधान—,, जगन्नाथप्रसाद कायमगंज
मन्त्री—श्री जौहरीलाल फतेहगढ
उपमन्त्री-,, मैकूलाल आर्य, चक्रपुर
,, ,, सच्चिदानन्द आर्य रम्पुरा
कोषा -,, रामलडैतेलाल ,,
निरीक्षक-श्री रामदास आर्य याकूतगंज

—मन्त्री

—आर्यकुमार सभा सदर मेरठ
अध्यक्ष—श्री बेनीप्रसाद जी आर्य
आ स म सदर मेरठ ;
निरीक्षक श्री अशोककुमार जी
आ म म नगर मेरठ द्वा
कोषाध्यक्ष श्री विद्यासागर जी
मन्त्री श्री सन्तोषकुमार
पुस्तकाध्यक्ष श्री अजयकुमार
स० ,, ,, भूपेन्द्र

—आय स्त्री समाज मुजफ्फ नगर प्रधान—श्रीमती सावित्रीदे जी, उप प्रधान श्रीमती मगन मु जी व श्रीमती शकुन्तला (डा मन्त्राणी श्रीमती तारावती, उ मन्त्राणी श्रीमती इन्द्रावती, कोष ध्यक्ष श्रीमती दर्शनदेवी, पुस्तक ध्यक्ष श्रीमती कमलादेवी।

—तारावती, मन्त्राण

—आर्यसमाज हरथला कालो मुरादाबाद।
प्रधान श्री भगवानदास गाधी
उपप्रधान श्रीमती कौशल्या कपूर
मन्त्री श्री गोविन्दराव ध्यानी
उप मन्त्री चन्द्रप्रकाश
कोषाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर

—नगर आर्यसमाज मण्ड फतेहगंज बुलन्दशहर।
प्रधान श्री टीकाराम सरोज
उप प्रधान श्री हरीरामसिंह
उप प्रधान श्री ठा बलवीरसिंह
मन्त्री श्री शिवनन्दन दास
उप मन्त्री श्री देवेन्द्रकुमार शर्मा
,, ,, इन्द्रदेव शास्त्री
कोषाध्यक्ष श्री राधेश्याम वस्त्र विक्रेता
पुस्तकाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश सुमन
प्रचार मन्त्री श्री राधेश्याम आर्य

—शिवनन्दनदास मन्त्री

—धामपुर बिजनौर उ प्र.।
प्रधान श्री रामगोपाल जी
उपप्रधान श्री रघुनाथसिंह जी
,, ,, प० कान्तीचन्द्र जी
मन्त्री श्री देवप्रकाश
उप मन्त्री श्री हरबसलाल
कोषाध्यक्ष श्री ऋषिदेव आर्य

—आर्यसमाज फीरोजाबाद का वार्षिक निर्वाचन।
प्रधान श्री गगाशरण जी 'गौतम'
उप प्रधान श्री शिवनाथसिंह जी
मन्त्री डा० प्रेमदत्त शास्त्री
उपमन्त्री श्री जवाहरलाल 'पद्माकर'
कोषाध्यक्ष श्री प्रेमप्रकाश जी
पुस्तकाध्यक्ष श्री गोविन्द जी

—प्रेमदत्त शास्त्री मन्त्री

# सार्वदेशिक सभा के इस वर्ष के निर्वाचन पर एक दृष्टि

सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन की बैठक ३१ मई १९६९ साय-काल ४ बजे सार्वदेशिक सभा के दयानन्द भवन नई दिल्ली १ में श्री डा० दुखनराम जी उपप्रधान के सभा पतित्व में प्रारम्भ हुई। श्री सेठ प्रताप भाई जी प्रधान सार्वदेशिक सभा बम्बई से देहली नहीं पहुचे थे। इस वर्ष सभा कार्यालय के अनुसार १०५ सदस्य सख्या थी, जिसमें ७३ सदस्य पहुच गये थे। जिनमे १५ सदस्य वे भी थे जो सार्वदेशिक सभा ने अपनी व्यवस्था से अम्बाले में पजाब सभा बनाई थी और उससे १५ सदस्य सार्व-देशिक सभा के लिये चुन लिये थे, यदि ये १५ सदस्यो की संख्या सम्मिलित न की जावे तो सदस्य संख्या ९० ठहरती है। मुख्य वाद-विवाद का विषय यह था कि ये अम्बाला में चुने १५ सदस्य सम्मिलित किये जावें या नहीं, सारा बखेड़ा प्रधान रूप से इसका था।

## वस्तुस्थिति इस प्रकार है

पंजाब सभा और सार्वदेशिक सभा में मुकदमेबाजी बहुत वर्षों से चल रही है। सार्वदेशिक सभा ने न्यायसभा के प्रधान श्री हुतम लाल जी के आदेश निर्णय व्यवस्था से एक पजाब सभा का निर्माण अम्बाला में किया और सार्वदेशिक सभा के लिये १५ प्रतिनिधि भी चुन लिये। पंजाब सभा की गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी है, और अनेक कालिज पजाब सभा के पंजाब में है, और जालधर में गुरुदत्त भवन प्रधान कार्यालय पंजाब सभा का है और उप कार्यालय हनुमान रोड पर देहली में है। इन स्थितियों पर भी अम्बाला वाली सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रधान द्वारा निर्मित पंजाब सभा का कब्जा नहीं है, केवल कोर्ट के कागजों में दो पंजाब सभायें चल रही हैं। गत वर्ष सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन न हो सका, और कोर्ट का इन्जं-क्सन आर्डर जिन आधारो पर श्री ओमप्रकाश कपडेवाले ने निक-लवाया उनमे एक आधार यह भी था कि ये १५ प्रतिनिधि अम्बाला वाले बोगस हैं, इनसे निर्वाचन नहीं होना चाहिये।

इस वर्ष कोई इन्जंक्शन आर्डर नहीं लाया, यह विचार कर कि सभा के अन्दर बैठकर ही विरोध करेंगे। सभा का अधिवेशन जब प्रारम्भ हुआ तब उन अम्बाला निर्मित पजाब सभा के १५ प्रतिनिधियों का विरोध फूट उठा और शोक प्रस्ताव भी नहीं हो पाये यह सोच कर कि शोक प्रस्ताव भी तो सभा के कार्यक्रम का अङ्ग है। उत्तर प्रदेश ने पक्ष की स्थापना की कि ये १५ प्रतिनिधि निर्वाचन मे भाग नहीं ले सकते ये बोगस हैं। उत्तर प्रदेश ने दो और बातें उपस्थित कीं कि प्रादे-शिक सभा के प्रतिनिधियों को सम्मिलित नहीं किया गया, और उत्तर प्रदेश मे वृन्दावन में नये प्रतिनिधि भी सार्वदेशिक सभा के लिये तीन वर्ष के लिये चुन दिये गये पर सार्वदेशिक सभा हमारे पुराने ही प्रतिनिधियों को निम-न्त्रण दे रही है, और नये को नहीं मानती। इस प्रकार की आपत्तिया उठाई गयीं।

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने सभा की ओर से उत्तर दिया कि प्रतिनिधियों को स्वीकार करने का अधिकार अन्त-रंग सभा को है और अन्तरग सभा ने अपना अधिकार प्रधान सभा को दिया और प्रधान सभा ने उन अम्बाला वाले प्रतिनिधियों को भी स्वीकार कर दिया। अत: अब यह प्रश्न नहीं उठता, और प्रादेशिक सभा के लोग यद्यपि इस वर्ष का दशाश लेकर आये थे। पर खाना पूरी सब बातो की ठीक न हो सकती थी, अत अधिकार नहीं दिया। और उत्तर प्रदेश के पुराने प्रतिनिधियो को गत वर्ष हमने एक वर्ष के तक के लिये अधिकार और दे दिया था। क्यों कि गत वर्ष के अधिवेशन के समय तक आपका निर्वाचन नहीं हो सका था, पर अब चाहे आपके प्रतिनिधि चुन गये हैं तब भी हम तो पुराने ही बैठायेंगे। और यू पी सभा का वृन्दावन वाला निर्वाचन अवैध है, क्योकि यू पी सभा के प्रधान ने सिरसागंज के अधिवेशन को स्थगित करके पुन वृन्दावन मे अधिवेशन किया। प्रधान सभा को अधिवेशन स्थगित करने का अधिकार यू पी सभा के नियमो में नहीं है। अत वृन्दा-वन अधिवेशन अनियमित और उसमें चुने गये सार्वदेशिक के १५ प्रतिनिधि भी अवैध हैं, अत वे स्वीकार नहीं किये जा सकते।

## प्रधान सार्वदेशिक सभा को अधिकार

प्रान्तों से जो प्रतिनिधियों के नाम आते हैं, उनको स्वीकार करने का अधिकार अन्तरङ्ग सभा को है। सार्वदेशिक सभा के निर्वा-चन से दो मास पूर्व एक अन्तरङ्ग सभा होती है, उसमें प्रतिनिधि स्वीकार किये जाते हैं, पर उस समय तक यदि किसी प्रान्त के प्रतिनिधि न आवे तो प्रधान सभा को यह अधिकार दे दिया जाता है कि वह स्वीकार कर ले, यह एक साधारण रुटीन है।

पर अम्बाला में जो पंजाब सभा बनाकर खड़ी की गई जिसके मुकदमे अब भी चल रहे हैं, और कहीं भी किसी सभा पर कब्जा नहीं और अकस्मात खड़ी है, जो

—लेखक—
श्री आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास
एम ए, वेदाचार्य

केवल कोर्ट के कागजों में ही है उसके प्रतिनिधि स्वीकार किये जावें या नहीं, यह एक विशेष विचारणीय विषय था, जो अन्तरङ्ग सभा मे आना चाहिये था पर अन्तरङ्ग सभा में नहीं लाया गया। और साधारण परिपाटी के अनुसार प्रधान सार्वदेशिक सभा को अधिकार अन्तरङ्ग का देकर और प्रधान द्वारा उन अम्बाला के प्रतिनिधियों को स्वीकार कराया गया, यह एक छलकपट था।

## प्रादेशिक सभा के प्रति-निधियो की स्थिति

मैं ३५ वर्ष से सार्वदेशिक सभा मे हू। मैंने महात्मा नारायण स्वामी जी से लेकर अब तक के सब युग सार्वदेशिक सभा के देखे हैं। मैंने सभा को स्पष्ट रूप से यह बात कही कि जिसने सार्वदे-शिक से हटे रहने के लिये जो नियम आत्म-रक्षा के लिये बनाये कालान्तर मे वे नियम उसके ही सिर पर पड़े और अपने बनाये नियम से स्वय ही समाप्त हो गया। मुझे स्मरण है कि यू० पी० सभा के बरेली का जन्म यू० पी० सभा पर सार्वदेशिक सभा का हो

रस पर म० कृष्ण ने ताना था,तब श्री प०धुरेन्द्र शास्त्री ह यह कह कर सभा से उठे अगले वष सब धन चुका ो सभा मे बैठेंगे । हम कई धन इकठ्ठा करने मे लग गये एक मास मे रुपया इकठ्ठा सावदेशिक सभा को दे दिया हण होने पर भी प्रतिनिधि रहे थे ।

सभाओ की नियमावलियों के दाव-पेंच हैं कि यदि सभा लय न चाहे तो सब मे दोष ाल सकता है । महात्मा हस जी और महात्मा नारायण ी जी भी अपने जीवन मे देशिक सभा मे प्रादेशिक सभा सम्मिलित नहीं कर सके । वह किसी प्रकार सम्मिलित हुए उनके फार्म स्वीकार नहीं किये , किसी वर्ष कोई दोष निकाल ा जाता है, और किसी वर्ष दोष उठाया जाता है । पर ाव में डर यह था कि अगर शिक के सब प्रतिनिधि आ गये यू० पी० के नये प्रतिनिधि कार कर लिये गये तो हाउस ो यह बहुमत हो जावेगा कि ाला के प्रतिनिधि न बैठ सके ।

## › पी० सभा का वृन्दावन अधिवेशन

वस्तुस्थिति यह है कि यू पी ा के १५ प्रतिनिधि पुराने और ावन मे चुने गये १५ प्रतिनिधियों मे तीन प्रतिनिधि वर्त्तमान धिकारियों के पक्ष में थे, और विरोध में, पर वृन्दावन के प्रतिनिधि सब वर्तमान अधिकारियों की पालिसी के विरोध में । अत सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धं त्यजति पण्डित के अनुसार उन म की रक्षा के लिये हेतु सोचे ा और यह सोच कर तय किया ा कि यू पी सभा के सिरसा- ा अधिवेशन को प्रधान ने स्थगित कर दिया, अत वृन्दावन धिवेशन अवैध है । विचित्र युक्ति । यदि अधिवेशन में मार पीट ा नौबत आ जावे तो प्रधान सभा विधान की धारायें देखेगा कि मरने से बचावेगा । तभी तो आगरा मे कतल हो गया । सिरसागज मे यदि अधिवेशन स्थगित न किया जाता तो एक दो नहीं कितनी लाशें वहा पड़ जातीं वहां धारायें देखने का मौका था कि प्रान्त की रक्षा करनी थी अत ऐसी बोगस युक्तियां सार्वदेशिक सभा के लिये शोभा प्रद नहीं, पर आत्म रक्षा के लिये उनको भी सब कुछ करना पडता है वे भी विवश थे ।

## अम्बाला के १५ प्रतिनिधि उतावले हो रहे थे

जिस समय यह बहस चल रही थी उस समय अम्बाला के १५ प्रतिनिधि अधिवेशन मे भाग लेने के लिये उतावले हो रहे थे । उनके आगे भी धर्म सकट था और वह यह कि यदि हम सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में भाग ले लेंगे तो कोर्ट मे जो पुरानी पजाब सभा के साथ मुकदमे चल रहे हैं और कहीं भी कब्जा नहीं मिल रहा है उनमें सहायता हो जावेगी । और दूसरा डर उन्हें यह था कि सार्वदेशिक सभा के जो पुराने अधिकारी हैं ये ही सब जैसे के तैसे चुन आवें तो हमारी खैर है और यदि ये निर्वाचन में हार गये तो हमारी रक्षा कौन करेगा । अत अम्बाला के कुछ लोग महात्मा आनन्द स्वामी जी को भी अपशब्द कहने लगे । इनकी घबराहट भी उनके दृष्टि-कोण से सही थी ।

## पूज्य महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज का निर्णय

हैदराबाद के आर्य महासम्मेलन में जो शांति प्रस्ताव मैंने प्रस्तुत किया था, जिसको सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग ने स्वीकार भी कर लिया था, उसके आधार पर महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपना निर्णय दे दिया

[शेष आगामी अंक में]

# नैनीताल में आर्य समाज की गूँज

नैनीताल मे आर्यसमाज यज्ञशाला का पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के कर कमलों द्वारा उद्घाटन ।

स्वामी जी की विशेष प्रेरणा—

आर्य जगत पर आस्तिकवाद के प्रचार का दायित्व है ।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी० गोपाल रेड्डी इस कार्यक्रम मे सम्मिलित हुये, और आर्यसमाज द्वारा की गई देश और धर्म एव मानवता की विशिष्ट सेवा के लिये अपनी श्रद्धा प्रकट की और आर्यसमाज को अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया । राज्यपाल का भाषण हिन्दी मे था, सभी बन्धुओं ने राज्यपाल के हिन्दी भाषण की प्रशसा की । श्री पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी श्री आनन्द भिक्षु जी श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य एव श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ससद सदस्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने भाषणों द्वारा आर्यसमाज के कार्य पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर सूचना विभाग की सङ्गीत मण्डली ने वेदमन्त्रों का गान किया, कैप्टन रामसिंह (आजाद हिन्द फौज) के दल ने प्रभु भक्ति और राष्ट्र भक्ति के तराने प्रस्तुत किये । कन्या गुरुकुल हाथरस की कन्याओं ने आर्य समाज सम्बन्धी अपने प्रभावशाली सगीत से उपस्थित आर्य जनता को प्रभावित किया । श्री देवराज जी के मानवतावादी सङ्गीत का भी विशेष प्रभाव पड़ा ।

इस वर्ष आर्यसमाज नैनीताल के वार्षिकोत्सव के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ८३ वां वृहदधिवेशन भी था । प्रतिनिधियों की सख्या बहुत अधिक थी, उनके साथ आने वालों के कारण प्रबन्ध का भार बहुत बढ़ गया था । १००० व्यक्तियों से अधिक की भोजन एवं निवास व्यवस्था की गई थी । इतनी बडी सख्या में आर्य नर-नारियों को नैनीताल नगर में एकत्र देख जनता बहुत प्रभावित हुई । नगर में विशाल जलूस का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा । मद्य-निषेध आन्दोलन के पोस्टरों के साथ मद्य-निषेध सम्बन्धी नारे लगाता हुआ जलूस घूमा । स्त्रियां भी बहुत बडी सख्या में थीं । भिन्न-भिन्न स्थानों से आये आर्यजन अपने समाजों के बैनर एवं ओ३म् के झण्डे लिये हुये थे । श्री आनन्द भिक्षु जी, श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री, श्री पि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री आदि आर्य नेता जलूस का नेतृत्व कर रहे थे । जलूस की समाप्ति पर श्री पि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री ने ओजस्वी भाषण दिया और आर्य समाज के अस्पृश्यता निवारण कार्य को प्रस्तुत किया । महिला सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती विद्यावती राठौर मन्त्री समाज कल्याण उत्तर प्रदेश ने की । उत्सव पर श्री आनन्द भिक्षु जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया । और पूज्य म० आनन्द स्वामी जी महाराज की वेद-कथा होती रही । पर्वतीय क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रभाव को बढ़ाने में इस समारोह का व्यापक लाभ होगा । —सवाददाता

# ग्राम जीवन

## कपास की बुआई

कपास की बुआई का कार्य जून के महीने में ही खत्म कर देना चाहिए। इससे अधिक देर से बुआई करने पर फसल की उपज कम होती है। कपास की खेती काली कपासी मिट्टी या रूगर मिट्टी में की जाती है। कपास के खेत में पानी की निकासी का पूरा इन्तजाम होना चाहिए। वरना पौधों की बढ़वार रुक जाती है। कपास की बुआई के लिये खेत की ३-४ बार जुताई करनी चाहिये। बिना सिंचाई वाले क्षेत्रों में कपास की फसल में १२ किलो नाइट्रोजन ९ किलो० फास्फोरस और ४० किलो० पोटाश देनी चाहिए। सिंचाई वाले क्षेत्रों में इसकी दुगनी या तिगुनी मात्रा देना चाहिये। नाइट्रोजनधारी खादों को फूल आने के पहले देना ठीक रहता है। पंजाब में किये गये परीक्षणों से पता चला है कि अमेरिकन कपास में फी एकड़ १०० से १२५ किलो० अमोनियम सल्फेट देने से १६०-२०० किलो० तक उपज बढ़ जाती है। एक एकड़ में ४-५ किलो० देशी कपास का बीज और ५-६ किलो० अमेरिकन कपास का बीज बोना चाहिये।

कपास बोने के दो तरीके हैं। एक छिटकवां विधि और दूसरा हल के पीछे लाइनों में बीज बोये जाते हैं। बोने से पहले बीजों का उपचार करना जरूरी है। बीजों के उपचार के लिये उन्हें गंधक के तेजाब में दो मिनट के लिये डाल देना चाहिये। इसके बाद बीजों को निकालकर पानी में धो लेना चाहिये।

## गन्ने की फसल में खर-पतवारों की रोक थाम

गर्मी के मौसम में ईख की फसल मे खरपतवारो की रोकथाम करना एक बडी टेढ़ी समस्या है। इस मौसम में विशेषतः अधिक सिंचाई करने पर खरपतवारों की बढ़ोतरी बड़ी तेजी से होती है। ईख अनुसन्धानशालाओं में किये गये परीक्षणों के आधार पर पिछले वर्षों में ईख की फसल को खर-पतवारो के कारण ८ से ३५ प्रतिशत तक हानि पहुची है।

## गन्ने की फसल में पाये जाने वाले खरपतवार

गन्ने की फसल मे खरपतवारों की समस्या वैसे तो गन्ने की बुआई के दो महीने बाद में शुरू हो जाती है, परन्तु जून जुलाई के महीने मे तापमान में बढ़ोतरी तथा सिंचाई की अधिकता से खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं, जिसके कारण सफल को पूरी तरह पोषण नहीं मिल पाता। गन्ने के कुछ खरपतवार ये हैं जिनको नष्ट करना आवश्यक है।

खरपकरा [डैक्टीलाक्टेनियम ईजिप्टियम], सांस (पेनीकम स्पीसीज), [ डिजीटेरिया स्पीसीज ], मरुआ [इरैगास्टिस टेनेला], मोथा [साइप्रस रोटेण्डस], दूब साइनोडोन डैक्टीलान ], जगली जूट ( कारकोरस स्पीसीज ), नार [ आइपोमिया पैस्टीग्राइडिस ], लोनिया [पारचुलका आलीरैलिया] हिरनखुरी [कनवालव्मुलिस आर्वेसिस], दुधी [इयूफोरबिया हिर्टा], भगरा [ इकलिप्टा-अल्बा ] तथा पत्थरचय [ट्राइन्थैमा मोनोगाइना] आदि।

## सब्जियों की कीट व्याधि व उनकी रोकथाम

गर्मी में सब्जियों की फसलों पर अनेक कीडे. फफूंदी, जीवाणु, विषाणु, गोल कीड़े और खरपतवारों का आक्रमण होता है फलस्वरूप उपज को काफी हानि पहुंचती है। हानि से बचने के लिये आवश्यक यह है कि उनके कारणों की रोकथाम की जाय। यहा कुछ उपाय या उपचार दिये जा रहे।

## ककड़ी वर्गीय फसलें

कद्दू के गुबरैले द्वारा कद्दू, पेठा, करेला, चचीड़ा, खीरा, ककड़ी घीया, तोरई, टिंडा, टोडली आदि किस्मों की फसल को हानि पहुचती है। इन कीड़ो का रंग लाल और काला होता है। ये कीडे पौधों की नई पत्तियो तथा फूलो को खाते हैं आमतौर से ये बड़ी सख्या मे एकत्रित रहते हैं। इसकी सूंडी पौधों की जड़ो को भी हानि पहुचाती है।

### रोकथाम

कीड़ों के आक्रमण की शुरू की अवस्था मे इन्हें इकट्ठा करके मिट्टी के तेल मिले पानी में डाल देना चाहिये। फसल पर पायेरेथम या ०.६५ प्रतिशत लिन्डेन या २.५ प्रतिशत बी.एच. सी. का भुरकाव ९-१२ किलो प्रति हैक्टेयर के हिसाब से करना चाहिये। कीड़ों के डिम्भों को मारने के लिये ५ प्रतिशत बी. एच.सी. या एल्ड्रिन को मिट्टी में ही मिला देना चाहिये कारण ये कीड़े खेत मे ही पैदा होते हैं।

## इपीलैंचना गुबरैला

फसल की कटाई के पश्चात् खेत में बचे हुए फसल के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिये। बी० एच०सी० और डी०डी०टी० जैसी क्लोरीनेटेड हाइड्रोकारबन कीट नाशक दवाओं का अधिक गाढा घोल ककडी वर्गीय फसलों के लिये इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। कारण ये दवाएं जहरीली होती हैं।

### रोकथाम

यह कीडा पौधों की पत्तियों को हानि पहुंचाता है। इस कीडे की सूंडी पीले रंग की होती है और पत्तियों के नीचे की ओर पाया जाता है। गुबरैला और सूंडी दोनो ही पत्तियों को खुरच-खुरच कर खा जाते हैं और पत्तियों का ढांचा ही शेष रह जाता है।

इसकी रोकथाम के लिये ककड़ी वर्गीय फसलों पर ०६५ प्रतिशत लिन्डेन या २५ प्रतिशत बी. एच सी. का भुरकाव ३५ से ४.' किलो फी एकड़ के हिसाब सेकरना चाहिये।

## गर्मियो की जुताई के लिये मिट्टी पलटने वाले हल का उपयोग करें

गर्मियों के मौसम में खाली खेतो की जुताई करने से अनेक लाभ होते हैं।

[१] ग्रीष्मकालीन जुताई करने से भूमि की सतह खुल जाती है। इससे वायु का भूमि में संचार होता है। सूर्य का प्रकाश भी भूमि में पहुंचता है। इससे पौधे मिट्टी के खनिज पदार्थों को आसानी से भोजन के रूप मे ग्रहण कर लेते हैं।

[२] पर्याप्त धूप और वायु मिलने पर भूमि में नाइट्रोजन तेजी से बनता है। भूमि मे मौजूद जैविक पदार्थ जल्दी ही नाइट्रेट की शक्ल मे बदल जाता है। इससे उस खेत में बोई जाने वाली फसलों को लाभ पहुचता है।

[३] गर्मी की तेज धूप के कारण भूमि मे हानिकारक कीड़े-मकोड़े और बीमारियों के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

[४] जुताई से खरपरतार, पत्तियां डठल आदि भूमि में दब जाते हैं। बाद में ये खाद के रूप में बदल जाते हैं।

[५] ग्रीष्मकालीन जुताई करने से भूमि की पानी धारण करने की क्षमता बढ जाती है।

[६] जुताई से भूमि की सरचना मे सुधार होता है।

[७] भूमि संरक्षण मे मदद मिलती है।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल –६०

ज्येष्ठ १८ शक १८९१ शुद्ध अषाढ़ कृ० ९
[ दिनाङ्क ८ जून सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L- 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

## श्री 'वसन्त' जी हृदय रोग से पीड़ित

बृहस्पतिवार दिनांक २९-५-६९ को श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' पूर्व सभा मुख्योपमन्त्री तथा सम्पादक 'आर्य्यमित्र' को एक साधारण दिल का दौरा पड़ा परन्तु ईश्वर कृपा से अब स्वस्थ हो गये हैं। श्री 'वसन्त' जी जिन्होंने गत दिनों पर्याप्त कार्य किया है, यथेष्ट दुर्बलता का अनुभव कर रहे हैं। तुरन्त उपचार से स्वास्थ्य लाभ हो रहा है। डाक्टरों ने उन्हें एक मास पूर्ण विश्राम की सलाह दी है।

## एक हजार रुपये का दान

गुरुकुल खेड़ा खुर्द देहली राज्य में श्री के० नरेन्द्र जी दैनिक अर्जुन तथा दैनिक प्रताप के सम्पादक १५ मई १९६९ प्रातः १० बजे अचानक पधारे। गुरुकुल आश्रम तथा गौ सेवा सदन का निरीक्षण किया, वहाँ के शांत वातावरण से वह बहुत प्रभावित हुए—तथा उसी समय गुरुकुल के आचार्य श्री सत्यप्रिय जी को गुरुकुल आश्रम के लिये एक हजार रुपया प्रदान किया और भविष्य के लिये पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया। ग्रामीण जनता की तरफ से आपका उत्साह पूर्वक स्वागत किया गया।

—रमेशचन्द्र

## आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

आश्रम की ओर से आर्य समाज हरिद्वार के सहयोग से गंगा के किनारे सुभाष घाट पर अस्पृश्यता निवारण के विषय मे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन रविवार तदनुसार २५-५-६९ सायं पांच बजे से सात बजे तक किया गया। सभा भजनों के गायन से आरम्भ हुई। उसमे श्री वेणी प्रसाद जी जिज्ञासु, चौ० प्रेमचन्द्र जी, प० शिवदयालु जी तथा पं० धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड आदि विद्वानों के व्याख्यान हुए। शुद्धि वैदिक वर्ण व्यवस्था के विषय में जो गलत धारणायें पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य तथा श्री करपात्री जी के भाषणों से पैदा हो गई हैं उनका निराकरण किया गया।

—कल्याणस्वरूप, सयोजक
प्रचार विभाग,

## शोक प्रस्ताव

दिनांक १८-५-६९ रविवार को आर्यसमाज कलकत्ता के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर आयोजित यह शोक सभा सेठ श्री बद्रीप्रसाद जी भोरका मैनेजिंग डायरेक्टर ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन आफ इण्डिया प्रा० लि० के आकस्मिक निधन पर, जो कि १३ मई को बम्बई मे हुआ, शोक प्रकाश करती है—श्री भोरका जी आर्य समाज काकड़वाडी (बम्बई) के प्रधान तथा आर्यसमाज बड़ा बाजार के भी कई वर्षों तक प्रधान रहे हैं—श्री भोरका जी आर्यसमाज के निष्ठावान् सेवक थे, ऋषि के मिशन के लिये उनमे अद्भुत उत्साह था—उनकी दानशीलता चिर स्मरणीय रहेगी।

हम सब आर्य जन परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह श्री भोरका जी की दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके शोक सन्तप्त परिवार को शोक सहने मे समर्थ करे एवं श्री भोरका जी के आदर्श पर चलने की शक्ति दे।

—मन्त्री

—आर्य समाज वेस्टमरोड कानपुर की यह शोक सभा अपने उपप्रधान ला० शान्ति नारायण जी के आकस्मिक देहावसान पर अपना हार्दिक दुःख व्यक्त करती है और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को पुण्य प्रशांति एव उनके शोक सन्तप्त परिवार बन्धु, बान्धवों, मित्रों को इस दुसह दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—विजयपाल शास्त्री, स० मन्त्री

## अस्पृश्यता निवारण हो

—आर्यसमाज अनूपशहर की यह विराट सभा एकवार पुनः यह घोषित करती है कि वेदादि शास्त्रों मे जन्मना अस्पृश्यता का समर्थन नहीं किया गया है। यह सभा अस्पृश्यता को आर्य (हिन्दू) जाति के मस्तक पर कलक समझती हुई [illegible] कि वह इस कलक को दूर करने का कोई प्रयत्न उठा न रखे। अछूत एव दलित कहे जाने वाले भाइयो के साथ भेदभाव और असमानता की भावना दूर की जावे। उसमे व्याप्त हीन भावना दूर की जाय। उनके साथ गुण, कर्मानुसार, खानपान और विवाह आदि के सम्बन्ध स्थापित करके उन्हें समानता का दर्जा दिया जाय।

इस प्रकार सवर्ण और अवर्ण की गहरी खाई पाटकर समस्त हिन्दू समाज सगठित रूप से देश, धर्म और समाज की सेवा के लिये सन्नद्ध रहे।

—जयभगवान गर्ग मन्त्री

—७ मई को मेरे पुत्र मदनमोहन गोपाल के शुभ-विवाह में काशी के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद जी ने वैदिक धर्म का प्रचार किया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सभा को ५१) दान में दिये।

—आर. बी. प्रसाद रिटायर इंजीनियर श्रीपालपुर

## अध्यात्म-सुधा

( पृष्ठ २ का शेष )

उसी प्रकार वैखरी से भी वह परमदेव के गुणगान गाता है। उसकी वैखरी जो कुछ बिखराती है, वह परमेश्वर की वाणी होती है। पवित्र आत्मा परमेश्वर से युक्त होकर जिन दिव्य सन्देशों को सुनती है, उन्हीं को वैखरी से बर्षाती है। सुनने वालों को न केवल यह बोध होता है कि साधक परमात्मा के प्रेम रंग में पूर्णतया रंगा हुआ है वरन् वे स्वयम् भी उस आनन्ददायिनी वाणी से मस्ती का अनुभव करते हैं और मस्त हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर को रिझाने वाली वाणी के स्वर अन्तस्तल से निकलते हैं जिनमें [illegible] सच्ची पुकार होती है।

—आर्य समाज विश्वगुप्तगंज लश्कर का १८ वां वार्षिकोत्सव १६ से १९ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—मन्त्री

—श्री मुन्नीप्रसाद आर्य सैनिक भजनोपदेशक पनेवा (गोरखपुर) की पुत्री का शुभ-विवाह पिछले दिनों सानन्द सम्पन्न हुआ।

—मुन्नीप्रसाद

—आर्य समाज सिंगापुर ने राष्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन जी के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया है।

—मन्त्री

—१३ मई को पंजाबी बाग दिल्ली में आर्य समाज के विद्वान् श्री पं० अर्जुनदेव जी शास्त्री का देहान्त हो गया। आपकी आयु ६५ वर्ष की थी। आप शाहपुर पश्चिमी पाकिस्तान के रहने वाले थे।

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

'जय अयेम' ] लखनऊ–रविवार ज्येष्ठ २५ शक १८९१, अधिक आषाढ शु० १ वि० स० २०२६, दि० १५ जून १९६९ [ हम जीतें

# ब्रह्मणस्पति की पूजा का फल

**ओ३म् । सइज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः ।**
**देवाना यः पितरमा विवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम् ।।**
[ ऋ० २।२६।३ ]

(य) जो (श्रद्धामना) श्रद्धायुक्त मन वाला (हविषा) श्रद्धा से त्याग भावना से, आत्म समर्पण के भाव से (देवानाम्) देवों के, विद्वानो के, निष्काम ज्ञानियो के (पितरम्) पालक रक्षक, पिता (ब्रह्मण+पतिम्) ब्रह्मणस्पति, लोक पालक [illegible] को (आ+विवासति) पूरी तरह पूजता है। (स+इत्) वही (जनेन) लोक सेवा द्वारा (धना) धनों को [illegible] करता है (स) वह (विशा) प्रजा के द्वारा (स) वही (जन्मना) विविध पदार्थों की उत्पत्ति के द्वारा धन धारण करता है। (स) वही (पुत्रै) पुत्रों के द्वारा तथा (नृभि) मनुष्यो के द्वारा अथवा नेताओं के द्वारा (वाजम) ज्ञान, अन्न, बल तथा धनो को धारण करता है।

इस मन्त्र मे भगवान की पूजा का फल बताया गया है। भगवान् को इस मन्त्र मे ब्रह्मणस्पति कहा गया है, किसी दूसरे मन्त्र मे 'विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि" ऋ० २।२३।२ कहा गया है। भगवान ही लोक तथा ज्ञान का उत्पादक है। वही उनका पालक है। अत: वह अवश्य पुजने योग्य है।

हम मर्त्य हैं। आज जीते हैं, कल मर जायेंगे। फिर हमे कोई जानेगा भी नहीं। देव अमर्त्य होते हैं। शरीर नाश के साथ उनका नाश नहीं होता है। उनका यश शरीर कभी भी क्षीण नहीं होता। देव भी उसी से बनते हैं वह उनका पिता है।

खाली पूजा करने आये हो या कुछ लाये भी हो ? अरे गुरु के पास जाना होता है, तो समित्पाणि होकर, हाथ मे समिधा लेकर जाते हैं। गुरुओं के गुरु के पास जाते समय पास कुछ भी नहीं, खाली हाथ जा रहे हो, कैसे पूजा करोगे ?

भगवान् द्रव्य के भूखे नहीं हैं। द्रव्य-पदार्थ तो सारा उन्हीं का है। वह उन्हें क्या दोगे ? अपना आपा त्यागो, उसकी हवि डालो, विवश होकर नहीं। ज्ञात हो गया है कि एक दिन यह छोडना होगा।

इस वास्ते विपत्ति समझ कर मत छोडो। वरन् श्रद्धामन श्रद्धायुक्त मन वाले होकर। श्रद्धा में बडी शक्ति है। वेद ने कहा है कि श्रद्धया विन्दते वसु [ऋ० १०।१५१।४ श्रद्धा से धन मिलता है।

सचमुच लौकिक और पारलौकिक धन श्रद्धा के विना प्राप्त नहीं हो सकता।

ब्रह्मणस्पति धन पति को भी कहते हैं। धन का कामना है तो धनपति ब्रह्मणस्पति भगवान की पूजा करो !

वर्ष ७१ | अंक २२

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
[illegible]

सपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए

इस अक में पढ़िए !

# आर्य जनता वर्ण-व्यवस्था के प्रचार और अस्पृश्यता निवारण के कार्यक्रम को आगे बढ़ावे

## एक अशुद्ध प्रश्न के शुद्ध उत्तर की खोज

—श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ससद सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

यूं तो शूद्रो के साथ मानवोचित सदव्यवहार की समस्या देर से एक उलझी हुई गुत्थी है क्योकि इस ओर अतीत मे बडे-बडे विद्वान् और सुधारक भी उसी प्रवाह मे बहते रहे। आचार्य शकर जैसे दिग्गज विद्वान ने बिना

श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र

शास्त्रीय आधार के वेदान्त दर्शन के भाष्य मे लिख दिया—

अथास्म वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्या श्रोत प्रतिपूरणम।

उच्चारणेजिह्वा छेद। धारणे शरीर भेदा।

अर्थात् शूद्र जब वेद सुन ले तो राग और सीसा पिघला कर उसके कानो मे भर देना चाहिये। यदि वेद का उच्चारण करे तो जीभ काट लेनी चाहिए, और वेद के अनुसार आचरण करे तो शरीर चीर देना चाहिए। किन्तु यह गुत्थी तब से और भी उलझ गई जब से राजनीतिक उद्देश्य से अग्रेज ने यह स्थापना की कि आर्य लोग मध्य एशिया से आये, उनसे पहले यहाँ कोल, भील, द्रविड़ और शूद्र आदि रहते थे।"

आर्यों से इन आदिवासी जातियो के युद्ध हुये और उनमे आर्यों की जीत हुई। फलत ये जातियाँ पहाडो और जगलों मे भाग गयीं और वहीं रहने लगीं।

अग्रेज ने इस बात को भारतीय इतिहास का एक अग बना कर पठन-पाठन के द्वारा हमारे मस्तिष्क मे बैठा दिया।

अब ऐसी भेड़ चाल चल गयी है कि १०० में से ९९ प्रतिशत भारतीय यही मनाते और कहते हैं कि भारत की ये पिछडी जन जातियाँ ही यहाँ की मूल निवासी हैं। स्वतन्त्र भारत के सविधान मे उन्हें "आदिवासी" शब्द से पुकारा गया।

इस समय राजनीतिक और शैक्षणिक चेतना से यह वर्ग कुलबुलाया। भारत की तथाकथित उच्च जातियों मे भी आर्य समाज की विचारधारा के प्रभाव से तथा राजनीति स्थिति से भी इनके प्रति सहानुभूति के भाव उत्पन्न हुये। सविधान मे प्रवत्त अधिकारियों से भी एक बहुत बडी प्रेरणा प्राप्त हुई। किन्तु उस मूल की भूल के कारण इन पिछडी जातियों के मन में एक विद्वेष और प्रतिशोध की भावना भडक गई। आज ९९ प्रतिशत इस वर्ग का व्यक्ति प्रत्येक द्विजाति को अत्याचारी समझता है। उसके मन मे उसके प्रति एक घृणा है और वह बदला लेने के लिए उतावला हो उठता है।

इधर इन को समान स्तर पर लाने के लिए शासन ने इन्हें कुछ सुविधायें प्रदान कीं—इन सुविधाओं की उपलब्धि से जहाँ इन पिछडी जातियों के मन मे कृतज्ञता उत्पन्न होनी चाहिए थी वहाँ और भी अधिकार और लिप्सा भडक उठी। इस समय सारा वातावरण अशान्त और क्षुब्ध है। समस्या के समाधान के लिए अनेक उपाय बरते जा रहे हैं। किन्तु किसी का परिणाम सन्तोषप्रद नहीं हैं।

## सामयिक समस्याएँ

इस समस्या का स्वास्थ्य और निर्दोष समाधान महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। उस समाधान को स्वीकार किये बिना यह अशाति कदापि दूर नहीं हो सकती तथा सौहार्द और सौमनस्य की भावना उत्पन्न होकर उन्नति की ओर प्रगति नहीं हो सकती।

ऋषि दयानन्द ने इस बात का युक्ति युक्त निराकरण किया है कि आर्य लोग बाहर से आये हैं। अग्रेज की कूटनीतिक चाल के भारत के लोग शिकार हो गये हैं और गलत दृष्टिकोण स्वीकार करके सर दर्द मोल ले लिया है। आर्यों के बाहर से आने के विषय में एक भी युक्ति नहीं है।

बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर श्री "ऐलफिन्स्टन" अपने भारतीय इतिहास में लिखते हैं—

"It is opposed to their [ Hindus ] foreign origin, in that neither in the code of manu nor I believe in the Vedas, nor in any book that is certainly older than the code [ of Manu ] is there any allusion to prior residence, or to a knowledge of more than the name of any conutry out of India Even mythology goes no further than the Himalyan chain, in which is fixed the habitation of the God"

—( History of the India Vol I )

हिन्दुओं के विदेश से आकर भारत को जीत कर बसने का खण्डन तो इसी बात से हो जाता है कि इसका उल्लेख न तो मनु में किया गया है न मेरे विश्वासानुसार वेदों मे और नाही मनु से पहले रचे गये किसी अन्य पुस्तक में भी कुछ लिखा मिलता है कि हिन्दू लोग बाहर से आकर भारत मे फैले अथवा बसे हैं। पुरातनगत कथायें भी अपने वर्णनों को और कथाओं को वेद की भूमि अर्थात् हिमालय पर्वत माला से आगे ले नहीं जातीं।

डा० जे० म्यूर का मत है।

I must, however, begin with a candid admission that so far as I know, none of the Sanskrit books, not even the most ancient, contain any distinct reference or allusion to the foreign origina of the Indians.

—(original Sanskrit Texts Vol 2 )

मैं सरल हृदय से स्वीकार करता हू कि जहाँ तक मेरे ज्ञान की पहुच है, किसी संस्कृत ग्रन्थ के प्राचीनतम पुस्तकों मे भी भारतीय आर्यों के विदेशी होने का

(शेष पृष्ठ ९ पर)

लखनऊ-रविवार १५ जून ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## आर्यजगत् में क्रान्ति का शंखनाद

आर्यसमाज की स्थापना संसार से अज्ञान अन्याय अभाव का विनाश करने और ज्ञान, न्याय एवं वैभव के विकास की उदात्त भावना से हुयी थी।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने हमे यह सन्देश दिया था कि अत्याचार और अन्याय का सहन करने वाला अन्यायी व अत्याचारी से अधिक पापी होता है।

आर्यसमाज राष्ट्र, धर्म, और समाज के सभी क्षेत्रों में सुधार और निर्माण का अग्रणी रहा है। ९४ वर्ष से अधिक समय तक अपनी विशाल शक्ति और निर्माण भावना से आर्यसमाज ने जो महान् कार्य किया है, उसका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है।

परन्तु केवल अतीत पर गर्व करते रहने से आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल नहीं रह सकता, हो सकता है ९४ वर्ष के दीर्घ जीवन ने हमारे अन्दर शिथिलता उत्पन्न कर दी हो, पर हम इस बात को दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि आर्य जनता अपने महान् लक्ष्य नव निर्माण और मानवोन्नति को कभी भूल नहीं सकती।

इस स्थिति मे भी आर्यसमाज का रथ प्रगति पथ पर नहीं बढ़ रहा यह शोचनीय और विचारणीय समस्या है।

हम ससार से अन्याय के उन्मूलन की घोषणा करते हैं, पर हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन शक्ति का दुरुपयोग करते हुये अपने पक्षधरों का समर्थन और और अपने से विमत रखने वालों का विरोध करते समय अपने इस लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाते हैं। सगठन सूक्त के सारे मन्त्रों का पाठ व्यर्थ हो जाता है और हम राजनैतिक दलों की भाति व्यूह रचना कर आर्यसमाज को अपने तक सीमित रखने का येन-केन प्रकारेण प्रयास आरम्भ कर देते हैं।

छोटे-छोटे समाजो में जब विवाद होते हैं, तब जिला सभाएं और प्रान्तीय सभाए हस्तक्षेप कर समाधान करती हैं। प्रान्तीय सभाओ के विवादों का समाधान सार्वदेशिक सभा करने का यत्न करती रही, पर अब सार्वदेशिक सभा स्वय विवाद स्थल बन गई है। तब आर्यसमाज का नेतृत्त्व कौन करेगा कैसे करेगा?

आर्यजगत् के पिछले दशक में यह समस्या एक विषम समस्या बनी रही। अनेक प्रकार से इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया गया परन्तु सफलता की आशायें बढ़कर पुन: धूमिल होती रहीं, पिछले दशक मे कोई भी सम्मेलन या शताब्दी कार्यक्रम ऐसे नहीं हुये जो सर्वसम्मत रूप मे मनाये गये हो, सब मे आधा आधा आर्यजगत् बटा रहा।

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद की विषय समिति मे और बाद मे खुले अधिवेशन मे इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार अवश्य हुआ कई बडे-बडे नेताओ ने घडियाली आँसू बहाकर वहा अपने को पवित्र करने का यत्न किया, पर महा सम्मेलन से लौटते ही वे, फिर अपने बेसुरे राग अलापने लगे और सारी शक्ति इस प्रयत्न मे लगाते रहे कि महासम्मेलन का प्रस्ताव किसी न किसी प्रकार तारपीडो हो जाय। वैधानिक रूप से तो–

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग ने आर्य महासम्मेलन के उस प्रस्ताव की सम्पुष्टि कर दी, जिसमे आर्य जगत् के विवादों का समाधान करने का सर्वाधिकार पूज्य महात्मा आनन्दस्वामी जी को सौंपा गया था।

इस प्रस्ताव को स्वीकार अवश्य किया गया लेकिन अनिच्छा और मीनमेख निकाल कर यह प्रयास किया गया कि इस प्रस्ताव के फलस्वरूप होने वाले प्रयास सफल न हो। इसके लिये पूज्य स्वामी जी को न्याय सभा के निर्णयों से आबद्ध करने की चेष्टा की गई परन्तु स्वामी जी को जो अधिकार आर्य महासम्मेलन ने सौंपा था वह न्याय सभा के निर्णयों की विद्यमानता मे दिया गया था तब ससार का कौन-सा नियम स्वामी जी पर प्रतिबन्ध लगा सकता था, परन्तु आर्यजगत् के सत्ताधारी अधिनायकों ने आर्य महा सम्मेलन के प्रस्ताव की धज्जियां उड़ाते हुये स्वामी जी के मार्ग में रोडे अटकाने मे कोई कोर कसर न छोड़ी, परन्तु स्वामी जी के सामने महान् उद्देश्य और लक्ष्य है और वे आर्य जनता की भावनाओं को भली-भाति समझते हैं। इसलिये उन्होंने अपने जीवन मे सर्वाधिक दृढ़कदम उठाकर पजाब के विवादास्पद प्रतिनिधियो को सार्वदेशिक सभा के नवीन अधिवेशन में सम्मिलित होने से रोकने का आदेश प्रदान किया। परन्तु स्वामी जी के इस आदेश और अनुशासन की सार्वजनिक रूप से अवहेलना की गई। क्या यह महान् अन्याय सहन किया जा सकता था। सच्चे आर्य इस अन्याय को कभी सहन करने को तैयार नहीं हो सकते थे और न हुये और स्वामी जी की इस आज्ञा के उल्लघन के लिये सभा के अधिवेशन मे, सभा के अधिकारियो से खूब जवाब तलबी की गई और यहा तक नौबत आ गई कि सदस्य अत्यधिक उत्तेजित हो गये और विवाद बहुत बढ गया।

इसी प्रकार प्रादेशिक सभा के प्रतिनिधियो को अपना विरोधी मान कर उन्हे मताधि कार से वञ्चित रखने के लिये जो षड्यन्त्र किया गया उसका भी रहस्योद्घाटन सदन मे बडी गम्भीरता के साथ हुआ। सदन के सदस्यो ने अनुभव किया कि प्रजातन्त्र की आधार शिला पर अवस्थित आर्य समाज की भित्तियाँ आज अधिनायकवाद के आतक से प्रकम्पित हो उठी हैं, सदन मे मानो एक भूकम्प दृश्य उपस्थित हो गया। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के सर्वसम्मत नव निर्वाचित प्रतिनिधियों को भी स्वीकार न कर जो अधिनायक वादी दृष्टिकोण अपनाया गया उर पर सारे सदन को आश्चर्य था औ सदन के सम्मानित सदस्य चिन्तित थे कि इस प्रकार किसी भी प्रदेश के प्रतिनिधियो को सभा से हटा का मनमाना षड्यन्त्र कभी भ किया जा सकता है। अनेक सदस्यों ने–

(१) स्वामी जी के आदेश क उलंघन करने की निन्दा की।

(२) प्रादेशिक सभा के प्र निधियों को मताधिकार से वञ्चि रखने के निर्णय की तीव्र भर्त्सन की गयी।

(३) उत्तर प्रदेश के स सम्मत नव-निर्वाचित प्रतिनिधि को स्वीकार न किये जाने की तीव्र आलोचना की गयी, इ प्रकार सार्वदेशिक सभा मे चल अन्याय और अधिनायकवादी म वृत्ति का सदन मे खुलकर विरो किया गया।

तीव्र विरोध का अन्तिम प णाम आर्य जगत् के सम्मुख है एक नए स्वरूप मे सार्वदेशिक स आर्य जगत् के सम्मुख आ स है।

हम सार्व देशिक सभा के प्रधान श्री प्रो० रामसिह जी मन्त्री श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री को आर्य जगत् की से हार्दिक बधाई देते है। हम नेताओं का स्वागत इसलिय क है कि उन्होने और उनके साथि ने आर्य जगत् मे सव्याप्त पद लुपता और अधिनायकवाद

## सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान तथा गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता

## श्री नरदेव जी स्नातक विदेश यात्रा पर

श्री नरदेव जी स्नातक ससद सदस्य ४ जून को प्रात एक सास्कृतिक मण्डल के सदस्य रूप मे विदेश यात्रा पर गये है। इस यात्रा मे वे इग्लण्ड फ्रास जमनी, स्विटजर लैण्ड आदि कई योरोपीय देशो मे भ्रमण करेंगे। मित्र परिवार और आयजगत की ओर से उनको हार्दिक बधाई है।

प्रवृत्ति पर कुठाराघात किया है। और हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आय जगत को सही दिशा देने मे पूर्ण समर्थ और सफल होगा।

आर्य समाज अन्याय के विरुद्ध जनमत तय्यार करे और स्वय आर्य समाज में अन्याय एव अप्रजाता न्त्रिक व्यवस्थाओ को प्रश्रय प्राप्त हो यह अत्यधिक चिन्तनीय समस्या है। हम चाहते हैं कि सार्वदेशिक के नव निर्वाचन द्वारा इस दिशा में जो साहसिक पग उठाया गया है, वह आर्य जगत मे नवोन्मेष का कारण बने। आर्यसमाज मे जो रूढ़िवादिता और शिथिलता आ चुकी है, वह समाप्त हो।

आर्य समाज के सम्मुख विश्व-शांति, राष्ट्र निर्माण सास्कृतिक समुत्थान शैक्षणिक जागृति, बेकारी अस्पृश्यता निवारण आदि अनेक महान समस्यायें हैं। आर्य समाज की आन्तरिक शक्ति को सुदृढ़ करके ही हम उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति मे सफल हो सकते ।

अत आज हम समस्त आय जगत की ओर से सावदेशिक सभा के नव निर्वाचित अधिकारियो का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं, और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि विश्व और देश की समस्याओ के समाधान मे आर्य जगत को नेतृत्व प्रदान कीजिये, आर्य जनता काय और नव निर्माण मे अपनी शक्ति के साथ जुटने को समुद्यत है।

आय जनता का यह कर्तव्य है कि वह अपने नव निर्वाचित नेताओ से माग दशन प्राप्त करे और साथ ही उनको सब प्रकार का सहयोग प्रदान कर उनकी शक्ति को बढ़ावे। सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अपने अपने क्षेत्रों मे सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचन को दृष्टि में रख कर प्रचार और निर्माण योजनायें आरम्भ करनी चाहिये। हम समझते हैं नव निर्वाचित सार्वदेशिक सभा प्रधान तपे-तपाये आर्य हैं, और उनका सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे ही बीता है, वे पूरी शक्ति से देश मे दौरा कर आर्य जगत का मार्ग दर्शन करेंगे। नव निर्वाचित सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रमुख शिक्षा शास्त्री, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक आर्य समाज सगठन के अग्रणी रहे हैं, और हम आशा करते हैं कि वे अपनी पितृ परम्परानुसार सारे आर्य जगत की और भी अधिक यशस्वी सेवा करेगे। हम समझते हैं कि यह आर्य समाज का सौभाग्य है कि उसका नेतृत्व आर्यजगत के दो तपे तपाये व्यक्तियों के हाथ में आया है। पिछले दिनो से नेतृत्व मे जो गतिरोध आ गया था एक दिन उसे समाप्त होना ही चाहिये था, और वह दिन आ गया है।

और अब हम पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आर्यसमाज अन्याय अत्याचार का निर्भय विरोधी रहेगा और अपने प्रजातन्त्रात्मक आदर्शों का दृढ़तापूर्वक पालन करेगा।

हमारी आशायें पूर्ण हों।

नव-निर्वाचित आर्य नेताओं का मार्ग प्रशस्त हो यही हमारी शुभ कामनायें हैं।

क्रान्ति का शखनाद गूंज उठा है, अब कदम आगे बढ़ाना ही होगा। —स्नातक

## निर्वाचन

### आर्य समाज शाहपुरा (राजस्थान)

—आय समाज शाहपुरा [राजस्थान]

प्रधान—श्रीमान राजाधिराज साहब श्री सुदर्शनदेव जी
उप प्रधान—श्रीमती महारानी जी साहिबा श्री हर्षवन्तकुमारी जी
,, श्रीमान युवराज महोदय श्री इन्द्रजितदेव जी
मन्त्री—श्री रामस्वरूप बेली
प्रचार मन्त्री—श्री रामनिवास जी जोशी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मदनलाल जी लालोदिया

### महर्षि दयानन्द स्मारक करनवास

आजीवन व्यवस्थापक एव अधिष्ठाता श्री बाबूलाल दीक्षित एम ए करनवास
प्रधान—श्री देव मुनि वानप्रस्थी, अलीगढ
उप प्रधान—श्री उदयप्रसाद वैद्य डिबाई
,, श्री शिवनन्दनदास, मण्डी फतेगंज, बुलन्दशहर।
मन्त्री—श्री डा० रघुवीर शरण अलीगढ
उपमन्त्री—श्री महीपालसिंह प्रिंसिपल एम० ए० एल० टी०, आगरा
,, श्री गजराजसिंह एडवोकेट बुलन्दशहर
कोषाध्यक्ष—श्री सोहनलाल चेयरमैन डिबाई
निरीक्षक—श्री ठा० कुशलपालसिंह वाईस प्रिंसिपल हरदुआगज

### न्याय उप सभा

१—श्री देवमुनि वानप्रस्थी, अलीगढ़
२—श्री उदयप्रसाद वैद्य, डिबाई।
३—श्री शिवनन्दनदास, बुलन्दशहर

—राधेश्याम आर्य, प्रचार मन्त्री
नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर

## निर्वाचन—

—आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक अधिवेशन आबूरोड मे दि० १८ व १९ मई को हुआ, जिसमें श्री भगवानस्वरूप न्यायभूषण सर्वसम्मति से आगामी वर्ष के लिये पुन प्रधान निर्वाचित हुये। मन्त्री पद के लिये श्री श्रीकरण जी शारदा और डॉ भवानीलाल जी भारतीय के नाम प्रस्तुत हुए। श्री शारदा जी ने श्री भारतीय जी के पक्ष मे अपना नाम वापस ले लिया और श्री भारतीय जी मन्त्री चुने गये। श्री डॉ राजबहादुर जी कोटा, श्री सन्तोषसिंह जी कछवाहा जोधपुर श्री सुन्दर लाल जी भाटिया जयपुर, श्री माधोसिंह जी न्याती शाहपुरा, श्री नारायण राम जी गगानगर, श्री हरिदत्त जी ऐडवोकेट भरतपुर और श्री वैद्य धर्मसिंह जी कोठारी अजमेर उपप्रधान और श्री जेठमल जी आबूरोड, श्री गुमानमल जी चण्डक अजमेर सुश्री सरला शारदा और श्री सोहनलाल जी कटारिया अजमेर उपमन्त्री, श्री जतनचन्द जी एडवोकेट कोषाध्यक्ष और श्री सुखदेव जी अधिष्ठाता आर्य वीर दल, तथा श्री मदनमोहन शर्मा और श्री मुकुन्ददास सगठन मन्त्री चुने गये। —डॉ भवानीलाल भारतीय
—मन्त्री

—आर्यसमाज आर्यनगर भूड़ बरेली

प्रधान—श्री वीरेन्द्र वर्मा एडवोकेट
उपप्रधान—श्री रमेशचन्द्र चौ ,,
,, ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री—श्री ब्रह्मस्वरूप जी
उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्रनाथ जी
,, ,, महादेव आर्य
कोषा०—श्री श्रीराम जी
पुस्त०—श्री कृपाशंकर जी बी ए.
—मन्त्री

# वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप

**'वेद' मनुष्य-मनुष्य में जन्म से किसी भी भेद भाव को स्वीकार नहीं करता ! प्रभु की दृष्टि में सभी समान है ! छूत-छात और अस्पृश्यता शास्त्रीय दृष्टि से अमान्य है !**

श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री,
ससद-सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र.

## सामाजिक समस्याएँ

संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख-शांति और आनन्द की इच्छा करता है। लक्ष्य की पूर्ति के लिये वह व्यवस्थायें निर्मित करता है और उन पर चलकर जीवन में आनन्द का उपभोग करना चाहता है।

आदि सृष्टि में परमात्मा ने जहां हमें समस्त भौतिक वस्तुए दीं, वहां इनके उचित उपभोग और जीवन-मार्ग प्रदर्शन के लिये निर्देशन भी दिया। प्रभु का वह ज्ञान 'वेद' की ऋचाओ में मनुष्य मात्र की अनमोल सम्पत्ति है।

निर्विवाद रूप से 'वेद' ससार के पुस्तकालय का सब से प्राचीन ग्रन्थ हैं। उसका प्रत्येक आदेश विज्ञान, तर्क, युक्ति और मानव हित की कसोटी पर खरा उतरता है।

'वेद' द्वारा प्रतिपादित समाज व्यवस्था में मानव की समानता और एकता का वह उदात्त आदर्श उपस्थित है जिसकी उपमा अन्यत्र मिलनी असम्भव है। इस समाज व्यवस्था के अनुसार चलने वाले वेदानुयायी आर्यों की शिक्षा दीक्षा, रीति, नीति, सभ्यता सस्कृति और और आचार व्यवहार की गुरुता को आज प्रायः समस्त सभ्य ससार स्वीकार कर चुका है। आर्यों की सांस्कृतिक दीक्षा ( Cultural instruction ) और साम्राज्य के समय भू-मण्डल ने जिन स्वर्गीय दृश्यों को देखा वे अब कहां ? वे वास्तव में आदर्श मनुष्य थे और मनुष्य बनने बनाने के उच्चतम वैदिक सिद्धान्तों का पालन करते कराते थे। आइये उस पुराने काल की आपको भी एक झांकी दिखावें।

अपने काल का वर्णन करते हुये आदि कवि श्री वाल्मीकि जी लिखते हैं कि इस राष्ट्र के निवासी सभी पवित्रात्मा हैं। समान रूप से सब की बुद्धियां सर्वांगीण उन्नति में सलग्न हैं। सभी ज्ञानी हैं। कोई झूठ नहीं बोलता। न कोई व्यभिचारी है न व्यभिचारिणी। लड़ाई-झगड़ा और अशान्ति कहीं नहीं है। नाना विषयों के विशेषज्ञ (स्पेसिलिस्टस) धर्मात्मा विद्वान् हैं। सभी अपने-अपने धनो पर सन्तुष्ट हैं। लोभी कोई नहीं है। सभी गृहस्थी धनधान्य घी दुग्धादि उपभोग सामग्री से सम्पन्न हैं। दरिद्री कोई नहीं है। कामी, कजूस, नास्तिक और मूर्खों का सर्वथा अभाव है। सभी स्त्री-पुरुष धर्मात्मा संयत और समय निष्ठ हैं। सबके आहार-विहार ऋषियों के से हैं। सभी यज्ञ करते हैं। क्षुद्र और चोर कोई नहीं है। ब्राह्मणादि सभी वर्ण अपने-अपने कर्त्तव्य में रत हैं। सभी स्वस्थ सुन्दर और देश-भक्त हैं। राजद्रोही और देश-द्रोही कोई नहीं।

—वा० रा० बालकांड सर्ग ७

है न स्वर्गीय दृश्य ? कोई कह सकता है कि बात बहुत पुरानी है. क्या पता किस रूप में थे ? किन्तु इतने कथन मात्र से इस बात का प्रभाव कम नहीं हो सकता, क्योंकि जिस विद्वान के परिष्कृत मस्तिष्क में ये भाव थे, वह उनके प्रभाव और वास्तविकता से सुपरिचित था। उसे यह भी ज्ञात था कि इन मर्यादाओं से हीन राज्य को राज्य नहीं कह सकते और न उसके स्वामी राजा को राजा (व्यवस्थापक) न मान व मर्यादा-विहीन उक्त गुणों से सून्य मनुष्य को मनुष्य ही कहा जा सकता है अत्यन्त बहुत पीछे के पाश्चात्य ऐतिहासिकों के उद्धरणों से भी आर्यों के उस प्राचीन उदात्त चरित्र में कोई सन्देह नहीं रहता, क्योकि ये लोग भारतीय उत्तमताओ को घटा कर दिखाते आये हैं—दिखा सकते हैं बढ़ाकर नहीं। देखिये, एक ऐतिहासिक आर्यों के उस समय के चरित्र की आलोचना करता है। जब कि वे बहुत नीचे गिर कर आर्यों के स्थान में हिन्दू शब्द से बोले जाने लगे थे।

They [ Hindus ] are so honest as neither to require locks to their doors, nor writings to bind heir agreements.

कि वे हिन्दू इतने ईमानदार हैं कि न तो उनके घरों में ताला लगता है और न आपस के व्यवहार मे लेख्य हैं।

आर्यों का इतना उच्च चरित्र इतना सुव्यवस्थित राज्य और वह स्वर्गीय वातावरण कि जिसमें चौदह-चौदह वर्ष तक राज्य खड़ाऊं ही करती रहे, क्यों हो सका ? इसका मूल कारण था उनका समाज सघटनात्मक उच्च कोटि का ज्ञान। जिसको शास्त्रीय शब्दों मे वर्णाश्रम धर्म कहते हैं। वर्ण धर्म समाज में समानता (Equality) सहानुभूति (SyamPathy) और समवेदना (Common feelings) की भावना को उत्पन्न करने के लिये जादू है। और आश्रम धर्म, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य को जड़ से उखाड़ कर शान्ति स्थापना के लिये निष्फल न जाने वाली दिव्यौषधि है। अत. आइये, आज कुछ वर्ण धर्म पर विचार करें—

मनुष्य सामाजिक प्राणी (Social being) है, बिना समाज के उनका निर्वाह नहीं हो सकता। अकेला तो अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति भी नहीं कर सकता। आप ही देखें कि मनुष्य यदि स्वय ही कृषि करके अन्न उपज करे, स्वय ही अन्न निकाले, स्वय ही पीसे, स्वय ही पकावे, स्वय कपास उत्पन्न करे, स्वय काते, स्वय बुने, स्वय कपड़ा सींवे, स्वयं चमडा तैयार करे, और स्वयं जूता बनावे तो एक क्षण बिना विश्राम किये भी, वह अपने ही कार्यों मे लगा रहे तो भी पूर्ण रूप से करने में समर्थ न होगा। पुनः सभ्यता का विकसित होना तो दूर की बात है। अत· आर्यों ने मानव विकास तथा सामाजिक कार्यों का सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिये वेद के आदेशनुसार सम्पूर्ण मनुष्य समाज को चार विभागों में विभक्त किया था, और यह विभाजन नितान्त वैज्ञानिक है। यथा:—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः
पद्भयाशूद्रो अजायत ॥
यजु० ३१-११

इस मनुष्य समाज शरीर का ब्राह्मण मुख सदृश है, क्षत्रिय बाहु तुल्य है, वैश्य जघाओ के समान है और शूद्र पैरों के सदृश हैं। अर्थात् मानव शरीर में जो कार्य मुख करता है उसको समाज मे ब्राह्मण करे। जैसे कान, आंख, नाक, और रसना ये चार ज्ञानेन्द्रियां शिर ( मुख ) मे ही हैं और पांचवीं त्वचा (खाल) सारे शरीर पर है। ठीक इसी प्रकार ब्राह्मण समुदाय ज्ञान और विद्या का केन्द्र हो। अन्य पुरुषों की भांति सामान्य ज्ञान रखने पर मुख से उसकी उपमा

उचित न रहेगी। अत. मुख जिस प्रकार ज्ञानेन्द्रियो का केन्द्र है, उसी प्रकार विविध विषयो की विद्या से विभूषित विप्र का होना अनिवार्य है।

शरीर मे मुख को मुख्य होने के कारण ही मुख कहा जाता है अशक्त बाहु वाले और लूले-लगडे भी अपना जीवन सम्मान और सुख से व्यतीत कर लेते हैं। यदि उनके ब्राह्मण देवता (मस्तिष्क) सही सलामत हैं और मस्तिष्क विकृत होने पर तो मनुष्य मनुष्य ही नहीं रहता, संसार उसको पागल कहता है। ठीक इसी प्रकार जहां परिष्कृत मार्गाभिमर्शी तत्त्व दर्शी नेता ब्राह्मण नहीं हैं, उस समाज का संसार में कोई मूल्य नहीं। अन्यच्च मुख शरीर की रक्षा और पोषण के लिये प्रति पल प्रति क्षण ध्यान रखता है। उसके सुख साधन के लिये अनेक प्रकार के आहार-विहार की चिन्ता करता है। शरीर के रोगी होने पर अपनी सब इन्द्रियों से असहयोग करके कड़वी से कड़वी औषधि को प्रथम स्वयं खाता है। इसी प्रकार समाज की उन्नति और विकास के लिये सुख सम्पत्ति की वृद्धि और दुःख दारिद्रय के नाश के लिये प्रति पल प्रतिक्षण विचार करना-सतर्क रहना ब्राह्मण का कर्त्तव्य है। स्वस्थावस्था में मुख जैसे सुन्दर दृश्य देखकर, उत्तम शब्द सुनकर बढ़िया सुगन्ध सूंघकर और नाना प्रकार के स्वादु पदार्थ खाकर अपने को आनन्दित करता है। इसी प्रकार सामाजिक अवस्था अच्छी होने पर ब्राह्मण स्वान्त सुखाय चाहे जितना आत्म चिन्तन और साहित्यिक विवेचन करते हुये सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करे, किन्तु शरीर के अस्वस्थ होने पर मुख ने जैसे सब कुछ भुलाकर कटु औषधि का सेवन किया। इसी प्रकार से समाज के लिये ब्राह्मण को कष्ट सहन करने को उद्यत हो जाना चाहिये। इस कार्य के सम्पादनार्थ उसे सदैव प्राणों की बाजी लगाने को उद्यत रहना चाहिये। इसके अतिरिक्त मुख कार्य करता है, प्राप्त ज्ञान को वाणी से कहने का। ब्राह्मण भी शास्त्रों का अनुशीलन करके समाज को बढ़ावे उपदेश करे। वेद भी ब्राह्मणों के इन्हीं कर्मों का निर्देश करता है। यथा—

सम्वत्सर शशयाणा ब्राह्मणा व्रतचारिण। वाच पर्जन्यजिन्विता प्रमण्डूका अवादिषु ॥

—ऋ ७-१०३-१

सम्पूर्ण वर्ष समाधि की शान्त वृत्ति में रहते मर्यादानुसार आचरण करने वाले तथा सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन करने वाले ब्राह्मण कामनाओं को पूर्ण करने वाली वाणी को ओजस्वी शब्दों मे बोलें।

ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्मकृण्वन्तः परिवत्सरीणम्।
अध्वर्यवोधर्मिण सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्यं न केचित् ॥

ऋ० ७-१०३-८

सौम्य शान्त सर्वोपकारक, तपस्वी ब्राह्मण, वेद को समग्र संसार में फैलाने वाले, ज्ञान का विस्तार करने वाले, ससार के कार्य क्षेत्र में आते हैं और उपदेश देते हैं। अर्थात् शीतल स्वभाव, किसी से द्वेष न करने वाला, ज्ञान-विज्ञान का अधिकारियों को उपदेश देने वाला (पढ़ाने वाला) सत्यासत्य के निर्णय के लिये मनुष्य मात्र को उपदेश देने वाला ब्राह्मण को होना चाहिये। मानव धर्म शास्त्र भी इन्हीं कर्मों का प्रतिपादन करता है।

अध्यापनमध्ययन यजनं याजनन्तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानाम कल्पयत् ॥ मनु० १-८८

पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना, गुरु दक्षिणा देना और लेना अथवा दान लेना ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है। भगवद्गीता भी ब्राह्मण के गुण कर्मों पर अच्छा प्रकाश डालती है।

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम् ॥

भ गी १८-४२

शम, दम, तप, पवित्रता, सहन शक्ति, सरलता, ज्ञान, विज्ञान वेद शास्त्रों पर श्रद्धा, ये ब्राह्मण के स्वाभाविक कार्य हैं।

(२) दूसरा नम्बर बाहुओं का है। 'बाहु' बल के प्रतिनिधि हैं। शतपथ ब्राह्मण 'बाहुवै वीर्यम्' 'बाहुर्वैबलम्' कहकर यह स्पष्ट कह रहा है कि शरीर मे जो बाहु हैं, इनमे शरीर की रक्षा करने योग्य शक्ति होने के कारण ही इनका नाम बाहु पड़ा है। इसी प्रकार बलाधिक्य से समाज की रक्षा करने वालो को क्षत्रिय कहेंगे। बाहु सारे शरीर की रक्षा का कार्य करते हैं। शिर पर आघात हो, जंघा और पैरों पर हो, उनकी रक्षा करने के लिए बाहुओं को चौकन्ना रहना पड़ता है, और बाहु इस सम्पूर्ण रक्षा कार्य को मस्तिष्क की सहायता से करते हैं। तथैव समाज में क्षत्रिय ब्राह्मण की सम्मत्यनुसार कार्यों के सम्पादन को क्षात्र और और ब्राह्मण शक्ति यदि दोनों मिल कर कार्य न करेंगी तो काम ऊट-पटांग और हानिप्रद होकर लोक हितकर न हो सकेगा। वेद इस बात को कितने सुन्दर शब्दों में कहता है।

'यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरतः सह। त लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना।

-यजु. २०-२५

भाव यह कि जहां ब्रह्म और क्षत्र शक्ति परस्पर के सहयोग से कार्य करती हैं, वहां सब काम पूर्ण और निर्विघ्न समाप्त होते हैं। इस स्थल में एक बात और विशेष ध्यान देने योग्य है कि शरीर में पांच वायु प्राण-अपान, समान, उदान और व्यान होते हैं। इन पांचों वस्तुओं को व्यवस्थित रखना तथा जीवन शक्ति के केन्द्र प्राण, बाहुओं की रक्षा में, हृदय प्रदेश में बेखटके रहते हैं। इसी प्रकार जिस समय समाज अथवा राष्ट्र का क्षत्र बल जितना सशक्त और व्यवस्थित होगा उसका जीवन उतना ही सुरक्षित होगा। इसके विपरीत जहा इस अग मे निर्बलता है, उनके प्राण प्रत्येक समय जाने की बाट जोहते रहते हैं। वेद भी क्षत्रिय के निम्न गुण कर्त्तव्य बताता है।

ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासोरिशादसः। मरुद्भिरग्न ॥

—अथर्व० १-१९-५

गौर वर्ण वाले, विशालकाय शत्रु को मार गिराने वाले, मृत्यु से भी निडर उक्त क्षत्रियों के साथ रक्षार्थ आ।

अर्थात् शारीरिक बल सम्पन्न तथा ओजस्वी होना, निर्भयता, तथा प्रबन्ध रुचि आदि गुणों को रखने वाला क्षत्रिय होता है।

इममिन्द्र वर्धय क्षत्रिय म इमं
विशामेकवृष कृणुत्वम्।
निरमित्रानक्ष्णुह्यस्य सर्वा-
स्तान्रंधयास्मा अहमुत्तरेषु ॥

-अथर्व ४-२२-१

प्रभो इस क्षत्रिय 'रक्षक' को तू बढ़ा, मेरी प्रजा में इसको सबसे बलिष्ठ कर, इसके शत्रु इसके समक्ष न ठहर सकें और इसमें प्रतिस्पर्द्धा करने पर भी मुंहकी खावें अर्थात् नष्ट हो जावें।

यह मन्त्र भी यही बता रहा है कि क्षत्रिय में प्रबन्ध की योग्यता के बल से विरोधियों को जीतने की असाधारण शक्ति होनी चाहिये।

अयमस्तुधनपतिर्धनानामयं
विशां विशपतिरस्तुराजा।
अस्मिन्निद महिवर्चासि
धेह्यवर्चसं कृणुहि शत्रुमस्य ॥

अथर्व ४-२-३

यह क्षत्रिय धनों का स्वामी हो, प्रजाओं तथा व्यापारियों का योग्य पालक होने के कारण राजा होवे। हे प्रभो! इसको इतना तेजस्वी कर कि शत्रु इसके सामने आते ही फीके हो जावें। इन्हीं गुणों को मनु ने इसप्रकार लिखा—

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च। विषयेष्व प्रसक्ति श्चक्षत्रियस्य समासतः ॥ मनु० १-९

(क्रमशः)

सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में

# आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास द्वारा सनसनी पूर्ण रहस्योद्घाटन

[निज सम्वाददाता द्वारा]

सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में १९६८-६९ की वार्षिक रिपोर्ट स्वीकारार्थ प्रस्तुत हुई। रिपोर्ट के पृष्ठ ७ पर लिखा है कि विमला कुमारी और कुसुमलता जैन आदि को आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने पी. एच डी के लिये गाइड किया कुछ के थीसिस विश्व विद्यालयों के लिये समर्पित किये जा चुके हैं। कुछ के किये जाने वाले हैं। इस पर आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम ए. वेदाचार्य ने प्रस्ताव किया कि जिस प्रकार प०वैद्यनाथ जी ने न आचार्य परीक्षा पास की है और न एम. ए. नाही शास्त्री पर उनके भक्त और सार्वदेशिक सभा भी उनके नाम के साथ आचार्य और शास्त्री आदि लिखती है। इसी प्रकार पी एच. डी. और डी. लिट् सार्वदेशिक सभा पं० वैद्यनाथ जी के नाम के आगे और लिखा करे, जिससे रिपोर्ट पढ़ने वाले को विश्वास हो जावे कि आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री,ने एम. ए., डी.लिट्, पी. एच. डी. के छात्रों को गाइड किया। आचार्य विश्वश्रवाः जी ने कहा कि इस प्रकार का उपहास सार्वदेशिक सभा को शोभा नहीं देता।

## झूठी उपाधियाँ लगाने का विवरण

आचार्य विश्वश्रवाः जी ने बताया कि मैं इस समय बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की ऐक्जीक्युटिव कौंसिल का मेम्बर हूं, जब यह युनिवर्सिटी गवर्मेन्ट संस्कृत कालिज बनारस के रूप मे थी तब वहां डा० मङ्गलदेव शास्त्री एम. ए. डी.लिट् रजिस्टार और प्रिंसिपल थे। जब असिस्टेण्ड लाइब्रेरियन की जगह खाली हुई तब वैद्यनाथ जी डा० मङ्गलदेव जी की सिफारिश पर असिस्टेण्ट लाइब्रेरियन हो गये। वैद्यनाथ जी ने वहां कह दिया कि सर्टिफिकेट अभी मेरे पास नहीं है फिर दाखिल कर दूंगा। डा० मङ्गलदेव जी भी आर्यसमाजी थे उन्होने स्वीकार कर लिया। जब प० वैद्यनाथ जी वहाँ जम गये तब पौराणिक पण्डितों के साथ मिल कर डा० मङ्गलदेव जी के विरुद्ध आन्दोलन मे सम्मिलित हो गये। तब डा० मङ्गलदेव जी ने इन से सर्टिफिकेट मागे। इन पर कोई सर्टिफिकेट न था देते क्या तब कहने लगे कि मैं आचार्य और एम. ए परीक्षा पास तो नहीं हूं हाँ शास्त्री परीक्षा पास हूं। पर शास्त्री का सर्टिफिकैट खो गया है। तब डा० मङ्गलदेव जी ने कहा, कि किस सन् में शास्त्री परीक्षा पास की यह बताओ हम अपने रिकार्ड में ही देख लें, तब ये चुप हो गये। क्योंकि शास्त्री भी पास नहीं थे। तब बनारस से ये निकाले गये।

## पं० वैद्यनाथ जी पोरबंदर से भी निकाले गये

परोपकारिणी सभा के प्रधान मन्त्री श्री बा० श्रीकरण जी शारदा अजमेर ने लोगों को व्यक्तिगत बताया कि पं० वैद्यनाथ जी पोरबन्दर में लड़कियों के विद्यालय में सर्विस में हो गये थे, वहां से ये २४ घण्टे की नोटिस पर निकाले गये। इसी प्रकार अनेक स्थानो पर घटनायें हुई हैं। आर्यसमाज की सस्थाओं पर यह झूंठा आचार्य शास्त्री खूब चल जाता है पर यूनिवर्सिटियों में ये लकड़ी के घोड़े और ये जाली सिक्के नहीं चलते।

आचार्य विश्वश्रवाः जी ने बताया कि पी. एच. डी. की लड़कियां यहां सार्वदेशिक सभा का पुस्तकालय इस्तेमाल करने और पखे की हवा मे बैठने अवश्य आती थीं, पर उन कन्याओ के यूनीवर्सिटियों के नियत गाइड और थे। सार्वदेशिक सभा ने जो अनुसन्धान विभाग का बोर्ड लगा छोड़ा है, इस बोर्ड को किसी यूनीवर्सिटी ने माना नहीं है। इस प्रकार तो किताबों की दूकानों पर भी पी. एच. डी के छात्र पुस्तकों के निमित्त आते हैं तो वे दूकानें भी पी. एच. डी. के अनुसन्धान विभाग हो जावेगीं, और पुस्तकालयों के चपरासियों से भी छात्र किताबें पूछ कर निकाल कर पढ़ते हैं वे चपरासी भी पी. एच डी. के गाइड हो जावेंगे।

आचार्य विश्वश्रवाः जी ने कहा है कि लाला रामगोपाल जी शालवाले ने उन्हें एक दिन कहा कि एक पार्लियामेन्ट के मेम्बर का जितना बोझा है उतना प० वैद्यनाथ जी का बोझा सभा पर है। पं. वैद्यनाथ जी छै वर्ष से सार्वदेशिक में हैं और केवल छै किताबें मामूली साइज की लिखी गई हैं।

## सार्वदेशिक सभा का ७२ हजार रुपया पं० वैद्यनाथ पर व्यय हो चुका है

आचार्य विश्वश्रवाः जी ने सभा मे स्पष्ट रूप से कहा कि साढ़े सात सौ रुपये मासिक वेतन वैद्यनाथ जी का है, और ऊपर व्यय निवास नौकर आदि का मिलाकर एक हजार रुपये मासिक व्यय प. वैद्यनाथ जी पर होता है इस प्रकार एक वर्ष में बारह हजार और छै वर्ष में ७२ [illegible] नाथ जी पर व्यय हुआ। और पुस्तके लिखी गई हैं। और आ[illegible] यह है कि आगे भी तीन व[illegible] लिये प वैद्यनाथ जी का कार्य[illegible] निर्वाचन से पूर्व होने वाली अ[illegible] रङ्ग मे बिना एजेन्डा मे रखे हजार रुपये का व्यय पास दिया कि प० वैद्यनाथ जी आगे तीन वर्ष के लिये और [illegible] बढ़ाया जाता है। इस पर अन्त[illegible] सदस्यो ने विरोध अकित करा[illegible]

ला० रामगोपाल जी श[illegible] वाले यह अनुभव करते हैं कि[illegible] पुस्तके पांच-पाच सौ रुपये पृ[illegible] पृथक् विद्वानो को देकर लि[illegible] जा सकती थीं। प० वैद्यनाथ अन्दर ही अन्दर ला० रामगो[illegible] जी से विरोध करते हैं, और [illegible] बार लाला रामगोपाल जी को सार्वदेशिक सभा से निकालने षड्यन्त्र प० वैद्यनाथ जी ने था, पर आचार्य विश्वश्रवाः उस षड्यन्त्र के विरोध मे [illegible] गये, तब से ये आचार्य विश्व[illegible] जी के विरोध मे हो गये। [illegible] रामगोपाल जी भी प० वैद्य[illegible] जी से सावधान रहते हैं, पर [illegible] में खड़े होकर लीपा-पोती वैद्यनाथ जी की लाला रामगो[illegible] जी शालवाले और उस समय प्रधान के आसन पर बैठे दुःखनराम जी करते रहे पर [illegible] प्रान्तों के लोग, आचार्य विश्व[illegible] जी द्वारा रहस्योद्घाटन करने आश्चर्य चकित हो गये, और वैद्यनाथ जी भीगी बिल्ली समान चुप बैठे रहे। आ[illegible] विश्वश्रवाः जी ने कहा कि [illegible] गत बातो पर नीच लोग उ[illegible] होते हैं पर वैद्यनाथ जी ने [illegible] देशिक सभा मे इतने दिन रह[illegible] जो-जो हथकण्डे सार्वदेशिक की बर्बादी के लिये किये हैं [illegible] मैं उनको सभा के साम्ने र[illegible] तो ये मुंह दिखाने योग्य [illegible] रहेंगे, और अभी उठ कर [illegible]

[शेष पृष्ठ ८ पर]

# सार्वदेशिक सभा के इस वर्ष के निर्वाचन पर एक दृष्टि

[ गताङ्क से आगे ]

ेर समाचार पत्रो मे भी प्रका-
ान कर दिया कि अम्बाला मे
ने १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक
भा के अधिवेशन मे भाग नहीं
सकेगे, अत उन १५ प्रतिनि-
ायों को लेकर जो सार्वदेशिक
भा का निर्वाचन होगा वह सार्व-
ेशिक सभा के ही नियमानुसार
वैधानिक होगा । अत ७३ की
ास्थिति मे से ३१ व्यक्ति एक
रफ उठ कर बैठ गैये और २७
क्ति एक ओर रह गये, उनमे
१ प्रतिनिधि अम्बाला वाले बैठ
थे । अतः इनकी सख्या ४२ हुई ।
१५ कुल सख्या थी उसका तिहाई
१ होता है अतः उनका भी
रम हो गया और जो पक्ष उन
१ प्रतिनिधियों को बोगस मानता
। हाउस की संख्या उन १५
तिनिधियों को निकाल कर ९०
नता था उनका तिहाई ३०
ता है, पर वे भी ३१ थे, अतः
नका कोरम पूरा था । यह निर्वा-
न श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री
ी अध्यक्षता में हुआ । इस प्रकार
' स्थानों पर बैठकर सार्वदेशिक
भा के दो निर्वाचन सम्पन्न हुये,
ब इनका भी केस कोर्ट में
लेगा कि कौन-सी सार्वदेशिक
भा है । जो सार्वदेशिक सभा ने
ाब मे हथियार बरता वही
थियार सार्वदेशिक पर बर्ता गया
श्वर ही रक्षक है ।

एक पक्ष में मध्य प्रदेश, मध्य
ारत, राजस्थान, बिहार, बम्बई
ा बहुमत, दूसरे पक्ष में उत्तर
देश बंगाल, आजीवन सदस्य
ोर बम्बई बिहार के कुछ
ोक्ति ।

### ाकाश में सार्वदेशिक सभा और धरती पर प्रान्तीय सभाएं

किसी भी प्रान्त में झगड़ा
ने पर या झगड़ा कराये जाने
ा सार्वदेशिक सभा की न्याय
सभा के प्रधान की व्यवस्था से
उस प्रान्त से एक और प्रान्तीय
सभा खड़ी करके उससे प्रतिनिधि
सार्वदेशिक के लिये लेकर सार्वदेशिक
सभा का निर्माण किया जावेगा तो
सार्वदेशिक सभा आकाश मे होगी
और प्रान्तीय सभा धरती पर
होगी, जो लोग उनमे शामिले रहे
वे भी इस शैली से असहमत थे पर
किन्हीं विशेष परिस्थितियो मे
विवश होकर द्रोणाचार्य कृपाचार्य
भीष्मपितामह की तरह आवाक्
बैठे रहे, उनका भी हाल सुनिये ।

### लाला रामगोपाल जी शालवाले

जिन अम्बाला के १५ प्रति-
निधियों को एक पक्षबोगस कह
रहा है उन १५ प्रतिनिधियों मे
लाला रामगोपाल जी का नाम भी
था । अतः वे अगले वर्षों के लिये
अम्बाला में बनाई गई पजाब सभा
के द्वारा चुने गये ही थे पर उनकी
आत्मा में अन्दर से ग्लानि हुई
और जो सार्वदेशिक सभा में तीन
प्रतिनिधि प्रतिष्ठित रूप से बाहर
के लिये जाते हैं, जिनके लिये
किसी प्रान्त के प्रतिनिधि होने की
आवश्यता नहीं है उनमें लाला जी
ने अपने को रखा तब वे सभा में
बैठे ।

### श्री प्रताप भाई की स्थिति

यह सारा निर्वाचन डा०
दुःखनराम जी ने कराया प्रताप
भाई जब तक बम्बई से देहली
पहुचे तब तक यह सब दुर्घटनाएं
हो चुकीं थीं । यह सब सुनकर श्री
प्रताप भाई जी को बहुत दुःख
हुआ और वे प्रधान के आसन पर
नहीं बैठे तब जहां वे बैठे थे प्रधान
की डेस्क उनके आगे वहां ही ले
जाकर रख दी गई और उन्हें
विवश किया गया । डा० दुःखन-
राम जी को यह चाहिये था कि
एक घण्टे को अधिवेशन स्थगित
कर देते और प्रताप भाई की
प्रतीक्षा करते, पर शायद कोई
धारा स्थगित करने की नहीं
होगी । प्रताप भाई जब आये तब
मैंने उनसे कहा कि ईश्वर जो
करता है अच्छा ही करता है ।
आपका हवाई जहाज फेल हो गया
और आपके प्रधानत्व मे दो सार्व
देशिक सभा नहीं बनी, अच्छा ही
हुआ यह सारा श्रेय डा० दु खन-
राम जी को ही मिल गया, यदि
एक घण्टे की मीटिंग स्थगित कर
दी जाती तो सभव है कोई मार्ग
निकल आता ।

### भविष्य वाणी

अब अगले वर्ष सार्वदेशिक
सभा की न्याय सभा उत्तर प्रदेश
में एक और यू. पी सभा का
निर्माण करेगी, और उससे १५
प्रतिनिधि लेकर सार्वदेशिक सभा
का निर्वाचन होगा, श्री प० शिव-
कुमार जी शास्त्री ससद सदस्य
यू० पी० सभा के प्रधान और श्री
प्रेमचन्द्र जी शर्मा मन्त्री नारायण
स्वामी भवन लखनऊ में बैठे
रह जावेंगे । इसका सूत्र पात हो
चुका है, और वे लोग सार्वदेशिक
सभा के सूत्रसंचालक गुरु जी के
कमरे में ठहरे हुये हैं । और योजना
बन रही है । आर्य जगत् का जो
सर्वनाश हो रहा है, उसका संचा-
लक एक ही व्यक्ति है, जिसका
वर्णन मैं फिर कभी करूंगा । यहां
केवल इतना ही कहता हूं कि
ब्राह्मण जाति के जिस जगन्नाथ
रसोइआ ने रुपये के लोभ में
आकर ऋषि को विष दिया था,
वह ही किसी रौरव नरक को
भोग कर अब फिर से पैदा हो
गया । अब धन के लोभ से वह
आर्य समाज को विष दे रहा है,
उस रसोईआ जगन्नाथ का नाम अब
आधुनिक नाम ··· ··· ··· है ।
प्रतीक्षा कीजिये ।

---

[पृष्ठ ७ का शेष]

कमरे के अन्दर चले जावेगे, जो
यहाँ मेम्बर न होते हुये भी सभा
के अधिवेशन मे अनधिकृत रूप से
पार्टी को गाइडकरने को बैठते हैं ।

### डा० दुःखनराम जी का पं० वैद्यनाथ के बारे में विचार

सर्वदेशिक सभा के प्रधान सेठ
प्रताप भाई हवाई जहाज के फेल
हो जाने से अभी बम्बई से देहली
पहुच नहीं पाये थे, अत उपप्रधान
डा० दु.खनराम प० वैद्यनाथ जी
की लीपा-पोती जिस किसी प्रकार
कर रहे थे उस पर सब लोग हंस रहे
थे, क्योंकि इन्हीं डा० दुःखनराम
जी ने एक दिन सार्वदेशिक सभा
की अन्तरग सभा के अधिवेशन में
खुल्लम-खुल्ला कहा था कि पं०
वैद्यनाथ जी की लिखी एक अंग्रेजी
किताब की १५ प्रतियां खरीद
कर वे पटना ले गये, अपने मित्रों
को भेंट में देने के लिये । डा०
दुःखनराम ने भरी सभा में यह
बात कही कि पं० वैद्यनाथ जी
की लिखी उस अंग्रेजी किताब को
मैं रात में पढ़ने लगा, पढ़कर उन्हें
लज्जा आई कि ऐसी बेहूदी अंग्रेजी
इस पुस्तक की है कि मैं इसको
किसको दूं । डा० दुःखनराम जी
ने कहा कि मैंने वे १५ किताबें
घर पर डाल रखीं हैं और लज्जा
के कारण किसी मित्र को पढ़ने
नहीं दीं ।

आचार्य विश्वश्रवाः जी ने
सभा को बताया है कि आगे पं०
वैद्यनाथ जी वेद और फिजिक्स
आदि पर ग्रन्थ लिखने को बैठे हैं
और वेद का अंग्रेजी अनुवाद पं०
धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड का किया
संशोधित करेंगे । आर्य समाज पर
दया करो और उपहास मत
कराओ पर क्योंकि पं० वैद्यनाथ
के समर्थकों का बहुमत था, अतः
रिपोर्ट पास हुई ।

**उत्सव—**

आर्य समाज कौड़ियागज का ३४ वा वार्षिकोत्सव १४, १५' १६ जून सन् १९६९ को बडे समारोह के साथ मनाया जायगा। इस उत्सव मे आर्य जगत् के सुविख्यात सन्यासी, विद्वान् एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—महेन्द्रपालसिंह वैद्य
मन्त्री जिला सभा

## प्रवेश सूचना

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज मैनपुरी का नवीन सत्र जुलाई से चालू होगा। प्रवेश प्रारम्भ है। प्राचीन व्याकरण एव साहित्य विषय से वाराणसेय स० वि० वि० की आचार्य पर्यन्त परीक्षा दिलाई जाती है। पूर्व-मध्यमा (हाई स्कूल) तक गणित साइन्स इगलिश आदि सभी आधुनिक विषयो के अध्यापन की सुव्यवस्था है। शास्त्री व आचार्य श्रेणी के छात्रो को भोजन निःशुल्क दिया जाता है। १५ जुलाई तक प्रवेश होगा। प्रवेशार्थी छात्र निम्न पते से पत्र-व्यवहार कर प्रवेश नियम मँगालें।

देवेन्द्र प्रधानाचार्य
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय
सिरसागज। मैनपुरी

## आवश्यकता

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के लिये एक बी० एस० सी०, एक लिपिक हिन्दी इगलिश टाइप जानने वाला, एक पुस्तकालय का कार्य करने के लिये डिप्लोमा प्राप्त ( दो हिन्दी इगलिश जानने वाले सरक्षक ) अवकाश प्राप्त सज्जन भी लिये जा सकेंगे। स्वीकार्य वेतन लिखते हुये जून के अन्त तक आवेदन-पत्र निम्न पते से भेजें—

—नरदेव स्नातक
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वृन्दावन, मथुरा

## पातंजल योग साधना

सन्तोषी सन्यासी, वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी महात्माओ! भगवान् को गुरु मानो। 'भगवान् के भण्डारे' मे भोजन करो। या चाहो तो अपना व्यय आप करो। दिन रात योग मे लगो। पातञ्जल योग दर्शन पढ़ो। व्यास भाष्य और ऋषि की मान्यताओं का मनन करो। उनको अभ्यास में लाओ।

१५ वर्ष से हिमालय मे योग साधना करने वाले 'महात्मा सच्चिदानन्द स्वामी योगी जी महाराज' से पूर्ण सहयोग एव पथ-प्रदर्शन प्राप्त करो।

व्यवस्थापक—बाबा अर्जुनदेव
श्री नारायणस्वामी आश्रम
रामगढ़ तल्ला, नैनीताल

## श्री मदनमोहनजी वर्मा के देहावसान पर

निम्न समाजो ने शोक प्रस्ताव पास किये हैं—

आर्यसमाज मीरजापुर, आर्य समाज चौक लखनऊ, आर्य समाज ऐशबाग लखनऊ, आर्य समाज बिलथरा रोड बलिया, आ० स० हरथला कालोनी मुरादाबाद, आ० स० लल्लापुरा वाराणसी, आ०स० हरदोई, आ० स० आगरा नगर आगरा।

## सामयिक समस्याएं

(पृष्ठ २ का शेष)

कोई प्रमाण का उल्लेख अथवा सकेत नहीं मिलता।

इसी पुस्तक मे एक दूसरे स्थान पर लिखा है कि—

"ऋग्वेद मे जिन दास, दस्यु एव असुर जैसे नामो का उल्लेख किया गया है, उन्हे भी इस धारणा से समझने का यत्न किया कि शायद ये सब अनार्यमूलक अर्थात् आदिम जातियो के लिये ही प्रयुक्त हुये हो। पर मुझे कोई इस प्रकार का प्रमाण या सकेत नहीं मिला।'

तो आज की आधी उलझन तो इसी बात से सुलझ जाती है कि यहाँ की पुरानी जातियाँ यहीं की रहने वाली हैं। इनमे कोई बाहर से नहीं आया।

इसके आगे आधी बात रह जाती है नीच-ऊँच की। वेद मे इसका रच मात्र भी उल्लेख नहीं है। वेद में आर्य की दृष्टि से मानव समाज को चार वर्णो मे विभक्त किया है। उसमें कोई छोटा बड़ा नहीं है। सबका सुख-दुःख समान है। यदि महत्ता है तो उपयोगिता की दृष्टि से किसी अंग की मानी गई है, अन्यथा नहीं।

आज राष्ट्र को इस समस्या का समाधान ऋषि दयानन्द के प्रकाश मे करना चाहिये। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

## "सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएँ"

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ७ सितम्बर, १९६९ को सारे देश में सत्यार्थ रत्न, भूषण विशारद व शास्त्री की परीक्षायें होंगी। परीक्षा शुल्क नाममात्र, प्रमाण पत्र आकर्षक तथा प्रत्येक परीक्षा और केन्द्रो मे अनेक पारितोषिक होगे।

परीक्षा सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी के लिए श्री चमनलाल जी ए० ए० परीक्षा मन्त्री, आर्य समाज दरियागज २ अन्सारी रोड़, दिल्ली, से शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

**देवव्रतः धर्मेन्दु** — आर्योपदेशक, प्रधान
**ओमप्रकाश** — एम. ए. सी०, प्रधान मन्त्री

अर्य युवक परिषद्, दिल्ली (रजि०)

## आवश्यकता है

एक २५ वर्षीया, गौरवर्णा, सुन्दर और स्वस्थ अग्रवाल विधवा के लिये एक ३०-३५ वर्षीय सुन्दर पूर्ण स्वस्थ, और जीविका-सम्पन्न विधुर की आवश्यकता है। जात-पांत का कोई बन्धन नहीं। पत्र-व्यवहार मन्त्री, आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर (बिहार) मे करे।

—द्वारिकाप्रसाद ठाकुर
प्र० मन्त्री

## कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
### नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एव प्रसार मे दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यूनतम योग्यता हाई स्कूल उत्तीर्ण आयु १६ से २१ वर्ष तक। नियमावली तथा प्रवेश फार्म १) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज कर मंगाया जा सकता है। प्रवेशार्थी के प्रर्थना-पत्र २५ जून १९६९ तक लिये जायेंगे। (महिपालसिंह त्यागी) प्रिंसिपल

कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (सहारनपुर)

# वीरता के प्रतीक

—श्री विद्याभास्कर वाजपेयी

सन्ध्या का समय था। सूरज की तिरछी किरणें किले की मीनारों पर खेल रही थीं। किले के पीछे बबूल के घने जगलो मे पक्षियो के झुण्ड चहचहाते हुये आते और उन्हीं में विलीन हो जाते। कुछ दूरी पर खड़ा ताज महल जमुना के नील जल में अपना प्रतिबिम्ब निहार रहा था। आज मेवाड के राणा जसवन्तसिह के छोटे भाई अमरसिह दरबार मे पधारेंगे। अतएव उन्हे देखने के लिये आगरे की जनता किले की ओर दौड़ी चली आ रही थी।

किले मे शाहजहां का दरबार लगा हुआ था। राजपूत शूर-सामत और अमीर-उमराव सभी बैठे थे। अमरसिह दरबार में आये किन्तु उन्होंने शाहजहां को सलाम न किया। अमरसिह की यह धृष्टता शाहजहां के साले सलावत खां को असह्य हो उठी। उसने अमरसिह को 'गवार' कहकर भरे दरबार में अपमानित करना चाहा। किन्तु वाह रे क्षत्रिय। सलावत के मुख से केवल 'ग' ही निकला था, वह वार कह भी न पाया कि अमरसिह की दुधारी उसके सीने में समा गयी।

सलावत की छाती से रक्त के फव्वारे फूट निकले, वह मूर्छित होकर गिर पडा। पलमात्र मे दरबार की सारी शान-शौकत मिट्टीमे मिल गई। शाहजहां इस अकल्पित घटना से कांप उठा। वह प्राण बचाने के लिये भीतर घुस गया। अमरसिह आवेश में थे। उनकी आंखों में खून उतर आया था। दुधारी उनके हाथो मे थी। किसी का साहस न हुआ जो उनसे आंख मिलाता। सारा दरबार आतंकित था। जो जहां था, वहीं गड़कर रह गया। अमरसिह ने एक बार चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। अन्त में दुधारी उन्होंने कमर में कर ली और घोड़े पर सवार होकर किले के फाटक की ओर बढ़े।

अमरसिह ने पीठ घुमाई ही थी कि मुगल सैनिक चिल्ला पड़े—'पकड़ो' पकड़ो, जाने न पावे। इस जगली शेर को पकडकर पिंजडे मे बन्द करदो।"

किले मे हलचल मच गई। दुर्ग रक्षक ने आपत्ति सूचक तूर्य बजाया और किले का फाटक बन्द हो गया। अमरसिह को घोडा मोड़ना पड़ा। मुगल सैनिक बर्छी भाले चमकाते चारो ओर से दौड़ पड़े। अमरसिह को जब कोई मार्ग न सूझा तो उन्होने घोड़े को ऐंड लगाई। घोड़ा उछला और एक ही छलांग मे किले की दीवार फांद कर बाहर आ गया। शाहजहां हाथ मलता रह गया।

अमरसिह स्वाभिमानी थे, वीर थे। विजय और वीरगति पर उनका विश्वास था। जीवन जीने के लिये था किन्तु मृत्यु सदैव उनके पीछे चलती थी। यवनों को शीश न झुकाना ही उनका सकल्प था। उनकी रजपूती शान से मुसलमान तो चिढ़े थे ही कुछ राजपूत राजा भी इन्हें नीचा दिखाने की ताक में रहने लगे।

एक दिन अवसर पाकर अमरसिह का साला अर्जुन गौड उन्हें समझा बुझाकर किले में ले आया। अमरसिह आगे चल रहे थे अर्जुन गौड़ पीछे। अस्तबल के पास पहुंच कर दोनों घोड़ों से उतरे और अनुचरों को घोड़े सौंपकर दोनों पैदल चलने लगे।

किले के भीतर सीढ़ियां चढ़ते हुए अमरसिह ने पीछे घूमकर देखा अर्जुन गौड़ उनके पैरों से पैर मिलाता बढ़ रहा था। अमरसिह ने पूछा—'बादशाह ने यदि शीश झुकाने की शर्त रखी तो मुझे पुनः वही अभिनय करने को बाध्य होना पड़ेगा।'

'नहीं, नहीं राव जी, बादशाह उस दिन की घटना भूल गये। वह आप जैसे वीर से सन्धि कर दरबार की रौनक बढाना चाहते हैं। आपका दरजा बुलन्द करना ही उनका मकसद है।"

'सुना है बादशाह ने मेरे सिर की कीमत १० हजार दीनार कूती है?" चाल मन्द करते हुये अमरसिह ने फिर पूछा—'सच कहो गौड़ जी यदि आपकी इच्छा धनवान् बनने की हो तो मैं सहर्ष तैयार हूं।'

अर्जुन गौड़ सनाका रह गया। उसके मुख पर हवाइयां उड़ने लगीं। दिल धड़क उठा—'क्या राव जी ने मेरे मन का पाप पहचान लिया? कण्ठ को साफ करते हुये उसने उत्तर दिया—'आप राजपूतों की नाक हैं राव जी। जिस दिन आप नहीं होंगे तब रह ही क्या जायेगा राजपूताने में। आपकी ओट में राजपूत राजाओं के छत्र अभी भी यथावत हैं। अन्यथा यवन शासकों के चवर डुलाते होते मैं तो आपका सेवक हूं। मेरी बहन आपके वामांग को सुशोभित कर रही है फिर भी मुझ पर यह अविश्वास?' कहते-कहते अर्जुन गौड़ नेत्रो में अश्रु भर लाया और वाणी में कृत्रिम रुदन का पुट देते हुए बोला—'यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो लौट चलिए। मैं आपको अपनी सुरक्षा मे किले से बाहर किए देता हूं आप मेवाड़ सकुशल लौट जाइए।"

अमरसिह का माथा ठनका। इच्छा हुई—'लौट जाऊ। किन्तु इस प्रकार मृत्यु भय से लौट जाना कायरता होगी। यदि मेरे साथ छल हुआ तो अर्जुन गौड़ को पहले लूंगा और बादशाह [illegible]-

उनके पैर शनैः शनैः दीवाने आम की ओर बढ रहे थे। यवन सैनिक दास दासियां विस्मय विमुग्ध होकर देख रहे थे नर-नाहर को। दोनो परस्पर बातचीत करते हुए चल रहे थे।

'सच पूछा जाय तो सलावत को जो दण्ड दिया गया वह उसके अपराध से कई गुना बड़ा था।' अर्जुन गौड ने चर्चा को विस्तार दिया—'इससे बादशाह के हृदय को गहरी ठेस पहुची है।"

"उसने दुस्साहस किया था गौड जी" अमरसिह ने उलट कर जवाब दिया—'उसके स्थान पर यदि बादशाह होते तो उनकी भी वही दशा होती। रही बात अखरने की यह तो अपना-अपना स्नेह है। तुम्हीं पर कोई सकट आ जाय तो क्या देखता रहूंगा।'

'ठीक है राव जी' अर्जुन गौड़ बोला—'सलावत ने कर्तव्य पालन कर स्वामिभक्ति का परिचय दिया था। बादशाह का अपमान वह न सह सका इसी कारण उसे स्वर्ग सिधारना पड़ा। यदि आप पर कोई आंख उठाये तो मेरा कर्त्तव्य हो जाता है आपसे पहले उससे प्रतिशोध मैं लूं। सलावत अकारण ही प्राण गंवा बैठा ऐसा मैं नहीं समझता।"

अर्जुन गौड मुसलमानों के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखा रहा था। अमरसिह को सन्देह हुआ—"बादशाह ने अपने साले की मृत्यु का बदला लेने के लिये मेरे साले को ही तैयार तो नहीं किया?" वह कुछ समझने के लिए पीछे मुड़े तब तक अर्जुन गौड़ ने कहा "विश्वास रखिए राव जी। राजपूत का वचन ही उसका प्रमाण होता है।" अमरसिह को शान्ति मिली वह फिर आगे बढ़ने लगे।

दीवाने आम का फाटक बन्द था, खिड़की खुली हुई थी। अर्जुन गौड़ ने अनुरोध किया—"बादशाह आज के दिन केवल आपसे ही मिलेंगे। इसीलिए अन्य किसी को आने की आज्ञा नहीं है।"

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पञ्जीकरण सं० एल—६०
ज्येष्ठ २५ शक १८९१ अधिक आषाढ़ शु० १
[ दिनाङ्क १५ जून सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार। "आर्य्यमित्र"

दरबार मे प्रविष्ट होने के लिए अमरसिंह झुके ही थे कि अर्जुन गौड ने उन पर पीछे से वार कर दिया। अमरसिंह की गर्दन लटक गई और वे मूर्च्छित होकर वहीं गिर पडे। भारत मां का वीर लाल सदा के लिए ससार से विदा हो गया हतप्रभ दिवाकर ने प्रतीची में अपना मुंह छिपा लिया।

शाहजहां ने अमरसिंह की नगी लाश किले की बुर्ज पर टगवा दी, चील-कौओं के खाने के लिए।

अमरसिंह की रानी ने जब यह वृत्तान्त सुना तो वह पागल-सी हो उठी ! उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी कि वह क्या करे ? उसने अपने सैनिक भेजे किन्तु वे सभी अमरसिंह की लाश के पास भी न पहुच पाए, मारे गए। किले के चारों ओर मुगल सेना तैनात थी।

अभिमान में आकर शाहजहां ने राजपूतों को चुनौती दी—"जिसकी लाश चील-कौवे खा रहे हैं, उसके वंश में कोई भी ऐसा वीर नहीं जो उसकी लाश यहां से उठा ले जाय ?"

शाहजहां का वह कथन जब रानी ने सुना तो वह और भी अधिक बेचैन हो उठी। अपने कहलाने वाले सभी लोगों के सामने वह रोई, गिड़गिड़ाई किन्तु किसी ने उसकी सहायता नहीं की।

रानी अधीर हो उठी थी। जब उसे कोई सहारा न दीखा तो अन्त में उसने स्वयं जाना निश्चित किया। दासी को बुलाकर उसने आज्ञा दी—"ला मेरी तलवार और मेरे साथ चल। मै स्वयं महारल की लाश शाहजहां के किले से निकाल कर ले आऊंगी।"

रानी ने सैनिक वेश बनाया, तलवार ली। उसके साथ अन्तःपुर की सब नारियों ने तलवार, बर्छी और भाले सम्भाल लिये।

बालक रामसिंह ने जब यह सुना तो वह दौड़ा-दौड़ा आया और हाथ जोड़कर बोला—"चाची ठहरो। मेरे जीवित रहते आपको महल से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। चाचा के निष्प्राण शरीर की रक्षा एवं उसका अन्तिम सस्कार करना मेरा परम पावन धर्म है। मैं प्राण दे दूगा इसके लिये।"

रानी के नेत्रों से करुणा फूट पड़ी। रोते-रोते आशिष दी उसने—"महिष विमर्दिनी दुर्गा तुम्हारी सहायता करें।"

"रो मत चाची" घोडे को एँड़ लगाते हुये रामसिंह ने कहा—चाचा के शव के साथ अभी लौटता हूं।'

रामसिंह अमरसिंह के बडे भाई जसवन्तसिंह का एक मात्र पुत्र अभी केवल १५ वर्ष का ही था। पर था अपने पिता और चाचा की ही भांति वीर और पराक्रमी। रामसिंह का अश्व वायु वेग से उड़ चला आगरे की ओर।

दुर्ग का द्वार खुला था और तीर की भांति वह युवक अश्वारोही उसे पार करता भीतर चला गया। द्वार रक्षक उसे पहचान न पाये।

बुर्ज के निकट सैकड़ों मुस्लिम सैनिक तैयार थे। युद्ध छिड़ गया। मुंह में लगाम दबाये पन्द्रह वर्ष के उस वीर बालक ने जिधर दोनों हाथ उठाये उधर ही शत्रु लोटते दीखते। अन्ततः रामसिंह बुर्ज पर चढ़ गया।

[illegible] झुक कर वह घोड़े से उतरा, पूर्व [illegible] चाचा का शव उठाया और पुनः घोड़े पर बैठ गया। लौटते समय फिर वही युद्ध। किंतु उस तेजस्वी बालक का अनेक सैनिक मिलकर कुछ न बिगाड़ सके। वे ताकते रह गये और रामसिंह लाश को लिये हुए दुर्ग से बाहर निकल आया।

चाचा का शव लेकर रामसिंह लौटा और चाची के चरण छूने के लिये ज्योंही झुका कि रानी ने उसे छाती से लगा लिया। और स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोली—"बेटा तूने मेरी लाज रख ली। जिस प्रकार तूने राजपूतों की मर्यादा, प्रतिष्ठा और उनके धर्म की रक्षा की है वैसे ही भगवान् एकलिंग तेरी सदा रक्षा करें।'

महल में चिता पहले से तैयार थी। रानी अमरसिंह के शव के साथ चिता में प्रविष्ट हो गई। रामसिंह आंखों में आंसू भरे चुपचाप देखता रहा वह क्या बोलता, उसकी वाणी जो अवरुद्ध हो गयी थी।

# अनमोल बातें

१—जिन्हें दूसरे के दोषों और गन्दगियों की चर्चा करने में विशेष आनन्द आता है। समझ लो उन्होंने अपने दोषों की ओर दृष्टि नहीं डाली है।

२—हम दूसरो की आलोचना में जितना समय लगाते हैं उसका आधा भी अपनी आलोचना में लगायें तो हममहान् बन जायें।

३—शस्त्र बल का नहीं, भय का चिह्न है। क्षमा कमजोरी नहीं शौर्य है।

४—जब सत्कर्मों को असह्य कष्ट हों तब समझलो कि ईश्वर शीघ्र ही उस पर कृपा करने वाला है।

५—तुम जितना ही ढोंग करोगे उतना ही जगत् को नहीं अपने को धोखा दोगे। क्योंकि तुम्हारी दृष्टि जगत् की ओर रहेगी और जगत् की तुम्हारी ओर। जगत् तुम्हें हजारों आंखों से देखेगा और जगत् को तुम केवल दो ही आंखों से देख सकोगे।

६—पश्चाताप आत्मा का स्नान है।

७—दुनिया को तो कोई सन्तुष्ट कर ही नहीं सका। तू अपने को सन्तुष्ट करले तो बहुत है।

८—आदत रस्सी की तरह है रोज इसमें एक-एक बट दीजिये फिर अन्त में इसे तोड़ नहीं सकते।

९—बुद्धिमान मनुष्य अपने सारे अण्डे एक टोकरी में नहीं रखता।

१०—विकार की स्थिति आ जाने पर भी जिसके हृदय में विकार उत्पन्न न हो वही सच्चा धीर है।

११—बुराई करने के अवसर दिन में सौ बार आते हैं, पर भलाई करने का कहीं वर्ष में एक आता है।

१२—हम उपदेश सुनते हैं मन भर, देते हैं टन भर, पर ग्रहण करते हैं कन भर।

१३—ससार के दुखियों में पहला दुखी निर्धन, उससे अधिक दुखी ऋणी, इन दोनों से अधिक दुखी रोगी तथा सबसे अधिक दुखी वह है जिसकी स्त्री दुष्ट हो।

१४—ईश्वर की चक्की धीमी चलती है किन्तु बारीक पीसती है।

१५—नीच मनुष्य के साथ मित्रता, शत्रुता कुछ भी नहीं करना चाहिये। कोयला यदि जलता हुआ है तो हाथ जला देगा। यदि ठंडा है तो हाथ काला कर देगा।

१६—दुनिया में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है, अपनी आवश्यकताएं कम करो।

१७—विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला विद्यालय दुनिया में आज तक नहीं खुला।

● संग्रहकर्ता—प्रेमनारायण 'प्रेम' गंगा जमुनी [बहराइच]

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०दी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृ. गो. शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

लखनऊ–रविवार आषाढ़ ८ शक १८९१, अधिक आषाढ़ शु० १५ वि० सं० २०२६, दि० २९ जून १९६९

*परमेश्वर की अमृतवाणी—*

# मरने से पूर्व भगवान् को रक्षक बना लो

ओ३म् । आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्य रूपमवसे कृणुध्वम् ॥

ऋ० ४।३।१

[illegible] (तनयित्नोः) मृत्यु [illegible] के द्वारा (अचित्तात्) [illegible] होने से (पुरा) पूर्व [illegible] (अध्वरस्य) [illegible] (राजानम्) प्रकाशक (होतारम्) होता (रोदस्योः) दोनों लोकों के (सत्ययजं, सच्चे याज्ञिक, ठीक ठीक संगति करने वाले (रुद्रम्) रुद्र, भयकर किन्तु (हिरण्यरूपम्) हितकारी और रमणीय कान्ति वाले (अग्निम्) भगवान् को (अव से+आ+कृणुध्वम्) रक्षक बना लो ।

भगवान् ने जो यह संसार रचा है, यह एक यज्ञ है, और ऐसा यज्ञ है जो अध्वर है । अध्वर=अध्व-र मार्ग देने वाला ।

जीव को उन्नति का मार्ग इसी ससार में मिलता है । अतः यह अध्वर=मार्ग देने वाला है । ससार में हम प्रति दिन भयङ्कर मारकाट, घातपात, रक्तपात देखते हैं, परन्तु वास्तव मे यह यज्ञ तो अ-ध्वर=अ-हिंस=हिंसा रहित हैं । इस ससार-यज्ञ का पुरोधाः पुरोहित=ब्रह्मा भगवान् अत्यन्त दयावान् हैं, उनमें क्रूरता नाम को भी नहीं । उसके अध्वर में सम्मिलित होने के लिये तू भी अध्वर=हिंसा रहित हो के आ ।

भगवान् ने इस संसार यज्ञ की सब व्यवस्था सत्य पर की है, स्वय भगवान् ने कहा–

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञ च पृथिवीं धारयन्ति । महान् सत्य उग्र ऋत, दीक्षा, तप ब्रह्म, और यज्ञ इस पृथिवी को धारण किये हुये हैं ।

जब उसने विश्व की व्यवस्था सच पर की है, तब तो वह अवश्य सत्ययज रोदस्यो. दोनों लोकों का सच्चा याज्ञिक है । समस्त ससार की ठीक-ठीक व्यवस्था करता है । उसकी व्यवस्था के कारण पापियों को कष्ट मिलता है । वे रोते हैं, इससे इस ससार यज्ञ का ब्रह्मा उन्हें रुद्र प्रतीत होता है । रुद्र प्रतीत होने पर भी वह हिरण्य रूप अत्यन्त सुन्दर, कमनीय है बड़ा हितकारी है । दूर से अवश्य रुद्र=विकराल भासता है, परन्तु समीप से देखने पर वह हिरण्य रूप दिखाई देता है । मृत्यु सिर पर सवार है, जैसा कि उपनिषत् में कहा है–

महद्भयं वज्रमेतमुद्यतं य एतद्विदुर मृतास्ते भवन्ति ।

महा भयकर मृत्युरूप वज्र तय्यार है, जो इसे जानते हैं, वे अमृत हो जाते हैं ।

ऐसा न हो, कि मौत की बिजली तुम्हारे सिर पर गिरे और तुम समाप्त हो जाओ, और हृदय की भावनायें हृदय में ही लेकर चले जाओ । वेद कहता है–

अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्य रूपमव से कृणुध्वम्–

मृत्यु वज्र सिर पर पड़ने से पूर्व तुम हिरण्य रूप भगवान् को रक्षक बनालो ।

उसे यदि तुम रक्षक बनालो तो मृत्यु तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, वह काल का भी काल है । किन्तु इस में विलम्ब नहीं होना चाहिए । जाने, कब मृत्यु सिर पर आ पड़े । ऋषियों ने ठीक कहा है–इह चेद वेदीदथ सत्यमस्ति (के नो०)=इसी जन्म मे जान लिया तो ठीक है । अतः मरने से पूर्व उसे अपना लो ।

वर्ष ७१ | अंक २४

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम. ए.

इस अंक में पढ़िए !

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे, धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः। अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव, इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत॥ ऋ० २।२१।५

शब्दार्थ—(अप्तुरः) कर्मयोगी जन (यज्ञेन) यज्ञ के द्वारा (गातुम्) गान करने योग्य प्रभु को (विविद्रिरे) प्राप्त करते है। जो (धियः) अपनी बुद्धियों को, विचारों को (हिन्वाना) प्रेरित करने वाले, गति देने वाले, कार्यों में लगाने वाले होते हैं। वे ही (उशिजः) सफलता को प्राप्त करने वाले, और (मनीषिण.) मनीषी होते हैं। वे (अवस्यवः) सरक्षण की अभिलाषा करने वाले (आनिषद्) एकान्त में स्थिर चित्त से बैठकर (अभिस्वरा) स्वर सहित (गा) अपनी वाणी को वेद-वाणी को, प्रभु-भक्ति के गीतों को (हिन्वाना) प्रेरित करते, गाते हुये (इन्द्रे) अखिल विश्व के सर्वोपरि शासक, सकल ऐश्वर्य के स्वामी, परमेश्वर में अपने मन को लगाकर (द्रविणानि) सब प्रकार के मनोवांछित ऐश्वर्यों को (आशत) प्राप्त करते हैं।

भावार्थ—कर्म-योगी जन यज्ञ के द्वारा ही ईश्वर को प्राप्त करते हैं। जो लोग अपनी बुद्धि का उपयोग क्रिया के रूप में करते हैं, अर्थात् बुद्धि पूर्वक शुभ कर्म करते हैं, वे ही बुद्धिमान कहलाते हैं। जो लोग कर्म-योगमय ज्ञान का अनुष्ठान नहीं करते, वे बुद्धिमान नहीं होते। जो ईश्वर से आत्म-संरक्षण की प्रार्थना करते हैं, वे एकान्त में शुद्ध आसन पर बैठ कर और एकाग्र होकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना किया करते हैं। वे स्वर सहित प्रभु-भक्ति के गीत गाते हैं, उसके गुण, कर्म और स्वभाव का चिन्तन करते हैं और धारणा, ध्यान एव समाधि के द्वारा ईश्वर भक्ति के आनन्द को भोगते हैं।

## प्रवचन

# यज्ञ-विमर्श

यज्ञ का बाह्य रूप और अनुष्ठान तो बहुत ही सरल और साधारण-सा प्रतीत होता है; परन्तु वास्तव मे यज्ञ की सिद्धि एवं सफलता बहुत मुश्किल से होती है। बात के पक्के, धुन के धनी, सात्विकता सम्पन्न और निष्पाप जन ही यज्ञ कार्यों में सफल होते हैं। प्रयत्न करने पर भी सबका ऐसा सौभाग्य कहाँ कि सफलता को पायें। यज्ञवाद तो तप, त्याग और बलिदान का मार्ग है। इस पर चलने के लिये ध्येय-निष्ठा भी चाहिए, धैर्य और साहस भी। एवमेव साधन-सम्पन्नता भी।

किसी एक छोटी-सी भूल, चूक या त्रुटि से ही यज्ञ का अनुष्ठान भ्रष्ट हो जाता है और सारे किये-कराये पर पानी फिर जाता है। कभी काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और अहकार रूपी शत्रु आ-आकर यज्ञ को नष्ट कर देते हैं। कभी मन मे छिप कर बैठी हुई कोई हीनता, सकीर्णता या अनुदारता की भावना सहसा ही यज्ञ को बिगाड़ देती है। कभी कोई आधि-व्याधि आ धमकती है। कभी कोई प्रकोप उठ खड़ा होता है, कभी कोई। जब एक बार कोई विघ्न हो जाता है, तब बार-म्बार विघ्न होने लगते हैं। चोट पर चोट लगती है। ढोंगी और लोक-एषण के भूखे यजमान भी निराश हो जाते हैं। दक्षिणा के भूखे पुरोहित भी हिम्मत हार देते हैं। क्षते प्रहारा बहूनि भवन्ति।

यज्ञ का मुख ध्येय क्या है? देश, काल और पात्र-भेद से यज्ञ का ध्येय परिवर्तित होता रहता है। कभी एक लक्ष्य होता है, कभी दूसरा। हाँ, यज्ञ की परम्परा आगे ही आगे बढ़ती है, ऊपर ही ऊपर उठती है। यह एक से दूसरी सफलता की ओर बढ़ने का एक महान् अभिक्रम है। सामाजिक जीवन में सुदृढ़ सगठन यज्ञ का लक्ष्य या स्वरूप है। व्यक्तिगत जीवन में ईश्वर की प्राप्ति ही यज्ञ का लक्ष्य या स्वरूप है। इन दोनों के बीच-बीच मे भी बहुत से महत्व-पूर्ण मोड़ और पड़ाव आते हैं। वे भी तो यज्ञ के लक्ष्य हैं। अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति-पर्यन्त तो साधक को चलना ही होगा। मार्ग के स्टेशनों पर पड़ाव ही शास्त्रीय भाषा में सस्कार कहलाते हैं। लक्ष्य को प्राप्त कर लेने के बाद भी यत्न और सतर्कता की आवश्यकता तो रहती ही है। जैसे अभ्यास के अभाव में विद्या नष्ट हो जाती है, वैसे ही अभ्यास के अभाव में यज्ञ से प्राप्त दैवी सम्पदा भी नष्ट हो जाती है। स्वर्ग की प्राप्ति अर्थात् सुख विशेष और सुख की सामग्रियों की प्राप्ति होने पर, तथा मोक्ष की प्राप्ति अर्थात् सब प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिलने पर भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की आवश्यकता तो रहती ही है।

स्थूल-यज्ञों के लाभ भी स्थूल ही होते हैं। सूक्ष्म यज्ञों के लाभ भी सूक्ष्म होते हैं। दोनों की ही अपनी-अपनी विशेषतायें और उपयोगितायें हैं। संसार-सागर को पार करने के लिये यज्ञ एक उत्तम नौका के समान है। जो शुभ कर्मी और उत्तम विचारों वाले स्त्री पुरुष होते हैं, केवल वे ही इस यज्ञमयी नौका में सवार हो सकते हैं। यज्ञ-विमुख लोगों की यहां गति नहीं।

यज्ञ असहमत संगम का मार्ग है। यहाँ नानात्व में भी एकत्व के दर्शन होते हैं। यहां सम्यक्त्व, समन्वय, सन्तुलन, सुसन्धान और सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का सम्पादन एवं विचार किया जाता है। शुष्क-विवादों, कलुषित-वार्तालापों द्वेष-मूलक भावनाओ, कटुतापूर्ण समालोचनाओं, दुष्ट मित्रो, और अपरिपक्व गति मति वाले लोगों के लिये यज्ञ की पवित्र वेदी पर कोई स्थान नहीं है। त्याग, तप और बलिदान की इस पुण्य-भूमि में प्रलोभन-प्रिय, स्वकुल-विद्वेषी, विघटनवादियों का प्रवेश यहां निषिद्ध है।

सुदृढ़ सगठन रूपी यज्ञ की सिद्धि के लिये त्याग तप, और बलिदान का परिचय दीजिये। सबके मन में [illegible] की क्षमता अपने अन्दर उत्पन्न कीजिये। समय-समय पर अपना तन, मन और धन बहुत [illegible] प्रदान कीजिये। अनुशासन के नियमों का पालन दृढ़ता के [illegible] कीजिये। मानव [illegible] अनुवर्ती और निष्ठावान् [illegible] कर रहने का अभ्यास [illegible] बनाने को तो दुष्टो ने भी [illegible] सघ बना रखे हैं, परन्तु यज्ञ [illegible] सज्जनों के सग को ही कहते हैं। इस सघ-स्वरूप यज्ञ के परिपालन का एक महत्वपूर्ण सूत्र इस प्रकार है—"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"

आध्यात्मिक उन्नति रूपी यज्ञ की सिद्धि के लिये विद्या आदि सद्गुणों से युक्त सत्पुरुषों की सङ्गति सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना (शेष पृष्ठ १६ पर)

✱श्री प० जगत्कुमार शास्त्री "साधु सोमतीर्थ, देहली

लखनऊ-रविवार २९ जून ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## आर्यसमाज के लिये

आर्यसमाज मे क्रान्ति का शखनाद शीर्षक से हमने आर्य समाज की आन्तरिक मीमांसा करते हुये उसके सुधार के लिये आरम्भ किये गये प्रयत्नों का स्वागत किया था। हमारे विचारो से प्रभावित हो अनेक पाठको ने सार्वदेशिक सभा की आन्तरिक स्थिति के सम्बन्ध मे चिन्ता व्यक्त की है और दुःख प्रकट किया है, कि स्व० राजगुरु स्वामी ध्रुवानन्द जी के उत्तराधिकारी बने लोगो ने सार्वदेशिक सभा को केवल अपनी पद लिप्सा और अहं की पूर्ति का साधनमात्र बनाकर आर्यसमाज के काम में बाधा खड़ी की है। हम इस सम्बन्ध मे अधिक न लिखते हुये यही लिखना उपयुक्त समझते हैं कि सार्वदेशिक सभा के जिन अधिकारियों ने सभा को अपनी पदलिप्सा और स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाया आर्यजगत् उन्हे कभी क्षमा न करेगा और यही कारण है कि आर्य जनता के सच्चे और सम्मानित प्रतिनिधियों ने अब सभा के प्रधान और मन्त्री जैसे महत्त्वपूर्ण पदो पर जिन व्यक्तियो को चुना है वे आर्यजगत् के तपस्वी रत्न है। श्री प्रो० राम सिंह जी का सारा जीवन आर्य समाज की सेवा एव वैदिक विचार धारा के प्रचार-प्रसार मे ही बीता, आज भी वे अपने विशिष्ट ढग से देश धर्म और समाज की सेवा मे सलग्न है। इसी प्रकार प्रि महेन्द्र-प्रताप जी शास्त्री से आर्यजगत् मे कौन परिचित न होगा। सार्वदेशिक सभा के ३ वर्ष से भी अधिक पुराने सदस्य के रूप मे आप आर्य जगत् की सभी गतिविधियो मे साथ रहे और आर्यसमाज की सफलता के लिये निरन्तर प्रयत्न शील रहे है। शिक्षाजगत् मे भी उन्होने अपनी सेवाओ द्वारा आर्य समाज के गौरव को ही बढाया है ऐसे अनुभवी महारथियो के हाथ मे आर्यसमाज की बागडोर सौंपने का निर्णय वास्तव में बहुत ही सुन्दर और लाभदायक सिद्ध होगा।

आर्यसमाज मे इस नये परिवर्त्तन का क्या लाभ होगा यह तो समय ही बतलायेगा, पर इतना तो अनुमान करना ही चाहिये कि नया नेतृत्व आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने में तत्पर होगा और उसे सफलता भी मिलेगी।

आज आर्यसमाज अन्तर्द्वन्द का शिकार है। जिस प्रकार कृष्ण के अन्तिम समय मे यादव वश मे कलह था और उसका परिणाम दु खद हुआ, वैसी ही स्थिति आज कुछ यहाँ भी बनी हुई है। सब एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। पारस्परिक अविश्वास और स्वार्थ लिप्सा का वातावरण सव्याप्त है। ऐसे कठिन समय मे आर्यजगत् ने अपने नेतृत्व जिन हाथो मे सौंपा है, आशा है वे आर्य समाज के तिमिराछन्न आकाश मे नवज्योति का उदय करने मे सफल होगे।

हम एक निवेदन नये नेतृत्व से करना उचित और आवश्यक समझते है कि आर्यसमाज की शक्ति का आर्यसमाज के उद्देश्यो की पूर्त्ति मे ही उपयोग हो न कि इस शक्ति का दूसरे राजनैतिक दलो का पिछलग्गू बनकर दुरुपयोग किया जाय।

सार्वदेशिक सभा के पुराने कर्णधारों ने सार्वदेशिक सभा एवं आर्यजगत् की सम्पूर्ण शक्ति को अपने राजनैतिक दलीय विचारो के पोषण एव सम्बर्द्धन मे मुक्तहस्त प्रयोग किया और यही कारण है कि इतनी बडी सस्था के पत्र दूसरो के गीत गाते घाटे के कारण बन गये। किसी दल या सम्प्रदाय ने आर्य जनता की कोई सहायता नहीं की। हा अपने मन्चो का प्रचार कराने में वे सफल अवश्य हुए। हम नहीं जानते कि सार्वदेशिक और वैदिक लाइट पत्रो के बीस हजार वार्षिक के घाटो की पूर्ति कब कौन करेगा या इसी प्रकार आर्य जनता का कीमती धन व्यक्तिगत एव दलीय प्रचार पर व्यय होता रहेगा।

हम आशा करते हैं कि इस प्रकार के मनमाने खर्चों को रोका जायगा और इस प्रकार के घाटो की जाच की जायगी तथा उसके परिणाम आर्य जनता के सम्मुख रक्खे जायेंगे।

उपर्युक्त बात तो हम प्रसंगत: लिख दी है, इसके अतिरिक्त और भी ऐसी बातें हैं जिनसे सगठन के महत्व को गहरी क्षति पहुच रही है, उन सब बातो की निष्पक्ष जाच होनी चाहिए।

आर्यसमाज की नींव प्रजातन्त्र के आदर्श नियमो पर रखी गयी है, आर्य समाज ने किसी के अधिनायकवाद को स्वीकार नहीं किया पर आज धीरे-धीरे आर्यसमाज मे अधिनायकवाद बढ रहा है। नये नेतृत्व से हम आशा करते है कि वे जनता की भावनाओ को समझते हुये प्रजातन्त्र को अपने व्यवहार मे अधिक महत्व देगे।

सार्वदेशिक सभा के विधान को देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि उसकी सरचना मे कुछ मौलिक न्यूनताय है। हम अपने दो सुझाव इस अवसर पर यहाँ प्रस्तुत करना उचित समझते है—

(१) सर्वदेशिक सभा के प्रधान का निर्वाचन प्रत्येक आर्य समाज के प्रतिनिधि मतदाताओं द्वारा हुआ करे।

(२) आर्य जगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के गौरव को सुरक्षित रखने के लिये भारतवर्ष मे आर्यसमाज के अखिल भारतीय सगठन को शीघ्र ही विधान का अग बनाया जाय।

यदि इस बात को क्रियात्मक रूप दे दिया जाय तो सार्वदेशिक सभा की श्रेष्ठता और पवित्रता अक्षुण्य रहेगी और भारत के प्रदेश अपने आपसी मतभेदो को अपने दायरे मे ही सुलझाकर दूसरे देशों के सम्मुख एक आदर्श प्रतिनिधित्व स्थापित कर सकेंगे।

इसी प्रकार भारत की सामयिक समस्याओ मे उलझ कर आज सार्वदेशिक सभा का जो छोटा रूप बन गया है, अखिल भारतीय सगठन बन जाने से भारतीय समस्याओ का उत्तरदायित्व उस पर आ पड़ेगा, और सार्वदेशिक सभा विश्व की समस्याओ मे मानवता को नेतृत्व प्रदान कर सकेगी।

हम समझते हैं कि प्रधान के निर्वाचन की पद्धति मे मौलिक परिवर्त्तन स्वीकार करने और अखिल भारतीय सगठन को वैधानिक रूप देने से आर्य जगत् के वर्त्तमान [illegible] वातावरण में नवीन [illegible] आयेगा ऐसी हमारा दृढ मान्यता है।

आर्य जनता नये नेतृत्व को बधाई देती है, और आशा करती है कि जो आशायें उससे की जा रही है, उनकी पूर्ति से नया नेतृत्व सफल होगा।

—स्नातक

# आर्यसमाज और हिन्दी

*श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा, एम एल ए सभा मन्त्री

भारत के स्वतन्त्र होने पर देश का जो संविधान बना, उसमे हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया। जब तक हिन्दी अंग्रेजी का स्थान न ले तब तक के लिये अंग्रेजी भी चालू रखी गयी, इसके लिये एक अवधि निश्चित की गई परन्तु, अवधि समाप्त होने पर भी अंग्रेजी के भक्त जिनके हाथ मे देश की सत्ता है, अंग्रेजी को भी बनाए रखने के लिये नाना प्रकार के बहाने बनाते रहते हैं। हिन्दी का प्रचार और प्रसार सारे देश मे हो चुका है। यह ऐसी सरल और सुलभ भाषा है कि देश के कोने-कोने में यह बोली और समझ ली जाती है। अब तो हिन्दी के प्रचार और प्रसार मे सरकार के कुछ माननीय मन्त्री भी सहयोग और सहायता दे रहे हैं। कई प्रान्तीय सरकारों मे बहुत-सा कार्य हो उठा है। इस हिन्दी के प्रचार और प्रसार में आर्यसमाज ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजराती थे, और उन्होने संस्कृत के माध्यम से ही सम्पूर्ण विद्या प्राप्त की थी, वह जानते थे कि मैं जो कार्य करने जा रहा हूं, वैदिक धर्म और वेद का संदेश संसार को सुनाने जा रहा हू तो इसके लिये सर्वोत्तम भाषा हिन्दी ही है, जो सारे देश मे समझी जाती है। इसीलिये उन्होंने अपने महान् ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश, संस्कार-विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आर्याभिविनय आदि ग्रंथों को हिन्दी में ही लिखा, और छपाया। स्वामी दयानन्द ने हिन्दी के माध्यम से ही अपना प्रचार प्रारंभ किया।

महर्षि दयानन्द के पीछे जो आर्य आये उन्होंने महर्षि के इस अधूरे कार्य को बहुत कुछ आगे बढ़ाया। आर्यसमाज का सारा काम हिन्दी में होने लगा। आर्य समाज के जो सदस्य बनते थे, वे महर्षि का साहित्य पढ़ने के लिये हिन्दी सीखते थे। हजारों व्यक्तियों ने जिन्होंने फारसी लेकर एम ए किया था, उन्होंने ने भी आर्य समाज मे आकर हिन्दी सीखी, और उसका प्रचार प्रसार किया। आर्य समाज के पुराने नेता महात्मा हंसराज जी, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, भाई परमानन्द जी पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी, श्री नारायण स्वामी जी आदि ने आर्यसमाज की सेवा करते हुये हिन्दी को बहुत आगे बढ़ाया। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने हिंदी में सद्धर्म प्रचारक पत्र निकाल कर हिन्दी की अच्छी सेवा की। महात्मा नारायण स्वामी जी ने पहले उर्दू मे १८९८ मे मुहर्रिक नामक अखबार मुरादाबाद से निकाला था, उसके आदि सम्पादक श्री नारायण प्रसाद जी [ श्री नारायण स्वामी जी ] ही थे। यह पत्र सभा कार्यालय से ही निकाला गया था, फिर इस पत्र को १८९९ मे हिन्दी मे कर दिया गया और इसका नाम आर्यमित्र रक्खा। १९०४ मे आर्यमित्र मुरादाबाद से आगरा आ गया। और यहीं से यह १९४० तक निकलता रहा। आर्यमित्र ने हिन्दी के प्रचार और प्रसार मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा किया है। इसके सम्पादकों मे उच्चकोटि के साहित्यकार रहे हैं, जिन्होने हिन्दी के लिये अथक परिश्रम किया है। कविरत्न श्री डा० हरिशंकर जी शर्मा ने लगभग ८० पुस्तकें लिखकर हिन्दी के गौरव को बढ़ाया।

आर्य समाज की संस्थाओं के द्वारा जो कार्य हिन्दी के लिये हुआ है, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायगा। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि ने हिन्दी के उच्च कोटि के लेखक और साहित्यकार दिये हैं, जिन्होंने हिन्दी की श्रीवृद्धि में अनुपम कार्य किये हैं।

आर्यसमाज द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुलो और डी ए. वी कालिजो ने भी हिन्दी के प्रचार और प्रसार मे बहुत अच्छा कार्य किया है। इन कन्या गुरुकुलो के द्वारा लाखो लडकियां हिन्दी पढ़ लिखकर देश की सेवा मे सलग्न हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने भी अपनी हिन्दी परीक्षाओ द्वारा सारे देश मे हिन्दी का जाल बिछा दिया। सम्मेलन ने १२००) का मंगला प्रसाद पुरस्कार रखकर हिन्दी के उत्कर्ष को बहुत बढ़ाया।

इस पुरस्कार के विजेताओं मे आर्यसमाज के विद्वान् ही अग्रणी रहे हैं। जिन्होने अपने हिन्दी के उच्च साहित्य से देश की अद्भुत् सेवा की है।

आर्यसमाज के उपदेशको और भजनीकों ने भी हिन्दी में भाषण और भजन गा गाकर हिन्दी की खूब सेवा की है। भारतवर्ष मे ही नहीं, बल्कि विदेशो मे भी आर्यसमाज के द्वारा हिन्दी का प्रचार और प्रसार पर्याप्त हुआ है मौरीशस, जावा, फिजी, दक्षिण अफ्रीका, बंकाक ( स्याम ) बर्मा, नैटाल आदि में जहां जहां आर्य समाज हैं, उनके अपने डी ए. वी. स्कूल, कन्या पाठशालायें आदि चल रहे हैं, और उनमे हिन्दी पढाई जाती है। ऋषि दयानन्द की पताका भारत में ही नहीं विदेशो मे भी फहरा रही है। और उसके द्वारा हिन्दी का बहुत बडा काम हो रहा है।

आर्यसमाजो के कार्यालयों में सदैव से हिन्दी मे ही कार्य होता रहा है और आर्यसमाज का उच्चकोटि का साहित्य भी हिन्दी मे ही प्रकाशित होता है। आर्यसमाज के प्रकाशकों ने भी हिन्दी के उत्थान मे जो सहयोग दिया है, वह भुलाया नहीं जा सकता। इन प्रकाशको ने हिन्दी के प्रकाशन के कारण पर्याप्त आर्थिक हानि उठाई थी, परन्तु अब समय ने पलटा खाया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान मिला है, इसलिये अब जो हिन्दी मे उच्च कोटि का जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है उससे अब प्रकाशकों को पर्याप्त लाभ है।

आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं मे अन्य प्रान्तो और विदेशों से हजारों छात्र प्रति वर्ष पढ़ने आते हैं, और यह लौट कर अपने यहां हिन्दी के प्रचार और प्रसार का बहुत काम करते हैं। इस तरह आर्य समाज द्वारा हिन्दी का बहुत कार्य हुआ है, हो रहा है, और होता रहेगा*।

## जिला सहारनपुर के आर्य समाजों को सूचना

जिला सहारनपुर के समस्त आर्यसमाजो को विदित हो कि सभा के प्रचारक श्री रामचन्द्र जी वर्मा सहारनपुर प्रचारार्थ पहुंच गये हैं—वे जिले में प्रचार कार्य करेंगे। उनके पहुचने पर प्रचार की व्यवस्था करने की कृपा करें और सभा का प्राप्तव्य धन उनको देकर सभा की रसीद प्राप्त करने की कृपा करे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम एल. ए.
अधि० उपदेश विभाग

## विभा-विज्ञान का विवाह संस्कार

दि० ५-६ ६९ को सामवेद भाष्यकार आचार्य वीरेन्द्र अग्निहोत्री शास्त्री एम०ए० बलरामपुर अन्तरङ्ग सदस्य आ० प्र० सभा के पुत्र श्री विज्ञान शंकर एम एस सी बी ई, आनर्स, का विवाह स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद उपाध्य की पौत्री, श्री विश्वप्रकाश जी चौक, इलाहाबाद की पुत्री, आयु० विभारानी के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। श्री प० बुद्धदेव शास्त्री ने संस्कार कराया। इस अवसर पर आचार्य जी ने अथर्ववेद भाष्य प्रकाशनार्थ एक सहस्र रु० के दान का संकल्प किया।

विवाह संस्कार पर वरपक्ष की ओर से आ० प्र० सभा को ५१), जिला सभा को २५), आ.स. चौक को २५) कुल १०१) रु० दान में दिये गये।

इस अवसर पर राज्यपाल उ. प्र०, स्वामी विद्यानन्द विदेह, सर्व श्री बिहारीलाल शास्त्री, प्रकाशवीर शास्त्री, महेन्द्रप्रताप शास्त्री आदि की ओर से शुभ-कामनायें की गयीं।

# वृक्षों में जीव और अहिंसा

मैंने वृक्षो मे जीव के विषय पर दो लेख प्रकाशित कराये। एक 'आर्यमित्र' मे, दूसरा 'सार्वदेशिक मे । उन लेखो में मैंने विज्ञान (बाइलोजी), जीवन विज्ञान के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि वृक्षो मे जीव है, परन्तु ऐसी दशा मे है कि उनके शरीरों की निर्माण व्यवस्था को देख कर यह ज्ञात होता है कि उनको सुख और दु ख अनुभव करने के लिये सामर्थ्य नहीं है। यानी उनको सुख या दु.ख अनुभव नहीं होता, तो इनसे प्राप्त होने वाले पदार्थों के प्रयोग मे कोई हिंसा या अहिंसा का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता, यानी हिंसा और अहिंसा का प्रश्न नहीं है। तो पाप पुण्य का भी प्रश्न सामने नहीं आता। इस प्रसग मे यह शका हो सकती है कि यदि जीव है तो सुख दुख अनुभव होने की सामर्थ होनी चाहिये। इस शङ्का मे एक भ्रम है। जीवात्मा सुख-दु ख शरीर के माध्यम द्वारा अनुभव करता है। मुक्ति मे केवल कारण शरीर रहता है और जीव स्वच्छन्द रहता है। प्रलय मे कोई किसी प्रकार का शरीर नहीं रहता और उस अवस्था मे सुख-दु ख अनुभव नहीं होता। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सुख-दुःख अनुभव करने का माध्यम शरीर है और शरीर के अङ्ग, इन्द्रिय है। चेतन जगत् मे हमे ऐसे शरीर धारी भी दिखाई देते हैं जैसे कीडे जो आग मे नहीं जलते। ऐसे भी प्राणी हैं जिन्हे जल से या वायु से कष्ट नहीं होता। सृष्टि की आदि मे जब सृष्टि उत्पत्ति आरम्भ होती है तो पशुओ से पहले वृक्ष आदि की उत्पत्ति होती है। पशुओ मे मनुष्य भी सम्मिलित हैं जिनकी उत्पत्ति वृक्ष और अन्य पशुओ के पश्चात् होती है। इस स्थल पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि उत्पत्ति और जन्म का अर्थ शरीर और आत्मा के सम्बन्ध का जुडना है। आत्माये अनादि हैं। उनको कर्मो के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर मिलते हैं।

विकासवाद के सिद्धान्त मे विश्वास रखने वाले ही वृक्ष इत्यादि को अन्य पशुओ और मानव का पूर्वज मानते हैं। भेद दृष्टिकोण का है। रचना या (Creation) के सिद्धान्त के मानने वाले ही वृक्ष इत्यादि को समय की दृष्टि से पूर्वज मानते हैं, परन्तु उनका दृष्टिकोण आत्मिक है, और विकासवादियो का केवल प्राकृतिक। यह बात भी ध्यान मे रखने योग्य है कि खाने वालों से पूर्व खाने की सामग्री उपस्थित होनी चाहिए और ज्ञान प्राप्ति के समय मे जगत् की उपस्थिति आवश्यक है जिनके नाम आदि ज्ञान द्वारा मनुष्य को बताये जा सकें।

वृक्ष खाने के लिये हैं। सब प्राणियों को भोजन और औषधियाँ मुख्यता वृक्ष जगत् से ही प्राप्त होती है। एक प्रसिद्ध पुस्तक

## विचार-विमर्श

'The science of Living Things' में पृष्ठ १ पर यह लिखा है कि—

The grech plant food for all things living The green plant, owingits colour to the Possession of the mixture of pigments known as chlorophyll, is the primary source of food material for almost all the living creaturees that inhabit the earth"

अर्थात् क्लोरोफिल होने के कारण हरे पौधे पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियो के खाने के लिये है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वृक्ष आदि खाने की सामग्री प्राणियो के लिये उपलब्ध कराने के लिये सो गये है।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि उनसे खाने के पदार्थ प्राप्त करने मे दुख हो सकता है या नहीं। इसके लिये एक प्रसिद्ध पुस्तक 'Organic Evolution' नाम की है जिसके रचयिता R S Lull है। इस पुस्तक मे पृष्ठ १७ मे यह लिखा है,

"The Organic World is wade up of two types of organism, animal and plants, the first characte rised in general, by a more active senticut life, the others passive lackfng in mascular and nerues system almost inert"

अर्थात् प्राणी जगत् के दो विभाग है। एक पशु और दूसरे वृक्ष। पशुओ मे साधारणतया अधिक क्रिया शक्ति और अनुभव करने की शक्ति है। वृक्ष बिल्कुल मन्द है। उसमे नस, नाडियो का अभाव है, बिल्कुल निष्क्रिय है। इससे यह विदित होता है कि दु ख-सुख अनुभव करने के लिये नस नाड़ियो वृक्षों मे नहीं है परन्तु जीव धारियो मे हैं, एक और जीवन विज्ञान की पुस्तक है जिसके रचयिता Mr Moorey हैं, उस पुस्तक मे पृष्ठ ५०९ पर यह लिखा है—

Since the plant reacts to gravity it must perceive it If such a word can be used of organism which can not be conscious.

इसका अभिप्राय यह है कि वृक्षो मे जीव होते हुए भी चेतन्यता नही है क्योकि उनमे अनुभव करने की शक्ति नही है। ऋषि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश के १२ वे समुल्लास मे यह लिखा है देखो, पीडा उन्ही जीवो को पहुचती है जिनकी वृत्ति सब अवयवो के साथ विद्यमान हो जैसे बधिर से गाली प्रदान, अधे को रूप. .. वैसे वायु काय अथवा अन्य स्थावर शरीर वाले जीवों को सुख व दुख प्राप्त कभी नहीं हो सकता है जो अत्यन्त अन्धकार महा सुषुप्ति और महा नशा मे जीव है इनको सुख-दु ख की प्राप्ति मे मानना तुम्हारे तीर्थङ्करो की भी भूल विदित होती है। इस थोडे से कथन से यह बहुत समझ लेना कि उन जल, स्थल, वायु के स्थावर शरीर वाले

— श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट
आगरा

अत्यन्त मूर्छित जीवो को दु ख वा सुख कभी नहीं पहुच सकता।

उपरोक्त प्रमाणो से यह स्पष्ट हो जाता है कि वृक्षो के शरीर की व्यवस्था इस प्रकार की है कि उनसे उत्पन्न होने वाले पदार्थ विधि पूर्वक प्राप्त किये जा सकते हो, प्रयोग मे लाये जा सकते हो उनको कोई दु ख नहीं हो सकता और इसीलिये हिंसा का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। परमात्मा की रचना मे यह सुन्दरता है कि जीवित प्राणियो से प्राप्त पदार्थों को प्रयोग मे लाये। यह बात भी ध्यान मे रखने योग्य है कि वृक्षो मे वातावरण इस प्रकार का है कि उनकी सारी जीवन प्रक्रिया परोपकार के लिये है, और उनकी इस प्रक्रिया का ही यह परिणाम है कि जीवात्मा इस प्रकार के शरीरो मे पर्याप्त समय तक रहते हुए सुधर सकता है। और भविष्य मे दशा उन्नत हो जाने पर चेतन जगत् के अन्य प्राणियो में प्रवेश पा सकता है। ऐसी परस्थिति मे फल और [illegible] आदि के प्रयोग के समय कोई हिंसा आदि की भावना मन मे नहीं आनी चाहिये। मेरे पूर्व के लेखो के सम्बन्ध मे दो पत्र आये हैं। एक सज्जन यहाँ तक लिखते है कि उनको गन्ना चबाते समय यह अनुभव होता है कि हड्डी चूस रहे है। यह उनकी भूल है। उन्हे वृक्षो मे जीव मानने मे भी सकोच नहीं होना चाहिये और न उससे प्राप्त पदार्थो के प्रयोग मे। खाने मे आनन्द लेना चाहिये। महाभारत मनु प्रभृति शास्त्रों आदि मे भी वृक्षो को स्थावर

जहां कहीं बात चलती है—एक ही बात सुनाई देती है कि दुनिया बिगड़ गई है। किन्तु क्या बिगड़ा है इसका? सूर्य, चन्द्र, सितारे, पृथ्वी, जल, वायु इत्यादि तो सब वैसे ही हैं। पुष्प खिलते हैं, फल पकते हैं, नदियां बहती हैं, ऋतु भी पूर्ववत् बदलते रहते हैं—फिर बिगड़ क्या गया? जब विचार-धारा की गहराई में पहुंचे तो उत्तर मिला कि दुनियां के लोगों के विचार बिगड़ गये हैं। पूर्व की ओर के लोगों के विचार बिगड़ने मे चार्वाक और वाममार्गियो ने भाग लिया। और पश्चिम की ओर के लोगो के विचरो को डार्विन, फ्रायड और पावलेव ने बिगाड़ा। डार्विन और उनके साथियों ने यह विचार दिया कि मनुष्य पशुओं की सन्तान है, और मनुष्यों को पशुओं की भांति रहना चाहिए। जिस प्रकार पशु अपनी इन्द्रियों की तृप्ति के लिये किसी मर्यादा में नहीं रहते, वैसे ही मनुष्यो को भी करना चाहिये। और चार्वाक तथा वाममार्गियों ने भी इन्द्रियो की तृप्ति के लिये पतन की ओर ले जाने वाले विचार फैलाये। परिणाम यह हुआ कि दुनियां के लोगों का जीवन इन्द्रियाश्रित जीवन हो गया। और किसी भी इन्द्रिय की तृप्ति विषयों मे नहीं हो सकती। जब तृप्ति नहीं होती तो दु:ख की मात्रा बढ़ने लगती है। और वही अतृप्त इन्द्रियां पतन और बिगाड़ की ओर ले जाती हैं। बिगड़े हुए विचारों के कारण मनुष्य पशुता की ओर अग्रसर होता चला जा रहा है। पशुता निजी स्वार्थ की ओर ले जाती है। मानवता केवल अपने लिये नहीं, दूसरो को सुखी बनाने की ओर ले जाती है।

---

योनि में माना गया है। स्वावल से अभिप्राय है कि जीव है परन्तु चेतन्यता और ज्ञान की चेष्टा नहीं है। विस्तार के भय से उनको यहां उद्धृत नहीं कर रहा हूं, उनको वहां देखा जा सकता है।

✱

# दुनियां बिगड़ी क्यों?

✱ महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

पशु और मनुष्य मे केवल इतना ही भेद है कि मनुष्य में बुद्धि विशेष है। यदि मनुष्य की बुद्धि बिगड़ गई तो वह भी पशु बन गया। छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने ठीक लिखा है कि—

"अथ खलु: क्रतुमयः पुरुषो यथा तुरस्मिंल्लोके भवति तथेत: प्रेत्य भवति' –(छान्दोग्य)

अर्थात् यह मनुष्य विचारो का बना हुआ है, जैसा यह इस लोक में विचार करे वैसा ही आगे बन जायगा।

और मिस्टर जी. डब्ल्यू. एफ. हेगल ने यह लिखा है कि—

"Thought is indeed essential to humanity It is this, that distinguishes us from the brutes."

अर्थात् मानवता के लिये विचार ही अत्यन्त आवश्यक हैं। ये विचार ही हैं जो हमें पशुओ से भेद कराते हैं।'

निश्चित रूपेण बिगड़े विचारों ने ही दुनियां को बिगाड़ रखा है। इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने पूना में व्याख्यान देते हुये एक सौ वर्ष पूर्व कहा था कि—

वेद मन्त्रों के आधार से वायुयान तैयार कराया जा सकता है। परन्तु यह एक तुच्छ बात है। मैं तो ससार के लोगों की विचार धारा बदलना चाहता हूं, ताकि दुनियां के लोग सुखी हो सकें।

भारतीय इतिहास के पन्नों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि जब तक वेद और उपनिषद् के विचार का प्रचार रहा तब तक मानवता भी जीवित रही, परन्तु आलस्य, प्रमाद और स्वार्थ के कारण लोग वेद-विचार से दूर होते चले गये—मनमानी होने लगी। नाना मत-मतान्तर फैलने लगे। धर्म के नाम पर दुकानदारी चलने लगी, और दुनियां बिगड़ने लगी। इस युग के देवता स्वामी दयानन्द की प्रबल इच्छा थी कि पुनः वेद विचार का प्रसार हो जाये। क्योंकि वेद ही मानवता की ओर ले जाने वाले ईश्वरी आदेश हैं। पश्चिमी विद्वानों ने भी वेद के प्रति ऐसी ही आस्था प्रकट की है। एक ईसाई पादरी बिशप हैरन ने लिखा है कि—

The vedas alone stand serving as beacon of divine light in the onward march of Humanity

"अर्थात् वेद ही मनुष्यमात्र की प्रगति के लिये दिव्य ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं"

परन्तु दुःख की बात है कि स्वामी दयानन्द ने वेद विचार के प्रसार के लिये जिस आर्य समाज की स्थापना की थी वह इस कार्य को पूरा नहीं कर रहा और किसी अन्य मार्ग पर जा रहा है। आज की दुनियां के अन्दर मायावाद का भयकर तूफान उठ खड़ा हुआ है। इस तूफान से बचना महा कठिन है। परन्तु निराश होने की कोई बात नहीं। यत्न करना अपना धर्म है। सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि इस तूफान का सामना करने के लिये योजना बनानी चाहिये, क्योंकि यह युग योजना का है। अब तो बच्चे भी योजना से पैदा किये जा रहे हैं। अतः विचारवान् महानुभावों को चाहिये कि किसी रमणीक स्थान पर एक सप्ताह निवास करके गम्भीरता से विचार कर योजना बनाएं ताकि वेद विचार के प्रसार के लिये क्रियात्मक पुरुषार्थ प्रारम्भ किया जा सके। यदि यह कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करे तो अच्छा होगा। विचार विनिमय के पश्चात् आर्य समाज के सगठन के विधान में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है, और ऋषि दयानन्द के मार्ग को अपनाया जा सकना है। तभी बिगड़ी दुनियां सुधर सकेगी। अभी तो हर ओर से यही सुनाई देता है कि—

"चित्त में उलझन नित नई, छई निराशा घोर,
शूल बना हर सांस है, जीवन रोम कठोर।"

✱

---

## अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों को विदित हो कि सभा की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन सभा श्री प्रधान जी की आज्ञानुसार दि० १३ जुलाई १९६९ दिन रविवार को श्री नारायणस्वामी भवन लखनऊ मे बुलाया जाना निश्चित हुआ है। अतः सर्व सदस्य महानुभावों से प्रार्थना है कि उक्त तिथि पर अवश्य लखनऊ पधारने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए० सभा मन्त्री

# वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप

**'वेद' मनुष्य-मनुष्य में जन्म से किसी भी भेद भाव को स्वीकार नहीं करता ! प्रभु की दृष्टि में सभी समान है ! छूत-छात और अस्पृश्यता शास्त्रीय दृष्टि से अमान्य है !**

## सामाजिक समस्याएँ

( गतांक से आगे )

मनुष्यत्व की दृष्टि से सभी वर्ण मनुष्य हैं, न उनमे कोई ज्येष्ठ है न कनिष्ठ। ज्येष्ठता और कनिष्ठता लाने वाले तो गुण होते हैं। मनुष्य योनि क्योंकि कर्म और भोग दोनों की योनि है, अतः इस में गुणो के साथ कर्म पर भी ध्यान देना अनिवार्य है अतः ब्राह्मणादि वर्णों का निर्णय गुणों और कर्म के आधार पर होने के कारण ही वर्णों का नाम वर्ण पड़ा। क्योंकि वर्ण का शब्द अर्थ गुण और कर्म है। वरणीया वरितुमर्हा, गुण कर्माणि च दृष्टवा यथायोग्यं व्रियन्ते ये ते वर्णाः। गुण और कर्म को देखकर जो किसी समुदाय विशेष में स्वीकार किये जावें वे वर्ण कहलाते हैं। निरुक्त को वर्ण का अर्थ कर्म अभीष्ट नहीं। उनको 'वृतमिति कर्म नाम वृणोतीति सतः।' नि० आ० २-पा० ४॥ को चाहिये। यहां 'वृञ्' धातु से बनने वाले व्रत शब्द का अर्थ स्पष्ट कर्म किया है और साथ ही हेतु दिया है 'वृणोतीति' सत. क्योंकि शुभ कर्म मनुष्य को ढक लेते हैं, अतः व्रत. का अर्थ कर्म है। इसी प्रकार इसी धातु से निष्पन्न हुये वर्ण शब्द का अर्थ भी कर्म है। अत. स्पष्ट है कि वर्ण शब्द का अर्थ वर्णों 'वृणोते' के आधार पर गुण और कर्म है। वर्ण शब्द गुण और रंग के अर्थ मे तो अब तक प्रचलित है। वह गौर वर्ण है .पीत वर्ण है ऐसा प्रयोग बहुधा लोक मे होता है। अत' साराश यह निकला कि वृक्ष, पशु, पक्षी, सामान्य विशेष जाति का केवल सामान्य जाति वाले मनुष्य के साथ उदाहरण सामजस्य नहीं घटता। पशु कहने से सब प्रकार के पशु, पक्षी कहने से सब प्रकार के पक्षी, वृक्ष कहने से सब प्रकार के वृक्ष गृहीत होते हैं; किन्तु गौ कहने गौ जाति के पशुओ का, तोता कहने से तोता जाति के पक्षियो का ही, आम्र कहने से आम्र जाति के वृक्षो का ही ग्रहण होता है; अन्य का नहीं मनुष्य सामान्य जाति है। मनुष्य कहने से सब मनुष्यों का ग्रहण हो जाता है अत' सामान्य जाति का सामान्य विशेष जाति के साथ मिलान करना भारी भूल है। हॉं जिस प्रकार आम्र मे खट्टे मीठे आदि गुणो का भेद होता है, वैसे तोते-तोते में पढ़ने न पढने के गुण का भेद होता है, गौ गौ में न्यून और अधिक दूध आदि देने के गुण का भेद होता है उसी प्रकार मनुष्यो मे अच्छे और बुरे गुण और कर्मों के आधार पर भेद हैं। इसी को शास्त्रों ने वर्ण कहा है। यदि सामान्य विशेष जाति पशु, वृक्ष, पक्षियों का सा मनुष्य मे भी कोई भेद होता हो जिस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार के पशुओं के झुण्ड मे से गौ भैंस आदि को पृथक्-पृथक् पहचान लेते हैं वृक्षो और पक्षियो को पृथक् पहिचान लेते है इसी प्रकार मनुष्यों के झुण्ड मे से ब्राह्मण क्षत्रियादि को पहचान लेते किन्तु कोई नहीं पहचान सकता। सभी नये मनुष्य से मिलने पर बहुधा पूछते हैं आप किस वर्ण के हैं? अन्यच्च इन टटपूंजिये ब्राह्मणो की तो बात ही क्या है? अच्छे ऋषि भी किसी को देखकर नहीं पहचान सके और अन्त मे गुणो और कर्मों के आधार पर ही उनके वर्ण का निश्चय किया। जन्म के कारण नहीं। इसको विशेष समझने के लिये छान्दोग्योपनिषद् की प्रसिद्ध कथा पर दृष्टि डालिए।

सत्यकामो ह जाबालो जबालां मातरमामन्त्रयांचक्रे 'ब्रह्मचर्य भवति विवत्स्यामि' किं गोत्रोऽहमस्त्रीति।

जबाला के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता जबाला से पूछा कि माता जी मैं ब्रह्मचर्यवास करना चाहता हू, बताइये मेरा क्या गोत्र है?

सा हैनमुवाच नाह वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि बह्वह चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामालभे। साहमेतन्नवेद यद्गोत्रस्त्वमसि। जबाला तु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि स सत्यकाम एव जबालो ब्रवीथा इति।

जबाला ने उत्तर दिया कि पुत्र मैं नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है? मै इधर-उधर फिरती थी, तू मुझे जवानी में प्राप्त हुआ, सो मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है? बस मै इतना ही बता सकती हू कि मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्यकाम है। इसलिये तुम अपने परिचय मे केवल इतना ही कहो कि मै जबाला का पुत्र सत्यकाम हू।

स हारिद्रुमत गौतममेत्योवाच, ब्रह्मचर्य भगवति वत्स्याम्युपेयां भगवन्तमिति।

सत्यकाम हारिद्रुमत गौतम के पास आया और बोला भगवन्! आपके पास ब्रह्मचर्य वास करूगा। इसी इच्छा से मै आपकी सेवा मे आया हू।

तं होवाच 'किं गोत्रो न सौम्य इति, स होवाच नाहमेतद्वेद भो. य यद्गोत्रोऽहमस्मि, अपृच्छमातरं सा मा प्रत्यब्रवीत्, बह्वह चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे साहमेतन्नवेद यद्गोत्रस्त्वमसि सोऽ सत्यकामो जाबालोऽस्मिभो. तं होवाच नैतद्ब्राह्मणो विवक्तुमर्हति समिधसौम्याहरोपत्वानेष्ये सत्यादगा इति।

छांदो० प्रपा० ४। ख० ४

गौतम ने उससे पूछा कि सौम्य तू किस गोत्र का है, उसने उत्तर दिया भगवन् मैं नहीं जानता कि मैं किस गोत्र का हू। मैने अपनी

*श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री,
ससद-सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र.

माता से पूछा था—उसने मुझे कहा कि इधर-उधर घूमते हुए यौवन काल मे मैंने तुझे प्राप्त किया है, सो मैं नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है? हॉं मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्यकाम है। इस प्रकार भगवन् मै जबाला का पुत्र सत्यकाम हू। ऋषि ने उत्तर मे कहा कि भाई यह कितना उत्कृष्ट कोटि का सत्यगुण ब्राह्मण के अतिरिक्त और किसी मे नहीं हो सकता? जा सौम्य समिधा ले आ, मै तेरा उपनयन करूँगा क्योकि तू सचाई से नहीं गिरा है। इस कथा से यह सुतरां स्पष्ट है कि ब्राह्मणादि को पहचानने का यदि कोई जन्मगत चिह्न होता तो ऋषि सत्यकाम को देखते ही पहचान लेते। किंतु ऐसा नही हुआ। सत्य जो कि ब्राह्मण का एक मुख्य गुण है, उसी के आधार पर ऋषि ने उसे ब्राह्मण माना। कर्ण ब्राह्मण बनकर परशुराम के पास अस्त्रविद्या का अभ्यास करता रहा, पर परशुराम उसको नहीं पहचान सके, और जब पहचाना तो गुण कर्म की कसौटी पर कसके ही। अत सिद्ध हो गया कि वर्ण निर्णय गुण और कर्म के आधार पर होता रहा है, होता है और होगा।

जन्मना वर्ण को सिद्ध करने के लिये एक और युक्ति दी जाती है, उनको भी देख लीजिये कि नींबू

कितना ही उत्तम खाद्यादि (पर बढ़ा लिया जावे वह जिस (प्रकार आम नहीं बन सकता, और (खा)द्यादि के अभाव मे आम घटकर (नीं)बू नहीं बन सकता। इसी प्रकार (शू)द्र कितना ही विद्वान धर्मात्मा (क्)यों न हो? वह उच्च वर्ण का (न)हीं हो सकता, और ब्राह्मण (कि)तना ही हीन गुण क्यो न हो (नी)चे के वर्णों मे नहीं जा सकता।

उत्तर—इसका निर्णय भी पूर्व लिखित युक्ति से ही हो सकता है कि नींबू और आम भिन्न-भिन्न जाति के (अर्थात् दार्शनिक परिभाषा मे सामान्य विशेष जाति वृक्ष हैं, और मनुष्य है एक जाति। इसका और उसका क्या साम्य? यह युक्ति तो पौराणिक पक्ष की पुष्टि न करके हमारे पक्ष की पुष्टि करती है कि जिस प्रकार खाद्यादि से नींबू का बढ़ना आदि गुण सम्पन्न होना और खाद्यादि के अभाव मे हीन गुण होना लोक सिद्ध है। इसी प्रकार विद्यादि उत्तम गुणों से मनुष्य का ब्राह्मणादि बनना और उसके अभाव में शूद्रादि बनना सिद्ध ही है।

एक और लगड़ी सी युक्ति पौराणिक अपने पक्ष की पुष्टि में दिया करते हैं कि पशु-पक्षी और स्थावरो में तो बाह्य भेद हैं, किन्तु मनुष्य और पाषाणो में आभ्यन्तर भेद हैं। इस भेद को कोई पारखी ही परख सकता है, सर्व साधारण की शक्ति से यह बाहर की वस्तु है।

किन्तु इसके उत्तर में हम यह पूछ लेना चाहते हैं कि इस आभ्यन्तरी चित्र [ऐक्सरे] को लेने वाला आज तक कोई हुआ भी है? क्योंकि इस आभ्यन्तरीय भेद को जानने में तो तुम्हारे भगवान् भी तो फेल होते रहे हैं। देखो! राम और लक्ष्मण को आता देख उनका पता लेने के लिये हनुमान सुग्रीव के पास ले आये। और राम लक्ष्मण से बड़े चातुर्य से बात करते रहे। राम हनुमान को बिल्कुल न पहचान सके, और उसकी विशुद्ध वाणी को सुनकर वर्ण का गुण के आधार पर अनुमान करते हुये लक्ष्मण से बोले—

नानृग्वेद विनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः। नासामवेद विदुष शक्यमेव विभाषितुम्।

नून व्याकरण कृत्स्नमनेन बहुधाश्रुतम्। बहुव्याहरतानेन न क्वचिदप्यपशब्दितम्।
वा० रा० किष्किन्धा० ३।२८-२८

कि यह हनूमान चारो वेदो और व्याकरण का महान् पण्डित प्रतीत होता है। क्योंकि बिना इतनी योग्यता के इस प्रकार कोई भाषण नहीं कर सकता। अब बताइये जब राम भी आभ्यन्तरीय भेद को नहीं पहचान सके तो कौन पहचानेगा। वस्तुतः बात तो यह है कि इस प्रकार का कोई भेद है ही नहीं। बस मनुष्य आंख, कान, नाक आदि के समान हैं। इनमे विभाग करने वाले तो उत्तमाधम गुण कर्म हैं, और उन्हीं के आधार पर वैदिक वर्ण-व्यवस्था है। जन्म से तो यह व्यवस्था तीनो कालो मे भी नही बन सकती।

पाठक! जन्म से वर्ण निर्णय करने वाले की युक्तियों को आपने देख लिया। अब आप थोड़े से प्रमाणो को और देखें। इनको देखने के पश्चात् आप स्वय इस निर्णय पर बिना पहुंचे न रहेंगे कि जन्म से वर्ण का प्रतिपादन करने वाले, युक्तिप्रमाणहीन कोरे वाग्जाल से ही काम लेते हैं। वेदो के प्रमाण तो दिये ही जा चुके हैं। चारों वेदो मे कोई ऐसा सकेत मात्र भी नहीं है, जहा से जन्म से वर्ण व्यवस्था को आश्वासन मिल सके। अब आप मनुस्मृति को देखें।

सावित्री मात्रसारोऽपि
वरविप्रः सुयन्त्रितः।
नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि
सर्वाशी सर्वविक्रयी॥
२।११८॥

केवल गायत्री मन्त्र जानने वाला नियम निष्ठ ब्राह्मण, आचार व्यवहारों की मर्यादा से हीन, चारों वेदों के पण्डित से सम्मानास्पद और अच्छा है। अर्थात् सारे ससार में गुण और कर्मों का सम्मान है। जन्म और आचारहीन पाण्डित्य का नहीं।

यो न वेत्त्यभिवादस्य
विप्रः प्रत्यभिवादनम्।
नाभिवाद्य स विदुषा
यथा शूद्रस्तथैव सः॥
२।१२६॥

जो ब्राह्मण शास्त्रीय प्रत्यभिवादन को नहीं जानता, उसे नमस्ते आदि नहीं करना चाहिये, क्योंकि जैसा शूद्र होता है वैसा ही वह है, अर्थात् वह शूद्र है।

वित्त बन्धुर्वयः कर्म
विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि
गरीयो यद्यदुत्तरम्॥
२।१३६॥

धन, बन्धु, आयु, कर्म और विद्या इन पांच के कारण संसार मे सम्मान होता है, किन्तु इनमें आगे-आगे से अर्थात् धन से बन्धु, बन्धु से आयु आदि के कारण अधिक सम्मान होता है, और सब से अधिक सम्मान के स्थान कर्म और विद्या है। यहां जन्म का नाम भी नहीं है।

उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्
ब्रह्मदः पिता।
ब्रह्म जन्म हि विप्रस्य
प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥
२।१४६॥

उत्पन्न करने वाले और ज्ञान देने वाले पिताओं में से ज्ञान देने वाला अर्थात् ब्राह्मण बनाने वाला पिता [आचार्य] अधिक उत्कृष्ट है। क्योंकि ज्ञान से उत्पन्न होने वाला जन्म [वर्ण] स्थिर होता है। स्पष्ट है ब्राह्मण जन्म से नहीं बनता अपितु आचार्य की दीक्षा के पश्चात् बनता है।

कामान्माता पिता चैनं
यदुत्पादयतो मिथः।
सम्भूतिं तस्य तां
विद्याद्योनावभिजायते॥
२।१४७॥

माता-पिता तो सन्तान को कामवश भी उत्पन्न कर देते हैं। उनसे उत्पन्न हुई सन्तान को केवल उत्पन्न हुई ही कह सकते है, वर्ण विशेष की नहीं।

आचार्यस्त्वस्य यां
जातिं विधिवद्वेदपारगः।
उत्पादयति सावित्र्या सा
सत्या सा जरामरा॥
२।१४८॥

इस पर पौराणिकों के मनुस्मृति टीकाकार कुल्लूक भट्ट का भाष्य देखिये, आचार्यः पुनर्वेदज्ञोऽस्य माणवकस्य यां जातिं यज्जन्म विधिवत् सावित्र्येति सांगोपनयनपूर्वकं सावित्र्यनुवचनेनोत्पादयति सा जाति सत्या अजरा अमरा च। ब्रह्मप्राप्तिफलत्वात्।

अर्थात् वेदज्ञ आचार्य गुणों के आधार पर जिस वर्ण मे जन्म दे देता है, वर्ण निर्णय कर देता है, वह वर्ण ही उसका स्थिर समझा जाता है।

योऽनधीत्य द्विजो वेद-
मन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु
गच्छति सान्वयः॥
२।१।६८॥

इस पर भी कुल्लूक की टीका देखिये। योद्विजो वेद मनधीत्यान्यत्रार्थशास्त्रादौ श्रमं यत्नातिशयं करोति स जीवन्नेव पुत्र पौत्रादि सहितः शीघ्रं शूद्रत्व गच्छति। जो ब्राह्मण वेद को न पढ़ कर अर्थशास्त्रादि के अध्ययन में यत्न करता है, वह जीवित ही पुत्र पौत्रादि सहित शूद्र हो जाता है। पाठक विचारें कि जब वेद को छोड़कर अन्य ग्रन्थ के अध्ययन से ब्राह्मण पुत्रपौत्रादि सहित शूद्र हो जाता है, तो बिना पढ़ा लिखा क्या ब्राह्मण ही बना रहेगा? इस अनुपात से तो वह शूद्र ही नहीं डबल शूद्र हो जावेगा।

[क्रमशः]

# श्रुतिशाला

लेखक—
श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ

[ २१ ]

भा शब्द अर्थ जिसका प्रकाश, है प्राज्ञ ज्ञान देने वाला।
जो रत भा में वह भारत है, हर ज्ञान-दान देने वाला।
वीर भरत से हुये देश में, यश भारत को दिया जिन्होंने;
योधा और पुरोधा दोनों, रत रहे पूजते श्रुतिशाला।

[ २२ ]

माँ भारत भा प्रभापूर्य है, भू गागर सागर सी शाला।
कण-कण मे है प्रणव विभर वर, वृक्ष-वृक्ष मे क्षमता छाला।
व्रत सद्गति सुमति संस्कृति दे, गति वृत्त प्रगति की क्षण-क्षण दे;
भू-भारत-भा है जग माता, भारत की माता श्रुतिशाला।

[ २३ ]

हिन्दुस्तान नाम सुन्दर है, देश हिन्दुओ का हरियाला।
हिम गिरि से विन्दु सरोवर तक, विस्तार विमल कहने वाला।
'हि' हिमालय अक्षर 'न्दु' विन्दु का, है हिन्दु शब्द की ये सन्ध्या;
आर्य हिन्दु है हिन्दु आर्य है; सर्व शिरोमणि मां श्रुतिशाला।

[ २४ ]

हर मनुज आर्य या हिन्दू है, मां-सीमा मे रहने वाला।
जो धरे भार इस धरती पर, इसके कण का करे निवाला।
जैन बौद्ध सिख आर्य पारसी, मुस्लिम भाई या ईसाई;
ऋणी सभी हैं इसी राष्ट्र के, मां भूमि सभी की श्रुतिशाला।

[ २५ ]

यहीं नहीं सब विश्व देश का, उदगम भारत देश निराला।
श्री विश्व गुरु निज भारत भू, बहा यहीं से ज्ञान पनाला।
होते सम्बन्ध विदेशों से, कुछ पूर्व महाभारत तक थे,
आर्य मिहिर सम्राट इरानी, आई उपाधि दे श्रुतिशाला।

[ २६ ]

चेक देश के चेकितान थे, ईरान शैल्य रहने वाला।
कन्धार देश की गन्धारी, उत्तरा उत्तरी की बाला।
अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्धों से, था विश्व हमारा देश बना;
कौरव-पाण्डव राजाओं ने, सग्राम ह्रास की श्रुतिशाला।

[ २७ ]

विज्ञान यहाँ का अग्रिम था, अन्तरिक्ष से आगे वाला।
आते-जाते थे सूर्य चन्द्र पर, आदित्य देव ले निज ज्वाला।
परमाणु बम्ब या अग्नि अस्त्र, हम अन्य सभी में आगे थे;
शर्मन जर्मन ने यही ज्ञान, फिर बढ़ा दिया ले श्रुतिशाला।

[ २८ ]

भारत से वेद गये जर्मन, फिर हुआ वहाँ से उजियाला।
फिर रूस और अमरीका ने, वैज्ञानिक जर्मन का पाला।
देकर धन-साधन घन उसको, विज्ञान बढ़ाया चमत्कार;
है विश्व ऋणी परमेश्वर का, जिसकी महिमा है श्रुतिशाला।

[ ९ ]

हिमगिरि विन्ध्याचल गोवर्धन, हर पत्थर है दर्पण आला।
श्रेष्ठ संस्कृति परम्परा का, देते जो प्रतिबिम्ब विशाला।
सर्व पर्वतो की हर घाटी, जहां खिली गौरव परिपाटी;
बन गई पूज्य मृदु मां माटी, उर्वर माटी है श्रुतिशाला।

[ ३० ]

गगा-यमुना शुभ सरस्वती, हर सिन्धु विन्दु महिमा वाला।
गोमती गर्व गौरव रखी, ब्रह्मपुत्र सरयू नव-माला।
सभी संस्कृति संसृति सरिता, जिनमें है जीवन जल बहता;
ये दुष्ट बनें तो ध्वंस तने, नित-नित विकसित है श्रुतिशाला।

[ ३१ ]

यह नदियां नहीं नाड़ियां हैं, तन तोय रुधिर क्षमता वाला।
सब सुदृढ़ अस्थियां पर्वत हैं, नस-नस समान नहरें नाला।
है मांस मृत्तिका माता की, चुनरी चिर हरी वनस्पति है;
माता की मोद भरी गोदी, दे दुग्ध पोष्य सम श्रुतिशाला।

[ ३२ ]

सर्दी, गर्मी, वर्षा, वसन्त, हेमन्त शिशिर षट् ऋतु आता।
स्फूर्ति ज्योति नित नव लाता है, हर ऋतु देता स्वाद निराला।
वैशाख, चैत्र, जेठ व अषाढ़, सावन, भादौं, कुँआर कातिक;
अगहन, पौष, माघ और फागुन, वर्ष पूर्ण गूजे श्रुतिशाला।

[ ३३ ]

रवि, शशि, मगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर दिन सप्ताला।
साय प्रात हर निशा-दिशा, पुनि-पुनि पडे पुण्य से पाला।
अधिकारी हो या अध्यापक, खितिहर व्यापारी या सेवक;
हो उपदेशक मे भी व्यापक, नित हरी सुनहरी श्रुतिशाला।

[ ३४ ]

प्राची मे अग्नि, वरुण पश्चिम, उत्तर मे सोम रूप वाला।
दक्षिण मे इन्द्र, विष्णु नीचे, ऊपर ईश बृहस्पति आला।
अग्नि सूर्य दे, वरुण त्राण दे, सोम सुगति शुभ, इन्द्र विभव दे;
विष्णु वनस्पति, ज्ञान बृहस्पति, हर वस्तु इष्ट दे श्रुतिशाला।

[ ३५ ]

हर्ष भरी भू पर्व सर्व से, ग्रन्थि पर्व का अर्थ निराला।
सबल लम्ब हो रज्जु ग्रन्थि से, ज्यों जीवन हो लम्बा आला।
हर पर्व मनाकर जीवन को, करो दीर्घ दृढ़ पर्व ग्रन्थि से;
पर्व ग्रन्थि है ग्रन्थ हर्ष का, सद ग्रन्थ गौर है श्रुतिशाला।

[ ३६ ]

त्रिवेणी सी सुखद श्रावणी, हो झूलों पर झिलमिल झाला।
मेला हो रग उमंगों का, स्वर गायन मधुर वर्ण माला।
रुनझुन-रुनझुन पायल झनके, रिमझिम-रिमझिम बदली बरसे,
हर हृदय हर्ष का रस सरसे, पर नहीं उलघित श्रुतिशाला।

[ ३७ ]

पर्व वेद की ज्योति जगाये, वातावरण बना हरियाला।
शिशु वृद्ध मगन हैं वृद्धा भी, तरुण तरुणियाँ किशोर बाला।
हर ओर स्नेह शुभ सात्विक है, बहन बन्धु कर रक्षा बन्धन;
घिस चमक महक ज्यो दे चन्दन, सत्य सुगन्धित त्यो श्रुतिशाला।

[ ३८ ]

विजय दशहरा पर्व हरा है, साकेत शक्ति की जो ज्वाला।
शत्रु अन्त कर, राष्ट्र विजय वर, यह पर्व गर्व की जयमाला।
शत्रु राष्ट्र की ओर निहारे, उसे शीघ्र ही मार पसारे;
द्योतक है यह क्षात्र धर्म का, विजय पर्व पावन श्रुतिशाला।

[ ३९ ]

धन भारत को प्रभु कुवेर दे, कण-कण मे दे दीप उजाला।
स्थल हर सुन्दर स्वस्थ स्वच्छ हो, मंगलमय दीपो की माला।
शुभ-ज्योति पर्व है दीवाली, भरती जो भामा की थाली;
जो राष्ट्र हेतु होती खाली, उत्सर्ग सिखाती श्रुतिशाला।

[ ४० ]

होली संकेत एकता का, सबसे समान नाते वाला।
उमड़ स्नेह सागर बर आता, ले सङ्ग रङ्ग का परनाला।
पक जाती है फसल सुखारी, चलती है पल-पल पिचकारी;
सामूहिक हों हवन नगर में, मिल-जुल मनुज पढ़ें श्रुतिशाला।

(क्रमशः)

# वनिता विवेक

## बहनो की बाते (७)—

# नामकरण-संस्कार

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार
एम ए एल. टी,
डी. बी कालेज, गोरखपुर

( गताक से आगे )

हिन्दी के एक प्रसिद्ध पुराने लेखक का नाम राजा राधिका रमण प्रसादसिंह तो आपने सुना ही होगा परन्तु अभी एक दिन एक पत्रिका में किसी का नाम 'विद्याभूषण त्रिलोचन विवेककुमार दास वसु' पढकर तो बहुत हसी आई। यह नाम है या बाणभट्ट का लिखा कोई छोटा वाक्य।

सत्यार्थप्रकाश मे चतुर्थ समुल्लास मे स्वामी जी महाराज ने भी विवाह प्रकरण मे मनुस्मृति का उल्लेख करते हुये लिखा है—

> नर्क्ष वृक्षनदी नाम्नीं नान्त्य पर्वतानामिकाम्। न पक्ष्यहि प्रेष्यनाम्नीं न च भीषण नामिकाम्।

अर्थात् न ऋक्ष अर्थात् अश्विनी, भरिणी, रोहिणीवेई, रेवती बाई चित्तरी आदि नक्षत्र नाम वाली, तुलसिया, गेंदा, गुलाबी आदि वृक्ष नाम वाली, नदी नाम वाली, चाण्डली, आदि अन्त्य नाम वाली विन्ध्या हिमालय, पार्वती आदि पर्वत नाम वाली इसी प्रकार चडिका, काली आदि भयकर नाम वाली कन्या के साथ विवाह न करना चाहिये। इसके बाद उन्होने 'सौम्यनाम्नीं' सुन्दर अर्थात् यशोदा सुखदा, विमला, भारती आदि नामो वाली लडकी से विवाह करे यह केवल मनोवैज्ञानिक आधार है इसका भाव यह है कि नाम भी व्यक्ति के सुन्दर होने चाहिये। कमलेश ने अपने गाव के एक व्यक्ति के परिवार के लोगो के नाम बतलाये और वहा घूरेमल, पत्तीलाल, डालचन्द, लोठूमल्लु, छक्कीलाल, झब्बूमल और बर्की लाल यह सब भाई हैं। कितने विचित्र नाम हैं। इस नाम का कारण यह है कि घूरेमल जी से पहले उनके जितने भाई बहन हुये वे सभी छोटी उम्र मे परलोक सिधार जाते थे। लिहाजा मा बाप ने उनका नाम ऐसा रखा कि कोई भूत पिशाच उनकी ओर फूटी आख से भी न देखे। वे अपने नाम की महिमा से बच गये। यह विश्वास है उनका। पर हमारा तो ख्याल है कि उनका जीवन घूरामय बने बिना न रहा। वे जिन्दा तो जरूर रहे लेकिन उनके मुख पर मक्खियाँ सदा भिन्न-भिनाती रहीं और जिन्दगी भर उनका खूब मजाक उड़ता रहा। सरला बहन ने कमलेश की बात का समर्थन करते हुए कहा सच तो यह है कि नाम हमारे व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण अग है। वह हमारे कपड़ो जैसा नहीं, जिसे हम जब चाहे बदल लें। हमारा नाम एक बार दुनिया की जबान पर चढ़ा कि फिर नहीं बदला जा सकता है।

भारतवर्ष की सभी भाषाओं की जननी सस्कृत बडी मधुर भाषा है। उसमे लालित्य है। उसके शब्द उसकी भावनाओ को व्यक्त करने वाले हैं। अग्रेजो, यूरोपियनों मुसलमानो और पश्चिमी एशियाई देशो के व्यक्तियो के नाम अनर्थक तो नहीं निरर्थक होते है। निरर्थक से मेरा मतलब अर्थहीन होने से है। उदाहरणार्थ फोक्स, डोग, ड्राइवर, इत्यादि के अतिरिक्त पिट, हिट, विक्टोरिया इत्यादि का कुछ अर्थ नही। सस्कृत का प्रभाव बगला भाषा पर बहुत अधिक पडा है। बगालियो के नाम साधारणतया सुन्दर और मधुर होते हैं। रवीन्द्र सुरेन्द्र, सुरेश, अरविन्द सुभाष सुनील, प्रभात यह नाम सुन्दर भी है, और छोटे भी हैं और भावमय भी। इसी प्रकार विनोद, विमल, अतुल, प्रतुल, विनय आदि नाम भी अच्छे है, और रखे जा सकते है। धार्मिक दृष्टि से पुरुषो के राम, भरत, श्रीकृष्ण, गौतम, राहुल आदि नाम रखे जा सकते हैं। लड़कियों के भी धार्मिक नाम उमा, उर्मिला, सुमित्रा, कौशल्या, यशोधरा आदि सुन्दर नाम हैं। ऐतिहासिक और राष्ट्रिय दृष्टि से हर्ष, दिलीप, रघु विक्रम, प्रताप, शिवाजी, तथा पुत्रियो के शकुन्तला, पद्मा, मीरा, दुर्गा आदि नाम रखने चाहिये। सुन्दरता के विचार से पुत्रो के अरुण, नवीन, अतुल, नलिन तथा बालिकाओ के इन्दिरा, सरोज, पुष्पा, मधु, गीता, साधना, कमलेश मनोरमा आदि भी नाम रखे जा सकते हैं।

इसलिये आज इस नामकरण सस्कार के समय मै तुम्हे यही कहूगी कि हम बच्चो के नाम रखते हुये यह ध्यान रखें कि बच्चे के विषय मे हमारे मन मे जो सकल्प हो उसे स्थूल रूप देने के लिये और उस भावना को बार-बार बच्चे को स्मरण कराने के लिये उसके अनुरूप नाम रखना चाहिए। बालक और बालिका के सामने जीवन मे हम जैसा लक्ष्य रखना चाहते हैं, वैसा नाम हमे उन्हे देना चाहिये। नाम रख देने का अभिप्राय है जीवन मे सदा के लिये, जाने अनजाने, एक विशेष प्रकार का सस्कार डालते रहना। सत्य स्वरूप नाम वाला अगर झूठ बोले, प्रताप और विक्रमादित्य यदि भय से कापते नजर आयें, विद्या भूषण विद्या से विहीन रहे तो उन्हे अपने नाम से स्वयं शर्म आयगी। प्रेम सागर कहलाने वाला अगर हर समय लड़ता झगड़ता रहे तो उसका नाम ही उसको झिड़क देगा। शान्ति यदि शांति भग कर रही हो तो उसका नाम उसे शाति देने की प्रेरणा दे सकता है।

मोहता! तुम्हारे भाई का नाम 'सत्यव्रत' रखा गया। जीवन मे सत्य का महत्व बहुत ही अधिक है। तुम्हारा भाई 'सत्यव्रत' चिरायु हो, दीर्घ जीवी हो, यशस्वी हो, वर्चस्वी हो, तेजस्वी हो और वह अपने नाम के अनुरूप सत्यव्रती हो, यही मेरी तथा सभी व्यक्तियों की परमपिता परमेश्वर से हार्दिक प्रार्थना है।

आशीर्वाद और भोजन के पश्चात् मोहता ने सरला बहन और सब को विदा किया।

---

## श्री श्रद्धानन्द बाल वनिताश्रम का वन-विहार

देहरादून २ जून। स्थानीय आर्य समाज द्वारा सचालित निराश्रित बालक-बालिकाओ की सस्था श्री श्रद्धानन्द बाल वनिताश्रम, तिलक मार्ग देहरादून के सवासियो का वन-विहार कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर रहा।

आश्रम के अधिष्ठाता श्री देवदत्त बाली पत्रकार ने बताया कि रविवार को प्रात ७ बजे एक विशेष बस द्वारा आश्रम सवासी बालक-बालिकाए तथा कर्मचारी गण ढालीपुर, ढकरानी और डाकपत्थर के भ्रमणार्थ आश्रम से चले। प्रबन्धकारिणी सभा के सदस्यो तथा कुछ अन्य सहयोगियो के परिवार भी साथ गये ताकि आश्रम के बच्चो को पारिवारिक जीवन का अनुभव हो सके। अनेक स्थानो की सैर करके यह सब वापस आये।

—देवदत्त बाली

—आर्यसमाज राठ

प्रधान—प० चन्द्रशेखर शास्त्री
उपप्रधान—श्री श्रीकान्त चौरिहा
मन्त्री—श्री रामनारायण गुप्त
उपमन्त्री—श्री अच्छेलाल यादव
कोषाध्यक्ष—,, देशराज सेठी
पुस्तकाध्यक्ष-श्री बाबूराम त्रिपाठी

—मन्त्री

# शीश-फूल

★श्री विद्याभास्कर वाजपेयी

सामन्त चूडावत का अश्व जिस समय उदयपुर की सीमा मे प्रविष्ट हुआ, नगर तोरण पर शत-भेरिया किलकार उठीं। साथ में आयी नव वधू को कुतूहल हुआ। शिविका के झीने आवरण को उठा कर उसने देखा—'किरण जाल समेटे सध्या-सुन्दरी पश्चिम पयोधि तट पर जा पहुची है। प्रतीची का शृगार लुट चुका है किन्तु सुहाग की लालिमा अभी शेष है। राजपूतों के गौरव चिन्ह अक मे धारण किये पताकाएँ गोपुरो पर मन्थर गति से लहरा रही हैं। कलश-कंगूरों पर कुछ पक्षी बैठे हैं कुछ आस-पास मडरा रहे हैं। उदयपुर की प्रासाद शृखला उदय सरोवर में अपना प्रतिबिम्ब निहार रही है। अरावली की मनोरम शैल-माला हरित परिधान में लुभावनी प्रतीत होती है।'

उत्सुकता बढ़ी, दुल्हन की दृष्टि फिसलकर राजपथ पर आ गयी—"आगे-आगे सामन्त, फिर अग रक्षक अश्वारोहियो, की टुकड़ी उनके पीछे शिविका रक्षक पैदल सैनिकों की टोलियाँ नव परिणीता की दृष्टि सामन्त की चौड़ी पीठ पर फैली थी। वीरता को नरवेश मे पाकर वीरबाला बलिहार हो गयी। उसकी ललचायी आखें हर वस्तु को बडे चाव से देख रही थीं—'कदाचित् यह प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार हो।'

हाट—चतुष्पथ पाकर शिविका सामन्त के वासभवन पर आकर रुक गयी। सामन्त चूड़ावत हाडा-रानी को बून्दी से ब्याह कर लाये थे पौरुष का प्रमाण देकर। वधू को डोली से उतारने के लिए दासियां दौड़ीं। निहारने के लिये राजपूतनियाँ उतावली हो उठीं।

हाड़ारानी ने ज्योही शिविका से शीश निकाला कि ओढ़नी से उलझकर शीश फूल धरती पर जा गिरा। पास खड़ी दासी ने शीश फूल उठाकर रानी को दिया। इष्ट देव का स्मरण कर रानी ने शीश फूल माथे पर पुनः धारण कर लिया। अमगल की सूचना थी हाड़ारानी नीचे से ऊपर तक कांप उठी। विवाह की सारी चहल-पहल पलमात्र मे रसहीन हो गई।

पौर पर बजते वाद्यो की सुमधुर ध्वनियां, द्वारों पर झूलतीं सुरभित पुष्पमालाएं सुवासित तैलो की दीप शृखला आकर्षण हीन जचने लगी। धड़कते हृदय को दुलराते हुये हाडारानी अन्तःपुर की ओर अग्रसर हुई। उसने अन्तं-द्वार पर पैर रखा ही था कि एक सजीली रानी आगे बढ़ी और ढिठाई से उसका अवगुण्ठन उलट दिया। हाड़ारानी के अधरो पर स्मित हास्य छलक आया।

वसन्त की सोलहवीं मुस्कान पाकर सौंदर्य अपने आप पर रीझ उठा था। कुल वधुयें सकुचा गयीं, तबतक हाड़ारानी भाव लोक से चलकर यथार्थ लोक मे आ पहुची थी। विवाह की धूमधाम पुन. उसके रोम-रोम मे समा गयी। मंगल कार्यों में उसका चित्त बंट गया।

प्रात.काल हुआ। पूजागृह से निकलते ही हाड़ा रानी ने द्वार पर खड़ी दासी से पूछा—'सामन्त कहाँ हैं?"

'दरबार से बुलावा आया था रानी जी वहीं गये हैं' विनम्र स्वरो मे दासी ने कहा। हाड़ारानी के मन का संशय पुनः जाग उठा। स्मृति पटल में शीश फूल शनैः शनैः उभरने लगा।

उदयपुर का मन्त्रण कक्ष। सामन्तों के बीच महाराणा राज-सिह उच्चासन पर विराजमान हैं। सामन्त चूड़ावत के स्वागत में महाराणा छोड़कर सभी उठ खड़े हुए। महाराणा को प्रणाम कर चूड़ावत आसन पर बैठ गये। चूड़ावत को देखते ही महाराणा की मलिन मुखश्री प्रसन्नता से खिल उठी। सभा में मधु-मक्षिका-रव मद्धिम होने पर सभासदों को सबोधित करते हुये उन्होने कहा। 'आत्मीयजनों! ससार मे बहुत से काम ऐसे हैं, जिनके लिये अपने प्राण सुरक्षित रखना आवश्यक है किन्तु बहुत से काम ऐसे भी हैं जिनके लिये प्राणोत्सर्ग करना ही उपयुक्त होता है। रूपनगर की राज कन्या चचल कुमारी के रूप लावण्य पर मुग्ध होकर औरगजेब ने राव विक्रम सोलकी से कन्या का डोला माँगा है। रावजी विवश हैं।'

पास बैठा एक सामन्त उबल पडा—'बादशाह का यह साहस? वह इतना नीचे उतर आया कि तलवार के बलपर डोला माँगता है।

'जबकि चचलकुमारी वैष्णव स्वभाव की है' महाराणा बोले—'वह आत्माभिमानी किसी दीन क्षत्रिय से विवाह करना पसन्द करती है, किन्तु विधर्मी सम्राट् से नहीं।'

'ऐसी स्थिति मे राजकुमारी का डोला आगरे जाना कलक की बात होगी महाराज' वही सामन्त फिर बोला।

महाराणा की दृष्टि चारो ओर से घूमघामकर उसीपर स्थिर हो गयी—'क्या कहा कलक! अब क्षत्रित्व रह ही कहाँ गया! एक लम्बी अवधि से राजपूतों ने वीरता का बाना उतार फेंका है। जिन्हें कुल गौरव का अभिमान है उनके लिये यह घटना मृत्यु से भी बढ़कर होगी।'

'राव जी ने रक्षा का कोई उपाय नहीं सोचा महाराज।' दूसरे सामन्त ने तर्क किया—'यदि उन्होंने प्रयत्न किया होता तो उन्हें सम्बल अवश्य मिलता।'

'वही तो नहीं मिला। इ कारण अपनी धर्म रक्षा के लि राजकुमारी ने मेवाड की श ली है। क्योंकि उसे ज्ञात है शरणागत पालकता मे मेवाड मे का पत्थर रहा है। ऐसी दशा उसका उद्धार करना अपना कर्त हो जाता है। सिसोदियो अपार मान-मर्यादा तथा राजपू की रक्षा की आवश्यकता आ ब है जिसे आप लोगों के अतिर और कौन पूरी कर सकता है अपना अभिप्राय व्यक्त कर मह राणा ने अन्त मे एक वाक्य जो जोड दिया—'कौन है वह वीर जि सेनापति का किरीट पहना जाये?'

महाराणा की घोषणा सुन ही कक्ष में सन्नाटा खिल गया सामन्तगण एक दूसरे का मु ताकने लगे। मुगलो की विर वाहिनी का सामना करने साहस किसी को न हुआ, त महाराणा पुन बोले—'हम मान हैं कि विशाल मुगल सेना के आक्र मण की आग झेलना सरल न है। किन्तु हम यह भी जानते कि जो लोग निस्वार्थ भाव से दे जाति और धर्म के लिये प्राणों बलि चढ़ाते नहीं हिचकते, इतिह मे उन्हीं के नाम स्वर्णाक्षरों लिखे जाते हैं।'

इतना कहकर महाराणा परिषद पर एक दृष्टि दौडायी कक्ष मे अरुचिकर मौन छाया हुआ था। सभासद एक-दूसरे का मुह ताक रहे थे। क्षत्रियो की य कापुरुषता चूडावत को असह्य हो उठी। वे आसन से उठे। यद्यपि अभी वे बीस वर्ष के नवयुवक ही थे, तथापि उनका हृदय देश, धर्म की रक्षा के लिये सदा आकुल रहा करता था। उसी क्षण वे प्रस्तुत हो गये और महाराणा को सम्मति देते हुए बोले—'प्रभु चरण आप थोड़ी-सी सेना लेकर रूपनगर जाइये। और एक सेना लेकर मैं आगरा व रूपनगर के बीच शाही सेना का मार्ग रोककर बैठूगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं जब तक आप विवाह करके उदयपुर न लौट आयेंगे, मैं सम्राट की सेना को

गे न उठने दूंगा ।'

उत्तर वीरतापूर्ण था, महाराणा [illegible]कर निहाल हो गये । इच्छा [illegible] युवक का मुख चूमकर उसे [illegible]ती से लगा लू ।

चूड़ावत को सारा दिन सैन्य [illegible]्यूहन मे बीत गया । हाड़ारानी [illegible] भर भी विश्राम न कर पायी। [illegible]गरण भारालसित पलकें प्रिय-[illegible]म के पथ पर बिछाये बैठी थी, [illegible]न्तु सामन्त न लौटे । हाडारानी [illegible]मृति पटल मे शीश फूल धारण [illegible]रती थी,किन्तु वह बार-बार गिर [illegible]ाता था । उसका दक्षिण नेत्र [illegible]रह कर फडक उठता शुभाशुभ [illegible]न्तन मे दिन आया गया हो [illegible]था ।

देवाधिदेव के देवालय मे शाह-[illegible]ाई पर सध्या के स्वर उभर रहे थे । हाड़ारानी गृह मन्दिर मे दीप [illegible]लाने हेतु उठी तभी पुरोहित के [illegible]र्शन हुये । हाड़ारानी के उठते हुये [illegible]र थम गये । श्यामा सुलभ लज्जा [illegible]व नवोढ़ा के सकोच ने उसके [illegible]धर सिल दिये थे । अतएव पुरो-[illegible]हित को सादर शीश नवाकर उसने जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखा । रानी की आकुलता का लक्ष्य कर [illegible]ान्त्वना स्वरो मे पुरोहित बोला [illegible]शसा किसे प्रिय नहीं होती रानी बहू, किन्तु नहीं स्वामी भक्ति का प्रमाण देकर सामन्त ने उदयपुर के इतिहास मे नया पृष्ठ जोड़ दिया ।'

हाड़ारानी के हृदय की गति दूनी हो गयी । नेत्रो मे करुणा की तरलता तिर आयी । पुरोहित कह रहा था मेवाड की धरती वीर प्रसविनी है रानी । मुगल सम्राट राजकुमारी चचल को बलात् अक शायिनी बनाना चाहता है जिसकी धर्म रक्षा के लिये सामन्त ने बीड़ा उठाया है । चचल की लाज बच जायेगी, महाराणा का मान बढ़ जायेगा । और प्रातःकाल पौ फटने से पूर्व ही राजपूती सेना प्राणो से प्राण लगाने के लिये निकल पडेगी' इतना कहकर पुरोहित लौट गया जैसे सूचना देने ही आया था । हाड़ारानी के आनन्द की सीमा न रही । उसे इस बात पर गर्व था कि सामन्त चूडावत के युद्ध मे विजय प्राप्त कर लौट आने पर वह एक वीर सामन्त की पत्नी कहलायेगी ।

हाड़ारानी जैसी रूपवती थी, गुण भी वैसे ही पाये थे उसने । उसका शास्त्र ज्ञान, उसकी कला-प्रियता, उसका असी संचालन और उनके आखेट बून्दी के जन कवियो के चुने-चुनाये विषय बन गये थे । आकाशी पर बैठी सारी रात राज-महल से आने वाला पथ निहारती रही । किन्तु सामन्त के दर्शन न हुये ।

मधुमास का मादक पवन शीतल हो चला था । दिशाएं मुंह ढाप कर सो गयीं । हाड़ारानी के तन्द्रिल नेत्रो मे सामन्त की चौड़ी पीठ उभरी और माथे पर शीश फूल चू पडा । हडबडाकर उसने आंखें खोल दी । देखा प्राची मे उषा कमनीय करो से प्रियतम का भृगार कर रही है ।

रण प्रस्थान की वेला । सामंत चूड़ावत के हृदय में पत्नी दर्शन की कामना प्रबल हो उठी । शिविका से झाकते शीश फूल की स्मृति नवीन करने के लिये चूडा-वत अन्तःपुर आये हाडारानी का रोम रोम पुलकित हो उठा । उसने स्वय अपने हाथो से पतिदेव को रणक्षेत्र के लिये सुसज्जित किया । जब वे अलकृत हो गये तो उनका मस्तक पूजन कर उन्हें सोत्साह विदा किया ।

हाड़ारानी परमात्मा से उनके विजय लाभ कर सकुशल लौट आने की प्रार्थना कर रही थी कि इतने मे अपने पतिदेव को लौटते देख वह आश्चर्यचकित रह गयी । विनम्र भाव से उसने लौट आने का कारण पूछा तो स्नेहसिक्त स्वरो मे चूड़ावत बोले-'प्रिये मै युद्धक्षेत्र मे जा रहा हू । मेरी इस युद्धक्षेत्र से लौट आने की कोई आशा नहीं है । यदि युद्ध में काम आऊं तो तुम क्षत्राणी धर्म न भूलना । तुम अभी नवयौवना हो । सासारिक अनुभवो की छाप अभी तुम पर नहीं पडी । कही ऐसा न हो यौवन-मद मे मत-वाली होकर अर्थ का अनर्थ न कर डालो ! देखना कुल की लाज रखना ।''

सामन्त चूड़ावत के सन्देहयुक्त वचनो से पातिव्रत धर्म मे पगी रानी का अन्तःस्तल उद्वेलित हो उठा । भीतर ही भीतर आघात सहन करती हुई दृढ़तापूर्वक बोली–'स्वामी जिस प्रकार आपलोग देश धर्म तथा जाति के लिये बलिदान होना जानते है । उसी प्रकार हम नारियाँ भी अपने स्वामी, धर्म देश जाति तथा पातिव्रत के लिये प्राण देना जानती हैं । सन्तोष रखिये, सहर्ष युद्ध में जाइये । यदि आप विजयी होकर लौटेंगे तो मै आप को विजयमाला पहनाऊंगी, अन्यथा यदि आप वीर गति को प्राप्त हुये तो मै अपना शरीर अग्निदेव को अर्पित कर दूगी । अतएव आप निश्चिन्त होकर युद्ध मे जाइये । कर्त्तव्य पथ से न हटिये ।'

प्रियतमा के प्रिय वचन सुन कर चूडावत का उत्साह दूना हो गया । चलते-चलते उन्होंने फिर कहा–'मुझे मृत्यु का खेद नहीं है रानी । मृत्यु से तो मैं अभय हू । इस असार संसार मे अमर कोई नहीं रहा । मुझे केवल तुम्हारी चिन्ता है । कुल मर्यादा न भूलना।'

हाड़ारानी की दृष्टि चूडावत के चरणो से हटकर उनके मुखार विन्द से आ लगी–'आप रण क्षेत्र मे विजय प्राप्त करेंगे स्वामी । युद्ध मे जाते समय भौतिक मोह मे न पड़िये । जाइये, वीरतापूर्वक स्वामी का कार्य सम्पादन कीजिये ।''

प्रिय पत्नी को अन्तिमवार भरपूर निहारकर चूड़ावत लौट पडे । हाडारानी उनकी चौडी पीठ तब तक निहारती रही जब तक वे आँखो से ओझल न हो गये ।

सेनापति चूडावत का अश्व जितना वेग से आगे बढ रहा था, उनका मन उतना ही पीछे लौट रहा था । चित्त विचलित था । स्त्री चरित्र के सम्बन्ध मे नाना प्रकार की भली-बुरी भावनाए उन के मन में उठ रही थीं–'नववधू मे कन्या की पवित्रता है, सौंदर्य की मधुरता है, यौवन के मेले मे कहीं हतबुद्धि न हो जाय ?' उनका मन न माना । साथ मे चल रहे पुरो-हित को बुलाकर चूडावत ने उसे रानी के पास क्षत्राणी धर्म की रक्षा का उपदेश करने के लिये भेजा । [illegible] हाड़ारानी आशा लगाये बैठी थी कि विजय का सुसवाद शीघ्र ही आयेगा । जब पुरोहित ने सामन्त का सन्देशा सुनाकर सतीत्व रक्षा की बात कही तो रानी का हृदय शत् शत् खण्डों में विदीर्ण हो गया अपने सौंदर्य तथा पति के अवि-श्वास को धिक्कारती हुई फूट-फूट कर रो पड़ी । पुरोहित निश्चेष्ट खड़ा था । दृष्टि पृथ्वी पर थी । हाडारानी ने आंचल से आंसू पोंछे और वेदना मिश्रित वाणी मे बोली 'पुरोहित जी मेरे प्राण प्रिय को मुझ पर विश्वास नहीं है । उन्हे मेरे सतीत्व पर शका है । पुरोहित जी, सतीत्व वह सम्पत्ति है जो प्रेम की बहुलता से उत्पन्न होती है और विश्वास से पनपती है । सतीत्व घर की चाहार दीवारी में नहीं उपजता । वह बलात् लाया नहीं जा सकता । परदे की दीवारें इस की सीमा नहीं बन सकतीं । वह तो अन्तःकरण से उत्पन्न होता है और इसका मूल्य तभी तक है जब तक प्रलोभनो पर विजय पाने की सामर्थ्य नारी मे रहती है ।'

रानी का उत्तर आत्मविश्वास पूर्ण था । पुरोहित को बल मिला, उस ने अनुरोध किया आप सामन्त को अपने पातिव्रत के विषय में कोई अत्यन्त प्रभावकारी प्रमाण भेजिये तभी वे युद्ध मे दत्तचित हो जायेंगे ।''

"हाडारानी गम्भीर हो गयी । निर्विकार भाव से बोली—'' आप ठीक कहते हैं पुरोहित जी, यदि मै अपने स्वामी को अपने सतीत्व का सतोषजनक उत्तर नहीं दूगी तो वे अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाएंगे रणक्षेत्र मे कुछ भी पराक्रम न दिखा सकेंगे । उनका मन मेरी ही ओर लगा रहेगा । राणा वश पर कलक का भारी टीका लग जायगा ।'

उसकी चिन्तना आगे दौड़ लगाती तभी नेत्रो ने शीश फूल कौंध गया । जिस शीश का पुष्प धरती पर गिर चुका हो ऐसे शीश को धारण करने से क्या लाभ ? विदा होते प्राण वल्लभ की चौड़ी पीठ नेत्रों मे साकार हो उठी । हाड़ारानी सचेत होकर सहज भाव से बोली—'पुरोहित जी मैं अपना

शीश पुष्प आरती देती हूं। इसे स्वामी के चरणों में चढ़ा देना और कहना कि कुल की लाज बचाने के लिये हाडारानी ने नश्वर शरीर त्याग दिया। अब आप भी उससे मिलने शीघ्र ही जाइये" इतना कहकर रानी ने पास ही दीवार मे टगी तलवार खींची और एक ही वार मे अपना शीश धड़ से पृथक् कर दिया।

हाडारानी का शीश लेकर पुरोहित चूड़ावत के पास पहुचा तो वे हर्ष विषाद मे पड़ गये किंतु उत्साह विजयी हुआ। उस वेणी युक्त मुण्ड को माला की तरह गले मे धारणकर चूड़ावत का पौरुष प्रचण्ड हो उठा। वे प्राणो को हथेली पर रखकर आये थे। कर्त्तव्य पालन कर अमरत्व को प्राप्त हो गये।

## श्री मदनमोहनजी वर्मा के देहावसान पर

निम्न समाजों ने शोक प्रस्ताव पास किये हैं—

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली, आर्यसमाज रेल बाजार छावनी कानपुर, आर्यसमाज भरथना, आ० समाज टाडा, आर्यसमाज रम्पुरा (फर्रुखाबाद) आर्यसमाज रजिस्टर्ड खालापार सहारनपुर।



## निर्वाचन

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर

प्रधान—श्री हँसराज खानीजो एम ए एल एल बी, उप प्रधान श्री डा० ध्यानसिंह आर्य गणेशपुर व श्री दलपति शास्त्री लकसर, व श्री बनारसीदास सैनी, तथा श्री बलवन्तसिंह औरगाबाद, मन्त्री—श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य, उपमन्त्री श्री भगतराम जी व श्री ला० अमोलकराम जी व श्री चौ० नाटा सिंह आर्य तथा श्री रामनिवास जी रुड़की, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश-प्रसाद आढ़ती, निरीक्षक—श्री भोलानाथ जी खेड़ा।

—राजेन्द्रप्रसाद आर्य

—आर्यसमाज मन्दिर बादरी

प्रधान—श्री रामफलसिंह,
उपप्रधान—श्री ज्ञानचन्द,
मन्त्री—श्री धनपालसिंह
उपमन्त्री—राजेन्द्रसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री विसम्बरसहाय

## ३६२ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री इतवारी लाल के प्रयत्न से ग्राम चांदपुर मलियाली जिला मुजफ्फरनगर में ता० १, २-६-६९ को ३९२ ईसाइयों को श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी द्वारा वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उनकी पुरातन चमार जाति में दीक्षित किया गया।

—द्वारकानाथ प्रधान मन्त्री

## गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में नये (६ से १० वर्ष तक की आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६९ से आरम्भ होगा। शिक्षा नि:शुल्क। सब विषयो की शिक्षा आश्रम वास। विशेष देख-रेख। सीधा-सादा भारतीय जीवन। कड़ा अनुशासन। एकसा रहन-सहन प्राकृतिक, सुन्दर, स्वास्थ्यप्रद वातावरण। सात्विक भोजन। पालन-पोषण का साधारण व्यय।

...अभाव, आरम्भ काल के संकीर्ण ... से मेल न खाता हो, किन्तु ... प्राप्त ... के अनुकूल नीति गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) में कुछ परिवर्तन ... जायेगा।

—मुख्याधिष्ठाता ... देते हैं,

## अतरौली मे वैदिक धर्म प्रचार

गत मास मे जिलोपसभा के तत्वावधान मे अतरौली के कटरा मुहल्ले मे प्रचार का आयोजन श्री बा० कृष्णचन्द्र जी आर्य के द्वारा किया गया। यह इलाका एक पिछडी हुई जातियो मे बसा हुआ है। वैदिक धर्म प्रचार की आवश्यकता को अनुभव करते हुए आर्य जनता मे उत्साह की लहर दौड़ गई और कटरा मुहल्ले मे जहाँ प्राचीन आर्य मन्दिर बना हुआ है, उसकी आवश्यक मरम्मत जो कई वर्षो से नहीं हुई थी, उसके कराने का भी वचन मिला। कटरा में प्रति गुरुवार को वैदिक सत्सग, हवन करने की व्यवस्था की गई है। आर्य जनता को चाहिये कि उसमें सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठायें और अपना सहयोग प्रदान करे।

—किशनचन्द्र आर्य

## आवश्यकता

गुरुकुल कांगडी आश्रम में ब्रह्मचारियो के साथ रहने के लिये शिक्षित आर्यसमाजी अधिष्ठाताओं की आवश्यकता है। आयु लगभग ४० वर्ष हो। अल्प पारिश्रमिक के अतिरिक्त आवास तथा भोजन निशुल्क होगा। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र आवेदन करें। —आचार्य गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

## आवश्यकता है

एक २५ वर्षीया, गौरवर्णा, सुन्दर और स्वस्थ अग्रवाल विधवा के लिये एक ३०-३५ वर्षीय सुन्दर पूर्ण स्वस्थ, और जीविका-सम्पन्न विधुर की आवश्यकता है। जात-पांत का कोई बन्धन नहीं। पत्र-व्यवहार मन्त्री, आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर (बिहार) मे करे।

—द्वारिका प्रसाद ठाकुर
प्र० मन्त्री

# ब्रह्मदेश में आर्यसमाज

## चतुर्थ आर्य सम्मेलन माण्डले में दिया गया भाषण

[ श्री ब्रह्मदत्त जी बी० ए०, बी० एल० मचीना ]

इस चतुर्थ आर्य सम्मेलन में पधारे सभी आर्य बन्धुओ को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हू। स्वीकार हो।

लगभग ९४ वर्ष हुये कुछ विशेष उद्देश्यों को लेकर महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना भारत मे की और बाद को जहा जहाँ भारत मूलक आर्य जाकर बसे, वहाँ उन्होंने आर्यसमाजें स्थापित कीं। आर्यसमाज का इतिहास साक्षी है कि इस अभियान मे कितनी दिक्कतो का सामना हुआ, भाषा अन्य मतों से टक्कर और न जाने कितनी और कठिनाइयो के होते हुए भी हिन्दी के माध्यम से वैदिक साहित्य के आधार पर आर्यसमाजे बनती ही गयीं।

गत ४० वर्षों मे बड़ी तीव्र गति से भारत मे परिवर्त्तन आये। विधर्मी कार्यक्रम, देश के विभाजन राजनैतिक नव चेतना से, जिस धीमी रफ्तार से धार्मिक सस्थायें काम करती थीं, हार-सी गयीं। किन्तु फिर भी आर्य समाज ने अछूत कहे जाने वालो को पुन. समाज का अग बनाया। धर्म से डिग लोगो को पुन स्वधर्मी बनाने का यत्न किया। विदेशी आचरण, शिष्टता एव शिक्षा को हिन्दी एव सस्कृत से टकराया। स्कूल, कालेज एव गुरुकुलो की स्थापना की। [illegible] शिक्षा पर बहुत बल दिया। [illegible] लिखे पढ़े आर्यों ने अपनी विद्वत्ता [illegible] वैदिक साहित्य तैयार किया।

[illegible] द्वितीय महायुद्ध के बाद स्थिति [illegible] और हो गई। देश के विभा[illegible] आर्यसमाज के कुछ गढ़, [illegible] पाकिस्तान मे चले गये। मनुष्यो [illegible] साधारण मौलिक स्तर कुछ [illegible] गया। राजनीति ने लोगो [illegible] जबरदस्ती सत्ता की होड-सी [illegible]। येन केन, प्रकारेण [illegible] वोटो को जीतने की कोशिशें [illegible] लगीं, जिससे द्वेष, ईर्ष्या एव [illegible] समाज मे आ गई। और [illegible] कुछ ही मास पहले आर्य [illegible] के कमठ सेवक श्री आनन्द [illegible] स्वामी सरस्वती जी ने आर्यसम्मेलन, हैदराबाद मे और पुनः ऋषि बोधोत्सव के सन्देश मे कहा—आर्य नेताओ विद्वानो और उन सभी के सम्मुख जिन्हें भगवान दयानन्द से थोडा भी प्यार है, मैं झोली फैलाकर यह भिक्षा मांगता हू कि आपस के झगडे, फूट का जहर समाप्त करो। मैं चाहता हू कि भोगवाद मे फसी जनता, आध्यात्म वाद का सच्चा सन्देश सुनाने का सकल्प करे। आज धरती पर अज्ञान फैल रहा है। मतवादो की आँधी ने सत्य धर्म की जडो को हिला दिया है। अत प्रत्येक आर्य का यह परम धर्म है यह वेद—ईश्वर सन्देश को धरती पर फैलाने का निश्चय करे।"

## धार्मिक समस्याएं

धन्य हैं हमारे पूर्वज जिन्होने बरमा में आर्यसमाजें स्थापित कीं। इस समय जो यह महा सम्मेलन हो रहा है, यह ससार के आर्य परिवार का एक अंश है। भारत में जो स्थिति है उसका हम बरमा वासियो पर कहा तक प्रभाव पडे यह हमारे आधीन है। हमारी सख्या दिनों दिन भारत को हिन्दुओं की वापसी के कारण घटती जा रही है।

किन्तु आर्यसमाज का भविष्य बर्मा मे आशापूर्ण दीख रहा है। आर्यसमाज क्या है, आर्य लोग क्या कहते हैं, क्या विचारते हैं, क्या करना चाहते हैं—यह बातें अब यहा के मूल निवासी, बहुत से नेपाली और भारतीय बन्धु समझने लगे हैं, यह प्रसन्नता का विषय है। उनके निकट आने से उनके बीच वैदिक विचारधारा, सिद्धान्तों का प्रचार करना अब सम्भव हो गया है।

कोई समय था जब आर्यों को कुछ लोग हिन्दूधर्मी ही नहीं मानते थे। हिन्दू धर्म के विरोधी तक कहते थे। अब वह बातें नहीं रहीं हैं और भविष्य का कार्यक्रम बनाते समय इस सम्मेलन को ध्यान मे रखना होगा कि एक मित्रतापूर्ण वातावरण मे अपना प्रचार जारी रखा जाय। हमे अन्य मतावलम्बी लोगो का उस ढग से सामना नहीं करना है। जैसा भारत के नेता कर सकते हैं। वहाँ धर्म के नाम पर जो आन्दोलन हो सकते हैं, बरमा मे हम उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते। हमें अपना कार्यक्रम यहा के कानून के अन्तर्गत सीमित रखना है। अत यदि हम तेजी से प्रगति न कर भी पायें, तब भी हमे निराश नहीं होना है, दूसरे मत वालो से टक्कर न लेते हुए, उनकी कमजोरियों बुराइयों या थोथेपन का खुलेआम ढोल न पीटते हुये हमे अपने वैदिक धर्म का प्रचार करना है। धर्म प्रचार की पूरी छूट सरकार ने हमे दे रखी है, किन्तु अपने विचारों को लेकर हम दूसरो से झगड नहीं सकते। कहा है कि 'समयानुकूल व्यवहार सदा उचित होता है—

'Live and let live without interference'

अर्थात्—'जीओ और बिना हस्तक्षेप के जीने दो' यह मूल सिद्धान्त अब विश्व के अनेक राष्ट्रों को प्रिय लगने लगा है। जो भारत मूलक लोग हमारे कार्य मे साथ देवें, हम-उनका स्वागत करें। उन्हे अपना वैदिक सदेश सुनावें। दूसरो का, जिनसे हमारा कुछ मतभेद हो, उनका हम खण्डन न करे। कुछ लोग हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्म की ओर झुकना चाहें तो उनसे मिलकर विचार-विमर्श करें। उन्हें सम्झावें हो सकता है कि ऐसा विचार या सुझाव, आरम्भ काल के सर्वेष-नीति से मेल न खाता हो, किन्तु देश और समय के अनुकूल नीति का कार्यक्रम मे कुछ परिवर्त्तन करना लाभदायक होगा।

वेद हमे क्या सन्देश देते हैं, यह जानने, सुनने, या पढ़ने की कोशिश हमने कम कर दी है। हम भौतिकवाद के तूफान में हम आर्यसमाजी भी फसे दीखते हैं। यदि हमारा दैनिक आचरण वैदिक धर्मानुकूल बन जाय तो हमारी कई समस्याओ का हल निकल आवे। बर्मा मे आर्यसमाज एक सुसगठित सस्था या समाज के रूप मे अब आगे बढ़ रहा है। इसी सगठित भावना का चित्र इस सम्मेलन में सामने आ रहा है। हम एक विचार से एक लक्ष्य के लिये काम करे। अपने मे छोटी-छोटी मतभेद की बातो को जिस दृष्टि से आज-पांच साल पूर्व हम देख सकते थे, इस समय इन दिनों उसी दृष्टिकोण से हम नहीं देख सकते। हमें कुछ त्याग करना पड रहा है और भी कुछ त्याग करना पडेगा। यह त्याग अपने धन मे से, समय में से और शायद आराम मे से देना होगा। यदि वैदिक धर्म के प्रति हमारे मनो मे श्रद्धा है तो कुछ सिद्धान्तों पर विचार करके अपनाने के लिये एक अपील करता हूं वे विचार हैं—

१—वेद प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ।

२—ऋषि दयानन्द के आदेशों पर मन वचन और कर्म से चलो।

३—असत्य का त्याग प्रत्येक मुद्दा पर करो।

४—अपने जीवन का कम से कम एक घटा प्रति दिन वैदिक साहित्य के अध्ययन में लगाओ।

५—अपने परिवार में अनार्य विचारधारा नहीं आने दो।

६—आपस की फूट, पार्टी बाजी और पद की भूख से दूर रहो।

७—अपनी मासिक आय का ३ प्रतिशत या इससे अधिक धन वैदिक धर्म के लिये या आर्य समाज के लिये दान मे इसी प्रकार दो, जैसा कि इस देश वासी बर्मी भाई धर्म के लिये सदा देते रहते हैं। ✱

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल-६०

आषाढ़ ८ शक १८९१ अधिक आषाढ़ शु० १५
[ दिनांक २९ जून सन् १९६९ ]

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

# ग्रीष्म अवकाश का सदुपयोग

महोदय,

आजकल विद्यार्थियों और स्नातकों के ग्रीष्मावकाश चल रहे हैं। सभी स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालय बन्द हैं। आज की पीढ़ी के नौजवान जिनके मानस राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हैं, शायद निष्क्रिय रहकर अपना अवकाश नहीं काट पायेंगे। उनके ग्रीष्मावकाश को सफल बनाने के लिये तथा उनमें राष्ट्रीय निर्माण में हाथ बटाने के भावना प्रबल करने के लिये यह आवश्यक है कि उनके समक्ष कुछ व्यावहारिक कार्यक्रम रखे जावें। यह सामान्य मनोविज्ञान की बात है कि पिछली पीढ़ी की अपेक्षा आज विद्यार्थीगण ज्यादा से ज्यादा उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक हैं। यही कारण है कि आज के छात्र मानस में 'संघर्ष' के दर्शन होते हैं।

आजकल देश में चारों ओर हिन्दी के प्रयोग की अभिवृद्ध पर बल दिया जा रहा है। भारत सरकार ने अपने समस्त कार्यालय से अनुरोध किया है कि वे हिन्दी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ावा दें। इसी शृंखला में देवनागरी में तार भेजे जाने की भी व्यवस्था की गई है। अतः जो भी व्यक्ति कार्यालय अथवा संस्था अपने तार देवनागरी में भेजने के इच्छुक हों, वे निःसंकोच ऐसा कर सकते हैं। देवनागरी में भेजे जाने वाले तार सस्ते तो पड़ते ही हैं साथ में वे लिखने में सरल तथा समझने में सुगम होते हैं। उनके सस्ते पड़ने का पहला मुख्य कारण यह शब्द गिनने के वे नियम हैं जिनके द्वारा अंग्रेजी की अपेक्षा शब्द संख्या काफी कम हो जाती है। दूसरा कारण यह है कि हमें अपनी भाषा द्वारा वांछित समाचार भेजने के लिये कम शब्दों की जरूरत पड़ती है। यदि विद्यार्थी लोग अपने खाली समय में निकटवर्ती तारघरों में जाकर नियमित रूप से देवनागरी में तार भेजने के लिये प्रचार करें तो वास्तव में यह बहुत बड़ी राष्ट्रीय सेवा होगी। वे परिषद् के प्रचार सामग्री निःशुल्क प्राप्त कर सकेंगे, जिसकी सहायता से वे भलीभाँति लोगों को यह बता सकेंगे कि देवनागरी में भेजे जाने वाले तारों से धन के अपव्यय से बचाने के साथ हम राष्ट्र की सेवा किस प्रकार करेंगे।

आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से परिषद् सभी नवयुवक विद्यार्थियों की सेवाओं का आह्वान करती है और यह आशा करती है कि वे राष्ट्र-निर्माण सम्बन्धी अपने उत्तरदायित्व को उस शान तथा गौरव से पूरा करेंगे जो स्वतन्त्र राष्ट्र में जन्म लेने से उनके रक्त मे प्रवाहित है। इस प्रकार वे राष्ट्र का मस्तक ऊँचा करेगे ही, राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रति भी अपनी आस्था मुखर कर पायेंगे। इससे आने वाली पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त होगा। लोगों की हिन्दी के व्यावहारिकता संबंधी भ्रान्तियां दूर होंगी तथा जन मानस राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हो सकेगा।

—रामस्वरूप वाजपेयी, उपमन्त्री
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स-वाई ६८,
सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

## उप प्रतिनिधि सभा मेरठ के प्रस्ताव

१—यह सभा उत्तरप्रदेश शासन की नशा-बन्दी नीति को क्रियात्मक रूप देने के आरम्भ पर सन्तोष प्रकट करती है, किन्तु साथ ही यह अनुरोध किया जाता है कि अविलम्ब ही प्रदेश में पूर्ण नशा बन्दी लागू कर दी जाए।

२—जब तक प्रदेश में नशाबन्दी लागू हो तब तक निम्नलिखित योजनाएं कार्यान्वित करने का विनम्र सुझाव है—

[अ] शराब के सम्बन्ध में किसी भी रूप में विज्ञापन देने पर रोक लगा दी जाए।

[ब] छात्रों एवं श्रमिकों के मध्य नशाबन्दी का प्रबल प्रचार किया जाय तथा कालेजों सार्वजनिक पुस्तकालयों, मिलों एवं फैक्टरियों में नशा बन्दी सम्बन्धित कक्ष खोले जायं।

३—उत्तरप्रदेश के अन्य तीर्थ स्थानों की भाँति गढ़मुक्तेश्वर तथा ब्रज घाट, कार्तिकी मेला एवं अन्य सभी प्रकार के मेलों पर तथा उसके ५ किलोमीटर दूरी तक भी मद्यपान की दुकान न खोली जाए।

४—मन्त्री मण्डल के सदस्यों जिला स्तर के सभाधिकारियों एवं शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों के लिये आचार संहिता बनाई जावे जिसमें नशाबन्दी भी सम्मिलित हो। वर्तमान समय में उपरोक्त वर्ग में यदि कोई शराब पीते हों तो उनको ३ माह का नोटिस नशा छोड़ने के लिये दिया जाय और यदि वे इसका पालन न कर सकें तो उनको पदावनति तथा पद विमुक्त कर दिया जाय।

—भवानीप्रसाद मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

और उपासना करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। अपनी आवश्यकता से अधिक धन एवं पदार्थ कोई भी अपने पास न रखें। आवश्यकता से अधिक जो धन और अन्न आदि पदार्थ प्राप्त हों, वे सब किसी प्रकार के स्वार्थ और प्रतिदान की कामना के बिना ही परोपकारी प्रतिष्ठानों को दे दिये जायें। विशेष योग्यता और सामर्थ-सम्पन्न पुरुषों को उचित है कि वे दुःखियों, समाज, राष्ट्र और सर्वहिताय के कामों में अपने समय और साधनों को देकर, शुभ कर्म कमावें और यश एवं पुण्य के भागी बनें।

गाओ, यज्ञ के गीत गाओ।
चलो, यज्ञ के मार्ग पर चलो।
करो, यज्ञ का अनुष्ठान करो।
बनो, यज्ञ के प्रेमी बनो।

यज्ञ मानव-जाति के,
उत्कर्ष का शुभ-कर्म है।
यज्ञ का करना-कराना,
हम सभी का धर्म है॥

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए भ०वी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार आषाढ़ १५ शक १८९१, अधिक आषाढ़ कृ० ७ वि० सं० २०२६, दि० ६ जुलाई १९६९

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# यज्ञकर्त्ता का नाश नहीं होता

ओ३म् । नू चित् स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय-ऋतपाः ऋतेजा ॥

ऋ० ७ । २० । ६

(नू+चित) क्या कभी (स) वह (जन) मनुष्य (भ्रषते) भ्रष्ट होता है हानि उठाता है ? (नू) नहीं (रेषेत) हिंसित होता । (य) जो अस्य इसके (मन) मनुष्य को (घोरम) कष्ट क्लेश सहकर भी (आ+विवासात) पालन करता है । (य) जो मनुष्य (यज्ञैः) यज्ञों के द्वारा (इन्द्र) परमात्मा में (दुवांसि) पूजाओं को (दधाति), अर्पण करता है । (स) वह (ऋतपा) ऋतरक्षक (ऋतेजा) ऋतपुत्र = धर्म-पुत्र (राय) धनों को (क्षयत) बसाता है ।

जब कोई भगवान के मार्ग पर चलने लगता है, तो संसारी जन उसे डराते हैं कहते हैं खाओ पियो आनन्द करो । प्रत्यक्ष को छोड़ कर क्यों अप्रत्यक्ष = परोक्ष के पीछे भागते हो क्यों अपनी जवानी का नाश करते हो, अहो ! भोग विलास, विषय वासना में यौवन नष्ट नहीं होता ।

पूर्वार्द्ध का एक अर्थ और भी है—

सचमुच वह मनुष्य नष्ट हो जाता है, जो मन को न झुलाता हुआ इसके घोर [भयंकर दु खदायी] विषय समूह को सेवन करता है ।

विषय तो विष हैं विषैला सर्प है । काले ने डसा कोई नहीं बचता । विषय में तो धन जावे, मान जावे और छोड़ जायें स्वजन ! वेद बहुत मार्मिक शब्दों में कहता है—

पिता माता भ्रातरमेनमाहुर् न जानीमो नयता बद्धमेतम
[ ऋ० १० । ३४ । ४ ]

बाप, माँ, भाई कहते हैं, हम इसे नहीं जानते, बेशक इसे बाँध कर ले जाओ । सब सम्बन्धी पराये बन जाते हैं । व्यसनी का कोई अपना नहीं बनता । वेद कहता है—

ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति ।
[ ऋ० १० । ३४ । १० ]

ऋण की कामना वाला डरता है ऋण की चाह है, डर के मारे रात को दूसरे के घर जाता है ।

व्यसनी घोर व्यसनों में पड़ कर सम्पत्ति नष्ट कर बैठता है । अब ऋण लेने लगा है । कुछ दिन तक सुविधा से ऋण मिलता रहता है । जब वह ऋण वापिस नहीं करता ऋण दाता तंग करता है ऋणी डर कर अपने घर नहीं आता । कितनी दुर्दशा है ?

इस विपत्ति से बचने के लिये वेद कहता है—

मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु [ १०।३४।१४ ]

धृष्टता करके ढिठाई को सामने रख कर घोर आचरण मत करो । बुराई के मार्ग में ढीठ लोग ही जाते हैं ।

व्यसनों से धननाश बता कर धन रक्षा का सच्चा वास्तविक उपाय भी वेद बताता है—

[ शेष पृष्ठ ४ पर ]

वर्ष ७१ | अंक २५

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए

इस अंक में पढ़िए !

# देव-यान

श्री प० जगत्कुमार शास्त्री "साधु सोमतीर्थ, देहली

ते इद्देवाना सधमाद आसन्,
ऋतावानः कवयः पूर्व्यासः ।
गूल्ह ज्योति. पितरो अन्वविन्दन्,
सत्य मन्त्रा अजनयन्नुषासम् ॥

ऋ० ७।७६।४

शब्दार्थ–(ते इत्) केवल वे मनुष्य ही (देवानाम्) देवों के विद्वानो के (सधमाद) साथ मिल-जुल कर आनन्द का, विद्या का, अन्न और धन का, उपभोग करने वाले (आसन्) होते थे, होते हैं, और होगे, जोकि (ऋतावानः) सत्याचरण करने वाले हैं,(कवयः) क्रान्तदर्शी, विद्वान् (पूर्व्यास) विद्यादि सद्गुणो मे पूर्ण अर्थान् प्रथम कोटि के हैं। जो (पितरः) जो पितर अर्थात् उत्तम नियमो के प्रतिपालक और दुर्बल जनो के पालक-पोषक और (गूल्हम्) गूढ़, अज्ञात, छिपे हुए (ज्योति.) प्रकाश विज्ञान, तत्त्व एवं रहस्य इत्यादि को (अन्वविन्दन्) पूर्णतया प्राप्त कर लेते हैं, जो (सत्य-मन्त्रा) उत्तम विचार वाले और सबको सत्परामर्श देने वाले होते हैं। और (उषासम्) उषा को, आध्यात्मिक उषा को, जीवन-प्रभात को, अनुकूल और आनन्ददायक परिस्थिति को (अजनयन्) प्रगट करते हैं, प्राप्त करते हैं, उत्पन्न करते हैं।

भावार्थ—ससार मे केवल वे मनुष्य ही प्राकृतिक ऐश्वर्य की उपलब्धि और श्रेष्ठ विद्वानों के संसर्ग से आनन्द को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं, जो कि सत्य-शील, विद्याव्यसनी, सब विद्याओं के मर्मज्ञ, उत्तम नियमों के प्रति-पालक, परोपकारी, दुर्बलों के सहायक, आत्मिक और भौतिक गूढ तत्त्वों के अन्वेषक, और आवि-ष्कारक, उत्तम विचारक और आनन्द को निरन्तर ही बढ़ाने वाली उत्तम परिस्थितियों के निर्माता होते है।

### प्रवचन

यह एक त्रिकालाबाधित सत्य-सिद्धान्त है कि दुष्ट स्वभाव वाले लोगों को वेद-पाठ, सत्याचरण, यम-नियम-प्रतिपालन, जप, तप, यज्ञानुष्ठान, त्याग और बलि-दान का वह फल प्राप्त नहीं होता, जो उत्तम स्वभाव वाले लोगों को प्राप्त होता है। शिव-सकल्पों मे अपूर्व बल है। यह बात दूसरी है कि शिव-सकल्पों का रहस्य और महत्त्व अल्प-गति-मति वाले शूद्र लोगो की समझ मे नहीं आता। यदि कोई प्रभु की कृपा को प्राप्त करना चाहता है, तो पहिले पात्रता प्राप्त करे।

भजन बिना बावरे !
तूने हीरा-जन्म गवाया,
भजन बिना बावरे !
हाथ सिमिरनी,पेट कतरनी,
पढे भागवत – गीता ।

के साथ शुभ कर्म करते हैं, और दूसरो को भी शुभ कर्म करने का उपदेश देते हैं।

शुभ कर्मों से जिनकी प्रीति होती है, वे तो कठिन-प्रसङ्गों में भी शुभ कर्म ही करते हैं। शुभ कर्म कर्त्ता महाजन अशुभ कर्मों में प्रवृत्त कभी नहीं होते। उनका कोई विशेष लक्ष्य होता है, लगन होती है।

लगी लगन छूटे नहीं,
जीभ चोंच जरि जाये।
मीठा कहाँ अंगार मे ?
जाहि चकोर चबाय ॥

सत्य के शुद्ध, और निर्विशेष

## अध्यात्म-सुधा
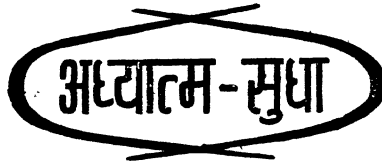
हृदय शुद्ध नहीं किया बावरे,
कहत सुनत युग बीता ॥
भजन बिना बावरे !
तूने हीरा-जन्म गॅवाया ।

जब तक हृदय शुद्ध न हो, तब तक इस दिखावे के बाह्य-आचारों से क्या होगा ?

दोकौड़ी की कड़वी तुम्बड़िया,
सभी तीरथ कर आई रे।
गगा न्हाई, जमुना न्हाई,
तबहु गई न कड़वाई रे ॥

लोग एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं। इस प्रतिस्पर्धा का परि-णाम तो राग, द्वेष और क्लेश की वृद्धि के रूप में ही देखने में आता है। एक दूसरे से बढ़ चढ़कर, अधिक शुभ कर्म करने की प्रति-स्पर्धा लोग क्यों नहीं करते ? धन्य हैं, वे जो अपने पूरे सामर्थ्य

रूप को "ऋत" कहते हैं। "ऋत" की प्राप्ति मानव-जीवन की एक असाधारण सिद्धि है। कई-कई जन्मों के असाधारण पुरुषार्थ और शुभ कर्मों के फल स्वरूप यह सिद्धि किसी-किसी सौभाग्यशाली महा मानव को ही प्राप्त होती है। सांसारिक भोग और ऐश्वर्य का मूल्य देकर इसे नहीं खरीदा जा सकता।

"ऋत्वान्" बनने के लिये साधक को "कवि" भी बनना होगा। कवि उस क्रांति-दर्शी महा मानव को कहते हैं, जो कि अपने सकल्पों, अपनी अनुभूतियों और अपनी विद्या के आधार पर ससार के चप्पे-चप्पे में पहुच सकता है, कण-कण को देख सकता है, अणु-अणु का सदुपयोग करता है, और सदा ही सर्वलोक-हिताय आनन्द के सम्वर्धन में निमग्न रहता है।

'कवि' शब्द को देखकर, कोई किसी दीन, हीन, अतिवादी भिखारी की कल्पना न करें।

ऋत्वान् और कविजनों के लिये यह भी आवश्यक है कि वे जीवन की सभी कठिन परीक्षाओं मे उत्तीर्ण हों और सम्मान सहित उत्तीर्ण हों। न तो कभी अपने विवेक को नष्ट होने दें, न कभी असयम वा असावधानता करें, न आत्म-नियन्त्रण को नष्ट करें, न अनुकूल अवसर को खोवे, न ही व्यर्थ अशान्तिवर्धक और अशुभ एव अवांछनीय कार्यो में अपनी शक्तियो को बिगाड़ें।

ऋत्वान्, कवि और प्रथम कोटि के महा मानवो के लिये यह उचित नहीं है कि वे मौन धारण करके और हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहे, तथा सत्य की हत्या, दुःख की वृद्धि और अनर्थों के कुचक्रों को चुपचाप देखते रहें। उनको तो पाखण्ड-खण्डिनी-पताका लहराते हुए सत्य की सिरोही तान कर शीघ्राति-शीघ्र कार्य क्षेत्र में आना चाहिए। वे आयें और अपने सत्य मन्त्र अर्थात् सच्चे तत्त्वदर्शी और सत्य-प्रेमी होने का परिचय दें। यदि वे ऐसा न करेंगे, और अकेले ही अकेले योग समाधि का आनन्द लूटेंगे, तब तो वे स्वार्थी और कायर ही समझे जायेंगे। उनके जीवन में गतिरोध पैदा होंगे, मोक्ष की प्राप्ति भी न कर सकेगे।

सुदीर्घ-कालीन स्तुति, प्रार्थना और उपासना आदि-आदि के पश्चात् और मोक्ष की प्राप्ति से ठीक पहले, जो आशा की किरण फूटती है, उसे 'उषा' कहते हैं। यह आध्यात्मिक-जीवन की उषा है। इस उषा के सौंदर्य और महत्त्व का थोड़ा-सा अनुमान हम उस उषा के साथ तुलना करके लगा सकते हैं, जो कि प्रतिदिन रात्रि के अन्त मे, और सूर्योदय के ठीक पहले क्षितिज पर चित्रित हो जाती है। गूढ़-प्रकाश के प्रेमी और उत्तम नियमों के प्रति पालक—

[ शेष पृष्ठ १२ कालम ४ पर ]

लखनऊ-रविवार ६ जुलाई ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का नवीन नेतृत्व

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नैनीताल अधिवेशन की मधुरस्मृतियाँ अभी ताजी हैं, नैनीताल में प्रान्त के कोने-कोने से पधारने वाले प्रतिनिधि भाइयो का पारस्परिक मिलन और प्रान्तीय एव पर्वतीय प्रदेश की समस्याओ में उनकी रुचि देख कर ऐसा प्रतीत होता था, उनके मस्तिष्को में एक सच्चे आर्य होने के नाते तड़फ है और वे लगन व उत्साह के साथ आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने को उत्सुक हैं। वृहदधिवेशन और उस अवसर पर उत्सव सम्बन्धी आवश्यक कार्य क्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए और धीरे-धीरे सभी प्रतिनिधि अपने स्थानो को लौट गये।

प्रश्न यह है कि हम नैनीताल से क्या प्रेरणा लेकर लौटे और अब क्या करना है।

नैनीताल वृहदधिवेशन की नवीन तम उपलब्धि सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री हैं। वे आर्य समाज के उच्चकोटि के वक्ता एव महोपदेशक हैं और उन्हो ने अपने जीवन का अधिकाश आर्य समाज की सेवा एव वैदिक धर्म के प्रचार मे ही विताया है। वे प्राय. पदो से दूर रह कर मौन तपस्वी के रूप मे ही कार्य करते रहे है। परन्तु, इस वर्ष नैनीताल मे आर्य जनो ने उन्हे सक्रीय रूप से नेतृत्व सौप दिया है। हमे पूर्ण विश्वास है कि वे अपने मार्ग दर्शन मे सभा को अधिक सक्रिय बनाने मे सफल होंगे।

सभा के मन्त्री पद पर पुनः श्री प० प्रेमचन्द्र शर्मा जी को निर्वाचित कर जहा उत्तर प्रदेश के आर्य जनो ने एक उत्तम निर्णय लिया है, वहाँ श्री शर्मा जी के कधो पर विशेष बोझ डाल दिया है क्योकि सभा की आर्थिक और सगठनात्मक समस्याओ को सुलझाने मे श्री शर्मा जी को विशेष और कठोर परिश्रम करना होगा। वे पुराने और अनुभवी कार्य-कर्ता हैं, और हमे पूर्ण विश्वास है कि सभा की उन्नति मे उनको महत्त्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त होगी।

हम नये प्रधान और मन्त्री का आर्यमित्र परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उत्तर प्रदेश आर्य बन्धुओं से निवेदन करना चाहते हैं कि निर्वाचन कर देने के बाद सभा के प्रति कार्य समाप्त नहीं हो जाता, अपितु यह मानना अधिक उपयुक्त होगा कि निर्वाचन के बाद सभा के प्रति कर्त्तव्य आरम्भ होता है। प्रतिनिधि गण अपनी भावनाओ के अनुरूप अपने पदाधिकारियो का निर्वाचन करते हैं और फिर उन अधिकारियों को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग देना भी प्रतिनिधियो का परम कर्त्तव्य है। इस दृष्टि से सभा की उन्नति और सफलता के लिये हमे हर समय सम्मिलित उत्तरदायित्व की भावना से कार्य करना होगा। निर्वाचन प्रजातन्त्र का परिणाम है एक मति से निर्वाचन कठिन है परन्तु निर्वाचन के बाद सभा के हित मे एकमत होकर कार्य करना यह भी प्रजा तन्त्र मे आस्था का आदर्श है। हमे पूर्ण आशा है कि सभा की उन्नति मे इस आदर्श के अनुसार कार्य किया जायगा। और सभा आर्य जगत् की आदर्श प्रतिनिधि सभा का उदाहरण प्रस्तुत करेगी। सभा के सम्मुख अनेक कार्य है उनमे सबसे महत्वपूर्ण है वेद प्रचार की समस्या। आर्य समाज के कार्य को व्यावहारिक रूप देने के लिये सभा का वेद प्रचार विभाग आदर्श सक्षम और नवीन परिस्थितियो के अनुकूल होना चाहिये। नये प्रधान जी उपदेश विभाग के सचालन का विशेष अनुभव रखते है, हमे आशा है कि वे इस दिशा मे सभा के परम्परागत ढाँचे को बदलने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

इसी प्रकार सभा के सम्मुख नवीन सभाभवन विरजानन्द स्मारक मथुरा, आर्य समाज हर द्वार के नव-निर्माण की व्यापक योजनायें हैं, साथ ही सभा ने इस वर्ष नवम्बर में काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मनाने का भी निश्चय किया है, उसे भी पूर्णतया सफल बनाने मे जुटना होगा। वृन्दावन गुरुकुल को विश्वविद्यालय के रूप मे विकसित करने की ओर भी विशेष ध्यान देना है। ये सभा के कार्य ऐसे हैं, जिनकी पूर्ति से सभा के सभी पदाधिकारियो और प्रतिनिधि सदस्यो एव आर्य जनता को विशेष ध्यान देना औरकार्य करना है।

वार्षिक वृहदधिवेशन अतीत का सिंहावलोकन करने और भविष्य के लिये कर्त्तव्य निर्धारण हुआ करते हैं। नैनीताल अधिवेशन ने सभा को नवीन प्रधान दिये है, विचार दिये हैं, योजनायें दी है आशा है कि हम सभी मिलकर सभा की योजनाओ को पूरा करने मे जुट जायेंगे। हम अपनी शक्ति के अनुसार जब अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे तो अवश्य सफल होंगे।

## आभार-प्रदर्शन

आर्यमित्र के सम्पादक पद का कार्यभार पुनः सम्हालने पर अनेक इष्ट मित्रो एव आर्य बन्धुओ ने हार्दिक बधाइयाँ भेजी हैं। मैं उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करता हू और आशा करता हू कि इस सेवा कार्य मे मुझे उन सबका सहयोग और पथ-प्रदर्शन प्राप्त होता रहेगा।

आर्यमित्र आर्यसमाज का अग्रदूत है अपने ७१ वर्षीय जीवन मे उसके द्वारा आर्यसमाज की जो सेवा बन सकी है वह एक ऐतिहासिक तथ्य है, मित्र भविष्य मे भी आर्य जगत का आदर्श सेवक बना रहे और आर्यसमाज के कार्य और गौरव की वृद्धि मे सहायक बने यही मेरी अभिलाषा है। मित्र की उन्नति मे सहायक बन कर मैं आर्य समाज की सेवा मे योग दे सकू, इसी आशा मे मित्र की सेवा स्वीकार की है, आशा है आप सबके सहयोग से सफल हो सकूँगा। मित्र के पाठको एवं शुभैषियो के सुझावो और विचारो का स्वागत कर अपने को कृतार्थ समझूंगा।

—उमेशचन्द्र स्नातक, सम्पादक आर्यमित्र

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

महर्षि दयानन्द ने वेदों के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराने के लिये जीवन पर्यन्त जो कार्य किया उसमे काशी शास्त्रार्थ का ऐतिहासिक महत्व है। उस समय चाहे उस शास्त्रार्थ का का महत्व न समझा गया हो पर आज उसका महत्व सुस्पष्ट है। आज भारतीय विचार धारा से विरोध रखने वाले योरपीय तथा उनके पिछलग्गू तथा कथित विद्वान वेदो पर जो आक्षेप करते हैं सायण-महीधर के भाष्यो पर जो कटु व्यंग और समालोचना की जाती है उन सबका प्रतिकार महर्षि का वेद भाष्य करने में समर्थ हैं। इस वेद भाष्य की आधार शिला इसी काशी शास्त्रार्थ मे रक्खी गयी थी।

हर्ष का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आगामी नवम्बर मे इस शास्त्रार्थ की शताब्दी का कार्य-क्रम सम्पन्न करना निश्चित किया है। सभा ने इस कार्य के लिये एक उप-समिति का गठन कर दिया है, और समिति ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है उसकी योजना आर्य जगत् के सम्मुख आगामी अङ्क मे प्रकाशित की जायगी है। इस योजना के दो तीन मुख्य अंग होंगे।

(१) वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के पक्ष मे विशेष साहित्य तय्यार करना।

(२) महर्षि दयानन्द के वेद सन्देश

,को भारत भर मे पहुचाने के लिये ,शास्त्रार्थ ज्योति" लेकर दे। याता।

(३) शताब्दी समारोह के अवसर पर ख्याति प्राप्त विद्वानो (भारतीय विदेशी) की सगोष्ठियां जिसमे वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने वालो का एक पक्ष होगा, और दूसरा पक्ष वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं हैं होगा। दोनों पक्ष अपने-अपने लेख तैयार कर शास्त्रार्थ के रूप मे प्रस्तुत किया करेंगे।

(४) शताब्दी के अवसर पर इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायगा कि महर्षि के वेद सम्बन्धी कार्य को पूर्ण करने के लिये क्या-क्या और कौन कौन से कदम उठाये जाए।

इसी प्रकार अन्य उन सभी समस्याओ पर भी विचार किया जायगा, जो वेद प्रचार से सम्बन्धित होंगी। आर्य जनता इस सम्बन्ध में अपने सुझाव समिति के पास भेजने की कृपा करे, जिससे उन पर भी विचार किया जा सके।

इस बड़े आयोजन की सफलता के लिये पग तो उठा लिया गया है पर यह सारा कार्य धन के बिना सम्भव नहीं। अतः आर्य जनता का कर्त्तव्य है कि वह इस कार्य के लिये सभा की मुक्त हस्त से सहायता करे। हमें पूर्ण आशा है कि आर्य जगत् इस कार्य के लिये सभा को पूर्ण सहयोग देगा और यह ऐतिहासिक कार्य अपने गौरव के अनुरूप सफल होगा।

## पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में श्री आनन्द स्वामी जी की घोषणा

आर्य जगत् के मूर्धन्य नेता महात्मा आनन्द स्वामी जी को आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद सार्वदेशिक सभा की अन्तरग और आर्य प्रतिनिधि सभा के दोनों पक्षों ने आपसी विवाद का निवटारा करने के लिये जो सर्वाधिकार दिया था उसके आधार पर स्वामी जी महाराज गत मार्च से बड़ी तत्परता के साथ प्रयत्नशील थे और उन्होंने यथाशक्ति पजाब सभा के दोनो पक्षो को मिलाकर कार्य करने के लिये सहमत करने का प्रयत्न किया। एक मध्यस्थ के रूप मे उन्होंने अपनी आदर्श भूमिका निभायी, दोनो पक्षों की ओर से उनके आदेशो निर्देशो की समालोचना भी हुई परन्तु, स्वामी जी अपने मार्ग पर आगे बढ़ते रहे।

आर्य जगत् मे इस समाचार से हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी है कि पूज्य स्वामी जी ने श्री प्रो० रामसिह जी को पुनः पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रूप में कार्य करने का निर्णयात्मक आदेश दे दिया है। स्वामी जी के आदेश की प्रतिलिपि मित्र के इसी अक मे प्रकाशित है।

इस प्रकार हम समझते हैं कि आर्य जगत् ने जिस नेता को मध्यस्थ बनाया उसका निर्णय प्राप्त हो गया है, और अब इसका पालन सद्भावना, सहयोग एव अनुशासन की दृष्टि से किया ही जाना चाहिये। हमे पूर्ण आशा है कि श्री दीवान रामशरणदास जी व श्री डा० हरिप्रकाश जी एवं उनके साथी स्वामी जी के आदेश को स्वीकार करेंगे और आर्यजगत् मे सम्व्याप्त चिरकालीन विवाद समाप्त हो जायगा। स्वामी जी ने आर्य जगत् के विवाद को समाप्त कराने मे जो निर्णयात्मक भूमिका अदा की है सारा आर्य जगत् उसके लिये उनके प्रति आभार प्रकट करता है। हमे पूर्ण आशा है कि स्वामी जी आर्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष रूप मे आर्यसमाज के अन्य सभी आन्तरिक विवादों को समाप्त कराने का भी सफल प्रयास करेंगे।

हम स्वामी जी के कार्य की सफलता के लिये मित्र परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनायें करते हैं। हम पजब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रो० रामसिह जी व मन्त्री श्री रघुवीर सिंह जी को हार्दिक बधाई देते हुये आशा करते हैं कि उनके नेतृत्व में पजाब का आर्य समाज पूर्ववत् गौरव प्राप्त करेगा।

★

## आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का संचालन पुनः प्रो० रामसिंह जी को सौंपा

### महात्मा आनन्द स्वामी जी का निर्णय

नई दिल्ली, २३-६-६९ सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, हैदराबाद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा पजाब सभा के दोनों पक्षों द्वारा अधिकार देने पर महात्मा आनन्द स्वामी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के झगड़े सुलझाने का कार्य अपने हाथों में लिया। प्रो० रामसिह जी ने महात्मा जी के आदेशानुसार अभियोग वापस ले लिये तथा अपना कार्यालय, कर्मचारी, रिकार्ड व धन सब उनकी सेवा मे अर्पित कर दिये,परन्तु दीवानरामसरन दास तथा श्री वीरेन्द्रजी ने न अभियोग वापस लिये तथा न अन्य किसी प्रकार का सहयोग दिया। झगडे समाप्त करने की भावना से ही महात्मा जी ने दीवान रामसरन दास को आदेश दिया था कि ५-५-६८ को निर्वाचित सार्वदेशिक सभा के एक पक्षीय १५ प्रतिनिधियो को सार्वदेशिक सभा की ३१-५-६९ की बैठक मे न जाने दें। दीवान रामसरन दास तथा सार्वदेशिक सभा ने उक्त आदेश का उल्लघन किया। इससे महात्मा जी को बड़ा दुख हुआ। फिर भी उन्हो ने झगडे समाप्त करने की आशा नहीं छोड़ी। अब श्री वीरेन्द्रजी आदि ने भ्रममूलक तथ्यों के आधार पर जालधर स्थित सभा का कार्यालय खुलवा कर निश्चय के अनुसार उसका चार्ज महात्मा आनन्द भिक्षु को नहीं दिया। आनद स्वामीजी को काश्मीर मे जब इसका पता लगा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। तदनन्तर उन्होने प्रो० रामसिह जी को तार द्वारा आदेश दिया कि वह यथापूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रबन्ध तथा नियंत्रण का कार्य सभाल लें। उसी दिन से प्रो० रामसिह जी सभा प्रधान तथा उनके अन्य साथियो ने सभा का कार्य संभाल लिया है और महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा कार्य प्रबन्धकर्त्री समिति स्वयमेव समाप्त हो गई। ला० दीवान चन्द भूतपूर्व संयोजक समिति ने सब सदस्यो को पत्र द्वारा समिति भग होने की सूचना दे दी है।

रघुवीर सिंह शास्त्री, सभा मन्त्री
उपकार्यालय, १५ हनूमान रोड, नई दिल्ली।

[पहले पृष्ठ का शेष]

यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपाः ऋतेजाः

जो यज्ञो द्वारा भगवान् की पूजा करता है, वहऋत रक्षक=धन रक्षक ऋतेजा=ऋत पुत्र=धर्म्म पुत्र धनों को बसाता है।

धन चचल है, आज एक के पास है, कल दूसरे के पास। भागते रहना स्थान बदलते रहना धन का स्वभाव है। किन्तु जो दान मे लगाता है, उसके पास यह बस जाता है। जो इसे रखना चाहे, उसके पास रहता नहीं; जो इसे दूर करे, उसके पास भागे आता है। कैसी विचित्रता है।

सागर सूर्य को जल देता है। सूर्य उसे सभी जगह बरसाता है। किन्तु सभी स्थानो का जल दौडकर अन्त में सागर मे जाता है। जो सागर में नहीं जाता, वह सड़ाद पैदा करता है या सूख जाता है। यही दशा धन सम्पत्ति की है। दे डालो तो निश्चिन्तता। संभाल कर रखो, चोर, चाकर, राजा का भय।

दान को वेद की परिभाषा मे यज्ञ कहते हैं सब धन भगवान् का है। उसी ने सबको दिया है, जो इस तत्व को समझ कर 'त्वदीय वस्तु सवत्मिन् तुभ्यमेव समर्पये, [तेरी वस्तु प्रभो तुझे ही अर्पण करता हूं] की भावना से भगवान् के निमित्त दे डालते हैं, वे सचमुच यज्ञ करते हैं।

यज्ञ में द्रव्य डालते हैं उससे वृष्टि होती है, वृष्टि से धन धान्य होता है, वह फिर याज्ञिक के पास आता है, और हुत द्रव्य से अधिक मात्रा में आता है।

अतः धन का सच्चा उपयोग, धन का सच्चा बचाव यज्ञ में है। इसलिये प्रत्येक आर्य पुरुष को नित्य यज्ञ करना चाहिये। यज्ञ की महिमा अपार है, इसके लाभ असीमित हैं।

[ गताङ्क से आगे ]

मतुरग्रेऽधिजमनं द्वितीय मोञ्जिबन्धने । तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुति चोदनात् ।। २।१९६

तत्र यद् ब्रह्म जन्मास्य मोञ्जीबन्धन चिह्नतम् । तत्रास्य माता सावित्री पितात्वाचार्य उच्यते ।। २।१७० ।।

द्विजो का प्रथम जन्म, माता के आगे और दूसरा मेखला बन्धन (उपनयन) के समय और तीसरा यज्ञ दीक्षा के समय होता है। उक्त तीनो जन्मों मे ब्राह्मण का जन्म गायत्री माता और आचार्य पिता से होता है। जननी जनक से नहीं । अर्थात् आचार्य माता गायत्री के प्रसाद से शिष्य की पवित्र बुद्धि और कर्म देख कर उसे ब्राह्मण की उपाधि दे देता है।

शूद्रेण हि समस्तावद्यावद्वेदे न जायते । अ० २।१७२ ।।

वेद का अध्ययन करने से पूर्व शूद्र तुल्य है।

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमै स्त्रैविद्ये नेज्ययासुतं. । महायज्ञैश्चयज्ञैश्च ब्राह्मीय क्रियते तनु. ।। २।२८ ।।

स्वाध्याय से, व्रतों से, वेदाध्ययन से तथा अतिथि सत्कारादि महायज्ञो से यह शरीर ब्राह्मण का किया जाता है। ब्राह्मी का अर्थ ब्रह्म प्राप्ति योग्यता 'जो कुल्लूक ने किया है और अब जो करते हैं' वह भूल करते हैं। क्योंकि यहाँ तस्ये द से आप् प्रत्यय "तस्य" "उसके" अर्थ हैं ब्राह्मण की तनु क्योंकि ब्रह्म और क्षत्र शब्द ब्राह्मण और क्षत्रिय के प्रसिद्ध पदार्थ है। अत स्पष्ट है कि इन पुण्य कर्मों से मनुष्य ब्राह्मण होता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चति शूद्रताम् । क्षत्रियाज्जात मेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ।।१०।६५

कर्मो की अच्छाई बुराई से शूद्र ब्राह्मण हो जाता है, और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है। यही

# वर्ण व्यवस्था का वैदिक स्वरूप

**'वेद' मनुष्य-मनुष्य में जन्म से किसी भी भेद भाव को स्वीकार नहीं करता ! प्रभु की दृष्टि में सभी समान है ! छूत-छात और अस्पृश्यता शास्त्रीय दृष्टि से अमान्य है !**

बात क्षत्री और ब्राह्मण के लिये भी है। अब तक मनु के बतियो प्रमाणों से आपने यह देख लिया वर्ण गुण और कर्म से ही होते हैं। अब महाभारत को देखिये—

## महाभारत के प्रमाण

भारद्वाज मुनि भृगु से प्रश्न करते है।

ब्राह्मणः केन भवति क्षत्रियो वा द्विजोत्तम । वैश्यः शूद्रश्च विप्रस्तद्ब्रूहि वदतांवरा ।। म. भा शा अ. १८९ ।

हे द्विजोत्तम ब्राह्मण क्षत्रियादि वर्ण किस-किस कर्म से होते हैं, यह कृपया बताइये । भृगु का

उत्तर— जातकर्मादि भिर्यस्त सस्कारः सस्कृतः शुचि वेदाध्ययन सम्पन्नः पट्सु कर्मस्वस्थित. ।

शौचोचारस्थित. सम्यक् विघ्रा भ्यासी गुरुप्रिय. । नित्यव्रती सत्यपरः सवै ब्राह्मण उच्चते ।।

कि जिसके मर्यादानुसार सस्कार हुये हो, वेद पढ़ा लिखा हो अध्ययन-अध्यायनादि छओ कर्म करता हो पवित्र आचरणशील, गुरुप्रेमी, व्रत का अनुष्ठान करने वाला हो वह ब्राह्मण होता है। और—

सत्य दानमथाद्रोह मानृशस्य त्रपाघृणा । तपश्च दृश्यते यत्र स ब्राह्मण इति स्मृति. ।।

सत्य वक्ता, दानी, सबसे प्रेम करने वाला सहनशील लज्जाशील, दयालु और तप के गुण जिसमे हैं, वह ब्राह्मण है। है कहीं जन्म की गन्ध ? इसी प्रकार क्षत्री और वैश्य के बताये हैं, जिन्हे हम विस्तार के भय से छोड देते हैं। शूद्र का लक्षण करते हुए मुनि बताते हैं। "त्यक्त वेदस्त्वनाचारः सवै शूद्र इति स्मत कि वेद और ज्ञान और आचार हीन सूद्र है। इन दोनों गुणो से हीन ब्राह्मणों के पुत्र भी शूद्र हैं यह महाभारत का मत स्पष्ट है। इतना ही नहीं—

ब्राह्मणः पतनीयेषु वर्तमान विकर्मसु । परिदाम्भिकः दुष्कृतः पापः शूद्रेण सदशो भवेत् ।।

महा० भा० वनपर्व० अ० २१६

नीच कर्म करता हुआ, दम्भी पापी ब्राह्मण शूद्र तुल्य है।

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्में च सतत स्थित । त ब्राह्मणमह मन्ये व्रतेन हि भवेद् द्विजः ।।

भा० व० अ० २१६ ।।

जो शूद्र दमी, सत्यवक्ता, धर्म परायण है उसको मै ब्राह्मण मानता हू। क्योकि ब्राह्मण उत्तम कर्म से ही बनता है। भारद्वाज मुनि भृगु से शका करते हुए पूछते है—

काम. क्रोधो भय लोभ शोकश्चिन्ता क्षुधा श्रम । सर्वेषा न प्रभवति कस्मद्वर्णो विभज्यते ।।

महा०भा० शा० पर्व० अ० १८८।।

कि महाराज ! काम, क्रोध, भय, लोभ, शोक, चिंता, भूख, थकावट जब हम सब मनुष्यो को समान लगती है, तब फिर वर्णों का विभाग कैसा ? भृगु बोले—

नाविशेषोऽस्ति वर्णाना सर्वं ब्राह्ममिद जगत् । ब्रह्मणा पूर्वं सृष्टा हि कर्मभिर्वर्णताङ्गतम् ।।

कि ईश्वर ने सब मनुष्यो को समान ब्राह्मण ही उत्पन्न किया था, अपने-अपने भिन्न कर्मों ने ही वर्णों मे विभक्त किया। स्पष्ट है, वर्ण कर्म से हैं जन्म से नहीं।

★श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री,
ससद-सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र.

कामभोगीप्रियास्तीक्ष्णाः क्रोधिना प्रियसाहसा. । त्यक्त स्वधर्मारक्ताङ्गास्ते द्विजाः क्षत्रतांगता ।।

कि जिन ब्राह्मणो ने अपनी रुचि नुसार के सुख भोगने और साहसी कर्म करने की ओर दी वे ब्रह्मण से क्षत्रिय बन गये।

गोभ्यो वृत्तिमास्थाय पीताः कृष्युपजीविन. । स्वधर्मान्नानुतिष्ठन्ति ते द्विजा वैश्यतां गता. ।

व्यापार और कृषि की ओर जिन ब्राह्मणो का झुकाव हो गया, वे वैश्य बन गये। हिसानृत प्रिया लुब्धा, सर्वकर्मोपजीविनः । कृष्णाः शौच परिभ्रष्टास्ते द्विजा शूद्रतां गताः ।।

हिंसक और लालची पवित्रता रहित ब्राह्मण शूद्र बन गये।

इत्येतै कर्मभिर्व्यस्ताद्विजावर्णान्तरङ्गत । धर्मो यज्ञ क्रिया तेषा नित्यन्न प्रतिषिध्यते ।।

इत्येते चत्वारोवर्णा येषां ब्राह्मी सरस्वती । विहिता ब्राह्मणा पूर्वं लोभाच्चाज्ञानताङ्गता ।।

# सामाजिक समस्याएँ

इन कर्मों के कारण ही ये द्विज क्षत्रियादि वर्ण के हो गये हैं। इन सबको धार्मिक यज्ञादि का पूर्ण अधिकार है। ये चारो वर्ण जिनकी वेदवाणी है, पहले सब ब्राह्मण थे, तपस्या के अभाव में अज्ञानी हो गये।

ब्रह्मचैव पर सृष्ट ये न जानन्ति तेऽद्विजा। म० भा० शा० १८८। ८-१७।

कि जो वेद को नहीं जानता वह शूद्र है।

यक्ष युद्धिष्ठिर के वार्तालाप मे यक्ष पूछता है—

राजन् कुलेन वृत्तेन स्वाध्यानेन श्रुतेन वा। ब्राह्मण्य कोन भवति प्रब्रूह्येतत् सुनिश्चितम् ॥

कि राजन्! जन्म से आचार से, स्वाध्याय से, अनुभव से ब्राह्मण किससे बनता है, निश्चित बताओ। युधिष्ठिर बोले—

शृणु यक्ष कुल तात न स्वध्यायो न च श्रुतम्। कारण हि द्विजत्वे तु वृत्तमेव न संशयः ॥

वृत्तं यत्नेन सरक्ष्य ब्राह्मणेन विशेषत्त। अक्षीणवृत्तो न क्षीणो वृत्ततस्तु हतोहत. ॥

चतुर्वेदोऽपि दुर्वृत्त. स. शूद्राद्तिरिच्यते। योऽग्निहोत्रपरो दान्त स ब्राह्मण इति स्मृत ॥

है यक्ष! सुनो ब्राह्मण बनने में न जन्म कारण है, न अध्ययन, न अनुभव, ब्राह्मण बनने में तो उत्तम गुण ही कारण हैं। आचार की सबको रक्षा करनी चाहिए, विशेष कर ब्राह्मण को, क्योंकि यदि आचार है तो सब कुछ है, और यदि आचार गया तो सब कुछ गया। चारों वेदों को जानने वाला भी यदि आचार हीन है, तो वह शूद्र मे भी निकृष्ट है। जो उत्तम कर्म करता आचरवान है वह ब्राह्मण है। इस प्रकार महाभारत ने भी खुले शब्दों में दसियों स्थानों पर यह बता दिया कि ब्राह्मणादि वर्ण गुण कर्म से हैं। अब कुछ और ग्रन्थों पर दृष्टि डालिये।

## अन्य प्रमाण

अश्रोत्रिया अननुवाक्या अनग्नयो वा शूद्रस्य सधर्मिणो भवन्ति

वासिष्ठ धर्ममूत्र ३। ३।

वेद ज्ञान विहीन, उपदेश देने मे असमर्थ अग्निहोत्र न करने वाले ब्राह्मण शूद्र सदृश होते हैं।

धर्मचर्यया जघन्यो वर्ण पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जाति परिवृत्तौ। अधर्म चर्यया पूर्वो वर्णो जघन्य वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥

आपस्तम्ब सू० २। ५। ११

आचार्य की दीक्षा के समय तक तथा पश्चात् भी धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण उत्तम हो जाता है, और धर्म विरुद्ध आचरण से उत्कृष्ट वर्ण निकृष्ट हो जाता है, इसमे "जाति परिवृत्तौ' का अर्थ जो लोग "दूसरे जन्म मे" करते हैं, वे भूल करते हैं। क्योंकि मनु ने स्पष्ट लिखा है कि "दीक्षा जन्म में" जिसमें कि आचार्य पिता और गायत्री माता होती है, विशेष वर्ण का अधिकारी होता है। अत. इसका वास्तविक अर्थ है, दीक्षा के समय जन्म को छोड़ कर जब गुणों के आधार पर परिवर्तन किया जाता है।

पुराण भी कहीं-कहीं स्वर मिलाते हैं।

पृषध्रास्तु गुरुगोवधाच्छूद्रत्वमगमत्। वि० पु० ४। १। १४ ॥

गुरु गौ के मारने पृषध्र शूद्र बन गया।

नाभागो नेदिष्ठ पुत्रस्तु वैश्यतामगमत्। वि० पु० ४।१।१६ ॥

नेदिष्ठ का पुत्र नाभाग वैश्य बन गया।

भागवत् ५। ४। १३ में लिखा है—

यवीयास एकाशीतिः जायन्तेयापितुरादेशकरा. महाशालीना महाश्रेत्रिया यज्ञशीलाः कर्मविशुद्धा ब्राह्मणा बभूवः।

इसकी टीका काव्यकला भूषण साहित्यभूषण पं० गोविन्ददास व्यास विनीत ने भागवत महा पुराण की बालबोधिनी टीका ३५३ पृष्ठ पर इस प्रकार की है—जयन्ती (ऋषभदेव की पत्नी) के शेष ८१ पुत्र पिता के आज्ञाकारी महाशीलवान वेद के उत्तमतया जानने वाले विशुद्ध कर्म करके ब्राह्मण हुये।

वायुपुराण अध्याय ९२।४५ —शुनक के पुत्र चारों वर्णों के हुए।

पुत्रोगृत्समदस्यासीच्छुनको यस्य शौनका। ब्राह्मणा क्षत्रियाश्चैव वैश्या. शूद्रस्तथैव च' ॥

अंगिराः के पुत्र भी चारों वर्णों के हुये।

हरिवंश ३२।२०

वेद मे मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिया है।

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य. ।१०।५३।४

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्रायचार्याय चारणाय च स्वाय ॥ यजु २६।२

पञ्चजना मम होत्र जुषध्वम्। ऋक् "पञ्च जना" का अर्थ निरुक्तकार चारोंवर्ण और निषाद करते हैं। वृद्धगौतम स्मृति अध्याय १६ मे चारो वर्णों को गायत्री का अधिकारी माना है। विष्णुस्मृति १।९ मे शूद्र को पाचों यज्ञों का अधिकारी बनाया है। गरुड़पुराण आचारकाण्ड मे शूद्रो को यज्ञोपवीत का विधान है।

इस प्रकार यह सुतरा सिद्ध है कि युक्ति और प्रमाणों से सब मनुष्य समान हैं। उनके उत्कृष्टता और निकृष्टता गुणकर्म से उपात्त है—स्वाभाविक नहीं हैं। मानव समाज की योग्यता और आवश्यकता पूर्ति की दृष्टि से ऋषियो ने उसे चार भागों मे विभक्त किया। वस्तुतः इससे उत्तम और वैज्ञानिक श्रम विभाजन को नहीं कर सकता।

अत. मध्यकालीन की रूढ़ियों के काटो को मार्ग से साफ करके देश को सुसंघटित और व्यवस्थित बनाकर स्वतन्त्रता का निर्बाध उपभोग करके अभ्युदय और निःश्रेयस् प्राप्त करना चाहिये।

★

## गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

ग्रीष्मकालीन अवकाश के पश्चात् गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का विद्यालय विभाग खुल जावेगा, और नवीन शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो जावेगा, उसी अवसर पर नवीन बालकों का प्रवेश भी होगा। जो गुरुकुल शिक्षा प्रेमी महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराना चाहें, वे गुरुकुल कार्यालय वृन्दावन से प्रवेश नियम व फार्म निशुल्क मंगाकर भरकर भेज दें, जिससे स्थान सुरक्षित रक्खा जा सके।

—मुख्याधिष्ठाता

## निर्वाचन

आर्य समाज हनुमान् रोड, नई दिल्ली।

प्रधान श्री ला० मेलाराम जी उप प्रधान—श्री नारायणदास जी कपूर, व श्री सरदारीलाल जी वर्मा, तथा श्री राममूर्ति जी केला मन्त्री—श्री सुभाष जी विद्यालकार सहायक मन्त्री—श्री हरवन्सलाल जी बहल, उपमन्त्री—श्री मदनमोहन जी गुप्त, व श्री त्रिलोकीनाथ जी दुरेजा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री शाति स्वरूप जी चोपड़ा, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री विश्वम्भरलाल जी सूद, कोषाध्यक्ष—श्री दयाकृष्ण जी दीक्षित, लेखा निरीक्षक—श्री ज्ञानचन्द जी गुप्त।

—अमरनाथ कृते मन्त्री

## आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर द्वारा वेद प्रचार

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर द्वारा दिनाक १२-६-६९ से १५-६-६९ तक वेद कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता आचार्य निरन्जनदेव जी शास्त्री के ओजस्वी एवं प्रेरणाप्रद उपदेशों से नगर की जनता अत्यन्त प्रभावित रही। आर्य भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल जी आर्य मेन्डोली [हरियाणा] निवासी के भजनों से भी जनता आह्लादित होती रही। बीकानेर के नागरिकों पर इस कथा का अच्छा प्रभाव पड़ा।

—रणजीतसिंह मन्त्री

## काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
★श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

[ ४१ ]

बिष बुझे वर्ष के वैरभाव, हर होली पर हठ सठ हाला।
जल जाता सब यज्ञ अग्नि मे, आ जाता अभिनव उजियाला।
शत्रु मित्र हो, मित्र सहोदर, नाते मे उन्नति हो दर-दर;
हर वर्ष स्नेह का नवीकरण, होली पर करती श्रुतिशाला।

[ ४२ ]

पन्द्रह अगस्त को हटी घटा, फिर हुआ देश मे उजियाला।
छब्बीस जनवरी को पाया, प्रिय पावन गणतन्त्र विशाला।
यह भी हैं पर्व दशहरे से, दें बोध विजय बल पहरे से,
देश निवासी राष्ट्रभक्त हों, यही पाठ देती श्रुतिशाला।

[ ४३ ]

ऋषि दधीचि से राम कृष्ण तक, अर्जुन भीम भूमि के भाला।
राणाप्रताप, गोविन्द, सिवा, देकर तन लाये जयमाला।
तिलक, गोखले, लाज, गांधी, नहरू, पटल, नेताजी ने;
लालबहादुर सेनानी ने, निज राष्ट्र भेट की श्रुतिशाला।

[ ४४ ]

सरदार भगत, आजाद चन्द्र, बिस्मिल की बनी देह ज्वाला।
शैतान सिह होकर शहीद, पहनी हमीद ने जयमाला।
सावरकर सातवलेकर ने, श्रद्धानन्द लेख, मालवीय,
निज दीप जला दी ज्योति जगा, दी दयानन्द ने श्रुतिशाला।

[ ४५ ]

जन ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, यह वर्णन नहीं भेद वाला।
ये वर्ण चार हैं मानव के, है हर समाज जिनकी शाला।
शिक्षक, रक्षक औ धन दाता, शुभ सर्व श्रेष्ठ है श्रमदाता;
गुण कर्म स्वभाव भाव से बस, सगठन करे घन श्रुतिशाला।

[ ४६ ]

यह देश नहीं हैं, देश सर्व, हर कर्म यही करने वाला।
हा नाम भिन्न हो सकते हैं, पर वर्ग यही बनने वाला।
है जन्म जात की व्यर्थ बात, गुण कर्म वर्ण का स्रोत सिद्ध;
ये वर्ण चार हैं सब समान, दे राष्ट्र एकता श्रुतिशाला।

[ ४७ ]

ब्राह्मण मुखिया है मुख समान,क्षत्रिय बाहु की शक्ति विशाला।
है वैश्य उदर विनिमय करता, शुभ शूद्र पाद सेवा वाला।
है एक बिना सब देह पगु, मिलकर सब करते सचालन,
जो अर्थ देह है वही देश, ज्योति राष्ट्र समता श्रुतिशाला।

[ ४८ ]

विद्या पढ़ने और पढ़ाने, समय नियम पालने वाला।
सत्य ग्रहण कर असत्य त्यागे, यज्ञ पच का करने वाला।
करे अर्चना वेद ज्ञान से, विज्ञान शिल्प की शोध करे;
तन बने तभी तो ब्राह्मण का, मन-जीवन मे हो श्रुतिशाला।

[ ४९ ]

ऊँच-नीच पग पन्थ निहारे, नीचे देख चले पद चाला।
छान वस्त्र से पानी पीना, हो वचन सत्य से शुचि आला।
करे मनन मन से हर मानव, करके विचार आचरण करे;
कर सावधान, व्यवधान हरे, उत्थान ज्ञान दे श्रुतिशाला।

[ ५० ]

सुने—करे उपदेश ईश का, राज पुरुष बन बल की ज्वाला।
धनुषबाण बन्दूक भुशुण्डी, बल खम्ब सम्ब सी कर वाला।
सर्वत्र विजय दें अग्नि अस्त्र, अरि का वध करे विविध आयुध,
वर न्याय रहे अन्याय न हो, शुभ न्याय शस्त्र है श्रुतिशाला।

[ ५१ ]

जो इन्द्र भांति ऐश्वर्य करे, हो सम हृदय जानने वाला।
वायु प्राणवत प्यार करे जो, यम सम न्यायाधीश निराला।
हो ज्ञान प्रकाशक सूर्य तुल्य, सम अग्नि दुष्ट को भस्म करे,
सम वरुण दुष्ट को बाधे जो, दे ऐसा शासक श्रुतिशाला।

[ ५२ ]

आनन्द चन्द्र-सा सज्जन को, धन धनेश-सा देने वाला।
सम सूर्य प्रतापी हो राजा, तन मन मनुज तपाने वाला।
अग्नि, वायु गुण सूर्य सोम के, वरुण, धर्म रक्षक, कुबेर के;
जिसे नहीं अरि नयन मिलाये, शासन-शिक्षण दे श्रुतिशाला।

[ ५३ ]

फिर भी शासक, शासक ठहरा, कब विज्ञ तुल्य होने वाला।
निज राज्य-अवधि ही शासक है, सत्कार मान पाने वाला।
विद्वान् किन्तु सर्वत्र सदा, सम्मान प्रतिष्ठा पाता है,
बहु शासन मे हैं शकायें, निशक किन्तु है श्रुतिशाला।

[ ५४ ]

होकर उत्पन्न शूद्र कुल मे, कर्म विप्र का करने वाला।
होकर उत्पन्न विप्र कुल मे, कर्म शूद्र का करने वाला।
गुण कर्म प्रकृति जिसकी जैसी, मिले मान्यता उसको वैसी,
वर्ण धर्म की यही व्यवस्था, सबको समान दे श्रुतिशाला।

[ ५५ ]

जन वर्ण न्यून के कर्म उच्च, या उच्च निम्न करने वाला।
ऊँचा नीचे हो जाता है, नीचा ऊपर चढने वाला।
अपना भाग्य आप निर्माता, धर्म सत्य हे मार्ग दिखाता,
कर्म हेतु मानव स्वतन्त्र है, मनुज उच्च करती श्रुतिशाला।

[ ५६ ]

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम क्रम आला।
विद्या-तप, उपयोग ज्ञान का, वाणप्रस्थ प्रस्थान सुकाला।
दे दक्ष पुत्र परिवार भार, सन्यास हेतु बन गमन करे,
परलोक-लोक की उन्नति का, यह पन्थ बताती श्रुतिशाला।

[ ५७ ]

भक्ति, कर्म, औ ज्ञान योग से, सुख लक्ष्य लब्ध हो उजियाला।
है यहाँ मात्र सकेत किया, जो ग्रन्थो मे देखा भाला।
स्वाध्याय शास्त्र का मनन करो, हो तत्व सूक्ष्म का विशद बोध,
जीव जन्म हो मनुज सार्थक, स्वयमेव ज्ञान है श्रुतिशाला।

[ ५८ ]

स्वर से करता हो वेद पाठ, पर नही अर्थ का उजियाला।
ऐसा मानव पशु के समान, है भार-बोझ ढोने वाला।
वेद पढे औ अर्थ आचरे, आनन्द लोक मे वह पचे;
प्रिय ज्ञान हरे अघ मृत्युवाद, दे पूर्ण हर्ष यो श्रुतिशाला।

[ ५९ ]

ऊपरी देह जल से पवित्र, सत्याचरण करे मन आला।
बल विद्या और तपस्या से, जीवात्मा शुद्ध हो उजियाला।
गुरु ज्ञान बुद्धि को शुद्ध करे, होता है सच्चा स्नान यही;
तन को मन को आत्म बुद्धि को, नित नहलाती है श्रुतिशाला।

[ ६० ]

हिन्सा से दूर वही हिन्दू, तन मन दोनो हो उजियाला।
सस्कार सोलहो के द्वारा, की परिष्कार हो तन शाला।
सस्कार सदा अनुपम अपार, जो हरें हृदय से दुराचार,
सचार करें जो सदाचार, सस्कार सत्य दे श्रुतिशाला।

(क्रमशः)

# वनिता विवेक

बहनो की बातें (८)-

## मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषोवेद' यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य है। वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् है, जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम [और] उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता, इसलिये [मातृमान्] अर्थात् "प्रशस्ता धार्मिकी माता वस्यस मातृमान्' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।" स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास के इस अश का पाठ करने के बाद साप्ताहिक सत्सग के दिन सरला बहन ने बालक-बालिकाओ की शिक्षा का उत्तरदायित्व माता पिता और आचार्य पर रखते हुये उन्हें किस प्रकार शिक्षा दें यह बतलाया। उन्होने कहा 'बालको को माता पिता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सुखमय हों और किसी अङ्ग से कोई कुचेष्टा न करने पावे। जब बोलने लगें तब उनकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे कि जिस वर्ण का स्थान, प्रयत्न अर्थात् 'प' इसका ओष्ठ स्थान और स्पष्ट प्रयत्न दोनों ओष्ठो को मिलाकर बोलना, ह्रस्व, दीर्घ प्लुत अक्षरों को ठीक ठीक बोल सकना। मधुर, गम्भीर सुन्दर स्वर उच्चार, मात्रा, पद, वाक्य संहिता अवसान, भिन्न-भिन्न श्रवण होवे। जब वह कुछ कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े, छोटे मान्य माता, पिता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनके वर्त्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करे, जिससे उनका अयोग्य व्यवहार न होवे सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्या प्रिय और सत्सङ्ग मे रुचि करें वैसा प्रयत्न करे। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करे। सदा सत्य भाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्न वदन आदि गुणो की प्राप्ति जिस प्रकार हो करावे।

इस पर मांटीसरी स्कूल में अपने बच्चो को भेजने वाली एक महिला ने पूछा "क्यो न हम इस ट्रेनिंग के लिये अपने बच्चो को मांटीसरी विद्यालय में भेज दें। व्यर्थ मे हम अपने ऊपर बच्चों के शिक्षा का भार क्यो लें? उन विद्यालयो मे बच्चे की शारीरिक और मानसिक उन्नति का ध्यान रक्खा जाता है। उसकी ज्ञानेन्द्रियो एवं कर्मेन्द्रियो की उन्नति के लिये प्रयत्न किया जाता है। इस पद्धति के दो उद्देश्य हैं। एक तो यह कि प्रत्येक इन्द्रिय को ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करने का अभ्यास हो जाता है हमारे ज्ञान मे अपूर्णता इसलिये रहती है क्योकि हम इन्द्रियों से अधकचरा ज्ञान प्राप्त करने के आदी हैं। दूसरा लाभ यह है कि इन्द्रियों को साधने से केवल इन्द्रिया ही नहीं सधती, मनुष्य की सम्पूर्ण बुद्धि का विकास होता है, एक इन्द्रिय की सधी हुई 'शक्ति' (Faculty) सब इन्द्रियो को बुद्धि मात्र को शक्ति वान् करती है। यह एक तरह का व्यायाम है। अत: क्या बच्चो को माता-पिता शिक्षा दे इससे यह अच्छा न होगा कि हम ट्रेण्ड सिस्टर्स के हाथ मे बच्चो को सौप दे। उसने आगे अपनी बात जारी रखते हुये कहा 'इन कर्मेन्द्रियो और ज्ञानेन्द्रियो की शिक्षा के बाद लिखना और पढ़ना सिखाना चाहिये।'

सरला बहन ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा 'मांटीसरी पद्धति की जो बात आपने कही उसके 'शिक्षोपकरण' (Didactic apparatus) इतने मँहगे है कि इन्हें हर स्कूल नहीं रख सकता और इससे सर्व साधारण जनता को लाभ नहीं पहुच सकता। इसके अतिरिक्त मांटीसरी पद्धति मे 'बौद्धिक व्यायाम' का विचार भी ठीक नहीं है। और सबसे बडी बात तो यह है कि माता के हृदय मे अपने बच्चे के निर्माण और वात्सल्य प्रेम की जो भावना होगी क्या वह सिस्टर्स के हृदय में होगी? प्रत्येक देश की अपनी विशेषतायें होती हैं। बोतल का शक्तिशाली दूध बच्चे को उतना स्वस्थ और आनन्दित नहीं कर सकता जितना माता के स्तनो से निकला हुआ अमृतोपम क्षीर कर सकता है। आज जो हममें सहृदयता, राष्ट्रीयता, अनुशासन आदि नहीं रहा है, जो हमारे चरित्र गिर रहे है, उसका कारण यह हमारी विदेशी शिक्षा है। आज बच्चा उत्पन्न होने के बाद मा का दूध न पीकर विदेशी बोतल का दूध पीता है। दो वर्ष का होने के बाद माता से शिक्षा न लेकर अपनी मातृ-भाषा को तुच्छ समझ कर विदेशी भाषा मे विदेशी परम्परायें और बातें सीखता है और बडा होने पर विदेशी गेहू चावल खाता है। परिणामत: उसमें 'स्व' का नाश हो जाता है। आज तक जो उस पर 'स्व' का बन्धन था वह हट जाता है। और इस स्व के, प्रभाव मे आत्म नियन्त्रण हट जाता है। और आत्म नियन्त्रण न रहने से वह 'इडिपेंडेंट' तो हो सकता है, पर स्वतन्त्र या स्वाधीन नहीं बन पाता। भारतीय सस्कृति, वैदिक सस्कृति अपने ऊपर अपने बन्धन को महत्व देती है।

मधु ने पूछा 'इडिपेंडेंट' और 'स्वाधीन' या 'स्वतन्त्र' मे क्या अन्तर है? 'इडिपेंडेंट' का हिन्दी रूपान्तर क्या स्वाधीन या स्वतन्त्र नहीं?

सरला बहन ने कहा 'इडिपेंडेंट' का अर्थ 'अनधीन' है, स्वाधीन नहीं। 'अनधीन' व्यक्ति किसी के अधीन नहीं। वह उच्छृखल बन जाता है। वह बिना टिकट के यात्रा करता है, दूसरे के घर के सामने चुपके से कूड़ा फेंक देता है, दुकान पर चुपके से दूकानदार की कोई चीज साफ कर देता है। दूसरी ओर स्वाधीन व्यक्ति दूसरे के अधीन न होकर अपने अधीन रहता है और यह अधीनता उसको आगे बढ़ने मे सहयोग देती है। उसका चरित्र उज्ज्वल और अनुकरणीय बनता है। यह चरित्र निर्माण भारतीय शिक्षा का उद्देश्य है और यह आदर्श माता सिखा सकती है। पिता सिखा सकता है और आदर्श अध्यापक इसमे सहयोग कर सकता है।

चरित्र, शिष्टाचार और सभ्यता के लिये बालक को आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या द्वेष मोह आदि दोषों को छोड़ने और सत्याचार ग्रहण करने की शिक्षा दें। क्रोधादि छोड़कर मधुर वचन बोलने की शिक्षा देनी चाहिये। हमे बालकों को यह भी सिखाना चाहिये कि वे व्यर्थ में बकवास न करें। [क्रमशः]

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार
एम. ए. एल. टी.,
डी बी. कालेज, गोरखपुर

# छुआ-छूत की कालिमा

भारत माँ, के छुआ-छूत की–
लगी कालिमा धो डालो ?

[ १ ]

स्वार्थ के सौदा वाले थे, वह भ्रम - भूत सब डाले थे ?
भारत के ऊपर कलक लगा, निज सत्य सनातन धर्म भगा ।।
वेदों का अध्ययन छोड़ दिये, सब वाम पथ से जोड दिये ?
मानव को, मानव ठुकराये, अपना निज गौरव पनपाये ।।
अब रहा नहीं मन-मानीके, वह धर्म-ढकोसले-धो डालो ?
भारत माँ, के छुआछूत की–लगी कालिमा धो डालो ?

[ २ ]

जो वर्ण-व्यवस्था मान रहे, अपनापन श्रेयस जान रहे ?
सद् वैदिक-धर्म विसार दिये, फिरते थे गौरव भार लिये ?
विद्या पर शासन रखते थे, रस चाटु-चटैया चखते थे !
घृणा, कर अनृत-नीति बिना, ठुकराये, मानव प्रीति बिना !
होने लगे जब से मद-विधर्म, बढ़ गये पीड़ित विष-छालो !
भारत मां, के छुआछूत की लगी कालिमा-धो डालो ?

[ ३ ]

सद् वेद न देखा पन्थवादी, भारत की जब से बरबादी !
एकांगी - ज्ञान चलाये थे, मन-माने कर्म बढ़ाए थे !
उलझन मे जन अकुलाते थे, बढ़पन की तान सुनाते थे !
अति दीन दलित रहे दुख मे, सब आप रहे तरते सुख मे ?
गये पिछड़ते दीन उखड़ने, दीनो के मुख पर दे तालो ?
भारत माँ के छुआछूत की लगी कालिमा धो डालो ?

[ ४ ]

शिक्षा हीन किये थे उमने, मानी बन बैठे थे जिसने ?
भ्रान्ति-भाव बढाया था वह, मानव मान मिटाया था वह ?
भारत मा के गौरव भूले, निज स्वार्थ के झूले - झूले ?
भारत मा, के कलक लगाया, छुआ-छूत का रोग बढ़ाया ?
भारत रहा तभी से पीछे, अब तो सँभल करके चालो ?
भारत माँ, के छुआछूत की, लगी कालिमा धो डालो ??

[ ५ ]

दयानन्द, के ये युग आया, जागो मानव ! तुम्हे जगाया !
बन्धन था पोपो, का तोड़ा, भ्रम-भूत का भांडा फोड़ा !!
वैदिक-धर्म बताया सच्चा, टिक नहीं सके पोप का बच्चा ?
सत्य-सनातन पन्थ गहेंगे, मिलकर मानव एक रहेंगे !!
अपना जीवन-चरित्र बना सद्, वैदिक-सांचे में ढालो !
भारत माँ, के छुआछूत की, लगी कालिमा धो डालो !!

[ ६ ]

भारत मां, की दशा बिगाड़ी, हो कर पथा वादि अगाड़ी !
ठुकराये ले ठाकुर साईं लाखों मानव, बने ईसाई !!
भारत माता, पछताती है, देख-देख कर बिल्लाती है !
समता भाव समान व्यवहारा, बन मानव, मानव का प्यारा !
दंभ, ईर्ष्यादि छोड़-अधर्म के, दुखदा से पथ को टालो ?
भारत माँ के छुआ-छूत की लगी कालिमा धो डालो !!

[ ७ ]

दुर्योधन, दुष्ट बरबाद किये, सब भारत को प्रमाद किये ?
विद्याधर ऋषिवर नेता थे, सब गये युद्ध मे देना थे ।।
फिर से आर्य कर्म विसारा, मत मतान्तर जाल पसारा !
वर्ण-वर्ण की बन्धगी टोली, भारत मा की काया डोली ?
वर्ण - व्यवस्था फैली जैसे, रही पसार मकडी जाले ?
भारत मा के छुआछूत की लगी कालिमा धो डालो !!

[ ८ ]

अपना मन्द चरित्र, सुधार करो, सद्-कर्म विशद पथ कदम धरो!
मद शाला, के प्याले छोड़ो, सदाचार मे मन को जोडो ।।
विशद व्यवहार बढ़ा लो सुखदा, मलीन भावना त्यागो दुखदा !
आत्मिक, शारीरिकोन्नति, करले, वैदिक ज्ञान सुधारस, भरले !
जागो जल्दी समय जगावे, 'घनसार' प्रेम के पी प्यालो !
भारत मा, के छुआछूत की लगी कालिमा धो डालो !

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' उपाध्यक्ष, आ स पीपाडशहर

# काशी-शास्त्रार्थ-शताब्दी

इस समारोह का आर्य समाज के लिये कई दृष्टियो से बडा महत्त्व है। इसकी सफलता से आर्यजनो को प्रेरणा और स्फूर्त्ति मिलेगी, और आर्य समाज का यश बढ़ेगा। ऋषि दयानन्द के सन्देश को फैलाने का अच्छा अवसर है। इसे सफल बनाना केवल आर्य समाजियो का ही नहीं, अपितु सभी वेद, सस्कृत, भारतीय गौरव के प्रेमियो का परम कर्त्तव्य है।

समारोह की सफलता के लिये आर्योपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी प्रयत्नशील है, परन्तु कार्य इतना महान् और महत्त्वपूर्ण है कि सभी के सहयोग के बिना पूरा न हो सकेगा।

समारोह की रूप-रेखा आदि के सम्बन्ध में विचार करने के लिये उप समिति की बैठक शीघ्र होने वाली है। इसलिये जो सज्जन इस सम्बन्ध मे कोई सुझाव देना चाहे, शीघ्र भेजने को कृपा करे। सबकी सम्मति से लाभ उठाया जा सकेगा।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री, सयोजक
कन्या गुरुकुल, हाथरस [ अलीगढ़ ]

## महर्षि दयानन्द सरस्वती काशी शास्त्रार्थ आयोजन सूचना एवं निवेदन

पजाब सभा के पत्र 'आर्यमर्यादा' ने अपने अग्र लेख दिनांक १५-६-६९ मे इस विषय पर आर्य जगत् की समस्त सस्थाओं, विद्वानों और आर्य जनों का ध्यान आकृष्ट कर बड़ा उपकार किया है। हम इसके लिये 'आर्य मर्यादा' एवं उसके विद्वान् सम्पादक जी का आभार मानते हैं, हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। आर्य जगत् कृपा कर देखे कि यह कार्य कितना महान्, आवश्यक एवं कठिन है। वेदों के प्रति महर्षि की मान्यताओ पर पक्ष विपक्ष के विद्वानों के शोध पत्रो को ग्रन्थ के रूप मे विश्व को भेंट करना, जिसमें सस्कृत, आर्य भाषा (हिन्दी) और इगलिश मे भी लेख होंगे। एक महान् उपलब्धि होगी। विपक्षी इस अवसर पर शास्त्रार्थ की तैयारी में जुटे हैं। उन्होने काशी आकार शास्त्रार्थ करने को कहा है। यदि हम असावधान रहे और हमारी किसी त्रुटि से हमारा यह आयोजन उस महान् अवसर के अनुरूप न मनाया जा सका तो इससे उस देव दयानन्द की उज्ज्वल कीर्ति एवं यश को बट्टा लग सकता है, और आर्यसमाज की गहरी क्षति हो सकती है।

हम बार-बार आर्य जगत् का एवं शिरोमणि सस्थाओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते रहे हैं कि काशी की आर्य समाजों एव आर्यजनों के साधन बहुत सीमित और लघु हैं। वास्तव मे यह कार्य तो पूरे आर्य जगत् का है। काशी की आर्योपप्रतिनिधि सभा ने अपना कर्त्तव्य समझ कर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के आदेश पर अपनी पूर्ण शक्ति इस ओर लगाई और कार्य को कुछ आगे बढ़ाया, मगर यह कार्य तो इतना महान् और कठिन है कि उसकी पूर्ति किसी भी दशा में काशी की समाजो की शक्ति के बाहर होती है, और रहेगी भी। समय बहुत कम रह गया है अब आगे यदि और उपेक्षा बरती गयी तो बहुत बड़ा अनर्थ हो सकता है।

हमारी अन्तरङ्ग सभा ने निर्णय किया है कि हमारे माननीय प्रधान श्री खेमचन्द्र जी अब काशी छोड़ देश की बड़ी समाजो में जावें, आर्य जगत् के धनी मानी सज्जनों से मिलें, शिरोमणि सस्थाओं के अधिकारियों से मिलें, और यहाँ की स्थिति से आर्य जगत् को जानकारी करावें और सहायता की याचना करे। देरी तो बहुत हो चुकी है, परन्तु अब भी यदि हमे आर्य जगत् का सहारा मिल गया तो हम रात दिन जुट कर इस यज्ञ को सफल बनाने मे कुछ उठा न रखेंगे। ग्रन्थ के मुद्रण का कार्य प्रारम्भ हो गया है। भय लग रहा है कि कहीं धनाभाव के कारण बीच मे बाधा न पड जावे। आर्य जगत् की सहायता के अनुरूप ही हम शास्त्रार्थों की योजना भी पूर्ण कर सकेंगे।

हमे आर्य जगत् का पूर्ण विश्वास और भरोसा है। इस काशी के आर्य तो आपके ही कार्य मे आपके सेवक की भाँति अपना कर्तव्य समझ कर तन, मन, से जुटे हैं। हमारा प्रतिनिधि आपके द्वार पर अलख पुकारेगा, आप उसे निराश न करे। यह है हमारा नम्र निवेदन आर्य जगत् के प्रेमी, श्रद्धालु, ऋषि भक्त भाई बहिनों से है। हमारा प्रतिनिधि सब स्थानो पर तो नहीं पहुच सकेगा। दयालु आर्य भाई बहन उनके आने की प्रतीक्षा न करे, वह अपना सात्विक दान हमारे इस निवेदन को पढ़ते ही मनीआर्डर द्वारा भेज दे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के यश की पताका विश्व मे फहरे प्रभु वाणी वेदों के प्रति जो भ्रम और भ्रान्ति फैली है उसका निराकरण हो और वेदो का शुभ कल्याणमय सन्देश विश्व के कोने कोने मे, घर-घर पहुचे। प्रभो ! यह हमारी अभिलाषा पूरी हो।

आर्य जगत् के सेवक—
अन्तरङ्ग सदस्य आर्योपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी
कार्यालय-आर्यसमाज मन्दिर भोजूबीर बाराणसी छावनी

## आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा का साधारण वार्षिक अधिवेशन रविवार ६ अप्रैल को अपराह्न ३ बजे काशी आर्यसमाज बुलानाला में श्री खेमचन्द्र केजी सभापतित्व मे हुआ जिला अधिवेशन मे प्राय सभी सम्बद्ध समाजो के प्रतिनिधि उपस्थित थे, सभा के जिला मन्त्री श्री कैलाशनाथसिह ने वार्षिक रिपोर्ट तथा वर्ष भर के आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत किया। उन्होंने सभा के अतीत तथा भावी कार्य क्रमो पर प्रकाश डालते हुये कहा कि आगामी नवम्बर मे ऋषि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह यहाँ अखिल भारतीय स्तर पर मनाया जायगा, जिसमे देश और आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वान् भाग लेंगे। इस अवसर पर उनके द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों, स्वामी दयानन्द तथा वेदो से सम्बन्धित हिन्दी तथा अग्रेजी मे पक्ष तथा विपक्ष में लिखे गये शोध पत्रो के प्रकाशन की भी वृहद योजना है।

तदुपरान्त आर्योप्रतिनिधि सभा वाराणसी का निर्वाचन हुआ जिसमे आगामी वर्ष के लिये निम्न-लिखित पदाधिकारी चुने गये—

सर्वश्री खेमचन्द्र जी प्रधान, भगवतीप्रसाद तथा रामकृष्ण आर्य उपप्रधान, कैलाशनाथसिह मन्त्री, धर्मपालसिह आर्य पथिक तथा केदारनाथ आर्य उपमन्त्री, रामविलास शास्त्री प्रचार मन्त्री, कोषाध्यक्ष श्री सम्पूर्णानन्द, आय-व्यय निरीक्षक संग्रामसिह। इसके अतिरिक्त १३ व्यक्ति अन्तरङ्ग समिति के सदस्य निर्वाचित हुये।

—कैलाशनाथसिह मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

आषाढ़ १५ शक १८९१ अधिक आषाढ़ कृ० ७
[ दिनाङ्क ६ जुलाई सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र

Registered No. L. 60
पता-'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

# आर्य-जगत

## उत्सव

—श्री निगमागम संस्कृत विद्यालयगंज (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव २७, २८ व २९ जुलाई को हो रहा है, जिसमें आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् उपदेशक तथा वीतराग संन्यासी महानुभाव पधार रहे हैं। श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम. पी., श्री पं. शिवकुमार जी शास्त्री एम.पी., श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री एम. पी., और ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री आदि महानुभाव की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी हैं। हमारे विद्यालय श्री निगमागम संस्कृत विद्यालय गंज बिजनौर के लिये एक व्याकरण तथा साहित्य आचार्य अध्यापक की भी आवश्यकता है। लिखें या मिलें।

—सुखानन्द सरस्वती

१६ जून को आर्य समाज मन्दिर टांडा में श्रीमती सिगारा पुत्री बलीजान निवासी ग्राम बहादुर जिला बस्ती की शुद्धि करके शान्तिदेवी नाम रक्खा गया। तथा शुद्धि के कार्यक्रम के पश्चात् श्रीमती शान्तीदेवी का पाणिग्रहण संस्कार बहादुरपुर निवासी श्री रामलौट के साथ सम्पन्न हुआ।

—मन्त्री

—कैलोर जि० जालौन के अखिल भारत सायकिल पर्यटक ठा० हरपालसिंह आर्य वीर की आयुष्मती पुत्री चन्द्रकान्ति का विवाह संस्कार एटा जि० निवासी श्री श्यामलाल के पुत्र वलवीरसिंह जी के साथ दिनांक ४ जून ६९ को वैदिक रीति से श्री रामनारायण शास्त्री विन्दकी निवासी द्वारा सम्पन्न हुआ।

—श्रीकृष्ण

—आर्य समाज शिमला ने ४ अमेरिकन स्त्री और पुरुषो को शुद्ध किया है।

—मन्त्री

—९ से १५ जून तक आर्य समाज ऊधमपुर में श्री सुखराज जी वानप्रस्थी और ब्रह्मचारी वेद प्रकाश ने वेदप्रचार किया। यज्ञादि घरों पर किये।

—मन्त्री

—२० जुलाई को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन होगा।

—मन्त्री

—चगेरी अलीगढ़ के श्री सरदारसिंह जी की पौत्री कुमारी राजकुमारी का विवाह संस्कार श्री स्वामी शान्तानन्द जी ने वैदिक रीत्यनुसार कराया। वर पक्ष ने १५००) मई स्कूल के लिये १०१) आ. स. मई को, ११) जिला सभा और ११) साधु आश्रम को दान में दिये।

—मन्त्री

—आर्य समाज बादशाहपुर का उत्सव २० व २१ जून को मनाया गया।

—मन्त्री

—आर्यसमाज बिसारा [अलीगढ़] का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दि० १२, १३, १४-६-६९ को धूमधाम से मनाया गया। तथा मन्दिर निर्माणार्थ ८०९) का दान प्राप्त हुआ।

—मन्त्री

—दिनांक १५ जून को आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला झांसी के उप प्रधान तथा आर्यसमाज ललितपुर, झासी के मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी आर्य के सुपुत्र श्री वीरेन्द्रकुमार जी के नवजात आत्मज का नामकरण संस्कार आर्य समाज के पुरोहित पं० चन्द्रभान जी ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। बालक का नाम चि० वेदप्रकाश आर्य रक्खा गया।

जिलोपसभा झांसी को १) तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को ५) दान दिया।

—बेदारीलाल आर्य

## आर्य परिवार सम्मेलन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की ओर से १७ जून को ब्रजहाल्ट (गढ़मुक्तेश्वर) पर एक दिवसीय कार्यक्रम रखा गया, जिसमें जिले भर के लगभग १०० परिवारो ने भाग लिया। इस अवसर पर परिवारो का परिचय के साथ-साथ यज्ञ-उपदेश का कार्यक्रम रहा।

—रामानन्द, उप मन्त्री

—आर्य समाज फैजाबाद अपने पुराने सदस्य तथा कर्मठ आर्य श्री डा० विनेश जी वर्मा के देहावसान पर शोक प्रकट करती है। तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति एवं उनके दुःखी परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—मन्त्री

## ८ नव मुस्लिमों की शुद्धि

शुद्धि सभा के उपदेशक श्री गंगालाल जी के परिश्रम से ग्राम अमरसिंह नगला जिला एटा में एक मुस्लिम परिवार को श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी द्वारा वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उनकी पुरातन राजपूत जाति में प्रविष्ट किया गया। शुद्धि के पश्चात् सहभोज में स्थानीय कई ग्रामों के सैकड़ों ठाकुर व ब्राह्मण सम्मिलित हुये।

—द्वारिकाप्रसाद, प्रधान मन्त्री

—गुरुकुल नौनेर [मैंनपुरी] में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।

—अधिष्ठाता

## अध्यात्म-सुधा

[पृष्ठ २ का शेष]

पितर-जन ही उस आध्यात्मिक उषा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। तब मोक्ष की प्रवर्त्तनायें आरम्भ होती हैं। ज्योतिर्मय जीवन होता है, ज्योतिर्मय-रथ। अनन्त की यात्रा आरम्भ हो जाती है। उषा-दर्शन तक के रहस्य तो कुछ-कुछ कहे-सुने जा सकते हैं। इससे आगे की बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये आत्मानुभूति का होना आवश्यक है। शास्त्र इसका अनुमोदन करते हैं।—

"तब हृदय की गाठे खुल जाती हैं, मन के संशय मिट जाते हैं, कर्मों के बन्धन क्षीण हो जाते हैं, जब उस अनादि और अनन्त का ज्ञान प्राप्त होता है। जिसने एकाग्रता की ऊँची अवस्था को प्राप्त कर लिया और सभी मलों को धो डाला, अपने चित्त की वृत्तियों का निरोध करने में जिसने सफलता पाई, उसे जो सर्वोपरि आनन्द प्राप्त होता है, वाणी उस आनन्द का वर्णन नहीं कर सकती। वह तो अपने-अपने अनुभव से ही जाना जा सकता है।"

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए श्री०वी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित।

'सर्वं जीर्ण' ] साप्ताहिक—रविवार आषाढ़ २२ शक १८९१, अधिक आषाढ़ कृ० १४ वि० सं० २०२६, दि० १३ जुलाई १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# पूर्ण ब्रह्म

अकामो धीरो अमृत स्वयम्भूः
रसेन तृप्तो न कुतश्चनो न ।
तमेव विद्वान्–न विभाय मृत्योः
आत्मानं धीरमजरं युवानम् ॥
अथर्व० १० । ८ । ४४

शब्दार्थ—वह परमात्मा (अकामः) कामनाओं से रहित, (धीर) धीर (अमृतः) अमर (स्वयम्भूः) स्वयम्भू (रसेन) आनन्द से (तृप्त) तृप्त, परिपूर्ण और (कुतश्चन) कहीं से, किसी भी रूप या प्रकार से (ऊन) कम, अपूर्ण, न्यून या वञ्चित (न) नहीं है। (तम एव) उस ही (धीरम्) धीर=ज्ञानी (अजरम्) अजर, विकार रहित और (युवानम्) सदा ही जवान रहने वाले (आत्मानम्) परमात्मा को (विद्वान्) जानने वाला पुरुष (मृत्योः) मृत्यु से (न विभाय) नहीं डरता।

भावार्थ—वह परमात्मा कामनाओं से रहित, धीर, अमर, अनादि, आनन्द स्वरूप और सब प्रकार से पूर्ण है। उस ज्ञान स्वरूप, अजर अर्थात् सदैव एकरस रहने वाले परमात्मा को जानकर ही मनुष्य मृत्यु के भय से मुक्त होता है और जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाता है।

प्रवचन

वह परमात्मा अखिल विश्व का उत्पादक है, स्थिति कर्ता है, और, प्रलय-कर्ता भी वही है। फिर भी किसी भी प्रकार की कामना का कुछ थोड़ा-सा भी लव-लेश उसमें नहीं है। कामना करना तो वास्तव में जीवात्मा का धर्म है। जो कि अल्पज्ञ है, अपूर्ण है, थोड़ी सामर्थ्य वाला है और अल्प आनन्द वाला है। कामना तो वही किया करता है, जो कि अल्पज्ञ, अपूर्ण, अभाव-ग्रस्त, परतन्त्र और दुःखाकुल होता है।

ईश्वर की कोई कामना नहीं है। किसी प्रकार की कामना करने की उसे कोई आवश्यकता ही नहीं है। वह तो धीर है, अमर है, स्वयम्भू है, आनन्द से परिपूर्ण है। और किसी भी रूप में, प्रकार में, अथवा अंश में कुछ भी कमी, त्रुटि या न्यूनता उसमें नहीं है। वह पूर्ण है और सदैव पूर्ण ही रहता है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ।

वह पूर्ण है। यह पूर्ण है। पूर्ण से ही पूर्ण का प्रकाश होता है। पूर्ण से पूर्ण स्वरूप को ग्रहण कर लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है। यह उस अनन्त की महिमा है।

प्रश्न है—जब वह कामनाओं से रहित है, तब वह सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय क्यों करता है? क्या उसकी कामना के बिना ही ये सब व्यापार सिद्ध हो जाते हैं? ये प्रश्न बहुत अधिक पुराने हैं। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का करना तो उसके गुण कर्म और स्वभाव का प्रतिफल है। यह तो उसकी उदारता और जीवात्माओं के प्रति उसकी महान् दयालुता का दिग्दर्शक है। जीवात्माओं को कर्म करने के नये नये अवसर प्रदान करने के लिये ही उस दयामय परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है। जीवों के कल्याण के लिये ही वह इस ब्रह्माण्ड का

(शेष पृष्ठ ४ पर)

वर्ष ७१ | अंक २६

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढ़िए !

लखनऊ-रविवार १३ जुलाई ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## आर्यसमाज का अखिल भारतीय संगठन

आर्यमित्र के २९ जून के सम्पादकीय में हमने आर्य समाज के अखिल भारतीय संगठन का सुझाव रक्खा था, उसके स्वागत और समर्थन मे हमे अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं, साथ ही अनेक मित्रों ने कई आशकायें भी प्रकट की हैं।

हम आशकाओं का निराकरण करते हुए यही लिखना चाहते हैं कि जब भारत के प्रत्येक राज्य मे आर्य प्रतिनिधि सभाओ का सगठन है तो सार्वदेशिक आर्य समाज के एक देश भारत में अखिल भारतीय आर्य समाज का सगठन क्यों आवश्यक और उचित नहीं है। इससे सार्वदेशिक सभा के गौरव एव पवित्रता में वृद्धि होगी, क्योंकि सार्वदेशिक सभा को भारत की एक देशीय समस्याओ के लिये परेशान नहीं होना पड़ेगा। सर्वदेशिक सभा की स्थिति उसी प्रकार की होगी जैसी अमेरिका मे सयुक्त राष्ट्र सघ की है। सार्वदेशिक सभा का मुख्य केन्द्र भारत होगा पर कार्यक्षेत्र भारत से बाहर अधिक होगा।

हम समझते हैं कि आर्यसमाज के संगठन विधान निर्माताओं के मस्तिष्क में आर्य समाज के इसी स्वरूप की कल्पना थी इसी कारण उन्होंने सार्वदेशिक नाम स्वीकार किया और प्रत्येक देश में आर्य समाज सगठन का विधान बनाया। चूंकि सार्वदेशिक सभा भारत में स्थित रही और भारत में विदेशी राज्य रहा, इसलिये सगठन की सारी शक्ति भारत में सघर्षरत रही और पृथक अ. भा सगठन की ओर ध्यान कम गया। अब वह समय आ गया है कि अब भारत के सभी राज्यों में आर्य समाज सगठन को सुदृढ़ करने के लिये अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अविलम्ब गठन किया जावे।

इस दिशा में विचार-विमर्श प्रारम्भ हो गया है, शीघ्र ही आवश्यक कार्यवाही की जायगी, और आर्य जगत् के सम्मुख इस सगठन को क्रियान्वित किया जायगा।

हम आशा करते हैं कि आर्य-जनता इस सम्बन्ध मे विचार करेगी और अपने सुझाव देगी जिससे विचार विमर्श पूर्वक सरचना सम्भव हो सके।

## समस्या का समाधान

आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने "दुनिया बिगड़ी क्यों शीर्षक लेख में (२९ जून ६९ आर्यमित्र) संसार की अशांति की मीमांसा की है और उसके लिये अध्यात्मवाद को ही उपाय बताया है। अध्यात्मवाद का प्रचार कैसे हो इसके लिये उनकी दृष्टि आर्य समाज पर ही लगी है। उन्होंने अपने लेख के अन्त में अपना सुझाव देते हुए लिखा है कि—"आज दुनिया में मायावाद का भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ है, इस तूफान से बचना महा कठिन है, परन्तु निराश होने की कोई बात नहीं। यत्न करना अपना धर्म है। सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि इस तूफान का सामना करने के लिए योजना बननी चाहिये। विचारवान् महानुभावों को चाहिये कि किसी रमणीक स्थान पर एक सप्ताह निवास करके गम्भीरता से कर योजना बनायें ताकि वेद विचार के प्रसार के लिये क्रियात्मक पुरुषार्थ आरम्भ किया जा सके। यदि यह कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करे तो अच्छा होगा। विचार विनिमय के पश्चात् आर्य समाज के संगठन के विधान में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है।"

हम स्वामी जी के उपर्युक्त विचारों का हार्दिक स्वागत और समर्थन करते हैं। आर्य समाज की आस्था यही है कि वेद-प्रचार हो, संसार अध्यात्मवादी बने और सुखी शान्त बने परन्तु आज आर्य समाज अपने इस उत्तरदायित्व को पूर्ण नहीं कर रहा है। स्वामी जी की प्रेरणा बड़ी सामयिक है और हम समझते हैं कि बड़े-बड़े सम्मेलनों और समारोहों के अतिरिक्त इस प्रकार की विचार गोष्ठियों का आयोजन भी आवश्यक है। सार्वदेशिक सभा ने कई वर्ष से विद्वत्-गोष्ठी के आयोजन का निश्चय किया हुआ है, परन्तु उसके लिये न किसी के पास समय है और न धन। हम नहीं जानते कि पिछले वर्षों में इस ओर क्यों उपेक्षा हुई और आज भी मठाधीश इस ओर ध्यान दे सकेंगे इसकी आशा कम ही है, फिर भी हम स्वामी जी की ही भांति आशा करते हैं कि आर्य समाज की आत्मा अभी इतनी सशक्त है कि मायावाद के तूफान से ससार को बचाने के लिये वह आगे आयेगा और अशान्त, त्रस्त, पीड़ित मानवता की समस्या का समाधान कर सकेगा; प्रश्न केवल यही है कि आर्यसमाज में से कौन इस कार्य के लिये पहल करेगा।

## पंजाब में हिन्दी के रक्षक कहाँ है

मध्यावधि निर्वाचन के पश्चात् पंजाब में जो मन्त्रिमण्डल बना जनसंघ ने उसमें योग दिया और आज भी वह मन्त्रि मण्डल में है। ससार के सामने अकाली जनसंघ एकता को पजाब के हित में बताते हुये जनता से उसका स्वागत करने के लिये कहा गया, पर साम्प्रदायिकता की भूख कभी सन्तुष्ट नहीं हुआ करती। इतिहास इस बात का साक्षी है—गांधी जी मि० जिन्ना के सम्मुख समर्पण करके भी उन्हें सन्तुष्ट न कर सके। इसी प्रकार अकाली जनसंघ के समर्पण से कैसे सन्तुष्ट हो सकते हैं और यही कारण है कि पंजाब विधान सभा में अकाली दल का स्पष्ट बहुमत बनते ही अकाली अपने साम्प्रदायिक रूप में सामने आ गये हैं। अब पंजाब में सच्चर फार्मूला समाप्त कर दिया गया और पंजाबी की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से अनिवार्य कर दी गयी है, और शिक्षा का माध्यम पजाबी घोषित कर दिया गया है। यद्यपि ऊपरी दृष्टि से पंजाबी भाषा का आधार भौगोलिक होना चाहिये पर सिक्खों ने उसे अपनी धार्मिक भाषा मानकर दूसरों पर उसे लादने का निश्चय कर लिया है। जहाँ एक ओर सब भारतीय भाषाओं के लिये देवनागरी को मान्यता देने की योजना सर्व सम्मति से स्वीकार हो रही है वहाँ पजाबी के साथ देवनागरी का बहिष्कार जबरदस्ती किया जा रहा है।

इस सबका परिणाम हो रहा है पंजाब के ४० प्रतिशत हिन्दी भाषा भाषियों पर जबरदस्ती पजाबी लादी जा रही है, और कोई सुनने वाला नहीं।

इस स्थिति के लिये सबसे अधिक उत्तरदायी जनसंघ है उसे कभी क्षमा करना सम्भव न होगा। जनता ने इस आशा से कांग्रेस के मुकाबले उसका समर्थन किया कि वह हिन्दी समर्थकों की भावनाओं की रक्षा करेगा, पर पद लिप्सा के मोह में सब पथ भ्रष्ट हो गया और साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के मोह में फंस गया।

आर्य समाज की पजाब में हिन्दी रक्षा के लिये अपनी विशेष भूमिका रही है, परन्तु आर्यसमाज के नेतागण श्री रामगोपाल शाल वाले संसद सदस्य और श्री ओम् प्रकाश त्यागी संसद सदस्य पंजाब में हिन्दी की हत्या को खड़े देख रहे हैं, और मौन हैं क्योंकि वे जन संघ के अनुशासन में बंधे हैं। हम नहीं समझते पिछले हिन्दी आन्दोलन की उनकी घोषणायें क्या हुईं या उनके ये सारे कार्य संसद सदस्यता पाने के लिये थे। यदि वे सच्चे आर्य नेता हैं, तो जनसंघ का

# महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ने प्रो. रामसिंह जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का पूर्ण कार्यभार संभाल दिया

## दीवान रामसरनदास आदि ने महात्मा जी को कोई सहयोग नहीं दिया

## *महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती का वक्तव्य*

सबसे पूर्व मैं यह निवेदन करना आवश्यक समझता हूं कि मैं अपनी एक गलती का उल्लेख कर दूं और वह यह है कि संन्यास लेने के पश्चात् मेरा क्षेत्र वेद प्रचार तथा योग साधना रहा और बड़ी मस्ती के साथ मैं इस पथ पर चलता गया, परन्तु आर्य जगत् में एक आर्तनाद उठा कि "आर्य समाजों तथा सभाओं के पारस्परिक

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

झगड़े आर्यसमाज को कलंक लगा रहे हैं। मुझे नाम ले ले कर पुकारा गया है कि आर्यजगत् में आग लगी है और तुम्हें योग साधना की पड़ी है।" तब ला० मेलाराम जी प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के भवन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखिया महानुभावों को श्री नारायण दास जी कपूर प्रधान केन्द्रीय आर्य समाज दिल्ली ने निमंत्रित किया। झगड़ों को मिटाने के लिये विचार हुआ और मेरे इन्कार करने पर भी सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि आनन्द स्वामी सरस्वती को सर्व अधिकार दिये जाते हैं कि वह सभाओं के झगड़े निपटा दें, और सार्वदेशिक सभा तथा पंजाब सभा इसी विषय के प्रस्ताव अपनी अन्तरंग सभाओं से स्वीकार करायें।

पंजाब सभा ने तो स्पष्ट शब्दों में ऐसा प्रस्ताव पारित कर दिया और सार्वदेशिक सभा ने अपने बंबई के अधिवेशन में यह स्वीकार किया कि झगड़े निपटाने के सर्वाधिकार सार्वदेशिक सभा के प्रधान को दिये जा चुके हैं, वह आनन्द स्वामी सरस्वती का सहयोग ले सकते हैं परन्तु मुझसे इस सम्बंध में किसी ने कभी नहीं पूछा। हां यह सुना गया कि पंजाब सभा के मुकाबले में एक नई पंजाब सभा की स्थापना कर दी गई है। इस पग ने वैमनस्य की अग्नि पर तेल का काम किया—और समस्या सुलझाने की अपेक्षा अधिक उलझ गई। तब मुकद्दमे बाजी बढ़ने लगी—स्थिति अधिक गम्भीर हो गई, आर्य समाज के इन झगड़ों तथा अभियोगों की चर्चा आर्य जगत् से बाहर भी तीव्रता से होने लगी। तब हैदराबाद में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन में सबसे पूर्व इन झगड़ों को समाप्त करने की बात चली। इस महासम्मेलन में कहा जाता है कि एक लाख से अधिक आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। झगड़े समाप्त कराने के लिये मेरे दुर्भाग्य से मुझ पर दृष्टि पड़ी—मैंने कहा मेरा पथ वेद प्रचार तथा योग साधना है, परंतु बार-बार मुझे ही पुकारा गया—मैंने कहा ऐसा यत्न पूर्व भी हो चुका है किन्तु सफल नहीं हुआ। इस पर सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों ने स्पष्ट तौर पर यह स्वीकार किया कि मेरे ऊपर अब कोई शर्त या पाबन्दी नहीं रहेगी।

मुझे निर्णय करने का पूर्ण अधिकार होगा। इस स्पष्टीकरण

श्री प्रो० रामसिंह जी

के साथ मुझे पूर्ण अधिकार देने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ।

इसके पश्चात् मैंने सब सम्बन्धित पक्षों को अदालत में चल रहे सब अभियोग वापस लेने के आदेश दिये, जिसे उन्होंने स्वीकार किया, परन्तु कोई अभियोग लौटाया नहीं गया। बार-बार जब ऐसा हुआ तो फिर मैंने यह घोषणा की कि "यदि एक सप्ताह के भीतर मुकदमे लौटाये न गये तो मैं तथा डा० मथुरा दास जी हनुमान रोड, आर्य समाज में आमरण-व्रत शुरू कर देंगे", तब दोनों पक्षों ने मुकदमे लौटाने के हस्ताक्षर कर दिये। तब प्रोफेसर रामसिंह जी के पक्ष ने तुरन्त सारे अभियोग वापस ले लिये, परन्तु दीवान रामसरन दास वाले पक्ष ने नहीं लिये।

मैंने सम्बन्धित पक्षों की अनेक सम्मिलित बैठकें बुलाई जिस[illegible] रामसरन दास तथा उनके सहयोगी बार-बार मुकदमे वापस लेने [illegible] आश्वासन देते रहे, परन्तु कोई फल न निकला।

इसी बीच मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दोनों पक्षों [illegible] सद्भावना उत्पन्न करने के उद्दे[श्य] से दोनो पक्षो की अन्तर[ंग] सभाओं को भंग करके एक प्रबन्ध कर्त्री समिति बनाकर आर्य प्रति निधि सभा पंजाब की प्रबन्ध व्यवस्था का संचालन शुरू कर दिया दोनो पक्षों के वेद प्रचार विभाग का कार्य इकट्ठा करने के लि[ये] महात्मा आनन्द भिक्षु जी [illegible] इन्चार्ज बनाकर दोनो से कहा [कि] अपने अपने उपदेशकों तथा प्रचा[रकों] के नाम भेजिये—प्रो० रामसिंह प[क्ष] ने इस पर अमल किया पर[न्तु] दीवान रामसरन दास पक्ष ने प[त्र] का उत्तर भी नहीं दिया।

दोनों पक्षों से कहा गया [कि] अपने अपने कार्यालय समिति [के] हवाले कर दें। प्रो० रामसिंह [जी] ने इस आदेश को तत्काल स्वीका[र] कर दिल्ली का कार्यालय, स्टा[फ] तथा सामान सहित समिति [को] सुपुर्द कर दिया। परन्तु दूसरे प[क्ष] की ओर से मौन ही रहा।

दोनो पक्षो से सारा हिसाब किताब मांगा गया। प्रो० रामसिंह के पक्ष के कोषाध्यक्ष श्री रामन[ाथ] भल्ला ने आर्य प्रतिनिधि स[भा] पंजाब के नाम एक लाख त[ीस] हजार रुपया जमा कराकर रसी[द] समिति के हवाले कर दी, प[रन्तु] दूसरे पक्ष ने उत्तर ही नहीं [illegible]

---

मार्ग बदलने में असमर्थ हैं तो जन संघ को त्याग कर आर्यसमाज की शक्ति संगठित कर आगे बढ़ें और पंजाब में हिन्दी की रक्षा करें।

पंजाब में हिन्दी के समर्थक श्री वीरेन्द्र जी श्री यशजी, श्री जगन्नारायण जी तथा अन्य हिन्दी हितैषियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी सारी शक्ति सङ्गठित कर हिन्दी की रक्षा करें।

पंजाब में आर्यसमाज की व्यापक शक्ति है हम पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से भी अनुरोध करेंगे कि वे इस दिशा में संगठित होकर सक्रिय कदम उठावें।

हम चारों ओर दृष्टि डाल कर ढूंढ रहे हैं कि पंजाब में हिन्दी के रक्षक कहां हैं। आशा है हिन्दी प्रेमी जनता की भावनाओं को पंजाब के हिन्दी प्रेमी समझेंगे और उसके लिये संघर्ष करेंगे सारा हिन्दी जगत् उनके साथ है।

## श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी का प्रो. रामसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम पत्र

कुक्कर नाग २५ जून ६९

मेरे प्यारे प्रो० रामसिंह जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,

सप्रेम नमस्ते ।

मेरा तार और पत्र आप को मिल चुका होगा जिसमें मैंने यह निवेदन किया है कि आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्य उसी प्रकार करते रहें जिस प्रकार मेरे चार्ज लेने के पूर्व आप अपनी अन्तरङ्ग सभा द्वारा करते थे, जिन गुरुकुलों, कालेजों, स्कूलों और संस्थाओं का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ है, उनका प्रबन्ध यथापूर्व आप करते रहें। इन पर आपकी सभा का अधिकार था और मैंने एक समिति इनके प्रबन्ध के लिये बनाई थी, परन्तु अब मैंने श्री नारायणदास जी कपूर को लिख दिया है कि वे इन संस्थाओं का प्रबन्ध करने का कष्ट न करें। इनके प्रबन्ध का अधिकार मैंने प्रो० रामसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दे दिया है, क्योंकि उन्हीं के हाथों से इन संस्थाओं का चार्ज हमने लिया था।

मुझे दुःख है कि हम सबका प्रयत्न सफल नहीं हुआ। जिस प्रकार आपने और आपकी सभा ने मुझे सहयोग दिया—यदि इसी भांति दूसरा पक्ष भी सहयोग देता तो आर्य समाज का गौरव बढ़ जाता। अब आप का कर्त्तव्य यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण अधिवेशन अति शीघ्र बुलायें और सारे प्रतिनिधियों को सरकुलर लेटर भेज कर निर्वाचन करायें। निर्वाचन में जो अधिकारी चुने जायें उनको चार्ज दे दें। मैं जो कुछ कर सकता था झगड़े निपटाने के लिये किया। परन्तु मेरा तप अभी अधूरा प्रतीत होता है। इसीलिये असफलता का मुंह देखना पड़ा।

भगवान् हम सबको सुबुद्धि दे ताकि हम सन्मार्ग पर चलते रहें।

सेवक—

प्रो० रामसिंह जी — ह० आनन्द स्वामी सरस्वती

प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली।

## सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में बम्बई के वयोवृद्ध आर्य श्री हरगोविंद धर्मसी कांचवाला का श्री रामगोपाल जी को पत्रोत्तर

श्रीमान् जी, नमस्ते !

आपका कृपा पत्र मिला, धन्यवाद! मुझे सार्वदेशिक सभा के इस वर्ष के अधिवेशन में गहरी अवैधानिकता एवं महन्ती भावना के दर्शन हुए हैं। मैं समझता हूं कि आपने हैदराबाद के स्पष्टतम सर्वसम्मति सूचक स्वीकृत प्रस्ताव की धज्जियां उड़ायी हैं। यह कार्य नितांत अशोभनीय है, और गर्हित है। स्वार्थ के वश भूत मानव की समस्त दुष्कार्यता अब हमारे आर्य समाज में बढ़ती जा रही है। मैंने अनेक बार असफल प्रयास किये हैं कि सार्वदेशिक सभा ठोस कार्य करे पर आप सो कानों में तेल डाले पड़े हैं। आपको वैधानिक अवैधानिक का भी ख्याल नहीं है। मैं भी उन आर्य प्रतिनिधियों के साथ ही आपकी अवैधानिक कार्यवाही के विरोध में उठा था, फिर चुनाव में आधे से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। मैंने १० मिनट में होनेवाले खोखला चुनाव पर पेट देखा और आश्चर्य में डूब गया। मुझे लगता है कि अब आप ही उस दलदल में फंस गये हैं, जिससे निकलने में आप असमर्थ होते जा रहे हैं। हैदराबाद में भी हमने आपकी उस मनोदशा को गहराई से पढ़ा है, जिस मनोदशा में द्वेष ही द्वेष था प्रतिपक्षियों के प्रति। आपने पूज्य स्वामी महात्मा आनन्द स्वामी महाराज को सारे विवाद सौंपने वाले प्रस्ताव को बड़ी कठिनाई से पारित होने दिया था। यह लक्षण अस्वस्थता के द्योतक हैं। यह आर्यों का दुर्भाग्य है कि हम दिनोंदिन स्वार्थपरता के शिकार बनते जा रहे हैं। आपने जो कुछ भी आर्य मर्यादा में पढ़ा है वह सत्य है।

आशा है कि आप भी महर्षि दयानन्द के इस स्वीकृत मन्तव्य जानकर अपने कीर्ति कलेवर को अवश्य बचाकर लाखों लाखों आर्यों का अभिनन्दन स्वीकार करना न भूलेंगे—'न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदम्न धीराः'

बम्बई—१३-६-६९ —हरगोविन्द

### अगला अंक बन्द रहेगा

सभा के आर्य भास्कर प्रेस की मशीनें जिस कमरे में लगी हैं, उस की छत टूट गई थी, इस लिये नवीन छत बन रही है। मशीन बन्द पड़ी हैं, अभी १०-१२ दिन में छत की डाट खुल सकेगी, इसलिये आर्य मित्र का २० जुलाई का अङ्क बन्द रहेगा। पाठक व एजेंट नोट करलें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.

सभामन्त्री

चूंकि मैं पंजाब सभा के दोनों पक्षों की अन्तरङ्ग सभाओं को भंग कर चुका था, इसलिये किसी भी पक्ष का कोई प्रतिनिधि सार्वदेशिक में आ नहीं सकता था अतः मैंने दीवान रामसरनदास को पत्र लिखा कि आपने जिन प्रतिनिधियों के नाम सार्वदेशिक में भेज रखे हैं उन्हें सूचना दे दीजिये कि वे सार्वदेशिक की बैठक में भाग न लें परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। यहां मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैंने सार्वदेशिक में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। न मैंने उनके नाम पत्र लिखा, केवल दीवान जी को इस विषय सम्बन्धी पत्र लिखा ताकि प्रान्तीय झगड़ा अधिक बढ़ने न पाये। भंग हुई सभा के प्रतिनिधि हो ही नहीं सकते।

६ मास व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी दीवान पक्ष वालों ने जब मुकद्दमे नहीं लौटाये तो मैंने महात्मा आनन्द भिक्षु जी से प्रार्थना की कि वह जालन्धर जाकर महाशय वीरेन्द्र तथा दूसरे महानुभावों को प्रेरणा करें कि मुकद्दमे समाप्त हो जायें।

जो फौजदारी मुकद्दमा चल रहा था, उसमें यह समझौता हुआ कि सभा के कार्यालय को पोलिस का ताला लगा हुआ है, जब खुलेगा तो उसका चार्ज श्री प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद को दिया जायेगा। पोलिस का ताला खुला परन्तु महात्मा आनन्द भिक्षु जी को जो वचन दिया गया था उसे तोड़कर दीवान रामसरनदास पक्ष के किसी एक सज्जन को चार्ज दे दिया गया। पिछले ६-७ मास से दीवान रामसरन पक्ष की ओर से इतने वचन भंग हुए कि मैं निराश हो गया और समझ लिया कि यह कार्य तो होने वाला नहीं।

यहां यह तथ्य भी लिखना उचित होगा कि जब सर्व सम्मति से मुझे सर्वाधिकार दिया गया तो मैंने दो तीन सज्जनों को कह दिया कि मेरा अन्तरात्मा यह कहता है कि इस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी और ऐसा ही हुआ।

जालन्धर की इस घटना के पश्चात् मैंने उचित समझा कि जब एक पक्ष अपनी मनमानी कर रहा है तो मैं दूसरे पक्ष को दबाये क्यों रखूं। तब मैंने प्रो० रामसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को तार तथा पत्र द्वारा यह लिख भेजा कि आप प्रधान के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का भार उसी प्रकार संभाले जैसे मेरे चार्ज लेने से पूर्व संभाले हुए थे। और सभा के साथ जो संस्थायें, गुरुकुल, कालेज, स्कूल इत्यादि सम्बन्धित हैं उनका चार्ज भी सम्भालें। क्योंकि इनका प्रबन्ध आप ही से लिया गया था।

अब तो इस झगड़े को निपटाने के सम्बन्ध में मेरा कोई कर्तव्य शेष नहीं। मैंने सर्वाधिकार लेने की जो गलती की, उसका फल मैंने पा लिया, अब आर्य जगत् स्वयं देख ले कि इन झगड़ों का स्रोत कहाँ है? ह० आनन्दस्वामी सरस्वती

सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन—

# डा० दुःखनराम ने शीघ्रता की

# उ.प्र. ने आदर्श उपस्थित किया

[ श्री आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम. ए. वेदाचार्य ]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का जो अधिवेशन ३१ मई १९६९ शनिवार को देहली में प्रारम्भ हुआ, वह श्री डा० दुःखनराम उप-प्रधान के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ, क्योंकि सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री प्रताप सिंह शूर जी वल्लभ दास बम्बई से देहली तब तक नहीं पहुंचे थे।

उपप्रधान का यह कर्त्तव्य है कि प्रधान ने जो व्यवस्था बना दी हो, उसका अनुसरण वह करे और प्रधान की अनुपस्थिति मे उप प्रधान सामयिक प्रधान बन कर जो कुछ कर बैठे प्रधान का नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने उपप्रधान को निभावे। अन्यथा सभायें चल नहीं सकतीं। प्रधान की अनुपस्थिति में उपप्रधान सामयिक प्रधान बनकर प्रधान की व्यवस्थाओं को रद्द करदे और प्रधान उपप्रधान की व्यवस्था को गलत कहे तो कोई संगठन चल नहीं सकता। इस मर्यादा के अनुसार क्योंकि प्रधान श्री प्रताप भाई जी ने अम्बाला के १५ प्रतिनिधियों को स्वीकार किया हुआ था, अतः अब उन १५ प्रतिनिधियों का विवाद खड़ा हुआ तो प्रधान के आसन पर बैठे उप प्रधान श्री डा० दुःखनराम जी का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि अम्बाला के उन १५ प्रतिनिधियों के पक्ष में बोलें और वैसी व्यवस्था दें।

परन्तु श्री पद्मभूषण और वाइसचांसलर होते हुये भी श्री डा० दुःखनराम जी यह भूल गये कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रताप भाई जी ने गत वर्ष जब अम्बाला के १५ प्रतिनिधियों को स्वीकार किया था तब से अब तक एक वर्ष के भीतर क्या-क्या हुआ—

१—आर्य महासम्मेलन हैदराबाद की कार्यकारिणी की बैठक मे सब देश के प्रतिनिधियों ने यह पास किया कि ये विवादास्पद विषय महात्मा आनन्दस्वामी जी के सुपुर्द कर दिये जावें और उनका निर्णय अन्तिम हो।

२—फिर एक लाख के जन-समूह ने हैदराबाद में सर्व सम्मति से सहर्षोल्लास इस प्रस्ताव को स्वीकार किया।

३—सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने भी सर्वसम्मति से जैसा का तैसा प्रस्ताव प्रधान श्री प्रताप भाई के प्रस्ताव पर स्वीकार किया।

४—श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा को आदेश दिया कि ये अम्बाला वाले १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में सम्मिलित न किये जावें।

(५) महात्मा आनन्द स्वामी जी ने उन १५ प्रतिनिधियों को आदेश दिया के वे सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में भाग न लें।

क्या ये सारी बातें पद्मभूषण वाइस चांसलर श्री डा० दुःखनराम जी की आंखों से ओझल थीं कि वर्ष भर के अन्दर ये परिस्थितियां नई पैदा हुई हैं। मैंने डा० दुःखनराम जी को कई बार कहा कि एक दो घण्टे के लिये अधिवेशन स्थगित कर दें और श्री प्रताप भाई जी को आ जाने दें पर श्री डा० दुःखनराम जी ने एक न सुनी और उस परिस्थिति को पैदा होने दिया जो सार्वदेशिक सभा के दो निर्वाचन हुए और सार्वदेशिक सभा का यह निर्वाचन विषय कोर्ट मे पहुंचा। अब कोर्ट मे केस चल रहा है। इस झगड़े के आर्यसमाज के सर्वनाश के कारण जिस व्यक्ति के इशारे से डा० दुःखनराम जी ने यह किया उसका पूर्ण विवरण मैं अगले लेख में करूंगा। जब सभा प्रधान श्री प्रताप भाई जी दिल्ली हवाई जहाज से पहुंचे तब तक यह सब नाटक समाप्त हो चुका था। यदि दो घण्टे के लिये अधिवेशन स्थगित कर दिया जाता तो प्रताप भाई स्वयं विचारते कि क्या किया जावे। पर उप प्रधान जो कुछ कर बैठे हैं उसका अनुमोदन मौखिक और लेख में प्रताप भाई को करना पड़ेगा यह उनकी नैतिक ड्यूटी हो जाती है। अत प्रताप भाई इस सारे काण्ड में दोषी नहीं हैं। आने पर वे इतने दुःखी थे कि वे प्रधान के आसन पर नहीं बैठे। यद्यपि सबने आग्रह किया। पर वे उद्विग्न होकर अलग आकर बैठ गये तब जहां वे बैठे थे वहां ही प्रधान की डैस्क उनके सामने रख दी गई और उन्हें विवश किया गया।

## ये अम्बाला के १५ प्रतिनिधि क्या है

पंजाब सभा के निर्वाचन में एक दल बहुत वर्षों से पराजित होता चला आ रहा था। उस दल ने एक निर्वाचन में झगड़ा करके सार्वदेशिक सभा में अपील कर दी। सार्वदेशिक सभा ने उस केस को अपने हाथ में लिया। विजयी दल ने सार्वदेशिक सभा के हस्तक्षेप को अनुचित बताया और पंजाब सभा और सार्वदेशिक सभा में मुकदमे बाजी छिड़ गई। पंजाब सभा के विजयी दल का कहना यह था कि जिन लोगों के साथ झगड़ा है, वे पंजाब के उस पार्टी के लोग सार्वदेशिक सभा में बैठे हैं, उनसे न्याय की आशा नहीं क्योंकि वादी प्रतिवादी में से कोई एक जज बन जावे तो निर्णय तो उसी के हक में होगा। मुकदमों के कई दाव पेंच चलते रहे। अन्त में सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रधान ने अम्बाला मे अपनी व्यवस्था से पंजाब सभा का निर्वाचन रख दिया उसमे विजयी दल ने भाग नहीं लिया और सार्वदेशिक सभा के जो लोग निर्वाचन कराने गये उनपर कोर्ट ने इन्जैक्शन आर्डर दे दिया कि वे निर्वाचन न करावें इस निर्वाचन को कराने के लिये वे महानुभाव भी अम्बाला गये थे जो इस झगड़े मे आर्यसमाज के सर्वनाश के कारण हैं। पर इन्जैक्शन आर्डर आने पर ये लोग अन्दर छिप गये और उपस्थित लोगों को कह दिया कि तुम सब पर इन्जैक्शन आर्डर नहीं है। तुम निर्वाचन कर लो और उसी निर्वाचन मे सार्वदेशिक सभा के लिये भी १५ प्रतिनिधि चुन लिये गये। वे १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन मे भाग लें या नहीं यह विवाद का विषय खड़ा हुआ। जब १९६८ मे सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन होने बैठा तभी इन्जैक्शन आर्डर कोर्ट का आ गया जिस आर्डर मे अन्य कारणों के साथ एक यह भी कारण कोर्ट के आगे था कि ये १५ प्रतिनिधि भाग न लें और इन्जैक्शन आर्डर के कारण सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन प्रारम्भ ही नहीं हुआ और एक वर्ष के लिये निर्वाचन स्थगित कर दिया गया। अतः भाई वीरेन्द्र जी का यह कहना सत्य नहीं है कि ये १५ अम्बालवी प्रतिनिधि गत वर्ष भाग ले चुके थे जैसी गलत सूचना सार्वदेशिक पत्र मे उन्होंने छाप दी। सन् '६९ के निर्वाचन में भी इन्जैक्शन आर्डर आना था पर विचार यही हुआ कि अन्दर बैठ के समझायेंगे अत जैसे ही अधिवेशन प्रारम्भ हुआ और शोक प्रस्ताव भी प्रस्तुत नहीं हुये कि इन १५ प्रतिनिधियों का विरोध अधिवेशन में खड़ा हो गया। और ऊपर लिखा परिणाम देखने को मिला।

## उत्तर प्रदेश ने आदर्श उपस्थित किया

उत्तरप्रदेश ने यह बात उठाई कि इस प्रकार किसी भी प्रान्त में झगड़ा कराया जाकर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा की न्याय सभा का प्रधान उस प्रान्त में प्रतिनिधि सभा का स्वयं निर्माण करके उस से प्रतिनिधियों को लेकर सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन हुआ करेगा तो सार्वदेशिक सभा आकाश

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# बड़ा अन्तर है

—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

यह दुनियां दोनों दृष्टि से बड़ी विचित्र है। इसमें समानता और भिन्नता की कोई सीमा नहीं, यदि हम विश्व को मोटे रूप से दो भागों में विभाजित करना चाहें तो हम जड़ और चेतन दो रूपों में सारी दुनियां को विभाजित कर सकते हैं। जड़ और चेतन दोनों में एक समानता का चक्र है जिसे हम उत्पत्ति, वृद्धि और ह्रास के रूप में समझ सकते हैं, जड़ जगत् में कोई पदार्थ बनता है, रूप धारण करता है, और फिर समय आने पर मिटने लगता है, और मिट जाता है। इसी प्रकार चेतन जगत् में उत्पत्ति, वृद्धि और मृत्यु का चक्र चल रहा है। जड़ जगत् में जब पदार्थ रूप धारण करते हैं तो उनमें ऐसा प्रतीत होता है कि उनके निर्माण में कोई चेतन शक्ति निहित है। उन पदार्थों का उपादान कारण तो अवश्य अपना होता है। परन्तु केवल उपादान कारण और साधारण कारण के आधार पर यह नहीं माना जा सकता कि पदार्थ बिना किसी चेतन में निमित्त के बन सकते हों।

चेतन जगत् में भी मोटे रूप से यह समझा जा सकता है, कि हरेक चेतन प्राणी में दो शक्तियों का समावेश है। एक को हम आत्मा कह सकते हैं, दूसरे को शरीर। आत्मा और शरीर के सबंध का नाम जन्म एवं उस सम्बन्ध के विच्छेद का नाम मृत्यु है। जितने दिन तक यह सबंध बना रहता है, वह उस प्राणी की आयु समझनी चाहिये। जिस स्थान में वह निवास करता है, कर्म करता है, भूख प्राप्त करता है, उसे निवास स्थान या environment कह सते है। जिस प्रकार जन्म-धारण होता है। उसी माता-पिता का सम्पर्क या heridity कह सकते हैं। किसी प्रकार जन्म हो, कहीं हो, किसी योनि के रूप में हो, यह जन्म, जीवन, और मृत्यु की प्रक्रिया अवश्य दिखाई देती है। चेतन जगत् में एक विशेष समानता और भिन्नता है। केवल मनुष्य या आदमी ऐसा प्राणी है जो सीधा खड़ा हो सकता हैं वह भी चौपाया हैं, परन्तु हाथ छोटे और पैर बड़े होने से मनुष्य में दो जो छोटे हैं वह हाथ और दो जो बड़े हैं इनको पैर कहा जाता है। हाथ और पैरों को जोड़ने के लिये शरीर का बिछला भाग जिसे कमर कहते है बड़ा आवश्यक स्थान रखता है। कमर के लिये यह आवश्यक समझा जाता है कि वह यदि स्वास्थ्य ठीक हो, तो कमर सीधी रहेगी। और झुकेगी नहीं। मनुष्य में सीधे खड़े होने के अतिरिक्त एक विशेषता यह भी है मनुष्य के शरीर में पांचों ज्ञानेन्द्रियां ऊपर अर्थात् सिर के हिस्से में हैं इन्हीं के सहारे वह ज्ञान प्राप्त करता है। और बुद्धि के प्रयोग से अपना प्रयोजन सिद्ध करता है। मनुष्य के अतिरिक्त जितने प्राणी हैं, चाहे वह कितने ही बड़े, ऊंचे या लम्बे हों, उन सबका सिर झुका हुआ है। हाथी, घोड़े, गाय इत्यादि सब चौपाये हैं, और सबका सिर झुका हुआ है, केवल बन्दर या लंगूर ऐसा प्राणी है, जो आवश्यकता होने पर थोड़ी देर के लिये दो पैरों पर सीधा खड़ा हो सकता है। और इसी आधार पर विकास वाद के सिद्धान्त के मानने वाले बन्दर को मनुष्य का पूर्वज मानते हैं। यह उनका केवल भ्रम है। प्राणियों में सिर झुके होने के अलावा एक विचित्र बात यह भी है कि अनेक प्राणी ऐसे भी हैं, जिनके पैर बिलकुल नहीं, जो पेट के बल रेंगते हैं। जैसे सांप इत्यादि। पक्षियों के भी चार पैर हैं, परन्तु उनमें दो पैर पर के रूप में बनाये गये हैं। जिनके सहारे वह आकाश में उड़ भी सकते हैं। चेतन जगत् में समानता यह है, कि हर प्रकार के शरीर में एक चेतन आत्मा का समावेश है और आत्मा को पूर्व कर्मों के अनुसार भोग प्राप्त करने एवं कर्मों के लिये भिन्न-२ प्रकार के शरीर प्रदान हुये बिना आत्मा की पृथक सत्ता माने हुये चेतन जगत् की पहेली समझ में नहीं आ सकती। विकास का सिद्धान्त मानने वाले केवल शरीरों के निर्माण में समानता और भिन्नता देख कर वह इस परिणाम पर पहुंच रहे हैं, कि पशु, पक्षी और मनुष्य में बाह्य परिस्थिति के कारण परिवर्तन हुआ है। वह यह भूल जाते हैं, कि परिवर्तन बिना किसी स्थायी सत्ता के माने बिना नहीं हो सकता। The World change in plies permanent" एक प्रसिद्ध कहावत है अर्थात् परिवर्तन के लिये अस्थायी सत्ता मानना अनिवार्य है। केवल आत्मा की सत्ता न समझकर सारा पृथ्वी जगत् विकास वाद के चक्कर में फंस कर नास्तिकता के चक्कर में फंस गया।

संसार में बड़ा अन्तर है, वह तीन रूप में वर्णन किया जाता है। (१) आकाश-पाताल का अन्तर है (२) जीवन-मरण की समस्या है और (३) रात-दिन का भेद है। वह अन्तर केवल भ्रम के कारण समझे जाते हैं। संसार में तीन इन्द्र का चमत्कार है इन्द्र रूपी जगत् में इन्द्र रूपी आत्मा और इन्द्र रूपी सूर्य। आत्मा-परमात्मा और प्राकृतिक शक्तियों के आधार पर ही सारा विश्व चल रहा है। इन्द्र रूपी परमात्मा को लक्ष्य में रखकर आकाश-पाताल का कोई अन्तर नहीं केवल स्थान की दो सीमायें हैं। इन्द्र रूपी आत्मा को लक्ष्य में रखकर जीवन और मरण कोई समस्या नहीं है। केवल दिशा परिवर्तन है इन्द्र रूपी सूर्य को लक्ष्य में रख कर रात व दिन में केवल सूर्य के सम्मुख आना दिन तथा ओझल हो जाना रात है हमने इस लेख में विश्व की समानता और भिन्नता को इस दृष्टिकोण से विचार किया है कि यदि आत्मा और परमात्मा की सत्ता मान कर और प्रकृति को समान मानकर हम विचार करें तो सारी दुनिया एकता के सूत्र में बंधी हुयी प्रतीत होगी और जो भिन्नता दिखाई देती है वह एकता का हुआ समझी जायगी। और विश्व को जब तक इस प्रकार एकता के सूत्र में बंधा हुआ नहीं देखेंगे तो रोज के लड़ाई-झगड़े कलह और द्वेष समाप्त नहीं होंगे। यदि अनेकता के प्रभाव से बचना है तो अनेकता को एकता के रूप में देख कर उस एक संसार के विधाता को लक्ष्य में रख कर एकता का स्वप्न पूरा हो सकेगा।

★

—२० जून को आर्य समाज सहादरा दिल्ली के श्री पं० देवकी नन्दन आर्य का ७० वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप वर्षों उक्त समाज के मंत्री और प्रधान रहे। आप बड़े संयमी और निर्भीक पुरुष थे। आप प्रातः भ्रमण को गये थे, पर जंगल में बेहोश हो गये। सहादरा में डा० वैद्यों के परामर्श से उन्हें विल्सी इर्विन अस्पताल में लेजाया गया, पर वहां भी उन्हें कोई लाभ न हुआ, और अन्त में उनका शरीरान्त हो गया।

स्वामी शिवाचार्य

—२६ जून को सिरसवा हरचन्द (मुरादाबाद) में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। इसके निम्न अधिकारी चुने गये। प्रधान-श्री कृष्णमुरारी जी मन्त्री श्री हजारी-सिंह जी।

—आर्यसमाज समस्तीपुर दरभंगा में ११ से १७ जुलाई तक वेद सप्ताह मनाया जायगा। इस समाज का वार्षिकोत्सव १७ से २१ अक्तूबर तक होगा।

—शिवरामसिंह आर्य मन्त्री

## सिंहावलोकन

# काशी शास्त्रार्थ का इतिवृत्त

[ काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ]

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने काशी में पहुंचकर मूर्तिपूजा के विरुद्ध धारा प्रवाह संस्कृत में भाषण देने प्रारम्भ किये। काशी के लोग आश्चर्य चकित होकर हजारों की संख्या मे स्वामी जी के व्याख्यानों में पहुंचते। सारी काशी विक्षुब्ध हो उठी। काशी नरेश ने पण्डितों को बुलाकर कहा कि आप लोग लाखों रुपये मूर्तिपूजा पर व्यय करा देते हैं मूर्तिपूजा का प्रमाण देना चाहिये। पण्डित लोग सटपटाये और कहने लगे कि हमने और शास्त्र पढे हैं वेद नहीं पढ़े हैं, कुछ समय मिलना चाहिए।

शास्त्रार्थ की तैयारियां प्रारम्भ होने लगीं। प० ज्योति स्वरूपजी उदासीन १४ दिन तक नवीन वेदान्त पर स्वामी जी से विचार करते रहे और अन्त में स्वामी जी के विचार के हो गये। कुछ पण्डित लोग छिपकर स्वामी जी के व्याख्यानों में आते और कभी कभी अपने शिष्यों को स्वामी जी के पास भेजते। पण्डितों को पता चल गया कि दयानन्द महापण्डित है इसको विद्या के बल पर दबाया नहीं जा सकता। पण्डित लोग जनता में भ्रामक प्रचार करने लगे कि दयानन्द सरकार का गुप्तचर है, मूर्तिपूजा का खण्डन करके सब क्रिस्टान बनाना चाहता है।

शास्त्रार्थ का विज्ञापन दिया गया। कलेक्टर साहब को समाचार मिला तो उन्होने कहला भेजा कि कि शास्त्रार्थ के लिये इतवार का दिन रखा जावे, जिससे मै भी सुन सकू। पर काशी नरेश ने जानबूझ कर इतवार का दिन न रखकर बुद्धवार का दिन रखा जिससे कलेक्टर साहब न आ सके और हुल्लड बाजी से दयानन्द को दबाया जा सके। काशी नरेश ने कहा कि यदि दयानन्द मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ देवे तो मै उन्हे अपना गुरु बना लू और १००) मासिक सहायता सदा के लिये राज्य से बांध दू। पर स्वामी जी ने इसे स्वीकार नहीं किया और तिरस्कार किया। प० ज्योतिः स्वरूपजी राज्यसभा मे गये और काशी नरेश से कहा कि आप अपने पण्डितों के साथ पहले मेरा ही शास्त्रार्थ करा दो। स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ बाद में होगा पर काशीनरेश ने इसे स्वीकार नहीं किया। प० ज्योति स्वरूप जी के पाण्डित्य से काशी के पण्डित डरते थे।

शास्त्रार्थ के दिन स्वामी जी ने नापित को बुलाकर क्षौर कराया फिर स्नान किया और तब ईश्वर के ध्यान मे मग्न हो गये यही उनका बल था। काशी के पंडितो के साथ राज बल था, धन बल था जन समुदाय था और उनकी मण्डली थी फिर भी वे उदास थे। पर दयानन्द निश्चिन्त था। शास्त्रार्थ का समय आ गया ६० हजार जनता स्थल पर शास्त्रार्थ पहुंच गई। कोतवाल साहब भी प्रबन्धार्थ विद्यमान थे। कोतवाल साहब ने स्वामी जी को एक बरामदे मे बैठाया जिससे उपद्रव होने पर किवाड़ बन्द की जा सके और स्वामी जी की रक्षा हो सके। काशी नरेश आतंकू बिठाने के लिये पण्डितों के लिये ताम झाम का प्रबन्ध किया हुआ था। प० ज्योति स्वरूप जी तथा कुछ परमहंस स्वामी जी के साथी थे, पर उन्हे शास्त्रार्थ स्थल पर अन्दर नहीं घुसने दिया गया, पर जब कोतवाल साहब को पता चला तब उन्होंने प० ज्योति स्वरुप जी तथा परमहंसो को अन्दर बुलवाया पर पण्डितो ने धूर्तता करके स्वामी जी तथा परमहंसों के मध्य में इतने आदमी बैठा दिये कि वे स्वामी दयानन्द की सहायता शास्त्रार्थ में न कर सकें।

प० बाल शास्त्री शास्त्रार्थ मे नही आना चाहते थे पर उन्हें बताया गया कि प० सखाराम भट्ट महाराष्ट्र पण्डित जो पञ्च द्रविड पण्डितो के शिरोमणि हैं शास्त्रार्थ मे आवेंगे तब प० बालशास्त्री भी तैयार हो गये पर पं० सखाराम भट्ट के शास्त्रार्थ में आने की बात मिथ्या थी। क्योंकि वे जानते थे कि काशी के पण्डितों का स्वभाव है कि विषय कुछ भी हो वे प्रत्येक को व्याकरण के बल पर दबाना चाहते हैं। पर सखाराम भट्ट ने दण्डी विरजानन्द जी की व्याकरण प्रशंसा सुनी थी और उनके व्याकरण पाण्डित्य की परीक्षा के लिये वे छिपकर विद्यार्थी से बनकर विरजानन्द जी के पास गये थे और नाना प्रकार से प० सखाराम भट्ट ने विरजानन्द की व्याकरण में परीक्षा ली और चकित हो गये फिर प० सखाराम भट्ट तो स्वयं महावैयाकरण थे विरजानन्द जी से खुलकर मिले और बताया कि मैं पण्डित हू आपकी व्याकरण योग्यता देखने आया था क्षमा करें आप वास्तव में व्याकरण के सूर्य है। इस कारण प० सखाराम भट्ट जानते थे कि विरजानन्द का शिष्य दयानन्द व्याकरण मे नहीं दबाया जा सकता और ये सब काशी के पण्डित व्याकरण मे उलझेंगे और जलील होगे अत प० सखाराम भट्ट शास्त्रार्थ मे नहीं गये और पण्डितों को भी मना किया कि तुम दयानन्द से शास्त्रार्थ मत करो।

अन्ततोगत्वा शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ और शास्त्रार्थ का उद्घाटन प० ताराचरण तर्क रत्न ने किया। स्वामी दयानन्द ने कहा कि कोई वेदमन्त्र मूर्तिपूजा की सिद्धि दीजिये। पं० ताराचरण तक रत्न इसका उत्तर न दे सके। तब पं० प्रमोद मित्र ने कहा कि किसी और विषय पर विचार होना चाहिये। स्वामी विशुद्धानन्द ने एक शारीरिक सूत्र पढ़कर स्वामी दयानन्द से पूछा कि यदि सब शास्त्रों की बातें तुम वेद मे समझते हो तो इस सूत्र का मूल वेद में बताओ। स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया कि सब वेद का पारायण करके बता सकता हू कि इस शारीरि सूत्र का मूल वेद में कहां है। सब वेद एक साथ किसी को उपस्थित नही रहते। स्वामी विशुद्धानन्द ने कहा कि फिर काशी शास्त्रार्थ करने क्यो आये। स्वामी दयानन्द ने कहा कि आपको सब वेद उपस्थित हैं इस पर स्वामी विशुद्धानन्द चुप हो गये। पर प० बालशास्त्री बोले कि मुझे सब वेद कण्ठस्थ हैं। स्वामी जी ने कहा कि यदि मूर्ति पूजा वेद में नहीं दिखा सकते पर मूर्तिपूजा करना आप श्रेय धर्म समझते हैं तो धर्म का लक्षण बताइये। इस पर बाल शास्त्री ने अपना बनाया लक्षण बोला स्वामी जी ने कहा कि कोई वेदमन्त्र बोलिये। तब बालशास्त्री चुप हो गये फिर प० शिव सहाय जी आगे बढ़े और मनु का श्लोक—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम्॥

बोलने लगे। तब स्वामी जी ने कहा कि अधर्म का लक्षण करिये तब सब चुप हो गये।

स्वामी जी महाराज का अभिप्राय यह था कि धर्म कहते हो उसको हैं जो वेद प्रतिपादित हो और अधर्म उसको कहते है जिसका वेद मे निषेध हो—

चोदनालक्षणो धर्म

अर्थात् वेद जिस बात को कहता है वह धर्म तद्विपरीत अधर्म मनु ने भी कहा है कि—

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाणं परम श्रुति।

धर्म ज्ञान में वेद ही परम प्रमाण

[ शेष पृष्ठ १२ पर ]

# काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

[ ६१ ]

लक्ष्य स्वस्ति का लिये हुये हो, बारम्बार कर्म हर काला।
संस्कार स्वय बन जाता है, देता जो जीवन में ज्वाला।
ज्यों बन में गौ चरने जाती, नित घर को ही चर कर आती;
बारम्बार पाठ करने से, हो स्वतः कण्ठ ज्यों श्रुतिशाला।

[ ६२ ]

हर देश धर्म मे धरती के, होती सस्कारों की चाला।
है नाम भिन्न उनका होता, या बिना नाम होने वाला।
पाणिग्रहण फिर गर्भाधान औ, नामकरण, अन्त्येष्टि सभी हों;
विधि भिन्न भले हो इन सबकी, उत्तम विधान दे श्रुतिशाला।

[ ६३ ]

मानव तन मजिल अनेक का,है स्वयं एक उत्तम शाला।
सस्कार करें सुदृढ़ इसको, धन्य मनुज का भवन विशाला।
जितना ऊँचा भवन बनाओ, अनुपात नींव उतनी गहरी;
तभी सबल हो भवन मनुज का,भवन सबल करती श्रुतिशाला।

[ ६४ ]

सस्कार तीन पहले होते, जब जन्म मनुज लेने वाला।
धरती पर आने से पहले, सस्कार लक्ष्य लक्षित लाला।
गर्भाधान पुसवन तीजा, हो सीमन्तोन्नयन सस्कार;
हरते जो आगे के विकार, यों अविकारी है श्रुतिशाला।

[ ६५ ]

संस्कार तीन का काम नीम, आगामी आधार निराला।
ब्रह्मचर्य संयम संबल से, गर्भाधान जन्म देने वाला।
निज हृदय ध्येय सधान करो, उत्पन्न तभी सन्तान करो;
संयम ही स्वय नियोजन है, नित नियोजित है श्रुतिशाला।

[ ६६ ]

जैसा उद्गार लक्ष्य होगा, बालक वैसा होने वाला।
अनचाहे जो होता जाये, तो क्यों सपूत हो उजियाला।
जितना धन-साधन का बीमा, सन्तति की उत्तम वह सीमा;
होता परिवार नियोजित है, जिसकी आयोजित श्रुतिशाला।

[ ६७ ]

सयम सेवित सबल वीर्य से, बलवान बीज होने वाला।
अदृश्य भ्रूण उत्थान करे, है धन्य ध्यान देने वाला।
पुसवन सीमन्तोन्नयन से, उन्नयन और पोषण होता;
सुन्दर शिशु लेता जन्म तभी, हो हृदय मूल मे श्रुतिशाला।

[ ६८ ]

जब जन्म ग्रहण करता बालक, शुभ जात कर्म बेला वाला।
आया समाज मे नव सदस्य, जात कर्म सस्कार निराला।
है जन्म जहाँ नव बालक का, तो पुनर्जन्म माँ का होता;
प्रसव वेदना करे सहन माँ, तब मिले मधुर यह श्रुतिशाला।

[ ६९ ]

लिख दिया'ओ३म्'शिशु वाणी पर, ले स्वर्ण सींक औ मधु आला।
कह दिया कर्ण 'वेदोसि' शब्द, तू पुत्र ज्ञान है उजियाला।
दोनों शब्द अमर अकुर हैं, शिशु सग सदा बढ़ते जाते;
'वेदोसि' न्याय से ज्ञानवान, शिशु सर्व स्वयं हैं श्रुति शाला।

[ ७० ]

नाम करण सस्कार पाँचवा, अस्तित्व बोध देने वाला।
लघुतम सुन्दर और मृदुल हो, अभिधान स्वस्ति देने वाला।
नाम श्रवण कर जब शिशुगन के, कुल-स्तर का परिचय मिलता है;
यथा नाम गुण तथा बने, जब अनुकरण श्रवण के श्रुतिशाला।

[ ७१ ]

संस्कार निष्क्रमण के द्वारा, घर से बाहर लाओ लाला।
वातावरण बने अनुकूलित, लखे दृश्य शिशु सुन्दर आला।
देख मित्रगण हों हर्षित हर, मुखरित बने बधाई उर-उर;
शुभ मन्दिर में आशीष मिले, प्रथम बार आये श्रुतिशाला।

[ ७२ ]

संस्कार अन्नप्राशन होता, उत्तम अन्न खिलाने वाला।
मुख अन्न ग्रहण शिशु प्रथम बार, संस्कार सबल करने वाला।
जैसा भोजन वैसा पोषण, आरोग्य-आयु का रोपण हो;
देह निराली विक्रमशाली अजर अमर करती श्रुतिशाला।

[ ७३ ]

चूड़ाकर्म संस्कार होता, शिशु प्रथमवार मुण्डन वाला।
सब देह मैल के खण्डन का, स्वस्थ शुद्धि के मण्डन वाला।
दे सदा स्वच्छता की शिक्षा, जो जीवन में करती रक्षा;
जल-स्नान देह को स्वच्छ करे, आत्म-स्वच्छ करती श्रुतिशाला।

[ ७४ ]

नासिका वेध या कर्णवेध, कन्या के आभूषण वाला।
कर कर्णवेध संस्कार कभी, था नर ने भी पहना बाला।
है उचित किन्तु कन्याओं को, आभूषण शोभा है उनकी;
श्रृंगार बोध दे संस्कार ये, श्रृंगार सत्व है श्रुतिशाला।

[ ७५ ]

संस्कार किये जो नौ वर्णित, जिसमें आता शिशु को ढाला।
यज्ञ कर्म उत्साह हर्ष से, होते हैं हर उत्सव काला।
थे तीन, जन्म से पूर्व किये, शुभ शैशव में छः जन्मवाद;
की स्वस्ति-कामना पग-पग पर, ज्यों स्वस्ति व्यस्त है श्रुतिशाला।

[ ७६ ]

अब शब्द श्रेष्ठ के योग्य बना, बालक बढ़कर भोला-भाला।
है अर्थ शब्द का शक्ति सदा, शिशु हुआ शक्ति पाने वाला।
'शक' शब्द शक्ति निर्माता है, जिससे शिक्षा का नाता है;
दे शक्ति दान जो, शिक्षा वह, रक्षा-शिक्षा दे श्रुतिशाला।

[ ७७ ]

शब्द-शब्द का अर्थ नहीं है, साधन मात्र समझने वाला।
हर पद का अर्थ पदारथ है, शब्द अर्थ है विश्व विशाला।
अर्थ पुष्प का फूल नहीं है, सत्य सुमन है अर्थ स्वयं का;
समझो शब्दार्थ पदारथ को, पद अर्थ सृष्टि है श्रुतिशाला।

[ ७८ ]

हैं शब्द एक के अर्थ बहुत, है शब्द सदा रहने वाला।
अर्थ लवण-घोड़ा सैन्धव का, समय गमन या भोजन काला।
अङ्ग विषय का ध्यान ज्ञान कर, हर प्रसङ्ग का अभिज्ञान कर;
शब्दार्थ सोच करना प्रयोग, जगत् पदारथ है श्रुतिशाला।

[ ७९ ]

जन-शब्द बोध जो करता है, पाता वह शिक्षा की ज्वाला।
जो पाता है शुभ शिक्षा को, है वही प्रबल संबल वाला।
फल-सबल-बल शिक्षा पाने, चला बाल गुरुदेव घराने;
गुरुकुल गति'उपनयन'सुमति है, गति सुमति प्रगति है श्रुतिशाला।

[ ८० ]

शिशु के माँ-बाप जन्मदाता, पर गुरु ज्ञान देने वाला।
शुभ श्रेष्ठ गुरु हैं इन सब में, बल विद्या का देने वाला।
पर लोक-लोक सबका आश्रय, द्विज-जन्म दूसरा गुरु देता;
होते गुरुदेव हितैषी हैं, सचमुच सतगुरु है श्रुतिशाला।

[ क्रमशः ]

[ गतांक से आगे ]

जितना बोलना चाहिए उससे कम या अधिक न बोलें। बड़ों का आदर करें। उनके आने पर स्वय उठकर उन्हें ऊंचा स्थान दें। उन्हें 'नमस्ते' करें। सभा में अपने योग्य आसन पर बैठें। आचार्य माता, पिता आदि का सम्मान करें और उनके वचनों का पालन करें।

बच्चे जब समझदार हो जांय तब उन्हें शिक्षा प्रारम करने से पूर्व यह भी शिक्षा देनी चाहिए :—

ऐ बालक, तू आज से ब्रह्मचारी है। जलकी प्रभूत मात्रा पिया कर, काम में लगा रह, निठल्ला कभी मत फिर, दिन मे कभी मत सोना, आचार्य के अधीन रहकर विद्याध्ययन करना और ब्रह्मचर्य धारण करना, आचार्य की धर्मयुक्त आज्ञा का पालन करना, अधर्म युक्त आज्ञा का पालन मत करना, क्रोध और झूठ छोड़ देना, मैथुन मत करना, गद्देलों पर मत सोना, गाना, बजाना, नाचना, गन्ध माला, सुरमा आदि लगाना ठीक नहीं। अति स्नान, अति भोजन, अति निद्रा, अति जागरण, निन्दा, लोभ, मोह, भय, शोक छोड़ देना, रात्रि के पिछले पहर मे उठ जाना और आवश्यक शौच, दन्तधावन, स्नान, सध्योपासन, ईश्वर, स्तुति, प्रार्थना, उपासना और योगाभ्यास आदि करना, मांस, रूखा, सूखा अन्न तथा मद्यादि का सेवन न करना, बैल, घोड़ा, ऊंट आदि की सवारी न करना, युक्त आहार विहार से रहना वीर्य रक्षा करके अर्ध्वरेता बनाना, अतिअम्ल, अतितिक्त, अतिकषाय, क्षार तथा रेचन आदि वस्तुओं का सेवन न करना, विद्या के ग्रहण मे लगे रहना, सुशील बनना थोड़ा बोलना, सभ्य बनने का प्रयत्न करना, अग्नि होत्र, सध्या, आचार्य का आज्ञाकारी और प्रतिदिन आचार्य को नमस्कार करने वाला बनना-ये तेरे नित्य के कर्म हैं।

अध्यापन का कार्य भी प्रारम में भी माता तथा पिता को करना होता है। अतः स्त्रियों को शिक्षित

## बहनों की बातें (८)—

# मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

होना आवश्यक है। तैत्तिरीय उपनिषद् मे शिक्षा के विषय में विशेष रूप से विचार किया गया है और बताया गया है कि शिक्षा शब्दों द्वारा दी जाती है। शब्दों का निर्माण वर्णों से होता है। 'अ आ इ ई' 'क ख ग घ' वर्ण हैं। वर्गों के ज्ञान के बाद स्वर अर्थात् उच्चारण का ज्ञान होना चाहिए। माता की प्रारम्भिक भूल का परिणाम होता है कि कई बालक 'स' को 'फ', 'उ' को 'र' 'त' को 'ट' बोलने लगते हैं। वर्ण और स्वरों के ज्ञान के बाद मात्रा का ज्ञान कराना चाहिये। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत इन मात्राओं का शब्दोचारण में सहायक होता है उसके बाद मात्राओं का 'बल' जानना आवश्यक है।

# वनिता विवेक

उसके बाद 'साम' अर्थात् समता से उच्चारण करना आना चाहिए। वर्ण, स्वर, मात्रा' बल और समता के ज्ञान के बाद 'सन्तान' अर्थात् वाक्य विस्तार बालक को बताना चाहिए। यह सब बातें तो सुशिक्षित और सन्तान का विकास चाहने वाली माता कर सकती है।

शिक्षा देते हुए माता, पिता तथा अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि वे प्रश्नोत्तर तथा परीक्षणात्मक पद्धति का सहारा ले। बालक के प्रश्नों का स्वय उत्तर दें और इस विशाल प्रकृति से आखें खोलने पर उसे जिन वस्तुओं के प्रति जिज्ञासा हो और वह पूछे तो उसे उनका उत्तर दें। प्रश्न पूछने पर डांट देने, थप्पड़ मार देने से बच्चों की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है। परीक्षात्मक पद्धति का सहारा भी ज्ञान मे सहायक होता है। छान्दोग्योपनिषद् में आचार्य अपने शिष्य श्वेतकेतु से कहते हैं बट वृक्ष का एक फल लाओ। इसे काटो। इसमें क्या देखते हो ? बीज। बीजों को फोड़ डालो, फिर क्या देखते हो ? कुछ नहीं। आचार्य ने कहा इसी 'कुछ नहीं' में इतना विशाल वट वृक्ष छिपा हुआ है। इस परीक्षण द्वारा आचार्य ने ब्रह्म की महान सत्ता का परिचय कराया।

"अन्न वै प्राण." यह एक बालक को समझाना बहुत कठिन नहीं। आप उससे कहते रहिये कि अन्न ही प्राण है। वह समझेगा नहीं। श्वेतकेतु को इसी शिक्षा के लिये आचार्य ने १५ दिन तक उपवास करवाकर निराहार रहने का आदेश दिया। पन्द्रह दिन बाद उसे वेदमंत्र का पाठ करने को कहा। उसने कहा मुझे मन्त्र याद नहीं आते हैं। पुन भोजन करने को कहा तो सब मन्त्र याद आ गए। इस प्रकार अन्न ही प्राण है यह अनुभव हो गया। शिक्षा में गुरु द्वारा श्रवण, स्वय मनन और उसे जीवन मे उतारना अर्थात् निदिध्यासन आवश्यक है। विद्या दो प्रकार की होती है। परा तथा अपरा। इस ससार की भौतिक विद्याओं को 'अपरा' तथा 'आत्म विद्या' को 'परा' विद्या कहते है। इनका ज्ञान अध्यापक तथा गुरु करवाते हैं, परतु सब विद्याओ का ज्ञान प्रारम्भिक ज्ञान माता को देना चाहिए। हमारी समझ मे मॉटीसरी' आदि विद्यालयो मे यह शिक्षा नहीं दी सकती। 'न मातु पर दैवतम्' माता से बढ़कर दूसरा कोई दिव्य नहीं, श्रेष्ठ नहीं। इसी लिए सत्यार्थ प्रकाश मे माता की महती महिमा का स्वामी दयानन्द ने वर्णन किया है। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण का अर्थ। आत्म नियंत्रण' स्वाधीनता या स्वतन्त्रता। यह आत्म नियन्त्रण सुमाता ही सिखा सकती है। यही कारण है कि 'मातृमान्, पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद' के द्वारा

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार
एम. ए. एल. टी,
डी ए वी. कालेज, गोरखपुर

स्वामी दयानन्द ने अच्छी माता, अच्छा पिता बनने पर जोर दिया है।

सभी बालिकाओ एव महिलाओ पर सरला बहन की वक्तृता का प्रभाव पड़ा और सब एक दूसरे का अभिवादन कर उस दिन विदा हुईं।

★

## हरदोई में ४ मुसलमानों की शुद्धि

दिनाङ्क २९-६-६९ ई० दिन रविवार को आर्य समाज मन्दिर हरदोई में एक नव मुस्लिम परिवार की शुद्धि श्री रामेश्वर दयाल जी (शुद्धि बाबू) के विशेष प्रयत्न व साहस से की गई। यह परिवार पहले मुसलमान बना लिया गया था। शुद्धि समारोह में समाज के सभी प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। उन चारों का नामकरण संस्कार भी किया गया। शुद्धि के पश्चात् सब लोगों ने उनके हाथ का हलवा खाया।

रामेश्वर दयाल (शुद्धि)
मन्त्री

—सोनबरसा ग्राम, जिला वाराणसी में ता० १९, २० जून ६९ को आर्य समाज की ओर से सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक काशी के श्री ठा० विन्ध्येश्वरी सिंह जी का व्याख्यान एव भजन हुआ। भजनों एव व्याख्यान का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। २५ आदमी का जनेऊ संस्कार हुआ। पुनः आर्य समाज वहां पर कायम हो गया।

गिरजा प्रसाद दुबे

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की प्रस्तावित प्रारम्भिक रूपरेखा

आचार्य श्री विश्वश्रवाः व्यास, एम० ए०, वेदाचार्य

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का काशी के पण्डितों के साथ बड़ा लम्बा ऐतिहासिक शास्त्रार्थ जो काशी नरेश ने काशी में १६ नवम्बर १८६९ में कराया था, इसकी शताब्दी काशी मे ही मनाने का निश्चय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा दिनांक २३ मई १९६९ ने किया है। शताब्दी समिति का गठन हो चुका है और अन्तरङ्ग सभा ने यह भी निश्चय किया है कि इस शताब्दी को देश-देशान्तर की सभी प्रतिनिधि सभाओ और आर्य समाजों से सम्पर्क स्थापित करके इण्टर नेशनल ख्याति प्राप्त विद्वानों के सहयोग से विराट आयोजन के साथ मनाया जावे।

यह शताब्दी समारोह राज सभा के रूप मे किया जावेगा। साधारण जनता के समारोह मे भी विशिष्ट स्थान बैठने के बनाये जावेंगे, तदर्थ यह प्रार्थना है कि—

१०) २५) और १००) के सदस्य बनकर स्वागत समिति का निर्माण करें और अपना स्थान सुरक्षित करालें, विशेष धन संग्रह के कार्य में आर्य सर्वत्र जुट जावे।

इस समारोह के पांच भाग होंगे।

१—शास्त्रार्थ यात्रा।
२—विशेष इण्टर नेशनल ख्याति प्राप्त विद्वानों की कान्फ्रेंस।
३—शोभा यात्रा विशिष्ट स्तर की।
४—सार्वदेशिक महिला सम्मेलन।
५—सब वैदिक परम्पराओ के विद्वानो द्वारा एक विशिष्ट यज्ञ

## शास्त्रार्थ यात्रा

महर्षि के शास्त्रार्थ का प्रधान विषय मूर्तिपूजा था। अत इसी एक विषय को लेकर समस्त भारत वर्ष में विशेष बड़े-बड़े नगरो मे शास्त्रार्थ यात्रा की जावे। अमृतसर से लेकर कलकत्ता तक टकारा से लेकर बम्बई, तथा अन्य नगरो में यह यात्रा आर्य विद्वानों की हो। इसका प्रकार यह हो कि विशेष कारों का प्रबन्ध किया जावे, जिसमें एक दर्शन विद्वान् बैठें। शास्त्रार्थ उपयोगी ग्रन्थ साथ में हों। निश्चित तिथि पर उस-उस नगर के लोग अपने-अपने यहां शास्त्रार्थ का आयोजन करें, यदि वहां कोई शास्त्रार्थ करने न आवे तो मूर्ति पूजा पर व्याख्यान देकर आर्य विद्वान् आगे बढ़ें, इस प्रकार यह दिग्विजय यात्रा १५ अक्टूबर से प्रारम्भ होकर १५ नवम्बर को काशी मे पूर्ण हो।

शास्त्रार्थ का प्रकार सभ्य शान्त और प्रेम तथा परस्पर आदर पूर्वक रहेगा। जिसमें केवल वेद मन्त्रो पर ही विचार चलेगा कि वेदो मे अवतार या प्रतिमा पूजा प्रतिपादित है या नहीं।

## विशेष कांफ्रेंस

१६ नवम्बर से एक सप्ताह तक एक विशेष कांफ्रेन्स हो जिसका विषय रहे—

## वेद ईश्वरीय ज्ञान है या नहीं

वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने वाले एक पक्ष मे रहे और वेदो को मनुष्यकृत मानने वाले सब विद्वान् एक पक्ष में रहें। वेद के ईश्वरीय ज्ञान मानने में प्रकार भेद होते हुये भी वेद को अपौरुषेय मानने वाले आर्य विद्वान् तथा पौराणिक विद्वान् तथा अन्य एक पक्ष में होंगे तथा वेदो को मनुष्य कृत मानने वाले पाश्चात्य विद्वान्, भारतीय विद्वान् जो विश्वविद्यालयों मे वेद पढाते हैं और पाश्चात्य पक्ष के समर्थक तथा बौद्धाचार्य जैनाचार्य और ईसाई पादरी और मौलवी आदि सब एक पक्ष मे रहेंगे। यह यत्न किया जा रहा है कि विदेश के विद्वान् इस कान्फ्रेंस मे भारत पहुच कर भाग लें, इस दिशा में विदेश मन्त्रालय हमारे सहायक होंगे।

कांफ्रेंस का प्रकार यह रहेगा कि वेदों को मनुष्यकृत मानने वाले सर्व धर्मावलम्बी मिलकर एक निबन्ध तैयार करेंगे जिसमें वे वेदों के ईश्वरीय ज्ञान न होने के कारण निबद्ध करेंगे और वेदमन्त्रो को प्रस्तुत करेंगे। उनका यह निबन्ध कांफ्रेंस मनोनीत प्रधान के पास पहुंच जावेगा। और वह प्रधान उसकी एक प्रतिलिपि वैदिक लोगों को भेज देगा। वैदिक लोग उसका उत्तर तैयार करके अपना निबन्ध लिखेंगे। रात्रि को खुले अधिवेशन मे दोनो पक्ष अपना-अपना निबन्ध सुनावेंगे। वैदिको का उत्तर लेकर रात्रि मे सर्व धर्मावलम्बी विद्वान् ले जावेंगे और दूसरे दिन दोपहर १२ बजे तक वैदिकों के उत्तर का उत्तर तैयार करके वैदिक पक्ष को भेज देंगे। वैदिक लोग उसका भी उत्तर सायं ७ बजे तक तैयार करेंगे और रात्रि के खुले अधिवेशन मे दोनों के उत्तर पढ़े जावेंगे।

क्योंकि देश-देशान्तर के लोग इसमे भाग लेंगे। अतः भारत के अन्तर्देशीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति एक या प्रत्येक दिन पृथक् सभापति का आसन ग्रहण करेंगे, और अन्त में ये सब निबन्ध पुस्तकाकार छाप दिये जावेंगे।

## विशेष शोभा यात्रा

इसी अवसर पर एक निश्चित दिन एक शोभा यात्रा निकाली जावे जिसका प्रकार यह हो।

१—आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् एक विशेष यानो पर रहेंगे।

२—आर्य जगत् की वह महिलायें जिन्होने काशी की आचार्य परीक्षायें पास करके विशेष गौरव आर्यसमाज को दिया है तथा तत्सम संस्कृत की विदुषी अन्य महिलायें जो आर्य जगत् मे हैं वे सब पृथक् विशेष यानों पर रहेंगी। हम काशी को दिखाना चाहते हैं कि इस दिशा मे आर्य जगत् कितना सफल हुआ है।

३—समस्त प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी विशेष यानों पर शोभा यात्रा मे रहेंगे।

४—प्रतिष्ठित संन्यासियों का शोभा यात्रा मे विशेष यानों पर स्थान रहेगा।

५—एक वेद यान सबसे आगे चलेगा जिस पर उन समस्त वेद तथा आर्ष ग्रन्थो की प्रदर्शनी रहेगी, जितने ग्रन्थों को आर्यसमाज प्रामाणिक मानता है तथा जो वैदिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं वे सब एक साथ उस यान पर प्रदर्शित किये जावेंगे।

६—समस्त आर्य जनता सारे आर्य जगत् की साथ रहेगी।

७—प्रसिद्ध गायनाचार्य और वैदिक रिकार्ड यात्रा मे भाग लेंगे।

## सार्वदेशिक महिला सम्मेलन

इसी अवसर पर एक महिला सम्मेलन होगा, जिसमे समस्त आर्य जगत् की महिला समाजों की प्रतिनिधि देवियां सम्मिलित होंगी और वे सब मिलकर अपनी समस्याओं तथा स्त्री वर्ग में वैदिक धर्म के प्रचार की योजना स्वयं तैयार करेंगी। एक विशेष सङ्गठन उस अवसर पर सङ्गठित होगा। विशेष विचारणीय विषय ये हो सकते हैं।

१—आर्य सन्तान किस प्रकार आर्य समाज के भविष्य को अपने हाथों मे ले इसका प्रबन्ध माताओं को करना होगा।

२—आर्य वातावरण मे पली आर्य कन्याओं की भावी जीवन समस्या।

३—महिला जगत् को किस प्रकार वेदज्ञ तथा संस्कृतज्ञ बनाया जावे जिससे सन्तान की मातृ-भाषा संस्कृत हो जावे।

इत्यादि विषय पर गम्भीर विचार करके उचित पग इस दिशा में उठाना है।

## विशेष यज्ञ

दुर्दैव से ब्रह्मपारायण यज्ञ की वह दुर्दशा हो रही है कि प्रत्येक मन्द व्यक्ति साधु संन्यासी इसको

कराने बैठ जाता है, चाहे वह संस्कृत का अक्षर भी न जानता। इसका दूसरा दुष्परिणाम यह भी हुआ कि प्राचीन वैदिक यज्ञों यागों की चर्चा ही उठ गई। वैदिक याग जो प्राचीन ग्रन्थों में निर्दिष्ट है वे ऐसे हैं जिनको सर्व वैदिक धर्मावलम्बी विद्वान् मिलकर सम्पन्न कर सकते हैं। ऐसा हम अन्यत्र कर भी चुके हैं। अतः किसी या किन्हीं वैदिक यज्ञों की योजना १६ नवम्बर से प्रारम्भ होकर एक सप्ताह चले जिसमे प्रत्येक दिन यजमान आर्य नरेश आर्य श्रेष्ठी तथा अन्य धर्मावलम्बी वैदिक नरेश तथा श्रेष्ठी रहे और यज्ञ कराने वाले केवल वेदाचार्य हो और वेदाचार्य तथा विदुषी देवियां पुरोहितों का आसन ग्रहण करें।

यज्ञशाला प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर बनाई जावे न कि केवल लम्बी-चौड़ी विधि हीन। यज्ञीय शाकल्य स्वयं विधि विहित तैयार करना होगा। तथा गोएं यज्ञशाला में रहकर विशेष शोभा बढ़ावें उनके ताजे घृत से यज्ञ हो। समिधायें यज्ञीय वृक्षों की हों तथा सब स्थली पाक वहीं प्रतिदिन बना करे।

यजमान व्रती हों। उस प्रसङ्ग में एक योगाभ्यास शिविर लगाया जावे जिसमे प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी और आर्य समाजों के विशेष सचालकों को योगाभ्यास का कुछ अभ्यास कराया जावे जिससे आर्य समाज का भविष्य शान्त बने।

वेद का स्वाध्याय सब लोग दिन भर करेंगे। उनका एक सप्ताह का सत्र वहीं लगे। इस प्रकार पांचो काम सफलता पूर्वक पूर्ण हों।

नोट—विशेष विचारकों से प्रार्थना है कि वे और अपने सुझाव इस दिशा में देवे।

## सम्मति पत्रिका का प्रकाशन

इस पुनीत अवसर पर समस्त ससार के विद्वानों की सम्मतियां ग्रहण की जावें कि हमारे एक सौ वर्ष के परिश्रम से संसार अब तक किन-किन हमारे मन्तव्यों से सहमत हो गया है।

विशेष—इस समस्त आयोजन पर एक लाख रुपये से अधिक व्यय होगा। अतः सबसे सादर अनुरोध है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ को इसके सहयोग के लिए पर्याप्त धन भेजें।

## काशी शास्त्रार्थ का स्वरूप

ता० १६ नवम्बर बुधवार सन् १८६९ तदनुसार विक्रमसवत् १९२६ कार्तिक शु० दि० १३ अब यह तिथि २१ नवम्बर शुक्रवार को होगी।

शास्त्रार्थ स्थान—आनन्द बाग दुर्गा कुण्ड के पास वाराणसी।

सभापति—काशी नरेश महाराज श्री ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह जी

प्रबन्धक—श्री रघुनाथप्रसाद जी कोतवाल।

उपस्थिति—६० साठ हजार विदेशी पादरी भी दर्शक।

## विषय

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का पक्ष—मूर्ति पूजा वेद-विरुद्ध है।

काशी के पौराणिक पण्डितों का पक्ष—मूर्ति पूजा वेद सम्मत है।

मूर्ति पूजा के समर्थन में—काशी आदि के २७ पण्डित—

१—श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती। २—दाक्षिणात्य पं० बाल शास्त्री जी। ३—श्री पं० जयनारायण तर्क वाचस्पति। ४—श्री प० चन्द्रसिंह जी त्रिपाठी। ५—श्री माधवाचार्य जी। ६—श्री वामनाचार्य जी। ७—श्री प० राधेमोहन तर्कवागीश। ८—श्री प० हरिकृष्ण व्यास। ९—श्री पं० नवीननारायण तर्कालंकार। १०—श्री प० काशीप्रसाद शिरोमणि। ११—श्री पं० कैलाशाचार्य शिरोमणि। १२—श्री पं० मायाकृष्ण वेदान्ती। १३—श्री प० ताराचरण तर्करत्न। १४—श्री पं० गणेशप्रसाद ओझिय। १५—श्री प० राजाराम शास्त्री। १६—श्री स्वामी निरञ्जनानन्द जी। १७—श्री प० रामशास्त्री जी। १८—श्री प० शालिग्राम जी। १९—श्री प० ढुंढीराज शास्त्री। २०—श्री प० रामस्वामी मिश्र। २१—श्री पं० भारद्वाज शास्त्री। २२—श्री प० रामकृष्ण शास्त्री। २३—श्री पं० शिवसहाय शास्त्री। २४—श्री प० देवदत्त शर्मा जी। २५—श्री पं० दामोदर शास्त्री। २६—श्री पं० मदनमोहन शिरोमणि। २७—श्री प० प्रमोददास मित्र।

मूर्ति पूजा के खण्डन मे—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एकाकी

विशेष—विशेष विवरण इसी अङ्क में अन्यत्र प्रकाशित पाठक पढ़ें।

## गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली में संस्कृत के छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ

बनारस की प्रथमा मध्यमा शास्त्री आचार्य परीक्षा के छात्र यहाँ प्रविष्ट होंगे। बनारस की प्रथमा परीक्षा पास विद्यार्थी सब जगह ९ श्रेणी में भरती हो सकता है। पूर्व मध्यमा परीक्षा पास हाई स्कूल माना जाता है और कहीं भी इन्टर कालिज मे भरती हो सकता है। इसी प्रकार उत्तर मध्यमा परीक्षा पास इन्टर परीक्षा पास माना जाता है। बी ए परीक्षा मे प्रवेश पा सकता है और शास्त्री परीक्षा पास करके एम. ए परीक्षा दे सकता है।

बनारस की ये परीक्षायें आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा भी होती है और इन परीक्षाओं मे अंग्रेजी गणित इतिहास आदि सब विषय पढ़ाये जाते हैं। अतः अब बच्चों को स्कूलों में पढना बेकार है। बनारस की परीक्षाओ द्वारा बच्चे संस्कृत भाषा और धार्मिक ग्रन्थों का भी अध्ययन कर लेगे और अन्य सरकारी परीक्षाओ के समान मान्यता भी इन परीक्षाओ की है। देहली में गुरुकुल होने से बच्चों का स्तर भी ऊंचा हो जाता है और उन्हें धार्मिक सत्सङ्ग का भी लाभ मिलता है।

इस गुरुकुल में बच्चों को प्राचीन गुरुकुल प्रणाली पर रखा जाता है, सन्ध्या, हवन और रविवार को साप्ताहिक सत्सङ्गों में व्याख्यान का भी अभ्यास कराया जाता है। जो लोग वानप्रस्थाश्रम की शैली से यहाँ रहकर स्वाध्याय करना चाहे उनके लिये यहाँ अच्छा पुस्तकालय है और व्याख्यान और संस्कारों के कराने का भी अवसर मिलता है। शीघ्र बच्चों को लेकर पहुचिये या भेजिये, जो बच्चे अपना वस्त्र धोना स्नान आदि का कार्य स्वयं कर सके, इतनी आयु बच्चे की हो और यदि ५ श्रेणी पास हो तो और भी अच्छा है।

—आचार्य विश्वश्रवा. व्यास एम. ए वेदाचार्य
मन्त्री तथा आचार्य गुरुकुल
११९ गौतमनगर, युसुफसराय बस स्टैण्ड के पास, नई दिल्ली ४९

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद ने गत वर्ष को भांति इस वर्ष भी सस्ती वार्षिकोत्सव योजना बनाई है। जो १५०) में सफल उत्सव हो जाता है। जिले की समाजों को इससे लाभ उठाना चाहिए।

—रामानन्द कार्यालय मन्त्री

—आर्य समाज सेनद्वार का वार्षिकोत्सव १७ से १९ दिन तक सफलता पूर्वक मनाया गया। श्री स्वामी सुखानन्द जी महाराज, प० जयेन्द्र जी शास्त्री, श्री ईश्वरदयालु जी आर्य, श्री बलबीरसिंह जी बेधड़क आदि के प्रभावशाली उपदेश, भाषण और भजन हुये।

—उप मन्त्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

मूर्ति पूजा हो सकता है अत यदि वेद मे है तो धर्म है। और उसको दिखाओ कि वेद मे कहाँ है।

तब माधवाचार्य जी ने पुराने पन्ने हाथ में लेकर पढ़े और कहा कि ये पन्ने वेद के हैं इसमे प्रतिमा शब्द है, जिसका अर्थ मूर्ति है। स्वामी दयानन्द ने कहा कि न ये पन्ने वेद के हैं और न प्रतिमा शब्द का अर्थ मूर्तिपूजा ही है। शास्त्रार्थ के प्रसङ्ग मे स्वामी विशुद्धनन्द जी कह बैठे कि वेदो के मन्त्र ही देवता हैं तिस पर काशी नरेश की भौहे चढ़ गई क्योंकि फिर मूर्तिपूजा कहाँ रही। स्वामी दयानन्द ने कहा कि फिर प्रतीकोपासना कैसे होगी। स्वानी विशुद्धनन्द ने कहा शालिग्राम आदि से। स्वामी दयानन्द ने फिर वही बात कही कि ऐसा वेद मे कहाँ है। स्वामी विशुद्धानन्द ने कहा कि वेद की बहुत सी शाखाए है वे क्या तुमने सब देखी हैं। स्वामी दयानन्द ने कहा कि सब शाखाओ की संहिता एक ही है। स्वामी विशुद्धनन्द बोले अभी दयानन्द तुम कुछ और पढो। स्वामी दयानन्द ने कहा कि आप सब कुछ पढ़ चुके हैं स्वामी विशुद्धानन्द ने हसकर कहा कि हा सब पढ़ लिया है और बताओ दयानन्द तुमने व्याकरण भी पढा है। स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया हा गुरु चरणों बैठकर खूब व्याकरण पढ़ा है। गुरु विरजा नन्द जी से बढकर व्याकरण का ज्ञाता कोई धरती पर है ही नहीं और मुझे पता है कि काशी के पण्डित न वेद जानते हैं न व्याकरण। अगर आप ने व्याकरण पढा है तो बताइये कि व्याकरण में कल्म सज्ञा किसकी है। तिस पर स्वामी विशुद्धानन्द जी चुप हो गये क्योंकि उन्होंने व्याकरण के अनार्ष ग्रन्थ पढ रक्खे थे महाभाष्य आदि से अन्त तक पूरा काशी मे किसी पण्डित को नहीं आता था। तब प० बाल शास्त्री कहा कि एक सूत्र में सज्ञा तो नहीं है परन्तु महाभाष्यकार ने उपहास किया है। स्वामी दयानन्द ने कहा कि कौन से सूत्र के भाष्य में है उदाहरण पूर्वक समाधान कीजिये। इसका उत्तर बालशास्त्री न दे सके।

स्वामी दयानन्द समझते थे कि काशी के पण्डितों को महाभाष्य नहीं आता है। और कल्म संज्ञा केवल महाभाष्य में ही है किसी संस्कृत कोष मे भी कल्म शब्द नहीं है। महाभाष्य में आता है कि—

"विपरीतं तु यत्कर्म तत् कल्म कवयो विदु"

महाभाष्य १।४।५१॥

यह इनका पढ़ा नहीं था अतः व्याकरण मे भी सब पण्डित पराजित हुए और आगे व्याकरण की चर्चा किसी ने नहीं की।

तब माधवाचार्य ने निम्नलिखित प्रमाण बोला—

ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि

इस पर स्वामी दयानन्द ने कहा कि महापुराण शब्द विशेषण है किसी पुस्तक का नाम नहीं है। तब माधवाचार्य ने कुछ पन्ने हाथ मे लेकर सुनाया कि–

यज्ञसमाप्तौ सत्यां दशमे दिवसे पुराणानां पाठंशृणुयात्।

ऐसा सुनाकर माधवाचार्य कहने लगे यह वेदवाक्य है। स्वामी जी ने वे पन्ने हाथ में लिये जो पढ़े नहीं जा सकते थे। उन दिनों बिजली नहीं थी लालटेन से काम लिया जाता था। रात के ७ बज चुके थे और लालटेन भी धीमी जल रही थी। स्वामी दयानन्द उस पन्ने को देख ही रहे थे कि पण्डितों ने हुल्लड मचा दिया कि स्वामी दयानन्द हार गये और गुण्डे जो पहले से ही तैयार होकर आये थे स्वामी दयानन्द पर ईंटें बरसाने लगे तब कोतवाल साहब ने दरामदा बन्द करके स्वामी जी की रक्षा की।

पण्डितों ने दूसरे दिन एक विज्ञापन छापा कि स्वामी दयानन्द हार गये। स्वामी जी ने भी एक विज्ञापन छापा जिसमें इस असत्य का खण्डन किया और बताया कि काशी के पण्डित वेद नहीं जानते और न कोई मन्त्र मूर्तिपूजा के पक्ष में दिखा सके। इधर उधर के पन्ने लेकर आ गये और उनको वेद कहने लगे। इन काशी के पण्डितों को यह भी पता नहीं कि वेद किसे कहते हैं,हर संस्कृत वाक्य बोलकर वेद कह देते हैं ऋषि ने कहा कि मैं कई दिन लगातार शास्त्रार्थ करने को तैयार हू। यदि कोई वेद मे मूर्तिपूजा दिखा सके। वस्तु स्थिति यह थी कि शास्त्रार्थ में काशी के पण्डित स्वामी दयानन्द के पाण्डित्य को समझ गये और किसी का साहस दुबारा शास्त्रार्थ करने का न हुआ।

## शास्त्रार्थ का परिणाम

काशी नरेश ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को राजगृह में ले जाकर स्वर्ण सिंहासन पर बैठाया और स्वय रजत सिंहासन पर बैठकर क्षमा प्रार्थना की। काशी नरेश ने स्वामी दयानन्द के गले में स्वय अपने हाथों से फूलों की माला पहनाई तथा चरणवन्दना की और अति विनीत भाव से कहा कि मैं बहुत दिनों में मूर्तिपूजा करता आता हूं उसके प्रति मेरा अनुराग और श्रद्धा है। इसलिये आप के उसका प्रतिवाद करने पर मुझे कष्ट हुआ। शास्त्रार्थ के समय यदि आप मेरे किसी आचार से क्षुब्ध हुए हों तो आप मुझे क्षमा करें। इस पर द्रवित होकर महर्षि ने महाराज को क्षमा प्रदान किया।

## समाचार पत्रों की संमतियां

"कुछ समय हुआ कि महाराज रामनगर काशी नरेश ने एक सभा की जिसमें उन्होंने बनारस के चुने हुए और बड़े बड़े विद्वान् पण्डितों को बुलाया। दयानन्द सरस्वती और पण्डितों में बड़ा भारी और लम्बा शास्त्रार्थ हुआ। परन्तु काशी के पण्डितों का जिन्हें अपनी शास्त्रज्ञता का बड़ा गर्व था पूर्ण पराजय हुआ। पण्डितों ने जब जान लिया कि नियम बद्ध शास्त्रार्थ में ऐसे महान् व्यक्ति से पार आना असंभव है तो अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये पापमय उपायों के अवलम्बन पर उतारू हो गये। पण्डितों ने दयानन्द सरस्वती को पुराणों का एक पन्ना दिया जिससे मूर्ति का विषय अङ्कित था और कहा कि ये वेदों के मन्त्र हैं जब वह इन पन्नों को देख रहे थे तब पण्डित मण्डली ने महाराज काशी नरेश के नेतृत्व में यह प्रकट करते हुए कि धार्मिक शास्त्रार्थ में वह पंडितवर्य दयानन्द पराजित हो गया तालियां बजा दीं।"

(हिन्दुपेट्रियट १७जनवरी १८७०)

"शास्त्रार्थ कुछ देर तक उत्तेजना के साथ चलता रहा उसमें यद्यपि किसी पक्षको कोई सफलता नहीं हुई तथापि काशी के पण्डितों की हानि हुई। फिर माधवाचार्य कुछ हस्तलिखित पन्ने यह कहकर कि ये वेद के पन्ने हैं सन्यासी दयानन्द के हाथ में दे दिये। स्वामी दयानन्द इसको देख ही रहे थे इतने में पडितों ने तालियां बजा दीं। नागरिकों ने इसको दुर्व्यवहार समझा।"

(पायोनियर काशी २० नवम्बर १८६९)

"दयानन्द एक साधु हैं जिन्होंने सत्यधर्म के प्रकाश से असत्य को दूर करने का बीड़ा उठाया है। दयानन्द ढीठ है परन्तु किसी विद्वान् को भी उसे पराजित करना संभव नहीं है। कर्ण को छै योद्धाओं ने गिराया था इस न्याय से दयानन्द का बल नष्ट कर देने पर भी और उसे हरा देने मात्र से विचार समाप्त नहीं हुआ। मैंने सब पडितों को आज्ञा दी है कि आपस में मिलकर खन्डन मडन और मण्डन खण्डात्मक ग्रन्थ बनाओ।

(सत्यव्रत सामश्रमी प्रत्नकम्र नन्दिनी मासिक पत्रिका दिसम्बर १८६९)

"स्वयं दयानन्द नें काशी सें आकर घोषणा की कि मूर्तिपूजा वेदों में नहीं है इस पर बड़ा भारी शास्त्रार्थ काशी नरेश नें काशी तथा अन्य स्थानों से पण्डितों को बुलाकर कराया पर कोई भी पण्डित वेदों में मूर्तिपूजा न दिखा सका।"

(तत्त्वबोधिनी कलकत्ता आश्विन)
१७९१ शालिशकाब्द )

"दयानन्द सरस्वती ने बनारस के पण्डितों पर विजय प्राप्त की"

(रोहिल खण्ड अखबार नवम्बर १८६९)

"काशी नरेश के राजपंडित पं० ताराचरण तर्क रत्न से दयानन्द सरस्वती ने पूछा कि मूर्ति पूजा वेद में दिखाओ पर पं० ताराचरण तर्क रत्न शारीरिक सूत्र आदि के प्रमाण देते रहे। वेद का प्रमाण कोई न दे सका और काशी के पण्डित अप्रासंगिक इधर उधर की बातों में टालते रहे।

[क्रिश्चियन लोगों की संमति]

## काशी नरेश के राज पण्डित पं० ताराचरण के तर्करत्न पर स्वामी दयानन्द के पाण्डित्य और सत्यता का प्रभाव

काशी नरेश के राज पण्डित पं० ताराचरण तर्करत्न ने बङ्गाली सज्जन बा चन्द्रशेखर से स्पष्ट कह दिया कि मैं भलीभांति जानता हूं कि यह पौराणिक प्रपञ्च ठीक नहीं है। दयानन्द जो कहते हैं वही ठीक है। परन्तु कौन जानता है कि राजा के मन में हमारी ओर से क्या भाव उत्पन्न हो जाय यदि हम दयानन्द के पक्ष की सत्यता स्वीकार करलें। इसलिये राजा की प्रसन्नता के लिये सब कुछ करना पड़ता है और यही कहना पड़ता है मै दयानन्द को शास्त्रार्थ में हरा दूंगा। —काशी शास्त्रार्थ शताब्दी आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

## निर्वाचन

—आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम।

प्रधान—श्री मिहिरचन्द जी धीमान, कार्यकर्ता प्रधान—श्री राजेन्द्रसिंह जी मल्लीक, उपप्रधान श्री जङ्गीलाल जी आर्य व श्री प्रभाचन्द्र जी चाल, तथा श्री देशराज जी चौधरी, मन्त्री—श्री बटकृष्ण बर्मन, संयुक्त मन्त्री—श्री गजानन्द जी आर्य, उप मन्त्री—श्री मोहनलाल अग्रवाल व श्यामल कुमार मण्डल। प्रचार मन्त्री—श्री जगदीशप्रसाद शुक्ल, तथा द्विजेन्द्रनाथ देव बर्म्मन, कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रवली गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—सत्यनारायण जी शर्मा।

(पृष्ठ ५ का शेष)

में होगी और धरती पर प्रान्तीय सभाएं रह जावेंगी। इस विचार से सहमत व्यक्तियों ने अपना अलग निर्वाचन कर लिया और जो इन १५ प्रतिनिधियों के पक्ष में हृदय से तो थे नहीं पर किसी लिहाज या कारण विशेष से बैठे रह गये उन्होंने अपना निर्वाचन कर लिया। इस प्रकार इन १५ प्रतिनिधियों के कारण सार्वदेशिक सभा के दो निर्वाचन हो गये। यह सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा का दूसरा परिणाम है। पहला परिणाम वह था जब सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रधान की बनाई पंजाब सभा गुरुकुल कांगड़ी में मीटिंग करने गई थी और वहां के भयंकर उपद्रव में हजारों रुपयों का सर्वनाश और मार पीट हुई।

उत्तरप्रदेश ने आदर्श उपस्थित करते हुये यह बताया कि यदि इस प्रकार सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा का प्रधान प्रान्तीय सभाओं का निर्माण करावेगा और उस अकाश स्थित प्रान्तीय सभा से प्रतिनिधि चुनकर सार्वदेशिक का निर्वाचन कराया जावेगा तो कोई प्रान्त सुरक्षित नहीं रहेगा। यह अनर्थ परम्परा पड़ जावेगी।

१—बंगाल के श्री मिहिरचन्द धीमान ही डा० दुःखनराम जी के समर्थक थे।

२—बम्बई के प्रतिनिधि समझते थे कि हमारे प्रताप भाई की व्यवस्था है।

३—राजस्थान के प्रतिनिधियों का कारण ऐसा है जिसके बारे में कुछ न लिखने की हमने सदा से प्रतिज्ञा कर रखी है, अतः जबान बन्द है, पर राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण ने स्वय मुझ से कहा था कि ये १५ प्रतिनिधि नहीं बैठने चाहिये वे इससे सहमत नहीं थे।

५—मध्य प्रदेश मध्य भारत के एक दो व्यक्ति होते हैं उनकी गणना ही किसमें है अतः वे भी इन १५ प्रतिनिधियों को गलत समझते हुए भी चुप बैठे रहे।

६—उत्तर प्रदेश के कुछ लोग उनमें मिल गए, उनकी जीविका का प्रश्न था।

७—आजीवन सदस्य भी बट गये। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा में दो दल हो गये, और दोनों ने अपना अपना पृथक निर्वाचन किया।

## (१५ प्रतिनिधियों की ३१ मई १९६९ तक स्थिति)

जिस समय अम्बाला के ये १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में भाग लेने आये उस समय ३१ मई १९६९ तक इस अम्बाला निर्मित पंजाब सभा के हाथ में न गुरुकुल कांगड़ी था और न पंजाब के आर्य कालिज और न इस पंजाब सभा के कब्जे मे जालन्धर का आफिस और न देहली का उप कार्यालय। जब यह पंजाब सभा लब्धाधिकार सर्वत्र हो जावे तब इनके प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक के निर्वाचन में सम्मिलित करना चाहिए। हमारा इनसे कोई विरोध नहीं। पिछली पंजाब सभा से कोई रिश्तेदारी उत्तर प्रदेश की नहीं है। यही मैंने सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में कहा कि यदि सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रधान ने पंजाब सभा बना दी तो हम उसको सहयोग दें पर जब तक वह प्रतिष्ठित न हो जावे तब तक प्रतिनिधि लेने का उतावलापन नहीं करना चाहिए।

अतः अब आगे सार्वदेशिक में आनेवाला कोई दल इस प्रकार की हरकत करेगा कि न्याय सभा के प्रधान द्वारा बनाई प्रान्तीय सभा जो केवल कागजों में कोर्ट में होगी उसके प्रतिनिधि लेकर सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन करने बैठेगा और इस अम्बाला के उदाहरण को प्रस्तुत करके रूलिंग देगा तो उसी समय विधानवादी आगे आनेवाले व्यक्ति उसका परिणाम भी बता सकेगा। अतः उत्तर प्रदेश अनर्थ परम्परा को जन्म देने से आर्य संगठन को बचा लिया।

★

—१६ से १८ जून तक कोदो चक जिला वाराणसी में सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक काशी निवासी श्री विन्ध्येश्वरीसिंह का उपदेश तथा व्याख्यान हुआ। जनता उनके भजनों एवं उपदेशों से काफी प्रभावित रही। आर्य समाज स्थापित हो गया।

—बलिरामसिंह मन्त्री

—गुरुकुल चित्तौड़गढ़ ग्रीष्मावकाश के पश्चात् अब १ जुलाई को खुल गया है। नवीन छात्रो का प्रवेश १५ जुलाई तक होगा। इच्छुक जन प्रवेश के लिये आवेदन पत्र गुरुकुल से प्राप्त कर सकते हैं। —इन्द्रदेवसिंह विद्याभूषण मुख्याधिष्ठाता

—आर्यसमाज नया नंगल (पंजाब)।

प्रधान—श्री प्रकाश चावला
उपप्रधान—श्री कृष्णलाल जी
,, श्री पुरुषोत्तमदास मिश्रा
मन्त्री—श्री रतनलाल जारी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सत्यपाल शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री देशराज वडेरा

—मन्त्री

## आर्यसमाज की स्थापना

—दिनांक ४-७-६९ ई० को पुरनिया ग्राम में श्री शंकरदयाल श्रीवास्तव अवैतनिक उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अध्यक्षता में एक नई आर्यसमाज की स्थापना हुई। जिसका नाम आ समाज पुरनिया त० जि० लखनऊ रखा गया। श्री रणधीरसिंह एडवोकेट प्रधान, श्री रघुराजसिंह उपप्रधान श्री प्रतापसिंह मन्त्री, श्री रामऔतार उप मन्त्री, श्रीमती विमलकुमारी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये। —प्रतापसिंह मन्त्री

## वेद प्रचार सप्ताह २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक मनायें

उत्तर-प्रदेश के समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्णा अष्टमी अर्थात् दिनाक २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

प्रत्येक आर्य समाज को चाहिए कि इस सप्ताह को उत्साह पूर्वक मनाने का अभी से रचनात्मक कार्यक्रम बनाने की कृपा करें। कार्य क्रम आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जावेगा।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

# सूक्ष्म से विराट और विराट से मैं

( श्री हरिश्चन्द्र वर्मा, वैदिक, मुरारई, जि. वीरभूमि, प. बङ्गाल )

प्रकृति में सत्, रज और तम तीन प्रकार के गुण विद्यमान हैं। प्रकृति अव्यक्त अवस्था में इन्हीं त्रिगुण एवं साम्य अवस्था में रहती है। जब सृष्टि की आदि रचना प्रारम्भ होती हैं तो–प्रकृतेर्महान्–के नियमानुसार इन त्रिगुणों की साम्यावस्था में महत् अर्थात् आकार लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, घनत्व सार्वप्राथमिक सूक्ष्म स्थिति का निर्माण होता है। वर्त्तमान परिभाषा में वह परमाणु स्थिति है।

इस महत् अर्थात् परमाणविक स्थिति के उपरान्त तुरन्त ही उनमें अहंकार की स्थिति प्रकट होती है। अहंकार की परमाणुओं में शक्ति प्रकट होते ही सत्, रज और तम गुणों का भी स्वरूप वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात् पच तन्मात्राओं का सङ्गठन प्राप्त होता है। परमाणुओं में पच तन्मात्राओं की स्थिति उत्पन्न होने से सृष्टि के विविध तत्वों का सूक्ष्म सगठन प्रारम्भ हो जाता है और तत्वों के सगठन के साथ उनके मिश्रण-पदार्थों का निर्माण सृष्टि की व्यक्त अवस्था में दृष्टि-गोचर होने लगता है।

सृष्टि की प्रलयात्मक अवस्था प्रकृति है। यही अव्यक्त स्थिति है। सृष्टि इसकी व्यक्त स्थिति है। इसको विकृति अवस्था भी कहते है। विकृति अर्थात् विविध रूप मे आकृति, स्वरूप, निर्मित आदि। सृष्टि की सबसे सूक्ष्म अवस्था ही प्रकृति है। उससे सूक्ष्म अवस्था सृष्टि की नहीं होती है–अतः इस अवस्था को मूलावस्था या मूल प्रकृति भी कहते हैं।

जब हम सृष्टि का अध्ययन करते हुए इस सूक्ष्म अवस्था, मूल प्रकृति तक पहुच जाते हैं तो सूक्ष्म से स्थूल तक, अव्यक्त से व्यक्त तक की स्थिति मे एक विराट् गति, जीवन एवम् सुसगत व्यवहार स्वभाव रूप से कार्य करता हुआ दृष्टिगोचर होता है और उसके सचालक का ज्ञान होने लगता है। इस प्रकार सूक्ष्म से विराट् की ओर ज्ञान का एक क्षेत्र विकसित होने लगता है। गीता में "अव्यक्तात्पुरुषः परः"—कहकर प्रकृति से परे के तत्व का जो संकेत किया है, वही विराट्–परम पुरुष, परमात्मा है।

सूक्ष्म अर्थात् प्रकृति से लेकर विराट् तक का ज्ञान कौन प्राप्त करता है या किसको प्राप्त करना है? प्रकृति तो स्वयं जड़ है। उसको स्वयं का ज्ञान नहीं होता है। इजन को अपने स्वयं के किसी भी अस्तित्व का, किसी भी कल पुर्जे का ज्ञान नहीं है और न उसे उसकी शक्ति का ज्ञान है। शरीर को और उसके अंगों को भी अपना कुछ भी ज्ञान नहीं।

विराट् अर्थात् परमात्मा को भी प्रकृति एव स्वयं के ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता नहीं। वह तो सर्वज्ञ एक रसज्ञाता है ही। जीवात्मा को ही अपने समस्त व्यवहार के लिये सृष्टि और विराट् परब्रह्म के ज्ञान की आवश्यकता होती है। अत सूक्ष्म से विराट् से और'मैं'की परिधि का ज्ञान-चक्र 'मै' अर्थात् जीवात्मा में क्रमशः विभिन्न प्रकार से चलता रहता है।

त्रिगुणात्मक प्रकृति की परमाण्विक स्थिति के विकसित होने पर सत्-गुण से ताप का, रज-गुण से गति, तरग, वेग का और तम-गुण से अवरोधक शक्ति का भी विकास हो जाता है तथा उत्तरोत्तर सृष्टि की स्थूलता में, उनके गुणों में भी घनत्व एव विरलत्व-तत्वों, पदार्थों या पिण्डों के आश्रय या माध्यम से प्रकट होने लगता है। इस विकास मूल में ताप ही कारण है। ताप सयोग से होगा और ताप से संयोग और वियोग भी होगा। अतः त्रिगुणात्मक संयोग या ताप सृष्टि की मूल प्रवर्तक शक्ति है।

दार्शनिकों ने एवम् ऋषियों ने जिसे प्रकृति कहा, पाश्चात्य भौतिकवादियों ने उसे "मैटर" के नाम से सम्बोधित किया। वैज्ञानिकों ने उसके मौलिक अणुओं को प्रोटोन, इलेक्ट्रोन और न्यूट्रोन इन त्रिगुणों से विशिष्ट घोषित किया जो वास्तव में सत्, रज और तम ही हैं। वेद की परिभाषा में ये सत्य, ऋत और रात्रि (तम) है। इनकी क्रियाशीलता, परमात्मा के तीव्र ताप-तप से ही उत्पन्न होती है। अतः वैदिक ऋषि मुनि एवम् वैदिक दर्शनवाद तो प्रकृति से परे एक विराट् शक्ति की ओर अग्रसर होने लगता है, परन्तु जो भौतिक वादी है, वे विराट् [परमात्मा] के अस्तित्व को नहीं मानते हैं।

उन भौतिकवादियों से प्रश्न होता है कि जब त्रिगुणात्मक ताप का सयोग ही सृष्टि का मूल शक्ति केन्द्र है तो उस प्रथम सयोग या ताप को उत्पन्न करनेवाला भी तो कोई होना चाहिये? 'उस प्रथम ताप में उन प्रथम प्रत्येक परमाणुओं को तापित करने की शक्ति और उनमें फेंकने, गिराने, सिकोड़ने, फैलाने की विविध प्रकार की गति करने की विधि कहा से प्राप्त हुई जिस समय कि सूर्य आदि पिण्ड अस्तित्वहीन ही थे। अर्थात् प्रकृति में प्रारंभिक ताप प्रकृति से ही स्वय उत्पन्न है या उस ताप का भी जनक या प्रेरक कोई तत्व है?

वर्तमान् भौतिक विज्ञान भी 'ताप' से ही सारी सृष्टि की उत्पत्ति मानता है, परन्तु उसका कहना है कि ताप का कर्त्ता कोई नहीं। प्रकृति में ताप और ताप में गति का होना स्वाभाविक है और इसी ताप तत्वों के गुणात्मक परिवर्तन तथा परस्पर परमाणुओ के सयोग वियोग से ही समस्त ब्रह्माण्ड की रचना हुई है। किन्तु बहुत से साइन्सवेत्ता आज उतने नास्तिक नहीं है जितने कि पहले थे। इसका मुख्य कारण यही है कि जड़ परमाणुओं मे ताप और गति क्यो उत्पन्न हुए? तथा निष्क्रम प्रकृति में ताप आदि का विधि-विधान किस प्रकार और कहां से उन्हें प्राप्त हुआ और होता है? प्रकृति मे इन विचित्र घटनाओ को देखकर भौतिक विज्ञान के बहुत से आचार्य अब यह समझ गये हैं कि प्रकृति पराधीन है। यदि प्रकृति परस्पर एक दूसरे के पराधीन नहीं रहती तो बिना किसी तर्क ही "कर्त्ता" का न होना स्वीकार कर लिया जाता, किन्तु मेरा प्रारम्भिक प्रश्न यह है कि प्रकृति में फेंकने और फैलाने आदि की क्रियाएँ कहां से उत्पन्न हुई? जब कि प्रकृति के सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ जड़ हैं।

इसी प्रकार समस्त प्राणिओ के बारे में भी ज्ञातृत्व, कर्त्तव्य और भोक्तृत्व,का गुणजानने योग्य है। प्राणियों का पञ्चतत्वों के अन्नमय परमाणुओं से बना हुआ जो यह स्थूल शरीर है यह भी जड़ है, इसमे भी प्रकृति के तीन प्रकार के शरीर विद्यमान हैं–एक कारण शरीर और दूसरा सूक्ष्म शरीर और तीसरा स्थूल शरीर। यह स्थूल शरीर दो प्रकार का है, एक वह जो अणुयन्त्रों से भी दिखलाई नहीं पड़ता दूसरा वह जो सबको दृष्टिगोचर होता है।

तात्पर्य यह कि–प्राणियों के ये तीनो शरीर निष्क्रिय हैं, फिर सक्रिय अवस्था मे कारण शरीर के द्वारा सूक्ष्म शरीर को और सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर को कौन प्रेरित करता है? और कारण मे ज्ञातृत्व, सूक्ष्म में कर्तृत्व और स्थूल में भोक्तृत्व का गुण क्रिया स्वभाव तथा इनमें भी फेंकने, गिराने सिकोड़ने, फैलाने तथा गमन आदि क्रियायें कहां से उत्पन्न हुई और होती हैं? जब कि सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ निरे जड़ ही हैं।

देखना यह है कि जब सभी जड़ है, तब उनमें जीवन का सचार कहां से उत्पन्न हुआ? और वह कौन-सी ऐसी अद्भुत (ज्ञानरूप) शक्ति है जो समस्त ब्रह्माण्ड को यथा योग्य बुद्धिपूर्वक निर्माण कर रही है–इसके बारे में कुछ दूर तक अनुभव करने के पश्चात् विदित होगा कि जो सत् रज और तम के परमाणु हैं उनमें विभिन्न प्रकार की शक्तिओ का समावेश किसी 'विराट' के प्रभाव से ही उद्भव हो रहा है, तभी प्रकृति के परमाणु-समस्त ब्रह्माण्ड को रचने मे समर्थ होते हैं।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल -६०
आषाढ २२ शक १८९१ अधिक आषाढ कृ १४
[ दिनाङ्क १३ जुलाई सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L 60
पता-'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य २२९९३ तार । "आर्य्यमित्र"

अब दूसरा और अन्तिम प्रश्न यह है कि 'मैं' कौन हू ? 'मैं' ईश्वर नहीं और न मैं प्रकृति का मिश्रित पदार्थ हू। मैं तो एक अपरिवर्तनीय इस शरीर का आत्मा हू। मै प्रकृति के परमाणुओ से भिन्न ईश्वर से स्थूल और प्रकृति से सूक्ष्म हू, इसलिये इन [ एटम् ] से करोड़ों गुना छोटा और उनसे परमाणुओं से करड़ो गुना शक्तिशाली हू । मेरा परिचय वहीं होता है जहां ज्ञातृत्व कर्तृत्व और भोक्तृत्व का गुण प्रकट होता है ।

मैं इस स्थूल शरीर को रचने की सामग्री अपने साथ नहीं रखता किन्तु जब स्थूल शरीर को रचने वाली सम्पूर्ण सामग्री हमारे सामने आती है तभी मैं अपने कारण और सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर का निर्माण करता हू । फिर भी स्थूल शरीर उत्पन्न होना तभी सभव होता है जब पच तत्वो के द्वारा अन्नमय की उत्पत्ति हो जाती हैं क्योकि स्थूल शरीर का एक खास महत्त्व है । वह महत्त्व यही है कि कोई भी 'एक' बिना 'दो' के 'तीन' नहीं बन सकता, इसी प्रकार बिना तीन के चार पाच आदि का निर्माण भी नहीं हो सकते । जिस प्रकार प्रकृति के असख्य परमाणु बिना किसी वैज्ञानिक प्रेरणा के स्वय कुछ नहीं कर सकते उसी प्रकार 'मैं' अथवा ईश्वर बिना [ उपादन कारण ] सामग्री के सृष्टि की रचना नहीं कर सकते । इसमे केवल [सर्वशक्तिमान्] ईश्वर का ही महत्व है। क्योकि मै भी उसी के द्वारा उसी को जानता हु। इस लिये मैं अल्पज्ञ केवल इस शरीर का ही आत्मा हू परन्तु वह सर्वज्ञ समस्त आत्माओ का आत्मा है । ★

[पहले पृष्ठ का शेष]

का पालन करता है । जब वह प्रलय का विधान करता है, तब भी जीवात्माओ के कल्याण और मंगल-विधान के लिये ही उसकी प्रवर्त्तनाओ का आरम्भ होता है। उस ईश्वर ने अपने लिये इस ससार की रचना नहीं की है। "उसने बन्दे को अपनी बन्दगी के लिये नहीं रचा है ।" सृष्टि की रचना में भगवान् का कोई अपना स्वार्थ नहीं है ।

जो उस दयालु ब्रह्म को और उसके गुण कर्म एव स्वभाव को यथावत् रूप मे नहीं जानते, वे लोग ही मृत्यु के भय से भयभीत रहते हैं। जो उसे जान लेते हैं वे तो किसी से भी नहीं डरते। मृत्यु का भय तो उन्हे भयभीत कर ही नहीं सकता ।

जिस मरने से जग डरे,
मेरे मन आनन्द ।
मरने से ही पाइये,
पूर्ण, परमानन्द ॥

प्रभु के प्यारे तो आगे बढ़कर मृत्यु का आलिंगन करते हैं और साफ कहते हैं-

मौत यह मेरी नहीं,
मेरी कजा की मौत है।
क्यो डरूँ ? जब मरके,
दोबारा नहीं मरना मुझे॥

मौत, मानव-जीवन की एक अवश्यम्भावी घटना है । जो उत्पन्न होता है, वह मरता भी अवश्य ही है। ससार मे जो सबसे अधिक ज्ञात और सुनिश्चित तथ्य है, वह मौत ही है। हां, एक बात अत्यन्त अनिश्चित है, और, वह मृत्यु का समय। मौत की घटना अवश्य ही घटित होगी, परन्तु किस की मौत कब होगी ? यह कोई नहीं जानता ।

आगाह अपनी मौत से,
कोई बशर नहीं ।
सामान सौ बरस का,
कल की खबर नहीं ।

काम की बात बस यही है कि मनुष्य मौत का स्वागत करने के लिये सदैव तैयार रहे ।

दो बाते भूले नहीं,
जो चाहे कल्याण ।
नारायण इक मौत को,
दूजे श्री भगवान् ॥

आर्यों ने मौत के विषय में गहरा विचार किया है। आर्यों के मत में मौत एक ऐसा ही परिवर्त्तन है, जैसे कि बचपन से जवानी और जवानी से बुढापे का आगमन। अथवा ऐसा ही है, जैसे पुराने कपडे उतार कर, नये कपड़े पहिन लेना। आर्यो ने मृत्यु को विशेष भय या चिन्ता का कारण समझा ही नहीं है। फिर भी ज कर्त्तव्यो-पालन से हीन तथा पाप-परायण लोग हैं, उनका मृत्यु से डरना तो सच्चा ही है। उनके लिये तो मौत की घटना महा भयानक है।

लोक में लोगों ने अनेक प्रकार के विचार-मार्ग अपने-अपने स्वार्थ की दृष्टि से बना रखे हैं और चतुर व्यापारियो के समान अपने-अपने मार्ग का सरक्षण और विज्ञापन भी वे करते ही रहते हैं। यह जो एक दूसरे को अनुचित बढावा देने की प्रवृत्ति अपना रखी है। इसका मुख्य कारण धर्म के नाम पर स्वार्थ साधने वाले लोग ही हैं। कैसी विडम्बना है ? उष्ट्राणा विवाहेषु गीत गयन्ति गर्दभा ।

ऊटो के विवाह, गधो के गीत अथवा गा रहे हैं ऊट, उनकी दाद देते है गधे।

व कहते हैं-"सभी मार्ग अच्छे हैं ।" उनके कथन से किसी को कोई सांसारिक लाभ हो, तो हो। उनका कथन अध्यात्मवादियो के लिये तो भारी भ्रामक और घोर अनिष्टकारक है। आनन्द की प्राप्ति अर्थात् आनन्द की प्राप्ति और मोक्ष की सिद्धि का तो एक ही उपाय है, और वह है ईश्वर बोध, और ब्रह्म-बोध, परमात्म-बोध ॥ कुछ लोग कहते हैं- ईश्वर बोध को ही एकमात्र उपाय न कहो । एक ही उपाय पर बल न दो। वे यह भी कहते हैं कि एक ही उपाय पर बल देने से कुछ लोगों का दिल दुख जायेगा। हम उनसे सहमत नहीं हैं। मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का उपाय एक ही है- ईश्वर-बोध । और आत्म बोध ? यह तो परमात्म-बोध के मार्ग का एक पड़ाव स्टेशन ही है।

सफलता प्राप्ति के लिये उपासना-धर्म का अनुष्ठान करने से पूर्व उपासक को उचित ही है कि वह ईश्वर की सत्ता और उसके स्वरूप को भली प्रकार समझ ले। उपासना क्या है ? स्तुति, प्रार्थना और उपासना के द्वारा ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव को, जीवात्मा के धारण करने की प्रक्रिया का नाम ही उपासना है। स्तुति के द्वारा भक्त के प्रभु-प्रेम मे वृद्धि होती है। प्रार्थना के द्वारा भक्त के हृदय मे नम्रता और स्निग्धता की वृद्धि होती है। उपासना के द्वारा ईश्वर की सर्वोपरि, सर्व गुणमयी और सर्वरसमयी सत्ता का प्रत्यक्ष अनुभव वा साक्षात्कार प्राप्त होता है और भक्त सब प्रकार के दुख जाल से छूटकर ईश्वरीय आनन्द में मग्न होता जाता है। यदि उपासक को ईश्वर के विषय मे सम्यक् ज्ञान न होगा, तब तो उसे उपासना-धर्म की सिद्धियां भी न मिलेंगी। पूर्ण सफलता को प्राप्त करना है तो उस पूर्ण ब्रह्म को मानो और जानो।

ज्यों तिल माहि तेल है,
ज्यों चकमक मे आग ।
त्यों प्रियतम तुझ में बसे,
जाग सके तो जाग ॥

-जगत्कुमार शास्त्री
साधु सोमतीर्थ,

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उ प्र. के लिए एम०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित।

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

'वयं जयेम' ] लखनऊ–रविवार श्रावण ५ शक १८९१, शुद्ध आषाढ़ शु० १३ वि० सं० २०२६, दि० २७ जुलाई १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# भगवान् का ज्ञान तारक

ओ३म् अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः।
अर्थं ह्यस्य तरणि ॥ ऋ० ३-११-३

(अग्नि) सबको उन्नति करने वाला (स) वह भगवान् (धिया) ध्यान से (चेतति) चिताया जाता है। वह (यज्ञस्य) संसार यज्ञ का (पूर्व्यः) पूर्व से विद्यमान (केतुः) है, (अस्य) इसकी (अर्थम्) प्राप्ति ज्ञान (हि) सचमुच (तरणि) तारक है।

लोग पूछते हैं कि भगवान् कैसा है, हम पूछते हैं कि मिठास क्या है? समझा-समझाकर संसार हार गया, मिठास का सार न बता सका। अन्त में थककर कहा, ये लो, यह मिठास वाला पदार्थ है। इसे खाओ, जो स्वाद लगे, वह मिठास है। भौतिक मिठास को भौतिक वाणी न कह सकी और न कभी कह सकेगी। तुम भौतिक ब्रह्म की बात पूछते हो, उसे भौतिक वाणी, जो भौतिक पदार्थों के वर्णन में असमर्थ है। सिद्ध हो चुकी है। कैसे बखान करें? वाणी का व्यापार बन्द करो। वह वाणी गेय नहीं है।

## अग्निर्धिया स चेतति

वह अगुआ भगवान् ध्यान से चिताया जाता है, ध्यान क्या है। ध्यानं निर्विषयं मनः

मन की वह दशा, जब उसके आंख, नाक आदि इन्द्रियों से प्रतीत होने वाले विषय हो हीन, वह ध्यान है।

आंख, नाक, कान आदि इन्द्रियां वह मूंद दो, इनका व्यवहार रोक दो। मन को भी खाली कर कर दो, तब उस हृदय गुहा में रहने वाले अघूम अग्नि के दर्शन होंगे।

मन का खाली करना कठिन है, इसे खाली किये बिना उसका चिताना कठिन है। संसार और भगवान् का एक साथ ध्यान नहीं किया जा सकता। मन निर्बल है, दुर्बल है, उसमें एक साथ दोनों को धारण करने का सामर्थ्य नहीं है। आपकी इच्छा है, उससे भगवान् का ध्यान करो, आपकी इच्छा है, उससे संसार का व्यवहार-व्यापार कराओ। वह एक समय में एक ही काम करेगा।

ज्ञानी जन उसी का ध्यान करते हैं, क्योंकि उन्हें निश्चय है कि अर्थ ह्यस्य तरणि इसकी प्राप्ति तारक है। यम ने इसी भाव को लेकर कहा था—य सेतुरीजानानामक्षर ब्रह्म यत्परम। अभय तितीर्षता पार नचिकेत ँ शके महि [कठो० ३-२]

जो ब्रह्म यज्ञ करने वालो के लिये पुल है, जो अविनाशी ब्रह्म सबसे उत्कृष्ट है, संसार सागर को पार करने के अभिलाषियो के लिये जो भय रहित पार करने का साधन है, उस नचिकेता–सर्व संशय नाशक ब्रह्मज्ञान को हम सम्पादन कर सकें।

इसी कारण औपनिषद ऋषि उस ब्रह्म को जानने पर अधिक बल देते हैं। मुण्डक ऋषि ने कह ही तो दिया—

तमेवैकं जानथ आत्मानं अन्या वाचो विमुंचथ।
अमृतस्यैष सेतु.॥ (मुण्डक २-२-५)

उसी एक परमात्मा को जानो, अन्य सब बातें छोड़ दो, क्योंकि वही अमृत का सेतु है। आओ उसका ध्यान लगाओ, और इस भवसागर से पार हो जाओ।

| वर्ष | अंक |
| --- | --- |
| ७१ | २७ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति १५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम. ए.

इस अंक में पढ़िए !

## ार्वदेशिक सभा के पुराने अधिकारियो द्वारा गत निर्वाचन में की गई अनियमितताओ की कड़ी आलोचना—

# आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरंग सभा का महत्वपूर्ण निश्चय

लखनऊ—१३-७-६९, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा ने आज सार्वदेशिक सभा के ३१-५-६९ के निर्वाचन मे हुई अनियमितताओ के सम्बन्ध में कड़ी आलोचना करते हुये, सर्व सम्मति से निम्न निश्चय किया —

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की यह अन्तरग सभा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो द्वारा निर्वाचन मे की गयी अनियमितताओं पर हार्दिक खेद व्यक्त करती है। आर्य समाज के विवाद समाप्त करने के लिये हैदराबाद के वशम आर्य महा सम्मेलन मे पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को सम्पूर्ण अधिकार दिये गये थे। सर्व सम्मति से इसकी सम्पुष्टि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी की थी, परन्तु दुःख है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन अधिकारियों ने स्वामी जी महाराज के निर्णय की अवहेलना कर सभा के साधारण अधिवेशन में अपना कृत्रिम बहुमत बनाने के लिये तथा कथित पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के १५ प्रतिनिधियो को भी प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया। आर्य प्रादेशिक सभा के नियमानुसार आये प्रतिनिधि भी कृत्रिम बहुमत बनाये रखने के लिये स्वीकार नहीं किये। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के गुरुकुल वृन्दावन मे हुये साधारण अधिवेशन मे सर्वसम्मति से निर्वाचित प्रतिनिधि भी स्वीकार नहीं किये। वृहद् अधिवेशन के प्रारम्भ में सभा के तत्कालीन अधिकारियो एवं अधिवेशन के तत्कालीन अध्यक्ष से इन सब अनियमितताओं को ठीक करने का अनुरोध किया गया, परन्तु उन्होंने किसी की नहीं सुनी और इन सब अनियमितताओ को नियमित सिद्ध करने पर अड़े रहे। साधारण अधिवेशन के उस समय के अध्यक्ष महोदय से भी जब उस पर व्यवस्था दिला कर सदन को नियमित घोषित करने का निर्णय किया गया तब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० शिव कुमार जी शास्त्री ने अपनी सभा के अन्य सदस्यो के साथ साधारण अधिवेशन के बहिष्कार करने सम्बन्धी निश्चय की घोषणा की। उसके बाद ही उत्तर प्रदेश के सभा प्रधान के निश्चय का अनुसरण करते हुए बगाल, बिहार, बम्बई के बहुत से प्रतिनिधि और सार्वदेशिक और के अधिकांश आजीवन सदस्य वृहद्धिवेशन का बहिष्कार कर दिया, क्योकि बहिष्कार कर आने वाले सदस्यों का सदन मे बहुमत था इसीलिये उन्होंने विधिवत् सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन किया।

अन्तरङ्ग सभा की यह बैठक अपने प्रधान श्री शिवकुमार जी शास्त्री द्वारा उस समय लिये गये निर्णय का हार्दिक समर्थन करती है। उस वातावरण मे सिवाय इसके और कोई दूसरा इससे अच्छा विकल्प नहीं था। साथ ही प्रो० रामसिंह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा एवं श्री पं०महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश पूर्ण समर्थन और सहयोग का आश्वासन देती है। सभा को विश्वास है कि उनकी देख-रेख में आर्यसमाज विवादों से ऊपर उठ कर बराबर प्रगति करता रहेगा।

अन्तरङ्ग सभा का यह अधिवेशन आर्य समाजो से अनुरोध

[शेष पृष्ठ १६ पर]

## श्री मन्त्री जी का भ्रमण प्रोगाम

प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के सुयोग्य माननीय मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम. एल. ए. हाथरस निवासी ने सभा के लिये धन संग्रहार्थ एव समाजों का संगठन दृढ़ करने हेतु प्रान्त में भ्रमण करने का निश्चय किया है। श्री मन्त्रीजी महोदय जिस जिस समाज मे पहुचें, उनके अधिकारियो को चाहिये कि वे उनका भव्य स्वागत करें और सभा के लिये पुष्कल धन भेंट करने की कृपा करें।

—शिवकुमार शास्त्री ससत्सदस्य
सभा प्रधान

## अन्तरंग सभा का लखनऊ अधिवेशन

गत १३ जुलाई को आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा की बैठक श्री नारायणस्वामी भवन लखनऊ मे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् वक्ता श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री प्रधान सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अन्तरङ्ग मे कई महत्वपूर्ण निश्चय हुये। इसमे अनेक समाजों के अधिकारी जो अपने झगडो के सिलसिले मे पधारे थे। कुल सख्या ६० से ऊपर थी। इन सभी महानुभावो का भोजन व्यय का भार आर्यसमाज गणेशगज और सभा के नवीन कोषाध्यक्ष माननीय श्री बाबू मदनलाल जी ने उठाया था। प्रात: का जलपान श्री कोषाध्यक्ष जो ने अपने घर पर कराया था। और दोपहर का भोजन आर्यसमाज गणेशगज के अधिकारियो ने लखनऊ के सुप्रसिद्ध चौधरी स्वीट हाउस हजरतगज में कराया था। सभी लोगों को कारों में ले जाया गया था, और कारों से ही सभा भवन लाया था। शाम का जलपान श्री कोषाध्यक्ष जी ने सभा-भवन में ही कराया था और रात्रि का भोजन श्री कोषाध्यक्ष जी की ओर से हजरतगज में हो चौधरी स्वीट हाउस मे ही कराया गया था। सभा आर्यसमाज गणेशगज और श्री बा० मदनलाल जी कोषाध्यक्ष सभा को इस महत्वपूर्ण योग के लिये हार्दिक धन्यवाद देती है।

आशा है कि अन्य समाजें भी इसी प्रकार सदैव सभा को सहयोग देती रहेगी। —प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

## आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम. ए. वेदाचार्य की समस्त भारत में प्रचार यात्रा

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के प्रचारमन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी शास्त्रार्थ शताब्दी प्रचारार्थ समस्त भारत में यात्रा करेंगे। आशा है सब प्रान्तो के आर्यसमाजें उन्हे पूर्ण सहयोग देंगे। इस प्रसग मे आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सवो कथाओं और यज्ञादि मे भी आचार्यजी को निमन्त्रित कर सकते हैं, आचार्य जी से हमने प्रार्थना की है वे सर्वत्र आपके निमन्त्रण पर पहुचेंगे। निवेदक—

आचार्य जी का स्थायी पता—
गुरुकुल
११९ गौतम नगर
नई दिल्ली ४९

प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र.
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

लखनऊ-रविवार २७ जुलाई ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रस्ताव

आर्यमित्र के पाठक गत अङ्कों में आर्य जगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध मे आवश्यक समाचार और तथ्यो का परिचय प्राप्त करते रहे हैं, उसी प्रसङ्ग में हम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा १३ जुलाई ६९ का प्रस्ताव प्रकाशित कर रहे हैं। जिससे आर्य जगत् और विशेष कर उत्तर प्रदेश की आर्य समाजो में साप्ताहिक सार्वदेशिक देहली द्वारा जो भ्रान्ति फैलायी जा रही है, उसका निवारण हो सके।

इस प्रस्ताव से स्पष्ट है कि आर्य समाज को जिस सिण्डीकेट ने अपने पञ्जो में फाँस रक्खा है, उससे मुक्त कराने के लिये किस प्रकार सम्वैधानिक सघर्ष चल रहा है। आर्य जनता को सारी परिस्थिति का अध्ययन कर निर्णय करना होगा कि वास्तविकता क्या है और उसका अब क्या कर्त्तव्य है। अब जब क्रान्ति का शखनाद बज ही गया है तब कदम पीछे नहीं हटेंगे। आर्य समाज ससार से अन्याय अज्ञान और अभाव को समाप्त करना चाहता है, परन्तु जब हमारे पथ-प्रदर्शक स्वय अन्धकार मे भटक गये हो, तो उन्हे आर्य जनता ही सीधे मार्ग पर ला सकती है। हमे पूर्ण आशा है आर्य जनता सभा के इस प्रस्ताव से वस्तुस्थिति को समझेगी और आर्य जगत मे क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने मे अपना सहयोग देगी। हम सभा की अन्तरग को हार्दिक बधाई देते हैं कि उसने चौदह सौ आर्य समाजो की ओर से सत्य का उद्घोष कर साहसपूर्ण कार्य किया है। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान स्थिति मे सारा उत्तर प्रदेश एक गुट होकर आर्य जगत् का पथ-प्रदर्शन कर रहा है। अन्य प्रान्तो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ को भी वर्तमान स्थिति मे अपने विचार जनता के सम्मुख रखने चाहिये जिससे वास्तविक स्थिति स्पष्ट होने मे सहायता मिले।

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी १६ से २१ नवम्बर

आर्यजगत् को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह की तिथियां १६ से २१ नवम्बर ६९ निर्धारित की गई है। समिति के निश्चयानुसार समिति के अध्यक्ष श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री उप प्रधान सार्वदेशिक सभा, और प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा जी बनाये गये हैं। श्री आचार्य जी ने शताब्दी कार्य एव प्रचार के लिये भ्रमण आरम्भ कर दिया है। वे जहां भी पहुचे, आर्य जनता उनसे शास्त्रार्थ शताब्दी के बारे मे जानकारी प्राप्त करे और समारोह के लिये धन सग्रह मे उनकी सहायता प्रदान करे। समारोह समिति की ओर से शीघ्र ही शोध पत्र प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। श्री आचार्य जी ग्रन्थ का सशोधन करेगे। ग्रन्थ के प्रकाशन तथा समारोह की सफल सम्पन्नता के लिये न्यूनातिन्यून एक लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

शताब्दी के लिये धन सग्रहार्थ नोट प्रकाशित किये जा रहे हैं, जो सज्जन इस काय मे सहयोग देना चाहे, सभा कार्यालय को लिखकर नोट मगा सकते हैं।

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री राजकुमार रणञ्जयसिह जी अमेठी ने इस कार्य में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग देना आरम्भ कर दिया है। शास्त्रार्थ भूमि उनके आनन्दबाग में ही है, जहां उन्होने स्मारक प्रस्तर लगवा रक्खा है। अब तो सारे आर्यजगत् को इस कार्य की सफलता मे जुट जाना।

## बधाई

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विवाद का निर्णय देते हुये महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने श्री प्रो० रामसिह और श्री रघुवीरसिंह शास्त्री को ही क्रमश. प्रधान और मन्त्री घोषित कर दिया है। इस समाचार का सारे आर्यजगत् ने हार्दिक स्वागत हुआ है। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि सभा का मुख्य कार्यालय-भवन गुरुदत्त भवन जालधर भी अब इन्हीं अधिकारियो के अधिकार मे आ गया है और अब वहां विधिवत कार्य हो रहा है। जालन्धर के जज ने भी श्री रामशरणदास और श्री वीरेन्द्र जी आदि के लिये निषेधाज्ञा जारी कर दी है कि वे अपने को पजाब सभा का अधिकारी न बतावे। इस प्रकार पजाब में आर्यसमाज सगठन पर छायी काली घटायें साफ होती जा रही हैं हम इस सफलता के लिये पजाब सभा के सभी अधिकारियों और सभी उत्साही कार्य कर्ताओ को मित्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि अब पजाब मे आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ेगा, और आर्यसमाज वहां पूर्ववत् अपनी स्थिति सुदृढ बना लेगा।

हमे यह जान कर और भी अधिक प्रसन्नता है कि सभा के इन अधिकारियो ने सभा के नव निर्वाचन की तिथि १० अगस्त घोषित कर दी है। हम इस निर्वाचन की निर्विघ्न सफलता की भी हार्दिक कामना करते हैं। इस निर्वाचन के फल स्वरूप बहुत-सी भ्रान्तियाँ दूर हो जायगी और सभा अपने कदम आगे बढ़ा सकेगी।

## प्रो. रामसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वक्तव्य

नई दिल्ली १२ जुलाई—जालन्धर के एक समाचार पत्र में छपे लेखों तथा समाचार-पर टिप्पणी करते हुये आर्य-प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान प्रो० रामसिह ने कहा है कि इन लेखों तथा समाचारों में सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि आर्यसमाज विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब पर जनसघ ने कब्जा कर लिया है। आर्यसमाज एक धार्मिक एव सास्कृतिक सघटन है। प्रत्येक व्यक्ति नियमानुसार उसका सदस्य बनने का अधिकारी है। इसी कारण कांग्रेस, जनसघ, हिन्दू महासभा तथा भारतीय क्रान्ति दल राजनीतिक पार्टियो के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी इस सघटन के सदस्य हैं। अत ऐसी सस्था को किसी राजनीतिक दल के साथ जोडना सभा के साथ अन्याय करना है।

महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती को आर्यजगत् के सब सघटनों द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के झगड़े समाप्त करने का पूर्ण अधिकार मिला था। उन्होने अपने तार दिनाक २०-६-६९ तथा पत्र दिनॉक २६-६-६९ द्वारा मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सचालन का अधिकार सौंपा है। उक्त अधिकार का आदर करते हुये श्री देवदत्त जी तात्कालिक कार्यालयाध्यक्ष ने हमारा स्वागत किया तथा पूर्ण चार्ज सभाल दिया। उसी अधिकार के आधार पर हमने १-७-६९ से मुख्य कार्यालय गुरुदत्त-भवन जालन्धर मे कार्य आरम्भ कर दिया। इसमें जनसघ तथा अकालियो आदि का कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिये उनको इस झगड़े मे लपेटना उनके साथ अन्याय करना है।

# अध्यात्म-सुधा

## किसने अपने श्याम गगन को तारों की लड़ियों से सजाया?

श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

मन्त्र–

उप त्वा जामयो गिरो
देदिशतींर्हविष्कृतः।
वायोरनीके अस्थिरन् ॥
–साम० १३

शब्दार्थ—(हवि. कृतः) हवि ोजक (जामयः) प्रेम मय ।बनाए (गिरः) आत्म स्तुतियों रा (दे दिशती.) अर्पित करती ; (त्वा) तुझे (वायोअनीके) णमय सौन्दर्य मे (उप-अस्थि-न) समीपस्थ किये हुये हैं।

व्याख्या–प्रेम की इस विश्व मे नोखी रीति है। जिसमे प्रीति ोती है, हृदय मे उसके प्रति श्रद्धा ोती है, आस्था होती है और जब ःससे वियुक्तीकरण होता है तो मस्तिष्क निरन्तर उसका चिन्तन करता रहता है। एक क्षण भी तो वह उसको भूल नहीं पाता। आज कल प्रेम को अज्ञानवश केवल वासना का पर्यायवाची शब्द समझा जा रहा है। प्रेम वास्तव मे आत्मा का आत्मा के साथ प्रणय है। भौतिक जगत् में प्राकृतिक भेद के कारण भले ही वह प्रेम को प्रसगानुसार भाई-बहिन का, माता-पुत्र का और पति-पत्नी का प्रेम कहकर सम्बोधित करे, परन्तु वास्तविकता यही है कि प्रेम शरीर का नहीं आत्मा का विषय है। जब तक आत्मा का आत्मा से प्रेम नहीं होता, प्रेम की आत्मना मादक अनुभूति नहीं होती। जिन्होंने किसी से आत्मना प्रीति की है, वे ही इस मादक अनुभूति का रसास्वादन कर सकते हैं। जिन्हें केवल शरीरो की चाह है और जो केवल स्वार्थ या ममतावश एक दूसरे से सम्बन्धित है वे प्रेम की पावन गहराई तक न कभी पहुच सके हैं और न कभी पहुचेंगे।

साधक इस जगत् मे 'हवि' कृत' और 'जामय' होता है। वह निरन्तर हवि सजोता है। अपने सुपावन जीवन यज्ञ मे जिस परमात्मा से उसे आत्मना प्रेम है, वह अपने मस्तिष्क द्वारा उसका प्रेममय चिन्तन करता रहता है और अपने सुपावन विचार केन्द्र मे जीवो पदार्थो और विषयो का चिन्तन होगा वहा तो आसक्तियो की ज्वाला भड़केगी। सब ओर से हटाकर जब विचार केन्द्र को जो दिव्य सन्देशों को ग्रहण करनेवाला है, परमात्मा पर केन्द्रित कर दिया जायेगा। तो उस मस्तिष्क मे केवल ब्रह्म चिन्तन होने के कारण केवल सुपावनताए ही ठहर पाएगी।

प्रेममय हवियों को अपने जीवन यज्ञ मे सम्पादित करनेवाला साधक अपने हृदय केन्द्र मे जो भावनाओ का केन्द्र है, केवल प्रेम पूरित भावनाओं को सजोता है। साधक 'जामि' है। वह परमात्मा के प्रेम मय बन्धन मे बधा हुआ है। वह आत्मना परमात्मा का वरण किये हुये है उसने आत्म स्वयम्बर में परमात्मा को उसी प्रकार वरा है जैसे भौतिक स्वयंम्बर में देवी द्वारा देव का वरण किया जाता है उसने प्रेम विभोर होकर आत्मना परमात्मा को भावनाओं से पकड़ रखा है। परमात्मा को शीतल प्रेममय भक्ति धारा मे स्नानकर वह प्रेम से रोमाचित हो गया है।

जहा प्रेम होता है वहाँ दर्शन की चाह होती है, मिलन की कामना होती है, कुछ आत्म निवेदन करने की आकाक्षा होती है और समर्पण की भावना होती है। जिसके प्रति हृदय मे आस्था है, मस्तिष्क मे जिसका चिन्तन है, उससे युक्तिकरण करने की एक आत्मिक लालसा है जिसको साधक आत्मना व्यक्त करता है। आत्मवाणी को जिह्वा का थिरकन नहीं चाहिये। सब्दो का आडम्बर नहीं चाहिये। शब्द जाल प्रेम की पूर्णतय. व्याख्या नहीं कर सकते। जो अनुभूति, दर्शन और मिलन का विषय है, वह वाणी के बन्धन से मुक्त है। सत्य तो यही है कि प्रेम की भाषा मौन है, वहाँ तो अर्पण और समर्पण है, वहा तो परस्पर त्याग के द्वारा एक दूसरे को अधिकाधिक सुख पहुचाने की अन्तरकामना है। प्रेम को वाणी के पख लगते ही वह फिर उड़ जाता है। भौतिक ससार मे जहाँ शुद्ध प्रेम होता है, वहा भी जब वाणी मौन हो जाती है तो नयनो के, इन्द्रियो के सकेत वास्तविकता का पता दे देते हैं, जब इस संसार मे वाणी के विना भी हम नयनो व सकेतो की भाषा समझ लेते हैं तो फिर उस सर्वज्ञ से क्या छिपा रह सकता है। साधक इसी भाति मौन होकर, शान्तिपूर्वक, मन ही मन अपने आत्म निवेदनो को अपने परम प्रिय को अर्पित करता है। वाणी के नयन नहीं और नयन की वाणी नहीं, जो देखा सो सुना वह हृदय मे है और हृदय की भाषा

(शेष पृष्ठ १३ पर)

## किसने है यह खेल रचाया?

किसने है यह खेल रचाया।
किसने है यह धरती बनाई
किसने है आकाश बनाया।
किसने सूरज और चन्दा को
ज्योति से अपनी चमकाया ॥
किसने अपने श्याम गगन को,
तारो की लड़ियो से सजाया ॥
किसने है यह खेल रचाया ॥

किसने ऊचे हिमगिरियो से,
शीतल सरिताओ को बहाया।
किसने इन मीठी नदियो का
खारे सिन्धु से मिलन कराया ॥
जल वायु धरती अम्बर मे
किसका है यह सोम समाया।
किसने है यह खेल रचाया ॥

किसने जग के पंच तत्वो से
रच दी है जीवो की काया,
पशु-पक्षी और वृक्ष लताए,
किसकी है यह अनुपम माया ॥
किसने जीवो के जीवन मे,
दुःख सुख का है चक्र चलाया।
किसने है यह खेल रचाया ॥

रचकर जग की इस क्रीडा को,
किसने उसमे निज को छिपाया।
जिसने खोजा उसको भीतर,
उसका सुन्दर दर्शन पाया ॥
कहे 'वसन्त' वह मेरा स्वामी,
उसको मैंने शीश नवाया।
किसने है यह खेल रचाया ॥

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान मन्त्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमे भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें।

इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत में शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष मे दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजे तो यह व्यय पूरा हो सकता है।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा अत: भारत से बाहर देशों मे स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करे। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त के संसार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा: जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अत आर्य भाईओ को सीधा इसके लिये नीचे लिखे पते पर भी धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट के रूप में भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक मे पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे।

पता—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की आवश्यक बैठक और उसके निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में ता० १३-७-६९ मध्यान्ह १२ बजे काशी शास्त्रार्थ समिति की बैठक हुई। जिसमे आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के प्रधान श्री क्षेमचन्द्र जी तथा मन्त्री श्री कैलाशनाथसिंह जी तथा श्री केदारनाथ जी कोषाध्यक्ष वाराणसी से इस बैठक मे भाग लेने आये थे। इस बैठक मे नीचे लिखे निश्चय किये गये।

१—यह शताब्दी समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा वाराणसी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाया जावेगा जिसमे देश-विदेश के तथा सर्व धर्मावलम्बी विद्वान् भाग लेंगे। विषय—वेद ईश्वरीय ज्ञान।

२—१६ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक सारे देश में आर्य विद्वानों की शास्त्रार्थ यात्रा होगी। विषय—मूर्ति पूजा वेदानुकूल है या नहीं।

३—प्राचीन काल की शैली पर एक श्रौतयज्ञ। इस अभूतपूर्व यज्ञ की रूपरेखा भी पृथक् प्रकाशित की जावेगी।

४—सार्वदेशिक स्तर पर एक महिला आचार संहिता सम्मेलन भी होगा।

५—आज से एक सौ वर्ष पूर्व संसार की जो विचारधारायें थी उसमें हमने कितना परिवर्त्तन किया है इस पर संसार की सम्मतियां सग्रह करके प्रकाशित की जावेगी।

६—शोध पत्र जो जिला सभा वाराणसी ने मंगाये हैं वे सब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ को काशी के लोग भेज देंगे जिनका सम्पादन श्री आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास वेदाचार्य करेंगे।

७—आगे से धनसग्रह का कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्त्वावधान में यू०पी० सभा द्वारा प्रकाशित रसीदों और नोटों से ही होगा। आर्योपप्रतिनिधि सभा जिला वाराणसी की रसीदो से नहीं।

८—जिला सभा वाराणसी ने जो धन-संग्रह अब तक किया है उसका हिसाब यू० पी० सभा को दे दिया जावेगा अब आगे धन संग्रह का कार्य काशी के आर्य भाई भी यू०पी० सभा द्वारा करेंगे।

९—शास्त्रार्थ शताब्दी समिति के प्रधान श्री प० प्रकाशवीरजी शास्त्री संसद सदस्य तथा प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा: जी व्यास एम ए वेदाचार्य निर्वाचित हुये।

१०—काशी के पांच विशिष्ट व्यक्ति शास्त्रार्थ शताब्दी समिति में रहेगे।

११—स्वागत समिति के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जावे फिर काशी में स्वागत समिति का निर्वाचन होकर कार्य विभाजन होगा जिसमे सब प्रान्तो के प्रमुख कार्यकर्ता विशेष रूप से रहेगे।

१२—इस अवसर पर अनेक सम्मेलन और शास्त्रार्थ परिषदे भी होंगी।

निवेदक—
—महेन्द्रप्रताप शास्त्री
सयोजक—काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति

रिवारिक समस्या–

# आर्य परिवार के सन्तानों की विवाह-समस्या

लेखिका–वेदाचार्य श्रीमती देवी शास्त्री, वेद मन्दिर ९९ बाजार मोतीलाल बरेली वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

आर्य जगत् के माता-पिता ने बच्चों का पालन-पोषण दक वातावरण मे करते हैं। कार विधि के अनुसार उन के ंकार कराये जाते हैं। अभी वे लना ही सीखे हैं कि माता-पिता न्हें गायत्री मन्त्र याद कराते हैं। ब उनके यहां कोई विद्वान् आता तब बड़े गौरव से माता-पिता पने बच्चो से कहते हैं कि बेटा ायत्री मन्त्र सुनाओ। फिर वे च्चे सन्ध्या करना सीखते हैं यज्ञ करना सीखते हैं। उनके यज्ञोपवीत ंस्कार होते हैं। उन बच्चो को ार्मिक सिद्धान्त सिखाये पढ़ाये जाते हैं। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सङ्गों, उत्सवो और आर्य सम्मेलनों मे उत्साह से वे बच्चे जाते हैं।

उन आर्य परिवार के लड़के लड़कियो का जीवन सात्विक, आचार-विचार वैदिक, जीवन के प्रोग्राम महर्षि दयानन्द के सपनों को पूरा करना, रहन सहन भारतीय, खान-पान पवित्र, भविष्य की आशायें सत्ययुग की सी, दृष्टिकोण वैदिक काल के ऋषियो का सा, होता है पर विवाह के पश्चात् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।

यह क्यो ? कारण स्पष्ट है। अवैदिक परिवारो से विवाह सम्बन्ध। आर्य लड़के लड़कियो का अनार्य लड़कियो और अनार्य लड़को से गठजोड़। ऋषिवर विश्रवाः के पुत्र ब्राह्मण जाति के सपूत रावण का विवाह राक्षस जाति की केकसी नाम वाली कन्या से दुर्दैव से हुआ था। यही दृश्य घर-घर है।

### आर्य लड़को का अवैदिक कन्याओ से विवाह

कुछ लोगो का ऐसा विचार है कि कोई भी लड़की हमारे घर विवाह होकर आयेगी उसको हम आर्य बना लेंगे। समस्या तो लड़की की है। यह विचार निराधार है। जब ऋषि विश्रवा का बेटा रावण केकसी को न बना सका और केकसी ने ही उसे बना लिया तब तुम्हारा बेटा क्या बनालेगा। स्वयं ही बन जावेगा। दूसरा दोष इसमे यह है कि यदि आर्य लड़के अवैदिक कन्याओ से विवाह करेगे तो ये आर्य कन्यायें किस गर्त्त मे जावेगी यह भी कभी कोई सोचता है। मैने अनेक आर्य नेताओ के परिवारो के लडकों को देखा है कि जिन लडकों के बड़े बड़े वैदिक संस्कार हुये। संध्या हवन के मन्त्रों को बोलते-बोलते जिनके गले थक गये वे आर्य परिवार के लडके अवैदिक विचार वाली कन्याओ से विवाह होते ही कुछ के कुछ हो गये। गण्डे तावीज

महिला मण्डल

बाँधने लग गये। हाथ की रेखायें दिखाने लगे। जन्मपत्र पर विश्वास हो गया। फलित ज्योतिषी उनके गुरु हो गये। यह प्रभाव तो पौराणिक विचारवाली कन्याओ के साथ विवाह का हुआ। और यदि नास्तिक और पाश्चात्य विचार वाली कन्याओ से विवाह हुआ तो धर्म कर्म सब समाप्त। ईश्वर भी समाप्त। वेद भी समाप्त। भारतीय सभ्यता भी समाप्त। ऋषि मुनि भी मूर्ख। पूर्वज भी असभ्य हो गये। इसलिये यह कहना कि बहू को हम बना लेंगे यह आकाश पुष्प के समान कल्पना है।

### आर्य कन्याओ का अवैदिक लड़को के साथ विवाह

यह अगली कथा बडी हृदय विदारक है। यदि आर्य कन्या का विवाह अवैदिक विचार वाले परिवार में हों जावे तब कन्या पर क्या बीतती है इसको भगवान् ही जानता है। जिस कन्या ने कभी लहसन और प्याज देखा भी नहीं। पति उसका अण्डा मांस खाता है। वह उसका भर्ता आर्य समाज को पागलो की संस्था कहता है। परिवार के लोग पत्थर पूजक हैं और बलात् उस आर्य कन्या को विवश करते हैं कि पत्थर के आगे माथा टेके। देवी देवता का व्रत रखे। माता-पिता विवाह की अपेक्षा यदि अपनी पुत्री को विष दे देते, जीवित कन्या को गङ्गा मे प्रवाह कर देते या पर्वत पर ले जाकर नीचे ढकेल देते तो वह इस दुखी जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक सुख की नींद सोती।

हमारे पिता जी कट्टर ऋषि दयानन्द के भक्त थे। नाम भी उनका स्वयं दयानन्द था। भगवान् की दी सम्पत्ति भी हमारे घर मे थी। हम सब बहिन भाइयो का विवाह आर्य परिवार मे हुआ। हम बहिन भाइयो के श्वसुर सब ही अपने-अपने नगरो मे आर्य समाजो के प्रधान थे। विशेष कर मेरे पति तो आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा जी को कौन देश-विदेश का आर्य है जो न जानता हो। हम सब बहन-भाइयो का गार्हस्थ्य जीवन सुखमय और सब परिवार मिलकर आर्यों की बस्ती-सी है। मुझे यह कहने मे सकोच नहीं कि जब आगे बच्चो के विवाह का प्रसङ्ग आरम्भ हुआ तो लड़के और लडकिया अवैदिक विचार धारा वालों के यहां विवाहे गये।
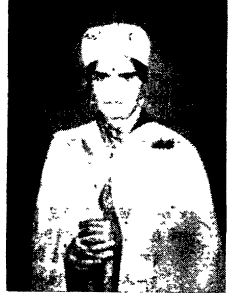
वेदाचार्य श्रीमती देवी शास्त्री जी

केवल एक लडके का विवाह वैदिक परिवार में हुआ, यद्यपि सब ही लडके और लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त थे। परिवार ऊँचे अवश्य मिले पर वैदिक नहीं। इनका भविष्य क्या होगा भविष्य के गर्भ मे है। हमारे यहा अभी विवाह का प्रसङ्ग आरम्भ नहीं हुआ। बडा लडका डबल एम एस सी फिजिक्स और मैथिमैटिक्स मे और लड़की कैमिस्ट्री मे एम एस सी। इन दोनो का क्या भविष्य होगा भगवान् ही जानता होगा। अन्य लड़के लडकियां तो अभी पढ़ रहे हैं। मैं काशी की वेदाचार्य मेरे पति आचार्य विश्वश्रवा काशी के वेदाचार्य दोनो की सन्तान कहां जावेगी कौन कह सकता है जिन बच्चो के मातृकुल और पितृकुल दोनो वैदिक इन्हे क्या मै धन सम्पत्ति के लोभ मे अवैदिक परिवारो के साथ जोड दूँ यह नहीं हो सकता।

### ऐसा होता क्यो है

प्रत्येक माता-पिता अपने लडके लडकियो के लिये अपनी शक्ति भर प्रयत्न करके उचित सम्बन्ध ही ढूढ़ता है। पर वह चुनाव मे एक भूल करता है वह यह कि पिता माता विवाह

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# पुनर्जन्म-मीमांसा

[श्री आचार्य श्यामसुन्दर जी शास्त्री, महोपदेशक आ प्र सभा उ प्र]

पुनर्जन्म तथा आवागमन पर्य्यायवाची शब्द हैं, दोनों का तात्पर्य है 'जीवात्मा का कर्म फल भोगने के लिये बारम्बार जन्म ग्रहण करना' इस पर दो प्रकार से विवेचना की जा सकती है। एक बौद्धिक अर्थात सर्वसाधारण की समझ के अनुकूल और तार्किक ढग से और दूसरा शास्त्रो एवम् प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर। प्रामाणिक ग्रथ भी दो भागो मे विभक्त हैं एक श्रुति अर्थात् वेद जो स्वत प्रमाण हैं।

दूसरा ऋषि कृत ग्रन्थ जैसे मनुस्मृति प्रभृति। आर्ष ग्रन्थ ये परतः प्रमाण हैं, इनकी प्रामाणिकता उसी अश और सीमा तक स्वीकार की जा सकती है कि जहां तक ये वेदानुकूल हों, महाकवि कालिदास ने अपनी शैली मे श्रुति-स्मृति का सम्बन्ध अभिव्यक्त करते हुये लिखा है,कि स्मृतियां तो श्रुति की अनुगमन करती हैं–

श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्
(रघुवश)

## आवागमन के पक्ष में बौद्धिक युक्तियां

जब हम ससार की ओर दृष्टि निक्षेप करते हैं तो हमे दृष्टिगोचर होता है कि यह जगत् भिन्नताओ का आगार है, एक प्रचुर धनराशि का स्वामी है, तो दूसरा अत्यन्त निर्धन। एक जन्मजात लुप्त लोचन, पंगु और मूक है, दूसरा अपने समस्त अगो और प्रत्यङ्गों से परिपूर्ण सुडौल सुन्दर शरीर वाला। इस प्रकार यदि इनका कारण पिछले जन्मो का कर्म न माना जाय तो परमेश्वर न्यायकर्ता नहीं अन्यायी और अत्याचारी हो जाता है, क्योंकि विना कारण किसी को सुख और दुःख में डालना न्याय नहीं है।

२–गुण और गुणी का सम्बन्ध यह एक सर्वमान्य नियम है कि गुण गुणी से कभी पृथक् नहीं होता यदि जीवात्मा का कर्म करना गुण है, और वह जीवात्मा पुरातन है तो अनादि जीवात्मा के कर्म भी पुरातन तथा अनादि होने अनिवार्य हैं। जब कर्मों का क्रम पुरातन है तो उनका दण्ड और पुरस्कार भी पुरातन हुआ, यही आवागमन है।

३–ईश्वरीय गुणो की प्राचीनता के अनुसार–परमात्मा पुरातन है, अनादि और अनुत्पन्न है। यह सर्वमान्य सत्य सिद्धान्त है।

अत उपर्युक्त नियमानुसार उनके गुण भी अनादि होने चाहिये, न्याय करना एवम् कर्म-फल देना परमात्मा के गुण हैं, अतः वह अनादि काल से न्यायकर्त्ता और कर्मफल दाता है, यदि ऐसा न

माना जाय और यह कहा जाय कि उसने किसी विशेष समय में जीवात्माओ को उत्पन्न किया और तभी से वह उनके कर्मो का फल देने लगा है तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि परमात्मा के न्याय करने का गुण तथा कर्म फल देने का गुण एक विशिष्ट समय में उत्पन्न हुए, तो परमेश्वर नश्वर हो जायगा, क्योंकि गुणों मे परिवर्त्तन होने से गुणी में परिवर्त्तन होना अपरिहार्य हो जाता है और जहां परिवर्त्तनशीलता है, वहा नश्वरता अवश्यम्भावी है।

## कार्य-कारण सम्बन्ध

४–कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता अत. किसी के अन्धा लूला होने का भी कोई कारण अवश्य होना चाहिये। चूंकि इस ससार मे कोई कारण दृष्टिगोचर नहीं होता, अत. यह स्वीकार करना अनिवार्य हो जाता है कि पूर्व जन्म के कर्म इसके कारण हैं, यदि यह कहा जाय कि माता-पिता के दोषो और त्रुटियों के कारण बालक अन्धा अथवा लूला उत्पन्न हुआ तो उत्तर यह होगा कि ऐसे माता-पिता के वहा जन्म ग्रहण करना भी तो एक कार्य है, जिसका भी कारण होना चाहिये।

## महान् उद्देश्य की पूर्त्ति

मानव जीवन का कोई आदर्श है, किन्तु जितनी आयु मानव की होती है, वह आदर्श प्राप्ति के लिये पर्याप्त नहीं। इसके अतिरिक्त कई मनुष्य शैशवकाल में, यौवन में तथा अधेड़ आयु में काल कवलित हो जाते हैं, उन्हें यह अल्पायु भी नहीं मिल पाती, फिर यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है कि परमात्मा ने मनुष्य को इस प्रकार अधर में छोड़ दिया हो, अतएव मानव जीवन के उद्देश्यो की उपलब्धि के लिये जन्मान्तरो का क्रम अनिवार्य है।

## दण्ड तथा पुरस्कार का उद्देश्य

दंड का उद्देश्य केवल सुधार होता है, न कि बदला लेना, किन्तु आवागमन न मानने से ईश्वर पर यह दोष लगता है कि उसके अन्दर बदला लेने की भावना है। न्याय का नियम है कि जितना कर्म हो उतना ही उसका फल दिया जाय, सीमित कर्मो का असीम दण्ड या पुरस्कार देना न्याय्य नहीं, अत. सीमित मानव जीवन मे कृत सीमित कर्मों का परिणाम अनन्त काल तक नरक किंवा स्वर्ग न[illegible] नहीं हो सकता, किन्तु पुनर्जन्म[illegible] अवस्था में यह दोष उपस्थित [illegible] होता। मृत्यु भय विगत जन्म [illegible] अनुभूति है—प्राणि-मात्र हु[illegible] मृत्यु से भयाकुल होते हैं, यह [illegible] भय सद्य. प्रसूत शिशुओ पर [illegible] समान प्रभाव दिखाता है, जि[illegible] स्पष्ट विदित होता है कि [illegible] मृत्यु भय की कभी न कभी नि[illegible] अनुभूति हो चुकी है, चूंकि [illegible] जीवन मे ऐसी अनुभूति सम्भ[illegible] नहीं अत. विगत जन्मों का मान[illegible] अपरिहार्य है।

## जन्म-जात शिशु की तत्क[illegible] दुग्धपान-प्रवृत्ति

उत्पन्न होते ही बच्चा माता [illegible] स्तनों को मुह लगाकर दूध पी[illegible] लग जाता है। यह ज्ञान अकारण [illegible] नहीं हो सकता। वह उसके अनेक [illegible] जन्मान्तरों का अर्जित होता [illegible] क्योंकि इस जन्म में तो उसे ऐस[illegible] करना सिखाया ही नहीं। अत पुनर्जन्म सिद्ध है।

ख्वाजा कमालुद्दीन साहब मिर्जाई दल के स्तम्भ अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'जहदुल्बुका' के उन्नीसवें पृष्ठ पर लिखते हैं कि 'अमल मुहताज इल्म है,|इल्म ही हर इन्सानी सकून व हरकतका मुहरक होता है' इन्सान किसी अम्र में कदम नहीं उठा सकता, जब तक उस अम्र के मुतल्लिक उसे कुछ इल्म न हो"।

अतः आवागमन न मानने वाले बतायें कि बच्चे ने दूध पीने का ज्ञान कब और कैसे प्राप्त किया था तथा इसका प्रेरक कौन है?

उदाहरणार्थ जल एक ही है वही बारम्बार बरसता और फिर सूखकर बादल का रूप धारण करता है और पुनरपि बरसता है। यह क्रम बराबर बना रहता है। इसी भांति सारे शरीर प्रकृति से बनते हैं, फिर उसके पृथक् होने पर प्रकृति अपने पूर्व रूप मे हो जाती है। पुनः उसमें विकृति हो जाने से शरीरो का निर्माण होता है और यह क्रम निरन्तर चला करता है।

# आर्यसमाज

जोड़ा तूने टूटा तार।
खायी ना बैरी से हार ॥
जीवन की पिचकारी से तू।
छोड़े खूनों की फव्वार ॥
पाया तब भारत पै राज।
धन्य-धन्य है आर्यसमाज !!

करके क्रान्ति-शंख का नाद।
भारत माँ को कर आजाद ॥
तूने दी शोणित की धार।
करके पामर का सहार।
रक्खी हिन्दी मां की लाज !
धन्य-धन्य है आर्यसमाज !!

तेरे कारण भारत देश।
पाया वेदों का सन्देश ॥
बहा लहू की धारा तू ने।
मिटा दिया भारत का क्लेश ॥
तू भारत माता का साज !
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज !!

गाकर वेदो का ही गान।
अधरों पर लेकर मुस्कान ॥
बलि-वेदी पर हो बलिदान।
हँसकर ही देते हो जान ॥
भूल नहीं सकता तब काज।
धन्य-धन्य हे आर्यसमाज !!

—ब्र० धर्मेन्द्रकुमार 'हिमकर'
पाणिनि महाविद्यालय मोती झील वाराणसी-१

# मन का दीप

जीवन की उदास गलियों में भूले से भी किरन न आई
उत्कंठा के द्वार खुले हैं कब तक झलक दिखाओगे तुम
मन का दीप जलाओगे तुम—

आशा की पतवार को थामे मांझी नाव लिये आता है
सुखद कल्पना के सम्बल में गरल के घूंट पिये आता है
चाहों की अगणित लहरों में साधों की नौका उलझी है
निश्वासी मझधार बचाकर कब फिर राह बताओगे तुम
मन का दीप···

राह तुम्हारी तकते-तकते भावों की दुल्हन अलसाई
ढीले हुए लगन के बन्धन सुधियों ने माला बिखराई
अम्बर की आंखें झपकी और बादल वैभव लूट रहा है
सहमी सी नीरवता मे कब ज्योति किरन बन आओगे तुम
मन का दीप

सौरभ को दस्तक दे देकर लौट गया है पवन अकेला
अभिलाषायें बिछड़ गई हैं खत्म हुआ सुधियों का मेला
नयनों की कुटिया के द्वारे सपनों के प्रहरी विचरते
भावों के उजड़े वन मे कब स्नेहिल सुमन खिलाओगे तुम
मन का दीप··

—राजेन्द्र श्रीवास्तव बीना

---

## वर्तमान जन्म के सुख दुःख के कारण ?

यदि स्वर्ग तथा नरक के सुख और दु.खो का कारण इस जन्म के कर्मों का परिणाम माना जाय तो वर्तमान जन्म के सुखो तथा दु खो का परिणाम किन कर्मों को माना जायगा ? यदि पुनर्जन्म न माना जाय तो ईश्वर का सृष्टि उत्पन्न करना भी घोर अत्याचार हो जाता है, क्योकि कुछ मनुष्य तो अमेरिका जैसे सर्वथा समुन्नत देशो में उत्पन्न होते है, जहाँ मानवीय उन्नति एवम् आराम के प्रचुर साधन सुलभ हैं। तथा कुछ अरब और अफ्रीका जैसे मरुप्रदेश मे उत्पन्न होते हैं, जहाँ वह पानी के लिये भी तरसते रहते हैं। किन्तु न तो अमेरिका वालो ने और न अरब अथवा अफ्रीका वालों ने परमात्मा से प्रार्थना की थी कि उन्हें वहा ही पैदा किया जाय फिर क्या कारण है कि परमात्मा ने इस प्रकार महान् अन्तर कर रखा है ? यदि यह उत्तर दिया जाय कि परीक्षण के लिये ऐसा किया गया है, तो विचार करना चाहिये कि प्रथम तो यह कि परीक्षण वह करता है जो मूर्ख किवा अज्ञानी हो, परमेश्वर पर ऐसा दोष आरोपित करने के लिए कोई तैयार न होगा। वह सर्वज्ञ है, द्वतीय बात वह है कि किसी को अकारण परीक्षण में डालना कहाँ का न्याय है ? वह कृपालु तथा दयालु ईश्वर के सर्वथा विपरीत है।

३—स्वर्ग तथा नरक का प्रसग पुनर्जन्म के समक्ष सर्वथा निरर्थक है, स्वर्ग तथा नरक मे सबको सुख दु ख एक जैसा होगा, किंतु जगत् मे मानव कर्मो मे महान् अन्तर होता है, जब कर्मों मे अन्तर है तो फिर उनका फल एक जैसा कैसे हो सकता है ? यह सिद्धान्त है कि किसी एक काल मे आत्मायें स्वर्ग या नरक में प्रविष्ट होंगी, जब उनके प्रवेश होने का आरम्भ होगा तो उनका अन्त भी होना अनिवार्य है, अर्थात् उनका पुनः जन्म ग्रहण करना अपरिहार्य है।

४—यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि मनुष्य जो कुछ सीखता है अपने अन्दर से सीखता है। यदि पूर्व जन्मो के प्रभाव विद्यमान न हो नूतन ज्ञान की उपलब्धि असम्भव हो जाय। अत. पुनर्जन्म स्वीकार करना पड़ता है।

५—मृत्यु का अनुभव न होना मनुष्य यद्यपि प्रतिदिन दूसरों को मरते देखता है, फिर भी उसे अपनी मृत्यु की चिन्ता नहीं होती क्योंकि मरना उसके स्वभाव मे नहीं है। जैसा कि महाभारत मे लिखा है कि—

अहन्यहनि भूतानि,
गच्छन्ति यम मन्दिरम्।
शेषाः स्थातु मिच्छति,
किमाश्चर्य मत परम्।

वह स्वभावत अजर, अमर और अपरिवर्त्तनीय है, यहाँ तक कि जिनकी ऐसी मान्यता नहीं है वह भी सत्य को आनुषगिक रूप मे प्रकट करने को विवश हो जाते हैं, उदाहरणार्थ—कर्जन प्रेस दिल्ली से मुद्रित मुसलमानों की प्रामाणिक हदीस मिश्कात मे लिखा है कि रसूल खुदा (मुहम्मद साहब) कहते है कि कसम है उस जाति की जिसके अधिकार मे मेरी जान है, मै यह चाहता हू कि राहे खुदा मे कतल कर दिया जाऊँ, फिर जिन्दा कर दिया जाऊँ, फिर कतल कर दिया जाऊँ, फिर जिन्दा कर दिया जाऊँ। इससे स्पष्ट विदित होता है कि मुहम्मद साहब का स्वभाव उनसे चाहता था कि वह बार-बार उत्पन्न हों जो पुनर्जन्म का सर्वोत्तम प्रमाण है।

काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
★श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

[ ८१ ]

माँ-बाप वासना के वश मे, शिशु जन्म ख्यात होने वाला।
पर मात्र जन्म के धारण से, उद्धार नहीं होने वाला।
गुरु ज्ञान दान से मानव का, दूसरा जन्म सच्चा होता;
यह जन्म मनुज का अजर अमर, ज्यों जन्मदात्री श्रुतिशाला।

[ ८२ ]

बालक के उत्पत्ति काल में, उत्पीड़न बहु होने वाला।
जनन कष्ट यह मातु-पिता को, पीड़ा असीम देने वाला।
इस क्षण का ऋण सौ वर्षों में भी, नहीं चुकाया जा सकता है;
अत. निरन्तर सेवारत हो, सेवनीय माता श्रुतिशाला।

[ ८३ ]

माता-पिता तथा गुरुवर की, उत्तम सेवा है तप आला।
सत्कार अतिथि का सुखद सदा, सन्तोष कोष देने वाला।
असहाय भार जो भूपर हो, दो दया सहायता अंश उसे;
क्षमता बल वितरित करता चल, ममता की क्षमता श्रुतिशाला।

[ ८४ ]

उपनयन कहो या यज्ञोपवीत, संस्कार ज्योति देने वाला।
है यज्ञयोग्य अब हुआ बाल, ऋण तीनों को ढोने वाला।
यज्ञोपवीत के तीन तार, ऋण तीन सत्य बतलाते हैं;
जो जन्म साथ ही आते हैं, ऋण उऋण करे ये श्रुतिशाला।

[ ८५ ]

पितृ-देव-ऋषी ऋण तीन तीन, जिन सबने है हमको पाला।
मम मातु-पिता दें जन्म हमें, ऋषिवर ने ज्ञान दिया आला।
भू-वायु-तोय औ अग्नि गगन, हर प्रकृति दिव दे प्राण सघन;
यह ऋणी तीन पायी काया, शुभ आत्मा काय है श्रुतिशाला।

[ ८६ ]

यज्ञोपवीत की ग्रन्थि पंच, मानव कर्त्तव्यों की माला।
जग यज्ञ पांच करने से ही, ऋण भार न्यून होने वाला।
पितृ-देव ऋषि-अतिथि, पाँचवाँ, बलि वैश्व देव कर्त्तव्य यज्ञ;
शुभ कर्म यज्ञ कर्त्तव्य भव्य, यज्ञ योनि मानव श्रुतिशाला।

[ ८७ ]

यज्ञ पंच ऋण तीन उतारे, हो आर्य यज्ञ करने वाला।
यज्ञोपवीत संकेत सूत्र, हैं अंग संग रहने वाला।
रहे जनेऊ वाहिनी देह, हर यज्ञ हृदय से करवाये;
दूजा जन्म जनेऊ देता, एकज द्विज करती श्रुतिशाला।

[ ८८ ]

जन्म काल हों मनुज शूद्र सब, सबकी समान होती खाला।
द्विज जन्म दूसरा पाता है, साधना ज्ञान तन तप वाला।
जन्म एक होता माता से, दूजा गायत्री सावित्री से;
दे जन्म सरस माँ सरस्वती, रस सरस्वती है श्रुतिशाला।

[ ८९ ]

उपनयन हुआ गुरु नयन गया, गुरुकुल आचार श्रेष्ठ वाला।
वेदारम्भ संस्कार गुरु ने, कर दिया ज्ञान देने वाला।
कर्त्तव्य बोध, पालन प्रबोध, बल यज्ञ योग्य गुरुकुल देता;
हर बल आता वर विद्या से, माँ शिष्य सुमन की श्रुतिशाला।

[ ९० ]

श्रुति संज्ञा है वेद ग्रन्थ की, हैं धर्म शास्त्र स्मृतिया आला।
श्रुति स्मृति दोनों हैं ज्ञानवान्, सिद्धान्त सजग देने वाला।
विज्ञान-धर्म, व्यवहार कर्म, उत्पन्न इन्हीं से सब कुछ है;
निधि निधान हैं विधि विधान की, शुभ संविधान है श्रुतिशाला।

[ ९१ ]

तन-बुद्धी में जड़-भावकता, अन्य ध्येय में फसने वाला।
रुकना पढ़ने में, चित्त चपल तप-त्याग, कर्म तजने वाला।
हो नहीं ज्ञान सुख भोगी को, विद्या-साधक को सुख नहीं;
सुखद ग्रहस्थी बने छात्र वह, वर्ष बिना सेवे श्रुतिशाला।

[ ९२ ]

जो मधुर सदा व्यवहार करे, हो अभिनव अभिवादन वाला।
मानव सुशील विद्वान् वृद्ध, सत्पुरुषों की सेवा वाला।
बल-आयु-कीर्ति-विद्या चारों, वरदान मिलें ये सेवक को।
नित वृद्धि काल मे हो इनकी, वरदान-खान है श्रुतिशाला।

[ ९३ ]

गुरुकुल मे विपुल काल बीता, जो विद्यालय है उजियाला।
है जहाँ ज्ञान सत शास्त्रों का, जाता प्रयोगों में ढाला।
आचार्य स्वयं आचार करें, उर शिष्य देख आदर्श धरें;
हो जहाँ परीक्षण पग-पग पर, कसे कसौटी पर श्रुतिशाला।

[ ९४ ]

आचारः परमोधर्मः का, मनु ने था निर्देश निकाला।
है स्वस्ति कर्म आचरण श्रेष्ठ, सदाचार है ध्येय निराला।
है सदाचार संकेत एक, है भरा विशद जिसमें विवेक;
शुभ सदाचार की ओर सदा, प्रेरित करती है श्रुतिशाला।

[ ९५ ]

संस्कार सत्य सन्ध्या प्रातः हो शोणित में बहने वाला।
बालक किशोर से तरुण बना, है अंग अंग में उजियाला।
गुरुवर ने अब दीक्षान्त किया, प्रस्थान शिष्य पितु प्रान्त किया;
दी देह पिता ने, गुरु ने पर, शोणित समान दी श्रुतिशाला।

[ ९६ ]

संस्कार समावर्तन पावन, दीक्षान्त तुल्य होने वाला।
जाना रहना वापस आना, अथ समावर्तन का आला।
विज्ञान-ज्ञान शिक्षा लेकर, गुरुकुल से पितुकुल आ जाना;
आनन्द मगन उत्सव करना, जीवन मे भरना श्रुतिशाला।

[ ९७ ]

विषय कठिन को शीघ्र सीख ले, हर काल शास्त्र अध्ययन वाला।
पढ-सुन-गुन और मनन कर, विज्ञान शोध करने वाला।
उपकार करे दे प्यार सार, सम्मति मत दे बिन मांगे जो;
प्रिय पण्डित श्रेष्ठ वही समझो, पहचान बताती श्रुतिशाला।

[ ९८ ]

जो श्रवण किया शुभ सत्य अर्थ, उसमें निज प्रज्ञा को ढाला।
गत किया कान व्याख्यान वही, कर शुद्ध बुद्धि ने जो पाला।
मर्यादा मृदु आर्य धर्म की, करे मनुज जो नहीं उलघित,
पण्डित की संज्ञा वह पाये, जिसको प्यारी है श्रुतिशाला।

[ ९९ ]

विद्यालय से विद्या पढकर अभ्यास ज्ञान का पी प्याला।
घर आया सबल ब्रह्मचारी, लेकर वर गुरुकुल से ज्वाला।
उत्तरदायित्व गृहस्थी को, हो गई सत्य क्षमता विकसित,
कर्त्तव्य-धर्म पहचान लिया, की अभिज्ञान भी श्रुतिशाला।

[ १०० ]

उपयुक्त समय है श्रेष्ठ यही, वर वैवाहिक बन्धन वाला।
पच्चीस वर्ष वय तरुण तेज, पंच यज्ञ के जीवन वाला।
गुण-कर्म-प्रकृति से मेल किया, वर योग्य सुकन्या साथ दिया;
वर-कन्या कर पाणिग्रहण प्रण, अब करे आचरित श्रुतिशाला।

। क्रमश |

# एक मिथ्या भ्रान्ति
# क्या दो सार्वदेशिक सभाएं बन गई हैं?

[ श्री आचार्य विश्वश्रवा. व्यास एम ए. वेदाचार्य ]

कुछ लोगों को यह मिथ्या भ्रान्ति है कि अब दो सार्वदेशिक सभाएं बन गई हैं। यह बात निराधार है। वस्तुस्थिति इस प्रकार है। इस वर्ष ३१ मई १९६९ को सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन होना था, जब निर्वाचन के लिये साधारण सभा बैठी उसमें वे १५ प्रतिनिधि भी बैठे जो सार्वदेशिक सभा ने अपनी व्यवस्था से अम्बाला में एक तात्कालिक पंजाब सभा स्वय बनाई और उसीसे १५ प्रतिनिधि भी सार्वदेशिक सभा के लिये चुन लिये। और इस सार्वदेशिक सभा निर्मित पजाब सभा का पुरानी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ कोर्ट में केस चल रहा था। इस नई पजाब सभा का कब्जा न गुरुकुल कांगड़ी मे था और न जालन्धर गुरुदत्तभवन के आफिस में। और न ही पजाब सभा के उप कार्यालय हनूमान रोड नई दिल्ली मे यह नई पजाब सभा केवल कोर्ट के कागजों में ३१ मई को थी और सार्वदेशिक सभा अपने रुपये से इस सभा को चलाने की चेष्टा कर रही थी, जैसा कि सार्वदेशिक सभा की रिपोर्ट में भी प्रकाशित है कि बारह हजार रुपया सार्वदेशिक सभा ने इस स्व निर्मित पंजाब सभा को ऋण दिया।

ये १५ प्रतिनिधि बोगस हैं इनको निर्वाचन में सम्मिलित नहीं करना चाहिये। इसीपर विवाद खड़ा हुआ। इन १५ प्रतिनिधियों को निकालकर जो हाउस असली था उसके बहुमत ने निर्वाचन जो किया उसमे श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री मन्त्री तथा प्रो० रामसिह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा निर्वाचित हुये। जो अल्पमत मे लोग बैठे थे, वे अपना बहुमत तभी बना सकते थे, जब वे १५ बोगस प्रतिनिधि भी उसमें सम्मिलित हो और इसीलिये प्रादेशिक सभा पंजाब के प्रतिनिधियों को भी स्वीकार इन लोगों ने नहीं किया। केवल इतना ही झगडा था और यही केस कोर्ट में दाखिल है कि उन १५ बोगस प्रतिनिधियो को लेकर निर्वाचन ठीक है या उनको निकालकर। यदि कोर्ट का अन्तिम निर्णय यह हुआ कि इन १५ प्रतिनिधियो को जो बोगस हैं,निर्वाचन मे भाग लेने का अधिकार नहीं है तो श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री मन्त्री और प्रो० रामसिह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा रहेंगे, और यदि कोर्ट ने अपना अन्तिम निर्णय यह दिया कि ये १५ प्रतिनिधि निर्वाचन में भाग ले सकते हैं तो ये नहीं रहेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा तो एक ही है और एक ही रहेगी। दो सार्वदेशिक सभाओं का प्रश्न ही नहीं उठता। और इसको न कोई अच्छा समझता है, और न करना चाहता है और न होगा। अतः यह मिथ्या भ्रान्ति निकाल देनी चाहिये कि दो सार्वदेशिक सभाएं बन गई हैं।

## महात्मा आनन्दस्वामीजी का निर्णय

दशम आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद में सारे देश देशान्तर के प्रतिनिधियो ने एक लाख जनसमूह के बीच सर्वसम्मति से महात्मा आनन्द स्वामी जी को निर्णायक माना। और उन्होंने सार्वदेशिक सभा को और उन १५ प्रतिनिधियों को यह आदेश दिया कि मैंने दोनों नई और पुरानी पजाब सभाएं भग कर दीं और ये १५ प्रतिनिधि निर्वाचन में भाग न लें, पर धांधली से ये १५ प्रतिनिधि बैठे और बैठाये गये।

जिससे दुःखी होकर महात्मा आनन्दस्वामी जी ने त्यागपत्र दे दिया और कह दिया कि मैंने जो निर्णायक बनने का पाप किया था उसका फल भोग लिया। मेरी समझ मे नहीं आता कि लोगों को लज्जा शर्म भी है या नहीं। जो एक संन्यासी को एक लाख आर्य जनता ने निर्णायक बनाया और जिसको वैधानिक रीति से भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग २३-२-६९ में सर्वसम्मति से स्वीकार किया और फिर उनके आदेश को नहीं माना। पदलोलुपता इतनी प्रबल है कि मनुष्य नैतिकता और वैधानिकता दोनों से गिर जाता है। यह बात इस समय फैल रही है। पर मैं अच्छी प्रकार जानता हूं कि श्री प्रताप भाई जी एक दिन भी सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनना नहीं चाहते उन्हें तो जबरदस्ती घसीटा जाता है।

## क्या इसको दूसरी प्रान्तीय सभाएं अच्छा समझती हैं

कुछ प्रान्तीय सभाओं ने स्पष्ट घोषणा कर दी कि ये १५ प्रतिनिधि बोगस हैं। पर कुछ चुप बैठे रहे पर समझते वे भी थे कि हैं तो ये १५ प्रतिनिधि बोगस ही पर सज्जनता में कमी न आ जावे इस लिये चुपचाप बैठे रहे। जैसे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान वयोवृद्ध धर्म और सज्जनता की प्रतीक प० भगवानस्वरूपजी न्याय भूषण। इन १५ प्रतिनिधियों को बोगस समझते हुये भी सज्जनता से बने हुये बैठे रहे। सज्जनता का ही आलम्बन आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत के प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त पर था, पर समझते वे भी थे कि यह सब है गडबड़। बिहार के कुछ व्यक्ति अपनी प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री डा० दुःखनराम जी की लाज रखने के लिये बैठे रहे क्योकि डा० दुःखनराम उप प्रधान सभापति के आसन पर थे और वे ही यह सब करा रहे थे। क्योंकि उन्हे यह ध्यान था कि हमारे बम्बई के प्रताप भाई हैं शायद वे अब भी १९६८ के समान १९६९ में भी ठीक समझते हों।

## आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः

मैं इन मौनावलम्बन करने वाली प्रतिनिधि सभाओं से पूछता हूं कि पंजाब के समान तुम्हारे प्रान्त में भी यदि सार्वदेशिक सभा में कोई ऐसा दल आ जावे और तुम्हारे प्रान्त में नई प्रान्तीय सभा बनाकर उससे सार्वदेशिक के लिये तुम्हारे प्रान्त के नाम पर प्रतिनिधि चुन ले और वह सार्वदेशिक सभा तुम्हारे प्रान्त में भी बारह-बारह हजार रुपया अपनी बनाई प्रतिनिधि सभा को ऋण देकर चलाने लगे और तुम सब अपनी-अपनी प्रान्तीय सभाओं के भवनों मे बैठे रहो तो तुम पर क्या बीतेगी। जरा हृदय पर हाथ रख कर देखो। और विचार करो।

मै समस्त देश की सब प्रति निधि सभाओं के अधिकारियो को जानता हू और सारे देश मे सर्वत्र प्रति वर्ष जाता भी हूं, और मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं कि सब प्रान्तो के अधिकारी सच्चे आर्य हैं, आर्य समाज ही उनका जीवन-मरण है, वे आर्यसमाज से कुछ लेते भी नहीं अपना धन और अपना समय देते हैं और जब यह दशा देखते हैं तो रात को बैठकर रो लेते हैं जैसा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान पं० भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण ने एक बार अजमेर मे मुझसे कहा कि मैं रात को इस पीड़ा मे सो भी नहीं

## महिला-मण्डल

(पृष्ठ ६ का शेष)

सम्बन्ध के लिये धन सम्पत्ति और बड़ा घराना ढूढ़ते हैं। विचार धारा उनकी कुछ भी हो। जब पिता अपनी कन्या के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त जो हाई क्लास परिवार का है उसको प्राप्त करके अपने को कृतकृत्य समझता है। उस परिवार में आकर कन्या पर क्या बीतेगी। माता पिता नहीं सोचते। कहावत है कि—

माता वित्त पिता श्रुतम्।
बान्धवा कुलमिच्छन्ति।

कन्या के विवाह मे लडकी की माता धनवान वर चाहती है पिता विद्यावान वर चाहता है और रिश्तेदार ऊँचे घराने वाला वर चाहते हैं। पर विचारधारा कोई नहीं चाहता। यही एक मौलिक भूल होती है। मै तो यह उचित समझती हू कि कन्या अविवाहित रह जावे यह अच्छा है पर अनार्य वर को कन्या देना कसाई के हाथ गाय बेचने के समान है। लडका अविवाहित रह जावे यह भी बुरा नहीं पर अनार्य बहू का घर मे प्रवेश अच्छा नहीं। विभिन्न विचार धारा वालो की भावी सन्तति ऐसी ही होगी जैसे धर्मात्मा गान्धारी मे कुटिल मति धृतराष्ट्र से दुर्योधन पैदा हुआ।

---

पाता हू और उठकर बैठ जाता हू कि यह क्या हो रहा है। अत मेरा यह दृढ निश्चय है कि ये सच्चे आर्य सब ही उन १५ प्रतिनिधियो को बोगस समझते थे और अब भी समझते है। कोई यह घोषणा नहीं कर सकता कि वे उन १५ प्रतिनिधियो को बोगस नहीं समझते। हाँ चुप रहेंगे।

ला० रामगोपाल शालवाले भी इन १५ प्रतिनिधियो को बोगस समझते हैं इसीलिये यद्यपि उनका नाम १५ बोगस प्रतिनिधियो मे था फिर भी उन्होने अपने को प्रतिष्ठितो में चुनवाया उन १५ प्रतिनिधियों मे था फिर भी उन्होने अपने को प्रतिष्ठितो मे चुनवाया उन १५ बोगस प्रतिनिधियो मे अपने को स्वीकार नहीं किया।

अत आर्यजगत् निश्चिन्त रहे ये प्रतिनिधि १५ बोगस हैं या नहीं निश्चय होता है। सार्वदेशिक सभाएं दो नहीं बन सकती हैं। ००

## एक दूसरी समस्या जन्म जाति

विवाह मे एक दूसरी समस्या जन्म-जाति की भी है प्रत्येक आर्य समाजी भी अपनी जाति मे ही लड़का-लडकी ढूढ़ता है। केवल वह ही नहीं ढूढता जाति वाले भी उसे घेरे रहते हैं। इसी वर्ष का एक उदाहरण मेरे सामने है। हमारे बरेली नगर के ही आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी जिन के साथ हमारे निकट सम्बन्ध है अत भली प्रकार हम लोग जानते हैं कि उनका ज्येष्ठ पुत्र जब इजीनियर हुआ और विवाह का समय आया तब उन्होंने बहुत यत्न किया कि अन्य जाति मे विवाह करे और एक दो वर्ष इस समस्या मे लग गये। पर दूसरी जाति के लोग उनके पास नहीं पहुचे। क्योकि वे जन्मना कायस्थ जाति के थे अन्ततो गत्वा कायस्थ परिवार मे ही विवाह हुआ। पर हुआ प्रसिद्ध आर्य परिवार मे ही यह प्रभु की कृपा हुई। पर चाहते हुये भी जाति बन्धन नहीं तोड मिला। म तो यह उचित समझती हू कि जाति बन्धन क्या देश बन्धन भी तोडा जा सके तो तोड देना चाहिये किसी भी देश मे लडके लडकी का विवाह करना पडे कर दे पर परिवार दूसरे देश का होते हुए भी होना चाहिये आर्य विचारधारा वाला परिवार। साथ ही मे इसको भी अनुचित समझती हू कि जाति बन्धन तोडने का इतना नशा भी नहीं होना चाहिये कि अवैदिक विचारधारा वाले भिन्न जाति मे विवाह करके समझ लें कि मैने वैदिक विवाह कर लिया। यदि अन्य जाति मे अपनी विचारधारा का लडका या लडकी न मिले तो अपनी जाति मे वैदिक विचारधारा वाले लडके या लडकी को ले दे लेना भी कोई पाप नही है। हे आर्य जगत् के माता-पिताओ सन्तान मत पैदा करो। यदि पैदा करो तो उन्हें वैदिक विचारधारा वाला मत बनाओ। यदि वैदिक विचारधारा वाला बनाओ तो उन्हें अवैदिक परिवारों में धन आदि के लोभ में मत झोंको। अन्यथा उनके पारिवारिक जीवन को देखकर तुम्हे मरने के बाद भी शान्ति नहीं मिलेगी।

## भगवान् आर्य कन्या किसी को न दे

महर्षि कण्व भी पुत्री शकुन्तला के विषय मे दुःखी थे।

कस्मै प्रदेयेति नितान्त चिन्ता।

और कहते थे कि इसको किसे विवाहू यह सोचते रात को नींद भी नहीं आती। यह ऋषियो का हाल था। हम साधारण व्यक्तियो की क्या कथा। इस देश मे यह प्रथा है कि लडकी वाले तो लडके वालो के घर पहुचते हैं कि हमे लडका दे दो। हमारे घर भी पत्राचार अनुमान के आधार पर चल रहा है कि आचार्य जी को लोग पत्र लिख रहे हैं कि आपका लडका विवाह योग्य हो गया होगा हमारा सम्बन्ध स्वीकार करो पर कोई लडके वाला यह नहीं कहता कि आपकी लडकी अब विवाह के योग्य हो गई होगी हमे लडकी दो यह इस देश में अब प्रथा नहीं है पर प्राचीनकाल मे इसको बुरा नहीं समझते थे।

लेख का उपसहार करती हुई यह कहती हू कि यदि आर्यसमाज के लोग अपने मरने के बाद भी अपने घर मे आर्यसमाज रखना चाहते है। अपनी अर्थी के साथ ही वैदिक धर्म की भी अन्त्येष्टि नहीं चाहते हैं तो आर्य परिवार बनाओ और आर्य परिवार में लडके और लडकिया का ले दे लो। कोई विभाग आर्यसमाज मे ऐसा हो जो परस्पर सम्बन्ध जुडावे जहा आर्यों के लडके लडकियो की सूची योग्यता और पारिवारिक स्थिति के साथ विद्यमान रहे। अन्यथा आर्यसमाज का भविष्य अन्धकारमय है। आर्य महिला समाजो मे वृद्धा स्त्रियाँ मिलेंगी बहुये नहीं। आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सङ्गो मे नवयुवक नहीं मिलेंगे। लडते हुए वृद्ध जन मिलेंगे। प्रभु इस आर्यसमाज पर कृपा करे।

# निरीक्षक सूची

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों के निरीक्षणार्थ सभा की ओर से निम्न महानुभाव निरीक्षक पद पर घोषित किये जाते हैं। उनके पहुंचने आर्यबन्धु पर आर्यसमाज एवं समाज से सम्बन्धित संस्थाओं का निरीक्षण कराने की कृपा करें और सभा का प्राप्तव्य धन देकर सभा की रसीद प्राप्त करें।

| नाम जिला | नाम निरीक्षक |
|---|---|
| १—देहरादून— | श्री विद्याभास्कर जी शास्त्री |
| २—सहारनपुर— | श्री चन्द्रमणि जी वैद्य सहारनपुर |
| ३—मुजफ्फरनगर— | श्री अतरसिंह जी शामली |
| ४—मेरठ— | ,, अमोलकचन्द्र जी हापुड़ |
| ५—बुलन्दशहर— | ,, आनन्दप्रकाश जी सिकन्दराबाद |
| ६—अलीगढ़— | ,, मा० सरदारसिंह जी जलाली श्री चम्पाराम जी हाथरस तथा श्री जयनारायणजी आर्य अलीगढ़ |
| ७—मथुरा— | श्री केदारनाथ जी चौक मथुरा |
| ८—एटा— | श्री महेशदत्त जी शर्मा मारहरा (एटा) |
| ९—आगरा— | ,, कालिकाप्रसाद जी तिवारी मामनेर, आगरा |
| १०—मैनपुरी— | ,, दयाराम जी शिकोहाबाद |
| ११—बरेली— | ,, ओमप्रकाश जी आर्य बरेली |
| १२—बदायूं— | ,, उमरावसिंह जी नवादा मधुकर (बदायू) |
| १३—बिजनौर— | ,, बनारसीलाल जी आर्य नजीबाबाद |
| १४—रामपुर— | ,, कन्हैयालालजी मुमुक्षु लखीमपुर बिलनू, (रामपुर) |
| १५—मुरादाबाद— | ,, इन्द्र वर्मा जी रामनगर व श्री हरिदत्त जी शास्त्री बिसरौल, मुरादाबाद |
| १६—शाहजहांपुर— | ,, राजेन्द्र जी शास्त्री, शाहजहांपुर |
| १७—पीलीभीत— | ,, प्रेमचन्द्र जी पूरनपुर |
| १८—नैनीताल अल्मोड़ा— | ,, कृष्ण वर्मा जी काशीपुर |
| १९—गढवाल-टेहरी | ,, तोताराम जुगराजजी श्री शान्तिप्रकाशजी, प्रेम |
| २०—लखनऊ— | ,, इन्द्रदेव जी शर्मा लखनऊ |
| २१—उन्नाव-रायबरेली | ,, चन्द्रदत्त जी त्रिवेदी उन्नाव व स्वा केशवानन्द सरस्वती आदर्शनगर, लखनऊ |
| २२—हरदोई— | ,, रामेश्वरदयालु जी हरदोई श्री अनन्तराम जी शर्मा किरतियापुर |
| २३—सीतापुर— | ,, वीरेन्द्रकुमार जी सीतापुर |
| २४—खीरी— | ,, वीरेन्द्र बहादुरसिंह जी गोला (खीरी) |
| २५—फैजाबाद | ,, जगदीश्वरीप्रसाद जी फैजाबाद |
| २६—बाराबकी | ,, प्रभाकरदत्त जी बाराबकी |
| २७—बहराइच | ,, गिरजादत्त जी शर्मा बहराइच |
| २८—गोंडा | ,, सुन्दरलाल जी अग्निहोत्री बलरामपुर |
| २९—प्रतापगढ़-सुल्तानपुर— | श्री बेचूसिंह जी सुल्तानपुर |
| ३०—इलाहाबाद— | श्री बैजनाथप्रसाद जी प्रयाग |
| ३१—कानपुर— | ,, विजयपाल जी शास्त्री कानपुर |
| ३२—इटावा— | ,, उमेशचन्द्र जी स्नातक दिवियापुर इटावा |
| ३३—फतेहपुर | ,, रामनारायण जी शास्त्री बिन्दकी |
| ३४—फर्रुखाबाद— | ,, सच्चिदानन्द जी रम्पुरा श्री रघुवीरदत्त जी शर्मा फर्रुखाबाद |
| ३५—झांसी-जालौन— | ,, सीताराम जी आर्य शहर झांसी |
| ३६—बांदा हमीरपुर महाराजपुर— | श्री रामचन्द्र जी शर्मा बांदा |
| ३७—गोरखपुर— | श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार गोरखपुर |
| ३८—देवरिया— | ,, फूलचन्द जी देवरिया |
| ३९—आजमगढ़— | ,, अक्षयवरनाथ जी आजमगढ़ |
| ४०—बस्ती— | ,, दूधराज जी पाण्डेय व श्री शिवनारायण जी वेदपाठी बढ़नी |
| ४१—वाराणसी— | ,, रामरंग जी शास्त्री काशी |
| ४२—जौनपुर | ,, सूर्यबली जी पाण्डेय जौनपुर |
| ४३—बलिया | ,, रामेश्वरप्रसाद जी बलिया |
| ४४—गाजीपुर— | ,, अमरनाथ जी वर्मा गाजीपुर |
| ४५—मिर्जापुर— | ,, सूर्यदेवशर्माजी व श्री बटुकप्रसादजी वैद्य मिर्जापुर |

निम्न महानुभाव मुख्य निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं।

| नाम मुख्य निरीक्षक | नाम कमिश्नरी |
|---|---|
| [१] श्री विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी | कानपुर, लखनऊ, फैजाबाद, इलाहाबाद झांसी कमि० |
| [२] श्री बलवीरसिंह जी बेधड़क मेरठ- | मेरठ, बरेली, बदायू कमि० |
| [३] श्री कपूरचन्द जी आजाद मिर्जापुर— | बनारस व गोरखपुर कमि० |
| [४] श्री महेशचन्द्र जी शर्मा बरौठा (अलीगढ़)— | आगरा कमि० |

प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०ए०
मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

## निर्वाचन—

—गुरुकुल गंगीरी (अलीगढ़)

प्रधान—श्री रामचन्द्र गुप्त दिल्ली
उपप्रधान—श्री सुखराम जी
,, ,, वैद्य सोनपाल जी
,, ,, रघुवीरसहाय खिरनी-गेट अलीगढ़
मन्त्री—श्री मोहनलाल आर्य सिद्धान्त विशारद, अलीगढ़
उपमन्त्री—श्री पीताम्बर जी शास्त्री गंगीरी
,, ,, दीनानाथ जी
,, ,, हर्षदेव जी
कोषाध्यक्ष—श्री धीरजलालजी वैद्य गंगीरी

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में
## आर्यमित्र का विशेषांक
# मूर्त्ति पूजा निषेधाङ्क
## प्रस्तावित रूपरेखा

समस्त आर्य विद्वानो की सेवा में निवेदन है कि आर्यमित्र का विशेषांक मूर्ति पूजा निषेधाङ्क काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में प्रकाशित होगा। इसकी प्रस्तावित रूपरेखा मे से आप स्वयं अपने लिये अपने विषय का चुनाव कर सूचित करने की कृपा करें। और उस विषय पर आप लेख लिखें।

विषय–१–मूर्ति पूजा और वेद
२–मूर्ति पूजा और वेदो की शाखाएं
३–मूर्त्तिपूजा और ब्राह्मण ग्रंथ
४–मूर्ति पूजा और उपनिषद् ग्रंथ
५–मूर्ति पूजा और आरण्यक ग्रन्थ
६–मूर्तिपूजा और दर्शन ग्रन्थ
७–मूर्ति पूजा और निरुक्त
८–मूर्ति पूजा और व्याकरण ग्रन्थ
९–मूर्ति पूजा और गीता
१०–मूर्ति पूजा और स्मृति ग्रन्थ
११–मूर्ति पूजा और आयुर्वेद शास्त्र
१२–मूर्ति पूजा और बौद्ध धर्म
१३–मूर्ति पूजा और जैन धर्म
१४–मूर्ति पूजा और इस्लाम
१५–मूर्ति पूजा और क्रिश्चियन मत
१६–विभिन्न सम्प्रदायों मे मूर्तिपूजा की स्थिति
१७–मूर्ति पूजा तथा ससार के अन्य देश
१८–मूर्तिपूजा का आदि स्रोत
१९–मूर्ति पूजा और पुराण ग्रन्थ
२०–मूर्तिपूजा और महाभारत
२१–मूर्ति पूजा और रामायण
२२–पौराणिक समत सब अवतारों पर प्रत्येक अवतार का पूर्ण पौराणिक स्वरूप और उनका वैदिक स्वरूप।
२३–विभिन्न देवताओ का पौराणिक स्वरूप और वैदिक स्वरूप।
२४–वैदिक धर्म के प्रचार से मूर्तिपूजा की मान्यतापर प्रभाव
२५–मूर्ति पूजा को ससार से मिटाने के सफल उपाय इत्यादि

इस विषयों मे से अपने लिखने के लिये विद्वान् स्वय चुनाव कर हमें शीघ्र सूचित करें।

नोट–(१) बहुत बड़ा विशेषाक होते हुए भी मूल्य,केवल २) रुपये ही रखा जावेगा। ग्राहक सूचित करे कि उन्हे कितनी प्रतियाँ चाहिये।
(२) विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

विशेष [क] जो आर्यमित्र के ग्राहक बन जावेंगे उन्हे विना मूल्य यह विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। इस समय आर्यमित्र का वर्ष भर का चन्दा केवल १०) है।
[ख] ग्राहक बनाने वाले एजेन्टों की भी हमें आवश्यकता है जो अपने-अपने नगर और प्रान्त मे ग्राहक बनावेंगे उन्हे कमीशन दिया जावेगा।

निवेदक—
आचार्य विश्वश्रवा व्यास, एम ए वेदाचार्य, प्रचार मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी
उमेशचन्द्र स्नातक, एम. ए, सम्पादक आर्यमित्र

## अध्यात्म-सुधा
(पृष्ठ ४ का शेष)

हृदय भी जानता है, आत्मा आत्मा के निवेदन को समझती है तो वह परमप्रिय सर्व नियन्ता भी हमारे आत्मवत् निवेदन, विनय, प्रार्थना, वन्दना और समर्पण को भलीभांति जानता है।

साधक का आत्मनिवेदन भी कैसा होता है? प्रस्तुत मन्त्र उसे भी स्पष्ट करता है। आत्मा सौन्दर्य प्रिय है। सौन्दर्य मे आकर्षण है, वह खींचता है। परमदेव 'वायो. अनीके' है। प्राण-प्राण मे उसका सौन्दर्य रम रहा है। कृति कृति उसके सौंदर्य की झलक दिखा रही है। सूर्य्य, चन्द्र, सितारो मेघो विद्युत धरती, पर्वत, सागर,नदियो, वनस्पतियो, वृक्ष, लताओं, जीव जन्तुओं मे उसका ही तो सौंदर्य जगमगा रहा है। जिसकी कृतियाँ इतनी सुन्दर है वह परमदेव कितना सुन्दर होगा,इसकी कल्पना ही आनन्दमय अनुभूति की जनक है। यह कौन है जिसने इतना सुन्दर ससार बनाया है। कण-कण किस परम का बोध करा रहा है। भीतर बाहर सर्वत्र साधक उस परम सौंदर्य का दर्शन करता रहता है और जो कुछ भौतिक व ज्ञान चक्षुओं से देखता है, उसे हृदय की गुहा मे सजोए वह भावकता की अनुभूति से ओतप्रोत होकर उस परम रमणीय के प्रति समर्पित हो कर अपने आत्मनिवेदन में मौन स्वरो मे केवल इतना ही कह पाता है— 'सुभान तेरी कुदरत,
जाऊँ कुरबान।"

## वेद प्रचार सप्ताह २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक मनायें

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्णा अष्टमी अर्थात् दिनांक २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

प्रत्येक आर्य समाज को चाहिए कि इस सप्ताह को उत्साह पूर्वक मनाने का अभी से रचनात्मक कार्यक्रम बनाने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

## उपदेश विभाग की सूचना

सभास्थ उपदेशक प्रचारको को विदित हो कि जुलाई मास मे उत्सव न होने के कारण निम्न जिलों मे पहुच कर वैदिक धर्म का प्रचार करने की कृपा करें। समाजो को चाहिये कि प्रचारक व उपदेशको के पहुचने पर प्रचार कराने की व्यवस्था करे।

१—श्री बलवीर जी शास्त्री महोपदेशक—मेरठ कमिश्नरी के समाजों में कथा प्रवचन।

२—श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री महोपदेशक—लखनऊ कमिश्नरी के समाजो में कथा प्रवचन।

३—श्री केशवदेव जी शास्त्री महोपदेशक—बरेली कमिश्नरी के समाजों में कथा प्रवचन।

४—श्री रामनारायण जी विद्यार्थी उपदेशक—फैजाबाद कमिश्नरी के समाजों में कथा प्रवचन।

५—रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर प्रचारक सभा—मुरादाबाद, रामपुर जिले में प्रचार।

६—गजराजसिंह जी प्रचारक सभा—फर्रुखाबाद जिले में प्रचार।

७—धर्मराजसिंह जी प्रचारक सभा—सहारनपुर जिले में प्रचार।

८—वेदपालसिंह जी प्रचारक सभा—मिर्जापुर व बलिया जिले में प्रचार।

९—मुर्लीधर जी प्रचारक सभा—बरेली व पीलीभीत जिले में प्रचार।

१०—खेमचन्द्र जी प्रचारक सभा—लखनऊ व उन्नाव जिले मे प्रचार।

११—प्रकाशवीर जी शर्मा प्रचारक सभा—मेरठ जिले में प्रचार

१२—ज्ञान प्रकाश जी शर्मा प्रचारक सभा—बिजनौर जिले में प्रचार।

१३—विन्ध्येश्वरी सिंह जी प्रचारक सभा—गोरखपुर व देवरिया जिले में प्रचार।

१४—जयपाल सिंह जी प्रचारक सभा—अलीगढ़ जिले मे प्रचार।

१५—रघुवर दत्त जी प्रचारक सभा—हरदोई व शाहजहापुर जिले मे प्रचार।

१६—खड़गपाल सिंह जी प्रचारक सभा—मथुरा जिला में प्रचार।

१७—महिपाल सिंह प्रचार सभा—मैनपुरी, इटावा जिले मे प्रचार।

१८—रामचन्द्र जी वर्मा प्रचारक सभा—बदायू व ऐटा जिले में प्रचार।

शेष जिलो में आगामी मास में प्रचारक नियत किये जायेंगे।

प्रत्येक उपदेशक और प्रचारक को अपने क्षेत्र मे पहुच कर सभा को सूचित करना चाहिए।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
अधिष्ठाता
प्रदेश विभाग

## शिक्षा विभाग की सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों के अधिकारियों व प्रधानाचार्यों को सूचित किया जाता है कि श्री जयदेव जी निरीक्षक आर्य विद्यालय को उनकी वृद्धावस्था के कारण उनको सेवा से मुक्त कर दिया गया है। अब वह इस पद पर कार्य नहीं कर रहे हैं अब उनको सभा का किसी प्रकार का कोई धन न दिया जाय। —रामबहादुर एडवोकेट
मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा
उत्तर प्रदेश

# युवती का उद्धार

★श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री
साहित्यरत्न, मुजहनी, गोंडा

इन्दु आगरा कालिज के एम. कक्षा में पढ़ रही है। उसकी भारतीय संस्कृति में अधिक अतएव वह संस्कृत विषय लेकर जीवन को आगे बढ़ाने का य कर चुकी है। जब वह मुनियों के प्रणीत योग, न्त, न्याय तथा सांख्य शास्त्र का अध्ययन करती है, तब उसके मानस में जहां नाना प्रकार की ाषाये तरंगवत उठती हैं, वहीं कवि कालिदास के मेघदूत, ज्ञान शाकुन्तलम् तथा बाण भट्ट के कादम्बरी मे जब वह डूबती है, तब उसे अपार आनन्द की प्राप्ति होती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के उस प्रसंग मे जब वह प्रवेश करती है जहां कवि ने यह वर्णन किया है—

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहणीपदे, विभव गुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।

तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावन, मम विरहजां न त्वं मद्रे शुचं गणयिष्यसि।

अर्थात् जब शकुन्तला ने बहुत घबराहट प्रकट की कि पिता जी! मैं आप से वियुक्त होकर कैसे जीवित रह सकूंगी तब कण्व ऋषि कहते हैं कि हे शकुन्तले! जब तू सत्कुलीन आर्य पति के प्रशंसनीय गृहणी पद पर अवस्थित होगी और उनके वैभव सम्पन्न महत्वपूर्ण कार्यों में प्रतिक्षण संलग्नता से आकुल-सी रहेगी तथा थोड़े ही समय मे प्राची दिशा जिस प्रकार सूर्य को प्रकट करती है, उसी प्रकार पुत्ररत्न को जब प्रकट कर देगी तब मेरे वियोग की व्यथा का तुझे कभी ध्यान नहीं होगा। इस श्लोक पर जब वह निरन्तर विचार करती है तब उसे अपने को उन्नति के पथ पर बढ़ने की नवीन प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। वह सोचती रहती है कि देखिये मेरे जीवन का रथ किस ओर जाता है। यदि मेरे जीवन का साथी शौर्य तथा तेज वाला मिल गया तो मेरा जीवन सफल है, अन्यथा मेरा जीवन अन्धकारमय ही रहेगा। इन्दु का सौन्दर्य उसके शरीर पर चन्द्रमा के तुल्य लहरा रहा है। विद्यालय के कितने ही युवक उसको अपने प्रेम-पास मे आबद्ध करने के लिये नित्य नई नई वेश-भूषा से अपने शरीर को सजाते हैं कि इन्दु मेरे प्रेम सदन में नित्य विहार करे, किन्तु इन्दु उन नवयुवको को जो विलासिता मे डूबे हुए हैं, उन पर कोई ध्यान ही नहीं देती है। वह सोचती है कि मुझे इस समय जहाँ तक हो सके वहां तक अक्षय ज्ञान को संचित कर लेना चाहिये। इसके पश्चात् भविष्य मे न जाने कौन-कौन आपदाओं से मुझे जूझना पड़े। एक दिन वह हरी पर्वत की ओर घूमने जा रही थी कि तीन चार गुण्डे उसके पीछे हो लिये।

उसे यह भान हो गया कि ये लोग मेरे रूप के प्यासे हैं, देखूं ये लोग मेरे साथ क्या व्यवहार करते हैं। वह महाकवि कालिदास के मेघदूत के एक पद्य को अपनी मधुर स्वर लहरी मे गुनगुनाती जा रही थी कि तीन गुण्डे रावण के तुल्य उस आर्या इन्दु सीता को पकड़ने दौड़े। इन्दु अपने चारो ओर कातर भरी दृष्टि से मृगी के तुल्य अपनी रक्षा के लिये निहार रही थी, किन्तु उन लोगों के अतिरिक्त और कोई भी व्यक्ति वहां पर नहीं था। इन्दु ने सिसकते हुये कहा कि आप लोग मेरे सतीत्व को भंग न करे। अप मुझे अपनी बहन समझ कर छोड़ दें, क्योंकि आप लोगों की भी माता बहनें होंगी जो भावना आपकी उन पर है वही पवित्र भावना मुझ पर भी प्रदर्शित कीजिये। इन्दु के बहुत अनुनय विनय पर भी उन गुण्डों ने कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि जो कामी पुरुष हैं उन्हें सदा शिक्षाओं से क्या प्रयोजन। वे गुण्डे उस इन्दु को अपने पाश में जकड़ कर सुनसान स्थान मे ले गये और अपने हृदय को शान्त करते हुये उन्होंने कहा कि अब क्यो हृदय तू व्याकुल है, अब तेरी प्यास शीघ्र ही बुझने वाली है, तू थोड़ा-सा और धैर्य धारण कर। इन्दु अपने मन मे कह रही है कि हे प्रभु क्या आज मेरा सतित्व भग हो जायगा, क्या ये कामी नर पिशाच मेरे सौन्दर्य मे काला धब्बा लगाकर मेरे जीवन के सुख रजनी को समाप्त कर देंगे। ये कामातुर व्यक्ति मेरी अनुपम विनय पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। प्रभु क्या अभी मेरा सतीत्व लुट जायेगा। मै सद्ग्रन्थो में पढ़ चुकी हू कि जब सांसारिक पुरुष कोई नहीं सहायता करता है, तब करुणाकर प्रभु उसका उद्धार करता है, क्या ये सब वाक्य व्यर्थ हो जावेंगे। क्या आज ये गन्दे अनपढ़ गुण्डे एक आर्य ललना का जो विद्या में निपुण है तथा जो तेरी उपासना में निशि दिन डूबी रहती थी, उसके सौन्दर्य को लूट लेंगे।

उन गुण्डों मे से एक ने जब इन्दु को पकड़ा तो उसी समय इन्दु ने उच्च स्वर से पुकारा कि प्रभु मेरा सतीत्व लुटने जा रहा है, कोई बचाओ इन गुण्डो से। क्या इस विश्व मे इस समय राम, जटायु तथा भीम के सदृश्य कोई नवयुवक वीर नहीं है जो मेरा उद्धार कर दे। उसी समय एक ब्रह्मचारी सिंह के सदृश्य झूमता हुआ आ रहा था, जिसका शरीर वज्र के तुल्य था और जिसकी विशाल बाहु आततायियों के लिये खड्ग के सदृश्य थे। जब उसने देखा कि एक नारी को कुछ गुण्डे उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा कर रहे हैं और वह बेचारी प्रभु मेरा उद्धार करो, कोई युवक मेरा उद्धार करो, क्या आज मेरा सतीत्व लुट जाये की पुकार कर रो रही है, और गुण्डे उसके मुख के सौरभ के पान की चेष्टा कर रहे हैं, उसी समय वह ब्रह्मचारी प्रबल वेग से उन गुण्डों पर झपटा और दो गुण्डो को धरा पर पटक कर तीसरे के ऊपर उसकी छुरी छीन कर उसके पेट में घुसेड़ दिया। जिससे वह छटपटा कर शीघ्र मृत्यु की गोद में सो गया, और दो को उनके दोनो नयन नष्ट कर उन्हें उस सुनसान स्थानमे छोड़ दिया, और कहा कि अब तुम किस नयन से किसी आर्य ललना पर कुदृष्टि डाल कर कर उसके सतीत्व को भग करोगे।

इन्दु ने पूछा भैया कि तुम कौन हो जो तुमने मेरे सतीत्व की रक्षा की। ब्रह्मचारी ने कहा कि मै एक गुरुकुल का स्नातक हूं, मेरे गुरु ने मुझे गृहस्थाश्रम की नारियो की सेवा करने का मुझसे व्रत कराया था उसी की परीक्षा आज मैने अपने गुरु को दी है। इतने मे गुरु ने देखा कि इन्दु नव यौवन से भर पूर खड़ी है, एक लाश तथा दो व्यक्ति नयन विहीन पड़े हैं। गुरुने पूछा यह क्या, ब्रह्मचारी ने कहा युवती उद्धार।

## सार-सूचना

—१२ नवम्बर को दिल्ली से अजमेर के ऋषि निर्वाणोत्सव तथा गोआ के आर्य सम्मेलन में भाग लेने के लिये आर्यो की एक स्पेशल ट्रेन जायगी।

—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

—१० अगस्त को आर्य उप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर की अन्तरङ्ग की बैठक आर्यसमाज गोपन में १ बजे से होगी।

—देवनाथसिंह मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण सं० एल –६०

श्रावण ५ शक १८९१ शुद्ध आषाढ़ कृ ३१
[ दिनाङ्क २७ जुलाई सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L- 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य · २५९९३ तार । "आर्यमित्र

## सीनियर सब जज जालन्धर का आदेश

**दीवान रामसरण दास तथा श्री वीरेन्द्र जी आदि को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारी घोषित करने तथा सभा के कार्यों व सम्पत्ति में हस्तक्षेप करने पर रोक–**

जालन्धर दि० १४-७-६९ । आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान प्रो० रामसिंह जी तथा मन्त्री श्री रघुवीर जी शास्त्री, ससद सदस्य की प्रार्थना पर श्री निरंजनसिंह जी मल्ला, सीनियर सब जज जालधर ने दीवान रामसरनदास, श्री वीरेन्द्र जी तथा श्री मुरारी लाल जी को निषेधाज्ञा द्वारा अपने आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी घोषित करने तथा सभा के कार्य व सम्पत्ति में दखल देने से रोक दिया है ।

सभा प्रधान तथा सभा मन्त्री जी ने अपने प्रार्थना पत्र में निवेदन किया है कि महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती जी को आर्यजगत् के सब सघटनों ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के झगड़े समाप्त करने का पूर्ण अधिकार दिया था । उक्त अधिकार के आधार पर पूज्य स्वामी जी ने प्रो० रामसिंह जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रबन्ध, नियन्त्रण तथा सचालन आदि का पूर्ण अधिकार दे दिया । परन्तु अधिकार न होते हुये भी दीवान रामसरण दास तथा वीरेन्द्र आदि सभा के कार्यों में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न कर रहे हैं । अतः उन्हें रोका जावे । इसी कारण उपरोक्त निषेध-आज्ञा का आदेश हुआ है ।

# आर्य-जगत

## माधवप्रसाद का निधन

स्व० श्री माधवप्रसादजी आर्य सिमरिया (हरदोई) का देहावसान १५ जून को आर्यसमाज ठठिया जनपद फर्रुखाबाद के मन्त्री श्री कृष्णकुमार वैद्य ( गांधी ) के ग्रह पर लगभग दो महीना की बीमारी के बाद हो गया । जिनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से श्री कृष्णकुमार ( गांधी ) वैद्य ठठिया ने किया । स्व० श्री माधवप्रसाद जी उन सात्विक दानियों में थे जिन्होंने कभी भी यश की कोई आकांक्षा नहीं की, जबकि अपने जीवनकाल में ७५००) सभा को तथा ८०४) सभा को विविध वेद प्रचारार्थ और ५०१) गोरक्षा आन्दोलन में दिया ।

इसके अतिरिक्त मृत्यु समय लगभग ६६६८) नकद कैश बैङ्को तथा धरोहर कर्जा आदि मे छोड़ने के पूर्व आर्यसमाज के कार्य को चलाने के लिये २०/२९ फरवरी ६८ को सात आर्य व्यक्तियों की समिति की रजिस्ट्री कर दी है ।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें । —अनन्तराम शर्मा
प्रधान समिति किरतिया

—आर्यसमाज शाहजहापुर ने अपनी एक सभा मे, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री राजकिशोर जी की असामयिक मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है ।
—डा० तिलकूलाल

—सम्भाल का मुजफ्फरनगर में ८ से १० जून तक आर्यसमाज का उत्सव हुआ । और नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई । मा० वेदपाल जी प्रधान और श्री जयभगवान जी मन्त्री चुने गये ।
—वीरेन्द्र वीर

—बीकानेर में सब समाजों ने मिलकर केन्द्रीय सभा की स्थापना की है । जिसके प्रधान श्री अमर नाथ जी और मन्त्री श्री महावत्त जी शर्मा निर्वाचित हुये हैं ।

—रेलवे कालोनी असुरन गोरखपुर ने अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति का गठन किया है ।
—मन्त्री

—२८ जून को आर्यसमाज मऊ (आजमगढ़) के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री स्वयम्बर राय जी का ७० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया । —मन्त्री

—दुःख है कि आर्यसमाज सीमरिया (हरदोई) के श्री माधव प्रसाद जी आर्य का १५ जून को श्री कृष्णकुमार जी वैद्य ठठिया के यहा देहान्त हो गया । वैद्य जी ने १५ दिन अपने घर पर रख कर सेवा चिकित्सा की । आपका अन्त्येष्टि सस्कार गगाघाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया । —कृष्णचन्द्र प्रधान ठठिया

—आर्य समाज केराकत (जौनपुर) का ४७ वां वार्षिकोत्सव १४ से १७ जून तक समारोह पूर्वक मनाया गया । —मन्त्री

—८ से ११ जून तक आर्य समाज बिस्वा ( सीतापुर ) का वार्षिकोत्सव हुआ । श्री आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास, श्री प० श्याम सुन्दर जी शास्त्री, श्रीमती प्रकाशवती जी और श्री धर्मराजसिंह जी के व्याख्यान और भजन हुये ।
—मंत्री

—आर्यसमाज सदर दिल्ली का उत्सव ७ दिन तक समारोह से मनाया गया । कई उपयोगी प्रस्ताव पास हुये । —मन्त्री

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून ने डोई वाला के पूर्व प्रधान वैद्य मोहनलाल जी की आकस्मिक मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है ।
—देववत्त वासी मन्त्री

## आर्य वर चाहिये

एक २४ वर्षीया, स्वस्थ, सुशील गृह कार्य मे दक्ष, कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका व पंजाब की शास्त्री आर्य कन्या के लिये । वर अच्छी आय वाला, आर्य समाजी २५ से ३२ वर्ष तक का स्वस्थ, सुशील दहेज न मांगने वाला, कम से कम शास्त्री, आचार्य या एम.ए. हो । अहलुवालिया खत्री या किसी भी कुलीन वंश का हो । पत्र व्यवहार का पता–कुं० रणजीत एफ. ८९ बजाज नगर, जयपुर-४ (राजस्थान)

(पृष्ठ २ का शेष)

करता है कि हैदराबाद आर्य महासम्मेलन मे पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को अधिकार आर्यजगत् ने दिया था और सार्वदेशिक सभा ने जिसकी पुष्टि की थी, उस आधार पर स्वामी जी के निर्णयों और आदेशों की जिन्होंने अवहेलना की है, वे भविष्य में ऐसी हरकत न कर सके इसकी समुचित और कठोर व्यवस्था की जावे । आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा में ही यदि इस तरह की अनियमितताओं को प्रोत्साहन दिया जायेगा तो प्रान्तीय सभाओं और आर्यसमाजों में कैसे अनुशासन स्थिर रह सकेगा ?
—उमेशचन्द्र स्नातक एम. ए.
उप मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए एम०डी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित ।

"वयं जयेम ] लखनऊ-रविवार श्रावण १२ शक १८९१, श्रावण कृ० ६ वि० सं० २०२६, दि० ३ अगस्त १९६९ [ हम जीतें

*परमेश्वर की अमृतवाणी—*

## परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है

★

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

१—वह (परमेश्वर) सर्वत्र व्याप्त है। शुभ्र काया रहित, नाड़ियों से रहित, व्रणरहित, शुद्ध तथा पाप सम्पर्क रहित है। क्रान्तदर्शी (सर्वज्ञ) साक्षी, सर्वाधिष्ठाता, स्वयं सत्तावाला, सनातन काल से प्रजाओं के लिये पदार्थों का यथावत् रूप से विधान करता है। अथवा शाश्वत कल्प-कल्पान्तरों से यथावत् रूप से जगत् पदार्थों को रचता है।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते। ततो भूय ऽइव ते तमो य ऽउ सम्भूत्यां रताः ॥

२—जो प्रकृति की (अव्यक्त कारणतत्त्वों की) उपासना करते हैं, वे घोर अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं और जो कार्यरूप सृष्टि में रमे रहते हैं, वे उससे भी अधिक गाढ़ अज्ञानान्धकार में प्रविष्ट होते हैं।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥

३—सृष्टि (ज्ञान) से अन्य ही फल कहते हैं। प्रकृति (ज्ञान) से अन्य फल कहते हैं। इस प्रकार धीर पुरुषों से हम सुनते हैं। जो हमें उसका उपदेश देते हैं।

## स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

ये शब्द देश के महान् नेता श्री बाल गंगाधर तिलक ने सब से पूर्व कहे थे—

स्व० श्री बालगंगाधर तिलक

२ अगस्त को आपकी पुण्य तिथि सारे भारतवर्ष में मनाई जाती है।

वर्ष ७१ | अंक २८

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम. ए.

इस अंक में पढ़िए !

# कर्म—भोग—चक्र

[ श्री पं० जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

न दुष्टति मर्त्यो विन्दते वसु,
न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्य,
मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥
—ऋ० ७-३२-२१

शब्दार्थ—( दुष्टुतिः ) दुष्ट-स्तुति करने वाला ( मर्त्य ) मनुष्य (वसु) धन, आवास, सफलता को (न) नहीं (विन्दते) प्राप्त करता। (स्रेधन्तम्) दूसरो को पीडित करने वाले को (रयि) अन्न, धन एश्वर्य (न—नशत्) नहीं प्राप्त होता। (मघवन्) हे पापनाशक भगवन् ! ( मावते ) मुझ जैसे (सुशक्तिः) उत्तम शक्तियो से युक्त सुकर्मी मनुष्य को ( इत् ) ही ( तुभ्यम् ) तेरे लिये [ वह धन प्राप्त होता है, ] (यत्) जो कि (देष्णम्) दान करने योग्य और (दिवि) प्रकाशमयी उन्नत अवस्था मे [पहुचने के लिये] (पार्ये) पर्याप्त (होता) है ।

भावार्थ—जो लोग विधिपूर्वक भगवान् की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करते, वे श्रेष्ठ धन को प्राप्त नहीं कर सकते । दूसरो को पीड़ा पहुचाने वाले लोग भी ऐश्वर्य को प्राप्त करके उसका सुख पूर्वक उपभोग नहीं कर सकते । जो सुकर्मी और त्यागी, तपस्वी एवं ईश्वर-भक्ति-परायण लोग होते हैं, वे ही उस धन को प्राप्त करते हैं, जो कि देने वाले और लेने वाले दोनो के लिये ही कल्याणकारी होता है । और ससार-सागर को पार करके सुख और प्रकाशपूर्ण उन्नत अवस्था को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है ।

### प्रवचन

कर्म-भोग-चक्र की प्रवर्त्तना अनादि-काल से होती चली आ रही है और अनन्तकाल तक चलती चली जायेगी । कर्म - फल का सिद्धान्त एक अटल सिद्धान्त है । भगवान् की अटल व्यवस्था के अनुसार अपने - अपने शुभाशुभ कर्मों के फल सभी प्राणियो को अवश्य ही भोगने पड़ते हैं । बुरे कर्मों के अशुभ फल प्राप्त होने पर पापी लोग रोते और चिल्लाते हैं, परन्तु उनकी यह हाय-दुहाई व्यर्थ हैं ।

करनी करे तो फल भरे,
करके क्यो पछताये ।
बोये पेड बबूल के,
आम कहां से खाये ॥

जैसी करनी, वैसी भरनी । यह सिद्धान्त अटल है । बोयेगा, सो काटेगा । करेगा सो भरेगा । खोदेगा, सो पडेगा । हमारे हिसाब से देर हो सकती है । अन्धेर नहीं हो सकता ।

भलाई कर चलो जग मे,
तुम्हारा भी भला होगा ।
किया जो काम नेक ओ बद,
वह इक दिन बरमला होगा ।

सहज रूप में ही सब की समझ में आ जाता है, और, प्रत्येक मनुष्य का अपना अन्तरात्मा भी इसकी सत्यता एव दृढ़ता को स्वीकारता है; तथापि इसके सूक्ष्म भेद-प्रभेद उन लोगो की समझ में नहीं आते, जो कि दर्शन-शास्त्र और मनोविज्ञान में सर्वथा ही कोरे हैं,अथवा अल्पगति रखते हैं । कुछ लोग कर्म रहस्य के विषय में प्रश्न तो कर देते हैं; परन्तु जब उत्तर दिया जाता है, तब मूर्ख की तरह ताकने लगते हैं । कर्म-फलवाद की गहन-गम्भीर उलझनों और गुत्थियों को समझने के लिये वे स्वाध्याय का व्रत धारण करें । उनको संतोष जनक समाधान प्राप्त हो जायेगा ।

## अध्यात्म-सुधा

सताया है जो औरो को,
न वह भी चैन पायेगा ।
सितमगर भी कोई देखा,
जो फूला और फला होगा ॥

हां ऐसा तो कई बार होता हुआ देखने मे आता है कि कोई घोर पापाचारी है । पहले वह कुछ उन्नत-सा होता है । मौज मजे करता और सुख भोगता है । अपने शत्रुओ को भी वह जीत लेता है । फिर सहसा ही उसका सर्वनाश हो जाता है । कवि की चेतना पुकार उठती है—

कहां गये वो दारा-सिकन्दर ?
कहां गई वह सब्ज-परी ?
अजल के मुंह मे सभी चले गये,
खुश्की रही न तरी रही ॥

कर्म-फल का सिद्धान्त दार्शनिक है । यह गहन भी है, गम्भीर भी । यद्यपि यह स्थूल रूप में, यह प्रयोग अनुभूत है । और भी बहुत लाभ होगे ।

ससार में जो ये विविधतायें दृष्टिगोचर हो रही हैं, इन सबके मूल मे कर्म-फल का सिद्धान्त ही अपना काम कर रहा है । शुभाशुभ कर्मो के अनुसार ही प्राणियो को शुभाशुभ योनियो, शुभाशुभ ऐश्वर्य, शुभाशुभ माता, पिता, शरीरों, परिजनो, मित्रों और परिस्थितियो आदि-आदि की प्राप्ति होती है । पुनर्जन्म और कर्म-फल वाद के सिद्धान्तो का आपस मे गहरा सम्बन्ध है । तत्त्व दर्शियो ने कर्मो का निरूपण बीजो के रूप मे किया है । अर्थात् जैसे बीज बोये जायेंगे, वैसे ही वृक्ष और पोदे पैदा होंगे, और उनके अनुरूप ही फल भी लगेंगे । इसी प्रकार जैसे कर्म किये जाते हैं, उनके अनुरूप ही सुख, दुःख और जन्म मरण आदि परिणाम भी सामने आते हैं । भगवान् न तो किसी को लट्ठ उठाकर मारता है, और न ही हाथ फैलाकर बचाता है । उसकी कुछ सुनिश्चित योजनाए एव व्यवस्थाएं हैं । उसके राज्य में कोई भी नेकी बरबाद नहीं होती । और न ही कोई पापी अपने अशुभ कर्मों के अनिष्ट फल भोग से बच ही सकता है । भगवान् के राज्य में निर्दोष लोगो का घात-प्रत्याघात नहीं होता । वहां सिफारिश और रिश्वत भी नहीं चलती । ईश्वर सबके भले बुरे कर्मो को देख रहा है,और सभी को उन-उनके कर्मों का फल दे रहा है । मनुष्य कर्म करने में तो स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है ।

प्रारब्ध क्या है? कर्मों के फल ही प्रारब्ध कहलाते हैं । प्रत्येक मनुष्य को कर्म करने की तो पूरी स्वतन्त्रता है, वह चाहे तो शुभ कर्म करे, और चाहे तो अशुभ कर्म करे, और न चाहे, तो कुछ भी न करे । परन्तु अपने किये हुये शुभ और अशुभ कर्मो का, शुभ और अशुभ फल तो उसे ईश्वर की अटल व्यवस्था के अनुसार भोगना ही होगा । कुछ कर्मों का फल तुरन्त ही सामने आता है । जैसे आग को छूने से हाथ जल जाता है । कुछ कर्मों का फल कालान्तर मे होता है । जैसे बच्चो के जन्म और वृक्षो के फल । कुछ कर्मों के फल अधिक काल के पश्चात् या दूसरे जन्म मे भोगे जाते हैं । जैसे इसी जन्म मे लगडा लूला वा अन्धा होना, या जन्म से ही अन्धा अपग और दरिद्र पैदा होना ।

जो कुछ होता है, वा प्राप्त होता है, वह सब कुछ सचित कर्मों का या पूर्वकृत कर्मो का प्रति फल ही नहीं है । कुछ नये कर्म, नई घटनाए, और नई उपलब्धियां भी होती हैं, परन्तु कौन-सा कर्म नया है ? और कौन-सा कर्म प्रतिक्रिया या प्रति फल स्वरूप है ? इस विषय में निश्चय से कुछ भी कहना कठिन है ।

गहना कर्मणो गतिः ।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

लखनऊ-रविवार ३ अगत ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

# महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

काशी का शास्त्रार्थ महर्षि दयानन्द के जीवन की एक विशेष घटना हरिद्वार में पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर और काशी मे भारत के तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वानो से शास्त्रार्थ कर महर्षि दयानन्द ने अन्ध-विश्वास और रूढ़िवाद को धक्के लगाये थे। काशी शास्त्रार्थ ने वाद की शास्त्रार्थ पद्धति को बल दिया था। ज्ञान वृद्धि और स्वावलम्बन का निर्णय करने में शास्त्रार्थ का बहुत महत्त्व है। यह खेद की बात है कि अब यह पद्धति कम होती जा रही है, अथवा लुप्तप्राय हो गई है। यदि इस शताब्दी समारोह से हमको बल मिल सके तो बहुत अच्छा होगा।

समारोह-समिति ने निश्चय किया है कि यद्यपि समारोह का सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश करेगी, परन्तु इसे सार्वभौम रूप देने के लिये देश-विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों एव आर्य जनता से सहयोग की याचना की जा रही है। इस सम्बन्ध में पत्र भेजे जा रहे हैं और वैयक्तिक रूप से सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है। समारोह १६ से २१ नवम्बर १९६९ तक काशी के आनन्दबाग में होगा। उसका कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। अक्तूबर मास में आर्यसमाज के विद्वान् भारत की शास्त्रार्थ यात्रा करेंगे। आशा है सभी नर-नारी इस पवित्र कार्य में अपना सहयोग देंगे।

निवेदक—
—महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम ए
सयोजक, महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ शताब्दी
एव
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
(शिविर कार्यालय-कन्या गुरुकुल, हाथरस
जिला-अलीगढ़, उ० प्र०

## उत्तरप्रदेश नैतिक पतन के गर्त में

✱

आज जब कि मानव चन्द्रलोक पर पहुच कर अपने बुद्धि कौशल पर गर्व कर रहा है। वहीं उत्तरप्रदेश जैसे धार्मिक क्षेत्र में नारी जाति के सतीत्व अपहरण की अनैतिक और निम्न श्रेणी की घटनायें किस मानवता प्रेमी की आँखों में अश्रु नहीं लाती, और कौन ऐसा आदर्श नागरिक होगा जो इस प्रकार के वातावरण को अधिक सहन कर सकेगा। इस अन्याय अत्याचार और बलात्कार के प्रति उसका खून न खौल उठेगा।

हम शासन से आशा करते हैं कि वह नागरिक जीवन मे आशा और विश्वास उत्पन्न करने में सफल होगा। पर जब शासन का अस्वेच्छा चारिता हो तब ऐसी आशा करना एक दुराशा ही होगी।

## टिहरी के गाँव में सामूहिक बलात्कार

काडी गाँव मे आवकारी विभाग के १५ कर्मचारियों के एक दल ने ग्राम की नवयुवतियो से जिनमें अविवाहित लडकियाँ भी थीं, बलात्कार किया।

उपर्युक्त समाचार टिहरी जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री भूदेव लखेडा ने पत्रकारों को एक भेंट में बताया। अब उस क्षेत्र की जनता की ओर से इस कांड की न्यायिक जाँच की माँग की जा रही है।

## पर्वतीय जिलो की २७ युवतियों को १,१०,०००) रु. में बेचा गया

टिहरी, उत्तर काशी, देहरादून आदि पर्वतीय क्षेत्रों से दलालों व साहूकारों द्वारा २७ युवतियाँ भगायी गयीं। पर्वतीय क्षेत्र के सामाजिक कर्यकर्ता श्री भगवानदास मुल्तानी ने उत्तर प्रदेश शासन से इस अनैतिक व्यापार की रोक थाम के लिये पूरी शक्ति के साथ सख्त कदम उठाने की मांग की है। यदि सरकार ने इस ओर उदासीनता दिखाई तो वेश्यावृत्ति को बढ़ावा मिलेगा।

## मिर्जापुर में हरिजन युवती सतिया से बलात्कार और हत्या

इस समाचार पर उत्तरप्रदेश विधान सभा मे पर्याप्त चर्चा हो चुकी है, और आगे जाँच करने का आश्वासन मिला है।

ऊपर के तीनों उदाहरण उत्तर प्रदेश के हैं। इन समाचारों को सुन कर किसका सिर शर्म से नहीं झुकेगा। हमें चन्द्रमा पर चढ़ने के बजाय अपने देशवासियो के अधिकारो की रक्षा के लिए प्रयत्न करना होगा।

हम उत्तर प्रदेश प्रशासन और कांग्रेस मन्त्रि मण्डल से मांग करते हैं कि तीनो काण्डो की निष्पक्ष एव शीघ्र जाच कर उचित कार्यवाही की जाय और जनता में विश्वास उत्पन्न किया जाय। अन्यथा राज्य में अराजकता ऐसी फैलेगी जिसका रोकना कठिन होगा। इसी प्रकार की घटनायें अन्य राज्यों में भी हो रही हैं, वहा भी ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्यसमाज सरकार से माग करता है कि इस विषम सामाजिक स्थिति से मिटाने के लिये समाज सेवी सस्थाओ का सहयोग प्राप्त किया जाय। आर्य समाज का समाज सुधार का अपना विशेष योगदान रहा है। इस समय भी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और आर्योपप्रतिनिधि सभा गढवाल ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। सरकार को भी इस दिशा मे सक्रियता दिखानी चाहिए।

## फिलमो मे चुम्बन पर प्रतिबन्ध रहे

भारत सरकार को फिल्म सेन्सर शिप जाच समिति का प्रतिवेदन प्राप्त हो गया है। उसने जहाँ बहुत-सी सस्तुतियाँ की हैं वहीं यह भी सस्तुति की है कि फिल्मों में चुम्मन दृश्यों के ऊपर लगा प्रतिबन्ध समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

आज जब कि चुम्मन दृश्यों पर प्रतिबन्ध है तब तो सिनेमा किशोर-किशोरियों के जीवन में कितना अधिक रोमांस और उत्तेजना फैलाने में समर्थ है, और जब चुम्बन के दृश्य प्रदर्शित होने लगेंगे। तब देश को युवा पीढ़ी के चरित्र पर क्या बीतेगी यह बडा गम्भीर प्रश्न है। आधुनिकता के नाम पर हम अपनी सभी नैतिक मान्यताओ को समाप्त करते जा रहे हैं। परन्तु हमे याद रखना चाहिए कि योरोप और अमेरिका आज युवा पीढ़ी के चरित्र ह्रास पर जिस प्रकार चिन्तत हो रहे हैं, उसी प्रकार हमें भी पछिताना पडेगा। हमे दूसरों के पतन को देखकर स्वय देश को बचाना चाहिए। हम देश के सभी सामाजिक एव प्रशासनिक कर्णधारों से अनुरोध करेंगे कि वे फिल्मों में चुम्बन दृश्यों को दिखाने की सस्तुति का विरोध करें।

✱

## श्री मन्त्री जी का भ्रमण पुरोगम

प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के सुयोग्य माननीय मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम. एल. ए. हाथरस निवासी ने सभा के लिये धन सग्रहार्थ एवं समाजो का संगठन दृढ़ करने हेतु प्रान्त में भ्रमण करने का निश्चय किया है। श्री मन्त्रीजी महोदय जिस-जिस समाज मे पहुचें, उनके अधिकारियो को चाहिये कि वे उनका भव्य स्वागत करे और सभा के लिये पुष्कल धन भेंट करने की कृपा करें।

—शिवकुमार शास्त्री ससत्सदस्य
सभा प्रधान

## आर्य जगत् को हर्ष सूचना

श्री प० रामदयालु जी शास्त्री आर्यसमाज के मूर्द्धन्य विद्वान् और कुशल वक्ताओ मे हैं। श्री शास्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक और सभा की ओर से वर्षों हरियाणा वेद प्रचार मण्डल के वेदप्रचार अधिष्ठाता रहे हैं। सभा के कार्य को छोड़कर श्री शास्त्री जी मुल्तान डी० ए०वी० हाईस्कूल मे संस्कृताध्यापन के साथ भी निरन्तर प्रचार करते रहे।

भारत विभाजन के बाद अलीगढ डी०ए०वी० इ०कालिज मे सस्कृत के प्रवक्ता रहे और यहां भी कथा और भाषणो के द्वारा उनका प्रचार का क्रम चलता रहा है। अब श्री शास्त्री जी कालिज के कार्य से निवृत्त हो गये हैं,और वे निर्बाधरूप से कार्यक्रमो पर जा सकते हैं। श्री शास्त्री जी हिन्दी के अतिरिक्त सस्कृत और अग्रेजी मे भी भाषण कर सकते है। शंका-समाधान और पौराणिको से शास्त्रार्थ भी कर सकते हैं। जो आर्य समाजें श्री शास्त्री जी से लाभ उठाना चाहें ३ ए० कृष्णा टोला, अलीगढ़ के पते पर पत्र-व्यवहार करे।

—धर्मेन्द्रसिंह आर्य
देहरादून

## प्रोग्राम वेद प्रचार सप्ताह २७ अगस्त से ४ सितम्बर

१—श्री बलवीर शास्त्री महोपदेशक—२७ अगस्त से ८ सितम्बर तक मऊनाथ भजन।

२—श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री महोपदेशक—२४ अगस्त से ८ सितम्बर तक गोला एव लखीमपुर खीरी।

३—श्री केशवदेव शास्त्री महोपदेशक—२४ अगस्त से ४ सितम्बर तक भर्थना।

४—श्री जयेन्द्र जी शास्त्री—फैजाबाद आ० स०।

५—श्री शंकरलाल आर्य-आर्य समाज मैनपुरी।

६—श्री वेदपालसिंह जी—आर्य समाज भर्थना।

७—श्री ज्ञानप्रकाश जी—आर्य समाज मऊनाथ भंजन।

## वेद प्रचार सप्ताह पर आमन्त्रित कीजिये

श्री रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर
,, गजराज सिंह जी
,, धर्मराजसिंह जी
,, खेमचन्द्र जी
" विन्ध्येश्वरीसिंह जी
,, प्रकाशवीर जी शर्मा
" जयपालसिंह जी
,, मुरलीधर जी
,, रामचन्द्र जी कथावाचक
,, खडगपालसिंह जी
,, रघुवरदत्त जी शर्मा
,, महिपालसिह जी

### संन्यासी

श्री योगानन्द जी सरस्वती
,, प्रणवानन्द जी ,,
,, रुद्रानन्द जी ,,

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में

### आर्यमित्र का विशेषांक

# मूर्त्ति पूजा निषेधाङ्क

### प्रस्तावित रूपरेखा

समस्त आर्य विद्वानो की सेवा में निवेदन है कि आर्यमित्र का विशेषांक मूर्ति पूजा निषेधाङ्क काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में प्रकाशित होगा। इसकी प्रस्तावित रूपरेखा मे से आप स्वयं अपने लिये अपने विषय का चुनाव कर सूचित करने की कृपा करें। और उस विषय पर आप लेख लिखें।

विषय—१—मूर्ति पूजा और वेद
२—मूर्ति पूजा और वेदो की शाखाए
३—मूर्तिपूजा और ब्राह्मण ग्रथ
४—मूर्ति पूजा और उपनिषद् ग्रथ
५—मूर्ति पूजा और आरण्यक ग्रन्थ
६—मूर्तिपूजा और दर्शन ग्रन्थ
७—मूर्ति पूजा और निरुक्त
८—मूर्ति पूजा और व्याकरण ग्रन्थ
९—मूर्ति पूजा और गीता
१०—मूर्ति पूजा और स्मृति ग्रन्थ
११—मूर्ति पूजा और आयुर्वेद शास्त्र
१२—मूर्ति पूजा और बौद्ध धर्म
१३—मूर्ति पूजा और जैन धर्म
१४—मूर्ति पूजा और इस्लाम
१५—मूर्ति पूजा और क्रिश्चियन मत
१६—विभिन्न सम्प्रदायो में मूर्तिपूजा की स्थिति
१७—मूर्ति पूजा तथा ससार के अन्य देश
१८—मूर्तिपूजा का आदि स्रोत
१९—मूर्ति पूजा और पुराण ग्रन्थ
२०—मूर्तिपूजा और महाभारत
२१—मूर्ति पूजा और रामायण
२२—पौराणिक समत सब अवतारो पर प्रत्येक अवतार का पूर्ण पौराणिक स्वरूप और उनका वैदिक स्वरूप।
२३—विभिन्न देवताओं का पौराणिक स्वरूप और वैदिक स्वरूप।
२४—वैदिक धर्म के प्रचार से मूर्तिपूजा की मान्यतापर प्रभाव
२५—मूर्ति पूजा को ससार से मिटाने के सफल उपाय इत्यादि

इस विषयो मे से अपने लिखने के लिये विद्वान् स्वयं चुनाव कर हमे शीघ्र सूचित करें।

नोट—(१) बहुत बडा विशेषाक होते हुए भी मूल्य केवल २) रुपये ही रखा जावेगा। ग्राहक सूचित करे कि उन्हे कितनी प्रतियां चाहिये।

(२) विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा ले।

विशेष [क] जो आर्यमित्र के ग्राहक बन जावेगे उन्हे बिना मूल्य यह विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। इस समय आर्यमित्र का वर्ष भर का चन्दा केवल १०) है।

[ख] ग्राहक बनाने वाले एजेन्टो की भी हमें आवश्यकता है जो अपने-अपने नगर और प्रान्त में ग्राहक बनावेंगे उन्हें कमीशन दिया जावेगा।

निवेदक—

आचार्य विश्वश्रवा व्यास, एम. ए. वेदाचार्य, प्रचार मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

उमेशचन्द्र स्नातक, एम. ए., सम्पादक आर्यमित्र

# अमरीकी मानव चन्द्रलोक पर पहुंच कर वापस आ गए

## आर्मस्ट्रांग व एल्ड्रिन २॥ घण्टे चन्द्र पर घूमते रहे

### इस सफलता पर विश्व भर से हर्षोल्लास

सृष्टि के इतिहास मे पहली बार अमरीका के दो मनुष्यों ने २१ जुलाई को ८ बज कर २७ मिनट पर चाद की धरती पर पग रखा। यह गौरव अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री आर्मस्ट्राग को प्राप्त हुआ। उनके २० मिनट बाद श्री एल्ड्रिन भी चन्द्र पालकी से निकल कर चन्द्र तल पर उतर आया। दोनो अन्तरिक्ष यात्री एक सीमित क्षेत्र पर भ्रमण करते रहे। उन्होंने वहां मिट्टी और चट्टानो के टुकड़े जमा किये।

उन्होने वहा अमरीका का ध्वज और शान्ति पट्टी गाड़ी। कुछ वैज्ञानिक परीक्षण किये। २ घण्टे १४ मिनट के बाद वह पुन चन्द्र पालकी मे आ गये। चाद तल पर पग रखने की ऐतिहासिक घटना निश्चित कार्यक्रम से साढे तीन घण्टे पूर्व ही घटित हो गई। अन्तरिक्ष यात्रियो ने चाद के अन्तर्तल के विषय मे बहुत-सी तस्वीरे टेलीवीजन से भूमि पर भेजीं। वहां का आखो देखा हाल प्रसारित किया और प्रधान निक्सन से फोन पर बात-चीत की।

चाद मे ठहरने के मध्य भूमि के साथ उनका सम्पर्क स्थिर रहा। अमेरिकी रेडियो के माध्यम से ससार के करोड़ो व्यक्तियो ने चाद मे मानव के उतरने और वहाँ ठहरने का हाल अपने कानो से इस तरह सुना जिस तरह वह आकाशवाणी पर किसी क्रिकेट मैच का आंखो देखा हाल सुनते हैं।

होस्टन, २१ जुलाई—दो अमरीकी अन्तरिक्ष यात्रियों की चन्द्र पालकी रात १ बज कर ४२ मिन्ट पर चाद में उतरी। अन्तरिक्ष यात्री पौने ७ घण्टे चन्द्र पालकी के अन्दर बैठे रहे। फिर सबसे पहले आर्मस्ट्राग चांदपालकी से बाहर निकला। जब उसने अपना बाया पाव चांद की धरती पर रखा तो लड़खड़ाती आवाज में कहा कि यद्यपि चांद पर यह छोटा-सा कदम है, किन्तु वस्तुतः मानव इतिहास मे यह एक बहुत बड़ी छलांग है।

चाद के विषय मे अपने अनुभव बताते हुये श्री आर्मस्ट्राग ने कहा कि वस्तुत यहां की मिट्टी भुरभुरे कोयले की तरह है। मै इसे अपने पाव की अगुलियो से उठा सकता हू। मुझे चाद पर चलने मे कोई कठिनाई पेश नहीं आ रही। यहां छाये हुए साये इतने गहरे है कि यह सूझता ही नहीं कि मै कहां चल रहा हू। जब चन्द्रपालकी की ओर देखता हू तो उसकी रोशनी के कारण हर वस्तु नजर आ जाती है।

आर्मस्ट्राग मे जब चाद तल पर पग रखने के बाद मिट्टी खोदना शुरू किया तो उसने कहा मिट्टी खोदने मे कुछ कठिनाई आ रही है। क्योकि भूमि सख्त है। यह भूमि प्राय अमरीका के पश्चिमी मरुस्थल जैसी है किन्तु इसकी अपनी विशेष सुन्दरता है। आर्मस्ट्रांग ने मिट्टी अपनी सूट की जेब मे डाली।

आर्मस्ट्रांग का साथी एल्ड्रिन जब चन्द्रपालकी के बाहर निकल कर चन्द्रतल पर उतरा तो उसे कुछ देर के लिये सख्त सरदी अनुभव हुई चलते समय उसका एक पांव आर्मस्ट्राग के सूट की एक तार मे उलझ गया। किन्तु कुछ सेकेण्ड मे ही इस स्थिति पर काबू पा लिया गया।

जब दोनो अन्तरिक्ष यात्री चांद की धरती पर चलने लगे तो उनके पैरो मे पहले कुछ लड़खड़ाहट अनुभव की गई, किन्तु बाद मे वह बड़े विश्वास से उछल कर चलने लगे। एल्ड्रिन ने अपने अनुभव ब्यान करते हुये कहा कि चांद सुन्दर है, और अति सुन्दर है। आज की घटना मेरे जीवन की महानतम घटना है, और मैं अपनी भावनायें व्यक्त नहीं कर सकता। आर्म स्ट्राग चाँद तल पर २ घण्टे १४ मिन्ट रहे। उनके दूसरे साथी उससे २० मिन्ट कम। इस मध्य उन्होने चाद तल के चित्र और चट्टानो के नमूने जमा किये। कुछ वैज्ञानिक परीक्षण भी किये।

नियन्त्रण केन्द्र ने बतलाया कि अन्तरिक्ष यात्रियो ने वह सब जरूरी काम ठीक ढग से पूर्ण किये जो उन्हें सौंपे गये थे। उनकी इस सफलता के पश्चात् अब यह आशा उत्पन्न हो गई है कि मानव चांद के अतिरिक्त दूसरे ग्रहों मे भी जा सकेगा। आज से ग्रहो की यात्रा का काम शुरू हो गया है।

चन्द्रतल का वातावरण ऐसा है कि उसमे दोनो अन्तरिक्ष यात्रियो को एक दूसरे की आवाज सुनाई नहीं देती थी। उन्होने एक दूसरे के साथ रेडियो के माध्यम से बातचीत की।

चाँद पर ठहरने के मध्य एक चरण ऐसा भी आया जब सूर्य की रश्मियो से चाँद का एक भाग जगमगा उठा और उसकी चट्टानें स्पष्ट दिखाई दीं। जब तक सूर्य नहीं निकला था अन्तरिक्ष यात्रियो ने बड़ी सरदी अनुभव की सब ओर अन्धकार का साम्राज्य था। चन्द्र पालकी के कारण उन्हे कुछ रोशनी मिलती रही। ★

---

# तीनों चन्द्र-यात्री प्रशान्त महासागर में सकुशल उतरे

## हेलीकाप्टर ने अन्तरिक्ष यात्रियों का जहाज पर पहुंचाया

### वापसी का दृश्य देखने वालो मे निक्सन व रोजर्स भी

यू०एस० एस० होरनेट जहाज से, २४ जुलाई (ए० प्रे०) एक महान् अन्तरिक्ष यात्रा का सफल समापन हुआ। चन्द्रमा की सतह पर अपनी विजय पताका फहराने वाले तीनों अन्तरिक्ष यात्री रात १० बजकर २० मिनट पर प्रशान्त महासागर मे सकुशल उतर गये। अमरीका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन जहाज पर उपस्थित थे। वह दूरबीन से अन्तरिक्ष यात्रियो की वापसी का रोमाचक दृश्य देख रहे थे।

प्रशान्त महासागर मे उतरने के कुछ देर बाद ही तीनो अन्तरिक्ष यात्रियो-नील आर्मस्ट्रांग, एडविन एल्ड्रिन व माइकेल कोलिन्स को समुद्र मे निकालकर हेलीकाप्टर द्वारा जहाज पर पहुचा दिया गया।

अन्तरिक्ष यात्रियो के उतरने के लिये पहले जो स्थान चुना गया था उससे करीब ४०० कि० मी० दूर अन्तरिक्षयात्री उतरे।

अन्तरिक्ष-यात्री बिल्कुल सही

(शेष पृष्ठ ११ पर)

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें।

इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।

२—समस्त भारत में शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।

३—प्राचीन कोई यज्ञ।

४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।

५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।

६—शोध-पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष मे दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि संग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो सकता है।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों मे स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करे। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य में जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से ससार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा. जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन संग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अत. आर्य भाइओ को सीधा इसके लिये नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक मे पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे।

पता—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# तभी प्रगति को प्राण मिलेगा

आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री, उपप्रधान आ.प्र सभा उ.प्र, बरेली

'पथ को पांव, पांव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।'

अलस-भाव को तजकर साथी,
अनलस-भाव बनाने होंगे।
श्रम-सीकर से मण्डित तनकर,
दुःख-भाव मुसकाने होंगे।
कर को कर्म्म, कर्म्म को कर दो, तभी सुकृति प्राण मिलेगा।।
पथ को पांव, पाव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।।

श्रम से सिंचित इस वसुधा पर,
घोर अभाव नहीं टिक सकता।
मानव के सत् से, अप्राविक—
रुपये सेर नहीं बिक सकता।
श्रम को सत्य, सत्य को श्रम दो, तभी सिद्धि-उद्यान मिलेगा।
पथ को पांव, पांव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।।

राजनीति - पथ - भ्रष्ट, निरकुश—
दानव, सबको खाये जाता।
मानव की आशाओं का, सिन्दूर—
सखे! मुरझाये जाता।
नय को धर्म, धर्म को नय दो, तभी नीति को मान मिलेगा।
पथ को पांव, पांव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।

सिसक रही है कली बिचारी,
मानवता रोती है झर - झर।
वसुधा का कण-कण बोझिल है,
तन - मन - धन मानव का जर्जर।
सुख को दुःख, दुःख को सुख दो, तभी अश्रु को गान मिलेगा।
पथ को पांव, पांव को पथ दो तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।

प्रासादो के रहने वालो!
झोपड़ि का अवसाद देख लो।
माल मुफ्त का खाने वालो।
भूख - मरों सा स्वाद देख लो।
धन को निधन, निधन को धन दो,तभी विकृति को दान मिलेगा।
पथ को पांव, पाव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।।

भूतल औ आकाश मिलाकर,
हमको क्षितिज बनाना होगा।
'भूतल के दोनो ध्रुव, कर से—
एक करें, यह गाना होगा।
नभ को धरा, धरा को नभ दो, तभी सृष्टि को मान मिलेगा।
पथ को पांव, पाव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।।

ज्ञान, कर्म - उपजीव्य बनेगा,
कर्म, ज्ञान का हो उपजीवन।
देह, प्राण का मर्म बनेगा।
प्राण, देह का हो सजीवन।
कृति को ज्ञान, ज्ञान को कृति दो, तभी प्रकृति विज्ञान मिलेगा।
पथ को पांव, पांव को पथ दो, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।

उठो, जागो, वर लो वरेण्य को,
ज्ञान - कर्म से भक्ति मिलेगी।
करते ही प्रत्यक्ष सत्य को,
सखे! चिरन्तन-शक्ति मिलेगी।
सत् को भाव भाव को सत् दो, तभी सत्य वरदान मिलेगा।
पथ को पांव, पांव को पथ दो,, तभी प्रगति को प्राण मिलेगा।।

# मैं-मेरा

## नैतिक उत्थान आन्दोलन

—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट
आगरा

आध्यात्मिक विषयों पर विचार करते हुये अहकार शब्द पर विचार करने का ध्यान आया। अहकार का प्रयोग अन्तःकरण चतुष्ट. के सम्बन्ध में सम्मुख आता है। मन, बुद्धि, चित्त और अहकार अन्तःकरण चतुष्ट. के अन्तर-र्गत आते है। इसके साथ मन की दूषित वृत्तियों मे भी अहकार का समावेश है। काम, क्रोध, लोभ मोह और अहंकार पांच मानसिक विकार या दूषित मनोवृत्तीय लाते जाते हैं। शरीर धारी जीवात्मा को कर्म करने के लिये शरीर साधन के रूप मे मिला है और शरीर मे पाच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्म इन्द्रियां और ग्यारहवां मन आत्मा को शरीर के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कराने, कर्म करने, उपभोग प्राप्त करने के लिये प्रदान किये गये हैं। आत्मा को मन से काम लेने के लिये यह आवश्यक है कि वह अहकार की भावना चित्त का प्रभाव और बुद्धि के प्रभाव को समझे और इन चारो को अन्तःकरण अर्थात् अन्तरिक करण या साधन मान कर कार्य करे। इन चारों वृत्तियों मे अहकार का स्थान सबसे ऊँचा है और विचारणीय है। मानव शरीर में मन या हृदय ऐसे स्थान हैं, जहां परमात्मा और जीवात्मा का सदैव सम्पर्क और सहयोग रहता है। और मन मे ही इच्छा और दोष उत्पन्न होते हैं। इच्छा की पूर्ति और द्वेष बचाने प्रयन्त के आधार हैं। इच्छा, द्वेष और प्रयत्न तीनो मिल कर कर्म के द्योतक हैं। और कर्मों का फल या भोग भी इसी प्रतिक्रिया से प्राप्त होता है।

इच्छा द्वेष और प्रयत्न मर्यादित रहे इसके लिये यह आवश्यक है कि आत्मा सबसे पहले अपने स्वरूप को समझे। यह समझे कि मै क्या हू, कौन हू और मेरा इस शरीर से क्या सम्बन्ध हैं, और जहां शरीर जगत् से सम्बन्धित रहता है उससे अर्थात् जगत् से आत्मा का क्या सम्बन्ध है। यह समझना उसके लिये अनिवार्य है मैं क्या हूं यह अहकार का स्थान आत्मा को बनाने के लिये अन्त करण चतुष्टः में हैं।

जब आत्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान होगा तब वह मन रूपी इन्द्रिय से उचित रूप से कार्य ले सकेगा। मन के अन्दर जो इच्छा उत्पन्न हो उसके सम्बन्ध में चित्त के आधार पर यह निश्चय करना होगा कि इससे पूर्व इस प्रकार की इच्छा और उसकी पूर्ति के प्रयन्तों का क्या परिणाम हुआ और उस पुराने अनुभव और अपने स्वरूप को लक्ष्य में रख कर बुद्धि के सहारे यह निश्चय करना होगा कि मन में उठी हुई इच्छा उचित है या अनुचित। उसकी पूर्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये या नहीं। यदि इन चारों कारणो मे से किसी से भी काम लेने मे आत्मा से भूल हुई तो उसका जीवन ही निष्फल हो जाता है। या दुख मे पडने का कारण बनता है।

आत्मा शरीर मे रहते हुये मन से काम लेते हुये ज्ञानेन्द्रियो द्वारा बाह्य जगत् से सम्बन्धित रहती है। रूप, रस, गध और स्पर्श इन इन्द्रियो के विषय है, ये बड़े आकर्षक है और उनका प्रभाव बडा प्रबल रहता है। यदि आत्मा मन रूपी कारण से काम करते समय इन बाहर के जगत् के विषयों के प्रभाव मे आ जाता है तो वह मै को भूल कर मेरा या यह विचार कि मेरा है के विचार के चक्कर में पड़ जाता है। जब आत्मा 'मै' को भूल कर 'मेरे' के चक्कर मे फसता है तो उसके अन्दर एक अन्य प्रकार का अहकार का ममत्व उत्पन्न हो जाता है। इस प्रसङ्ग मे अहकार की परिभाषा घमण्ड अभिमान हो जाती है। जहाँ आत्मा के अन्दर मै क्या हू को भूल कर मेरा यह और वह का ध्यान आया वह दुनिया के चक्कर मे फस जाता है। आत्मा जब अपने को ईश्वर के सम्पर्क में समझती है तो वह अपने को अजर और अमर अनादि मानने लगती है। उसके अन्दर से मृत्यु का भय निकल जाता है। ससार मे मृत्यु सबसे बड़ा दुःख माना जाता है। अन्य प्रकार के दुःख जैसे भूख, रोग और चोट आदि लगना विशेष रूप से दुःख इसलिये माने जाते हैं कि हो मृत्यु के कारण हो सकते हैं। या उनका परिणाम मृत्यु हो सकता है। इसीलिये ईश्वर का चिन्तन आत्मा के लिये सबसे अधिक आवश्यक कर्त्तव्य माना गया है। यजुर्वेद के पच्चीसवे अध्याय का तेरहवां मन्त्र बडा प्रसिद्ध मन्त्र है। आठो उपासना के मन्त्रो मे इसका द्वितीय स्थान है। इसके आरम्भिक दो पद अर्थात्—

'य आत्मदा बलदा' बडे शिक्षा प्रद है। इनका अभिप्राय है कि जब आत्मा परमात्मा के सम्मुख रख कर अपने स्वरूप पर चिन्तन करता है तो उसके अन्दर एक महान् वस्तु आ जाती है। इसी मन्त्र मे दो पद बीच मे बडे शिक्षाप्रद है 'यस्य च्छाया अमृतम् यस् मृत्यु' अर्थात् परमात्मा की छत्र छाया मे रहने की भावना अमर पद की प्राप्ति है। उससे विमुख होना मृत्यु है या मृत्यु की ओर अग्रसर होना है।

जीवन की सफलता के लिये ससार से रचित पदार्थों को प्रयोग मे लाना भी जीवन निर्वाह के लिये अनिवार्य है। बिना पदार्थों के मेरा बनाये मैं का काम नहीं चल सकता। परन्तु मै और मेरा में समन्वय होना आत्मिक उन्नति का मौलिक रूप है। यदि केवल मै की रट लगाई जाय तो भी काम नहीं चलता यानी केवल यह मेरा और यह मेरा इसकी रट लगाई जाय तो भी कार्य पूरा नहीं होता और न लक्ष्य की सिद्धि होती है। आज के जगत् में मैं और मेरे समन्वय न होने से जो भयकर परिस्थिति सामने है उसको समझने के लिये हम कुछ जगत् के मुख्य कार्य क्षेत्रों से उद्धरण प्रस्तुत करेंगे।

सबसे पहले राजनीति के क्षेत्र को लेना। राजनीति में शासन की धूम है। शासन कौन करे, कैसे करे यह विचारणीय प्रश्न है। शासन की सफलता के लिये अनुशासन की भावना अतिआवश्यक है। अनुशासन की भावना का सम्बन्ध मै से है और शासन का मेरे से। यदि आत्मा परमात्मा के शासन मे रहना जानता है तो यह उसके अन्दर अनुशासन की भावना रहेगी। अनुशासन मे रहने वाला ही शासन का अधिकारी हो सकता है। वही शासन कर सकता है और दूसरे के शासन मे भी रहना जानता है। ससार के भिन्न भिन्नक्षेत्रो मे भिन्न-भिन्न रूप में शासन और अनुशासन की समस्या हमारे सम्मुख आती है। आज अपने देश मे स्वराज्य मिल जाने पर २०-२२ साल मे जो दुर्गति हुई है तथा हो रही है वह अनुशासन हीनता का ही प्रभाव है। मेरी भाषा, मेरा प्रान्त, मेरी जाति, मेरा सम्प्रदाय, मेरा देश यह प्रश्न सामने रहते हैं और इनके कारण देश के टुकडे हो रहे हैं। राष्ट्र

[ शेष पृष्ठ १० पर ]

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मनाने के लाभ

[ श्री आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम ए. वेदाचार्य ]

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के कार्यक्षेत्र के तीन भाग हैं–

(१) योग

(२) विद्या

(३) सामाजिक कार्य

महर्षि के उत्तराधिकारियों ने योग मार्ग के विषय मे कोई काम नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि योग जिज्ञासु सही मार्ग न मिलने पर सच्ची लगन होने पर भी गलत मार्गों पर चले गये और पाखण्ड और और सम्प्रदायो के शिकार हो गये।

सामाजिक क्षेत्र में हमने कार्य किया और वहां हम सफल भी हुये और संसार का जो भी भाग हमें जानता है वह हमारे सामाजिक कार्यों के कारण ही–

पर विद्या के क्षेत्र में आरम्भ से ही आर्य विद्वानों ने व्यक्तिगत रूप से ही कार्य किया। आर्यसमाज मे जो वेदो के भाष्य हुये वे सब व्यक्तिगत परिश्रम के परिणाम थे। इसी प्रकार अन्य सारा साहित्य जो कुछ भी लिखा गया और लिखा जा रहा है वह व्यक्तिगत ही आर्य विद्वानों की आहुतियां हैं। श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु श्री प० भगवद्दत्त जी, श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी, श्री स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती, श्री प० चन्द्रमणि, श्री प० जयदेव शर्मा, पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी, महामहोपाध्याय प० आर्यमुनि जी, प० राजाराम शास्त्री लाहौर, पं० रामचन्द्र जी देहलवी, प० आर्यभिक्षु जी आदि सबने इस अन्तिम चरण मे भी व्यक्तिगत परिश्रम से ही कार्य किया। ये सब हमारे साथी थे, इन के साथ बैठकर हम शास्त्रीय चर्चा किया करते थे पर आज जब हम काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मनाने जा रहे हैं ये मेरे साथी एक भी इस संसार में नहीं हैं, क्या होगा कैसे होगा रातें जागते बीत जाती हैं, पर अब जो हैं उन्हीं पर भरोसा है।

ऋषि के बाद प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी श्री प० लेखराम जी से लेकर आज तक जो कुछ आर्य विद्वानो ने किया है वह विद्या क्षेत्र मे कार्य करते हुये भी हमने ससार मे स्थान प्राप्त नहीं किया है। ससार के विचारक आज हमें और हमारे सिद्धान्तो को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, हमारे सही सिद्धान्त भी ससार के विद्वानों के मस्तिष्क में नहीं घुसे और थोथे विचारों पर विश्वास आज का ऊंचा पठित शिक्षित वर्ग रखता है इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त है कि सर राधाकृष्णन् जैसा विचारक व्यक्ति आज स्वामी शकराचार्य के मिथ्याजाल पर विश्वास

रखता है, पर ऋषि के सिद्धान्त त्रैतवाद पर नहीं। ये लोग हमारे प्लेटफार्म पर आकर तो स्वामी दयानन्द की प्रशसा कर जाते हैं वह सामाजिक कार्यों को दृष्टि मे रखकर न कि विद्या की दृष्टि से और हम लोग खुश हो जाते हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू से लेकर आज तक के नेता कोई स्वामी जी के बताये वैदिक सिद्धान्तो को ठीक नहीं मानता प्रत्युत वे उपहास करते है।

"यदर्थ क्षत्रिया सूते तस्य कालो ऽयमागत"

भारतीय इतिहास मे जब युद्ध की भेरी बजती थी तब क्षत्राणी माताए अपने बेटों को कहती थीं कि बेटा! क्षत्राणी माता जिस लिये बच्चा पैदा करती है उसका समय आ गया। इसी वर्ष जो आर्य विद्वान् दिवंगत हुये हैं, यदि वे होते तो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मे चार चांद लग जाते। पर आज भी जो आर्य विद्वान् हैं वे किसी से कम नहीं हैं। हमे आज काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मे उनके द्वारा यह अवसर प्राप्त होगा कि महर्षि का जो विद्या क्षेत्र में कार्य है वह अन्तर्राष्ट्रिय स्थिति को प्राप्त हो जावेगा और काशी के पण्डित भी समझ जावेंगे कि कि शास्त्रों के बारे में जो उनकी धारणाए आज तक हैं, वे गलत हैं, और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विद्या क्षेत्र में वास्तव में चमत्कार कर दिया है।

आर्यजगत् को यह नहीं भूलना चाहिये कि यह शास्त्रार्थ शताब्दी संसार मे विद्या की नगरी काशी मे होने जा रही है। इस शताब्दी महोत्सव मे सब कुछ काशी की दृष्टि से सोचना पड रहा है।

## आर्य विद्वान् तैयारियाँ करें

आर्य विद्वानों का कर्त्तव्य है कि जब सारे ससार के स्कालर और काशी के पण्डित एकत्र होकर बैठेंगे तब आर्यसमाज की ओर से उन्हे कौन सभालेगा। जिन आर्य विद्वानो के पते हमे मालूम हैं, उन को हम पत्र लिख रहे है। सभी आर्य विद्वानो का कर्त्तव्य है कि इस शताब्दी में अग्रसर हो और स्वयं हमें सूचित करें कि किस-किस विद्या के क्षेत्र मे वे हाथ बंटा सकते हैं हम हृदय से सबका स्वागत चाहते हैं अतः निःसकोच आर्य विद्वान् जिनके पास हमारे पत्र अभी तक न पहुंचे हों हमें पते सहित अपना नाम लिखकर भेज दें। बहुतों को हम जानते हैं पर उनके पते नहीं मालूम और गलत पते पर हमारे लिखे पत्र वापिस आ जाते हैं। जैसे सुरेन्द्रशर्मा गौड काव्यतीर्थ पं० रामावतार शर्मा चतुर्वेद तीर्थ आदि के पत्र गलत पता होने से वापिस आ गये।

आर्यसमाज में कुछ ऐसे परमाणु हैं जिन्हें सिवा मुकदमा लड़ने के और कोई काम ही नहीं है। जब उनसे किसी का पता पूछते हैं तो वे समझते हैं कि पता बता देने से भी कहीं हमारे केस पर प्रभाव तो नहीं पड़ जावेगा और वे पता नहीं देते। हम उन सबको सादर प्रणाम करके कहते हैं कि प्राचीन काल मे जब युद्ध होते थे, तब वर्षा ऋतु आ जाने पर चार मास के लिये लड़ाई बन्द हो जाती थी पहाड़ो पर जब बर्फ गिरने लगता है, तब वहां भी लड़ाई रोक दी जाती है वैसे ही काशी शास्त्रार्थ शताब्दी तक चार मास यह आर्य समाज का लफ्ड़ा काण्ड भी बन्द कर दो, फिर जहां तक लड़ चुके थे, वहीं से फिर शुरूकर देना। अगर बिना लड़े न रहा जाये। मुकद्दमे की तारीख सब मिलकर दिसम्बर को डलवा लो और अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर चार मास मिल कर शताब्दी पर जुट जाओ, यह ऋषि के सिद्धान्तो का ससार की कसौटी पर रखे जाने का समय है अन्यथा भार्यो यादव लोग सब आपस मे लडकर मर गये केवल तीन बचे थे [१] कृष्ण [२] बलराम और [३] सात्यकि। तुम्हारे इस यादव युग में सब समाप्त हो जावेगा। केवल तीन तुम्हारे भी बचेगे। (१) न्यायसभा (२) समाजों और सभा सस्थाओ की बिल्डिंग। (३) सरकारी पढ़ाई के के स्कूल।

## विद्वान् किस विषय पर तैयारियां करें

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर क्या होगा उसकी विस्तृत रूपरेखा

[ शेष पृष्ठ १० पर ]

# जीवन समस्याएँ

मानव जीवन की प्रमुख समस्यायें कौन-कौन सी हैं, एवं उन सबको व्यवस्था किस प्रकार की जाय, इन सबके बारे में हम सब को बहुत सूक्ष्म दृष्टि से विचार करना है। वर्त्तमान् समय में प्रत्येक व्यक्ति मानवता की उच्च कोटि को प्राप्त करना चाहता है। परन्तु उसकी प्राप्ति मे उसको अनेक व्यवधान बाधक बन जाते हैं। उन सब व्यवधानों को दूर करके जिन्हें हम प्राप्त करना चाहते हैं उसके निमित्त हमारे प्रयत्न देश, काल स्वम् सामर्थ्य के अनुसार कुछ विभागों में विभक्त हो जाते हैं और जीवन समस्या सामूहिक रूप मे प्रतीत होने लगती है। वर्त्तमान स्थिति के अनुसार मानव जीवन की प्रमुख समस्यायें (१) अशिक्षा, (२) जनन-गति, (३) गरीबी, और (४) विषाद हैं। यहाँ इस प्रकार की समस्याओं का नामकरण करने का अभिप्राय यह है कि अशिक्षा के द्वारा ही जनन-गति और जनन-गति के द्वारा ही गरीबी तथा गरीबी के द्वारा ही विषाद की प्राप्ति होती है। क्योंकि जिनमें सच्ची शिक्षा, वैदिक शिक्षा का ज्ञान नहीं है वे प्राय: भोग विलासी प्रकृति के होते हैं और जो भोग विलासी प्रकृति के होते हैं वे ही अत्युत्पादन द्वारा संसार में भीड़ उत्पन्न करते हैं। जहां प्रयोजन से अधिक भीड़ होती है वहाँ जीवन रक्षा के लिये अधिक से अधिक खाद्योत्पादन की आवश्यकता पड़ती है। यदि संसार की आबादी के अनुसार खाद्योत्पादन आदि की मात्रा ठीक-ठीक पूरी नहीं की गई तो वहाँ अभाव की उत्पत्ति हो जाती है और यही अभाव की स्थिति गरीबी पैदा करती है। तथा उसी के द्वारा विषाद की भी वृद्धि होती है। जैसे इस शरीर की क्रिया को ही लीजिये, यदि इसमे कहीं किसी विशेष प्रकार की कोई कमी आ जाय तो इसका विकास क्रम अवरुद्ध होकर ह्रास की ओर बढ़ने लग जाता है और यही कारण है कि इसके द्वारा मानव का अमूल्य और सुखमय जीवन-अशान्ति और अल्पायु में बदलता हुआ दिखलाई पड़ रहा है। अतः मानव जीवन को उच्च कोटि मे रखने के लिये सर्व प्रथम किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे परिवार का नियोजन, गरीबो की भलाई और जीवन को हानि आदि से बचाया जा सके? इसके लिये सर्व प्रथम वैदिक शिक्षा का प्रसार होना बहुत आवश्यक है। वैदिक शिक्षा के अतिरिक्त और किसी भी मार्ग से चरित्र का निर्माण नहीं हो सकता। क्योंकि वैदिक शिक्षा में ही यम-नियम, सन्तोष, अपरिग्रह, सयम, ब्रह्मचर्य, योग, ध्यान, उपासना का उपदेश है जो मानव जाति को भोगवाद की आशक्ति से पृथक् भी करने का प्रयत्न करता है जिसका कि अन्य शिक्षा एवं सभ्यताओं मे अभाव

# सामाजिक समस्याएँ

है। अतः वैदिक शिक्षा ही एक ऐसी विद्या है, जिससे समस्त मानव जगत् का कल्याण हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति उस वैदिक विज्ञान के अनुसार अनुसरण करने में अश्रद्धा और असमर्थता प्रकट करता है, तो यह ठीक नहीं। पुरुषार्थी के लिये कोई भी समस्या सम्भव नहीं है। मनुष्य के अन्दर एक ऐसी अद्भुत शक्ति विद्यमान है, जिसके द्वारा वह जीवन की प्रत्येक कठिनाइयो को अपने कर्त्तव्य और वैदिक यज्ञो द्वारा समाधान कर सकता है।

दूसरी समस्या—जनन-गति है जो बढ़ती हुई परिवार की जनसख्या से सम्बन्धित है। इस आधुनिक 'परिवार-नियोजन' व्यवस्था को यदि 'योगाग' की ओर अग्रसर किया जाय (पतांजल ऋषिकृत योग के आठ अङ्ग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है) तो इससे यह होगा कि कृत्रिम अत्युत्पादन की गति ईश्वरीय उत्पादन का मार्ग पकड़ लेगी और जन-सख्या की कमी स्वय ही आ जायेगी। फलस्वरूप बौद्धिक, शारीरिक और आर्थिक समस्यायें अनायास ही समाधान होने लग जावेंगी, और इस धार्मिक कर्म बल से मैं अपनी तीसरी समस्या गरीबी दुनिया को भी बचा सकता हू। आज जन्म सख्या की वृद्धि से गरीबी दुनिया को बचाने के लिये कल कारखाने और फसलोत्पादन की अधिक से अधिक आवश्यकता है। परन्तु यदि उपरोक्त नियमो के प्रयोग से जन्म सख्या मे कुछ भी कमी आ जाय और उधर कल कारखानों में उन्नति तथा खाद्य पदार्थों की अधिकता होने लग जाय तो लाखो करोडों की दुर्दीनता तथा चौथी समस्या विषाद की परिस्थितियों से बिना किसी रुकावट से बचाया जा सकता है, जो कि आपत्ति, आक्रमण और नाश आदि से सत्रस्त है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन-रक्षा के लिये किन-किन व्यवस्थाओं की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें ध्यान में रखकर प्रत्येक वर्ग को उसके प्रति एकता का हाथ बढाना चाहिये। यही है मानव जीवन की प्रमुख समस्याओ की रक्षा के साधन जिन्हे मैंने सक्षिप्त रूप मे प्रकट किया है। परन्तु मेरे लिखने मात्र से क्या होगा? मनुष्य जानते है कि बिना अपराध के किसी को दुःख देना अन्याय है। भ्रष्टाचार तथा चोरी करना पाप है। फिर भी मनुष्य अन्याय, असत्य और चोरी कर्म करता रहता है। इसमे देश और समाज दोनो की महान् क्षति होती है। इस लिये जब तक मानव समाज अपने हृदय से दुष्कर्म को नहीं त्यागता तब तक उनके जीवन की कोई भी समस्या कैसे सुधर सकती है?

यजुर्वेद ४। २८ मे भगवान् से यह प्रार्थना की गई है—

परिमाग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा सवायुषोऽस्थाममृता अनु॥

लें०—श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक
मु० पो० मुरारई, जिला-वीरभूम,
प० बगाल

'हे अग्ने। मुझे दुश्चरित से सदा बचाते रहो और सुचरित में सदा चलाते रहो, जिससे कि मैं उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवताओ की ओर बढ़ू।'

इससे निश्चय कर लेना चाहिये कि, चरित्र का निर्माण करना हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य है। जिसने अपने जीवन को चरितार्थ नहीं किया, उसने कुछ नहीं किया। चरित्र गठन का तात्पर्य है—शील अथवा सदाचार वृत्ति का निर्माण करना। आज प्रत्येक मनुष्य को यह विचार करना चाहिए कि मै किस प्रकार अपने को सही रास्ते पर प्रयोग करूँ—इसके बारे मे राष्ट्र के कुछ नेताओ का कथन है कि, समस्याओ के समाधान के लिये एकता की आवश्यकता है। यह विचार ठीक है—परन्तु केवल एकता से ही उन सभी समस्याओं का समाधान होने वाला नहीं है—उसके साथ-साथ प्रत्येक के हृदय मे 'प्रेम' का भी उदय होना चाहिए। इसके अतिरिक्त जीवन का उद्देश्य एकमात्र स्वय जीवित रहना भी नहीं है, अपितु औरों को जीवित रहने देने की भी व्यवस्था करनी चाहिये। ऐसा भी अच्छा प्रकार समझना चाहिये। ऋग्वेद (अ० ८। अ० ८। व० ४९। म० ४।) मे यह आदेश है—" (यथा वःसुसहासति) हे मनुष्य लोगो जिस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त धर्म सेवन से तुम लोगो को उत्तम सुखो की

बढ़ती हो और जिस श्रेष्ठ सहाय से आपस मे एक दूसरे को सुख बढे, ऐसा काम सब दिन करते रहो। किसी को दु खी देख कर अपने मन मे सुख मत मानो, किन्तु सबको सुखी करके अपनी आत्मा को सुखी जानो। जिस प्रकार से स्वाधीन होके सब लोग सदा सुखी रहे, वैसे ही यत्न करते रहो।"

सार्थक जीवन वही है जिसमें प्रत्येक कठिनाइयो को वेदानुकूल शान्तिपूर्ण ढग से निर्णय किया जाता है और इसके साथ-साथ जो अपनी निष्ठा है उसको भी कभी नहीं तोड़ा जाता है। क्योंकि शान्ति और निष्ठा तथा उत्साह और प्रयत्न सफलताओं की कुञ्जी है।

अब अन्त मे मैं उनसे अनुरोध करता हू जो माता-पिता और आचार्य हैं उन्हें चाहिये कि, बल विद्या और सदाचार की प्राप्ति के लिये अपने बच्चो को उचित समय से ही शिक्षा देते रहें ताकि वे बालक भविष्य में एक देशभक्त और आदर्शवादी बन जावें।

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषोवेद ॥

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है।

वस्तुत जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो।"

अर्थात् इस प्रकार सुशिक्षा से अशिक्षा, जनन गति, गरीबी और विषाद चारो जीवन की महान् समस्याओ का समाधान मानव जाति का किया जा सकता है।

---

—आर्य समाज मैनपुरी की अन्तरग सभा ने सभा के पूर्व प्रधान श्री मदनमोहन जी वर्मा की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —मन्त्री

## सामयिक समस्याएं

[ पृष्ठ ८ का शेष ]

सब प्रकाशित क्रमशः होती रहेंगी। नीचे लिखे विषयो पर तैयारियाँ विद्वान् करें। अपने शास्त्रों को वैसे ही तैयार करे जैसे राजस्थान में दशहरा पर शस्त्रो की पूजा होती है, तुम उसी प्रकार शास्त्रों की पूजा करो जैसे—

१—मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध हैं।
२—वेद ईश्वरीय ज्ञान है।
३—सांख्य आस्तिक दर्शन है।
४—वेदान्त अद्वैत प्रतिपादक नहीं है।
५—श्रौत सूत्रादि में पशुबलि नहीं हैं।
६—व्याकरण शास्त्र को समझने ऋषि दयानन्द की देन
७—वेद भाष्य शैली ऋषि की
८—पुराणों के पोलखाते
९—वैदिक राजनीति
१०—भारतीय महिला आचार सहिता
११—सस्कृत राष्ट्रभाषा कैसे हो इसके उपाय

आर्यसमाज के विद्वान् और विचारक इस दिशा मे अपना मस्तिष्क लगावें और सब बातें अपने मस्तिष्क से चार मास निकाल दें। और आर्य विद्वान् हमे स्वय सूचित करें कि किस विषय पर कौन काम कर सकता है। एक-एक विषय के विद्वानो की बैठक हम आरम्भ करना चाहते हैं, पहिले परस्पर बैठक स्वय तो रिहर्सल करलें। यह भी आर्य नेता हमे बतावे कि एक सौ वर्ष पूर्व जो ससार था उसमे हमारे सौ वर्ष के कार्य से क्या परिवर्तन हुआ इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज से बाहर के किन महापुरुषो की सम्मतियाँ ग्रहण करे।

---

—आर्य समाज कोसीकला ने अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति का गठन किया है। —मन्त्री

—आर्य समाज हरिहरपुर (हरदोई) का वार्षिकोत्सव १७ जून को समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

## नैतिक उत्थान आंदोलन

[ पृष्ठ ७ का शेष ]

की सम्पत्ति जलाई जा रही है। भाई का भाई जान का दुश्मन है। यदि नागरिकों के सम्मुख यह भावना रहे कि वह अमर आत्मा है। एक ईश्वर के अनुयायी हैं तो दूसरे नागरिकों से एकता का सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा और मानसिक एकता का अचूक आधार रहेगा। आज राजनीति में शपथ की प्रथा का महत्व है, परन्तु नाम-मात्र के लिये यदि ईश्वर को व्यापक और द्रष्टा मानने का स्वभाव बन जाये तो बाहर की कलह मिट जाये। इस सम्बन्ध में हम अपनी एक कविता का उल्लेख करना उपयोगी समझते हैं।

'यूं तो हर बात में,
ईश्वर की कसम खाते हैं,
बात ईश्वर की न मानेगे
कसम खाई है।'

क्रोध और आवेश मे आकर राष्ट्र की सम्पत्ति को अपनी सम्पत्ति न समझकर बर्बाद कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में अपने घर को अपने आप फूक रहे हैं और जला रहे हैं। राजनीति की समस्या का समाधान आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही है। इसकी अवहेलना मृत्यु का आवाहन करना है तथा देश को रसातल मे पहुचाना है।

भारत की प्राचीन सभ्यता का आधार महाभारत काल तक आध्यात्मिक था और जब तक यह भावना जीवित रही देश सर्वाङ्ग रूप से उन्नति के शिखर पर रहा।

रामायण के समय मे राम राज्य इसलिये था कि उनकी राजधानी अयोध्या थी। अयोध्या का अभिप्राय है कि जहां युद्ध न हो सके। जिनके मन पर काम, क्रोध, लोभ और मोह का आक्रमण नहीं हो सकता वह रामराज्य में है क्योंकि उनकी हृदयरूपी राजधानी अयोध्या है। वह मैं को समझते हैं और मेरे के के चक्कर में नहीं रहते। महाभारत के समय कुछ परिवर्तन आया और कौरवो को मेरे और तेरे का विचार आया और देश में महाभारत हुआ और सब तबाह हो गये। रामायण के समय में भरत ने चक्रवर्ती राज्य बिना युद्ध या किसी षडयन्त्र से इस लिये लेना स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे अपने स्वरूप को समझते थे और प्रलोभन से बचे रहे। रामायण के समय में राज्य मिल जाने पर भी लेने में सकोच था। महाभारत के समय मे इसकी दुर्भावना आयी कि दूसरें का राज्य जो उनके पास अमानत था उसे वापिस न करें। आज तो केवल लौटाने में ही संकोच नहीं दूसरे के माल को और दूसरे के राज्य को छीनने, झपटने और मारधाड़ में भी संकोच नहीं है। आज स्वराज्य मिल जाने पर रामराज्य का स्वप्न पूरा नहीं हो रहा है। इसके विपरीत ऐसा व्यवहार हो रहा है जिसको देखकर लज्जा को भी लज्जा आती है। अहकार जब घमण्ड या अभिमान का रूप धारण करता है तो इसका प्रवेश सबसे पहले हृदय जगत् पर होता है जो भावनाओं का क्षेत्र है। यदि भावनाओं के क्षेत्र से यह ज्ञान के क्षेत्र मे पहुंच जाये और बुद्धि को प्रभावित कर ले तो ज्ञान को नाश कर देता है।

इसी प्रकार यदि इसका प्रवेश बल के क्षेत्र में हो जाये तो अभिमान की भावना के कारण बल निर्बलता का रूप धारण कर लेता है और महान् हानि होती है। अर्थात् आत्मा को अपने ज्ञान की भावनाओ और बल को ठीक रूप से प्रयोग में लाना है तो उसको अपने स्वरूप को समझना होगा और ससार से उसका क्या सम्बन्ध है और परमात्मा से उसका क्या सम्बन्ध है इस सबको लक्ष्य में रखना होगा। आज विज्ञान के कारण भी एक समस्या सामने आ गई है विज्ञान ने देश और काल पर विजय प्राप्त कर ली है। अनेक देशों से सम्पर्क हो गया है परन्तु दिल से दिल नहीं मिल रहे हैं। और जब तक दिल से दिल न

मिले मानसिक स्तर पर एकता न हो तो ससार की समस्या का समाधान नहीं हो सकता। आज जिस विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है उसकी ओर मैने ध्यान आकर्षित किया है। आर्य समाज ससार के उपकार के लिये स्थापित हुआ था। आज आर्य समाज में भी सबसे ऊचे स्तर पर भी मेरा पद, मेरा स्थान, मेरा मान और मेरी शान को लक्ष्य बनाकर आर्यसमाज को हानि पहुचाई जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि ससार के प्रलोभन मे पड़कर आर्यसमाज के कर्णधार भी ममत्व के चक्कर में फस गये हैं। ईश्वर ही सहायक होंगे। अत्यन्त सजगता की आवश्यकता है।

अन्त में मैं अपनी कविता की पंक्ति देना आवश्यक समझता हूं।

लहर ऐसी उल्टी चली है वतन मे<br>
खुद हाथों से दौलत लुटाई गई है<br>
नया सगठन और नई गुटबन्दी,<br>
किस दलदल मे दुनियां फसाई गई है<br>
जो बहके हैं वो बन गये रहनुमा हैं<br>
इसीसे ये किश्ती डुबाई गई है।<br>
खुदा भूलकर ना खुदा ढूढते हैं,<br>
तबाही ये खुद ही बुलाई गई है<br>
नाखुदाओं के आपस के,<br>
झगड़े मे फसकर,<br>
ये किश्ती भवर में डुबाई गई हैं।<br>
खुदी से बचो और मानो खुदा को<br>
ये तालीम वेदो में गाई गई है।<br>
तलब है, जुनू है, नशा है खुदी का<br>
शराब-ए-हवस क्या पिलाई गई है।

## सार सूचना

आर्य समाज गोंडा की अन्तरग सभा ने अपनी बैठक दिनांक २२-६-६९ को निश्चय किया है कि इस वर्ष आगामी मास नवम्बर मे 'आर्य समाज गोंडा' का हीरक जयन्ती महोत्सव बड़े समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

—मन्त्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की एक बैठक दिनांक २६-८-६९ मगलवार को आर्य समाज मन्दिर भायपुर पो० शरीफ नगर में मध्याह्न १२ बजे से बुलाई गई है। आवश्यक निर्णय होंगे।

—उमरावसिंह मन्त्री

(पृष्ठ ५ का शेष)

स्थान पर निर्धारित समय से सिर्फ कुछ सैकिण्ड बाद उतरे। खोजी विमानो और हेलीकाप्टरों ने सागर की लहरो पर तैरते अन्तरिक्ष यान को तुरन्त पहचान लिया। गोताखोर अन्तरिक्षयात्रियो की मदद के लिये चल दिये। आर्मस्ट्रांग ने सन्देश भेजा—हमारा यान इस समय स्थिर है।" कुल ११ मिनट के अन्दर विमान और हेलीकाप्टर सागर की लहरो पर तैरते अन्तरिक्ष यान के ठीक ऊपर पहुच गए।

हेलीकाप्टर से उठाये जाने से पूर्व अन्तरिक्ष यात्रियो ने रासायनिक स्नान किया।

अपोलो ११ के कमांड-मोडयूल ने ३९.३६० कि मी प्रति घंटा की रफ्तार से पृथ्वी के वायु मण्डल मे प्रवेश किया था। इसने लगभग आधा घण्टे पहले अन्तरिक्षयान का सर्विस मोडयूल उससे अलग हो गया था। वायु मण्डल में प्रविष्ट होते ही अन्तरिक्ष यान का बाह्य आवरण अगारे की तरह दहकने लगा था। इसका अनुमान सिर्फ इतने से लगाया जा सकता है कि यान के बाह्य आवरण का तापमान उस समय लगभग ५ हजार डिग्री फारेनहाइट था। मगर उसके अदर बैठे अन्तरिक्षयात्री इस भीषणतम गर्मी मे भी सुरक्षित थे।

उस रात अन्तरिक्ष यात्रियो के उतरने के स्थान मे परिवर्त्तन कर दिया गया था। इसकी वजह से उसके उतरने मे कुछ सेकिण्ड की देरी हुई। हवाई के १५२० कि०मी० दक्षिण पश्चिम मे कमरोड मोडयूल पृथ्वी के वायु मण्डल मे प्रविष्ट हुआ।

अन्तरिक्ष-यात्रियो का स्वागत करने के लिये राष्ट्रपति निक्सन के अतिरिक्त अमरीका के विदेश मन्त्री विलियम पी० रोजर्स वायुसेना के कर्नल फ्रेंक बोरमैन (अपोलो-८ के कमाण्डर) तथा मासा के प्रशासक थामस वा पेन उपस्थित थे।

कमाड-मोडयुल के पैराशूट खबर से पहले ही अन्तरिक्ष यान को जहाज से देख लिया गया। पैराशूटों के सहारे उतरते हुये अन्तरिक्ष यान को बहुत लोगो ने देखा।

प्रशान्त सागर मे उतरने के बाद चन्द्रयात्रियो ने होरनेट जहाज पर और गोताखोरो को सन्देश भेजा—हम बहुत अच्छी तरह हैं।

सागर की लहरो पर तैरते हुये मोडयूल को स्थिर रखने के लिये हेलीकाप्टर से तुरन्त गोताखोर कूद पड़े तथा उन्होने मोडयूल के साथ अतिरिक्त पट्टे (कालर) बांध दिये। अन्तरिक्ष यात्रियो के लिये बनाई गई विशेष जीवाणु-रक्षा पोशाक देने के लिये एक तैराक को नीचे उतारा गया। मोडयूल के समीप बचाव-नौकाए डाल दी गई।

मोडयूल के ऊपर तीन हैलीकाप्टर निरन्तर चक्कर लगा रहे थे। विमान वाहक जहाज होरनेट मोडयूल से सिर्फ ६ मील दूर था।

जहा के कर्मचारियो ने जहाज के डेक पर जहाँ अन्तरिक्ष यात्रियो को उतरना था, कीटाणु नाशक दवाए छिड़क दी थीं।

उधर सागर मे तैरते हुए कमाड मोडयूल की खिड़की खोल दी गई और अन्तरिक्ष यात्रियों ने अपनी कीटाणु निरोधक पोशाक पहन ली। इसके बाद अपनी निरोधक पोशाक पहने हुये पहला अन्तरिक्षयात्री मोडयूल से बाहर आया। उसके बाद उसके दोनो साथी बाहर आये। तीनो अन्तरिक्ष यात्रियो के मोडयूल से बाहर आते ही मोडयूल की खिड़की को तुरन्त बन्द कर दिया गया।

अन्तरिक्षयात्रियो की मदद के लिये उपस्थित गोताखोर भी कीटाणु-निरोधक पोशाक पहने हुये थे।

अन्तरिक्ष यात्रियो को समुद्र से उठाये जाने का दृश्य विश्व के लाखों लोग अपने टेलीविजनो पर देख रहे थे। ★

## निर्वाचन

—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य।

प्रधान—श्री भक्तराम एडवोकेट उपप्रधान—सर्वश्री प्रो० वेदमित्र पी एच डी, प्रि० शान्तिस्वरूप, लखपतराय, निरजनदेव व बख्शी खुशहाल, मन्त्री श्री विद्यासागरजी उप मन्त्री—सर्वश्री देवेन्द्रकुमार व राममिलनसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री प्रकाशचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष—श्री लीलाधर।

—विद्यासागर मन्त्री

—आर्यसमाज बगही।<br>
प्रधान—श्री बैजनाथसिंह<br>
उपप्रधान—श्री महानन्दसिंह<br>
मन्त्री—श्री बकूरामसिंह<br>
उपमन्त्री—श्री त्रिभुवनसिंह<br>
कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्रसिंह

—बकूरामसिंह मन्त्री

—आर्यसमाज, मण्डी, शाहदरा दिल्ली—३२।<br>
प्रधान—श्री हरीचन्द<br>
उप प्रधान—श्री मनोहरलाल<br>
मन्त्री—श्री ओमप्रकाश<br>
उपमन्त्री तथा पुस्तकाध्यक्ष—श्री फकीरचन्द।<br>
कोषाध्यक्ष—श्री हरपालसिंह

—श्रद्धानन्द बहिर्गामी मन्त्री

—जालन्धर आर्य समाज।<br>
प्रधान—श्री प्रकाशचन्द्र बाहरी<br>
उपप्रधान—श्री सेठ शिवनन्द अग्रवाल<br>
,, ला० जगन्नाथ मित्तल<br>
,, डा० दुर्गादत्त ज्योति<br>
मन्त्री—श्री योगेन्द्रपाल सेठ<br>
उपमन्त्री—श्री प्रकाशचन्द कालड़ा<br>
,, श्री दुनीचन्द थापर<br>
,, श्री राजकिशन सेठ<br>
कोषाध्यक्ष—श्री रामलाल गुप्त<br>
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सोहनलाल सेठ

—मन्त्री

—आ०स० राणाप्रताप बाग दिल्ली २<br>
प्रधान—श्री राधाकृष्ण गांधी<br>
उपप्रधान—श्री जगदीशचन्द्र आर्य<br>
मन्त्री— श्री विद्याधर वर्मा<br>
उपमन्त्री—,, दयानन्द वर्मा<br>
,, ,, मनोहरलाल<br>
कोषाध्यक्ष ,, करमचन्द कपूर

—मन्त्री

## काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ

[ १०१ ]

शब्द वृषभ पति हेतु वेद मे, वर्णित देता अर्थ निराला।
वृषभ-बैल आन्तरिक योग्यता, अथवा वर्षा करने वाला।
तीनो प्रकार पालन कर्ता, है वही भार्या का भर्ता;
पति-पत्नी दोनो समान हो, मिलजुल पालें जो श्रुतिशाला।

[ १०२ ]

हो लक्ष्य मनुज सम्बन्ध सुखद, मत हो दहेज लेने वाला।
दलता समाज को है दहेज, दयाहीन हाला का प्याला।
पशुवत वर की बिक्री करना, किरकिरी खीर बर की करना;
धर्म नीति से कर्म प्रीति से, सम्बन्ध कराती श्रुतिशाला।

[ १०३ ]

मृदु मानव वह प्रथम श्रेष्ठ है, श्रम कर स्वय कमाने वाला।
स्वय श्रमी तो नहीं किन्तु है, मध्यम पितु धन पाने वाला।
हीन वही जो ले जीता है, धन पत्नी के विवश पिता से;
नहीं हीन-मा्यम, मनुज श्रेष्ठ; है सदा ढालती श्रुतिशाला।

[ १०४ ]

नारी शुभ, रत्न विविध विद्या, सत्य शुद्धता भाषण आला।
शिल्प, शील के गुण विशेष ये, हर मनुज बने लेने वाला।
देश किसी या किसी मनुज से, मिले इन्हें ले किन्तु न्याय से,
लेना गुण, अवगुण तज देना, दे धवल ध्येय ये श्रुतिशाला।

[ १०५ ]

सत्कार जहां हो नारी का, सुख सदा वहां रहने वाला।
जहा नहीं सत्कार नारि का, दुख वहीं बसे बन अधियाला।
हो नारि शोक से कुल विनाश, है नारि हर्ष मे कुल विकास;
पर नारि मनुज हो, नहीं दनुज, पहिचान मान दे श्रुतिशाला।

[ १०६ ]

नारी देवी है वह घर मे, जिसका हो कर्म हर्ष वाला।
हर कर्म करे चतुराई से, घर रखे शुद्ध सुख उजियाला।
यथा उचित व्यय करे आय से, माने पति का अनुशासन स्त्री,
परिवार प्रीति आगार बने, है स्तर स्त्री से स्थिर श्रुतिशाला।

[ १०७ ]

बोलो सत्य साथ मृदु घोलो, हो वचन नहीं चुभने वाला।
व्यर्थ प्रशसा कर प्रसन्न है, हर दुष्ट झूठ कहने वाला।
हर वचन भद्र का कथन करो, हवि हितकारी से हवन करो,
कटु वचन किन्तु हितकारी हो, तो कहो तोल कर श्रुतिशाला।

[ १०८ ]

श्रुति विरुद्ध है पाखण्डी जो, बहुधा विकर्म करने वाला।
भक्ति युक्त लगता ऊपर से, किन्तु कर्म से बडा विड़ाला।
करे धर्म नहि ठगे नाम से, धर्मध्वजी श्रीमान वहीं हैं,
वकव्रत से निवृत सावधान, करती सदैव ही श्रुतिशाला।

[ १०९ ]

है पढा-सुना सत शास्त्र नहीं, घोर घमण्डी उर का काला।
निर्धन होकर बिना कर्म के, उच्च मनोरथ करने वाला।
बिना बुलाये आसन चाहे, जो बिन पूछे भाषण करता,
तथ्य हीन विश्वास करे जो, कहे मूढ़ उसको श्रुतिशाला

[ ११० ]

पड़ा नित्य है अब गृहस्थ को, क्षण-क्षण सघर्षों से पाला।
पच महा यज्ञो का पालन, है जीवन कर्त्तव्यो वाला।
निर्भर सन्यास ब्रह्मचारी, वाणप्रस्थ इसका आभारी;
कर्म योग-सयोग यहाँ है; दे कर्म कामना श्रुतिशाला।

[ १११ ]

सागर में सदा समाते हैं, ज्यों दुनिया के नदिया नाला।
गृहस्थ आश्रम है सचमुच त्यो, हर आश्रम की आश्रय शाला।
अनुभूति पुष्ट दे नित्य कष्ट क्षण, ज्ञान परीक्षण करे तुरन्त,
मुक्ति-शक्ति की यही भूमिका, तप तीव्र तूलिका श्रुतिशाला।

[ ११२ ]

मातु पिता की सेवा करता, वर गुरुओं के आदर वाला।
शुभ कर्म यज्ञ के कर्त्ता हो, हो सन्त अतिथि पालन वाला।
उनका भी करता भरण रहे, जो योग्य नहीं हैं पर निर्भर;
सेवा का अर्थ यथा पालन, सेवा-मेवा है श्रुतिशाला।

[ ११३ ]

जिस प्रकार विद्वान वृद्ध का, सत्कार मनुज करने वाला।
त्यो पितु माँ या पितर जनो का, बने समादर करने वाला।
श्रद्धा-अश्रद्धा शोभा लज्जा, दो दान प्रतिज्ञा या भय से;
यों निर्धन को पोषण देती, असहाय प्राण है श्रुतिशाला।

[ ११४ ]

करता सेवा जो वृद्धो की, मानव प्रिय अभिवादन वाला।
चार लाभ यश आयु ज्ञान बल, तो नित्य बढ़े पावन आला।
आसन पर यदि बैठा हो तू, निकट बड़ा आये जब तेरे।
उठकर तो करना अभिवादन, है सदा सिखाती श्रुतिशाला।

[ ११५ ]

चढ़ते हैं प्राण सदा ऊपर, जब वृद्ध निकट आने वाला।
उठकर अभिवादन करने से, हो देह स्वस्थ सुन्दर आला।
उठकर जब करता अभिवादन, तो प्राण यथा स्थित होता है;
दे मन-सबल स्नायु सबलकर, दे सुखद धैर्य धन श्रुतिशाला।

[ ११६ ]

अभिवादन का अधिकारी है, अभिवादन के उत्तर वाला।
उसको क्या करना अभिवादन, मुख पर हो जिसके तम ताला!
है वृद्ध वही निज आशिष से, जो कृपा कुशल हमको देता;
कल्याण-कर्म हर करे वृद्ध, सम श्रद्ध वृद्ध है श्रुतिशाला।

[ ११७ ]

पुरुष वृद्ध या वृद्धा नारी, जीवन जिसका हो उजियाला।
हर कर्म-धर्म का मर्म वरे, तेजवान या भोला भाला।
निज देश धर्म या राष्ट्र हेतु हो व्यस्त मस्त जीवन समस्त,
है वृद्ध वही उत्तम पावन; जिसने पूजी हो श्रुतिशाला।

[ ११८ ]

प्रश्वास-श्वास, हर मनुज जीव, ज्यो सभी सदा लेने वाला।
मनुज बने त्यों नित्य कर्म को, नित बिन नागा करने वाला।
सब हीन कर्म हैं अनध्याय, शुभ कर्म सभी हैं स्वाध्याय;
जो स्वस्ति करे वह स्वाध्याय, है श्रेष्ठ स्वस्ति शुभ श्रुतिशाला।

[ ११९ ]

पुरुष दुष्ट है भ्रष्टाचारी, सयम हीन आचरण वाला।
तप, त्याग, ज्ञान, अर्चन उसका, है सभी विफल होने वाला।
मानव जो नहीं जितेन्द्रिय है, बिना कर्म के करे दिखावा;
जन-जन को कपट छलावा से, नित दूर करे ये श्रुतिशाला।

[ १२० ]

हिन्सा से नहीं अहिंसा से, पाये जन भोजन सुख वाला।
है दुग्ध वनस्पति ही भोजन, है अन्न पोषण भोजन आला।
है योनि जीव की वनस्पती, पर सदा सुषुप्ती में रहती;
सुख दुःख अनुभूति नहीं करती, है सत्य साक्षी श्रुतिशाला।

[क्रमशः]

## बेहट जिला सहारनपुर में इसाई पादरियो से शास्त्रार्थ

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर की ओर से काफी वर्षों के पश्चात् बेहटा (सहारनपुर) मे १० एवं ११ जौलाई को १० हजार व्यक्तियो की उपस्थिति मे श्री ओमप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी एवं इसाई पादरी श्री गुलाम मसीह के मध्य मोक्ष एवं इसाई मत पर शास्त्रार्थ हुआ।

इस अवसर पर श्री शान्ति स्वरूप जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड श्री ब्र० विजयेन्द्र आचार्य, श्री सेठ रामलाल जी के अतिरिक्त ५ पादरी भी उपस्थित थे। तथा श्री ओमप्रकाश जी रेडियो सिंगर, श्री शोभाराम जी भजनोपदेशक, श्री रामचन्द्र जी श्री नकुलसिंह जी श्री कपूरसिंह जी आदि भजनोपदेशक भी उपस्थित हुये।

इस शास्त्रार्थ से जनता पर काफी प्रभाव पडा तथा आर्यसमाज की विजय पताका पुन फहरने लगी। श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री एवं श्री शान्तिस्वरूप जी ने बाइबल द्वारा आवागमन तथा ईसामसीह को युसुफ का पुत्र सिद्ध किया।—राजेन्द्रप्रसाद आर्य मन्त्री

—वेद प्रचार मण्डल, गोविन्दनगर का साप्ताहिक सत्सङ्ग रविवार ६-७-६९ को श्री दीवानचन्द जी खन्ना के निवास स्थान ६ ब्लाक मे उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उनके प्रपौत्र का जन्म दिवस भी मनाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् प० घनश्याम तिवारी, रेडियो सिंगर तथा वेद प्रचार सगीत मण्डली के मनोहर भजनो के पश्चात् मण्डल मन्त्री श्री जाति भूषण जी का प्रवचन सस्कारो पर बहुत रोचक रहा। —वेदप्रकाश, प्रचार मन्त्री

२० जुलाई को श्री सहदेवराय मन्त्री जिला उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर की पुत्री गायत्री का चूडाकर्म संस्कार श्री प्रभुदयाल आर्य ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया।

## श्रीमती सुशीलादेवी का देहान्त !

श्रीमती सुशीलादेवी जी धर्म पत्नी श्री कर्मचन्द जी कोर्ट रोड सहारनपुर का देहावसान दि० ९ जून ६९ को देहली अस्पताल मे हो गया। शव को सहारनपुर लाकर अन्त्येष्ठि सस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया। निम्न सस्थाओ को दान दिया गया।

आर्य कन्या हाई स्कूल गिलकालौनी को दस हजार १००००) रु० स्त्री आर्यसमाज रामनगर को एक सौ एक १०१) रुपया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को इक्यावन ५१) रुपया तथा लालदास के बाड को समसान भूमि को एक सौ एक १०१) रुपया दिया गया।

—जगदीश चन्द्र मन्त्री
आर्यसमाज रामनगर कोर्ट रोड सहारनपुर

## आवश्यकता

५९ वर्षीया आर्य विधुर के लिए लगभग ५० वर्षीया स्वतन्त्र जीवन साथी की आवश्यकता है। जीवन साथी भले ही असुन्दर हो, किंतु रोग रहित हो। दु खिया हो जिसके उद्धार की आवश्यकता हो। अध्यापिका हो या सुधारवादी, परोपकारी विचार की नर्स हो जिसको परोपकार के लिये आवश्यक आर्थिक सहायता दी जायगी। साथी कहानीकार या तर्कप्रिय हो।
पता—३५ बी द्वारा 'आर्यमित्र' कार्यालय, लखनऊ



## वेद प्रचार सप्ताह २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक मनायें

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्णा अष्टमी अर्थात दिनाक २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

प्रत्येक आर्य समाज को चाहिए कि इस सप्ताह को उत्साह पूर्वक मनाने का अभी से रचनात्मक कार्यक्रम बनाने की कृपा करे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

## आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम. ए. वेदाचार्य की समस्त भारत में प्रचार यात्रा

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के प्रचारमन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी शास्त्रार्थ शताब्दी प्रचारार्थ समस्त भारत में यात्रा करेंगे। आशा है सब प्रान्तो के आर्यसमाजें उन्हें पूर्ण सहयोग देंगे। इस प्रसग में आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सवो कथाओं और यज्ञादि मे भी आचार्यजी को निमन्त्रित कर सकते है, आचार्य जी से हमने प्रार्थना की है वे सर्वत्र आपके निमन्त्रण पर पहुचेंगे। निवेदक—

आचार्य जी का स्थायी पता—
गुरुकुल
११९ गौतम नगर

प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

## शिक्षा विभाग की सूचना

आर्य शिक्षा संस्थाओं के पदाधिकारियों प्रधानाचार्यों तथा समस्त उत्तरप्रदेशीय आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि निरीक्षक आर्य विद्यालय के पद पर श्री महेन्द्र प्रताप जी एम० ए० बरेली निवासी की नियुक्ति हो गई है। उनके २३-७-६९ से इस पद का कार्यभार संभाल लिया है। जिस विद्यालय में वह निरीक्षण के लिये पहुंचें, कृपया उनके द्वारा निरीक्षण करायें तथा इस सभा का प्राप्तव्य धन उनको देकर उनसे रसीद प्राप्त करें।

—रामबहादुर एडवोकेट मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ०प्र०

एक व्यंग–

# 'और यह बेजोड़'

एक दिवस की बात
घड़ी मे बजे थे साय के सात।
मौसम भी लगता था
ए अर कन्डीशन्ड,
न ज्यादा गर्मी थी
न ज्यादा ठण्ड।
बैठे थे हम
टपक पड़ा 'बम्ब',
जी हां 'बम्ब'
परन्तु नहीं था वह 'एटम बम्ब'।
नहीं गिरा धरती पर
नहीं गिरा आसमान पर,
गिरा तो कहाँ गिरा
'कण्व' की खोपड़ी पर।
'बम्ब' का गिरना था
ऐलीमेन्ट' का बिखरना था।
हो गई शान्ति भंग
उठने लगी तरंग।
जी हाँ तरग–
परन्तु नहीं थी वह, अग की तरङ्ग।
वह तो थी–
कविता करने की उमग।
उठाया कागज–
रक्खा मेज पर
पकड़ा पेन–
विचारो को सजोने
बैठ गये कविता करने।
चन्द घण्टो में
चन्द पक्ति भी
न लिख पाये थे
कि
पीछे से–
' हा ! ' हा !! ...हा !!! ...'
की
ध्वनि के साथ
दो हाथो ने ऐसा पकड़ा,
बाहु पाश मे हमको
ऐसा जकड़ा।
कि विचारो के मोतियों की माला
टूट गयी,
किस्मत हमारी फूट गयी।
धीरे से उन हाथो को
कन्धे से हटाया,
अभी पीछे मुड़ भी न पाए थे
लगा कि किसी ने–
हमको गले से लगाया।
हमने जो देखा
तो–
सामने थे
हमारे प्रिय मित्र
'शरद्'–
लोगों का कहना था
हमसे यह रोना था
कि–
तुम्हारे मित्र का
नाम तो है–
'शरद'।
परन्तु दिमाग है–
'गर्म'।
हमने कहा–
'हुश'! ... ..
खबरदार ! –
जो बोले
विरोध में
हमारे सामने
हमारे मित्र के
तुम्हे लगता होगा
उनका दिमाग 'गर्म'।
हमें तो लगता है
चौबीस घण्टे 'सर्द'।
खैर–
अभिवादन कर पूछा–
क्यों मित्र !
क्या बात है ?
पीठ पर हाथ मार कर
हंस कर वह बोले
प्यारे मित्र
'ऐसी कविता क्यो लिखते हो।
जिसका जोड नही मिलता हो।।'

–सन्तोष 'कण्व'
(बरेली)

## निर्वाचन–

–आर्यसमाज नकेगाव (महाराष्ट्र)
प्रधान–श्री रगनाथराव शिरुरे
उपप्रधान–श्री विश्वनाथराव डोले
मन्त्री– ,, काशीनाथराव व्यवहोर
उपमन्त्री–पद्माकरराव तान्दले
कोषा०–श्री हीरालाल कोण्डेकर
–मन्त्री

–आर्य समाज कलकत्ता १९
विधान सरणी।
प्रधान–श्री कलियाराम गुप्त
उपप्रधान–श्री ओमप्रकाश गोयल
,, ,, पूनमचन्द आर्य
मन्त्री– ,, छबीलदास सैनी
उपमन्त्री– ,, दशरथलाल गुप्त
,, ,, अमरसिंह सैनी
प्रचारमन्त्री श्री सोमदेव गुप्त
उप ,, ,, श्रीराम जायसवाल
कोषाध्यक्ष–श्री सत्यानन्द आर्य
पुस्तकाध्यक्ष–,, म० रघुनन्दनलाल
उप पुस्त०– ,, सतीशकुमार जी
–मन्त्री

आर्यसमाज बगारस्यू ढौण्डियालस्यू
गढवाल
प्रधान–श्री घनश्यामलाल थटेला
उपप्रधान–श्री उम्मेदसिंह भिडकोट
मन्त्री–श्री प्रतापसिंह प्रेम ,,
उप मन्त्री–श्री राजेसिंह डुमलोट
कोषा०– ,, चन्द्रसिंह मटेला
–मन्त्री

–आर्यसमाज राठ
प्रधान–श्री प चन्द्रशेखर शास्त्री
बी एन वी इ कालेज
उपप्रधान–श्री श्रीकान्त चौरिया
वी एन वी डिग्री कालेज
मन्त्री एव प्रबन्धक–श्री रामनारायण गुप्त, सूर्य कार्यालय राठ
उपमन्त्री–श्री अच्छेलाल यादव
अध्यापक गा गा वि इ कालेज
कोषाध्यक्ष–श्री देशराज सेठी
राम वस्त्र शाप राठ
–मन्त्री

–आर्यसमाज दयानन्द मार्ग
शकूर बस्ती दिल्ली
प्रधान–श्री ज्वालाप्रसाद
उपप्रधान–श्री महावीरप्रसाद शर्मा
,, ,, जयलाल
मन्त्री– ,, रामसिंह शर्मा
उप मन्त्री–श्री लालचन्द वर्मा
,, –श्री शिवचरण
कोषाध्यक्ष–श्री डा० भारतभूषण
–मन्त्री

–आ०स० दर्शनपुरवा कानपुर
प्रधान–श्री मिलानन्द
उपप्रधान–श्री श्रीराम गुप्त
,, –,, राजबहादुर
मन्त्री–श्री शिवचरणलाल
उपमन्त्री–श्री प्रतापसिंह
कोषाध्यक्ष–श्री रामविलन
–मन्त्री

–आर्यसमाज फतहाबाद (आगरा)
प्रधान–श्री रामेश्वर बजाज
उपप्रधान–श्री बलवीरप्रसाद
मन्त्री–श्री दीनदयालु गुप्त
कोषाध्यक्ष–श्री कैलाशचन्द्र
–मन्त्री

–आर्यसमाज हरिहरपुर (हरदोई)
प्रधान–श्री दरगाहीलाल
मन्त्री–श्री डा० श्रीकृष्ण यादव
कोषाध्यक्ष–श्री हनुमन्तसिंह

–आर्य उप सभा गाजीपुर
प्रधान–श्री महावीर साहू गाजीपुर
उपप्रधान–श्री श्यामसुन्दरदास
,, ,, प्रभुदयाल
मन्त्री–श्री सहदेवराम जी
–मन्त्री

–आर्यकुमार सभा गुरुकुल
महाविद्यालय ततारपुर (मेरठ)
प्रधान–श्री प० यशपाल जी दर्शन
व्याकरणाचार्य
उपप्रधान–ब्रह्मचारी शकरदेवार्य
मन्त्री– ,, धर्मपालार्य
उपमन्त्री– ,, [illegible]
कोषाध्यक्ष– ,, [illegible]
–धर्मपालार्य

१६ से २० जौलाई १९६९ तक आर्यसमाज भवन सिकन्दराबाद मे आचार्य [illegible] जी देहली की कथा हुई। उनकी कथा का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। उनके भाषण से प्रभावित होकर दि० २० जुलाई को साप्ताहिक अधिवेशन मे २५ कुमार तथा कुमारियो ने उनसे यज्ञोपवीत धारण किया तथा स्त्री आर्यसमाज की स्थापना भी हुई।"

- आनन्दप्रकाश मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल –६०
श्रावण ५१ शक १८९१ श्रावण कृ ८
[ दिना॰ ३ अगस्त सन १९६९ ]

# आर्य - मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य . २५९९३ तार । "आर्य्यमित्र"


## गो रक्षा का विशेष कार्यक्रम

पश्चिम बग सरकार की ओर से समय-समय पर उन गायो बछडो की लीलामी की जाती है, जिन्हे सरकार अपने हरिघाटा व कल्याणी पशु केन्द्रो मे नहीं रखना चाहती । यह नीलाम यद्यपि उन्हे ही दिया जाता है, जो इन पशुओं को पालना चाहते हैं । किन्तु यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि ये पशु सरकारी केन्द्रों से निकल कर जीवन के अन्तिम क्षणों की प्रतीक्षा किया करते हैं । कई गो भक्तों के परामर्श से आर्यसमाज कलकत्ता ने सरकार से प्रार्थना की कि इन पशुओ के जीवन की रक्षा होनी चाहिये । आर्य समाज की इस प्रार्थना पर सरकार ने आर्य समाज को नीलामी के आधे मूल्य पर इन पशुओं को देना स्वीकार कर लिया । कलकत्ता के गो भक्त समाज ने आर्य समाज के साथ चेष्टा की और गो भक्त दानियों के पुण्य दान से ४४०००) चौआलिस सहस्र रुपये एकत्र करके ६६१ पशुओं को सरकार से लेकर कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी को सौंप उनके जीवन की रक्षा की गई । जिनमे काफी गायें गर्भवती हैं, तथा कुछ दूध भी देती हैं । गो भक्त समाज का यह कार्य अत्यन्त प्रशसनीय है ।

यह काय चलता रहेगा लगभग ३०० पशु प्रति मास केन्द्रो मे विक्री किये जाते है । आर्थिक सहायता प्रार्थनीय है ।

—छबीलदास सैनी, मन्त्री
१९ विधान सरणी, कलकत्ता



(पृष्ठ २ का शेष)

कर्मन की गति न्यारी रे ऊधो !
मूर्ख-मूर्खराज करत हैं,
पण्डित फिरे भिखारी । रे—
सुन्दर रूप दिया बगुने को,
कोयल किस विधि कारी । रे—
सुन्दर ललना लाल को तरसें,
फूहड जन-जन हारी । रे—

जो कल्याण के अभिलाषी स्त्री व पुरुष हैं उनको दर्शन-शास्त्र के या मनोविज्ञान के ऐंच-पेच मे उलझाना विद्वानो के लिये उचित नहीं है । लेख लिखने, भाषण देने, पोथे पढने और दलीलो की दल-दल का प्रसार करने मात्र से ही विद्वानो के कर्त्तव्यो की समाप्ति नहीं होती विद्वानो को उचित है कि वे अपने शुभ विचारो, सत्य-सिद्धान्तो और उत्तम आदर्शो को अपने क्रियात्मक जीवन के रूप मे ससार के सामने प्रस्तुत करे । प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि ईश्वर की सत्ता, महत्ता और न्याय-व्यवस्था पर दृढ विश्वास रखें, शुभ कर्म करे, बुराई से बचे ।

कलियुग नही, करयुग है यह,
या दिन को दे और रात ले ।
क्या खूब सौदा नकद है ?
इस हाथ दे, उस हाथ ले ।।

## शिक्षा विभाग को सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो के अधिकारियो व प्रधानाचार्यों को सूचित किया जाता है कि श्री जयदेव जी निरीक्षक आर्य विद्यालय को उनकी वृद्धावस्था के कारण उनको सेवा से मुक्त कर दिया गया है । अब वह इस पद पर कार्य नहीं कर रहे हैं। अब उनको सभा का किसी प्रकार का कोई धन न दिया जाय। —रामबहादुर एडवोकेट
मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा

—आर्य कन्या विद्यालय रेल बाजार कानपुर मे गत ३० वर्षों से कार्य करनेवाली सेविका श्रीमती लक्ष्मीदेवी का निधन गत मास मे हो गया । साप्ताहिक अधिवेशन में शोक प्रस्ताव पारित किया गया और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवगतआत्मा को सदगति तथा उसके परिजनों को साहस एव धैर्य प्रदान करें ।

—शम्भूराय शास्त्री मन्त्री
आ०स० रेल बाजार,कानपुर


स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ प्र. के लिए ए॰ दी॰आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित ।

'बयं बयेम' ] लखनऊ-रविवार श्रावण १९ शक १८९१, श्रावण कृ० १३ वि० सं० २०२६, दि० १० अगस्त १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# जीव के लिए सारा संसार है

तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे।
तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः। ऋ० ९।६२।२८

हे (कवे) क्रान्तदर्शन समर्थ, छिपी वस्तुओ के देखने की शक्ति वाले (सोम) शान्ति के अभिलाषी जीव। (इमा) यह (भुवना) भुवन लोक (महिम्ने) महिमा के कारण (तुभ्यम्) तेरे लिए (तस्थिरे) ठहरे और गति करते हैं। (सिन्धव.) नदी, समुद्र, बहने वाले पदार्थ (तुभ्यम्) तेरे लिये (अर्षन्ति) गति करते हैं।

प्रश्न होता है, यह ससार किसके लिये है ? अत्यन्त गहन प्रश्न है। यदि कहो कि जीव के लिये, तो यह बात समझमें नहीं आती। दर्शनिक लोग बताते हैं, साथ मे वेद की गवाही भी है कि जीव अत्यन्त छोटा परमाणु से भी सूक्ष्म है। यह सारा पसारा तुच्छ जीवो के लिये हो नहीं सकता!

तो क्या ससार निष्प्रयोजन है ? क्या कोई कारीगर ऐसा भी है जो कोई ऐसी वस्तु बनाये जिसका उपभोक्ता=बरतने वाला कोई न हो। बनी वस्तु बनाने वाले का जहां पता देती है, वहाँ यह भी बताती है कि इसका उपयोग करने वाला भी कोई होना चाहिये।

वेद कहता है-हे जीव! यह सारा ससार तेरे लिये है। तभी तो आत्मनिरूपण प्रसग मे वेद ने कहा है-

आ वरीवर्त्ति भुवनेष्वन्त:(ऋ० १०।१७७।३)

जीव पुनः पुनः इन लोकों में आता जाता है। यदि ये जीव के लिये न हों तो इनमे इसे कौन आने दे।

ये बड़े बड़े पदार्थ हैं। इन का जीव के लिये होना जीव की बड़ाई का द्योतक है। परिमाण मे बड़ाई नहीं। हाथी का डील डौल बड़ा है, किन्तु महावत उसे छोटे-से अकुश से, जिधर चाहता है, उधर चलाता है।

वेद ने दूसरे स्थान पर इस भाव को बहुत सुन्दर शब्दो मे व्यक्त किया है—

इन्द्राय द्यावा ओषधि रुतापो रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि। ऋ० ३।५१।५

जीव के लिये द्यौलोक है। औषधियां और जल, वन आदि सब मिलकर जीव के लिये धन की रक्षा करती हैं। पृथ्वी से लेकर द्यौ पर्यन्त जो भी जन्य पदार्थ है, सारे जीव के लिये हैं। यदि यह इनका सदुपयोग करेगा तो इसके लिये धन=प्रीति साधन हैं, दुरुपयोग से यही निधन=मृत्यु साधन बन जावेंगे। हे जीव! सृष्टि सारी तेरे लिए है, तू जैसा चाहे उसका प्रयोग कर, किन्तु अंतिम परिणाम का सदैव विचार करता रहना।

वर्ष ७१ | अंक २९

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति १५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम. ए.

इस अंक में पढ़िए !

# मृत्यु-दण्ड

[ श्री पं० जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

यः पौरुषेयेण क्रविषा समंक्ते,
यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने,
तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥
ऋ० । १० । ८७ । १६

शब्दार्थः—(य) जो (यातुधान) दुष्ट घातक वर्ग (पौरुषेयेण) मनुष्य के (क्रविषा) मांस से, और ; (यः) जो (अश्व्येन) घोड़े के मांस से, या (पशुना) किसी पशु-पक्षी वा जीव-जन्तु के मांस से (समक्ते) जीवन-निर्वाह करता है। और (यः) जो (अघ्न्याया) गाय के मांस से (भरति) पेट भरता है, भरण-पोषण करता है, (क्षीरम्-अग्ने) हे घी, दूध आदि की इच्छा करने वाले निष्पाप और सामर्थ्य सम्पन्न वीर ! तू (तेषाम्) उनके (शीर्षाणि) सिरो को (हरसा) तेज कुल्हाड़े से, फरसे से (अपिवृश्च) काट ले।

भावार्थ—हे राष्ट्रहित के लिये घी, दूध आदि की वृद्धि की कामना करने वाले, राष्ट्र के सर्वोच्च शासक ! जो लोग दुर्बल मनुष्यो को सताते हैं, उनके स्वत्वो का अपहरण करते हैं, या उन्हें मार-कर खा जाते हैं, तथा जो गाय, भैंस, घोड़े, बकरी और हिरण आदि पशुओ को मार-मार कर खा जाते हैं, तू उनका समूल उच्छेद कर।

## प्रवचन

जिनके गुण, कर्म और स्वभाव दुष्टतापूर्ण हैं, जो अभ्यस्त मांसाहारी है, जो गौओ, घोड़ो, पशु-पक्षियो को ही नहीं, अपितु मनुष्यो को भी मार कर चट कर जाते हैं, वे दुष्ट मृत्यु-दण्ड के पात्र हैं। शासक वर्ग को उचित है कि न्यायाधिकरण मे उनको उपस्थित करे। अपराध प्रमाणित होने पर उन्हे तलवार के घाट उतार दिया जाये। जब अपराधियो को उनके अपराधो की गुरुता के अनुरूप ही कठोर दण्ड मिलता है, तभी उनकी दुष्टताओ का कुछ निरोध हो सकता है। कोई भी शासन-तन्त्र कठोरता, उग्रता और दृढ़ता के बिना तो ठीक ठीक चल ही नहीं सकता। शासकों की सज्जनता, दया, उदारता और क्षमाशीलता को तो दुष्ट जन दुर्बलता, कायरता और बुद्धिहीनता ही समझा करते हैं। जब शासकों में दृढ़ता का अभाव होता है, तब उसकी इस अयोग्यता के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र ही नाना प्रकार की विपत्तियो में उलझ जाता है। पुनः जब दृढ़ता और उग्रता-सम्पन्न राज्याधिकारी होते हैं, तभी उन विपत्तियो का अन्त होता है।

प्रस्तुत सन्दर्भ मे जिन अपराधियो का उल्लेख है, वे कोई साधारण मांसाहारी या हिंसक नहीं हैं। वे तो, वे बड़े-बड़े डाकू चोर, लुटेरे, हत्यारे, स्वार्थी, शोषक सूद-खोर, किराया-खोर, और पर पीड़क लोग हैं, जिन्होने अपने बड़े बड़े सुसगठित दल तथा वर्ग बना रखे है। अपने नीच स्वार्थों की पूर्ति के लिये जिन्होंने अनेक प्रकार के विधि-विधान रच रखे हैं, और अर्थ-शास्त्र भी। जो मनुष्य को विवश करके, दबाकर, सताकर, डराकर, नाना प्रकार से लूटकर और मूर्ख बनाकर, मौज-मजे करते रहते है।

जो लोग सूद-दर-सूद के चक्कर चलाते हैं, खाद्य-पदार्थों मे मिलावट करते हैं, थोड़ी मजदूरी देते हैं और अधिक काम लेते हे। जिन्होने अपने पाशविक बल और छल के आधार पर बड़े-बड़े खेतो पर, कारखानो पर, जगलो पर भू-प्रदेशो और धन-आगम के साधनों एव मार्गों पर अपने एकाधिकार स्थापित कर रखे हैं, जो अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिये संसार में युद्ध की आग भड़काते रहते हैं, जो भोले-भाले लोगों को नाना प्रकार से आपस में लड़ा कर, निर्बल बना कर और विपत्तियो में उलझा कर, अपना दास बनाते हैं, और एकमात्र स्वार्थ साधन ही जिनका लक्ष्य है। जो परोपकार भावना से विमुख हैं, जो राष्ट्रीय हितों को नाना प्रकार की हानियां पहुचाते रहते हैं। जिन्होने खेतों, खानो, जगलो, सागरों और पहाड़ों पर अपना एकाधिकार जमाकर ससार को उनके लाभों से वंचित कर दिया है, वे सभी दुष्ट मनुष्य यातुधान= हत्यारे हैं। वे सभी मनुष्य मास के भक्षक हैं। जब एक बार किसी दुष्ट व्यक्ति या समाज को मनुष्य मास के भक्षण का मजा मिल जाता है, और लहू उसके मुँह को लग जाता है, तब उसका चसका आसानी से नहीं छूटता। ऐसे विषय-प्रसङ्गो मे उग्र उपायों के सिवा सुधार का दूसरा कोई मार्ग ही नहीं है। हीरे को हीरा काटता है। चोर, चोर को पकड़ता है। कांटे से कांटा निकाला जाता है। शठे शाठ्य समाचरेत।

जो रेलो, मोटरो, विमानो, सड़को और यातायात के साधनो को तोड़ता, फोड़ता या बिगाड़ता है, अथवा इनके लाभो से ससार को वंचित करता है, वह गो हत्यारा भी है, अश्व-हत्यारा भी। अग्नि-विद्या की उस शाखा को, जिससे शीघ्र गमनागमन समव होता है, अश्व-विद्या कहते हैं। अग्नि-विद्या का विद्युत-विभाग ही गो-विद्या भी कहलाता है।

जो उत्तम आयोजनों के अधिष्ठाता, द्रष्टा, निरीक्षक, पर्यवेक्षक, और समालोचक-गण हैं, उन को पशु भी कहते हैं। लाक्षणिक तथा यौगिक अर्थों में यह 'पशु' शब्द विशेष और विलक्षण अर्थों का प्रति-बोधक है। राजनीति में गुप्तचरों को भी पशु कहते हैं। पश्यति इति-पशु। अब पशु-हत्यारों के अपराधों की गुरुता का विचार पाठक स्वयं करें लें।

जो सोने के टके प्राप्त करने के लिये गौओं की हत्या करता और करवाता है, जिसका गो-हत्या के पाप से प्रत्यक्ष, परोक्ष, या परम्परया कुछ सम्बन्ध है, वह व्यक्ति, समाज, वर्ग वा राष्ट्र गो हत्यारा है। विद्या, प्रकाश और पृथ्वी को भी गो कहते हैं। जो इनकी हत्या करते हैं, वे भी गो हत्यारे हैं। सब प्रकार की गौयें सब प्रकार से परिपालनीय हैं। परिपालन और सरक्षण की अवस्था मे गौओं से मानव जाति का और सम्पूर्ण ससार का बहुत अधिक लाभ होता है। गो-हत्या के द्वारा इन लाभो का अन्त तो होता ही है, जो कि अर्थ शास्त्र के अनुसार भी सुस्पष्ट है, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से और भी बड़े बड़े अनर्थ होते है। ऐसा होने पर युद्ध महामारी और अकाल आदि कई दैवी प्रकोप उठ खड़े होते है।

मनुष्य-हत्यारो, अश्व-हत्यारो, गो-हत्यारो, पशु हत्यारो और इसी प्रकार के अन्य सभी अभ्यस्त अपराधियो को प्राण-दण्ड देने का विधान वेद ने इसीलिये किया है। जिससे कि दुष्टो को कभी भी इन दुष्टताओ को करने का साहस ही न हो। यदि कोई अपराध करे तो वह उसका फल पावे। स्मरण रहे कि दण्ड-दान का यह कार्य राष्ट्र के न्यायाधिकरण द्वारा सम्पन्न होगा। अपराधी को अपने बचाव का न्यायानुमोदित अवसर मिलेगा। कानून को अपने हाथ मे कोई न ले।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

लखनऊ-रविवार १० अगस्त ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## सत्यं, शिवं, सुन्दरम्

हे प्रभु अज्ञानियों को ज्ञान दो। ज्ञान-दान का पुण्य अन्य किसी भी प्रकार के दान की तुलना में बहुत अधिक होता है। ब्रह्मदानं विशिष्यते। संसार मे जो ये नाना प्रकार की क्लेश परम्परएं प्रवाहित हो रही हैं, सो सब अज्ञान की ही तो लीलायें हैं। अज्ञान से ही सम्मोह की उत्पत्ति होती है। अज्ञान से ही राग और द्वेष के आधी तूफान उठ खड़े होते हैं। अज्ञान से ही लूट-खसोट के दृश्य देखने मे आते हैं। अज्ञान से ही प्राणी जन्म-मरण के चक्कर मे फसते हैं। अज्ञान मानवता का सब से बड़ा शत्रु है। अज्ञान-असुर का बध करने के लिये ज्ञान रूपी खड्ग को धारण करके आगे बढ़ें। मानवता के तीन प्रधान लक्ष्य हैं—

सत्य, शिव, सुन्दरम्। इनमे भी सत्य का स्थान प्रधान और आधार स्वरूप है।

सत्य की साधना ही तो सच्चा मनुष्यपन है। सत्य क्या है? इन प्रश्नो की मीमासा मे अपने-अपने सम्पूर्ण ज्ञान और साधनो के द्वारा करनी चाहिये। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने हेतु सबको सदैव उद्यत रहना चाहिये। सत्य ही धर्म है। सत्य ही कर्त्तव्य है। सत्य का ही अपर नाम ज्ञान है। असत्य ही अधर्म है। अकर्त्तव्य है, अज्ञान है।

बहुत-से लोग ज्ञानी तो होते हैं; परन्तु अपने ज्ञान के प्रचार और प्रसार के लिये, वे कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते। वे कुछ करना भी चाहे, तो कर ही नहीं पाते। इसका क्या कारण है? कारण यह है कि वे कुछ विषयों में घोर अज्ञानी भी होते हैं। उनके ज्ञान तन्तु और अज्ञान-तन्तु आपस मे बहुत अधिक उलझे हुए भी होते हैं अपने मस्तिष्क की इस दोष पूर्ण अवस्था के कारण वे बेचारे करे भी तो क्या करे? वे कभी-कुमार जबानी जमाखर्च कर सकते हैं, वे वितण्डावाद भी बढ़ा सकते हैं, परन्तु वे सत्य का अनुसन्धान नहीं कर सकते, वे सत्य पक्ष पर डट नहीं सकते, वे ऊँचे आदर्शों के लिये मर और मिट नहीं सकते। वह दृढ़ता उनको कभी प्राप्त ही नहीं होती, जो मनुष्य को सत्यवादी और सत्य का पक्षपाती बनाती है। फिर भी यदि वे चाहे, तो अपनी इस दुर्बलता से वे छुटकारा पा सकते हैं। उनको विशेषज्ञो के सम्पर्क मे रहना होगा। शास्त्र विचार, सत्सगति, प्राणायाम, ब्रह्मचर्य पालन, सात्विक-भोजन और ईश्वर भक्ति के द्वारा वे आत्म-सुधार कर सकते हैं और अपने लिये तथा दूसरों के लिये भी अधिक उपयोगी बन सकते हैं।

जहाँ चाह वहाँ राह।

कुरूपता को दूर करो। असुन्दरता को दूर करो। कुरूपता वा असुन्दरता क्या है? नियम पालन व्यवस्था, सन्तुलन, अनुपात, स्निग्धता, माधुर्य, लावण्य और पवित्रता का अभाव ही असुन्दरता है। फिर विचार करो, देखो और समझो कि सुन्दर कौन है? असुन्दर कौन? सुन्दर बनो और सुन्दरता का सवर्धन करो। जो मन को भाये वह सुन्दर है। जो मन को न भाये, वह असुन्दर है। नजर अपनी - अपनी। पसन्द अपनी-अपनी।

कोई बात अथवा वस्तु मनको क्यो भाती है? और क्यो नहीं भाती? इस प्रश्न की मीमासा उपयोगिता और आत्मीयता के आधार पर की जाती है। सपेरे को तो महा भयकर काला साप भी सुन्दर प्रतीत होता है। ग्वाले की काली-कलूटी भैंस भी सुन्दर प्रतीत होती है। माता को अपना गन्दा और बेडोल बच्चा भी सुन्दर प्रतीत होता है। कवि को काले-काले बादल और ऊबड़-खाबड़ पर्वत भी सुन्दर प्रतीत होते हैं। चोर को चांदनी रात असुन्दर लगती है। कुरूप व्यक्ति को तो किसी की भी सुन्दरता नहीं सुहाती। सुन्दरता और असुन्दरता के विषय मे प्रत्येक मनुष्य का अपना-अपना दृष्टि-कोण और विचार होता है। उसके अनुसार ही उसकी प्रतीति भी होती है। एक पदार्थ या दृश्य, जो किसी एक व्यक्ति को सुन्दर प्रतीत होता है, वही दूसरे को असुन्दर प्रतीत होता है। जो एक का प्यारा लगता है, वही दूसरे को बे प्यारा लगता है। जो लोग सुरुचि-सम्पन्न होते हैं, उनका दृष्टि-कोण भी सुरुचि-सम्पन्न होता है। सुन्दरता की खोज के लिये दूर जाने की क्या जरूरत है? जिसमें कोई खूबी है, वह सुन्दर है। जो उस खूबी को देखता है और देख सकता है, वह सुन्दरता का उपासक है। जो सद्गुणो का दाता, वा प्रचारक है, वही सुन्दरता का निर्माता है।

बुद्धिमानो को उचित है कि वे कल्याण कारिता के आदर्श को भी अपने सामने रखें। मानवता का तीसरा प्रधान लक्ष्य यही है। मनुष्य कल्याणकारिता के विषय मे सोचता तो बहुत कुछ है, बोलता भी बहुत है, परन्तु करता क्या है? अपने क्रियात्मक जीवन मे तो वह बहुत ही नीचे या पीछे है। बड़े-बडे धर्म-ध्वजी लोगो की भी यही अवस्था है।

वस्तु स्थिति तो यही है; परन्तु बुद्धिमानो और सभ्यताभिमानो जनो के लिये यह कोई गौरव की बात नहीं है। जो अपने मन, बचन और कर्म से ससार मे सुख की वृद्धि करते हैं, मानवता के सच्चे हितैषी तो बस वे ही हैं। वे ही शिव=कल्याण के पुजारी भी है।

विद्या, प्रतिभा, योग्यता आदि सद्गुणो का सदुपयोग करो। इन सद्गुणो के द्वारा ससार मे सुख की वृद्धि करते हुये अपनी-अपनी मन चाही सफलताओं को प्राप्त करो। सभ्यजनों की रीति से अपने-अपने सद्गुणो को प्रकाशित करो। अपने-अपने शुभ-जीवन-यापन द्वारा अपने-अपने उत्तम विचारो, ऊँचे आदर्शो और सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करो। बातें करो, कम। प्रचार करो, अधिक। ससार के सुख-समुदाय मे वृद्धि करो। यही सच्ची शिवोपासना है।

कुतर्कों और हेत्वाभासों की सहायता से सत्य को असत्य और असत्य को सत्य सिद्ध करना तो मानवता का अपमान है। सुन्दर को असुन्दर और असुन्दर को सुन्दर बनाना तो कुरुचि का प्रमाण है। ससार मे झगड़ो बखेडो और क्लेशो की वृद्धि करना तो मनुष्यता का पतन है। छिद्रान्वेषण कोई बडा कठिन कार्य नहीं है। सच्ची कला कारिता तो यही है कि मनुष्य का दृष्टि-कोण सुधार दिया जाये। अज्ञानी, अज्ञानी न रहे। असुन्दर, असुन्दर न रहे। दुःख, दुःख न रहे।

अपनी कला को कला ही रहने दो। मण्डी के माल की तरह कला का सौदा न करो। सत्य की वृद्धि करो। सौन्दर्य की वृद्धि करो। कल्याण की वृद्धि करो। यदि तन की भूक को मिटाने के लिये कला को बेचा जायेगा, तब मन की भूक कैसे मिटेगी? तब, अमर अभिलाषाओ की पूर्त्ति कैसे होगी? और तब, आत्मोद्धार किसको कहेंगे?

## श्री मन्त्री जी का भ्रमण प्रोगाम

प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के सुयोग्य माननीय मन्त्री श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम एल ए हाथरस निवासी ने सभा के लिये धन सग्रहार्थ एव समाजो का सगठन दृढ करने हेतु प्रान्त मे भ्रमण करने का निश्चय किया है। श्री मन्त्रीजी महोदय जिस-जिस समाज मे पहुचें, उनके अधिकारियों को चाहिये कि वे उनका भव्य स्वागत करे और सभा के लिये पुष्कल धन भेंट करने की कृपा करें।

—शिवकुमार शास्त्री ससत्सदस्य
सभा प्रधान

## समस्त आर्य जगत् के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की विज्ञप्ति

भारतवर्ष के समस्त आर्यसमाजो व प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो की सेवा मे निवेदन है कि '१६ नवम्बर से २१ नवम्बर १९६९ तक वाराणसी मे 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह' विराट रूप से मनाया जायगा। इन तिथियो मे कोई भी आर्यसमाज उत्सव, सम्मेलन, कथा आदि न रक्खें। जिनसे सर्व आर्य बन्धुगण वाराणसी पहुंच सके। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव के लिये पुष्कल धनराशि भेजने की कृपा करे।

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री | प्रेमचन्द्र शर्मा |
| ससद सदस्य | सदस्य विधान सभा |
| प्रधान | मन्त्री |

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

### निरीक्षक नियुक्ति की सूचना

विदित हो कि जिला सहारनपुर के लिये श्री राजेन्द्रप्रसाद जी आर्य एव जिला मुजफ्फरनगर के लिये श्री प० निरजनदेव जी शास्त्री बुढाना निवासी सभा की ओर से निरीक्षक पद पर नियुक्त किये गये हैं। आपके पधारने पर समाजों के अधिकारियों को चाहिये कि समाज एव सस्था का प्राप्तव्य धन देकर सभा की रसीद प्राप्त करने की कृपा करे।

## शास्त्रार्थ शताब्दी का कार्यालय

भारत की समस्त आर्यसमाजो एव आर्य बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव' का कार्यालय नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में खुल गया है, और कार्य तीव्रता से हो रहा है। आर्यजनता को चाहिये शताब्दी सम्बन्धी समस्त पत्र-व्यवहार 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति, ५ मीराबाईमार्ग लखनऊ' के पते पर करने की कृपा करे।

| | |
|---|---|
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०ए० | महेन्द्रप्रताप शास्त्री |
| मन्त्री | सयोजक |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति |

## भू-सम्पत्ति विभाग की सूचना

प्रदेशीय आर्यसमाजो को विदित हो कि सभान्तर्गत भू-सम्पत्ति विभाग के सहायक अधिष्ठाता पद पर बरेली के कर्मठ कार्यकर्ता आर्य समाज के अनन्य भक्त श्रीयुत चन्द्रनारायण जी एम. ए एल-एल. बी एडवोकेट नियुक्त किये गये हैं।

### सभा की सूचना

सभान्तर्गत अवैतनिक वैतनिक एव प्रचारक निरीक्षक महोदयों की सेवा मे निवेदन है कि जैसा कि आर्यमित्र दि० २७७६९ से ज्ञात हुआ होगा कि सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से १६ नवम्बर से २१ नवम्बर १९६९ तक काशी नगरी मे शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव करने का आयोजन किया जा रहा है। कृपया आप अपने भ्रमण में जहाँ कहीं भी पहुचें, शताब्दी के सम्बन्ध मे अपने भाषणों में अवश्य चर्चा करने की कृपा करें और काशी नगरी मे पहुचने के लिये प्रेरणा करें। शताब्दी के लिये धन भिजवाने की कृपा करें।

—प्रेमच

### आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास मे किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सके।

इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत मे शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार सहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन मे एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष में दस आर्य प्रतिनिधि सभाए हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अत. भारत से बाहर देशो में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करे। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोडकर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से ससार मे शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हें समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अत आर्य भाइयो को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे।

पता—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी—

# आर्य विद्वानों के गले में जयमाला पड़ने का समय

## "यदर्थं क्षत्रिया सूते तस्य कालो ऽयमागतः"

[ श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम ए वेदाचार्य ]
प्रचार मन्त्री—काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति

अभी शास्त्रार्थ शताब्दी की तैयारी के लिये दो-तीन मास का समय है। हमने सब विद्वानों को सूचित किया है कि उन्हें अभी से किस-किस विषय पर तैयारी करनी है। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक ६ दिन काशी मे शास्त्रार्थ होंगे और ६ सम्मेलन और ५ महापरिषत् की बैठकें। तथा महायज्ञ और शोभा यात्रा। एक मास पूर्व १६ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक समस्त भारत में आर्य विद्वानों की शास्त्रार्थ यात्रा होगी। सब की साधारण रूपरेखा इस प्रकार रहेगी।

### शास्त्रार्थ यात्रा की तैयारी

समस्त भारतवर्ष मे घूमकर जो शास्त्रार्थ यात्रा होगी उसका विषय केवल मूर्तिपूजा रहेगा। मूर्तिपूजा अवैदिक है इस विषय की तैयारी दो मास विद्वान् करें। इस कार्य के लिये सैकड़ों व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। जो नाना टोलियों में विभक्त होकर समस्त भारत में इधर-उधर प्रान्तीय सभाओं के सहयोग से उस उस मार्ग से भेजे जावेंगे। जिनके हम नाम और पूरा पता जानते हैं, उनको पत्र लिखे जा चुके हैं। जिनके पास अभी तक पत्र नहीं गये हैं, वे स्वय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर सूचित करे कि कौन-कौन शास्त्रार्थ यात्रा मे चलने को तैयार हैं।

इस शास्त्रार्थ यात्रा में दो प्रकार के विद्वान् रहेगे। एक तो वे जो स्वय शास्त्रार्थ करने में सिद्ध हस्त हैं। दूसरे वे जो विशेष विशेष शास्त्रों की सहायता शास्त्रार्थ के समय पहुंचा सकते हैं; वे स्वयं शास्त्रार्थ नहीं करेंगे। प्रत्येक शास्त्रार्थ मण्डल में एक शास्त्रार्थ महारथी होगा और चार उसके साथ शास्त्रीय सहायता पहुचाने वाले विद्वान् रहेगे। एक वैयाकरण और नैरुक्त दूसरा दार्शनिक। तीसरा वैदिक साहित्य का विद्वान् और चौथा शास्त्रार्थ विषयक ग्रन्थों का पूर्ण ज्ञाता।

समस्त भारतवर्ष के आर्य विद्वानो से सादर प्रार्थना है कि वे स्वय तैयार हों और सूचित करें कि वे स्वयं शास्त्रार्थ करेंगे या शास्त्रीय सहायता पहुचा सकेंगे। पुस्तकालय पूरा साथ मे रहेगा। यदि शास्त्रार्थ महारथियों की संख्या अधिक हुई तब भी एक शास्त्रार्थ महारथी रह सकेगा।

शास्त्रार्थ मण्डल का जगह-जगह स्वागत होगा और सब प्रकार की सुविधाए आराम की दी जावेंगी। जैसा जो चाहेगा और आर्थिक दृष्टिकोण से भी किसी की हानि नहीं होगी। हे आर्य विद्वानों! यह काशी शास्त्रार्थ शताब्दी आपकी है। इसका उत्तरदायित्व आपके ऊपर है। इस महोत्सव मे जयमालाए आपके गलो मे पड़ेंगी, अविद्वानों के नहीं। यदि इस अवसर पर आप चूके तो आर्य विद्वानों की ही हानि होगी। अन्य किसी समारोह मे विद्वानो को वह स्थान नहीं मिलेगा जो इस काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मे।

### आर्य विद्वानों की शिकायतें

कुछ आर्य विद्वानों की शिकायतें यह आई हैं कि आज तक किसी ने हमसे पूछा कि तुम कैसे जिन्दा रह रहे हो, बन्धुओ! इस बात को भूल जाओ और पी जाओ यह सोचकर कि महर्षि के उत्तराधिकारी हम हैं। ये व्यक्ति नहीं जिनसे तुम शिकायतें कर रहे हो। सामाजिक और व्यावहारिक योग्यता रखने वालो ने अपने विषय मे आर्यसमाज को आगे बढ़ाया, आओ विद्या के क्षेत्र मे सैद्धान्तिक जगत् मे शास्त्रीय सत्य मे हम आर्यसमाज को इस शताब्दी के अवसर पर बहुत आगे बढ़ाकर ले जा सकेंगे। अतः शीघ्र मूर्ति पूजा विषयक शास्त्रार्थ की तैयारी करो और अपनी सूचना शीघ्र दो तब सबकी एक मीटिंग देहली लखनऊ या काशी बुलाकर सबके सत् परामर्श से प्रोग्राम शास्त्रार्थ यात्रा का बनावें।

मत चूकै चौहान
यदर्थं क्षत्रिया सूते तस्य
कालो ऽयमागतः

### आर्य विद्वानो सावधान !

दो एक जरखरीद पण्डित इस मे विघ्न डालने के लिये इन्हीं तारीखो मे दूसरा प्रोग्राम आर्य जगत् मे रखकर इसको फेल करने की चेष्टा कर रहे हैं। उनसे सावधान रहें। काशी शास्त्रार्थ की तारीख १६ नवम्बर थी, और उस समय की तिथि २१ नवम्बर को १०० वर्ष बाद पड़ती है। अतः १६ से २१ नवम्बर तक कहीं भी आर्यजगत् मे कोई उत्सव कोई सम्मेलन नहीं होना चाहिये जो कोई ऐसा करने की चेष्टा करेगा वह मुकदमेबाज आर्यसमाज का शत्रु और स्वार्थी होगा और आर्य जनता की निगाह मे गिर जावेगा।

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की विचित्र शोभा यात्रा

यह वाराणसी पण्डितो की नगरी है। गली-गली जहा विद्वान् बसते हैं। जिस नगरी मे तीन विश्वविद्यालय हैं। भारतवर्ष का ऐसा कोई अन्य नगर नहीं है, जिस एक ही नगर में अनेक विश्वविद्यालय हो। इस नगरी मे सब शास्त्रों के सागर जगह-जगह हैं। अनेक विशाल दिव्य संस्कृत पुस्तकालय यहां हैं। यहां संस्कृत की पुस्तकों की दूकानो से बाजार भरे पड़े हैं। यह काशी सरस्वती का घर है। यहां यहा की दृष्टि से सोचना होगा। बता आर्यसमाज तूने सरस्वती की आराधना कितनी की है या केवल आन्दोलन ही जीवन भर किये हैं। इसको शोभा यात्रा मे दिखाया जावेगा। कैसे वह सुनो—

अभी हम हैदराबाद के दशम आर्यमहासम्मेलन से लौटे हैं। उस मे जब शोभा यात्रा निकली तब सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री डा० दुखनराम जी तथा मन्त्री लाला रामगोपाल जी शालवाले सिंहासन पर थे। दिव्य मालायें गले मे पड़ी हुई थीं। नगर मे जगह-जगह उनके ऊपर फूलो की वर्षा होती जाती थी। पर उस शोभायात्रा मे वेदाचार्य लोग धरती पर पैदल चल रहे थे। जो शंकराचार्य आज सिंहासन पर चलते हैं और हैदराबाद सम्मेलन के प्रबन्धको ने दशम आर्य महासम्मेलन मे उनके आने पर उनके चलने के लिये धरती पर लाल कपड़ा बिछाया था, यदि यही शंकराचार्य जी आर्यसमाज के

[शेष पृष्ठ १२ पर]

# काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

[ १२१ ]
आदर से भोजन किया करे, हो अन्न सबल तो हरियाला।
यदि अन्न अनादर से खाये, तो हो विनाश करने वाला।
भोजन हो मँहगा या सस्ता, पर हृदय भरी हो प्रसन्नता;
हर खाद्य सफल तन करे प्रबल, भोजन मन का है श्रुतिशाला।

[ १२२ ]
उच्छिष्ट अन्न या खाद्य अन्न, यह भाग नहीं खाने वाला।
सन्तुलित सदा भोजन करना, अति उचित नहीं खाने वाला।
आरोग्य आयु या पुण्य धन्य, दे सदा सन्तुलित ही भोजन;
सुख स्वाद सदा संयम देना, संयम-साधन है श्रुतिशाला।

[ १२३ ]
उपभोग विषय का करने से, इच्छा पर पड़े नहीं ताला।
घृत अग्नि मध्य ज्यों पड़ता है, बढ़ती त्यों इच्छा की ज्वाला।
अति इन्द्रिय विषय में अवनति है, उन्नति है उसके विरोध में,
बोध-शोध सच्चे निरोध का, धन सम्बोधन दे श्रुतिशाला।

[ १२४ ]
आरम्भ चले करने पूजन, तो भरो हृदय में उजियाला।
बनो अहिंसक सत्य कथन हो, छोड़ो चोरी की हर चाला।
बनो जितेन्द्रिय अभिमान बिना, हो अधिक नीति से मत सचय;
सबसे बढ़कर प्रथम अर्चना, यम पंच करे ये श्रुतिशाला।

[ १२५ ]
उर भीतर से राग द्वेष तज, हो शरीर जल से शुचि आला।
पुरुषार्थ करे सन्तोष धरे, तन धर्म हेतु हो तप वाला।
सदा सार्थक ओ३म् जाप कर, आलस्य बिना स्वाध्याय करे;
आवेश ईश का शीश धरे, यह नवल नियम दे श्रुतिशाला।

[ १२६ ]
होकर आधीन इन्द्रियों के, जीवात्मा दोषी हो काला।
यदि करे इन्द्रियाँ निज वश में, पाये तो सच्चा उजियाला।
ज्यों अश्व सारथी वश करता, होतीं इन्द्रियाँ नियन्त्रित त्यों,
हो सिद्धि-वृद्धि समृद्धि तभी, दें आत्म-शुद्धि जब श्रुतिशाला।

[ १२७ ]
कोष 'अन्नमय' सर्व त्वचा से, है अस्ति तलक पृथ्वी वाला।
भीतर से बाहर प्राण चले, जाये अपान भीतर आला।
नाभिस्थ देह को रस देता, है प्राण नाम इसका समान,
अन्न कण्ठगत करता उदान, कहु 'व्यान' यत्नबल श्रुतिशाला।

[ १२८ ]
उपस्थ वाक-पाद पणि-पायु, मन अहम 'मनोमय' कर्माला।
त्वग-नयन-कर्ण नासिका जीभ, बुद्धि-चित्त 'विज्ञान' मयाला।
कोष पाँचवाँ 'आनन्दमय', पञ्च कोष ये जीव विवेचन;
व्यवहार कर्म है सब इनमें, आनन्द कोष है श्रुतिशाला।

[ १२९ ]
निष्काम कौन है, कोई नहीं, जन जो पलक झपकने वाला।
नित नव संकोच विकास करे, गति नयनों को देने वाला।
उद्योग नहीं कामना बिना, सर्व स्वस्ति हित करो कामना,
शुभ कर्म-कामना करने से, दे सुफल भावना श्रुतिशाला।

[ १३० ]
कान-नाक-त्वग-नयन-वाक जग, सबके साथ मनुज मन वाला।
शब्द गन्ध स्पर्श रूप रस बस, सुख दुःख का यह स्रोत निराला।
संयोग इन्द्रिय से मन का, सत्यम असत्य का अनुभव हो;
यही ज्ञान प्रत्यक्ष प्रणाली, करती विकसित है श्रुतिशाला।

[ १३१ ]
मन जिसका नहीं नियन्त्रण में, है जीव वही बहु दुखियाला।
इन्द्रियाँ नहीं बस में जिसके, है उसे कहाँ फिर सुख आला।
सफल वही जीवात्मा होता, इन पर जो शासन कर लेता;
अन्यथा नहीं गोता खाता, निस्तार कराती श्रुतिशाला।

[ १३२ ]
नहीं ज्ञान मय अन्य योनियाँ हैं बिना बुद्धि वे बेहाला।
बल बुद्धिमान है किन्तु मनुज, ढके देह ले ज्ञान-दुशाला।
करके इन्द्रियाँ नियन्त्रण में, अपने परलोक-लोक दोनों;
है सफल बना सकता मानव, बुद्धि वृद्धि करती श्रुतिशाला।

[ १३३ ]
गजनी के प्रतिमा के कारण, गज स्पर्श हेतु बन्धन वाला।
जिसको संगीत सुहाता है, मृग शब्द हेतु बन्धन वाला।
जल के रस में, रूप अग्नि में, मीन-पतंगा प्राण गवाता;
है पुष्प गन्ध में भ्रमर फँसे, मृदु मुक्ति गन्ध दे श्रुतिशाला।

[ १३४ ]
वश जीव एक तन्मात्रा से, हो दीन सदा क्रन्दन वाला।
मानव में पाँचों तन्मात्रा, क्यों नहीं बने बन्धन वाला।
है अन्य योनि को ज्ञान नहीं, मानव को बुद्धि विशेष मिली;
ये बुद्धि ज्ञान बन्धन काटे, है मिली मनुज को श्रुतिशाला।

[ १३५ ]
इन्द्रियाँ सभी शासित करता, जन पाता सुख का उजियाला।
हो शासित जो स्वयं उन्हीं से, तो पड़ता है दुःख से पाला।
काम क्रोध-मोह लोभ-ईर्ष्या, औ अहंकार अज्ञान बढ़े;
दुख रोष बढ़े उन दोषों से, है दोष दुराती श्रुतिशाला।

[ १३६ ]
चक्रवाक गण कामवान हैं, क्रोध भेड़िया करने वाला।
गृद्ध लोभ बहु मोह बँदरिया, श्वान ईर्ष्या करने वाला।
बहु करे सिंह भी अहंकार, अज्ञान उल्लू होना;
जग जीव विविध हैं दोष लिप्त, निर्दोष मनुज की श्रुतिशाला।

[ १३७ ]
जब जीव एक का एक दोष, है उन्हें हीन करने वाला।
मानव में होते दोष सभी, प्रत्येक दीन करने वाला।
रखता पशु वर्ग नहीं क्षमता, मानव निज दोष हटा सकता;
दी ज्योति मनुज को ईश्वर ने, वह ज्योति जीव की श्रुतिशाला।

[ १३८ ]
बाँधे जो दस-दस गौओं को, मानव शरीर वह गौशाला।
जो संग सभी गोधी-गौ के, वह मन मानव का है ग्वाला।
ग्वाले की भाँति नियन्त्रक हो, तो मन मानव का रक्षक हो;
अन्यथा धेनु हो भ्रमित पन्थ, सन्मति सुपन्थ दे श्रुतिशाला।

[ १३९ ]
गौ नाम पूज्य माताओं का, भू-धेनु यथा पालन वाला।
गौ नाम इन्द्रियों का होता, पत्नी समान सेवा वाला।
माता की सेवा करे मनुज, वश कर पत्नी से सेवा ले;
तो गौरव हो गौ के रव से, गौरव गायन है श्रुतिशाला।

[ १४० ]
निज जीवन में जो अतिशय हो, कामातुरता करने वाला।
जो और दूसरा बिल्कुल हो, निष्कामता बरतने वाला।
दोनों ही होते श्रेष्ठ नहीं, कर्म सर्व की स्रोत कामना;
वेद विहित सब कर्म इसी से, दे स्वस्ति कामना श्रुतिशाला।

[क्रमशः]

# राजनैतिक समस्याएं

## बैंकों का राष्ट्रीयकरण

### (एक महान् आर्थिक कदम अथवा राजनैतिक उद्देश्य)

[ले०—देवव्रत विद्यार्थी एम. एस-सी. (भौतिक), एम. एस-सी. गणित]

बंगलौर कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में प्रधान मन्त्री के आर्थिक प्रस्ताव की स्वीकृति तथा उसके तुरन्त बाद देश के प्रमुख १४ बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने के पश्चात् देश के राजनैतिक समुद्र में एक ऐसा तूफान आया है, जिसने देश के समस्त राजनैतिक जगत् को दो परस्पर विरोधी गुटों में बांट दिया है। देश के सभी प्रमुख राजनैतिक दल, पार्टियों के नेता, तथा समाचार-पत्र सभी इससे प्रभावित हुये हैं और परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों को लेकर, अपने-अपने गुटों में इकट्ठे हो गये हैं। अच्छा तो यह होता कि देवता और राक्षसों की भांति ये दोनों दल इस राजनैतिक समुद्र का मन्थन करते और उससे प्राप्त अमृत का जनता में समान वितरण कर देते, किन्तु ऐसा न करके उन्होंने परस्पर आरोप-प्रत्यारोप, घृणा और द्वेष के सहारे परस्पर अविश्वास का जो सहारा लिया है, उससे केवल वातावरण को विषाक्त बनाने में ही सहायता मिली है।

देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि जब भी अर्थ जैसे नाजुक प्रश्न पर विचार प्रारम्भ होता है, तो वह कुछ और प्रश्नों के साथ उलझ जाता है। और इस प्रकार स्वार्थी तत्व, जनता के एक बड़े वर्ग को भ्रम मे रखने मे सफल हो जाते हैं। बड़े बैंको के राष्ट्रीयकरण के प्रश्न के साथ भी यदि देश के राष्ट्रपति का चुनाव और श्री मोरार जी देसाई के त्यागपत्र का प्रश्न न जुड़ा होता तो इसके विरुद्ध किसी को अधिक कहने का साहस न होता और न उसकी आवश्यकता ही होती। स्वार्थी हितों को भी इस प्रश्न पर सन्देह और अविश्वास का वातावरण बनाने में मदद नहीं मिलती। इस में सन्देह नहीं कि पूंजी का प्रभाव और देशी निजी पूंजी का एकाधिपत्य बढ़ रहा है, और इसे रोका जाना चाहिए। किसी भी निस्वार्थ व्यक्ति को इस पर मतभेद नहीं होना चाहिये कि बैंकों में जमा राशि का देश और समाज के व्यापक हितों के लिये प्रयोग होना चाहिये, कुछ ही व्यवसायी घरानों के हित में नहीं। किन्तु यह सच है कि अभी तक बड़े बैंकों का लाभ केवल कुछ गिने चुने पूंजीपति घरानों को ही मिलता रहा है। लघु और मध्यम कृषकों की सहायता करने की लम्बी-चौड़ी बातों के बावजूद कामर्शियल बैंकों ने उन्हें नाम मात्र का ही उधार दिया। कृषकों को ६५ प्रतिशत से अधिक उधार आज भी महाजनों से लेना होता है और वे उनका किस तरह शोषण करते हैं, यह सर्व विदित है।

इसके अतिरिक्त भी असमानतायें हैं, और सच तो यह है कि देश की जनता आर्थिक और सामाजिक बाधाओं की शिकार है, और कांग्रेस को आजादी के बाद से देश का शासन सूत्र अपने हाथ में सम्हाले हुये है, इसके लिये उत्तरदायी है। इसके लिये श्रीमती गांधी ने जो आर्थिक नीति और कार्यक्रम पर जो प्रस्ताव कार्य समिति के समक्ष रखा—उस के लिये उनकी सराहना की जानी चाहिये। बैंकों के राष्ट्रीयकरण, कच्चे माल के आयात, लाइसेंस नीति में परिवर्तन, शहरी आय पर नियन्त्रण, एकाधिकारों के प्रसार पर रोक और कृषि क्षेत्रों के सुधार आदि जिनका जिकर प्रधान मन्त्री के नोट में है, वे देश के आर्थिक जीवन में बुनियादी परिवर्तन ला सकते हैं, परन्तु यदि केवल प्रस्ताव पास करने और भाषण देने से एक नये आर्थिक समाज का निर्माण सम्भव होता तो श्री जवाहरलाल नेहरू के समय में भारत संसार का सबसे अधिक समृद्ध और सुन्दर बन गया होता।

किन्तु अपने प्रस्ताव की स्वीकृति के तुरन्त पश्चात् श्रीमती गांधी ने संसद का अधिवेशन प्रारम्भ होने के केवल ४० घण्टे पूर्व देश के प्रमुख १४ बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके यह साबित कर दिया कि वे केवल भाषणों और प्रस्तावों पर ही भरोसा नहीं करतीं। दिल्ली से प्रकाशित दैनिक नेशनल हेरल्ड ने ठीक ही लिखा है कि—

"बैंकों का राष्ट्रीयकरण उस आर्थिक नीति की दिशा में पहला कदम है, जिसके लिये प्रधान मन्त्री उत्सुक हैं।"

अर्थात् उस बड़े आर्थिक उद्देश्य की प्राप्ति मे यह एक छोटा सा कदम मात्र है, और इस कदम पर भी श्रीमती गांधी की सफलता अभी संदिग्ध ही है। क्यो कि राष्ट्रीयकरण तभी सफल हो सकता है जबकि सरकारी मशीनरी कार्य कुशल हो। इन सभी बैंकों की आय को यदि सरकार बढ़ा न सकी या कम से कम यथास्थिति ही कायम न रख सकी तो यह उसकी एक बड़ी असफलता होगी। दिल्ली से प्रकाशित दैनिक "हिन्दुस्तान टाइम्स" लिखता है—

"राष्ट्रीय कृत संस्थान अपनी अकुशलता और बद इन्तजामी के लिये बदनाम हैं। सहकारिता क्षेत्र द्वारा कृषिकों को ऋण वितरण की स्थिति निराशा जनक है। सार्वजनिक क्षेत्रों के उद्योगों की हालत उदाहरण देने योग्य नहीं है। जिस दिन बैंकों के राष्ट्रीयकरण का अध्यादेश जारी किया गया उसी दिन प्रधान मन्त्री ने सार्वजनिक उद्योगों के मैनेजरों से इस क्षेत्र में कुप्रबन्ध की शिकायत की जिसके लिये एकमात्र सरकार ही दोषी है। राष्ट्रीय कृत बंकों में सिविल सर्विस के लोगों को अस्थाई रूप से ठूसना अत्यन्त नुकसान देह होगा। जो कुछ भी हो बैंकों की वर्तमान कुशलता को नहीं गिरने देना चाहिये।"

दिल्ली से ही प्रकाशित एक और दैनिक 'टाइम्स आफ इंडिया' को यह दलील भी ध्यान देने योग्य है—

"प्रत्येक बैंक की पृथक् स्थिति कायम रखी जाय। उन्हें मिला कर एक कर देने से उनकी कार्य-कुशलता समाप्त हो जायगी। उसमें एक जोखिम यह भी है कि कोई श्रमिक विवाद खड़ा होने पर सारा बैंकिंग ढांचा ठप्प हो जायेगा। स्टेट बैंक की हाल की हड़ताल इसका एक उदाहरण है। राष्ट्रीय करण अपने आप में ध्येय नहीं साधन है। ध्येय है अधिक पूंजी जुटाना, द्रुत आर्थिक विकास और समाज को अधिक कुशलता से बैंकिंग सुविधायें प्रदान करना। सरकार को तजुर्बा हो चुका है। और उसे बैंको में नौकरशाहों को नहीं भरना चाहिये। सार्वजनिक भावना से अभिभूत लोग ही इन वित्तीय संस्थानो के बड़े उत्तरदायित्व को वहन कर सकते हैं। कृषि और उद्योगों के लिये साधनों के वितरण में कोई भी परिवर्तन बहुत सावधानी से करना चाहिये। जनता इस परीक्षण का मूल्यांकन लम्बे चौड़े वादों से नहीं बल्कि इससे करेगी कि अर्थ व्यवस्था किस गति से बढ़ती है।"

दैनिक स्टेट्समैन ने भी कुछ इसी के विचार प्रकट किये हैं। उसके भी कुछ अंश पाठकों के ज्ञान के लिये उद्धृत करता हूं—

"भविष्य में अपनी उधार सम्बन्धी जरूरतो के लिये निजी क्षेत्र को सरकारी बैंकिंग पद्धति की दया पर निर्भर करना होगा।

इस समय जीवन बीमा निगम में पालिसी होल्डरों और स्टेट बैंक में रुपया जमा कराने वालों को जिस स्तर की सेवा उपलब्ध है, उससे बैंकिंग की कार्य कुशलता के भविष्य की आसानी से कल्पना की जा सकती। बैंकों की पूंजी को राजनैतिक उद्देश्यों के लिये प्रयोग करने का पूंजी लगाने पर प्रतिकूल प्रभाव अवश्यम्भावी है, जबकि विकास के लिये यह जरूरी है। वर्तमान कदम का वे लोग स्वागत नहीं करेंगे जो बैंकों में रुपया जमा कराते हैं, अथवा जो बैंको के माध्यम से लेन देन करते हैं। जनता पहले ही राष्ट्रीयकरण के नाम पर राष्ट्रीय गतिविधि के प्रत्येक पहलू को नौकरशाही के सुपुर्द किए जाने से तंग आ चुकी है, और उसके लिए यह राजनीतिकों का एक और स्टंट मात्र।"

बैंकों के राष्ट्रीयकरण को जनता केवल राजनीतिज्ञों का स्टंट मात्र समझती हो या न समझती हो पर एक बात से सब सहमत होंगे कि जनता को सरकारी मशीनरी और नौकरशाही के व्यवहार से कदम-कदम पर जो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उससे वह वास्तव में तंग आ चुकी है। सरकारी कर्मचारी, पुलिस और इसी प्रकार के अन्य रेलवे और कस्टम आदि विभाग के कर्मचारियों की जो आदतें आजादी से पहले पड़ी हुई थीं—उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया, और इसके लिये सरकार दोषी है। स्वतन्त्रता के पश्चात् सरकारी कार्यालयों में जनता के साथ जिस नम्रता और सद्व्यवहार की आवश्यकता थी, उसकी प्राप्ति नहीं हुई। यह एक बहुत बड़ा कारण है, जिसकी वजह से सरकार को अपने आर्थिक प्रयासों में अभी तक सफलता नहीं मिली है। राष्ट्रीकरण के नाम से बैंकों के कर्मचारी तो प्रसन्न हैं ही, साथ में उनकी इस प्रसन्नता मे देश की अधिकांश जनता भी उनके साथ है। परन्तु इसके साथ ही यदि उन्होने अपने व्यवहार में वही परिवर्तन पैदा कर लिया जैसा स्टेट बैंक या बीमा निगम के कर्मचारियों का तो जनता को निराशा ही हाथ लगेगी। इसके साथ ही यदि सरकार बैंकों की आय बढ़ाने में और इसका लाभ देश के श्रमिक वर्ग को देने में असमर्थ रही, तो जनता को यह सोचने के लिये मजबूर होना पड़ेगा कि शायद यदि बैंकों के राष्ट्रीयकरण की अपेक्षा उनका सामाजीकरण किया जाता और पूंजी वितरण पर ही कन्ट्रोल किया जाता तो अधिक सफलता प्राप्त होने की सम्भावना थी।

उपर्युक्त तीनों दैनिक क्रमशः बिड़ला परिवार, साहू जैन एवं टाटा उद्योगों द्वारा सचालित है। चूंकि बैंकों के राष्ट्रीकरण का इन के उद्योगों पर प्रभाव अवश्यम्भावी है। अतः इनकी खीझ और तड़प स्वाभाविक ही है। उनके लेखों के जिस अंश से हम सहमत थे, उनका जिक्र हमने ऊपर कर दिया है। जो समाचार पत्र विपक्ष समाचार देने के लिये प्रसिद्ध थे उन्होंने भी इस प्रश्न पर अपने आप को एक पक्ष से बांध लिया है, अथवा यह कहना चाहिए कि व्यापारी घरानों से सम्बन्ध रहने के कारण वह इस बात के लिये मजबूर कर दिये गये। दिल्ली के केवल दो दैनिक "नेशनल" हेरल्ड" तथा पैट्रियट ने राष्ट्रीयकरण के इस कदम का समर्थन किया है। ये दोनों किसी भी घनिष्ठ घराने से सम्बद्ध नहीं है। नेशनल हैरल्ड तो श्री नेहरू द्वारा संस्थापित है, तथा श्रीमती गांधी का ऐसा समर्थक है कि जिसने शायद ही कभी उनके किसी कदम की आलोचना की हो। फिर इतने साहसिक कदम की प्रसंसा वह क्यों न करता, उसके भी कुछ अंश रोचक हैं—

[ क्रमशः ]



# वनिता विवेक

## सफाई का ध्यान रखिए (८)


ले—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम. ए., एल. टी.,
डी. वी. कालेज, गोरखपुर


भारती ने सरला बहन की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—बहन जी, सचमुच सरकार को कोसने की हमारी आदत ही बन गई है। अगर हम स्वच्छता और व्यवस्था की बातें स्वय अपने स्वभाव में ले आएं तो हमारी सरकार को भी इससे सहयोग मिलेगा। गाड़ी में यात्रा करते हुए हम लिखा देखती हैं 'थूको मत' लेकिन डिब्बे में थूकना तो 'हम सबका अधिकार सा हो गया है।' दियासलाई और बीड़ियों के टुकड़े भी बाहर न फेंककर सब अन्दर ही फेंकते हैं। स्त्रियां बच्चों को पायखाना करवा कर वहीं फेंक देती हैं। रेलवे की ओर से बड़े-बड़े स्टेशनों पर सफाई के लिये मेहतरों का प्रबन्ध रहता है। लेकिन उन्हें बुलाकर डिब्बा साफ करवाने की आदत हम लोगों में नहीं है। साथ-साथ यह भी सोचना चाहिये कि वे बेचारे कहां तक साफ करें? अन्त में तो हमें अपनी आदतों को ही सुधारना होगा। अनेक पुरुष बीड़ी सिगरेट पीकर उसका गन्दा धुआं रेल की तरह सारे डिब्बे में फैलाते हैं, और वातावरण को अस्वच्छ करते हैं।

कमलेश ने भारती की बात का समर्थन करते हुये कहा—'हमारी नसों में अनुशासन कहां? जहां बैठे वहीं थूक दिया, वहीं खाकर जूठन डाल दी। किसी पार्क में गये तो वहां फूलों पर धावा बोल दिया—खुले आम या चोरी से।"

घर पर और सब चीजों की ओर तो हम कभी सफाई का ध्यान भी रखते हैं, परन्तु रसोई घर, स्नानघर, पेशाबघर और पायखाने की सफाई की बात तो सोची ही नहीं जाती।

तीसरे दर्जे में हम वहीं खाकर हम मुंह धोना वहीं थूकना, वहीं नाक साफ करना, और वहीं बच्चों की खुली संडास स्थापित करना हम अपना अधिकार मानते हैं। सड़क पर चलते खांसी आई तो झट बीच रास्ते पर थूक दिया। क्या हम कभी उन भाई-बहनो के विषय में सोचते हैं, जो नगे पैर सड़क पर चलते हैं। दूकानदार दुकान साफ कर लेते हैं, पर उसका कूड़ा बिना किसी रहम के सड़क पर फेंक देते हैं। विद्यालयों, कचहरियों कार्यालयों, के दरवाजों और दीवारों को हम पान की पीक से रंग देते हैं। घर के बड़े-बूढ़े अपने छोटे बच्चों को जो आंगन में इधर-उधर नगे पैर और शरीर दौड़ते रहते हैं, उनकी परवाह किये बिना अपनी चारपाई पर से थूकते रहते हैं। एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी की आंख बचाकर दूसरे के घर के सामने सड़क पर अपने बच्चों से पायखाना करवा कर अपनी स्वच्छता की ओर ध्यान दे लेता है, तो दूसरा भी उसकी ओर वही तरीका अपना कर उसे भी नहीं छोड़ता। पर दोनों की आत्मा को अपनी-अपनी सफाई का सन्तोष होता है। क्या वे कभी यह भी सोचते हैं कि इस गन्दगी से दूषित होने वाले वातावरण का प्रभाव हम पर भी पड़ेगा। हमारे घर की स्त्रियां तरकारी का छीलन, बच्चे का पायखाना, पोंछकर गन्दा कपड़ा, कूड़ा करकट बिना किसी हिचक के घर की खिड़की से सड़क पर बिना देखे फेंकती हैं। सड़क पर जाने वाले आदमी की आंख सिर पर चोट लगने और कपड़े मैले होने का उन्हें ध्यान नहीं होता। रेलवे स्टेशन प्लेट फार्म या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर फेंके

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# सुझाव और सम्मतियाँ

## आर्यजगत् में शान्ति स्थापित करने के लिये आवश्यक सुझाव

(श्री० पूर्णचन्द्र जी, एडवोकेट पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा)

(१) मैंने १३ जुलाई के आर्य-मर्यादा में महात्मा आनन्द स्वामीजी का वक्तव्य पढ़ा। पढ़ कर बड़ा दुःख हुआ, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सार्वदेशिक सभा के वार्षिक निर्वाचन में पंजाब के १५ प्रतिनिधियों को सम्मिलित कर लेने से एक बड़ी भूल हुई है। इससे दशम आर्य महा सम्मेलन के प्रस्ताव और सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा के निश्चय और महात्मा आनन्दस्वामी जी के आदेश की अवहेलना हुई है, जो धर्म मर्यादा और राजकीय विधान और आर्य समाज के विधान के प्रतिकूल हुआ है।

(२) आर्य समाज का संगठन नीचें से आरम्भ होता है। स्थानिक आर्य समाजें पहले बनी फिर प्रान्तीय सभाओं का निर्माण हुआ और सबसे अन्त में सार्वदेशिक सभा आर्य जगत् की शिरोमणि सभा का निर्माण हुआ। निर्माण नीचे से हुआ है खराबी ऊपर आई है, उपचार भी नीचे से होगा। उपचार के लिए दो विचार है।

(क) ३ और १० अगस्त ६९ को सारे देश में प्रत्येक आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर ये प्रस्ताव पास किया जाये कि सार्वदेशिक सभा का ३१ मई का निर्वाचन अवैध और अमान्य है, और जब तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विधि पूर्वक नया निर्वाचन न हो जाये उस समय तक सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन पुनः न हो और उस के साथ आर्य प्रादेशिक सभा के प्रतिनिधियों को भी मान्यता मिलनी चाहिये और आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित होने का अवसर मिले।

महात्मा आनन्द स्वामी जी इस समय आर्यजगत् की विभूति हैं उनके आदेश की अवहेलना कभी सहन नहीं की जा सकती।

(ख) जिन्होंने सार्वदेशिक सभा के अवैध निर्वाचन में भाग लिया है, वह किसी न किसी स्थानीय आर्यसमाज के सभासद अवश्य होंगे, जिन आर्य समाजों के वे आर्य सभासद हैं, उनको अपनी समाज का नैमित्तिक साधारण अधिवेशन बुलाना चाहिए और उन सज्जनों से अनुरोध करें कि वह अपनी भूल स्वीकार करें। और सार्वदेशिक सभा से अपना सम्बन्ध विच्छेद करें, और यदि वह न माने तो एक या दो वर्ष के लिए उनको आर्य सभासद के अधिकार से वञ्चित करने का प्रस्ताव स्वीकार करें।

(३) मेरी यह धारणा है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता और सदस्य उत्साही हैं, उनके अन्दर धर्म के लिए प्रेम और लगन है वे मर्यादा की अवहेलना को स्वीकार नहीं करेंगे। मेरा यह भी अनुभव है कि केवल थोड़े-से ही आदमी हैं जो पदों के लिए लालाइत होकर अनुचित उपायों को प्रयोग में लाते हैं-और दलबन्दी का सहारा लेते हैं। उनको मुकदमे बाजी से सकोच नहीं होता, वे भी एकान्त मे बैठ कर कभी-कभी उस दशा से दुखित होते हैं। परन्तु चक्कर मे फसे होने के कारण जाल से बाहर निकलना कठिन हो जाता है। साधारण सभासदो को ऐसी दल बन्दी से न कोई लाभ होता हैं, और न उनको इसमें कोई रुचि। मैं यह भी मानता हू कि जिन सज्जनों ने सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में अवैध कार्य किया है, उन्होंने भी आर्य समाज की कभी तो सेवा की है।

(४) मैं आर्यजगत् के महानुभावों से क्षमा याचना करता हूं और अपने व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में यह निवेदन करना चाहता हू कि मैंने अपनी सामर्थ्य और सुविधा के अनुसार आर्य समाज की सेवा ५०-५५ वर्ष से अधिक समय की है। सार्वदेशिक सभा का प्रधान भी रहा हू। सार्वदेशिक सभा के तीसरे वर्ष के निर्वाचन में मेरे स्वामी ध्रुवानन्द जी के मुकाबले में पांच सात वोट कम आये, और मैं हार गया। परन्तु न मुकदमे बाजी की सूझी न नोटिस बाजी की। आर्यसमाज को छोड़ा भी नहीं, बराबर सेवा करता रहा हू। कई पुस्तकें छप गई हैं, कभी-कभी लेख भी प्रकाशित हुये हैं और प्रचार भी करता रहा हू मुझे दलबन्दी और मुकदमे बाजी से बड़ा दुःख होता है।

मेरे ये सुझाव आर्य समाज के आन्तरिक सुधार के लिये हैं इन से मुकदमे बाजी भी समाप्त होगी। घर की बीमारी का इलाज घर में ही हो जायेगा और मुझे पूर्ण आशा है कि आर्य जनता इसका स्वागत करेगी। जिन सज्जनों को मेरा सुझाव अरुचिकर हो उनसे क्षमा याचना करता हू। मैंने डा० डी-राम जी को इस सम्बन्ध मे तीन पत्र लिखे हैं और श्री प्रतापजी भाई को भी लिखा है। पर कोई उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। ये सुझाव उनके लिये खुली चिट्ठी समझी जाये।

## पंजाब के मुख्य मन्त्री के नाम खुला-पत्र

सेवा में, माननीय श्री सरदार गुरनाम सिंह जी,
मुख्य मन्त्री—पंजाब राज्य चण्डीगढ
आदरणीय महोदय, सादर नमस्ते।

मुझे 'वीरप्रताप' जालन्धर दि० १६-७-६९ मे श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन जालन्धर के सम्बन्ध में लिखा पत्र पढ़ने का अवसर मिला। पंजाब के प्रत्येक व्यक्ति को अब भली प्रकार से ज्ञात हो चुका है कि श्री वीरेन्द्र और उनके समाचार पत्रों का दूसरो के ऊपर मिथ्या आरोप लगाना तथा असत्य प्रचार एक स्वभाव बन गया है। श्री राम गोपाल शालवाले भी उन्हीं के साथी हैं और वह श्री वीरेन्द्र की प्रत्येक बात को सम्पुष्ट करने के लिए तत्पर रहते हैं। श्री शालवाले द्वारा लगाये आक्षेपों के विषय में वस्तुस्थिति निम्न प्रकार है—

१—आर्यसमाज के सब सघटनों द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती को आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के झगड़े समाप्त करने का पूर्ण अधिकार मिला था। उसी के अनुसार उन्होंने सभा का सारा प्रबन्ध और नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया था। श्री वीरेन्द्र तथा रामगोपाल ने आश्वासन देकर भी महात्मा जी की किसी आज्ञा का पालन नहीं किया। दुखी होकर महात्मा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रबन्ध नियन्त्रण तथा संचालन का पूर्ण अधिकार अपने तार दि० २०-६-६९ तथा पत्र दि० २५-६-६९ द्वारा मुझे सौंप दिया। उसी के अनुसार मेरी प्रेरणा और प्रार्थना पर सभा के उप-प्रधान श्री लालचन्द जी सब्बरवाल एडवोकेट तथा जालन्धर कार्यालय के अधिष्ठाता श्री रामलाल जी गुप्त म्युनिसपिल कमिश्नर १-७-६९ को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन में गये और कार्यालयाध्यक्ष श्री देवदत्त को सारी स्थिति से अवगत किया। इससे प्रभावित होकर श्री देवदत्त जी ने दोनों अधिकारियों का स्वागत किया तथा सारे कार्यालय की चाबियाँ उनके सुपुर्द कर दीं।

२—किन्ही गुण्डों द्वारा कार्यालय पर जनसंघियों और अकालियों ने कब्जा किया—यह समाचार नितान्त असत्य और द्वेषपूर्ण है। श्रीलालचन्द

[ शेष पृष्ठ १४ पर ]

# पचमढ़ी में सतलड़ी यात्रा

पचवाही बहत्यप्रमेषाम्, प्रष्टया युका अनुसंवहन्ति ।
अयातमस्य ददृशे न यातम्, वरं नेदीयो अवरं दवीयः ॥
( अथर्व )

पर्यार्थ—रम्य वहानी रेल रिझाती···
आत्मिक अनुपम ईसका इंजन, कर्म इन्द्रियां ईप्सित इंधन
गन्तव्य गेह, मन्तव्य मन्तव्य नेह से, धकापेल पहुंचाती···
ज्ञान-इन्द्रियां पांचों आगे, डिब्बे भार भरे पिछ लागे
उत्थानों में चट्टानों में कष्ट झेल ले जाती··
यातायात नहीं दिखलाता, रहस्य कोई समझ न पाता
दूर पास की, पास दूर की, अद्‌भुत मेल दिखाती···
दूर करो अज्ञान आवरण, जब जग सोवे करो जागरण
प्रभु प्रीति की गली गली, नितं स्नेह सुधा सरसाती···

वेद मन्त्र में वर्णित अनुपम आध्यात्मिक रेल के, भारी भ्रम में भ्रमण करते हुए यात्रियों के खेल के, माया पाश के बन्धन में काया की जेल के और अन्त में आत्म-परमात्म के मेल के दर्शन की उर में उत्कट उत्कंठा लिये, बाह्य जगत् के भीषण ग्रीष्म ताप सन्तप्त व्यस्त त्रस्त अनुभूतियाँ लेकर बिना मून (चन्द्रमा) के जून में चून बाँधकर धुन की चाल से, चल दिये। हम सात ठाठ में, रात में सब दिनांक आठ में। दस को प्रातः पंचमढ़ी पहुंचते ही पता करने पर आध्यात्मिक केन्द्र आर्यसमाज के अभाव में, किसी धार्मिक स्थान पर विश्राम करने की अभिलाषा पूर्ति में धर्म-शाला में ही टिक गये जो किसी प्यारे लाल की थी। यह प्रख्यात पुरातत्व ऐतिहासिक पचमढ़ी सतपुड़ा पर्वत माला के पठार पर ३५०० फीट ऊँचाई पर लगभग ६ सहस्र की जनसंख्या लिये अपना अलग आकर्षण रखता है। पंच पाण्डवों के गुप्तवास की पांच गुहाओं के नाम पर ही पचमढ़ी ( लेखक के मत से पंच मढ़ी ) प्रख्यात हुआ। पदार्पण करते ही इस पावन धरा का कण-कण सबको प्रेरणात्मक शुभ सन्देश सुनाकर कहता है—

"हम धरती के परम पुरातन नव प्रभात हैं,
युग के हंस परम जौहर जवाहर, मोतियों को चुगते।"

उच्च पर्वतीय शृंखलाओं पर सनसन करता हुआ सवेग पवन डाली-डाली के नीचे चरण चूमती हुई हरियाली, नीचे निर्जन सघन वन में यदा कदा विचरते हुए हिंसक जन्तु भी जीवन को सावधानी का नित नूतन सन्देश सुनाते रहते हैं। धूपगढ़ का डूबता हुआ सूरज, 'अप्सरा विहार' के कगार पर उगता हुआ पूरब, नर्मदा के निकटवर्ती कूल, अभिमानी भस्मासुर से शिव्य शूल पर ज्ञानी शिव का त्रिशूल भला कैसे भुलाये जा सकते हैं। जहाँ एक ओर इतने आकर्षण हैं वहाँ लिखने का लोभ संवरण नहीं कर सकता कि मध्यप्रदेश का एकमात्र पर्वतीय प्रमुख स्थान होते हुए भी यात्रियों की सुविधा हेतु केवल एक टैक्सी, एक तांगा, जो कार्यक्रमों में बाधा उत्पन्न करते हुए नांगा कराते रहते हैं। लम्बे-लम्बे मार्गों के मध्य पेय जल का कोई प्रबन्ध न होने से प्रशासन को प्रायः धन्यवाद से वंचित ही रहना पड़ता है। सम्भवतः राजनैतिक दल-दल ही इसका उत्तरदायी हो अस्तु !

घिर-घिर घुमड़ती हुई घटाओं ने, छहर-छहर कर छवि छोर छटाओं से हृदय को अनुपम आह्लाद से ओत-प्रोत कर दिया कि कवि कण्ठ से पचमढ़ी के आकर्षण पद्यबद्ध प्रस्फुटित हो उठे आशा है पाठक गण कुछ तो रसास्वादन अवश्य करेंगे—

पिपर से पहुंचे पंच मढ़ी···
टिकट बापिसी लिये पहाड़ी, अंधियारे में पूरी गाड़ी
कोई चढ़ता कोई उतरते पता नहीं कुछ पड़ता,
बिन पूछे ही नीचे ऊपर आकर कोई अकड़ता
क्या अगाड़ी क्या पछाड़ी समस्या बहुत बड़ी···
कथानक कहता है शंकर ने शिष्य को बड़ा किया था—
वरदान स्वरूप ही भस्मासुर को अपना कड़ा दिया था-
अभिमानी ने गुरुवर पर ही अपना दांव दिखाया,
पार्वती ने नाच नचाकर उसको भस्म कराया
'जटा शंकर की प्रलयंकर कहती मूर्ति खड़ी··
'पंच पांडव प्रीति पूर्वक जहं पर बने प्रवासी
पाषाणों में प्रतिध्वनित है कीर्ति अजय अविनाशी
'गवर्नमेण्ट गार्डन' में सुरभित सुमन खिले,
डाली - डाली में हरियाली कोयल गीत मिले
पुण्य भूमि का कण-कण कहता कौमुदि कीर्ति कड़ी··
नाम है 'बी डैम' जिसका सबको देता जल है,
आज भी जो कल देता है, स्वास्थ्य विभाग का कल है
निर्जन वन में नीचे जन्तु, परन्तु बहुत विकराल है,
पर्वतीय प्रपात पर श्रीमाल सी 'बी फाल' है
तरुण तरु की श्रेणी वेणी गिरि की गूढ़ गढ़ी
सघन वन में उच्च गगन में 'महादेव' की मढ़िया
बैल हांकते गैल नाकते लुढ़कते पहुंची लढ़िया
अन्धरों में कन्दरों में घूमल धन्य धरा है,
चण्ड कुण्ड के जगतीतल में शीतल नीर भरा है
गुह्य गुफा में 'महादेव' की गहरी गुप्त गढ़ी···
सर्वोच्च शिखर पर शांत पथ जो नील गगन को जाता,
दूर पग उस मग से जिसका कोलाहल से नाता,
श्रान्त सूर्य भी अस्ताचल को चले लिये अनुगामी,
आलिंगन को ली अवनी के अंचल ने अगवानी
'धूपगढ़' पर शोभित बढ़कर स्वर्णिम सप्त लड़ी··
निस्तब्धता के नीड़ में कौन कलख करता,
दिव्य दर्शन दूर मयूर का मौन मुखर छवि भरता
झूम-झूम कर झरता झरना बड़े वेग की धार है
प्यार के निखार का वह 'अप्सरा विहार' है
रजत प्रताप प्रख्यात प्रकृति पर रहती लगी झड़ी··
साथ में पंडा हाथ में डंडा कपड़ा माचिस तेल,
बाँस बांधे साँस साधे लखा प्रकृति का खेल
'जलावतरण' में बड़े वेग का गिरि से गिरता पानी
'कुण्ड सुन्दर' श्वेत धार में लिखता ललित कहानी
सिंहों के जंगल में मंगल मनोरम मूर्ति बड़ी···
अति अभिमानी सी रजधानी वह भारी भोपाल है
अथाह नील जल अमिट निशानी का विशाल बड़ा ताल है
दृष्टि की सीमा से उस पार तरंगे तरल इसको ठठलाती
झंझा के झकोरों से, चतुर चितेरों के तन मन को भर जाती
सत्तर सीढ़ियों पर पीढ़ियों से बाटी लाल मढ़ी··
पर्यटन में प्रेम की पर्याप्त मिलती मात्रा,
जीवन का साफल्य सजोती है भारी यह यात्रा
उहापोह को छोड़ चलो सब उस मधुबन की ओर
प्रभु प्रीति में रहे 'ऋषिवर' जहं पर आत्म विभोर
'मोहन' मधुर मिलन की होती है अनमोल घड़ी···

—मदनमोहन एडवोकेट मोंठ (झांसी).

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में

# तीन महान् ग्रंथ अब केवल १०) में

## आधे मूल्य में

### १-ऋग्वेद-रहस्य

लेखक—प० अलगूराय शास्त्री। पृष्ठ स० ७५०

इस ग्रन्थ मे लेखक ने देश-विदेश की वेद सम्बन्धी सब विचार धाराओ का सग्रह किया है। वेदो मे सब विद्याओ के नमूने दिखाये हैं। वेदाङ्ग आदि पर विस्तार से लिखा है। वैदिक शासन व्यवस्था के साथ अन्य राष्ट्रो की शासन व्यवस्था की तुलना है। वेदो मे भूगर्भ विद्या खगोल विद्या प्राणि विज्ञान आदि अनेक विषयो पर वेद मन्त्रो द्वारा प्रकाश डाला है। इत्यादि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो की सामग्री इस ग्रन्थ मे है। इसका मूल्य ५) था, अब इस समय ग्राहक २) ५० मे प्राप्त कर लेगे।

### २-गंगाप्रसाद उपाध्याय और जज अभिनन्दन ग्रन्थ

यह ग्रन्थ बहुत बडे साइज मे लगभग ५०० पृष्ठ का महान् ग्रन्थ है। बढिया जिल्द। सुन्दर कवर। कागज मोटा चिकना। महर्षि दयानन्द का बडा सुन्दर आकर्षक चित्र है। यह ग्रन्थ रत्न यद्यपि अभिनन्दन ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित किया गया है,पर इसमे उच्च कोटि के विद्वानो के अनुसन्धानपूर्ण वैदिक सिद्धान्तो सारगर्भित लेख है। एक-एक लेख स्वय मे एक तद्विषय छोटा ग्रन्थ है। केवल परिशिष्ट के कुछ पृष्ठो मे अन्त मे जीवन परिचय है।

इस ग्रन्थ मे विद्वानो के ७५ लेख हैं जैसे—

१—अमेरिका मे सस्कृत वाङ्मय का अनुशीलन।
२—ऋषि दयानन्द के अब तक अमुद्रित ग्रन्थो का परिचय।
३—कम्युनिज्म और आर्यसमाज।
४—वैदिक समाज व्यवस्था।
५—वेद और मनव शरीर का वर्णन।
६—पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि मे वैदिक वाङ्मय।
७—आर्य साम्राज्य की रूप रेखा।

इत्यादि ७५ विषयो पर इस मे महत्त्वपूर्ण लेख है। यह ग्रन्थ परिचितो का उपहार रूप मे भी दिया जा सकता है क्योंकि ग्रन्थ का आकार प्रकार सुन्दर और आकर्षक है। मूल्य १०) के स्थान मे अब ५) मे ही प्राप्त हो जावेगा।

### ४-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ७५ वर्ष का इतिहास

पृष्ठ स० लगभग ५०० सुन्दर चिकना मोटा कागज सुन्दर [illegible] बडा आकार। इस ग्रन्थ मे [illegible] उत्तर प्रदेश मे आर्य समाजो की स्थापना से लेकर अब तक का [illegible] प्रतिनिधि सभा की स्थापना उसका ७५ वर्ष का इतिहास [illegible] प्रमुख कार्य कर्ताओ का परिचय और उनके [illegible] का परिचय इत्यादि अनेक ऐतिहासिक बातो का [illegible] मे है। इसकी बहुत प्रतिया नही हैं। उत्तर प्रदेश मे [illegible] के पुस्तकालय मे और आर्य समाज के पास [illegible] रहना चाहिये यदि यह समाप्त हो गया तो फिर यह ७५ वर्ष का उत्तर प्रदेश का रिकार्ड मिलना कठिन हो जावेगा। अब शीघ्र इस ग्रन्थ का सग्रह कर लेना चाहिए। इतने बडे और प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ का मूल्य २) रु० ५० पैं० मात्र ही है। इस प्रकार उपर्युक्त ये तीनो ग्रन्थ केवल १०) मे अब मिल जावेगे। डाक व्यय पृथक् होगा।

# उद्बोधन

उस जगन्नियन्ता को जानो, जो सबको सबकुछ देता है।
सबको सुख-सार लुटाता है, नहीं कुछ भी किसी से लेता है॥
वह जनक अखिल जग-जीवन का, नित्य प्रेम से पालन करता है।
वह विश्व व्यापक विज्ञ, ओम ही जगती [illegible] है॥
वह है समग्र देवत्व पूर्ण, रवि शशि आदि कहलाता है।
है एक, पूर्ण, रस-धाम, देव, त्राता त्रय-ताप मिटाता है॥
वह घनानन्द ज्ञातव्य सदा, ध्यातव्य सदा, प्राप्तव्य सदा।
उस अमर तत्त्व को पा लेना, है जन-जन का कर्त्तव्य सदा॥
गति हीनो की गति है वह ही, वह प्रेरक, विश्व प्रणेता है।
वह न्याय निष्ठ सब जीवो को फल यथायोग्य ही देता है॥
उठ उठ, मानव! प्रमाद न कर, निज प्रभुवर को पहिचान अरे!
जिससे वह तेरे बेडे को भी भव-सागर से पार करे॥
उसके दर से भिक्षुक बनकर सब जन मुद-मगल पाते हैं।
धन, धर्म, धरा, मुक्ति, मुक्ति, यश पाकर के तर जाते हैं॥
लो लगन लगा जगदीश्वर से, सहार करो सब पापो का।
फिर अटक कहाँ? फिर किसका डर? फिर क्या खटका सन्तापो का।

—प्रसादीलाल शर्मा, अतरौली

## कैसे मानूं तुम वरदान दिया करते हो

कितने ही युग बीत गये है मानस घट से अर्घ्य चढाते
मैं कैसे मानूं हे दाता तुम वरदान दिया करते हो॥
अम्बर की ड्योढी पर बैठे तो तुम दीप जलाते रहते।
थके-थके धुधले सपनो मे स्वप्निल जीत दिखाते रहते
सूनापन सहमा-सहमा सा चारो ओर भटकता फिरता
भावो की उदास कुटिया मे जैसे गीत अटकता फिरता
जीवन के उलझे पल मे कुचले अरमान दिया करते हो
बुझी-बुझी अनमनी साँझ सी सपनो की दुल्हन अलसाई
गोधूलि की विदा खत्म हुई रवि की पहुनाई।
दुनिया की इस भीड भाड मे मिल-मिलकर बिछुडे हैं साथी
मरघट सा सूना है आगन कभी जला न दिया न बाती
विस्मृति के सागर मे डूबी वो पहचान दिया करते हो
सुधियों के सागर मे [illegible]
सदियों से सपनो मे [illegible]
[illegible]
[illegible]
पीडा की [illegible] अनजान दिया करते हो

—[illegible]

## [illegible]

[illegible] हमारा [illegible] है कि [illegible] एक मास के अन्दर [illegible] छोटे-छोटे वैदिक ग्रन्थो का प्रकाशन [illegible] शताब्दी तक कर दे।

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम०ए० वेदाचार्य
—अधिष्ठाता-[illegible] प्रकाशन विभाग
५ मीराबाई मार्ग, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ

( पृष्ठ ५ का शेष )
पण्डित बन जावे तो आर्य विद्वानो की तरह धरती पर ही चलते ।

काशी मे हमे काशी की दृष्टि से ही सोचना होगा । हम अधिकारियों का भी स्वागत चाहते हैं। और विद्वानों का उनसे अधिक। हमारी काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की शोभा यात्रा अन्य ही प्रकार की होगी।

१–सबसे आगे सिंहासनों पर विद्वान् संन्यासी।

२–उसके पीछे शास्त्रार्थ दिग्विजय करके लौटे आर्य विद्वान्

३–फिर अनेक शास्त्रो के प्रौढ़ पण्डित।

४–तदनन्तर वे विदुषी देवियां जिन्होंने इसी काशी नगरी के विश्वविद्यालय से आचार्य परीक्षाए भिन्न-भिन्न विषयों में पास की हैं।

५–फिर अन्य विदुषी महिलायें।

६–फिर सभाओ के अधिकारी फिर आर्यवीर दल आदि। और इन सबके नाम और योग्यता सूचक परिपत्र जनता मे बाँट दिये जायेंगे कि किस सिंहासन कौन-कौन बैठा है। काशी के विद्वानो को सामूहिक रूप से पता चले कि आर्यसमाज मे विद्वानो की क्या स्थिति है और इस आर्यसमाज ने किस-किस विषय की महिलायें आचार्य बना दी हैं। शोभायात्रा की विस्तृत योजना फिर प्रकाशित करेंगे अभी तो निर्देश मात्र है।

नोट–सूचनार्थ निवेदन है कि जिन आर्य देवियों ने काशी की आचार्य परीक्षा पास की है उनका पूर्ण विवरण तथा अन्य तीर्थ शास्त्री आदि परीक्षा पास बहनो के पते नाम सब शीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ को भेजिये।

## शताब्दी समारोह पर ६ शास्त्रार्थ परिषदों की योजना

१६ से २१ नवम्बर तक प्रत्येक दिन एक परिषत् होगी। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

### १–सांख्य परिषत्

इस सांख्य परिषत् का विषय होगा कि सांख्य दर्शन आस्तिक दर्शन है, अनीश्वरवादी नहीं। इस विषय पर आर्य विद्वानो को काशी आदि के उन पौराणिक दिग्गज विद्वानो से काशी मे शास्त्रार्थ करना होगा। जो वे सब सांख्य दर्शन को अनीश्वरवादी मानते हैं। सांख्यशास्त्र पर जिन आर्य विद्वानो ने महर्षि के दृष्टिकोण से परिश्रम किया है वे फिर विशेष तैयारी करे अपेक्षित सहायता के लिये शताब्दी समिति को लिखें।

### २–वेदान्त परिषत्

इस वेदान्त परिषत् का विषय होगा कि वेदान्त दर्शन अद्वैत प्रतिपादक नहीं है प्रत्युत जीव और ईश्वर को पृथक् मानता है। इस विषय पर आर्य विद्वानों को काशी आदि के पौराणिक नवीन वेदान्तियों से शास्त्रार्थ करना होगा।

### ३–श्रौत परिषत्

इसका विषय होगा कि श्रौत याग आदि मे पशु हिंसा वेदानुकूल नहीं है। इस विषय पर शास्त्रार्थ होगा। इस विषय पर शास्त्रार्थ होगा। इस विषय के ज्ञाता आर्य विद्वान् पूरे परिश्रम से तैयारी अभी से प्रारम्भ करे।

### ४–व्याकरण परिषत्

व्याकरण ग्रन्थो की क्या-क्या अशुद्ध व्याख्यायें आज तक लोग करते रहे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की व्याकरण शास्त्र में क्या देन है। इस विषय पर संसार के प्रसिद्ध व्याकरणाचार्यों से शास्त्रार्थ करना होगा।

### ५–वेद परिषद्

सही वेदार्थ प्रक्रिया क्या है। सायण आदि भाष्यकारों और ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली पर काशी आदि के वेदाचार्यों से शास्त्रार्थ करना होगा। इस विषय के ज्ञाता विद्वान् अभी से तैयारी करे।

### ६–पुराण परिषत्

इस पुराण परिषत् मे हम काशी आदि के पुराण वेत्ताओं को तथा श्री शंकराचार्य को और करपात्री जी आदि सबको निमन्त्रित करेंगे और आर्य विद्वान उन सबके सम्मुख पुराणों के गन्दे स्थल पुराणो को खोलकर रख देंगे। अन्य दार्शनिक मतभेद की बात पृथक् है पर इन गन्दे स्थलो के सम्बन्ध में वे सब अपना मत स्पष्ट प्रकट कर दें इस विषय में शास्त्रार्थ नहीं करना है, केवल उन्हें दिखाकर उनका वक्तव्य ग्रहण करना है। पुराणों पर जिन आर्य विद्वानो को अभ्यास है वे अपने-अपने ग्रन्थों मे वे वे स्थल छांट कर निशान लगाकर तैयार करें।

## ये शास्त्रार्थ वादपरिषत रूप में होंगे

पाण्डित्य का लक्षण यह है कि महर्षि के सिद्धान्त को लेकर एक आर्य विद्वान् विद्वानो की सभा मे विरोधी पण्डित के साथ शास्त्र चर्चा करे और महर्षि के सिद्धान्त की धाक दूसरे विरोधी पर बैठा सके। और ये शास्त्रार्थ परिषत् सत्य निर्णयार्थ वाद परिषत् के रूप मे होगी जिसमे दोनो पक्ष के प्रौढ विद्वान् प्रेम पूर्वक शास्त्रीय चर्चा करेंगे। और सब प्रकाशित भी होगा।

यद्यपि बहुत से आर्य विद्वान् दिवंगत हो चुके हैं जिसका हमें इस अवसर पर क्लेश है। पर अब भी आर्यजगत् मे प्रौढ विद्वान् हैं जो काशी मे काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की लाज रखेंगे। और अपनी विद्या को सफल करेंगे। इस प्रकार के आर्य विद्वान् स्वयं सूचित करें हम उनका उपयोग लेवें। आर्य विद्वानों यह ऋषि ऋण का समय है स्वयं आगे आओ। और ऋषि ऋण से उऋण हो।

ये परिषदें प्रत्येक दिन ९॥ बजे से १२॥ बजे प्रात. होगी। इन के अतिरिक्त ६ सम्मेलन होंगे जिन का समय मध्याह्नोत्तर २ बजे से ६ बजे तक रहेगा और रात्रि को महापरिषत् की प्रमुख बैठक हुआ करेगी। सम्भावित सम्मेलन इस प्रकार हैं—

१–अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।

२–राजनीतिक सिद्धान्त आदर्श सम्मेलन।

३–सर्व राष्ट्र सांस्कृतिक सम्मेलन।

४–संस्कृत राष्ट्रभाषा सम्मेलन।

५–सर्व धर्म सम्मेलन।

६–आदिवासी समस्या सम्मेलन।

इनका स्वरूप और भावी यज्ञ की रूपरेखा आदि अगले अंकों में पाठक पढ़ें। महापरिषत् की बैठक में क्या होगा यह हम विस्तार से पृथक् लिखेंगे।

आर्य विद्वान् और विचारक अपने सुझाव शीघ्र आर्यमित्र में प्रकाशित करें और आर्य विदुषी देवियाँ और कार्यकर्ता स्वयं सूचित करे। सैकड़ो कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। समय कम है।

★

[ पृष्ठ ८ का शेष ]
हुये केले या नारंगी के छिलके कितनो की हड्डियाँ तोड़ देते हैं? कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना आजाद एक बार वायसराय से मिलने जा रहे थे। केले के छिलके पर पैर पड़ने से वे फिसलकर गिर पड़े, हाथ की हड्डी टूट गई। हस्पताल ले जाये गये अभी कुछ दिन पूर्व एक लड़का अपनी बीमार माँ के लिये दवा ला रहा था। केले के छिलके पर पैर फिसल जाने से वह बुरी तरह घायल हो गया।

कमलेश की बात समाप्त होते ही रात अधिक हो जाने से सब सदस्यायें अपने-अपने घरो की ओर जाने की तैयारी कर रही थीं कि मधु ने सरला बहन जी से आत्मा और मन को कैसे शुद्ध किया जाय। इस विषय में प्रकाश डालने को कहा। सरला बहन ने आत्मा की शक्ति और उसके स्वरूप पर अगली बार प्रकाश डालने की बात कही।

## वेद प्रचार सप्ताह २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक मनाये

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्णा अष्टमी अर्थात् दिनांक २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

प्रत्येक आर्य समाज को चाहिए कि इस सप्ताह को उत्साह पूर्वक मनाने का अभी से रचनात्मक कार्यक्रम बनाने की कृपा करे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

## आर्यसमाज नरही, लखनऊ का निर्वाचन

गत ३ अगस्त को आर्यसमाज नरही लखनऊ का निर्वाचन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एन० ए० की, अध्यक्षता मे नारायण स्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे शान्तपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। आगामी वर्ष के लिये निम्न पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान-श्री नारायणगोस्वामीजी वैद्य
उपप्रधान-श्री रघुनाथलाल जी
मन्त्री-श्री शिवप्रसादजी श्रीवास्तव
उपमन्त्री-श्री इन्द्रदेव शर्मा एम ए
कोषाध्यक्ष-श्री कृष्णगोपाल जी शर्मा
पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती सुशीलादेवीजी

अन्तरङ्ग सदस्य

श्री शिवनारायण जी शर्मा, श्री डा० लक्ष्मीनारायण जी गुप्त, श्री डा० सरयूप्रसाद जी। —मन्त्री

## आर्य उपसभा जि. मथुरा

दि० २७-७-६९ रविवार को गुरुकुल वृन्दावन मे आर्य उपप्रतिनिधि सभा जि० मथुरा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न हुआ ईश-प्रार्थना के पश्चात् सर्वप्रथम श्री रामनाथ जी मुख्तार, श्री सत्यदेव जी वैद्य शास्त्री, श्री राम बहादुर जी 'सरस' आदि दिवगत आर्य नेताओ को श्रद्धाजलि अर्पित की गई, और शोक प्रस्ताव पारित हुआ। मन्त्री जी ने वार्षिक रिपोर्ट व आय-व्यय का गत वर्ष का लेखा प्रस्तुत किया जो स्वीकार किया गया। निर्वाचन निम्न लिखित प्रकार सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ—

प्रधान-श्री नरदेव स्नातक एम पी
उप प्रधान-श्री प्रो जयकुमार मुद्गल मथुरा, श्री चिरमोली आर्य कोसीकलां व श्री कुँवर जी लाल आर्य पीहु?।
मन्त्री-श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
मुख्य उपमन्त्री श्री हरवेर्रसिह आर्य (नौझील?)
उपमन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य (ऊबागाव)
" श्री शिवशरणलाल आर्य (फरौर)
कोषाध्यक्ष-श्री छैलबिहारीलाल आर्य (छाता)
प्रचार मन्त्री-श्री महावीरसिह जी आर्य (मथुरा)
निरीक्षक-श्री वेदरत्न आर्य "

## सफल वेद प्रचार

आर्यसमाज देहरादून मे श्री ब्र० सत्यप्रिय जी ने १२ जुलाई से २० जुलाई तक वेद की कथा की। उनके सरल उपदेश का जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

—प्रधान आर्यसमाज देहरादून

## एन.सी. वैदिक इण्टर कालेज

१९ जुलाई को आगरा मे नवीन सत्र के प्रारम्भ होने के उपलक्ष मे नगर के प्रसिद्ध व्यवसायी एव समाजसेवी श्री पूरनचन्द्र बेदी के यजमानत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञोपरान्त श्री त्रिलोकीसिह जी की अध्यक्षता मे सभा हुई जिस मे आगरा छावनी के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियो ने विद्यालय की प्रगति की कामना करते हुये छात्रो व उज्ज्वल भविष्य एव चरित्रनिर्माण के लिये प्रेरणा देते हुये उन्हे आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर सूबेदार मेजर राधाकृष्ण ने १०००) रु० का दान दिया जिसके व्याज से प्रति वर्ष बोर्ड की इण्टर परीक्षा मे सम्मान सहित उत्तीर्ण होने वाले छात्रो को स्वर्गीय स्नेहलता मलिक की स्मृति मे १००) रुपया विशेष पुरस्कार दिया जायगा।

अन्त मे प्रबन्धक श्री कैलाश नाथ गर्ग ने सभी अतिथियो को धन्यवाद दिया।

—रोशनलाल गुप्त प्रधानाचार्य

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में आर्यमित्र का विशेषांक

# मूर्ति पूजा निषेधाङ्क

### प्रस्तावित रूपरेखा

समस्त आर्य विद्वानो की सेवा मे निवेदन है कि आर्यमित्र का विशेषांक मूर्ति पूजा निषेधाङ्क काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष मे प्रकाशित होगा। इसकी प्रस्तावित रूपरेखा मे से आप स्वय अपने लिये अपने विषय का चुनाव कर सूचित करने की कृपा करे। और उस विषय पर आप लेख लिखे।

विषय-१-मूर्ति पूजा और वेद
२-मूर्ति पूजा और वेद की शाखाए
३-मूर्तिपूजा और ब्राह्मण ग्रथ
४-मूर्ति पूजा और उपनिषद् ग्रथ
५-मूर्ति पूजा और आरण्यक ग्रन्थ
६-मूर्तिपूजा और दर्शन ग्रन्थ
७-मूर्ति पूजा और निरुक्त
८-मूर्ति पूजा और व्याकरण ग्रन्थ
९-मूर्ति पूजा और गीता
१०-मूर्ति पूजा और स्मृति ग्रन्थ
११-मूर्ति पूजा और आयुर्वेद शास्त्र
१२-मूर्ति पूजा और बौद्ध धर्म
१३-मूर्ति पूजा और जैन धर्म
१४-मूर्ति पूजा और इस्लाम
१५-मूर्ति पूजा और क्रिश्चियन मत
१६-विभिन्न सम्प्रदायो मे मूर्तिपूजा की स्थिति
१७-मूर्ति पूजा तथा ससार के अन्य देश
१८-मूर्तिपूजा का आदि स्रोत
१९-मूर्ति पूजा और पुराण ग्रन्थ
२०-मूर्तिपूजा और महाभारत
२१-मूर्ति पूजा और रामायण
२२-पौराणिक समस्त अवतारों पर प्रत्येक अवतार का पूर्ण पौराणिक स्वरूप और उनका वैदिक स्वरूप।
२३-विभिन्न देवताओ का पौराणिक स्वरूप और वैदिक स्वरूप।
२४-वैदिक धर्म के प्रचार से मूर्तिपूजा की मान्यता पर प्रभाव
२५-मूर्ति पूजा को ससार मे मिटाने के सफल उपाय इत्यादि

इन विषयो मे से अपने लिखने के लिये विद्वान् स्वय चुनाव कर हमे शीघ्र सूचित करे।

नोट—(१) बहुत बडा विशेषांक होते हुए भी मूल्य केवल २) रुपये ही रखा जावेगा। ग्राहक सूचित करे कि उन्हे कितनी प्रतियाँ चाहिये।

(२) विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा ले।

विशेष [क] जो १०) रु० भेजकर आर्यमित्र के ग्राहक बन जावेगे उन्हे यह विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। इस समय आर्यमित्र का वर्ष भर का चन्दा केवल १०) है।

[ख] ग्राहक बनाने वाले एजेन्टो की भी हमे आवश्यकता है जो अपने-अपने नगर और प्रान्त मे ग्राहक बनावे। उन्हे कमीशन दिया जावेगा।

निवेदक—

आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम ए वेदाचार्य प्रचार मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

उमेशचन्द्र स्नातक एम ए सम्पादक आर्यमित्र

[पृष्ठ ९ का शेष]

सब्बरवाल एडवोकेट और श्री रामलाल जी गुप्त म्युनिसपिल कमिश्निर जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियो को गुण्डा कहना और लिखना अत्यन्त ही अशोभनीय और अनुचित है।

३—श्री मनोहरसिंह जी दण्डाधिकारी जालन्धर के निर्णय के विरुद्ध सेशन जज जालन्धर की सेवा मे अपील की जा चुकी है अत. इस विषय मे हम किसी प्रकार की टिप्पणी करना आवश्यक नहीं समझते।

४—श्री वीरेन्द्र जी अपने समाचार पत्र द्वारा स्थानीय पोलिस अधिकारियों को बदनाम करने की खातिर ही यह प्रचार कर रहे हैं कि उन्होंने श्री सब्बरवाल जी की इस कार्य मे सहायता की है। वस्तु स्थिति यह है कि श्रीवीरेन्द्र आदि द्वारा की गई रिपोर्ट के आधार पर श्रीलाल चन्द सब्बरवाल तथा श्री रामलाल गुप्त के विरुद्ध पोलिस ने एक केस धारा ४४८।१०७ में रजिस्टर किया है। यदि पोलिस का उक्त कार्य मे अंशमात्र भी हाथ होता तो उनके विरुद्ध यह केश ही रजिस्टर्ड क्यो होता

५—मेरी प्रार्थना पर श्री निरजनसिंह जी भल्ला सीनियर सब-जज जालन्धर ने दि० ११-७-६९ को निषेधाज्ञा द्वारा दीवान रामसरनदास, श्री वीरेन्द्र तथा श्री मुरारीलाल आदि को, अपने आपको सभा के अधिकारी घोषित करने और सभा के कार्यो व सम्पत्ति के हस्तक्षेप करने से रोक दिया है। ऐसी अवस्था मे उनको आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारी लिखना और कहना अवंध तथा निषेधाज्ञा के विरुद्ध है।

६—श्री वीरेन्द्र जी अवंध रूप से आर्यसमाज का नेता बनने तथा प्लेटफार्म प्राप्त करने के लिए वह जहां कहीं अनुचित कार्य करते हैं वहां भोले-भाले आर्य बन्धुओं को भी गुमराह करते हैं, जिससे पजाब का वातावरण दूषित ही होता है।

उपरोक्त सारी स्थिति को ध्यान में रखते हुए आशा है, आप श्री वीरेन्द्र तथा उनके साथी श्री रामगोपाल शालवाले आदि के भ्रममूलक, असत्य और तथ्य के विपरीत आरोपों पर ध्यान न देंगे।

भवदीय

रामसिंह

दिनाक १७-७-६९ प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

## चौधरी नारायणदीन आर्य का देहावसान !

दुःख है कि आर्यसमाज हसनगज पार लखनऊ के भूतपूर्व प्रधान चौधरी श्री नारायणदीन आर्य का लगभग ८० वर्ष की आयु मे दि० २० जुलाई को देहावसान हो गया। आप अच्छे वक्ता और मधुर स्वभाव के व्यक्ति थे। अपनी वाणी से विरोधियों को भी अपना बना लेते थे। अपने प्रधान काल मे आपने जो सेवा आर्यसमाज की है, वह भुलाई नहीं जा सकती।

आपकी अन्त्येष्टि क्रिया भैसा कुण्ड, लखनऊ में पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुई। आप आर्यमित्र के वर्षों सदस्य रहे।

हम सब आर्यजन परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह श्री नारायणदीन आर्य की दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—हनुमानप्रसाद चौधरी

—प्रयाग में १ जून से ३ मास के लिए जिज्ञासु सरलतम् संस्कृति प्रचार समिति प्रयाग (आर्य समाज चौक) के तत्वाधान मे जो संस्कृति शिक्षण शिविर चलाए जा रहे हैं उसमें दो ढाई सौ नर नारी बड़ी श्रद्धा व उत्साह के साथ नियमित रूप से भाग ले रहे हैं।

यह शिविर आर्यसमाज चौक, और आर्य समाज कटरा में चलाये जाते हैं। प्रशिक्षार्थियो को नियमित शिक्षा दी जाती है।

राधेमोहन

# खेत की टूटी मेढ़

[ श्री डा० रामचरण महेन्द्र एम. ए, पी एच. डी. ]
प्रिंसिपल गवर्नमेण्ट कालेज, सुजानगढ़

मूसलाधार वर्षा हो रही थी। आकाश मेघाच्छन्न था। चारों ओर पानी ही पानी दृष्टिगोचर होता था।

ऋषि धौम्य ने अपने शिष्य आरुणि से कहा—"बेटा! आज बारिश बहुत हो चुकी है। हम गुरु शिष्य भोजन के लिए मिल जुल कर खेती करते हैं। जो अनाज पैदा होता है, उसी से इस गुरुकुल के विद्यार्थियों की गुजर बसर चलती है। आश्रम के लिए धान इसी खेत से उत्पन्न होता है। अधिक वर्षा से सम्भव है, फसल को भारी नुकसान पहुचे। हमारे आश्रम की खेत की मेड टूट जाने से पानी बाहर निकला जा रहा है। तुम सबसे आज्ञाकारी विद्यार्थी हो। जाकर मेढ़ बाँध आओ। धान की खेती के लिए जल को रोके रहना जरूरी है।

आरुणि "जो आज्ञा गुरुदेव!" छात्र ने अपने अध्यापक को प्रणाम किया और चल पड़ा।

बारिश ज्यो की त्यो पड़ रही थी। वातावरण मे ठन्डक थी।

सचमुच पानी काफी पड चुका था। तब तक आरुणि खेत पर पहुच चुका था। खेत में पानी ही पानी भरा था। पौधे जलमग्न थे। फसल को भारी हानि पहुँच चुकी थी। भारी विपत्ति की आशंका से वह काँप उठा।

उसने देखा कि खेत की मेड़ टूट चुकी थी, और तमाम फसल के बह जाने का खतरा था। फसल का नुकसान, ऋषि धौम्य के आश्रम की हानि, भुखमरी — भोजन सम्बन्धी कठिनाइयां।

भारी नुकसान की कल्पना से आरुणि काँप उठा। कैसे इस विपत्ति से छुटकारा हो। उसने आस पास से मिट्टी बड़े परिश्रम से इकट्ठी की और मेड़ को बड़े यत्न पूर्वक ठीक कर दिया। अब पानी रुक जायगा।

किन्तु अरे! खेत की मेड तत्काल फिर टूट गई।

उसने हिम्मत न छोड़ी। फिर उसी प्रकार मिट्टी इकट्ठी की और इस बार पहले से भी अधिक ऊंची मेड़ बना दी। उसे हाथ से पकड़े रहा। पानी कुछ क्षण के लिए रुका रहा।

प्राचीन काल मे ऋषि धौम्य के आश्रम मे कितने ही विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे। ऋषि को अपने शिष्यो के भोजन इत्यादि का भी प्रबन्ध करना पड़ता था। आश्रम के गुजारे के लिये एक छोटी-सी भूमि थी जिसमे खेती होती थी। सभी शिष्य गुरु के साथ खेती मे सहायता करते थे। जो उपज होती थी, उसी से भोजन का खर्च चलता था। ऋषि धौम्य अपने शिष्यो को विद्याध्ययन के साथ साथ अनुशासन, शिष्टाचार क्षमाशीलता, तितिक्षा आदि सद्गुणो की भी शिक्षा देने

थे। उस समय यह विश्वास था कि विद्या के समान ही चरित्र भी आवश्यक है। सद्गुणो के विकास पर भी पूरा पूरा ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

वर्षा के पानी का बहाव तेज था। छात्र आरुणि से रुका नहीं। लेकिन गुरु की आज्ञा की अवहेलना भी नही हो सकती थी। जो आज्ञा मिल गई, चाहे कुछ भी हो उसका पालन करना उसका [illegible] धर्म समझा।

उसे एक उपाय सूझा।

मिट्टी तो पानी के बहाव मे ठहर नहीं पाती। तनिक से वेग से मेड़ बह जाती है। कोई ऐसी सख्त चीज होनी चाहिए जो जल के वेग के विपरीत चट्टान की तरह अडिग रहे। पानी को रोके रहे।

आस पास पत्थरो की तलाश किया, पर सयोग से कोई भी पत्थर नजर न आया।

अब क्या करे वह?

कोई उपाय न देख छात्र आरुणि टूटी मेड के स्थान पर स्वय ही लेट गया। इस प्रकार टूटी मेढ़ बन गई। पानी को रोके रहने मे उसे सफलता मिल गई। वह मन ही मन अपनी सफलता पर प्रसन्न था। गुरु की आज्ञा पालन मे उसे आत्मा की शान्ति मिल रही थी। वह पानी की ठन्ड का कष्ट अनुभव कर रहा था। पर कर्तव्य पालन मे जो आनन्द होता है, उससे उसका मन पुलकित हो रहा था। वह इसी प्रकार देर तक लेटा रहा।

सायकाल हो गया, पर आरुणि वापिस न लौटा। ऋषि धौम्य को बड़ी चिन्ता हो गई। रात्रि हो चली थी।

क्या बात है कि आरुणि अभी नही लौटा? कहीं उसे कोई चोट तो नहीं लग गई? कहीं पाव फिसल जाने से वह गिर तो नही पड़ा? कोई विषैला विषैला जन्तु उसे मार तो नही गया? ऋषि का मन शंकाओं से भर गया।

ऋषि धौम्य उसे खोजने निकल पड़े। रात्रि मे उसका नाम ले लेकर पुकारते चले जाते। कभी पाँव फिसल जाते, [illegible] लगते, पर वे [illegible] जाते थे।

'आरुणि! [illegible] तुम कहाँ हो? आरुणि, ओ आरुणि!'

वे खेत पर ढूंढते ढूंढते जा पहुचे। उन्होने देखा धान के खेत मे जल भरा हुआ था। यह देख कर उन्होने अनुमान लगाया कि आरुणि ने खेत की मेड को दुरुस्त कर दिया है अवश्य यही आस पास होगा। यहीं तलाश करना चाहिए।

उन्होंने पानी के बहाव की दिशा में चलना शुरू किया। 'आरुणि!' कह कर पुकारते जाते थे।

अचानक एक ओर से उत्तर मिला, 'गुरुजी, मैं यहां हूं। खेत की मेढ़पर।'

'किधर हो! आरुणि, दिशा बताओ। बोलो, किधर आऊँ?'

'मै खेत की मेड़ बना लेटा हुआ हूं। मेरी आवाज की ओर चले आओ गुरुदेव।'

धौम्य ने जाकर पाया, सचमुच आरुणि खेत की मेढ बने लेटा था और जल के बहाव को रोके हुए था। वे शिष्य की आज्ञा पालन की प्रवृत्ति पर प्रसन्न हो उठे।

उन्होने उसे उठाकर हृदय से लगा लिया। 'तुम जैसे शिष्य को पाकर मै धन्य हुआ!'

✱

## अध्यात्म-सुधा

[ पृष्ठ २ का शेष ]

कुछ लोग कहते हैं कि सुधारों वार्तालापो और गोष्ठियो का विरोध हम नहीं करते। परन्तु वेद विरोधी किसी भी विधान को न तो हम आज स्वीकार करते हैं, और न ही कभी स्वीकार करेगे। हम यह भी समझ चुके हैं कि लातो के भूत बातो से नही मानते। हत्यारों ने संसार को धोखा देने के लिये जो वैधानिक जाल बिछा रखे हैं, वे तो [illegible] हैं। हम तो वेदवादी और [illegible] हैं। हम वर्णाश्रम [illegible] के निर्णय के [illegible] वेद को ही परम [illegible] मानते हैं। जो लोग [illegible] में सुख और शांति की [illegible] चाहते हैं, उनके [illegible] वेद का आदेश सुस्पष्ट है— [illegible] हत्यारो को हत्यारो, अश्व-हत्यारो और शिशुघ्नों के हत्यारो के लिये मौत के विधान रचो।

✱

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.–६०

श्रावण १९ शक १८९१ श्रावण कृ १३
[ दिनाङ्क १० अगस्त सन् १९६९ ]

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्य्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

## टौंक का शास्त्रार्थ–

यह टोंक के महन्त श्री सीतारामदासजी और डा०श्रीराम जी कासगंज का पत्र-व्यवहार रूप में शास्त्रार्थ लिखित है। इस ग्रन्थ में महन्त जी द्वारा वैदिक सिद्धान्तों और ऋषि के ग्रन्थों पर आक्षेप हैं और डाक्टर श्रीराम द्वारा उन आक्षेपों के जो उत्तर दिये गये हैं वे प्रकाशित किये गये हैं। इसी प्रकार डा० श्रीराम जी के पुराणो और पौराणिक मन्तव्यों पर आक्षेप भी इस पुस्तक में है। शास्त्रार्थ का अभ्यास करने वालों और स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिये उपयोगी ग्रन्थ है।

मूल्य १)२५ है पृष्ठ-संख्या एक सौ से अधिक है।
प्राप्ति स्थान–डा० श्रीराम आर्य वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज जिला एटा

## वैदिक सिद्धान्त माला–

इसमें सात व्याख्यान डा० श्रीराम जी के है। ये व्याख्यान यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के १७ मन्त्रो की व्याख्या मे लिखे गये हैं। ईशोपनिषत् का स्वाध्याय करने वालों के लिये उपयोगी ग्रन्थ है। ईशोपनिषत् और यजुर्वेद के ४०वें अध्याय की जहां और व्याख्याए हैं, इसकी भी स्वाध्याय करना चाहिये।

मूल्य १) पृष्ठ स० ८५ है।
प्राप्ति स्थान–डा० श्रीराम आर्य वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज, जिला एटा

## पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी-

प० गुरुदत्त विद्यार्थी का जीवन चरित्र पहले उर्दू मे छपा। आर्यभाषा में इसकी बडी आवश्यकता थी। इनके लेखक हैं डा० रामप्रकाश जी एम. एस. सी., पी एच डी रसायन विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ। विद्वान् लेखक ने प० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन चरित्र को सुचारुरूप से लिखा है। प० गुरुदत्त जी उन व्यक्तियो मे से थे, जिन्होंने ऋषि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये थे,और ऋषि से प्रभावित होकर नास्तिक से आस्तिक हो गये। और सारा जीवन ऋषि के काम पर लगा दिया। और छोटी-सी आयु में महान् काम कर गये। गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथियो मे से थे। स्वामी श्रद्धानन्द प० गुरुदत्त जी को अपना धार्मिक बल मानते थे। प० गुरुदत्त जी ने इस बात पर बहुत प्रकाश डाला है कि वेद मे विज्ञान है।

गुरुदत्त जी उन सच्चे व्यक्तियो मे थे जो यह समझते हैं कि योगाभ्यास के बिना मनुष्य मन्त्रार्थ नहीं जान सकता; अत: गुरुदत्त विद्यार्थीजी के जीवन से पता चलता है कि योगाभ्यास मे रुचि रखते थे।

यह ग्रन्थ अत्यन्त प्रेरणादायक और उपादेय है।
मूल्य १ ३५ मात्र है, पृष्ठ सख्या २०० है।
प्राप्ति स्थान–स्वामी आत्मानन्द प्रकाशन मन्दिर
वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर (पजाब)

## पंच महायज्ञ विधि भाष्यम्-

यह ग्रन्थ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के भाष्यकार श्री आचार्य विश्वश्रवा: जी व्यास द्वारा लिखित है। इस ग्रन्थ में सन्ध्या मन्त्रों के महर्षि कृत अर्थों की एक-एक शब्द की विस्तृत व्याख्या है। प्राय: आर्य विद्वान् सन्ध्या मन्त्रों के अपने अर्थ करते हैं, ऋषि दयानन्द के अर्थों को नहीं देखते। आचार्य विश्वश्रवा: जी का दावा है कि पंचमहायज्ञ विधि भाष्य को बिना देखे कोई आदमी सन्ध्या मन्त्रो का अर्थ जान ही नहीं सकता है। कोई इसके एक मन्त्र की भी व्याख्या पढ़कर देख ले उसको पता चल जावेगा कि आज तक वह सन्ध्या मन्त्रों के गलत अर्थ समझता रहा और संन्ध्या भी गलत करता रहा है। बड़े-बड़े आर्य विद्वान् और संन्यासी आचार्य जी की लिखित इस पुस्तक को लेकर एक-एक मास कथा संन्ध्या मन्त्रो पर करते हैं। इस ग्रन्थ में और अनेक विषय भी हैं जैसे–

[१] गायत्री मन्त्र के जप करने की प्राचीन पद्धति।
[२] पौराणिक सन्ध्या और उसकी समालोचना।
[३] प्राणायाम के सम्बन्ध मे वेद से लेकर पाश्चात्य विद्वानों तक ने जो कुछ लिखा है सब इसमें है।
[४] ओ३म् की विस्तृत व्याख्या जो इसमें है, वह उत्तम है।
[५] इसको बिना समझे माण्डूक्योपनिषत् को कोई समझ नहीं सकता।
[६] इसको पढ़कर आपको पता चलेगा कि अनेक विद्वान् आज तक माण्डूक्योपनिषत् को समझे ही नहीं थे।
[७] ओ३म् के तीनों अक्षरो की बडी विस्तृत और अनुसन्धान पूर्ण व्याख्या प्रथम बार इसी ग्रन्थ में प्रकाशित है।
[८] आचार्य जी की वेदाचार्य पत्नी ने इसकी भूमिका कई महत्त्वपूर्ण विषयो पर लिखी है।

अनेक वर्ष के परिश्रम से यह ग्रन्थ रत्न लिखा गया है ५०० पृष्ठ के ग्रन्थ का मूल्य ५) मात्र है।
प्राप्ति स्थान–आचार्य विश्वश्रवा: व्यास एम० ए० वेदाचार्य
वेद मन्दिर ९९ बाजार मोतीलाल बरेली (उ० प्र०)

—नारायण गोस्वामी

## आर्योप सभा बिजनौर ने सस्ती उत्सव योजना तैयार की है, उसमें निम्न विद्वान है

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री श्री ला० देवराज जी आर्य वैदिक मिशनरी, पूज्य अमर स्वामी जी परिव्राजक शास्त्रार्थ महारथी। आर्योप सभा की २ भजन मण्डली श्री हरिसिंह जी व सुखरामसिंह जी–आर्य प्रतिनिधि सभा के मशहूर भजनोपदेशक श्री धर्मराजसिंह जी।

समाजों को आदेश उत्सवो पर शका समाधान का समय रखें विषय वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। —मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए एम०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य,
रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्व-वारा,
स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः॥
यजु० ७। १४

शब्दार्थ.–हे ( सोम ) आनन्द स्वरूप ! (देव) हे ज्योति स्वरूप परमात्मन् ! [हम उपासक लोग] (ते) तेरी प्राप्ति के लिये (अच्छिन्नस्य) अखण्ड, निर्दोष (सुवीर्यस्य) उत्तम बल और पराक्रम के एवं (रायस्पोषस्य) धन और वस्त्र आदि पदार्थों के (ददितारः) दान देने वाले (स्याम) होवें। (सा) यही वह (प्रथमा) सर्व प्रथम, सर्वश्रेष्ठ, सर्वत्र प्रचलित (संस्कृति) संस्कृति=जीवन-प्रणाली है। और (स) तू ही वह ( प्रथम. ) सृष्टि का आदि-मूल, सर्व प्रथम, सुप्रसिद्ध सर्वव्यापक (वरुण) कष्टों और पापों का निवारक, प्राप्त करने योग्य, वर्णन करने योग्य (मित्र) सब का मित्र, न्यायकारी (अग्निः) सर्व प्रकाशक, जीवन-दाता, अग्रणी है।

भावार्थ.–हे आनन्दस्वरूप और सर्वोपरि देव ! हम उपासक लोग आपकी प्राप्ति के लिये, दुर्बलों और सज्जनों की रक्षा के लिये एवं उच्चतम आत्मिक जीवन की प्राप्ति के लिए अपने सर्वोत्तम और सर्वथा निर्दोष, अन्न, धन ऐश्वर्य, बल, पराक्रम, समय, साधन, तन एवं मन की भी आहुति देने में समर्थ हों। यह त्यागभाव ही मानव जीवन की सर्व श्रेष्ठ प्रणाली है। इस प्रणाली के अनुसार चलकर ही कष्टों और पापों का अन्त हो सकता है। हे परमात्मन् ! तू ही हमारा सर्वश्रेष्ठ बन्धु है, जो पापों और तापों का विनाशक, सबका हितैषी, प्राप्त करने योग्य, वर्णन करने योग्य तथा सब का नियामक और जीवन दाता है।

# विश्व-वारा संस्कृति

[ श्री पं० जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

## अध्यात्म-सुधा

### प्रवचन

संस्कृति किसको कहते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर "संस्कृति" यह शब्द ही हमे दे देता है। जो जो स्वयं परिष्कृत है और दूसरों का सु-संस्कार करने में समर्थ है, उस विचार-धारा, जीवन-पद्धति और रीति-नीति का नाम संस्कृति है। दूसरे शब्दो मे जिसे स्मार्त-धर्म कहा जाता है, वही संस्कृति भी कहलाता है। अखिल मानव जाति के ज्ञान, कर्म उपासना, खान-पान, पहिरान, रहन-सहन, खेती-बाडी, राज-काज, लेन-देन और जीवन-मरण आदि से सम्बन्धित उन सम्पूर्ण नियमों, आयोजनो तथा मन्तव्यो आदि का समुच्चय "संस्कृति" है, जो कि सर्व-हितकारी हैं। कसौटी पर कसे जा चुके हैं, भ्रान्ति रहित हैं और जिन के अनुसार आचरण करना भी सभी के लिये आसान है। धार्मिक विधानो और सिद्धान्तो का क्रियात्मक पक्ष संस्कृति के रूप मे ही विचार और आचरण का विषय बनता है।

देश, काल और पात्र भेद से संस्कृति के बाह्य रूप में परिवर्तन और सुधार भी सदा से ही होता रहा है, और सदा ही होता रहेगा। इस विषय में किसी को किसी प्रकार का मोह-प्रदर्शन या दुराग्रह नहीं करना चाहिये। हां, श्रुति= वेद के अनुकूल और अविरुद्ध होने पर ही संस्कृति कल्याणकारी होती है। यूं भी कह सकते हैं कि देश, काल और पात्र के अनुसार श्रुति सम्मत विधानो और आयोजनो का प्रचार एवं विकास ही स्मृति के रूप मे प्रगट होता है, और स्मार्तधर्म का अनुष्ठान ही संस्कृति कहलाता है। श्रुति का अविरोध ही संस्कृति की श्रेष्ठता और प्रामाणिकता का माप दण्ड है। वैदिकता की बात से कोई चौंके नहीं। वेद ज्ञान की सर्वभौम और भ्रान्ति रहित, सत्प्रेरणा-प्रदा और पक्षपात शून्य ज्ञान-निधि का ही नाम है। चारो वेदो के सम्पूर्ण उल्लेख, बुद्धि-पूर्वक, तर्क-संगत, सृष्टिक्रम के अनुसार और अपौरुषेय होने से, मानव-मात्र के लिये एक समान ही उपयोगी तथा स्वत प्रमाण हैं।

लोग नाना प्रकार के साम्प्रदायिक नामो और विशेषणों से युक्त, अन्धविश्वासपूर्ण, एवं पक्षपात भरी हानिकारक बातो, रिवाजो, रूढियों और मान्यताओ आदि को भी संस्कृति का नाम दे देते हैं। वे पक्षपात वलात् अन्धे होकर सिर फटव्वल के लिये भी तैयार हो जाते हैं। कैसे अनुताप का विषय है ?

रात-दिन मन्दिर-ओ
मस्जिद के हैं झगड़े रहते।
दिल में ईंटें हैं भरीं,
लब पे खुदा रहता है॥

इन धर्म के ठेकेदारो को तो देखो—

दुकान खोली है, छल कपट की,
गुनाह के हो रहे हैं धन्धे।
कहाँ का रोजा ? नमाज कैसी ?
कहाँ का अल्ला ? कहाँ के बन्दे ?

सम्भलो—

अगर न बदलोगे दीन-ओ—
मजहब को दूर ही से सलाम होगा।
रहेगा ईश्वर रहे मगर,
उसका दीन होगा, न नाम होगा॥

हाय ! हाय !!

खुदा के बन्दों को देखकर ही,
खुदा से मुन्किर हुई है दुनिया।
कि ऐसे बन्दे हैं जिस खुदा के,
वह कोई अच्छा खुदा नहीं हैं॥

शरारत की भी कोई हद होती है—

अब हंसी आती है मुझको,
हजरते इन्सान पर।
काम गन्दे खुद करे,
लानत करे शैतान पर॥

इस उलटी गंगा का परिणाम भी उलटा ही हो रहा है—

सफाइया हो रही हैं जितनी,
दिल उतने ही हो रहे हैं मैले।
अँधेरा छा जायेगा जहाँ मे,
अगर यही रोशनी रहेगी॥

स्मरण रखो, जो सर्व हित-कारी, पक्षपात-शून्य, न्यायपूर्ण और परि-पीडन-रहित बात, सिद्धांत विचार, तत्त्व और कार्य नहीं है, उसका ग्रहण संस्कृति के अन्तर्गत नहीं हो सकता। वह तो दोष है। दोष और दोषपूर्ण संस्कृति ग्रहण करने और प्रचार करने योग्य नहीं होते। यह तो सर्वमान्य है। इसके साथ ही ईश्वर की उपासना और आनन्द की प्राप्ति का सिद्धान्त संस्कृति का सर्व प्रथम और मुख्य लक्ष्य है। ईश्वर और उसकी उपासना से शून्य किसी भी विचार धारा को, संस्कृति कहना तो संसार के सम्पूर्ण दर्शन-शास्त्र और मनो - विज्ञान - शास्त्र का मुंह चिढ़ाने के समान है।

संस्कृति का दूसरा लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुरूप काम देना, और उसकी उचित आवश्यकता के अनुसार भोजन, वस्त्र और मकान आदि जीवनोपयोगी सब प्रकार के पदार्थों को देना एवं सुख-सुविधाओ को जुटाना भी है। जो संस्कृति मनुष्य को रोगों अभावो और खतरो में फंसाती है। पीड़ित करती है। जिसकी लाठी, उसकी भैंस के सिद्धान्त का समर्थन करती है। दुर्बलो को दुष्टों और बलवानो के अत्याचारो से नहीं बचाती, वह तो जंगल का कानून है, एक बड़ी बला है, संसार के लिए हानिकारक है, संस्कृति नहीं।

संस्कृति और सभ्यता के नाम

[ शेष पृष्ठ १६ पर ]

लखनऊ-रविवार १७ अगस्त ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## चर्च कानून और भारत सरकार

सन् १९२७ मे ब्रिटिश शासन काल में भारत सरकार ने चर्च कानून को मान्यता दी थी। इस कानून के अनुसार "ईसाइयो के लिये इग्लैण्ड की राजसत्ता प्रभु ईसा मसीह के बराबर हैं" और आज भी भारत सरकार द्वारा इस कानून को मान्यता देने का स्पष्ट अर्थ है कि भारत सरकार ईसाइयो का झुकाव अंग्रेजो के प्रति बनाये रखने मे योग देती हैं।"

उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी आर्क विशप डा० जे एस. विलियम के द्वारा जयपुर मे सम्पन्न ईसाई सम्मेलन मे लिये गये रहस्योद्घाटन से मिलती है। आर्क विशप ने यह भी कहा कि ईसाई मिशन निर्धनो की आर्थिक सहायता राजनैतिक उद्देश्य से करता है। वास्तव मे इस प्रकार के निर्धनो को ईसाई बना कर उनको मानसिक दृष्टि से अंग्रेजो का गुलाम बनाये रखना मिशनरियो का उद्देश्य है।

पिछले दिनों कोल्हापुर चर्च काउन्सिल ने सांवली मिशन कम्पाऊण्ड मे अनधिकृत रूप से रहने वाले छ. विदेशी मिशनरियो के निष्कासन की माग की है। काऊन्सिल का मत है कि ये विदेशी मिशनरी भारत मे रहकर अराष्ट्रीय कृत्य मे सलग्न हैं। साथ ही वे भारत के ईसाइयो पर अपना प्रभुत्व स्थाई रखने के लिये उनमे आपस मे फूट को बढ़ावा दे रहे हैं।

इस प्रकार हमारे सामने तीन बाते स्पष्ट हैं—

१—चर्च कानून की भावना के अनुसार ईसाइयों का झुकाव अंग्रेजों की ओर होना भारत की २२ वर्षीय स्वतन्त्रता पर कलक है।

२—ईसाई मिशन द्वारा आर्थिक सहायता का राजनैतिक उद्देश्यपूर्ण होना अर्थात् सहायता प्राप्त कर्ता अंग्रेज प्रभुओ की ओर मानसिक दृष्टि से झुके रहे।

३—विदेशी ईसाई मिशनरी भारत के ईसाई धर्मावलम्बियों पर अपने वर्चस्व को स्थायी बनाये रखने के लिये उनमे आपस मे फूट उत्पन्न करते हैं और भारतीय ईसाइयो को स्वतन्त्र रूप से अपना कार्य नहीं करने देते।

इन तीनो स्थितियो के लिये सर्वाधिक उत्तरदायित्व भारत सरकार पर है। हम कहते हैं कि १९२७ के चर्च कानून को रद्द किया जाय। धर्म निरपेक्ष राज्य होने का डिम-डिम नाद करने वाली भारत सरकार को ईसाई चर्च को इस प्रकार के कानून द्वारा सरक्षण एवं प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। साथ ही ईसाई मिशन की आर्थिक सहायता को राजनैतिक उद्देश्यो से युक्त होने के कारण उस पर राष्ट्रीय नियन्त्रण आवश्यक है, अच्छा तो यह हो कि इसका राष्ट्रीय करण कर दिया जाय।

इसी के साथ-साथ भारतीय ईसाइयो के सरक्षण का प्रश्न है। हम मत स्वतन्त्रता के समर्थक हैं। और इस आधार पर भारतीय ईसाइयो के अधिकारो को इस अधिकार का समर्थन करते हैं, कि उन्हे अपने विचारो का स्वतन्त्रता पूर्वक विकास करने का अधिकार होना चाहिए। विदेशी मिशनरी उन पर अपनी प्रभु सता न लादें।

हमे पूर्ण आशा है कि ससद् के वर्तमान् अधिवेशन मे सरकार चर्च कानून को रद्द करने की घोषणा कर अपनी राष्ट्रीयता पर हो रहे प्रच्छन्न आक्रमण से अपनी रक्षा करेगी। इसी प्रकार विदेशी मिशनरियो एव उनकी आर्थिक सहायता को भी राष्ट्रीय हित की दृष्टि से अविलम्ब प्रतिबन्धित किया जायगा।

## कुमायूं क्षेत्र में ईसाई बलात् धर्म परिवर्तन में संलग्न

उत्तर प्रदेश विधान-सभा मे नैनीताल क्षेत्र के प्रतिनिधि श्री डूगरसिह जी एम एल ए (कांग्रेस) ने अपना एक वक्तव्य प्रकाशित कर पटवाडागर (नैनीताल) कुमायूं क्षेत्र मे निर्धन व्यक्तियों को भूमि और धन का लालच देकर ईसाई बनाया गया है और उनको दी गयी भूमि पर अब भी मिशन का ही अधिकार है और वह जब चाहे उन लोगों को बेदखल कर उत्पीडित कर सकता है। ईसाई मिशन अपने द्वारा किये गये शिक्षा प्रसार पर गर्व करता है, पर जिन गाँवों का माननीय विधायक ने परिभ्रमण किया, वह क्षेत्र ६० वर्ष से मिशन के समीप है, पर वहाँ अभी तक एक प्राथमिक पाठशाला भी नहीं खोली गई थी। माननीय विधायक ने प्रथम बार वहाँ प्राथमिक पाठशाला आरम्भ करायी है। हम इस ज्ञान-प्रसार कार्य के लिये श्री डूगरसिह जी तथा उनके सहयोगियों को हार्दिक बधाई देते है।

हमें पूर्ण विश्वास है शिक्षा प्रसार और भूमिधरी अधिकार प्राप्त होने पर उस क्षेत्र के निवासियो मे साहस बढेगा और वे मिशन के अत्याचार से उन्मुक्त हो सकेगे। हम विचार स्वातन्त्र्य के आधार पर धार्मिक आस्थाओ का स्वागत करते हैं, परन्तु लोभ-लालच और दमन द्वारा धार्मिक सम्प्रदाय वाद वृद्धि का प्रबल विरोध करते हैं।

उत्तरप्रदेश सरकार को इस प्रकार के पिछडे क्षेत्रो मे अपनी ओर से गुप्त जांच करानी चाहिये और वहा के निवासियो को स्वतन्त्रता की सास लेने का अधिकार दिलाना चाहिये।

आर्यसमाज की इस दिशा मे विशेष भूमिका रही है। आर्यसमाज ने आसाम-उडीसा बिहार, मध्यप्रदेश आदि मे ईसाई मिशन की अनुचित कार्यवाहियों का दृढ़ता से सामना किया है। अनेक राज्यो मे ईसाई मिशनरियो की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगवाने में भी आर्य समाज को सफलता मिली है, परन्तु उत्तरप्रदेश मे अभी भी मिशन की अनुचित प्रवृत्तियाँ अवरुद्ध नहीं कराई जा सकी हैं।

इस सम्बन्ध में सभा के गत नैनीताल अधिवेशन मे गम्भीर-विचार-विमर्श अवश्य हुआ था। हम आशा करते हैं कि आर्यसमाज की ओर से स्थानीय जिला एव राज्य स्तर पर इस ओर शीघ्र कार्यवाही सम्पन्न होगी।

## दक्षिणपन्थ - बामपन्थ या राष्ट्रपन्थ

आज भारत में राष्ट्रपति निर्वाचन के प्रश्न पर देश की राज नीति दो भागो में विभक्त प्रतीत होती है।

प्रथम वर्ग के लोग अपने को दक्षिण पन्थी कहते हैं, और दूसरे लोग अपने को बाम पन्थी कहते हैं।

दोनों की मौलिक मान्यताओं का आधार अर्थ व्यवस्था है।

१—दक्षिण पन्थी

स्वतन्त्र व्यापार, स्वतन्त्र अर्थ व्यवस्था एव स्वतन्त्र कल-कारखानों के समर्थक हैं, उनका कथन है कि राष्ट्र की उन्नति के लिये स्वतन्त्रता पूर्वक व्यापार अर्थतन्त्र और उद्योग का विकास होना चाहिये।

२—वाम पन्थी

इसके विपरीत बाम पन्थी विचारधारा सारी आर्थिक व्यवस्था का नियन्त्रण राज्य के अधीन रखने का समर्थन करती है। स्वतन्त्र व्यापार एवं उद्योग से शोषण को बढ़ावा मिलता है, और राष्ट्र मे असतोष उत्पन्न रहने से उन्नति मे बाधा पहुंचती है।

हम दोनों पन्थो मे अनेकों अच्छाइयां मानते है, पर दोनो मे से किसी एक को भी सर्वाङ्गपूर्ण नही मानते। विश्व के राष्ट्रो में दोनो प्रकार की व्यवस्थाएँ चल रही है। हमारा कर्तव्य होना चाहिये कि हम दोनो व्यवस्थाओं के अनुभवो से लाभ उठावें और

# सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा के दो निर्वाचन क्यों?

[ श्री धर्मेन्द्रसिंह जी आर्य, सदस्य सार्वदेशिक सभा, दिल्ली ]

३१ मई, १९६९ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन पर उसके दो निर्वाचन होने की आर्यजगत् मे विभिन्नप्रकार की प्रतिक्रिया हुई है। अधिकतर लोगो ने इस पर आश्चर्य एव खेद प्रकट किया है। कुछ ने दोनो पक्षो को अलग-अलग बधाइयां दी हैं, और कुछ ने दोनो पर अनुचित काम करने का आरोप लगाया है। बहुत से लोगो ने वस्तुस्थिति जानने की इच्छा प्रकट की है। हम यहा उन कारणो का सक्षिप्त विवरण दे रहे हैं—जिनके परिणामस्वरूप यह घटना घटी। हमने घटनाओ को उनके वास्तविक रूप मे रखने का यत्न किया है, फिर भी यह सम्भव है कि दूसरे पक्ष की दृष्टि मे उनमे कुछ कमी रह गई हो, इसलिये यह अच्छा होगा यदि दूसरे पक्ष की ओर से भी इन घटनाओं पर प्रकाश डाल दिया जावे। जिससे आर्यजगत् के सामने वस्तुस्थिति आ जावे।

लगभग १५ वर्ष पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे गम्भीर मतभेद प्रारम्भ हो गये। सभा स्पष्ट रूप से दो पक्षो मे विभक्त हो गई और दोनो दल सभा को अपने साथ रखने का यत्न करने लगे। चार पांच वर्ष पश्चात् यही मतभेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तक पहुच गया। दोनो दलो के प्रमुख सज्जन अन्य प्रान्तो के प्रतिनिधियो को अपने साथ मिला कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर अधिकार करने का यत्न करने लगे। परिणामस्वरूप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे कभी एक दल का बहुमत हो गया कभी दूसरे का। १९६१ मे तो आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब का मतभेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर पूरी तरह हावी हो गया। वहाँ पर प्रायः प्रत्येक बात मे यह सोच विचार किया जाने लगा कि इसका आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मतभेद पर क्या प्रभाव पडेगा। अन्य प्रान्त के प्रतिनिधियो ने अनेक बार आशका प्रकट की कि कहीं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का मतभेद सार्वदेशिक सभा को पूरी तरह न ग्रस ले, कई वार उपर्युक्त अवसरो पर सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन अधिकारियो का ध्यान इस विभीषिका की ओर खींचा गया, पर उन्होने इस पर ध्यान न दिया।

लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व भी ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। तब आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब मे दो विरोधी दल ( एक गुरुकुल के स्नातको का और दूसरा सभा के पुराने कार्यकर्त्ताओ का ) बन गये थे। उनके मतभेद का प्रभाव सार्वदेशिक सभा पर पड़ने का भय था। तब स्वय महात्मा नारायण स्वामी जी ने जो उस समय सभा के प्रधान थे, कहा था कि सार्वदेशिक सभा को पजाब के पारस्परिक मतभेद का शिकार होने से बचाना चाहिये। पजाब क्या किसी भी प्रान्त के मतभेदों का प्रभाव सार्वदेशिक सभा पर न पड़ने देना चाहिये। हमने पूज्य स्वामी जी की बातो का उल्लेख किया, पर उस का कोई प्रभाव न हुआ।

नीचे हम कुछ उदाहरण देते हैं, जिनसे उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि के साथ-साथ यह भी स्पष्ट होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के एक दल ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर अपना अधिकार जमाये रखने के लिये किस किस प्रकार के अनुचित कार्य किये हैं—

[१] आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सदस्यो की सख्या अधिक होने के कारण उसके लगभग तीस से भी अधिक प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा मे आते थे। जिसके कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में उनका बहुमत आसानी से हो जाता था। दूसरे दल वालों को यह बात खली, और उन्होने सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन देहली में न कर बम्बई मे किया। यह सार्वदेशिक सभा के इतिहास में पहली ही बार हुआ था। इसका उद्देश्य यही था कि आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब के सब प्रतिनिधि अधिक व्यय सहन न कर सकने के कारण बम्बई न जा सकेगे। उसी अधिवेशन मे सार्वदेशिक सभा मे आने वाले विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रतिनिधियों की सख्या से सम्बन्धित नियम मे यह परिवर्तन प्रस्तुत किया गया कि एक आर्य प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये अपने प्रतिनिधियो - सदस्यो के ५ प्रतिशत प्रतिनिधि अथवा अधिक से अधिक १५ प्रतिनिधि भेज सकेगी। यह सशोधन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नैमित्तिक अधिवेशन मे ही स्वीकृत होकर काम में आ सकता था। नैमित्तिक अधिवेशन के लिये सभा के २१३ प्रतिनिधियो की उपस्थिति आवश्यक होती है। बम्बई में वह न थी। तब वहाँ पर एक सज्जन को एक विशेष प्रान्त का प्रतिनिधि बना लिया गया और कोरम पूरा कर लिया गया। वहीं से विशेष अनियमितताओ का श्रीगणेश होता है।

[२] आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के १९६३ के निर्वाचन के सम्बन्ध मे कुछ मतभेद हो गया। बात साधारण थी और सच्चाई स्पष्ट थी, परन्तु सार्वदेशिक सभा मे पहुचे हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के एक दल के सज्जनो ने इसका लाभ उठाया और बवण्डर खड़ा कर दिया। उसी बवडर ने सम्पूर्ण आर्यजगत् की शान्ति को भग कर उत्पात मचा रक्खा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उस निर्वाचन मे ६३८ प्रतिनिधि थे। उनमे से ३९१ एक ओर थे २४७ दूसरी ओर। सख्याओं में पर्याप्त अन्तर था और बहुमत की बात चलनी चाहिये थी, परन्तु सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन अधिकारियो ने जो पंजाब के अल्पमतवाले दल के थे या उसके साथ थे, ऐसा न मानकर अल्पमत वालो को बढ़ावा दिया और अन्त मे उन्हीं के द्वारा पजाब में दूसरी आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित करा दी।

[३] १९६६ में अन्य प्रान्तों के कतिपय प्रतिनिधियों के प्रयत्न से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के १९६३ के निर्वाचन का विषय सार्वदेशिक न्याय सभा के [illegible] इसका निर्णय करने के लिये भेजा गया कि यह निर्वाचन ठीक था या नहीं, परन्तु न्याय सभा इस बात का स्पष्ट निर्णय न कर अनेक अन्य बातो पर विचार और निश्चय कर बैठी जो प्रकरण से बाहर की थीं।

[ शेष अगले अङ्क मे ]

---

दोनों की अच्छाइयो को राष्ट्रिय आधार पर निर्धारित होना चाहिये और इसलिये राष्ट्र को राजनैतिक या आर्थिक आधार पर गुटो मे नहीं बाटना चाहिये और एकमात्र राष्ट्र-यज्ञ के आधार पर आगे बढना चाहिये।

जब हम राष्ट्र-पन्थ को स्वीकार करते हैं, तो हमे राष्ट्र पन्थी के रूप मे राष्ट्रपति निर्वाचन में योग देना चाहिये। देखना यह चाहिये कि किस व्यक्ति के विचारो और कार्यों द्वारा राष्ट्र का सर्वाधिक हित हो सकता है।

हमारा राष्ट्रपति न तो दक्षिण पन्थी होना चाहिये न वाम पन्थी। वह एक मात्र राष्ट्र-पन्थी होना चाहिये। हमे आशा है कि हमारा यह स्वप्न साकार रूप धारण कर सकेगा।

---

## भूल-सुधार

१० अगस्त के अंक २९ पृष्ठ १६ पर 'साहित्य समीक्षण' में 'वैदिक सिद्धान्त माला' के स्थान मे पाठक 'वैदिक व्याख्यान माला' पढ़ें। —सम्पादक

# पन्द्रह अगस्त

[ श्री कृष्णगोपालदास 'कृष्ण', अघार, मैनपुरी ]

शताब्दियों से प्रसुप्त भारतीय मस्तिष्क में ज्ञान-ज्योति प्रसारित कर, प्रगति के पथ पर उन्मुक्त-वातावरण में श्वास लेने का पाठ पढ़ाने वाला भारतीयों का परम-पावन पन्द्रह अगस्त; प्रति वर्ष सोल्लास भारत मे तथा प्रवासी भारतीयों मे, एक नवीन-चेतना तथा स्फूर्ति का सचार करता है।

शताब्दियो से तमसाच्छन्न अमावस्या की रात्रि के पश्चात् १५ अगस्त १९४७ ई० को, भारतीय आकाश ने, स्वाधीनता के स्वर्णिम-प्रभात का दर्शन, जिन अमर हुतात्माओ के त्याग तथा बलिदान से किया, उनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती ( १८२४ ई०-१८८३ ई० ) का नाम हिमगिरि की सर्वोच्च चोटी एवरिस्ट के समान विशेष रूपेण अध्ययनीय तथा स्मरणीय रहेगा ही; चाहे चाटुकार-इतिहासकार, साहित्यकार ऐसे सर्वोच्च महामना के अप्रत्याशित महान् क्रान्तिकारी राष्ट्रिय-जीवन, जो विशुद्ध वैदिक धर्म की कसौटी पर जाज्वल्यमान स्वर्ण सिद्ध हो चुका था, के बारे मे क्यो न पक्षपात तथा उपेक्षा की भावना प्रदर्शित करे। यदि निष्पक्ष रूप से मनन तथा अध्ययन किया जावे तो भारतीय स्वतन्त्रता के आदि-गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ही सिद्ध होगे—जिनके अनुपम बलिदान तथा अद्वितीय त्याग एव वैदिक सत् शिक्षाओ एव प्रेरणाओ के प्रभाव मे आकर अनेकानेक भारतीयो ने देशोद्धार के प्रति खुद ही नहीं प्रत्युत निज सम्पत्ति, परिवार की आहुति, स्वातन्त्र्य-यज्ञ मे समय-समय दे डाली।

भारतीय कांग्रेस के जन्म से १० वर्ष पूर्व सन् १८७५ ई० मे महर्षि ने बम्बई मे एक महान् क्रान्तिकारी सस्था ( जिसे बृटिश-सरकार ने 'विद्रोही-साधु' की 'विद्रोही-सस्था' ठहराकर, उसकी सभाओ मे गुप्तचर आदि नियुक्त करके ही सन्तोष की श्वास नहीं ली प्रत्युत आगे चलकर पजाब प्रदेश मे,जिसमें उसकी अप्रत्याशित प्रगति हुई थी, अनेको आर्य वीरो के साथ अनेको अत्याचार किये ) 'आर्य-समाज' को जन्म दिया। महर्षि ने अपने एक भाषण मे, जिसमे एक पदाधिकारी भी श्रोता गण मे थे, कहा था कि—'भारतीयों के प्रति विदेशी-शासन अभिशाप ही है—अपने देश का शासन कितना ही दुःखद प्रतीत हो,विदेशी शासन से अत्युत्कृष्ट सिद्ध होगा।' भारत के वायसराय नार्थब्रुक द्वारा प्रार्थना करने पर भी, महर्षि ने अग्रेजी राज्य भारत के प्रति हेय सिद्ध किया था।

आर्य समाज बम्बई के सदस्य दादा भाई नौरोजी, महादेव गोविंद रानाडे की सत्प्रेरणा से १८८५ ई० मे भारतीय-कांग्रेस का जन्म हुआ कांग्रेस में सम्मिलित होने वाले ९० प्रतिशत व्यक्ति, आर्यसमाज के तपे हुये महानुभाव थे। इन अमर हुतात्माओ मे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार अजितसिंह, सरदार हरी सिंह ( भगतसिंह के पिता ), भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, महा शूर ऊधमसिंह, मदनलाल धींगरा, वीर सावरकर,रामप्रसाद 'बिस्मिल' ठा० रोशनसिंह के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

महर्षि दयानन्द के अनुयायी क्रान्तिकारियो के पितामह श्याम जी कृष्ण वर्मा (१८५७ ई०-१९३० ई० ) [ जिनकी क्रान्तिकारी विचार-धाराओ तथा लेखो से इग्लैंड, फ्रास, जर्मन, रूस, स्विटजरलैण्ड, अमेरिका, भारत मे हलचल मच गई थी, जिन्होने १९०५ ई० मे इग्लैंड मे 'इण्डिया हाउस' स्थापित करके वीर सावरकर, मदनलाल धींगरा, लाला हरदयाल को महान् क्रान्तिकारी बनाकर लाखों क्रान्तिकारी देश-विदेश मे बनाने का ही श्रेय प्राप्त नहीं किया प्रत्युत एक बम बनाने वाली पुस्तक भी लिखकर देश-विदेश मे वितरित कराई एव अग्रेजी सरकार के साथ असहकार आन्दोलन भी चलाया तथा सन् १९१४ ई० के महायुद्ध मे जर्मन को सहायता देने का प्रबल अभियान इस प्रतिबन्ध के साथ चलाया कि—जर्मन को विजय प्राप्त हो जाने पर, वह भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता दिलाकर ही दम लेगा ] लन्दन के आक्सफोर्ड विद्यालय मे सर्वप्रथम प्राध्यापक सस्कृत विभाग, हुये तत्पश्चात् बैरिस्टरी भी उत्तीर्ण की। पश्चातत. अपने पत्र 'इण्डियन सोशियोलेजिस्ट'के द्वारा अपनी धर्मपत्नी भानुमती के साथ इग्लैण्ड पेरिस, जिनेवा मे रहकर जीवन के अन्तिम दिनो तक देश-विदेश मे लाखों क्रान्तिकारी बनाकर भारत मे स्वाधीनता का मन्त्र फूकने के प्रति सतत् प्रयास करते रहे। उन की शिक्षाओ तथा सत्प्रेरणाओ से लाखो भारतीयो, प्रवासी-भारतीयो ने क्रान्ति का मार्ग ग्रहण करके अपनी सम्पत्ति, परिवार तथा निज तन का हवन कर दिया।

सन् १९०९ ई० मे मदनलाल धींगराने इग्लैण्ड मे कर्जन वायली नामक अग्रेज अत्याचारी का वध करके यह सिद्ध कर दिया कि—भारतवासी अपनी पराधीनावस्था मे भी किसी भी सशक्त अन्यायी विदेशी-शासक का अत्याचार अब अधिक दिन सहन नहीं करेंगे। ऐसा करने के प्रति वे अपने जीवन की ही आहुति नहीं देंगे, प्रत्युत अन्यायी सशक्त से भी प्रतिशोध लेंगे। उसमे महर्षि दयानन्द की इस वेदोक्त उक्ति को कि—अत्याचार करने की अपेक्षा अत्याचार सहने वाला अधिक पापी तथा दुरात्मा होता है" अधिक श्रेयस्कर समझ कर 'भारतीय-स्वतन्त्रता सग्राम' मे एक चिरस्मरणीय तथा अनुकरणीय कार्य-कलाप किया।

सन् १९१९ ई० के जलियाना वाले बाग के भीषण निरपराध नर-सहार करने वाले भयकर दृश्य को देखकर आर्य युवक ऊधमसिंह ने अपने प्रण को सन् १९४० ई० मे २१ वर्ष के पश्चात् पूर्ण करके यह प्रदर्शित कर दिया कि—अब बृटिश राज्य का अत्याचारी-शासन भारत प्रभृति स्वाभिमानी राष्ट्र में मरण-काल की अन्तिम श्वासे ले रहा है।

अंग्रेजो मे भय व्याप्त हो गया कि—कभी इसी प्रकार के प्रतिशोध गामी, महान् क्रान्तिकारी भारत मे उत्पन्न होकर इग्लैण्ड देश की स्वाधीनता का अपहरण न कर ले। बृटेन के उदार श्रमिक ने यही सोचकर भारत को स्वाधीनता दिये जाने के प्रति प्रस्ताव रखा। 'भगतसिंह' आर्य नवयुवक ने ससद मे बम फेंक कर 'बटुकेश्वरदत्त' के साथ बाहरी अग्रेजी सरकार के कानो मे एक धमाका किया। प० रामप्रसाद बिस्मिल ने काकोरी मे रेलगाडी मे सरकारी कोष लूट कर, पक्षपाती अन्यायी अंग्रेजी सरकार के कान खोल दिये। चन्द्रशेखर आजाद, ठाकुर रोशनसिंह ने भी अपने बलिदान से, दूर-सशक्त भाषा मे भारत को स्वतन्त्र कर दिये जाने की उन्मुक्त-घोषणा की। इन्हीं विचारो से प्रेरित होकर सुभाष चन्द्र बोस (जिन्होने वीर सावरकर से प्रेरणा ली थी) ने एक अनुपम 'आजाद-हिन्द सेना' प्रस्तुत करके अंग्रेजो का हृदय दहला दिया। उन्होने जापान, जर्मन, इटली के शासको से मिलकर; भारत स्वतन्त्र कराने की एक अद्भुत योजना प्रस्तुत की। (क्रमशः

# पन्द्रह अगस्त के प्रति

यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

जिस दिन छूटा था भारत के मस्तक से दाग गुलामी का।
जिस दिन सेवक से हमको अधिकार मिला था स्वामी का।
जिस दिन भारत स्वाधीन हुआ गोरे शासन का अन्त हुआ।
जिस दिन भारत में नगर नगर घर घर मे हर्ष अनन्त हुआ।
जिस दिन भारत का भानु उगा, हो गया ब्रटिश का सूर्य अस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

जिस दिन के खातिर भगतसिंह फांसी के ऊपर झूले हैं।
जिस दिन के खातिर वीर चन्द्रशेखर गोली से भूने हैं।
कितने ही अमर शहीदो ने फांसी के तख्ते चूमे हैं।
पढ़ देखो इतिहास एक से बढकर एक नमूने है।
कितनी विधवाओ ने काटा सकट सहकर जीवन समस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त।

नेता वीर सुभाषचन्द्र जी बोस किसे हैं याद नहीं।
इसी दिवस की आशा में वे भोगे सुख का स्वाद नहीं।
झांसी की रानी ने भी मरदाना बाना धर करके।
जिस दिन की अभिलाषा की थी समरांगन मे मर करके।
जिसके हित सन् सत्तावन में कितनों का साहस हुआ पस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

जिसके खातिर गांधी जी भी संकट पर सकट झेले थे।
अंग्रेजो भारत छोड़ो तुम, निर्भय हो करके बोले थे।
सुख के सब साधन छोड़ दिये ली पहिन लँगोटी खादी की।
जिसके कारण नेहरू जी ने अपनी न दूसरी शादी की।
जो नेहरू जी जीवन भर इसकी चिन्ता में ही रहे व्यस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

जिसके हित परवाना बनकर जल गईं जवानों की टोली।
जिसके हित जलियाँ वाले में बरसी थी डायर की गोली॥
अंग्रेजो भारत छोड़ो की होती थी बोली पर बोली।
जिसके हित अमर शहीदो ने खेली थीं शोणित की होली।
बलिदानो पर बलिदान हुये, तब हुआ बृटिश साम्राज्य परत॥
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

कितने प्राणो की बलि देकर इसका मूल्य चुकाया है।
कितनी कुर्बानी करके स्वातन्त्र्य दिवस यह पाया है।
कितनों ने इसकी आशा में अपना खून बहाया है।
कितनो ने इसके हित अपना प्राण प्रसून चढ़ाया है।
अब इसे न हम जाने देंगे प्रण करो आज मिलकर समस्त।

यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त।
यह वही दिवस पन्द्रह अगस्त॥

—प्रेमनारायण 'प्रेम', गंगा जमुनी, बहराइच

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें।

इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—
१—अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत मे शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार सहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष मे दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशो में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करें। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से संसार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा' जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन संग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुंचना कठिन है। अतः आर्य भाइयों को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन कास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे।

पता—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ग्रीष्म की असह्य गर्मी के बाद जब वृष्टि होती है, तब सब जगह कीचड़ ही कीचड फैल जाता है। आखिर सृष्टि जब तृप्त हो जाती है तभी उस कीचड़ को दबाकर या सुखा कर जमीन या जलाशय को निर्मल करने की ओर ध्यान जाता है। ससार मे मनुष्य जब आपत्तियो से सघर्ष कर रहा होता है तब वह अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य या धर्माधर्म की ओर बहुत ध्यान नहीं देता है। प्रेम और युद्ध मे कुछ अनुचित भी तो नहीं माना जाता है। यही परिस्थिति देख, सोच और समझ कर बुद्धिमान लोगो ने यही शिक्षा दी है कि विपत्ति के समय किसी भी धर्म का आश्रय लेकर काम चलाना चाहिये और आपत्ति से रक्षा हो जाने के बाद 'समर्थो धर्मं मा चरेत्' के अनुसार अपने वास्तविक धर्म का पालन करना चाहिये। ग्रीष्म की गर्मी और वर्षा के पानी से बचने के बाद शरद् ऋतु का प्रसन्न वातावरण उपस्थित होता है। जो व्यक्ति सकटों का सामना करने के बाद बच जाता है वह जीवन मे धर्म का प्रसन्न रूप और विकसित रूप देखता है इसलिये 'शरद् पूर्णिमा' जीवन की विकास और प्रसन्नता की सूचक होती है। गुजरात प्रान्त मे शरद् पूर्णिमा' के दिन परिवार के सभी जन एकत्र होकर पूर्ण विकसित चन्द्रमा के प्रकाश मे सूई मे धागा डालकर अपने स्वास्थ्य और दृष्टि शक्ति की परीक्षा करते है। वास्तव मे यह शरद् ऋतु गर्मी और वर्षा के सघर्ष से स्वतन्त्र, स्वायत्त होने के बाद सूझने वाला, शक्ति का, समृद्धि का निर्मल प्रसन्नता का एक सार्वभौम धर्म है। ब्रह्म पुराण मे 'शरद् पूनम' के दिन शहर की सड़को को साफ करके उसे सुगन्धित जल से सम्मार्जित करने, स्थान-स्थान पर फूल बिछाने और चंदोवे आदि लगाकर निर्मल वातावरण निर्माण करने का विधान है। 'शरद् पूनम' प्रकृति के काव्य का अनुभव करने का दिन है। इस दिन लक्ष्मी सर्वत्र घूमती है। स्वास्थ्य जगह-जगह दिखाई देता है। लक्ष्मी के माने धन दौलत ही नहीं, बल्कि प्रकृति की शोभा, तारो मे विराजमान चन्द्र की शोभा और इसकी चाँदनी का हृदय पर होने वाला चामत्कारिक प्रभाव है। शरद् पूनम कला का दिन है। वास्तव मे प्रकृति का सौंदर्य परमेश्वर का सौन्दर्य है—उसका प्रतिबिम्ब है। हीरे की तरह चमकते आकाश मे जुड़े हुए तारे, पूर्णिमा का चांद, सुन्दर और अनन्त दूर तक फैला हुआ सागर, ऊपर आकाश को छूने हुये गगन चुम्बी पर्वत, कलकल कर बहती हुई सरिताए परमात्मा के सौंदर्य का दर्शन कराती है। पृथ्वी की विशालता को ढकती हुई हरियाली उसके स्पर्श से बहता हुआ सगीन मय वायु, पक्षियों का कलरव ये सम्पूर्ण प्रभु के सौंदर्य का दर्शन कराते हैं।

# सफाई का ध्यान रखिए (१)

ले—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार एम ए, एल टी,
डी. बी कालेज, गोरखपुर

## वनिता विवेक

'शरद पूनम' के दिन स्वच्छ चांदनी का रसास्वादन करती हुई बालिका मण्डली को सम्बोधन करते हुये सरला बहन ने कहा—'जो प्रभु इतना सुन्दर इतना पवित्र और इतना आकर्षक है तो उसे प्रसन्न ओर खुश करने के लिये हमें भी स्वच्छ, सुन्दर और निर्मल बनने की आवश्यकता है। और इस शुद्धता के लिये हमे बहुत खर्च की भी तो आवश्यकता नहीं। बस, हमें इतना ध्यान रखने की आवश्यकता है। और इस स्वच्छता और शुद्धता के लिये हमे बहुत खर्च की भी तो आवश्यकता नहीं। बस हमे इतना ध्यान रखने की आवश्यकता है कि हम जहां रहते हैं, जहां जाते हैं, जहाँ देखते हैं वहाँ जो वस्तु अच्छी न लगे उसको सुन्दर बनाने का प्रयत्न करे। दूसरों को शुद्ध बनाने से पूर्व हमें, विशेषकर महिलाओं को अपना तथा अपने बच्चो का शरीर तथा घर साफ सुथरा रखना होगा। 'अद्भिः गात्राणि शुध्यन्ति' जल से शरीर शुद्ध होता है। अत हमे स्वय तथा बच्चों को प्रति दिन नहाने की आदत डालनी चाहिये। नहाने के समय शरीर के प्रत्येक अङ्ग को साफ रखने का ध्यान रखना चाहिये। नहाने के साथ-साथ दाँत, नाक आंख आदि की सफाई भी आवश्यक है। हमारा सिर यदि साफ नहीं होगा तो 'जूं' उसमे पड जायगी। एक जूँ की आयु तीन चार सप्ताह तक की होती है, इस अवसर मे वह सौ अण्डे दे देती है, जिन्हे लीख कहते हैं। इन लीखो को एक से दूसरे तक पहुचते हुये देर नहीं लगती। बच्चे और बच्चियां खुजा खुजा कर तग हो जाते हैं। जिनके सिर मे जूँ पड़ गई हो उन्हे शाम को सिर साबुन से धोकर 'पैरेफीन आइल' या किसी जूं नाशक वस्तु से धो देना चाहिये। पतली कघी से उन्हे निकाल भी देना चाहिये। कपडो मे भी जाकर बहुत परेशान करती हैं। उन्हे कपडो को धोकर गर्म लोहा करने से दूर किया जा सकता है।

इनके अतिरिक्त दातो पर भी ध्यान रखना आवश्यक है। दात दो प्रकार के होते हैं—दूध के दात और पक्के दात। छै सात मास दूध के दात निकलने प्रारम्भ हो जाते है। उस समय बच्चो का ध्यान रखना माता का कर्त्तव्य है। यह सात-आठ वर्ष तक रहते है। इनकी समाप्ति एक-एक कर होती जाती है और इनके स्थान पर पक्के दाँत आने लगते है। मसूड़े तक दांत की सफेदी को 'इनैमल' कहते हैं। इन मे ज्ञान तन्तु नहीं होते, इनैमल के नीचे के हिस्से को 'डेन्टाइन' कहते हैं। इसमे ज्ञान तन्तु होते हैं। इनैमल सख्त और डेन्टाइन कोमल होता है।

मुख का रस 'अल्कली' होता है। अगर मुख मे भोजन के छोटे छोटे टुकडे पडे रहें तो वे सड़कर अम्ल उत्पन्न कर देते हैं। यही अम्ल इनैमल को खा जाता है, जिसे कीडा लगना या 'केरीज' कहा जाता है। इनैमल के नष्ट होने पर डैन्टाइन बाहर आ जाता है, और भोजनादि के समय इसे मीठा, गर्म, ठन्डा लगने लगता है। भोजन के अम्ल को रोकने के लिये दांतो को खाने के बाद खूब साफ करना चाहिये, और दांतो के स्वच्छ और साफ रखने का ध्यान माता को करना चाहिए।

दात के ठीक न होने से पाचन शक्ति पर बुरा प्रभाव पडता है। पाचन ठीक न होने से पेट साफ नहीं होता और बालक को कब्ज की शिकायत रहती है। पेट की गन्दी सड़ी हवा का हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। माता को चाहिये कि बचपन से उसे ठीक समय पर शौच जाने का अभ्यास करावे। पेट ठीक रखने और शौच ठीक समय पर कराने के लिए उसे जब से वह दूध पीना प्रारम्भ करे ठीक समय पर नियत मात्रा मे भोजन की भी आदत डालनी चाहिये। पेट के कृमि और अन्य रोगो को दूर करने के लिये स्वास्थ्य के नियमो के साथ योग्य चिकित्सक से भी सहायता लेनी चाहिये।

बालको को ठीक से सोने की भी आदत डालनी चाहिए, इससे उसे लाभ होता है। इस प्रकार सरला बहन ने शारीरिक स्वच्छता के विषय मे विशेष रूप से चर्चा की और बतलाया कि 'स्वस्थ और स्वच्छ शरीर मे स्वच्छ और स्वस्थ आत्मा या मन रह सकता है।

उन्होने कहा भोजनादि मे भी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। भोजन साफ सुथरे पात्रो में बने।

[ शेष पृष्ठ १० पर ]

## काव्य कानन

# श्रुतिशाला

लेखक—
श्री देवनारायण भारद्वाज
अलीगढ़

[ १४१ ]
सुन्दर सन्तान जन्म देकर, विधि उत्तम से पोषण वाला।
योग्य वयस्क बनाकर उनको, दी सौंप उन्हे फिर निज शाला।
की सफल फसल हर घर स्थिर कर, फिर वानप्रस्थ सत्कार किया,
बिना पक्व के नहीं सत्व है, परिपक्व बनाती श्रुतिशाला।

[ १४२ ]
पच्चास वर्ष-पच्चत्तर का, धमयुक्त वय समय निकला।
सन्यास प्रास का संस्कार, वर पहनी मानव ने माला।
अब छोड़ सभी घर गृहस्थी, सन्यास-प्राप्ति तो विपुल व्यर्थी,
नहि उचित आयु बन्धन होता, है योग्य बनाती श्रुतिशाला।

[ १४३ ]
अनिवार्य एक ही आश्रम है, जो ब्रह्मचर्य उत्तम आला।
शेष तीन इच्छा आधारित, हो मनुज स्वयं करने वाला।
आश्रम ऊपर का वेश नहीं, है शुद्ध आत्म सन्देश सही।
हर समय अभय हो हृदय सदय, रवि उदय हृदय हो श्रुतिशाला।

[ १४४ ]
अपराध किया फिर भय खाया, ले लिया वेश सन्तो वाला।
वह भद्र वेश में भ्रष्ट चोर, आरक्षी को ठगने वाला।
सत सन्त दो ही कहना, मत वहीं यहाँ धोखा खाना,
शुभ सत्यवक्ता है वही सन्त, जिसकी शाला हो श्रुतिशाला।

[ १४५ ]
संस्कार बारहो मंजिल के, निर्मित जिनसे मनुज विशाला।
संस्कार शीर्ष के किये तीन, अब आया एक ध्वजा वाला।
तन भवन रहे या यह जाये, पर कीर्ति-पताका नव गाये;
नित नाम व्योम तक लहराये, फर-फर फहराये श्रुतिशाला।

[ १४६ ]
निज गर्भाधान नहीं निज वश, अन्त्येष्टि नहीं निज वश वाला।
दे त्याग आत्म जब इन तन को, शव पंचभूत की जो माला।
यह संस्कार-सार अंतिम है, संस्कार स्वयं करता समाज;
हरती है चिता देह चिन्ता, आत्म भार हरती श्रुतिशाला।

[ १४७ ]
जन पुत्र - मित्र - बान्धव कन्धे, धारे विमान-शव रथवाला।
बरसें आंसू श्रद्धांजलि के, हर ओर रही हो चढ़ माला।
ओ३म् नाम है सत्य सहारा, सत्य मुक्ति का गूंजे नारा;
तन-गौओ का रव गौरव हो, करे गर्व तुझ पर श्रुतिशाला।

[ १४८ ]
नहि नष्ट शस्त्र करते जिसको, है अग्नि नहीं दहने वाला।
जल नहीं गला सकता जिसको, नहि वायु शुष्क करने वाला।
वस्त्र पुरातन ज्यों तजता तन, आत्म तजे ज्यों तन-जीवन;
सत्य सनातन आत्म अमर है, है तन अमर बनाती श्रुतिशाला।

[ १४९ ]
पाकर सब दुख से छुटकारा, आनन्द-सुधा का पी प्याला।
जब जीव त्याग स्थूल देह दे, हो प्राप्त मुक्ति की वरमाला।
ले देह बिना आनन्द घना, परमात्म मध्य हो विद्यमान,
मुक्ति भक्ति से भक्ति ज्ञान से, रत ज्ञान शक्ति दे श्रुतिशाला।

[ १५० ]
तैतालिस लाख बीस सहस्र, वर्षों की चतुर्युगी आला।
दो सहस्र चतुर्युगियों का, एक अहोरात्र होने वाला।
महिना तीस अहोरात्रों का, बारह महिना मिल वर्ष एक,
परान्त काल वर्ष सौ का है, ये मुक्ति अवधि दे श्रुतिशाला।

[ १५१ ]
छत्तीस सहस्रो बार प्रलय, उत्पत्ति काल होने वाला।
जीव मुक्ति का इसी अवधि मधु, पाये प्रिय आनन्द उजाला।
मुक्ति बाद आनन्द भोग कर, पुन: जन्म का चक्र चलाता;
सत्कर्म साधना ध्यान करे, दे मुक्ति पुनः तो श्रुतिशाला।

[ १५२ ]
सौ शरद लखें, औ सौ जीयें, सौ सुन, और सुनाने वाला।
इससे अधिक और सुख, सकुल, जीवन हो सौ वर्षों वाला।
स्वाधीन अधिक आनन्द करे जो-सदन से प्रभु ज्ञान करे
तो जन्म, जन्म से मुक्ति धवल, दे प्राण प्यार तो श्रुतिशाला।

[ १५३ ]
जागृत, स्वप्न, सुषुप्ती आगे है दशा तुरीय उत्तम आला।
जगता, स्वप्न देखता, सोता, दे ज्ञान-ध्यान का उजियाला।
करे तिरोहित तुरीय जागृतादि, दे लगा ध्यान प्रभु में समाधि,
दे दशा मुक्ति शुभ मुक्ति सदा, यह दशा दिलाती श्रुतिशाला।

[ १५४ ]
धर्म-कर्म हित मानव रहता, होता स्थल स्थूल धर्मशाला।
जहां पाठ विद्या का होता, वह भी स्थल स्थूल पाठशाला।
हर कर्म धर्म उपकार मर्म, कल्याणवान उत्थान जहाँ;
स्थूल दिखाई दृग से देती, है स्वयं सूक्ष्म भी श्रुतिशाला।

[ १५५ ]
सरसा भवन या सुधा पवन, श्रमिको की श्रेष्ठ कर्मशाला।
हो काम खेत में होता या, पावन प्रज्वलित यज्ञशाला।
जहाँ राष्ट्र निर्माण नियम से, गूंज रही हो जय स्वदेश की;
जहां-जहाँ तक काम प्रगति के, है वहाँ-वहाँ तक श्रुतिशाला।

[ १५६ ]
तन सुन्दर हो या कुरूप हो, वर्ण गौर अथवा हो काला।
कर्म रूप का धवल धूप सा, हो उदय हृदय में उजियाला।
जिसका पावन चरण पधारे, वहाँ हर्ष की लहर विहारे;
स्थूल नहीं शुभ सुरभि फूल-सा, हर मनुज-मनुज है श्रुतिशाला।

[ १५७ ]
गायन जहाँ वेद का होता, या सैनिक स्वर नारा वाला।
राष्ट्र शत्रु का होता विनाश, अरियो के बध की वधशाला।
राष्ट्र हेतु उर्वशी त्याग दी, वन्दनीय जिसको बलिवेदी;
वेदवान हर मानव वेदी, वर स्वयं वेद है श्रुतिशाला।

[ १५८ ]
पद की जन पीर वही जाने, जिसके निकला हो पद छाला।
अन्याय कहीं यदि होता हो, चुप आर्य नहीं रहने वाला।
हर कर्म सोच कर करता हो, पथ सत्य अर्थ का चलता हो;
जो पीर और जन की जाने, वह मनुज सफल है श्रुतिशाला।

[ १५९ ]
माना मैं नहीं सही स्वामी, अंगूरो की खेती वाला।
इसका स्वामी है पुरुष अन्य, है अन्य खेत का रख वाला।
गधा खेत चर जाये माना, तो होगी मेरी हानि नहीं;
पर चरे गधा अंगूरों को, कब करे सहन ये श्रुतिशाला।

[ १६० ]
**एक सैकडा और साठ हैं, श्रुतिशाला के पद मटियाला।**
**शब्द-शब्द हैं अंकुर संकुल, उगे पौध जिससे हरियाला।**
**करूं समर्पण आर्य जनो को, हो जिनके स्वीकार मनो को;**
**शुभ शांति ओ३म्, शुभ शांति ओ३म्, दे शांति ओ३म् की श्रुतिशाला।**

★

# राजनैतिक समस्याएं

# बैंकों का राष्ट्रीयकरण

## ( एक महान् आर्थिक कदम अथवा राजनैतिक उद्देश्य )

[ले०—वेदव्रत विद्यार्थी एम. एस-सी. (भौतिक), एम एस-सी गणित]

[गतांक से आगे]

"बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण उस आर्थिक नीति की दिशा में पहला कदम है, जिसके लिए प्रधान मन्त्री उत्सुक हैं,और यह काम वित्त मन्त्रालय का चार्ज बदले बिना नहीं किया जा सकता था। स्थिर स्वार्थों को छोड़ कर समूचा देश इस कदम का स्वागत करेगा। श्री देसाई से वित्त विभाग लेने और उनके त्याग पत्र की स्वीकृति के अलावा भी कांग्रेस में संकट है—और यह संकट है एकता न होने का। नेताओं के मिल जुल कर काम करने की बात समझ में आती है, किन्तु सामूहिक नेतृत्व की बात समझ में नहीं आती। जिसका रूप विघटनकारी दिखाई देता है—देश को ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो पदों की बजाय इतिहास के निकट रहना चाहते हों और नीति पर अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार हों। कांग्रेस के समक्ष सवाल उन नीतियों को जारी रखने का है जो कि श्री जवाहरलाल नेहरू से सम्बद्ध रही है, और जिन्हें अनेक बार स्वीकार किया गया है—प्रधानमंत्री ने इतिहास कायम कर दिया है।"

पत्र के उपर्युक्त अंशों को मैंने इस लिए रोचक कहा है कि आज वह व्यक्ति की अपेक्षा नीतियों की वकालत कर रहा है, जो यद्यपि सही है, परन्तु श्री नेहरू के समय में उसने यह कहने की हिम्मत नहीं की होगी। श्री नेहरू ने सदा ही नीतियों की अपेक्षा व्यक्तियों से समझौता किया और नीतियों को एक ओर रख पंजाबी सूबा, भाषायी विवाद, प्रान्तों के विभाजन पर शक्ति के सामने आत्म समर्पण किया। स्वयं कांग्रेस में ही आज जो संघर्ष, आर्थिक नीति पर दो गुट दिखाई दे रहे हैं वे इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि कांग्रेस संगठन का निर्माण भी नीति के आधार पर नहीं किया गया। यदि पदों की अपेक्षा नीतियाँ ही प्रिय होती हैं तो महात्मा गांधी की सलाह के अनुसार कांग्रेस को भंग कर दिया जाना चाहिये था, और नीतियों के आधार पर दल बनने चाहिए थे। कांग्रेस तो एक आंदोलन था, एक मंच था देश को आजाद कराने का। यह असम्भव था,कि उस मंच पर समस्त लोगों के विचार अर्थनीति पर समान होते हैं। इसके अतिरिक्त यदि नीति के आधार पर ही दलों का गठन होता और नीतियों के आधार पर ही जनता से वोट मांगे जाते हैं, तो लोकतंत्र की दिशा ही कुछ और होती। इसके विपरीत कांग्रेस के नाम पर,गांधी के नाम पर, और इससे भी अधिक गिरी हुई बात यह थी कि श्री गांधी और श्री नेहरू के नाम पर वोट मांगे गये। उन्हें वोट तो मिल गये और राज्य भी मिल गया, परन्तु देश के लोकतंत्र को एक ऐसी गलत दिशा मिल गई कि लोग व्यक्ति को ही अधिक महत्त्व देने लगे,और जब भी आर्थिक नीति जैसे प्रश्नों को बीच में लाया जाता है, तो उसे इतना उलझा दिया जाता है कि जन साधारण की समझ से परे की चीज हो जाती है। इसके अतिरिक्त बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने के लिए श्री मोरारजी से वित्त विभाग वापस लेना आवश्यक था या नहीं, यह भी एक विचारणीय विषय है। क्योंकि श्री देसाई के इस कथन में वजन है कि श्रीमती गांधी एक भी उदाहरण दें जब उन्होंने किसी काम के लिए कहा हो और उन्होंने न किया हो। अतः इससे केवल यही परिलक्षित होता है कि श्रीमती गांधी बैंकों के राष्ट्रीकरण के साथ ही अपने विरोधियों से उस घटना का बदला लेने की भी इच्छुक थीं जब उन्हें राष्ट्रपति चुनाव के कांग्रेस उम्मीदवार के चयन के सम्बन्ध में नीचा देखना पड़ा और इसके साथ ही उन्हें राष्ट्रीयकरण की आड़ में अपने विरोधियों को बदनाम करने का और प्रगतिशील होने का श्रेय प्राप्त करने का अवसर मिल गया।

प्रारम्भ में ही बैंकों के राष्ट्रीयकरण की मांग की गई और कहा गया कि बड़े घरानों के अधिकार में बैंक होने के कारण कुछ सुधार नहीं किये बिना यह क्षेत्र अछूता ही रह जायेगा। श्रीमती अरुणा आसफअली द्वारा सम्पादित पत्र 'पेट्रियट' ने अपने सम्पादकीय में लिखा है—

बैंकों के राष्ट्रीयकरण की वर्षों पुरानी मांग में न कोई राजनीति निहित है, और न विचारधारा। यह मांग इस तथ्य से उठी कि आर्थिक क्षेत्र में बहुत-सी अनावश्यक गड़बड़ी को टाला जा सकता था, बशर्ते हमारे सार्वजनिक क्षेत्र की शुरुआत बैंकों के उधार देने की पद्धति पर कड़े राजकीय नियन्त्रण के साथ हुई होती। इसके अभाव में हमारे सार्वजनिक क्षेत्र के विकास का शोषण मुट्ठी भर मुनाफाखोरों ने किया जिनकी आर्थिक सत्ता खतरनाक बन चुकी है। १४ घराने निजी क्षेत्र में भारत की उत्पादक शक्तियों के ७५ प्रतिशत को नियन्त्रित करते हैं। यह इस लिए सम्भव हो सका क्योंकि व्यापारिक बैंकों का प्रबन्ध इन घरानों या इन लोगों के हाथों में था। इससे इनकी शक्ति इतनी बढ़ गयी कि ये सार्वजनिक क्षेत्र की विकास दर और दिशा निर्धारित करने का निर्देश देने लगे। इसी प्रकार यदि "हरी क्रान्ति की उपेक्षा नहीं करनी है, तो कृषि के लिए उधार देने का काम राज्य को अपने हाथों में लेना होगा।

"ये व्यापारिक बैंक खुले आम रिजर्व बैंक द्वारा कभी-कभी लगाये प्रतिबन्धों के बावजूद जमाखोरों और चोर बाजारियों की मदद कर रहे थे। ये लोग गैर कानूनी ढंग से रुपया लेकर और फिर उसको बिना चुकाए विदेशी मुद्रा प्राप्त करते थे। विदेशी मुद्रा का व्यापार करने वाले बैंकों ने उससे मोटा मुनाफा कमाया और फिर भी उसे देश में लगाने से इन्कार करते रहे। टैक्स चोरी के मामलों में इन बैंकों और बड़े पूंजीपतियों में सांठ-गांठ थी और बेईमानी से काम करने वालों को ये खुले तौर पर अवसरों पर उधार देकर प्रोत्साहन प्रदान करती थीं, और उनके छिपे हुए 'दौलत के खजाने' को गोपनीय प्रदान के लिए पड़े रहते थे। लघु और माध्यम कारोबारियों को बैंकों से मदद नहीं मिलती थी, और भ्रष्ट एकाधिकारियों में इनका स्वागत होता था।"

हम वामपक्षी तत्वों या दैनिक पैट्रियट की प्रत्येक विचारधारा से भले ही सहमत न हों किन्तु, स्थिति का जिस यथार्थता के साथ उसने चित्रण किया है, उसकी सराहना करनी ही पड़ेगी। यदि इसमें से पचास प्रतिशत भी सच हो, तब भी स्थिति के भयावह होने का अनुमान लगाया जा सकता है। किन्तु, दुर्भाग्य से जिनके आंखें हैं, वे देख रहे हैं कि यह लगभग सारी की सारी वास्तविक स्थिति को प्रकट करती है।

और यह स्थिति कल की उत्पन्न हुई नहीं है पिछले २२ वर्षों से यह होता आ रहा है और इसके लिये शासक तथा कांग्रेस पार्टी जिम्मेदार है। जब भी आवश्यकता पड़ी है, नेताओं ने जनता को प्रसन्न करने के लिये मीठी मीठी बातें की हैं और एक नया विचार सामने रख दिया जाता है और जिस पर कभी अमल नहीं किया जाता। श्री नेहरू ने समाजवाद का नारा दिया, पर

वर्षीय योजनायें प्रारम्भ की जिस का उद्देश्य देश को समृद्धि बनाने के साथ-साथ समाज मे गरीबी और अमीरी के अन्तर को कम करते जाना था, किन्तु प्रत्येक योजना के अन्त मे यह अन्तर बढ़ता ही चला गया। अमीर और अमीर होता गया, तथा गरीब और गरीब होता गया। उसी का परिणाम यह हुआ कि देश की अधिकाश पूजी कुछ गिने चुने परिवारों के पास आ गई। अत. इसी को रोकने के लिए श्रीमती गांधी ने यदि राष्ट्रीयकरण का यह साहसिक कदम उठया उस पर वे बधाई की पात्र है। जिस तेजी और शीघ्रता से यह कदम उठाया गया, उससे ऐसा मालूम पड़ा कि श्रीमती गांधी कोई रिस्क सशय नहीं लेना चाहतीं थीं, और हर योजना पहले-से ही तैयार थी, तथा वे बैंक के मालिको को कोई अवसर नहीं देना चाहती थीं।

परन्तु, ससद के अधिवेशन प्रारम्भ होने के ४० घटे के पूर्व जो शीघ्रता बरती गई, वह शीघ्रता संसद का अधिवेशन प्रारम्भ होने के ५ दिन बाद तक इस सम्बन्ध में कोई भी अध्यादेश न लाने पर नहीं बरती गई। यही सन्देह का कारण है। क्या इस बीच बैंकों के मालिकों को अपना रुपया निकालने का समय नहीं दिया गया? हो सकता है, सरकार यह कहे कि हम सब हिसाब-किताब देख लेंगे, किन्तु काला धन तो निकालने का अवसर उन लोगों को मिल ही जायेगा। जब तक सरकार इन बैंकों पर अधिकार कर पायेगी तब तक यदि ये सभी बैंक उसको घाटे मे मिले तो इसका उत्तरदायित्व किस पर होगा? आर्थिक प्रस्तावो से लेकर राष्ट्रीयकरण तक का सारा कार्यक्रम जब बनाया गया तो उसमें तुरन्तससद मे यह विधेयक लाने की भी योजना जुड़ी होती तो बेहतर होता, और अनावश्यक सन्देह और अविश्वास की स्थिति नहीं आती। यहां तक विधि मन्त्रालय ने सरकार को यह राय दी है, कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा बैंक राष्ट्रीयकरण आध्यादेश की कुछ धाराओ पर अमल मे रोक लगाने से भी ससद मे एक नया विधेयक पेश करने मे कोई कानूनी रुकावट नहीं आयेगी।

अन्त मे हम केवल यह कहना चाहेंगे कि बैंको के राष्ट्रीयकरण का कदम आर्थिक दृष्टि से अच्छा है, और इसकी सभी वर्गों की ओर से सराहना की जानी चाहिये, किन्तु कांग्रेस के इस कदम से उसके पिछले कार्य कलापो पर परदा नहीं डाला जा सकता, जो इससे पहले उसने आर्थिक क्षेत्र मे किये हैं। इसके अतिरिक्त श्रीमती गांधी ने आर्थिक नीति और कार्यक्रम पर अपने 'छुटपुट विचार' जो उन्होने 'जल्दी से एक कागज पर लिख डाले थे' जिस प्रकार कार्य समिति तक पहुचाये उससे विरोधियों के इस आरोप मे काफी वजन मालूम पड़ता है कि इसमे समाजवाद और द्रुत आर्थिक विकास के लिए उनकी तड़प कम और राजनैतिक उद्देश्य अधिक प्रकट हुआ। यह प्रस्ताव कांग्रेस के फरीदाबाद अधिवेशन मे रखे जा सकते थे। दूसरे भी अवसर इसके लिये हो सकते थे, परन्तु कांग्रेस के जिस अधिवेशन मे राष्ट्रपति पद के लिये कांग्रेस का उम्मीदवार चुना जाना था, उसमे ये प्रस्ताव रख कर और इसके बाद श्री देसाई से जिस नाटकीय ढग से वित्त विभाग लिया गया, उसमे यही प्रकट होता है कि एक अच्छे कदम के साथ-साथ उन्होने अपने विरोधियो को भी चारो खाने चित कर दिया। सब कुछ इस तरह हुआ कि जनता मे श्रीमती इदिरा गाधी को जितनी वाह-वाह मिले उनके विरोधियो को उतना ही नीचा देखना पड़े।

जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, कि १४ बैंको की जमा पूजी पर नियन्त्रण हासिल कर लेना ही आर्थिक क्षेत्र मे सब कुछ नहीं है। आर्थिक नियोजन मे यह एक कदम है। इससे चौथी पंचवर्षीय योजना के लिये २७ अरब ४१ करोड़ की राशि भी उपलब्ध हो सकेगी। जैसा श्रीमती गांधी ने कहा है कि जिन १४ बैंकों का राष्ट्रीकरण किया गया है, उनमें और स्टेट बैंक मे कुल मिलाकर देश के बैंक डिपाजिट का ८५ प्रतिशत जमा होता है, अत. भविष्य मे भी इससे धन की प्राप्ति, देश की योजनाओ के लिये और दूसरे विकास कार्यों के लिए हो सकेगी। किन्तु, भविष्य में राष्ट्रीयकरण के कारण देश की अर्थ-व्यवस्था आगे की ओर से बढ़ सकेगी, यह कर्मचारियों की कुशलता, सरकार की नेकनीयती और बैंकों के लाभ से जन जन को लाभान्वित करने के सरकार के दृढ़ निश्चय पर निर्भर करेगी। ✱

## वनिता-विवेक

[पृष्ठ ७ का शेष]

साफ सुथरे कपडे पहनने वाले बनाये, स्थान भी साफ सुथरा हो। आज तो यह हालत हो गई है जहां भोजन बनता है, वहीं बच्चा पायखाना कर रहा है, उस पर मक्खी भिन-भिना रही हैं, मां कपडे से पोंछ कर फेंक कर या वैसे ही उस बच्चे को छोड़ कर काम मे लगी रहती है। यह चीज ठीक नहीं। भोजन खाने से पहले हाथ पैर धोना चाहिये। रसोई घर देव मन्दिर के समान पवित्र होना चाहिए।

स्वच्छता का व्यवस्था से भी बहुत अधिक सम्बन्ध है। घर की स्त्रियों का बहुत अधिक समय चीजों को खोजने मे चला जाता है। चाभी दियासलाई जूता आदि इधर-उधर रखने से बड़ी कठिनाई होती है। पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपने साथ घटी एक घटना सुनाई थी। दिल्ली के करौल बाग मे एक सज्जन उन्हे रात को दूध पिलाने अपने घर ले गए। घर से जाकर बैठे ही थे कि बिजली फेल हो गई। अन्धकार हो गया। उन्होंने सरकार को और बिजली विभाग को बुरा-भला कहना प्रारम्भ किया। अब वे सज्जन लगे सरकार को कोसने। पूज्य स्वामी जी ने कहा 'राज्य को कोसने से कुछ बनेगा नहीं, आपके घर मे कोई मोमबत्ती आदि होगी उसे जला लीजिए काम चल जायगा।" तब उन्होने बबकू की मा को पुकारा और मोमबत्ती तथा दियासलाई मागी। दियासलाई और मोमबत्ती की खोज की गई। पर वे नहीं मिली तो एक सिगरेट पीने वाले से मांगी। तीलियां जला जला कर मोमबत्ती की खोज शुरू हुई। नौबत यहां तक पहुंची कि बत्तियां खत्म होने लगीं। दियासलाई वाले ने कहा 'तीलियां जरा संभाल कर खर्च कीजिए, नहीं तो वे भी समाप्त हो जांयगी, और आप अधिक कठिनाई में पड़ जायेंगे।" इस भाग दौड मे बिजली आ गई। वे सज्जन बैठे और बोले यह राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। जिस विभाग को देखो वहीं अव्यवस्था है। कितना समय इन लोगों ने नष्ट किया।" स्वामी जी महाराज ने आलोचना सुनकर हंसते हुए कहा "राज्य का प्रबन्ध अच्छा है या बुरा, परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो न दीपसलाका रखने का ठिकाना है न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को? राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा?" यही हाल प्रायः सभी घरों का होता है। हमे इसे सुधारना चाहिए। स्वच्छता और व्यवस्था घर के लिये आवश्यक हैं। ✱

## वेद प्रचार सप्ताह पर आमन्त्रित कीजिये

श्री रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर
„ गजराज सिंह जी
„ धर्मराजसिंह जी
„ खेमचन्द्र जी
„ विन्ध्येश्वरीसिंह जी
„ प्रकाशवीर जी शर्मा
„ जयपालसिंह जी
„ मुरलीधर जी
„ रामचन्द्र जी कथावाचक
„ खड्गपालसिंह जी
„ रघुवरदत्त जी शर्मा
„ महिपालसिंह जी

### संन्यासी

श्री योगानन्द जी सरस्वती
„ प्रणवानन्द जी „
„ रुद्रानन्द जी „

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

# साहित्य-समीक्षण

## ईश्वर-दर्शन

ले०—श्री जगत्कुमार जी शास्त्री प्रकाशक—मधुर-प्रकाशन आर्य समाज मन्दिर, सीताराम बाजार देहली ६, साइज २०×३०=१६ पेजी, पृष्ठ-संख्या १३६, सजिल्द मूल्य १.५० पैसे।

श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री उपनाम 'साधु सोमतीर्थ' आर्यसमाज के पुराने और अनुभवी उपदेशक हैं। वे जैसे प्रभावशाली व्याख्यान दाता एव कथा वाचक है, वैसे ही सिद्ध हस्त और यशस्वी लेखक भी हैं। उनकी रचनाए उर्दू और हिन्दी की सभी आर्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आर्यमित्र मे भी उनकी बहुत-सी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। इन दिनो भी उन की 'अध्यात्म-सुधा' शीर्षक के अन्दर बड़ी प्रभावशाली, रुचिकर और सरल सुबोध वेद-व्याख्या माला चल रही है। समालोच्य पुस्तक ईश्वर-दर्शन मे ऋग्वेद के एक सूक्त सजनास इन्द्र की क्रमबद्ध व्याख्या प्रस्तुत की गई है। उपदेशो को अनुक्रम पूर्वक वेद का स्वाध्याय करने वालो के लिये यह पुस्तक उपयोगी है। यौगिक वेद भाष्य शैली और वेदार्थ की पौराणिक पद्धति पर भी इसमे अच्छा प्रकाश डाला गया है। पौराणिक इन्द्र का दिग्दर्शन बीभत्स होने पर भी रोचक और ज्ञान वर्धक है। पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है।

## यम-नियम प्रदीप सदाचार चन्द्रिका

लें०—उपर्युक्त श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री, प्रकाशक—मधुर प्रकाशन देहली ६, साइज २०×३०=१६ पेजी। पृष्ठ-संख्या १०३, सजिल्द पुस्तक का मूल्य १.५० पैसे।

आर्यसमाज मे यम और नियम के स्वाध्याय, मनन और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने पर विशेष बल दिया जाता है। त्मक शुद्धि और शान्ति प्राप्ति के लिये यम और नियमों का अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। विद्वान् लेखक ने उपनियमो की विस्तृत व्याख्या करके इनके महत्त्व को बहुत बढाया है। नवयुवको और गृहस्थियों को शान्त जीवन व्यतीत करने के लिये इस पुस्तक को अवश्य पढना चाहिये।

## वैदिक प्रार्थना

लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त यह पुस्तक [illegible] दूसरा सस्करण है। इसमे वेद मन्त्रो के आधार पर ३० सनुन्वित प्रार्थनाओं का सकलन प्रस्तुत किया गया है। तीस प्रार्थनाएं दैनिक पाठ के लिये और प्रात साय की दो विशेष प्रार्थनाए इसमे है। अन्त मे ईश्वर भक्ति के कुछ मधुर भजन भी हैं। इसकी भूमिका श्री स्वामी वेदानन्द जी ने लिखी है। प्रार्थना विज्ञान के आधार पर आत्मानुशासन और सद्भाव प्राप्ति मे इस पुस्तक से विशेष लाभ हो सकता है।

## आर्य वीर

मधुर लोक आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली से श्री राजपाल सिह जी शास्त्री के सम्पादकत्व मे प्रतिमास निकलता है। यह आर्य वीर मधुर लोक का विशेषांक है साइज २०×३०—१६, पृष्ठ-सं० १३५ है। मधुर-लोक का वार्षिक शुल्क ५) और विशेषांक का २) है। ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता है। इस अंक मे आर्य कुमारो और युवको के लिये अच्छी सामग्री है।

आर्यवीर आन्दोलन का आरम्भिक इतिहास भी इसमे है। श्री गौरीशंकर भारद्वाज का लेख आर्य समाज के उत्तराधिकारी मर्मस्थल को छूता है। अन्य लेख भी शिक्षा प्रद हैं।

—नारायण गोस्वामी वैद्य

## पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी
द्वारा
# आमरण अनशन का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद मे सर्वसम्मत स्वीकृत प्रस्ताव के आधार पर पूज्यपाद महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज गत कई मास से आर्यसमाज के सङ्गठनो के पारस्परिक झगडो को सुलझाने के लिये प्रयत्न करते रहे, किन्तु कारणवशात् वे अपने शुभ प्रयत्नो मे सफलता प्राप्त नही कर सके। इस विफलता से पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज के हृदय को गहन आघात पहुंचा। आर्यसमाज के अनेक शुभचिन्तक इस स्थिति से चिन्तित हैं, और चाहते हे शीघ्रातिशीघ्र आर्यसमाज के सगठनो का पारस्परिक वैमनस्य समाप्त हो। इस पवित्र लक्ष्य को सामने रखकर कई आर्य युवक सगठनो ने दि० ३० जून ६९ को आर्यसमाज सगठन समिति का निर्माण किया, जिसके अध्यक्ष पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज है।

१ जुलाई १९६९ से २ अगस्त तक पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी और आर्यसमाज सगठन समिति के सदस्यो ने चारो पक्षो [ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के दोनो दलो दोनो प्रतिनिधि सभा (पजाब) ] के नेताओ से मिलकर कोई सवसम्मत हल खोजने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु, सफलता नहीं मिली। अत समिति के सर्वाधिकारी श्री पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज ने ३-८-६९ को समिति की एक आवश्यक बैठक उस समय तक की गतिविधि पर विचार करने के लिये बुलाई। समस्त परिस्थिति क अवलोकन के बाद सभी सदस्यो को अत्यन्त आश्चर्य, खेद एवं दु ख के साथ पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी के आमरण अनशन के प्रस्ताव को बाध्य होकर स्वीकार करना पडा।

### समिति मे निम्न निर्णय हुए

१-दोनो पक्ष ९ अगस्त १९६९ तक अपने सार्वदेशिक एवम् प्रान्तीय सभाओ के सभी मुकदमे वापस ले और नये मुकदमे न करे।

२-दोनो पक्ष १४ अगस्त १९६९ तक अपने झगड़ों का कोई सर्व सम्मत समाधान घोषित करे।

३-यदि वे ऐसा करने मे असमर्थ रहें तो १७ अगस्त १९६९ को ३ बजे आर्यसमाज नयाबास मे आर्यसमाज सगठन समिति द्वारा आयोजित एकता गोष्ठी मे अपने-अपने-अपने अधिकार प्राप्त ५-५ प्रतिनिधि भेजे जो पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु की अध्यक्षता मे निर्णय लेग। जो सभी पक्षो को मान्य होगा।

किसी भी पक्ष द्वारा उपर्युक्त मॉगो के न मानने अथवा अवहेलना करने की स्थिति मे समिति के सर्वाधिकारी पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी २७ अगस्त १९६९ श्रावणी पर्व से आमरण अनशन कर अपने प्राणो की आहुति देगे। और यह क्रम आगे भी चलेगा। हमे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि आर्यजगत् के सभी विचारक और सॅगठन मे जुटे हुए बन्धु इन विवाद मे उलझे हुये नेताओ को अपने विचार सत्परामर्श एवम् शक्ति से अवगत कराकर आर्यसमाज के सॅगठन को सुदृढ करने मे योगदान देगे।

—जगदीश विद्यार्थी
मन्त्री-आर्यसमाज सङ्गठन समिति
आर्यसमाजमन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

## समस्त आर्य जगत् के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की विज्ञप्ति

भारतवर्ष के समस्त आर्यसमाजो व प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो की सेवा मे निवेदन है कि '१६ नवम्बर से २१ नवम्बर १९६९ तक वाराणसी मे 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह' विराट रूप मे मनाया जायगा। इन तिथियो मे कोई भी आर्यसमाज उत्सव, सम्मेलन, कथा आदि न रखे। जिससे सर्व आर्य बन्धुगण वाराणसी पहुच सके। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव के लिये पुष्कल धनराशि भेजने की कृपा करे।

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री | प्रेमचन्द्र शर्मा |
| ससद सदस्य | सदस्य विधान सभा |
| प्रधान | मन्त्री |

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

### प्रोग्राम वद प्रचार सप्ताह
२७ अगस्त से ४ सितम्बर तक

१-श्री प्रकाशवीर शास्त्री-आर्यसमाज मऊनाथ भजन।
२-श्री श्यामसुन्दर शास्त्री-आर्य समाज लखीमपुर।
३-श्री केशवदेव शास्त्री-आर्य समाज भर्थना।
४-श्री जयेन्द्र शास्त्री-आर्यसमाज फैजाबाद।
५-श्री शकरलाल आर्य-आर्य समाज मैनपुरी।
६-श्री स्वा० योगानन्द सरस्वती आर्यसमाज इस्लाम नगर।
७-श्री स्वा० देवानन्द सरस्वती आर्यसमाज खुर्जा।
८-श्री गजराजसिंह जी-आर्य समाज सिरौली
९-श्री धर्मराजसिंह जी-आर्य समाज सीतापुर।
१०-श्री वेदपालसिंह जी-आर्य समाज भर्थना-बिधूना।
११-श्री खेमचन्द्र जी-आर्यसमाज कादरी।
१२-श्री प्रकाशवीर जी शर्मा-आर्य समाज हाथरस।
१३-श्री जयपाल सिंह जी-आर्य समाज सुल्तानपुर (नैनीताल)
१४-श्री ज्ञानप्रकाश जी-आर्य समाज मऊनाथ भजन।
१५-श्री मुरलीधर जी-आर्यसमाज तिलहर।
१६-श्री रामचन्द्र जी वर्मा-आर्य समाज लखीमपुर।

-प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

—२८ जुलाई को [illegible] भिवानी मे जिला आर्य सम्मेलन हुआ। —मन्त्री

—आर्य समाज गोंडा के प्रधान श्री मुरलीमनोहर जी के प्रयत्न से कुकर भुकवा मे आर्य समाज की स्थापना हो गई है जिसमे श्री रामकिशोर मिश्र सर्वसम्मति से प्रधान और श्री भगवतीप्रसाद जी मन्त्री चुने गये। —मन्त्री

—आर्यसमाज गोण्डा के प्रधान श्री मुरली मनोहर ने गुण्डों द्वारा भगाई गई एक हिन्दू स्त्री को पुन शुद्ध करके हिन्दू बना लिया।

—आर्य समाज गोंडा को अपने सरक्षण मे रखने के लिये एक ९ १० वर्ष की आयु की माया नाम की लडकी पुलिस से प्राप्त हुई है। —मन्त्री

—आर्यसमाज सन्त गाडगे महाराज चौक जेलकब सर्कल बम्बई ११ मे आर्यसमाज की स्थापना ता० ४ जुलाई १९६९ ई० को हुई। अब तक इसके सदस्यो की सख्या ५३ तक पहुच गई है। इसके निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए है।

प्रधान-श्री पं० रुद्रदेव जी शास्त्री
उपप्रधान-श्री सत्यजित मिश्र
,, ,, जगनप्रसाद गौतम
मन्त्री-श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डे
उपमन्त्री-श्री शुभकरण द्विवेदी
,, श्री विजयानन्द शास्त्री
कोषाध्यक्ष-श्री [illegible] आर्य
पुस्तकाध्यक्ष-श्री [illegible] शर्मा

-[illegible]

## रोहिलखण्ड आर्य सम्मेलन

जिला उप प्रतिनिधि सभा बरेली ने अपनी आवश्यक बैठक दिनांक २०-७-६९ मे रोहिलखण्डस्थ आर्य समाजो का एक सम्मेलन बरेली में बुलाने का निश्चय किया है।

प्रबन्धार्थ एक तदर्थ समिति का भी निर्माण किया है, जिसमे आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री प्रधान उपसभा, श्री चन्द्रनारायण एडवोकेट श्री त्रिलोचनसिंह पुरुषार्थी हैं। श्री फतहबहादुर एडवोकेट संयोजक नियुक्त हुये हैं। वे इस सम्बन्ध मे समस्त समाजो से शीघ्र ही पत्र व्यवहार करने वाले हैं।

—चन्द्रनारायण एडवोकेट
अन्तरङ्ग सदस्य

—आर्यसमाज जगीगंज वाराणसी मे श्री रघुवंश जी की अध्यक्षता मे अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति का गठन हुआ है। —मन्त्री

—आर्यसमाज गोविन्दनगर बी ब्लाक कानपुर मे पारिवारिक सत्सगो में वैदिक धर्म का खूब प्रचार किया जाता है। —मन्त्री

—गोविन्दनगर कानपुर मे वेद प्रचार मण्डल का नाम अब गोविन्दनगर बी ब्लाक आर्यसमाज रख दिया गया है। जिसके प्रधान श्री रामलाल जी आनन्द, उप प्रधान श्री महेशचन्द जी, मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रामजी दास निर्वाचित हुये हैं। —मन्त्री

—२६, २७ जून को आर्य खेड़ा का प्रथम वार्षिक उत्सव मनाया गया। —मन्त्री

## कहानी-कुञ्ज

● श्री प्रेमचन्द्र जी गोस्वामी

बीजापुर के शानदार महल में बैठे शाहे मुगल आदिलशाह ने अपनी लम्बी और चमकीली दाढ़ी मे हाथ फेरते हुये पास बैठे वजीर की ओर गम्भीर नजरो से देखा। वजीर उसकी नजरो से व्यक्त भाव को समझकर शाह के करीब सरक आया।

"जानते हो वजीर, खुदा की मेहरबानी से हमारे बुजुर्गों ने विजयनगर के हिन्दू राजाओं को नस्तनाबूद करके यहा की हुकूमत पर अपना कब्जा जमा लिया और आज हम यह दिन देखने को नसीब हुआ।' आदिलशाह ने कहा।

वजीर जो शाह की बात को बड़े ध्यान से सुन रहा था, तुरन्त बोला—'आप बजा फरमाते है, आलीजाह!

'लेकिन फिर भी हमें ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे अभी भी बहुत कुछ काम करना बाकी है?' शाह ने कहा।

"वह क्या हुजूर?" वजीर ने जिज्ञासा प्रकट की।

"यही कि विजय नगर के राजाओ का हीरो से जड़ा हुआ तख्त (सिंहासन) अभी भी हमारी नजरो से ओझल है। यह बेश कीमती तख्त आज भी मुगलो के हाथ नहीं लग सका है।' आदिलशाह ने वजीर से इतना कहकर उसकी ओर गौर से देखा।

'आलीजाह तवारीख यह बतलाती है कि विजयनगर का आखिरी राजा उस हीरो जड़े तख्त सहित बच निकला था और भाग कर पेणुकुण्डा पहुच गया था। पेणुकुण्डा से वह चन्द्रगिरि पहुंचा और एक लम्बे अर्से के बाद फिर उसने तख्त को मैसूर के राजा को सौंप दिया।'

'लेकिन क्यो—किस लिये?' शाह ने बीच मे ही प्रश्न किया।

'हुजूर वह इसलिये कि मुगलो के हमले के दौरान मैसूर के राजा ने उसे पनाह दी थी।' वजीर ने शाह के सामने कारण स्पष्ट करते हुये कहा— 'आलीजाह! आज की तारीख मे वह तख्त मैसूर की राजधानी श्री रंगपट्टम मे है।'

बादशाह ने कहा—'तुम्हारा मतलब है, तख्त उस लौंडे के पास श्रीरंगपट्टम मे है, जिसकी उम्र अभी चौबीस साल भी नहीं हुई है और फिर जैसे कुछ याद करते हुये बोला—'कल का बच्चा कण्ठीव!'

'जी हाँ हुजूर?' वजीर ने कहा—आपको यह भी खबर होगी आलीजाह कि वह अभी कुछ महीने पहले ही गद्दी पर बैठा है।'

'हूं' आदिलशाह की भंगिमा फिर गम्भीर हो गई। कुछ क्षण विचार करके उसने कहा—'हम एक तीर से दो शिकार करेंगे वजीर! एक तरफ चन्द्रगिरि और दूसरी तरफ मैसूर"।

शाह ने अपने हाथो से दो बार ताली बजाई। एक सिपाही आकर उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

'रणदुल्ला खाँ को बुलाओ।' शाह ने लगभग चीखते हुए कहा। सिपाही चला गया कुछ ही देर में शाह के सामने उसकी सेना का प्रमुख रणदुल्ला खा उपस्थित हो गया।

'हुजूर ने मुझे याद फरमाया' रणदुल्ला खाँ ने अत्यन्त विनम्र स्वर मे पूछा।

'हा! तुम्हें आज ही अपनी फौजो को लेकर श्रीरंगपट्टम की ओर कूच करना है। वहां पहुचकर तुम्हें पहले तो मैसूर के राजा कण्ठीव को बन्दी बनाना होगा और फिर उससे चन्द्रगिरि के राजा का हीरों से जड़ा तख्त हासिल करना होगा।' शाह ने आज्ञा देकर रणदुल्ला को विदा कर दिया।

चालीस हजार सिपाहियों की फौज साथ लेकर रणदुल्ला खाँ श्रीरंग पट्टम की ओर प्रस्थान कर गया। वहाँ उसने कावेरी के तट पर अपनी फौज को रोककर कुमार कण्ठीव के नाम एक सन्देश भिजवाया, जिसमे कहा गया था कि तीन दिन के अन्दर राजकुमार कण्ठीव बीजापुर के नरेश आदिलशाह की हुकूमत को स्वीकार करके खुद को हीरो जड़े तख्त सहित रणदुल्ला खा के हवाले करदे, अन्यथा मैसूर की ईंट से ईंट बजा दी जावेगी। सारे राज्य को नेस्तनाबूद कर दिया जायगा।

राजकुमार कण्ठीव इस गीदड भभकी से डरने वाले नहीं थे। अपनी दूरदर्शिता, शौर्य और साहस और रणनीति के कारण ही चौबीस वर्ष की उम्र मे ही उन्होने राजकाज पूर्णतया संभाल लिया था। उन्होने निश्चय कर लिया कि वे शत्रु के सामने आत्मसमर्पण कभी नहीं करेंगे।

रणदुल्ला खां को उसकी धमकी का उत्तर देने की बजाय कुमार कण्ठीव मैसूर व श्रीरंगपट्टम के दोनो किलो मे जोरदार सैनिक तैयारियां करने मे लग गये।

तीन दिन बीत गये, पर रणदुल्ला खा के पास कोई उत्तर नहीं आया। वह मन ही मन कुढ़ गया। गुस्से से आखे लाल करके उसने अपनी फौज को हमला करने का हुक्म दे दिया।

विशाल मुगल फौजे मैसूर व श्रीरंगपट्टम के किले की ओर बढ चलीं। रणदुल्ला खा ने अपनी फौज को दो भागो मे विभक्त कर लिया था। एक की कमान वह स्वयं संभाले हुये था, और दूसरे भाग को एक अन्य सेनाधिकारी अब्दुल खां के नेतृत्व मे लड़ना था दोनो ने अपने अपने सैनिकों को लेकर मैसूर तथा श्रीरंगपट्टम पर धावा बोल दिया।

श्रीरंगपट्टम के किले की रक्षा स्वयं कुमार कण्ठीव कर रहे थे और मैसूर के किले पर सेनाध्यक्ष नंजराजैया तैनात थे।

आक्रमण के साथ ही दोनो पक्षो मे घमासान लड़ाई छिड़ गई सेनाध्यक्ष अब्दुल खां कुमार कण्ठीव के युद्ध-कौशल को देखकर दंग रह रह गया। जिस निपुणता के साथ कुमार अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे, वह रणक्षेत्र के लिये अद्वितीय थी। अब्दुल खां ने यह भी देखा कि निर्देशन देने के साथ-साथ कुमार लड़ाई मे भी सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, उधर नंजराजैया भी ऐसे ही रण कौतुक रणदुल्ला खां को दिखा रहे थे।

साहस और दिलेरी के बावजूद उनकी सेना विशाल मुगल फौजों के सामने नहीं टिक पाई। कण्ठीव उचित समय पर अपनी हार की आशंका के प्रति सचेत होकर लड़ाई को शीघ्र ही बन्द कर देने की बात सोचने लगे। वे जानते थे कि इस लड़ाई मे उनके हाथ विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं लगने वाला है। अगर लड़ाई शीघ्र ही बन्द न हो गई तो उनको बहुत जन हानि हो जायगी। मुगलों के इस अथाह समूह के सामने उनके मुट्ठी भर वीर सैनिक लड़ने-लड़ते जान तो दे देंगे, किन्तु विजय श्री का शायद वे वरण नहीं कर सकेंगे।

उनके दूरदर्शी मस्तिष्क ने एक युक्ति तुरन्त ही ढूंढ निकाली। रात के समय जब जलती के प्रकाश मे दोनों पक्षो के बीच लड़ाई हो रही थी, तो किसी ने चिल्लाकर कहा

'रणदुल्ला खां पकड़ा गया!'

'रणदुल्ला खां बन्दी बना लिया गया।'

लड़ते हुये सिपाहियों ने देखा कि सामने की पहाड़ी पर कुछ सिपाही रणदुल्ला खा को पकड़कर

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
श्रावण २६ शक १८९१ श्रावण शु. ४
[ दिनाङ्क १७ अगस्त सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

लड़ाई के मैदान की ओर ला रहे हैं। मुगल सैनिकों की हिम्मत पस्त हो गई। उनके दिलों में लड़ाई का जोश ठंडा पड़ गया। उनके सेनापति रणदुल्ला खाँ को बन्दी बना लिया गया। जिसने भी सुना वह हथियार डालकर खड़ा हो गया। लड़ाई कुछ समय के लिये बन्द हो गई।

यही खबर अब्दुल्ला खां के कान तक भी पहुंच गई और वह भी हतप्रभ रह गया। किन्तु वस्तु स्थिति यह थी कि रणदुल्ला खां पकड़ा नहीं गया था, बल्कि यह कुमार द्वारा उड़ाई गई एक अफवाह थी। वह आदमी जिसे पकड़ कर लड़ाई के मैदान की ओर लाया जा रहा था, वह रणदुल्ला खां नहीं, बल्कि उसका वेश धारण किये हुये कुमार का ही एक सैनिक था।

ऐसा करके कुमार कंथीव यद्यपि मैसूर के किले और सिंहासन को नहीं बचा सके थे, किन्तु अपने हजारों वीर सैनिकों के प्राण बचाने में सहज ही में सफल हो गये थे।

●

## अध्यात्म-सुधा

[ पृष्ठ २ का शेष ]

पर सम्प्रति चमक-दमक, दिखावट और बनावट का प्रचार ही अधिकाधिक किया जा रहा हे। ईश्वरवाद का विरोध भी हो ही रहा है। मानवता का अपमान भी ये सब स्वार्थी, लम्पट, नास्तिक, और दुष्ट लोगों की लीलायें हैं। यदि ससार के सब श्रेष्ठ मनुष्य एक होकर इन विषय-प्रसग मे दृढ़तापूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन न करेंगे, तब तो अखिल मानव-जाति का सम्पूर्ण सुसंस्कृत ज्ञान-समुच्चय नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।

समय नहीं सोने का प्यारो।
आँखें खोलो, पन्थ निहारो॥

संस्कृति एक विचार बीज है। जैसे उत्तम धरती में आरोपित किया जाकर और अनुकूल जल, वायु एवं खाद को प्राप्त करके एक छोटा-सा बीज बड़ा एव उपयोगी वृक्ष बन जाता है। उसी प्रकार विकसित होकर और मानव जाति के जीवन में घुल-मिलकर सस्कृति का विचार बीज भी सुख, समृद्धि और विश्व-बन्धुत्व का एक दृढ़ आधार एवं अक्षय-स्रोत बन जाता है।

सुसस्कृत जनता में त्याग तप और बलिदान की भावना भरपूर होती है। वह दान-शीला और अपरिग्रहवादी होती है। दान के सभी अवसरों पर उत्तम निर्दोष और उपयोगी वस्तुओं को ही दान करती है। अनुपयोगी, खोटी एव दोष-पूर्ण वस्तुओं का दान तो दान का ढोंग और दम्भ ही है। संस्कृति का प्राचीनतम होना आवश्यक है। मनुष्य की प्राचीनतम विचारधारा अधिक श्रेष्ठ और स्वाभाविक एवं ईश्वर-प्रदत्त थी। संस्कृति के स्वरूप में जहां-तहां जो गदलापन पाया जाता है, वह तो मनुष्य की राग-द्वेष प्रवृत्तियों का ही परिणाम है। सस्कृति का प्रसार-व्यवहार व्यापक रूप में अर्थात् बड़े क्षेत्रो और बड़े समुदायो मे होना आवश्यक है। छोटे-छोटे, समुदाय और क्षेत्र एव थोड़े-से व्यक्ति सर्वाधिक सुसंकृत होने पर भी ससार के सुख-समुदाय को बढ़ाने के लिये कोई विशेष कार्य नही कर पाते। दानशीलता और शुभ-कर्मों के सभी अनुष्ठान ईश्वर को साक्षी मान कर किये जायें। अपने आत्मा और परमात्मा की प्रसन्नता ही शुभ कर्मो का मुख्य उद्देश्य हो।

संस्कृति को विश्वधारा होना चाहिये। यह 'विश्वधारा' विशेषण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है, सम्पूर्ण विश्व का संरक्षण करने वाली। जो लूट-खसोट को प्रश्रय नहीं देती, झगड़े फिसाद के वातावरण नहीं बनाती, 'जियो और जीने दो' का प्रशिक्षण देती है, विश्व-बन्धुत्व के आदर्श को पुष्ट करती है। संकीर्णताओं और भेद प्रभेद की दीवारों को गिराती है, जो नानत्व में भी एकत्व की प्रतिष्ठा करती है। वह संस्कृति "विश्व-धारा" है। विश्व-धारा होना, यही संस्कृति की निर्दोषता की कसौटी है।

सभ्यता और संस्कृति की सीमायें कहां मिलती हैं? और कहां पृथक्-पृथक् होती हैं? इस विषय में कुछ कहना कठिन है। इतना कहा जा सकता है कि सस्कृति का महत्व अधिक और स्थान ऊचा है। संस्कृति एक सूक्ष्म चिरस्थायी और अधिक प्रभावपूर्ण विचार बीज है। सभ्यता बाह्य जीवन का चित्रण है, संस्कृति बाह्य और अन्तरिक जीवन का स्रोत।

तन, मन, धन और आजीविका और व्यवहार की शुद्धता, सत्य शीलता, मधुर-भाषण, व्यवहार कुशलता, श्रद्धा पूर्ण स्निग्धता पुरुषार्थ, कर्त्तव्य-परायणता, सर्वभूत हित, सहन-शीलता, धैर्य, शौर्य और विश्व-बन्धुत्व की प्रतिष्ठा, ये और ऐसे ही अन्य उत्तमोत्तम गुण, कर्म, एवं स्वभाव सस्कृति की रूप-रेखा को निश्चित करते हैं। इन की वृद्धि करना भी सस्कृति का ही प्रयोजन है। सांस्कृतिक कार्य-क्रमों, प्रशिक्षणो और सभी प्रकार की प्रचार-प्रगतियों का मुख्य प्रयोजन इस सस्कृति की प्रतिष्ठा करना ही है। संसार में एक ही विचार-धारा और एक-से ही आदर्शवाद की प्रतिष्ठा करने के लिये जो आयोजन होते हैं, उनके मूल में यह सांस्कृतिक-सूत्र ही काम करता है। यदि स्वार्थ भाव का कलंक सांस्कृतिक-कार्यक्रमों को दूषित न करें, तो उन कार्यक्रमों के परिणाम अवश्य ही शुभ होंगे।

संस्कृति के प्रेमियों, उपासकों और प्रचारकों को ईश्वरवाद का परित्याग न करना चाहिये। जब ईश्वरीय सत्ता का विशुद्ध विचार मनुष्य के साथ रहता है, तब वह निडरतापूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करता है। थोड़ी शक्ति से भी बड़े-बड़े काम करके दिखाता है, वह कठिनाइयों में भी प्रसन्नता से रह कर आगे बढ़ता है, और अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

## अजमेर में ऋषि मेला

स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर आगामी १० नवम्बर से १६ नवम्बर तक ऋषि उद्यान अजमेर मे ऋषि मेला आयोजित किया गया है, जिसमें आर्य जगत् के नेता उपदेशक व भजनीक भाग लेंगे। दिल्ली से आर्य नर-नारियों की एक स्पेशल ट्रेन भी आवेगी।

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा ने सूचित किया है कि इस मेले मे आने वाले व्यक्तियो के भोजन व निवास की व्यवस्था निःशुल्क की जावेगी।

—सभा मन्त्री राजस्थान



स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए एम०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

ऋग्वेद का भाषा-सूक्त— [ऋ.-१०।७१।१-११]

# वैदिक भाषा-विज्ञान

[ अनुवादक—श्री पं० जगतकुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं,
यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः ।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्,
प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ।१।

(बृहस्पते) हे सबके पाल-पोषक ! हे भाषा और विज्ञान के प्रेरक सर्वोपरि स्वामिन् (प्रथमम्) प्रलयकाल के पश्चात् नई मानव-सृष्टि आरम्भ होने पर ( नाम धेयम् दधानाः ) नामो=नाम, आख्यात, उपसर्ग और नियात भेद से चार प्रकार के शब्द परिवारो और उनके अर्थो का धारण करने वाली, सम्पूर्ण और सुविकसित (यत्) जो (वाचः) वाणी, भाषा, विद्या (अग्रम) सर्व प्रथम बार (प्रैरत) प्रकर्ष के साथ प्रगट हुई थी प्रेरित की गई थी, प्रचारित प्रकाशित हुई थी, (तत्) वह (एषाम्) इन ऋषियो की (गुहा) हृदय रूपी गुहा में (प्रेणा) प्रेरणापूर्वक अथवा प्रेम पूर्वक (निहितम्) निहित=नियम पूर्वक आहित=सुरक्षित की गई थी । (यत् आविः) जो प्रगट हुई है, जिसका अविर्भाव हुआ है । (यत्) क्योंकि (एषाम्) इन ऋषियों का (श्रेष्ठम्) श्रेष्ठत्व तथा (अरिप्रम्) निष्पापत्व (आसीत्) वर्तमान् था । [अतः उनका ही ज्ञान के प्रसार का मध्यम बनाया गया था ।

हे परमात्मन् ! महा प्रलय के पश्चात् वर्तमान् सृष्टि में मानव जाति का आविर्भाव होने पर ऋषियों ने जिस परिमार्जि भाषा और विद्या का प्रचार-व्यवहार आरम्भ किया था, वह अपने ही अपने प्रेम एवं अपनी प्रेरणा के द्वारा उन ऋषियों के हृदय में=अन्तर्मन में सुप्रकाशित की थी । क्योंकि वे ऋषि अपने पूर्व कल्प के शुभ आचार-विचार के आधार परश्रेष्ठतम और निष्पाप थे=ज्ञान प्राप्ति के सुयोग्य पात्र थे । वे आपके ज्ञान को ग्रहण करने और अखिल भू-मण्डल पर उसका प्रचार करने मे पूर्ण समर्थ थे ।

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो,
यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते,
भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ।२।

[इव] जैसे [तितउना] छलनी से सक्तुम सत्तू को=आटे को पुनन्तः शुद्ध करने वाले होते हैं, वैसे ही मनसाः बुद्धि रूपी छलनी से [यत्र] जहां [धीरा] धैर्यशील विद्वान् [वाचम् अक्रत] वाणी को शुद्धता पूर्वक प्रकाशित करते हैं [अत्र] यहां इस विषय में [सखायः] मित्रगण, साथी [सरव्वनि] उक्त शिक्षाओ को मित्रता के पारस्परिक प्रेम पूर्ण व्यवहारो को (आ-जानने) भली प्रकार जानते हैं । [एषाम्] इन की [वाचा] वाणी मे [भद्रा लक्ष्मी] शुभ सम्पत्ति, उत्तम अर्थ [अधिनिहिता] सुरक्षित रूप मे निहित है । उनकी वाणी शुभ और उत्तमोत्तम अर्थों को प्रकाशित करती है ।

जैसे सत्तू वा आटे को छलनी से छान कर शुद्ध करते हैं, वैसे ही बुद्धिमान् पुरुष भली प्रकार विचार-विमर्श करके उत्तमोत्तम अर्थो का प्रकाश करने वाली, देश, काल और पात्र भेद से उपयुक्त, शुद्ध, सारगर्भित और रसीली भाषा का प्रयोग करते हैं । जब पारस्परिक मित्रता के सद्भावपूर्ण सम्बन्धो में आबद्ध साथी-समुदाय उत्तम नियमों के अनुसार वार्तालाप एवं आचरण करते हैं, तब उनके शब्दों मे और उनकी चेष्टाओ में श्रुति मधुर स्वर-लहरी सत्यता और उत्कर्षप्रद शुभ प्रेरणा का निवास होता है ।

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्,
तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् ।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा,
तां सप्तरेभा अभि सं नवन्ते ।३।

[यज्ञेन] यज्ञ के द्वारा=दान संगतिकरण और ईश्वरोपासना आदि शुभ कर्मों के द्वारा [वाचः] वाणी की=भाषा की [पदवीयम्] पदवी को, पात्रता को पदावली को ऋषियों ने [आयन्] प्राप्त करते हुये [ऋषिषु] ऋषियों के अन्तरात्मा में [अनुप्रविष्टाम्] अन्तर्निहित=सुरक्षित [ताम्] उस वाणी=भाषा को [अविन्दन्] प्राप्त किया । [ताम् आभृत्य] उसको भली प्रकार सीख कर [पुरुत्रा] मानव मात्र के बड़े व्यापक सतरण के लिये=कल्याण के लिये उन्होंने उसे [व्यदधुः] धारण किया, प्रचारित किया । [ताम्] उसको ही [सप्त] गतिशील, विविध प्रकार के, सात [रेभा] नाद, स्वर, छन्द, सुर-ताल [अभि सनवन्ते] भली प्रकार दर्शाते हैं ।

जिन ऋषियो के अन्तरात्मा में सर्व प्रथम बार ईश्वर ने अपने ज्ञान का=वेदों का प्रकाश किया था, वे अपने पूर्व कल्प कृत शुभ कर्मों के प्रभाव से परम पवित्र सर्वथा निष्पाप, मेधा आदि सुविकसित बौद्धिक शक्तियों से सम्पन्न और ज्ञान को धारण करके मानव मात्र के कल्याण के लिये उसका प्रचार करने में पूर्ण समर्थ थे । ऋषियों द्वारा ईश्वर से प्राप्त यह देववाणी ही परम्परा से प्रचारित अभिभाषित और व्यवहृत होती हुई अब सम्पूर्ण भू-मण्डल मे फैल चुकी है । इस समय जो विभिन्न भाषा-परिवार कल्पित किये जा रहे हैं, वह आदिम वेद-वाणी ही उन सब की माता है । आरम्भ में जो भाषा प्रकट हुई थी, वह पूर्ण, समृद्ध और सुविकसित थी । आधुनिक मनीषियों के भाषा-विज्ञान ध्वनि विज्ञान और भाषा के क्रमिक विकास विषयक सभी सिद्धांत नितान्त थोथे, भ्रान्त और दूषित हैं । उस सनातन वाणी मे पूर्ण समरसता है । उसमें प्रवाह है, मधुरता है, गायत्री आदि छन्दों की योजना है । उदात्त, स्वरित और अनुदात्त स्वर है, ह्रस्व, दीर्घ और लुप्त मात्रायें हैं, षडज आदि सात सुर, ताल तथा लय आदि के सम्पूर्ण सूक्ष्म सिद्धान्त, उपमा आदि काव्य शास्त्र के सभी अलंकार, शब्द ब्रह्म की उपासना में सहायक व्याकरण, गणित और लोक-व्यवहारों के ससाधक सभी विधान उस सनातन वाणी मे सुरक्षित हैं । उसके पठन-पाठन से ही मानवता का कल्याण होता है ।

उतत्वः पश्यन् न ददर्श वाचम्—
उत त्वः शृण्वन् न शृणोति-एनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्व विसस्रे,
जायेव पत्ये उशती सुवासा ।४।

[त्वः] कोई तो [पश्यन् उत] देखते हुये भी [वाचम्] वाणी को [न ददर्श] नहीं देखता । और [त्वः] कोई-कोई [शृण्वन् उत] सुनते हुए भी [एनाम्] इस वाणी को न [शृणोति] नहीं सुनता [उत] परन्तु [अस्मै तु] किसी-किसी के लिये तो यह सनातन वाणी [तन्वम्] अपना शरीर, स्वरूप, रहस्य [विसस्रे] खोल देती है, [इव] जैसे कि [सुवासा] उत्तम वस्त्रो वाली [जाया] नवयुवती [पत्ये] अपने पति के लिये [प्रेम पूर्वक आत्म-समर्पण कर देती है ।]

कुछ लोग तो देख-पढ़ कर भी मूर्ख ही रहते हैं । कुछ लोग सुनकर भी सुनते-समझते नहीं । हां कुछ विचारवान् पुरुष ऐसे भी होते हैं, जो वाणी के सम्पूर्ण अर्थों, रहस्यों, तत्वों और सौन्दर्य को

(शेष पृष्ठ ११ पर)

लखनऊ-रविवार २४ अगस्त ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत १९७२९४९०७०

## श्रावणी उपाकर्म श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वेद-प्रचार सप्ताह

भारतीय सास्कृतिक परम्परानुसार श्रावणी उपाकर्म एव रक्षा बन्धन का कार्यक्रम हमारे धार्मिक जीवन का अग है। आर्यसमाज की ओर से इस पर्व को बडे उत्साह से मनाने के लिये, इस दिन से वेद-प्रचार सप्ताह आरम्भ किया जाता है और सप्ताह के अन्तिम दिन भाद्र कृष्ण जन्माष्टमी को योगिराज श्रीकृष्ण का जन्म दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकार एक सप्ताह के अन्दर श्रावणी उपाकर्म द्वारा हम वैदिक साहित्य से सम्पर्क स्थापित करते हैं, वेदोपनिषद की कथाए की जाती हैं, साथ ही यज्ञोपवीत सस्कार व परिवर्त्तन कार्यक्रमों द्वारा वैदिक जीवन मर्यादाओ का सरक्षण किया जाता है, साथ ही लोकाचार पर्व के रूप मे बहनो द्वारा भाइयो के रक्षा-सूत्र बाधकर उनक स्नेह को अक्षुण्ण बनाये रखने का भावात्मक प्रयत्न किया जाता है, और श्रीकृष्ण जी के जन्मोत्सव द्वारा हम भारतीय इतिहास की काली घटाओ मे उज्ज्वल चन्द्र प्रभा के दर्शन प्राप्त करते हैं।

इन पर्वो को हम दीर्घ काल से मनाते आ रहे है, और इनसे हमे सदा प्रेरणा मिली है। आज के परिपेक्ष्य मे इन पर्वो का और भी अधिक महत्त्व है।

आज वैदिक धर्म, मानवीय मर्यादा, भारत गौरव सबके ऊपर अन्धकार की काली घटाय व्याप्त है। एक आदर्श भारतीय को अपना आदर्श मार्ग स्वच्छ नहीं दिखाई देता। ऐसे समय प्राचीन वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कर नर नारी समाज की रक्षा मे योग देकर और इतिहास चिन्तन द्वारा श्रीकृष्ण जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हम नया मार्ग प्राप्त कर सकते हैं।

आर्यसमाजो को आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से परिपत्र भेजकर प्रेरणा की गई है कि वे वेद प्रचार सप्ताह को सफलता पूर्वक मनावें। समाजो और परिवारो मे यज्ञ कार्यक्रम रखें और कथायें करावे। साथ ही वेद प्रचारार्थ सभा की वेद प्रचार निधि मे प्रत्येक आर्य बन्धु से एक रुपया एकत्र कर सभा कोष मे भेजने की व्यवस्था की जाय।

हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्यसमाजें और आर्य जनता श्रावणी उपाकर्म रक्षा बन्धन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तीनो पर्वों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर समाज मे नवजीवन सचार का प्रयत्न करेगी।

आर्यसमाज का लक्ष्य वेदप्रचार है और उसका सारा कार्यक्रम इसी धुरी पर केन्द्रित है। इस दृष्टि से हमे इस सप्ताह को सबसे अधिक उत्साह पूर्वक मनाना चाहिये।

आशा है आर्य विद्वान् उपदेशक प्रचारक सभी आर्यसमाज के वेदप्रचार लक्ष्य की पूर्त्ति मे अदम्य उत्साह के साथ आगे बढेंगे और आर्यसमाज के कार्य और लक्ष्य को पूर्ण करेगे। हमे अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास है और हमे आगे कदम बढ़ाते ही चलना है। हमारा लक्ष्य है—

चरैवेति चरैवेति चरैवेति।

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह योजना का आर्य जगत् मे स्वागत

काशी मे महर्षि दयानन्द ने जो अविस्मरणीय शास्त्रार्थ किया था उसके ऐतिहासिक महत्त्व को स्मरण कराने एव वेद प्रचार की नवीन प्रेरणा प्राप्त करने की भावना से आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की ओर से शताब्दी समारोह की योजना प्रकाशित हुई है, उसका आर्यजगत् मे हार्दिक स्वागत हुआ है। अनेक व्यक्तियो सस्थाओं की ओर से समारोह मे सोत्साह भाग लेने एव कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी के सम्बन्ध मे निरन्तर पत्र आ रहे है। शास्त्रार्थ समिति के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवा जी ने अपनी व्यापक प्रचार यात्रा आरम्भ कर दी है।

पिछले दिनो उन्हें मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निमन्त्रण मिला और सभा की ओर से भिण्ड आर्यसमाज एव लश्कर व ग्वालियर आर्यसमाजो मे शास्त्रार्थ समारोह-योजना सम्बन्धी भाषण हुये। आर्य जनता ने आर्थिक सहायता के आश्वासन दिये और बहुत बडी सख्या मे काशी पहुचने के वचन दिये। श्री बाबूलाल जी गुप्त प्रधान सभा श्री विश्वमित्र कमठान जी मन्त्री सभा, श्री हरवन्शलाल जी कोषाध्यक्ष सभा, श्री भारत भूषण त्यागी जी, श्री मोतीलालजी गुना आदि आर्य महानुभाव प्रचार यात्रा मे उनके साथ रहे।

मध्य भारत मे शास्त्रार्थयात्रा का कार्यक्रम भी बड़े उत्साह के साथ तैयार किया गया है—

१—ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, शिवपुरी, गुना, ब्यावर, देवास, उज्जैन, इन्दौर, धार, रतलाम इस प्रकार यात्रा का कार्यक्रम बना है और उसे सफल बनाने की तैयारिया आरम्भ हो गयी है।

अन्य प्रान्तो से भी उत्साह पूर्ण पत्र आ रहे हैं। आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद (आन्ध्र) के प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी ने समारोह की सफलता के लिये अपने प्रदेश की आर्यसमाजो को परिपत्र भेज दिये है और वे स्वय काशी पहुचकर समारोह को सफल बनाने मे योगदान देगे। उनकी सेवाओ से समारोह समिति की हिम्मत बहुत बढ गई है।

हम मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा व आन्ध्र प्रदेश के उत्साह की हार्दिक प्रशसा करते हैं और मध्य दक्षिण आर्यप्रतिनिधि सभा के अनन्य आभारी रहेगे कि उनके प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी समारोह के लिये पूर्ण सहयोग और समय देंगे।

हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्यजगत की सभी आर्य प्रतिनिधि सभायें और सार्वदेशिक सभा सभी सम्मिलित रूप से इस समारोह को सफल बनाने मे अपना अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग देंगी। महर्षि के जीवन कार्यों से नवीन प्रेरणा प्राप्त कर आर्यसमाज को नव शक्ति प्रदान करने का अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ है।

आशा है हम सभी ऋषि-भक्त आर्यसमाज के शुभ चिन्तक इस कार्यक्रम को सफल बनाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

**महा० आनन्द स्वामी जी**
जो १५ अगस्त को योरोप और अमेरिका यात्रा पर वेद प्रचारार्थ रवाना हो गये।

## मूर्ति पूजा का स्थानीय रूप

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर 'आर्यमित्र' के मूर्त्ति पूजा सम्बन्धी विशेषाक की विषय-सूची पढकर हमारे पाठको ने लेखादि के सम्बन्ध मे बडा उत्साह दिखाया है। हम उनके उत्साह का स्वागत करते है।

मूर्ति पूजा से सम्बद्ध अनेक विषयो के साथ साथ अब हम मूर्त्ति पूजा के स्थानीय क्षेत्रीय स्वरूपो पर विचार विमर्श करेगे। इसका अभिप्राय यह है कि लेखकगण अपने अपने क्षेत्र मे मूर्तियो के विकास और उनकी पूजा आदि का विशेष वर्णन भी भेज सकेंगे। इसी लोक गीत लोक-नृत्य की भाति लोक-देवता के रूप मे मानकर अपने अपने लोक देवता ो की चर्चा की जा सकेगी। इस प्रकार यह एक विस्तृत कार्य भी इसी अक मे सम्मिलित हो सकेगा।

# काशी शास्त्रार्थ-शताब्दी में भाग लेने हेतु आर्य विद्वानों का स्वीकृति-पत्र

सेवा में, सयोजक महोदय !

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह समिति

मान्यवर महोदय !

सादर नमस्ते ।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के वेद प्रतिपादित मन्तव्यो को विश्वव्यापी बनाने के लिये काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह का जो आयोजन किया गया है, उसमे भाग लेना मैं अपना कर्तव्य समझता हू ।

१—मै "महायज्ञ" मे भाग लूगा मुझे ··· ·· ·· वेद सस्वर कण्ठस्थ है और मै ·· श्रौतयाग को कराने मे समर्थ हू ।

हस्ताक्षर ···

२—मै "साख्यपरिषत्" मे भाग लूगा । प्रतिपक्षी विद्वानो के सम्मुख बैठकर मैं यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि साख्य-दर्शन आस्तिक दर्शन है ।

हस्ताक्षर ··

३—मैं 'वेदान्त परिषत्" मे भाग लूंगा । मै इसको प्रतिपक्षी विद्वानो के सम्मुख बैठ कर यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि वेदान्त दर्शन त्रैत प्रतिपादक है, अद्वैत प्रतिपादक नहीं ।

हस्ताक्षर ··· ···

४—मै "श्रौतपरिषत्" मे भाग लूंगा । मै प्रतिपक्षी विद्वानो के सम्मुख बैठकर यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि यज्ञ यागादिको मे पशु-बलि वेद सम्मत नहीं है ।

हस्ताक्षर ··· ·

५—मैं "निरुक्तपरिषत्" में भाग लूगा । मैं प्रतिपक्षी विद्वानो के सम्मुख बैठकर यह सिद्ध करने में समर्थ हू कि निरुक्त के भाष्यकार स्कन्द दुर्ग आदि निरुक्त को नहीं समझे और स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने निरुक्त को ठीक समझा ।

हस्ताक्षर ·· ···

६—मैं "व्याकरण परिषत्" मे भाग लूगा । मै प्रतिपक्षी विद्वानों के सम्मुख बैठकर यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि नव्य वैयाकरणों ने व्याकरण शास्त्र को ठीक नहीं समझा महर्षि ने ठीक समझा है ।

हस्ताक्षर ·

७—मैं "पुराणपरिषत्" मे भाग लूगा । मैं अपने पौराणिक भाइयो के सम्मुख बैठकर आदर और प्रेम पूर्वक यह समझाने में समर्थ हू कि पुराणो मे पर्याप्त भाग अश्लील आदि दोषो से युक्त है, ऐसा मैने पुराणो को स्वय अध्ययन कर के जाना है ।

हस्ताक्षर ···

८—मैं "महापरिषत् की वेद ईश्वरीय ज्ञान है प्रतिपादक बैठक" में भाग लूगा । मै इस विषय मे प्रति पक्षियो के सब तर्कों और प्रमाणाभासो को खण्डन करने में समर्थ हूं ।

हस्ताक्षर ·

९—मै "महापरिषत् की वेदो मे अनित्य इतिहास नहीं है, प्रतिपादक बैठक" मे भाग लूगा । मै इस विषय मे प्रतिपक्षियों के सब प्रमाणा भासो को खण्डन करने मे समर्थ हू ।

हस्ताक्षर ·

१०—मै "महा परिषद् की वेदार्थ प्रणाली बैठक' में भाग लूंगा । मैं यह सिद्ध करने में सम ··· क महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की वेदार्थ प्रणाली परम्परागत ऋषि मुनि सम्मत है । सायणादि की तथा पाश्चात्य विद्वनों की वेदार्थ प्रणाली काल्पनिक और असत्य है ।

हस्ताक्षर ··· ·

११—मैं "आस्तिक महा सम्मेलन" में भाग लूगा । मै नास्तिको के सब युक्ति प्रमाणों के खण्डन करने मे समर्थ हूं ।

हस्ताक्षर ·· ··

१२—मैं "राजनीतिक सिद्धान्त आदर्श महा सम्मेलन" में भाग लूगा । मैं अपनी सस्था ··· · के प्रतिनिधि के रूप मे यह बता सकता हू कि यदि हमारी संस्था ··· · ··· को एक मात्र भारत का राज्य हस्तान्तरित कर दिया जावे,तब हम क्या करेंगे जो भारत की अन्य राजनीतिक सस्था नहीं कर सकती ।

हस्ताक्षर

प्रतिनिधि · · संस्था

१३—मै "सर्वराष्ट्र मानव सास्कृतिक महा सम्मेलन" मे भाग लूगा । मैं यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि सब पृथिवी लोक के मनुष्य एक परिवार के व्यक्ति हैं । उनमे आदि वासी आदि कृत्रिम विभाग असत्य हैं

हस्ताक्षर · ···

१४—मैं "संस्कृत राष्ट्र भाषा महा सम्मेलन" मे भाग लूगा । मै यह सिद्ध करने मे समर्थ हू कि भारत की समस्त भाषायें सस्कृत की पुत्री हैं और हिन्दी की अपेक्षा सस्कृत के अधिक पास हैं । यदि संस्कृत राष्ट्र भाषा हो तो सब भाषा-भाषियों को समान सुविधा रहे ।

हस्ताक्षर · ··

··· · भाषा प्रतिनिधि

१५—मैं 'सर्व धर्म महासम्मेलन' मे भाग लूगा । मैं भारत की गम्भीर समस्या हरिजन समस्या और धर्म परिवर्तन समस्या को हल करने के लिये अपनी सस्था ··· ··· के प्रतिनिधि के रूप में उत्तरदायित्व से विचार प्रकट करूंगा ।

हस्ताक्षर ·

··· ·· का प्रतिनिधि

१६—मैं "शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा" मे भाग लूगा । मैं स्वय शास्त्रार्थ करने मे समर्थ हू । मै शास्त्रार्थ में व्याकरण या दर्शन या वैदिक साहित्य अथवा पौराणिक साहित्य की सहायता करने मे पूर्ण समर्थ हू ।

हस्ताक्षर · ·

१७—मै "अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता महा सम्मेलन" मे भाग लूगी । मै अपने ·· धर्म अथवा · ·· देश की महिलाओ की आचार सहिता पर निबन्ध लिखकर · ·· ता० तक भेज दूंगी । और इस महा सम्मेलन मे उपस्थित भी होऊंगी ।

हस्ताक्षर श्रीमती ··· ··

पता

नोट—शास्त्रार्थ यात्रा १६ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक होगी । 'महायज्ञ और परिषद' तथा 'महा परिषद' और महा सम्मेलनो की बैठकें १६ से २१ नवबर तक होंगी ।

# सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा के दो निर्वाचन क्यों?

[ श्री धर्मेन्द्रसिंह जी आर्य, सदस्य सार्वदेशिक सभा, दिल्ली ]

( गताक से आगे )

एक विशेष बात यह है कि विषय को न्याय सभा मे भेजने के समझौते पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन उच्च अधिकारियो ने हस्ताक्षर न किये थे, इतना ही नहीं वे समझौते के बातचीत को बीचमे ही छोड़कर चले गये । इसमे क्या रहस्य था, यह वह ही बता सकते हैं । बाद मे भी सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग सभा मे इस समझौते की सम्पुष्टि नहीं की गई, अपितु समझौता कराने वालों की लिखित निन्दा की गई ।

न्याय सभा के निर्णय को एक पक्ष ने न मानकर राजकीय न्यायालय से उसके अनुसार कार्यवाही न किये जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली । उसकी मुख्य आपत्ति यह थी कि सारे मामले की सुनवाई न्याय सभा के प्रधान जी ने स्वय एकाकी ही की और स्वय ही निर्णय लिख कर अन्य सदस्यों के हस्ताक्षर ले लिये थे । यह भी लिखा गया था कि कहीं-कहीं पक्ष विशेष से सम्बन्धित सज्जनों को भेजकर हस्ताक्षर प्राप्त किये गये थे ।

४—दूसरी ओर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने न्याय सभा के निर्णय के आधार पर पजाब मे दूसरी आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित करा दी । पजाब की लगभग ७०० आर्य समाजो मे से कितनी इनसे सम्बधित हुई । इनके अधिवेशन मे कहां-कहा के कितने प्रतिनिधि सम्मिलित हुये । किन-किन आर्य समाजो से दशाश वेद प्रचार आदि का कितना धन आया । आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो का निर्वाचन किस प्रकार हुआ आदि के बारे मे नाना प्रकार की बातें कही और सुनी जाती है । यह बात प्रमाणित है कि इस सभा के पास सार्वदेशिक सभा को पचमाश देने के लिये धन न था—इसलिये सार्वदेशिक सभा ने स्वय १२००० रु० इस सभा को देकर अपना पचमांस ले लिया और अन्य कार्यो के लिये भी आर्थिक सहायता दी ।

५—पजाब मे आर्यसमाजो के मतभेद पर आर्यसमाज में बडा क्षोभ था और सभी की इच्छा थी कि वह कलह शान्त हो जावे । क्योकि उसका प्रभाव आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा पर पड रहा था और आर्यसमाज की इस प्रकार की हानि हो रही थी । इसलिये नवम्बर १९६८ मे हैदराबाद मे हुये दशम आर्य महा सम्मेलन मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया कि सम्मेलन के सभापति महात्मा आनन्दस्वामी जी सभी प्रान्तीय विवादों के साथ-साथ पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के कलह को शान्त करा दें । सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने इसकी पुष्टि कर दी । श्रीस्वामी जी ने पजाब की दोनो सभाओ को स्थगित कर विभिन्न कार्यो को चालू रखने के लिये समिति बना दी । दोनो सभाओ को आदेश दिया कि वे न्यायालयो से मुकदमे वापस ले लें । एक पक्ष ने आदेशानुसार कार्यवाही कर दी, दूसरे ने नहीं की । सार्वदेशिक सभा ने पिछले का साथ दिया । श्री स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा को सूचना दी कि पजाब की दोनो सभाओ मे से किसी के भी प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा की १९६९ की वार्षिक सभा मे न लिये जाये, परन्तु सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने इसे न माना और नवीन सभा के प्रतिनिधि स्वीकार कर लिये । महा० आनन्द स्वामी जी के बारे मे सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो के रुख से प्रोत्साहित होकर पजाब के एक तथाकथित प्रतिनिधि ने यहा तक कहा कि हमने उन्हें पञ्च बनाया ही नहीं ।

सार्वदेशिक सभा के गत सात-आठ वर्ष के अधिकारियो का, जो पजाब के एक पक्ष के सदस्य हैं, यही लक्ष्य रहा है कि सार्वदेशिक सभा मे उन्हीं के पक्ष का बहुमत बना रहे । अन्य किसी का, विशेष कर पञ्जाब के दूसरे पक्ष का बहुमत न हो पावे । पञ्जाब मे नवीन सभा बनाना और श्री स्वामी जी के मना करने पर भी उसके प्रतिनिधियो का स्वीकार करना इस मनोवृत्ति के प्रमाण हैं । इसकी पुष्टि मे अन्य प्रमाण भी उपस्थित किये जा सकते हैं—

६—पञ्जाब की प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों को स्वीकार करने मे सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने नाना प्रकार की आपत्तिया उठाई । कहा गया कि उससे सम्बन्धित आर्यसमाजों का सगठन ठीक नहीं, आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो का निर्वाचन ठीक प्रकार से नहीं होता । सार्वदेशिक सभा तत्कालीन अधिकारी ( श्री शिवचन्द जी ) ने कहा अब हम प्रान्त मे एक ही प्रतिनिधि सभा रहने देंगे । पञ्जाब मे भी एक को ही मान्यता देंगे । उप सभा से गत पाँच-छः वर्ष का पञ्चमांस जो ढाई हजार से अधिक होता था, मागा गया । उसके कार्यकर्त्ता उपर्युक्त राशि लेकर सभा मे गये । परन्तु उनके कागजो मे तुच्छ तथा भ्रामक कमियां निकाली गई । इसी प्रकार एक सज्जन (श्री वैद्यनाथ) ने कहा कि आपकी आर्य समाजो के सभासदो के पिताओ के नाम प्रपत्रो मे नहीं हैं । प्रादेशिक वालो ने कहा कि अब इतनी शीघ्रता मे सबके नाम तो नहीं मगाये जा सकते । फिर आप अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओ से तो इस प्रकार की सूचना नहीं मागते । सार्वदेशिक सभा की ओर से कहा गया कि यह हमारी इच्छा है जिससे चाहे मांगें, जिससे चाहे न मांगे । तब वे निराश होकर वापिस चले गये ।

दुर्भाग्य से आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग मे ही पञ्जाब में दो दल हो गये थे—एक की आर्य प्रतिनिधि सभा थी और दूसरे की प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा । पहिले सार्वदेशिक सभा से केवल आर्य प्रतिनिधि सभा ही सम्बन्धित थी । पञ्जाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि अन्य प्रान्तो के प्रतिनिधियो के चाहने पर भी प्रादेशिक सभा को सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित न होने देते थे । परन्तु बराबर प्रयत्न करने के बाद आर्यसमाज की शक्ति को एकसूत्र मे बाँधने की दृष्टि से लगभग १० वर्ष पूर्व प्रादेशिक सभा को सार्वदेशिक से सम्बद्ध कर लिया गया । अब उसे फिर से अलग करने का यत्न किया जा रहा है ।

७—सन् १९६२ में गुजरात की आर्य प्रतिनिधि सभा को यह कह कर पृथक् कर दिया गया कि उससे सम्बद्ध आर्य समाजें नियमित नहीं और राजनैतिक दृष्टि से गुजरात के बम्बई प्रदेश से पृथक् हो जाने पर भी उसे बम्बई की आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत ही मान लिया गया ।

सार्वदेशिक सभा, अपनी सुविधा के लिये, कहीं तो नवीन प्रान्त स्वीकार करती है, कहीं प्राचीन । नागपुर को बम्बई मे सम्मिलित हो जाने पर भी उसे मध्य प्रदेश मे मान रखा है । मध्य भारत के मध्यप्रदेश मे विलीन हो जाने पर भी उसे पृथक मान रखा है । अब जम्बू कश्मीर को पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा से अलग कर वहाँ नवीन आर्य प्रतिनिधि सभा का सगठन कराया जा रहा है, परन्तु आसाम को बगाल के साथ ही जोडा जा रहा है । इस सब के पीछे वही मनोवृत्ति काम कर रही है ।

८—अपने पक्ष का बहुमत स्थायी रखने के लिये, नवीन आर्य प्रतिनिधि सभाओ की स्थापना कराई जा रही है । इस कार्य को पूरा करने के लिये विशेष व्यक्ति

भेजे जाते हैं, और उनके वक्तव्यो के आधार पर कार्यवही कर दी जाती है । उदाहरण के लिये गोवा की आर्य प्रनिनिधि सभा को सावदेशिक सभा मे प्रविष्ट कर लिया गया है, यद्यपि अभी तक उस सभा के नियम उपनियम आदि नहीं बने। रजिस्ट्रेशन की बात तो अलग है। वहाँ की सभा के मन्त्री जी ने अपने नियम बनाने के लिये गत मास हो आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नियमादि मागे हैं। यही बात उडीसा की सभा के बारे मे लागू होती है।

९—सार्वदेशिक सभा के उपर्युक्त अधिकारियो की कोप दृष्टि दो तीन वर्ष से उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा पर पड़ रही है। उत्तरप्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने प्रधान को अधिकार दे रखा है कि यदि सार्वदेशिक सभा के लिये भेजे गये प्रतिनिधियों मे कोई स्थान रिक्त हो जावे तो वे उसकी पूर्ति कर दे। सार्वदेशिक सभा ने १९६८ मे इसके अनुसार कार्यवाही न होने दी और उत्तर प्रदेश के १५ प्रतिनिधि के स्थान पर १२ प्रतिनिधि ही भाग ले सके। १९६८ मे इस बात का यत्न किया गया कि उत्तर प्रदेश मे कुछ व्यक्तियो को पराजित कर उनके स्थान पर अन्य व्यक्ति लाये जायें। इस आन्दोलन के लिये सार्वदेशिक सभा के एक अधिकारी ने प्रान्त का विशेष दौरा किया। और उनके व्यय के सैकड़ो रुपये "जन-गणना आन्दोलन" की मद में डाले गये। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के १९६८ के वार्षिक अधिवेशन के समय सार्वदेशिक सभा के एक पक्ष के कई सज्जन उस नगर मे उपस्थित रहे। १९६९ मे फिर वैसा किया गया, पर १९६८ के बराबर नहीं।

तीन वर्ष की अवधि समाप्त होने पर १९६८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने सार्वदेशिक सभा के लिये १५ नवीन प्रतिनिधि निर्वाचित कर भेजे थे, परन्तु शिरोमणि सभा ने अभी तक उन्हे स्वीकार नहीं किया। १९६९ के लिये पुराने प्रतिनिधियो को ही आमन्त्रित किया गया।

सार्वदेशिक सभा के पुराने अधिकारियो द्वारा उत्तर प्रदेश के दो व्यक्तियो को वहाँ का प्रतिनिधि मान कर सार्वदेशिक सभा का अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य बनाया गया है, यद्यपि वे दोनो व्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के विधिवत् सदस्य भी नहीं है।

१०—गत वर्ष देहली की एक आर्यसमाज ने एक सज्जन को अपनी सदस्यता से पृथक् कर दिया, और इसी आधार पर सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन अधिकारियो ने उनको सभा की आजीवन सदस्यता से पृथक कर दिया और उन्हे १९६९ के अधिवेशन मे निमन्त्रित न किया गया। परन्तु बम्बई प्रान्त की इसी प्रकार की एक घटना पर इन्हीं अधिकारियो ने कोई कार्यवही नहीं की। बम्बई की एक आर्य समाज ने एक सज्जन को अपनी सदस्यता से पृथक कर दिया और सार्वदेशिक सभा को लिख दिया कि अमुक सज्जन को इस समाज की सदस्यता से पृथक कर दिया गया है, जिसके फलस्वरूप वे सार्वदेशिक सभा के सदस्य नहीं रह सकते। पर सार्वदेशिक सभा के उपर्युक्त अधिकारियो ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

११—१९६८ मे बगाल, आसाम की आर्य प्रतिनिधि सभा को निलम्बित करने की परिस्थिति पैदा कर दी गई थी, और १९६८ की वार्षिक सभा के लिये उसके प्रतिनिधियो को निमन्त्रित किया गया था। परन्तु बाद मे अधिवेशन से दो दिन पूर्व, मध्यस्थो द्वारा परिस्थिति बदल देने का आश्वासन मिलने पर, उन्हे तारो द्वारा सूचना दी गई। सभा बगाल के एक गुरुकुल को कुछ आर्थिक सहायता देती है। उस सहायता को बन्द करने की धमकी दी गई, पर बाद म, मध्यस्थो के आश्वासन पर वह दे दी गई।

१२—सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन का विज्ञापन एक मास पूर्व निकलना चाहिये। इस वर्ष वह समय पर निकाल दिया, पर उसमे यह नहीं लिखा गया कि सभा कहाँ होगी। इसके सम्बन्ध मे यह टिप्पणी दे दी गई कि स्थान की सूचना बाद मे दी जावेगी, और अधिवेशन से एक सप्ताह पूर्व सूचना दी गई कि अधिवेशन देहली मे होगा। हमारी तुच्छ मति मे स्थान के निर्देश के बिना अधिवेशन का विज्ञापन अपूर्ण तथा अनियमित है।

१३—सार्वदेशिक सभा के विशेष वैतनिक कर्मचारी को, जो न तो सार्वदेशिक सभा के सदस्य हैं, और न उसकी अन्तरग के। अन्तरग सभा तथा साधारण सभा की प्रत्येक बैठक मे बुलाकर बैठाया जाता है और वे सभा की नीति सम्बन्धी प्रायः प्रत्येक बात पर बोलते हैं। सदस्यो के आपत्ति उठाने पर इस प्रयोग को बन्द न किया गया। इन्हीं सज्जन का कार्यकाल अक्टूबर १९६८ में समाप्त हो गया था। उनके कई मास बाद होने वाले अन्तरग सभा के अधिवेशन के विज्ञापन मे यह विषय न रखा गया, पर जब सभा समाप्त होने वाली थी, मन्त्री ने प्रस्ताव रखा, कि उनका कार्यकाल तीन वर्ष के लिये बढा दिया जावे। इस पर उठी आपत्ति पर कोई ध्यान न दिया गया।

१४—सार्वदेशिक सभा का एक भवन किराये पर दिया जाना था जब एक आर्यसमाजी सज्जन ने अपने कार्यालय के लिये उसे लेना चाहा तो सभा के तत्कालीन अधिकारी ने ९०००० रु० पगडी के मागे। उन्होंने यह कहकर आपत्ति की कि आर्यसमाज मे भी ऐसा होता है। तब उन्हे न देकर एक आर्यसमाजी इतर सज्जन को वह भाग दे दिया गया।

इस प्रकार पारस्परिक मतभेद की अनेक बातें है। यहाँ प्रमुख बातो को अकित किया गया है। जब ३१ मई को सभा का अधिवेशन प्रारम्भ होने लगा, सब कुछ सदस्यो ने सभा के गठन के अवैधानिक एवं अनियमित होने का आक्षेप लगाया। विशेष बल इस बात पर दिया किया कि महात्मा आनन्दस्वामी जी के मना कर देने पर पजाब की किसी भी सभा के प्रतिनिधि न लेने चाहिये थे। घण्टे डेढ़ घण्टे इसकी चर्चा रही। अन्त मे तत्कालीन प्रधान जी ने अपना निर्णय दिया कि सभा का गठन ठीक है। इस पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री पं० शिवकुमार शास्त्री ने इस आशय का एक वक्तव्य पढा कि सभा ने महात्मा आनन्दस्वामी जी के आदेश को नहीं माना है, कई वक्ताओ ने स्वामी जी के लिये अनुचित शब्द भी कहे हैं और सभा के गठन में अन्य कई अवैधानिकताए बर्ती गई हैं। इसलिये हम लोग इसमें भाग नहीं ले सकते। इसके बाद वे तथा अन्य अनेक प्रतिनिधि सभा स्थल से अलग होगये और उन्होंने अलग अपनी सभा की। उस दिन सभा में उपस्थिति ७३ थी, जिसमें विवादपूर्ण पजाब के १५ प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। उन्हे हटा देने पर नियमित प्रतिनिधि ५८ रह जाते हैं। सभा से बहिर्गमन करने वालों की बैठक में ३१ प्रतिनिधि थे और पहली सभा मे बैठ रहने वाले नियमित प्रतिनिधियों का बहुमत बहिर्गमन करने वालो के साथ था।

एक आपत्ति यह की जाती है कि बहुसख्यक क्यो उठे। इसका उत्तर ससद मे उपाध्यक्ष श्री खाडिलक द्वारा एक प्रस्ताव की अनुमति दिये जाने पर बहुमत पक्ष के ( काग्रेस दल के ) सदस्यो के बहिर्गमन उदाहरण से मिल जाता है।

आर्य जनता वस्तुस्थिति से परिचित हो और विचार करे इसी उद्देश्य से उपर्युक्त विवरण प्रस्तुत किया है।

## पारस्परिक प्रेम का प्रतीक-
# रक्षा-बन्धन

श्री रामवीर शर्मा आचार्य, एम ए, साहित्यरत्न
घनश्यामपुरी, अलीगढ

पर्व या उत्सव किसी व्यक्ति या राष्ट्र में नव-जीवन का संचार करते हैं। उनमें नवप्रेरणा भरकर भावी जीवन को सुखमय बनाते हैं। इन्हीं से व्यक्ति मे अनुपम बल और चेतना प्राप्त होती है, जो जीवन को प्रगति एवं विकास के पथ पर ले जाती है। प्रत्येक जाति एवं समाज मे ऐसे उत्सव समय समय मनाये जाते हैं। जहा इन उत्सवो की बहुलता होती है, वही जाति या समाज समृद्ध और उन्नति शील कहा जाता है। आर्य जाति भी इन प्रेरणा व उत्साह प्रदायक उत्सवो से शून्य नहीं है। शायद ही कोई ऐसा मास, ऋतु एव वर्ष होगा, जिसमे किसी उत्सव का आयोजन न हुआ हो।

रक्षा बन्धन का पर्व भी एक ऐसा ही पर्व है, जो आर्य जाति में प्रेम, उल्लास एव उत्साह प्रदान करता है। यह पर्व श्रावण की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस कारण इसे श्रावणी के नाम से भी पुकारते है। वास्तव मे इसका पुरातन नाम श्रावणी ही है। रक्षा बन्धन नाम तो बाद मे प्रचलित हुआ है। इस पर्व के सम्बन्ध मे अनेक लोककथाये प्रसिद्ध हैं। धर्म ग्रन्थों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल मे वर्षा ऋतु मे ऋषि मुनि जन वनो को त्याग कर ग्रामो के समीप आकर निवास करते थे। यहीं वे वेदो व शास्त्रो का स्वाध्याय करते तथा जनता को वेदो की पवित्र कथायें सुनाते थे। इस प्रकार वे साढे पाच मास तक स्वाध्याय एव प्रवचन करते हुये व्यतीत करते थे। इसके पश्चात् वे पुन वनो मे चले जाते थे। इस विषय की सम्पुष्टि मनुस्मृति के निम्न लिखित श्लोको से होती है।

श्रावण्या प्रौष्ठपद्या वाप्युपाकृत्य यथाविधि। युक्त छन्दांस्यधीयीत, मासान् विप्रोऽध पञ्चमान्। पुष्येतु छन्दसा कुर्यात, बहिरुत्सजन द्विज। माघ शुक्लस्य वाप्र त, पूर्वाह्ले प्रथमेऽहनि।

मनु० अ ४ श्लोक ९५, ९६

अर्थात् ब्राह्मणादि श्रावणी वा भाद्रपदी पूर्णिमा को उपाकर्म कर के साढे चार मास मे उद्युक्त होके वेदाध्ययन करे।९५। पुष्य नक्षत्र वाली पूर्णिमा मे वेद का उत्सर्जन नामक कर्म ग्राम के बाहर जाकर करे या माघ शुक्ल के प्रथम दिन के पूर्वाह्न मे करे।

स्वाध्याय करना द्विज मात्र का कर्म है और इस श्रावणी पर्व पर वेदाध्ययन करना ही मुख्यतः हुआ करता था। इस स्वाध्याय से ऋषि जनों की पूजा की जाती है और इसी से वे प्रसन्न रहते हैं। यदि हम ऋषियों के रचे उत्तम ग्रन्थो का पठन-पाठन करेंगे ज्ञान पाकर उत्तम मार्ग पर चलेंगे, उनकी आत्मा प्रसन्न होगी और जीवन मे सुखी सम्पन्न रहेगे। महाराज मनु ने कहा भी है—

स्वाध्यायेनार्चयेनृषीन् होमै-र्देवान्यथाविधि ॥

ब्राह्मण का शरीर भी इस ध्याय से प्राप्त किया जाता है। लिखा भी है—

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमै,
त्रैविद्येनेज्यया सुते।
महा यज्ञैश्च यज्ञैश्च,
ब्राह्मीय क्रियते तनु ॥

अर्थात् स्वाध्याय, जप, होम, यज्ञ, व्रत, एव महायज्ञा से ब्राह्मण का शरीर बनता है। इस प्रकार इस पर्व पर ऋषियो की आत्मा को प्रसन्न करने के लिये स्वाध्याय करने का विधान है, अत इसे ऋषि तर्पण भी कहा जाता है।

ऋषियो ने हमारे कल्याण के लिये अनेक उत्तम ग्रन्थो की रचना की है। यदि हम उन्हे पढें और तदनुकूल आचरण करे तो हम कभी जीवन मे दुखी नहीं रह सकते। स्वाध्याय करना ज्ञान वृद्धि मे सहायक है। इस ज्ञान से ही ऋषियो की आत्मा प्रसन्न होती हैं।

प्राचीन काल मे इस श्रावणी पर्व पर स्वाध्याय का प्रारम्भ यज्ञ आदि विधियों से करते थे, इसे उपा कर्म कहते थे, और जब पौषी पूर्णिमा को अध्ययन समाप्त करते थे, उस विधि को उत्सर्जन कहते थे। पर आज स्वाध्याय की परिपाटी समाप्त प्राय है। अत इन दोनो विधियो को ब्राह्मण एक साथ ही कर लेते हैं।

इस श्रावणी के अवसर पर यज्ञ मे सम्मिलित होने वाले व्यक्तियो के हाथ मे चिह्न स्वरूप सूत्र को हाथ मे बाधने होगे। इस कारण बाद मे इस उत्सव का नाम रक्षाबन्धन पड गया। कुछ लोग कहते हैं कि चित्तौर की महारानी कमवती ने गुजरात के बादशाह बहादुरशाह से त्राण पाने के लिये दिल्ली के बादशाह हुमायूँ के पास रक्षा सूत्र (राखी) भेजा था। हुमायूँ ने कमवती को अपनी धर्म भगिनी मानकर उसकी रक्षा की। तभी से यह पर्व भाई बहिन के प्रेम का प्रतीक माना जाता है। और आज तक उसी रूप मे यह उत्सव मनाया जाता है। बहिन अपने भाइयो के हाथ मे राखिया बांधती है। उस उपलक्ष मे भाई उन्हे रुपया पैसा देकर सम्मानित करते है।

पुराणो से ज्ञात होता है कि एक बार देवासुर सग्राम मे देवता पराजित हुये, राक्षस विजयी हुये। इस पर देवराज इन्द्र की पत्नी शची ने मन्त्रपूत रक्षा सूत्र अपने पति के हाथ मे बांधा जिससे वह पुन युद्ध मे विजयी हुआ। कुछ भी सही रक्षा-बन्धन का पर्व पारस्परिक प्रेम का प्रतीक है। वेदो मे हमे परस्पर प्रेम पूर्वक रहने की शिक्षा की गई है—

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्,
मा स्वसारमुत मा स्वसा।

अर्थात भाई भाई से द्वेष न करे, बहिन-बहिन से द्वेष न करें, अर्थात प्रेम पूर्वक रहें। उसी प्रेम की धारा को प्रवाहित करने वाला यह पर्व है। यह पाप पर पुण्य की, अधर्म पर धर्म की, दुख पर सुख की, निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है।

आज हमारे देश पर चारो ओर से सकट के बादल छाये हुये हैं। एक ओर चीन भयकर भगिधर सर्प की तरह फन फैलाये फुकार मारे हमे डसने के लिये खडा है। दूसरी ओर पाकिस्तान सुरसा की तरह मुँख फाडे हुये है। ऐसी परिस्थिति मे स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-क्षत्रिय,धनी निर्धन, आबाल वृद्ध सभी भारतीय परस्पर द्वेष भाव को भूल कर प्रेम का आचरण करे। किसी का अनिष्ट चिन्तन न करे। एक दूसरे की भलाई मे सलग्न रहे कर्तव्य परायण बने। चरित्र निर्माण करने वाले ऋषि प्रणीत ग्रन्थो का स्वाध्याय करे। विद्वानो का आदर कर, तथा माता पिता व गुरुजनो की आज्ञा का पालन करे। जन्म भूमि की रक्षार्थ अपने प्राणो को अर्पित करने के लिये सदा उद्यत रहे।

जब सभी लोग परस्पर राग द्वेष, व्यभिचार भाव को भूल कर परस्पर सहानुभूति का व्यवहार करेगे अपने भाई [illegible] एव ब्राह्मणो की [illegible] रहे। [illegible] एव [illegible] परिधि से परे रह [illegible] मात्र की सेवा [illegible], तभी हमारा जीवन [illegible] होगा। मातृ-भूमि का मस्तक गौरवान्वित होगा।

# राष्ट्रे जाग्रयाम:पुरोहित:

[ ले०–डा० ओम्प्रकाश शर्मा, नरसैना, बुलन्दशहर उ प्र. ]

आर्यसमाज राष्ट्र का पुरोहित है, उसे राष्ट्रको सजग रखने हेतु स्वयं जागते रहना चाहिये। जागना अर्थात् चौकन्ना रहने के लिये शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ रखना ही चाहिये। उत्तम स्वास्थ्य के लिये भोजन आवश्यक है आर्यसमाज का भोजन स्वाध्याय है।

स्वाध्याय के घटने से आर्य समाज पुरोहित सो गया और देश मे आर्यसमाज का विघटन आरम्भ हो गया।

अतीत मे राष्ट्र की रक्षा के लिये आर्यसमाज सदैव सजगता का प्रतीक बना रहा। श्री चन्द्रशेखर आज़ाद, श्री भगतसिह, श्री राम प्रसाद बिस्मिल श्री प० गेदालाल जी आर्यो का बलिदान इसका साक्षी है।

स्वतन्त्रता के दीवाने स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतर य जैसे सार्वदेशिक नेताओ का निर्माण आर्यसमाज ने ही किया था। आज वही आर्यसमाज प्रसुप्त है। इसी कारण देश में भ्रष्टाचार अनाचार पनप रहा है। धर्म निरपेक्षता की आडमे जाति और भाषा के आधार पर प्रान्त ही नहीं जिले तक बन रहे हैं, पचमांगी बढ़ रहे हैं, यह सब क्यो ?

इस प्रश्न का उत्तर पूर्व ही दिया जा चुका है। यह सर्वथा सत्य है कि पंजाब आर्य पुरोहित का पोषक एव पल्लवित करके गौरवान्वित रहा है। स्वामी दर्शनानन्द जी का वीतराग पजाब से लुप्त है, वहाँ राग-द्वेष पनप रहा है।

स्वाध्याय का निरन्तर श्रोत प्रवाहक वीर लेखक राम एवं प० गुरुदत्त के पजाब मे स्वाध्याय का प्रवाह रुक जाने से आर्यसमाज मे द्वेष प्रचार का कीचड सड़ने लगा है, इसकी बदबू समस्त आर्यसमाज मे व्याप्त सी हो रही है ( पजाब मे) आर्यसमाज का यह पुरोहित राष्ट्र जागरण की जगह न्यायालय और उसके बाहर ( स्वाध्याय प्रेरणा की जगह ) द्वन्द युद्ध की प्रेरणा दे रहा है। और अब तो यह सडान्द सार्वदेशिक तक में पहुच गई है। यह सडान्द वहाँ से प्रत्येक प्रतिनिधि मे होती हुई नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे व्याप्त हो जायेगी, तब सभी जगह स्वाध्याय के स्थान द्वेष अध्याय लेगा और दलबन्दी एव स्वार्थ का अखाड़ा गरम होगा।

आर्यसमाज के शान्ति प्रिय नेता विद्वान् सन्यासी भी इस सड़ाद को नहीं रोक पाये। मै महर्षि जीवनी से यहा कुछ अश उद्धृत करते हुये अपने योद्धाओ से प्रार्थना करूँगा कि आर्यसमाज के लिये अब कृपा करो आपसी स्वार्थ द्वेष की होली कर स्वाध्याय की प्रेरणा आज के पर्व पर लो और मिलकर आर्यसमाज के पुरोहित को सजग रक्खो।

जिससे आर्यसमाज मे प्रेमपन में स्वार्थ द्वेश नष्ट हों, और देश मे से भ्रष्टाचार पचमागी नष्ट हों, धर्म निरपेक्षता के नाम पर देश के खण्ड-खण्ड न हो सके।

अदालतो मे जाकर आर्यसमाजी मुकदमेबाजी करें इसके भी महर्षि सख्त विरोधी थे किन्तु अब तो आर्यसमाजियो की कौन कहे आर्य समाजें अदालतो मे लड़ रही हैं और जनता मे उपहास करा रही हैं।

इसी सन्दर्भ मे बम्बई में पहली बार बनाए गये उपनियमो की उन्तीसवीं धारा यह थी कि–

यदि आर्यसमाज मे किसी का आपस मे झगडा हो, तो उसको योग्य होगा कि आपस मे समझ लें या आर्यसमाज को न्याय उपसभा द्वारा उसका न्याय करालें।

परोपकारिणी सभा की वसीयतनामे की १२वीं धारा जो कि महर्षि द्वारा ही लिखित है को भी देखिए–

'यदि इस स्वीकार पत्र के विषय मे कोई झगड़ा उठे तो उसे राजगृह [ अदालतो ] में न ले जाना चाहिये। जहाँ तक हो सके यह सभा अपने आप निर्णय करे यदि आपस मे निर्णय न हो सके तो फिर (आर्यसमाज की) न्याय सभा (न्यायालय) से निर्णय ले।

अस्तु, यदि द्वन्द युद्ध फिर भी न समाप्त हो तो आर्य जनता को अपने मे से लोकेषणा, धनैषणा से रहित निस्पृह, सन्यासी को चुने ( जो द्वेश ममता से रहित हो ) वही न्यायाधीश इस झगडे को समाप्त करे जिससे राष्ट्र का पुरोहित आर्यसमाज सक्रिय हो उठे।

मुझे एक पत्र महात्मा आनन्द स्वामी जी का मिला है जिसमें अत्यन्त वेदना है–वे लिखते हैं कि भैंस के आगे बीन बजाना निरर्थक है। मेरे तप त्याग मे कमी है,जिससे असफल हुआ। उनके तथा अन्य पूज्य सन्यासियों को विनम्र प्रार्थना पूर्वक महर्षि की जीवनी के निम्न स्थलों की ओर दृष्टिपात करने की प्रार्थना है—

१—अप्रैल १८६७ ई०, सवत् १९२३ वि० हरिद्वार कुम्भ पर पाखड खण्डिनी पताका लगाने एव उपदेश प्रचार पर भी उनके मन मे भी ऊपर बताई गई हीन भावना उभरी थी पर उस समय भी एक सहायक न मिलने पर भी और आत्म शक्ति की प्रेरणा ले ईश्वर विश्वास पर सारी सामग्री का दान कर तथा महाभाष्य एव स्वर्ण मुद्रा अपने गुरुजी को भिजवा और लग्न से सर्वमेध यज्ञ किया, उसी धर्म युद्ध का परिणाम है आज का विशाल आर्यसमाज।

२–एक बार महर्षि का भ्रमण गगा तट पर हो रहा था, साथ में थे,एक सन्यासी, सन्यासी ने महर्षि से कहा आप यह सब छोड़कर योग का आनन्दमय जीवन व्यतीत कर मुक्ति प्राप्त करें। उत्तर में महर्षि ने बताया देश में करोड़ों मानव कष्ट प्रद वातावरण मे हैं मैं इनके अभाव, अज्ञान, अन्याय को दूर करूगा, इनकी मुक्ति ही मेरी मुक्ति है।

३–लाला इन्द्रमणि ने स्वामी जी से कहा आप अवधूत होकर इस झगड़े में क्यों फस रहे हैं, स्वामी जी ने कहा मेरे लिए यह कार्य झगड़ा नहीं है, ऋषि ऋण उतारना है। मैने सन्मार्ग पर लाने का प्रण किया है।

४–मुझे अपनी मुक्ति की कुछ भी चिन्ता नहीं, दारुण दुखों से त्रास से दीन दशा से दुर्बल अवस्था से परमपिता के पुत्रो को मुक्ति दिलाते हुये मै स्वयं ही मुक्त हो जाऊँगा।

५–परोपकार और परहित करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है।

अतः आर्यसमाज के मूर्धन्य तपस्वी वीतराग सन्यासियों से आर्य जनता का आर्तनाद है कि विश्व शान्ति के लिये महर्षि का सर्व मेध यज्ञ पुन: आर्त नाशनार्थ करे तभी देश का पुरोहित (आर्य समाज ) सजग रहकर राष्ट्र में राष्ट्रियता जगाता रह सकेगा, विभीषिकाएँ नष्ट होंगी।

अन्त में आर्य जनता से प्रार्थना है, इस शान्ति प्राप्ति के लिये आर्य समाज में कान्ति करे,स्वार्थ द्वेष को नष्ट करने की श्रावणी के पावन पर्व पर प्रतिज्ञा करें,और स्वाध्याय शील बनें।

# ईश्वर को नमस्कार

**आदि शक्ति उस परम ब्रह्म को,**
**करिए सादर सभी प्रणाम।**

यस्य भूमि प्रमान्तरिक्षमुतोदरम। दिव यश्चक्रे मूर्धान
तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम। अथर्व १०।७।३२

जिसकी भूमि 'पाद स्थानी', अन्तरिक्ष है 'उदर' समान।
दिव लोक जिसका 'मस्तक' है, जो प्रकाश की अद्भुत खान।
जो कर्त्तव्य मार्ग दिखलाता, चलकर रवि शशि सा वसुयाम।
प्रात काल उस परम ब्रह्म को, करिये सादर सभी प्रणाम।

यस्य सूर्यश्चक्षुश्च पुनर्णव। अग्नि यश्चक्रे आस्य तस्मै
ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम। अथर्व १०-७ ३३

बार बार जो आदि सृष्टि मे-आता होकर नित्य नवीन।
जिसके सूर्य-चन्द्र लोचन हैं, सभी जानते भक्त प्रवीन।
आनन जिसका अग्नि सदृश है, दमके जिसके तेज ललाम।
प्रात काल उस परम ब्रह्म को, करिये सादर सभी प्रणाम्।

यस्य वात प्राणा पानौ चक्षु रङ्गिरसो ऽभवन।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम। अथर्व १० ७-३४

प्राण, अपान, समान 'वायु' है, किरणें जिसकी नेत्र समान।
जिसकी सकल दिशाएं देती सद व्यवहार विमल विज्ञान।
जो सन्मार्ग दिखाता निशदिन, लेता कभी न जो विश्राम।
आदि शक्ति उस परमेश्वर को करिये सादर सभी प्रणाम।

यो भूत च भव्य च सर्व यश्चाधि तिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम। अथर्व १० ८-१

भूत-भविष्यत् का स्वामी है, जग को देता जीवन दान।
जिसका 'सुख' केवल स्वरूप है। जिससे पाता जन वरदान।
अन्धकार से भरे भुवन मे, भरता जो प्रकाश अभिराम।
प्रात काल उस परम ब्रह्म को, करिए सादर सभी प्रणाम्।



जो सर्वज्ञ, विधाता त्राता, व्यापक, अजर, अमर अखिलेश।
जिसकी चरण शरण मे जाकर, कभी न पाता, कोई क्लेश।
प्रकृति-नटी का पत्ता-पत्ता, बतलाता सत्ता अविराम।
आदि-शक्ति उस परमेश्वर को, करिए सादर सभी प्रणाम।

—'कुसुमाकर' आर्यनगर फीरोजाबाद ( आगरा )

# काव्य कानन

मुझे रहे तुम्हारा ध्यान
प्रभु जी रहे तुम्हारा ध्यान।

विषय वासना मे न खोऊ
लोभ मोह के वश न होऊ
कभी न बीज बदी के बोऊ
अहंकार का भार न ढोऊँ

करू लोक कल्याण प्रभु जी करू लोक कल्याण।

वेद मार्ग पर चलूं चलाऊँ
सत्कर्मों से नेह लगाऊँ
वैर भाव मन मे न लाऊँ
गीत मधुर भक्ति के गाऊँ

यह वर दो कृपा निधान मुझे यह वर दो कृपानिधान

यम नियम जीवन मे धारू
दुर्गुण सभी नाश कर डारू
सत्संग से निज चलन सुधारू
छवि तुम्हारी सदा निहारू

रखू लक्ष्य महान प्रभु जी रखू लक्ष्य महान।

बस इतनी सी कृपा कर दो
दिव्य गुणो से जीवन भर दो
व्यथा पीर मम मन की हर दो
अभयदान से अभय कर दो

करू तेरा गुणगान प्रभु जी करूँ तेरा गुणगान।

—ओमकुमार एम०ए० (द्वय) दयानन्द कालेज, शोलापुर

# यह जलियां वाला बाग जहाँ आजादी ने आंखें खोलीं।

यह जलियाँ वाला बाग जहाँ ओले सी बरस उठी गोली!
शोणित से भींज शहीदो के आजादी ने आखें खोली!!

प्रतिहिंसा का आवेश जहाँ साम्राज्यवाद को आया था,
भोली जनता का शोणित ही जिसको मदिरा सा भाया था।
सौ दो सौ नहीं हजारो ही मानव शरीर के पमाने,
तोडे सत्ता के साकी ने शर्माए जग के मयखाने॥
निर्मम तम अत्याचारो की सचमुच ही एकदम हद होली—

सीने से मौत लगा अपने सो गये सहस्रों बलिदानी,
भारत माता की आखो मे झर-झर बह निकला था पानी।
हल्दी घाटी का दृश्य पुन हो गया उपस्थित एक बार,
बन्दूके गरजीं धाय धाय शोणित सागर मे उठा ज्वार॥
फुकार उठी नागिन जैसी धरती जो सोई थी भोली—

जलियांवाला के कण कण को चित्तौडी जौहर चूम उठे,
शोणित से माटी सनी देख केशरिया बाने झूम उठे।
बैशाखी की हर्षित आखें, बन गई धधकते अगारे,
दल के दल मस्त भागडा के विप्लव करने को हुकारे॥
पानीपत की ललकारे भी सब एक साथ मिलकर बोलीं—

आजादी के इतिहासो के पन्ने फर फर फरफरा उठे,
बलिदानी गाथाओ के स्वर सब ओठो पर छरछरा उठे।
तरुणो की रक्त शिराओ मे ज्वाला जागी कुछ करने को,
नन्हे मुन्ने के मन मे भी थी चाह देश पर मरने की—!!
जञ्जीर तोडने को मा की बेटो ने थी ताकत तौली—

'भारत छोडो' यह वह नारा जिसने इतिहास बनाया है,
जलियां वाला की घटना से उसने सारा बल पाया है।
नेता सुभाष की वह सेना जो आजादी के लिये कटी,
जन्मी थी जलियां वाला की धरती से जो उस समय फटी॥
आजाद, भगतसिंह, राजगुरु की पैदा यहीं हुई टोली—

—कृष्णविहारी मोदी प्रान्त' एम० ए०, एल०टी०

# पन्द्रह अगस्त

[ श्री कृष्णगोपालदास 'कृष्ण', अघार, मैनपुरी ]

[ गताक से आगे ]

सुभाष बोस के नाम से अंग्रेज का बच्चा-बच्चा कांपने लगा। उनकी सन्देहास्पद-मृत्यु भी अँग्रेज सरकार को कापती ही रही। फलतः भारत को १५ अगस्त १९४७ ई० को स्वतन्त्रता दे दी गई। किन्तु ब्रिटिश सरकार रूपी मारीच ने मरते-मरते भारत को दो भागों में विभक्त किये जाने की गुप्त-मन्त्रणा दे ही दी। जिससे आज भी भारत, अपने ही, अङ्ग मे से काट कर बनाये गये 'पाकिस्तान' के कृत्यों तथा षड्यन्त्रो से आशङ्कित रहता ही है।

लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक (जिन्होने 'वीर सावरकर' को, 'श्याम जी कृष्ण वर्मा' महान् क्रांतिकारियो के पितामह के पास शिक्षा दीक्षा के प्रति इग्लैंड भेजा था) विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय ने 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।' का उच्च उद्घोष करके अंग्रेज सरकार की नाक में दम कर दिया। ये तीनो ही 'भारतीय-स्वतन्त्रता सग्राम के महारथी 'बाल', 'लाल', 'पाल' के नाम से युग-युगान्तर तक अपना यश-सौरभ प्रसारित करते ही रहेगे।

लोकमन्य तिलक ने माण्डले के कारावास मे गीता का सर्वोत्कृष्ट भाष्य 'गीता रहस्य' लिख कर भारतवासियों मे 'करो या मरो' की उत्कृष्ट भावना कूट-कूट कर भर दी। 'तिलक' की मृत्यु सन् १९२० ई० मे हो जाने पर महात्मा गाधी ने भारत की राजनीति मे, एक लँगोटी लगाकर, हाथ मे लाठी लेकर, सन्यासी रूप से ही प्रवेश किया। लन्दन की गोलमेज-कान्फ्रेंस सन् १९३१ ई० मे, महात्मा गाधी को ही सर्व प्रथम एक नङ्गे साधु के वेश मे, इग्लैण्ड के स्वर्णिम राज-दरबार मे [जहाँ पर इगलिश राजसी वस्त्र ही धारण करने वाला, अनुमति से ही जा सकता था] अपने दीन-दुखिया देश की दयनीय दशा के दिग्दर्शनार्थ, उपस्थित होने का अवसर ब्रिटिश-सम्राट को देना ही पडा। महात्मागाधी के अनुयायी पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी अपने वैभवपूर्ण आनन्द-भवन, सारी चलाचल सम्पत्ति का त्याग तो किया ही प्रत्युत अपनी प्रिय धर्म पत्नी 'कमला नेहरू' की भयङ्कर राज्यक्ष्मा की शोचनीयावस्था मे भी अपनी कारावास-यात्रा, अपनी प्राण-प्रिया की सत्प्रेरणा प्राप्त करके नहीं छोडी। अन्ततोगत्वा सरकार ने कमला नेहरू के जीवन की अन्तिम अवशेष कुछ श्वासो मे, उनकी परिचर्या, उपचारार्थ कारावास से मुक्त कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में रौलेट-एक्ट के विरोध मे सहस्रो गाधीवादी तथा क्रान्तिकारियों का प्रदर्शन, स्वतन्त्रता के प्रति शान्ति भाव से किये गये सत्याग्रह में सर्वोपरि स्थान रखना है। जहाँ पर केवल गोरे अंग्रेजो की ही सेना अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर प्रदर्शनकारियो के विध्वन्स के प्रति सन्नद्ध थी, वहाँ पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के समीप आते ही, आकर्षण-वश गोरी-सङ्गीनो को उनके आगे आत्म समर्पण करना ही पड़ा। 'साइमन कमीशन' के विरोध मे शान्ति के पथिक लाला लाजपतराय के अमर बलिदान की एक एक रक्त की बूद, ब्रिटिश सरकार के कफन की एक-एक कील सिद्ध हुई।

क्रान्तिकारियों के अनुपम बलिदान तथा गाधीवादी शान्तिवादियो की कारावास यातनाओ की अमर गाथाओ ने अपने-अपने स्थान पर वह नाटक खेला, जिसके मृदु पुष्प १५ अगस्त १९४७ ई०के स्वतन्त्र्य दिवस के रूप मे पुष्पित और पल्लवित हुये। यद्यपि उक्त दोनों प्रकार के सेनानी हमे एक अमर थाती देकर अमरत्व को प्राप्त हो चुके हैं, तथापि इनकी रक्षा तथा विकास करना हमारा परम धर्म है। हम भी कर्तव्य की पावन वेदी पर, अनुशासन-पूर्वक, कड़ाई से समय का पालन करते हुये, अपने प्रिय देश की भूखी-नङ्गी, सन्तप्त, शोषित अधिकांश जनता के हितार्थ यदि अपने तन-मन-धन को परोपकारार्थ बलिदान करना सीख लें, तो भारत का भविष्य, उज्जवल होने मे कोई भी सन्देह न रहे। ऐसा करके ही हम उन अमर शहीदों को वास्तविक श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर सकेगे।

महान् खेद तथा आश्चर्य का विषय है कि-हमे स्वतन्त्र हुये आज पूरे बाईस वर्ष हो चुके हैं, किन्तु देश मे भुखमरी का साम्राज्य प्रसारित है। घूस (रिश्वत) पिशाचिनी, चोरी, व्यभिचार, अश्लील राग तथा अश्लील साहित्य एवं अश्लील चल चित्र, बहुव्याज, दहेज की भयकर प्रलय, अविद्या कर्त्तव्य-पालन के प्रति उदासीनता समय पालन की अवहेलना, अनुशासन के प्रति घोर उपेक्षा, प्राय नेताओ, पदाधिकारियो तथा शिक्षितो की स्वार्थपरता तथा धन लिप्सा एवं उनके द्वारा प्राय किये गये कार्यो मे वाह्याडम्बर तथा शोषण का प्राबल्य, धनिक वर्ग का दीन दुखियो के साथ दिखावटी धार्मिक भाव, भाई-भाई के साथ सद्-स्नेह शीलता का अभाव, घृणा तथा द्वेष के बीज प्रायः विद्वत् वर्ग तथा अधिकांश नेताओ द्वारा प्रसारित किये जाने का मायाजाल, हमारे जन-जीवन को ध्वस्त तथा शोचनीयावस्था में किये ही हुये हैं।

पद-लोलुपता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, धर्म के नाम पर किये जाने वाले मिथ्या ढोंगो में हमारे प्राय. नेता हैं। हम नित्य महापुरुषों के मकबरे (स्मारक) तो बनाने में करोड़ों अरबो रुपया व्यय करते है किन्तु जीवित दीन दुखियो की सहायता एक कौड़ी से भी नहीं करना चाहते। यदि हम महापुरुषो के स्थान पर अपने पास पड़ोस के दीन दुखी मानवों की यथाशक्ति सहायता करने का दृढ़ सकल्प आज के ही पवित्र दिवस से ले लें तो कोई कारण नहीं जो हमारे देश से भुखमरी सदा के लिये न चली जावे।

प्रायः हमारे मन-मस्तिष्क बुरे प्रकार से उत्पन्न किये हुये अन्न से बने हैं, अत हमे दीन दु:खियो से सच्चा प्यार नहीं है क्योकि हमने बुरे प्रकार की कमाई, दीन-दुखियों को ठगकर ही की है। शताब्दियों से हमारा मन-मस्तिष्क विदेशी शिक्षा-दीक्षा से ओत-पोत रहा है फिर लार्ड मैकाले द्वारा सचालित शिक्षा-पद्धति आज भी हमारे हृदय में भारतीय वेश-भूषा, भाषा आहार-व्यवहार, चाल-ढाल के प्रति तिरस्कार का भाव जाग्रत करके हमे मानसिक दासत्व की ओर अग्रसर कर ही रही है। हम अपने पिता को 'पापा' और माता को 'मम्मी' कहने में ही गौरव प्राप्त करते हैं।

'आराम हराम है' तथा 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' के स्थान पर 'कम काम और अधिक दाम' की नीति शिक्षकों तक के हृदय का हार प्रायश बन रही है। इन सब का मूल-कारण हमारी वर्तमान दूषित शिक्षा-प्रणाली है—इसका आमूलचूल परिवर्तन किये बिना मानसिक दासत्व का विनास हो ही नहीं सकता। हम विदेशी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

## अध्यात्म-सुधा

[ पृष्ठ २ का शेष ]

देखने-परखने आदि मे पूर्णतया समर्थ होते हैं। वे तो प्रयत्न पूर्वक वाणी-व्यापार के सभी लाभो को प्राप्त कर लेते हैं। वाणी का कोई छोटा सा रहस्य भी उनकी पैनी दृष्टि से छिपा नहीं रहता। ऐसे मनस्वी विद्वान् ही वाणी के पति, वाच.+पति = वाचस्पति कहलाने के अधिकारी होते है। उत्तम खान पान मे अपनी बुद्धि को बढाना और वेद विद्या को पढ कर सफलता को प्राप्त करना मानव-मात्र का कर्त्तव्य भी है, अधिकार भी।

उत त्व सख्ये स्थिर पीतमाहु
नैन हिवन्ति-अपि वाजिनेषु।
अधेन्वा चरति माययैष बाच
शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम् ॥५

(उत त्वम्) किसी-किसी को (सख्ये) सभा मे ( स्थिर-पीतम्-आहुः ) सम्यक्-परिपक्व विद्वान् कहते हैं। ( एनम्-वाजिनेषु-अपि ) इसको युद्धो और बल-ओज-तेज-प्रभाव प्रयुक्त करने के कठिन अवसरो पर भी ( न हिन्वन्ति ) नहीं छोडते, नहीं त्यागते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं ( एष. ) जिनकी (वाचम्) वाणी (मायया-अधेन्वा चरति ) छल-कपट से प्रभावित होकर रस - रहित = रूखा- फीका शब्द-व्यवहार करती है। (शुश्रुवान्) उनकी लिखाई-पढाई और पढ़ाई का प्रयास = परिश्रम उनके उस रूखे-फीके वाग्व्यवहार के कारण (अफलाम्) फल-रहित और (अपुष्पाम्) पुष्प-रहित लता के समान होता है। उनकी विद्या सभी दृष्टियो से निष्फल होती है।

किसी-किसी विद्वान् का ज्ञान परिपक्व और सभी के हितकर होता है। लोग कठिनाइयो मे भी उनका परित्याग नहीं करते। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है, जो अपनी विद्या और साक्षरता के आधार पर छल-प्रपचपूर्ण व्यवहार किया करते हैं। उनकी बातो मे सद्भावना के स्थान पर दिखावा, बनावटीपन और दुर्भाव होता है। उनकी दूषित मनोवृत्ति के कारण उनके कथन सारहीन, रूखे, फीके और प्रभाव शून्य होते हे।

यस्तित्याज सचि विद सखाय
न तस्य वाचि अपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोति-अलक शृणोति,
न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्। ६

(य ) जो (सचिविदम्) सच्चे (सखायम्) सखा को (तित्याज) त्याग देता हे, ( तस्य ) उसका वाचि-अपि ) वार्तालाप मे भी (भाग न अस्ति) अधिकार नहीं है। ( ईम् ) निस्सन्देह ( यत् शृणोति) वह जो कुछ सुनाता है-(अलकम् श्रणोति) अर्थ ही सुनता है। उसका पठन-पाठन और श्रवण बेकार ही हो जाता है (हि)क्योकि वह सुकृतस्य ) सुसभ्य = सुशिष्ट जनो के (पन्थम्) मार्ग को-सदाचार को [न प्रवेद] नहीं जानता।

जो मनुष्य सच्चे मित्र का निरादर वा परित्याग करता है, उसको धोका देना है। ऐसे मनुष्य के साथ वार्तालाप करना वा सम्पर्क बढाना ठीक नहीं है। उसका पढ़ना-सुनना, ज्ञान-विज्ञान अर्जित करना, सब व्यर्थ ही होता है। क्योकि वह तो यह जानता ही नही कि शिष्टता और सभ्यता का व्यवहार किस प्रकार किया जाता है। स्वार्थियो को मित्र बनाने से तो, मित्र न बनाना ही अच्छा है।

अक्षण्वन्त. कर्णवन्त सखायो
मनोजवेष्वसमा बभूवु।
आदघ्नस उपकक्षास उ त्वे,
ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥७

यद्यपि सभी मनुष्य [ अक्षण्वन्तः ] आंखो वाले [ कर्णवन्तः ] श्रोत्रो वाले [ स-खाय ] समान इन्द्रियों और समान उद्देश्यो वाले होते हैं, परन्तु [ मन. जवेषु ] मन के आवेगों मे = सकल्प-शक्ति मे वे [ अ-समा ] समानता-शून्य [ बभूवु ] होते हैं। [ उ त्वे ] कोई तो [ आदघ्नास ] मध्य तक भरे हुये = मध्यम श्रेणी के होते हैं, कुछ [ उपकक्षास ] थोड़े जल वाले [ ह्रदा इव ] तालाब जैसे हे। [ उ त्वे ] कोई-कोई तो [ स्नात्वा स्नान करने योग्य तालाबो जैसे भी [ ददृश्रे ] दिखाई देते है।

आख, नाक, कान, हाथ, मुह आदि इन्द्रिया सब मनुष्यो की प्राय समान ही होती हैं। पाठ्यक्रमो और आदर्शो की समानता भी देखने मे आती है। परन्तु उन की मानसिक योग्यता और सकल्प शक्ति एक-सी नहीं होती। यही कारण हे कि न तो सबको एक जैसी सफलताए प्राप्त होती हैं, न ही सबके विचार-व्यवहार एक जैसे होते है। इस मानसिक शक्ति और व्यावहारिक योग्यता के आधार पर विद्वानो के भी उत्तम, मध्यम और साधारण तीन भेद किये जा सकते है। किसी की विद्या थोडे जल वाले तालाब जैसी है, किसी की मध्यम जल वाले जैसी और किसी की परिपूर्ण तालाब जैसी।

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु
यद् ब्राह्मणा सयजन्ते सखाय.।
अत्र आह त्व वि जहुर्वेद्याभि:
रोह ब्राह्मणो विचरन्ति उ त्वे ॥८

[ स + खाय ] एक ही जैसी इन्द्रियो वाले और एक ही से उद्देश्यो वाले [ ब्राह्मण. ] ज्ञानी [यत्] जो कुछ [ हृदा ] हृदय मे- हार्दिकता से, (मनस ) मन से = सकल्प बल से ( तष्टेषु ) विभिन्न स्तरो, अनुक्रमो या सिद्धान्तो मे, उनके ( जवेषु ) आवेगो, प्रभावो वा सघर्षो मे (स यजन्ते) सम्यक तथा यजन करते है, ( तत्र ) तत्र (त्वम्) किसी को (वि-जहु ) वे त्याग देते है, (अह) और ( ओह-ब्राह्मण ) उहा = प्रतिभा वाले ज्ञानी को, ( वेद्याभि. ) उसकी जानने और सरक्षण करने योग्य विद्याओ के साथ (उ-त्वि-चरन्ति) विशेष रीति से अपनाते और उपासते है।

जब कोई मनुष्य पूर्ण एकाग्रता का सम्पादन करके अपनी बौद्धिक शक्तियों का उपयोग लोक-व्यवहारों मे करते है, तब वे अपने अल्प-श्रुत और मूढ साथियो का तथा अपने-अपने दोषो का परित्याग कर देते हैं। किसी ने मूर्ख मित्रो के विषय मे कहा है—

दोस्तो मे हमने वे,
सदमे उठाये जान पर।
दुश्मनो की दुश्मनी का,
सब गिला जाता रहा॥

मूर्ख मित्र तो शत्रु से भी अधिक हानिकारक होते है। जो सुयोग्य विद्वान् उत्तम विद्यार्थी और उत्तम गुरु है, उनको तो सभी अपनाते हैं।

इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति,
न ब्राह्मणासो न सुतेकरास।
त एते वाचमभिपद्य पापया,
सिरीस्तन्त्र तन्वते अप्रजज्ञय ॥९

(ये इमे) जो ये लोग ( न अर्वाक् ) न इधर = लौकिक वा आधुनिक कर्मो मे ( न पर. ) न उधर = पारलौकिक वा प्राचीनतम विषयो मे ( चरन्ति ) विचरते = आचरते है, ( न ब्राह्मणास ) न ब्राह्मणो = वेदज्ञो और ज्ञानियो के पदो को धारते हैं, (न) और नहीं ( सुतेकरास. ) यजमानो = यज्ञवादियो = दानियो, सगठन-कर्त्ताओ और ईश्वरोपासको के मार्ग को स्वीकारते हैं, (ते एते) वे ये (अप्रजज्ञ ) महामूर्ख ( वाचम् अभिपद्य ) वेद-वाणी. भाषा, विद्या, बोलने की शक्ति को प्राप्त करके भी मानो पापया) अपनी पाप-प्रभाव-ग्रस्त मनोवृत्ति से दूषित होने के कारण ( सिरी ) हलवाहे के समान हैं, या ( तन्त्रम्-तन्वते ) ताने-बाने को फैलाने वाले जुलाहे के तुल्य हैं।

जो मनुष्य वेद-विद्या, उत्तम उपदेश, अच्छी जानकारी और भाषा = बोलने की शक्ति को प्राप्त करके भी अपना लोक-परलोक नहीं सुधारते, ससार के सुख-समुदाय की वृद्धि नहीं करते, परोपकार के कार्यों मे प्रवृत्त नहीं होते, प्राचीनतम सत्य सिद्धान्तो और आधुनिकतम रीति-नीतियो एव वैज्ञानिक आविष्कारो, आर्थिक और सामाजिक सुधारो से कुछ भी लाभ नहीं उठाते, उनकी मूर्खता

मे सन्देह ही क्या हो सकता है ? वे तो जन्म मरण के चक्कर में उसी प्रकार घूमते रहेंगे, जैसे हल चलाने वाले हलवाहे और ताने-बाने फैलाने वाले जुलाहे घूमते हुये दिखाई देते हैं।

सर्वेनन्दन्ति यशसागतेन
सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्विषस्पृत् पितुषणिर्हि-
र्षामर हितो भवति वाजिनाय ॥१०

(सभा साहेन) सभा-विजयी अथवा सभा मे सहायक [यशसागतेन] यशस्वी [सख्या] मित्र से (सर्वे) सभी (सखाय.) मित्र [नन्दति] आनन्दित होते हैं। वह [किल्विषस्पृत्] पाप-निवारक, सकट-विदारक मित्र [पितु सनि.] पता आदि गुरुजनों के समान —हि) एवम् [एषाम्] इन मित्रों के [वाजिनाय] अन्न, धन, बल और प्रभाव के लिये [अरम-हितः भवति] पर्याप्त, समर्थ तथा पूर्ण हितकारी होता है।

विद्या आदि शुभ गुणो से सम्पन्न और राज-सभा या विद्या-सभा अथवा धर्म-समाएं अपनी उच्च योग्यता का परिचय देनेवाले मित्र के यश की वृद्धि देखकर सभी को हार्दिक प्रसन्नता होती है। ऐसा उत्तम मित्र ही पापो का निवारक और सकटो से बचाने वाला होता है। उत्तम मित्रो का सम्मान भी पिता आदि गुरुजनो और अभिभावको जैसा ही करना चाहिये। अच्छे मित्र तो अपने मित्रो के लाभ में ही अपना लाभ समझते हैं। सन्त कबीर का कथन है—

सुख देवें दुख को हरे,
दूर करे अपराध।
कहे कबीर वे कब मिलें,
परम स्नेही साध ॥

ऋचां त्व· पोषमास्ते पुपुष्वान्,
गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जात विद्यां,
यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उत्व ॥११

१२ [त्व] कोई-कोई [पुपुष्वान्] पुष्ट करने वाला विद्वान् [ऋचाम्-पोषम्-आस्ते] ऋचाओं को पुष्ट करता है, और ऋचाओं से पुष्ट होता है, [त्व] कोई [शक्वरीषु] सामगान की मण्डलियों में [गायत्रम्-गायति] वह गान गाता है, जो मानवता का त्राण करने वाला है। [त्व. ब्रह्मा] कोई वेदों का ज्ञाता [जात-विद्याम्] सुप्रसिद्ध वेद-विद्या को [वदति] बताता = सिखाता = प्रचारता है [उत्वः] और कोई (यज्ञस्य मात्रान्) यज्ञ की = यज्ञ स्वरूप प्रभु की (मात्राम्) मात्रा को, उपासना-पद्धति को (विमिमीत) विशेष रीति से सुनिश्चित करता है, निर्विवाद रूप में सुस्थापित करता है।

विद्वान् लोग अपनी अपनी योग्यता और विशेष रुचि के अनुसार ही ज्ञान का प्रसार किया करते हैं। यज्ञों मे ऋग्वेद का ज्ञाता होता, सामवेद का ज्ञाता उद्गाता, अथर्ववेद का ज्ञाता ब्रह्मा और यजुर्वेद का ज्ञाता अध्वर्यु कहाता है। ये सब अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी शिष्य परम्पराओं को अपना-अपना ज्ञान प्रदान करते हैं। कोई गोष्ठियो मे गाता है, कोई यज्ञ प्रकरणो को सुसस्कृत करता है, कोई नई खोज में रमता है, कोई प्राप्त ज्ञान के सरक्षण में कोई आत्मा परमात्मा के स्वरूप बन्ध और मोक्ष के रहस्य एवं अभ्युदय और निःश्रेयस के उपाय बताता है।

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिये

# आर्य विद्वानों में उत्साह और आनन्द की लहर

जिस समय हमारी सभा ने इस कार्य को अपने हाथो मे लिया था, उस समय हमे यह चिन्ता थी कि बहुत से आर्य विद्वान् एक साथ दिवगत हो चुके हैं, अब किस के बल पर यह शताब्दी समारोह होगा। पर धैर्य के साथ विचार करते हुये वर्तमान् विद्वानो को ढूंढा, उनकी सूची बनाई, और पत्र-व्यवहार प्रारम्भ किया। उसके परिणाम स्वरूप आर्य विद्वानों के जो उत्साह वर्धक पत्र हमे प्राप्त हुये उससे हम इस परिणाम पर पहुचे कि अब भी आर्यजगत् आर्य विद्वानो से शून्य नहीं है। और आज ऐसे विद्वान् हमारे पास हैं, जो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मन्तव्यों को लेकर ससार से लोहा ले सकते हैं। हमारे इस समारोह मे १—महायज्ञ। २—६ वादपरिषदे, ३—६ महासम्मेलन, ४—तथा महापरिषत् की तीन बैठकें दो-दो दिन तीन विषयो पर होगी, उनमें कौन कौन विद्वान् भाग ले रहे हैं। पक्ष प्रतिपक्ष के सब विद्वानो का विवरण हम शीघ्र प्रकाशित करेगे।

विद्वानो से जो फार्म भरवाये जा रहे हैं, उनका नमूना पृष्ठ ४ पर प्रकाशित किया जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभायें इन फार्मों कोहमारे कार्यालय "काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ [उ. प्र.] से मंगाकर अपने प्रान्त के विद्वानो से भरवाकर शीघ्र भेजें और विद्वान् स्वयं भी इन फार्मो को मगावें और भर कर भेज देवे। जिससे हमारे अज्ञान वश यदि किसी तक यह समाचार नहीं पहुचा हो तो वह भाग लेने से वञ्चित न रह जावे।

—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम ए वेदाचार्य
प्रचार मन्त्री शताब्दी समिति



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास मे किये है। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमे भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें।

इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत मे शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार सहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध-पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष में दस आर्य प्रतिनिधि सभाए हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अत भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करे। आर्यजगत का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोडकर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से ससार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अत आर्य भाइयो को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक मे पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेगे।

पता—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## समस्त आर्य जगत् के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की विज्ञप्ति

भारतवर्ष के समस्त आर्यसमाजों व प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की सेवा मे निवेदन है कि '१६ नवम्बर से २१ नवम्बर १९६९ तक वाराणसी मे 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह' विराट रूप से मनाया जायगा । इन तिथियो मे कोई भी आर्यसमाज उत्सव, सम्मेलन, कथा आदि न रक्खें । जिससे सर्व आर्य बन्धुगण वाराणसी पहुच सकें । काशी शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव के लिये पुष्कल धनराशि भेजने की कृपा करे ।

शिवकुमार शास्त्री — संसद सदस्य — प्रधान
प्रेमचन्द्र शर्मा — सदस्य विधान सभा — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

## आर्यसमाज मन्दिरो के सम्बन्ध में सभा की घोषणा ?

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों के सचालको को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अधिकारियों की जानकारी मे कुछ इस प्रकार की चीजें आई हैं कि कतिपय स्थानों पर लोग ऋषि दयानन्द अथवा डी० ए० वी० स्कूल का नाम लगाकर आर्यसमाज मन्दिरो मे बच्चों की शिक्षण सस्था खोलना चाहते हैं, अथवा आर्य मन्दिरों को किराया लेकर बारात आदि ठहराने के लिये देना चाहते हैं ।

अतः सभान्तर्गत सर्व आर्यसमाजों के अधिकारियो को आदेश प्रसारित किया जाता है कि आर्यसमाज मन्दिर इस प्रकार के कार्यो के लिये न दिये जायें और न मन्दिरों मे बरातादि ठहराई जाय । सस्था खोलने से पूर्व सभा की अनुमति लेना अनिवार्य होगी ।

### शुभ समाचार

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि चौक आर्य समाज प्रयाग के पुराने आर्य सभासद् अनुभवी योग्य श्रीयुत बा० प्रभात कुमार जी आर्य एडवोकेट ८, हेस्टिंग्स रोड, इलाहाबाद ने अपना समय आर्यसमाजो के अभियोग जो हाईकोर्ट इलाहाबाद मे विचाराधीन हैं, अथवा आगे दावे दायर होंगे, उन सभी की नि शुल्क सेवा करने का वचन दिया है । अत' आर्यसमाजों के अधिकारियों से प्रर्थना की जाती है कि उक्त एडवोकेट की सेवाओ से लाभ उठाने की कृपा करें ।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम ए ल ए सभा मन्त्री

### प्रोग्राम वेद प्रचार सप्ताह ७ अगस्त से ४ सितम्बर तक

१–श्री बलवीर शास्त्री–आर्यसमाज मऊनाथ भजन ।
२–श्री श्यामसुन्दर शास्त्री–आर्य समाज गोला, लखीमपुर ।
३–श्री केशवदेव शास्त्री–आर्य समाज भर्थना ।
४–श्री जयेन्द्र शास्त्री–आर्यसमाज फैजाबाद ।
५–श्री शकरलाल आर्य–आर्य समाज मैनपुरी ।
६–श्री स्वा० योगानन्द सरस्वती आर्यसमाज इस्लाम नगर ।
७–श्री स्वा० देवानन्द सरस्वती आर्यसमाज खर्जा ।
८–श्री गजराजसिंह जी—आर्य समाज खालापार सहारनपुर
९–श्री धर्मराजसिह जी—आर्य समाज सीतापुर ।
१०–श्री वेदपालसिह जी– आर्य समाज भर्थना-बिधूना ।
११–श्री क्षेमचन्द्र जी– आर्यसमाज कालपी ।
१२–विन्ध्येश्वरीसिंह, देवरिया
१३–श्री प्रकाशवीर जी शर्मा—आर्य समाज हाथरस ।
१४–श्री जयपालसिंह जी—आर्य समाज सुल्तानपुर (नैनीताल)
१५–श्री ज्ञानप्रकाश जी—आर्य समाज मऊनाथ भजन ।
१६–श्री मुरलीधर जी–आर्यसमाज तिलहर ।
१७–श्री रामचन्द्र जी वर्मा—आर्य समाज गोला, लखीमपुर ।
१८–श्री खड्गपालसिंह जी–आर्य समाज शिकारपुर
१९–श्री रघुवरदत्त जी–आर्यसमाज सिरौली (फर्रुखाबाद)
२०–श्री शिवनार्यसिंह जी त्यागी–आर्य समाज बलकेश्वर कालोनी आगरा

—प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री

### निरीक्षण सूचना

मेरठ, कुमायूं व बरेली की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि सभा के मुख्य निरीक्षक श्री बलवीरसिंह जी बेउडक हापुड, किसी भी समय अपनी सुविधानुसार किसी भी समाज मे निरीक्षणार्थ पहुच सकते हैं । अत समाजो के मन्त्री महोदय अपने रजिस्टर तैयार रखे । उनके पहुचने पर सभा का प्राप्तव्य धन उन्हे प्रदान करे तथा उनसे सभा की रसीद प्राप्त कर लें ।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम एल ए, मन्त्री सभा

आर्यसमाज, बी ब्लाक गोविन्द नगर कानपुर के अन्तर्गत सर्व सम्मति से स्त्री आर्य समाज का गठन कर दिया गया है । जिसके वैदिक सत्सङ्ग श्री धर्मवीर जी रहेजा के निवास स्थान ब्लाक न० १२ बी मकान न० १२४/२४९ मे प्रति मगलवार को सायकाल ३ बजे से ५॥ बजे तक हुआ करेंगे । माताओ से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे सदस्य बनें और वैदिक सत्सग मे सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठावे ।

—मन्त्री

### सार सूचनाएं

—श्री स्वामी रतन जी हरदोई के पते की आवश्यकता है।

—मन्त्री आ स रनियां (कानपुर)

—आर्य समाज गोण्डा की हीरक जयन्ती ३० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक मनाने का निश्चय हुआ है । —मन्त्री

—आर्य समाज जमानिया के श्री स्वामी प्रणवानन्द जी २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक आर्य समाज छपरा मे प्रचार करेगे ।

—श्री स्वामी आनन्द गिरि जी के पते की आवश्यकता है ।

—मन्त्री आर्य समाज टांडा [फैजाबाद]

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल –६०

भाद्रपद २ शक १८९१ श्रावण शु १२
[ दिनाङ्क २४ अगस्त सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य · २२९९३ तार । "आर्यमित्र"

## निर्वाचन–

–आर्य समाज चरथावल ।
प्रधान–श्री बाबूराम जी त्यागी
मन्त्री–श्री महेन्द्रकुमार जी
उपप्रधान–श्री इश्कलाल जी
कोषाध्यक्ष–ओमप्रकाश जी

—मन्त्री

—आर्यसमाज जमालपुर (मुंगेर)
प्रधान–श्री शुकदेव जी चौधरी
उपप्रधान–श्री मगासाह जी
,, आनन्दस्वरूप जी गुप्त
मन्त्री–श्री कैलाशलाल जी गुप्त
कोषाध्यक्ष–श्री बनारसी साह

—मन्त्री

—आर्यसमाज ठाकुरगंज दौलतगंज लखनऊ ।
प्रधान–श्री देवीप्रसाद जी
मन्त्री–श्री गुरुप्रसाद सैनी
कोषाध्यक्ष–श्री शिवकुमार जी

–मन्त्री

—आर्यवर्द्धिनी सभा गुरुकुल सिकन्दराबाद ।
सरक्षक–श्री यजानदत्त आचार्य एम ए
उप सरक्षक–श्री कामचन्द शर्मा स अ
प्रधान–श्री ब्र० महावीरप्रसाद
उपप्रधान–श्री ब्र० ज्ञानचन्द
मन्त्री–श्री सोमदत्त आर्य
उपमन्त्री–श्री राजवीरसिंह
कोषाध्यक्ष–श्री ब्र० नीलमणि आर्य
क्रीडाध्यक्ष–श्री ब्र० रामलाल आर्य

इसके अतिरिक्त ६ सदस्यों का भी चुनाव हुआ ।

—ब्र०सोमदत्त आर्य मन्त्री

—यमुनानगर मे डी ए वी आर्य समाज की स्थापना हुई है । निम्न अधिकारी चुने गये ।
प्रधान–श्री मदनलाल जी वासुदेव
उपप्रधान–श्री अतरचन्द जी वोहरा
,, श्री रमेशपाल जी
मन्त्री–श्री ऐच सी भगत प्रिंसिपल
उपमन्त्री–श्री डॉ. दुर्गाप्रसाद जी
प्रचार मन्त्री–श्री भूदेव जी शास्त्री
पुस्तकाध्यक्ष–श्री सुखदेव जी शर्मा
कोषाध्यक्ष–श्री मदनलालजी तनेजा

—आर्य समाज रक्सौल गया
प्रधान–डा. शिवनन्दनप्रसाद'निकर'
मन्त्री–डा बुद्धदेव आर्य
उपमन्त्री–श्री रामशरणलाल जी
कोषाध्यक्ष–श्री पूर्णचन्द्र आर्य

आर्य समाज मेहसी[चम्पारन]
प्रधान–श्री सत्यनारायण राय
उपप्रधान–श्री सहदेव साहु
मन्त्री–श्री भरत प्र० चौधरी
उप मन्त्री—श्री शिवपूजनप्रसाद जी
कोषाध्यक्ष-राधाकान्तप्रसाद जी मुखिया

आय वेद प्रचार मण्डल मेवात के निर्देशानुसार आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका के तत्वावधान में सप्त दिवसीय आर्य वीर दल चरित्र निर्माणप्रशिक्षण शविर पूज्य स्वामी प्रेम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

–मन्त्री

## शोक समाचार-

–आयसमाज बिन्दकी (फतेहपुर) के प्राण कर्मठ सदस्य भूतपूर्व प्रधान दयानन्द इन्टर कालिज बिन्दकी का लम्बी बीमारी के पश्चात २२ जुलाई को देहान्त हो गया । आप की अन्त्येष्टि संस्कार में सभी प्रसिद्ध पुरुष सम्मिलित हुये । अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया । एक महती शोक-सभा मे दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई ।

—रामनारायण शास्त्री

—आर्यसमाज रेलवे कालोनी (असुरन) गोरखपुर के मेरु दण्ड, कर्मठ समाज-सेवी एवं अति दीर्घ काल तक आर्यसमाज के प्रधान पद का कार्यभार उत्कृष्टतापूर्वक वहन करने वाले श्री सत्यदेव जी कपूर का दि० ७-८-६९ को आकस्मात् हृदय-गति अवरुद्ध हो जाने पर देहावसान हो गया । आप कुछ दिनों से हृदय-रोग से पीड़ित थे ।

—मन्त्री

–दुःख है कि १८ जुलाई को कुतुबपुर के श्री प० जयशंकर जी का जिगर में फोड़ा निकलने के कारण देहावसान हो गया । आप अलीगढ़ जिले के प्रमुख कार्यकर्त्ता थे ।

–नरेन्द्रदेव

–दुःख है कि २५ जुलाई को मुगलसराय के श्री रामओमप्रसादजी आर्य भिक्षु की माता जी का देहावसान हो गया । आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया । आर्य समाज मुगलसराय में दिवगत आत्मा की शान्ति और दुखित परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई । श्री आर्य भिक्षु जी ने १०१) तथा एक बड़ी आर्यसमाज को प्रदान की ।

—[illegible] मन्त्री

[पृष्ठ १० का शेष]

विविध भाषाओं का ज्ञान विज्ञान अवश्य प्राप्त करें, किन्तु अपनी राष्ट्र-भाषा का समादर तथा सम्यक् परिज्ञान एवं मनन-अध्ययन विशेष रूप से करें । हम अंग्रेजियत के रङ्ग में इस प्रकार रङ्ग रहे हैं कि अपने देश की जलवायु, स्थिति के अनुसार परिधान भी पहनने मे लज्जा का अनुभव करते हैं । किसी भी अंग्रेज ने भारत मे रह कर स्वदेशी परिधान त्याग कर विदेशी भारतीय परिधान स्वप्न में भी नहीं पहना । अंग्रेज जब तक रहा, अपने देश की रीति के अनुसार अपने देश के जूते तक का समादर करता रहा । समय पालन के प्रति अंग्रेजी जाति विश्व विख्यात है ही । अनुशासन में भी उसने उच्च गौरव प्राप्त किया है । वैवाहिक मितव्ययिता में भी अंग्रेजी जाति विश्व में अग्रणी है ।



स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०बी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

'वय जयेम ] लखनऊ-रविवार भाद्रपद ९ शक १८९१, भाद्रपद कृ० ४ वि० स० २०२६, दि० ३१ अगस्त १९६९ [ हम जीतें

*परमेश्वर की अमृतवाणी—*

# वेद शान्तिप्रद हैं, वेद का स्वाध्याय शान्तिप्रदान करता है

ओ३म अय ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शन्तम ।
अथा सोम सुत पिब ऋ० १ । १६ । ७

(अयम) यह (अग्रिय) सबसे पहला पूर्वजों का भी हितकारी (स्तोम) स्तुत समूह = वेद ज्ञान (हृदिस्पृक्) हृदय को स्पर्श करता हुआ (ते) तेरे लिये (सन्तम) अत्यन्त शान्तिदायक हो। (अथ) इस के पश्चात अर्थात् वेद ज्ञान प्राप्त करके (सुतम) तय्यार किया गया (सोमम) संसार का ऐश्वय (पिब) पान कर।

पक्षपात रहित सभी विद्वान् इस बात मे सहमत हैं, कि वेद ससार में सबसे पुराना ग्रन्थ है। इसी वास्ते इसे अग्रिय कहा है। यह अग्रो का पहलो का भी हितकारी है। सबसे पहला ज्ञान भगवान् से मिलना चाहिये, वह वेद है। कणाद महर्षि तो इसी कारण वेद की प्रामाणिकता मानते हैं—

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् = ईश्वर वचन होने से वेद की प्रमाणता है।

यह वेद 'स्तोम' है, स्तुति समूह है। तृण से ब्रह्म पर्य्यन्त सभी पदार्थों की स्तुति-गुण गाथा—इसमे है। उदाहरण के लिये जीव के सम्बन्ध मे कहा है— अपश्य गोपामनिपद्यमानम्—

मैंने अविनाशी और गोप = इन्द्रियों के स्वामी को देखा है। आत्मा को इन्द्रियो से पृथक् तथा अविनाशी कहा है। इसी प्रकार परमात्मा के सम्बन्धो मे कहा है—

वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्यवर्ण तमस परस्तात।

(म) मैंने उस महान् सूर्यों के प्रकाशक, अज्ञान अन्धकार से विरहित सर्व व्यापक के दर्शन किये हैं।

शान्ति तो परमात्मा के दर्शन से होती है, जैसा कि कठोपनिषत् मे कहा है—

एकोवशी सर्व भूतान्तरात्मा एक रूप बहुधा य करोति।
तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषा सुख शाश्वत नेतरेषाम् ५।१२
नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको बहूना यो विदधाति कामान्
तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषा शान्ति शाश्वती नेतरेषाम ॥५।१३

जो सब पदार्थों का अन्तरात्मा, सबको नियन्त्रण मे रखने वाला अकेला ही एक प्रकृति रूपी बीज को अनेक प्रकार का बना देता है। आत्मा मे रहने वाले उस परमात्मा के जो ध्यानी दर्शन करते हैं, उन्हे शाश्वत सुख मिलता है। दूसरो को नहीं। वह नित्यो मे नित्य अर्थात् सदा एक रस और चेतनो का चेतन अर्थात सर्वज्ञ है, वह अकेला अनेको की कामनाये पूरी करता है। उस आत्मस्थ के जो धीर दर्शन करते हैं, उन्हे ही अखण्ड शान्ति मिलती है, दूसरो को नहीं।

ठीक है, शान्ति परमात्मा के दर्शन से मिलती है, किन्तु परमात्मा के सम्बन्ध मे यथार्थ ज्ञान वेद से ही मिलता है। तभी तो औपनिषद महर्षियो ने कहा है— नावेद विन्मनुतो त बृहन्तम्

वेद न जानने वाला उस महान् भगवान का मनन नहीं कर पाता।

अत वेद का श्रवण, अध्ययन, मनन, चिन्तन धारण प्रत्येक शान्ति के अभिलाषी का कर्त्तव्य है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन [ १ । १३४ । ३९ ]

वेद सर्व व्यापक अविनाशी परमात्मा का ज्ञान कराने के लिये है। भगवान् का आदेश है, कि जब इस प्रकार तू इस अग्रिय ज्ञान को हृदय स्पर्शी करले, अथा सोम सुत पिब = तब निष्पादित सोम का—ऐश्वर्य का—पान कर।

कितनी सुन्दर बात कही है, पहले ज्ञान, पीछे अनुष्ठान।

पहले पदार्थों को जान, पश्चात उनका यथा योग्य उपयोग कर। ऋषि इसीलिये ज्ञान को कर्म से पूर्व स्थान देते हैं।

ध्वनि निकलती है, यत वेद तुझे पदार्थों का ज्ञान कराने के लिये तथा तदनुसार कर्म करने के लिये दिया गया है। अत तू वेद का अध्ययन करके उसके अनुसार जीवन बना और बिता। इसी मे सफलता है। इसी मे तेरा कल्याण है, और इसी मे तुझे चिर शान्ति प्राप्त होगी।

आओ! वेद सप्ताह के इस पावन पर्व पर नित्य वेद के स्वाध्याय का व्रत लेकर अपने जीवन को पवित्र बनावे।

| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | ३२ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम. ए.

इस अंक में पढ़िए !

# स्वतन्त्र विषय "रूप"


✱ श्री पं० विश्वबन्धुः जी शास्त्री, 'साहित्यरत्न
उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश


जिसकी अधखिली कली लाखों,
खिलने से पहले मुरझातीं।
जिसकी यौवन-मादकताएँ,
फलने से पहले झर जातीं॥

जिसको अन्तर की आधि-व्याधि,
अनवरत सताया करती है।
जिसकी आहो की मूक मार;
करुणा को खाया करती है॥

जिसकी तड़पन सिसकन-कसकन–
पर जाल बिछाया जाता है।
जिसके अगणित शिशु-शावक-गण
को लक्ष्य बनाया जाता है।

जिसकी वेणी की उपमा मे,
पीछे रहते अहि भृङ्ग - जाल।
जिसकी मुख - उपमा मे अड़ते–
हैं चन्द्र, बुंज सड़ते दुकाल॥

अनुपम - नासा के वर्णन में,
हैं कीर सदा शरमा जाते।
खञ्जन-पक्षी पिंजड़ों में हैं,
इस तरह नयन उपमा पाते॥

जो अधर सुधा को अधर करें,
अधराधर चक्र चलाते थे।
रूपसि के ताने-बाने में,
सौन्दर्य-वसन बन जाते थे॥

पर आज उसी सुन्दरता का,
श्मशान जगाया जाता है।
पर आज उसी मानवता का,
अपमान सजाया जाता है॥

अन्धी आंखों में अञ्जन का,
आंजना न अबतक बन्द हुआ।
खल्वाट सिरों पर कृत्रिम-कच,
साजना, अरे! स्वच्छन्द हुआ।

नासिका पिचककर बैठ गई,
फिर भी शुक-शावक शरमाते।
अधरों पर पपड़ी पड़ी हुई–
फिर भी बिम्बा फांसी खाते॥

भ्रू का विभ्रम ही शेष रहा,
फिर भी स्मर धनुष कहा जाता।
नारी का करुणामय दर्शन,
कान्ता-कटाक्ष बन बहलाता॥

शोषण की भट्टी जलती है,
शोषित सुलगाया जाता है।
कञ्चन को अग्नि तपाकर,
निकषा पर अजमाया जाता है॥

हैं पड़ीं समस्याए लाखों,
टुक! उनकी ओर निहारो तुम।
मानवता आज कुरूप बनी,
उसका तो रूप सँवारो तुम॥

सब ओर मनोमालिन्य भरा,
फिर रूप न बनने पायेगा।
सब ओर कपट का जाल बिछा,
फिर भूप न बनने पायेगा॥

मेरा प्रिय भारत देश कहो,
जग गुरु कैसे बन सकता है,
मम सत्य अहिंसा का वितान,
क्यो कर जग पर तन सकता है॥

जब राम अयोध्या-हृदय ईश,
थे चले गये बन-पथ गहकर।
चल पड़े भरत भी अश्रु भरे,
बन को अग्रज के शुचि-पथ पर॥

इस तरह केकई का कलङ्क,
दोनों भाई देखे धोने।
ऋषि-मुनि-समभ, गिरि चित्रकूट–
पर थे देखो दोनों रोते॥

ऐसा था राम-भरत-सङ्गम,
सङ्गम क्या समता कर पाये।
यो रूप सँवार, सुपथ गामी—
श्री राम विश्व मन को भाये॥

भारत के उज्ज्वल-चरित-बीच,
रावण-सा धब्बा पाया था।
था मिटा दिया श्री रामचन्द्र ने–
जग-जन-मन हरषाया था॥

यों भारत का सास्कृतिक रूप,
अनुरूप नहीं होने पाया।
यों जग गुरु प्यारा देश नहीं,
सस्कृति अपनी खोने पाया॥

प्राचीन हो रहा अस्तङ्गन,
नव-द्युति का स्वागत गान करो।
प्राचीन खण्डहर के ऊपर,
नव सस्कृति का आधान करो॥

क्यों करते हो अवरुद्ध मार्ग,
मानव के निष्प्रभ, प्राणों का।
क्यों खून किये जाते हो तुम,
मानवता के अरमानों का॥

श्री राम, कृष्ण, शकर, रामानुज,
बल्लभ ने जो अपनाया।
श्री दयानन्द, गोखले, तिलक,
गांधी ने जिसको पनपाया॥

श्री वीर हकीकत, बन्दा ने,
हंस-हंस जिस पर की कुर्बानी।
आजाद, भक्तसिंह, बिस्मिल ने,
जिसकी कीमत थी पहचानी॥

नेता सुभाष को भुला सकूं,
इतनी तो मुझ में शक्ति नहीं,
दीपक पर उस परवाने-सी,
देखी मैंने अनुरक्ति नहीं॥

इन अमर शहीदों की खूनी–
होली का कुछ तो ध्यान करो।
दीवार बीच चुन गये फतहसिंह–
जोरा का अभिमान भरो॥

राणा की रानी बच्ची का,
भूखो मरना तो याद करो।
राणा सांगा के घावों का—
कुछ तो मन मे उन्माद भरो।

इन भूल-भुलैयों में फसकर,
क्यों अपनी आयु बिताते हो।
बेसुरा राग गा गा करके,
क्यो सुरता को शरमाते हो॥

यदि और नही कुछ याद रहा,
तो यह तो भूल नहीं सकते।
चित्तौड़-तड़ाग-पद्मिनी का,
क्या रज तुम भूल नहीं सकते॥

भारत का रूप सुरूप बना,
इन सबकी त्याग-तपस्या से।
भारत जग भर का भूप बना,
इनकी प्राणान्त समस्या से॥

पर तुम अनुरूप किये देते,
गा-गा कर कलुषित निन्द्य-गान।
तुम स्वय रूप को पहचानो,
तब कर सकते हो अन्य मान॥

कवि! सावधान, मन बहलाने का–
साधन बनना ध्येय-भ्रष्टि।
कवि! सावधान, तुमको करनी है,
मानव-सस्कृति अमर-सृष्टि॥

तुमको ही सूखी ठठरी पर,
कुछ मांस चढ़ाना ही होगा।
तुमको ही शुष्क धमनियों में,
कुछ रक्त बढ़ाना ही होगा॥

तुम को ही तो माता का लज्जा-
पट अब रक्षित रखना है।
तुमको ही तो कर्त्तव्य-मार्ग पर
चल, कटु-फल को चखना है॥

उन भूखे बच्चों के कुम्हलाये,
सूखे वदन निहारो तुम॥
मुसकान न जिन पर आ पाई,
ऐसे अधरों पर हारो तुम॥

फिर देखें कैसे राग-रग का,
चख पर चश्मा चढ़ पाता?
फिर देखें कैसे भाव भङ्गिमा,
वर्णन का कर बढ़ पाता॥

तुम कर्णधार बनकर सचमुच,
पतवार हाथ में अपना लो।
मत बनो लकीर के हो फकीर,
नख-शिख-वर्णन का सपना लो।

लखनऊ–रविवार ३१ अगस्त ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## लोकपाल और लोकायुक्त

भारतीय संसद् में लोकपाल और लोकायुक्त नियुक्त करने सम्बन्धी विधेयक पर विचार चल रहा है। इस विधेयक द्वारा मन्त्रियों और सचिवों के प्रति जनता की भ्रष्टाचार सम्बन्धी शिकायतें सुनी जा सकेगी। मन्त्रियों के विरुद्ध लोकपाल शिकायतों की जांच कर सकेंगे, और लोकायुक्त सचिवों के विरुद्ध जांच करेंगे।

देश में व्याप्त प्रशासनिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध दीर्घकाल से व्यापक असन्तोष व्यक्त किया जाता रहा है, परन्तु भ्रष्टाचार का सम्बन्ध मन्त्रियों के साथ होने के कारण जनता की पुकार कोई नहीं सुनता।

उत्तर प्रदेश की सविद सरकार ने एक अध्यादेश जारी कर इस प्रकार की जाँच के लिये एक सुविधा व्यवस्था की स्थापना की थी, परन्तु वह अध्यादेश सविद सरकार भङ्ग होने के कारण कानून न बन सका। बाद मे भी काग्रेस सरकार ने उसकी उपेक्षा ही कर दी। अब केन्द्र मे इस विधेयक द्वारा नयी व्यवस्था के लिये जो कदम उठाया जा रहा है, इसका हम हार्दिक स्वागत करते है।

हम इस विधेयक का समर्थन करते हुये यह चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, कि विधेयक का उसकी उदात्त भावना के अनुरूप ही पालन होना चाहिए। केवल जनता को धोखे मे रखने के लिये ही ऐसे कानूनो को नहीं बनाये रखना चाहिये।

हम इस बात को इस लिये कहने के लिये विवश हुये हैं, क्यो कि पहले भी सतर्कता आयोग और केन्द्रीय गुप्तचर विभाग आदि की कानूनी व्यवस्थायें बनी हुई हैं, परन्तु भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, कि इस विधेयक से बने लोकपाल और लोकायुक्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन भावनाओ को सन्तुष्ट कर सकेंगे। यदि ऐसा हो सका तो जनता में सरकार के प्रति विश्वास बढ़ेगा, और प्रशासन मे स्वच्छता बढ़ेगी।

## चेक स्वतन्त्रता अपहरण

एक वर्ष पूर्व चेकोस्लोवाकिया की स्वतन्त्र सरकार के विचारों को दबाने के लिये रूस ने अपनी सेनायें वहाँ भेजकर जो आतङ्क स्थापित किया था, उसका समस्त विश्व में उग्र विरोध हुआ था। एक वर्ष बाद उसी आतङ्क का स्मृति दिवस वहाँ मनाया गया, जिसे वहाँ की जनता ने अपना अपमान समझा और उग्र विरोधी प्रदर्शन किये। हम चेकोस्लोवाकिया के वीर नागरिकों की स्वातन्त्र्य भावनाओ का आदर और स्वागत करते हैं। हमे खेद है कि हमारी भारत सरकार के कर्णधार जो आज आत्मा की आवाज की दुहाइयाँ देते नहीं अघाते। स्वतन्त्रता के इस चीरहरण के विरुद्ध अपना मुँह क्यो नहीं खोलते। क्या हम इस धारणा को अपने मे दृढ़ करे, कि हमारे कर्णधार तटस्थता की घोषणायें करते हैं, पर दूसरो की अप्रसन्नता से डरते हैं, ऐसी स्थिति मे आत्मा की आवाज का नारा क्या दिखाटी ही नही माना जायगा।

## पेकिंग से केरल को चावल

भारत के चम्पारन (बिहार) रेलवे स्टेशन पर नेपाल से लाये गये चावलो की बोरियाँ केरल के लिये बुक करायी जा रही थीं, जिन पर लिखा था, चीन गणराज्य में निर्मित। सतर्कता पूर्वक इन बोरियो को केरल जाने से रोक लिया गया है।

परन्तु, इस सम्बन्ध मे अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१—चीन से केरल के लिये ही चावल क्यो भेजा गया।

२—चीन भारत की केन्द्रीय सरकार के बिना यह सहायता कैसे और क्यों दे रहा है।

३—इस प्रकार के तस्कर व्यापार को कैसे रोका जा सकता है।

चीन से केरल के लिये चावल का भेजा जाना इसी लिये हो रहा है, क्योंकि वहाँ साम्यवादी दल प्रधान सरकार है, और वहां की जनता को चीन यह अनुभव कराना चाहता है, कि चीन वालों को केरल वासियो की कितनी चिन्ता है।

चीन सीधा केरल को अन्न भेजकर भारत के महत्त्व को कम करना चाहता है।

जो व्यापारी भारत सरकार के नियमों के विरुद्ध काम करते हैं, उनके विरुद्ध सरकार को कठोर कार्यवाही की जानी चाहिये।

हम आशा करते हैं, कि सरकार चीन की ओर से आने वाली इस प्रकार की अवैध सामग्री पर सख्ती के साथ निगाह रखेगी, और इसी प्रकार अवैध रूप से भारत से जाने वाले सामान को भी जाने से रोकेगी।

जिन रेलवे अधिकारियो ने चावल की बोरियो को केरल जाने से रोका है, उनकी कर्तव्य निष्ठा और देश भक्ति की हम प्रशसा करते है। हमे आशा है, और कर्मचारी भी इसी प्रकार सतर्कता से कार्य करेगे।

भारतीय ससद मे विदेशी धन का भारत मे व्यापक उपयोग होने पर भारत मे गम्भीर चिन्ता प्रकट की गई है।

भारत मे रूस और अमेरिका दोनो ही अपना धन भेज कर यहां के बौद्धिक वर्ग को प्रभावित करने का यत्न करते हैं। चीन की ओर से भी चाइना बैंक पहले ऐसा कार्य करता था, पर अब उसने सीधे मनीआर्डर आदि भेजने की नीति अपनाई है।

जो धन सीधे आता है, उसको तो कड़ाई के साथ रोक-थाम की जानी चाहिए। परन्तु साथ ही अमेरिका और रूस दोनों का ही भारतीय मुद्रा के रूप में भारत में धन जमा है, उसके विनियोग पर भी सख्ती के साथ नियन्त्रण होना चाहिये।

अभी पिछले दिनों ससद में एक सदस्य ने बताया कि एक समाचार-पत्र में रूस द्वारा प्राप्त किसी व्यक्ति के १८ लाख रुपये के हिस्से लगे हैं, और वह समाचार पत्र भारत के प्रधान मन्त्री के गीत गाता है। कोई समाचार पत्र प्रधान मन्त्री की प्रशसा करे इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं, परन्तु दूसरो की आर्थिक सहायता से पनप कर भारतीय राजनीति मे हस्तक्षेप स्वदेशाभिमान के विरुद्ध है।

गृह मन्त्री श्री चह्वाण ने सदन को यह विश्वास दिलाया है, कि सरकार विदेशी धन के इस हस्तपक्षेप को कठोरता से रोकेगी। हमे गृह मन्त्री के इस आश्वासन पर विश्वास है, और हम उनकी सफलता चाहते हैं। परन्तु गत निर्वाचन के समय इस प्रकार के आरोपो का निराकरण करने का भी आश्वासन दिया गया था, पर बाद मे लीपा-पोती कर दी गयी, हमे आशा है इस बार ऐसा न होगा, और चह्वाण दृढ़ता से काम करेगे।

# आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण (आन्ध्र) काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में पूर्ण सहयोग देगी

## सभा प्रधान श्री प० नरेन्द्र जी का पत्र

माननीय श्री महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री
नमस्ते !

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के अवसर पर जिन सम्मेलनों के आयोजन की रूपरेखा बनाई गई है, वह उत्तम है।

यहां के विद्वानों के नाम उनके पतों के साथ इस प्रकार हैं—

१-श्री प० गोपदेवजी शास्त्री
२-श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालंकार
द्वारा श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर
प्रेम मन्दिर, नारायण गुडा,
हैदराबाद आ० प्रा०

श्री प० नरेन्द्र जी

यहां के गुरुकुल निम्नप्रकार हैं—१-गुरुकुल घटकेश्वर-घटकेश्वर जि० हैदराबाद आ० प्र०, सी० रेलवे

२-कन्या गुरुकुल बेगमपेठ-हैदराबाद आ० प्र०।

सुझाव १-इस अवसर पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के काशी शास्त्रार्थ को पुस्तकाकार रूप में सुन्दरता से प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाए।

२-इस अवसर पर कुछ सिद्धान्त विषयों पर सभा के उचित समझने पर, शास्त्रार्थ का आयोजन करना उचित होगा।

३-वाराणसी में किसी विशेष स्थान पर एक स्मारक स्तम्भ खड़ा किया जाये, जिस पर श्री स्वामी जी के शास्त्रार्थ के विषय, तिथि और किन विद्वानों के साथ, किनकी अध्यक्षता में हुआ। आदि विवरण अंकित हो।

४-मेरे विचार में देश विदेश के प्रचलित सम्प्रदायों के विद्वानों को बुलाकर किसी विशेष विषय पर विचार प्रकट करने के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया जाये।

४-मैं समाजों के नाम उनके पतों के साथ भेज रहा हूं। आप सीधे उन समाजों के नाम टिकट आदि भेज दें। मैं इस सम्बन्ध में सारी समाजों के नाम विज्ञप्ति भेज रहा हूं।

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये मेरे योग्य कोई सेवा हो तो आप जब भी चाहें, मुझे लिख सकते हैं। —नरेन्द्र
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण

—२५ जुलाई से ३० जुलाई तक आर्य समाज सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) में श्री महेन्द्रदेव जी शास्त्री के वेदोपदेश हुए। जनता ने बड़ी रुचि से सुने। शास्त्री जी के सरस मधुर प्रवचनों का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

—आनन्दप्रकाश मन्त्री

—आर्य समाज सहतवार ने अपने सदस्य श्री हरिहरप्रसाद जी के देहान्त पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —मन्त्री

—७ से १४ जुलाई तक आर्य समाज मैनपुरी में आचार्य श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री की वेदकथा हुई। —मन्त्री

# सत्यासत्य निर्णय

## क्या यह सत्य है ?

१-सार्वदेशिक सभा की जिस अन्तरङ्ग सभा बैठक में प्रधान को सदस्य स्वीकार करने का अधिकार दिया गया, उसमें निश्चय सर्वसम्मति से नहीं किया गया था, अपितु दो वरिष्ठ सदस्यों ने इस निश्चय के विरुद्ध विमत टिप्पणियां अंकित करायी थीं।

इसके विपरीत आर्य जनता को सत्य से अपरिचित रखने के लिये विज्ञप्तियों में प्रचारित किया गया है कि प्रधान को सर्व सम्मति से अधिकार दिया गया था। इस सर्व सम्मति की ओट में पंजाब के कल्पित १५ सदस्यों के लिये जाने को वैध सिद्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सार्वदेशिक सभा के वार्षिक निर्वाचन में मतभेद होने पर केवल १५ सदस्य ही सदन से उठे, यह कहना कहां तक सत्य है। जब कि अनेक अन्य प्रान्तों के सदस्यों से पूछ ताछ की गई कि आपने दूसरी सभा में क्यों भाग लिया।

क्या श्री रामगोपाल जी जो आर्य जगत के नाम विज्ञप्ति के लेखक हैं। इन प्रश्नों की वास्तविकता पर प्रकाश डालेंगे।

—एक आर्य बन्धु

## आर्यसमाज मन्दिरों के सम्बन्ध में सभा की घोषणा ?

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों के सचालकों को विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अधिकारियों की जानकारी में कुछ इस प्रकार की चीजें आई हैं कि कतिपय स्थानों पर लोग ऋषि दयानन्द अथवा डी० ए० वी० स्कूल का नाम लगाकर आर्यसमाज मन्दिरों में बच्चों की शिक्षा संस्था खोलना चाहते हैं, अथवा आर्य मन्दिरों को किराया लेकर बरात आदि ठहराने के लिये देना चाहते हैं।

अतः सभान्तर्गत सर्व आर्यसमाजों के अधिकारियों को आदेश प्रसारित किया जाता है कि आर्यसमाज मन्दिर इस प्रकार के कार्यों के लिये न दिये जायें, और न मन्दिरों में बरातादि ठहराई जाय। संस्था खोलने से पूर्व सभा की अनुमति लेना अनिवार्य होगी।

## शुभ समाचार

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि चौक आर्य समाज प्रयाग के पुराने आर्य सभासद अनुभवी योग्य श्रीयुत बा० प्रभात कुमार जी आर्य एडवोकेट द, हैस्टिंग्स रोड, इलाहाबाद ने अपना समय आर्यसमाजों के अभियोग जो हाईकोर्ट इलाहाबाद में विचाराधीन हैं, अथवा आगे दर्ज दायर होंगे, उन सभी की निःशुल्क सेवा करने का वचन दिया है। अतः आर्यसमाजों के अधिकारियों से प्रार्थना की जाती है कि उक्त एडवोकेट की सेवाओं से लाभ उठाने की कृपा करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए० सभा मन्त्री

## श्री पं. आशारामजी पांडेय उपमन्त्री सभा का प्रोग्राम

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री प० आशाराम जी पाण्डेय ३० अगस्त को आर्यसमाज मऊनाथ भंजन (आजमगढ़) पहुंच रहे हैं। वे ३० और ३१ अगस्त को वहीं रहेंगे। वे आर्यसमाज मऊनाथभंजन और डी० ए० वी० कालेज का निरीक्षण करेंगे। दोनों संस्थाओं के अधिकारी अपने-अपने रजिस्टर तैयार रखें, और उनके पहुंचने पर निरीक्षण करावें। तथा सभा के वेद प्रचार फण्ड के लिये व शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये उन्हें पर्याप्त धन प्रदान करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए०
मन्त्री सभा

# गीतोपाख्यान

[ ले०—श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

१—श्रीमद्भगवद्गीता भारत का वह ग्रन्थ रत्न है, जिसके अनुवाद ससार की सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुके हैं और जिसके नित्यप्रति नये-नये भाष्य, टीका-टिप्पण, सिद्धान्त-ग्रन्थ आदि-आदि प्रकाश में आते रहते हैं। भारत में तो गीता-ग्रन्थ बहुत अधिक छपता और पढ़ा-सुना जाता ही है, ससार के अन्य भागों में भी बहुत से लोग नित्यप्रति गीता का पठन पाठन और मनन करते हैं। यहां पर मौखिक वार्तालापों मे भी गीता की ही सर्वाधिक चर्चा होती है। भारतीय भाषाओं में गीता के छोटे-बड़े गद्य-पद्यात्मक अनुवादों और भाष्यों की सख्या तो कई सैंकड़ों को पार कर चुकी है। गीता विषयक अन्य साहित्य भी यहां बहुत बड़ी मात्रा में रचा जा चुका है, और रचा जा रहा है। हिन्दू तो गीता को पढ़ते ही हैं, ईसाई एवं मुसलमान आदि अहिंदू भाई भी गीता को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। यहां के साधारण लोग भी गीता के विषय में कुछ न कुछ जानते हैं। भारतीय जन-जीवन पर गीता की सुस्पष्ट छाप अंकित हो चुकी है। भारतीय जन-मानस में गीता भली प्रकार घुल मिल चुकी है। ससार के लिये गीता भारत की एक बड़ी देन है। अखिल मानवता के लिये गीता भारतीय ऋषियो द्वारा प्रदत्त एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कल्याण-सूत्र है। वैदिक सिद्धान्तो को मानव-जीवन मे ढालने और प्रतिष्ठित करने के लिये गीता एक सरल प्रवेशिका भी है, पथ प्रदर्शिका भी। आने वाली सहस्रो शताब्दियो तक भी गीता की गौरव-गरिमा इसी प्रकार अक्षुण्ण बनी रहेगी, इसकी सर्व प्रियता और बढेगी।

२—गीता कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है। अपने मूलरूप मे यह भारत के ससार - प्रसिद्ध ग्रन्थ 'महाभारत के 'भीष्म पर्व' का एक अत्यन्त और बहुत छोटा-सा उपाख्यान मात्र ही है। जो गीता का पहला अध्याय है, वही भीष्म पर्व का पच्चीसवां अध्याय है। जो गीता का अट्ठारहवां अध्याय हैं, वही भीष्म पर्व का बियालिसवां अध्याय है। जो गीता का महात्म्य इन दिनो प्रचलित है, वही भीष्म पर्व का तैतालिसवां अध्याय है।

३—गीता की प्रवर्त्तना के विषय में संसार में जो दन्त कथा प्रसिद्ध है और जिसे सभी जानते हैं, वह यही है कि महाभारत के महायुद्ध के आरम्भ में अर्जुन अपने सम्बन्धियो आदि की मृत्यु एवं संसार के भीषणतम विनाश की कल्पना-मात्र से ही अत्यन्त विषाद युक्त होता है। श्री कृष्ण जी जो कि एक महान् तत्त्व-ज्ञानी, महा पुरुष योगी और राजनीतिज्ञ, अर्जुन के निकट सम्बन्धी ( ममेरे भाई और साले भी ) थे, एव सारथी-रूप मे अर्जुन के रथ पर ही विराजमान थे, वे अपने उपदेश द्वारा अर्जुन के विषाद का निवारण कर देते हैं। श्रीकृष्ण जी का वही उपदेश अर्थात् श्रीकृष्ण और अर्जुन का वह पारस्परिक सवाद जो महाभारत युद्ध के आरम्भ मे कुरुक्षेत्र के समरागण मे हुआ था, वही हमारा यह प्रचलित गीता ग्रन्थ है। गीता की प्रवर्त्तना की यह बहु-प्रचलित कथा सर्वथा ही झूठ तो नहीं है, तथापि पूर्ण सत्य भी नहीं है।

४—अपने मूल रूप मे गीता का उपदेश कभी हुआ होगा। परन्तु महाभारत के जिस सन्दर्भ मे वर्तमान गीता का उल्लेख है, वह युद्ध के आरम्भ का प्रसग नहीं है। जो कुछ भी वह है, उसे सभी गीता-प्रेमियो को भली प्रकार जानना चाहिए। प्रचलित गीता पुस्तको मे उस मूल और महत्वपूर्ण प्रसग का कुछ भी उल्लेख नहीं किया जाता। यह एक बड़े दोष और परिताप की बात है। कभी कभी हमे यह शका भी होती है कि आरम्भ मे किसी सम्पादक ने जान-बूझ कर ही गीता की प्रवर्त्तना के उस मूल प्रसङ्ग को प्रचारित न किया होगा। फिर तो किसी ने गीता की पृष्ठ-भूमि मे झांककर देखने की कोई जरूरत ही न समझी होगी। कैसे आश्चर्य की बात है कि गीता का अधिकाधिक प्रचार और पठन-पाठन होने पर भी, विद्या, विज्ञान और समालोचना प्रधान आज-कल के युग मे भी वही पुरानी भेड़-चाल देखने में आ रही है। गीता-विज्ञान के विशेषज्ञ भी महाभारत में गीता की वास्तविक स्थिति से बेखबर हैं। ऐसी अवस्था मे गीता का ठीक-ठीक मूल्यांकन कैसे हो सकता है ? इतना ही नहीं, गीता-विज्ञान की पृष्ठ-भूमि में वर्तमान गीता की प्रवर्त्तना के अत्यन्त महत्वपूर्ण बहुत से मनोवैज्ञानिक कारण भी ससार की दृष्टि से ओझल से हो गये हैं।

५—क्या है, वह मूल-प्रसग ? कौन-सी है, वह गीता विज्ञान की पृष्ठ-भूमि ? और कौन-से हैं, वे गीता ग्रन्थ की प्रवर्त्तना के मनोवैज्ञानिक कारण ? पढ़िये—

६—उधर कुरुक्षेत्र में युद्धारम्भ के आयोजन हो रहे थे। इधर महर्षि व्यास जी हस्तिनापुर मे पधारे। अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर श्री व्यास जी यह भली प्रकार जान चुके थे कि युद्ध को अब टाला नहीं जा सकता। युद्ध होगा और उसके परिणाम स्वरूप भारी विनाशकाड भी प्रस्तुत होगा ही। चिन्ता-मग्न राजा धृतराष्ट्र से व्यास जी ने कहा कि वे दुर्योधन को समझा-बुझाकर युद्ध की विषमताओ को और निकट भविष्य मे ही होने वाले भीषणतम नर-सहार की विभीषिकाओ को रोक सके, तो रोक लें।

७—उत्तर में धृतराष्ट्र ने कहा—"दुर्योधन मेरे कहने मे नहीं है। सब कुछ जान-बूझ कर भी दुर्योधन को दृढता पूर्वक समझाने मे मैं असमर्थ हू। जैसे सब लोग लोभ और मोह के वश में होकर पाप किया करते हैं, वैसी ही मेरी भी स्थिति है। मै विवश हू। क्षमा चाहता हू।"

८—इस पर श्री व्यास जी ने प्रस्ताव किया कि यदि धृतराष्ट्र जी युद्ध की सम्पूर्ण विनाश लीलाओं को अपनी आखों से देखना चाहें, तो उन्हे दर्श-शक्ति दे दी जाये। धृतराष्ट्र ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने कहा—'मैं केवल सुन कर ही सब बातों को जान लेना चाहता हू। उस महा सहार को देखने की क्षमता मुझ में नहीं है।'

९—इस पर श्री व्यास जी ने धृतराष्ट्र के मन्त्री सजय को यह यान्त्रिक सामर्थ्य प्रदान किया कि वह किसी भी प्रकार की क्षति के बिना ही युद्ध क्षेत्र मे जा-आ सकेगा। दूर से ही युद्ध के दृश्य देख और सम्वाद सुन सकेगा। बिना किसी प्रकार की रोक-टोक के आकाश मार्ग मे घूम सकेगा। इस सामर्थ्य के प्रभाव से भूतकाल और भविष्य काल की सब बातें, उसे इच्छा करने पर यथार्थ रूप मे ज्ञात हो जायेगी और वह युद्ध के सभी समाचार यथा-समय धृतराष्ट्र जी को सुना सकेगा।

१०—श्री व्यास जी चले गये। वे समाचार सुनने और दृश्य देखने आदि के क्या-क्या प्रबन्ध कर गये होंगे, इसका थोड़ा सा अनुमान वर्तमान टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन आदि के आविष्कारो के आधार पर हो सकता है। व्यास जी के जाने पर सजय और धृतराष्ट्र का सम्वाद चलता है। पूछने पर सजय युद्ध करने के लिये आये हुये राजाओ का विवरण प्रस्तुत करता है। भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशो के विभिन्न प्रकार के वृत्तान्त भी सुनाये जाने

हैं। इसके बाद युद्ध का कोई भी विवरण तब तक महा भारत ग्रन्थ में नहीं मिलता, जब तक कि अर्जुन के बाणों से आहत होकर श्री भीष्मपितामह जी शर-शय्या पर नहीं लेट जाते।

११—युद्ध का जो सर्व प्रथम समाचार सञ्जय द्वारा धृतराष्ट्र जी को सुनाया जाता है, व॒ यही है कि दस दिन तक कौरव-सेना का सेना पतित्व करने के पश्चात् श्री भीष्म पितामह जी शर-शय्या पर सुला दिये गये हैं। इस समाचार को सुनकर धृतराष्ट्र हक्का-बक्का सा हो गया। वह तो इस समाचार की कभी भी आशा ही न करता था। भीष्म पितामह को तो वह अजेय समझता था, और एक इसी आधार पर वह अपने पुत्रों की विजय को भी सुनिश्चित ही समझता था। अब तो उसे अपने पाँव के नीचे से धरती खिसकती हुई प्रतीत होने लगी। युद्धारम्भ के सभी समाचारों को विस्तार पूर्वक सुनने की उत्सुकता उसके मन मे जाग उठी। उस अवसर पर धृतराष्ट्र ने संजय से जो प्रश्न किया था, वही महा भारत-ग्रन्थ के भीष्म पर्व के पच्चीसवे अध्याय का सर्व प्रथम श्लोक है, और वही हमारी प्रचलित गीता-पोथी के पहले अध्याय का पहला श्लोक भी है। यथा—धृतराष्ट्र उवाच = धृतराष्ट्र बोला—

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
समवेता युयुत्सवः।
मामका. पाण्डवाश्चैव,
किमकुर्वत संजय॥

१२—प्रचलित गीता पुस्तको के पाठ से पाठकों को यह भ्रम होता है कि वे कुरुक्षेत्र के रण क्षेत्र मे होने वाले श्रीकृष्ण और अर्जुन के सम्वाद को पढ़ रहे हैं और इस सम्वाद के समाप्त होने पर ही युद्ध के आरम्भ होने का प्रकरण आगे आवेगा। परन्तु यदि कोई सज्जन महाभारत के भीष्म पर्व में बियालिसवे अध्याय [ गीता के अठारहवें अध्याय ] से आगे पढ़कर युद्ध के वृत्तान्त को खोजेंगे तो उन्हें निराशा होगी। वे देखेंगे कि वास्तविक युद्ध के आरम्भ में तो श्रीकृष्ण और अर्जुन के सम्वाद का कुछ भी उल्लेख नहीं है। जिस अवसर पर गीता का उल्लेख मिलता है उससे तो पहले ही दस दिन तक युद्ध हो भी चुका था।

१३—महाभारत मे गीतोपदेश का उल्लेख दस दिन तक युद्ध हो चुकने के बाद ही हुआ है और वह भी हस्तनापुर मे धृतराष्ट्र और सञ्जय के पारस्परिक संवाद के रूप में। आरम्भ से अन्त तक हमारी यह गीता धृतराष्ट्र और सञ्जय का पारस्परिक सम्वाद ही तो है। फिर भी इसे भूल वश श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद बताया जाता है।

गीतोपाख्यान का यह आरम्भ और अन्त कुछ कुछ औपन्यासिक ढग का चमत्कारपूर्ण और कौतूहल वर्धक तो है; परन्तु यह वास्तविक और ऐतिहासिक घटना क्रम के अनुसार नहीं है। यह गीतोपाख्यान तो श्री व्यास जी द्वारा प्रदत्त शक्तियों वा उपकरणों के आधार पर सञ्जय द्वारा देखा सुना हुआ और फिर सञ्जय द्वारा ही धृतराष्ट्र को सुनाया हुआ उपाख्यान है।

१४—ऊपर सक्षेप में गीतोपाख्यान की पृष्ठ भूमिका का जो उल्लेख किया गया है, उसके अभाव मे हम वर्तमान गीता पुस्तकों को गम्भीर रूप मे त्रुटि पूर्ण समझते हैं। इससे सबसे बड़ी हानि यह हुई है कि गीतोपदेश की वास्तविक अवतारणा का परिज्ञान ही जनता को नहीं हो सका। उस के स्थान पर एक काल्पनिक अवतारणा का प्रचार ससार मे हो गया है। पृष्ठ भूमिका से कट जाने के कारण और उसके परिज्ञान के अभाव में गीता के भाष्यकारो ने एव टीकाकारो ने गम्भीर तम ठोकरें खाई हैं, और गीता ज्ञान के जिज्ञासु वास्तविकता से वचित होकर कपोल कल्पित विवादो मे उलझ गये हैं।

[क्रमशः]

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभाँति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भाँति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी में १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें। इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत मे शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष में दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं, प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि संग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश से करने की कृपा करे। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य में जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से संसार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हें समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन संग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अतः आर्य भाइयों को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप में भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे। निवेदक.—

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान | प्रकाशवीर शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान |
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.ए.<br>मन्त्री | महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम.ए.<br>सयोजक |
| मदनलाल<br>कोषाध्यक्ष | आचार्य विश्वश्रवाः वेदाचार्य<br>प्रचार मन्त्री |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति |

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# काव्य कानन

## श्रावणी सन्देश

श्रावणी सन्देश लाती ।

अवनि का आंचल तपन से तप्त क्षण-क्षण हो चुका हो
जीवनों मे व्यग्रता के बीज कोई बो चुका हो
पवन पावन साथ ले प्रिय
गा रही पावस प्रभाती ॥१

वारिदो की रिमझिमों में पथिक प्यासा रह न जाये
तृप्ति तरणी मे मनोहर बैठ मन मलहार गाये
साम का संगीत सुन्दर
सुकृति जन को शुभ सुनाती ॥२

कल्प तरुवर वेद की शुचि शाख में श्रम डाल डोरी
सुमति सजनी पण्डितों की प्रेम से मिले चित्तचकोरी
सयता सुर सुन्दरी को
ज्ञान झूले में झुलाती ॥३

जागरण की बीण भी सुन जो सुजन अब तक न जागे
पुण्य पथ में प्रगति प्रभुता पा नहीं सकते अभागे
स्वर्ण अवसर जागरण का
चमक चपला है दिखाती ॥४

आ रही ऋषिवर विजय की शास्त्र-अर्थो की शताब्दी
रह न पावे मूर्ति पूजा विश्व यह सुन ले मुनादी
'प्रणव' कवि के काव्य गौरव
का यही गुणगान गाती ॥५

—कविवर आचार्य 'प्रणव' शास्त्री, फीरोजाबाद

## उठो देश वासी !

उठो देश के सच्चे प्रहरी ! निद्रा का अब त्याग करो ।
गोहत्या कलंक भारत का इसे मिटाने हेतु मरो ॥
ऋषि मुनियो की पावन धरती गोशोणित से लाल बन रही ।
चेत नहीं क्या अब भी तुमको हरित भूमि वीरान बन रही ।
राम कृष्ण की जन्म भूमि पर गोमाता का हनन अरे !
शिवा, प्रताप, वीर बन्दा के त्यागो का अपमान अरे !
नीच कृतघ्नी अपनी संस्कृति के विनाश हित तुले हुये हैं ।
सुख शान्ति का भवन गिराने अधिक दर्प से अड़े हुये हैं ।
ओ ! स्वदेश के युवक वधु ! दे रहे चुनौती हत्यारे ।
करो उसे स्वीकार प्रेम से जांय रसातल हत्यारे ।
प्रताप कृष्ण का रक्त अगर तेरे शरीर में बहता है ।
तो गोरक्षा हेतु मरो कर्त्तव्य पुकार के कहता है ।
गोमाता पर छुरी चले है शोक अगर विश्राम करो ।
अत्याचारों के विनाश हित सतत कर्म अविराम करो ।
अगर नहीं सुनते हैं अब भी नम्र प्रार्थना ये शासकगण ।
प्रजातन्त्र में जन भावो का करें निरादर ये शाशकगण ।
ऐसे गोघातक शासन का तख्ता तुम्हे पलटना है ।
करके क्रान्ति जन-जन में देश का नक्शा तुम्हे बदलना है ।

## श्रावणी का पर्व

वेद इन्द्र घन-घोर गर्जते विश्व मे रहे,
मयूर-मुमुक्षु, मन-मोद भर बोलते ।
प्रेम-व्रात, साथ नव-स्नेह भमरी सी वह,
सुमन सुखद ज्ञान-पखुरी को खोलते ।

जलद-कोविद, ऋषि-मुनीश वर्षाते रहे,
वेदामृत-बानी, वारी झरझोर झोलते ।
पर्जन्य सुतृप्तिवत् विश्व रहे शान्तिमग्न,
आनन्द विभोर हो के जन मन डोलते ।

सरिता सुवारी, सदोपदेश सुचारु बहे,
पावन-विचार तट, बैठ जन झूलते ।
गुण कर्मोनुसार व्यवहार वाटिका गृह,
आर्यवर्त्त देश, बाग सुखमय फूलते ॥

अवनी-अनल, व्योम, समीर-सुधा-सा पाथ,
सुखप्रद-मानव के होते अनुकूलते ।
श्रावण, सुहाते गाते-वेद-मन्त्र यज्ञ- कथा,
करते श्रवण सब-वेदो का समूलते ॥

सुधा-सा वर्षाते पाथ, प्रकृति नितान्त शुद्ध,
वसुधा सरस-कृषिकार हो प्रसन्न थे ।
मानव समोद सर्व पशु-जड-जीव सुखी,
धेनु दुग्ध प्रद, धन-धाम भरे अन्न थे ॥

वन-उपवन, फल-फूलते उमड़ आते,
पिक, शुक, केकी, अली लोभते समन्न थे ।
'घनसार' सुख मे बहार हो आनन्द युत,
सर्व सुखी लोग, सुख-साधन सम्पन्न थे ।

घर घर वेद-मन्त्र, पुर-पुर वेद कथा,
दादुर-सी रट ब्रह्मचारी वेद रटते ।
गुरुकुल मे स्नातक पढ़ते थे वेदो को नित्य,
भावना कल्याणप्रद, सद् पथ डटते ॥

वही आज वेद-पथ बता गये दयानन्द,
धार दृढ धारणा को चले जन जटने ।
पोप अरु पाखण्ड का, नाम न निशान कहीं,
एक ही था लक्ष्य सत्य कभी नहीं हटते ॥

कवि—कस्तूरचन्द 'घनसार" उपाध्यक्ष
आर्यसमाज पीपाड शहर

---

वीरो के लिये यह वसुन्धरा नहि क्रूर दुजनो के लिये है ।
जो रक्षा निज संस्कृति की करे उन वद्य सज्जनो के लिये है ।
सुनो देश के वीर वरो ! माता है तुम्हे पुकार रही ।
स्नेह और ममता की दृष्टि से तुमको आज निहार रही ।
गोमता की रक्षा करके भारत का सम्मान बढ़ाओ ।
बने 'जगद्गुरु' फिर यह भारत ऐसा वैदिक युग फिर लाओ ।

—रचयिता—सत्यनारायण द्विवेदी 'विजय'
गगा जमुनी, (बह १२७)

# वेद-प्रचार-सप्ताह

## २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक

### श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोहपूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुँचाइये

**श्रीमन्नमस्ते !**

इस वर्ष "वेद प्रचार सप्ताह" मिति श्रावण शुक्ल १५ से भाद्रपद कृष्णाष्टमी सं० २०२६ तदनुसार दिनांक २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ दिन बुधवार से गुरुवार तक मनाया जायगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्यवीर दल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्य कुमार सभाएं तथा आर्यवीर दल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिये। वेद प्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

## श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध विश्वासों के अन्ध कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान् सूत्रधार तथा राष्ट्रधर्म के प्रबल प्रेरक महर्षि दयानन्द के महान् व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समर्पित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

## वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तरप्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिये सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में डेढ़ सहस्र से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक-एक रुपया वेद प्रचार के लिये इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्त्तव्य समझे, तो वेद प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेद प्रचार के लिये जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

## श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

४ सितम्बर १९६९ भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान्, योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अङ्गिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिये उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रचार किया जाना चाहिये।

प्रातः ७॥ बजे से आर्य मन्दिरों में "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्य मन्दिरों मे अथवा सार्वजनिक स्थानो मे योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

## कार्यक्रम २७ अगस्त से ४ सितम्बर १९६९ तक

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय वेला मे दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय. और इस सत्संग को यथासम्भव प्रति दिन निरन्तर चालू रखने को प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्यान्ह—वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद् बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि—मन्दिरों में वेद कथा का विशेष आयोजन हो। वेदों के आधार पर विश्वबन्धुत्व, मानववाद, बुद्धिवाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्र धर्म आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवम् वाक् संघर्ष—इस सप्ताह मे आर्य वीर दल एवम् आर्य कुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्व कला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिये।

## श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ—श्रावणी [रक्षा बन्धन] के दिन प्रत्येक आर्य परिवारों में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः ७॥ बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनाएं—वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद कथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्म-युद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

टिप्पणी—[१] सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिये।

[२] इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिये हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से, शिक्षणालयों आदि से सम्बन्ध रहा हो और इस समय आर्यसमाज के सभासद् नहीं हैं। ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

निवेदक—

**शिवकुमार शास्त्री**
सदस्य लोक सभा
प्रधान

**प्रेमचन्द्र शर्मा**
सदस्य विधान सभा
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

## सार्वदेशिक सभा की सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की अन्तरङ्ग सभा का आगामी अधिवेशन रविवार ३१ अगस्त १९६९ को पूर्वाह्न १० बजे से १ केनिग लेन नई दिल्ली–१ मे होगा।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
देहली

## आर्य सभाओ के पारस्परिक विवाद समाप्ति की दिशा में

नई दिल्ली १८ अगस्त। आर्यसमाज सगठन समिति के तत्वावधान मे यहाँ एक बैठक हुई जिसमे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दोनो पक्षो की ओर से सर्वश्री ला० रामगोपाल जी, प्रो० रामसिह जी, प० शिवकुमार जी शास्त्री तथा महाशय वीरेन्द्र जी आदि महानुभावों ने भाग लिया। सभी पक्षों ने २४ अगस्त तक अपनी अन्तरङ्ग सभाओं मे निर्णय करके महात्मा आनन्द भिक्षु जीको समस्त अधिकार सौंप देने का वचन दिया। आर्यसमाज संगठन समिति ने निर्णय लिया है कि जो पक्ष असहयोग करेगा उसी के विरुद्ध महात्मा आनन्द भिक्षु जी २७ अगस्त रक्षाबन्धन के दिन से आमरण अनशन करेगे।

—जगदीश विद्यार्थी मन्त्री
आर्यसमाज सगठन समिति

## विश्व भर के मूर्त्ति पूजकों को शास्त्रार्थ के लिये खुली घोषणा

सौ वर्ष हुये तब महर्षि दयानन्द जी महाराज ने मूर्तिपूजा पर काशी में शास्त्रार्थ किया था। महर्षि के युक्ति प्रमाण अकाट्य थे। मूर्ति पूजा के पक्षपाती उनके सामने ठहर न सके, और गड़बड़ घुटाला करके चले गये। मैंने लगभग ४० वर्षों से भिन्न-भिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ की घोषणा कर रखी है। मै इस समय काशी शास्त्रार्थ की शताब्दी मनाता हुआ विश्व भर के मूर्ति पूजको को मूर्ति पूजा विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिये निमन्त्रण देता हू। वह मेरे साथ शास्त्रार्थ करें?

विषय यह होगा–क्या ईश्वर की मूर्ति बनाना और उसकी पूजा करना वेदादि सत्य शास्त्रो और बुद्धि के अनुकूल है?

वैदिक धर्म का सेवक
अमर स्वामी परिव्राजक
संन्यास आश्रम, गाजियाबाद

## धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर

अध्यापिकाओ को धर्म शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिये आर्य समाज लखीमपुर खीरी मे एक प्रशिक्षण शिविर दि० २८-८-६९ से २-९-६९ तक लगेगा। जिसमे प्रशिक्षण लेने के लिये जिला बरेली बदायूं, शाहजहांपुर, मुरादाबाद सीतापुर, नैनीताल तथा पीलीभीत के आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध समस्त आर्य कन्या विद्यालयो से दो-दो अध्यापिकाए आमन्त्रित की गई हैं। प्रशिक्षणार्थियो के आवास, जलपान तथा भोजन की व्यवस्था निःशुल्क आर्यसमाज लखीमपुर खीरी की ओर से होगी।

आशा है सभी अध्यापिकाए २८-८-६९ के प्रातः काल तक अवश्य पहुच जायेगी।

—रामबहादुर एडवोकेट
मन्त्री–प्रदेशीय विद्यार्य सभाउ०प्र०
स्थान–पूरनपुर, जि० पीलीभीत

—आर्यसमाज गोण्डा ने मुसलिम नवयुवक नजरू की शुद्धि करके उसका नाम नन्दकुमार रखा है। —मन्त्री

—१२ अगस्त को उस्मानपुर मे श्रीमती मायादेवी के गृह पर श्री शंकर दयाल जी ने गायत्री महायज्ञ कराया।

—प्रतापसिंह

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद ने श्री रामेश्वर दयाल आर्य, श्री माधोप्रसाद जी, श्री सीताराम जी, श्री रामचरण शर्मा श्री प्रकाशचन्द्र जी यादव की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

—सच्चिदानन्द

—११ जुलाई से १८ जुलाई तक आर्यसमाज समस्तीपुर (बिहार) मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। श्री गगाधर जी शास्त्री, ठा० इन्द्रदेवसिंह, श्री जगदीश प्रसाद आर्य के भाषण हुये।

—मन्त्री

## निर्वाचन–

—आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य।

प्रधान–श्री नारायणदास जी कपूर
उपप्रधान–श्री रत्नचन्द जी सूद
" श्री ला० दीवानचन्द जी
" श्री सरदारीलालजी वर्मा
" श्री ला० रामलाल जी ठेकेदार

प्रधान मन्त्री–श्री ओम्प्रकाश जी एम० ए० बी० टी०।
मन्त्री–सर्व श्री देवराज जी चड्ढा एम० ए०, मोहनलाल जी गुप्त और अजयकुमार जी। कोषाध्यक्ष–श्री बनवन्तराय जी खन्ना। लेखा-निरीक्षक–श्री गुमानसिंह जी

## विश्वेश्वरानन्द संस्थान

आवश्यकता

हिन्दी मासिक, विश्वज्योति के लिये 'उपसम्पादक एवं प्रबन्धक' के रूप में एक अनुभवी और योग्य व्यक्ति चाहिए, जो इग्लिश व सस्कृत का अच्छा जानकार हो, तथा हिन्दी का कुशल लेखक हो। वेतन का निर्णय साक्षात्कार के समय होगा। आवेदन-पत्र सचालक वि० संस्थान, पो०साधुआश्रम, होशियारपुर (पजाब) के नाम तुरन्त भेजें।

## महा० सुन्दरलाल जी का देहान्त

आर्य समाज सिकन्द्राबाद के संस्थापक महाशय सुन्दरलाल जी आर्य का ८० वर्ष की अवस्था में ३० जौलाई को सायकाल स्वर्गवास हो गया। उन्होने तथा उनके यशस्वी करोड़पति व्यापारी पुत्र महाशय मघानन्द जी ने अपने जीवन मे इस समाज को अब तक बीसियो हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की है। उनका अन्त्येष्टि संस्कार प० महेन्द्रदेव जी शास्त्री सुपुत्र स्वर्गीय प० मुरारीलाल जी शर्मा द्वारा कराया गया। उनकी प्रेरणा पर उनके करोड़पति पुत्र महाशय मघानन्द जी ने आर्यसमाज सिकन्द्राबाद में उनके नाम पर कमरा बनवाने के लिये २०००) देने की घोषणा की जो तुरन्त ही दे भी दिये गये। दिनाक ३ अगस्त १९६९ को आर्य समाज सिकन्द्राबाद के साप्ताहिक अधिवेशन मे एक शोक प्रस्ताव पास किया गया, और परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—मन्त्री

## श्रीमती विद्यावती जिज्ञासु का निधन

श्रीमती विद्यावती जिज्ञासु, कनखल का कैंसर की बीमारी से प्राणान्त हो गया।

आप कर्मठ समाज सेविका, स्थानीय मण्डल कांग्रेस की भूतपूर्व प्रधाना, कनखल व हरिद्वार कोआपरेटिव स्टोर की सदस्या, महिला जिला शरणालय की चेयरमैन, व जिला कल्याण समिति की सदस्या का कार्य योग्यतापूर्वक करती रहीं।

आप पंचपुरी कनखल (हरिद्वार) के प्रसिद्ध समाजसेवी देशभक्त श्री वेणीराम जिज्ञासु की धर्म-पत्नी थीं। इस योग्य कर्मठ समाज सेवी देवी के निधन से सम्पूर्ण महिला समाज की क्षति हुई है।

—छज्जूराम मन्त्री
आर्यसमाज कनखल (हरिद्वार)

## आर्यसमाज कोटला(आगरा)

१२ अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर कोटला में आर्य युवकों की बैठक हुई। जिसमें सर्व प्रथम भूतपूर्व प्रधान श्रीप०जगन्नाथप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। इसके पश्चात् नव-निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री हरनारायण उपाध्याय
उपप्रधान—श्री नरेन्द्रप्रसाद „
मन्त्री—श्री रवीन्द्र बाबू गुप्त
उपमन्त्री—श्री देवप्रकाश गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री व्रजेन्द्रकुमार गुप्त
निरीक्षक—श्री अशोक कुमार गुप्त

—रवीन्द्र बाबू गुप्त, मन्त्री

—१२ से १४ अक्तूबर तक आर्य उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर ने जिला आर्य महासम्मेलन मनाने का निश्चय किया है। आर्य जगत् के चोटी के विद्वान् इसमें भाग लेंगे। —मन्त्री

—कुइयां संत ( फर्रुखाबाद ) में नवीन गुरुकुल खुल रहा है।

—अनुभवानन्द

—२७ अगस्त से ४ सितम्बर तक आर्यसमाज गया में वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया जायगा।

—मन्त्री

—आर्य समाज रक्सौल ने ललितकुमार नामक ईसाई की शुद्धि की। —मन्त्री

# श्रावणी या उपाक्रम

लेखिका—श्रीमती आनन्दीदेवी जी विश्नोई, मेरठ

ओ३म् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते
देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून्
कीर्ति यजमान च वर्धय।
अथर्व वेद

भावार्थ—हे वेद रक्षक विद्वान् उठ और विद्वानों को श्रेष्ठ कर्म से जगा। श्रेष्ठ कर्म करने वालों को जीवन आत्मबल सन्तान गौ घोड़े आदि पशु और यश को बढ़ा दे।

श्रावणी उपाकर्म पर्व का प्रमुख सन्देश वेदो के नियमित रूप से विशेष स्वाध्याय का है, क्योंकि जैसे इस पर्व के लिये दक्षिण भारत में प्रचलित उपाकर्म शब्द सूचित करता है, इस दिन वैदिक स्वाध्याय का विशेष से उपक्रम या प्रारम्भ किया जाता था। इस पर्व की जो विधि आजकल प्रचलित है उसमें चारो वेदों के आदि और अन्त के मन्त्रों का पाठ किया जाता है; पर यह वस्तुत: एक अनुकल्प के रूप मे है अर्थात् जो सम्पूर्ण संहिता द्वारा हवन यज्ञ करने मे असमर्थ हैं उन्हीं के लिये कई आचार्यों ने अनुकल्प या गौण पक्ष बतलाये हैं।

१—एक यह कि सूक्त की आदि की ऋचाओ से यज्ञ करे।

२—दूसरा—अनुकल्प यह अनुवाकों की ऋचाओ से यज्ञ करे।

३—तीसरा—यह कि अध्याय के आदि की ऋचाओ से यज्ञ करे।

४—चतुर्थ—यह कि मण्डल के आदि और अन्त की ऋचाओं या मन्त्रो का उच्चारण करे। इससे भी इतना स्पष्ट है कि इस श्रावणी पर्व का मुख्य सन्देश समस्त आर्य नर-नारियो का ध्यान वेदो के नियमित स्वाध्याय की ओर आकृष्ट करना ही है। यह खेद की बात है। अब तक आर्य नर-नारियों का ध्यान इस कर्त्तव्य की ओर विशेष रूप से नहीं गया।

मनु भगवान् ने कहा है—वेदों का स्वाध्याय न करने से मनुष्य शूद्र बन जाता है। वास्तव मे हम पर्वो को सही ढग से मनाने तथा उनका सही वास्तविक रूप जानने के इच्छुक भी नही है। वस्तुत मै अपने कुछ विचार प्रस्तुत कर रही हू। प्राचीन युग मे श्रावणी पर ऋषिगण - साधु - सन्यासी अपने-अपने आश्रमों मे रहते थे। जिज्ञासु और गृहस्थी वहाँ आकर वेदो का ज्ञान प्राप्त करते थे, ब्रह्मचारियो का उपनयन सस्कार होता था।

वेदारम्भ मे आध्यात्म रसास्वादन कराते थे। ज्ञान के प्रसारण से विश्व बन्धुत्व की भावना जाग्रति होती थी। उस समय भारत का अतीत वैदिक युग के रूप मे गौरवान्वित था। महाभारत के बाद भारत का इतिहास इतिवत् है।

वैदिक धर्मोद्धारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को इस बात का श्रेय प्राप्त है, कि उन्होंने मानव जाति को अन्धकार से ज्ञान लोक मे पहुचने के लिये वेद मार्ग पर चलाने को पुकारा। वेदो की तरफ लौटो इस महानाद को हम कहा तक सुन सके और मान सके महर्षि के इस आदेश को हमने कितना पालन किया है। वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है।

वेद का पढना-पढ़ाना आर्यो का परम कर्त्तव्य है। इसे आर्यसमाज के तृतीय नियम मे परम के नाम से पुकारा जाता है। आज श्रावणी के पर्व पर हम सबको यह गम्भीरता से सोचना है क्या हम अपने उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'

इस पर्व पर प्रत्येक आर्य को यह व्रत अवश्यय ही ग्रहण करना चाहिये। प्रतिदिन एक मन्त्र का अर्थ सहित स्वाध्याय करेंगे। सन्ध्या यज्ञ स्वाध्याय बिना भोजन नहीं करेगे। जैसे शरीर के लिये भोजन की आवश्यकता है वैसे ही आत्मा के लिये स्वाध्याय की आवश्यकता है। धर्म का मर्म जानने के लिये स्वाध्याय से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है।

स्वाध्याय से चिन्ता मिट जाती है। सशय नष्ट हो जाते हैं मन मे सद्भाव और शुभ सकल्पों का उदय होता है। ज्ञानाग्नि मे मनुष्य के पाप भस्म होकर प्रभु तथा धर्म मे श्रद्धा बढ़ती है। आपद् काल मे धैर्य स्थिर रखने का अभ्यास पडता है इत्यादि।

श्रावणी पर्व पर वेद रक्षा सूत्र का लौकिक रूप रक्षाबन्धन के रूप मे बाँधकर मानवीय रक्षा की भावना के प्रति मानव जाति को जाग्रत् करना है। अहंकारयुक्त रावण ने माता सीता का अपहरण करके मानवता को कलंकित किया था।

महर्षि ने मातृ शक्ति की पूजा का भाव बालिका को नमस्कार करके पुन जाग्रत् किया। हम इस पर्व पर अपने हिन्दी सत्याग्रह के शहीद भाई सुमेरसिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका अपूर्व उत्साह और त्याग आज के दिन आर्यकुमारो को कर्म तथा कर्त्तव्य की भावना से भर देता है।

*

## गीत

करो मम हृदय शुद्ध पुनीत।
वेद-ज्ञान का बनूं पुजारी,
तेरे शुभ गुण गाऊं।
पाप-कलाप हृदय से तज दू,
शुद्ध विचार बनाऊं।
राग-द्वेष, मद-मोह विगत हो,
मेरा हृदय विनीत॥
करो मम हृदय शुद्ध-पुनीत॥

दो शुभ दिव्य-भाव परि पूरित,
शुद्ध शतायु कृपानिधि!
आत्म-यज्ञ मे रहूं निरन्तर,
निरत सप्रेम यथा विधि।
तेरे ही आराधन मे हो,
जीवन सकल व्यतीत॥
करो मम हृदय शुद्ध पुनीत॥

हो प्रशस्त जीवन-पथ मेरा,
विघ्न-बन्ध कट जावे।
नव-प्रकाश से हृदय कुंज का,
तम, तमारि! मिट जावे।
हो अत्यन्त निवृत्ति-दुःखों से,
रहू सदैव अ-भीत॥
करो मम हृदय शुद्ध-पुनीत॥

—पण्डित प्रसादीलाल शर्मा, अतरौली

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल.—६०

भाद्रपद ९ शक १८९१ भाद्रपद कृ० ४
[ दिनाङ्क ३१ अगस्त सन् १९६९ ]

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य २५९९३ तार । "आर्यमित्र"

# श्री डा. सत्यप्रकाश जी उपाध्याय मौरीशस में

[स्व० श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के बडे पुत्र श्री डा० सत्य-प्रकाश जी अपने पूज्य पिता जी की भाँति वैदिक धर्म के प्र[illegible] में लग गये हैं । आप श्री उपाध्याय जी की तरह ही मौरिशस और दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म का प्रचार करने गये हैं । —सम्पादक]

मुझे प्रसन्नता है, कि सार्वदे-शिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से, आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका, के निमन्त्रण पर मुझे यह यात्रा करने का अवसर मिला है । ५ अगस्त को प्रातःकाल ९ बजे हमारा वायुयान देहली से चला, और ११ बजे के लगभग बम्बई पहुंचा । १ बजे सायं बम्बई से एयर इण्डिया [बोइंग] से उड़कर ५.३० बजे साय में मोरीशस पहुंच गया । मौरिशस के आर्य बन्धुओं को आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से मेरी यात्रा के सम्बन्ध में के दिल लिख गये थे, और वे मौरीशस के हवाई अड्डे पर मिले । मैं आर्य समाज मौरीशस के अध्यक्ष श्री मोहनलाल मोहित जी के घर पर उनका अतिथि रहा । यहां के सार्व जनिक कार्यों मे मोहित जी की बडी प्रतिष्ठा है । आर्य सभा के मन्त्री श्री टी कालीचरण जी पोस्ट मास्टर जनरल के पद से अभी रिटायर हुये हैं । वे आजकल आर्य समाज के कार्य मे सलग्न हैं । मौरीशस ३० मील चौडे, ४० मील लम्बे घेरे का एक टापू है, जिसमे ८ लाख की जन सख्या है, जिसमे ४ लाख हिन्दू हैं । एक लाख से ऊपर ही आर्य समाज के परिवार के व्यक्तियों की सख्या है । आर्य समाज की इस छोटे से स्थान में १२० के लगभग शाखायें हैं । महिला समाज की अध्यक्षा से भी मेरी भेंट हुई । मैंने यहां का बहुलानन्द गयासिंह अनाथालय देखा । इतने भव्य साफ सुथरे अनाथालय भारत में तो देखने को भी नहीं मिलेंगे ।

मैं मौरिशस के कार्यवाही प्रधान मन्त्री से मिला । (श्री राम-गुलाम जी जो प्रधान मन्त्री हैं, वे विदेश गये हुये हैं ) और भारत के हाई कमिश्नर श्री बीरेन्द्रपाल शर्मा से भी । इन दोनों ने आर्य समाज के कार्य की बडी प्रशसा की । हिन्दी पढ़ाने के कार्य में आर्यसमाज का प्रमुख योगदान है । यहां के भारतीय अपनी पुरानी भोजपुरी, और उसके साथ-साथ हिन्दी भी बोलते हैं । फ्रैंञ्च और उससे मिलती-जुलती बोली क्रिओल इस द्वीप की जन-भाषा है । हिन्दी को अग्रेजी और फ्रान्च साथ मान्यता दिलाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

टेलीविजन पर मेरा प्रोग्राम प्रस्तावित किया गया, जिसमे मैंने आर्यसमाज धर्म, विज्ञान और प्राचीन भारत की विज्ञान को देन, इन विषयो की चर्चा थी । यह प्रोग्राम अग्रेजी मे था, मैंने आर्य बन्धुओ से यह कहा है, कि जब आप इतनी अच्छी फ्रैञ्च बोलते-लिखते हैं, तो आर्य समाज का कुछ साहित्य फ्रैञ्च भाषा में भी प्रकाशित करें । आर्य समाज मौरिशस फ्रैञ्च साहित्य का प्रकाशन अरम्भ करें, तो इससे आर्य जगत का गौरव बढ़ेगा । क्योंकि फ्रान्सीसी भाषा मे अभी आर्य साहित्य बिल्कुल भी नहीं है । लोगो को मेरी यह प्रेरणा अच्छी लगी है ।

गन्ने की खेती से हरा-भरा यह द्वीप आर्य बन्धुओं का एक उपनिवेश है, ऐसा मानना चाहिए । यहाँ के व्यक्तियो ने स्नेहपूर्वक मुझे द्वीप की सभी चीज दिखायीं, और उनका आग्रह है, कि लौटते समय मैं काफी दिनो तक यहाँ ठहरूँ ।

आज साय को मैं डरबन के लिये यात्रा आरम्भ करूंगा । ५॥ घण्टे में पहुच जाऊंगा ।

सस्नेह—
डा० सत्यप्रकाश, उपाध्याय

## *गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार
### सर्वोत्तम ग्रन्थ पर १२००)पुरस्कार दिया जायगा

आर्य सिद्धान्तो पर साहित्य निर्माण करने, शोध सम्बन्धी कार्य मे रुचि उत्पन्न करने, सद्ग्रन्थों के पठन, अध्ययन और मनन करने मे सुविधा प्रदान करने एव प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से इस पुरस्कार की योजना बनाई गई थी ।

गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति की प्रबन्धक सभा ने दिनाक २० जुलाई १९६९ को निश्चय किया है कि गगाप्रसाद उपाध्याय-पुरस्कार समिति द्वारा सचालित १२००) के पुरस्कार की घोषणा की जाय ।

१—यह पुरस्कार ६ सितम्बर १९६९ से लेकर ३१ दिसम्बर ७० ई० तक की प्रकाशित होनेवाली पुस्तक पर ही दिया जायगा ।
२—पुस्तके वैदिक साहित्य पर मौलिक तथा प्रथम सस्करण की होनी चाहिये ।
३—पुरस्कार का निर्णय विद्वानों की एक समिति द्वारा होगा । समिति का निर्णय अन्तिम और मान्य समझकर विद्वानों को समझकर विद्वानो को अपनी पुस्तकें भेजनी चाहिये ।
४—पुस्तक की ६ प्रतियां १५ जनवरी १९७१ ई० तक समिति के कार्यालय में पहुच जानी चाहिये ।
५—यह १२००) का पुरस्कार ६ सितम्बर १९७१ को अथवा उसके निकटतम किसी सुविधाजनक तिथि पर समारोहपूर्वक प्रयाग मे दिया जायगा ।
६—लेखकों को सूचित किया जाता है कि इस घोषणा के अनुसार अपनी पुस्तकें तैयार कर शीघ्र भेजने की कृपा करें ।

—राधेमोहन मन्त्री
गगाप्रसाद उपाध्याय-पुरस्कार-समिति, इलाहाबाद

## अपहृत बालिका बरामद

गोविन्द नगर स्थित ब्लाक बी में एक मकान पर आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने गोविन्द नगर पुलिस के साथ छापा मार कर १५ वर्षीय कुमारी राज-कुमारी देवी सहगल को बरामद किया । पुलिस ने अपहरण कर्ता श्री प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ सुरेश नन्दा को गिरफ्तार कर लिया । कुमारी राजकुमारी गत १४-३ १९६९ को उक्त अभियुक्त जो उनका पटकापुर कानपुर मे पडोसी ही था, अपहरण करके ले गया था ।

—शिवदयाल मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए म०दी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु तथा प्रकाशित

भव जयेम ] लखनऊ–रविवार भाद्रपद १६ शक १८९१, भाद्रपद कृ० ११ वि० स० २०२६, दि० ७ सितम्बर १९६९ [ हम जीतें

परमेश्वर की अमृतवाणी—

# सब सत्य विद्याओं का आदिमूल

ओ३म, देवाश्चित्ते असुर्य प्रचेतसो
बृहस्पते यज्ञिय भागमानशु ।
उस्रा इव सूर्यो ज्योतिषा महो
विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणा मसि ।।
ऋ० २ । २३ । २

हे [ असूर्य्यं ] प्राणाधार ! [ बृहस्पते ] महान रक्षक ! परम ज्ञानिन् भगवन, [ देवा + चित् ] देव ही, ज्ञानी ही [ ते ] तुझे [ प्रचेतस ] सर्वोत्कृष्ट चेतावनी देने हारे के [ यज्ञियम ] यज्ञ योग्य [ भागम् ] भाग को [ आनशु ] प्राप्त करते हैं [ इव ] जिस प्रकार [ सूर्य्यः ] सूर्य्य [ ज्योतिषा ] ज्योति से युक्त, प्रकाशमय [ मह ] महान [ उस्रा किरणों को उत्पन्न करता है, वैसे ही तू [ विश्वेषाम ] सम्पूर्ण [ इत ] ही [ ब्रह्मणम् ] ज्ञानों का वेदो का [ जनिता ] उत्पन्न करने वाला [ असि ] है ।

ज्ञान का मूल स्रोत भगवान है । वेद मे कहा है-स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वान [ य० ७ १५ ] व् बृहस्पति-बड़-बड़ लोक लोकान्तरों का पालक सबसे पहला और मुख्य चिकित्वान ज्ञानी है । आदि ऋषि ने कहा—'प्रथम चिकित्वान' । आज के ऋषि ने कहा कि—सब सत्य विद्याओ का आदि मूल । इसी बात को प्रकृत मन्त्र के चौथे चरण मे कहा–विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि = सभी वेदो का उत्पादक है ।

जब वह प्रथम चिकित्वान है तो सचमुच वही ज्ञानो का, ज्ञान के मूल वेदो का उत्पादक है ।

किरणे समस्त ससार को प्रकाश देती हैं, किन्तु किरणे कहाँ से आती हैं ? सूर्य्य से । अत सूर्य किरणो का उत्पादक हुआ । जहाँ भी प्रकाश है वह सूर्य्य का है । इसी प्रकार जहाँ भी ज्ञान है वह भगवान का है । सचमुच ज्ञान भगवान की देन है ।

सूर्य्य एक स्थान पर रहकर प्रकाश करता है' अत सूर्य्य सम्बन्धी ग्रहों उपग्रहों के उसी भाग पर प्रकाश होता है । जो सूर्य्य के सम्मुख होते हैं । उनके दूसरे असम्मुख भागो पर प्रकाश नहीं होता, किन्तु भगवान सर्वत्र विराजमान हैं, अत इनका ज्ञान प्रकाश सर्वत्र है । आज भी भगवान् ज्ञान दे रहे हैं, जब कभी पाप की इच्छा होती है, अन्दर से उसके विरुद्ध ध्वनि उठती है, वह ध्वनि परमात्मा की है, ऋषि ने कहा है–'जो पापाचरणेच्छा समय में भय शङ्का लज्जा उत्पन्न होती है, वह अन्तर्यामी परमात्मा की ओर से है ।
[ स० प्र० १ पृ० ५७३ ]

वैसे तो सारा ससार–क्या पापी और क्या धर्मात्मा, क्या ज्ञानी और क्या मूढ़ सभी परमात्मा के दान का उपभोग करते है, हुई जो सारी प्रकृति उसी की सम्पत्ति किन्तु ज्ञानी ही वास्तविक आनन्द लेते हैं । किसी वस्तु का ज्ञान पूर्वक स्वाद लेने मे उपभोग लेने मे जो आनन्द है वह अज्ञान दशा मे कहां ? इसी भाव से वेद ने कहा–

देवाश्चित्ते असुर्य्य प्रचेतसो बृहस्पते यज्ञिय भाग मानशु ।

परमेश्वर केवल ज्ञान का आदि स्रोत ही नहीं, वह असुर्य्य = जीवनाधार भी है । यज्ञिय भाग = जीवनोपयोगी भाग जीवन धारण से मिलेगा ।

मनुष्य की विशेषता ज्ञान से है । ज्ञान भी भगवान के पास, ज्ञान से उपयुक्त होने वाले पदार्थ भी उसी के पास । अत ऋषि ने कहा–

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।

| वर्ष | अंक |
| --- | --- |
| ७१ | ३३ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढ़िए ।

# बोध और प्रति-बोध

[ श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

## अध्यात्म-सुधा

ऋषी बोध प्रतिबोधावस्व-प्नोयश्च जागृवि । तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम् ॥ अथर्व० ५।३०।१०

शब्दार्थ — (बोध-प्रतिबोधौ) बोध और प्रतिबोध ये दोनों (ऋषी) ऋषि हैं। (य च) और यह चमत्कार पूर्ण जोड़ा (अस्वप्न) प्रमाद-नाशक=स्फूर्ति-प्रद तथा (जागृवि) जागृति प्रसारक है। (तौ) वे ये दोनों (ते) तेरे (प्राणस्य) प्राण तत्त्व के, जीवन के (गोप्तारौ) रक्षा करने वाले हैं। ये दोनों (दिवा च नक्तम्) दिन और रात (जागृताम्) जागते रहे।

भावार्थ—बोध और प्रतिबोध ये दोनों स्फूर्ति और जागृति के प्रसारक ऋषि है। हे मनुष्य! ऐसा प्रयत्न कर, जिससे कि ये दोनों ऋषि निरन्तर ही तेरे जीवन की रक्षा करते रहे।

### प्रवचन

अपने शुद्धाचरण के द्वारा जो ईश्वर का सामीप्य और मन्त्र दर्शन की सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, वे वेदवादी सिद्ध पुरुष ऋषि कहलाते हैं। ऋषियों का इतिहास अत्यन्त उज्वल, गौरवपूर्ण और शिक्षाप्रद है। ऋषि जन ज्ञान के प्रचारक भी होते हैं, सरक्षक भी। वे वेदवाद के पुनरुद्धारक, प्रसारक साधक, प्रशिक्षक और वेदानुकूल महान् कार्यों के प्रवर्त्तक भी होते हैं। ऋषियों का जीवन और उनके शुभ कार्य स्वार्थ भाव से दूषित नहीं होते, वे तो सम्पूर्ण लोक के हितार्थ ही होते हैं। ऋषियों पर किसी जाति विशेष या राष्ट्र विशेष का एकाधिकार नहीं होता। वे तो सब के अपने होते हैं। आर्ष साहित्य, आर्य-वचन, आर्ष-मर्यादायें, आर्ष-विचार, आर्ष-शैली, आर्ष-नीति-रीति और आर्ष-जीवन पद्धति आदि-आदि, ये सब मानव जाति की बहुमूल्य निधियां हैं। मानव मात्र का इन पर एक जैसा ही अधिकार है।

बोध और प्रतिबोध ये दोनों भी दो सुप्रसिद्ध ऋषि हैं। ऋषियों की परम्परा मे इन दोनों का स्थान बहुत ऊंचा है। प्राचीनता की दृष्टि से तो ये दोनों ही सनातन हैं। यद्यपि ये दोनों कोई व्यक्ति विशेष नहीं हैं, तथापि समझने और समझाने के लिये विशेष व्यक्तियों के समान ही इन का विचार होता आया है और होना भी चाहिये। मानव जाति का इन दोनों ऋषियों ने बहुत हित किया है। अब भी वह हित हो रहा है। भविष्य मे भी प्रलय काल पर्यन्त ये दोनों मानव जाति का हित साधन करते रहेंगे। फिर नई सृष्टि होने पर भी ये अपनी सर्व हितकारिणी प्रगतियों के साथ प्रादुर्भूत होकर, मानवता का मार्ग-दर्शन करेंगे।

बोध क्या है ? जो ज्ञान हमें अपने सहज-ज्ञान से, अनुभव से, प्रयोग से, गुरुजनों के उपदेश मे, सद्ग्रन्थों से, ससार के पदार्थों और उन-उन के गुण, कर्म, स्वभाव के अवलोकन से, खण्डन-मण्डन से, एव श्रवण मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार से प्राप्त होता है, वह सब बोध है। विशेष बोध की प्राप्ति के लिये विशेष प्रकार के जप, तप, अनुष्ठान और अभ्यास आदि किये जाते हैं।

प्रभु की विशेष कृपा के होने पर पवित्र-आत्माओं को अपने अन्तरात्मा में जो ज्ञान प्राप्त होता रहता है, और जिसके विषय में कोई कार्य-कारण का बाह्य-सम्बन्ध हमारे दृष्टि-पथ में नहीं आता, वह भी बोध ही है। वह ईश्वर-प्रदत्त-बोध है। बोध एक साधारण सिद्ध भी है, और बहुमूल्य सम्पत्ति भी। बोध ज्ञान की वह महान् निधि है, जिसका मानव जाति ने अपने आरम्भ काल से आज तक सचय किया है, जो ज्ञान हमे अपने पूर्वजों से मिला है, वह सब बोध ही है। इस बोध का सरक्षण, सवर्धन और सदुपयोग हमारा एक आवश्यक कर्त्तव्य है। जो बोध हमने उत्तराधिकार मे प्राप्त किया है, उसे हम सम्वर्धित और परिमार्जित रूप मे अपने उत्तराधिकारियों को सौंपेगे।

प्रति-बोध क्या है ? बोध का वह व्यावहारिक रूप जोकि हमारे बारम्बार के अनुभव से, स्वाध्याय से, प्रकृति निरीक्षण से और महापुरुषों की साक्षियों के द्वारा बारम्बार परिपुष्ट हो चुका है, जिस की सत्यता के विषय मे कोई छोटा-सा सन्देह भी शेष नहीं है, जो परिपक्व, सुविकसित, निर्भ्रान्ति उपयोगी, कल्याणकारी और सद्य-सिद्धिप्रद, सृष्टि के आरम्भ से लेकर इस समय तक का सचित ज्ञान-समूह है, उसे प्रति-बोध कहते हैं। बोध और प्रति-बोध मे कोई विशेष भेद करना तो अशक्य-सा ही है। यदि सिद्धान्त पक्ष को बोध कहें, तब व्यवहार-पक्ष प्रति बोध होगा। यदि नूतन ज्ञान को बोध कहें, तब उसी ज्ञान के पुनरावर्त्तन और स्मरण को प्रति बोध कहेंगे। परिपक्व और अनुभूत भूमिकाओं में प्रविष्ट होकर बोध ही प्रति-बोध कहलाता है। यह भी एक विचार-पक्ष है।

आज तो मुद्रण कला के चमत्कार सर्वत्र ही अपना रंग दिखा रहे हैं। बड़े बड़े पोथे धड़ा-धड़ छापे जा रहे हैं। सुविशाल पुस्तकालयों मे—प्रत्येक विद्या, प्रत्येक कला, प्रत्येक विषय और ज्ञान विज्ञान के विषय में ससार की विविध भाषाओं मे लाखों करोड़ों पुस्तकों का सग्रह किया जा चुका है। अपनी-अपनी खोजों, अनुभूतियों और जानकारियों को लिपिबद्ध करने की प्रवृत्ति इन दिनों सभी शिक्षित व्यक्तियों में प्रबलता से पाई जाती है। नई-नई पुस्तकें तैयार होती ही रहती हैं। परन्तु स्मरण रहे उत्तमोत्तम पुस्तकों के साथ ही साथ, बहुत अधिक निकृष्ट पुस्तकों की वृद्धि भी इन दिनों बड़े वेग से हो रही है। इस वृद्धि के कुपरिणाम भी प्रकट हो रहे हैं। उन कुपरिणामों को देख-देखकर तो कभी-कभी विवशता मे हमे यू भी कहना और सुनना पड़ जाता है कि काश! मुद्रण-कला का आविष्कार ही न होता। अथवा अयोग्य पुरुषों के अधिकार मे ये मुद्रण यन्त्र न जाते तो अच्छा था। यद्यपि सभी देशों मे सरकार द्वारा मुद्रण-यन्त्रों का नियन्त्रण होता है, फिर भी अयोग्य, व्यक्तियों और शक्तियों का अधिकार मुद्रण-यन्त्रों पर हो ही जाता है। जब से कुटिल राजनीतिज्ञों और पैसे के लोभी व्यापारियों एव अन्य अवाञ्छनीय तत्त्वों को मुद्रण यन्त्रों की सहायता से मिथ्यावाद फैलाने का चस्का लगा है, तब से तो स्थिति बिगड़ती ही चली जा रही है।

साहित्य का विचार कीजिये। जो हितकारी होता है, वह साहित्य कहलाता है। हितेन सहित साहित्यम्। हितकारी साहित्य ही प्राणों का अर्थात् जीवन तत्त्व का रक्षक होता है। अनार्ष, अश्लील, राग-द्वेष पूर्ण और मानव की नीच एवं

( शेष पृष्ठ १४ पर )

[ गताङ्क से आगे ]

१५—यदि कोई कहे कि सजय ने धृतराष्ट्रको युद्धारम्भ की जो कथा सुनाई, उससे ही गीता की अवतारण का बोध भी हो जाता है। इस कथन मे आँशिक सत्य है तथापि यह तो अवश्य ही सुस्पष्ट होना चाहिये कि गीता का वर्त-मान स्वरूप वह नहीं है, जो कि श्रीकृष्ण और अर्जुन के पारस्परिक सवाद के रूप मे प्रथमवार सघटित हुआ था। वर्तमान गीता का स्व-रूप तो वही है कि जो दस दिन तक महाभारत का युद्ध होने के पश्चात् सजय ने धृतराष्ट्र को सुनाया था। श्रीकृष्ण जी पहले एक वार अर्जुन को अपना सन्देश सुना चुके थे, फिर युद्ध हुआ था, दस दिन तक लडकर भीष्म जी गिर थे, तब सजय ने गीतोपदेश का वृत्तान्त धृतराष्ट्र को सुनाया था। इस बीच मे तो यह गीतोप-देश सजय की स्मृति मे ही सुर-क्षित रहा होगा।

१६—गीतोपदेश की सर्व प्रथम अवतारणा श्री कृष्ण और अर्जुन के पारस्परिक सम्वाद के रूप मे हुई थी। दूसरी वार गीतोपदेश का विवरण सजय द्वारा धृतराष्ट्र को सुनाया गया था। सजय ने दस दिन तक वा कुछ अधिक काल तक गीतोपदेश को अपनी स्मृति मे ही सुरक्षित रखा था। १० दिन तक लड़ कर भीष्म पितामह के शर-शय्या पर लेटने के बाद ही सजय ने यह वृत्तान्त धृतराष्ट्र को सुनाया था। क्या यह वर्त्तमान् श्लोकबद्ध गीतोपदेश ज्यो का त्यो वही है, जो सजय ने धृतराष्ट्र को सुनाया था? और क्या श्री कृष्ण और अर्जुन का वह पारस्परिक सवाद श्लोक बद्ध था, इसमें प्रथम वार गीतोपदेश की प्रवर्त्तना हुई थी? ये शकायें बहुत पुरानी है। गीता प्रेमियो के सामने ये वारम्वार आया करती हैं।

१७—मानव मस्तिष्क अपने सहज-ज्ञान के आधार पर इस कथन को बहुत अधिक सदिग्ध

# गीतोपाख्यान

[ श्री जगत्कुमार जी शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' देहली ]

समझता है, कि श्री कृष्ण और अर्जुन का युद्ध क्षेत्र मे जो सवाद चला था एव जिसमे गीतोपदेश प्रकाशित हुआ था, वह श्लोक बद्ध था। और वह ज्यो का त्यो यही था, जो कि आजकल गीता पोथी मे हमारे सामने है। यह साक्षी तो हमको महाभारत-ग्रन्थ मे ही मिल जाती है, कि श्री व्यास जी की कृपा और योजना के अनु-सार ही। सजय ने श्रीकृष्ण और अर्जुन का सवाद सुना था। सुनने के प्राय १० दिन के पश्चात् उस सुने हुये सम्वाद को अपनी स्मृति के आधार पर सजय ने ही धृत-राष्ट्र को वह सम्वाद सुनाया था।

१८—अब प्रश्न रहा अर्जुन और श्रीकृष्ण का सर्व प्रथम सवाद श्लोक-बद्ध था, वा नहीं? और दूसरी वार सजय और धृतराष्ट्र का सम्वाद श्लोकबद्ध था, वा नही? हो सकता हे कि सजय ने गद्या-त्मक सम्वाद सुना हो, और श्लोक बद्ध करके धृतराष्ट्र को सुनाया हो। इस कल्पना के समर्थन के लिये कोई प्रमाण किसी के पास नहीं है। सम्भव और अधिक स्वा-भाविक यही है कि प्रथमवार का सम्वाद भी गद्यात्मक था, और दूसरी वार का सम्वाद भी। वह सक्षिप्त भी होगा, एव कुछ मोटी मोटी बातो तक ही सीमित भी रहा होगा। वर्तमान श्लोक-बद्ध और नाना प्रकार की चित्त विचित्र और शिक्षा-प्रद बातों से परिपूर्ण श्लोक बद्ध महाभारत ग्रन्थ और उक्त ग्रन्थ मे उपनिबद्ध गीतोपदेश तो किसी और पुरुष ने कभी की होगी? क्या गीतोपदेश को श्री व्यास जी ने श्लोक-बद्ध किया था, जो कि "जय" नामक एतिहासिक काव्य ग्रन्थ के प्रणेता प्रसिद्ध हैं? स्मरण रहे महाभारत ग्रन्थ के रूप मे प्रचिलित और प्रसिद्ध ग्रन्थ का वास्तविक और लेखक द्वारा प्रदत्त नाम तो 'जय' ही है। यह 'जय' नाम इन दिनो भुला दिया गया है। ग्रन्थ के बडे आकार और भारत के एक बडे युद्ध-प्रसग से सम्बद्ध होने के कारण ही 'जय' की प्रसिद्धि 'महाभारत' नाम से हो गई है।

वर्तमान महाभारत जिसमे गीतोपदेश भी शामिल है, का सम्पादन किसी सौती नाम के विद्वान् ने किया था। सौती के सम्पादन से पूर्व न जाने इसका क्या रूप था? क्या सौती ने ही महाभारत और गीतोपदेश को श्लोक-बद्ध किया था? अथवा क्या व्यास जी की रचना मे, या सौती की रचना मे किसी ने बाद मे किसी विशेष प्रयोजनवश गीतो-पदेश को जोड दिया है? क्या महाभारत की रचना विभिन्न कालो मे विभिन्न विद्वानो द्वारा की गई है? क्या महाभारत मे समय-समय पर प्रक्षेप होते रहे हैं? ये सभी अत्यन्त विवादास्पद प्रश्न हैं। इन के पूर्ण समाधान कारक उत्तर किसी के पास नहीं हैं।

१९—श्री कृष्ण और अर्जुन के सम्वाद के रूप मे जो ऐतिहासिक घटना कभी घटी होगी, उसमे आत्मा, परमात्मा, जीवन, मरण, वध, मोक्ष, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, कार्य-कारण पर-म्परा और कर्त्तव्याकर्त्तव्य आदि का विवेचन भी अवश्य ही रहा होगा। और वह पूर्ण विवेचन वेदो, उपनिषदो, दर्शनो एव तत्का-लीन साहित्य मे एव समाज मे प्रचलित बहुमान्य सिद्धान्तो के अनुसार ही रहा होगा। तथापि उस सम्वाद का सर्व प्रथम रूप ऐसा व्यापक, परिमार्जित और ललित श्लोक-बद्ध न होगा, जैसा कि वर्त्तमान गीता पुस्तक का है। यह भी हो सकता है कि सँजय ने धृतराष्ट्र को सुनाते समय मूल गीतोपदेश मे कुछ फेर बदल कर दिया हो। बाद के कवियो, लेखको और सम्पादको ने भी विभिन्न अवसरो पर विभिन्न प्रयोजनों से अवश्य ही अपना अपना चमत्कार कौशल अपनी-अपनी रुचि, गति और मति के अनुसार अवश्य ही गीता मे भरा होगा। कुछ सवार होगा, कुछ घटाया बढ़ाया होगा।

२०—श्री कृष्ण अर्जुन सवाद अथवा सजय-धृतराष्ट्र सवाद, जो अब गीतोपदेश के रूप मे प्रचलित है, अपने वर्तमान रूप मे तो यह किसी सुयोग्य कवि, दार्शनिक, वैयाकरण, उपासक, योगी, भाषा-विज्ञान विद्, बहुश्रुत, विभिन्न शास्त्र पारगत महा विद्वान् की ही कृति प्रतीत होता है। वह कवि श्रीकृष्ण था? सजय था? आप था? सौती था? कौन था वह? न जाने कौन था? इस विषय मे पूर्ण निश्चय के साथ कोई कुछ भी नहीं कह सकता।

२१—रण-क्षेत्र के विषय प्रसग मे, जब कि लोहे से लोहा बजने को तैयार था, बडे-बड़े योद्धा एक दूसरे को मारने और स्वयं मरने के लिये आमने सामने खड़े थे, तब श्री कृष्ण का अर्जुन को सात सौ श्लोको की सुललित कविता सुनाना तो अयुक्त सा ही प्रतीत होता है। यह ठीक है कि सात सौ श्लोको का पाठ करने मे लगभग दो घण्टे का ही समय लगता है, और श्री कृष्ण वा अर्जुन का युद्धा-रम्भ से पूर्व दो तीन घण्टे तक आपस मे परामर्श करना भी सम्भव है। तथापि उस उपदेश की व्यापक सर्वाङ्ग शीलता परिमा-र्जित श्लोक-बद्धता आदि बातें तो अयुक्त ही है।

२२—गीतोपदेश मे जो सौष्टव है, उसे हम स्वीकार करते हैं। गीता-काव्य की शब्द-योजना, ललित और चमत्कार पूर्ण है। इस काव्य का महत्व भी अधिक है। इसको

उपयोगिता भी बहुत है। तथापि यह वह नहीं है जो प्रथमवार श्री कृष्ण और अर्जुन के सम्वाद के रूप मे प्रकाशित हुआ था। यह वह भी नहीं है, जो सजय ने धृतराष्ट्र को सुनाया था। यह तो मूल-घटना-बीज के आधार पर रची गई किसी महान् कवि की अत्यन्त महत्वपूर्ण कलाकृति है। ऐसा मान लेने मे किसी के निरादर की कोई बात नहीं है। फिर भी पूर्वाग्रहयुक्त जन-मानस इसे स्वीकार नहीं करता। वास्तविक रचयिता की सदिग्धता या अनभिज्ञता के कारण कुछ राग द्वेष ग्रस्त अल्प शिक्षित व्यक्ति तो सम्पूर्ण गीतोपदेश को ही त्याज्य या सदिग्ध कह डालते हैं। सच है— बुद्धिमान् जहां पांव रखते भी डरते हैं, मूर्ख वहां छलांगें लगाने लगते हैं।

२३—श्री कृष्ण और अर्जुन का सवाद, अथवा सजय और धृतराष्ट्र का सवाद भी वर्तमान गीतोपदेश मे ही कहीं न कहीं अपनी मूल प्रेरणा, भावना, धारणा, शब्द-योजना या स्वर लहरी, के साथ सुरक्षित, सन्निबद्ध होगा, और गुप्त रूप मे ही उपनिविष्ट होकर वह गीता-काव्य को अलकृत करके, जन-मानस को सहस्रों वर्षों से प्रेरित आन्दोलित और परितृप्त करता आ रहा होगा, पन्तु उससे मूल रूप को पहचानना, जानना या ज्यो का त्यो प्राप्त करना अब सम्भव नहीं है।

२४—एक ऐतिहासिक काव्य और तात्विक उपदेश के रूप मे वर्तमान गीता-ग्रन्थ का जो मूल्य और महत्व है, एव श्रीकृष्ण और अर्जुन के साथ उसका जो सम्बन्ध है, उसे मान लेने मे किसी को कोई कठिनाई न होनी चाहिये। गीतोपाख्यान को उसके वर्तमान रूप मे ज्यों का त्यों सर्व प्रथम श्री कृष्णार्जुन सवाद और फिर सजय-धृतराष्ट्र सवाद आंशिक रूप मे या परम्परा सम्बन्ध से तो माना जा सकता है, अन्यथा नहीं। तथापि इसकी उत्तमता मे, उपयोगिता और हितकारिता मे तो कोई भी सन्देह किसी को होना ही न चाहिये। निसन्देह यह गीतोपदेश उत्तम है, और किसी सुकवि की रचना है। जिस किसी भी सुकवि की रचना यह है, उसने श्रीकृष्ण, अर्जुन, सजय और धृतराष्ट्र को अपनी कविता के पात्र बना कर और इन चारो की स्थिति को अपने सामने रखकर, ससार के कल्याण के लिये ही गीतोपदेश की रचना की है। वारम्वार गीतोपदेश को पढ़ने और विचार करने से यह भी सुस्पष्ट है। निस्सन्देह गीता एक सफल खण्ड-काव्य है।

२५—विभिन्न कालो और विभिन्न सम्प्रदायो के प्रवर्तको ने या उन-उन के शिष्यो ने गीता के जो-जो भाष्य व्याख्यान, वा टीका टिप्पण रचे हैं, उन सभी मे उन्होंने अपने-अपने रङ्ग भरे हैं, और गीतोपदेश को अपने-अपने साचे मे ढालने के प्रयास भी उन्होंने किये हैं। ऐसे भाष्यों और व्याख्यानो आदि से गीतोपदेश आदि का मान बढ़ा नहीं, घटा ही है। गीतोपदेश के मर्म को जानने पहचानने मे बहुत सी कठिनाइयां भी पैदा हो गई हैं। ऐसे-ऐसे भाष्यो व्याख्यानो और टीका ग्रन्थो से बचकर गीतोपदेश के मूल-श्लोकों के विशेष मनन से ही वास्तविक लाभ उठाया जा सकता है। किसी पूर्वाग्रह के वश मे होना ठीक नहीं है।

गीता ज्ञान महान् है,
वेद-तत्त्व का सार।
गीता ज्ञान-विचार से,
सूझे सार-असार॥
जन्म-मरण के चक्र से,
जो चाहे निस्तार।
गीता ज्ञान महान् को,
अपनावे नर-नार॥

## गीता का सर्व प्रथम गायक

२६—यह मान लेने मे हमे कोई सकोच नहीं है, कि गीता के गायक साक्षात् सम्बन्ध सेवा परम्परा सम्बन्ध से भारत के एक महान् सपूत श्री कृष्णचन्द्र जी ही थे। पुराणो मे श्री कृष्ण जी के विषय मे जो जानकारी मिलती है, वह तो श्रीकृष्ण जी के जीवन को कलकित करने वाली ही है; परन्तु महाभारत मे श्रीकृष्ण जी का जो वर्णन मिलता है, वह उत्तम, प्रेरक, शिक्षाप्रद और अनुकरण करने योग्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 'सत्यार्थ-प्रकाश' मे लिखते हैं—

"देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र, आप्त पुरुषो के सदृश है, जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।"

★

## सिद्धान्त-विमर्श

(पृष्ठ ७ का शेष)

है। उसके पृष्ठ १७२ पर 'ज्ञान योग खण्ड' नामक द्वितीय प्रकरण के सातवें अध्याय के सैंतीसवे श्लोक की टीका मे यही सन्दर्भ उद्धृत है। वहा पाठ यह दिया है—
वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्थाः
सन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले
परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे।

इससे यह निश्चित है, उक्त सन्दर्भ मे 'परामृतात्' पञ्चम्यन्त पाठ प्राचीन है। सभावना होती है, ऋषि को यही पाठ स्मरण था सत्यार्थप्रकाश की कापी लिखाते समय यही पाठ बोला गया होगा, पर लेखक ने अपने सस्कार से प्रथम स्थल ( पञ्चम समुल्लास) मे वही पाठ रख दिया, जो उस समय उपनिषद् मे प्रचलित था। सत्यार्थप्रकाश के दूसरे स्थल में वही पाठ छपा है, जो ऋषि ने बोला होगा।

यह कहना सगत न होगा, कि 'तात्पर्य दीपिका' में पाठ अशुद्ध छप गया है। यह बात उपनिषत् के उपलब्ध पाठ के लिये भी कही जा सकती है। हमारे सामने अनेक स्थल हैं, जहां उपनिषदो के पाठ में आचार्य शकर ने परिवर्त्तन किये हैं। उनके परिवर्त्तनों का आधार अभी तक कहीं नहीं मिला इसलिये उसे आक्षेप्य कहा जा सकता है। उस सबका विवेचन करना हमारा यहा लक्ष्य नहीं, लेख का कलेवर निष्फल बढ़ेगा; फिर भी उन स्थलो का निर्देश करना उपयोगी होगा; जो विद्वान् चाहे, विचारकर सकते है।

१—कठोपनिषत् [१-२-२०] अणोरणीयान् के अन्तिम चरण का पाठ है—'धातुः प्रसादान्महिमानमात्मन.' यहा के 'धातु.' पद 'धातृ' का षष्ठी एक वचन है। आचार्य शकर ने इसे उकारान्त 'धातु' पद मानकर अगले पद के साथ समास कर 'धातुप्रसादात्' रूप में एक पद बना दिया है।

२—छान्दोग्य [५-११-१] में प्राचीन शाल आदि पाँच जिज्ञासुओं का आत्म विषयक चिन्तन के प्रसग में पाठ है—'को नु आत्मा किं ब्रह्म' यहा 'नु' पद वितर्क अर्थ मे है। आचार्य शकर ने इसे 'नः' षष्ठी बहुवचनान्त बना दिया है; इस पाठ के आधार पर अपने अभिलषित 'ब्रह्मात्मैक्य' के प्रतिपादन का प्रयास किया है।

३—बृहदारण्यक [५-५-१] मे पाठ है—'आप एवेदमग्र आसु', ता आप सत्यमसृजन्त, सत्य ब्रह्म ब्रह्म प्रजापतिम् प्रजापतिर्देवान्" यहां आचार्य ने मध्यगत एक 'ब्रह्म' पद को उडाकर शेष 'ब्रह्म' पद का 'सत्य' के साथ अन्वय किया है। इससे उपनिषत् की प्रतिपादन शैली का उच्छेद हो गया है, पर आचार्य ने अपने अभिलषित को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

इन आधारो पर यह निश्चित रूप मे कहा जा सकता है, कि ऋषि दयानन्द ने प्राचीन सन्दर्भों के पाठो मे परिवर्तन का कोई प्रयास नहीं किया। प्रस्तुत सन्दर्भ के दोनो पाठों मे मूल पाठ कौन-सा रहा होगा; विवेचक स्वय विचार कर सकते हैं।

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भाँति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमे भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें। इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।

२—समस्त भारत मे शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।

३—प्राचीन कोई यज्ञ।

४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।

५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।

६—शोध पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन मे एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष मे दस आर्य प्रतिनिधि सभाए हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज मे पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश से करने की कृपा करे। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से संसार मे शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यो मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुंचना कठिन है। अतः आर्य भाइयो को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक मे पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे। निवेदकः—

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री एम.पी | प्रकाशवीर शास्त्री एम.पी. |
| प्रधान | प्रधान |
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.ए. | महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम.ए. |
| मन्त्री | सयोजक |
| मदनलाल | आचार्य विश्वश्रवाः वेदाचार्य |
| कोषाध्यक्ष | प्रचार मन्त्री |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति |

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में आर्यमित्र का विशेषांक

# मूर्त्ति पूजा निषेधाङ्क

### प्रस्तावित रूपरेखा

समस्त आर्य विद्वानो की सेवा मे निवेदन है कि आर्यमित्र का विशेषांक मूर्ति पूजा निषेधाङ्क काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष मे प्रकाशित होगा। इसकी प्रस्तावित रूपरेखा मे से आप स्वय अपने लिये अपने विषय का चुनाव कर सूचित करने की कृपा करे। और उस विषय पर आप लेख लिखें।

विषय—१—मूर्ति पूजा और वेद
२—मूर्ति पूजा और वेदो की शाखाए
३—मूर्तिपूजा और ब्राह्मण ग्रथ
४—मूर्ति पूजा और उपनिषद् ग्रथ
५—मूर्ति पूजा और आरण्यक ग्रन्थ
६—मूर्तिपूजा और दर्शन ग्रन्थ
७—मूर्ति पूजा और निरुक्त
८—मूर्ति पूजा और व्याकरण ग्रन्थ
९—मूर्ति पूजा और गीता
१०—मूर्ति पूजा और स्मृति ग्रन्थ
११—मूर्ति पूजा और आयुर्वेद शास्त्र
१२—मूर्ति पूजा और बौद्ध धर्म
१३—मूर्ति पूजा और जैन धर्म
१४—मूर्ति पूजा और इस्लाम
१५—मूर्ति पूजा और क्रिश्चियन मत
१६—विभिन्न सम्प्रदायों में मूर्तिपूजा की स्थिति
१७—मूर्ति पूजा तथा संसार के अन्य देश
१८—मूर्तिपूजा का आदि स्रोत
१९—मूर्ति पूजा और पुराण ग्रन्थ
२०—मूर्तिपूजा और महाभारत
२१—मूर्ति पूजा और रामायण
२२—पौराणिक समत सब अवतारों पर प्रत्येक अवतार का पूर्ण पौराणिक स्वरूप और उनका वैदिक स्वरूप।
२३—विभिन्न देवताओ का पौराणिक स्वरूप और वैदिक स्वरूप।
२४—वैदिक धर्म के प्रचार से मूर्तिपूजा की मान्यतापर प्रभाव
२५—मूर्ति पूजा को ससार से मिटाने के सफल उपाय इत्यादि

इस विषयो मे से अपने लिखने के लिये विद्वान् स्वय चुनाव कर हमे शीघ्र सूचित करे।

नोट—(१) बहुत बडा विशेषाक होते हुए भी मूल्य केवल २) रुपये ही रखा जावेगा। ग्राहक सूचित करें कि उन्हे कितनी प्रतियां चाहिये।

(२) विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा ले।

विशेष [क] जो १०) रु० भेजकर आर्यमित्र के ग्राहक बन जावेंगे उन्हे बिना मूल्य यह विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। इस समय आर्यमित्र का वर्ष भर का चन्दा केवल १०) है।

[ख] ग्राहक बनाने वाले एजेन्टो की भी हमे आवश्यकता है जो अपने-अपने नगर और प्रान्त मे ग्राहक बनावेंगे उन्हे कमीशन दिया जावेगा।

निवेदक—

| | |
|---|---|
| आचार्य विश्वश्रवाः व्यास | उमेशचन्द्र स्नातक |
| एम. ए. वेदाचार्य | एम. ए. |
| प्रचार मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी | सम्पादक आर्यमित्र |

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये आवश्यकता है

( पृष्ठ ५ का शेष )

को उनके गले उतारना है। यह गेहेशगों का क्षेत्र नहीं है। यह तो काशी शास्त्रार्थ के विजेता महर्षि के उत्तराधिकारियों का धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र है। जिन विद्वानो के पते ठीक न मालूम होने से हमारा सन्देश जिनके पास नहीं पहुचा है। वे स्वयं अपना पता लिख कर आर्य आर्य विद्वानों का स्वीकृत-पत्र मंगा लें। वहां आर्य विद्वानो की शोभा-यात्रा निकलेगी। जैसे आन्दोलन नात्मक सम्मेलनो में नेताओ के जलूस निकलते हैं। हे आदरणीय विद्वानो अपनी-अपनी सस्थाओं से एक मास की छुट्टी ले लो और काशी चलो, विद्वानो की नगरी को चलो, और चलो उस नगरी की ओर जहा समस्त काशी मे प्रकाण्ड पण्डितो को अकेले लगोटी धारण करने वाले अखण्ड ब्रह्मचारी महा योगी साक्षात्कृत धर्मा वेद मन्त्रार्थ साक्षात्कर्ता महर्षि दयानन्द ने पूर्व जीता था। उसे फिर जीतो।

७—वहाँ आवश्यकता है उन भामहशाहों की जो अपना धन दिल खोल कर इस समय लगाकर अमर हो जावे। शास्त्रार्थ शताब्दी के पवित्र इतिहास मे सब धन दाताओ की नामावलिया पते सहित प्रकाशित की जावेंगी। और यह स्मरण इतिहास के पृष्ठो पर सदा रहेगा, कि देश-देशान्तर द्वीप-द्वीपान्तर में वेद सन्देश पहुचाने का जो अवसर आया था तब कौन कौन आगे बढ़ा था। किस आर्य समाज ने क्या किया था। किस सभा ने क्या सहयोग दिया था। किस प्रान्त ने कितना आर्थिक कर्त्तव्य पालन किया था। सब सभाओ के अधिकारियो की नामा वली जब छपेगी तब देखना है कि किस के नाम के सामने शून्य लगा होगा किसके नाम के आगे शून्यो के पीछे कोई अङ्क।

८—आवश्यकता है, साधारण से साधारण योग्यता वाले आर्य भाई की जो यज्ञ के शाकल्य बनवाने, समिधाओं को यज्ञ कुण्ड के नाम की तैयार करवाने, और गो-घृत बनवाने, और नाना प्रकार के प्रबन्ध मे हाथ बटाने की श्रद्धा रखते हो शीघ्र पत्र द्वारा आर्य भाई वो सप्ताह काशी रहने का वचन दें। पता है, वहाँ काशी में अनेक सम्मेलनो के प्रबन्ध कर्ता महाकुशल, गम्भीर प्रज्ञ सब प्रकार की पार्टी बाजी से परे रह कर केवल ऋषि के कार्य मे समग्र जीवन अर्पण करने वाले नैष्ठिक ब्रह्मचारी प० नरेन्द्र जी हैदराबाद से समस्त प्रबन्ध का भार सभालने शताब्दी समारोह से एक मास पूर्व पहुच रहे हैं। उनकी अध्यक्षता मे सब कार्य कर्ताओं को कार्य करना है।

९—आवश्यकता है, उन सपन्न आर्य श्रेष्ठियो की और बड़े-बडे आर्य समाजों की जो अपने यहा शताब्दी से पूर्व होने वाली विद्वानो की विचार गोष्ठी बुलाने का व्यय वहन करें। काशी शास्त्रार्थ मे जो विद्वान् भाग लेंगे, उन सब को पहले अपनी एक वार कहीं पहले बैठक होगी। एक बैठक मे सब दार्शनिक विद्वान् आवेंगे, दूसरी बैठक मे सब वेदज्ञ होंगे, तीसरी बैठक मे सब वैयाकरण और नैरुक्त पण्डित होगे और चौथी बैठक मे सब शास्त्रार्थ महारथी होगे, जो पहले परस्पर विचार कर लेंगे। एक विचार गोष्ठी मे दश विद्वान् होगे। शीघ्र लिखिये कि कौन आर्य गोष्ठी और कौन आर्यसमाज अपने यहाँ विचार गोष्ठी बुलाने को तैयार हैं।

१०—सबसे अधिक आवश्यकता है, शान्तिप्रिय ऋषि मुनि तुल्य समझदार उन व्यक्तियो की जो सार्व देशिक सभा की न्याय सभा की कचहरी दो मास के लिये बन्द करादें और सब मिल कर बैठ जावे। यदि पूछो कौन-कौन तो सुनो—

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के शब्दो मे भारत के युवक हृदय सम्राट प० प्रकाशवीर जी शास्त्री के शब्दो मे, पजाब के दूसरे ला० लाजपतराय ला० रामगोपाल जी शालवाले। और सब के शब्दो मे महा सेनानी प० ओमप्रकाश त्यागी तथा गम्भीर यज्ञ महा पण्डित प० शिवकुमार जी शास्त्री। और महावृद्ध बा० रामनाथ जी भल्ला तथा आर्य समाज के वेदव्यास ला० चतुरसेन जी गुप्त। प्राचीन कवियो के समान प्रौढ सस्कृत के सस्कृत के लेखक विद्वान् प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री और मेरा पुत्र आर्य समाज का कार्यकर्ता बने, पिता की इस इच्छा को पूर्ण करने के लिये तडप वाले भाई वीरेन्द्र जी पुराने कार्यकर्ता बुजुर्ग श्री रामशरण दास जी और आर्य समाज तथा देश के लिये सब जीवन लगाने वाले प्रो० रामसिंह जी।

आगे और सुनो—आर्य समाज के गुरुकुलो को हजारो की सम्पत्ति दान देने वाले श्री सोमनाथ जी मरवाहा, सार्वदेशिक सभा की स्थायी सम्पत्ति बनाने वाले श्री बालमुकन्द अहूजा, देहली मे लाखों की सम्पत्ति का आर्य अनाथालय खडा करने वाले श्री देशराज जी चौधरी गृहयुद्ध को देख कर आर्य समाज से उदासीन लखपति ला० हसराज जी गुप्त दिल्ली मेयर तपस्वी विद्वान् श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती किस-किस अलौकिक विभूति का वर्णन करूँ। यदि ये मिल जावें तो धरती को हिला दें। जैसे हिन्दी सत्याग्रह के दिनो मे १—प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, २—ला० रामगोपाल जी शालवाले ३—प० ओमप्रकाश जी त्यागी, ४—प० शिवकुमार जी शास्त्री, ५—प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री पांचो पाण्डवो के समान रणक्षेत्र मे जुटे थे, और भगवान् श्रीकृष्ण के समान प० नरेन्द्र जी हैदराबाद सबका पथ-प्रदर्शन कर रहे थे। क्या काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मे फिर एक बार मिल कर नहीं बैठ सकोग। बन्धुओ काशी शास्त्रार्थ शताब्दी आप सब को सुना-सुना कर पुकार पुकार कर हृदय के प्रेम से कहती है कि—

स्वागत सर्वेषाम्-स्वागत समेषाम्—स्वागत विशेषा बन्धूनाम्।

[ पृष्ठ ४ का शेष ]

निश्चय हुआ कि वेद प्रचार सम्बन्धी उपर्युक्त प्रस्तावो को आर्यमित्र मे प्रकाशित कर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओ के सुझाव मागे जायें और सारी योजना पर आगामी अन्तरग में विचार किया जाये। अन्तरग सभा ने इस सम्बन्ध मे श्री उमेशचन्द्र स्नातककी योजना स्वीकार की थी, उसको भी इस विचार में सम्मिलित किया जाये।

[द] प्रत्येक कमिश्नरी मे प्रान्तीय सम्मेलन होने की आवश्यकता है। मैं समझा हू सभा का अनुशासन समाजें इस समय बहुत कम अनुभव कर रही हैं। इस सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि कमिश्नरी सम्मेलनो के लिये प्रेरणा दी जाय और विभिन्न कमिश्नरियो के सम्मेलन किये जायें।

४—निश्चय १५ आर्यसमाज मन्दिरो के उच्चतम कक्ष पर माइक्रो फोन एव लाउड स्पीकर रखने के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि योजना उत्तम है, आर्यसमाजे अपनी साधन क्षमता के अनुसार इस योजना को क्रियान्वित करे।

५—निश्चय स० १७ श्री कालिकाप्रसाद जी के निम्न प्रस्तावो के सम्बन्ध मे इस भांति निश्चय हुआ कि—

[अ] प्रत्येक आर्यसमाज मे विशेष सहभोज की व्यवस्था की जाय जिसमे हिन्दू जाति के विभिन्न वर्गो विशेषतया दलित वर्ग के लोगो को आमन्त्रित किया जाय। निश्चय हुआ कि प्रस्ताव स्वीकार है। आर्यसमाजो को इस कार्य के लिये विशेष रूप मे प्रेरणा दी जावे।

[ब] जो आर्यसमाजे शिक्षा सस्थाओ का सचालन करती हैं, उनसे अनुरोध किया जाय कि वे अपनी शिक्षा सस्थाओ मे दलित वर्ग के विद्यार्थियो को यथासम्भव फीस आदि से मुक्त कर दे। निश्चय हुआ कि ऐसी समाजो को प्रेरणा दी जाए।

६—निश्चय १८ भाग [४] श्री चन्द्रनारायण जी का प्रस्ताव प्रत्येक आर्य उप प्रतिनिधि सभा १५) वार्षिक शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा को देगी—निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार है वैधानिक नियमो में परिवर्तन किया जाये।

७—निश्चय हुआ कि जिन-जिन जिलो में आर्य उप प्रतिनिधि सभाए स्थापित नहीं हैं, उन्हे चाहिये कि तीन मास के भीतर आर्य उप प्रतिनिधि सभा का निर्माण कराकर सभा से सम्बद्ध करावे।

८—निश्चय हुआ कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर का २० अप्रैल १९६९ को जो निर्वाचन हुआ है उसे सभा स्वीकार करती है और मान्यता प्रदान करती है।

९—निश्चय हुआ कि सभा का नवीन निर्माण भवन का कार्यारम्भ कर दिया जाए। उसके लिये एक निर्माण समिति बनाई जाए और आर्यसमाजो एव दान दाताओ को अपील द्वारा धन सभा मे भेजने के लिये प्रेरणा की जावे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए० सभा मन्त्री

## सूचना

श्री प० देशबन्धु जी अधिकारी सरकारी सर्विस से अवकाश प्राप्त कर मु० ठाठीपुर मुरार [ग्वालियर] में स्थायी रूपसे निवास कर रहे हैं। स्वस्थ होने पर आपने अपना शेष समय समाज सेवा के लिये देने का वचन दिया है। —सभा मन्त्री

## आर्यसमाज लश्कर का ६८ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लश्कर का वार्षिक उत्सव दिनाक २३ अक्तूबर ६९ से २६ अक्तूबर '६९ तक बडे समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस सुअवसर पर आर्यजगत् के उच्च कोटि के प्रवक्ता पधार रहे हैं।

हरवशलाल मन्त्री — महावीरसिंह प्रधान

आर्यसमाज, लश्कर

## निर्वाचन—

—आर्यसमाज मुजफ्फरपुर

प्रधान—श्री रामगोपाल अग्रवाल

कार्यकारी प्रधान-श्री पूर्णचन्द्र विजराजका

उपप्रधान—श्री गणेशदास बोहरा

,, ,, वैद्यनाथ पल्लव

,, ,, द्वारिकाप्रसाद ठाकुर

मन्त्री—श्री रामकृष्ण विजराजका

उपमन्त्री प्रो श्री ओम्प्रकाश जी

,, श्री असर्फीप्रसाद जी

,, ,, यमुनाप्रसाद जी

कोषाध्यक्ष—श्री राजाराम बोहरा

—मन्त्री

—आर्यकुमार सभा जनकनगर सहारनपुर

प्रधान—श्री चन्द्रपाल आर्य

मन्त्री—,, विजयकुमार पाहवा आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल आर्य

पुस्तकाध्यक्ष-,, जयप्रकाश आर्य

—आर्यसमाज बडहलगंज

८ अगस्त को बडहलगज मे 'अराष्ट्रिय तन्त्र निरोध समिति' की स्थापना ( आर्यसमाज बडहलगज के अन्तर्गत) की गई। जिसमे निम्न महानुभाव चुने गये—

प्रधान—श्री डा० मुरलीधर द्विवेदी

मन्त्री— ,, शारदाप्रसाद आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री रामनगीना पाण्डे

—मन्त्री

—आर्यसमाज प्रेमनगर देहरादून

प्रधान—श्री कृष्णदेव शर्मा

वरिष्ठ उपप्रधान—श्री नेटाराम

उपप्रधान—श्री बालकराम

मन्त्री—श्री रघुनचन्द्र शर्मा

उप मन्त्री—श्री रघुनन्दनलाल

कोषाध्यक्ष—श्रीमती सुनीतादेवी

—स्त्री आर्यसमाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड)शकूरबस्ती दिल्ली ३४

प्रधाना—श्रीमती विद्यावती जावरा

उपप्रधाना—,, रामप्यारी चोपड़ा

,, , राजकर्णी

मन्त्राणी— ,, सन्तोष गुप्ता

उप मन्त्राणी -श्रीमती सत्यारानी

कोषाध्यक्षा-श्रीमती राजरानी रखेजा

—सन्तोष गुप्ता मन्त्राणी

—आ०स० सौरी (एटा)

प्रधान—श्री कंहैयमल जी

उपप्रधान-,, खेमकरनसिंह जी

मन्त्री— ,, अमरसिंह चित्तौड़ीजी

उपमन्त्री-,, पोशाकीलाल जी

कोषाध्यक्ष—श्री मोहनलाल जी

## आवश्यकताए

मेरा ज्येष्ठ पुत्र वेदश्रवा जो डबल एम एस सी ( फिजिक्स और मैथिमेटिक्स मे) है, अब दिसंबर मे विदेश चला जावेगा। दो हजार रुपये मासिक वेतन पर उसकी नियुक्ति हो चुकी है। लड़की भी एक अब एम एम सी. कैमिस्ट्री मे है, उसका नाम विश्वभारती है जो कि गौर वर्ण स्वस्थ सुन्दर सुशील गृह कार्य मे दक्ष है।

मै वेदश्रवा और विश्व भारती दोनों का विवाह दिसम्बर तक कर देना चाहता हू। यह ध्यान रहे कि मै पुत्र के लिये आर्य विचारधारा वाली उच्च शिक्षा प्राप्त ही लड़की चाहता हू और पुत्री विश्व भारती के लिये भी उच्च शिक्षा प्राप्त आर्य विचारधारा वाला ही लड़का चाहता हू। विवाह दोनो का अच्छे स्तर पर होगा। पुत्र के विदेश जाने से पूर्व ही पुत्री का विवाह कर देना चाहता हू, जिससे वह विवाह मे सम्मिलित रहे। आर्य लोग इस कार्य मे मुझे सहयोग दें।

निवेदक—
आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
एम. ए. वेदाचार्य
११९ गौतमनगर नई दिल्ली ४९

## आवश्यकता

"एक प्रतिष्ठित एव सम्पन्न ब्राह्मण परिवार, मासिक आय १२००), के लिये एक सुन्दर तथा सुचरित्र, आयु ३०-३५ के लगभग एक शिक्षित महिला की आवश्यकता है। जो आदर्श ब्राह्मण परिवार की हो, तथा गृहणी के रूप मे परिवार का पूर्ण उत्तरदायित्व समालने मे कुशल हो।

न० ४१ बी द्वारा आर्यमित्र कार्यालय लखनऊ।

## शोक समाचार–

हमारी सभा मे दो मदनमोहन प्रधान रहे–एक श्री मदन मोहन सेठ जी और दूसरे श्री मदनमोहन जी वर्मा। वकील दोनों थे पीछे एक जज बने और दूसरे बने विधान सभा के अध्यक्ष। प्रथम सेठ जी कई वार प्रधान रहे मन्त्री रहे। प्रसन्नचित्त हंमते-हंसाते सबके प्रेमी रहे। वर्मा जी मे उनसे एक गुण अधिक था। श्री वर्मा जी कलाकार व्याख्यानदाता थे। उनकी युक्तियां. प्रमाण, भाषणशैली शब्द विन्यास सब ही प्रभावशाली होते थे। विद्वत्तापूर्ण उनके भाषण आर्य समाज का महत्त्व बढ़ाने वाले होते थे। उनका मिलनसारी, निरभिमानता, बातचीत का ढग मिलने वाले पर प्रभाव डालता था। वह कृपालु हृदय रखते थे। कठोरता किसी को सताना उन्हें प्रिय नहीं था। मेरा उनका परिचय फैजाबाद में ही था। वह मेरे अभिनन्दन उत्सव मे वरेली पधारे थे। उनके भाषण मे बरेली के सुयोग्य विद्वान् उपस्थित थे। सब ने ही उनकी सराहना की। आर्य समाज के विरोधी भी उनके भाषण से विरोध भूल जाते थे। वास्तव मे वे यथानाम तथा गुण: थे। मद–न। मोह–न। न मद न मोह। सरल स्वभाव न मन कुटिलाई। उनके देहावसान से आर्यसमाज की बड़ी हानि हुई है। आर्यसमाज अनुभवी ज्ञानवृद्ध बुजुर्गों से रहित होता जा रहा है। श्री वर्मा जी की कीर्ति अमर रहेगी।

–बिहारीलाल शास्त्री

आर्यसमाज फरीदपुर जिला बरेली के मन्त्री श्री प० रामप्रसाद जी शास्त्री के बड़े पुत्र श्री नरदेव जी शास्त्री का देहावसान होगया। अभी वे नवजवान थे। एम ए की परीक्षा दी थी। अध्यापक भी थे। आर्यसमाज के निष्ठावान प्रेमी थे। बड़े मधुर भाषी थे। हिन्दी के कवि भी थे। इस शोक मे सभी आर्य भाइयो की शोक सहानुभूति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। परिवार को इस असह्य शोक के सहन की शक्ति और धैर्य दें। –बिहारीलाल शास्त्री

## अध्यात्म-सुधा

[ पृष्ठ २ का शेष ]

पाशविक वृत्तियो को भड़काने वाला साहित्य तो प्राण-घातक होता है। यह प्राण घातक साहित्य तो कुछ थोडो सी मात्रा मे भी वाञ्छनीय नहीं है। कोई भी सुसभ्य व्यक्ति, समाज और राष्ट्र जान बूझ कर, इस प्राण-घातक साहित्य को प्रश्रय नहीं दे सकता। यदि कभी कहीं किसी समाज वा राष्ट्र मे इस अनिष्ट साहित्य को पनपने का अवसर मिलता है, तो यह उस समाज एव राष्ट्र के मानसिक अस्वास्थ्य का लक्षण है। इसका परिणाम कभी भी अच्छा नहीं हो सकता।

बोध और प्रति-बोध रूपी ऋषियो का आविर्भाव इसलिये नहीं हुआ है कि हम इनको पुस्तकों मे अकित करके अल्मारियो में बन्द कर दें। यदि बोध कार्यरूप मे परिणत नहीं होता, या हो ही नहीं सकता, तब वह व्यर्थ है। ऐसी अवस्था मे तो ज्ञान और अज्ञान दोनो ही एक समान ठहरते हैं। भारत की प्रसिद्ध कहावत है कि पैसा गांठ में और विद्या कण्ठ में रहे। इसका अभिप्राय यही है कि मनुष्य को जीवन में सामने आने वाले सभी प्रसगो और सघर्षों के लिये सुसज्जित रहे।

बोध और प्रति-बोध को दिन में भी और रात में भी, निरन्तर ही शुद्ध, सस्कृत, परिमार्जित और सुसज्जित रूप मे अपने पास उपस्थित रखो। न जाने कब कैसा अवसर आयेगा? तब इनकी महती आवश्यकता होगी। बोध और प्रति बोध ये दोनो हमारे सनातन रक्षक और पथ-प्रदर्शक ऋषि हैं। साथ और जागरूक रहने की अवस्था मे ये सदा ही हमारा कल्याण करते रहेगे।

लखनऊ–रविवार ७ सितम्बर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत १९७२९ ०९०७०

## आर्यसमाज संगठन एकता के सत्प्रयास सफल हो

आर्य समाज क महान् सगठन को पिछले दिनो सगठन के सत्ता लोलुप सदस्यों के सत्ता मोह और उसके लिये उत्तरदायित्व हीन तरीकों के अपनाने के कारण एक व्यापक निष्क्रियता ही नहीं अपितु दूषित सडाध-सी उत्पन्न हो रही है। आर्य समाज के कार्य मे शिथिलता ही नहीं मार्गावरोध उत्पन्न हो चुका है, और दुख इस बात का है कि ऐसी महान् सस्था के कार्य को समाप्त करने का प्रमुख दायित्व उन व्यक्तियों पर है, जो सङ्गठन का शीर्ष नेतृत्व करने का अहम्भाव रखने हैं। आर्य मित्र ने विगत समय मे सङ्गठन की आन्तरिक परि शुद्धि में जन-भावना का समर्थन प्राप्त करने की दृष्टि से कुछ प्रयास किया है। हमे अपने प्रयासो मे कहा तक सफलता मिली है इसका मूल्याङ्कन भविष्य मे ही हो सकेगा, परन्तु हमने अनुभव किया कि आर्य जनता को हमारे प्रयासो से पर्याप्त जानकारी मिली है, और बडी व्यग्रता से जनता मे सगठन की दरारो को भरने की तीव्र उत्कण्ठा बढ़ी है।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज सङ्गठन को एकता के सूत्र मे आबद्ध रखने की दिशा मे कुछ आदेश निर्देश दिये थे। परन्तु आर्यसमाज के सिण्डीकेट ने स्वामी जी के आदेशो की अवहेलना ही नहीं की, उपहास भी किया। सन्यासी महान् होता है, स्वामी जी ने इस सारे ताण्डव को देखा और कम्बल झाड़ कर अलग हो गये, और वे अपने पवित्र वैदिक धर्म प्रचार मे जमनी, इग्लैण्ड, अमेरिका आदि की यात्रा पर चले गये हैं।

लेकिन आज भी आर्य समाज का लाक्षागृह जल रहा है। उसमें से सगठन की पवित्र भावना और महर्षि दयानन्द की महती धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए एक दीवाने महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज चिन्तित हैं। और वे अपना सर्वस्व समर्पण कर अपनी जीवनाहुति देकर भी आर्य समाज की एकता के लिये कृत प्रयत्न हैं।

पूज्य स्वामी जी का स्वास्थ्य काफी शिथिल है। विगत २४ अगस्त को वे सहसा अस्वस्थ भी हो गये परन्तु उनके हृदय मे जो पीड़ा है, टीस है। उसके सम्मुख उनकी शारीरिक पीडा उनके लिए नगण्य है, और वे शीघ्र ही सारी परिस्थितियों पर विचार कर अपने आमरण अनशन की घोषणा करने वाले हैं। हम प्रभु से बारम्बार यही प्रार्थना करते हैं कि वे आर्य नेताओ को सद्बुद्धि दें, और वे इस सम्भावित घटनाओ को होने से बचावें और अपनी एकता का प्रदर्शन कर आर्य समाज की रक्षा करें।

विगत १७ और ३१ अगस्त को दिल्ली मे आर्यसमाज सगठन समिति के सत्प्रयासो से सगठन के विवादक चार पक्षो को एकत्र कर उनकी समस्याओ को जानने और समस्याओ का समाधान करने के विशेष प्रयत्न किये गये। हमे प्रसन्नता है कि एकता प्रयास के लिये एकत्र सभी व्यक्तियो ने सहयोग के आश्वासन दिये और अन्त मे चार-पाँच के अल्प मत के मुकाबले श्री पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी को समस्याओ के समाधान के लिये पूर्ण अधिकार देने के प्रस्ताव पारित किये गये। विवाद के तीन पक्षो ने तो अपनी अन्तरङ्ग सभाओ से भी स्वामी जी को सर्वाधिकार देने के प्रस्ताव पारित करके सौप दिये हैं। अब केवल जो वर्ग शेष हैं वह अपने को स्वयम्भू मानकर आर्यसमाज की प्रगति मे रोडे अटका रहे हैं।

एक बार दो स्त्रियो मे एक बालक के सम्बन्ध मे विवाद था। जज ने बालक को काटकर आधा आधा दोनों को देने का निर्णय दिया, परन्तु बालक की वास्तविक माता ने इस निर्णय के अनुसार बालक की हत्या नहीं होने दी और बालक अपनी विरोधी महिला को ही सौप दिया क्योकि आदर्श माता अपने पुत्र का विनाश नहीं देख सकती थी।

आज आर्यसमाज के सम्बन्ध मे भी यही स्थिति है। जो सत्ता के मोह के कारण चिपटे रहना चाहते है, उनके सम्बन्ध मे दृष्टान्त स्पष्ट हैं और जिन्होंने अधिकार सौंप दिये हैं उनका आर्यसमाज प्रेम भी स्पष्ट है।

हम श्री म० आनन्दभिक्षु जी के सत् प्रयासो की सफलता की कामना करते हैं और उन सभी व्यक्तियो को आर्यसमाज का सच्चा एवं हितैषी मानते हैं जो समस्याओ के समाधान के लिये प्रयत्नशील हैं।

प्रभु हमे सद्बुद्धि दें और आर्य समाज की एकता अक्षुण्ण बनी रहे यही हमारी एकमात्र कामना, प्रार्थना और भावना है।

## राष्ट्रपति को बधाई !

भारत के चतुर्थ राष्ट्रपति श्री वराह गिरि व्यकट गिरि के निर्वाचन और शपथ ग्रहण के समाचार पाठक जान चुके हैं। हम मित्र परिवार की ओर से राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होने के लिये श्री गिरि को हार्दिक बधाई देते हैं।

श्री राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय राष्ट्र को प्रबुद्ध रखने के लिये वेद मन्त्र द्वारा प्रेरणा दी इसके लिये भी वे हमारी बधाई के पात्र हैं।

हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि वे दक्षिण-वाम पन्थ के कथित दायरो से ऊपर रहकर राष्ट्र पन्थ के आधार पर भारत की सेवा करेगे। श्री गिरि श्रमिक नेता रहे हैं, इस दृष्टि से वे साधारण जनता की कठिनाइयो को निकट से जानते हैं। हमे पूर्ण विश्वास है कि वे पद की महत्ता और राष्ट्र के गौरवपूर्ण अतीत को दृष्टि मे रखते हुये राष्ट्र रथ को सफलतापूर्वक आगे बढ़ायगे।

## सस्कृत-दिवस

श्रावणी के पवित्र दिवस पर भारत प्रशासन के आदेशानुसार समस्त देश मे सस्कृत-दिवस का सफलता पूर्वक समायोजन किया गया। आर्यजगत् मे भी इस दिवस को बडे उत्साह के साथ मनाने के समाचार मिले है। इस दिवस की सफल सम्पन्नता के लिये आर्य जनता और सभी सस्कृत प्रेमी बधाई के पात्र हैं।

परन्तु इस प्रकार दिवस मना कर चुप बैठ जाना हमारी प्रवृत्ति बन गई है। हमे इस दिवस से प्रेरणा लेते हुए नगर-नगर में सस्कृत प्रचार समितियों का गठन करना चाहिये। प्रत्येक शिक्षा-सस्था मे सस्कृत अध्यापन की सुविधा दिलाने का यत्न करना चाहिये, साथ ही अपनी सन्तानों को सस्कृत के गौरव का ज्ञान कराना चाहिये और इस सब के लिये हम सकल्प ले सकते हैं कि हम अपने हस्ताक्षर सस्कृत में ही करेगे। यह एक व्यावहारिक पग तो होगा ही साथ ही भावनात्मक भी होगा। आशा है इस प्रकार के और भी पग उठाकर हम सस्कृत के प्रति जन भावना उत्पन्न करने मे सफलता प्राप्त करेगे। हम जिन बातो को चाहते है जब तक उनसे जनता का सम्पर्क न होगा उनकी उपेक्षा ही रहेगी अत. हमे सस्कृत को जन-सम्पर्क मे लाने के लिये शिक्षा सस्थाओ मे कार्यक्रम और आर्यसमाजों के उत्सवो पर सस्कृत सम्मेलन आदि करके इस सम्बन्ध मे जनता को निरन्तर प्रेरणा देनी होगी।

आर्यसमाज पर सस्कृत की उन्नति और प्रचार का विशेष दायित्व है आशा है आर्य जनता अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी।

×

# महात्मा आनन्द भिक्षु जी सर्वाधिकारी घोषित

३१ अगस्त नई दिल्ली—आर्य समाज सगठन समिति द्वारा आयोजित एक विशाल बैठक महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता मे आर्य समाज मन्दिर मार्ग मे मध्याह्नोतर २ बजे से हुई, जिसमे दिल्ली गुडगाव, मेरठ, करनाल आदि स्थानो के २०० आर्य समाजो के प्रधान, मन्त्री तथा कार्यकर्त्ताओ के अतिरिक्त सर्वश्री प० शिवकुमार जी शास्त्री, ला० रामगोपाल जी शालवाले, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री, सोमनाथजी मरवाह, उमेशचन्द्रजी स्नातक रामनाथ जी भल्ला, स्वामी अखिलानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, अमर स्वामी जी, नारायणदास जी कपूर, लाला नवनीतलाल जी एडवोकेट, माता विद्योतमावती आदि आर्य समाज के प्रमुख नेताओ ने भी बैठक मे भाग लिया। सभी उपस्थित कार्य कर्ताओ ने आर्य समाज मे चल रहे पारस्परिक विवादो के प्रति दुःख प्रकट करते हुये अति शीघ्र सर्वसम्मत समाधान ढूढ़ने के लिये आर्य नेताओ से प्रार्थना की। चार घण्टे के विचार विमर्श तथा सुझाओ के बाद सभी नेताओ तथा कार्य कर्ताओ ने विवादो को सुलझाने के लिये महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज से सर्वाधिकारी बनने तथा अनशन के निश्चय को स्थगित करने की प्रार्थना की, जिसे महात्मा जी ने स्वीकार कर लिया।

महात्मा जी ने चारो पक्षो (नई-पुरानी सार्वदेशिक सभा तथा नई पुरानी प्रतिनिधि सभा पजाब) से प्रार्थना की है कि वे अपनी ओर से अधिकार प्राप्त दो-दो व्यक्ति अपने पक्ष के स्पष्टीकरण के लिए १० सितम्बर तक दे दें। जिनके सहयोग से वास्तविक स्थिति को जानकर अन्तिम निर्णय किया जा सके। सब पक्षो की ओर से महात्मा जी को सर्वाधिकारी स्वीकार करने के बाद आर्य जगत् मे पुनः प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। हमारी सभी पक्षो से प्रार्थना है कि वे आर्य समाज की प्रतिष्ठा का ध्यान रखते हुये महात्मा जी का निर्णय करने मे पूर्ण सहयोग करें। तथा उसे सर्वात्मना स्वीकार कर आर्योचित आदर्श उपस्थित करे।

—मन्त्री, आर्यसमाज सङ्गठन समिति

# आर्य समाज विवादों के निराकरण हेतु समिति

## महात्मा आनन्द भिक्षु द्वारा सदस्य होने से इनकार

नई दिल्ली २९ अगस्त। महात्मा आनन्द भिक्षु ने एक वक्तव्य मे कहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से समाचार-पत्रो मे एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है कि उसने प्रान्तीय सभाओ के विवाद समाप्त कराने के लिये तीन व्यक्तियो की एक समिति नियुक्त की है। उस समिति मे दो अन्य सन्यासियो के अतिरिक्त मेरा नाम भी दिया हुआ है। मैं स्पष्ट करना चाहता हू कि मै ऐसी किसी समिति मे नहीं हूं और न ही किसी सार्वदेशिक सभा को मैने इस प्रकार की कोई स्वीकृति दी है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपनी ओर से निर्णायक नियुक्त करने का कोई अधिकार नहीं क्योंकि वह भी स्वयं एक विवाद ग्रस्त पक्ष है। अतः जब तक सभी विवादग्रस्त पक्ष निर्णायको को स्वीकार न करें तब तक किसी समिति का कोई मूल्य नहीं।

—आनन्द भिक्षु

### आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरंग सभाके

# आवश्क निश्चय

दि० १३ जुलाई १९६९ में निम्नप्रकार पारित हुए।

१—निश्चय स० २ दिवगत आर्य विद्वानो एव आर्यपुरुषो के प्रति निम्न प्रकार शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का यह साधारण अधिवेशन सर्व श्री (१) मदनमोहन जी वर्मा पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० आर्यसमाज फंजाबाद, (२) मेहरचन्द शर्मा सपादक आर्यवीर, जालधर, (३) ला० शान्तिनारायण जी उपप्रधान आर्यसमाज मेस्टनरोड-कानपुर, (४) सेठ बद्रीप्रसाद भौरुका आ० स० काकडवाड़ी-बम्बई, (५) जनमेजय जी शास्त्री आ० स० मवीगढ (अलीगढ़), (६) सत्यव्रत शास्त्री आ०स० करौल बाग नई देहली, (७) राजेन्द्र प्रसाद मन्त्री आ० स० मिठौरा बाजार, (गोरखपुर), (८) डा० दिनेश जी वर्मा आर्यसमाज फैज़ाबाद, (९) नरदेव जी शास्त्री पुत्र श्री रामप्रसाद जी शास्त्री फरीदपुर-बरेली, (१०) सुरेन्द्रपाल पुत्र श्री बा० राजाराम जी आर्य बदायूँ, (११) माधोप्रसाद जी आर्य सिमरिया जिला हरदोई, (१२) नरेन्द्रकुमार पुत्र श्री जुगुलबिहारी लाल पूरनपुर और (१३) श्रीमती श्यामौली देवी धर्मपत्नी श्री स्थानसिंह जी जलाली जिला अलीगढ़ के आकस्मिक निधन पर शोक सम्वेदना प्रकट करता है और उनके दुःखी परिवार को धैर्य एव दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

३—निश्चय स० १२ आर्यसमाज रामपुर की योजना ग्राम-ग्राम में मोटर द्वारा प्रचार हो। निश्चय हुआ कि सभा की ओर से प्रबन्ध होने पर इस प्रस्ताव को क्रियान्वित किया जावे। साथ ही जिला समाओ को प्रेरणा दी जावे वे अपनी क्षमतानुसार अपने क्षेत्र में इस योजना को क्रियान्वित करने का प्रयास करे।

३—निश्चय स० १३ सभा को मजबूत और शक्तिशाली बनाने निमित्त श्री बलवीरसिंह जी के निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत हुए। इस प्रकार निश्चय हुए कि—

[अ] प्रत्येक कमिश्नरी मे वेद प्रचार मण्डल बनाये जायें और कमिश्नरी सम्मेलन अच्छे रूप मे करने के लिये सभा आदेश दे और सभा के अधिकारी भी उसमे भाग ले। लोगो को प्रेरणा मिलेगी, समाजो का सगठन होगा, और प्रेम बढ़ेगा।

[ब] सभा के उपदेशक एव प्रचारक कमिश्नरी वेद प्रचार मण्डल को दे दिये जायें, उनको वेतन का भार भी वेदप्रचार मण्डल पर ही हो, उन प्रचारको की डायरी मण्डल द्वारा प्रत्येक मास सभा को आनी चाहिये, जिससे, सभा को सब व्यवस्था आदि का पता रहे। दो मास बाद उसका स्थानान्तरण दूसरी जगह सभा द्वारा हो और उनकी जगह दूसरे विद्वान आकर सभार लें। इस प्रकार प्रचार मे बल मिलेगा, समाजो मे जागृति आयेगी।

[स] समाज प्रचार बिना जीवित नहीं रह सकती, बिना प्रचार के सभा को जो हानि हो रही है, उसका पता निरीक्षण मे चला है। सभा का धन जिस हिसाब से सभा द्वारा सूची मिली है, समाजो पर हजारो रुपया तो मेरठ कमिश्नरी में ही है। यदि सब जगह ही ऐसा होगा तो लाखो रुपया होगा। यह प्रचारक मण्डल द्वारा प्रत्येक समाज से सम्पर्क करेगे। दशाश, वेद प्रचार प्राप्त करेंगे, सभा को लाभ होगा। [शेष पृष्ठ १३ पर]

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये आवश्यकता है उन व्यक्तियों की जो

[ आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम ए प्रचार मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति ]

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की बृहत्तम योजना को सफल बनाने के लिये सैकडो व्यक्तियो की आवश्यकता है। हमारे कार्यालय मे पत्र आते हैं कि हमे काम बताइये यहाँ मैं कुछ कामों का निर्देश करता हू—

१—शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा करनेवाले पचास शास्त्रार्थी पण्डित १५ अक्तूबर १९६९ को सायकाल तक दिल्ली राजधानी पहुच जावेंगे और पहला शास्त्रार्थ दिल्ली मे होगा। इसकी सूचना हमने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य को अपने पत्र द्वारा दे दी है। दिल्ली की आर्यसमाजे इसकी तैयारी करे जितना इस कार्य को उत्तम बना सके बनावें। दिल्ली मे उन व्यक्तियो की भी आवश्यकता है जो हमारे मुखपत्र आर्यमित्र के ग्राहक इस समय १०) वार्षिक के बना दें। दिल्ली का कोई आर्यसमाज आर्यमित्र से वञ्चित न रहे और आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सगो मे इस आर्यमित्र की अधिक प्रतियाँ मगाकर सभासदो को देदें। क्योकि सारा शताब्दी आन्दोलन आर्यमित्र मे इस समय चल रहा है। आँदोलन व्यापक रूप धारण कर लेने पर दिल्ली के कार्य कर्त्ताओ को सुविधा रहेगी।

नोट—प्रत्येक ग्राहक बनाने पर १०) मे से २) पारिश्रमिक दे दिया जावेगा।

२—शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा मे दश भागो मे विभक्त होकर शास्त्रार्थ मण्डल प्रस्थान करेंगे। प्रत्येक मण्डल के साथ एक-एक प्रबन्धक की आवश्यकता है जो अपना-अपना एक मास का समय शास्त्रार्थ मण्डल के साथ यात्रा मे देवे। यदि कोई महानुभाव पूरा एक मास न दे सके तो अपना समय निर्देश कर देवे जिससे हम समय विभाग बना सके। यदि पूरे मास का समय देवे तो केवल दस व्यक्तियो की आवश्यकता होगी अन्यथा अधिक व्यक्ति अपेक्षित होगे।

नोट—ये व्यक्ति समाओ के अधिकारी हो तो अच्छा है क्योकि आय-व्यय का हिसाब रखना पडेगा और जहाँ पहुचेंगे वहाँ अपने प्रभाव का भी उपयोग करना होगा। इसके लिये दो प्रकार के व्यक्तियो की उपयोगिता हो सकती है—

(क) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व वर्तमान और भविष्य के प्रधान उप प्रधान मन्त्री उपमन्त्री कोषाध्यक्ष उप कोषाध्यक्ष अपने समय देने की सूचना तत्क्षण सभा कार्यालय को दे दें।

(ख) सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा तथा प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी इस प्रकार अपना समय देवें कि अपने प्रान्त से भिन्न प्रान्त की यात्रा मे वे साथ जावे तो अधिक रुचिकर होगा। क्योकि शास्त्रार्थ के लिये जो नगर चुने जावेंगे उन नगरो मे जहाँ शास्त्रार्थ मण्डल के पहुचने [illegible] वहाँ जब दूसरे प्रान्तो के अधिकारी तथा सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारी उनके नगर मे पहुच रहे है यह भी कम उल्लास का स्थान उन समाजो के लिये नहीं होगा। भारत वर्ष के सब प्रधान नगरो को हम शास्त्रार्थ मण्डल अवश्य ही भेजेंगे अतः अब समय आ गया है आर्यसमाजें शास्त्रार्थ मण्डल को निमन्त्रण देना प्रारम्भ करे।

३—आवश्यकता है उन आर्य वीरो की जो अपने-अपने नगरो मे आर्यवीरों दलो की स्थापना भर्ती ट्रेनिंग का कार्य प्रारम्भ कर दें और दो मास शिक्षण देकर उन की वर्दी बनवाकर स्थानीय सहयोग से काशी मे हजारो की सख्या मे नवयुवक वीरो को पहुचा दें। ये आर्यवीर शोभा यात्रा मे चलेंगे और जो भी जन समुदाय वहाँ पहुचेगा उसका प्रबन्ध इनके हाथो मे रहेगा।

४—आवश्यकता है उन कर्मठ सच्चे कार्यकर्त्ताओं की जो आर्य समाजो के अधिकारी है या इस समय अधिकारी नहीं हैं तो भी नगर-नगर और जिले जिले मे शताब्दी समिति के सयोजक श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी से सम्पर्क स्थापित करे और धनसग्रह के कार्य मे निरन्तर जुट जावे।

५—आवश्यकता है उन सच्ची आर्य देवियो की जो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म महिला आचार सहिता महासम्मेलन का आयोजन करे इस महिला सम्मेलन में सब धर्मों और सब देशों की महिलाएँ निमन्त्रित की जा रही है जो अपने-अपने देश की महिला जगत् की अवस्था बतावेंगी। उन सब धर्मों और सब देशो की महिलाओ का स्वागत आर्य महिलाओं को ही करना है। उनके स्वागत के लिये धन संग्रह प्रारम्भ करो। और हे आर्य देवियो! आपको यज्ञ का प्रबन्ध अपने हाथो में लेना है। वहाँ शताब्दी महायज्ञ मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के शिष्य राज परिवारो के वशज राजागण यजमान होगे। आर्य सस्कृति से सम्बद्ध नेपाल आदि देशो के राजाओ को भी यजमान बनाने के लिये निमन्त्रित किया जा रहा है। उस शताब्दी महा यज्ञ मे कोई वस्तु बाजार से आई हुई प्रयोग मे नहीं लाई जावेगी। वहा गो-माता के दुग्ध से घृत और पहाड से आई औषधियों से सामग्री तथा स्थाली पाक और यज्ञ मे डाला जाने वाला पकवान सब आर्य बहनों की अध्यक्षता मे तैयार कराया जावेगा। हे आर्य महिलाओ यहाँ आन्दोलन की नगरी दिल्ली नहीं है, यह विद्या की नगरी काशी है। जहाँ गली-गली प्रकाड पण्डित रहते हैं। वहाँ आप को देखने को मिलेगी। धारा प्रवाह सस्कृत मे बोलने वाली कन्यायें, नाना विषयो की आचार्य परीक्षा पास देवियाँ वहाँ आपकी बहने सस्वर वेदपाठ कर रही होगी। अत चलो काशी और वहाँ के लिये धन सग्रह शीघ्र करो।

६—शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिये आवश्यकता है। [illegible] की वैयाकरण [illegible] वैदिक विद्वानो की वेदाचार्य [illegible] पोराणिक साहित्य [illegible] शताब्दी समिति कार्यालय [illegible] विद्वानों का स्वीकृति [illegible] मँगाइये और [illegible] भिजवाइये। यह [illegible] परीक्षा का [illegible] कर [illegible] सफल है, सस्कार [illegible] पकडकर सस्कार [illegible] नहीं है। और [illegible] बढ़कर बड़े बडे पोथे [illegible] पण्डित प्रसिद्ध हो जाना, पर इन शताब्दी समारोह मे प्रतिष्ठित विद्वानों के सम्मुख बैठ कर महर्षि के मन्तव्यों

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# काव्य कानन

## वेद वैभव

**विना वेद के विमल मार्ग पर चले,**
**विश्व-कल्याण नहीं है।**

वेद रूप मे ही मानव को ईश्वर का वरदान मिला है।
जिसके विशद काव्य कानन में, जन-जीवन का सुमन खिला है।
आज विश्व मे है क्या कोई, अनुप्राणित जो प्राण नहीं है।

जिसने नहीं इसे अवगाहा, वह प्राणी सर्वत्र भटका है।
वह सन्देह सिन्धु मे डूबा, पद पद पर अबोध अटका है।
सुलझी नहीं गुत्थियां उलझीं, पाया उसने त्राण नहीं है।

'ज्ञान' 'कर्म' का कोष अलौकिक, वर उपासना का उपवन है।
सकल सत्य विद्याओं का गृह, जो 'पदार्थ विद्या' का धन है।
पाये बिना न समता-सौरभ, ममता का म्रियमाण नहीं है।

आर्य-राष्ट्र की कलित कल्पना का पुनीत अरुणोदय होगा।
आर्य - संस्कृति-सुधा बहेगी, मंगलमय सर्वोदय होगा।
स्वर्णिम स्वर्ग धरा पर लाये, ऐसा नव निर्माण नहीं है।

उसी वेद का काव्य निहारो, जो न जीर्ण होता मरता है।
जो विज्ञान-ज्ञान का उद्भव,शुचि अमरत्व तत्व भरता है।
जो सुख-स्वस्त्व दिखावे जन को, ऐसा प्रबल प्रमाण नहीं है।

—'कुसुमाकर' आर्यनगर, फीरोजाबाद

## आर्य बनो

हे आर्य जनो तुम आर्य बनो फिर जग में आर्य विचार भरो।
मझधार मे भारत की नौका उस पार करो उस पार करो ॥

क्या मन में कभी विचार किया ऋषिवर ने क्या दायित्व दिया।
निज धर्म कर्म मर्यादा का अभिषेक करो शृंगार करो ॥

वेदों के गौरव गीतों को गाने से पूरा लाभ नहीं,
जनता आदर्श चाहती है तुम जीवन मे व्यवहार करो ॥

था ऋषि अकेला उपदेशक सुनने वाला संसार सभी,
हिल गया जगत कैसे सारा तुम इस पर जरा विचार करो।

तुमने मंचो पर चीख चीख मेजो के तख्ते तोड दिये,
कितना प्रभाव है वाणी मे यह तथ्य स्वयं स्वीकार करो।

कोरे उपदेशो का प्रभाव दिन अधिक नहीं चल सकता है
वेदों की आज्ञा कर्म करो जीवन का प्रथम सुधार करो ॥

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द' हल्दौर (बिजनौर)

## श्रुति गान

सृष्टि मे श्रुति गान जागे, सुरभित स्वर्ण विहान जागे

अग्नि वायु आदित्य अंगिरा आदि सृष्टि में आते
ऋक् यजु साम अथर्व कोष वे कल्प-कल्प कहलाते
ज्ञान कर्मोपासना बिन विमल वह विज्ञान जागे…

चहुदिश चारों मास उन्हीं का उपाकर्म होता था
सतत संयमी स्वाध्याय रत संसार सुख से सोता था
उतसर्जन हो उठा उसी दिन आये दिवस अभागे…

स्व श्रेष्ठव से सुखी बनाने पूर्ण जगत् के प्राणी
आदि सृष्टि मे प्रभु देता है वेदो की कल्याणी वाणी
बढ़ें विश्व में वैभवशाली आर्यों के अरमान आगे…

सब कर्मों को भले त्याग दे पर न त्यागे वेद को
श्रेष्ठ सन्यासी समझते भली-भांति इस भेद को
घ्रान्त भौतिक श्रान्त क्लान्त मे श्रेयस्कर श्रेनाण जागे…

धर्म से निरपेक्ष शासन क्या कभी कहीं टिका है
रक्षाबन्धन का अभिनन्दन पैसों में यहीं बिका है
दूर दु शासन करो देश से अरियों का अभिमान भागे…

वेद प्रतिपादित नियमों का पालन पुण्य प्रताप है
प्रतिकूलानि आत्मन· तु पाप है अभिशाप है
प्रशस्ति पथ के पथिक अथक को प्रभु मिलता बिन मांगे…

कभी करो न द्वेष किसी से दुख में दुःख दर्शाओ
देख पराई सुख समृद्धि फूले नहीं समाओ
सुधा सिक्त स्वस्नेह की सरस सुरीली तान जागे…

बड़े वेग से बढ़ रही है भारी भ्रष्टाचारी
वेष भूषा बना विदेशी बिगड़ रहे नर - नारी
देश द्रोहियो के दलने को 'रानी' की कृपाण जागे…

कृष्ण सूर्य हैं रश्मियां उसकी अगणित रानियाँ
मूढ़ मतो ने गढली कितनी कपोल कल्पित कहानियां
तुमुल ध्वनि से योगिराज का वह पुन. आह्वान जागे…

चन्द्रयान पर चढकर यद्यपि चरण चाँद के चूम रहे हैं
डगमग पग से पर पृथ्वी पर मानव अब भी घूम रहे हैं
'इन्द्रा' को जो भय दिखलाते दुर्मित वह इन्सान जागे…

नीति रीति नैतिक नियंत्रण वरीयता का वरिष्ठ वरण हो
श्लाघ्य साहस पूर्ण प्रथम पग समाजवाद का राष्ट्रीकरण हो
म्रियमाणो में प्राण जागे निर्धनो का त्राण जागे…

भ्रातृत्व से भूषित भूधर भरे रहे भण्डारे
भव्य भावनाओं से भगवन भर दो हृदय हमारे
फूल-फूल के 'मूल' धूल मे मोहन का बलिदान जागे…

—मदनमोहन एडवोकेट मोंठ (झांसी)

# ऋषि दयानन्द का प्रमाण-निर्देश

[ श्री प० उदयवीर जी शास्त्री, गाजियाबाद ]

महर्षि दयानन्द ने अपनी रचनाओं में अनेक स्थलो पर विभिन्न साहित्य से उपयुक्त प्रमाणो का उल्लेख किया है, उसका अभिप्राय है, कि प्रस्तुत प्रतिपाद्य विषय का उपपादन अन्य प्रामाणिक आचार्यों ने भी किया है, इससे प्रतिपाद्य विषय की पुष्टि होती है, और वस्तुतत्त्व की यथार्थता का पता लगता है। यह प्रथा सदा से चली आई है, प्राचीन लोककर्त्ता महान् आचार्यों के वचनों को उद्धृत कर अपने कथन की पुष्टि करना।

ऋषि दयानन्द की अन्य रचनाओं मे उद्धरणों का इतना बाहुल्य नहीं है, जितना सत्यार्थ प्रकाश में। इसका कारण यही है, कि सत्यार्थ प्रकाश मे विविध विषयों का विवेचन व उपपादन हुआ है। इसमें अनुकूल व प्रतिकूल अथवा विवेच्य और स्वीकार्य उभय प्रकार के प्रमाणो का निर्देश देखा जाता है। कतिपय उद्धृत प्रमाणो के विषय में प्रतिपक्षी आलोचकों द्वारा यह कहा जाता है, कि सत्यार्थ प्रकाश मे उद्धृत कतिपय प्रमाणों के वास्तविक पाठो को स्वामी दयानन्द ने बदल दिया है, जिससे उनके अभिमत पर वस्तुतः अवांछनीय व अशास्त्रीय विचार की भी पुष्टि हो सके।

परोपकार परायण, विविध कार्यों मे नित्य निरत व्यक्तियो के लिये यह सम्भव नहीं, कि किसी ग्रन्थ-रचना के समय विविध प्रकार का समस्त उपयोगी साहित्य उनके सम्मुख रहे। जो लेखक पुस्तकालयों मे बैठकर ग्रन्थ रचना करते हैं, उनके लिये कदाचित् किसी सीमा तक यह सम्भव हो, पर जो प्राय. प्रति दिन विभिन्न स्थानों मे जाकर उपदेश द्वारा जनता को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करता हो, अन्य अध्यात्म अभ्यास के लिये समय निकालता हो आगत पत्रो आदि का उत्तर देना, उसी अन्तराल मे ग्रन्थ रचना के लिये अवसर निकालता हो, ऐसे व्यक्तियों के लिये पुस्तकालयो के बीच बन्द होकर ग्रन्थ रचना करना सम्भव नहीं होता। ऐसे महान् आत्मा अपने अध्ययन काल के सम्भृत तथा अनन्तर यथावसर अभ्यस्त साहित्य की स्मरण पर अधिक आश्रित रहते हैं। ग्रन्थ रचना काल मे भी प्रायः स्मरण के आधार पर उपयुक्त प्रमाणों का उद्धरण कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति मे कदाचित् यह सम्भावना हो सकती है, कि कहीं किसी उद्धरण मे पाठभेद हो जाय; पर आक्षेप के योग्य बात उस समय होती है, जब अपनी अन्यथा विचार-सरणी को सत्य सिद्ध करने के लिये जानबूझकर किसी मूल पाठ को बदल दिया जाय।

सत्यार्थप्रकाश मे उद्धृत एक प्रमाण के विषय मे प्रतिपक्षियों द्वारा यही बात कही जाती है। वह उद्धरण है—

"वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्थाः सन्यासयोगाद्यतयः। शुद्ध सत्त्वाः। ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे॥'

यह सन्दर्भ मुण्डक उपनिषद [३-२-६] का है। उपनिषद् के उपलब्ध सभी सस्करणो मे इसका यही पाठ मिलता है। सत्यार्थ प्रकाश के पञ्चम समुल्लास में यह उद्धृत है। सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भिक सस्करणो से आज तक यही पाठ छपता है, जो उपलब्ध उपनिषत् पाठ के अनुकूल है।

इस सन्दर्भ का उत्तरार्ध भाग सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास मे पुनः उद्धृत किया गया है। वहा इसका पाठ इस प्रकार है।

"ते ब्रह्मलोकेह परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे॥"

अधिक आक्षेप 'परामृतात्' इस पञ्चम्यन्त पाठ के विषय में है। यद्यपि ब्रह्मलोके ह' और ब्रह्मलोकेषु' यह भी थोड़ा पाठभेद है, पर यहां किसी भी पक्ष से अर्थ मे कोई भेद नहीं आता। सप्तमी पाठ मे एक वचन हो या बहुवचन यह साधारण बात है, अर्थ वही रहेगा। परन्तु अगले पद मे उपनिषद् के प्रथमान्त पाठ—'परामृता को 'परामृतात्' इस रूप मे पञ्चम्यन्त बना दिया गया है। आक्षेप कर्त्ताओ का कहना है, कि यह पाठ जानबूझकर बदला गया है, क्योंकि पञ्चम समुल्लास मे वही पाठ है, जो उपनिषद का है। इस सन्दर्भ के अन्तर्गत उक्त पद का पञ्चम्यन्त पाठ कहीं नही मिलता मुक्ति से मुक्त आत्माओ का लौटना सिद्ध करने के लिये यह पाठ बदल दिया गया है।

उपलब्ध प्रथमान्त पाठ मे इसका सीधा अर्थ यह किया जाता है, कि ब्रह्म साक्षात्कार अथवा आत्मज्ञान हो जाने पर ससार परित्याग करते समय ब्रह्म ज्ञानी आत्मा पर-अमृत=ब्रह्म को प्राप्त हुआ ससार बन्धन से सदा के लिये छूट जाता है। पाठ भिन्न होने पर भी दोनो स्थलो पर सत्यार्थ प्रकाश मे इसका अर्थ एक ही किया गया है, जो इस प्रकार है—

पञ्चम समुल्लास—परमेश्वर मे मुक्ति सुख को प्राप्त हो भोग के पश्चात् जब मुक्ति में सुख की अवधि पूरी हो जाती है, तब वहां से छूटकर ससार मे आते है।

नवम समुल्लास—मुक्त जीव मुक्ति मे प्राप्त हो के ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़के ससार मे आते हैं।

मुक्ति से मुक्त आत्माओं के लौटने का अर्थ पञ्चम्यन्त पाठ मे सम्भव है? प्रथमान्त मे नहीं। हमारे विचार से पञ्चम समुल्लास मे भी 'परामृतात्' यह पञ्चम्यन्त पाठ छाप जाना चाहिये, क्योंकि वहां ऋषि ने अर्थ इसी पाठ के अनुसार किया है। अब विचारणीय यह है कि यह पञ्चम्यन्त पाठ प्रामाणिक है, या नहीं? यह पाठ कहीं अन्यत्र उपलब्ध होता है, या इसे सचमुच बदल दिया गया है?

वस्तुस्थिति है, यह पाठ ऋषि दयानन्द ने नहीं बदला। प्राचीन लिपियो मे यह पाठ उपलब्ध होता है। सूतसहिता की 'तात्पर्य दीपिका' नामक टीका मे यही पाठ मुद्रित है।

इस टीका का रचयिता है—विद्यारण्य। कहा जाता है, यह समस्त वेद और वैदिक साहित्य के व्याख्याकार माधव मन्त्री का सन्यास अवस्था का नाम है। ये माधव सायण नाम से प्रसिद्ध है।

इस टीका के प्रारम्भ मे श्लोक है—

वेदशास्त्र प्रतिष्ठाता,
श्रीमन्माधवमन्त्रिणा।
तात्पर्यदीपिका सूत-
संहिताया निर्मीयते॥

यह ग्रन्थ 'बाल मनोरमा प्रेस' माइलापुर मद्रास से प्रकाशित हुआ

(शेष पृष्ठ १० पर)

अरबी के प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी—

# स्वर्गीय पं० कालीचरण मौलवी फाजिल

## ( एक संस्मरण )

६ सितम्बर १९६८ की बात है । श्रद्धेय प० कालीचरण 'मौलवी फाजिल' अकस्मात कालेज के फाटक मे घुसे । प्रातःकाल का समय था । नित्य प्रति की प्रार्थना के पश्चात् कालेज प्रारम्भ ही हुआ था, कि मै विद्यालय के प्रागण मे खड़ा हुआ कक्षाओ की ओर देख रहा था । अचानक मेरी दृष्टि सामने आते पण्डित जी पर गयी । मैने समझा किसी छात्र के अभिभावक आ रहे है । उनके हाथ मे छतरी और डण्डा था । दुबला-पतला इकहरा बदन, पतली खादी का कुर्त्ता पहने हुये थे । नगे सिर, एक छोटा-सा बण्डल हाथ मे लिये हुये थे । ओठो पर स्वाभाविक मुस्कुराहट थी । मैने उनसे नमस्ते की । उन्होने बड़े प्रेम से नमस्ते लेते हुये मुझ से पूछा—ब० सुनहरीलाल व कुसुमाकर कहाँ है ? मैने अश्चार्य के साथ कहा—'क्षमा करिये, मैं आपको पहचान नहीं पाया । मुस्कुराते हुये कहने लगे—तुम नहीं जानते—'मैं कालीचरण हू ? फिर भी मेरा ध्यान अरबी के पण्डित कालीचरण की ओर नहीं गया, क्यो कि उन्हे मैने पूर्ण स्वस्थ और ओजस्वी शब्दो मे बोलते देखा था ।

मैने प० जी से कहा—कि मैं अभी तक नहीं समझ पाया । तब बोले—'मै कानपुर वाला मौलवी प० कालीचरन हु । यह सुनकर मुझे थोड़ा सकोच हुआ तथा लज्जा भी । मैने क्षमा मागते हुये कहा—पूज्य पण्डित जी बीस वर्ष से भी अधिक हो गये, तब मैने आपके दर्शन किये थे । बहुत समय से आप इधर आये भी नहीं । शास्त्रार्थो मे आपकी चर्चा हुआ करती थी । वह भी अब समाप्त से हो गये । इसी से मैं आपको याद नहीं रख सका ।

मुझे स्मरण है कि स्वर्गीय पण्डित जी से मेरा परिचय सर्वप्रथम आगरे मे हुआ था, उन दिनो आगरा से 'आर्य मुसाफिर' नाम का एक पत्र निकलता था । उसका हिन्दी सस्करण 'आर्य पथिक' के नाम से निकलना प्रारम्भ हुआ था । मुझे याद नहीं आता कि यह किस सन् की बात है । हा इतना अवश्य याद है । जहा कार्यालय था वहा मै कभी कभी जाया करता था । क्योकि 'आर्य पथिक' का सम्पादन हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् मेरे भाई श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र' करते थे । वहीं पर 'कुल्लियाते आय मुसाफिर' का हिन्दी अनुवाद कोई विद्वान् सज्जन श्री पण्डित जी की देख-रेख मे किया करते थे । तभी से उनके प्रति मेरी श्रद्धा हो गयी थी । मै उन्हे व्याख्यान देने फिरोजाबाद आय समाज के उत्सव पर बुलाया करता था । उन दिनो वे कुरआन मजीद पर बोलते और वैदिक-धर्म के साथ तुलनात्मक समीक्षा किया करते थे । उन दिनों मुझे अरबी की आयतें सुनने का बड़ा शौक था ।

इसके बाद मैं उन्हे श्रद्धा सम्मान के साथ प्रधानाचार्य के कक्ष मे ले गया, और अपनी भूल पर क्षमा मांगी । वह मुस्कुराते हुये कहने लगे कि मैने तो तुम्हे चेहरे-मुहरे से पहिचान लिया था, कि तुम 'कुसुमाकर' हो । मैने उनसे पूछा—इस समय आप कहाँ से आ रहे हैं ? कहने लगे दक्षिण मद्रास से । उधर लोग ईसाईयत की ओर झुक रहे हैं । उनमे प्रचार की बडी आवश्यकता है । इसमे पूर्व मैं बन्नू-कोहाट की तरफ भी गया था । प्रचार बराबर जारी है । देश मे शास्त्रार्थ की बड़ी आवश्यकता है । अन्दर से विदेशी मिशनरियां हमें खोखला बना रही हैं । बात करते समय उनकी वाणी मे युवको जैसा ओज था । हाथ उठा कर बल पूर्वक बात करने की शैली विद्यमान थी । मैने उनकी बडक देख कर पूछा पण्डित जी आपकी आयु कितनी हो गई है ? कहने लगे—'मै लगभग ९० वर्ष का होने आया हू । मैने हृदय मे अनुभव किया कि एक हम हैं, और एक यह । जो इस आयु मे भी धर्म प्रचार की इतनी तड़प और लगन रखते हैं । इसी बीच मे चाय पीते हुये बोले—'आज हमारे व्याख्यान का प्रबन्ध कहीं करा दीजिये । मेरी भी इच्छा हुई कि आज पण्डित जी का व्याख्यान दीर्घ काल के बाद सुना जाये, किन्तु दुर्भाग्य से उसकी व्यवस्था नहीं हो सकी, क्योकि उन दिनो हमारे नगर के आर्य-सेठ कृष्ण गुप्त के यहाँ आचार्य पति शास्त्री की धार्मिक कथा चल रही थी, और उसकी समाप्ति का अन्तिम दिवस था । मैंने उन्हें भी वहीं विश्राम के लिये भेज दिया । सायकाल को वह वहां से शिकोहाबाद आर्यसमाज चले गये और वहाँ से दूसरे दिन डाक से एक पत्र लिखा जिसमे उन्होने मुझे शिकोहाबाद बुलाया था । मैं किसी कारणवश शिकोहाबाद नहीं जा सका, और वह वहाँ से एक दिन ठहर कर जसवन्त नगर आर्य समाज चले गये । अकस्मात् उसी दिन आर्य समाज जसवन्तनगर के प्रधान श्री कुँवरलाल जी आर्य मेरे पास आये और बोले—कि आज हमारी समाज मे कोई पण्डित कालीचरण नाम के उपदेशक पधारे हैं । आते ही उनकी तबियत अधिक खराब हो गई है । अतः मैं शीघ्र वापिस जा रहा हू । पण्डित जी का नाम सुनते ही मैने उनका परिचय दिया, और कहा कि आप शीघ्र जाकर उनके इलाज का विशेष प्रबन्ध करदें, वह अधिक वृद्ध हैं, यद्यपि वह अपने मन में ऐसा अनुभव नहीं करते । अतः आप उन्हें बांदी कुई अपने पुत्र के पास जाने की अनुमति दे दें, क्यों कि यदि अधिक बीमार हो गये तो जसवन्तनगर में इलाज की व्यवस्था करना कठिन हो जायगा । वह भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर तत्काल लौट गये और बांदी कुई जाने का समुचित प्रबन्ध कर दिया, और वह अपने पुत्र के पास पहुच गये । ठीक आठ दिन बाद समाचार पत्रो मे पढ़ा कि वह १४ सितम्बर, ६८ को इस ससार से बिदा हो गये ।

इस घटना से मुझे मार्मिक वेदना हुई क्योकि इस वर्ष चोटी के कई विद्वान् दिवगत हो गये । आर्य क्षेत्र सूना-सा लगने लगा है । अरबी के दो माने हुये विद्वान् इस वर्ष नहीं रहे । स्वर्गीय पण्डित जी ने समय-समय पर कई ग्रन्थ लिखे, मुहम्मद साहब के 'विचित्र-जीवन' ने तो इस्लामी जगत् मे हलचल ही मचादी थी, उन पर अभियोग चला । पुस्तक जब्त हुई । उन्हें एक वर्ष का कारावास भी हुआ । इसमे सन्देह नहीं कि वे बड़े निर्भीक वक्ता थे । उनका अरबी साहित्य का अध्ययन गम्भीर था । सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा मे ही बीता ।

दुर्भाग्य है कि आर्य जगत् अपने मनीषी विद्वानों को भूलता जाता है । आर्य विद्वानो को चाहिये कि अपने उन आर्य पथिकों को अपनी लेखनी द्वारा अमर बनावे जिन्होने अपना समस्त जीवन धार्मिक प्रचार एव प्रसार करने मे आहुत कर दिया ।

श्री कुञ्जलाल 'कुसुमाकर'
आर्य नगर फीरोजाबाद

# भगवान मुसीबत में फँस गये !

संयोग से एक बार हनुमानजी की भेंट अर्जुन से हो गई। बातो-बातो मे अपने आराध्यो के बल पर बहस छिड गई—

'राम बली हैं।" हनुमान जी कहने लगे।

"नहीं, बिल्कुल गलत कहते हैं आप!" अर्जुन ने उनकी बात काटते हुये टोका।

"तो फिर कौन बडा है?"

"श्रीकृष्ण ही सबसे सशक्त है!"

"तुम भूलते हो, अर्जुन, श्रीराम बली हैं। तुम देखते नहीं उन्होने रावण जैसे ताकतवाले अनेको राक्षसो का सहार किया था। अहह! मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री रामचन्द्र से दुनिया में कौन अधिक बली हो सकता है।

"रहने दो, बढ़-बढ़कर बातें न बनाओ, हनुमान्! बड़े तो भगवान आनन्दकन्द श्रीकृष्ण जी है। उन्होने कस जैसे महाबली अनेक दुष्टो को पीसकर रख दिया था। क्या श्रीकृष्ण के अद्भुत साहसिक कार्य भूल गये! पूरी महाभारत मे कौरवो को विजयी बनाने वाली दैवी शक्ति श्रीकृष्ण की ही थी।

"और पूरी रामायण मे मेरे आराध्य भगवान श्रीराम ही अपने तीर धनुष लिये राक्षसो का सहार करते दृष्टिगोचर होते हैं। रावण के भाई बन्धु सब दुष्टो का एक अकेले श्री रामचन्द्र जी की विलक्षण दैवी शक्तियो से ही सभव हो सका था।' हनुमान जी ने तर्क प्रस्तुत किया।

'श्रीकृष्ण दूसरो के लिये जिये। उन्होने स्वय अपने लिये कुछ भी न किया। हनुमान, जीवन की सार्थकता तभी तक है जब तक वह कुछ न कुछ परोपकार और परमार्थ करे, दूसरो की मुसीबत मे काम आये।' अर्जुन कहने लगे, 'परोपकार भाव सच्चे बल का लक्षण है। यों तो ससार मे स्वार्थी कृपण और सकीर्ण व्यक्ति भी जीते रहते हैं, पर उनका जीवन किस काम का है! केवल स्वार्थ के साथ अपने लिये ही जीना अथवा खुद अपनी समस्याओ और परेशानियो मे लिपटे रहना पशु प्रवृत्ति का जीवन ही गिना जायेगा, जो मनुष्य के लिये लज्जा की बात है। श्रीकृष्ण ने स्वय अपने लिये, अपने स्वार्थ के लिये, कुछ भी नहीं किया उन्होने सारी अपनी ताकत, सामर्थ्य और योग्यता परोपकार मे लगाई, न्याय और पक्षपात-रहित जीवन जिया। श्रीकृष्ण ही बड़े हैं।'

बहस चलती रही।

तरह-तरह के तर्क दे दे कर हनुमान जी कहते कि श्रीरामचन्द्र ही बली हैं।

'कहो, क्या शर्त तय करते हो हनुमान!'

हनुमान जी थोडी देर सोचते रहे कि अर्जुन से क्यों कर विचार परिवर्तन किया जाये?

मनुष्य बास की पोली बाँसुरी की तरह है। उसके विचार जिधर बदल दिये जाय, वह उस ओर ही सोचने लगता है। विचार धारा जैसी फूक-फूँकती है, वैसा ही वह सोचता है। आदमी को बदलना हो तो उसकी आस्थायें और विचारणाये उलटनी पडेंगी। अर्जुन का दिमाग कैसे बदला जाय?

शर्त कड़ी से कड़ी रखनी चाहिये।

यह सोच कर हनुमान जी बोले, 'देखो अर्जुन, तुम कहते हो श्रीकृष्ण बली है, मेरी धारणा है

## कहानी-कुञ्ज

अर्जुन श्रीकृष्ण भक्त थे। वे हनुमान जी के तर्क स्वीकार नहीं करते थे और यही प्रमाणित करते थे कि श्रीकृष्ण अधिक बली हैं।

बहस का अन्त ही न दीखता था।

हनुमान ने कहा, "कोई परीक्षा की जाय। तुम भगवान श्रीराम को अधिक बली पाओगे।'

'मै परीक्षा के लिये प्रस्तुत हू। श्रीकृष्ण की शक्तियो का वार पार नही है।'

'यो नहीं' हनुमान जी बोले, 'कोई शर्त तय कर ली जाय।'

'हाँ, हाँ, मै पीछे कब हटता हू। मै कहता हू भगवान श्रीकृष्ण अधिक बली हैं। यह बात एक बार नहीं सौ बार कहने को तैयार हू। कोई भी शर्त तय कर लो। बात मेरी ही सच निकलेगी।'

'रहने दो, अर्जुन! तुम क्या शर्त मानोगे? बड़ी कठोर शर्त है!'

कि श्रीरामचन्द्र अधिक बली हैं। जो हारे, वही आत्महत्या कर ले। क्या तुम इस शर्त पर राजी हो?'

'मजूर है यह शर्त मुझे!' अर्जुन ने सीने पर हाथ रख कर कहा।

'अच्छा पहिले तुम ही अपने श्रीकृष्ण का बल दिखाओ!'

लो देखो, हनुमान! श्रीकृष्ण की अद्भुत शक्ति!

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया! उनकी अलौकिक शक्ति का अद्भुत प्रभाव नजर आया!

हनुमान जी ने देखा समुद्र मे एक विशाल पुल बँध गया!

पुल को दिखाते हुये अर्जुन कहने लगे—

'हनुमान जी, अब यदि आप के श्री रामचन्द्र बली हैं, तो इस विशाल पुल को तोड दो। आप पर तो राम की बडी कृपा है। उनकी सारी ताकत आपके पास है। याद रखो, यदि आप इस पुल को न तोड सके, तो श्री राम का बल घटिया श्रेणी का माना जायगा।'

'श्रीराम! अहह! मेरे प्रभु की शक्ति तो असीम है! उनकी शक्ति का आवाहन कर मैं एक नहीं, ऐसे कई पुल तोड़ सकता

श्री डा० रामचरण महेन्द्र
एम ए, पी. एच डी.

हू। यह तो बच्चो का खेल जैसा निर्बल है।' यह कहते कहते महाबली हनुमान जोश मे भर गये।

हनुमान जहाँ एक ओर सेवा और आदर्श के मुकुटमणि थे, वहीं दूसरी ओर वे समस्त ससार को आतकित कर देने वाले साहसी और शक्तिशाली भी थे। राम के हित के लिए उन्हे अपने प्राणों का बलिदान करने में तनिक भी सकोच न था। राम की यशोगाथा के अतिरिक्त वे प्रत्येक वस्तु से विरक्त थे। यहाँ तक कि विश्व के महान् देवता ब्रह्मा अथवा विष्णु के गौरवमय स्थान को प्राप्त करने की लालसा भी उनके मन मे न थी।

हनुमान ने राम की गौरव की रक्षा के लिये शतयोजन विस्तार किया। अपने महाबली स्वरूप को प्रत्यक्ष किया। विकट चीत्कार करते हुये पूरी शक्ति से उस पुल पर धम्म् से कूद पडे! मानों धरती पर आकाश ही टूट पड़ा! समस्त भूतल पर जैसे महा-काल ही आ गया! चारो ओर पृथ्वी ऐसे हिलने लगी जैसे पीपल की पत्तियाँ!

ऐसा प्रतीत होता था, मानो समस्त पृथ्वी चकनाचूर हो जायगी इतना विकट भूचाल आया कि सब प्राणी थर-थर काप उठे! सृष्टि के सब प्राणी दुःखी हो गये। त्राहि-त्राहि मच गई।

किसी की समझ मे न आया कि इस भयङ्कर उथल-पुथल का क्या कारण है?

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.–६०

भाद्रपद १६ शक १८९१ भाद्रपद कृ० ११
[ दिनाङ्क ७ सितम्बर सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

भगवान तो सर्वत्र अन्तरयामी हैं। उन्हें इस समस्त सृष्टि मे कहाँ क्या हो रहा है, यह सदैव विदित रहता है। वे संसार के कण-कण को जानते हैं। उनके असंख्य नेत्र हैं, जिनसे सृष्टि का रत्ती-रत्ती अंश दीखता है।

सहस्रशीर्षा पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत
स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्
यजुर्वेद ३१। १

जो परमात्मा असंख्य सिर आंख और पाँव वाला है, जो पाँच स्थूल और पाँच सूक्ष्म भूतों से युक्त सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है, उससे किसी का क्या छिपा है?

भक्तों के इस झगड़े का पता जब सर्व अन्तरयामी भगवान् को मालूम हुआ, तो वे मन ही मन बहुत चिन्तित हुये। गजब हो गया! मेरे दो भक्त तनिक बात पर आत्म-हत्या करने को उतारू हैं?

कहने लगे, 'हाय, बड़ी विषम परिस्थिति उपस्थित हो गई है। महावीर हनुमान तथा धनुर्द्धर अर्जुन दोनों ही हमारे परम भक्त हैं। दोनों ही एक से एक बढ़कर उपासक हैं। किसी न किसी रूप में मुझे भजते हैं, और सर्वोपरि मानते हैं। राम के हित या गौरव रक्षा में हनुमान को तनिक हिचक नहीं है। श्रीकृष्ण को सबसे शक्तिशाली व प्रभावित करने मे अर्जुन मिट जायेंगे दोनों व्यर्थ ही लड़ेंगे, तो बड़ी हानि होगी शुष्क तर्क तथा व्यर्थ के वाद-विवाद मे दो उच्च आत्मायें नष्ट हो जायेंगी संसार का बड़ा अपकार होगा।

अब यदि मैं हनुमान की रक्षा करता हू, तो वीर अर्जुन सम्मान रक्षा के लिए मर जायेंगे अर्जुन के मरने से एक साहसी महान उद्यमी, असीम उत्साही, प्रकाण्ड शक्तिशाली योद्धा का अन्त हो जायगा।

यदि अर्जुन जीतते हैं, तो ब्रह्मचर्य की निष्ठा करने वाले हनुमान की मृत्यु निश्चित है। क्या करूं? अजीब दुविधा मे फंसा हू? राम के सम्मान की रक्षा के लिए हनुमान समुद्र लांघ गये थे.. उन्होंने अपने जीवन और मृत्यु की तनिक भी चिन्ता न की थी। कुछ ऐसी युक्ति करनी चाहिए कि मेरे दोनों ही भक्त सकुशल बच जायें, और इनके स्वाभिमान की रक्षा भी हो जाय।'

सोच विचार कर एक तरकीब सूझी।

उन्होने स्वय ही अपना शरीर उस मायावी पुल के नीचे लगा दिया।

हनुमान जी ने जैसे ही उस पुल पर अपना कदम बढ़ाया की भारी बोझ से भगवान का शरीर फट गया।

बड़ा कारुणिक दृश्य उपस्थित हुआ—

भगवान के शरीर से झर झर खून बहने लगा। समुद्र के पानी मे रुधिर की धारा मिलने से पुल के आस-पास का खारा जल लाल लाल रक्तिम दिखाई देने लगा।

'क्या बात है?' हनुमान ने पुल के नीचे झांका।

'उफ! यहा तो स्वय साक्षात् भगवान राम का शरीर इस पुल के नीचे लगा है। मै तो जीवन भर राम के हित के लिये लड़ा हू राम की सेवा और गौरव के अतिरिक्त मे प्रत्येक बात से विरक्त हू. हाय! हाय!! मुझसे अपने आराध्य का अपकार हो गया। उनका शरीर क्षत-विक्षत हो गया! कितना अधम पाप मे बडा पापी हू छी छी..!'

वे कूद कर भगवान राम के चरणों मे लोट गये और क्षमा-याचना करने लगे।

उधर जब पुल के नीचे अर्जुन ने देखा, तो उन्हे ऐसा लगा कि स्वय भगवान श्रीकृष्ण ही अपना शरीर पुल के नीचे लगाये हुए हों और रुधिर उन्हीं के शरीर से निकल रहा हो। अर्जुन ने कृष्ण रूपी भगवान को उसी प्रकार पहचाना और कारुणिक विलाप करने लगे।

दोनों भक्तो को ऐसा लगा कि उन्होंने अपने आराध्य के प्रति घोर पाप किया है। दोनों ही मन मे लज्जित थे और अपने आपको अपराधी जैसा जघन्य मान रहे थे।

थोड़ी देर तक निस्तब्धता छाई रही।

हनुमान ने कहा,'भगवान मुझे उतावले पन पर क्षमा कीजिये।'

अर्जुन के शब्द थे,—'मैं व्यर्थ ही बहस रूपी गन्दी कीचड़ मे फस गया।'

अब भगवान के श्रीमुख से अमृत की बूंदों की तरह कुछ शब्द निकले–

'महाबली महावीर हनुमान! धनुर्धर साहसी अर्जुन! दोनो ही अपनी-अपनी दृष्टि से ठीक हो!'

'ठीक कहा हमसे तो बड़ा भारी पाप हो गया, भगवन! हमने आपको कष्ट पहुचाया..।'

'अच्छा होता यदि आप दोनो ही विवेक से काम लेते। जहां ताकत अधिक होती है, वहा प्रायः विवेक कम होता है। नासमझी कर बैठे तुम दोनो ही।

'विवेक क्या है भगवन?'

'सारे विश्व मे, भक्तो के मन मे, पशुपक्षी और सब जीव-जन्तुओं मे मैं मौजूद हू। यह सृष्टि ही परमात्ममय है। ब्रह्म एक है, बस उसके रूप अनेक हैं। तुम दोनों तथा सभी भक्तो के अन्तर मे मैं स्थित हू। तुम में बोलने और सोचने वाली यह आत्मा मेरा ही तो अंश है। राम और कृष्ण सब मेरे ही रूप हैं, न कोई बड़ा है न छोटा।'

दोनो भक्त अपनी विवेकहीनता पर पछता रहे थे।

× × ×

ईशा वास्यमिद सर्व यत्किं च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जिथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

इस सारे विश्व में नाना रूपों में अन्तर्यामी भगवान व्याप्त है। कर्म करने पर ईश्वर द्वारा जो भी फल प्राप्त हो, उसका तुम उपभोग करो। जो दूसरे को प्राप्त है, उस पर अपना मन मत चलाओ।

+

## गुरुकुल अयोध्या

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या की अन्तरग सभा के सदस्यो की यह बैठक दिनाक ६-८-६९ को श्री स्वा० अभयानन्द जी के देहावसान पर शोक प्रकट करती है। तथा उनकी गुरुकुल के प्रति की गई सेवाओ को सराहना करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उन दिवगत आत्मा को सद्गति एव दुखी परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—दयानन्द बालसदन अजमेर के श्री दत्तात्रेय जी बाव्ले प्रधानाचार्य अध्यक्ष चुने गये हे।

—राजसिंह उपमन्त्री



स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए एम०वी०आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

और

## गोवा सम्मेलन-ऋषि मेला अजमेर-दिल्ली की आर्यों की स्पेशल गोवा को

(लेखक श्री आचार्य विश्वश्रवा : व्यास एम०ए० वेदसाहित्याचार्य)
प्रचारमन्त्री–काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह

प्रत्येक आर्य यह जानता कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ १६ नवम्बर १९६९ को हुआ था उसकी शताब्दी १६ नवम्बर १९६९ को ही हो सकती है। काशी के आर्य भाई ६ मास पूर्व से काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का आन्दोलन समाचार पत्रों द्वारा कर रहे हैं। और यह काशी शास्त्रार्थ शताब्दी १६ नवम्बर से काशी में होगी यह चर्चा सर्वत्र फैल रही थी फिर भी हमें जान कर यह आश्चर्य हुआ कि इन्हीं तारीखों में १२ नवम्बर को दिल्ली के ५०० आर्य भाइयों की स्पेशल ट्रेन अजमेर ऋषि मेला होती हुई गोवा समेलन मे पहुचेगी, जब कि उस समय काशी शास्त्रार्थ शताब्दी काशी मे मनाई जा रही होगी। अजमेर मे ऋषि मेला १६ नवम्बर तक चलेगा। इस सब का परिणाम यह होगा कि दिल्ली के आर्य भाई काशी शास्त्रार्थ शताब्दी जैसे अभूतपूर्व समारोह मे भाग नहीं ले सकेंगे और अजमेर के ऋषि मेला के कारण परोपकारिणी सभा के लोग ऋषि के हस्तलेख आदि लेकर काशी नहीं पहुच सकेंगे, जहाँ सब ससार के स्कालर आवेंगें अच्छा होता कि ऋषि के हस्त लेखों को वे देखते और प्रभावित होते। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी को काशी के लोगो ने प्रारम्भ किया और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इस को अपने हाथों में लिया। जिस प्रकार मथुरा उत्तर प्रदेश मे है। अतः मथुरा दीक्षाशताब्दी को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने सार्वदेशिक स्तर पर कितने विराट् रूप मे किया था ये वे लोग जानते हैं, जिन्होने मथुरा शताब्दी मे पहुच कर भाग लिया था कि दीक्षा शताब्दी मे लाखो व्यक्ति सारे देश देश के मथुरा मे पहुचे और राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी भी मथुरा शताब्दी मे पहुचे। इसी दृष्टि से काशी भी उत्तर प्रदेश मे है, अतः आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने काशी शास्त्रार्थ शताब्दी को अपने हाथ मे लिया और मथुरा शताब्दी से भी अधिक विराट् रूप मे यह आयोजन करने का निश्चय किया।

पर अजमेर के ऋषि मेला और गोवा के प्रान्तीय समेलन और दिल्ली के आर्य भाइयो की स्पेशल ट्रेन गोवा को इन्हीं तारीखों मे चलाकर शास्त्रार्थ शताब्दी को असफल करने के लिये जो दुःसाहस किया है आर्य जनता उसे अच्छा नहीं कहेगी। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह की वह रूप रेखा है जो आर्य समाज के पिछले सो वर्ष के इतिहास में ऐसा समारोह कभी हुआ ही नहीं। न केवल आर्य समाज प्रत्युत किसी भी संगठन का ऐसा समारोह पिछली कई शताब्दियों में नहीं हुआ होगा। उस को न देखने वाला ही पछतायेगा।

गोवा मे १६ नवम्बर को कोई पर्व नहीं है। और न किसी गोवा वाले की जन्मतिथि ही १६ नवम्बर को है यह गोवा समेलन कभी भी हो सकता था और अजमेर का ऋषि मेला ९ नवम्बर को दिवाली के साथ हो सकता था, और अजमेर के लोग १६ से २१ नवम्बर तक वाराणसी काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर अच्छी तरह पहुंच सकते थे। पर काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर ऋषि मेला करना और गोवा समेलन उचित न था। हम समझते थे कि ऋषि के कार्य मे रोडा नहीं अटकावेंगे। हमने इस सम्बन्ध मे गोवा पत्र लिखे अजमेर पत्र लिखे और दिल्ली की स्पेशल ट्रेन चलाने वाले ला० श्री रामलाल जी कन्ट्रैक्टर से बात की कि ऐसा क्यो हुआ। जो उत्तर हमे प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं।

१—ला० रामलाल जी कन्ट्रैक्टर ने स्पष्ट शब्दो मे कहा कि हमें काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का ज्ञान नहीं था। श्री ला० रामलाल जी कन्ट्रैक्टर सच्चे आर्य हैं मै उनकी भावुकता ऋषि भक्ति और कार्यकुशलता को भली प्रकार जानता हूँ उन्होंने जो कहा सत्य कहा। उन्हें यदि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का ज्ञान होता तो स्पेशल ट्रेन गोवा न जाती काशी ही जाती।

२—परोपकारिणी सभा ने भी उत्तर दिया कि उन्हीं दिनों दिल्ली की स्पेशल ट्रेन अजमेर आ रही है उन्हें हम स्वीकारी दे चुके हैं। और आर्य केन्द्रीय सभा के लोगों का यह कहना है कि हम रेलवे को रुपया स्पेशल ट्रेन का दे चुके हैं। अजमेर में एक सप्ताह यज्ञ आदि भी होता है। मैं स्वय ऋषि मेला में एक वर्ष समिलित हुआ था। यह उनका कार्यक्रम स्वाभाविक है वे भी विवश हैं।

ये दोनो बाते हमारी समझ में आती है पर एक बात हमारी समझ में नहीं आई कि क्या आर्य नेता भी यह नहीं जानते थे कि काशी शास्त्रार्थ की तारीख क्या है। आर्य नेताओं ने गोवा समेलन स्वय रखाया या यह मानलें कि गोवा वालों ने स्वय इन तारीखो मे समेलन रखा तब आर्य नेताओं ने अपनी स्वीकारी के समय गोवा के आर्यों को क्यो नही कहा कि इन तारीखों मे गोवा का प्रान्तीय समेलन मत रखो और सब ने स्वीकारी देदी कि हम नेता भाषण देने के लिए पहुंचेगे। परिणाम हमें यह भुगतना पड़ेगा कि न तो गोवा के आर्यभाई काशी शास्त्रार्थ शताब्दी देख सकेंगे और न अजमेर राजस्थान के और नाहीं दिल्ली के ऋषिभक्त भाई बहिन इस काशी-शास्त्रार्थ शताब्दी में पहुंच सकेंगे। जिस सब का हम को अधिक दुःख होगा।

मैं इस लेख के द्वारा फिर एक बार गोवा के लोगों को, दिल्ली के आर्य्यभाई बहिनों को, अजमेर के ऋषिमेला प्रबन्धकों को आदर पूर्वक कहता हू कि तीनों मिलकर कोई रास्ता निकालों यह धर्मसकट दूर हो। अभी यदि अजमेर से ऋषि के हस्तलेखों और ऋषि के सामान को लेकर परोपकारिणीसभा नहीं पहुंचेगी तो हमारी शताब्दी एक प्रधान अङ्ग से हीन रहेगी। और यदि दिल्ली के आर्यभाई बहिन काशी-शास्त्रार्थ शताब्दी मे नहीं पहुचेगे, तो वह रौनक जो उनके आने से ही होती है वह नहीं होगी। और गोवा के आर्यभाइओं का अभी नया काम है यदि वे काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में पहुचते तो कोई प्रेरणा लेकर लौटते इससे वे वञ्चित रह जावेंगे।

मैंने अपने पिछले लेख में लिखा था कि आर्यसमाज के विधाताओं काशी शास्त्रार्थ शताब्दी तक लड़ना बन्द कर दो और मुकदमों की तिथियां शताब्दी के बाद की कोर्ट से डलवावो। फिर लड़ लेना अभी मिलकर दो मास बैठ जाओ। सुनते हैं कि कौरव पाण्डव दिन भर लड़ते थे और सायंकाल मिलकर साथ बैठकर भोजन करते थे। तुम कौरवो से भी गिरे हुए हो। इन्ही दिनों सब को जोश आ रहा है। विज्ञप्तियो पर विज्ञप्तियां निकल रही है कि हम मन्त्री प्रधान हैं तुम नहीं हो। एक-एक विज्ञप्ति दस-दस हजार छपती है और एक-एक हजार विज्ञप्ति के भेजने मे १५०) रु० प्रति हजार व्यय होता है। इस अनुपात से एक विज्ञप्ति को सारे देश मे भेजने मे एक हजार रुपया छपाई और टिकट पर खर्च होता

(शेष पृष्ठ १४ पर)

लखनऊ रविवार २१ सितम्बर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## शिक्षक दिवस

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शिक्षक दिवस की रस्म अदायगी कर दी गयी। राष्ट्र नेताओ ने शिक्षको का कठिनाइयो पर घड़ियाली आँसू बहाकर आत्म सन्तोष कर लिया और शिक्षक समाज को यह विश्वास दिलाने की विडम्बना की है कि सरकार और नेता समाज सभी शिक्षको की समस्याओं के समाधान के इच्छुक हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि राज्यो मे शिक्षा और शिक्षक नौकर शाही व्यवस्था के शिकार हैं, और शिक्षण सस्थाओ के सन्चालको को अपनी राजनीति मे सहायक बनाने के लिये वह सब कुछ किया जाता है जो शिक्षको के हित मे नहीं होता और यदि यह स्पष्ट कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी कि राजनीतिक शिक्षा सस्थाओ पर अपने लाभ के लिये अधिकार रखते और शिक्षा सस्थाओ का दुरुपयोग करते हैं। ऐसी स्थिति मे शिक्षक दिवस मे शिक्षक के आसू पोछने वाले सन्देश कुछ नहीं कर सकते।

शिक्षक सामज मानव समाज का शीर्षस्थवर्ग है, उसे असतुष्ट रखकर कोई भी राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। भारत के २२ वर्षीय स्वराज्यकी धीमी और अस्पष्ट प्रगति का एक मात्र कारणयही है कि शिक्षा की समस्या विशेष कर शिक्षक वर्ग की उपेक्षा की गयी है। हम चाहते हैं कि इस बार जो घोषणायें इन दिवस की गयी हैं वे शीघ्र पूरी की जाँय तभी यह माना जा सकेगा कि सरकार का ध्यान इस ओर गम्भीर है और वह वास्तव में शिक्षक समाजके असन्तोष को दूर करना चाहती है। ऐसा होने पर ही शिक्षक-दिवस मनाना सफल कहा जायगा।

## चल चित्रों में चुम्बन और निर्वसन प्रदर्शन की छूट का विरोध

आर्य मित्र की सम्पादकीय टिप्पणियो मे हम खोसला समिति की अश्लीलता को बढ़वा देने वाली सिफारिशो का विरोध कर चुके हैं। ससद मे भी खोसला समिति के प्रति वेदन का प्रबल विरोध किया गया है। अनेक ससद् सदस्यों ने चुम्बन और नग्नता प्रदर्शन को भारतीय भावनाओ पर आघात पहुचाने वाला बताकर खोसला समिति के प्रतिवेदन को अमान्य घोषित करने की माग की हैं। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि स्वय चलचित्र जगत् की कई सिने अभिनेत्रियो ने भी इन सिफारिशों का नैतिक और व्यावहारिक दोनो दृष्टियो से विरोध किया है। इस प्रकार प्रसिद्ध सिने निर्माता शान्ताराम ने भी इन सिफारिशो को अभारतीय और हानिकर कहा है।

इन सब बातो का सरकार पर कुछ प्रभाव हुआ है या नहीं, परन्तु अभी सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री गुजराल ने यह कहकर अपना पीछा छुडाने की कोशिश की है कि सरकारने अभी खोसला समिति की सिफारिशो को स्विकार करने का कोई निर्णय नहीं किया हे और सरकार समिति के सबन्ध मे हुई अलोचनाओ को ध्यान मे रक्खेगी।

सच्चाई के साथ किये गये विरोध का प्रभाव स्वाभाविक है। आर्य जनता और भारतीय आदर्शों के समर्थक व्यक्तियो का खोसला समिति की सिफारिशो के विरुद्ध जनमत जागृत करने में सलग्न रहना चाहिये।

## विश्व की जनता वेद सन्देश के लिये प्यासी है। आर्य समाज इस दिशा में विशेष कार्य करे

### श्री म० आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा जर्मनी इग्लैण्ड आपर लैएड में वेद प्रचार

33 Norhim berlandgdns
Jesmand

मेरे प्यारे श्री उमेश जी,

New caske upen Tyne 2.
25 th 'Augast' 69

आनन्दित रहो!

१५ अगस्त की प्रात को मै दिल्ली से उड़ कर जर्मनी की ओर चल पडा और ४००० मील की आकाश यात्रा के पश्चात जर्मनी के नगर Prankfort पर जा पहुचा। यह यात्रा ९ घण्टे मे पूर्ण हुई। यहा से मै उसी दिन जमनी क ındustrıal नगर Bueknang पहुचा। जब मै दिल्ली से चला था तो मेरी घडी पर ५॥ बजे थे और जब Bucknang मे मै उतरा तब मेरी घडी पर रात का एक बजा हुआ था। परन्तु जर्मन की घडी पर अभी ८॥ साय के बजे थे। उसी सांय को Bucknang मे जर्मन के स्त्री पुरुषों के एक अच्छे समूह में मेरा भाषण हुआ। भाषण मे मैने यह बतलाया कि वैदिक धर्म क्या है। कुछ जर्मन विद्वानो ने प्रश्न भी पूछे। एक प्रश्न यह था कि जब आप गाय का दूध पीते है तो गाय का मास क्यो नही खा लेते। मैने उत्तर मे कहा कि क्या आप ने अपनी माता का दूध पिया है या नहीं? जर्मन सज्जन ने कहा कि हा पिया है। तब मैंने उससे पूछा कि जब अपनी माता का दूध पी लेते हो तो उसका मास भी क्यो नहीं खा लेते। इसी प्रकार हम गाय का दूध तो पी लेते हैं परन्तु मास खाना पाप समझते हैं। इस उत्तर से जर्मन जनता को बड़ा सन्तोष हुआ। इसी प्रकार २० अगस्त तक प्रतिदिन जर्मन नर नारियो को मैं बताता रहा कि वेद किसी एक जाति, देश या व्यक्ति का ग्रन्थ नहीं है। सार्वभौम ज्योति का पुज है। तब अन्तिम दिन मुझ से पूछा गया कि क्या वेद जर्मन भाषा मे मिलते है? मैने कहा कि आप के Prof Maxmular ने वेदो का कुछ अनुवाद किया है। परन्तु वह भ्रमात्मक है। वेदो का वास्तविक तात्पर्य महर्षि स्वामी दयानन्द ने प्रकट किया है। परन्तु यह भाष्य जर्मन या English मे अभी तक लोगो के सामने नहीं आ सका।

जर्मनी मे एक सज्जन श्री वीरेन्द्र इन्जिनियर [illegible] १०, १२ वर्षो से निवास कर रहे हैं। मै हिन्दी मे बोलता [illegible] और श्री वीरेन्द्र जी जर्मन भाषा मे सुनाते जाते। पांच दिनो [illegible] यह प्रकट हो गया कि जर्मन लोग वेद के प्रति श्रद्धा रखते [illegible] उनकी भाषा मे उनके अनुवाद न होने के कारण वैदिक शिक्षा से [illegible] रहते है। क्या आर्य समाज के नेता अपने घरेलू झगडो को छोड कर इधर ध्यान नही देंगे? जर्मनी से मै २० अगस्त को वायुयान द्वारा [illegible] ६ बजे London पहुच गया और Hindu Centre की ओर से पाच दिन निरन्तर London के भिन्न-भिन्नस्थानो पर मानव जीवन के कल्याण के लिए भाषण होते रहे। २४ अगस्त को Hındu Centre के सुन्दर और विशाल भवन मे भौतिक वाद और वैदिक आध्यात्मकवाद पर भाषण हुआ। Hındu Centre के प्रधान Prof भारद्वाज जी M A ने मेरे भाषण का Englısh में सार सुनाया। इसी रात से England के नगर Newcaske upen Tyne की ओर रेल के द्वारा चल पड़ा। यहां दो दिन Hındu kmple में कथा कर के मे फिर London होता हुआ Ireland चला जाऊँगा।

— आनन्द स्वामी सरस्वती

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्तरंग सभा के विशेष निश्चय

दिल्ली।—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने अपनी अन्तरग सभा की बैठक मे आर्य समाज के सगठन को सुदृढ करने तथा आगामी १४ सितम्बर को "हिन्दी दिवस" मनाये जाने आदि कार्यो के के सम्बन्ध में निम्न विशेष निश्चय किये :—

१—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा आर्य प्रादेशिक सभा पजाब को सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध किया गया।

२—सभा की न्याय सभा, विद्यार्य सभा एव धर्मार्य सभा के निर्माण पर विचार किया गया।

३—जिन प्रदेशो मे आर्य प्रतिनिधि सभायें नहीं हैं, उनमे सभाए स्थापित किये जाने का निश्चय किया गया।

४—निश्चय हुआ कि आर्य समाजो को महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दि तथा गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दि मे पूर्ण सहयोग देने को लिखा जावे।

५—आर्य जगत् में १४ सितम्बर १९६९ को "हिन्दी दिवस" मनाया जावे।

६—निश्चय हुआ कि यह सभा, आर्य समाज सगठन समिति के अध्यक्ष महात्मा आनन्द भिक्षु जी को आर्य जगत् के विवादो को निपटाने मे पूर्ण सहयोग देगी और उसके निर्णय को स्वीकार करेगी।

महेन्द्र प्रताप शास्त्री—मन्त्री

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/३ रानी झांसी रोड, नई दिल्ली

दिनांक २५-८-६९

आदरणीय महात्मा जी, सादर नमस्ते।

सार्वदेशिक सभा में चल रहे सघर्ष को समाप्त करने के सम्बन्ध में आप के सब पत्र मिले। आप की भांति हम भी बहुत इच्छुक हैं कि सार्वदेशिक सभा का संघर्ष समाप्त हो और वहां शान्त वातावरण उत्पन्न हो ताकि आर्य जगत् मे भी उससे शान्ति स्थापित की जा सके। महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा दिये आदेशो का जिस प्रकार श्री रामगोपाल शालवाले आदि ने उल्लघन किया है, और उसके उपरान्त खुले पत्र छाप कर उनका निरादर किया है, उसे कोई भी आर्यसमाजी सहन नहीं कर सकता। हमे उन लोगों की धांधली—को देख कर ही सार्वदेशिक का दूसरा सगठन बनाना पड़ा। हम सब सच्चे हृदय से सार्वदेशिक के झगड़े समाप्त करना चाहते हैं। आप द्वारा इस विषय मे उठाये पगों का हम सब आदर और सत्कार करते हैं तथा आप को सार्वदेशिक सभा की ओर से पूर्ण अधिकार देते हैं कि आप कई वर्षों से सार्वदेशिक सभा में चल रही धाधली को दृष्टि में रखते हुये झगड़े समाप्त करा दें। इस विषय मे जो भी हम से मागेंगे हम निसकोच प्रस्तुत करेंगे और आप की सब आज्ञाओ का पालन करेगे।

भवदीय—रामसिह

सेवा में—श्री महात्मा आनन्दभिक्षु जी, आर्यसमाज, नया बांस, दिल्ली

## आवश्यक सूचना

समस्त आर्य जगत् को सूचित किया जाता है कि शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव के लिए धन सीधा आर्य प्रति निधि सभा लखनऊ के पते पर भेजना चाहिए। अगर कोई सज्जन किसी व्यक्ति विशेष को इस का धन दें तो कृपया उसकी सूचना सभा कार्यालय को तुरन्त दे। जिससे उनके धन को यहां तुरन्त जमा किया जासके। और दान दाता का नाम आर्यमित्र मे प्रकाशित किया जासके। —प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए० सभा मन्त्री

## अचानक आर्यमित्र बन्द रहा!

हमे अत्यन्त दुःख है कि प्रेस के कम्पोजीटरों के अचानक बीमार पड जाने के कारण १४ सितम्बर का अक ३४वां हम न निकाल सके। अब अक ३४वा २१ सितम्बर को निकाला जा रहा। आशा है कि पाठक इस असमर्थता के लिए हमे क्षमा करेंगे।

विनीत—व्यवस्थापक

## आर्य समाजों को आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजो की सेवा में निवेदन है कि सभा ने दिनाक २४ मई १९६९ असाधारण (नैमित्तिक) वृहदधिवेशन मे निम्नलिखित निश्चय किया है —

भविष्य मे प्रत्येक आर्य समाज से उसकी कुल आय का किराया आदि पर दशाश लिया जाया करे। सभा के वार्षिक साधारण वृहदधिवेशन मे अब उन्हीं आर्यसमाजो के प्रतिनिधि स्वीकार किये जाया करेगे कि जिनकी समस्त आय सम्पत्ति आदि का दशाश सभा को प्राप्त हो गया होगा। अत प्रत्येक आर्यसमाज वर्ष मे ३-३, ४-४ बार मे थोड़ा-थोड़ा करके अपनी कुल आय का दशांश सभा को भेजते रहें जिससे अधिवेशन के अवसर पर एक साथ भार न पडे।

### नैमित्तिक अधिवेशन का स्वीकृत निश्चय

दि० २४ मई १९६९ ई०

३—अन्तरग सभा दि० १७-८-१९६८ के नि० सं० १७ एव १२-१-६९ के नि० स० १४ के अनुसार आर्य समाजों की स्थानीय सम्पत्ति की समस्त आय पर दशाशलिया जाया करे नियम १६ स० (१) के साथ स्वीकारार्थ प्रस्तुत हुआ—विचारोपरान्त सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि आर्य समाजों की स्थानीय सम्पत्ति की समस्त आय पर दशान्श लेना स्वीकृत हुआ। और इस संशोधन को नियम स० १६ (१) में इस का समावेश किया जाए। —प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० ए०

मन्त्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

## आर्योपप्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर के १७ सितम्बर ६९ से १९ अक्टूबर १९६९ तक निम्न स्थानों पर वार्षिकोत्सव

शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज, विद्वान विचारक श्री प० रुद्र दत्त जी शास्त्री, व्याख्यान मार्तण्ड वेदों के मर्मज्ञ श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री, वैदिक मिश्नरी श्री लाला देवराज जी, श्री महाशय धर्मराज सिंह तथा भजनोपदेशक श्री हरिसिंह जी इत्यादि महानुभाव इस प्रचार योजना में साथ रहेगे।

आर्यसमाज अफजलगढ़ १७, १८, १९ सितम्बर, आर्य समाज शेर कोट २०, २१, २२ सितम्बर, आर्य समाज धामपुर २३, २४, २५ सितम्बर, आर्य समाज सिवहारा २६, २७, २८ सितम्बर, आर्य समाज नजीबाबाद २९, ३० तथा १ अक्टूबर, आर्य समाज कोटद्वार २, ३, ४, ५ अक्टूबर, आर्य समाज वाष्टा ६, ७, ८ अक्टूबर, आर्य समाज चान्दपुर ९, १०, ११ अक्टूबर, आर्य समाज हल्दौर १२, १३ अक्टूबर आर्य समाज बिजनौर १४, १५, १६, १७ अक्टूबर आर्य समाज मडावर १८ व १९ अक्टूबर।

विनीत

सिवचरण 'भगवन' सभा प्रधान — बनारसीलाल आर्य संयोजक उत्सव योजना — ईश्वरदयालु आर्य सभा मन्त्री

आर्य जनता सावधान रहे

# श्री विद्यानन्द विदेह पर प्रतिबन्ध यथापूर्व है

आर्यजगत् के मध्य एक भ्रान्ति उत्पन्न की जा रही है कि श्री विद्यानन्द विदेह के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा ने पूर्व घोषित प्रतिबन्ध समाप्त कर दिये हैं।

समाचार पत्रों में श्री रामगोपालजी शालवालेके हस्ताक्षरों से जो विज्ञप्ति प्रकाशित की गई है, उस सम्बन्ध में आर्य जनता को सावधान और सूचित करना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि सार्वदेशिक सभा की ३१ अगस्त ६९ की अन्तरङ्ग बैठक में श्री विदेह पर लगाये प्रतिबन्ध को समाप्त करने का कोई प्रस्ताव पारित नहीं किया गया है। अभी तक श्री विदेह पर १४ वर्ष पूर्व लगा प्रतिबन्ध यथापूर्व है।

आर्य जनता की जानकारी के लिये हम सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में श्री विदेह सम्बन्धित पारित एव सम्पुष्ट कार्यवाही को अविकल रूप से उद्धृत कर रहे हैं और हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्य जनता वास्तविकता को समझ सकेगी और प्रचारित भ्रम से अपने को सावधान रक्खेगी। यह भी एक संवैधानिक प्रक्रिया है कि जिस प्रतिबन्ध की पुष्टि साधारण सभा ने की हो, उसकी समाप्ति भी साधारण सभा की सम्पुष्टि से ही हो सकती है। इस तरह का कोई कार्य सार्वदेशिक सभा के ३१-५-६९ के साधारण अधिवेशन में नहीं हुआ।

इसी के साथ-साथ हम यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जिन लोगो ने प्रतिबन्ध हटाने का विज्ञापन किया है वे श्री विदेह को १४ वर्ष के प्रतिबन्ध के बाद आर्य समाज के विवादों में निर्णायक बनाने की भी घोषणा कर रहे है। इसी से आर्य जनता समझ सकती है कि प्रतिबन्ध हटाने का नाटक किस भावना से युक्त हो सकता है ऐसा व्यक्ति जिस पर से १४ वर्ष के बाद कृपा कर प्रतिबन्ध हटाने की बात हो वह कहाँ तक और कितना निष्पक्ष रह सकेगा क्या वह कृतज्ञता के भार से दबा न रहेगा।

साथ ही आर्य जनता को सोचना चाहिये कि आर्यसमाज के विवादों का निर्णय करने के लिये ऐसा ही व्यक्ति उस वर्ग को मिला है कि जिसका १४ वर्ष से आर्य समाज से सम्पर्क प्रतिबन्धित रहा है। क्या आर्यसमाज के शीर्षनेतृत्व और विद्वानों का यह अपमान नहीं कहा जायगा।

अत आर्य जनता को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये कि श्री विदेह पर सार्वदेशिक सभा की ओर से लगा प्रतिबन्ध यथावत है और श्री विदेह सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्यजगत् के विवादो का निर्णय करने कराने में किसी प्रकार भी निर्णायक नहीं बनाये जा सकते।

—उमेशचन्द्र स्नातक
उपमन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

## आवश्यकता



# सार्वदेशिक सभा का ४७वां वार्षिक वृत्तान्त

[ १-३-५४ से २८-२-५५ तक ]

## धर्मार्य सभा—

वर्ष के अन्त में यह सभा ६९ सदस्यो का समुदाय थी। इस वर्ष इस सभा की साधारण सभा का १ [३०-४-५४] और अन्तरग सभा के ५ अधिवेशन ( ६-३-५४, २९-४ ५४, २६-६-५४ और २७-६ ५४ तथा १६-२-५५ को) हुये।

सभा के अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य निम्न प्रकार रहे—

### सभा के अधिकारी

१—प्रधान-श्री प० रामदत्त जी शुक्ल
२—उपप्रधान श्रीयुत स्वामी आत्मानन्द जी महाराज
३—मन्त्री श्रीयुत प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
४—उपमन्त्री-श्रीयुत प० राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री

### अन्तरंग सदस्य

१—श्री रामानन्द जी शास्त्री बिहार
२—,, स्वामी ध्रुवानन्द जी
३—,, प० बुद्धदेव जी विद्यामर्त्तण्ड
४—,, आचार्य विश्वश्रवा. जी
५—,, ,,प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति
६—,, ,, बृहस्पति जी वेदशिरोमणि
७—,, ,, द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री सि० शिरोमणि
८—,, स्वामी अभेदानन्द जी
९—,, भीमसेन जी एम ए, चूरू

श्री विद्यानन्द जी विदेह की पुस्तको के सम्बन्ध मे जो निश्चय हुआ है वह इस प्रकार है—

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन २८-६-५४ को मध्याह्न २ बजे श्री श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली में श्री पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ।

श्री विद्यानन्द विदेह भी उपस्थित थे। उनका १४-५-१९५४ का श्री प्रधान जी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नाम लिखा पत्र पढ़ के सुनाया गया।

श्री विद्यानन्द जी ने प्रारम्भ मे यह कहा कि मुझे जो दण्ड दिया गया है वह अति कठोर है। उसे नर्म किया जाये, इस पर सदस्यों ने उनसे प्रश्न किया कि आप अपने को अपराधी समझते और अपनी भूलों को स्वीकार करते हैं वा नहीं दण्ड की कठोरता आदि के विषय मे उसके पश्चात् ही विचार किया जा सकता है। इस पर श्री विद्यानन्द जी ने श्री प्रधान जी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नाम निम्न लिखित पत्र लिखकर दिया—श्री प्रधान जी धर्मार्य सभा, देहली।

सभा के ६-५ ५४ के पत्र के साथ जो आपत्तिजनक स्थल उद्धृत किये गये है मै उन्हें तब तक अशुद्ध नहीं मान सकता जब तक मुझे यह न समझाया जाता कि वे अशुद्ध अथवा सिद्धान्त विरुद्ध हैं। मैं अभी अपने किसी ग्रन्थ मे भूल नहीं मानता हू।

-ह० विद्यानन्द विदेह २८-६-५४

इसके बाद श्री विद्यानन्द जी की पुस्तकों के विषय मे विचार आरम्भ हुआ। श्री बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार विद्यामार्तण्ड ने विदेह गीताञ्जलि' के पृ० १२८ भजन स० १८५ को पढकर सुनाया और श्री विद्यानन्द जी से प्रश्न किया कि ऐसी बातो को क्या आप आर्य समाजो मे प्रचार योग्य और ठीक समझते है ?

एक पुरानी बात,
याद आ गई आज,
मैं सोई थी अचेत, आये तुम सचेत
धर अधरों पर अधर,
तुमने चूमे अधर,

मैं उठी अधर, देखा इधर-उधर
सकुचाई देख तुम्हें अधो दृग हुई
आई लाज
रही स्तब्ध खडी, अभागिन बडी ।
रही यूं निहारती, दामन सवारती
उठे नयन बोझल, जब तुम हुये
ओझल
देखा इधर-उधर, न दीखे विभुराज
उमडा हृदय सन्ताप, करने लगी
विलाप
आकाशवाणी हुई, क्यो रोती खड़ी
हुई ।
यदि मिलने की चाह, मत रो मत
भर आह !
मुझसे चाहती मिलना तो तज
लोक लाज ।

इस पर श्री विद्यानन्द जी ने स्वीकार किया कि विदेह गीताजलि म छपाई जायगी। मै इसे भूल मानता हूं। इसके पश्चात् सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की अन्तरङ्ग सभा के ६-३-५४ के अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव के अशों को एक-एक करके लिया गया। सबसे पहले 'वैदिक योग पद्धति' के पृष्ठ ३ के निम्न वाक्यों को लिया गया—

परमात्मा के समान आत्मा भी अणु, सूक्ष्म, शक्तिमान्, शुद्ध, पवित्र अकाय, निष्पाप, अमर, कवि, मनीषी, प्रेरक, और सचालक हैं, जो गुण परमात्मा में हैं, वे ही आत्मा मे हैं इत्यादि ।

परमात्मा के समान आत्मा को भी अणु पवित्र,अकाय और निष्पाप कहना ठीक नहीं है। श्री विद्यानन्द जी ने कहा कि मेरा तात्पर्य अणु से सूक्ष्म का ही था किन्तु जब विद्वान् सदस्यो ने उन्हे बताया कि सूक्ष्म के साथ अणु शब्द का प्रयोग परिमाण वाचक हो जाता है जो अनावश्यक और दार्शनिक दृष्टि से भ्रमोत्पादक है श्री विद्यानन्द जी ने अपनी भूल स्वीकार की ।

आत्मा को अकाय कहना भी ठीक नहीं। श्री विद्यानन्द जी ने इसका अर्थ अभौतिक बताया इसकी अशुद्धि का व्याकरण की दृष्टि से जब निर्देश अनेक सदस्य महानुभावों ने किया कि मुझे व्याकरण का ज्ञान नहीं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि मेरी दर्शन गति नहीं। मैं सस्कृत भी उतनी नहीं जानता। अकाय में बहुव्रीहि समास है। इस शब्द का जीवात्मा के साथ प्रयोग होने से यह भ्रम उत्पन्न हो जा सकता है कि जीवात्मा भी कार्य बन्धन में नहीं जाता। यह बात सिद्धान्त विरुद्ध है।

आत्मा को निष्पाप कहना भी सिद्धान्त विरुद्ध है।

अपाप विद्धम्, यह विशेषण वेदों मे केवल ब्रह्म के लिये आता है आत्मा के लिये नहीं। वैदिक योग पद्धति पृष्ठ ९, आत्मा और परमात्मा अपरिणामी और एक रूप हैं। यहां एक रूप शब्द सशयोत्पादक है।

वैदिक योग पद्धति पृ० २५ जगत् मिथ्या है, माया प्रकृति असत्य है, नितान्त असत्य है, अतः सब कुछ जो भौतिक है मिथ्या, असत्य है" असत्य का साक्षात्कार असत्य अनिश्चित और संदिग्ध होता है।" यह सिद्धान्त विरुद्ध है।

पृ० २३ 'आत्मा और शरीर व्यापक व्याप्य होने से एकाकार और अभिन्न है।

इसके विषय में उनके साथ विचार-विमर्श के पश्चात् सभा ने निश्चय किया कि यह सारा वाक्य सिद्धान्त के विरुद्ध है।

पृ० २ पातजल योग के विषय मे विद्यानन्द जी का यह लिखना कि 'यह अतिशय जटिल और सर्व साधारण के दैनिक जीवन मे सर्वथा अव्यवहार्य है।" पर्याप्त समय तक उनके साथ विचार-विनिमय के पश्चात् निश्चय हुआ कि श्री विद्यानन्द जी का यह कथन अनर्गल है।

पृ० २–३ 'योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः' यह योग की परिभाषा अपूर्ण है। वास्तव मे चित्त वृत्ति निरोध योग का साधन है योग नहीं। इस पर अनेक सदस्य महानुभावों ने व्यास भाष्य के उद्धरण और व्याकरण की प्रतिक्रिया को श्री विद्यानन्द जी के सम्मुख रखा और श्री विद्यानन्द जी ने स्वीकार किया कि व्याकरण और दर्शन का मुझे ज्ञान नहीं, वेद ही मेरा विषय है। इस पर विचार-विनिमय के पश्चात् सभा ने निश्चय किया कि श्री विद्यानन्द जी की योग विषयक यह कल्पना शास्त्रीय परिभाषा के विरुद्ध और अशुद्ध है।

सत्यनारायण की कथा पृ०२९ सत्यनारायण ब्रह्म को ज्ञानियों ने जो साकार वर्णन किया है वह भी सत्य है। व्याप्य-व्यापक भाव से ज्ञानी जन ब्रह्मयुक्त ब्रह्माण्ड को अथवा ब्रह्माण्डयुक्त ब्रह्म को साकार ब्रह्म अथवा ज्येष्ठ ब्रह्म कहते हैं।

इस लेख के सम्बन्ध में श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रमाण से श्री विद्यानन्दजी द्वारा उपस्थित 'यस्य भूमिः प्रमा' इत्यादि मन्त्रों का वास्तविक अर्थ महर्षि के भाष्यानुसार बताते हुये स्पष्ट किया कि विराट् से तात्पर्य वहां ब्रह्माण्ड से है जो ईश्वर सिद्धि मे प्रमा रूप से वर्णित है। विचार-विनिमय के पश्चात् निश्चय हुआ कि विद्यानन्द जी का साकार ब्रह्म शब्द प्रयोग सिद्धान्त विरुद्ध है।

पृ० ३७ यदि तुम उस 'सत्य-नारायण' का साक्षात्कार करना चाहती हो तो उसके दर्शन के लिये आकुल व्याकुल और विह्वल हो जाओ। यदि उससे एकाकार होना है तो तड़प उत्पन्न करो।

निश्चय हुआ कि वहां एकाकार शब्द का प्रयोग बड़ा भ्रम जनक है।

सत्यनारायण कथा की यज्ञ पद्धति मे जो केवल ३ प्रार्थना मत्र रखे गये हैं तथा अयन्त इध्म आत्मा, उड़ा दिया गया है और स्वरित वाचन शान्ति प्रकरण के कुछ थोड़े से ही मन्त्र रक्खे गये हैं निश्चय हुआ है कि यह सब महर्षि दयानन्द कृत सस्कार विधि मे निर्दिष्ट पद्धति के विरुद्ध है अतः सशोधनीय है। दिव्य भावना के शिवोस्मि पूर्णोस्मि' तथा मुक्तोस्मि के विषय में भी विचार विनिमय के पश्चात् सार्वदेशिक धर्मार्य सभा को ६-३-५४ की अन्तरङ्ग सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव का समर्थन किया गया कि 'दिव्य भावना में शिवोस्मि पूर्णोस्मि तथा मुक्तोसिम इत्यादि कुछ भावनाओ का झुकाव नवीन वेदान्त की ओर प्रतीत होता है यद्यपि 'शिवोस्मि' का अर्थ श्री विद्यानन्द जी शुभकर्मा है यह कर दिया है। वस्तुतः परमेश्वर के अतिरिक्त पूर्ण कोई नहीं।

यह सब कार्यवाही आद्योपान्त श्री विद्यानन्द जी की उपस्थिति में हुई और अन्त में उन्होने निम्न लिखित वाक्य लिखकर कार्यवाही पर दिया—

"मैं इन संशोधनों को स्वीकार करता हू।"

ह० विद्यानन्द विदेह २६-६-५४

यहां यह बात आर्य जनता की सूचनार्थ उल्लेखनीय है कि ये सब सशोधन वही हैं जो ६-३-५४ की धर्मार्य सभा की अन्तरङ्ग सभा में स्वीकृत हुये थे और जिनके विरुद्ध उन्होने अपील की थी।

इतनी कार्यवाही होने के पश्चात् जो विषय के महत्व के कारण मध्यान्ह २ बजे से रात्रि के पौने आठ बजे तक चलती रही, सभा अगले दिन ७ बजे के लिये स्थगित की गई।

२७ ६-५४ को प्रात. ७ बजे से सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन श्री स्वामी आत्मानन्दजी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। श्री विद्यानन्द जी का १४-५ ६४ का श्री प्रधान जी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नाम लिखा पत्र अविकल रूप में पढ़कर सुनवाया गया। इस पर विचार प्रारम्भ ही हुआ था कि श्री विद्यानन्द जी ने निम्नलिखित पत्र लिखकर श्री प्रधान धर्मार्य सभा को दिया—

[ शेष पृष्ठ ११ ]

# चारों वेदों में मन्त्रों की पुनरुक्ति पर- कुछ विचार-विमर्श

—लेखक—श्री रामप्रताप जी अगई [ सुल्तानपुर ]

## विचार-विमर्श

५ जनवरी १९६९ के आर्य्य-मित्र मे 'वेदों में मन्त्रों की पुनरुक्ति शीर्षक एक लेख श्री विद्याभूषण त्रिवेदी सभल, मुरादाबाद का मैंने पढा था, जिसमे उक्त सुयोग्य विद्वान लेखक ने वेदों मे पढ़े गये कुछ पुनरुक्त मन्त्रों का उद्धरण देकर विद्वानों के विचारार्थ एक गम्भीर प्रश्न रखा है और वह यह है कि चारों वेदो मे सैकड़ो मन्त्रो की पुनरुक्ति क्यो है ? त्रिवेदी जी का कहना है कि 'यह एक गम्भीर प्रश्न है जिस पर वैदिकों को विचार करना चाहिये ।' इतना ही नहीं बल्कि त्रिवेदी जी ने यह भी लिखा है कि 'इतने गम्भीर प्रश्न का अभी तक कोई समुचित उत्तर देने का प्रयास नहीं किया गया ।"

अपने लेख में वेदों के मन्त्रों की पुनरुक्ति के अनेको उदाहरण देकर त्रिवेदी जी ने लिखा है कि 'उक्त प्रश्न के विषय मे मैने कई विद्वानो से विचार-विमर्श किया किन्तु कोई समुचित उत्तर प्राप्त नहीं हुआ ।'

विद्वानों से अपने प्रश्न का उचित समाधान न पाकर त्रिवेदी जी ने जो निष्कर्ष निकाला वह उनके ही शब्दो मे यह है कि 'मेरे विचार से ऐसा प्रतीत होता है कि आदिकाल मे वेद एक था जिसमे प्रत्येक मन्त्र एक बार ही पढा गया था, बाद मे उस एक वेद के मन्त्रो से विषय तथा पाद व्यवस्था के अनुसार वर्त्तमान चारो वेदो का संकलन किया गया ।' लेख के अन्त में त्रिवेदी जी लिखते हैं कि आदि मे वेद एक था जिसके विषयानुसार विभाग करने पर चार वेद हुये । मीमांसा के अनुसार विभाग करने पर तीन वेद हुये तथा अनन्त विषयो का निधि होने के कारण वही वेद [ ज्ञान ] अनन्त है ।" ''मन्त्रों की पुनरुक्ति का यही एक मात्र समाधान समुचित प्रतीत होता है । मेरा वैदिक विद्वानों से निवेदन है कि वह कृपया इस पर विचार करें तथा मन्त्रों को पुनरुक्ति का अन्य कोई समाधान यदि वह उचित समझते हैं, तो उसे आर्यमित्र मे प्रकाशित कराने का कष्ट करें ।

त्रिवेदी जी के लेख पर श्री सम्पादक जी आर्यमित्र लिखते हैं, कि 'सैकडो मन्त्रो की पुनरावृत्ति केवल साधारण जन के लिये नहीं वरन् विद्वानो के लिये भी मनन का विषय है । हम आर्यजगत् के वेदाचार्यों के विद्वत्तापूर्ण विचारों का इस सम्बन्ध में स्वागत करेंगे ।'

### मन्त्र पुनरुक्ति विषयक त्रिवेदी जी के समाधान पर प्रश्नोत्तर

प्रश्न—आदि मे वेद एक था ।

उत्तर—प्रमाणाभाव होने से मिथ्या है क्योंकि किसी भी वेद वा आर्ष ग्रन्थों मे कहीं नहीं लिखा है कि आदिम काल मे वेद एक था बल्कि इसके विरुद्ध वेदो तथा आर्ष ग्रन्थो मे वेदो के ४ होने तथा सृष्टि की आदि में ईश्वर से प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है । देखो यजुर्वेद ३१-७ तथा शतपथ ब्राह्मण १४-५ ।

प्र०—यद्यपि आर्ष ग्रन्थों में चारो वेदो का नाम आता है किंतु अधिकतर वेदो की संख्या ३ बताई गई है । यजु० ३१-७ मे तथा मनु स्मृति १-२३ मे तीन वेदो का ही उल्लेख है ।

उ०—आपकी प्रतिज्ञा थी कि 'आदि मे वेद एक था' उक्त प्रतिज्ञा का साधक प्रमाण वेद वा आर्ष ग्रन्थ से आप क्यो नहीं देते ? आर्ष ग्रन्थो मे वेदो के ४ होने का प्रमाण मिलने का यह अर्थ तो है नहीं कि वेद एक था । आपको तो प्रमाण देना चाहिये था कि अमुक वेद व अमुक आर्ष ग्रन्थ मे लिखा है कि आदि मे वेद एक था, मेरा डके की चोट चैलेंज है कि यदि हिम्मत हो तो पूर्व पक्षीय (त्रिवेदी जी) महोदय 'आदि मे वेद के एक होने की अपनी कल्पना को वेदो वा आर्ष ग्रन्थों से प्रमाणित करें ।

यजुर्वेद ३१-७ मे भी ३ वेदो का नहीं बल्कि चारो वेदो का ही ईश्वर से प्रकाशित होने का उल्लेख है । देखिये उक्त मन्त्र—

तस्मा द्यज्ञात्सर्वहुत ऋच
सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ँसि जज्ञिरे,
तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।

इस वेद मन्त्र में ऋचः (ऋग्वेद) सामानि (सामवेद) यजुः (यजुर्वेद) और छन्दांसि शब्द से अथर्ववेद का ग्रहण है । महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋ. भा. भू. मे इसका अर्थ करते हुये लिखते हैं 'तस्माद्यज्ञात् सच्चिदानन्दादि लक्षणात पूर्णात्पुरुषात् सर्व हुतात्सर्व पूज्यात् सर्वोपास्यात् सर्व शक्ति मतः परब्रह्मण. (ऋचः) ऋग्वेदः (यजु.) यजुर्वेद. (सामानि) साम वेदः ( छन्दा ँसि अथर्व वेदश्च ( जज्ञिरे ) चत्वारो वेदास्तेनैव प्रकाशिता इति वेद्यम् ।' 'वेदाना गायत्र्यादिच्छन्दोन्वितत्वात् पुनश्छन्दासीतिपद चतुर्थस्याथर्व वेदस्योत्पत्तिं ज्ञापयतीत्यवधेयम् ।' अर्थात् उस परब्रह्म से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और छन्दांसि शब्द से अथर्व भी, ये चारो वेद उत्पन्न हुये हैं-वेदो मे सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दो से युक्त ही हैं फिर छन्दांसि इस पद के कहने से चौथा जो अथर्व वेद है उसकी उत्पत्ति का ज्ञान होता है ।

मनुस्मृति १-२३ मे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद का अग्नि, वायु, सूर्य परब्रह्म से प्रकाशित होने का वर्णन होने तथा अथर्व वेद का उसमें वर्णन न होने से यह नहीं सिद्ध हो जाता कि आदि में वेद एक था और न यही सिद्ध हो जाता है कि यजुर्वेद में जो ऋक्, यजु साम तथा अथर्व चारों वेदों का वर्णन है वह मिथ्या है क्योंकि वेद से विरोध दीखने पर स्मृति अप्रमाण और वेद ईश्वरोक्त होने से प्रमाण माना जायगा ( प्रमाणं परम श्रुति ) । यजु का० उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद १०-९०-७ में भी है उसमे भी चारो वेदों का उल्लेख है—देखिये महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

देवोत्पत्ति विषय—

'यस्मा दृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मा दपाकषन् । सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम् स्कम्भ त ब्रूहि-कतम स्विदेवसः' ।

प्र०—विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण तथा देवी भागवत मे आया है कि पहिले वेद एक था बाद में व्यास ने उनके चार भाग ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद किये । आचार्य दुर्ग ने निरुक्त १-२० की वृत्ति मे वेद के एक होने तथा व्यास द्वारा चार किये जाने की बात लिखी है ।

उ०—उपर्युक्त पुराणों की व दुर्ग, भास्कर तथा महीधर की उक्त कल्पनायें वेद तथा आर्ष ग्रन्थो के भी विरुद्ध होने से कपोल कल्पित तथा सर्वथा अप्रमाण हैं । महीधर के वेद ज्ञान की यदि बानगी देखनी हो तो यजुर्वेद के २३ वें अध्याय के मन्त्रो पर उसका भाष्य पढ़ लीजिये उसने 'गणानात्वा गणपति ँ' ( यजु २३-१९ ) के भाष्य मे लिखा कि यज्ञशाला मे सब ऋत्विजो के सामने यजमान की स्त्री घोड़े के पास सोवे इत्यादि उसके गदे शब्द कहते नहीं बनता उसने यहाँ तक कह डाला कि

[शेष पृष्ठ ११ पर]

# मित्रो ! धर्म-भाव विस्तारो !!

मिलकर चलो, बांटकर खाओ ।
आपस मे सद्भाव बढ़ाओ ।।
बड़े-बड़ों के वशज हो तुम ।
मानवता के रक्षक उत्तम ।।
आगे बढ़ो चढो ऊपर को ।
ज्योतिर्मय कर दो जग भर को ।।
मानवता के भाग्य जगा दो ।
कुछ करके, बनके दिखला दो ।।
संकट मे घबराना कैसा ?
बढ़ करके हट जाना कैसा ?
जोड़ो टूटी प्रेम की लड़िया ।
सद्भावों की टूटी कड़ियां ।।
न्याय-नीति का साथ न छोड़ो ।
जीवन-पथ से मुह न मोड़ो ।।
मेटो, पापो - सन्तापों को ।
सन्धानो, तीरो-चापों को ।।
मेटो, जड़ से आपा-धापी ।
संहारो, सब शोषक, पापी ।।
अपने, अपने पास बुला लो ।
गले लगा लो, सीस चढ़ा लो ।।
धन-धरती का करो समर्पण ।
धारो, सयम, वारो, तन-मन ।।
मेर - तेर के कर दो टुकड़े ।
मिट जायेंगे, सारे दुखड़े ।।
जग में रहकर, जग से न्यारा ।
ओम् नाम का नामी प्यारा ।।
जग-जीवन का परम-सहारा ।
मात-पिता वर-सखा हमारा ।।
जो है विश्व भुवन का नायक ।
सुखकर, शुचितर परम-सहायक ।।
बोलो सब, उसके जयकारे ।
बिगड़ें काम बनेंगे सारे ।।
जन-मन को बहकाने वाली ।
दोनों लोक नसाने वाली ।।
काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ की ।
अहंकार की तोड़ो छुकडी ।।
काल-अश्व जाता है भागा ।
अब तो जागो, सब जग जागा ।।
आये अवसर के जाने से ।
फिर क्या होगा पछताने से ?
साम्य सुधा का अमृत पीकर ।
सुख वर्षाकर, पर-हित जीकर ।।
मेटेंगे जग का अंधियारा ।
लेकर प्रभु का एक, सहारा ।।
ईश्वर के घर जाना होगा,
करनी का फल पाना होगा ।
सोचो, समझो खूब विचारो ।
मित्रो ! धर्म-भाव विस्तारो !!

—जगत्कुमार शास्त्री, 'साधु सोमतीर्थ' देहली

## काव्य कानन

# आर्य पत्नी के गुण

मृदुर्निमन्युः केवली प्रियवादिनी, अनुव्रता [अथर्व ३-२५-४]

१—मृदुः—स्त्री शान्त स्वभाव वाली हो ।
२—निमन्यु·—स्त्री क्रोध करने वाली न हो ।
३—प्रियवादिनी—स्त्री प्रिय बोलने वाली हो ।
४—अनुव्रताः—स्त्री पति के अनुकूल कार्य करने वाली हो ।
५—केवलीः—स्त्री केवल अपने पति की ही बनकर रहने वाली हो ।
६—वशाः—स्त्री पति के वश में रहने वाली हो (अ. ३-२५-६)
७—चित्त उपायसि—पति के चित्त के साथ अपना चित्त लगाने वाली हो । [अ० ३-२५-५]
८—क्रतौअसः—पति जो कार्य करे उसमें सहायता देनेवाली हो। [अ० ३-२५-६]
९—अक्रतुः—पति के विरुद्ध कोई कार्य करने वाली न हो । [३-२५-६]

### भावार्थ—

[ १ ]

शांति भाव रहे घरनी का, क्रोध न हृदय रहावें ।
मधुर भाषनी कोमल बानी, पत्नी वही कहावे ।।
पति अनुकूल करे गृह कार्य, प्रतिकूल काम न करती ।
सुख साधन जुटाती घर में, प्रेम भावना भरती ।।

[ २ ]

केवल एक पति की रहती, बन के प्रियतम प्यारी ।
कभी न दिखाती निज प्रियतम को, निज गति मति दख न्यारी
रहे सदा पति के ही वश में, धर्म कर्म सद्-धारे ।
पतिचित्त में चित रखकर चलती, जीवन कुशल विचारे ।

[ ३ ]

पति जो कर्म करे उसमें नित, सबल सहायता देवे ।
काम विरुद्ध करे न पति से, सुयश जगत् मे लेवे ।।
आर्य धर्म नियम को पाले, सो है आर्य्य नारी ।
सो 'घनसार' देश मे गौरव, नर-रत्नों की क्यारी ।

[ ४ ]

हो ऐसी भारत महिलायें, आर्य बनें सब देवी ।
देव बनें सब आर्य देश के, आर्य्य-धर्म के सेवी ।।
आर्य बनें नहीं जब तक नारी, कभी न होय सुधारा ।
वीर-कोविद देव जन नायक, नहीं जनमें जग प्यारा ।।

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' उपाध्यक्ष आ. स. पीपाड़ शहर

# मैलेरिया (फसली बुखार) और हवन यज्ञ

[ ले०—स्व० डा० फुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम डी ( लदन ]
मेडिकल आफिसर टी० बी० सेनेटोरियम

वैदिक काल में मैलेरिया एक साधारण रोग समझा जाता था क्योंकि उस समय न तो यह रोग इस तेजी से फैलता था और न इससे लोग मरते ही थे। पर आज कल यह एक बड़ा भयानक सक्रामक रोग समझा जाता है। इस समय ससार मे जितनी मृत्यु होती है, उसमे से दो तिहाई केवल इस रोग से होती है। हाल की सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है कि भारत मे प्रति वर्ष दस लाख मनुष्यो की मृत्यु इस रोग से होती है। [प्रस्तुत लेख सन् १९३६ ई० मे लिखा गया था। उल्लिखित तथ्य उसी समय के हैं। ]

यह रोग प्रायः वर्षा ऋतु के पश्चात् फैलता है। सील वाले स्थानो में यह विशेष रूप से होता है बगाल, पहाड़की तराई वाले स्थान तथा ऐसे स्थानों पर इस रोग को बढ़ने का खूब अवसर मिलता है जहां वर्षा का पानी बस्ती के भीतर या निकट तालाबों गड्ढों आदि में रुकता है। जहां जगल काटकर नई बस्ती बसाई गई हो या जहां नई नहर निकाली गई हो वहां भी खूब पनपता है। आजकल देश का औद्योगीकरण हो रहा है अतः बस्तियां खूब बसाई जा रहीं हैं।

इस रोग की विभीषिका को देख वर्तमान पाश्चात्य विज्ञान इस विषय मे बहुत कुछ खोज कर रहा है। पिछले अनुसन्धान के आधार पर जहा पहले यह समझा जाता था कि यह रोग अशुद्ध वायु से उत्पन्न होता। इसका नाम मैलेरिया इसी कारण पड़ा क्योंकि इटली भाषा मे जहा से यह शब्द लिया गया है, मैलेरिया अशुद्ध वायु को कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'मैलस' और 'एयरिस' शब्दो से हुई है जिनका अर्थ भी 'अशुद्ध वायु' ही है। बाद की खोज से पता चला कि इस रोग का कारण एक विशेष प्रकार का मच्छर है। इस बात के ज्ञात होनेपर अब सारा बल रोग कृमियों के नाश करने में लगाया जा रहा है। मनुष्यों को रोग से बचाने के लिये वर्तमान पाश्चात्य विज्ञान रामवाण औषधि के रूप में अब तक केवल 'कुनैन' मालूम कर सका है, जो रोग की अवस्था मे भी देते है और उससे बचाव के लिये भी प्रयोग की जाती है।

इसमे सन्देह नहीं कि ऐलोपैथी मे मैलेरिया के लिये इससे बढ़कर कोई औषधि नहीं, और यह भी सत्य है कि लाखों रोगी इस औषधि से लाभ प्राप्त करते हैं, पर अनुभवी चिकित्सक इस बात से भी अनभिज्ञ नहीं कि असख्य मनुष्य इस औषधि को ऐलोपैथिक खुराक में देने के कारण नाना

प्रकार के रोगो में फस भी जाते हैं। लेखक को ऐसे बहुत से रोगी देखने का अवसर मिला है जिनको चिकित्सको ने टायफाइड ज्वर में कुनैन [ अधिक मात्रा मे ] दे दी और उन्हें सन्निपात [सरसाम] हो गया; उनमें से कुछ फिर आरोग्य भी न हो सके। पित्त प्रकृति वालो को मैलेरिया ज्वर मे भी कुनैन विष के समान प्रभाव दिखाती है। फिर भी आप किसी डाक्टर से मैलेरिया से बचने का उपाय पूछे तो वह मुख्यतया दो बातें बतायेगा कुनैन का प्रयोग, तथा मच्छरों से बचना। अब यदि बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी नित्यप्रति कुनैन खा भी लें तो हर समय वायु मण्डल में घूमने वाले मच्छरों से बचना तो असम्भव ही प्रतीत होता है। वास्तविक बात यह है कि पाश्चात्य विज्ञान आपको मैलेरिया से बचने का व्यावहारिक सुगम उपाय बताने में असमर्थ है। अतः हम आपको प्राचीन ऋषियों का वेद भगवान् द्वारा ज्ञात किया हुआ वह उपाय बताते हैं जिस पर आचरण करने से बिना कुनैन खाये और मच्छरदानी लगाए, न केवल मैलेरिया अपितु समस्त सक्रामक रोगो से बचाव रहे और साथ ही दूसरों का भी उपकार हो आम के आम गुठलियो के दाम वाली कहावत चरितार्थ हो। पर उस उपाय को बताने से पूर्व पाश्चात्य सभ्यता के पुजारियो की श्रद्धा उत्पन्न करने के अभिप्राय से हम यह बताना चाहते हैं कि वर्तमान विज्ञान ने तो अब १८८० ई० मे डाक्टर लेवर्न द्वारा और पूर्ण रूप से सन् १८९७ ई० मे डाक्टर रॉस द्वारा यह बात जान पाई कि मैलेरिया मच्छरों द्वारा मनुष्य शरीर मे प्रवेश करता है पर वेद अबसे करोड़ों वर्ष पूर्व मैलेरिया के मच्छर की विद्यमानता स्पष्ट शब्दों मे दर्शा दी है। देखिए—

प्र ते शृणामि शृगे
यांभ्यां वितुदायसि।
भिनद्मिते कुषुम्भं,
यस्ते विषधानः॥
अथर्व० का० २, सू० ३२,म० ६

अर्थ—तेरे सींगों को मैं तोड़े डालता हू जिन दोनो से तू चारों ओर टक्कर मारता है। तेरी उस थैली को मै तोड़ता हू जो तेरे विष का पात्र है।

अब आप किसी डाक्टर से मैलेरिया के मच्छर (ऐनोफेलीस) का चित्र लेकर देखे। उसके मुंह के सामने दो सींग से होते हैं और बीच में मैलेरिया विष की थैली। इन्हीं सींगो द्वारा वह टक्कर मार कर अपना विष प्राणी मे पहुचाता है। जो लोग इस भ्रम मे पड़े हुए हैं कि विज्ञान की उन्नति केवल योरुप मे ही हुई है, उससे पूर्व भारतवर्ष मे कुछ न था वे ध्यान पूर्वक देखें कि जब अब से करोड़ों वर्ष पूर्व मैलेरिया के कृमि की विद्यमानता वेद भगवान् बताते हैं और बहुत खोज के पश्चात् नवीन विज्ञान वही बात मालूम कर सका है तो विद्या का भण्डार वेद है या नवीन विज्ञान !

हम ऊपर बता चुके हैं कि इन कृमियों से बचने की जो विधि वर्तमान विज्ञान ने बताई है वह दोष पूर्ण, अपूर्ण और अव्यावहारिक है। अतः अब हम इसकी विधि भी वेद भगवान् में ही खोजते हैं। वेद बताता है—

इन्द्रस्य या मही दृषत्
क्रिमेर्विश्व तर्हणी।
तया पिनष्मि स क्रिमीन्
दृषदा खल्वाँ इव॥
अथर्व० का० २, सू० ३१ म० १

अर्थ—यज्ञ की जो विशाल विनाशक शक्ति प्रत्येक कृमि का नाश करने वाली है उससे सब कृमियों को यथानियम पीस डालू जैसे शिला से चनों को पीसा जाता है।

वेद भगवान् खुले शब्दों में उपदेश करते हैं कि यज्ञ से कृमियों का नाश होता है। अब हम आधुनिक वैज्ञानिक ढग पर विचार करते हैं कि यज्ञ द्वारा मैलेरिया से हमारी रक्षा किस प्रकार हो सकती है।

(१) भौतिक विज्ञान द्वारा यह बात सिद्ध हो चुकी है कि किसी वस्तु का अभाव नहीं होता प्रत्युत बदल जाता है। अतः हवन मे जलाई हुई मैलरिया नाशक तुलसी, जायफल, गिलोय ( विशेष विवरण मैलेरिया की अद्भुत चिकित्सा' पुस्तक में देखें। ) इत्यादि के सूक्ष्म परमाणु श्वास द्वारा विशेष रूप से हमा

करने वाले, और सामान्य रूप से अन्य उन सब लोगो के भी भीतर पहुच रक्त मे प्रवेश करेंगे जो उस वायु मे श्वास लेंगे तो उन ओषधियों का प्रभाव न केवल कुनैन खाने अपितु कुनैन के इंजेक्शन से भी अधिक होगा क्योंकि इंजेक्शन की दवा कितनी ही सूक्ष्म की जाए फिर भी आग द्वारा सूक्ष्म किये गये परमाणुओं के समान सूक्ष्म नहीं हो सकती। फिर, सब इंजेक्शन अप्राकृतिक होने के कारण लाभ के साथ हानि भी करते हैं, पर आग में जलाने का तरीका प्राकृतिक होने के कारण कोई हानि नहीं करता।

[२] सूक्ष्म मे जो शक्ति है वह स्थूल में नहीं है। सोने का एक रत्ती टुकड़ा किसी आदमी को खिला दीजिए, कुछ लाभ न होगा उसी को सूक्ष्म करके वर्क बनाकर खिलाइये, पुष्टि देगा। उसे आग में फूंककर भस्म बना लीजिये। अब केवल एक चावल भर खिलाइये। थोड़े ही दिन में चेहरे पर लाली, शरीर मे बल, मन में उत्साह उत्पन्न होकर वृद्ध भी युवा सदृश बन जायगा। वैद्य लोग जानते हैं कि एक माशे दवा में वैसे बहुत कम शक्ति होती है, पर उसी दवा को एक सप्ताह तक घोट कर सूक्ष्म किया जाये तो उसकी शक्ति कई गुणा बढ़ जायगी। होम्योपैथी मे इसी नियम के आधार पर औषधियो की पोटेंसी तैयार की जाती है। जिसका प्रभाव बढ़ता चला जाता है। इसके अतिरिक्त जब रोगी पर अतिशीघ्र प्रभाव करना अभीष्ट होता है तो खिलाने के स्थान पर ओषधि सुंघाते हैं। एक मिर्च को वैसे सूंघने से कुछ नहीं होता, कूटने से कई पास के बैठने वालो को खांसी आएगी, पर यदि उसी मिर्च को आग मे डाल दें तो दूर दूर तक के मनुष्य खासने लगेंगे। इन सब प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि कुनैन चाहे खिलाई जाए, चाहे इंजेक्ट की जाए रोग से रक्षा करने में इतनी प्रभावशाली कदापि नहीं हो सकती जितनी प्रभावशाली हवन मे जलाई हुई उपर्युक्त गिलोय आदि ओषधियां हो सकती हैं।

[३] अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि जितने प्राकृतिक पदार्थ हैं उनके सूक्ष्म परमाणु हर समय गतिशील रहते हैं। यद्यपि प्रत्यक्ष में ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता परन्तु मनुष्य शरीर कोठी की दीवार, मेज, कुर्सी आदि का प्रत्येक परमाणु गति कर रहा है; और यह गति भी ऊटपटांग नहीं बल्कि नियमपूर्वक है। हरेक परमाणु की गति एक सी नहीं होती। किन्हीं की गति समान होती है और किन्हीं की एक दूसरे के प्रतिकूल। प्रकृति का यह नियम है कि दो समान वस्तुएं परस्पर एक दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं और विरोधी वस्तुयें एक दूसरे को भगाती हैं। अतः जिन वस्तुओं के परमाणु एक सी गति करते हैं उनमें परस्पर आकर्षण होता है और विरोधी गति वालों में विकर्षण। आपने देखा होगा कि एक एक कक्षा में एक साथ पढ़ने वाले कई विद्यार्थियों मे से किन्हीं दो मे विशेष मित्रता हो जाती है, शेष में वैसी नहीं। रेल मे सैकड़ो यात्री साथ-साथ यात्रा करते है पर उनमे से किन्हीं दो मे ऐसा प्रेम हो जाता है जो जीवन भर निभता है। किन्हीं पति-पत्नियो मे ऐस प्रेम हो जाता है कि एक दूसरे पर प्राण न्योछावर करने को उद्यत रहते हैं जब कि कोई-कोई एक दूसरे को घृणा तक की दृष्टि से देखते हैं। यह सब बहुत कुछ इस नियम के आधार पर है कि जिनके स्वभाव आदि के परमाणु एक सी गति गति करते है उनमे परस्पर आकर्षण और प्रेम हो जाता है।

---

—तीन वर्षों से निष्क्रिय पड़ी आर्यसमाज कौड़िया (गोंडा) का नव निर्वाचन आर्यप्रतिनिधि सभा गोंडा के सफल प्रयत्नों से १ अगस्त ६९ को हुआ और तब से साप्ताहिक अधिवेशन आदि कार्य विधिवत चल रहे हैं।

प्रधान—श्री प० रामचन्द्र वानप्रस्थी
मन्त्री—श्री जगन्नाथप्रसाद आर्य
कोषा०—श्री सत्यनारायण रस्तोगी
—मन्त्री उप सभा

---

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास में किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी में १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिससे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें। इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत में शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध-पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन मे एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष में दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं, प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि संग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश से करने की कृपा करें। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोडकर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से ससार मे शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन संग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अतः आर्य भाइयों को इसके लिये सीधा नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जावेंगे। निवेदकः—

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान | प्रकाशवीर शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान |
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.ए.<br>मन्त्री | महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम ए<br>सयोजक |
| मदनलाल<br>कोषाध्यक्ष | आचार्य विश्वश्रवाः वेदाचार्य<br>प्रचार मन्त्री |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति<br>५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ |

## श्री विदेह

[ पृष्ठ ६ का शेष ]

श्री प्रधान धर्मार्य सभा देहली में आपको लिखे १४-५-५४ के अपने पत्र को वापस लेता हूं।

ह० विद्यानन्द विदेह
२७-६-५४

इसके पश्चात् श्री विद्यानन्द जी ने प्रधान जी धर्मार्य सभा के नाम निम्नलिखित पत्र लिखकर दिया—

मैं निवेदन करता हूं कि मेरे ७-४-५४ के क्षमा पत्र को पत्रों मे प्रकाशित न किया जाए।

ह० विद्यानन्द विदेह

इन पत्रो को ध्यान में रखते हुये विचार-विनिमय के पश्चात् निश्चय हुआ कि पत्रों में केवल सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की अन्तरङ्ग सभा के २६ और २७ जून के अधिवेशनों की कार्यवाही ही प्रकाशित की जाये।

साथ ही सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि—

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की यह अन्तरङ्ग सभा निम्नलिखित सज्जनो की एक उपसमिति नियत करती है जो श्री विद्यानन्द जी समस्त पुस्तको का अनुशीलन करके उचित सशोधन प्रस्तुत करे और उसे धर्मार्य सभा का प्रस्तुत संशोधन समझा जाये।

इस सशोधित रूप मे ही विद्यानन्द जी अपनी पुस्तको के आगामी सस्करण निकाले और अब तक ऐसा न हो जाये तब तक वे उन पुस्तकों का वितरण और प्रचार स्थगित रखे।

श्री विद्यानन्द जी ने इसको स्वीकार किया।

### उपसमिति के सदस्य

१—श्री स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती, २—श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, ३—श्री आचार्य विश्वश्रवाः। (क्रमशः)

## विचार-विमर्श

( पृष्ठ ७ का शेष )

अश्व शिश्न मुखस्थे कुरुते वृथा वाजीति। महिषी स्वय मे वाश्व शिश्न माकृष्य स्वयोनौ स्थापयति देखो यजु० २३-२० पर महीधर का भाष्य। विपक्षीय विद्वान् ( त्रिवेदी जी ) यदि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ( महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित) पढ लें तो उनका भ्रम निवृत्त हो जायगा। अथर्व० १५-६-६८ और ११-८-३ में चारों वेदों का वर्णन है और अथर्व० ११-८-२३ मे ब्रह्म शब्द से अथर्व अभिप्रेत है। गोपथ ब्राह्मण पू० २-१६,गोपथ० उ० २-२४ व ३-२ मे भी चारो वेदों का वर्णन है। शतपथ ब्रा० १४-५, मुण्डक उपनिषत् १ १-५, छान्दोग्य उप० ७-१-२, चरण व्यूह १-२-३, वैखानस गृह्य सूत्र २-१२, महाभारत सभा पर्व ११-३२ आदि में भी चारों वेदो का वर्णन है। पूर्व पक्ष द्वारा उद्धृत काठक ४०-७ के प्रमाण में भी ऋक् यजुः साम अथर्व चारों वेदों का ही उल्लेख है। मीमासा दर्शन के प्रमाण से भी पूर्व पक्षीय विद्वान् यह सावित न कर सके कि 'आदि में वेद एक था और बाद में चार हुये।' निष्कर्ष यह है कि ब्रह्म [ सत्यं ज्ञान अनन्त ब्रह्म ] अनन्त ज्ञान स्वरूप है। उसने अपने अनन्त ज्ञान से सृष्टि की आदि में ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्व चारो वेदो को प्रकाशित किया। ब्राह्मण ग्रन्थो से पता चलता है कि अग्नि, वायु आदित्य तथा अगिरा ऋषियो में उक्त चारो वेदो का सृष्टि की आदि मे ईश्वर ने प्रकाशित किया।

यह श्री विद्याभूषण त्रिवेदी का भ्रम है जो वे वेदो को चार न मान कर आदिम वेद एक था ऐसा मान बैठे है। मैने वेदो के चार होने के प्रमाण वेद तथा आर्ष ग्रन्थो से इस छोटे से लेख मे दे दिये हैं। किसी ग्रन्थकार ने यदि चारों वेदों के तीन प्रकार [ द्रुत, मध्यम, विलम्बित ] के स्वरोच्चारण भेदो को देखकर, चारों वेदों को संक्षेप में तीन [ ऋक्, यजु साम ] वेद लिख डाला है तो उस से यह भाव नहीं लिया जा सकता कि वेद तीन हैं जैसा कि मनुस्मृति १-२३ में है क्योंकि वेदों में ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद चारो वेदों का ईश्वरोक्त होने का वर्णन है जो कि प्रमाण दिया जा चुका अत मनु १-२३ का कथन वेद विरुद्ध होने से अप्रमाण है। गोपथ पूर्वार्द्ध २-२४ में अथर्व वेद के विद्वान् ही को यज्ञ में ब्रह्मा वरण करने को लिखा है (अथर्वाङ्गिरोविदमेव ब्रह्माण वृणीष्व)।

प्र०—चारों वेदों में सैकडो मन्त्रो की पुनरावृत्ति क्यों है? एक ही वेद मन्त्र उसी रूप मे कई वेदों मे तथा एक वेद मे भी कई बार पढ़ा गया है। सामवेद मे ७८ मन्त्रों को छोडकर शेष समस्त मन्त्र ऋग्वेद के हैं। पुनरुक्त मन्त्रो मे देवता, छन्द तथा स्वर जिन पर वेदार्थ निर्भर करता है, भी समान ही देखा जाता है।

उ० वेदो मे पुनरुक्ति दोष नहीं है। किसी शब्द या मन्त्र की वेदो मे हुई पुनरावृत्ति विभिन्न प्रकार के अर्थो को प्रकाशित करने के लिये है। विद्वानो का यह कथन कि एक ही मन्त्र जितने स्थानो पर वेदो मे आया है उतने ही प्रकार के उसके अर्थ होते हैं सर्वथा युक्त है। जिस मन्त्र का जो अर्थ होता है उसी अर्थ का द्योतक उस मन्त्र का देवता होता है। मन्त्रार्थ का सकेत करने वाले देवता वाचक होना है देवता वाचक शब्द जो मन्त्र के पास लिखा रहता है उसके भी अनेको अर्थ होते हैं। मन्त्र, देवता, छन्द तथा स्वर समान होने पर भी एक मन्त्र का जो अर्थ एक स्थान पर होता है उससे भी भिन्न अर्थ अन्यत्र हो जावेगा यदि वैसा न होता तो वेद मन्त्रो का त्रिविध प्रक्रिया मे अर्थ क्यो कर हो सकता? 'युञ्जति ब्रध्नम-परुष' ( ऋ० ) के इस मन्त्र के ३ प्रकार के अर्थ महर्षि ने ऋ.भा भू. मे किये हैं। अत. चारो वेदो मे सैकड़ों मन्त्रो की पुनरावृत्ति कहीं उसी रूप में वा कहीं थोडे शब्द परिवर्त्तन के साथ तथा एक वेद मे भी जो देखी जाती है वह प्रत्येक स्थान पर विभिन्न अर्थो की द्योतक है। जहा पूरा सूक्त पुनरावृत्त हुआ है वहां भी विभिन्न अर्थ हो सकता है।

निष्कर्ष—वेदों में पुनरुक्ति दोष की शका तथा उस भ्रमपूर्ण शंका का समाधान निकालने के लिये वेदों को चार न मानकर एक एक वेद मानने की कल्पना श्री विद्याभूषण त्रिवेदी जी की मिथ्या है। यदि इसमें कुछ भूल हो तो विद्वान् उस पर प्रकाश डालें।

## गुरुकुल झज्जर श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ की उपाधियों को मान्यता

अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न-प्रान्तों के गुरुकुलों का एक सङ्गठन है, जिसका नाम श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ है। यह सस्थान अपनी परीक्षाओं को वर्तमान काल में गुरुकुल झज्जर (रोहतक) में कार्यालय बनाकर चला रहा है। इसकी उपाधियां केन्द्रीय सरकार, दिल्ली राज्य, पजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला और गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद ने तो पहले ही स्वीकार कर ली थी। अब उक्त संस्था के छात्रों को विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)ने पत्र सख्या ५१-१/६९ दिनाक ३०।७।१९६९ से अपने यहाँ प्रवेश देने के लिये इस प्रकार की व्यवस्था की है कि—

१—प्रथमा [अग्रेजी सहित] विद्याधिकारी प्रथम खण्ड मे।

२—मध्यमा [अग्रेजी सहित] विद्या विनोद द्वितीय खण्ड मे।

३—शास्त्री [अग्रेजी सहित] एम. ए. [सस्कृत, दर्शन शस्त्र, वेद] में।

४—आचार्य एम ए. [संस्कृत दर्शनशास्त्र, वेद मे।

प्रस्तोता—
वेदानन्द वेदवागीश

## उत्सव—

—आर्यसमाज बड़गांव [गोण्डा] का वार्षिकोत्सव ३०-३१ अक्तूबर व १, २ नवम्बर को होगा। २९ अक्तूबर को शोभा यात्रा होगी। —मन्त्री

—आर्यसमाज लश्कर [ग्वालियर] में २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज लालबाग लखनऊ में २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री प० ब्रह्मदत्त जी शास्त्री जी कथा होती रही। मन्त्री

—आर्यसमाज हरदोई मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया गया। श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री साधु सोमतीर्थ दिल्ली की प्रभावशाली कथा हुई। —मन्त्री

—आर्यसमाज नरही लखनऊ मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह से मनाया गया। अन्त मे उपस्थित सज्जनों को लड्डू बाटे गये। —मन्त्री

—आर्य समाज कासगज ने १७ अगस्त से २२ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया। श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री जी का वेदोपदेश और श्री अयोध्यासिंह जी के भजन हुये। —मन्त्री

—गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम बिहार का नया सत्र प्रारम्भ हो गया है। —अधिष्ठाता

—१५ अगस्त को आर्य कन्या पाठशाला सतना मे स्वतन्त्रता दिवस समारोह से मनाया गया। —देशराज मन्त्री

—कानपुर के आर्य नेता श्री केशोदास जी आर्य ने पिछले दिनो ७ हिन्दू स्त्रिया मुसलमानो के घरों से पुलिस के सहयोग से निकाली हैं। —शिवदयाल मन्त्री

—सवाई माधोपुर (राजस्थान) में आर्यसमाज मन्दिर बन रहा है। दानी सज्जनो को इसके बनाने में सहायता करनी चाहिये। —मूलचन्द शर्मा मन्त्री

—७ अगस्त १५ अगस्त तक गुरुकुल खेड़ा खुर्द [दिल्ली राज्य] में श्री स्वामी मुक्तानन्द जी की अध्यक्षता मे ऋग्वेद पारायण यज्ञ हुआ। —मन्त्री

—गुरुकुल मोहिया [छपरा] के शिक्षकों व ब्रह्मचारियों ने २७ अगस्त को सस्कृत दिवस समारोह से मनाया। —मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल घटकेश्वर में २७ अगस्त को श्रावणी पर्व समारोह से मनाया गया। —आचार्य

—गुरुकुल आश्रम अमसेना खरियार रोड [उडीसा] की ओर से ७ अगस्त को अमसेना गाव में श्रावणी पर्व व सस्कृत दिवस समारोह से मनाया गया। —आचार्य

—५ से ९ सितम्बर तक आर्यसमाज जमानियाँ में आचार्य श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री की कथा हुयी। —धर्मवीर प्रसाद

—२५ अगस्त को आर्यसमाज इटारसी में श्री कैलाश नारायण मुरादाबाद और श्री कुमारी इन्दिरा सिंह एम ए का विवाह सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। २७ अगस्त को उक्त समाज म श्रावणी पर्व, तथा हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया। —चन्द्रभूषण शर्मा मन्त्री

२७ अगस्त ६९ को आर्य समाज, अजमेर मे श्री ठा० प्रम सिंह जी भूतपूर्व कमिश्नर देव स्थान, राजस्थान की अध्यक्षता मे प० जियालाल जयन्ती का आयोजन किया गया। स्व० प० जियालाल जी के गुणों का वर्णन करते हुये श्री रामनारायण चौधरी, प० रामचन्द्र आर्य मुसाफिर, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री आचार्य भद्रसेन, श्री नाथूलाल जी अरोडा आदि महानुभावों ने बताया कि जियालाल जी साहसी, वीर, दृढता वाले व्यक्ति थे उन्होंने किसी की भी चिन्ता न करते हुये जिस बालक को कहा तथा जिस कार्य को करने के लिये बीडा उठाया उसे पूरा किया। —उपमन्त्री

## गुरुकुल वृन्दावन में संस्कृत दिवस

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे श्रावणी के पर्व पर सस्कृत दिवस मुख्याध्यापक श्री रामेश्वर दयालु जी शास्त्री की अध्यक्षता मे बडे समारोहपूर्वक मनाया गया तथा चारो वेदो के आदि तथा अन्तिम मन्त्रो का पाठ किया गया। श्री प० तेजपाल जी शास्त्री तथा गुरुकुल के सस्कृत महोपाध्याय श्री प० धर्मेन्द्रनाथ जी साहित्याचार्य के सस्कृत मे सार गर्भित भाषण हुये और केन्द्रीय सरकार का ध्यान सस्कृत की सर्वाङ्गीण उन्नति करने के लिये खींचा गया तथा सस्कृत को अन्य भारतीय भाषाओ की सूची मे सम्मिलित करने की प्रार्थना की गई। —मुख्याधिष्ठाता

## केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर का वार्षिक अधिवेशन

दि० २१ सितम्बर को शाम को ५॥ बजे आर्यसमाज सीसामऊ में होगा। —योगन्द्रसरीन मन्त्री

—६ सितम्बर को कानपुर केन्द्रीय आर्य सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज सीसामऊ में श्री कृष्णाष्टमी महोत्सव श्री डा० शिवदत्त जी की अध्यक्षता में समारोह से मनाया गया। जिसमें सर्वश्री रामेश्वर जी तातिया नगर प्रमुख, श्री राधाकृष्ण जी उप कुलपति, स्वा. विशुद्धानन्द जी और बाबा मोहनसिंह जी के श्री कृष्ण जी के जन्म पर प्रभावशाली भाषण हुये।

## नम्र निवेदन

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर एक राजनैतिक सिद्धान्त आदर्श सम्मेलन होने जा रहा है। यह सम्मेलन अपनी तरह का एक अपूर्व सम्मेलन होगा, जिसमे देश के समस्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियो के अतिरिक्त विदेशों के प्रमुख राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भाग लेंगे और राष्ट्रिय एव अन्तर्राष्ट्रिय समस्याओं पर अपने दल का एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे।

आप अपनी आर्यसमाज के उन सदस्यो के नाम पते सहित हमे तुरन्त भेजने की कृपा करे जो राजनीति मे रुचि रखते हों तथा वर्तमान राष्ट्रिय एव अन्तर्राष्ट्रिय समस्याओ पर वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने मे समर्थ हों और राजनीति पर एक आदर्श वैदिक आचार सहिता बनाने मे हमारी सहायता कर सके।

—वेदश्रवा विद्यार्थी
सयोजक—राजनैतिक सम्मेलन
वेद मन्दिर ९९, बजरिया मोतीलाल, बरेली

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मीरजापुर के कार्य समिति की बैठक दिनाक १२ अक्तूबर दिन रविवार समय १ बजे स्थान आर्यसमाज मीरजापुर मे होगी। —बेचनसिंह मन्त्री

—वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर का अठारहवा वार्षिक शिविर इस वर्ष पहला से पाच अक्तूबर १९६९ ई० तदनुसार १६ से २० आश्विन स० २०२६ वि० तक दिन बुद्ध, वीर, शुक्र, शनि तथा रविवार को श्रद्धा व समारोहपूर्वक लगाया जायेगा। गत वर्षो की भाति वेद पारायण महायज्ञ मे ब्रह्मचारियो व विद्वानो द्वारा वेदपाठ होगा।

प्रभात को योग प्रशिक्षण हुआ करेगा। इस शुभावसर पर उच्च कोटि के सन्यासी, वानप्रस्थी, प्रसिद्ध विद्वान् पधार रहे है। धर्म प्रेमी सज्जनों को सादर निमन्त्रित किया जाता है।

—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
अध्यक्ष

**काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का पूरा हाल प्रति सप्ताह जानने के लिये आर्यमित्र के ग्राहक बनिये !**

## वार्षिक मूल्य १०)

आर्य जगत् का सबसे प्राचीन और सब प्रान्तो तथा देशदेशान्तरो मे सब से अधिक जाने वाले आर्यमित्र के शीघ्र ग्राहक बनिये । आर्यमित्र के द्वारा काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के सब समाचार प्रतिसप्ताह प्राय: पढ़ने को मिलेंगे । इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषाङ्क जैसे मूर्ति पूजा विशेषाङ्क आप को बिना मूल्य दिया जावेगा ।

आर्यमित्र के प्रत्येक अङ्क में वेदमन्त्रो की सुन्दर व्याख्या, सिद्धान्त संबन्धी लेख तथा स्त्री बाल उपयोगी पाठ्य सामग्री तथा देश विदेश के आर्य समाजो के समाचार सब आप को आर्यमित्र के द्वारा ही पढ़ने को मिलेंगे ।

आर्यसमाजो से प्रार्थना है कि वे हम से अधिक प्रतियाँ मगा कर प्रतिसप्ताह साप्ताहिक अधिवेशन में विक्रय करें ।

हमे आर्यमित्र के ग्राहक बनाने वाले एजेन्टों की आवश्यकता है । एजेन्टों को पारिश्रमिक दिया जावेगा । हमसे पत्र व्यवहार करें ।

निवेदक—
व्यवस्थापक आर्यमित्र
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

## सूचना

आर्य जनता को विदित हो कि श्री तेजसिंह जी, श्री कर्णसिंह जी आदि व्यक्ति आर्यसमाज या उपसभा के नाम से धनसग्रह करते रहते हैं । अत: दानी सज्जनो को सूचित किया जाता है कि उपर्युक्त महानुभावो को किसी प्रकार का धन नहीं दिया जाए ।

—राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मन्त्री जिलोपसभा, सहारनपुर

—दि० २५-८-६९ को स्व० मथुराप्रसाद जी टण्डन के आकस्मिक निधन पर आर्य कन्या पाठशाला उच्च माध्यमिक विद्यालय बहराइच के समस्त अधिकारीगण अध्यापिकाए, कर्मचारीगण एव छात्राए सामूहिक रूप से हार्दिक सवेदना प्रकट करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति एव उनके शोक सतप्त परिवार को इस असहनीय दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

—गिरिजादत्त शर्मा प्रबन्धक

## धार्मिक सिद्धान्त परीक्षाए

गत आधी शताब्दी से प्रचलित भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की सिद्धान्त सरोज, सि० रत्न, सि० भास्कर, सि० शास्त्री, तथा सि० वाचस्पति परीक्षाओ मे बैठिये । ये सभी आर्य शिक्षा सस्थाओ मे मान्य हैं । नियमावली एव फार्म कार्यालय से नि:शुल्क मगाइये ।

आचार्य डा० प्रेमदत्त शास्त्री
साहित्यालकार
परीक्षा मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
अलीगढ़ (उ० प्र०)

# धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् की रजि० सिद्धांत प्रवेश सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धान्तालकार, सि० शास्त्री, सिद्धान्ताचार्य की परीक्षायें आगामी दिसम्बर जनवरी मे समस्त भारत व विदेशो मे होंगी । उत्तीर्ण होने पर तिरगा प्रमाण-पत्र दिया जाता है । [illegible] नर-नारी सोत्साह भाग ले रहे हैं ।

१५ पैसे के टिकट भेज कर नियमावली मगाइये ।

| | |
|---|---|
| आदित्य ब्रह्मचारी | आचार्य मित्रसेन |
| यशपाल शास्त्री | एम ए. सिद्धान्तालकार |
| प्रधान | परीक्षा मन्त्री |

**भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद्**
**सेवा-सदन कटरा, अलीगढ़**

संसार प्रसिद्ध सर्वोत्तम

## शुद्ध सुगन्धित हवन सामग्री

आर्य प्रणाली द्वारा वैदिक रीत्यनुसार शास्त्रोक्त विधि से ताजी जड़ी बूटियो एव औषधियो द्वारा निर्मित यह हवन सामग्री देव पूजन के लिये पवित्र और उपयोगी है । इससे वायु शुद्ध होती है । रोगो के कीटाणु नष्ट होते हैं । उपयोग करने से सारा गृह सुवासित हो जाता है । विवाहों, यज्ञों, पर्वो व सामाजिक अधिवेशनों मे व्यवहार करने के लिये सर्वोत्तम है । मूल्य ६०) प्रति ४० किलो । स्पेशल १००) प्रति ४० किलो ।

नोट—पेशगी धन भेजने वालो को रजिस्ट्री, वी. पी. खर्च तथा अन्य डाक-व्यय मुफ्त होगा ।

**निर्माता—राजेन्द्रदेव, वैद्य विशारद आयुर्वेदरत्न**
अध्यक्ष—आनन्द आयु० फार्मेसी भोगाँव जिला मैनपुरी [उ० प्र०]

‘तीस वर्षों से आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसो रोगो की अकसीर दवा’

एजेण्ट चाहिये **कर्ण रोग नाशक तैल** रजिस्टर्ड

कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, कुलना, सीटी-सी बजना, आदि कान के रोगो मे बड़ा गुणकारी है । मूल्य १ शीशी २ रुपये, एक दर्जन पर ४ शीशी कमीशन की अधिक देकर एजेण्ट बनाते हैं । एक दर्जन से कम मगाने पर खर्चा पैकिंग-पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा । बरेली का प्रसिद्ध रजि ‘शीतल सुरमा’ आंखो की रक्षा के लिये प्रति दिन प्रयोग करे, आंखो के लिए अत्यन्त गुणकारी है । इसके प्रयोग से आखो मे सुखदायक ठडक उत्पन्न होती है । रोजाना प्रयोग करने से निगाह तेज हो जाती है, और आखे कभी दुखने नहीं आतीं । आखो के आगे अँधेरा सा आना, तारे से दिखाई देना, धुंधला नजर आना, खुजली मचना, पानी बहना, आंखो की जलन, सुरखी और रोहो को शीघ्र आराम कर देता है । मूल्य ३ ग्राम की शीशी रु० २-२५ पैसे ।

‘कर्ण रोग नाशक तैल’ सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद, यू० पी०

# ★ सत्यार्थ-प्रकाश ★

### अपूर्व संस्करण

ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ “सत्यार्थ प्रकाश” का नितान्त नवीन एव परिष्कृत सस्करण मण्डल के अध्यक्ष डा० सूर्यदेव शर्मा के शुभ दान से प्रकाशित होने के कारण प्रचारार्थ रियायती मूल्य केवल २ रु० ५० पैसे मे आर्यजनता को भेंट है । अधिक प्रतियाँ लेने पर कमीशन अतिरिक्त ।

७२० पृष्ठ की इस पुस्तक को जो २४ पौंड के सफ़ेद कागज पर छपी है, इतने सस्ते मूल्य मे मगाकर धर्म प्रचार के इस अपूर्व अवसर से लाभ उठाइये ।

आर्ष पुस्तको का बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगावें ।

## आर्य साहित्य मण्डल लि०

श्रीनगर रोड, अजमेर

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

(पृष्ठ २ का शेष)

हैं यह पैसा कहां से आता है। यह सब वेद प्रचार के नाम पर मांगा रुपया विज्ञप्तियो पर परस्पर व्यय हो रहा है। धन्य हो ऋषि के उत्तराधिकारियो ! यह रुपया हमे ही दे दो। हम शास्त्रार्थ शताब्दी की विज्ञप्तियां ऋषि के कार्य के अन्दोलनार्थ निकालें।

मैं पुन. प्रार्थना करता हू कि तीन मास लड़ना छोड़ दो। सब मिलकर काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मनालो। देश भर के, देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर के स्कालर पधारेगे वाराणसी में सब पहुचो। और यह विचार छोड दो कि पजाब सभा के दो निर्वाचन है और सार्वदेशिक के दो निर्वाचन हैं। तुम चारो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर पहुंचो और यह चालाकी मत दिखाओ कि उधर तो गोवा मे सम्मेलन रख कर दिल्ली की स्पेशल ट्रेन चला दो और फिर हमसे पूछो कि हम क्या सहायता करे। हमे पत्र लिखो मन्त्री पजाबसभा मन्त्री सार्वदेशिक सभा करके तब ही हम सहयोग देंगे जिससे आप हमारे पत्रों को कोर्ट मे दिखा सके यह क्या हम नहीं समझते हैं। हमे तुम इतना सरले समझते हो। सस्कृत का मसला है कि आंखो मे स्वय चोट करके आंसु क्यो निकल रहे हैं, कारण पूछते हो। हम सार्वदेशिक सभा और पजाब सभा दोनों को निमन्त्रण देते हैं जिसे अपने पर सन्देह होगा कि हम पजाब सभा सर्वदेशिक सभा हैं, या न जाने नहीं हैं वह पहुचेगा, और जिसको विश्वास होगा कि हम पजाब सभा सार्वदेशिक सभा है वह पहुच जायेगा।

### एक चेतावनी

यदि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी सफल होगी तो ससार मे आर्यसमाज का यश होगा। और यदि असफल होगी तो ससार मे आर्यसमाज का उपहास होगा। विशेष कर काशी मे। किसी व्यक्ति का न यश है और न अपयश। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है।

मैं इस लेख के द्वारा श्री भाई वीरेन्द्र जी को श्रद्धेय श्री रामशरण दास जी आदि सब आर्यभाइओ को और श्री प० रघुवीर सिंह जी शास्त्री आदि सब बन्धुओ को तथा श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले श्री सोमनाथ जी मरवाहा आदि अपने साथियो को काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति की ओर से आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश की ओर से सादर सप्रेम निमन्त्रण देता हू। बन्धुवरसब सोत्साह काशी पधारो और उसे सफल बनाओ। यह शताब्दी-समारोह सब का है। वहाँ सब का समान आदर होगा। मन के परस्पर मैल कुछ समय के लिये छोडदो लडना बन्द कर दो। और सभव है कि आप सब मिलकर दो मास के लिये अगर बैठ गये और काशी शास्त्रार्थ शताब्दी सफल हुई तो शायद मिलकर बैठकर कार्य करने से मिल ही शायद जाओ। लड़ाई लम्बी भी की जा सकती है और बन्द करना हो तो एकदम बन्द भी की जा सकती है। देखो उत्तर प्रदेश के लोग सिरसागज मे खूब लडे और दो मास बाद ही सब ऐसे मिलकर बैठ गये जैसे कभी लडे ही न थे। उत्तर प्रदेश सब के लिये आदर्श है इस विषय मे है इन से तो कुछ शिक्षा ग्रहण करो।

### गुरुकुल अयोध्या

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या की अन्तरग सभा के सदस्यो की यह बैठक दि० ६-८-६८ को श्री स्वा० जगदानन्द जी के देहावसान पर शोक प्रकट करती है तथा उनकी गुरुकुल के प्रति की गई सेवाओ की सहायता करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उस दिवंगत आत्मा को सद्गति एव दुखी कुल परिवार को शान्ति प्रदान करें।

# राजनैतिक सम्मेलन की रूपरेखा

[श्री वेदश्रवा विद्यार्थी एम०एस-सी० (भौतिकी), एम०एस-सी० (गणित]
संयोजक :—राजनीतिक सिद्धान्त आदर्श सम्मेलन (काशी शास्त्रार्थ शताब्दी)

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन किया गया है। यह सम्मेलन महत्त्वपूर्ण इसलिये होगा क्योंकि यह देश के समस्त राजनैतिक दलों को एक सामान्य मंच प्रदान करेगा जहाँ आकर उनके प्रतिनिधि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अपने दल का एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। यह भी प्रयत्न किया जा रहा है कि विदेशों के कुछ प्रमुख राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन में भाग लें और अपनी विचारधारा प्रस्तुत करें। ये समस्त विचार जो निबन्ध रूप मे लिखे जायेंगे, पहले से ही प्रकाशित कर दिये जायेंगे। और इसके पश्चात् सम्मेलन मे आकर उनके प्रतिनिधि अपना भाषण प्रस्तुत करेंगे।

इसके साथ ही देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं पर एक आदर्श आचार संहिता तैयार की जायेगी। महर्षि दयानन्द की विचारधारा को आदर्श मानकर राजनीति पर एक वैदिक चिन्तन भी प्रस्तुत किया जायेगा। इसको भी प्रकाशित करा दिया जायेगा और बाद मे आर्य जगत् के विद्वान इसे अपनी वाणी द्वारा जनता के सामने विचारार्थ प्रस्तुत करेंगे।

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न जिन पर सभी राजनैतिक दल अपने विचार प्रकट करेंगे, इस प्रकार हैं :—

(१) यदि आपको किसी प्रकार केन्द्र मे चुनाव जीत कर सरकार बनाने का अवसर मिल जाये (यदि अभी तक नहीं मिला है), तो देश से आर्थिक एवं सामाजिक एकाधिकार दूर करने के लिये आपकी क्या नीति होगी।

(२) यदि आने वाले समय में आपका दल लगातार चुनाव जीतता चला आये तो विरोधी दलों के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण एवं कैसा व्यवहार होगा।

क्या आप राजनैतिक एकाधिकार को भी उतना ही खतरनाक नहीं समझते हैं, जितना कि आर्थिक एकाधिकार को।

(३) यदि सभी राजनैतिक पार्टियाँ समाप्त कर दी जावें या स्वयं ही समाप्त हो जाये और केवल आप के हाथों मे ही सारे देश की बागडोर निर्विरोध सौंप दी जावे तो आपकी क्या नीतियाँ होंगी।

(४) क्या ऐसी स्थिति मे भारतवर्ष का यही संविधान रहेगा अथवा आप इसमे कुछ परिवर्तन करेंगे। यदि परिवर्तन करेंगे तो क्या और कैसे।

यदि आप इससे सहमत नहीं हैं तो फिर देश की आर्थिक विषमता दूर करने के लिये क्या आदर्श आपके दल ने निर्धारित किया है तथा इस आदर्श की प्राप्ति के लिये क्या कार्यक्रम आपके पास है।

(७) आप मशीनों के युग को ठीक समझते हैं अथवा ग्रामोद्योग को। क्या केवल ग्रामोद्योग से काम चल जायेगा।

(८) देश मे जो निरन्तर गौ आदि प्राणियों का वध हो रहा है, उसे आप ठीक समझते है या नहीं। क्या आपके दल के शासन काल मे गौ-वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा।

(९) यदि आप के हाथ मे निर्विरोध सारे देश की बागडोर सौंप दी जावें तो आपकी विदेश

## राजनैतिक समस्याएं

(५) भारतवर्ष मे जो निरन्तर धर्म परिवर्तन हो रहे हैं, इससे भारत के भविष्य पर कुछ अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा या नहीं।

यदि सारा देश ही ईसाई या मुसलमान हो जाये तो फिर भारतीय प्राचीन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का इस देश मे कोई स्थान रहेगा या नहीं और यदि रहेगा तो कैसे और किस रूप में।

(६) देश मे जो निरन्तर गरीब और अमीर के बीच का फासला बढ़ता ही जा रहा है, क्या आप इसे ठीक समझते है।

"गरीबी पूर्व जन्म के पापों का और आलस्य व अकर्मण्यता का प्रतीक है तथा अमीरी पूर्व जन्म के पुण्यों का और पुरुषार्थ व परिश्रम का फल है" क्या आप इस कथन को ठीक समझते हैं।

नीति क्या होगी। संसार मे जो राष्ट्रों के गुट बने हैं उनके साथ आपका क्या सम्बन्ध होगा। अथवा आप तटस्थ रहना पसन्द करेंगे।

आपकी राय मे तटस्थता का वास्तविक अर्थ क्या है? एक शक्तिशाली राष्ट्र ही वास्तव मे तटस्थ हो सकता है अथवा एक राष्ट्र भी नहीं मानों मे तटस्थ रह सकता है।

(१०) क्या आप भारत के विभाजन को स्थायी मानते हैं? यदि नहीं तो क्या आप भारत पाक एकीकरण की बात को केवल कल्पना ही मानते हैं।

यदि आप भारत पाक एकीकरण को वास्तविक मानते हैं तो इसके लिये आपके पास क्या योजना है।

"भारत पाक-काश्मीर महासंघ" ही काश्मीर सहित, भारत और पाकिस्तान के बीच समस्त समस्याओं का एकमात्र हल है-इस विचार से आपका दल कहाँ तक सहमत है।

श्री वेदश्रवा जी एम एस सी

(११) चीन ने आक्रमण कर के जो भूमि हथिया ली है, तथा पाकिस्तान ने काश्मीर व कच्छ के जिस इलाके को हमसे युद्ध या समझौतों के जरिये ले लिया है—आपकी राय मे यह भूमि वास्तव मे हमारी ही है या उन देशों की जिनका इन पर कब्जा है।

यदि आप इस भूमि को भारत की ही समझते हैं तो इस भूमि को वापस लेने के लिये आपके दल के पास क्या योजना है।

(१२) वर्तमान परिस्थितियों मे भारत को शान्ति का दूत बनना चाहिये और संसार की समस्याओं को शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व से हल करने पर जोर देना चाहिये।

अथवा संसार की समस्याओं मे टाँग अड़ाने की अपेक्षा, हमे अपनी प्रतिरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिये। सारे देश का युद्ध के लिये तैयार करना चाहिये और स्वयं को इतना शक्तिशाली बनाना चाहिये कि कोई दूसरा हमारी ओर आँख उठाकर भी नहा देख पाये-इसी प्रकार हम सही मानों मे तटस्थ बन सकते हैं।

देश की प्रतिरक्षा को क्या आप आवश्यक समझते हैं—इसके लिये आप के दल के पास क्या योजना है।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
भाद्रपद ३० शक १८९१ भाद्रपद शु० १०
[ दिनाङ्क २१ सितम्बर सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य: २५९९१ तार। "आर्यमित्र"

उपर्युक्त समस्याओं को दृष्टि-गत रखते हुये सभी राजनैतिक दल अपना-अपना दृष्टिकोण हमारे सम्मेलन में रखेंगे। इसके अतिरिक्त भी जिन ज्वलंत समस्याओं पर विचार किया जाना चाहिये वे आप हमें निम्न पते पर लिख कर भेजें। इसके अतिरिक्त सभी आर्यसमाजों के मन्त्री महोदयों से नम्र निवेदन है कि वे भी हमें उन व्यक्तियों के नाम व पते लिखकर भेजें जो सभी समस्याओं पर हमें एक आदर्श वैदिक आचार संहिता बनाने में सहायता दे सके।

याद रखिये, यह आपका अपना सम्मेलन है, सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को एक साथ सुनने व उन्हें अपनी वैदिक विचार धारा से अवगत कराने का यह अपूर्व अवसर है।

पत्र व्यवहार का पता :—वेदमन्दिर, ९९, बजरिया मोतीलाल, बरेली (BAREILLY) (उत्तर प्रदेश)

## श्री डा० सत्य प्रकाश जी दक्षिणी अफ्रीका में

आर्य समाज प्रीटर्स मारिट्ज-बर्ग की रजत जयन्ती पर दक्षिणी अफ्रीका में वैदिक धर्म प्रचारार्थ श्री डा० सत्य प्रकाश जी विशेष रूप से आमन्त्रित किये गये हैं। ५ अगस्त को हवाई जहाज के द्वारा उन्होंने प्रस्थान किया। उसी दिन मारीशस द्वीप मे उनका आर्यों द्वारा स्वागत किया गया। वे मारीशस के गवर्नर से मिले और उन्होंने टेलीविजन पर अपना एक व्याख्यान अंग्रेजी में दिया।

वहाँ से वायुयान द्वारा वे डर्बन पहुँचे और आर्य समाज पीटर मारिट्जबर्ग की रजत जयन्ती पर भाषण दिये हैं। यहाँ पर उन्होंने अंग्रेजी में १५ व्याख्यान दिये। उनके अभी तीन मास विभिन्न स्थानों मे व्याख्यान होंगे।

वे एक प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक हैं, और गत वर्ष प्रयाग विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के अध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। इसके साथ साथ प्राचीन धार्मिक साहित्य पर उनका विशद अध्ययन है। उनके जाने से अफ्रीका मे पुन: धार्मिक प्रवृत्ति का जागरण होगा।

—विश्व प्रकाश, कला प्रेस, प्रयाग









स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.केलिये भ.दी. आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग लखनऊसे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

'फ़ोन' वेम | लखनऊ—रविवार आश्विन ६ सं॰ १८९१ ५ कृ ३ सं॰ २०२६ वि॰ २८ सितम्बर १९६९ | ...



परमेश्वर की अमृतवाणी—

# हे कानों वाले ! मेरी पुकार सुन

ओ३म् । आश्रुत्कर्ण श्रुधी हव नू चिद् दधिष्व मे गिर ।
इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम । ऋ॰ १-१०-९

हे (आश्रुत्कर्ण) सब ओर से सुनने की शक्ति से सम्पन्न कानो वाले ! (मे) मेरे (हवम) उपदेश पुकार, ललकार को (श्रुधी) सुन । (नू+चित) निश्चयपूर्वक (मे) मेरी इन (गिर) वेद वाणियो को (दधिष्व) धारण कर, मत भुला। हे (इन्द्र) ज्ञान सम्पन्न जीव ! अज्ञान-नाश का अभिलाषिन् (इमम) इस (मम) मेरे (स्तोमम) परम ज्ञानोपदेश को (युज) समाधि के द्वारा, सावधानता से, चित्त की एकाग्रता से (अन्तरम) अपने भीतर (कृष्व) कर ।

संसार मे आकर जीव प्रमादी बन जाता है । भगवान को भुला देता है । संसार के मोहक पदार्थो मे फंस कर अपने आपको भुला देता है, और नाना कष्ट पाता है । वह संसार के विषयो मे ऐसा लिप्त होता है कि अपने अन्दर उठती हुई भगवान की वारणा-वारक-ध्वनि को भी नहीं सुनता, अथवा सुनी को अनसुनी कर देता है । तब मानो भगवान उसे सावधान करते हुए कहते है—

आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवम—हे सब ओर सुनने मे समर्थ कानो वाले मेरी बात सुन ।

भगवान की रचना विचित्र देखिये । आंख तो सामने के पदार्थ को देख सकती है, कान सब दिशाओ के शब्दो को सुन सकते हैं, इसी वास्ते भगवान् ने जीव को आश्रुत्कर्ण = और सुनने मे समर्थ कानो वाला कहा है । प्रभु कहते है, मेरी बात सुन । केवल सुनही नहीं अपितु 'नूचिद् दधिष्व मे गिर = इसके साथ मेरे शब्दो को धारण कर, मत भुला ।

धारण का अर्थ है, आचरण मे लाना । आचरण मे लाने से पूर्व मनन करना होता है । अर्थात श्रुति वचनो का श्रवण, मनन करो । किसी ने कहा भी है ।

श्रोतव्य श्रुति वाक्येभ्योमन्तव्यश्चोपपत्तिभि ।
मत्वा वै सतत ध्येय एते दर्शन हेतव ।।

श्रुति वाक्यो के द्वारा तत्त्व का श्रवण करना चाहिये, और युक्तियो के द्वारा तर्क के द्वारा मनन करना चाहिये । मनन के बाद निरन्तर ध्यान करना चाहिये । दर्शन के साधन हैं ।

भगवान स्वय धारण का उपाय बतलाते हैं—
इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिद् तरम ।

हे अज्ञान नाशक के इच्छुक ! मेरे इस उपदेश को योग समाधि द्वारा अन्दर कर, आत्मसात् कर !

स्पष्ट ही योग—समाधि का उपदेश भगवान कर रहे है । अन्दर करने का अभिप्राय है अपने ज्ञान का प्रधान अङ्ग बनाना । अर्थात भगवान् का यह कल्याण साधक, अमंगल घातक तत्त्व उपदेश केवल बात चीत का विषय ही न रहे । किन्तु जीवन मे ओत प्रोत और अनुस्यूत हो जाय । इस मन्त्र म साथ ही वेद का यथार्थ तात्पर्य हस्तामलक करने के लिए योग समाधि के अनुष्ठान का संकेत भी कर दिया गया है । इतने गहन तत्व, जीव के उपयोगी सभी ज्ञान तत्व जिसमे उपदिष्ट हैं उसको स्वायत्त करना समाधि भावना बिना कैसे सम्भव है ?

वेद मनुष्य जीवन का अन्तिम और वास्तविक लक्ष्य प्राप्त करने का साधन अनेक प्रकार से और बार बार बताने मे क्षुण्ण नही होता । जिस प्रकार माता सन्तान के कल्याण की बात बार बार कहती नही थकती, इसलिए वेद को वेद माता कहा जाता है ।

वर्ष ७१ | अंक ३५

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए

इस अंक में पढ़िए !

# अघमर्षण मन्त्रों से पापों का निवारण

[ श्री जियालाल आर्य कुलश्रेष्ठ, झांसी ]

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चा
भीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्य जायत ततः
समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥
समुद्रा दर्णवादधि सम्व-
त्सरो अजायत ।
अहो रात्राणि विदधद्वि-
श्वस्य मिषतो वशी ॥२॥
सूर्या चन्द्रमसौ धाता
यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्त-
रिक्षमथो स्वः ॥ ३ ॥
ऋ० मण्ड० १० । सू० १९० ।
म० १, २, ३ ॥

उपरोक्त अघमर्षण मंत्रो से पापो का निवारण अथवा विनाश किस प्रकार सम्भव है, यह एक अत्यंत विचारणीय एव गम्भीर विषय है, जब कि उन मन्त्रों में केवल सृष्टि उत्पत्ति एवं प्रलय की व्याख्या है जिसका पापो से बचने का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं। अस्तु इस व्याख्या का ध्यान पूर्वक मनन करना आवश्यक है।

अघमर्षण मन्त्रों की व्याख्या करने से पूर्व मैं इस सम्बन्ध में एक छोटा, सा उदाहरण दे देना उचित समझता हू जो मेरे विचार से इन मन्त्रो में निहित भाव को समझाने में सहायक होगा। विचार कीजिये, एक साधारण व्यक्ति है जिसका एक छोटा परिवार भी है। उस व्यक्ति का ज्ञान सीमित है, और उसके पास अपनी जीविका अर्जन करने का कोई साधन भी उपलब्ध नहीं है। उसकी अति दीन दशा से द्रवित हो कर एक उच्च पदस्थ राजकीय अधीक्षक उसे अपने घर पर सेवा कार्य हेतु रख लेता है और उसके लिये सभी प्रकार का उचित प्रबन्ध जैसे मकान, खाना, पानी, कपडे, बिजली, चारपाई, वर्तन इत्यादि का कर देता है। वह व्यक्ति अपना सेवा कार्य आरम्भ कर देता है। कुछ समय के पश्चात् ही अन्य पास के दूषित वातावरण से प्रभावित हो कर उसमें कुछ अवगुण जैसे बीड़ी पीना, शराब पीना, जुआ खेलना इत्यादि प्रवेश कर जाते है। परन्तु वह यह सब सामान्यतः अपने मालिक से छिपा कर ही करता है। क्या मालिक की उपस्थिति मे, जिसने उसे दया कर जीविका दी, उसके सुख के सभी साधन प्रस्तुत कर दिये और जिसकी अप्रसन्नता से उसकी नौकरी भी जा सकती है और सभी सुख-सुविधाओं का अन्त हो सकता है, वह कोई अक्षम्य अपराध अथवा इस प्रकार का पाप करने का साहस कर सकता है? मेरे विचार से कदापि नहीं, और आप सब भी मेरे विचार से सह-मत होंगे। उस मालिक के पास एक अन्य सेवक है जो गुप्तचर का भी कार्य करता है और उस व्यक्ति के अवगुणो की भी यथा सम्भव देख भाल करता रहता है। यदि कभी उस व्यक्ति को यह पता लग जाय कि उसके मालिक के पास एक ऐसा स्वामीभक्त सेवक भी है जो उसके कार्यों की देखभाल भी करता रहता है तो वह उस डर से उन अवगुणो को छोड़ देने का यथा शीघ्र प्रयास अवश्य करेगा और भविष्य में उन दोषो से भी मुक्त हो जायगा, क्योंकि ऐसा न करने से उस का तथा उसके परिवार का जीवन सकट मे निसदेह पड सकता है।

इसी प्रकार यदि हम निश्चित रूप से जान लें कि हम सब के स्वामी परमात्मा ने इस ससार को रचकर हमारे लिये दया कर क्या-क्या उपकार किये है, हमे कितनी सुविधायें प्रदान की है, जिनके अभाव मे हमारे जीवन का कोई अस्तित्व ही सम्भव नहीं, और यह कि वह हमारे सभी कर्मों को सदैव देखता और हमारे मन के भावों को भी जानता है और उन सबका फल अर्थात् दुष्कर्मों का दुःख और सुकर्मों का सुख अवश्यमेव देता है तो हम कभी कोई दुष्कर्म एवं पाप करने का साहस ही न करेंगे। इस प्रकार हमारे भावी पापों का नाश निश्चित रूप से सम्भव हो सकता है जो इन अघमर्षण मन्त्रों का उद्देश्य है। अब मैं इन मन्त्रों का अर्थ, भाव और उनमे तिरोहित पापो का नाश अथवा निवारण करने की क्षमता समझाने का प्रयास करूंगा।

अघमर्षण का शाब्दिक अर्थ पाप नाशक है, परन्तु उसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि उन मन्त्रों के जाप से हमारे किये हुए पापों का भी विनाश सम्भव हो सकता है, क्योंकि कोई सी शक्ति, परमात्मा के विधान के प्रतिकूल, किये हुए पापो का नाश नहीं कर सकती। उनका फल दुःख तो पाप करने वालो को किसी न किसी रूप में कभी न कभी अवश्यमेव भोगना ही पड़ता है जैसा कि मनुस्मृति मे कहा गया है :—

"अवश्यमेव भोक्तव्य
कृत कर्म शुभाशुभम्"

अर्थात् किये हुए शुभ तथा अशुभ कर्मो का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है, उससे छुटकारा किसी प्रकार सम्भव नहीं। हां, उन मंत्रो के निरन्तर चिंतन तथा मनन से भविष्य मे पापों का नाश अवश्य सम्भव हो सकता है। इसी हेतु उन मंत्रों को अघमर्षण की संज्ञा दी गई है, क्योंकि अततो-गत्वा उन मन्त्रों के यथार्थ जाप एवं चिंतन से पापो का नाश होता ही है भूतकाल के नहीं तो वर्तमान और भविष्य के सम्भव पाप। बाल्मीकि रामायण, अरण्य कांड ६३/४ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम जिन्होने कोई पाप कर्म अपने वर्त-मान जीवन मे नहीं किया था-स्वय कहते है :—

पूर्वं मया नूनम् भीप्सितानि,
पापानि कर्माण्य सकृत कृतानि ।
तत्राय मद्या पतितो विपाको,
दुःखेन दुःख यदह विशामि ॥

अर्थात् मैंने निश्चय से पूर्व जन्म अथवा जन्मों में कई बार अनेक पाप कर्म किये थे, उन का फल मुझे दुःखो के रूप में भोगना पड़ रहा है। महर्षि दयानद को भी जिन्होंने जीवन भर परोपकार, सदोपदेश, सत्यय, प्रदर्शन, एव अनेकों समाज सुधार के कार्य किये और जो कभी न्याय और सत्य के पथ से विचलित नहीं हुए, अपने किसी पाप कर्म अथवा कर्मों का फल दुःख जो उन्होंने कर्म किसी पूर्व जन्म अथवा जन्मो मे किये होंगे, जीवनांत से पूर्व भोगना ही पड़ा, यद्यपि साधारण मनुष्य की बुद्धि के अनुसार ऐसे पुरुषोत्तम एव महात्मा परोपकारी सत्पुरुषो की भूल अथवा पाप जो किसी पूर्व जन्म मे किया गया था, इस जन्म मे जब कि उनकी पाप करने की प्रवृति ही नष्ट हो चुकी थी, क्षम्य हो सकता था परन्तु पर-मात्मा का न्याय अमिट है, उसे कोई नहीं टाल सकता। अस्तु अघमर्षण मन्त्रों का अर्थ सर्व पाप नाशक समझ लेना सर्वथा भूल होगी।

अब मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार उन मन्त्रों के अर्थ की व्याख्या करने का प्रयत्न करूंगा। परमात्मा ने अपने अनेक ज्ञान एवं अतुलित सामर्थ्य से वेदो को जो ईश्वरीय ज्ञान हैं प्रकाशित किया जैसे कि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित था, और प्रकृति को भी जो जग दोत्पत्ति से पूर्व विकृत एव कारण रूप मे थी, पुनः कार्यरूप मे प्रकट किया। [क्रमशः]

लखनऊ रविवार २८ सितम्बर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## आर्य समाज का वैधानिक संकट

×

आर्य समाज का आदर्श है, ससार का उपकार करना। आयुर्वेद का सूत है। शरीर माद्यखलुधर्म साधनम् अर्थात् शरीर ही धर्म का मूल साधन है। अगर शरीर ही विकृत हो जाय या नष्ट हो जाय तब वह दूसरो का क्या उपकार करेगा। और यदि कुछ करना भी चाहेगा तो इसकी अस्वस्थता बाधक बनेगी।

आज आर्य समाज के सम्मुख अस्तित्व का सकट है। एक लम्बे समय से सत्ता लोलुपता का जो प्रपञ्च बढ रहा था, उसका प्रभाव सगठन को नष्ट करने में आज स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा को अधिकार मे रखने के लिये पूर्वाधिकारियों ने जिन अप्रजातान्त्रिक एव अवैधानिक उपायो का अवलम्बन किया और आज भी वे अपने छल-छद्म द्वारा आर्य जनता को गुमराह करने मे लगे हैं, उससे जनता को सावधान रहना चाहिये।

एक विज्ञापन द्वारा घोषणा की गयी है कि तीन आदमियो की एक निर्णायक समिति गठित की गयी है। जिन लोगो ने यह समिति गठित की है, उन्होने एक सच्चाई स्वीकार कर ली है कि पूर्व गठित न्याय सभा के निर्णय विवादास्पद हैं और अब यह समिति विवादों का निर्णय करेगी।

ससार के सभी सभ्यपुरुष यह मानते हैं कि निर्णायक वे ही व्यक्ति हो सकते हैं जो विवाद से सम्बद्ध न हो परन्तु तीन आदमियों की समिति मे श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज तो स्वय प्रार्थी हैं। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध मे आप ने अपने हस्ताक्षरो से विवाद प्रस्तुत किया था, जिसका विस्तार ही वर्तमान विवाद है। प्रार्थी ही स्वय निर्णायक बन जाय तब न्याय का प्रश्न ही कहा रहेगा।

इसी प्रकार एक सदस्य ऐसे महापुरुष हैं जिन के लिये विगत १४ वर्ष मे आर्य समाज की वेदी बन्द थी क्योकि उन्होने आर्यसमाज आर्य सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द की मान्यताओ के विरुद्ध लिखा और प्रवचन किये थे। उनके सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन मे प्रतिबन्ध की सम्पुष्टि करा दी गयी। परन्तु आज उन्हीं श्री विदेह जी को बिना किसी वैधानिक पद्धति से स्पष्टीकरण प्राप्त किये ही और आर्यसमाजोदय लेखमाला मे आर्य समाज के प्रति अनर्गल प्रलाप को सार्वजनिक रूप से वापस लेने और भूल मानकर क्षमा मागने की घोषणा कराने के बिना ही उनके स्वागत के लिये अभय दान देने का कार्य आर्यसमाज मे पुरुष की नहीं कायम करने वाले धर्माधिकारी नामधारी व्यक्तियो के परामर्श को आप्त वाक्य मानकर कर दिया गया, प्रचारित किया जा रहा है।

तीसरे महात्मा श्री आनन्द-भिक्षु जी ने इस समिति की सदस्यता अस्वीकार कर दी है अतः उनके सम्बन्ध मे आपत्ति का कोई प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। अत हमे आर्य जनता की ओर से उन स्वयम्भू नेताओ से पूछना हैं कि उन्होने आर्य जगत् के निर्णय का दायित्व ऐसे विवादास्पद व्यक्तियो को सौंपने का साहस कैसे किया है।

क्या श्री विदेह जी अब महर्षि दयानन्द की जय और आर्य समाज की जय मे साम्प्रदायिकता की गन्ध नहीं पाते? क्या अब उन्हें ओ३म् के ध्वज में साकार शक्ति नहीं दिखायी देती? इसी प्रकार क्या अब वे महर्षि के ऋषित्व पर श्रद्धा व्यक्त करने लगे हैं, और आर्य समाज के नियमो के सशोधन का दुराग्रह उन्होने छोड दिया है।

इसके साथ ही क्या उन्होंने आर्य जगत् की आर्य प्रतिनिधि सभाओ, सगठनो और आर्य नेताओ का जो उपहास अपनी लेख माला मे किया था उसके लिये पश्चात्ताप कर चुके है या आर्य समाज सगठन एव नेतृत्व के विवादमे मध्यस्थ बनकर वे अपनी मान्यताओ को सत्य सिद्ध कर दिखाना चाहते हैं, अर्थात् उनका निर्णायक के रूप मे मनोनयन श्री रामगोपाल श्री ओमप्रकाश त्यागी और श्री प्रताप भाई यह स्वीकार करना चाहते है कि उनकी श्री विदेह जी से जो आलोचनाएं थी वे यथार्थ थी।

आर्य समाज श्री विदेह जी को निर्णायक का महान् पद देना कभी स्वीकार न करेगा और जो विवाद मे स्वय प्रार्थी हो उसे निर्णायक का पद स्वीकार नहीं करना चाहिये। न्याय का यही आदर्श है। इस लिये हम श्री स्वामी रामेश्वरानन्दजी से निवेदन करेगे कि वे सगठन के सकट मे निर्णायकबन सकट को और अधिक बढ़ाने की जिम्मेदारी न उठायें।

हा, जहा तक आर्य जनता की भावनाओ के अनुरूप श्री महात्मा आनन्द भिक्षुजी महाराज का प्रश्न है, उन्हे आर्य जगत् के सभी वर्गो ने स्वीकार किया है। ३१ अगस्त की आर्यसमाज अनारकली दिल्ली की बैठक का जो विवरण हमरे सामने है उसमे चार-पाच उन व्यक्तियो के जिन्होंने श्री विदेहजी वाली तीन व्यक्तियों की निर्णायक समिति बनाने का प्रचार किया है उनको छोडकर अन्य आर्य समाजो के प्रधानो और मन्त्रियों और सभी विवादक पक्षो के प्रतिनिधियो ने श्री आनन्दभिक्षु जी को स्वीकार कर सर्वाधिकार देने की घोषणा की है। हम उनके प्रयत्नो की सराहना करते है और हमे आशा है श्री आनन्दभिक्षु जी आर्य समाज को सकट से पार उतारने मे सफल होंगे।

×

# गांधी जन्म शताब्दी

दो अक्तूबर को विश्ववन्द्य महात्मा गाधी की जन्म शताब्दी सारे ससार मे मनायी जायगी। इस अवसर पर गाधी के नाम के नये सिक्के चलाये जावेगे। केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारो ने इसके लिये पूरी तैयारियां कर ली है। १ अक्तूबर को सरहद्दी गाधी श्री अब्दुल गफ्फार खा भी भारत आ रहे है।

## समस्त निरीक्षक महानुभावो की सेवा मे

सर्व निरीक्षक महोदयो की सेवा मे विनम्र निवेदन है कि निरीक्षक नियुक्त किये हुये लगभग तीन मास हो गये। किन्तु श्री निरीक्षक महानुभावो को छोड कर किसी ने भी निरीक्षण कार्य प्रारम्भ नहीं किया। सभा की इच्छा है कि यह कार्य दिसम्बर १९६९ के अन्त तक समाप्त हो जाना चाहिये। अत. जिन-जिन निरीक्षक महोदयो ने अभी तक किन्हीं कारणवश कार्यारम्भ न किया हो, उन्हें चाहिये कि यथाशीघ्र आरम्भ कर दें। सभा का प्राप्तव्य धन जो भी प्राप्त हुआ हो, अथवा प्राप्त करे वह फार्मो को भेजते समय सभा कार्यालय को भेजकर कृतार्थ करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०ए०
सभा मन्त्री

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये विद्वान् संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी आर्य गुरुकुल एटा का आशीर्वाद !

आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (उ० प्र०)
ता० २६-८ १९६९

श्रीमान् प० ब्रह्मकुल भूषण व्यास चतुर्वेदी विश्वश्रवा जी शर्मा महाराज नमस्ते ।

आप ने जो शास्त्रार्थ शताब्दी की योजना की है और इसमे जो विस्तार से लिखा है, भगवान् आप के कार्य को सफल बनाये। सो दरवाजे की यज्ञशाला का निर्माण करने को लिखा है यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। मै भी यज्ञो का बहुत विस्तारवादी हू। आशा है यथोक्त यज्ञशाला अवश्य निर्माण कर लेंगे। मेरे विचार से यज्ञशाला ऐसी होनी चाहिये जो काशी में अपूर्व हो।

जो आप ने साख्य वेदान्त बोलने के विषय लिखे हैं, इन पर घटो बोला जा सकता है। देवता स्वरूप भाई प्रतापसिहजी से जैसे मैं कह सकता हूं वैसेआप भी कह सकते हैं।आप स्वयं यजमान बननेके लिये उनसे कहिये।

आप के शताब्दी के सारे आयोजनो से मै सहमत हू।

ब्रह्मानन्ददण्डी

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह पर एक अति विशाल यज्ञ काशी में होगा,उस में अनेक राजा लोग यजमान बनने के लिये निमन्त्रित किये है, वहा श्री सेठ प्रताप सिंह शूरजीवल्लभ दास बम्बई को सर्वप्रथम आचार्य विश्वश्रवा जी ने शताब्दी समिति की ओर से यजमान बनने को जौलाई में ही लिखा था। पर अभी तक प्रताप भाई का उत्तर प्राप्त नहीं हुआ, अतः आचार्य विश्वश्रवा जो प्रचार मन्त्री शताब्दी समिति ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी महाराज को लिखा कि आप श्री प्रताप भाई जी से यजमान बनने के लिये अनुरोध करें। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी का श्री प्रताप भाई जी से घनिष्ट सम्बन्ध भी है। उस पत्र तथा शताब्दी परिषदों के निमन्त्रण के उत्तर में स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी का यह आशीर्वादात्मक पत्र है। —सपादक

## वेद प्रचार सप्ताह की विज्ञप्ति और आर्यसमाजों का कर्त्तव्य

प्रदेशीय आर्य समाजों को विदित हो कि वेद प्रचार सप्ताह ४ सितम्बर को निर्विघ्न समाप्त हो गया। सप्ताह मे १)प्रति सभासद के हिसाब से सग्रह किया गया है। यदि न किया हो तो अब करने की कृपा करें, और सग्रहीत धन सभा कार्यालय मे वेद प्रचारार्थ भेजने की कृपा करे। यह धन समाजो को अपने पास नहीं रखना चाहिये। उक्त धन धन्यवाद सहित प्राप्त किया जायगा। आशा है समाजे शीघ्रता करेगे। —मन्त्री

## डा०भवानीलाल भारतीय का पता

अब मै स्थानान्तरित होकर गवर्नमेंट कालेज अजमेर के हिन्दी विभाग मे आ गया हू। अत. मुझ से पत्र-व्यवहार, द्वारा-दयानन्द आश्रम, अजमेर के पते पर किया जावे। धन्यवाद !

—भवानीलाल भारतीय

## श्री पंडित सत्यव्रत जी वेदालकार का दुःखद अवसान

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान्, वक्ता, प्रचारक, सामाजिक कार्यकर्ता एव आर्यसमाज लुणसावाडा अहमदाबाद के प्रमुख तथा सी एन विद्यालय, अहमदाबाद के सस्कृत व हिन्दी के शिक्षक और गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरद्वार के स्नातक श्री पण्डित सत्यव्रत जी वेदालंकार का दु.खद अवसान ता० ४-९ ६९ के दिन (जुनागढ़-सौराष्ट्र मे) जन्माष्टमी के दिन हो गया। दिवगत काफी मिलनसार एव आर्यसमाज के नम्र सेवक थे। प्रचारक और प्रवक्ता भी थे। वे अपने पीछे पत्नी व पुत्र-प्रत्यादी का विस्तृत परिवार छोड़ गये हैं। प्रभु उनकी आत्मा को शांति व सद्गति दे तथा उनके परिवार पर आई इस आघात जनक आपत्ति परिस्थिति मे शान्ति प्रदान करे। —मन्त्री

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल..ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास मे किये हैं। उसी भाँति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी मे १६ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाने की घोषणा अभी से की जाती है। जिसमे विदेश के आर्य भाई भी इसमें भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर सकें। इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत में शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार सहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध-पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष मे दस आर्य प्रतिनिधि सभाए हैं,प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि संग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज मे पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करें। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यो को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य मे जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से ससार में शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः श्री व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से है, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हें समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यों मे करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुचना कठिन है। अतः आर्य भाइयो को इसके लिये शीघ्र नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन क्रास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप में भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बेंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जारहे हैं। निवेदक:—

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री एम.पी. प्रधान | प्रकाशवीर शास्त्री एम.पी. प्रधान |
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.ए. मन्त्री | महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम ए. संयोजक |
| मदनलाल कोषाध्यक्ष | आचार्य विश्वश्रवाः वेदाचार्य प्रचार मन्त्री |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति |

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# मूर्ति पूजा और काशी शास्त्रार्थ शताब्दी व पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी

इन दोनों शताब्दी समारोहों का रचनात्मक प्रभावोत्पादक रूप मनोविज्ञान की दृष्टि से क्या होना चाहिये ? ये एक विचारणीय प्रश्न है। रूप से पहले स्थान और समय के सम्बन्ध में विचार आवश्यक है। स्थान काशी उपयुक्त है। जहाँ शास्त्रार्थ हुआ था। पाखण्ड खण्डिनी पताका ऋषिकेश मे, हरिद्वार मे फहरायी गई थी। इस शताब्दी का मनाना कई वर्ष पूर्व निश्चय हुआ। ये अभी तक नहीं मनाई जा सकी। अब काशी में शास्त्रार्थ शताब्दी के साथ-साथ इसको मनाना उचित होगा। दो बार शताब्दियां मनाना सुविधाजनक नहीं हो सकता और न धन ही उपलब्ध हो सकता है। हरद्वार के समान काशी भी तीर्थ स्थान है। मूर्ति पूजा भी एक महान् पाखण्ड है। दोनों शताब्दियां आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को मनानी हैं, और दोनो को साथ-साथ मनाना हर दृष्टि से उपयुक्त है। शिवरात्रि से मूर्तिपूजा खण्डन का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। इस अवसर पर. दयानन्द सप्ताह मनाया जाता है। ये समारोह भी काशी मे एक सप्ताह तक चलें और शिवरात्रि के दिन सारे देश मे शताब्दी दिवस मनाया जाय।

इसका स्वरूप भी बडा गम्भीर और रचनात्मक होना चाहिये। जिससे मनोवैज्ञानिक आधार पर महर्षि की विचारधारा का विस्तार हो सके।

महर्षि दयानन्द ने सबसे अधिक बल आस्तिकता के प्रचार पर दिया है, उन्होंने ईश्वर के नाम काम और धाम पर प्रकाश डालते हुये ओ३म् मुख्य नाम' रचना और न्याय, मुख्य कार्य और सर्वव्यापक और अन्तर्यामी ईश्वर को बताया है।

पाखण्ड खण्डिनी पताका भी 'ओ३म्' की पताका के साथ—२ फहराई गई थी। पताका भी परलोक सम्बन्धी पाखण्ड और लोक सम्बन्धी पाखण्ड के निराकरण के लिये प्रतीक थी। आजकल सस्ती मुक्ति परलोक सम्बन्धी पाखण्ड से सम्बन्धित है और निरकुंश शक्ति और झटके की सम्पत्ति लोक सम्बन्धित पाखण्डो का रूप है। इन दोनों प्रकारो के पाखण्डो का निराकरण ईश्वर के वास्तविक वैदिक स्वरूप के चिन्तन और मनन से हो सकता है। मुक्ति बिना शुभ कर्मों के नहीं हो सकती। ईश्वर न्याय कारी है, उसका न्याय अटल है, उसको मान कर ही पापों से बचा जा सकता है। पाप और अपराध करने वाला यह समझ लेता है कि मेरा पाप या तो छिपा रहेगा या मैं उसके प्रभाव से किसी तरकीब से बच जाऊंगा। बच कर और छिप कर भावनायें पाप का मूल है। ईश्वर को व्यापक और न्याय कारी मानने से इनका निराकरण हो जाता है।

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध मे भी ईश्वर का ठीक रूप न समझने के कारण मूर्तिपूजा को बल मिल रहा है। ईश्वर निराकार है, साकार नहीं। उसकी कोई मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर सर्व व्यापक है, उसको किसी स्थान विशेष, समय विशेष या रूप विशेष से सम्बन्धित नहीं समझा जा सकता। ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं। मूर्ति पूजा ईश्वर पूजा का रूप नहीं हो सकता। मूर्ति को पूजने से पाप भी क्षमा नहीं हो सकते। और मूर्ति पूजा का निराकरण भी ईश्वर के स्वरूप को ठीक-ठीक समझ लेने से ही हो सकता है। ऐसी दशा में दोनों शताब्दी समारोहों का रचनात्मक रूप एक विराट आस्तिकता सम्मेलन होना

श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट

चाहिये। जिसमे नास्तिकों के लिये भी ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने का यत्न हो और आस्तिको मे भी ईश्वर के सही वैदिक स्वरूप का प्रचार हो। इससे इन समारोहो का रूप रचनात्मक और आकर्षक होगा। और मूर्तिपूजा का अवैदिक स्वरूप भी प्रकट हो जायेगा। आस्तिकता के प्रचार मे ईश्वर के दर्शन, ईश्वर की पूजा की विधि, ईश्वर प्राप्ति, योग की विधि सब पर विचार होगा और यह बात भी स्पष्ट हो जायेगी कि मूर्ति पूजा ईश्वर की पूजा नहीं है,और ईश्वर के ध्यान करने मे भी मूर्ति पूजा सहायक नहीं बाधक ही हो सकती है। महर्षि के शब्दो मे 'मूर्ति पूजा सीढ़ी नहीं खाई सिद्ध होगी।'

उपरोक्त कथन को लक्ष्य मे रखकर इस समारोह का शीर्षक होना चाहिये 'एक विराट आस्तिक सम्मेलन' और जो पोस्टर या विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हो उनमें शीर्षक हो 'एक विराट आस्तिकता सम्मेलन।'

काशी मूर्तिपूजा शास्त्रार्थ
शताब्दी समारोह

पाखण्ड खण्डिनी पताका
शताब्दी समारोह

इस प्रकार के शीर्षकों से मण्डन के रूप मे खण्डन का असली स्वरूप सामने आ जायेगा, और महर्षि की प्रचार व्यवस्था का न केवल देशव्यापी परन्तु विश्वव्यापी रूप भी ससार के सम्मुख आ जायेगा।

आर्य समाज के पहले नियम मे महर्षि ने ईश्वर को सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल बताया है। यही आस्तिकता सम्मेलन का भौतिक रूप होगा और ये ही महर्षि के प्रचार की आधार शिला माना जायेगा। खण्डन और मण्डन मे सुन्दर समन्वय हो जायेगा। इन समारोहो मे जितने सम्मेलन हो वह आस्तिकता के भिन्न भिन्न रूपो के सम्बन्ध में हो। जो साहित्य प्रकाशित हो और जो मण्डप आदि बनाये जाये उनमें ओ३म् की पताकायें और पाखण्ड खण्डिनी पताकायें लगाई जायें। कुछ कागज की हो कुछ कपड़े की। ध्वज के रूप मे बनाई जायें।

श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट,
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा दिल्ली

—आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर मे श्री देवीदास जी आर्य के प्रयत्न से प्रख्यात ईसाई पादरी (मिश्नरी) श्री एलफरेड डाइनियल को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया है। —मन्त्री

# काव्य कानन

## जागो जवान !

दयानन्द के ये युग आया–
जागो मानव, जागो जवान !

मन्द-भावना दुखद विशेषण, दुराचार तजदे-दुर्वेष !
छुआछूत, छल-छिद्र कृत्रिमता, वैमनस्य, मृषायें क्लेश ।
पद-लिप्सा, लोकेषण त्यागे, स्वार्थ तज करना उपकार ।
निज परिवार समझ विश्व को, वेद-विधान चले अनुसार ।।
बढ़ा परस्पर नव सद् स्नेह को, मानवता का कर सम्मान ।

दयानन्द के ये युग आया–
जागो-मानव, जागो जवान ।।१

घोर अविद्या, निन्द्रा में थे, सोते बीते समय अनन्त !
बढ़ती गई दुखद तम तन्द्रा, न आया था जिसका अन्त !!
आभा ले उन्नति की आयी, उषा अविरल ले प्रभात !
अमृत-वेला परम सुहावन, वेद वचन चलता प्रिय वात !!
जगा रहे जमके जन-जन को, करके वैदिक नाद सुजान !

दयानन्द के ये युग आया–
जागो-मानव, जागो जवान ।।२

आर्यवर्त्त देश पर छाये, छुआछूत का आवर्ण एक ।
सूझ न पाते हैं मानव को, आदर्श सुखद-सुपथ शुचि नेक !!
भ्रमित रहे लोग भव-बन्धन, भुला दिया सबको पन्थ वाद ।
आया अब सुप्रकाश बढ़ाता, उठ खड़ा हो तज के प्रमाद !
देख तुम्हारे आर्यवर्त्त मे, कितने हो गये वैभव ह्रास ।

दयानन्द के ये युग आया–
जागो मानव, जागो जवान ! ।।३।।

पुराण पन्थिया पेट पट्टू ता, दम्भ-द्वेष के थे छलमार ।
वेद विमुख जो रहे रहाये, बढ़ता चलता असत् व्यवहार !!
आज बदौलत जिसकी है ये, भारत हो गये जबसे दीन !
पाश्चात्य शासन हो आया, तब से आर्य देशाधीन !!
गरिमा निज भूले भारत की, बिसर गये हैं गौरव-ज्ञान !

दयानन्द के ये युग आया–
जागो मानव जागो जवान !!४

राही बन सद् पथ के मानव, उठ खड़ा हो सबल सचेत !
करके नाद जवान बढ़ें सब, लेकर झंडा विशद सुहेत !!
'सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा' धार चले कहे वेद पुकार !
भिन्न-भिन्न भावों को तजकर, वैदिक पथ चले नर-नार ।।
'धनसार' धार सद् वैदिक विद्या, लेकर अपना सद् अभिमान !

दयानन्द के ये युग आया—
जागो मानव जागो जवान ! ।।५।।

—कवि कस्तूरचन्द 'धनसार'

## ओङ्कार-जप-विज्ञान

यह मोह-माया ताप मय तरना जिसे ससार हो ।
बैठे प्रणव-जप नाव मे सुख से सहज मे पार हो ।।

यह ओ३म् अक्षर ईश का, शुभ नाम है, गुण-ग्राम है ।
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का, दाता है, सुख का धाम है ।।

सर्वज्ञ को, सर्वेश को, अजरामर को नरवरो !
निशि-दिन जपो, हरदम भजो, तन, मन व धन अर्पण करो ।।

ईश्वर के सम्यक् ज्ञान से, इस ओ३म्-जप-विज्ञान से ।
मिट जायेंगे सताप सब, बिनसेंगे पाप-कलाप सब ।।

प्रभु-भक्त शुभ-समुदाय का, जीवन सफल हो जायेगा ।
जप-ओ३म्-नाम-ललाम का, सुख-सम्पदा बरसायेगा ।।

तजकर अजा को ले लिया, जिसने सहारा ओ३म् का ।
जो मनसा, वाचा, कर्मणा, है भक्त प्यारा ओ३म् का ।।

वह अमर पद को पायेगा, भव-सिन्धु से तर जायेगा ।
ईश्वर-विमुख समुदाय का, जीवन विफल हो जायेगा ।।

निज रूप को पहिचान लो, निज लक्ष्य को भी जान लो ।
मोह- बन्धनों को तोड़ दो, अभियान करना छोड़ दो ।।

सुख-सम्पदा संसार की, घटने न पाये, देखना !
सम्बन्ध प्यारे ओ३म् से, कटने न पाये रे मना !!

—जगत्कुमार शास्त्री "साधु सोमतीर्थ" देहली

## बोलो क्या वरदान न दोगे ?

मेरे प्राण बताओ मुझको कब तक अलख जगाना होगा,
सदियों से जो रहा सजोये वो उभरी पहचान न दोगे ।
बोलो क्या वरदान न दोगे ?

रातों के सूनेपन मे है बिखरी चारो ओर उदासी,
ओस बिन्दु की बिछी कतारें रही कल्पना फिर भी प्यासी ।
कहने को तो झड़ी लगा दो, अरे मेघ बरसाने वाले,
बोलो क्या चातकी युगल को तड़प तड़प कर मर जाना होगा ।
स्वाति बूंद का दान न दोगे ?

तारो ने पलकें झपकाई सूनी हुई रात की महफिल,
अलसाई चन्दा की किरणें, करती थी जो झिलमिल-झिलमिल ।
भवरे की मादक गुनगुन में स्नेहिल सुरभि बसाने वाले,
बोलो तो झूठे सपनों से कब तक जी बहलाना होगा ।
क्या सुख का मेहमान न दोगे ?

आज साझ के धुंधलेपन में उलझ गए जीवन के धागे
घनी हुई विस्मृति अंधियारी आयें कहाँ अब भागे भागे
सुख दुख की किरणों को लेकर आंख मिचौनी करने वाले
आशा की बिखरी लड़ियों पर कबतक यूं पछताना होगा
क्या कुचले अरमान न दोगे ? ।।

—राजेन्द्र श्रीवास्तव, बीना

# मुक्ति के स्वरूप पर एक दृष्टि

[ श्री प० रामदयालु शास्त्री तर्क शिरोमणि, अलीगढ ]

जीवात्मा इस संसार में पुरुषार्थ के द्वारा धर्म अर्थ-काम की उपलब्धि से सांसारिक सुखों को भोग कर मोक्षको प्राप्त करे इस कारण ही परमात्मा ने जगत् की रचना की है। जीवात्मा का अन्तिम लक्ष्य परमानन्द है। कुछ लोग कहते हैं कि ज्ञान और योग के द्वारा ही जीवात्मा को उस लक्ष्य की प्राप्ति होती है, तो कुछ लोग धर्माचरण को परम सुख का साधन मानते हैं। कुछ लोगों के विचार मे सत्य-शम-दम-ये तीन ही परमानन्द के साधन हैं-तो कोई यज्ञ-व्रत-तप-को तो कोई यम-नियम की साधना को मोक्ष का मार्ग समझते हैं। कुछ लोगों के मत मे सांसारिक सुखों से निरपेक्ष होकर निश्चलभक्ति ही सुख का साधन है। कुछ लोग मानते हैं कि अजनादि से शुद्ध हुए नेत्र जैसे सूक्ष्म और दूरस्थ पदार्थों को देख लेते हैं, इसी प्रकार आवरण के हट जाने से स्वयं मे और अपने से भिन्न पदार्थों मे भी आत्म तत्व को ही देखता है। इस प्रकार-मिश्री-यूनानी इब्रानी-जरथुस्त्र आहुर्मज्द-बुद्ध-ईसा मुहम्मद-शङ्कर के मतो का अध्ययन करेगे तो जीवात्मा और मोक्ष के सम्बन्ध में किसी सन्तोषजनक परिणाम पर नही पहुच पायेंगे। वैज्ञानिको मे अधिकाश लोग तो जीव के वास्तविक अस्तित्व मे ही सन्देह करते हैं। वेद के मत मे एकत्व मनुपश्यत सर्व भूतेषुचात्मान ततोन विजिगुप्सते-यजु-४०-६ जो सब भूतो मे उसी एक आत्मा को देखता है वह एकत्व दृष्टा मोह शोक से दूर हो जाता है। गीता मे कहा है, शुनिचैव श्वपाके चपण्डिता समदर्शिन ५-१८ जैसा आत्मा का स्वरूप अपने मे हैं वैसा ही-ब्राह्मण-गौ-चाडाल- कुत्ता-हाथी मे समझ लेता है, वही तत्व ज्ञानी है। गीता को साररूप मे देखना चाहें तो ज्ञान-कर्म-निष्काम भक्ति (उपासना) के द्वारा ही जीवात्मा परमानन्द को प्राप्त करता है। निराशा और दुःख बुद्धि के साथ कर्मों के फल से विरक्त होने वाले लोगों को ज्ञान योग-जिन के चित्त मे कर्मों से विराग नहीं हुआ उनको कर्मयोग- जो न कर्मों मे आसक्त और न विरक्त हैं, उन्हें भक्ति-योगसिद्धि देनेवाला है। गीता के ३ से ६ अध्यायों में अनासक्त भाव से नियत कर्म की श्रेष्ठता और काम्य कर्म की श्रेष्ठता बताते हुए निष्कामकर्म की महत्ता बताई है, अनाश्रितः कर्मफलकार्यं कर्म करोति यः ससन्यासी चयोगी चन निरग्निर्नचा क्रियाः ६-१-कर्मफल की इच्छा न करके अपना कर्त्तव्य समझ कर कर्म करते हैं वे ही सच्चे योगी हैं अग्नि होत्र-आदि नियत कर्मों को छोड़ देने वाले योगी नहीं कहलाते। महर्षि-दयानन्द जी का विचार है कि ज्ञान-कर्म-दोनों एक साथ ही मोक्ष के साधन हैं। भक्ति कर्म से भिन्न कोई तीसरी वस्तु नहीं है। कर्म की स्थिति का नाम भक्ति हैं।

## निष्कामकर्म

गीता मे निष्काम कर्म का सार यह है कि—विहित कर्म का उल्लघन और निषिद्ध का आचरण करने से मनुष्य गिर जाता है—तथा विहित का ग्रहण और निषिद्ध का त्याग करके विशुद्ध ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। उपनिषदो मे इसे ही देवयान मार्ग कहा है। महर्षिदयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास मे निष्काम कर्म से मोक्ष प्राप्ति का बड़ा ही विशद वर्णन किया हैं—

"परमेश्वर की आज्ञापालन करना -अधर्म-अविद्या-कुसंग-कुसंस्कार-बुरेव्यसनों से अलग रहना-सत्यभाषण परोपकार-विद्या-और पक्षपात रहित न्याय धर्म की वृद्धि-करना परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना उपासना-विद्या पढ़ने पढ़ाने-धर्म से पुरुषार्थ ज्ञान की उन्नति करने आदि साधनों से मुक्ति प्राप्त होती है।" विहित कर्मों के द्वारा परमानन्द प्राप्ति की इतनी स्वच्छ-सर्वाङ्गीण और भावपूर्ण परिभाषा स्वामी जी के अतिरिक्त एक ही स्थान पर अन्य कोई कर नहीं पाया।

## निष्काम भाव की प्राप्ति

गीता के शब्दो में यस्त्वि-न्द्रियाणि मनसा नियम्यारभते-ऽर्जुन-कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ३-७- इन्द्रियो को वश मे करके परहित से, ईश्वराज्ञा समझकर ज्ञानपूर्वक कर्मों मे प्रवृत्ति को कर्मयोग कहते हैं। ईश्वराज्ञा के अतिरिक्त स्वार्थ बुद्धि से कर्म करना कर्मबधन है। इसे कर्म की निकृष्ट कोटि समझ कर कहा है।

यज्ञार्थात्कर्मणो ऽन्यत्रलोको ऽय कर्मबधन। ३-९- यज्ञीय भावना को छोडकर कर्म करना कर्मबधन मे फसना है। सारांश यह हुआ कि स्वधर्माचरण से शुद्धचित्त हुआ व्यक्ति आसक्ति से किये हुए कर्मों के विपरीत फल को जान कर निष्कामभाव को प्राप्त होता है। मुमुक्षु पुरुष काम्यकर्मों को त्याग कर नित्यनैमित्तिक कर्मों को निष्काम भावसे करता है

## ज्ञान कर्म-उपासना का तारतम्य

गीता की ज्ञान कर्म-भक्ति को महर्षिदयानन्द जी ने ज्ञान-कर्मोपासना कहकर कर्मोपासना से पूर्व ज्ञान का महत्व बताया है। वे कहते हैं, अविद्या-कर्मोपासना से मृत्यु को पारकर विद्या (यथार्थ-ज्ञान) से मोक्ष की प्राप्ति करता है। कर्मोपासना अविद्या इसलिये है कि यह बाह्यक्रिया विशेष है-ज्ञानविशेष नहीं। पवित्रकर्म-पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान से ही मुक्ति-और अपवित्र मिथ्या भाषणादिकर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्या ज्ञान से बन्ध होता है,,। महर्षि की दृष्टि मे ज्ञान के बिना कर्मोपसना का कोई अर्थ नहीं है। गीता मे स्पष्ट कहा है-सर्वकर्माखिलपार्थ ज्ञाने-परिसमाप्यते-ज्ञानलब्ध्वा परां शान्ति मचिरेणाधि गच्छति ४-३३ से ३९ ज्ञान मे सबकर्मों का समापन होता हैं। ज्ञान को प्राप्त करके ही जीव शान्ति को प्राप्त होता है।

वास्तव मे-भक्ति या कर्म से ज्ञान को श्रेष्ट क्यो कहा है—यद्यपि जीवात्मा-नित्य अनादि-अजर है किन्तु जैसे लकड़ी मे प्रविष्ट हुआ अग्नि-काष्ठ के निमित्त से उत्पत्ति-नाश छोटा बड़ा आदि प्रतीत होता है उसी प्रकार से हमे स्थित जीवात्मा शरीर भेद से-अनित्य-वृद्ध युवा-लघु दीर्घत्व-आदि धर्मो को प्राप्त हो रहा है। प्रकृति के परिणामी गुणो से स्थूल-सूक्ष्म शरीर की रचना हुई इसके अभ्यास से ही-जीवात्मा को जन्म मरण रूप ससार प्राप्त हुआ दीखता है। इस कार्यकारण समुदाय रूप देह मे स्थित जीवात्मा स्वय को सर्वोच्च सत्ता मानकर अविनाशी परमात्मा से दूर हटजाता है। इस भ्रमका निराकरण कर्मोपासना क्रिया विशेष होने से नहीं कर सकते, केवल ज्ञान कर सकता है।

## कर्मों का परित्याग क्या है

नित्य नैत्तिम केकर्मों का परित्याग

[ शेष पृष्ठ १५ पर ]

समकालीन पत्र आर्य दर्पण में—

# काशी शास्त्रार्थ विषयक विवरण

[ श्री डा० भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी-एच डी. ]
प्रवक्ता हिन्दी, गवर्नमेण्ट कालेज, अजमेर

यह वर्ष काशी शास्त्रार्थ की शताब्दी का वर्ष है। सौ वर्ष पूर्व विद्या की नगरी काशी मे स्वामी दयानन्द का काशी की विद्वन्मण्डली से मूर्तिपूजा की वैदिकता पर प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। उस समय काशी के विद्वानों को स्वामी जी से किस प्रकार पराजित होना पड़ा था, यह तो शास्त्रार्थ का प्रकाशित विवरण पढ़ कर ही जाना जा सकता है। मुन्शी बख्तावर सिंह जो वैदिक यन्त्रालय के प्रबंधक थे, १८७७ से एक मासिक पत्र प्रकाशित करने लगे थे, जिसका नाम था आर्य-दर्पण। इस पत्र के जनवरी १८८० के अंक मे काशी शास्त्रार्थ का विवरण हिन्दी तथा उर्दू में प्रकाशित हुआ है। यह हिन्दी विवरण ही अब वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित 'काशी-शास्त्रार्थ' ग्रन्थ मे भी छपता है। इस विवरण को सर्व प्रथम प्रकाशित करने वाले मुन्शी बख्तावर सिंह ही थे।

विवरण की भूमिका के रूप में मुन्शी जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का काशी मे आना शीर्षक लेख लिखा है। शताब्दी वर्ष में आर्यमित्र के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यह प्रस्ताविक लेख यहाँ उद्धृत किया जाता है "स्वामी जी के यहाँ आने का पूरा वृत्तान्त कि कब यहाँ आये और क्या-क्या विज्ञापन स्वामीजी ने और क्या २ उनके उत्तर मे यहाँ के पण्डितो ने प्रकाशित किये, और क्या-क्या पोपो ने बेशिर औ पैर की उड़ाई, और महारानी रानीगज के कुंवर साहब ने स्वामीजी और पण्डित ताराचरण भट्टाचार्य को बुलाकर किस प्रकार उनका समागम कराया और क्या-क्या शास्त्रार्थ वहाँ होने लगा और कब अमेरिका वाले स्वामी जी से मिलने और काशी के पण्डितों की परीक्षा लेने को यहाँ आये और कहाँ ठहरे और क्या उन्होने टौनहाल में क्या व्याख्यान दिया, और फिर किस प्रकार बाबू प्रमदादास ने उनको एडरेस किया और स्वामी जी के व्याख्यान प्रथम क्यो बद किये गये और इन पर 'पॅनियर' और दो अखबार वालों ने क्या-क्या लिखा और फिर क्यों यहाँ के बहुत से रईसो ने स्वामी जी के पास एक पत्र भेजा कि जिसमे अपनी अत्यन्त अभिलाषा वेदोक्त व्याख्यानो के सुनने के लिये प्रकट की और फिर जब स्वामीजी साहब मजिस्ट्रेट और साहब जज से मिले तो वहाँ क्या-क्या आनन्द की बातें हुईं, और फिर कब और कहाँ स्वामी जी के व्याख्यान हुये और प्रत्येक व्याख्यान का क्या-क्या अभिप्राय था और यहाँ के लोगों ने व्याख्यानो को कैसा समझा और कितने लोग सुनने को आये थे और अन्त में इन व्याख्यानों का लोगो के हृदय में कैसा उत्साह हुआ और कितने एक पण्डितों के कहने सुनने से कितने एक लोगों ने 'कवि-वचन सुधा' मे कैसे-कैसे अटकल पच्चू पक्षपात के आर्टिकल लिखाये और फिर उनका आर्यमित्र' ने कैसा-कैसा अपूर्व उत्तर दिया इत्यादि बातो के लिखने से पहले हम उस शास्त्रार्थ को कि जो सवत १९२६ मे स्वामी जी और काशी के पण्डितो में महाराज काशीनरेश के सामने आनन्द बाग मे दुर्गाकुण्ड के समीप हुआ था यहाँ लिखते हैं क्यों कि उसके ठीक-ठीक वृत्तान्त को बहुत ही कम लोग जानते हैं। कुछ तो उसके और का और ही समझ गये हैं और कुछ कि जिन्होने ठीक शास्त्राथ को जिसको काशी मे मुन्शी हरवश लाल ने लाइट प्रेस मे मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया था उसको देखा ही नहीं। केवल उसी को कि जो दयानन्द पराभूति के नाम से काशी नरेश के यन्त्रालय में कुछ का कुछ छापा गया है और जिसमें कि स्वामी जी की बातों को उनके अभिप्राय से बहुत उलटा प्रकाशित कर दिया है, उसी को ठीक शास्त्रार्थ समझ गये हैं। जब ये लोग स्वामी जी के व्याख्यान सुनते और उनके रचित पुस्तको को देखते हैं तो उसको इनसे उलटा ही पाकर भ्रम में पड़ जाते हैं और एक बड़ो भारी बात भ्रम में पडने की यह भी हुई कि वह शास्त्रार्थ केवल सस्कृत मे ही हुआ था कि जिसको बहुत ही कम लोग समझ सकते थे। तब तो इस समय को बडे भाग्य से आया समझ कर पोपों ने कुछ का कुछ ही लोगों पर विदित करके अपनी जय प्रसिद्ध कर दी। अब हम इन सब भ्रम की बातो के नाश के लिय उस शास्त्रार्थ को कि जिसको मुन्शी हरिवशलाल ने सवन १९२६ में छपवाया था, शुद्ध करके और उस पर कितने एक नोट लिखके यहाँ आर्यभाषा और उर्दू में ठीक-ठीक प्रकाशित करते हैं। आशा है कि सब सज्जन मनुष्य पक्षपात रहिते होकर इसको देखेंगे और स्वामी जी और काशी के पण्डितों की व्यवस्था को ठीक-ठीक जान लेवेंगे।"

इस प्रारम्भिक टिप्पणी के पश्चात् मूल शास्त्रार्थ हिन्दी और उर्दू मे छापा है। उर्दू अनुवाद मुन्शी बख्तावर सिंह ने किया है। शास्त्रार्थ के विवरण के अन्त मे 'एडिटोरियल नोट्स' शीर्षक से यह महत्त्वपूर्ण लेख लिखा गया था हम पाठको को काशी के शास्त्रार्थ का जो कि सं० १९२६ मि० कार्तिक शुदि १२ मगलवार के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का काशीस्थ स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती तथा बाल शास्त्री आदि पण्डितों के साथ हुआ था। तात्पर्य सहज में प्रकाशित होने के लिये विदित करते हैं। इस संवाद में स्वामी जी का पक्ष पाषाण मूर्ति पूजादि खण्डन विषय और काशी वासी पण्डित लोगों का मण्डन विषय था। उनको वेद प्रमाण से मण्डन करना उचित था सो कुछ भी न कर सके क्योंकि जो कोई भी पाषाणादि मूर्ति पूजादि में वैदिक प्रमाण होता तो क्यो न कहते और स्वपक्ष को वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किये बिना वेदों को छोड़कर अन्य मनुस्मृति आदि ग्रन्थों को वेदों के अनुकूल है वा नहीं। इस प्रकरणान्तर मे न जा गिरते। क्योंकि जो पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ के प्रकरणान्तर मे जाता है वही पराजय का स्थान है। ऐसे हुये पश्चात् भी जिस जिस ग्रन्थान्तर मे जो-जो पुराणादि शब्दों से ब्रह्म वैवर्तादि ग्रन्थों को सिद्ध करने लगे थे सो भी सिद्ध न कर सके। पश्चात् प्रतिमा शब्द से मूर्ति पूजा को सिद्ध करना चाहा था वह भी न हो सका। पुनः पुराण शब्द विशेष्य वा विशेषण वाची है इसमें स्वामी जी का पक्ष विशेषण वाची और काशीस्थ पण्डितों का पक्ष विशेष्य वाची सिद्ध करना था इसमे बहुत इधर-उधर के वचन बोले परन्तु सर्वत्र स्वामी जी ने विशेषण वाची पुराण शब्द को सिद्ध कर दिया और काशीस्थ पण्डित लोग विशेष्य वाची सिद्ध नहीं कर सके। सो आप लोग देखिये कि शास्त्रार्थ की इन बातों से क्या ठीक-ठीक विदित होता है।

और भी देखने की बात है कि जब माधवाचार्य दो पत्रे निकाल के सब के सामने पटक के बोले थे कि यहाँ पुराण शब्द किसका विशेषण है। उस पर स्वामी जी ने उसको विशेषण वाची सिद्ध कर दिया, परन्तु काशी निवासी पण्डितों से कुछ भी न बन पड़ा। एक बड़ी शोचनीय यह बात उन्होंने की जो किसी सभ्य मनुष्य के करने योग्य

[ शेष पृष्ठ ११ पर ]

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह पर--

# आर्य विद्वानों के चित्रों का मञ्च और महर्षि के गुरुओं के द्वार

डा० भवानीलाल भारतीय एम.ए. से अनुरोध

[ आचार्य श्री विश्वश्रवा जी व्यास एम ए वेदाचार्य ]
प्रचार मन्त्री-काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह

आज जब हम काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मनाने जा रहे हैं, कुछ अभी दिवगत हुए आर्य विद्वानो की स्मृति हृदय को हिला देती है। यह शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह ऐसा है जिसमें सैकड़ों आर्यविद्वानों की आवश्यकता पड रही है। आर्य समाज के पिछले सौ वर्ष के इतिहास मे जितने समारोह हुए हैं, उनमें विद्वानों की आवश्यकता कहीं नहीं हुई। आर्य महासम्मेलनों में वेद सम्मेलन आदि छोटे-छोटे पण्डालों मे करा दिये जाया करते हैं। विद्वान् उतने से ही अपने को प्रसन्न कर लेते थे, शेष बड़े मन्च पर तो कुछ और ही अब तक होता रहा है। पर यह काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह ऐसा है जिस मे हर मन्च पर आर्य विद्वान् ही दिखाई देंगे।

इस समारोह में ६ परिषदें हैं जिन में प्रत्येक में कम से कम पांच-पाच पृथक्-पृथक् विषयों के विद्वान् मन्च पर नजर आयेंगे और ६ महा सम्मेलन और ६ ही महा-परिषदों की बैठकें और दशशास्त्रार्थ मण्डलों मे पांच-पांच पण्डित और कण्ठस्थ वेद पाठी सब को जोड़ो तो सैकड़ो की सख्या बन जाती है। और आर्य समाज मे ये सब विद्वान् निकल आये। स्वीकारी आ चुकी हैं और आ रही हैं। हां, कुछ विद्वानों ने नखरे अवश्य किये और अब भी कुछ नखरे कर रहे हैं। वे कहते हैं कि आज तक हमे क्यों नहीं पूछा। हमारा कहना यह है कि फौज की आवश्यकता जब पड़ती है तब ही पूछा जाता है। फौज का काम खेती करना नहीं है, सड़क कूटना नहीं है। आर्य समाज में अब तक "जय किसान" रही अब "जय जवान" की बारी है। हम शीघ्र ही अपने सब आर्य विद्वानों को सूची जो भिन्न-भिन्न परिषदो के रग मन्च पर पहुचेंगे प्रकाशित करेंगे अभी प्रतीक्षा इस बात की है कि और नाम आजावें। हम ने सब आर्यप्रतिनिधि सभाओ को पत्र लिखे हैं कि अपने प्रान्त के आर्य विद्वानो की सूची भेजो पर प्रान्तीय सभाएँ भी तग हैं, क्योकि उन्हे स्वय नहीं पता कि हमारे प्रान्त मे आर्य विद्वान् कितने हैं और उनके पते क्या हैं। क्योंकि प्रान्तीय सभाओ को केवल लेक्चर देने वालों से मतलब रहा है। लेक्चर तो वे पढ़ा अधिक अच्छा दे लेता है। महा परिषदों में उन लेक्चर देने वालो की आवश्यकता है जो व्याकरण दर्शन वेद आदि के प्रकाण्ड पण्डित हों। अत. हे आर्य विद्वानों तुम स्वयं अपना पता हमें लिखकर भेजो कि तुम कहां हो।

जब हम काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह की चर्चा करते है तो हमें कुछ आर्य विद्वानो की स्मृतियाँ आती हैं और हमारा हृदय काप जाता है। कहा है आज सब शास्त्रो के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती वैदिक साधन आश्रम जगाधरी अम्बाला। कहां चले गये अनेक भाषाओ और सब संप्रदायो के मूल ग्रन्थों के ज्ञाता अद्वितीय विद्वान् स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी। छोडकर चले गये हम को अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न सस्कृत भाषा के भी प्रकाण्ड पण्डित सस्कृत के महकवि शत-पथ ब्राह्मण के भाष्यकार स्वामी समर्पणानन्द जी (प० बुद्धदेव विद्यालकार)। आज नहीं हैं, इस ससार मे शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी जिनके साथ मधुरमय शास्त्रार्थ करने को मुसलमान और ईसाई भी उत्सुक रहते थे। आर्य जगत् के एक मात्र महा-महोपाध्याय प० आर्य मुनि से शून्य यह आर्यों की बसती है। नहीं हैं आज हमारी आँखो के सामने सब शास्त्रो के सरल भाष्य मे व्याख्याकार सौम्यता की मूर्ति प० राजाराम शास्त्री लाहौर। कहाँ ढूढें आज हम योगी के भी विद्वानो के हृदय को दहलाने वाले प० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर को। नहीं ढूंढे से आज मिल सकते परममित्र ऋषि के अक्षर-अक्षर को पुष्ट करने की प्रतिज्ञा रखने वाले बाल ब्रह्मचारी पदवाक्यप्रमाणज्ञ प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी। प्रभु तूने उठा लिया हम से निरुक्त पर यास्क युग ग्रन्थ के लेखक सामवेद के प्रेम लहरी मे व्याख्याकार और वैदिक कोश जैसे अनुपम महर्षि के भाष्य के कोश के निर्माता प० चमूपति को तूने ही हम से छीना है। पाण्डित्य की मूर्ति पण्डित देवेन्द्र नाथ शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी को हमारे ही सौभाग्य ने हमें विहीन किया है। तपस्वी ब्रह्मचारी स्वाध्याय की जागृतमूर्ति पण्डित रामदत्त शुक्ल से। आज न जाने कौन से लोक मे चले गये। महा-महोपदेशक पण्डित बसन्तलाल, पण्डित शिव शर्मा शास्त्रार्थ महारथी और अद्वितीय गर्जना वाले पण्डित बशीधर पाठक। और प० लोकनाथ तर्कवाचस्पति। हा, विधाता क्यो हम को छोडकर चले गये विद्वानो के पृष्ठपोषक न्याय भूषण राजगुरु स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती तथा अद्वितीय शान्त सदा प्रसन्न मुख सस्कृत अग्रेजी आदि भाषा के पण्डित स्वामी अभेदानन्द सरस्वती तथा अद्वितीय वेद के प्रवचनकर्ता पण्डित अयोध्या प्रसाद जी वैदिक मिशनरी। अब नहीं पैदा होगे जीवित जागृत ब्रह्मचर्य पण्डित अखिलानन्द जी झरिया जैसे। हे विधाता तुझे दया नहीं आई, अनन्त ग्रन्थो के रचयिता आर्योदय आदि काव्यो के निर्माता ऐतरेय और शतपथ ब्राह्मण के भाष्यकार अनेक अंग्रेजी ग्रन्थों के भी लेखक पण्डित गङ्गा प्रसाद उपाध्याय को हम से अलग करते। कहा तक लिखें जब हम शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मे श्रौत परिषत् करने बैठेंगे तब याद आवेगी हमें आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई के आचार्य श्रौत सूत्रों के पण्डित पं० ऋषि शास्त्री की। खैर हम सब सह लेंगे पर अब दर्शनों की परिषत् करने बैठेंगे तब नव्य प्राचीन सब प्रकार के दार्शनिक ग्रन्थों के व्याख्याकार गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य परम दार्शनिक विद्वान् आचार्य विश्वेश्वर जी की स्मृति हृदय दहला देगी। क्या अच्छी शोभा होती यदि होते आज श्री नरदेव जी शास्त्री वेद तीर्थ। (हमारे राव जी) ज्वालापुर। तो दैव गुरुजन भी उठ गये पं० जगन्नाथ जी काशी के जिनके सामने प्रति पक्षी भी यह भूल जाता था कि मैं क्या कह रहा था। पूज्य गुरुवर प० भीमसेन शर्मा स्वामी भास्करानन्द जी किस किस को गिनाऊं।

## शताब्दी समारोह के लिये इनके चित्र चाहिये।

ये मैंने कुछ ही उन ही आर्य विद्वानो के नाम गिनाये हैं जो हमारे साथी थे जिनके साथ वर्षो बैठकर शास्त्रचर्चाएँ की थी, परस्पर मिलकर स्वामी दयानन्द जी महाराज के स्वप्नों को पूरा करने का

[ शेष पृष्ठ १२ पर ]

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर–

# अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म महिला आचार संहिता महासम्मेलन

[ लेखिका वेदाचार्य श्रीमती देवी शास्त्री वरिष्ठ उपप्रधान ]
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
संयोजिका महिला सम्मेलन काशी शास्त्रार्थ समारोह, वाराणसी

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के अवसर पर एक 'अन्तर्राष्ट्रिय सर्व धर्म महिला आचार संहिता सम्मेलन' अभूतपूर्व प्रकार से मनाया जावेगा। जिसका स्वरूप यह होगा कि इस महिला सम्मेलन में सब राष्ट्रों और सब धर्मों की महिलाएं अपने-अपने देश और अपने-अपने धर्म के आधार पर बतावेंगी कि उनके यहाँ स्त्री जाति का क्या स्थान है और महिलाओं की क्या मान्यता है। यह महा सम्मेलन तब सफल हो सकता है जब भारतवर्ष की आर्य महिला समाजें इसमें प्रमुखता से भाग लेवें। मैं समस्त आर्य जगत् की आर्य स्त्री समाजों से प्रार्थना करती हूँ कि वे इसमें सहयोग देकर अनुगृहीत करें। हमारी आर्य बहिनें इसमें कई प्रकार से सहयोग दे सकती हैं।

१—पहला सहयोग तो यह चाहिये कि समस्त आर्यजगत् से आर्य देवियां अधिक से अधिक संख्या मे काशी पहुचें। वहां पर पहुंचकर बहिनों को यह दृश्य देखने को मिलेगा कि कितनी आर्य जगत् की बहिनों ने ऋषि का स्वप्न पूरा करने के लिये इस काशी की आचार्य परीक्षाएं भिन्न-भिन्न विषयों की पास की हैं। वे आपको विदुषी बहनें काशी मे सस्कृत बोलती हुई शास्त्रार्थ काशी के विद्वानों से करती हुई और यज्ञ कराती हुई आपको देखने को मिलेंगी। एक दिन का तो यज्ञ ऐसा होगा जिसमे सब देवियां ही पुरोहित होगी। चलो काशी चलो काशी और देखो प्राचीन काल का दृश्य।

२—दूसरा सहयोग अपनी बहिनो का मुझे यह चाहिये कि जब बाहर से सब देशों और सब धर्मों की बहिनें हमारी अतिथि बनकर आवेंगी तो उन सबका आदर सत्कार भी तो हम आपको ही करना है। उसके लिये पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी। आर्य स्त्री समाजों का यह परम कर्त्तव्य है कि अभी से काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये धन संग्रह का कार्य प्रारम्भ कर दे।

मैंने अभी काशी से वेदाचार्य किया था, मुझे बहुत स्थानों से निमन्त्रण आये थे कि वे आर्य स्त्री समाजें मेरा स्वागत करना चाहती हैं पर मैं कहीं न जा सकी। अब मैं अपनी आर्यस्त्री समाजो को कहती हूं कि यदि मेरे पहुचने से ही आपके यहा विशेष उत्साह हो सके तो मै इस कार्य के निमित्त आने को भी तैयार हू।

आप सब ने मुझे इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का उपप्रधान सर्वसम्मति से बनाया और मेरे निर्वाचन के समय परस्पर मतभेद रखने वाले सभी बन्धु एक मत हो गये थे, इसके लिये मै कृतज्ञ हूं और अपना कर्त्तव्य समझती हू कि जब हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा ने इतना गुरु भार अपने ऊपर लिया है तो मै भी कुछ काम बताऊं। अतः मै इस दिशा मे प्रयत्न शील हू और काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के महिला महासम्मेलन और महिलाओ द्वारा आयोजित एक यज्ञ मे जो व्यय हो वह स्त्री समाजों द्वारा पूरा कराबूं। हमारी बहिने जो काम हाथ मे लेंगी वह पूरा करके रहेंगी।

दिल्ली और पंजाब की आर्य स्त्री समाजें इतनी समर्थ हैं कि वे बडे से बड़ा काम उठा सकती हैं उनके सहयोग की मुझे पूर्ण आशा है। उत्तरप्रदेश में आर्य महिला समाजो का ऐसा तांता बधा है कि प्रत्येक पुरुष समाज के साथ आर्य स्त्री समाजें लगी हुई हैं और बहुतो ने अपने भवन स्त्री समाजों के बनवाये हैं और उत्तरप्रदेश में आर्य स्त्री समाजो के प्रतिनिधि उसी प्रकार प्रान्तीय सभा में जाते हैं जैसे पुरुष समाजो के। उत्तरप्रदेश्य आर्य महिला समाजों की सूची मेरे पास है। इसी प्रकार से दिल्ली आर्य महिला समाजों की सूची आर्य केन्द्रीय महिला सभा दिल्ली से प्राप्त हो जावेगी।

## महिला मण्डल

परन्तु अन्य प्रान्तों मे आर्य स्त्री समाजें हैं या नहीं इसका मुझे ज्ञान नहीं है। मै आज समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को पत्र लिखा रही हू कि वे अपने प्रान्त की आर्य महिलाओं की सूची भेजें और यदि उनके प्रान्त में आर्य महिला समाजें नहीं हैं तो वे कारण बतावें कि क्यों नहीं है।

३—तीसरा सहयोग मैं अपनी विदुषी बहनों का चाहती हूं कि वे अपना-अपना पता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर देने की कृपा करें जिससे मै उन्हें निमन्त्रित कर सकूं।

४—चौथा सहयोग मुझे कन्या गुरुकुलों का चाहिये कि वे अपनी स्नातिका बहिनों की सूची भेजें जिसमें उनकी योग्यता नाम और पूर्ण पता लिखा हो। मैं बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी के कार्यालय से यह पता कर रही हू कि आज तक कितनी महिलाओं ने आचार्य परीक्षा भिन्न-भिन्न विषयों की पास की हैं। विश्वविद्यालय मे सब रिकार्ड इनका होगा ही उसके प्राप्त होने पर उनकी सूची आर्यमित्र में प्रकाशित कर दूंगी।

५—पांचवा सहयोग मुझे विदुषी बहनों का चाहिये जिन्होंने जिस विषय का आचार्य किया है वे उस विषय की काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में आयोजित परिषद् में भाग लेवें। मैं स्वयं वेदाचार्य होने के नाते परिषद् में भाग लूंगी और निरुक्त परिषत् का स्वय संचालन करूंगी और काशी के पण्डितों के साथ बैठकर महर्षि के दृष्टिकोण से वाद करने के लिये मै निबन्ध तैयार कर रही हू, वह ही मेरा विषय पी-एच. डी का भी है।

मैं आशा करती हू कि कुमारी प्रज्ञा देवी व्याकरणाचार्य व्याकरण परिषत् मे भाग लेंगी और मेरी प्रिय सावित्री देवी बहिन जो मेरे पास ही रहती है जो पुराणेतिहासाचार्य और साहित्याचार्य है पुराण परिषत् मे भाग लेगी ऐसे ही मेरी अन्य बहिनें तैयार हो और शास्त्रार्थ परिषत् मे कौन किसमें भाग लेगी इसका स्वीकृति पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय से मगा लेवें।

६—छठा सहयोग मै विदुषी देवियों का इस विषय मे चाहूंगी कि जहा अन्य धर्मों और अन्य धर्मों और अन्य देशो की महिलाओ से हम उनके देश उनके धर्म के अनुसार महिला आचार संहिता पूछेंगे वहां पहिले अपने

[ शेष पृष्ठ ११ पर ]

## महिला मण्डल

[ पृष्ठ १० का शेष ]

यहाँ आचार संहिता भी तैयार हम सब मिलकर कर लें। इसकी विस्तृत रूप रेखा मैं आर्यमित्र के अगले अङ्क में लिखूंगी।

७–सतवां सहयोग मै समस्त स्त्री आर्य समाजो का यह चाहती हू कि इस समय काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का सारा आन्दोलन समाचार 'आर्यमित्र' द्वारा पता चल सकता है। पृथक्-पृथक् पत्र लिखना कठिन है। देश देशान्तर की सब आर्यसमाजे 'आर्यमित्र' साप्ताहिक पत्र की ग्राहक बन जायें, जिसका वार्षिक चन्दा केवल १०) मात्र है। और इस अवसर पर जो विशेषांक हमारी सभा निकालेगी वह बिना मूल्य आपको पहुच जावेगा।

आर्य स्त्री समाजें मेरा यह निवेदन और प्रार्थना पढ़ते ही १०) मनीआर्डर द्वारा व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर भेजकर ग्राहक बनने की कृपा करें।

×

## काशी शस्त्रार्थ विषयक विवरण

[पृष्ठ ८ का शेष]

न थी कि ये लोग सभा में काशी राज महाराज और काशीस्थ विद्वानो के सम्मुख असभ्यता का वचन बोलें। क्या स्वामी जी के कहने पर भी काशीराज आदि चुप होके बैठे रहे। और बुरे वचन बोलने हारो को न रोकें। क्या स्वामीजी का पाच मिनट दो पत्रों के देखने मे लगा के प्रत्युत्तर देना विद्वानों की बात नहीं थी। और क्या सबसे बुरी बात यह नहीं थी कि सब सभा के बीच ताली शब्द लड़को के सदृश किया और ऐसे महा असभ्यता के व्यवहार करने में कोई भी उनके रोकने हारा न हुआ! और क्या एकदम उठके चुप होके बगीचे के बाहर निकल जाना और क्या सभा मे वा अन्यत्र झूठा हल्ला करना धार्मिक और विद्वानों के आचरण के विरुद्ध नहीं था।

यह तो हुआ सो हुआ। परन्तु एक महा खोटा काम उन्होंने किया जो सभा के व्यवहार से अत्यन्त विरुद्ध है कि एक पुस्तक स्वामीजी की झूठी निन्दा के लिये काशीराज के छापेखाने मे छपवाकर प्रसिद्ध किया और चाहा कि उनकी बदनामी करें और करावें। परन्तु इतनी झूठी चेष्टा किये पर भी स्वामी जी ने उनके कर्मों पर ध्यान न देकर उपेक्षा करके पुनरपि उन को वेदोक्त उपदेश प्रीति से आज तक बराबर करते ही जाते हैं और उक्त २६ के सवत् से ले के अब सं० १९३७ तक छठी बार काशी में आके सदा विज्ञापन लगवाते जाते हैं कि पुनरपि जो कुछ आप लोगो ने वैदिक प्रमाण वा कोई युक्ति पाषाणादि पूर्ति पूजा आदि के सिद्ध करने के लिये पाई हो तो सभ्यतापूर्वक सभा करके फिर भी कुछ कहो वा सुनो। इस पर भी कुछ नहीं करते। यह भी कितने निश्चय करने की बात है परन्तु ठीक है कि जो कोई दृढ़ प्रमाण का युक्ति काशीस्थ पण्डित लोग पाते अथवा कहीं वेद शास्त्र में प्रमाण होता तो क्या सम्मुख होके अपने पक्ष को सिद्ध करने न लगते और स्वामी जी के सामने न होते इससे यही निश्चित सिद्धान्त जानना चाहिये कि जो इस विषय मे स्वामी जी की बात है वही ठीक है। और देखो, स्वामी जी की यह बात सवत् १९२६ के विज्ञापन से भी कि जिसमे सभा के होने के अत्युत्तम नियम छपवा के प्रसिद्ध किये थे सत्य ठहरती है। उस पर पण्डित ताराचरण भट्टाचार्य ने अनर्थयुक्त विज्ञापन छपवाके प्रसिद्ध किया था। उस पर स्वामी जी के अभिप्राय से युक्त दूसरा विज्ञापन उसके उत्तर में पण्डित भीमसेन ने छपवाकर कि जिसमें स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी और बाल शास्त्री जी से शास्त्रार्थ होने की सूचना थी, प्रसिद्ध किया था। उस पर दोनो मे से कोई एक भी शास्त्रार्थ करने मे प्रवृत्त न हुआ। क्या अब भी किसी को शका रह सकती है कि जो-जो स्वामी जी कहते हैं वह वह सत्य है वा नहीं किन्तु निश्चय करके जानना चाहिये कि स्वामी जी की सब बाते वेद और युक्ति के अनुकूल होने से सर्वथा सत्य ही है।

और जहा-जहा छान्दोग्य उपनिषद् आदि का स्वामी जी ने वेद नाम से कहा है वहा-वहा उन पण्डितों के मत के अनुसार कहा है, किन्तु ऐसा स्वामी जी का मत नहीं। स्वामी जी मन्त्र-संहिताओ ही को वेद मानते हैं, क्योंकि जो मन्त्र संहिता हैं, वे ईश्वरोक्त होने से निर्भ्रान्त सत्यार्थ युक्त है, और ब्राह्मण ग्रन्थ जीवोक्त अर्थात् ऋषि मुनि आदि विद्वानो के कहे हैं। वे भी प्रमाण तो हैं परन्तु वेदो के अनुकूल होने से प्रमाण और विरुद्धार्थ होने से अप्रमाण भी हो सकते हैं और मन्त्र संहिता तो किसी के विरुद्धार्थ होने से अप्रमाण कभी नहीं हो सकती। क्योंकि वे तो स्वतः प्रमाण हैं।

छठी मई दोपहर को हमारे पास पण्डित चतुर्भुज शास्त्री की एक बैरंग छापी हुई चिट्ठी पहुंची कि जो स्वामी जी के नाम पाञ्चवीं मई के शाम को शहर के डाकखाने से भेजी गई थी। यह चिट्ठी अद्भुत एक निराले ढग की है। इसमें पण्डित जी ने स्वामी जी से कई एक प्रश्न किये हैं। स्वामी जी यहाँ साढे पांच महीने तक रहे। उस समय मे किसी ने भी कोई चिट्ठी पत्री न भेजी। जिस दिन यहाँ से यात्रा की उसी दिन डाकखाने मे चिट्ठी डाली गई। वाह-वाह क्या एक विलक्षण बात है। बहुधा जहाँ-जहाँ स्वामी जी जाया करते हैं, वहाँ-वहाँ ऐसी ऐसी विलक्षण बातें हुआ करती हैं। हमको निश्चय है कि पण्डित जी ने शहर मे उड़ा दी होगी कि स्वामी जी हमारे प्रश्नों का उत्तर न दे सके, और यहाँ से भाग गये। पण्डित जी ने एक और भी विज्ञापन दिया है। हम इन सब बातों को क्रम से इस पत्र मे लिखेंगे, और पण्डित जी का विज्ञापन और उनकी चिट्ठी भी उत्तर सहित मुद्रित करेंगे।

यहाँ राजा शिवप्रसाद जी और स्वामी जी के बीच कुछ चिट्ठी पत्र का व्यवहार हुआ था। वह भी हम इस पत्र मे छापेंगे। दोनो ओर के पत्र हस्ताक्षर सहित हमारे पास रक्खे हैं। इस नवीन यन्त्रालय के प्रबन्ध में इस बार पत्र के छापने मे विलम्ब हुआ। आशा है कि सज्जन ग्राहक क्षमा करेगे। ईश्वर ने चाहा, अब मासिक निकलता रहेगा। अब वेदभाष्य भी जो कि मुम्बई छपता था, यहाँ ही मुद्रित हुआ करेगा। इस बार इसके छापने मे विलम्ब हुआ। आगे को आशा है न होगा। स्वामी जी ५ मई को यहाँ से लखनऊ गये। ईश्वर की कृपा से काशी, लखनऊ, कानपुर और छपरे में ४ आर्य समाज नियत हुये हैं। स्वामी जी आजकल कानपुर विराजमान हैं।"

काशी शास्त्रार्थ पर पत्र सम्पादक की टिप्पणी निश्चय ही मनोरजक और ज्ञानवर्धक है।

×

## धार्मिक सिद्धान्त परीक्षाएं

गत आधी शताब्दी से प्रचलित भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की सिद्धान्त सरोज, सि० रत्न, सि० भास्कर, सि० शास्त्री, तथा सि० वाचस्पति परीक्षाओं में बैठिये। ये सभी आर्य शिक्षा सस्थाओ में मान्य हैं। नियमावली एव फार्म कार्यालय से निःशुल्क मगाइये।

आचार्य डा० प्रेमदत्त शास्त्री
साहित्यालंकार
परीक्षा मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
अलीगढ़ (उ० प्र०)

## गुरुओं के द्वार

[ पृष्ठ ९ का शेष ]

प्रोग्राम बनाया करते थे जिनके साथ जीवन बिताया था। अपने साथियों में मैं ही बचा हूं। यदि ये मेरे साथी शास्त्रार्थ शताब्दी पर होते तो शताब्दी जाने क्या होती। मुझ से भी पहले के अनेक आर्य विद्वान् आर्य जगत में हुए हैं जिन की हमने शक्ल नहीं देखी, जैसे गुरुदत्त जी विद्यार्थी प० लेखराम जी आदि।

शताब्दी का मन्च सजाया जावेगा इन समस्त केवल विद्वानो के चित्रों से। जिस-जिस के पास महर्षि स्वामी दयानन्द जी से लेकर अब तक के दिवगत आर्य विद्वानो के चित्र हों उन्हे बडे आकार मे अपने-अपने यहाँ बनवालें, और शताब्दी समिति को सूचना देवें कि आप किसका चित्र लेकर काशी पहुंच रहे हैं। हमारे शताब्दी समिति के कार्यकर्ता नाना प्रकार के कार्यों में और विचारों में दिन-रात व्यस्त रहते हैं। उनकी सहायता करो एक एक काम अपने हाथ में लेकर। हम विद्वानों के ही चित्रों से शास्त्रार्थ शताब्दी मन्च को सजाना चाहते हैं। क्या तुम भूल गये यह आन्दोलन की नगरी दिल्ली नहीं है, यह विद्वानों की नगरी काशी है, यहाँ सरस्वती का अपना घर है। गली-गली मे प्रकाण्ड पण्डित बसते हैं। वहाँ तुम्हे चलना है। और इसीलिये :—

## शताब्दी समारोह के द्वार

अब तक जो हम ने आर्य महा सम्मेलनों मे श्रद्धानन्द द्वार आदि बनाये थे, वे वहाँ ठीक थे, क्योकि वे आन्दोलनात्मक सम्मेलन थे, पर शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मे द्वार बनेंगे महर्षि के विद्यागुरु और योग गुरुजन के नामों पर। वे सब नाम हम जानते हैं। प्रत्येक द्वार पर एक गुरु का नाम लिखा होगा, और लिखा जावेगा कि ये महर्षि के विद्यागुरु थे या योगगुरु। वे सब द्वारों के नाम शताब्दी समारोह पर आकर देखना। हम काशी को दिखावेंगे जिसकी शताब्दी हम मना रहे है। उसको तुम अब तक सुधारक समझते थे, पर उनकी आँखे देखेंगी कि यह दयानन्द परम विद्वान् परमयोगी था। हमारा अज्ञान था जो हम दयानन्द को केवल सुधारक समझते थे। हमने जो रोना रोया है कि विद्वान् उठ गये वह ठीक है, पर जब शास्त्रार्थ और परिषदो के मन्चो पर आप वर्तमान आर्य विद्वानो को काशी के पण्डितो से शास्त्रार्थ करते और सम्मेलनो मे और महा-परिषदो मे संसार के विद्वानो के समक्ष लोहा लेते इस शास्त्रार्थ और शताब्दी पर देखोगे तो अनुभव करोगे कि जैसे राम ने दशरथ को भुला दिया था, रघु ने दिलीप को फीका कर दिया था वैसे ही वर्तमान आर्य विद्वान् सब पिछलो की क्षतिपूर्ति कर देंगे। कोई अभाग्यशाली होगा जो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर काशी न पहुचेंगा। अच्छा दिवगत आर्य विद्वानो के चित्र हमे भेज दो, यह प्रार्थना है।

## किसका चित्र कौन बनवावे

यहाँ मैं एक सूची प्रकाशित किये देता हू कि कौन व्यक्ति किस का चित्र तैयार करा कर काशी भेजें :—

१—प० भगवद्दत्त जी और प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु—रामलाल कपूर ट्रस्ट देलही

२—स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती—गुरुकुल झज्झर

३—स्वामी वेदानन्द तीर्थ—सन्यास आश्रम गाजियाबाद

४—प० ऋषि मित्र जी—आर्य समाज काकडवाडी बम्बई

५—स्वामी समर्पणानन्द जी—सार्वदेशिक युवक परिषत् मन्दिर मार्ग नई देलही

६—प० रामचन्द्र जी देहलवी—आर्य समाज हापुड़ जिला मेरठ

७—प० लोकनाथ तर्क वाचस्पति—आर्य समाज दीवान हाल देलही

८—म० प० आर्यमुनि जी—आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर

९—प० राजाराम शास्त्री— „

१०—प० चमूपति जी—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

११—प० बसन्त लाल जी—आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश

१२—पं० शिवशर्मा जी—„

१३—प० बशीधर पाठक—आर्य समाज बिहारी पुर बरेली

१४—स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती—साधु आश्रम हरदुआगज अलीगढ़

१५—स्वामी अभेदानन्द सरस्वती—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार

१६—प० अयोध्या प्रसाद वैदिक मिश्नरी— „

१७—ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी—आर्य समाज झरिया बिहार

१८—प० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय—आर्य समाज चौक इलाहाबाद

१९—आचार्य विश्वेश्वर जी गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

२०—प० नरदेव जी वेदतीर्थ महाविद्यालय ज्वालापुर

२१—प० भीमसेन जी— „

२२—प० रामदत्त शुक्ल—आर्य समाज गणेशगज लखनऊ

२३—प० जगन्नाथ शर्मा काशी आर्य समाज बुलानाला वाराणसी

ये मैंने कुछ ही नाम लिखे है इस प्रकार जो उच्च कोटि के अन्य विद्वान् है पं० शिवशंकर काव्य तीर्थ प० गुरुदत्त विद्यार्थी आदि सब के चित्र तैयार होना चाहिये।

## पं० भवानीलाल भारतीय अजमेर से प्रार्थना

काम बहुत अधिक हैं थोड़ा-थोड़ा काम सब बाँट लो समय कम है है। प्रिय भाई प० भवानी लाल भारतीय से प्रार्थना करता हू कि वे नीचे लिखे काम काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अपने हाथ मे लेलें :—

१—राजस्थान मे शास्त्रार्थ मण्डल के साथ आदि से अन्त तक रहें।

२—स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सब ग्रन्थों के सब संस्करणो और सब भाषाओं के अनुवादों तथा स्वामी जी के ग्रन्थों के अनुकूल प्रतिकूल लिखे गये सब ग्रन्थों की प्रदर्शनी की व्यवस्था करें।

३—ऋषि के अमुद्रित ग्रन्थों और मुद्रित ग्रन्थों के हस्तलेखों और ऋषि के सामान की प्रदर्शनी की व्यवस्था परोपकारिणी सभा द्वारा होने की बात स्वय अजमेर मे करें।

४—दिवगत आर्य विद्वानों को विचार-विचार उनके तैलचित्रों को विशिष्ट-विशिष्ट स्थानो और व्यक्ति से तैयार करा कर उन-उन के द्वारा काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के मन्च पर लगवाने की व्यवस्था करें।

५—काशी पहुच कर महर्षि के विद्यागुरु और योग गुरु जनों के नाम के द्वार बनवावें।

बन्धुवर भारतीय जी

हजारो काम शताब्दी के है इतना काम आप अपने ऊपर लेलो जहा आप असमर्थ हो, हम से भी परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। पर हम समझते हैं कि आप इतने योग्य हैं कि स्वय इन सब कार्यों को कर सकते हैं। और आप ऋषि भक्त भी हैं। अब हम कार्यो को बाँटने का कार्य प्रारम्भ करते है। स्वीकारी से अनुगृहीत करें।

नोट :—तैलचित्र पर्याप्त बड़े हो, जो मन्च पर लगे दूर से ही दिखाई देते हो, सब उनके नाम मोटे अक्षरो मे लिखे हो। ये सब तैलचित्र काशी पहुचने चाहिये। और शताब्दी के बाद उस-उस स्थान को वे चित्र वापिस कर दिये जायेंगे।

+

—१४ सितम्बर को आर्य समाज गोविन्दनगर मेरठ मे श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' श्री चरण सिंहजी शास्त्री और श्री विश्वनाथ जी आर्यवीर के भाषण हुए।—मन्त्री

—११ सितम्बर को आर्य समाज बिहारीपुर बरेली मे कर्मठ सदस्य श्री महाप्रसाद जी शर्मा एजेन्ट स्टेट बैंक सिटी ब्राच का फैजाबाद को स्थानान्तरण हो जाने के कारण विदाई पार्टी दी गई।

—ओमप्रकाश आर्य उपमन्त्री

—७ सितम्बर को दातागंज (बदायूं) मे महिला आर्यसमाज की स्थापना हुई है।

—प्रेमशङ्कर मन्त्री

१० अगस्त को भारतीय क्रान्तिकारी परिषद् द्वारा आर्य समाज बिहारीपुर बरेली मे सरदार भगतसिंह के भ्राता सरदार रणवीरसिंह का अभिनन्दन किया गया।—सन्तोष कण्व

—आर्य महिला समाज गणेशगंज लखनऊ ने श्री मुल्कराज सोबती के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की है कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा दुखित परिवार को धैर्य प्रदान करें। —सुभद्रादेवी प्रधाना

—हैदराबाद (उन्नाव) मे श्री ब्रह्मानन्द गुरुकुल की स्थापना हो गई है। इसका उद्घाटन २० जुलाई को श्री मुन्नीलाल जी जिलाधीश उन्नाव ने किया। गुरुकुल में १४ ब्रह्मचारी प्रविष्ट हो गये हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है, भोजन व्यय २५) रु० मासिक लिया जाता है।

—राजबहादुरसिंह आर्य वैद्य

—श्री प० रामचन्द्र अग्निहोत्री गुरुकुल एटा ने २७ मई से ४ सितम्बर तक फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, बरेली एटा मे वैदिक धर्म प्रचार किया। ५१ यज्ञ, १९ उपनयन, २ यज्ञोपवीत, १ विवाह, एक नामकरण, १ गृह प्रवेश कराया।

—दुःख है कि श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद मलाही (चम्पारण) का ३१ अगस्त को अकस्मात देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। —मन्त्री

—४ सितम्बर को आर्य बाल विकास विद्यालय मलाही के ब्रह्मचारी सुरेन्द्रप्रसाद, शिवनाथप्रसाद वीरेन्द्रप्रकाश के उपनयन संस्कार आर्य समाज मलाही में वैदिक रीत्यनुसार किये गये। —मन्त्री

—चम्पारण जिला आर्यसमाज के तत्त्वावधान में जिले के कई स्थानों में वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। श्री स्वामी आनन्द गिरि जी और श्री दिव्यानन्द जी की कथाए हुयीं। —मन्त्री

—दुःख है कि ६ सितम्बर को देवलाली आर्यसमाज के श्री स्वामी ज्ञानेश्वरानन्द जी का देहावसान हो गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज मेरठ शहर ने अपने ७ सितम्बर के साप्ताहिक अधिवेशन में दानवीर महर्षि के अनन्य भक्त श्री नानजी भाई कालिदास सेठ पोरबन्दर के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —मन्त्री

—आर्यसमाज गोण्डा ने १० सितम्बर का कु० खातून नाम की २२ वर्षीया महिला को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। शुद्धशुदा का नाम गंगाजली रखा गया। —मन्त्री

—आर्य समाज धर्मशाला की ओर से हलपुरा, नेहरू विद्यालय अरौल, फतेहगढ़, भोलेपुर मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया।—मंत्री

—११ अगस्त को आर्यसमाज उतरौला (गोण्डा) में एक मुस्लिम स्त्री को शुद्ध करके उसका नाम सावित्रीदेवी रखा गया और भोला प्रसाद के साथ उसका विवाह कर दिया गया। —मन्त्री

—आर्य समाज हाथरस के स्वामी श्री योगानन्द जी ने आर्य समाज इस्लामनगर (बदायूं) मे वेद प्रचार सप्ताह मे कथा करी। कन्या विद्यालय इस्लामनगर की १०० छात्राओ का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। जिसमे २ मुसलिम छात्राए तथा कुछ अध्यापिकाए भी थी। श्री बलवीरसिंह जी बेधड़क अपनी मण्डली सहित पधारे। आपके ओजस्वी भजन भाषण हुये। आर्यसमाज इस्लाम नगर का निरीक्षण किया।

—उपमन्त्री

—आर्य समाज कालपी की यह साधारण सभा सरकार द्वारा चौक सहारनपुर मे शिव मूर्ति को अपने स्थान से हटवाकर हिन्दुओ को वहाँ पूजा करने जाने से रोक लगा दी है। इस पर रोष प्रगट करती है। यह धर्म निर्पेक्षता का सरकार द्वारा निर्लज्जतापूर्ण उलघन है, और हिन्दुओ के साथ अन्याय है।

अतः यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि शिव मूर्ति को अपने स्थान पर पुनः स्थापित किया जाय, और हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ से इस प्रकार की खतरनाक खिलवाड़ बन्द की जाये। —मन्त्री

(२) खोसला आयोग द्वारा फिल्मो मे चुम्बन व नग्न नृत्य की अनुमति देने पर यह सभा दुःख प्रगट करती है। इसके द्वारा देश के नवयुवको का निश्चय ही अधःपतन होगा। अतः सभा सरकार से अनुरोध करती है कि आयोग की इस सलाह पर अमल न किया जाये और किसी भी दशा मे चल-चित्रो मे अश्लीलता का प्रदर्शन पूर्णतया वर्जित किया जाये।

—कोषाध्यक्ष

आर्य समाज सदर बाजार झांसी के सभी स्त्री पुरुषों ने दिनाक ३१-८-६९ को श्री सुधीन्द्र कुमार वर्मा जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे, तथा परिवार के सभी सदस्यों को उस महान् कष्ट के सहने की सामर्थ प्रदान करे।

—मन्त्री

—आर्य समाज प्रचार केन्द्र कनवरीगंज, अलीगढ का दिनाक ९-९-६९ दिन मंगलवार का यह सत्सङ्ग खोसला आयोग द्वारा चल चित्रो मे चुम्बन, आलिंगन व नग्नता के प्रदर्शन की जो सिफारिश की गई है, और जिसको भारत सरकार स्वीकृत करने जा रही है। उसका घोर विरोध करता है, और सरकार से आग्रह करता है कि वह इसे कदापि स्वीकार न करे, यदि स्वीकार किया गया तो समाज के हित व चरित्र की रक्षा के लिये आर्य समाज प्रत्येक साधनों द्वारा उसका विरोध करेगा।

—महेशचन्द गुप्त मन्त्री

—एन०सी०सी० वैदिक इण्टर कालेज आगरा कैंट में अत्यन्त समारोह पूर्वक श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी मथुरा वाले की अध्यक्षता में श्रावणी पर्व एव संस्कृत-दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कालेज के आर्य कुमार परिषद् के नव-निर्वाचित पदाधिकारियो को वेद मन्त्रो की ध्वनि के मध्य श्री प्रधानाचार्य जी ने शपथ ग्रहण कराई।

इसी अवसर पर बी० एस० ए० डिग्री कालेज के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष प्रो० जयकुमार जी मुदगल ने संस्कृत भाषा मे निहित भारतीय संस्कृति का स्वरूप वर्णित करते हुये उसकी श्रेष्ठता, सरलता एव सारगर्भिता का वर्णन किया। अन्त मे अध्यक्ष महोदय ने श्रावणी पर्व के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया। —रोशनलाल गुप्ता

प्रधानाचार्य

## जिला आर्य महासम्मेलन सहारनपुर

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर की अन्तरग सभा के साधारण अधिवेशन दि० १७ अगस्त, ६९ के निश्चयानुसार "जिला आर्य महा सम्मेलन" दि० १२, १३ एव १४ अक्टूबर, १९६९ जुबली पार्क सहारनपुर मे मनाया जायेगा। इस अवसर पर शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा एव युवा उत्थान सम्मेलन, वेद सम्मेलन, छुआ-छूत उन्मूलन सम्मेलन, महिला सम्मेलन एव गौ सवर्धन सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है।

इस शुभ अवसर पर भारतवर्ष के प्रमुख विद्वान सर्व श्री आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज, श्री पं० शिवकुमार शास्त्री ससद सदस्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, श्री प्रो० श्यामराव जी श्री चौ० चरणसिह जी (पूर्व मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार), श्री प्रो० वी० के० आर० वी० राव केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री भारत सरकार, श्री डा० कर्णसिह जी केन्द्रीय पर्यटन एव नागरिक उडयन मन्त्री भारत सरकार, श्री प्रो० शेरसिह जी राज्य सूचना एव प्रसारण मन्त्री केन्द्रीय सरकार, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा (सदस्य विधान सभा उ० प्र०) मन्त्री आ० प्र० सभा उ० प्र०, श्री ओमप्रकाश शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी, श्री ठा० यशपालसिह ससद सदस्य, श्रीमती लेखवती जी डिप्टी स्पीकर विधान सभा हरियाणा, श्रीमती अक्षय कुमारी जी कन्या गुरुकुल हाथरस एव श्री पन्नालाल पियूष अजमेर, श्री प० देशराज जी भजनोपदेशक आदि महानुभावो के भाग लेने की पूर्ण आशा है।

दिनांक १२ अक्टूबर, ६९ को एक विशाल शोभा-यात्रा सहारनपुर नगर के [illegible] मुख्य स्थानो मे निकाली जायगी।

दिनाक २२ एवं २३ नवम्बर' ६९ को गढ़मुक्तेश्वर गगा स्नान मेले के पावन अवसर पर जिला आर्य महा सम्मेलन की भांति "मेरठ कमिश्नरी आर्य महा सम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है। शिविर मे ठहरने एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था होगी। अतएवं जो सज्जन वहाँ जाना चाहें वे अपनी सख्या से अवगत करा देवें जिसमे वहाँ उन्हे व्यर्थ का कष्ट न उठाना पडे।

— राजेन्द्रप्रसाद आर्य मन्त्री
आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, रेलवे रोड सहारनपुर

# आर्य जगत्

## सार-सूचनाएँ

—२० अक्टूबर को आर्य समाज हरदोई के उत्सव पर जिला आर्य सम्मेलन और पदाधिकारियो का निर्वाचन होगा। अनन्तराम शर्मा मन्त्री जिला सभा।

—एक ९-१० वर्ष का बालक जो अपना नाम सुगारत पिता का नाम अनूपसिह वाजिदपुर बताता है। आर्य समाज गोंडा मे है। जिसका यह बालक हो मत्री आर्य समाज गोंडा से सम्पर्क स्थापित करे। —बलराम मन्त्री

—आर्य समाज जसपुर (नैनीताल) का उत्सव दो बार श्री ओमप्रकाश जी खतौली व बेगराज जी के न आने पर न हो सका। दोनो महानुभावों ने पहले स्वीकृति दे दी, फिर समय पर न आने का तार दिया। —मन्त्री

—दिनांक २९-८-६९ को आचार्य कृष्ण जी द्वारा आर्य इन्टर कालेज सुभाषनगर, देहरादून मे उपनयन सस्कार सम्पन्न हुआ। लगभग १५० छात्र और छात्राओ ने यज्ञोपवीत धारण किया।

—श्यामसिह रघुवन्शी प्रधानाचार्य

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव पर

शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा के लिये मैने अपना नाम दे दिया है। मैं इस अवसर पर विश्व भर के मूर्ति पूजकों को शास्त्रार्थ के लिये खुला निमन्त्रण देता हू कि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने "मूर्ति-पूजा विषय पर काशी मे शास्त्रार्थ किया था—इस विषय पर जो विद्वान् सस्कृत मे शास्त्रार्थ करना चाहेगे, मैं उनके साथ सस्कृत में शास्त्रार्थ करना सहर्ष स्वीकार करूंगा। वे विद्वान् मन्त्री काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के द्वारा अथवा सीधा मुझे लिखें, जिससे निमन्त्रण को क्रम से नियत किया जा सके।

वैदिक धर्म का सेवक
रामदयालु शास्त्री तर्क शिरोमणि
३ कृष्णटोला, अलीगढ़

## वेदप्रचार सप्ताह

२७ अगस्त से ४ सितम्बर तक निम्न आर्यसमाजो ने वेद प्रचार सप्ताह अत्यन्त समारोह से मनाया। इन दिनो आर्य विद्वानो की कथाएँ, प्रवचन और भजन हुये। लाखो व्यक्तियों ने वेद सदेश सुना और उससे प्रभावित हुये।

—सपादक

आर्यसमाज श्रृगारनगर लखनऊ, आर्यसमाज चौक, आर्यसमाज सदर, आर्यसमाज चन्द्रनगर लखनऊ, आर्यसमाज कासिमपुर, आर्य समाज सरकड़ा, आ० स० सतना आ० स० बीकानेर, आर्यसमाज गंगानगर, (राजस्थान), महिला आ० स० सभा भवन लखनऊ, आ०स० इटारसी, आ०स० कीरतपुर (बिजनौर), आ० स० मुगलसराय, आ० स० बेवर, आ० स० राजगृह पटना, आ० स० कालपी, आ० स० दिबियापुर (इटावा), आ० स० लाजपतनगर, कानपुर, आ० स० विकवा जीतपुर सुलतान पुर, आर्यसमाज सगला कोठी, आ०स० प्रेमनगर देहरादून, आ० स० चौन्दकोट ( गढ़वाल ), आ० स० दातागज [बदायू] आ० स० सुलतानपुर, आ० स० बिलथरा रोड, बलिया, आ० स० देहरादून, आ०स० थाना दरियावगज (एटा) आ०स० बगहा (मीरजापुर), आ० स० गया, आ० स० जमशेदपुर, आ०स० रजौली गया, आ० स० डुमरियागज, आ० स० रामपुर, आ०स० उन्नाव, आ०स० तिलहर, आ०स० मैनपुरी, आ०स० शाहपुरा [राजस्थान], आ० स० साहेबगज गोरखपुर, आ० स० जमानिया, आ०स० शक्तिनगर देहली, आ० स० आजमगढ़, आ० स० मलाही चम्पारण, आ०स० रक्सौल, आ० स० दिलदारनगर, आ० स० मऊ बहादरनगर, आर्य स्त्री समाज बमनपुरी अलीगढ़, आ० स० उत, रौला, आ० स० रामनगर अमेठी, आ०स० मुर्लीपुर [कानपुर]।

## सिद्धांत-निर्णय

(पृष्ठ ७ का शेष)

त्याग को आत्मोन्नति का मार्ग समझना केवल मात्र भ्रम है। गीता मे कहा है—नियत कुरुकर्म त्वज्यायोह्यकमण शरीरयात्रा पि च ते नप्रसिद्धये दकर्मण: ३-८ अपने नियत कर्मो को करना चाहिये। कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है क्योंकि बिना कर्म के तो शरीर यात्रा भी पूरी नहीं होती। इसे आगे चलकर स्पष्ट किया है—सन्यास कर्म योगश्च निः श्रेयसकरा वुभौ। तयोस्तु कर्मसन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते ५-२-कर्मन्यास और कर्मयोग दोनो ही अपनी उचित दशा मे श्रेयस्कर है—किन्तु कर्मों के त्याग से कर्मकरना बहुत ऊँचा है। महर्षिदयानन्द जी ने मनु के सिद्धान्त को सामने रखा है-अकामस्यक्रिया काचित् दृश्यते न हर्कहिचित्-यद्यद्धिकुरुते किंचित्-त्तत्कामस्य चेष्ठितम्। काम्यो हिवेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः मनु अ २-ससार मे बिना कामना के कोई क्रिया नहीं होती जो कुछ भी किया जाता ह कामना से ही होता है। वेद ज्ञान की प्राप्ति भी कामना से ही होती है-कर्मयोग तो वैदिक है। आशय सरल और स्पष्ट है कि ज्ञान सर्वोपरि है-इसके बिना-कर्म उपासना-निर्थक है किन्तु ज्ञान के लिये भी कर्म अपेक्षित है इन दोनो का एक दूसरे से पथक् नहीं किया जा सकता। स्मृतिकारो ने कहा है-उभाभ्याहि पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणागतिः-तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते ब्रह्मशाश्वतम्।

जैसे पक्षी दोनो पखो से ही आकाश मे उड सकता है उसी प्रकार ज्ञान कर्म-दोनो के सहारे ही शाश्वत ब्रह्मकी प्राप्ति हो सकती है। बिना घोडे के रथ-और बिना सारथी के घोडा निरर्थक है, इसी प्रकार ज्ञान-क्रिया (कर्म-ज्ञान) मिलकर ही उचित साधक होते है। कर्म की इतनी महत्वपूर्ण परिभाषा के सामने ससार के मतावलम्बियो को नतमस्तक होना पडता है।

चूंकि शरीर के लिये अर्थ की-मन के लिये काम की-बुद्धि के लिये धर्म और आत्मा-के लिये मोक्ष की आवश्यकता है। मनु-महाराज ने कहा है अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनःसत्येन शुध्यति-विद्यातपोभ्या भूतात्मा बुद्धि ज्ञानेनशुध्यति १५-१०९-जल से शरीर सत्य से मन ज्ञान से बुद्धि को शुद्ध करके अर्थ-काम धर्म की प्राप्ति सासारिक सुखो को भोगते हुए-विद्यातप (ज्ञानकर्म) से आत्मशुद्धिसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि शरीर मन बुद्धि शुद्ध न होगे तो जीवात्मा-स्वार्थी-कामी अधर्मी बनजायेगा उस दशा में आत्मा मोक्ष की ओर नहीं होगा-स्वार्थी-कामी अधर्मी जीवात्मा ज्ञान कर्म-(विद्यातप) के द्वारा आगे बढ़ ही नहीं सकता।

### प्रवृत्ति-निवृत्तिका रहस्य

वेदान्ती लोग भी मानते हैं कि प्रवृत्ति-जीवात्मा की मलिनता का कारण है, अतः उपादेय कर्मों का आचरण और हेय कर्मों से परित्याग करना चाहिये। इसके लिये प्रवृत्तिका सकोच और निवृत्तिका क्रमशः विकास आवश्यक है-गीता के शब्दो मे इनका नाम अभ्यास-वैराग्य हैं। हेयकर्मों मे वैराग्य उपादेय मे अभ्यास ही प्रवृत्ति निवृत्ति है। अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः—योग १-१-५- अभ्यास वैराग्य के द्वारा ही मन को वश मे करना माना है। तदा-द्रष्टुः स्वरूपे ऽवस्थानम् उसईश्वर के स्वरूप मे स्थिति होती है। तब अपनी बल-पराक्रम-आकर्षण प्रेरणा-गति आदि चौबीस शक्तियों से मुक्ति मे सुख को भोगता है। इसी उद्देश्य से जीवात्मा जगत् मे आया है। ज्ञान-कर्मोपासना-ही इस उद्देश्य की पूर्ति साधन है।

## निर्वाचन—

—आर्यसमाज जहेरियासराय
प्रधान—श्री वीरेन्द्रकुमार सिनहा
उपप्रधान—श्री बलदेवराज वोरहा
मन्त्री—डा गिरिजानन्दनलाल
सयुक्त मन्त्री-श्री ध्रुवनारायण प्र० आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सोहनलाल गुप्ता
—मन्त्री

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पजीकरण स० एल.-६०
आश्विन ६ शक १८९१ आश्विन कृ० ३
[ दिनाङ्क २८ सितम्बर सन् १९६९ ]

# 'आर्य-मित्र'

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L. 60
पता-'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष: २५९९३ तार। "अर्यमित्र"

## आर्य समाज, कोसीकलां जिला-मथुरा

आर्य समाज कोसीकला ने अपनी साधारण सभा की बैठक मे माननीय आर्य नेताओं की आपस की फूट के ऊपर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए निम्न प्रस्ताव पारित किया।

(क) पजाब की दोनों प्रतिनिधि सभाएँ तथा सार्वदेशिक सभायें अविलम्ब अपने सभी मुकदमें वापिस लेलें। और नया कोई मुकदमा कोई सभा किसी अन्य सभा के विरुद्ध आरम्भ न करें। हम आर्य जनता का पैसा मुकदमों को नालियों द्वारा हरगिज २ नहीं बहने देंगे।

(ख) सभी सभायें अपने समस्त अधिकार बिना किसी शर्त के श्रद्धेय महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज को शीघ्र से शीघ्र ही सौंप दें और निश्चय करे कि पूज्य महात्मा जी का निर्णय उन्हें पूर्णतया मान्य होगा। हमारे नगर की आर्य जनता पूज्य महात्मा जी के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास प्रकट करती है।

(ग) हम उक्त सभाओं के अधिकारियो को चेतावनी देना चाहते हैं कि यदि उक्त निवेदन पर ध्यान नहीं दिया गया, और आर्य जगत् के मूर्धन्य महापुरुष श्रद्धेय महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज को आमरण अनशन करना पड़ा तो आर्य समाज सगठन समिति के आदेशानुसार हमारी आर्य समाज के सदस्य भी सत्याग्रहादि मे भाग लेंगे तथा आवश्यकता होने पर प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभाओं से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने पर बाध्य होंगे।

### वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कोसीकलाँ का ३१ वां वार्षिकोत्सव सदैव की भाँति आश्विन शुक्ला एकादशी से चतुर्दशी स० २०२६ तक समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। जिसमे आर्यजगत के मान्य नेता प्रसिद्ध विद्वान महोपदेशक भजनोपदेशक पधारेगे। धर्म प्रेमी सज्जन पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करे।

—खेमचन्द आर्य मन्त्री

## कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस मे दिनाक २७-८-६७ को श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर सस्कृत दिवस सोत्साह मनाया गया, जिसमें छात्राओ ने सस्कृत भाषा मे भाषण श्लोक, अन्ताक्षरी नाटकादि मे भाग लिया। शिक्षक वर्ग के भी ओजस्वी भाषण हुये।

कन्या गुरुकुल तथा स्थानीय आर्यसमाज द्वारा श्रावणी उपाकर्म से कृष्ण जन्माष्टमी पर्यन्त वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया, जिसमे प्रात साय यजुर्वेद पाठ सहित बृहद् यज्ञ किया गया। जन्माष्टमी के पर्व पर सरस्वती परिषद् हुई, जिसमे छात्राओ एव गुरुजनो ने श्रीकृष्ण जी के जीवन-चरित्र एव महान कार्यो पर प्रकाश डाला।

— अक्षय कुमारी शास्त्री
मुख्याधिष्ठात्री

## श्री सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता का देहान्त!

अत्यन्त शोक है कि आर्य कन्या गुरुकुल तथा महिला महाविद्यालय के सस्थापक तथा सचालक परमपूज्य कुलपिता श्रीमान् सेठ नानजीभाई कालिदास मेहता का २५ अगस्त १९६९ सोमवार को प्रात: ९-४५ बजे उनके निवास स्थान शातिकुटीर मे स्वर्गवास हो गया। वे कुछ समय से बीमार थे, परन्तु किसी को ऐसी आशङ्का नहीं थी कि वे एकाएक ही हम से सदा के लिये विलग हो जायेंगे। महान् परोपकारी, धर्म, सस्कृति, विद्या और समाज के परम पुजारी अपने सत्कर्मो से पुण्यशाली हो गये। परम पिता परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति और सुगति प्रदान करे।

शोक सतप्त समस्त कुलवासी जन
आर्य कन्या गुरुकुल तथा
महिला महाविद्यालय, पोरबन्दर

## निर्वाचन-

आर्यसमाज मुंगेर
प्रधान—श्री देवकीनन्दन प्रसादसिंह
उपप्रधान—श्री वीरेन्द्र प्रसाद शर्मा
" श्रीमती मखेश्वरीदेवी
मन्त्री—श्री भागीरथ ठाकुर
उपमन्त्री—श्री शिवदत्त प्रसाद
" —श्री देवकुमार शर्मा
—मन्त्री

—महिला आर्यसमाज बाताराज
प्रधाना श्रीमती तारादेवी जी
उपप्रधाना—श्रीमती सरस्वती देवी जी, मन्त्रिणी-श्रीमती सूरजमुखी देवी जी, उपमन्त्रिणी-कामनीदेवीजी, कोषाध्यक्षा श्रीमती रामबेटा जी।
—प्रेमशकर

—आर्य समाज मुरलीपुर।
प्रधान—श्री डा रामप्रसाद शर्मा
मन्त्री—श्री शिवनारायण आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री देवकरन आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री बाबूराम आर्य

—नगर आर्यसमाज साहेबगज गोरखपुर।
प्रधान—श्री वीरसिंह सहाय
उपप्रधान—श्री रमेशप्रसाद गुप्त
" श्री अदित्यप्रसाद
मन्त्री—श्री परमेश्वरलाल गुप्त
उपमन्त्री—श्री केदारनाथ अग्रवाल
" श्री घनश्यामदास गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री देवीलाल गुप्त

महिला सतसग सभा
प्रधाना—श्री मोहिनी देवी
उपप्रधाना—श्री विद्यावतीदेवी
मन्त्रिणी—श्री सिंगारवतीदेवी
कोषाध्यक्ष—श्री कलावती

—आर्य समाज गोंठा आजमगढ़
प्रधान—श्री तुर्गनारायण राय जी
उप प्रधान—श्री रामशंकर रायजी
मन्त्री—श्री त्रिभुवनराय जी
उपमन्त्री—श्री पूरनचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री वागेश्वरीराय जी

—आर्य समाज पुरानी गोदाम गया (बिहार)।
प्रधान—श्री बालमुकुन्दसहाय जी
उप प्रधान—श्री परमेश्वरराम आर्य
मन्त्री—श्री वासुदेव नारायण जी
सहायक मन्त्री—श्री यज्ञदत्त आर्य
प्रचार मन्त्री—श्री रामकृष्ण आर्य

—आर्यसमाज बहराइच
प्रधान—श्री दयालीराम मोहन
उपप्रधान- [illegible]
मन्त्री— " खुशीराम
उपमन्त्री—श्री धर्मवीर जी आर्य
" श्री विश्वम्भरनाथ पाठक
कोषाध्यक्ष-श्री मनोहरसिंह
—खुशीराम मन्त्री

—आर्यसमाज अजमेर
प्रधान—श्री दत्तात्रेय बाब्ले
उपप्रधान श्री डा. नित्यानन्द राजपाल
उपप्रधान—श्री ताराचन्द्र
मन्त्री—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए,
उपमन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र जी
" " रासासिंह
कोषाध्यक्ष-श्री मक्खनलाल शर्मा
पुस्तकाध्यक्ष-" सदाविजय आर्य
—मन्त्री

—आर्यसमाज बगारस्यू ढौन्डियाल गढ़वाल
प्रधान—श्री घनश्यामलाल
उपप्रधान—श्री उम्मेदसिंह
मन्त्री—श्री प्रतापसिंह जी प्रेम
उपमन्त्री—श्री राजेसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रसिंह
निरीक्षक—श्री विजयराम
—मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.केलिये ब.वी. आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

'वय अधेम ] लखनऊ-रविवार आश्विन २० शक १८९१, आश्विन ९ वि० स० २०२६ दि० १२ अक्टूबर १९६९ [ हम जीतें

# करतारपुर में गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी

## ९ से १२ अक्तूबर तक मनाई जा रही है

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डीजी की निर्वाण शताब्दी ९ से १२ अक्टूबर तक करतार पुर में मनायी जा रही है। आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के प्रस्ताव को दृष्टि मे रखते हुए सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक ३१-८-६९ में आर्य जनता के नाम निर्देश प्रस्ताव पारित किया गया था कि यह निर्वाण-दिवस सारे आर्य जगत मे सोत्साह मनाया जावे। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रि महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री ने एक विज्ञप्ति द्वारा आर्य समाजों को प्रेरणा की है कि वे अपने अपने स्थानों पर गुरु विरजानन्द निर्वाण-दिवस मनावें। हम मित्र परिवार की ओर से इस आयोजन का हार्दिक स्वागत करते हैं। हमे पूर्ण आशा है कि अब एक शताब्दी बाद भी हम उस महापुरुष के उपकारो का स्मरण कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना न भूलें।

महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने गुरु विरजानन्द की पाठशाला भूमि को प्राप्त करके वहा गुरु धाम बनाने की घोषणा की थी। इस निश्चय को दस वर्ष हो चुके हैं, इस दिशा मे गुरु धाम-भवन निर्माण का कार्य कुछ आगे अवश्य बढ़ा है, परन्तु जिस उत्साह के साथ कार्य होना चाहिए था वैसा नहीं हो सका है। अब स्वामी विरजान्द निर्वाण दिवस पर आर्य-जगत को इस अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का सकल्प करना चाहिये। जो भवन बन चुका है, उसको उदघाटन् योग्य बनाने के लिये जो भी आवश्यक हो उसको आरम्भ कर देना चाहिये। जो व्यक्ति इस निर्माण मे बाधक हों उनकी उपेक्षा कर आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक सभा को अपनी तत्परता प्रदर्शित करनी चाहिये। गुरु धाम की पूर्ति से एक महान् कार्य सम्पन्न हो सकेगा। मथुरा मे ही यमुना तट पर दण्डी घाट और विरजानन्द आश्रम हैं, उनकी सुरक्षा की भी हमे व्यवस्था करनी चाहिये। स्थानीय जनो मे सराहनीय उत्साह है उनके उत्साह का उपयोग करना आर्य जगत् का कर्त्तव्य है शेष। करतार पुर (जालन्धर) मे गुरु विरजा नन्द भवन मे इस अवसर पर विशेष समारोह का आयोजन किया जा रहा है। गुरु विरजानन्द प्रेमी आ२जन उत्सव मे पहुच कर उत्सव को सफल बनावें।

महर्षि दयानन्द के गुरु श्री स्वामी विरजानन्द जी दण्डी

आर्य प्रतिनिध सभा उत्तर प्रदेश ने गुरु विरजानन्द की जीवनी प्रकाशित की है, समाजें उसे मगाकर वितरित करे और जनता में गुरु विरजानन्द के कामो सेवाओ, उपकारो का प्रचार करे। जिस गुरु ने हमे महर्षि दयानन्द दिये, उसके उपकारो का स्मरण करना हमारा पावन कर्त्तव्य है।

| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | ३७ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढ़िए !

## अध्यात्म-सुधा

# तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः

[श्री कृष्णचन्द्र राजौरिया एडवोकेट प्रधान, आर्य समाज अलीगढ ]

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति । स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥

शब्दार्थ (यो भूतं च भव्यं च) जो परमेश्वर एक भूत काल जो व्यतीत हो गया है, अनेक चकारो से दूसरा जो वर्तमान है और तीसरा जो भविष्यत् होने वाला है, इन तीनो कालो के बीच मे जो कुछ होता है, उन सब व्यवहारो को वह यथावत् जानता है । (सर्वं यश्चाधितिष्ठति) तथा जो सब जगत् को अपने विज्ञान से ही जानता, रचता, पालन, लय करता और संसार के सब पदार्थो का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी है (स्वर्यस्य च केवलं) जिसका सुख ही केवल स्वरूप है जो कि मोक्ष और व्यवहार सुख का भी देने वाला है (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः) ज्येष्ठ अर्थात् सबसे बड़ा सब सामर्थ्य से युक्त ब्रह्म जो परमात्मा है, उसको अत्यन्त प्रेम से नमस्कार हो । जो कि सब कालों के ऊपर विराजमान है, जिसको लेश मात्र भी दुःख नहीं होता उस आनंद घन परमेश्वर का हमारा नमस्कार हो ॥ १ ॥

भावार्थ पद्य मे—

जो भूत भविष्यत्-वर्तमान-
ज्ञाता सबसे ऊपर अपार ।
है जो कि अधिष्ठाता सबका
जिसका स्वरूप सुख निर्विकार ।
जिसमे न दुःख का लेश मात्र
आनन्द सिन्धु है निराकार ।
श्रद्धापूर्वक करते हैं, हम उस
ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार ।1।

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् । दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥1॥

( यस्य भूमिःप्रमा ) जिसकी भूमि प्रमा अर्थात् परमात्मा के होने का प्रमाण रूप पृथिव्यादि पदार्थ हैं सो यथार्थज्ञान की सिद्धि होने को दृष्टान्त है तथा उसने अपनी सृष्टि में पृथिवी को पादस्थानी रचा है । (उत) और (अन्तरिक्ष यस्य उदर तुल्यम् अस्ति) अन्तरिक्ष अर्थात् पृथिवी और सूर्य के बीच मे जो स्थान है वह उसके उदर के समान है । दिवं य चक्रे मूर्धानम्) दिवम् अर्थात जो सबसे ऊपर सूर्य की किरणो से प्रकाशित आकाश है वह उसने (मूर्धानम्) शिर के समान किया हुआ है । उस परब्रह्म को हमारा अत्यन्त नमस्कार हो । २ ।

भावार्थ पद्य मे—

यथार्थज्ञान का साधन यह,
पादस्थानी पृथिवी अधार ।
यह अन्तरिक्ष है उदर तुल्य,
द्यौलोक किया है शिराकार ॥
जग की रचना कर यथापूर्व,
फल देता है कर्मानुसार ।
श्रद्धापूर्वक करते हैं हम, उस
ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार ।२।

यस्य सूर्यश्चक्षु श्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः । अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ३ ॥

(यस्य) जिसके (सूर्यश्चक्षु चन्द्रमाः च) सूर्य और चन्द्रमा चक्षु के समान होते रहते हैं (पुनर्णव) प्रत्येक सर्ग में वार वार नवीन नेत्रो के समान, (यः अग्निं आस्यं) जिसने अग्नि को मुख के समान (चक्रे) किया हुआ है, (तस्मै०) उस ज्येष्ठ ब्रह्म के लिये हमारा नमस्कार है । ३ ।

भावार्थ पद्यमे—

यह सूर्य तेज का पुञ्ज एक,
यह चन्द्र दूसरा सुधासार ।
जिसके दो चक्षु सदृश होते,
प्रत्येक सर्ग मे बार-बार ॥
मुख के समान यह अग्नि जो कि
कर देती सब कुछ क्षार-क्षार ।
श्रद्धा पूर्वक करते हैं हम उस,
श्रेष्ठ ब्रह्म को नमस्कार ॥

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन् । दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ४ ॥

(यस्य वात.) वायु जिसके (प्राणापानौ) प्राण और अपान के समान है । (चक्षुरङ्गिरसोऽभवन) अङ्गिरस : अर्थात् सूर्य की प्रकाशिका किरणें नेत्र इन्द्रियके समान हैं और (दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानी) दिशाओं को सब व्यवहारों की साधिका किया है (तस्मै०) उस ज्येष्ठ ब्रह्म के लिये नमस्कार है ॥ ४ ॥

जिसके हैं प्राण अपना तुल्य,
यह वायु सर्वजीवन अधार ।
जग की प्रकाशिका रविकिरणें,
हैं चक्षु मिटाती अंधकार ॥
ये दिशा और प्रदिशाएँ ही,
व्यवहार साधिका बहुप्रकार ।
श्रद्धापूर्वक करते हैं हम, उस
ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार ।४।

अथर्व वेद काण्ड १० । प्रपाठक २३ अनुवाक् ४ सूक्त ८ मंडल सूक्त, मंत्र ३२-३५

# ईश्वरोपासना

[ले० शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी]

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
(यजु० २५/२१)

स्तुति किस की करनी चाहिये, और क्यों करनी चाहिये यह प्रश्न आज साधारण जनता के मस्तिष्क मे उत्पन्न होता है । केवल इतना ही नहीं, इसके साथ अन्य अनेक प्रश्न भी वे करते हैं किन्तु प्राचीन काल के पुरुष यह शंका नहीं किया करते थे क्यो कि उनका आचार ऊँचा था । आज कल के मनुष्यो मे समझ कम और कुतर्क अधिक है, आचार नहीं है ।

जो परमात्मा को नहीं मानते, उनसे तो हमे कुछ भी नहीं कहना है, लेकिन मानने वाले भी कई बार कहते हैं कि जब परमात्मा हमे कर्मों का फल देगा तो उसकी स्तुति आदि हम क्यो करे ? यह भी देखने मे आता है कि उपासना करने वाले झूठे और बेईमान हैं तथा उपासना न करने वाले अक्सर अच्छे होते हैं । फिर यह भी प्रश्न है कि भगवान् ने नास्तिक क्यो उत्पन्न किये ? इसका भी कारण है । परमात्मा ने इस संसार मे जो कुछ किया है, ठीक ही किया है । भगवान् को किसी काम मे कोई हानि या लाभ नहीं । वह पूर्ण है । उसमे किसी भी प्रकार का कोई जोड या बाकी नहीं है । मनुष्य को शिक्षा देने के लिये ही उसने यह सब प्रबन्ध किया है । नास्तिक लोगो को उत्पन्न करने का लाभ यह है कि जो मनुष्य अपने को ईश्वर का भक्त कहते हैं, किन्तु उनके कर्म गिरे हुये हैं और नास्तिक का आचरण ऊँचा है, तो फिर ईश्वर को मानने से और उसकी स्तुति प्रार्थना और उपासना करने से क्या लाभ ? भगवान् के गुणों का कोई प्रदर्शन नहीं होता ।

मन की दो वृत्तियाँ होती हैं, अन्तर्मुख और बाह्यर्मुख । वृत्तियों का केन्द्र नाभि है । वृत्तियाँ जितनी भी दूर जाती हैं, उनको कौन रोकता है ? नाभि । जगत् में जहाँ तक लाभ लेना चाहिये वहीं तक हमारी प्रवृत्ति जानी चाहिये, सीमा के बाहर नहीं । अति सब जगह बुरी होती है–'अति सर्वत्र वर्जयेत्' । जिस प्रकार 'आचार' तो ठीक है, यदि उसके साथ 'अति' लगावें तो 'अत्याचार' हो जाता है । इसलिये जगत् में अति किसी काम मे नहीं करनी चाहिये और मर्यादा से ही रहना चाहिये ।

[शेष पृष्ठ १० पर]

लखनऊ रविवार १२ अक्टूबर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## मृतक श्राद्ध के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन

वैदिक जीवन पद्धति मे पितृयज्ञ का विशेष महत्व है और प्रत्येक वेदानुयायी का कर्तव्य है कि वह अपने दैनिक जीवन में पितृयज्ञ के कर्तव्यों का पालन करे और अपने जीवित पितरों को उनका सम्मान करके, उनके जीवन और स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओ की पूर्ति करके सन्तुष्ट करे। उनकी आज्ञाओं का पालन करना और उनके आदर्शों पर चलना ही वास्तव मे उनके प्रति सच्चासम्मान है।

भारत का दुर्भाग्य है कि महा भारत कालके बाद अवैदिक पद्धतियों के प्रचलन से भारतीय जीवन दूषित होता चला गया है। पौराणिकों के दूषित प्रभाव से जनता पथ भ्रष्ट हो गयी और मृतक श्राद्ध मे विश्वास करने लगी। मृतक-श्राद्ध के पीछे स्वार्थी पोप डम की भावना है। यद्यपि चार्वाक 'वैदिक विचार धारा का समर्थक न था, परन्तु उसने मृतक श्राद्ध की प्रक्रिया का जो खण्डन किया है, वह वस्तुस्थिति को स्पष्ट करता है।

> मृतानामपि जन्तूना श्राद्ध
> चेत्तृप्ति कारणम् ।
> गच्छतामिह जन्तूना
> व्यर्थ पाथेय कल्पनम् ।।

इस श्लोक मे मृतको तक भोजन पहुचने की कल्पना का जो उपहास किया गया है वह यथार्थ सत्य है। महर्षिदयानन्द ने अवैदिक कार्य वादों का खण्डन करते हुए मृतक श्राद्ध जैसे अन्ध-विश्वासों का प्रबल खण्डन किया है।

यद्यपि आर्यसमाज के प्रचार से आज से पच्चीस वर्ष ५ पूर्व तक मृतक-श्राद्ध पद्धति का प्रबल विरोध होता रहा, परन्तु बडे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि अब इस ओर विशेषध्यान नहीं दिया जा रहा है। यही बात नहीं कि इस दिशा मे प्रचार मे न्यूनता आई है अपितु हमारे घरो मे भी अवैदिक तत्व बढ़ने लग गये हैं। इसके कारणों की यदि खोज की जाय तो इसके दो ही कारण प्रतीत होते हैं। प्रथम आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी मे सिद्धान्त प्रचार और खण्डन मण्डन का जो उत्साह था, लगन थी वह आज कहीं दिखायी नहीं देती। इसका दूसरा कारण आर्यसमाजी परिवारो मे वैवाहिक सम्बन्धों के लिये आर्य विचारो को महत्व न देना है। आज आर्यसमाज के अनेक शीर्षस्थ नेता अपने राज नैतिक स्वार्थो के नाम पर हिन्दूपन के नाम पर तुष्टीकरण के समर्थक बन गये हैं और वे हिन्दुओं में अपनी लोक प्रियता के लिये हिन्दुओ के पुराणो और जैन बौद्ध धर्म ग्रन्थो को महत्व प्रदान करने लगे हैं, अपने अधीन संस्थाओं मे पुराण-दिवस-जैन-दिवस, बौद्ध दिवस मनाने का अभिनय करने लगे हैं और दुर्भाग्य यह है कि ऐसे लोग आर्यसमाज के स्वयभूनेता बन कर तथा कथित सार्व देशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित करते हैं। इससे भी बड़ा दुर्भाग्य है कि उनके चाटुकार आर्यसमाज मे पोप डम गुरु डम का बढावा देने के लिये अपने को धर्माधिकारी घोषितकर आर्य जनता को पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं। आर्य जनता को अपने ऐसे स्वयभू नेताओ को ऐसी बातो का स्पष्टीकरण देने के लिये बाध्य करना चाहिये। तथा कथित सार्व देशिक सभा के स्वयम्भू मन्त्री के तथा कथित पुत्र हरद्वार मे गीता का प्रचार कर रहे हैं ये वही व्यक्ति हैं जिनके सम्मान मे दिल्ली की गलियों सड़कों पर पोस्टर चिपका कर आर्य जगत् से सम्मान कराया गया और बाद मे वे आर्यसमाज के नाम पर कलक का टीका लगा कर गायब हो गये।

हमने प्रसगतः आर्यसमाज के शीर्षस्थ तथा कथित नेतृत्व मे हिन्दुत्वके अवैदिक तत्वों के समावेशकी चर्चा की है। जब उनकी यह हालत है तब साधारण आर्य जनो के लिये क्या कहा जाय। परन्तु निराश होने की बात नहीं है। महर्षि दयानन्द अकेले थे उन्हे अपने पर अपने अनुयायियों पर विश्वास था। आज की महर्षि के सच्चे अनुयायी अपने व्रत पर दृढ़ हैं और उनकी दृढता ही समाज का सही मार्ग दर्शन कर सकती है।

इस लेख द्वारा हम मृतक श्राद्ध के विरुद्ध आर्य जनता की भावनाओ को पुनः दृढ़ करना चाहते हैं और चाहते हैं कि आर्य जनता इस दिशा मे उदासीनता दिखाने वाले नेताओं को झकझोरे।

प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि मृतक श्राद्ध के अवैदिक रूप के विरुद्ध जनता मे सम्पर्क स्थापित करें, आर्य समाजे अपने सदस्यो को इस बारे में सावधान करें। आशा है आर्य जन अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

## गांधी जन्म शताब्दी

२ अक्टूबर ६९ को समस्त विश्व में विश्व बन्द्य महात्मा गाधी की जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया है। राष्ट्रपिता के रूप मे गाधी जी ने भारत की स्वाधीनता के लिये जो कार्य किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता, परन्तु दुर्भाग्य है कि हमने स्वाधीनता तो अपने पास रखने का अभिनय किया है परन्तु गाधी जी के आदर्शों को भुला दिया है। आज राष्ट्र मे :-

१—अस्पृश्यता बढ़ रही है।

२—साम्प्रदायिकता पनप रही है।

३—राष्ट्र-भाषा हिन्दी की उपेक्षा हो रही है।

४—मद्य-निषेध के स्थान पर मद्य प्रचार बढ रहा है।

५—नैतिक चरित्र के स्थान पर चरित्रभ्रष्टता बढ़ रही है।

६—जीवन मे सत्य-अहिंसा के स्थान पर असत्य और हिंसा बढ़ रही है।

७—गृह-उद्योग बढने के स्थान पर नष्ट हो रहे हैं।

८—स्वदेशी वस्त्र और खद्दर की भावना समाप्त हो रही है।

९—मानवता के व्यापक दृष्टि-कोण के स्थान पर अन्य राष्ट्रवाद और क्षेत्रवाद पनप रहा है।

१०—जातिवाद, और सम्पत्ति-वाद का प्राबल्य हो रहा है।

जन्म शताब्दी के इस शोर-शराबे मे क्या उपर्युक्त बातो की ओर राष्ट्र ध्यान दे सकेगा। हम विश्व मे जन्म शताब्दी के धूम-धाम से आत्मप्रवञ्चना मे न रहें हमारा कर्तव्य है कि उनकी आदर्श शिक्षाओ को राष्ट्र के जीवन में सव्याप्त करे और सकल्प लें कि बापू के राम-राज्य का निर्माण अवश्य करेंगे।

गाधी शताब्दी के नाम पर प्रचार समारोह, साहित्य प्रकाशन तथा अन्य अनेक प्रकार से अकल्पित धनराशि व्यय की गयी है। इतना व्यय करके भी यदि हम राष्ट्र में उनकी शिक्षाओं को व्यावहारिक रूप दे सके तो भी हम लाभ मे रहेगे।

राष्ट्र की निर्धनता सबसे बडा अभिशाप है। दरिद्र नारायण की सेवा बापू का सकल्प था। राष्ट्र के नव-निर्माण और विकास के द्वारा राष्ट्र की निर्धनता समाप्त करना प्रत्येक देशवासी का पावन कर्तव्य है। क्या हमने अपने लिये कर्तव्य का निर्धारण किया है।

गाधी जी ने विश्व को अहिसा का क्रियात्मक सन्देश दिया है, आज विश्व मे युद्ध के विरुद्ध वाता-वरण उत्पन्न करने मे गाधी जी की शिक्षाओ का व्यापक प्रभाव पडा है, इसी कारण विश्व मे भारत का सम्मान है, लेकिन यदि हम दूसरो को अहिसा का उपदेश दें और स्वय अहमदाबाद मे धर्मान्धता के रूप मे हिसा का ताण्डव करें तो ससार हमारी बात कब तक सुनेगा। अतः हमारे ऊपर गम्भीर उत्तर दायित्व है।

राष्ट्र के शुभ चिन्तको और गांधी जी के अनुयायियो गांधी जी की जय बोलने वालो और उनके तप-त्याग के नाम पर सुखोपभोग

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के संबंध में आवश्यक सूचनाएँ

## समारोह की तिथियों में परिवर्तन

पूर्व प्रकाशित सूचनाओं के आधार पर काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह की तिथियां १८-२१ नवम्बर निर्धारित की गई थीं। अब तिथियों मे परिवर्तन कर दिया गया है। शताब्दी समारोह अब २३ दिसम्बर से २८ दिसम्बर ६९ तक हो गया।

### (२) पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशको की दुकाने

शास्त्रार्थ शताब्दी पर पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों को दुकानें लगाने को विशेष सुविधा दी जाएगी। शताब्दी पर पुस्तकों की दुकानें लगाने वाले सज्जनो से अनुरोध है कि वे इस सम्बन्ध में आवश्यक पत्र व्यवहार कर अपना स्थान सुरक्षित करवा लें ताकि बाद में उन्हे असुविधा न हो।

### (३) शताब्दी कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नारायण स्वामी भवन लखनऊ में शताब्दी कार्यालय खोल दिया गया है ताकि शताब्दी सबंधी समस्त पत्र व्यवहार सुगमता से किया जा सके। शताब्दी समारोह सम्बन्धी पत्रों के शीघ्र उत्तर देने की व्यवस्था की गई है। पत्र व्यवहार करने वालो को चाहिए कि वे पत्र पर पूरा पता अर्थात् 'काशी शास्त्रार्थशताब्दी कार्यालय,' नारायण स्वामी भवन, ५ मीरा बाई मार्ग, लखनऊ-१ लिखें।

### (४) धन संग्रह के लिए नोट

शताब्दी समारोह के लिए धन सग्रह के विभिन्न १००) २५) १०) ५) व १) के नोट प्रकाशित किए जा रहे हैं। समस्त आर्य समाजों को चाहिए कि वे अपनी आवश्यकताओं से तुरन्त सूचित करे ताकि उन्हे नोट भिजवाए जा सकें।

कृपया स्मरण रखें कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समस्त आर्य जगत् की अपनी शताब्दी है। इसमें तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना प्रत्येक आर्य नर-नारी का नैतिक कर्तव्य है।

विक्रमादित्य 'वसन्त' कार्यालयाऽध्यक्ष
काशी शास्त्रार्थ शताब्दी कार्यालय
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# आर्यसमाज संगठन समिति आर्यसमाज की एकता के लिये प्रयत्न करती रहेगी

१. नई दिल्ली—आज २८ सितम्बर को आर्यसमाज संघटन समिति की बैठक हुई। बैठक में सर्वसम्मति से पुरानी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-मन्त्री श्री ओम प्रकाश जी त्यागी के दिनांक २८-९-६९ के सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित लेख की निन्दा की गई। समिति ने कहा कि यह लेख असत्य एवं अशिष्टता से परिपूर्ण है। समिति ने श्री ओमप्रकाश जी त्यागी की इस बात पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया कि महात्मा आनन्द भिक्षु जी सब विवादो के स्वयं ही सर्वाधिकारी बनना चहते हैं। जब कि महात्मा जी प्रारम्भ से ही चारों पक्षों से विवाद समाप्त करने की प्रार्थना कर रहे हैं। महात्मा जी का सुझाव स्पष्ट रूप से प्रकाश मे आ चुका है कि प्रत्येक पक्ष अपनी ओर से दो-दो प्रतिनिधि दें और वे आठों किसी भी सर्वसम्मत व्यक्ति को अपना अध्यक्ष मान लें। उस के बाद उस अध्यक्ष का निर्णय चारों पक्षों को सर्वथा मान्य होना चाहिये। इतने स्पष्ट वक्तव्य के बाद भी महात्मा जी के प्रति छोटे स्तर के शब्द प्रयोग करना यह पुरानी सार्वदेशिक सभा के उप-मन्त्री को शोभा नहीं देता।

२. श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने अपने उक्त लेख में आर्यसमाज सगठन समिति को समाप्त करने की भी अनधिकार घोषणा की है। समिति का निर्माण आर्य सभाओं के विवाद समाप्त कराने के लिए किया गया है, जब तक उक्त सभाओं के विवाद समाप्त नहीं होंगे तब तक यह समिति निश्चय से कार्य करती रहेगी और विवाद समाप्त होने पर आर्यसमाज सघटन समिति उसी क्षण समाप्त कर दी जायेगी। पुरानी सार्वदेशिक सभा जो स्वयं एक विवाद ग्रस्त पक्ष है उसे इस प्रकार का वक्तव्य देने का कोई अधिकार नहीं है। उन के इस प्रकार के उत्तरदायित्वहीन वक्तव्य से सार्वदेशिक सभा के गौरव को हानि [illegible]ती है।

३. सघटन समिति ने पिछले तीन मास के अपने कार्य-क्रमों के [illegible] आर्य जनता द्वारा दिये गये सहयोगों की सराहना की। तथा दोनों आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब और नई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिये गये सद्भावना पूर्ण सहयोग के लिये उन के अधिकारियों का धन्यवाद किया। समिति ने चौथे पक्ष पुरानी सार्वदेशिक सभा से पुनः प्रार्थना की है कि वे भी अपने दो प्रतिनिधि देकर आर्यसमाज के विवाद सुलझाने मे सहयोग दें। अन्त मे समिति के सर्वाधिकारी महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को पुनः दोहराया कि यदि विवाद नहीं सुलझे तो मुझे आमरण अनशन करना पड़ेगा।

—मन्त्री आर्यसमाज संघटन समिति।

[पृष्ठ ३ का शेष]

करने वालों सभी का दायित्व है कि वे गम्भीरतापूर्वक सोचें और राष्ट्र में व्याप्त अनिश्चितता, अशान्ति-अव्यवस्था को दूर करने मे अपना समर्पण करे।

गांधी जयन्ती की यही प्रेरणा है कि हम मानवता के, राष्ट्र के विकास मे अपना श्रेष्ठतम योगदान समर्पित करे।

### महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

के अवसर पर "आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी" नाम से पुस्तक तैयार करनी है। आर्य समाज के अनुभवी लेखक श्री प० शिवदयालु जी ने उसका सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया है। इस सम्बन्ध मे विभिन्न आर्यप्रतिनिधि सभाओ, आर्य समाजो तथा सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि पुस्तक के सम्बन्ध में जो भी सुझाव और मसाला वे दे सकें अतिशीघ्र पण्डित जी के पास "आर्य वानप्रस्थाश्रम के पो० ज्वालापुर, जिला सहारनपुर" पते पर भेजने की कृपा करें। इस सम्बन्ध मे यदि कोई पुस्तकें छपी हुई हों, या शास्त्रार्थ महारथियों जीवन, कार्य आदि के बारे में ज्ञात हो, सब भेज दें।

— महेन्द्रप्रताप शास्त्री संयोजक

### करतारपुर में गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी पर संन्यास-गोष्ठी

गुरुविरजानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर करतारपुर (जिला जालन्धर) मे ११ अक्टूबर को २ बजे से ४ बजे तक संन्यास गोष्ठी होगी। जिसमे विचार किया जावेगा कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति में सन्यासियों को क्या काम करना चाहिये। सब संन्यासी महात्माओं से प्रार्थना है कि वह इस गोष्ठी में भाग लेकर कृतार्थ करें। जो सन्यासी अपने पास से मार्ग व्यय न कर सकेंगे, उनको मार्ग व्यय यहां से दिया जायगा।

– विज्ञानानन्द सरस्वती
गुरुविरजानन्द स्मारक समिति
करतारपुर (जालन्धर)

### निर्वाचन—

–आर्य समाज जगीगंज (वाराणसी)
प्रधान–श्री राम लखण शुक्ल
उप प्रधान–श्री पारसना मिश्र
मन्त्री–श्री राम फेरन आर्य
उप मन्त्री–[illegible] आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री [illegible]

# वेद विमर्श

श्री विद्याभूषण त्रिवेदी, सम्भल, जि० मुरादाबाद

मेरा वेदों मे मन्त्रों की पुनरुक्ति शीर्षक से एक लेख ५ फरवरी १९६९ के आर्यमित्र में प्रकाशित हुआ था, उक्त लेख मे मैंने प्रश्न उठाया था कि वेदो मे बहुत से मन्त्रो की पुनरावृत्ति है इस का कारण क्या है ? यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क मे गत १० वर्ष से चक्कर काट रहा था। मैंने इसके समुचित उत्तर के लियेकई विद्वानो से विचार विमर्श किया किन्तु कोई समुचित उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। अन्त मे मैंने आर्य मित्र मे उक्त लेख इस समाधान के साथ कि आदि मे वेद एक था प्रकाशित किया। लेख के अन्तिम शब्द निम प्रकार हैं :-

'मेरे विचार से उक्त समाधान वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल नहीं है, तथा मन्त्रोकी पुनरुक्ति का यही एकमात्र समाधान समुचित प्रतीत होता है, मेरा वैदिक विद्वानो से निवेदन है कि वह कृपया इस पर विचार करें, तथामन्त्रो की पुनरुक्ति का अन्य कोई समाधान यदि वह उचित समझते हैं तो उसे आर्य मित्र मे प्रकाशित कराने का कष्ट करें।'

उक्त उदाहरण का रेखांकित अंश ध्यान देने योग्य है, इसमें मैंनेस्पष्टतया वैदिक विद्वानों से प्रकृत शंका का समाधान चाहा है। मेरे लेख की समीक्षा मे श्री खेमचन्द जी का लेख वेदों मे पुनरुक्ति शीर्षकसे फरवरी १९६९ ई० की वेदवाणी मे पृष्ठ १८ से २१ तक प्रकाशित हुआ है, विद्वान समीक्षक ने उपर्युक्त उद्धृत रेखांकित अंश के विषय मे कोई समाधान नहीं दिया अपितु समस्त समीक्षा करने के पश्चात् अन्तिम अनुच्छेद मे लिखा कि —

'अब केवल एक आक्षेप यह रह गया कि प्रत्येक वेद मे कुछ मंत्र एक से अधिक बार क्यों आये हैं ? क्या यह पुनरुक्ति नहीं है? इसका समाधान भी इसी प्रकार बहुत सरल सीधा है। यह पुनरुक्ति दोष नहीं है, उसके समाधान पर प्रकाश अन्य लेख में डाला जा सकेगा। वह समाधान भी अति सरल तर्कसंगत और बुद्धिग्राह्य है।

इस विषय मे मेरा विद्वान् समीक्षक से नम्र निवेदन है जिसे आप केवल एक आक्षेप रह गया है कहते हैं मेरा वही एक प्रश्न है जिसका मैं समाधान चाहता हूं, आपने उसका उत्तर देने के स्थान पर मेरे मूल लेख (आर्य मित्र मे प्रकाशित) पर आपत्तियाँ उठाई हैं, मूल विषय को समझने के लिए इन आपत्तियों का निराकरण नीचे दिया जाता है। (पहले श्री खेमचन्द जी का आक्षेप फिर उसका उत्तर लिखा जा रहा है):-

आक्षेप न० १ .- दि० ५-१-६९ के आर्यमित्र मे (जिसे आगे मूल लेख कहा जावेगा यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि वास्तव में वेद एक ही है वह ऋग्वेद है।

उत्तर : मूल लेख की पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं :-

'मेरे विचार से ऐसा प्रतीत होता है कि आदि काल मे वेद एक था जिसमे प्रत्येक मन्त्र एक बार ही पढ़ा गया था, बाद मे उस एक वेद के मंत्रो से विषय तथा पाद व्यवस्था के अनुसार वर्तमान चारों वेदो का संकलन किया गया। इन पंक्तियो से स्पष्ट है कि मैंने आदि काल मे एक वेद की सम्भावना अवश्य मानी है किन्तु उसे ऋग्वेद नहीं माना है, अपितु आदि वेद मे प्रत्येक मंत्र एक बार ही पढ़ा गया था, इस प्रकार उसमे वर्तमान चारो वेदों के सभी मंत्र विद्यमान थे।

आक्षेप नं० २:—सहस्रो मंत्र ऐसे हैं जो ऋग्वेद मे नहीं हैं परन्तु यजु० साम० तथा अथर्व० मे हैं. अत: वह मंत्र ऋग्वेद मे नहोनेसे मेरे मतानुसार ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध नहीं होते।

उत्तर:—मेरे मूल लेख से उक्त आक्षेप किसी भी स्थिति मे प्रामाणित नहीं होते, इस विषय मे आक्षेप न० १ के उत्तर मे मेरे मूल लेख की उद्धृत पंक्तियाँ स्पष्ट हैं। मैंने स्पष्ट लिखा है कि आदि वेद मे प्रत्येक मंत्र एक बार पढ़ागया था अत उसमे वेद के सभी मंत्र थे तथा उसी वेद से वर्तमान चारो वेद संकलित किये गये। इस प्रकार चारो वेदो का कोई भी मंत्र मूल वेद से बाहर नहीं है, अत सभी मंत्र ईश्वरीय ज्ञान हैं।

आक्षेप न० ३—चारो वेदों मे अनेक मन्त्रो मे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का उल्लेख है, एक वेद मानने से इनको क्या कहा जावेगा।

उत्तर—चारो वेदों मे जितने स्थानो पर चारो वेदो का उल्लेख है, उससे अधिक स्थलो पर तीन वेदो का उल्लेख है, अत प्रश्न होता है कि वेद चार है या तीन। इसकी संगति लगाने के लिये जो प्रमाण दिये गये हैं, वह एक वेद प्रमाणित करने मे भी सहायक हैं, विस्तृत विवेचन मूल लेख मे देखना चाहिए।

आक्षेप न० ४—वेद के अंग उपांगो आदि मे चार वेदो का प्रतिपादन है।

उत्तर—उक्त ग्रन्थो मे तीन वेदो का भी उल्लेख है अत इसका समाधान आक्षेप ३ के समान है।

आक्षेप न० ५—ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि वेद चार हैं।

उत्तर—ऋषि दयानन्द की मान्यता पूर्णतया सत्य है महर्षि का कथन है कि केवल संहितायें ही वेद है अत. इस समय चारो वेदो की संहितायें उपलब्ध हैं तथा उनमें मन्त्र ही हैं अत वर्तमान समय मे वेद चार ही है।

विद्वान् समीक्षक का कथन है कि ऋषि दयानन्द ने मन्त्रो की पुनरुक्ति का प्रश्न नहीं उठाया अत इसका समाधान ऋषियो की दृष्टि मे सरल था तथा इसकी चर्चा करना व्यर्थ था। इस विषय मे मेरा निवेदन है कि महर्षि ने केवल उन आक्षेपो का उत्तर अपने ग्रन्थो मे दिया है जो उस समय वैदिक सिद्धान्तों पर किये जाते थे, महर्षि के समय वेदो का पठन-पाठन प्राय लुप्त था अत यह प्रश्न विपक्षियो के मस्तिष्क मे नहीं आया और न ऋषि ने इसका समाधान किया। बहुत से प्रश्न जिनका इस समय कोई मूल्य नहीं है जैसे स्त्री तथा शूद्रो की वेदाधिकार. बाल-विवाह निषेध, किन्तु ऋषि के समय यह गम्भीर प्रश्न थे, अतः इनका उल्लेख ऋषि ने अपने विभिन्न ग्रन्थो मे किया। फिर मेरा प्रश्न जितना सरल समझा जा रहा है उतना सरल नहीं है, मैं इस प्रश्न को कई उच्च कोटि के वैदिक विद्वानो के समक्ष रख चुका हू किन्तु उन्होने टालने का ही प्रयत्न किया, कोई समुचित उत्तर नहीं दिया।

अब यह कहना कि ऋषि ने परित्याज्य ग्रन्थो का उल्लेख सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका दो ग्रन्थो मे किया है इसी प्रकार स्त्री और शूद्र के वेदाधिकार का प्रश्नोत्तर सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका अधिकारानधिकार विषय मे आया है किन्तु इसे किसी विद्वान या आचार्य ने पुनरुक्ति नहीं माना है अतः एक ही मन्त्र का कई स्थलो पर पठित होना भी पुनरुक्ति नहीं, उचित प्रतीत नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उक्त स्थलो का मिलान कीजिए विषय एक होने पर भी शब्दो तथा वाक्य रचना मे अन्तर है, किन्तु मेरे मूल लेख मे उद्धृत मन्त्रो का पाठ सब स्थानो पर एकसा है। यह कल्पना करना कि आदि सृष्टि मे ऋषियो को पूर्ण ज्ञान देने तथा उनकी समाधि भंग न करने के लिए परमात्मा ने एक ही मन्त्र का कई बार प्रकाश दिया न्याय संगत नहीं है। फिर यदि

मन्त्रों का हवाला देने से आदि ऋषियो की समाधि भग होती तो वेदों मे कई ऐसे मन्त्र हैं जिनके अनेक मन्त्रो को प्रसगतः उल्लेख किया है, उनके विषय मे क्या कहा जायेगा। लेख विस्तार-भय से यहां केवल एक उदाहरण दिया जाता है। यजुर्वेद ३२/३ को लीजिए —

न तस्य प्रतिमा ऽ अस्ति
यस्य नाम महद् यशः।
हिरण्यगर्भ ऽ इत्येष मा मा हिं
सीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येषः॥

इस मन्त्र में हिरण्यगर्भ० यजु० २५/१० तथा यजु० २३/१ मा मा हिंसीद यजु० १२/१०२ एवं यस्मान्न जात० यजु० ८/३६ का प्रसग देकर वेद कहता है कि जिस प्रभु का नाम महद्यश है उसकी प्रतिमा नहीं है। ऊपर जिन मन्त्रो का प्रसग दिया गया है, उनका पाठ निम्न प्रकार है—

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य
जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै
देवाय हविषा विधेम॥
यजु० २५/१० तथा २३/१

मा मा हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या
यो वा दिवं सत्यधर्मा व्यानट्।
यश्चापश्चन्द्रा प्रथमो जजान
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
यजु० १२/१०२

यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति
य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया सं रराणस्त्रीणि
ज्योतींषि सचते स षोडशी॥
यजु० ८/३६

मेरा समीक्षक महोदय से निवेदन है कि वह किसी भी आर्ष अथवा अनार्ष रचना का कोई भी ऐसा प्रमाण उद्धृत करे जिसमें [illegible] पर [illegible] एक [illegible] रचना [illegible] है। [illegible] के [illegible] है कि [illegible] है, [illegible] से [illegible] [illegible] ईश्वर की [illegible] [illegible] ईश्वर की छोड़ कई [illegible] दृष्टि से कोई दो [illegible] एक-सी नहीं है, तब ईश्वर के ज्ञान वेद मे जिसमे केवल बीस सहस्र मन्त्र हैं, सहस्रों मन्त्र क्यों अनेक बार पढे गये हैं ? प्रश्न गम्भीर है तथा इस पर शान्त चित्त से विचार करने की आवश्कता है।

यदि इस प्रश्न का कोई अन्य उचित समाधान प्राप्त हो जाता है, तब आदि में एक वेद मानने की कोई आवश्यकता नहीं। मेरा विद्वानों से नम्र निवेदन है कि वह मेरे ५-१-६९ के आर्यमित्र में प्रकाशित को इस लेख के साथ पढ़ने की कृपा करें, तथा केवल मेरे प्रश्न का समुचित उत्तर आर्य-मित्र अथवा वेदवाणी मे प्रकाशित कराने की कृपा करें। यदि कोई अन्य समुचित समाधान उपलब्ध है, तो मेरा समाधान मानने की आवश्यकता नहीं अन्यथा इसे बिना माने कोई चारा नहीं।

## महिला सम्मेलन शर्मा स्मारक मैदान मेरठ

भारत सरकार द्वारा नियुक्त खोसला कमीशन ने चित्रपट पर चुम्बन और नग्नता की जो छूट देने की सिफारिश की है उसे जान-कर देश के संस्कृति प्रेमियों को ही नहीं अपितु चित्रपट पर कार्य करने वाली अभिनेत्रियो को भी महान् आश्चर्य, खेद व रोष हुआ है। वर्तमान चल चित्रो के द्वारा ही नवयुवक, नवयुवतियो का चारित्रिक ह्रास हो रहा है यदि चुम्बन और नग्नता को चल चित्रों का अग बना दिया गया तो फिर उसके कुपरिणामो की कल्पना करना भी कठिन है।

अत मेरठ नगर का यह विशाल महिला सम्मेलन खोसला कमीशन के सुझाव को प्रत्येक दृष्टि से दूषित व निन्दनीय मानकर उसका घोर विरोध करता है और सरकार से अनुरोध करता है कि इन सुझावों को कदापि स्वीकार न करे। तथा जनता से अपील करता है कि इसके विरोध मे आवाज उठाये।

— मेरठ नगर की समस्त
महिलाओ की ओर से

## छोड़ो देश हमारा

राम, कृष्ण, गौतम, दयानन्द, की पावन भूमि भव्य वर वाली,
गुंजित जिसमे मीरा, तुलसी, और सूर की वाणी
जिसके अचल में बहती रहती है जय जाग्रित की सुर सरिता
जननि मनुजता को मगल मय सुखद, सौम्य, कल्याणी
युग युग से रहा विश्व के लिए अटल ध्रुव तारा।
उसे अपावन करने वालो छोड़ो देश हमारा॥
हम हैं भिक्षुक नहीं कि तुमसे भीख पुण्य की चाहें
इष्ट लक्ष्य निश्चितपथ तुमसे क्या पूछेंगे राहें
नहीं प्रलोभन धन का हमको भय न तुम्हारे बल का
क्यों कि हृदय है अविचल अब भी बहुत सबल है बाहें
सावधान छू कहीं न लेना चिर ज्योतित अगारा।
भस्म होने से पहले छोड़ो भारत देश हमारा॥
वैसे तो विश्वास सत्य की होती विजय अमर है
राजनीति के कोलाहल से, दिव्य अशान्ति का स्वर है
आज चुनौती देता तुमको हिमगिरि अटल अचल सेनानी
करता तुम्हे सचेत गरजता हिन्द महा सागर है
इसके पहले काल तुम्हारा बने तुम्हारी कारा।
बन्धु आत्म-रक्षा के हित ही छोड़ो देश हमारा।

—नरेन्द्र कुमार आर्य, जलालाबाद (शाहजहांपुर)

## सार्वदेशिक न्याय सभा का १६-११-६७ का निर्णय तथा उस आधार पर किया ५-८-६८ का पंजाब सभा का निर्वाचन अवैध घोषित

# सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के निश्चय

सार्वदेशिक न्याय सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पाकस्मा (रोहतक) मे हुए २४-११-६३ के निर्वाचन की वैधानिकता का विषय निर्णयार्थ दिया था। न्याय सभा के प्रधान श्री रतनलाल ने अपने अधि-कार क्षेत्र से बाहर जाकर पक्षपात पूर्ण ढग से जो १६-११-६७ को निर्णय दिया उसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी बैठक दिनाक ३१-५-६९ मे अवैध होने के कारण अस्वीकार कर दिया। उस आधार पर अम्बाला छावनी मे ५-५-६८ को हुआ तथा कथित पजाब सभा का निर्वाचन भी अवैध घोषित किया। प्रस्ताव निम्न प्रकार है :-

प्रस्ताव सख्या—११ श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक सभा उप-मन्त्री ने प्रस्ताव किया कि श्री रतनलाल जी प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा का आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पाकस्मा (रोहतक) मे हुए २४-११-६३ के निर्वाचन के सम्बन्ध मे दिया १६-११-६७ का निर्णय उनके अधि-कार क्षेत्र के बाहर होने तथा पक्षपात पूर्ण होने के कारण अमान्य है। अत अस्वीकार किया जावे।

निश्चय हुआ कि प्रस्ताव स्वीकार है।

प्रस्ताव सख्या—१२, श्री धर्मेन्द्र सिंह जी आर्य ने प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के एक पक्ष ने ५-५-६८ को अम्बाला छावनी मे ला० रतनलाल प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा [illegible] पूर्ण तथा अमान्य निर्णय की आड मे [illegible] के [illegible] का उल्ल-घन करके अवैध तथा अस्वीकृत प्रतिनिधियों को [illegible] करके एक नाटकीय ढग से जो निर्वाचन घोषित किया था वह [illegible], अमान्य होने के कारण अस्वीकार किया जावे।

निश्चय हुआ कि प्रस्ताव स्वीकार है।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर अद्भुत दृश्य देखिये

[ आचार्य श्री विश्वश्रवा जी व्यास एम ए वेदाचार्य ]
प्रचार मन्त्री–काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह

समस्त संसार के लिये काशी एक आकर्षण का स्थान सदा से रहा है। यह सत्ययुग मे राजा हरिश्चन्द्र की राजधानी रही है। जहा रोहिताश्व खेला था, जहा सती तारा के गीत गाये जाते है। यह काशी नगरी भागीरथी के प्रवाह के साथ लम्बी बसी है। प्रत्येक स्थान पर रहने वाले को काशी में भागीरथी की धारा समीप पड़ती है। इस भागीरथी के किनारे खड़ होकर पण्डित राज जगन्नाथ ने पौराणिक विचार धारा के आवेश मे गङ्गा-लहरी बोली थी। इन भागीरथी गङ्गा का जल अमोघ औषध है। यात्री यहां से गङ्गाजल ले जाते हैं, जो कभी खराब नहीं होता है।

यह काशी नगरी सदा से विद्वानों की नगरी है। यहा के पण्डित अपनी विद्या के लिये ससार में प्रसिद्ध हैं। गली-गली आज भी यहा सस्कृत विद्यालय हैं। यहां के प्रकाण्ड विद्वान् सड़कों पर पैदल फिरते दिखाई देते हैं, उनके पैरो में जूते भी नहीं हैं। हमे स्मरण है कि बाल्यावस्था मे जिस प्रकार हम इस काशी में नगे पैर घूमते थे आज भी वहा नगे पैर घूमते आनन्द आता है। यहाँ के पण्डित पुस्तक हाथ मे लेकर पाठ नहीं पढ़ाते हैं। इन्हें सब विद्या कण्ठस्थ हैं। यहां के पण्डित चारो वेदों को सस्वर कण्ठस्थ आज भी बोल सकते हैं। ऐसे एक नहीं अनेक पण्डित यहां कण्ठस्थ सस्वर वेदपाठी हैं। यहा सभी विषयो के पण्डित हैं। यहा काशी मे सब विद्या साक्षात् उपस्थित है। काशी मे आने पर उन विद्या के सूर्य विद्वानो के दर्शन आप सब कर सकेंगे।

## काशी के कुछ अद्भुत दृश्य

१–यह काशी नगरी ही ऐसी है, जहां तीन विश्वविद्यालय हैं।

२–यहां आपको देखने को मिलेगा कि एक सात वर्ष का ब्राह्मण कुमार समस्त साम वेद सस्वर बोलता है। यहां शताब्दी में एक विप्रकुमारी छोटी बालिका वेद और ओ३म् पर धारा प्रवाह प्रवचन कर रही होगी।

३–शताब्दी के यज्ञमें चारो वेद सस्वर वेदपाठी बोल रहे होंगे।

४–यहां आप देखेंगे कि ब्राह्मण लोग बिना दियासलाई और अग्नि के स्वय अग्नि प्रज्वलित कर रहे होंगे।

५–यहां शास्त्रार्थ शताब्दी मे आर्य विद्वान् और पौराणिक विद्वान परस्पर प्रेम पूर्वक शास्त्रालाप करेंगे और आर्य समाज के श्रेष्ठी राजा जनक बन कर बैठे होंगे और जनक का दरबार हो रहा होगा और काशी की परम्परा के अनुसार वे आर्य सेठ राजा जनक बने हुए समस्त विद्वानों का जिन्हो ने शास्त्रालाप मे भाग लिया है उन सब को ही प्रत्येक दिन पुरस्कृत कर रहे होंगे।

६–वहा नाना देश की महिलाएँ और नाना धर्म की महिलाएँ अपनी-अपनी महिला आचार सहिता बता रही होंगी।

७–काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के मञ्च पर सब राजनीतिक दल अपनी-अपनी विशेषता का वर्णन कर रहे होंगे।

८–शताब्दी की शोभायात्रा मे एक भीड़ की भीड उन महिलाओ की होगी जो नाना विषयो की आचार्य परिक्षाएँ इस काशी को पास हैं। वह एक प्रकार की महर्षि की विजय पताका होगी।

९–महर्षि ने अपने ब्रह्मचर्य योग और विद्या बल पर इस काशी मे आज से एक सौ वर्ष पूर्व विजय प्राप्त की थी अब एक सौ वर्ष बाद ऋषि के उत्तराधिकारी आर्यविद्वान् उसी काशी मे अपने सिद्धान्तो के लिए पहुच रहे हैं। अभागा ही कोई होगा जो उसको देखने काशी न पहुचेगा।

१०–वहां शास्त्रार्थ शताब्दी पर महर्षि के शिष्य राजवश यज्ञके यजमान बने यज्ञकर रहे होंगे।

११–अद्भुत दृश्य उस काशी मे आप देखेंगे कि एक दिन यज्ञमे केवल महिलाएँ ही पुरोहितो के आसनो पर बैठी होंगी, और राष्ट्र बहिन देवी इन्दिरा प्रधान मन्त्री भारत राज्य यजमान बनी बैठी होंगी हम इनका यत्न कर रहे हैं।

१२–शताब्दी पर एक दिन ऐसा भी दृश्य होगा, कि ईश्वर की सत्ता मानने वाले ईसाई, मुसलमान, पौराणिक और आर्य विद्वान् सब एक मच पर बैठे ईश्वर की सिद्धि कर रहे होंगे और दूसरे मञ्च पर सब नास्तिक लोग बौद्ध कम्युनिस्ट आदि बैठे होंगे।

१३–काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर "सस्कृत भाषा अमर रहे" के नारे लग रहे होंगे और सब उत्तर-दक्षिण भारत के लोग संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा करेंगे।

१४-वहा काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर एकत्र हुए भारतीय धर्मो के आचार्य मिलकर भारत की हरिजन समस्या और धर्म परिवर्तन समस्या पर गम्भीर विचार कर के आर्य जाति की रक्षा के उपायो पर विचार करेंगे।

१५–महर्षि ही केवल इस धरती पर ऐसे पैदा हुए जिन्होने इस युग मे फिर से घोषणा की कि सब ससार के मनुष्य एक परिवार के है। भारत-माता के ही सपूत दूर दूर जाकर मे पहाडो समुद्रो को पार करके बस गये, और एक दूसरे को भूल गये हैं, कोई अपने को अँग्रेज कहता कोई अपने को जापानी और चीनी पर । है, सब भारत-माता के ही सब लाल। यह बात ससार के सब मनुष्यो को बुलाकर समझा कर फिर सब ससारवासी लोगो के मुख से काशी मे जगत् जननी भारत-माता की जय बुलवाई जा रही होगी, चलो काशी चलकर देखो।

१६–आज पाश्चात्य विचारधारा ने एक चकाचौंध पैदा की है कि वेद गडरियो के गीत हैं। वेद भगवान् की कृति नहीं है। आओ काशी चलकर देखो कि वहा प्रकाण्ड पाण्डित्य वाले आर्य विद्वान् और पौराणिक विद्वान् मिलकर पाश्चात्य विद्वानो मे लोहा ले रहे होंगे, और वेद को कल्याणी वाणी को प्रभु की वाणी सिद्ध कर रहे होंगे।

## परस्पर सहयोग से सिद्धि

यह अवसर ऐसा है कि सब आर्य मिलकर पूरी शक्ति अपनी लगा देवें। पर दुख है कि कुछ लोग इस मे विघ्न डाल रहे है। कुछ मुकदमे बाज आर्य लोग इसको सहन नहीं कर रहे हैं। और कुचेष्टाएँ कर रहे हैं। केवल इस लिये कि इस समारोह के करने वालों का यश न हो जावे। ऐसे तत्त्वों का ऋषि भक्त आर्यों पर कोई प्रभाव नहीं है। इसमे जो सम्मिलित न होगा वह ही पछताएँगा। और जनता की निगाह मे गिर जावेगा। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर विजय आर्य समाज की होगी, यश आर्य समाज का होगा। किसी व्यक्ति का नहीं। और याद रखें, मै फिर समझाता हू, कि जो आर्य-जनता की निगाह में गिर जावेगा, उसकी रक्षा नियम उपनियम न कर सकेंगे। कन्या का विवाह होगा। जो बूढी दादी और मामा चाचा उसमे सम्मिलित नहीं होंगे, दुनिया उन पर ही थूकेगी। प्रात काल का भूला सायकाल घर पर आ जावे, वह भूला नहीं कहाता है। अभी समय है आओ मिलकर बैठ जाओ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने ही मथुरा दीक्षा शताब्दी की थी क्योंकि मथुरा उत्तर प्रदेश मे थी और काशी भी उत्तर प्रदेश मे होने से मथुरा शताब्दी से अधिक भीड होगी जो वहा नहीं पहुचेगा उसी का इतिहास काले अक्षरो से लिखा जावेगा। और आप भक्तो का स्वर्णाक्षरों से।

★

सार्वदेशिक का--

# भूख हड़ताल और शरारती तत्व

ले०—आचार्य श्री विश्वश्रवाः व्यास एम० ए० वेदाचार्य
प्रचार मन्त्री, महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

आज मैंने दिल्ली से प्रकाशित होने वाले सार्वदेशिक पत्र मे दो लेख पढ़े। एक लेख भूख हड़ताल के उपहास मे है और दूसरा लेख हमारे भाई शिव चन्द्र जी का शरारती तत्वो के बारे मे है, जिस मे उन्होने अनेक बातों को लिखते हुए काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर भी लेखनी उठाई है। यदि वे काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर लेखनी न उठाते तो मैं कुछ न लिखता। मैं उन की लिखी अन्य किसी बात पर टीका टिप्पणी नहीं करता, केवल काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर जो उन्होंने लिखा है उसी पर कुछ लिखूंगा।

## भूखहड़ताल

भूख हड़ताल वाला लेख किस का है उस पर लेखक का नाम नहीं, अतः उस को मैं सपादकीय समझता हू। सपादक है ला० रामगोपाल जी शाल वाले और प. रघुनाथ प्रसाद जी पाठक। पर यह लेख इन दोनों मे से किसी का नहीं है यह लेखनी है आर्यसमाज के भीष्म पिता श्री ला० चतुर सेन जी गुप्त की। ला० चतुरसेन जी गुप्त बड़े गम्भीर प्रज्ञ हैं और उनका दृढ़ विश्वास है कि आर्य समाज सर्वनाश की ओर जा रहा है, अब उसे बचाने वाला कोई नहीं। उस लेख में भूख हड़ताल की निन्दा की गई है। और उद्देश्य है कि आर्यजगत् के तपस्वी नेता आर्यसमाज के सच्चे हित-चिन्तक महात्मा आनन्दभिक्षु जी की संभावित भूख हड़ताल के व्यापी प्रभाव को दबाना। और आश्चर्य है कि सार्वदेशिक के उसी २१ सितम्बर १९६९ के अङ्क मे भगवान् देव आर्य की अनशन की घोषणा प्रकाशित की है और मुख-पृष्ठ पर कुछ और दूसरे पृष्ठ पर कुछ। क्योंकि भगवानदेव आर्य की भूखहड़ताल आप के पक्ष मे है अतः उस से तो प्रेरणा मिली है और महात्मा आनन्द भिक्षु जी की संभावित भूख हड़ताल से डर कर यह लिखना कि यह बल प्रयोग है। बड़ा सुन्दर सम्पादकीय है।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अब कोई अच्छा सलाहकार सार्वदेशिक में नहीं है। साहित्य का सिद्धान्त है कि दो परस्पर विरोधी एक साथ नहीं रखे जाते। श्रृंगार और शान्त एक दूसरे के बाद नहीं आ सकते बीच मे कोई और रस डालना पड़ता है। जैसे भर्तृहरि ने श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक के बीच मे नीति शतक डाल दिया। अतः सार्वदेशिक पत्र को उचित यह था कि योगाधियोगराज भगवानदेव आर्य की भूख हड़ताल की घोषणा करके उससे आर्यजगत् को प्रेरणा देते फिर एक दो अङ्क सार्वदेशिक के निकाल कर फिर किसी अङ्क में भूख हड़ताल की निन्दा करते। तब तक लोग पिछले लेख को भूल जाते।

मुझे इस बात का दुःख है कि जिस दिन यह सार्वदेशिक का अङ्क छपा था उस दिन मैं दिल्ली मे नहीं था, अन्यथा मैं पैर पकड़ कर डा० रामगोपाल जी से कहता कि भगवानदेव आर्य को योगिराज लिख कर योगिराज शब्द के साथ मजाक मत करो और मुझे विश्वास है कि वे मेरी बात मान जाते क्योंकि मैं उनके हृदय को जानता हू। जो ला० रामगोपाल शाल वाले प्रातः घर से निकलते हैं और चार रोटियां थैले मे डाल लेते हैं जहां दोपहर होता है, उन्हे खाकर ठंडा पानी पी लेते हे, और दिन भर देशधर्म का कार्य करते रात को घर पहुचते हैं क्या उनकी सम्मति से नवयुवक कार्यकर्ता भगवान् देव को योगीराज लिखा गया होगा ? मै ऐसा कभी नहीं मानता। यह सब खेल उस व्यक्ति का है जो सार्वदेशिक के कार्यालय में आकर शीशा छोड़ जाता है, उसने न जाने कितनो को बेवकूफ बनाया है। मैं पूछता हू पितामह ला० चतुर सेन जी और आर्य नेता ला० रामगोपाल जी शाल वालो से कि क्या यह सत्य है कि भगवान् देव आर्य योगिराज हैं। दुःख है आर्यसमाज की लड़ाई का इतना स्तर गिर गया है कि अब खिलवाड़ पर सब उतारू हो गये हैं।

आगे सुनिये—मैं भूख हड़ताल के पक्ष मे नहीं हू। पर आप किस मुह से भूख हड़ताल के पक्ष में नहीं हैं। जब स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने आर्यसमाज दीवान हाल में भूखहड़ताल की तब तो उन के चमर डुलाये थे, और अब भूख-हड़ताल बुरी हो गई। उन्हीं स्वामी रामेश्वरानन्द जी को जो अनेक भूखहड़ताल के लिये प्रसिद्ध है, अपनी सार्वदेशिक मे प्रतिष्ठित सन्यासियों में चुनते हो और भूख-हड़ताल करने वालो का उपहास करते हो। याद रखना स्वामी रामेश्वरानन्द जो बहुत तेज सन्यासी है। उनकी अभ्यस्त भूख-हड़ताल की मजाक करोगे तो वे तुम्हें छोड़ कर भाग जावेंगे अभी तो विदेह जी की शरण ली है फिर किस की लोगे।

### भूख हड़ताल का इतिहास

भूख हड़ताल स्टन्ट बाज करते हैं। अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिये भूख हड़ताल करके लेट जाते हैं। दुनिया मूर्ख है। वे भूख हड़ताली नेता बन जाते हैं बड़े-बड़े नालायक भूख हड़ताल करके नेता बन गये हैं। फिर भी मैं सम्पादक सार्व देशिक से पूछता हू कि जो यतीन्द्रदास और पोरी श्री रामुलु भूखहड़ताल में मर गये क्या वे भी स्टन्ट बाज थे। स्टन्ट बाज वे होते हैं जो भूख हड़ताल करके रात को छिप कर खाते रहते हैं, जैसे मास्टर तारासिंह। कुछ सच्चे दुःखित हृदय व्यक्ति होते हैं जिनसे सर्वनाश सहा नहीं होता है। सब उपाय करके थक जाते हैं, अन्त में उन्हे अनशन का सहारा लेना पड़ता है कि इस सर्वनाश को देखने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है। उन सच्चे तपस्वी देश धर्म चिन्तक हृदय पीड़ा वाले व्यक्तियों की भूख हड़ताल को गलत नहीं कहा जा सकता। महात्मा आनन्द भिक्षु जी को प्रसिद्धि की आवश्यकता नहीं है उन के चरण सब धरती वैसे ही चूमती है। वे दुखी हैं। उन से सहन नहीं होता अतः वे इन पार्टी बाजो को अपनी मौन से ही शिक्षा देने की सोच रहे हैं। पतिव्रता नारी अन्याय देखते-देखते जब तंग आजाती है, उसे दुनिया मे जब कहीं सहारा नहीं मिलता तब अपने जीवन की लीला ही समाप्त कर देती है। भीष्म पितामहने महाभारत की संभावित लड़ाई से पूर्व ही कह दिया था कि-

**श्वः-श्वः पापिष्ठ दिवसा पृथिवी गतयौवना॥**

अर्थात्-आगे आगे पापी दिन आ रहे हैं और पृथिवी का यौवन समाप्त हो गया है।

श्री पाठक जी सार्वदेशिक के मुखपृष्ठ पर लिखते हैं कि इस प्रकार अनशनों के सिलसिले का कहीं अन्त नहीं होगा। यह सत्य है, पर इतना मेरे कहने से अपने लेख मे पाठक जी और जोड़ लें कि स्टन्ट बाजों के अनशनों का अन्त नहीं होगा। जिन्हे पार्टी बाज अनशन पर जानबूझ कर बैठावेंगे और फिर प्रार्थना कर लेंगे कि हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप भूख हड़ताल तोड़ दें। इस मिली भगत का अन्त कभी नहीं होगा। पर आर्यसमाज के इस यादव युग को देख कर अपने जीवन का अन्त क्या वे व्यक्ति करेंगे जो पार्टी लाइन पर भूख

हड़ताल के लिये पेशेवर बैठाये जावेंगे।

भूख हड़ताल सर्वथा अशास्त्रीय भी नहीं है। मै श्री पाठक जी से और चतुर सेन गुप्त जी से कहूंगा कि रामायण के पृष्ठो को देखें। भरत चित्रकूट पर्वत पर बस रहे भैया राम को बुलाने जब गये और राम ने घर लौटना नहीं माना तब भरत ने छोटे भाई शत्रुघन से कुशाएं मंगाई और कुशाओं पर भरत लेट गया और घोषणा कर दी कि जब तक भाई राम घर चलने को हां नहीं कहेंगे मैं न भोजन करूँगा और न जल ग्रहण करूँगा। भरत ने कहा कि मै राजा नहीं बनूंगा चाहे मर जाऊं। सब घबडा गये कि अब भरत मरा। वहां झिली भगत नहीं थी कि कौशल्या ने भरत को भूख हड़ताल पर लिटा दिया तो प्रार्थना करली हो कि बेटा भरत भूख हड़ताल छोड़ दो और भरत उठ बैठे हों। यह नाटक तो पार्टी बाज किया करते है। आखिर भूख हड़ताल के आगे राम झुके और भरत नहीं झुका भरत राजा नहीं बना और राम को भी चरण पादुका राज सिंहासन पर रखने को देनी पड़ी। क्या मेरे सार्वदेशिक पत्र के लेखक को यह भूख हड़ताल नहीं भी और यह क्या था। हां इतना अन्तर अवश्य है कि वहां दोनों राम और भरत राजा बनना नहीं चाहते हैं और यहां विज्ञप्तियों पर विज्ञप्तियां निकल रही हैं कि हम मन्त्री प्रधान हैं और वे कह रहे हैं कि हम मन्त्री और प्रधान हैं। हम को अब यह दीख रहा है कि यादवो ने जब शराब पी कर परस्पर लड़ना प्रारम्भ किया था सब ही मारे गये। केवल तीन मरने से बचे थे। एक सात्यकि और दूसरे कृष्ण और तीसरे बलराम। इसी प्रकार आर्यसमाज के इस यादव युग में भी तीन ही बचेंगे एक तो आर्यसमाज की बिल्डिगे और दूसरे आर्यसमाज के नाम पर चलने वाले स्कूल कालिज और तीसरे सार्वदेशिक के सबसे अन्दर वाले कमरे में रहने वाले चतुर खिलाड़ी की न्यायसभा।

## भाई शिवचन्द्रजी का शरारती तत्व

भाई शिवचन्द्र जी ने इसी २१ सितम्बर वाले सार्वदेशिक के अङ्क मे एक लेख लिखा है जिसका शीर्षक है 'आर्यजनता शरारती तत्वों से सावधान रहे' हम उस मे लिखी अन्य बातों से सम्बन्ध नहीं रखते हमारे शिर पर इस समय काशी शास्त्रार्थ शताब्दी है। इस पर लेखनी भाई शिविचन्द्र जी को नहीं उठानी चाहिये थी। अब उठाई है तो सुन लो। श्री शिवचन्द्र जी बड़े गौरव से कहा करते थे कि मुझे दयानन्द प्यारा है, पर्टी नहीं। और घन्टों कहा करते थे कि मैं दयान्द के आगे सब पार्टी पालिटिक्सको बलिदान कर सकता हूं। इस मे तो भाई शिवचन्द्र तुम फेल हो गये। ऋषि दयानन्द की दुन्दुभि काशी मे बज रही है, संकड़ो विद्वान् काशी शास्त्रार्थ की तैयारी कर रहे हैं कि एक बार मेरे गुरु दयानन्द ने काशी जीती अब भी दुबारा हम जीतेंगे। पचास शास्त्रार्थ महारथी सारे भारत मे दिग्विजय के लिये सनद्ध हो रहे हैं। एक मास सारे देश में दिग्विजय यात्रा होगी। १८ शास्त्रार्थ काशी मे होंगे। अगर यह शिवचन्द्र दयानन्द का एक भक्त होता तो अब तक काशी पहुच गया होता और यह कभी नहीं लिखना जो सार्वदेशिक में लिखा है जिन शब्दों को में दुबारा लिखना भी नहीं चाहता। सुनो भाई शिवचन्द्र कहानी—

मेरे एक मित्र डी० ए० कालिज लखनऊ में प्रोफेसर अयोध्या प्रसाद द्विवेदी हैं मेरे वे बचपन के साथी है, जिन्हे ग्रामीण भाषा मे लगोटिया यार कहते हैं उनके प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ उसके नाम करण संस्कार समारोह मे मेरे मित्र ने मुझे नहीं बुलाया। मैं निमन्त्रण की प्रतीक्षा करता रहा। जब निमन्त्रण नहीं आया तब तग आकर मैं स्वय पहुच गया। मुझे आया देख कर मेरे मित्र के आंखो मे आंसू आगये। मैने कहा कि तूने मुझे क्यों नहीं बुलाया। मेरे मित्र अयोध्या प्रसाद ने कहा कि तुम्हारे प्रेम की परीक्षा करनी थी कि तुम मेरे इस प्रसन्नता के अवसर पर बिना बुलाये भी आये बिना रह सकते हो या नहीं। भाई शिवचन्द्र, इस समय ला० रामगोपाल जी का सलाहकार मैं नहीं हू अन्यथा मैं सलाह देता कि लाला जी, समाचार पत्रो में छाप दो कि ऋषि का शुभ कार्य काशी मे है। आर्यसमाज की मानमर्यादा का प्रश्न काशी मे है सब सहयोग दो और मैं भी पहुचूंगा। इस घोषणा के निकलते ही सारे आर्य जगत् के समग्र लाला जी के चरण पर झुक जाते पर क्या करूं आर्यसमाज की तकदीर फूट गई है जो लाला जी के सलाहकार अब पार्टी बाज हैं।

## बूढ़ी दादी नाराज है

शास्त्रार्थ शताब्दी की योजना हमने नहीं भेजी। लोग आप से पूछ रहे हैं। धन्य हो महाराज। आर्यमित्र के प्रत्येक अङ्क मे काशी शास्त्रार्थ की योजना छप रही है उसे लोग पढ रहें हैं और पूछ रहे हैं आपसे। क्यो। सुनो स्थिति यह है कि—

कन्या का पिता विवाह रचाए बैठा है और बूढ़ी दादी रूठी बैठी है। कुछ लोग बूढ़ी दादी से पूछ रहे हैं। बाकी सब विवाह मे समिलित हैं। जो दादी से पूछ रहे हैं वे भी विवाह मे समिलित होना चाहते हैं पर पूछ रहे हैं केवल इसलिये कि दादी नाराज न हो जावे। कन्या के पिता को भी किसी ने शक डाल दिया है कि यह बूढ़ी दादा सौतेली है। कन्या का पिता भी सोचता है कि यह दादी अगर सगी दादी होगी तो विवाह मे बिना आए नहीं रहेगी। और अगर सौतेली होगी तो लोगो को वह कहेगी कि कोई इस मे सहयोग नहीं देगा और बैठी कुढती रहेगी और बददुआ देती रहेगी।

इसके अतिरिक्त हमें आज यह देखने को मिल रहा है कि किन्हे दयानन्द प्यारा है और किन्हें दयानन्द की अपेक्षा पार्टी अधिक प्यारी है। हमसे कहते हो कि हमने निमन्त्रण नहीं दिया हम ने वहां राजा महाराजाओं को यज्ञ का यजमान बनने को निमन्त्रण भेजा वहां सबसे पहले भाई प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास को यजमान बनने के लिये निमन्त्रण भेजा और आज तक उसे जवाब नहीं मिला। अब हमे समाचार मिला है कि श्री प्रताप भाई ने मुझे उत्तर कुछ दिया अवश्य है पर मेरी डाक याला के कारण स्थानान्तर पर मगानी पड़ती है और प्रताप भाई का वह लिफाफा किसी पर्टी बाज ने छिपा लिया।

इसके अतिरिक्त एक समस्या है कि तुम उस चतुर खिलाड़ी के कहने मे आकर यू० पी सभा के निर्वाचन को अवैध कहते हो इस लिये तुमने वृन्दावन मे निर्वाचित प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक में घुसने नहीं दिया तो तुम्हारी निगाह मे वृन्दावन के निर्वाचित सब अवैध हैं तो वे अवैध सभा द्वारा चुने मन्त्री श्री प्रेम चन्द्र शर्मा और अवैध प्रधान श्री शिवकुमार शास्त्री जो यू० पी० सभा के हैं वे तुम्हें निमन्त्रण कैसे देवें। पहले आप लिख कर भेजिये कि हम आप को वैध मानते हैं तब प्रश्न उठे। हमारे आगे कठिनाई नहीं है क्योंकि हम सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन को अवैध मानते हुए भी निमन्त्रण इस रूप मे देसकते हैं कि पहिले भी ला० रामगोपाल जी ही मन्त्री थे और प्रताप भाई ही प्रधान और अब भी। हमारे तो मन्त्री प्रधान आप हैं ही चाहे वर्तमान न सही भूत पूर्व सही। पर आप के समक्ष हमारे भूत पूर्व तो अब भूत पूर्व ही हो गये। आप की निगाह मे तो यदि हमारे निर्वाचन अवैध हैं तो पं० सच्चिदानन्द शास्त्री आप की निगाह मे वैध हैं, तो आप को तो वे ही निमन्त्रण देंगे।

याद रखो हमने वाराणसी में शास्त्रार्थ शताब्दी के उस विशाल मैदान मे १२ आर्य प्रतिनिधि सभाओं के कैम्प और सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के कैम्प लगा देने हैं। संसार के मनुष्य वहां हमारी सामूहिक शक्ति को देखने आवेंगे और हम दिखा-

[शेष पृष्ठ १३ पर]

# मैलेरिया (फसली बुखार) और हवन यज्ञ

—स्व० डा० श्री फुन्दनलाल जी अग्निहोत्री एम० डी. [लन्दन]
मेडिकल आफिसर टी वी सेनेटोरियम

(२१ सितम्बर से आगे)

इसी प्रकार जिस मनुष्य के शरीर के परमाणु जैसी गति करते हैं, वैसी ही गति वाले रोग या स्वास्थ्य के परमाणुओं का उसकी ओर खिंचाव हो जाता है और विरोधी गति वाले दूर भागते हैं। अतः मैलेरिया के मच्छर भी उसी मनुष्य पर अधिक आक्रमण करते हैं, जिसके शरीर के परमाणुओं की गति मैलेरिया के कीटाणुओं के अनुकूल होती है, अर्थात् जिसके भीतर रोग ग्रहणशक्ति विद्यमान हैं, और जिसके भीतर तुलसी पत्र, युकिलप्टस, जायफल, गिलोय, कपूर आदि के मैलेरिया नाशक परमाणु विद्यमान हैं, उस पर प्रथम तो इनकी प्राकृतिक नियमानुसार आक्रमण करेंगे ही नहीं, और यदि करेंगे भी तो निरोधक शक्ति होने से विष का प्रभाव नष्ट हो जाएगा। आपने बहुतों को कहते सुना होगा कि मुझे मच्छर बहुत काटते हैं, जबकि दूसरे लोग उसी स्थान पर नंगे सोते हैं।

(४) अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मैलेरिया दुर्गन्धित, सील वाले और अँधेरे स्थान में अधिक होता है और दुर्गन्धि से पित्त बिगड़कर वमन होता है। हवन से ये सब बातें दूर होती प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। अनुभव करके देख लीजिए।

(५) किसी भी रोग के कीटाणु जब मनुष्य के शरीर मे प्रवेश करते हैं तो हमारे शरीर की रोगनिवारक शक्ति—जिसे हमारे पूर्वज ऋषि मुनि तो सर्वदा से जानते थे और प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य द्वारा नित्य बढ़ाया करते थे, और जिसके सम्बन्ध मे वर्तमान विज्ञान में भी कुछ समय से खोज होने लगी है, जिसे डाक्टरी मे (Immunity)—इम्युनिटी कहते हैं—रोग को दूर भगाने के लिए एक प्रकार का उफान खाया हुआ रस, तथा रक्त के श्वेत कणों की सेना भेजती है जिसे डाक्टरी मे (Phagocytosis)—फैगोसाइटोसिस कहते हैं। यदि यह रस और रक्त के श्वेतकणों की सेना लडाई मे विजयी हो जाती है तो रोग कीटाणु वहां ही समाप्त हो जाते हैं और हमें ज्ञात भी नही होता कि हम पर किसी रोग का आक्रमण भी हुआ था। पर यदि यह पराजित हो जाती है तो रोग हमारे शरीर पर अधिकार जमा लेता है। अन्वेषण से यह भी सिद्ध हो चुका है कि रोग निवारक शक्ति (इम्युनिटी) मनुष्य मे कुछ तो जन्मकाल से साथ आती है और कुछ उत्तम भोजन, शुद्ध सुगन्धित वायु आदि के मिलने से उत्पन्न होती है। अतः हवन में रोगनिवारक औषधियों के प्रयोग से जहां उनकी रोगनिवारक शक्ति बढ़ेगी, वहां वह उफान रस भी अधिक उत्पन्न होगी क्योंकि गर्मी से उफान शीघ्र आता है। इस प्रकार मैलेरिया के कृमि उन पर आक्रमण करने पर भी रोग उत्पन्न करने में असफल रहेंगे, जो मैलेरिया नाशक ओषधियों से हवन करेंगे।

(६) जिस प्रकार हमारे शरीर के ऊपर खाल का खोल चढ़ा है उसी प्रकार शरीर के भीतर की ओर मुलायम खाल का अस्तर लगा है जो गले से लेकर आँतों के निचले भाग तक विशेष रूप से तर रहता है। जिस मनुष्य की यह खाल और अस्तर बिलकुल ठीक है। और उस पर कोई खराब नहीं है वह स्वस्थ मनुष्य है और उस पर मैलेरिया तथा किसी भी संक्रामक रोग का आक्रमण नहीं हो सकता। इस वैज्ञानिक नियम को समझने वाले बुद्धिमान अनुभवी चिकित्सक सर्वदा तेज रेचक औषधि का निषेध करते हैं क्योंकि इसके प्रयोग से आँतों के अस्तर मे खराशें उत्पन्न होती है। जब रोग कृमि शरीर मे प्रवेश करते हैं तो इन्हीं खराशों द्वारा रक्त मे इस प्रकार फैल जाते हैं। जिस प्रकार प्रवेश (इजेक्ट) कराई हुई औषधि।

अब यदि किसी कारण वश हमारी इस खाल या अस्तर में कोई खराश हो गई तो बाहर की खराश की चिकित्सा तो अन्य उपायों से भी सम्भव है, सरल भी है। पर भीतर का प्रबन्ध कठिन है। हवन करने से जब हमारे भीतर घी, काफूर, गूगल आदि के सूक्ष्म परमाणु पहुचेंगे तो उस खराश को किस शीघ्रता से भर देंगे इसे समझना कुछ कठिन नहीं है, जबकि इन्हीं वस्तुओं से बाहर की खराश भरने का अनुभव प्रत्येक मनुष्य करके प्रत्यक्ष देख सकता है।

(७) हवन के द्रव्यों का जब जब आधुनिक वैज्ञानिक ढंग पर परीक्षण किया गया तो परिणाम सन्तोष जनक निकला है जिससे सिद्ध होता है कि नित्य हवन करके आप न केवल मैलेरिया ज्वर बल्कि अन्य अनेक रोगों से भी अपने आप को, अपने कुटुम्ब को, पड़ोसियों को बचा सकते हैं। कुछ प्रमाण हम नीचे देते हैं :—

फ्रांस के वैज्ञानिक, प्रसिद्ध रसायनशास्त्री प्रो० टिलबर्ट कहते हैं कि 'जलती हुई खांड के धुएँ मे वायु शुद्ध करने की बडी शक्ति है।' 'इससे हैजा, तपेदिक, चेचक आदि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है।'

डाक्टर टाटलिट साहब ने मुनक्का, किशमिश आदि कुछ सूखे फलों को जलाकर निरीक्षण करके मालूम किया है कि इनके धुएँ से टाइफाइड (मोतीझरा) के कृमि आधे घंटे मे तथा कुछ दूसरे रोगों के कृमि घण्टे दो घण्टे मे मर जाते हैं।

मद्रास के सेनेटरी कमिश्नर डा० कर्नल किंग आर० एम० एस० ने कालेज के विद्यार्थियों को उपदेश दिया कि 'घी और चावल में केसर मिला कर जलाने से रोग के कृमियों का नाश होता है।'

फ्रांस के डा० हैफकिन का कहना है कि 'घी जलाने से रोग कृमि मर जाते हैं।'

हवन यज्ञ की इस उपयोगिता को जानकर ही वैदिक सस्कृति के संरक्षक और संपोषक ऋषिमुनियों ने हवन को दिनचर्या और ऋतुचर्या मे आवश्यक नित्यकर्म माना है। वैदिक संस्कृति के प्रबल समर्थक ऋषि दयानन्द ने नित्यप्रति यज्ञ न करने वालों को पापी बताया है। यदि हमारा आचरण ऋषियों की इस व्यवस्था के अनुकूल हो तो हम मैलेरिया आदि अनेक रोगों से मुक्त रह कर स्वस्थ और सुखी बन सकते हैं।

जो सज्जन चाहे मैलेरिया नाशक हवन सामग्री का विशेष नुस्खा अथवा सब रोगों से सुरक्षित नुस्खा रखने वाली ऋतु अनुकूल हवन सामग्री के नुस्खें खर्चे के ०·३५ के डाक टिकट सहित, पता लिखा ९"×४" का बड़ा लिफाफा 'स्वास्थ्य भण्डार, वनस्थली, जयपुर' को भेजकर मुफ्त मंगा सकते हैं। प्रेषक।

---

[ पृष्ठ २ का शेष ]

ईशावास्यमिद सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा. मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

(यजु० ४०/१)

इस संसार मे जो कुछ भी है उसमे परमात्मा बसा हुआ है। इसलिये इस जगत् को त्याग भाव से ही भोगना चाहिये। इसमे फसना नहीं चाहिये और लिप्त नहीं होना चाहिये। संसार की ओर खिंचना नहीं चाहिये लेकिन इससे मुकाबला करना चाहिये।

*

## वेद प्रचार सप्ताह

—निम्न आर्य समाजों ने २७ अगस्त से ४ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया।

—सम्पादक

—आर्य समाज मुजफ्फर पुर, आर्य समाज जलाला बाद (शाहजहाँ पुर) आर्य समाज ठठिया। आर्य समाज लक्ष्मीपुर (पुरनिया), आर्य समाज हसनपुर (मुरादाबाद), आर्य समाज कैन्टूनमेंट सदर बाजार लखनऊ ; आर्य समाज (बी० ब्लाक) गोविन्द नगर कानपुर, आर्य समाज वेदमंदिर रेल्वेकालोनी, असुरन गोरखपुर, आ० स० डीजल रेल इञ्जन कारखाना वाराणसी, आर्य समाज बिधूना (इटावा), आ० स० लातूर, महाराष्ट्र,

## शुद्धि-संस्कार

२७ सितम्बर को आर्य समाज इटारसी ने सुशीला नाम की ईसाई युवती को शुद्धि करके उसका विवाह श्री नरेन्द्र कुमार मालवीय होशंगाबाद से कर दिया।

—मन्त्री

## गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में शोक सभा

गुरुकुल विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के [illegible] भूषण उपाधि धारी भावी स्नातक श्री अवनीन्द्र कुमार की दिनांक २८ सितम्बर सन् ६९ को प्रातः साढ़े पांच बजे मृत्यु हो जाने पर कुल के समस्त कार्यकर्ताओं एवं ब्रह्मचारियों की एक शोक सभा आयोजित हुई, जिसमें दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई, और शोक सन्तप्त परिवार [illegible] दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

—नरदेव स्नातक [illegible]
[illegible]

## [illegible]

आर्य समाज [illegible] लखनऊ-३ के वेद प्रचार सप्ताह [illegible] की यह साधारण सभा [illegible]-१९६९ को लखनऊ आर्य समाज [illegible] के कर्मठ, कार्यकर्ता और आर० डी० एस०

ओ० समाज के कर्णाधार श्री मुल्क राज सोबती के असामयिक और आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है और परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करती है। ईश्वर शोक सतप्त परिवार को दुःख सहन की क्षमता दे। आर्य क्षेत्र में श्री सोबती की सराहनीय सेवायें सदा याद रहेंगी।

—ज्ञान कृष्ण अग्रवाल, मन्त्री

## श्री मथुरा प्रसाद टण्डन का देहान्त

दुःख है कि बहराइच आर्य समाज के प्रमुख कार्य-कर्त्ता और कर्मठ सदस्य श्री मथुरा प्रसाद जी टण्डन का ७२ वर्ष की आयु में अकस्मात हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जब शुद्धि आंदोलन चलाया तो बहराइच में उस आंदोलन ने जो सफलता प्राप्त की अन्य स्थानों की अपेक्षा विशेष सराहनीय थी। उस कार्य में टण्डन जी का ही विशेष उत्साह था।

टण्डन जी बहराइच जिला के लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। आप के शोक में आर्य संस्थाएँ बन्द रहीं।

—श्याम लाल श्रीवास्तव

## शोक प्रस्ताव

२५-८-६९ को स्व० मथुरा प्रसाद जी टंडन के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज बहराइच के समस्त अधिकारी एवं सदस्य गण सामूहिक रूप से हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं उनके शोक सतप्त परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मन्त्री

## ठाकुर सरदार सिंह का देहान्त

महात्मा अमर स्वामी जी महाराज (पूर्व नाम शास्त्रार्थ केसरी श्री अमर सिंह जी आर्य पथिक) के ज्येष्ठ भ्राता जी ठाकुर सरदार सिंह जी उपदेशक का ८१ वर्ष की आयु में रक्षा बन्धन श्रावणी पूर्णमासी को अरनिया में देहावसान हो गया।

श्री उपदेशक जी (प्रायः वह उपदेशक जी के ही नाम से प्रसिद्ध थे) इतिहास के मर्मज्ञ थे, प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास उनकी वाणीपर नृत्य करता था, वे अच्छे प्रभाव शाली वक्ता थे।

—ओम प्रकाश शर्मा

—उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल की एक बैठक श्री आनन्द प्रकाश जी वाराणसी की अध्यक्षता में हुयी। जिस में खोस्ला कमेटी के सुझावों का विरोध किया गया।

—धुनी मारकुण्डी (मिर्जापुर) में आर्यसमाज की स्थापना हो गई है। गोविन्द राम आर्य इसमे प्रधान श्री रामाश्रय शास्त्री, उप प्रधान, श्री ओम् प्रकाश सक्सेना, मन्त्री श्री राम [illegible] सिंह चुने गये।

मन्त्री

—२७-२८ अगस्त को आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में श्री प० धर्म देव जी विद्या मार्तण्ड की अध्यक्षता में संस्कृत सम्मेलन हुआ। [illegible] प्रसाद

आर्यसमाज सदर बाजार [illegible] के सभी स्त्री पुरुषों ने दिनांक ३१-८-६९ को श्री [illegible] कुमार शर्मा जी की असमी आकस्मिक [illegible] मृत्यु पर शोक [illegible] परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा परिवार के सभी सम्बन्धियों को इस महान् कष्ट के सहने की

सामर्थ्य प्रदान करें। —मन्त्री

—दिनांक १४-९-६९ को आर्य समाज (शाहबाज पुर) बदायूं के तत्वावधान में एक 'धर्मार्थ शान्ति औषधालय' की स्थापना की गई। उसका उद्घाटन आर्य प्र० नि० सभा के मुख्य निरीक्षक श्री बलवीर सिंह जी वेधड़क के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञ हुआ, तदनन्तर पार्वती आर्य कन्या संस्कृत इण्टर कालिज में आर्य भाई एवं प्रतिष्ठित नागरिकों के बीच आर्यसमाज के विरुद्ध में उठाये गये इस कार्य की प्रशंसा करते हुये श्री वेधड़क जी ने उठते हुये अराष्ट्रिय ईसाई प्रसार को रोकने के लिये औषधालय द्वारा जनसेवा करने को सफल प्रयास बताया। इस सभा में श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी एम ए आ० प्र० स० के अन्तरग सदस्य श्री राम जी शास्त्री जी आचार्य गुरुकुल तथा गुरुकुल के अधिष्ठता श्री नरेन्द्र देव जी शास्त्री जी की उपस्थिति उल्लेखनीय है। गुरुकुल आचार्य श्री व्रजनन्दन जी ने जनता से दान देकर औषधालय का [illegible] कर देने का अनुरोध किया। डा० रमेन्द्र पाल गुप्त ने अपनी बहुमूल्य सेवायें औषधालय कोदेने का आश्वासन दिया है।

विशुद्धानन्द शास्त्री

## निर्वाचन—

—आर्य समाज फतेहपुर (बाराबंकी)
प्रधान—श्री गुरुचरण लाल जी
उप प्रधान श्री नानक शरण जी
मन्त्री श्री—सत्यपाल रस्तोगी
उपमन्त्री श्री—शंकर दयाल जी

—मंत्री

## आवश्यकता

'एक शिक्षित २५ वर्षीय गुजराती नव-युवक ([illegible]) के लिये जिसकी मासिक आय ३००) है, एक सुन्दर, स्वस्थ कन्या की आवश्यकता है। दहेज और जाति पाति का कोई विचार नहीं किन्तु गुजराती कुमारी या [illegible] विधवा को प्राथमिकता दी जावेगी।'

पता—मन्त्री, आर्य समाज गोंदिया (महाराष्ट्र)

## उत्सव

आर्यसमाज फतोरी पो० आलमपुर (फतेहपुर) का वार्षिकोत्सव १७ से १९ अक्टूबर ६९ तक मनाया जायगा। मन्त्री

—आर्यसमाज दानापुर का ९१ वां वार्षिकोत्सव १४ से १७ अक्टूबर ६९ तक समारोह से मनाया जायेगा। राम बली प्रसाद आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज नया नंगल (पंजाब) का वार्षिकोत्सव २५,२६ अक्टूबर को समारोह पूर्वक मनाया जायगा। १९ अक्टूबर से श्री भिक्षु रामा यति के प्रवचन रात्रि में हुआ करेंगे। मन्त्री

## सार–सूचनाएं

—जिला सभा बदायूं की ओर से प्रचारार्थ श्री प० जानकी प्रसाद आर्य भजनोपदेशक श्री स्वामी नित्यानन्द जी तथा ढोलक वाला गावों और आर्यसमाजों में पहुंच रहे हैं। सम्बन्धित अधिकारियों को प्रचार में सहयोग देना चाहिए। नरेश चन्द्र आर्य मन्त्री

—उपर्युक्त सभा की अन्तरंग १९ अक्टूबर को आर्यसमाज बदायूं में होगी। सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थनीय है। —मन्त्री

## निर्वाचन

—आर्य समाज, आजमगढ़ प्रधान – श्री मधुसूदन दास जी उपप्रधान – दुर्बल चन्द्र वर्मा व बच्चा लाल जी, मन्त्री – राम स्वरूप वर्मा उपमन्त्री सुदर्शनराय जी, पवन कुमार जी प्रचारमन्त्री श्री वेद प्रकाश जी आर्य। कोषाध्यक्ष श्री कृष्णदास जी

—आर्यसमाज सैदपुर, गाजीपुर अध्यक्ष— श्री हरीराम मारवाडी उपाध्यक्ष हुमेर राम। मन्त्री राम रिख बाबू पोद्दार स० मन्त्री चन्द्रवंसी प्रसाद कोषाध्यक्ष विन्ध्याचल प्रसाद बर्णवाल

—आर्यसमाज सिकन्द्राबाद प्रधान श्री मुन्नीलाल जी माहेश्वरी मन्त्री श्री आनन्द प्रकाश जी कोषाध्यक्ष श्री छेदालाल जी वर्मा पुस्तकाध्यक्ष श्री नारायण दास एडवोकेट

आनन्द प्रकाश मन्त्री

आर्यसमाज वास्कोडिगामा (गोवा) का वार्षिक चुनाव प्रधान-श्री राधे श्याम चौधरी उपप्रधान श्री ओखनदास जी मन्त्री श्री राम करण जैनवार। उपमन्त्री श्री श्याम लाल यादव कोषाध्यक्ष विश्व नाथ अलेंकर

राम प्रसाद सैनी

आर्यसमाज, लहेरियासराय। प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार सिन्हा। उपप्रधान श्री बलदेव राज बोहरा। मन्त्री डा० गिरिजा नन्दन लाल। संयुक्तमन्त्री श्री ध्रुव नारायण प्र० आर्य। कोषाध्यक्ष श्री सोनेलाल गुप्ता। मन्त्री

ठाकुर द्वारा तहसील (मुरादाबाद) में आर्य समाज का अच्छा प्रचार हो रहा है।, अनेक गावों में आर्य समाजें स्थापित हो गयी हैं। आर्य तहसील सभा की स्थापना हो गयी है) जिस के प्रधान चौ० शान्ति स्वरूप और मंत्री श्री मुरारी लाल जी चुने गए हैं। —मन्त्री

—आर्यसमाज पुरैनी का वार्षिकोत्सव १२ सितम्बर को मनाया गया। श्री प० बिहारी लाल जी शास्त्री, श्री प० रुद्रदत्त जी शास्त्री, श्री ला० देवराज जी, श्री अमर स्वामी जी का विद्वत्ता पूर्ण व्याख्यान हुवे। – मन्त्री

—आर्यसमाज सभल ने श्री स्वामी वासी लाल जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया है। श्री स्वामी जी आर्य समाज के कई वर्षों तक प्रधान रहे। —उपमन्त्री

—३ अगस्त को फतेहपुर (बाराबकी) मे नयी आर्यसमाज की स्थापना हुयी है। मन्त्री

दुख है कि तिर्वा के श्री जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी का देहावसान हो गया। आप का अन्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। परम पिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे। कृष्ण कुमार मन्त्री आस० ठठिया

—आर्यसमाज गोरखपुर छावनी स्थित मोहद्दीपुर ने श्री रामकिशन जी की १०० वर्षीया दादी की मृत्यु पर शोक सहानुभूतिका प्रस्ताव पास किया। तिलकेश्वर प्रसाद मन्त्री

—१७-१८ सितम्बर को आर्य समाज शकर गढ़ मे श्री पन्ना सिंह श्री राजा राम जी तथा श्री वेणी माधव देव सिनड़ा प्रयाग ने आर्यसमाज का प्रचार किया। मन्त्री

—मनाही (चम्पारन) में श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद श्री दुख प्रसाद के ससुर, तथा १९ सितम्बर को उप प्रधान श्री डा० वैद्यनाथ प्रसाद की धर्म पत्नी की मृत्यु पर इन के अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यनुसार किये गये। शुक्ल

## आर्य समाज राजामण्डी की हाईकोर्ट में विजय

"कुछ मुसलमानों ने आर्य समाज राजामन्डी आगरा के भवन निर्माण को रोकने के लिये दिसम्बर ६८ मे इलाहाबाद हाईकोर्ट मे रिट इस आशय की दायर की थी :—

(१) जमीन हमारी मसजिद की है, (२) मसजिद से १०० फुट के फासले पर आर्य समाज मन्दिर नहीं बन सकता।

परमात्मा की असीम कृपा से उपरोक्त रिट हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दी गई तथा फैसला आर्य समाज के हित मे सुना दिया गया। आर्य समाज भवन मे २५ हजार रुपया लग चुका है। चारों तरफ की चारदीवारी के अतिरिक्त २ कमरे, ३ शौचालय, २ स्नानगृह, बनकर तैयार हो गये हैं। नल तथा बिजली लग गई है, रोज सतसग होता है। अब धनाभाव के कारण काम बन्द है, अत. प्रार्थना है कि दानी महानुभाव दान देकर औषधालय यज्ञशाला तथा हाल के बनवाने मे सहायता प्रदान करें।

– शकरलाल शर्मा मन्त्री

## आर्य विद्वान् प्रकाश डाले

सत्यार्थ प्रकाश अष्टमसमुल्लास के अन्त मे महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है. —

एतेषु हीद ँ सर्वं वसुहितमेते हीद ँ सर्वं वासयन्ते तद्यदिद ँ सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।

शत० का १४

"पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य ' इनका वसु नाम इसलिए है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजावसती है। जब पृथ्वी के समान सूर्य चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात् उनमे इसी प्रकार प्रजा के होने मे क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि है।"

चन्द्रमा में जाने वाले यात्री बतलाते हैं कि वहां आक्सीजन है ही नहीं। कोई जीव जन्तु मनुष्य दि कोई नहीं है। अतः क्या महर्षि का कथन असत्य हो जावेगा।

– हरीशरण आर्य
रेटायर्ड पोस्टमास्टर गाजीपुर

## जिला आ.प्र. सभा खीरी लखीमपुर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा लखीमपुर (खीरी) के तत्वावधान मे आ० स० लखीमपुर, आर्य समाज गोला गोकरणनाथ, तथा आर्य समाज मुहम्मदी मे प्रतिदिन यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा उ० प्र० आ० प्र० सभा के महोपदेशक आचार्य श्याम सुन्दर जी शास्त्री के वेद विषयक सारगर्भित भाषण होते रहे। सामान्य जनता से लेकर विद्वद्वर्ग पर भी प्रभाव पड़ा है।

— वीरेन्द्र बहादुर सिंह सयोजक

## जिला आर्य सम्मेलन सहारनपुर

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर के मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जी सूचित करते हैं कि जिला आर्य महा सम्मेलन १२, १३ तथा १४ अक्टूबर १९६९ को आर्य समाज खलासीपार के नवीन भवन मे होने जा रहा है। अतः जिला सहारनपुर के आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि उपर्युक्त सम्मेलन मे सम्मिलित होकर उसे सफल बनाने एव धर्म लाभ उठाने की कृपा करें। — प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मंत्री

[पृष्ठ ९ का शेष]

देंगे। जो ऋषिभक्त होंगे वे वहां सब पहुंचेंगे जो पार्टी भक्त होंगे वे नहीं आवेंगे। सगी दादी होगी पहुच आवेगी और सौतेली होगी तो वह बहकाती रहेगी। महात्मा आनन्द स्वामी जी ने दोनों को सार्वदेशिक सभा करके पत्र लिखा तुम ने हलकापन दिखाया कि उसका ब्लाक बनवाकर सार्वदेशिक में छाप दिया दूसरों ने इसका कोई महत्त्व नहीं समझा। अब दोनों को ही सार्वदेशिक लिख रहे हैं। क्या आप हमारे साथ भी यही करना चाहते हैं कि हमारी सभा के लिफाफे का भी ब्लाक बनवाकर सार्वदेशिक के मुख पृष्ठ पर छापें इसी लिये कह रहे हो कि हमें लिखो।

आप हमें क्या सहयोग देंगे यह तो हम खूब जानते हैं। अब छः मास से काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का समाचार छप रहा था कि १६ से २१ नवम्बर तक काशी में शास्त्रार्थ शताब्दी मनाई जावेगी फिर आपने उन्हीं दिनो गोवा में सम्मेलन रख कर वहां पहुंचने की स्वीकारी देदी। इन्हीं तारीखों मे दिल्ली की स्पेशल ट्रेन गोवा को पांच सौ आर्य भाइयों को चलवादी और राजस्थान वालों को हिलगा दिया स्पेशल ट्रेन के स्वागत के लिये। अजमेर मे जो दिवाली ९ नवम्बर को इस वर्ष है, वह १६ नवम्बर को अजमेर में इस वर्ष होगी। आप के इस सहयोग के लिये सहस्रश धन्यवाद।

यदि तुम आर्य हो तो दो मास के लिए लड़ना बन्द करदो और दो मास बाद नियम उपनियम न्यायसभा अन्यायसभा विधान सभा फिर करलेना। शताब्दी में सब सम्मिलित हो। देश देशान्तर के प्रतिनिधि शताब्दी पर पहुंच रहे हैं। काशी के विद्वान् क्या तुम्हें कहेगे। सब सभाओं का कर्तव्य है कि यू० पी० सभा शताब्दी कर रही है तो सब घोषणा करदो चलो काशी चलो काशी चलो काशी और ऋषि की जीती काशी फिर से जीतो।

## जिज्ञासु सरलतम संस्कृत शिविरों का अभूतपूर्व समारोह

नगर मे ३ मास से चल रहे संस्कृत शिविरों का दीक्षांत समारोह दिनांक १५.९.१९६९ को आर्य कन्या इन्टर कालेज प्रयाग के नवनिर्मित विशाल भवन मे हर्षोल्लसित वातावरण मे बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यह शिविरगन एक जून से आरम्भ किया गया था, जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो० सत्यप्रकाशजी ने किया था। इन शिविरो मे देवभाषा संस्कृत के अनन्योपासक स्वर्गीय प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु द्वारा आविष्कृत अष्टाध्यायी पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण की सरलतम विधि एवं अनुभूत शैली के आधार पर आर्य समाज चौक, आर्य कन्या इन्टर कालेज एवं आर्य समाज कटरा मे संस्कृत प्रचारार्थ निःशुल्क रूप से तीन श्रेणिया चलाई गयी थीं। इन शिविरों मे स्वर्गीय श्री जिज्ञासु जी के परम शिष्य श्री पं० धर्मानन्द जी शास्त्री ने प्रशिक्षण का गुरुतर भार वहन किया था। इन शिविरो में ८५ वर्ष के वृद्ध से लेकर १२ वर्ष के बालक पर्यन्त जिसमे प्रयाग विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कालर, वकील, व्यापारी, तथा सामान्य नागरिक नर-नारियो ने समान रूप से लाभ उठाया है।

दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् विद्वद्वर्य माननीय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक सोनीपत ने की है। इस अवसर पर आन्ध्र प्रदेश मे अष्टाध्यायी पद्धति से संस्कृत के अनन्य प्रचारक जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति आन्ध्र प्रदेश के महा मन्त्री ए०स०ए० दण्डी नरसिंह जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही है।

दीक्षांत समारोह में माननीय न्यायाधीश गण राजकीय उच्चाधिकारी प्रसिद्ध शिक्षाविद, सम्मानित नागरिकों की उपस्थिति मे महामहिम माननीय श्री गोपालरेड्डी गारु (राज्यपाल उत्तर प्रदेश) ने हर्षातिरेक एव समुल्लसित हृदय से प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को (जिनकी संख्या ११२ थी।) प्रयाग विश्वविद्यालय के उपकुलपति माननीय श्री अवध बिहारीलाल जी के हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र वितरण किया। राज्यपाल महोदय एव पं० धर्मानन्द जी शास्त्री का स्वागत प्रो० सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी (पूर्वाध्यक्ष संस्कृत विश्वविद्यालय) ने किया है।

## देहरादून संस्कृत सम्मेलन के प्रस्ताव

देहरादून २९ अगस्त। स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में संस्कृत-सम्मेलन का आयोजन डी० ए० वी० कालेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री के सभापतित्व में हुआ।

सभापति-पद से भाषण करते हुए डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ने संस्कृत-प्रेमियो से साग्रह प्रार्थना की कि वे अपने घर के वातावरण को संस्कृत मय बनायें और मम्मी डेडी आदि शब्दो का प्रयोग न होने दें। आपने कहा कि संस्कृत बहुत सरल भाषा है। हिन्दी जैसी व्याकरण की कठिनाइयां इस में नहीं हैं।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री धर्मेन्द्रसिंह द्वारा प्रस्तुत तथा श्री देवदत्त बाली पत्रकार द्वारा अनुमोदित दो प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किये गये। प्रथम प्रस्ताव में इस बात पर खेद प्रकट किया गया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी संस्कृत के प्रचार-प्रसार पर वाछित मात्रा में ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण हमारे साहित्य, संस्कृति, एव इतिहास की मूलाधार संस्कृत भाषा बाहर ही नहीं घर में भी पराई बनती जा रही है। सरकार से अनुरोध किया गया कि विद्यालयो के पाठ्य क्रम में संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया जाये और इसके प्रचार के लिये समुचित व्यवस्था की जाये ताकि राष्ट्र की भावात्मक एकता को बल मिले। संस्कृत-प्रेमियो से आग्रह किया गया कि वे अपने परिवारों में देववाणी को बढ़ावा दें ताकि हमारे उज्वल अतीत के साथ हमारा सम्बन्ध बना रह सके।

दूसरे प्रस्ताव में सभी स्थानीय शिक्षण-संस्थाओं के अधिकारियों से प्रार्थना की गई है कि संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के प्रति शुल्क के मामले में उदारता बरतें। डी० ए० वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय से विशेष रूप से आग्रह किया गया कि एम० ए० (संस्कृत) छात्रों से शुल्क न लिया जाया करे।

देवदत्त बाली मन्त्री जिला आर्य उपप्रति-निधि सभा देहरादून

## विश्वकर्मा वंशज बालकों को-
## ७०००) का दान

### श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकराव की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती वि सं निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार भाद्रपद सम्वत् २०१४ दि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओ के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुको को मास जुलाई में।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

## आवश्यकता

"एक प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न ब्राह्मण परिवार, मासिक आय १२००), के लिये एक सुन्दर तथा सुचरित्र, आयु ३०-३५ के लगभग एक शिक्षित महिला की आवश्यकता है। जो आदर्श ब्राह्मण परिवार की हो, तथा गृहणी के रूप में परिवार का पूर्ण उत्तरदायित्व संभालने में कुशल हो।

न० ४१ बी द्वारा आर्यमित्र कार्यालय लखनऊ।



# धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् की रजि० सिद्धांत प्रवेश सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धान्तालङ्कार, सि० शास्त्री, सिद्धांताचार्य की परीक्षायें आगामी दिसम्बर जनवरी मे समस्त भारत व विदेशों में होंगी। उत्तीर्ण होने पर तिरगा प्रमाण-पत्र दिया जाता है। आबाल वृद्ध, नर-नारी सोत्साह भाग ले रहे हैं।

१५ पैसे के टिकट भेज कर नियमावली मगाइये।

| | |
|---|---|
| आदित्य ब्रह्मचारी | आचार्य मित्रसैन |
| यशपाल शास्त्री | एम. ए. सिद्धातालङ्कार |
| प्रधान | परीक्षा मन्त्री |

**भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद्**
**सेवा-सदन कटरा, अलीगढ़**





*आर्यमित्र की उन्नति के लिए-*

# डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिरनिधि

श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा

अन्तरग सभा दिनांक ९-५-६३ के निश्चय नुसार विषय सं० २४ श्री प० सूर्यदेव जी शर्मा एम. ए का 'आर्यमित्र' सहायतार्थ धन दिये जाने विषयक पत्र विचारार्थ प्रस्तुत होकर श्री शर्मा जी का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि दानी सज्जन की निम्न शर्तों के लिये चार सहस्र रुपया दान लेना स्वीकार किया जावे। धन प्राप्त होने पर एफ डी मे जमा किया जाये।

१-इस निधि का नाम डा० सूर्यदेव स्थिरनिधि होगा।

२-इस निधि की धनराशि स्थायी रूप में सभा मे पृथक् जमा होगी।

३-इसके व्याज से प्रति वर्ष सार्वजनिक सस्थाओं, पुस्तकालयो एवं वाचनालयों को आर्यमित्र लागत रूप मे दिया जाया करेगा।

४-वर्ष में कम से कम दो बार जनवरी, जुलाई मास में इस निधि की सूचना प्रमुख शर्तों के साथ 'आर्यमित्र' में प्रकाशित होगी।

५-सम्मान रूप में 'आर्यमित्र' सदा दानी सज्जन को भेजा जाया करेगा। जहाँ-जहाँ जायगा उसकी सूची दानी सज्जन के पास भेजी जाया करेगी।

६-आर्यमित्र का प्रकाशन बन्द हो जाने पर इस निधि का व्याज वैदिक साहित्य में लगाया जावेगा।

—प्रेमचन्द्र शर्मा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ

## *वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर का अमूल्य साहित्य पढ़ें*

| | | | |
|---|---|---|---|
| मनोविज्ञान शिव सकल्प | ३ ५० | दयानन्द गर्जना | ०.७५ |
| वैदिक गीता | २ ५० | सिनेमा या सर्वनाश | ०.३० |
| सन्ध्या अष्टाग योग | ०.७५ | भारत की अधोगति के कारण | ०.५० |
| कन्या और ब्रह्मचर्य | ०.१५ | नित्य कर्म विधि | ०.१५ |
| स्वर्ग लोक के पांच द्वारपाल | ०.१५ | ऋषि दृष्टान्त प्रकाश | ०,५० |
| आत्मोपदेश | ० ३५ | वेद गीताजलि | ०.२० |
| ब्रह्मस्तोत्र [सन्ध्या जपजी) | ०.१२ | विवाह पद्धति मोटे अक्षर | ०.६० |
| „ [पजाबी मे] | ०.१२ | खालसा ज्ञानप्रकाश १ भाग | ०.७५ |
| ओंकार स्तोत्र | ० १५ | सुखी गृहस्थ | ०.१५ |
| प्यारे ऋषि की कहानियां | ०.३० | दृष्टांत दीपिका | ०.३० |
| देश भक्तो की कहानियां | ०.२५ | ओंकार उपासना | ०.३० |
| धर्मवीरो की „ | ० ५० | खण्डन कौन नहीं करता | ०.३० |
| कर्मवीरो की „ | ०.५० | गायत्री गीता | ०.२५ |
| शूरवीरो की „ | ० ३० | सदाचार शिक्षा | ०.२५ |
| नादानों की „ | ०.३० | हवन मन्त्र मोटे अक्षर | ०.५० |
| भारत की आदर्श वीर देवियां | ०.५० | आर्य सत्सग गुटका अर्थ सहित | ०.७५ |
| सत्संग भजन संग्रह बड़ा | ०.४० | खालसा ज्ञान प्रकाश दू०भाग | २.०० |
| जीवन पं० गुरुदत्त विद्यार्थी | १ ३५ | प्राचीन धर्म वाटिका | ०.७५ |

निम्न पते से आर्य तथा वेद साहित्य शीघ्र मंगावें। पता—

स्वा० आत्मानन्द प्रकाशन मन्दिर, साधनाश्रम, यमुनानगर, अम्बाला

# कांग्रेस सरकार तथा आचार्य कृपलानी

[ अनुवाद कर्ता—श्री प० कालिकाप्रसाद तिवारी, आगरा ]

'गांधी जी की जन्म शताब्दी के वर्षान्तर्गत जो अहिंसा, लूटमार हत्या तथा हजारों निर्दोष स्त्रियों तथा, बालकों को सुनियोजित ढग से अपग बनाने का कम चल रहा है क्या कभी भी इतने प्रबल रूप में प्रगट हुआ था ?' ये शब्द ८ जून १९६९ के इण्डियन एक्सप्रेस में श्री फ्रेंक मौरिस ने लिखे थे। इसके उत्तर में आचार्य कृपलानी ने लिखा है कि जो कुछ श्री मौरिस ने कहा है वह भारतवर्ष में कोई नया नहीं है। ऐसा कई बार हुआ उस समय जब कि किसी सत्तारूढ़ शासकदल का जाति अथवा गिरोह का शासन असफल रहा है और वे परस्पर विभाजित रहे हैं।

## स्वार्थपरता

कुछ अपवादों सहित, भारतीय इतिहास का यह एक तथ्य है कि जिन्होंने भूतकाल में देश में शासन किया, उन्होंने अपना ही उल्लू सीधा किया, आम जनता के हितों को भुला दिया। जब शासक लोग ऐसा करते हैं तो सभी लोगों को कष्ट नहीं होता चतुर लोग उन्नति कर जाते हैं। साधारणतया सब से अधिक धनहीन, निर्दोष तथा दलित वर्ग सबसे अधिक कष्ट पाता है। जब मुट्ठीभर मुसलमानों ने बाहर से आक्रमण किया और उन राजपूतों के शासन को जो अयोग्य तथा भ्रष्टाचारी थे उखाड दिया, तब भी यही कुछ हुआ। वे परस्पर विभाजित थे। औरगजेब के बाद भी ऐसा ही हुआ, जब कि उसके उत्तराधिकारी विलासमय जीवन के कारण, अपने राज्यों, रियासतों, सूबों अथवा प्रान्तों को अपने काबू मे रखने मे असमर्थ रहे। विलासमय जीवन व्यतीत करते हुये उन्होंने देश का शासन करने के कठिन कार्य को भुला दिया। परिणाम स्वरूप देश के विभिन्न भागो ने भिन्न-भिन्न शासक उत्पन्न हो गये। महाराष्ट्र मे और उसके आस-पास, मराठों की शक्ति बढ गई; पजाब मे सिखों का राज्य हो गया; दक्षिण मे हैदराबाद में निजाम ने और मैसूर में टीपू सुल्तान ने अपने आप को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। अवध के नवाबों ने भी यही किया। बगाल और बिहार मे ऐसा ही हुआ। देश में पूरी अशान्ति उत्पन्न हो गई। देश मे डाकुओं पिंडारियों तथा ठगों के दल घूमने लगे और उपद्रव करने लगे लूट, अग्निकाण्ड बलात्कार तथा हत्या उन दिनों एक आम बात हो गई थी।

पेशवाओं ने कुछ अश मे महाराष्ट्र को सुसगठित किया उनका शासन दिल्ली तक था। किन्तु विलासमय जीवन के कारण उन्होंने बहुत शीघ्र अपनी कठिन तपस्या और शक्ति को खो दिया। पानीपत की तीसरी लड़ाई, जो अन्तिम लड़ाई थी, मे भाग लेने के लिये वे अपने परिवार तथा स्त्रियों सहित गये थे। महाराष्ट्र साम्राज्य का अन्त हो गया। विदेशी आक्रमणकर्त्ता की मुट्ठी भर शक्ति के मुकाबिले मे वे अपनी असख्य सेना की विजय के बारे मे इतने आश्वस्त थे कि विजय प्राप्ति के बाद वे अपने परिवारों को उत्तराखण्ड मे तीर्थ यात्रा के लिये जो जाना चाहते थे। वे आपस मे बँटे हुए थे और उन्होंने पेशवाओं की आज्ञा पर ध्यान ही नहीं दिया।

## भेद-भाव तथा फूट

सिख लोग, जो महान योद्धा थे, आपस की फूट के कारण हार गये। सात समुद्र पार से आये हुये विदेशियों ने इस फूट से लाभ उठाया और सारा भारतवर्ष दो सौ वर्ष के लिये उनका दास बन गया। इससे यह बात अच्छी तरह विदित हो जाती है कि जब कभी कोई शासक दल, जाति या गिरोह विलासमय जीवन के कारण अपनी शक्ति खो देता है और उसमे आपस मे फूट पड जाती है तो न केवल उसका ही पतन होता है बल्कि देश भी उनके साथ ही पतित हो जाता है।

यदि हम उन परिस्थितियों का जिनके कारण [illegible] तथा मुगल शासन का [illegible] [illegible] तथा और मराठों तथा सिखों का पतन हुआ, आज की परिस्थितियों से मुकाबिला करे, तो हमें आश्चर्य न होगा। जिन्होंने देश की आजादी प्राप्त करने के लिये जेलों मे अपना जीवन गुजार दिया और अपने विलक्षण नेता के नेतृत्व मे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया आज विलासमय जीवन व्यतीत कर रहे है। सत्ताधारी लोग जो शासन मे हैं उनके सबधी जातिवाले गिरोह वाले प्रशासन मे है। वे अयोग्य तथा भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध कोई कदम उठाने मे असमर्थ हैं।

एक आशका भी है, वह है कि जो लोग सत्तारूढ हैं वे स्वत भाई बिरादरीवाद तथा भ्रष्टाचार को बढावा देते हैं। यह [illegible] हो अथवा न हो किन्तु यह [illegible] कि जनता का ऐसा विश्वास है। सबमे बुरी बात तो यह है कि वे कांग्रेसजन जो शासन मे नहीं है, उन्हे, जो शासन मे है, भ्रष्टाचारी और पक्षपातवादी समझते हैं। ऐसी परिस्थिति मे यह आशा करना कि प्रशासक-वर्ग ईमानदारी के तग मार्ग पर चलेगा, कठिन है। एक फारसी कहावत है कि 'यदि बादशाह जनता से बिना मूल्य दिये एक चुटकी नमक भी लेता है, तो उसका प्रशासक-वर्ग सारे देश को लूट लेगा। इसके अतिरिक्त, कांग्रेसी सरकारें अस्थायी रूप से मुश्किलों को [illegible] करने मे सिद्धान्तहीन [illegible] अपनाते है और अवसरवादी बन जाती हैं। जब सिद्धान्तों का गला घोट दिया जाता है तो [illegible] न और स्वार्थी हो जाते हैं [illegible] अधिक [illegible] देते है। वे [illegible] दलबदलुओं को भी [illegible] देते हैं। मध्य [illegible], [illegible] में यहा आई [illegible] कुछ [illegible] प्रकार बनाते हैं [illegible] कि [illegible] विचार [illegible] कारण [illegible] ज्यों [illegible] फल [illegible] विवाद [illegible] राज्यों के कांग्रेसजनों द्वारा [illegible] किये जाते हैं। कांग्रेस दल [illegible] सरकार के समर्थक [illegible] विरोधी दल भी उस आन्दोलन में शामिल हो जाते हैं। शिवसेना तक के बारे मे भी कांग्रेस [illegible] उत्तरदायित्व से मुँह नहीं मोड़ सकती। [illegible] वर्ग गत लाभ [illegible] दलगत मतभेद समाप्त हो जाते हैं।

## कानून का नियम

जब कांग्रेसजन देश की एकता या कानून की सुरक्षा की बात करते हैं तो किसी को भी उनकी ईमानदारी पर विश्वास नहीं होता। चाहे सरकार का रूप कैसा भी हो एक कुशल शासन का प्रथम उद्देश्य यह होना चाहिये कि 'कानून का नियम' अनिवार्य होना चाहिये। जब कानून का नियम नहीं होता तो जीवन दुरूह और अनिश्चित हो जाता है। और परिणाम यह होता है कि न केवल निर्दोष व्यक्ति कष्ट पाते हैं; बल्कि ईमानदार, निर्दोष तथा शान्तिप्रिय व्यक्ति भी। जब शान्तिभग हो जाती है तो जातक समाज विरोधी तत्व परिस्थिति का लाभ उठाते हैं। उस समय निर्दोष तथा दोषी के जान माल मे भेद नहीं किया जा सकता और न व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक सम्पत्ति मे ही भेद किया जाता है।

निर्दोष व्यक्ति न केवल समाज विरोधी तत्वों द्वारा सताये जाते हैं बल्कि वे पुलिस द्वारा भी सताये

[शेष पृष्ठ १६ पर]

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
आश्विन २० शक १८९१ आश्विन शु० १
[ दिनाङ्क १२ अक्टूबर सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष: २५९९३ तार "आर्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

**हमारा राष्ट्र**—ले० श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट, आगरा साइज २०×३०/१६ पृ०-संख्या १२०. मूल्य १.२५ पैसे। प्राप्तिस्थान—श्री डा० महेश्वर सिंह सूद एम०ए०,पी० एच०डी० नारायण कालेज शिकोहाबाद।

श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा आर्य समाज के सुविख्यात विद्वान् और विचारक हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान रह चुके हैं। अब आप की आयु ८२ वर्ष की हो गयी है, फिर भी आप वाणी और लेखनी से आर्य समाज की पर्याप्त सेवा करते रहते हैं। उपयुक्त पुस्तक में राष्ट्रीय प्रार्थना मन्त्र की सुन्दर व्याख्या है। राष्ट्र निर्माण के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है, उन पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। और दैवी आपत्तियों से बचने के लिए सचेत किया गया है। यदि भारत के नागरिक इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें और [illegible] के अनुसार अपना जीवन बनावें, तो स्वराज्य सुराज्य का रूप धारण कर सकता है, और सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। पुस्तक की भाषा सरल और भाव गंभीर हैं।

**यज्ञ और पूर्णता**—लेखक श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट आगरा साइज २०×३०/१६ पृ० संख्या ५५ मूल्य १) रुपया। प्राप्ति स्थान—श्री डा० महेश्वर सिंह सूद एम० ए० पी० एच० डी० नारायण कालेज शिकोहाबाद।

इस पुस्तक में यज्ञ के महत्व पर मनोवैज्ञानिक आधार पर बड़ा सुन्दर प्रकाश डाला गया है। यज्ञ की पूर्णाहुति के सम्बन्ध में यह दर्शाया गया है कि यज्ञ मानव निर्माण को पूर्णत्व देने के लिए अचूक साधन है। कुशल राजनीति, सफल काम-धन्धा, अटल प्रेम-बन्धन इस पुस्तक के प्रकाशन के मुख्य प्रयोजन हैं। भाषा सरल और विचार उत्तम हैं। इसके स्वाध्याय से यज्ञ में श्रद्धा उत्पन्न होगी।

**मनस्वी**—[ बाबत् १९६८ - ६९ ] यह श्री रणवीर रणंजय डिग्री कालेज अमेठी का वार्षिक पत्र है। इस कालेज का संचालन इसके संस्थापक सुप्रसिद्ध दानवीर, समाज सुधारक राज ऋषि और आर्य नेता श्री महाराज रणजय सिंह जी अमेठी—नरेश के संरक्षण मे होता आ रहा है। प्रस्तुत बृहद्काय और सचित्र अंक लेखों, कविताओं आदि की दृष्टि से भी उच्चकोटि एवं स्थायी महत्व का है। इसके संस्कृत और आंग्ल भाग भी अच्छे हैं। श्री भगवती प्रसाद सिंह आचार्य "मनस्वी के सम्पादक और श्री रामकिशोर जी शास्त्री सह-सम्पादक हैं। प्रस्तुत अंक मे श्री हरिशचन्द्र अग्रवाल की "स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री" शीर्षक कविता मर्म स्पर्शी है। "वेद विद्या महारथी" कविता जो कि श्री महाराज रणञ्जय सिंह जी की हो रचना है, बहुत उच्चकोटि की है। श्री महाराज का "चरित्र-निर्माण" शीर्षक लेख भी स्थायी महत्व का और बहुत उपयोगी है। 'रत्न-सौरभ' में संगृहीत रचनाओं का चयन सराहनीय है। 'हिन्दी कवि वर्ग' 'राष्ट्रीयता के अमर गायक गोपाल शरण सिंह नैपाली' "सच्ची भक्ति-भावना", "कालिदास का प्रकृति चित्रण" बहुत अच्छे हैं। "मनस्वी' का कविता भाग अपनी उत्तमता के साथ ही साथ उन काव्य-शिल्पियों का परिचायक है, जो अमेठी के डिग्री कालेज मे अपनी साधना कर रहे हैं। "मनस्वी" जैसे उत्तम पत्र किसी भी महा विद्यालय और प्रकाशन-संस्थान के लिये शोभनीय हो सकते हैं। आयोजन अभिनन्दनीय है।

**रणवीर**—'रणवीर' यह एक वार्षिक पत्र है, जोकि श्री रणवीर इण्टर कालिज अमेठी [सुलतानपुर] की ओर से प्रति वर्ष प्रकाशित होता है। सन १९६७-६८ का सचित्र अंक हमारे सामने है। इसके देखने से उक्त कालिज की उत्तरोत्तर हो रही उन्नति का परिचय भी मिल जाता है। श्री रणवीर इण्टर कालिज की स्थापना अमेठी राज्य के अधिपति, वैदिक-धर्म के अनन्य प्रेमी श्री महाराज रणजय सिंह जी ने अमेठी राज्य के द्वितीय राजकुमार स्व० श्री रणवीर सिंह जी की पुण्य-स्मृति मे की थी। अमेठी-नरेश महाराज श्री रणञ्जय सिंह जी की उदारता, दानवीरता, प्रगतिशीलता, सुधार वादिता और स्वदेश-भक्ति तो सुविदित ही है। उनके संरक्षण मे ही इस इण्टर कालिज का सचालन हो रहा है। कालिज के प्रधानाचार्य श्री बद्रीप्रसाद सिंह एम० ए० एल० टी० एक सुयोग्य शिक्षा-शास्त्री हैं। श्री इन्द्रजित् गुप्त एम० ए० एल० एल० बी० "रणवीर" के सम्पादक और श्री ओङ्कार नारायण मिश्र सहायक सम्पादक हैं। 'रणवीर' का संस्कृत प्रकरण भी उत्तम है। हिन्दी और अंग्रेजी के लेखों का निर्वाचन कौशल पूर्ण है। पाठ्य-सामग्री मनोरंजक सुरुचिपूर्ण और ज्ञानवर्धक भी है। कविताओं का स्तर भी ऊँचा है। 'भारत में अछूत भी है, जग को न बताइये' कविता बार-बार पढ़ने योग्य है।

**कठोपनिषद् भाष्य**—भाष्यकर्त्ता-स्वर्गीय श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती, अनुवादक—स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द [दयानन्द] तीर्थ प्रकाशक—आर्यसमाज १९, विधान सरणी कलकत्ता-६ पृष्ठ संख्या—९६, मूल्य—१-५० पैसा।

कठोपनिषद् का आरम्भ अत्यन्त रोचक और औपन्यासिक रूप में होता है। ज्यो-ज्यो उपदेश क्रम आगे बढ़ता है विषय अधिक गम्भीर, उच्चतर परन्तु सरल होता जाता है। जैसे त्रैतवाद का प्रतिपादन करने मे 'कठोपनिषद्' अधिक महत्त्वपूर्ण है, वैसे ही कठोपनिषद का स्पष्टिकरण करने मे स्वर्गीय श्री स्वामी दर्शनानन्द जी का भाष्य सर्व श्रेष्ठ है। उनका भाष्य सर्व प्रथम उर्दू अक्षरो मे रचा गया था। फिर समय-समय पर विभिन्न स्थानो से उसके हिन्दी-संस्करण भी निकले थे परन्तु अनुवादो की भाषागत त्रुटियों के कारण स्वाध्याय प्रेमियों को कई प्रकार की उलझनें होती थीं। इसी दोष के निवारण के लिये स्वनामधन्य श्री अनुवादक जी ने यह परिमार्जित अनुवाद प्रस्तुत किया था। कागज और मुद्रण आदि की सभी दृष्टियो से भी यह कठोपनिषद् भाष्य अत्यन्त सराहनीय है।

—नारायण गोस्वामी

[पृष्ठ १५ का शेष]

जाते है। पुलिस वाले यह समझते हैं कि वे शिकार खेलने के लिये बाहर निकले हैं और शिकार करने की धुन मे निर्दोषी तथा दोषी मे भेद नहीं किया जाता।

श्री मौरिस ने परिस्थिति का सच्चा विश्लेषण किया है। परन्तु उपाय क्या है। शासक दल ने मतदाताओ के सामने जात पांत, धन तथा ऐसी ही दूसरी बातो का आकर्षण रखकर उन्हे भ्रष्ट कर दिया है। तब क्या किया जा सकता है? यही प्रश्न है जो कि उन लोगों सहित जो हमारे शासन की व्यवस्था अथवा कुव्यवस्था करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति पूछता है। वे भी अपने व्यक्तिगत वार्तालाप मे, यह मानते हैं कि उन्हे कुछ नहीं सूझता। "जब नमक ने ही "नमकपन" छोड़ दिया तो उसे किससे 'नमकीन' बनाया जाय?" यही सतोष है कि जैसे प्राचीन परिस्थितियो मे देश की रक्षा हुई थी, वैसे ही किसी प्रकार अब भी इसकी रक्षा होगी। किन्तु यह सतोष वर्त्तमान पीढ़ी के लिये उत्साह वर्धक नहीं।

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र के लिये भ.दी. आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
ओ३म्
# आर्य-मित्र

'वय जयेम ] लखनऊ-रविवार आश्विन २७ शक १८९१, आश्विन शु० ९ वि० स० २०२६, दि० १९ अक्टूबर १९६९ [ हम जीत

# विजयादशमी का पावन सन्देश

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमशमुदवा भरे-भरे ।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणा मघवन्वृष्ण्या रुज ।।
ऋ० १ । १०२ । ४ ।।

व्याख्यान—हे इन्द्र परमात्मन ! "त्वयायुजा, वय, जयेम" आपके साथ वर्त्तमान आपकी सहायता से हम लोग दुष्ट शत्रुजन को जीतें । कैसा वह शत्रु ? कि "आवृतम" हमारे बल से घेरा हुआ । हे महाराजाधिराजेश्वर ! "भरे-भरे अस्माकमश मुदवा' युद्ध २ मे हमारे अश (बल) सेना का "उदव" उत्तम रीति से कृपा करके रक्षण करो, जिससे किसी युद्ध में क्षीण होके हम पराजय को न प्राप्त हों । जिनको आपकी सहायता है उनकी सवत्र विजय होती ही है । हे "इन्द्रमघवन" महाधनेश्वर ! "शत्रूणा, वृष्ण्या" हमारे शत्रुओं के वीर्य्य पराक्रमादि को "प्ररुज" प्रभग्न रुग्ण करके नष्ट कर दे । "अस्मभ्य, वरिवः, सुग, कृधि" हमारे लिये [illegible] राज्य और साम्राज्य धन को "सुगम्" [illegible]

[illegible] इस दिवस को ऐतिहासिक [illegible] माना जाता है, यद्यपि यह तथ्यों के सर्वथा विपरीत है । [illegible] महापुरुष की स्मृति के अवसर पर किसी राष्ट्रिय घटना का अभिनय कार्यक्रम मनाना, परन्तु अब अभिनय मुख्य हो गया, मूल भावना सुप्त हो गयी ।

वर्षा ऋतु की समाप्ति पर राजाओ को इस दिवस सीमोलघन का कायक्रम सम्पन्न करना पडता था और विजयोत्सब मनाये जाते थे । आज भी इस परम्परा की भावना को जीवित और जागृत करने की आवश्यकता है । क्या आज हमारी सीमाए सुरक्षित हैं क्या शत्रु हमारे घर मे घुस कर हमारी शक्ति क्षीण नहीं कर रहा । सारे राष्ट्र को राष्ट्र के कर्णधारों को बडी गम्भीरता से सोचना है । आर्यसमाज राष्ट्र का सक्षम प्रहरी है, राष्ट्रे वयम जागृयाम पुरोहिता इस भावना के आधार पर आर्यजनों को अपने राष्ट्रिय कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये । राष्ट्र-रक्षा के सकल्प को दोहराना चाहिये, और राष्ट्र के शत्रुओं को खोजकर उनसे राष्ट्र रक्षा करने का सतत प्रयत्न करना चाहिये ।

आर्य-जन अपने पथ प्रदर्शन द्वारा राष्ट्र-रक्षा का महत्त्व पूर्ण कार्य करने मे समर्थ हों, यही विजया दशमी का पवित्र सन्देश है ।

वर्ष ७१ | अक ३८

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

सपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक एम ए

इस अक में पढिए !

# मनुर्भव—मननशील बनो !

[ श्री प० जग-कुमार जी शास्त्री "साधु सोमतीर्थ" देहली ]

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियाकृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥
ऋ० १०-५३-६

शब्दार्थ :—(तन्तुम्) जीवन के ताने-बाने को, या सन्तान के विस्तार को (तन्वन्) फैलाते हुए (रजस) उत्तम रंग = गुणवाला और (भानुम्) चमकदार = उज्ज्वल (अन्विहि) बनाओ, विस्तारो। (धियाकृतान्) बुद्धिपूर्वक बनाये हुए जीवन के (ज्योतिष्मतः) प्रकाश पूर्ण (पथः) मार्गों की (रक्ष) रक्षा करो। (अनुल्वणम्) कुटिलता से = झगड़े झमेलों से रहित (वयत) बनो, बुनो, विस्तारो। जो कि (जोगुवाम्) रागियो = गवैयो के गीतो का (अप) कर्म, विषय, रस-प्रवाह बने। (मनु.) मननशील (भव) बन = बनो। (दैव्यम्) दिव्य (जनम्) सन्तप्र को, नागरिक को (आ-जनय) पैदा कर = करो।

भावार्थ :—अपने जीवन के तानेबाने को फैलाते हुए, इसे उत्तम और चमकदार रंग वाला बनाओ। सन्तान का विस्तार करते हुए सन्तान को उत्तम गुणों से युक्त करो। बुद्धिपूर्वक बनाये हुए प्रकाश के मार्गों = उत्तम नियमो की रक्षा करो। कुटिलता से बचकर, जीवन को इस प्रकार का बनाओ, जो कि गायकों के गीतों का विषय बन जाये। सच्चे अर्थों मे मनुष्य अर्थात् विचारवान् बनो। उत्तम सन्तान पैदा करो और ससार में उत्तम नागरिकों की अभिवृद्धि करो।

दूसरा शब्दार्थ.— (तन्तुम्) धागे के ताने-बाने को (तन्वन्) फैलाते हुए (रजस) उत्तम रंग वाला (भानुम्) चमकदार (अन्विहि) बुनो। (धियाकृतान्) भली प्रकार सोच-विचार करके बनाये हुए कपड़ा बुनने और वस्त्र-व्यापार के (ज्योतिष्मत) प्रकाशमय, प्रशसनीय (पथ) उपायों, मार्गों को। (रक्ष) रक्षा करो। (अनुल्वणम् वयत) गांठों और झिर्रियों से रहित कपडा बुनो। जो कि (जोगुवाम्) गीत गाने वालो, तथा कपडे का उपयोग करने वालो के गीतो का (अप) विषय बन जाये। (मनुर्भव) मननशील बनो, मनन करके कपडे के रग, बुनाई और उसके व्यापार मे उत्कर्ष उत्पन्न करो। (दिव्यम्) दिव्य = सुशिक्षित (जनम्) मनुष्य को, सन्तान्, कार्य-कर्त्ता, शिल्पि, उपभोक्ता व व्यापारी को (आ जनय) उत्पन्न करो।

दूसरा भावार्थ —धागों से कपडा बुनते हुए उत्तम रग वाला, चमकदार कपड़ा बुनो। कपड़ा बुनने के तथ कपड़े के व्यवसाय के उत्तम और लाभदायक मार्गों की रक्षा करो। वस्त्र व्यवसाय के इसे पवित्र, आकर्षक एवं उज्वल रंगो से रगों। किसी प्रकार के अपवित्र दाग, धब्बे और भद्दे-निशान इस पर न लगने दो। किसी प्रकार के कलङ्क की कालिमा अपने जीवन मे न लगने दो। किसी प्रकार के पाप-पङ्क मे फसकर अपनी हंसी न कराओ। ऐसा न हो कि कोई ऐसा रग तुम्हारे जीवन पर चढ जाये, जो कि देखने मे भी बुरा हो और छूटना भी कठिन हो। सब प्रकार के अशुद्ध व्यवहारो से बचकर पुण्य-प्रद, यश-पूर्ण, सत्य-निष्ठ, और सर्वहितकारी कामों को ही करो।

ससार मे जो आर्य-मर्यादा में
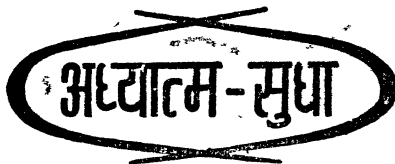
उत्तम उपायो, यन्त्रों, नियमो, और रिवाजो को नष्ट न करो। तुम्हारे कपडा गाठो से रहित तथा साफ-सुथरा हो। ऐसा सुन्दर कपडा तैयार करो, जिसकी दर्शक और उपभोक्ता सभी प्रशंसा करें। विचारवान् बनो। विचार करके कपड़ा बनाने और वस्त्र-व्यवसाय को बढ़ाने के लिये उत्तम नियम निर्धारित करो। सर्वत्र उत्तम कार्य-कर्त्ताओ को नियुक्त करो। उत्तम बुना करों, उत्तम सूत निर्माताओ उत्तम रूई, रेशम और ऊन उत्पादकों एवं उत्तम वस्त्र-व्यापारियो की अभिवृद्धि करो।

### प्रवचन

भाइयो ! और बहिनो !

अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करो। अपने जीवन को शुद्ध, सात्विक एवं उन्नत बनाओ। अपने विचारों को पवित्र रखो। अपनी काया के इस चोले अर्थात् अपने शरीर को मजबूत बनाओ और प्रचलित हैं। स्वास्थ्य के उत्तम नियम हैं। सृष्टि क्रम है। जीवन की अनेक विध और बहुत प्रिय प्रणालियां हैं, एव जो-जो उत्तम राजकीय नियम तथा न्याय के प्रचलित [illegible] हैं, उनका पालन-संरक्षण करो।

उत्तम नियमों और प्रणालियों का आविष्कार करने के लिये मानव जाति ने सहस्रो शत वर्षों तक भारी परिश्रम अर्थात् तप किया है। सर्वहित के ऊंचे आदर्शों को सामने रखकर, इन नियमो के अनुसार आचरण करना सभी मनुष्यों का आवश्यक कर्त्तव्य ठहराया गया है। अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करो। कर्त्तव्य-पालन की अवहेलना कभी भूलकर भी न करो।

बडे बड़े आविष्कारों की तो कथा भी बड़ी है। एक साधारण उपकरण "चिमटा" जो सभी सभ्य घरों में होता है। और आग को पकड़ने के काम में आता है, उसी का विचार करो। यदि यह चिमटा न हो, तो आग-सम्बन्धी कामों में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। यह चिमटा भी एक महत्वपूर्ण आविष्कार है। इन आविष्कार के पीछे भी अनुसन्धान का एक विस्तृत इतिहास है। उत्तम गुणों का अनुसन्धान भी करो, उत्तम गुणों को अपने जीवन में धारण भी करो और उत्तम गुणों एव उत्तम नियमों का सरक्षण भी करो। ऐसे शुभ कर्म करो, जो दूसरों के लिये अनुकरणीय हों।

तुम विचारवान् हो। अपने स्वरूप को, अपने कर्त्तव्य और अधिकार की सीमा को एवं अपनी-अपनी परिस्थिति और आवश्यकता को भली प्रकार समझो। अपने ज्ञान मे वृद्धि करने के लिये स्वाध्याय, प्रकृति-निरीक्षण, आत्म-विचार और वृद्धों का संग करो। अपने सब ओर दिव्य सन्तान, दिव्य-शिष्य-परम्परा दिव्य मित्र-मण्डल, दिव्य सहायक-समूह और दिव्य नागरिकों की अभिवृद्धि करो। प्रचार आदि के द्वारा मनुष्य के स्वभाव का परिष्कार करते हुए, ससार में दिव्यता अर्थात् आर्यत्व का संवर्धन करो। यह कार्य आवश्यक भी है, पुण्य एवं यश प्रद भी।

किसी विशेष मत, पन्थ, अथवा संकीर्णतापूर्ण भेद भाव आदि का प्रचारक वेद नहीं है। वेद तो संसार को विशुद्ध मानवता का ही उपदेश देता है। मनुष्य बनो !

प्रस्तुत प्रवचन के आरम्भ मे जो दूसरा शब्दार्थ और दूसरा भावार्थ है, उसमें वस्त्र निर्माण और वस्त्र-व्यापार के विषय में सभी उत्तम सिद्धान्तों एवं प्रणालियों का समावेश है। इन सूत्रों पर विशेष विचार करके, सम्बन्धितजनों को पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिये। यह वस्त्र-व्यवसाय का विज्ञान भी मानवता और सुसभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है।

★

लखनऊ रविवार १९ अक्टूबर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## वेद के नाम पर

आर्य समाज का मुख्य कार्य ससार का उपकार करना है और उपकार का मार्ग वैदिक मार्ग ही है।

महर्षि दयानन्द ने इसी कारण अपनी सारी शक्ति वेदोद्धार और वेद-भाष्य सम्बन्धी कार्यों मे लगायी तथा आर्य समाजों एव आर्य जनों को यह दायित्व सौंपा कि वे प्राचीन ऋषि मर्यादाओ के अनुसार वेदार्थ प्रकाश कर ससार का मार्ग दर्शन करे।

आर्य समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज ने महर्षि की वेद-भाष्य शैली के विपरीत अन्य सभी शैलियो का डट कर विरोध किया और ससार को यह मनवाने मे सफलता प्राप्त की कि ऋषि की शैली सर्वश्रेष्ठ है।

अपनी विद्वत्ता के गर्व मे आकर अनेक विद्वानो ने महर्षि के पथ से मुख मोडा आर्य समाज ने उनका युक्ति पूर्वक ऐसा खण्डन किया कि फिर वे अपना मुख न दिखा सके।

आर्य समाज के वर्तमान इतिहास मे भी एक ऐसा ही घटना क्रम चल रहा है। श्री विद्यानन्द विदेह ने अपने स्वाध्याय द्वारा वेद के प्रति जो भी आस्था या निष्ठा प्राप्त की हो हमे इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं कहना है, परन्तु जब वे अपने को महर्षि दयानन्द का अनुयायी मानते है और भाष्य मे अपनी स्वच्छन्दता प्रदर्शित करते हैं, तब आर्य समाज उनके कार्य और दृष्टि कोण से कैसे सहमत हो सकता है।

आर्य नेता श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी ने अपने अलौकी ऋषि-भक्ति से यह अनुभव कर लिया था कि श्री विद्यानन्द विदेह वेद के नाम पर पौराणिक पोप डम और मठाधीश पन को बढावा दे रहे है और उन्होने सार्व देशिक सभा द्वारा जाच करा कर उनके ऊपर प्रतिबन्ध का प्रस्ताव पारित करवा दिया। यदि उस समय यह प्रतिबन्ध न लगाया गया होता तो अब तक श्री विदेह आर्य समाज मे अपने विचारो का प्रसार कर आर्य जनता को बहुत अधिक भ्रमित कर सकते थे। अच्छा ही हुआ कि प्रतिबन्ध समय पर लग गया।

पिछले दिनो समाचार पत्रों मे पढ़ कर हमे आश्चर्य और खेद हुआ कि कुछ स्वार्थी और शरारती तत्व ऐसी घोषणायें कर रहे हैं कि श्री विद्यानन्द विदेह पर से आर्य समाज ने प्रतिबन्ध हटा लिया।

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन मे जिस प्रतिबन्ध की पुष्टि की गयी हो उसको चन्द आदमी अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये मनमाने तरीके से कैसे हटा सकते हैं?

आर्य समाज के शुभ चिन्तकों को ऐसी घोषणायें करने वालो से पूछना चाहिये कि अब प्रतिबन्ध कैसे हट गया। क्या श्री विदेह जी ने वेद व्याख्या बदल दी या हटाने वाले उनके सम्मोहन मे आ गये हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि न तो धर्मार्य सभा ने श्री विदेह जी पर से प्रतिबन्ध हटाया है और न बाद मे ही सार्व देशिक सभा ने ही इस प्रतिबन्ध को हटाया है। जो हटाने की बात कहते हैं वे इस बात की वैधानिकता को सिद्ध करे कि बिना साधारण सभा की सम्पुष्टि के साधारण सभा द्वारा पारित प्रतिबन्ध हटाया जा सकता है। इसी प्रश्न पर स्पष्ट हो जायगा कि आर्य समाज के सच्चे हितैषी कौन हैं जो प्रतिबन्ध का समर्थन करते हैं या प्रतिबन्ध हटाने की बात करते हैं।

प्रतिबन्ध हटाने की बात वे लोग करते हैं जो श्री विदेह को आर्य समाज के सगठन की कठिनाइयों मे जबरदस्ती न्यायाधीश के रूप मे छापना चाहते हैं। श्री विदेह से हमे कोई व्यक्तिगत विद्वेष नहीं मत-भेद नहीं। हम तो आर्य समाज के हित मे उनकी सैद्धान्तिक समालोचना करते हैं, और करते रहेगे, जब तक वे महर्षि के चरणो मे अपना मस्तक नवाकर अपनी भूल स्वीकार न कर लेगे।

हम नहीं समझ सके कि श्री विदेह जैसे व्यक्ति कैसे आर्य समाज के विवादो मे मध्यस्थ बनने का दुस्साहस कर रहे हैं। धन्य हो? प्रस्तावक और धन्य हो स्वीकर्ता कल तक जो प्रतिबन्ध मे जकडे थे आज सगठन के विवादो मे पञ्च बनेंगे, अर्थात् और सब लोग बेकार हैं, श्री विदेह जी ही मूर्धन्य हैं।

आर्य जनता को सावधान रहना चाहिये कि श्री विदेह आर्य समाज के प्रवक्ता नहीं है और आर्य समाज के कार्य क्रम में उनकी कोई आस्था भी नहीं है। सार्वदेशिक सभा ने जो प्रतिबन्ध उन पर लगाया था वह आज भी उन पर लागू है। मित्र के अगो मे इसका विस्तार से उल्लेख किया जा चुका है। इसी अक मे हम श्री विदेह की वेद-भाष्य शैली की समीक्षा सम्बन्धी एक आर्य विद्वान् का लेख दे रहे है। आर्य जन देखें कि श्री विदेह क्या हैं और हमारे स्वयम्भू तथा कथित नेता उनसे क्या और कैसे स्वार्थ सिद्ध करना चाहते है। उनके मस्तिष्क मे न आर्य समाज का हित है न वेद के वास्तविक प्रचार का, वास्तव में वे अपना प्रचार चाहते है और वेद के नाम पर आर्य जनता को गुमराह कर महर्षि के प्रति कृतघ्नता का पाप करने मे भी सकोच नहीं कर रहे हैं। आर्य जनता सावधान रहे यही निवेदन है।

## महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

के अवसर पर "आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी" नाम से पुस्तक तैयार करनी है। आर्य समाज के अनुभवी लेखक श्री प० शिवदयालु जी ने उसका सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया है। इस सम्बन्ध मे विभिन्न आर्यप्रतिनिधि सभाओ, आर्य समाजो तथा सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि पुस्तक के सम्बन्ध मे जो भी सुझाव और मसाला वे दे सके अतिशीघ्र पण्डित जी के पास "आर्य वानप्रस्थाश्रम पो० ज्वालापुर, जिला सहारनपुर" के पते पर भेजने की कृपा करें। इस सम्बन्ध मे यदि कोई पुस्तके छपी हुई हो, या शास्त्रार्थ महारथियो के जीवन, कार्य आदि के बारे मे ज्ञात हो, सब भेज दे।

— महेन्द्र प्रताप शास्त्री संयोजक

## निरीक्षण सूचना

श्री पं० महेशचन्द्र जी शर्मा सि० शास्त्री बरौठा (अलीगढ़) सभा मुख्य निरीक्षक की माता जी सख्त रुग्ण हो गई थीं, इनका स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। वर्षा भी समाप्त हो गई है। अतः सभा के मुख्य निरीक्षक जी आगरा कमिश्नरी के आर्यसमाजों मे निरीक्षणार्थ भ्रमण करेंगे—उनके पहुचने पर समाजें निरीक्षण करावें और सभा प्राप्तव्य धन उनको देकर सभा की रसीद प्राप्त करने की कृपा करे।

प्रेमचन्द्र शर्मा एम एन ए
सभा मन्त्री

### उत्सव—

"आर्य समाज, (बी ब्लाक) गोविन्दनगर, कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनाक १ से ४ नवम्बर ६९ तक बडे ही धूम धाम एव समारोह पूर्वक मनाया जायगा, जिसमे आर्य जगत् के उच्चकोटि के सन्यासी, मूर्धन्य विद्वान् एव भजनोपदेशक पधार रहे है। सर्वसाधारण की उपस्थिति प्रार्थनीय है।'

—ओमप्रकाश आर्य बी ए, मन्त्री

# सभा के लिये दो हजार रुपये भिजवाये

## सभा के मुख्य निरीक्षक श्री बलवीर सिंह बेधड़क का प्रशंसनीय कार्य

सभा के हितैषी, शुभचिन्तक इस उदाहरण से प्रेरणा लेकर सभा को आर्थिक सहयोग दिलाने मे सहायता करें।

श्री बलवीर सिंह जी बेधड़क मेरठ आर्य समाज के पुराने उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सभा के सगठन और आर्थिक पक्ष को सुदृढ़ करने मे वे सर्वव महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान करते रहे है। सभा की प्रार्थना पर आपने सभा के मुख्यनिरीक्षक पद का कार्य भार सम्हाला हुआ है, और अपना समय-दान देकर आर्य समाजो का निरीक्षण कर रहे हैं। तथा समाजो मे व्याप्त शिथिलताओ को दूर करने के लिये अधिकारियों को प्रेरणा करते हैं। आपने सभा कार्यालय को अपनी जो निरीक्षण आख्याएँ भेजी हैं, उन पर सभा शीघ्र ही कार्यवाही कर रही है। साथ ही सभी सम्बन्धित समाजो के अधिकारियो से भी निवेदन है कि वे जो-जो आदेश अपनी निरीक्षण आख्या मे दे आये हों, उनका पूर्णतया पालन करे ताकि दुबारा निरीक्षण के समय वैसी त्रुटिया न पायी जाय। श्री बेधड़क जी ने ५० समाजों का निरीक्षण कार्य सम्पन्न कर लिया है और अन्य जिलो व नगरो मे भी वे शीघ्र ही पहुचेंगे। श्री बेधड़कजी जब भी जिस आर्य समाज मे पहुचे वहाँ के अधिकारियो को आर्य समाज के निरीक्षण कराने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिये।

अन्य निरीक्षकबन्धुओं से भी प्रार्थना है कि वे श्री बेधड़कजी से प्रेरणा लेकर अपने-अपने निर्धारित क्षेत्रों मे निरीक्षण कर सभा का प्राप्तव्य-धन एव वेद-प्रचार सहायता भिजवाने की कृपा करे। श्री बेधड़कजी के सहयोग के लिये सभा आभार प्रकट करती है।

—उमेशचन्द्र स्नतक उपमन्त्री
आर्यप्रतिनिधि सभा (उत्तर प्रदेश)

# सूचना शिक्षा विभाग

## धर्म शिक्षापरीक्षाएँ अन्तरगत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश १९७० ई०

समस्त आर्य विद्यालयो को व आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित धर्म शिक्षा परीक्षाएँ फरवरी सन् १९७० अन्तिम सप्ताह मे होंगी।

| नाम परीक्षा | कक्षा | परीक्षा शुल्क प्रति छात्र/छात्रा |
|---|---|---|
| १-धर्म प्रवेशिका | ७ | -३५ |
| २-धर्म भूषण | ९ | -८५ |
| ३-धर्माधिकारी | ११ | १-०० |

इस शुल्क के अतिरिक्त १) प्रति विद्यालय परीक्षा फन्ड के गजट के लिए भी आना चाहिए। प्रवेश फार्म निम्न पते से १५ दिसम्बर सन् १९६९ तक आवश्यकतानुसार मागे जावें। और १५ जनवरी सन् १९७०ई०तक प्रवेश फार्म भरकर परीक्षा शुल्क सहित इस कार्यालयको पहुच जाने चाहिए। प्रत्येक आर्य विद्यालय अपनी सस्था का केन्द्र रहेगा।

रामबहादुर, एडवोकेट
मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०
अधिष्ठाता शिक्षा-विभाग
स्थल—पूरनपुर (पीलीभीत)

# आर्य समाज चौक मथुरा रजत जयन्ती समारोह

## २४ अक्टूबर से २८ अक्टूबर ६९ तक

### २८ अक्टूबर को गुरु विरजानन्द-दिवस

ब्रजमण्डल की प्रमुख आर्य समाज चौक मथुरा का रजत जयन्ती समारोह आगामी २४ से २८ अक्टूबर तक मनाना निश्चित हुआ है।

जयन्ती समारोह की अध्यक्षता पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज करेंगे।

जयन्ती समारोह को जिला आर्य महा सम्मेलन के रूप में व्यापकस्तर पर मनाने की योजना है जिससे जिले मे सामाजिक प्रचार को प्रगति मिल सके। अत जिले की सभी आर्य समाजें इस समारोह को सफल बनाने मे सहयोग दे रही है।

इस अवसर को दृष्टि मे रखते हुए विशाल वैदिक दिग्विजय यात्रा (शोभा-यात्रा) की तैयारियाँ आरम्भ हो गयी हैं। इस यात्रा मे आर्यजगत के प्रमुख विद्वान्, महात्मा एव कर्मठ कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे।

वैदिक राष्ट्र निर्माण सम्मेलन, अराष्ट्रीय तत्व निरोध सम्मेलन, महिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, वेद-सम्मेलन, आर्य युवक (आर्य वीर दल) सम्मेलन आदि सम्मेलन भी सम्पन्न होंगे। आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वानो, महात्माओं, पत्रकारो आदि ने सम्मेलनों में पहुचना स्वीकार कर लिया है। स्वस्ति शान्ति महायाग का आयोजन इस अवसर की विशेषता होगी।

२८ अक्टूबर को गुरुविरजानन्द दिवस सम्पन्न होगा, जयन्ती पर एक महत्त्वपूर्ण प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

— ईश्वरी प्रसाद प्रेम सयोजक

## देवनागरी तार प्रतियोगिता

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद देवनागरी मे तारो की लोक प्रियता बढ़ाने के लिए एक प्रतियोगिता अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित कर रही है जिसमे डाकतार विभाग, रेल विभाग तथा नहर विभाग के कर्मचारी भाग ले सकते हैं। तारो की बुकिंग, प्रेषण, प्राप्ति आदि पर तारघर के कर्मचारियो को अक दिए जाएगे और अधिक अक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियो को विभिन्न प्रकार से पुरस्कृत किया जाएगा। जिस तार घर मे देवनागरी के तारों का काम सबसे अधिक होगा उसे 'चल वैजयती' (शील्ड) भी प्रदान की जायगी। यह प्रतियोगिता १५ नवम्बर से ३० नवम्बर, १९६९ की अवधि मे होगी। प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है। इनके नियम की विस्तृत जानकारी केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एच० वाई०-६८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रकार की प्रतियोगिता परिषद ने गत वर्षों मे भी आयोजित की है, और उसके फलस्वरूप अनेक नगरो मे देवनागरी तारों की सख्या बढ़ी है। परिषद् को आशा है कि इस प्रतियोगिता के माध्यम से जनता को देवनागरी तारों के सम्बन्ध मे रुचि और बढेगी और डाकतार विभाग के कर्मचारी भी जनता को इस सम्बन्ध मे और अधिक सुविधाए प्रदान करेंगे।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
एच वाई ६८ सरोजनी नगर
नई दिल्ली

# श्री विद्यानन्द विदेह की वेदव्याख्या पर एक दृष्टि

ले०—श्री राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री भू पू सहायक मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली

श्री विद्यानन्द विदेह की वेद-भाष्य विषयक मान्यताएँ एव धारणायें, ऋषि दयानन्द एव प्राचीन परम्पराओं का विरोध करती हैं। यही कारण है कि उनका वेद-भाष्य बिना नकेल के ऊँट के समान आवारा हो गया है। समस्त भाष्य ऋषि दयानन्द के भाष्य से विपरीत है। श्री विदेह जी ने 'वेदभाष्य की योजना' शीर्षक पृ० ३ पर प्रकाशित किया है कि—

(क) 'वेद के अभिप्राय को पाने की चाबी वेदो के अग-भूत शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द ज्योतिष-विज्ञानो को मान लिया गया है। वेद के अध्ययन के लिए इन अगो के ज्ञान की नितान्त आवश्यकता मानी जाने लगी। फल यह हुआ कि जिन वेदो के मर्मों की खोज ऋषि (आत्मदर्शी, तत्वज्ञानी) जन किया करते हैं, वे वेद शुष्क, कुण्ठमति वैयाकरणों और शब्द शास्त्रियों की पाठशाला मे तराशे जाने लगे। वेद ने अपना अभिप्राय उन्हे अभिव्यक्त ही नहीं किया। वैदिक साहित्य एव वैदिक विद्वानो का इतिहास यह सिद्ध कर रहा है कि कोरे वैयाकरण, कोरे बुद्धिवादी शुष्क, साधन हीन, तार्किक, याज्ञिक एव मीमांसक कभी भी वेद के यथार्थ तक पहुचने में सफल नहीं हुए है, तो ऋषि मनीषी जन ही "वर्तमान युग मे वेदों का तात्पर्य क्यो नहीं स्पष्ट हो पा रहा। कारण यह है कि अन्त स्साधक इस क्षेत्र मे नहीं आ रहे।" पृ० ३

यह सब बाते ऋषि-भाष्य के विषय मे ही हे। वही विदेह जी को स्पष्ट नहीं हो पा रहा। वही अगो के विज्ञान के आधार पर बनाया है। ऋषि ही वैयाकरण, बुद्धि वादी, शुष्क, तार्किक याज्ञिक एवं मीमासक थे। इसीलिये विदेह जी का भाष्य ऋषि-भाष्य से सर्वथा विपरीत है।

१ समस्त वेद मन्त्र स्वर रहित छपे गये हैं।

२ ऋषि, देवता छन्द तक भी वेद मन्त्रो के नहीं दिये गये हैं।

३ पद-पाठ भी स्वर रहित है। जान पडता है कोई सस्कृत का काव्य है।

४ अपने को सिद्ध योगी होने का ढोग पूरा लिखा है। यथा—

"सिद्ध शिला पर ध्यानावस्थित हो गया। (पृ० १८, स० ४)। मध्याह्नोत्तर सिद्ध शिला से नीचे उतर कर स्वगृह को जाते हुए मार्ग मे एक चट्टान पर मुझे एक अपरिचित नवागन्तुक संन्यासी दिखाई पड़े, पवन से इधर उधर उड़ने हुए जिन के लम्बे बालों ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया। परिचय प्राप्ति की मेरी इच्छा पर उसने कहा, "मुझ से मेरे अपने विषय मे कुछ न पूछिये।" यदि आप किसी सेवा के लिये आदेश करेंगे तो मुझे बडो प्रसन्नता होगी।' मैने निवेदन किया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने मेरे नाम से सम्बोधन कर के कहा :—

'वेदों का सही और सच्चा अर्थ करना है, तो योगाभ्यास कीजिये, सयम पूर्वक समाधि मे उतरिये।' कुछ क्षणो के मौन के बाद उसने फिर कहा :—

'वेदेतर समस्त ग्रन्थ (९ । ६ अङ्गो, उपाङ्गो ब्राह्मणो, उपवेदो समालोचक) का आश्रय छोडिये। वेदो का मर्म जानना है तो वेदो के अन्दर बैठकर वेद मन्त्रो पर मनन कीजिये। अतः श्रुति और अन्तर्ज्योतिः के बिना वेदो के वास्तविक अर्थ का प्रकाश नहीं हो सकता।' मैं कुछ कहना ही चाहता था, कि वह फिर कहने लगे :—

'आपने सब कुछ तो पढा है, पर पुराण नहीं पढ़े पुराणो ने आपका क्या बिगाडा है। पुराण, कुरान बाइबिल सब पढिये, और सबकी वैदिक व्याख्या कीजिये। सब वेदो की धाराये है। इस प्रकार ही ससार मे वेदो को फैलाया जा सकता है।'

इतना कहकर वह उठ खडा हुआ और चलते कहता गया, 'ऋषि, देवता, छन्द और स्वरो मे न उलझिये। इन पचडो ने ही वेद का विकास रोक रखा है। वेदो के इन बन्धनो को तोडिये। वेदो को बन्धन मुक्त कीजिये।' पृ० २० स० १५ १६ सीताराम-कुटी के पास एक अन्य अपरिचित नवागन्तुक सन्यासी के दर्शन हुए। तीनो वृक्ष की छाया मे बैठकर बात-चीत करने लगे। मुझे सम्बोधन कर सन्यासी बोले —

'आप पिछले जन्म के वेद और योग के अभ्यासी हैं। आप वेदो का अध्ययन और योगाभ्यास कीजिये। आपको शीघ्र दोनो मे सिद्धि प्राप्त होगी।'

६. ऋषि दयानन्द सम्मत एव आर्य जगत् द्वारा आजतक स्वीकृत प्रचारित नैरुक्त शैली के श्री विदेह जी कट्टर विरोधी हे। देखिये पृ० १९ पर ७ ८ सख्या —

७ मन्त्रार्थ की अनिश्चितता का और परिणाम स्वरूप वेदो की दिखाई पडने वाली असम्बद्धता का मुख्य कारण मुझे प्रतीत हुआ—व्याकरण वाद, व्युत्पत्तिवाद, प्रमाणवाद, विनियोगवाद, यज्ञवाद, तन्त्रवाद, इतिहासवाद और गाथावाद।

८ व्याकरण-वादी और व्युत्पत्तिवादी भाष्यकार यह भूल गए कि वेदो की भाषा वैदिक भाषा है, सस्कृत नहीं। वे यह भी भूल गये कि वेदो का अपना वैदिक भाषा का व्याकरण स्वय वेद है केवल वेद हैं। सस्कृत के व्याकरण से वेदो के सम्पूर्ण शब्दों का अर्थ तथा उनकी व्युत्पत्ति सिद्ध करना वेद के वेदत्व को नष्ट करना है।

८ विदेह वेद भाष्य को देखकर हमारी धारणा बनी है कि यह प्राचीन परम्पराओं से उन्मुक्त 'छायावादी' वेद भाष्य है। जिसमें तथ्य नहीं, तीतर की आवाज पर जैसे अटकले लगाई जाती हैं वैसे अटकले ही—जो कर्ण प्रिय हैं, मनोरजन परिपूर्ण हैं—तनिक यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के पहले मन्त्र का भाष्य देखिये—

'ऋत्वनुसार यौवनावस्था को प्राप्त एक युवक के हृदय में भी एक स्वाभाविक कमनीय कामना अकुरित होती है, किसी सुयौवना सुन्दरी का प्रेमाधार बनकर उसके हृदय मे अपना हृदय रखने की उसे अपने हृदय से लगाने और स्वय उसके हृदय से लगने की उसे अपने हृदयासन पर सुशोभित करके उसे अपने हृदय की रानी बनाने की।

'हृदयेश्वरी' वधू के लिए अपने हृदयासन के लिए, अपने हृदय पर सुशोभित करके अपनी हृदयेश्वरी बनाने के लिए अपने हृदय से लगाकर अन्त शान्ति पाने के लिए, मै तुझ प्रिया को, तुझ सेवनीया को सम्यक स्वीकारता हू। अपने हृदयासन पर सस्थापित

७ सार्वदेशिक सभा यह पास कर चुकी हे कि 'ॐ' का इस प्रकार लिखना वाममार्गी प्रथा है। अतः 'ओ३म' ही लिखा जाये। पर पौराणिको को साथ लेने के लिए विदेह जी ने इसी 'ॐ' को सर्वत्र छापा है।

कार्तिकी मेले पर—

# गढ़मुक्तेश्वर में कमिश्नरी आर्य सम्मेलन

## २१, २२ व २३ नवम्बर ६९

मेरठ कमिश्नरी के जिला उपसभाओ के अधिकारियो की एक मीटिंग आर्य समाज खालापार सहारनपुर मे २४ अगस्त को श्री धर्मसिंह जी उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे हुई। उसका निर्णय कमिश्नरी आर्य सम्मेलन मेरठ जिला उप सभा द्वारा आगामी २२ २३ नवम्बर को मेला गढ़मुक्तेश्वर मे बडे उत्साह पूर्वक किया जाये, और कमिश्नरी मेरठ की सब ही आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि उसमे भेजें और यथाशक्ति सम्मेलन को सहायता देकर सम्मेलन को सफल बनायें। इस सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अधिकारी श्री प्रधान जी एवं मन्त्री जी आदि भाग लें, और सम्मेलन को सफल बनाने मे योग दें, हो सके आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग भी यहीं रक्खें। जिससे सब ही आने वाले अन्तरग सदस्यो को प्रेरणा मिले कि प्रचार का आयोजन मेरठ वाले किस ढग से करते हैं। कार्यक्रम १९ नवम्बर से २३ नवम्बर तक चलेगा अन्य सम्मेलन भी २१-२२ २३ नवम्बर तीन दिन चलेंगे।

प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक वृहद यज्ञ १९ से २३ तक निरन्तर होगा, ९ बजे से रात्री ११ बजे तक विशाल प्रचार आयोजन रहेगा अपार जन-समूह के कारण प्रचार बीच में बन्द नहीं होगा। सम्मेलन मे आये हुये प्रतिनिधियो की बैठक अलग पडाल में होगी, जिसका निर्णय विशाल पडाल मे भी सुना दिया जाया करेगा। समाचार पत्रो मे कार्यवाही नित्य प्रति जाती रहेगी।

नोट—प्रतिनिधियो के ठहरने भोजनादि की व्यवस्था सम्मेलन की ओर से होगी। किन्तु शीत निवारण वस्त्र अवश्य लाने होगे सम्मेलन का विशाल शिविर सन्तर न० ७ मे गंगा किनारे पर होगा। आने वाले बन्धु एवं बहनें अपने स्थान रिजर्व करवाने की शीघ्रता करें। क्योकि वहां डेरे छोलदारी होगी, देर होने से स्थान का अभाव न अखरे। इस की सूचना मन्त्री जिला उप सभा ४ आलोक हापुड़ जिला मेरठ को दें।

—बलबीरसिंह बेधड़क
मन्त्री उप सभा, मेरठ

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के संबंध में आवश्यक सूचनाएँ

## *समारोह की तिथियों में परिवर्तन*

पूर्व प्रकाशित सूचनाओं के आधार पर काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह की तिथियां १८-२१ नवम्बर निर्धारित की गई थीं। अब तिथियों में परिवर्तन कर दिया गया है। शताब्दी समारोह अब २३ दिसम्बर से २८ दिसम्बर ६९ तक हो गया है।

## (२) पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों की दुकानें

शास्त्रार्थ शताब्दी पर पुस्तक विक्रेताओ तथा प्रकाशकों को दुकानें लगाने की विशेष सुविधा दी जाएगी। शताब्दी पर पुस्तको की दुकानें लगाने वाले सज्जनो से अनुरोध है कि वे इस सम्बन्ध में आवश्यक पत्र व्यवहार कर अपना स्थान सुरक्षित करवा लें ताकि बाद में उन्हे असुविधा न हो।

## (३) शताब्दी कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नारायण स्वामी भवन लखनऊ में शताब्दी कार्यालय खोल दिया गया है ताकि शताब्दी सबंधी समस्त पत्र व्यवहार सुगमता से किया जा सके। शताब्दी समारोह सम्बन्धी पत्रों के शीघ्र उत्तर देने की व्यवस्था की गई है। पत्र व्यवहार करने वालों को चाहिए कि वे पत्र पर पूरा पता अर्थात् 'काशी शास्त्रार्थशताब्दी कार्यालय,' नारायण स्वामी भवन, ५ मीरा बाई मार्ग, लखनऊ-१ लिखें।

## (४) धन संग्रह के लिए नोट

शताब्दी समारोह के लिए धन सग्रह के विभिन्न १००) २५) १०) ५) व १) के नोट प्रकाशित किए जा रहे हैं। समस्त आर्य समाजों को चाहिए कि वे अपनी आवश्यकताओ से तुरन्त सूचित करें ताकि उन्हे नोट भिजवाए जा सकें।

कृपया स्मरण रखें कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समस्त आर्य जगत् की अपनी शताब्दी है। इसमें तन मन धन से पूर्ण सहयोग देना प्रत्येक आर्य नर नारी का नैतिक कर्त्तव्य है।

मन्त्री, काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

---

हूं, शीतल जल की तरह अपने हृदय मे सींचता हूं। हृदय से प्यार करता हूं।

पृ० ७९

देखे आपने प्रेयमी के लिए विदेह जी के हृदयोद्गार। कालिदास को मात कर दिया है। इसी प्रकार 'हृदयेश!'' सम्बोधन से प्रेमी के प्रति प्रेयसी के उद्गार व्यक्त किए हैं।

यह वेद भाष्य है। जिसकी मन्धमन्त्र के किसी शब्द में नहीं, वहा तो वहि और वेदी का ही उल्लेख है।

आगे पृ० ८ पर लिखा है :—

'समस्त शरीर मे व्याप्त रहने से वीर्य का नाम विष्णु है। स्तूप कहते हैं शिखा, शिखर, सर्वोच्च स्थल को किसी भी स्थल के सबसे ऊचे स्थान को स्तूप कहते हैं।'

बस विष्णु का स्तूप क्या हुआ विचार कर लीजिये ?

गृहस्थ आश्रम की बड़ी ही महिमा यजुर्वेद २/२ में दिखाई है यहा तक लिख डाला— पृ० ८१

'अभ्युदय का ही नहीं, निश्श्रेयस का व्युन्दन भी यह गृहसस्था ही है। गृहस्थाश्रम! तू विष्णु का सानु है। विष्णु की प्राप्ति का सर्वोच्च स्थल है।'

आगे यहां तक लिख डाला—

'जिन्होने न परिवार परिजन से प्यार किया, न दाम्पत्य स्नेह से स्निग्धता की अनुभूति प्राप्त की, वे यदि ईश्वर भक्त बने भी तो शुष्क दार्शनिक भक्त ही बने, तल्लीन और तन्मय गहन-भक्त नहीं। यों यत्र तत्र कहीं कोई अपवाद हुआ तो क्या।'

यह इशारा किस-किस की ओर है। और सुनिये—

'दाम्पत्य प्रेम से ही प्रभु प्रेम जागृत होता है। यह कहावत अक्षरशः सत्य है।

इन मन्त्रो अर्थों की गन्ध कहीं भी तो वेदमंत्र मे नहीं है।

श्री विदेह का पूरा ही भाष्य इस प्रकार की अनर्गल बातों से भरा है, इस प्रकार का व्यक्ति यदि आर्य समाज का अंग बन सकता है तो सब ढोंगी, पाखण्डी, अनर्गल प्रलापी आर्य समाज के प्रचारक बनाये जा सकते हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में स्थाली पुलाक न्याय से दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। आशा है आर्य जनता इस प्रकार के व्यक्तियों से सावधान रहेगी।

# गुरुवर विरजानन्द की सुशिक्षा

छन्द शार्दूल विक्रीड़ित

[ १ ]

मातृ-पितृ-विहीन अन्ध-बालक दर दर भटकता रहा,
निर्धनता, बचनीयता, बभुक्षा के ताप उसने सहे।
प्रज्ञा का वर दान जिसने पाया करके प्रबल साधना,
गुरुवर विरजानन्द दण्डधारी, योगी महापुरुष था॥

[ २ ]

जन्मा था करतारपुर नगर मे, हरद्वार मे था पढ़ा,
संस्कृत का विद्यालय खुला था सोरों मे उसका कभी।
दर्शन, वेद, व्याकरण प्रभृति का मूर्धन्य-ज्ञाता अहा!
विरजानन्द यती श्रुति स्मृति का रक्षक,प्रशिक्षक बना॥

[ ३ ]

जिज्ञासु-वर्गों मे उसके यश का प्रसार होने लगा,
विद्या के अनुरागी शिष्य विद्या का दान पाने लगे।
अलवर का महीपाल शिष्य उनका करके अनुनय-विनय,
अलवर मे ले आया उनको,उनके चरणों मे पढ़ने लगा॥

[ ४ ]

बीता यूं कुछ काल, फिर यतीवर जाकर भरतपुर रहे,
फिरकर मथुरा वास दान विद्या का जग को देने लगे।
प्रेरा था जगदीश्वर ने उनको सुस्पष्ट सब ही चुना,
मथुरा में दयानन्द आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

[ ५ ]

फिर आई वह शुभ-घड़ी कि जिसकी वे इन्तजारी में थे,
खट-खट खट द्वार की ध्वनि को सुनकर मुनि ने कहा।
कौन आया? क्या नाम? काम क्या है? उत्तर मिला खुश हुए
जिज्ञासु, चरणानुरागी भगवान्! हूं आपका एक मैं॥

[ ६ ]

जिज्ञासु के शब्द फिर यती के थे कर्ण-गोचर हुए,
अष्टाध्यायी, वेद, योग-विद्या की है मेरी कामना,
ज्ञानाजन पूरो, किवाड़ खोलो, संशय मेरे मेट दो,
शरणागत हूं आपका दयानन्द भगवान्! मेरा नाम है॥

[ ७ ]

अब जग मे करतारपुर की महिमा दिन-दूनी बढ़ने लगी,
गंगा, हर का द्वार, सोरों अलवर जग मे उजागर हुए।
गुरुवर विरजानन्द को दयानन्द अधिकारी चेला मिला,
सद्गुरुऔर सुशिष्य के मिलन से विद्या की शोभा बढी॥

[ ८ ]

मथुरा का सम्मान था कृष्ण ने जग मे बढ़ाया कभी,
अत्याचार-अन्याय-ग्रस्त नामी नृप कंस को मारकर।
सद्गुरु और सुशिष्य ने पछाड़े, अज्ञान, अविद्या, असुर,
सत्यार्थ-प्रकाश जग मे फैला, मथुरा का गौरव बढ़ा॥

[ ९ ]

आर्ष-साहित्य का जगत् में फिर मान होने लगा,
वैदिक-धर्म-विजय-निनाद गूंजे, आशा के दीपक जले।
मानवता सुख-चैन, ऋद्धि सिद्धि पाकर सुरक्षित हुई,
भारत भाल-विशाल जग मे ऊँचा गुरु-शिष्य ने कर दिया॥

[ १० ]

वैदिक-धर्मालोक को प्रसारा, अन्धकार जग का हरा,
गुरुवर विरजानन्द द्वारा प्रेरित ऋषिवर दयानन्द ने।
फैलाकर नव-चेतना ऋषि ने स्वराज्य - सिद्ध - प्रदा,
भारत मे स्वाधीन प्राक् युग का आयोग फिर रच दिया॥

[ ११ ]

सद्गुरु और सुशिष्य के मिलन के देखो चमत्कार को,
जग मे मंगल, मोद, शान्ति-सौरभ की वृद्धि करते रहो।
है यह मानवता, यही मनुज के जीवन का आदर्श है,
मित्रो! ईश्वर साथ है तुम्हारे, कर्त्तव्य-पालन करो॥

[ १२ ]

सद्गुरु और सुशिष्य के सुमार्ग को छोड़ना न कभी,
सत्यासत्य-विवेक को न खोना, मित्रो! कभी भूलकर।
जीवन का साफल्य बस यही है, 'जय हो सदा सत्य की,'
गुरुवर विरजानन्द की सुशिक्षा का सार है बस यही॥

—'साधु सोमतीर्थ'

# तेरी इच्छा

होता नहीं कुछ भी तव इच्छा के प्रतिकूल।
पात न हिल सकता कोई, फूल न सकता फूल॥

पथिक अनेकों एक नाव मे जब जाते हैं।
नाव उलट जाती तो भी कुछ बच आते हैं॥

जब कभी भूकम्प से नगर पूरे दब गये।
मर गये लाखो मगर बहुत जीवित रह गये॥

तेरी इच्छा से कहीं द्वीप सागर मे बनें।
हिम ढके गिर, गिर गये जल गये जंगल घने॥

तूने चाहा गगन मे, मेघ मण्डल घिर गया।
कल जो रेगिस्तान था, अब जलाशय बन गया॥

तेरी इच्छा के बिना कुछ यहाँ होगा नहीं।
चाहे वैरी जगत् हो भक्त कुछ खोता नहीं॥

तेरी इच्छा से मनुज तत्व-ज्ञानी हो गये।
तेरी इच्छा पूर्ण हो बोल कर ऋषि सो गये॥

—विश्वम्भर दयाल वर्मा नया कटरा, इलाहाबाद

# यज्ञ के अधिकारी

[ले०—श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद-सदन, इन्दौर—२]

## पात्रता की आवश्यकता

यज्ञकरने एव कराने के अधिकारीजनों को ही यज्ञ करना एव कराना चाहिये। सामान्य रूप से सभी वर्ण के जनों को यद्यपि यज्ञ का अधिकार है, परन्तु उसकी पात्रता विशेष रूप से प्राप्त भी करनी चाहिये। जो व्यक्ति यज्ञ पात्रता सम्पादन नहीं करते हैं, वे अपात्र व्यक्ति सामान्य रूप से यज्ञ के अधिकारी होने पर भी अनधिकारी श्रेणी मे परिगणित किये जाते हैं। उनको यज्ञ के साथ सयुक्त करने से अनेक दोष एव विघ्न उत्पन्न होकर यज्ञ के अभीष्ट फल की प्राप्ति में अनेक प्रकार से बाधक रूप मे हो जाते हैं।

## अपात्रता से दोषोत्पत्ति

"ये ते शत वरुण ये सहस्र यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः॥ इस मन्त्र मे सैकड़ों और सहस्रों प्रकार के यज्ञ सम्बन्धी पाशों से मुक्त होने की प्रार्थना का विधान हमें इस निष्कर्ष पर पहुचने को बाध्य करता है कि हमारे ही अनेक प्रकार के दोषों से वे यज्ञ के पाश हमें दुःख के हेतु रूप होते हैं और यज्ञ द्वारा ही उनसे मुक्ति भी होती है। उन अनेक प्रकार के दोषो मे अनधिकारी एव अपात्र व्यक्तियो से अत्यधिक दोष एव विघ्नों की उत्पत्ति होने से ही उनको अधिकार से वंचित किया गया।

## अपात्र अनधिकारी है.

साधक एव बाधक कर्मों मे जो जितना बलवत्तर इष्ट परिणाम देने वाला होता है तदनुसार यज्ञ से इष्ट की प्राप्ति होती है और जो बलवत्तर अनिष्ट परिणाम देने वाला होता है उससे अमगल या अनिष्ट भी होता है। इसलिये याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण मे लिखा :—

"एष तमः प्रविशति एन वा तमः प्रविशति यो अयज्ञियान् यज्ञेन प्रसजति।"
(शतपथ ५।३।२।२)

अर्थात्—"वह अन्धकार में प्रवेश करता है, अथवा इसमें अन्धकार प्रवेश करता है जो यज्ञ के अनधिकारियों को यज्ञ से सयुक्त करता है।" अतः यज्ञ के अधिकारी पुरुषों का ही यज्ञ में यजमान, ऋत्विजादि रूप में उपयोग करना चाहिये।

## पापी अपात्र है.

इसी प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है :—

तस्माद् ब्राह्मणेन अयज्ञियः न पाप पुरुषो याज्य।
(ऐतरेय ब्राह्मण १९।३)

अर्थात्—"इसलिये यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण ने जो यज्ञ का अधिकारी पुरुष नहीं है और जो पाप कर्मरत पुरुष है। उनको यज्ञ न करावे अथवा उससे यज्ञ न करावे।"—जाति, अवस्था, स्थिति, वर्ण, योग्यता आदि की दृष्टि से अधिकार है। इस प्रकार जो यज्ञोपवीति उपरोक्त गुणो से युक्त हो उसे यज्ञ का अधिकार है। इसके विपरीत आचरण करने वाले को यज्ञ का अनधिकारी मानना चाहिये। क्योंकि अधिकारी व्यक्ति से यज्ञ कराने या उनके द्वारा यज्ञ करने से यज्ञ की विस्तृति, प्रसार, समृद्धि एव व्यापकता होती है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि जिसने यज्ञोपवीत धारण नहीं किया हुआ है, उसे यज्ञ करने-कराने का अधिकार नहीं है।

## अयज्ञोपवीति का यज्ञ निष्फल होता है

अयज्ञोपवीति व्यक्ति यदि यज्ञ करेगा या करावेगा तो दोष होगा, यज्ञ नष्ट होगा या निष्फल ही होगा। क्योंकि :—

"विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्।" (कात्यायन स्मृति) अर्थात्—यज्ञोपवीत और शिखा से रहित व्यक्ति जो कुछ भी यज्ञादि कार्य करता कराता है, वह निष्फल हो जाता है। यह विधान स्पष्ट प्रतिपादित करता है कि यज्ञ के करने कराने वाले को यज्ञोपवीत धारण करना ही चाहिये।

कारी व्यक्ति को भी पापाचरण या मलिन आचरण के कारण यज्ञ करने कराने की पात्रता नहीं रहती है, यह इससे स्पष्ट है। अर्थात् पवित्र आचरण वाला सदाचारी, धर्मात्मा, श्रद्धावान, व्रतादि कर्म से दीक्षित, शुद्ध अन्तःकरण वाला व्यक्ति यज्ञ का अधिकारी है।

## अयज्ञोपवीति को यज्ञ करने एवं कराने का भी अधिकार नहीं है.

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त और क्या विशेषता होनी चाहिये इसका प्रतिपादन ऐतरेय ब्राह्मण मे निम्न प्रकार प्राप्त होता है :—

यज्ञोपवीति एव अधीयीत यजेत याजयेतवा यज्ञस्य प्रसृत्यै।"

अर्थात् जिसने विधिवत् यज्ञोपवीत धारण किया हुआ है, वही वेदाध्ययन का अधिकारी है। उसी को यज्ञ करने और कराने का भी अधिकार है।

## यज्ञोपवीति को ही यज्ञ का अधिकार है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने संस्कार विधि मे बालक के उपनयन मे यज्ञोपवीत हो जाने के पश्चात् ही उसके हाथ से आहुतियां देने का विधान किया है तथा उपनयन के बाद ही वेदारम्भ होता है, इससे पूर्व नहीं। तभी नित्य सन्ध्योपासन एवं अग्निहोत्र विधि का शिक्षण एव नित्य कर्मों में उसको करने का विधान किया है।

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने अपने यजुर्वेद भाष्य अ. ६ के मन्त्र १० पर लिखा है कि अब यज्ञोपवीत होने के पश्चात् शिष्य को अत्यावश्यक है कि विद्या, उत्तम शिक्षा ग्रहण और अग्निहोत्रादिक का अनुष्ठान करें—ऐसा उपदेश गुरु किया करें। इससे भी स्पष्ट है कि अग्नि होत्रादिक के अनुष्ठान करने का अधिकार यज्ञोपवीति को ही है।

## —पत्नी रहित अपात्र है—

अयज्ञिय, पापी और यज्ञोपवीत रहित व्यक्ति के अतिरिक्त यज्ञ के लिये अन्य कौन अपात्र है इसके लिये :—

"अयज्ञो वा एत योऽपत्नीकः।
( तैत्तिरीय ब्रा० २।२।२५ )

अर्थात् जो व्यक्ति पत्नी रहित है या जो बिना पत्नी का है वह भी यज्ञ के करने कराने का अधिकारी नहीं है। क्योंकि :—

'अथोअर्धोवा एष आत्मनः यः पत्नी।" (तै० ब्रा० ३।३।३।५)

पत्नी पुरुष का आधा भाग है। अतः पत्नी रहित यज्ञ खण्डित यज्ञ हुआ यह मानना चाहिये। शतपथ में भी कहा है :—

"अर्धो वा एव यज्ञस्य यत्पत्नी।"
(शतपथ २।४।३।२९)

अर्थात् जो पत्नी है वह निःसन्देह यज्ञ का आधा भाग है। अखण्डित होकर ही, सम्पूर्ण भाव से यज्ञ का अनुष्ठान करने की पात्रता होती है। खण्ड भाव ही आसुर भाव है और सम्पूर्ण भाव ही देवभाव है। यज्ञ मे आसुरभाव, खण्डभाव का नाश और देव भाव की वृद्धि की जाती है। अतः सपत्नीक व्यक्ति ही यज्ञ करने-कराने का अधिकारी होता है। तभी यज्ञ की सफलता होती है। पत्नी सहित यज्ञ करना चाहिये।

संस्कार रत्न माला में इसकी पुष्टि निम्न प्रकार उपलब्ध होती है :—

"न गृहं गृह मित्याहुः गृहणी गृहमुच्यते। तयाहि सहितः सर्वान् पुरुषार्थान् समश्नुते॥

अर्थात्—मृत्तिकादि से निर्मित घर को घर संज्ञा नहीं है अपितु वास्तविक रूप से पत्नि को ही घर संज्ञा है। [ क्रमशः ]

बहनों की बातें—१०

# आत्मा की शक्ति

[ श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, गोरखपुर ]

आत्मा की शक्ति को बढ़ाने के उपायों का उल्लेख करते हुए लिखा गया है :—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्। अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यन्ति यतयः क्षीण दोषा। (मुण्डक ३-१-५)

अर्थात् यह आत्मा सत्य से, तपस्या से, सम्यक् ज्ञान से और ब्रह्मचर्य से प्राप्त होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर्जगत् में शुभ्र-वर्ण का विद्यमान है, इसे अपने हृदय को पाप रहित करने वाले योगी देख सकते हैं। सत्य, तपस्या, सम्यक् ज्ञान और ब्रह्मचर्य ये चार चट्टानें हैं। जो आत्मा की नींव और शक्ति को अचल और दृढ़ बनाती हैं। इन चट्टानों को आधार बनाकर जिस व्यक्ति, जिस समाज और जिस देश के जीवन रूपी भवन का निर्माण होगा वह अडिग होगा उसे किसी तरफ का भूचाल अपने लक्ष्य की तरफ जाने से रोक नहीं सकेगा, व्यक्ति तथा समाज का जीवन इन्हीं से बचकर ठीक दिशा की तरफ जाएगा। भौतिक जगत् में जो स्थान प्रकाश का है आध्यात्मिक जगत् में वही स्थान सत्य का है प्रकाश को ढका जा सकता है पर वह भी प्रकट हो जाता है। सत्य से ही आत्मा के दर्शन होते हैं। आत्म अनात्म का झगडा सत्यानृत का, अंधेरे उजाले का झगड़ा प्रकाश तो भौतिक होने से बुझ सकता है, सत्य अभौतिक है, वह ढका जा सकता है, मिटाया नहीं जा सकता है। जैसे प्रकाश का स्वरूप अपने को प्रकाशित करने के मार्ग पर जा रहा है। रुकावटें आती हैं, इस ढकने के लिए प्रकृति अपने भौतिक वादी आवरण फेंकती है, परन्तु सत्य उन सबको ठोकर मार कर जब फेंक देता है तब वह आगे बढ़ जाता है और तब आत्मा की शक्ति का बोध मनुष्य को और संसार को हो जाता है। उस समय उस सत्यवादी को न किसी से भय होता है न वह कभी अन्याय के आगे झुकता ही है। इसी लिए कहा भी है। सत्यमेव जयते नाऽनृतम्' सत्य की विजय आत्म शक्ति का दर्शन है। आत्मा की विजय का मार्ग है। इतिहास इसका साक्षी है।

सरला बहन ने अपने भावमय शब्दों में अपना कथन जारी रखते हुए कहा 'इस प्रकार सत्य के जीवन मे उतरते ही उसके लिए कष्ट सहन करना या तपस्या मनुष्य के जीवन मे आ जाती है, सत्य से सम्यक् ज्ञान आता है और सम्यक् ज्ञान मनुष्य मे ब्रह्मचर्य की भावना लाता है। मनुष्य इस आत्मदर्शन के द्वारा किसी भी

## वनिता विवेक

अन्याय और अत्याचार का मुकाबिला करने मे समर्थ हो जाता है। उसमे आत्म विश्वास उत्पन्न होता है। आत्म विश्वास महान् शक्ति है। अपने पर अटल विश्वास वह दैवी बल है, जो पहाड़ो को भी पथ देने को बाध्य कर देता है। आधुनिक मनोविज्ञान के विशेषज्ञों का कथन है कि आत्म विश्वास का अवलम्बन लेकर अलौकिक पराक्रम का परिचय दिया जा सकता है और दुःसाध्य कार्यों को भी साध्य बनाया जा सकता है। जीवन मे सफलता के लिए तो आत्म विश्वास वह साधन है जो दुर्गम जंगलो और मरुभूमियो को भी पार कर सकता है और दुर्लभ गड़े धन का पता चला सकता है। आत्म-विश्वास के बलबूते पर मनुष्य हर मुसीबत का सामना कर सकता है, अपने सब सुहावने स्वप्न यथार्थ मे परिणत कर डालता है।

एक पत्रकार ने प्रसिद्ध मनोविज्ञान विशेषज्ञ डा० बिल्वर्ड एलन ने प्रश्न किया कि क्या कारण है कि अधिकतर लोग अधूरा जीवन व्यतीत करते हैं? उत्तर मे डा० एलन ने कहा इसका जवाब बड़ा सरल है। हममें से अधिकतर लोग अपनी योग्यताओ को प्रकाशित होने का मौका ही नहीं देते। हम महान् कार्य कर सकते हैं। परन्तु हम अपने इस सामर्थ्य से परिचित नहीं होते। हमारे शरीर के भीतर महान् शक्तियां निहित हैं। परन्तु, हम उनसे काम नहीं लेते जिससे उन्हें उन मशीनो की तरह जंग लग जाता है, जो उपयोग मे न लाई जा रही हों। आप इसे अतिशयोक्ति न समझें। हमे शारीरिक इन्द्रियां इसलिए दी गई हैं कि हम उनसे काम लें। परन्तु, संसार में बहुत से लोग उनसे काम नहीं लेते, चिन्तन मनन नहीं करते, दूसरो के विचारो पर गुजारा करते हैं, सुना सुनाई बातो से काम चला लेते हैं। यही कारण है कि वे जीवन के वास्तविक सुखों और पुरस्कारो से वंचित रहते हैं।'

एक अंग्रेज साहित्यकार ने लिखा है 'नक्षत्र लुप्त हो जायेंगे, सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ जायगा। परन्तु मनुष्य की आत्मा सदा तेजवान रहेगी। उस तक कालका हाथ कभी न पहुंच सकेगा।' मनु महाराज ने लिखा है' हे पुरुष तेरे हृदय में अन्तर्यामी, सर्व नियामक आत्मदेव का वास है।' डा० कैरल का कहना है 'मनुष्य की सृष्टि पहाड़ों, दरियाओं और समुद्रों के मापदंड से हुई है। अतः जिस शक्ति की बाह्रिकायें ये प्राकृतिक रचनायें हैं वही शक्ति हम 'मिट्टी के पुतले' में है। परन्तु यह शक्ति विशुद्ध शारीरिक नहीं है। मनुष्य की एक और दुनिया भी है और उसके अन्तःकरण की दुनिया है। आत्मा, बुद्धि और मन की यह दुनिया काल और देश के प्रतिबन्धों से मुक्त है। यदि इस आन्तरिक जगत् में मनुष्य की आत्मा शुद्ध, पवित्र संकल्प दृढ़ और सुस्थिर तथा अभिलाषा प्रबल और अजेय हो तो वह बाह्य जगत् को भी अपने अधीन कर सकता है।'

इतिहास के पृष्ठों से हम आत्म विश्वास के अनेक उदाहरण देख सकते हैं। आल्पस पर्वत के एक किनारे नेपोलियन की सेनायें आगे बढ़ने के लिए खड़ी थीं। आल्पस की ऊँची चोटियां उसके मार्ग मे बाधा बनकर खड़ी थीं जिन्हें तोड़ना साधारण मनुष्य का काम नहीं था। सेनापति ने घबराकर नेपोलियन से कहा 'महाराज! आल्पस पर्वत को पार करना असंभव है। सेनाओं के लिए दूसरा मार्ग खोजिए।' नेपोलियन हंसा और बोला 'चलो चलें' वह आगे बढ़ा। कहते हैं कि आल्पस पर्वत और सेनायें आगे बढ़ीं। यूरोप के कई देशों को एक छोटे कद वाले ने पराजित कर दिया।

अटक नदी मे बाढ़ आई हुई थी। उसके दूसरे किनारे पर पठानों की सेना लड़ने को उद्यत थी और इस पर महाराज रणजीत सिंह के जवान भारत की विजय की कामना मन में लिए मरने और मिटने को तत्पर थे। नदी को पार कर शत्रु पर धावा बोलना था। सेनापति ने महाराज रणजीत सिंह से आकर कहा 'नदी में तेज पानी बह रहा है। सेनाओं को पार करना किसी भी तरह संभव नहीं। महाराज रणजीत सिंह अपनी लंबी सफेद दाढ़ी के बीच से एक निश्छल मुस्कराहट के साथ बोले

'असंभव ? असंभव शब्द मेरे कोष मे नहीं। चलो देखें।' यह कह कर वह अपने कपड़े और हथियार सिर पर बांधकर नदी में कूद पड़े और कहते हैं कि नदी सूख गई और सिखों की सेना पठानों को पराजित कर पताका उनके देश पर फहरा दी।

स्वामी श्रद्धानन्द भारतीय स्वतंत्रता के लिए किए जाने वाले आन्दोलन के एक जलूस का नेतृत्व कर रहे थे। जलूस आगे बढ़ रहा था। अंग्रेजों की शक्तिशालिनी सेना अपने घातक अस्त्रों से सुसज्जित होकर सामने आकर खड़ी हो गई और जलूस को तितर-बितर होने का आदेश दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जलूस की व्यवस्था में पीछे गए हुए थे। समाचार मिला, आगे आए। वीर दूसरों को नहीं कहते 'आगे बढ़ो' स्वय आगे आते हैं। वे दूसरों को सिर काटने को नहीं कहते, स्वय सिर काटने को उद्यत रहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे वीर थे। वे आगे आए। बन्दूकों के सामने पहुंच कर बड़ी शान्ति से उन्होंने कहा 'जलूस आगे जायगा यदि तुम जलूस पर गोली चलाना चाहते हो तो पहले मेरी छाती पर गोली मारो।' इतना कहना था स्वामी श्रद्धानन्द की जय-जयकार से वायुमंडल गूंज उठा। अंग्रेजों की बन्दूकें झुक गईं। शारीरिक और पशुता की शक्ति के सामने आत्म शक्ति विजय हुई।

सरला बहन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा भारती, तुम्हें मैंने स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ने के लिए दिया था। तुमने पढ़ा होगा। महापुरुष के जीवन चरित्र हमारा मार्ग प्रदर्शन करते हैं। स्वामी दयानन्द के आत्मिक शक्ति के चमत्कारों से तो पुस्तक का पन्ना भरा है। पत्थरों की वर्षा हो रही है, एक उज्ज्वल दिव्यात्मा दयानन्द के रूप में खड़ी होकर सत्य का मंडन और असत्य का खंडन कर रही है। पत्थरों की वर्षा से घबरा कर श्रोता समझने लगते हैं। स्वामी दयानन्द के भक्त चिन्तित हो उन से भाषण बन्द करने की प्रार्थना करते हैं, स्वामी दयानन्द मुस्कराते हुए उत्तर देते हैं 'यह पत्थरों की वर्षा नहीं, फूलों की वर्षा है। सत्य संकटों में विकसित होता है। सत्य कठिनाइयों में खिलता है। सत्य मुसीबतों में चमकता है। ये पत्थर पत्थर नहीं फूल हैं।' सचमुच उन फूलों में खड़ा दिव्य दयानन्द अपने धीर गम्भीर स्वर से असत्य का खण्डन करता चला जाता है। जनता रुक जाती है, भागे हुए लौट आते हैं और आत्म शक्ति का चमत्कार दिखाई देने लगता है। यह क्या किसी ने भयकर फणियर (गेहुअन) सांप स्वामी दयानन्द पर फेंका है। बड़ा भयंकर सांप है। काटने पर आदमी लहर भी नहीं लेगा और आदमी मर जाएगा। सभा में भगदड़ मचती है परन्तु वह सांप स्वामी जी के गले में फूल की माला की तरह सुशोभित होने लगता है। शोभित हो क्यों न ? जिस तरह शंकर ने विश्व का विष पीकर उसका शम् (कल्याण) किया था और गले में सांप धारण किया है यह भी तो मूल शंकर है। इसका मूल ही कल्याणमय है, शंकर है तभी तो दयानन्द बनकर ससार के अज्ञान, पाप, कष्ट, दुःख और अन्याय को मिटाने के लिए इस भूमि पर अवतरित हुआ है। स्वामी दयानन्द की यही तो आत्मशक्ति की विजय है।

अतः सत्य के द्वारा हम आत्म-शुद्धि कर सकते हैं। सरला बहन की भावमयी वक्तृता का प्रभाव थोड़ी देर तक छाया रहा और उसके बाद बालिकायें अपने घरों को गईं।



## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए. का आर्यजगत् के नाम सन्देश

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए

# एक लाख रुपए की अपील

आर्यजगत् को यह भलीभांति विदित है कि विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा आदि कई महत्वपूर्ण कार्य अखिल भारतीय और सार्वदेशिक स्तर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश ने अपने इतिहास मे किये हैं। उसी भांति यह शास्त्रार्थ शताब्दी महोत्सव सार्वदेशिक स्तर पर उत्तरप्रदेशस्थ काशी नगरी में २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक मनायी जायगी इसमें विदेश के आर्य भाई भी भाग लेने के लिये आने की तैयारी कर रहे हैं। इस समारोह के कई विशिष्ट भाग हैं जैसे—

१—अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन।
२—समस्त भारत में शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा।
३—प्राचीन कोई यज्ञ।
४—अन्तर्राष्ट्रिय महिला आचार संहिता सम्मेलन।
५—विशिष्ट प्रकार की शोभा यात्रा।
६—शोध-पत्र और सम्मति पत्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म विद्वत्सम्मेलन निबन्ध प्रकाशन।

इत्यादि कार्यों के सम्पादन में एक लाख रुपये का व्यय होना साधारण बात है। इस समय भारतवर्ष में दस आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं, प्रत्येक सभा और उसकी आर्यसमाजें अपने क्षेत्र से दस-दस हजार की राशि सग्रह करके भेजें तो यह व्ययसहज में पूरा हो जायगा।

विदेश के विश्वविद्यालयों से जो स्कालर पधारेंगे उन पर भी व्यय स्वागत प्रबन्ध आदि पर होगा। अतः भारत से बाहर देशों में स्थित आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि उस व्यय की पूर्ति वे देश करने की कृपा करें। आर्यजगत् का कर्त्तव्य है कि इन चार मास सब कार्यों को छोड़कर सामूहिक शक्ति से इस कार्य में जुट जावें। इस समारोह की सफलता से आर्यसमाज विद्या और सिद्धान्त से संसार मे शिरोमणि बन जावेगा।

शताब्दी समारोह के प्रचार मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास एम०ए० वेदाचार्य जो इस समय बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के मेम्बर सरकार की ओर से हैं, इस कार्य के लिये यात्रा करेंगे। उन्हे समस्त आर्यजगत् का सहयोग धन सग्रह तथा योजना के कार्यों में करना कर्त्तव्य है। आचार्य जी का सब जगह पहुंचना कठिन है। अतः आर्य भाइयों को इसके लिये सीधे नीचे लिखे पते पर ही धन भेजना चाहिये। धन कास चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर के रूप मे भेजना चाहिये। जिस पर लिखा हो काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति लखनऊ।

नोट—इसका हिसाब बैंक में पृथक् रखा जावेगा। और नोट भी प्रकाशित किये जारहे हैं।

निवेदकः—

| | |
|---|---|
| शिवकुमार शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान | प्रकाशवीर शास्त्री एम.पी.<br>प्रधान |
| प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.ए.<br>मन्त्री | महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम.ए.<br>संयोजक |
| मदनलाल<br>कोषाध्यक्ष | आचार्य विश्वश्रवाः वेदाचार्य<br>प्रचार मन्त्री |
| आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश | काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति |

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## उत्सव—

—आर्यसमाज उझानी (बदायूं) का वार्षिकोत्सव २५ से २७ अक्तूबर तक समारोह से मनाया जायगा।

—सुनहरीलाल मिश्र प्रधान

—आर्यसमाज शाहजहांपुर का ७४ वां वार्षिकोत्सव दि० २४, २५, २६ व २७ अक्टूबर १९६९ को समारोहपूर्वक मनाया जावेगा, नगरकीर्त्तन दि० २४-१०-६९ को होगा। दि० २६-१०-६९ को मध्यान्ह में आर्य उप प्रतिनिधि सभा शाहजहांपुर का अधिवेशन भी होगा।'

—तिलकलाल उपप्रधान

—आर्यसमाज शहर मुजफ्फर नगर का ६४ वां वार्षिक महोत्सव २६, २७, २८ अक्तूबर १९६९ को समारोह पूर्वक मनाया जावेगा।

—ओम्प्रकाश शर्मा मन्त्री

—आर्यसमाज पुरनिया, सीतापुर रोड, जिला लखनऊ का प्रथम वार्षिकोत्सव दि० २६, २७ अक्तूबर १९६९ को होगा।

—रणधीरसिंह प्रधान

—आर्य समाज, ठाकुरगंज (दौलतगंज जेल) लखनऊ का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दि० २५ अक्तूबर १९६९, शनिवार को होगा) जिसमे उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं। समस्त स्नेही बन्धुओं से प्रार्थना है कि इस अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ायें।

—देवीदास प्रधान

## निर्वाचन

—आर्य समाज बस्ती हरफूल सिंह दिल्ली—

प्रधान—श्री नानक चन्द हांडा
उप प्रधान—श्री मुकुन्द लाल नदा
मन्त्री—श्री राम नाथ सहगल
कोषाध्यक्ष—श्री सेठ मुरारी लाल
प्रधाना—स्त्री आर्य समाज—श्रीमती सुशीला वर्मा,
मन्त्रिणी—श्रीमती जानकी देवी।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

—आर्य समाज सोमबनी

प्रधान—श्री सीता राम अग्रवाल
उपप्रधान—श्री राम चरण गुप्ता उप
प्रधान—श्री जगदीश प्र० तोडी
मन्त्री—श्री शशि कान्त पाण्डेय
उप मन्त्री—श्री रमा कान्त भगत
कोषाध्यक्ष—श्री राम नारायण आर्य

—मन्त्री

—केन्द्रीय आर्यसमाज कानपुर का निर्वाचन श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री प० विद्याधर जी
उपप्रधान—श्री देवीदास आर्य
„ „ डा० सुखदीन
मन्त्री—श्री योगेन्द्र सरीन
उपमन्त्री—शिवदयाल टूटेजा
कोषाध्यक्ष—श्री वशीलाल

इसके अतिरिक्त नगर के सभी आर्यसमाजो तथा स्त्री आर्य समाजो के प्रतिनिधियों को अन्तरंग सभा में लिया गया।

अधिवेशन में श्री योगेन्द्र सरीन ने गत वर्ष का प्रतिवेदन विस्तृत रूप से पेश किया।

—योगेन्द्र सरीन मन्त्री

—आर्यसमाज [illegible]

प्रधान—श्री रामगोपाल अग्रवाल
कार्यकारी प्रधान—श्री पूर्णचन्द विजराजका
उपप्रधान—श्री द्वारकाप्रसाद ठाकुर
„ श्री गणेशदास जी वाहेरा
„ श्री शास्त्री वैद्यनाथ पल्लव
मन्त्री—श्री रामकृष्ण बिजराजका
स० मन्त्री—श्री अशर्फीप्रसाद
„ श्री यमुनाप्रसाद
„ श्री प्रो ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी
कोषाध्यक्ष—श्री राजाराम बोहरा
पुस्तका०—श्री सूर्यप्रसाद आर्य
निरीक्षक—श्री देवकीनन्दनसिंह

वैदिक धर्म के प्रति आस्था आर्यसमाज के सुदृढ़ सगठन आर्य बन्धुओ के मर्यादा पालन पर सभापति का मार्मिक सन्देश, धन्यवाद भाषण और प्रीतिभोज के पश्चात् वार्षिक अधिवेशन समाप्त हुआ। —रामकिशन बिजराजका

## सार-सूचनाएं

—उपदेशक महाविद्यालय टंकारा तथा आर्य समाज बड़ौदा से निकाला हुआ विनोद दुबे नामक व्यक्ति जो अब अपना नाम श्रुति भिक्षु बताता है। उपर्युक्त सस्थाओ के विरुद्ध प्रचार कर रहा है, आर्य समाजो को इस व्यक्ति से सावधान रहना चाहिये।

—नानुभाई मन्त्री
आर्यसमाज बड़ौदा

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी की अन्तरग सभा की बैठक दि० २५-१०-६९ सायकाल ५ बजे आर्य समाज मन्दिर सदर बाजार झांसी मे होगी। सभी अन्तरङ्ग सदस्यो की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

—वेदारीलाल आर्य मन्त्री

—गत २८ सितम्बर के 'आर्य मित्र' मे श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट का जो लेख सुझाव रूप मे प्रकाशित हुआ है कि पाखण्ड-खण्डिनी पताका शताब्दी एव काशी शास्त्रार्थ शताब्दी दोनो ही एक साथ शिवरात्रि के अवसर पर मनाई जाय, इसका मै भी समर्थन करता हू क्योंकि दोनाव्ली या शिवरात्रि महर्षि के जीवन से विशेष सम्बन्धित हैं। अत. शिवरात्रि पर रखना ही विशेषकर सुविधाजनक होगा।

—रामनारायण शास्त्री
आर्यसमाज बिन्दकी

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी के तत्वावधान मे सस्ती वार्षिकोत्सव योजना तैयार की गई है। इसी योजना के अन्तर्गत १६-१२-६९ से १०-१-७० तक जो भी आर्य समाजें अपने उत्सव, वेद कथा तथा प्रचार उक्त तिथियों मे रखना चाहते हैं, वह कृपा कर महात्मा गंगाराम जी आर्य वानप्रस्थी, आर्य समाज सदर बाजार झांसी से पत्र-व्यवहार कर योजना के अन्तर्गत आर्य समाज सदर बाजार, झांसी का वार्षिकोत्सव १२-१२-६९ से १६-१२-६९ तक होगा।

—वेदारीलाल आर्य मन्त्री

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २६-१०-६९ रविवार को सायंकाल ३-०० बजे आर्य समाज मन्दिर सदर बाजार, झांसी मे होगा। अतः जिले की समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयो से निवेदन है कि वह अपनी आर्य समाज के वार्षिक चिट्ठ तथा प्रवेश शुल्क आदि दिनांक १९-१०-६९ तक जिला सभा के मन्त्री के पास भेजने की व्यवस्था करें ताकि इनकी जाच आदि होकर प्रतिनिधि स्वीकार किए जा सके।

—वेदारीलाल आर्य

—बहराइच के श्री बा० मथुरा प्रसाद जी टण्डन की मृत्यु के कारण ३० सितम्बर को उनके घर पर वृहद यज्ञ हुआ। उनकी धर्म पत्नी ने ५०१) मथुरा प्रसाद टण्डन स्मारक निधि में तथा तथा २१) आर्य संस्थाओ को दान में दिये।

— उपमन्त्री

## आवश्यकता

गुरुकुल ब्रह्मचर्याश्रम हैदराबाद जि० उन्नाव के लिए एक अनुभवी कर्मकाण्डी आश्रम की व्यवस्था का सुचारु रूप से संचालित करने वाले आर्य संस्कृत विद्वान् की। जो वाराणसीय संस्कृत की प्रथमा मध्यमा की परीक्षाओं को भी दिला सके, तथा संस्कारादि करा सकें की आवश्यकता है। आश्रम की ओर से भोजन एवं निवास की अतिरिक्त १००) मासिक दिया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न पते पर शीघ्र अपेक्षित है।

— ब्रज मोहन शरण आर्य
अधिष्ठाता
गुरुकुल ब्रह्मचर्याश्रम
हैदराबाद जि० उन्नाव

# अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद शाखा वाराणसी

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद वाराणसी शाखा के तत्वावधान मे आयोजित परिचर्चा गोष्ठी दिनाक ५-१०-६९ को आर्य समाज मन्दिर ललतापुरा मे सम्पन्न हुई। परिचर्चा का विषय था मानव जाति के हित चिन्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनका मत य—अध्यक्षता डा० ज्योतिमित्र आचार्य प्राध्यापक मौलिक अनुसधान विभाग का० हिन्दू विश्वविद्यालय ने की।

परिचर्चा गोष्ठी के अध्यक्ष प्रोफेसर डा० ज्योतिमित्र आचार्य ने अपना मत व्यक्त करते हुये कहा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती विश्व के उन महान् पुरुषो मे से एक थे, जिनके जीवन का हर क्षण मानव कल्याण के लिये होता है। आधुनिक काल मे भारतीय समाज में जो कुछ भी उन्नति देखने को प्राप्त होती है उसके महत्वपूर्ण घटक के रूप मे महर्षि दयानन्द हम लोगो के सम्मुख आते हैं। आगे आपने कहा कि महर्षि के वेदो के प्रचार का ही यह फल हुआ कि विश्व के विद्वानो का ध्यान वेदो के अध्ययन और अनुसधान की ओर प्रवृत्त होने लगा।

आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान श्री राम विलास शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने पौराणिक बहु देवतावाद, सम्प्रदायवाद एवं अनार्ष ग्रन्थों का युक्ति युक्त प्रबल खण्डन करके एक ईश्वरोपासना तथा एक धर्म के आचरण पर जोर देकर न केवल भारतीयों के लिये अपितु सम्पूर्ण विश्व के लोक मानस को प्रदीप्त कर दिया। मानव जाति पर उनके अगणित उपकार हैं।

श्री हरेन्द्र नाथ वर्मा प्रधान आर्य समाज काशी ने स्वामी जी के जीवन के विभिन्न घटनाओ का चित्रण करते हुये कहा कि उन्होने अविद्या और अन्धकार को दूर करने का प्रथक प्रयास किया। श्री कैलाश नाथ सिंह उप सयोजक अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ समिति, ने अपने स्वलिखित लघु परचा मे कहा, कि महर्षि दयानन्द महर्षि इस लिये थे कि उन्होने आधुनिक-युग में वेदों का उद्धार किया। तथा वे महान् सामाजिक सुधारक भी थे। स्वभाषा, स्वशिक्षा स्वराज्य, स्वदेशी इन सब का नारा महर्षि दयानन्द ने बहुत पहले ही दिया था।

श्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने अपने भाषण मे बतलाया कि महर्षि दयानन्द ने मानव जाति की एकता का अनुभव किया। महर्षि एक महान् सामाजिक विचारक और सुधारक दोनो थे। लाल विवाह, विधवा विवाह निषेध जाति प्रथा, आदि सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उन्होने जम कर सघर्ष किया।

उन्होने आगे कहा कि महर्षि एक धार्मिक सन्देश वाहक नेता के रूप मे भी हम लोगो के सम्मुख आते हैं। अविद्या और पाखण्ड के विरोध मे महर्षि दयानन्द ने जीवन भर अविराम युद्ध किया। इसके अतिरिक्त भी मेला,

---

महर्षि दयानन्द श्रद्धानन्द लेखराम दर्शनानन्द सरीखे अमरयो की तपस्या एवं बलिदान द्वारा सिंचित आयसमाज को महा नाश से बचाए तथा सभी भाई बन्धु पुन एक बार प्रेम से मिलकर कार्य क्षेत्र मे अवतरित हो जिससे प्रिय आय समाज मे भी चार चाद लगें और स्वय भी यशस्वी एव सौरभित हों।

—वेद प्रकाश आर्य, मंत्री
आर्य समाज बिसौली

---

—आर्य समाज बडौत (मेरठ) का कार्य, सुचारु रूप से चल रहा है। वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया गया।

—चरण सिंह शास्त्री मन्त्री

—दुख है कि आर्य समाज आसफपुर (बदायूं) के प्रधान श्री स्वामी ईश्वरानन्द जी का २ अक्टूबर को देहान्त हो गया। आपकी आयु ९६ वर्ष की थी। इस समाज के आर्य बधु शोक प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

— दिनेश चन्द्र प्रधान

—५ अक्टूबर को आर्य समाज देवरिया ने ईसाई महिला श्रीमती वेनुका देवी की शुद्धि कर के उसका नाम वेणुका शुक्ल रखा।

— ब्रजपाल सिंह मंत्री

—मलाही के श्री गगाधर जी शास्त्री ने ७ व्यक्तियों का यज्ञोपवीत सस्कार कराया।

— मन्त्री

—आर्य समाज शिकोहाबाद ने वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया। उक्त समाज ने श्री राम लाल चड्ढा की माता तथा अमर सिंह जी के भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की वे दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे, और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

— दयाराम गौड मंत्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मैनपुरी की ओर से जिले मे श्री अर्जुन सिंह भजनोपदेशक प्रचार कर रहे हैं। आर्य समाज भरौल (मैनपुरी) की स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने की थी और यहाँ संस्कृत पाठशाला भी खोली थी, परन्तु अब समाज की जगह ही शेष रही है। अब मन्दिर बनवाया जा रहा है। जो सज्जन दान देना चाहें वे श्री जयदेव सिंह जी भूतपूर्व एम० एल० ए० प्रधान आर्य समाज भारौल (मैनपुरी) के पास भेजें।

— दयाराम गौड
[illegible] मंत्री जिला सभा

—गाजियाबाद—आर्य समाज मन्दिर दयानन्द नगर मे गाजियाबाद की सभी आर्य समाजों व आर्य सस्थाओं की एक विशाल सभा श्री रतन सिंह की अध्यक्षता में हुई। आर्य समाज दयानन्द नगर के प्रधान श्री हरिशचन्द्र रत्ता ने सभा को बतलाया कि किस प्रकार कुछ स्वार्थी तत्व आर्य समाज मन्दिर पर कब्जा करने का षडयन्त्र कर रहे हैं।

सभा ने सर्व सम्मति से घोषणा की कि यदि आर्य समाज की भूमि पर अनधिकृत कब्जा करने का कुछ शरारती लोगो ने फिर प्रयत्न किया तो उनका डटकर विरोध किया जायेगा और आर्य समाज मन्दिर की रक्षा के लिए प्रत्येक बलिदान किया जायेगा।

— हरिशचन्द्र रत्ता
प्रधान

—५ सितम्बर को आर्य समाज खिदिरपुर कलकत्ता के आचार्य श्री प० अग्निदत्त जी का देहावसान ७६ वर्ष की आयु मे हो गया। आर्य समाज ने अपने साप्ताहिक अधिवेशन मे दिवगत आत्मा की शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

— वीरेन्द्र नाथ शास्त्री

—आर्य समाज बहराइच ने श्री केदारनाथ जी उप प्रधान की धर्म पत्नी की असामयिक मृत्यु पर शोक-सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

— उपमन्त्री

## आर्य समाज बिसौली का प्रस्ताव

आर्य समाज बिसौली (बदायूं) पजाब एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओ के झगडो को आर्य समाज के लिये शर्म एव महानाश का कारण मानता है, और साथ ही शान्ति मूर्त तपोनिष्ठ आर्य नेता श्रद्धेय महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज मे पूर्ण निष्ठा और विश्वास रखता है। अत सम्बन्धित एव शीर्षस्थ आर्य नेताओ से जोरदार शब्दो मे अपील करता है कि उपर्युक्त श्रद्धेय महात्मा जी को एक मात्र निर्णायक मान कर

साल आर्य श्री शिवनाथ प्रसाद आर्य, एव श्री केदार नाम सदस्य महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समिति ने आदि भी प्रस्तुत विषय पर अपने अपने विचारों को रक्खा। —विजय कुमार सिंह
उप महासचिव

## आर्य समाज माटुंगा का प्रस्ताव

आज दिनाक २८/९/६९ ई० रविवार को आर्यस० मटुगा बम्बई के साप्ताहिक सत्सग मे यह सभा अहमदाबाद के साम्प्रदायिक दगे पर खेद प्रकट करती हैं।

गत कई सप्ताह से अहमदाबाद स्थित श्री जगन्नाथ जी के पवित्र देवालय पर मुसलमानो द्वारा जो अत्याचार होते रहे हैं, उनके विषय मे अधिकाश राजनैतिक नेताओ की उपेक्षा जनमत की ओर अवहेलना का प्रमाण है।

दुख का विषय है कि भारत सरकार एक ओर तो सुदूर विदेश मे जलाए गए मुस्लिम धार्मिक स्थान के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने मे जमीन आसमान एक करने का आयोजन कर रही है, तो दूसरी ओर उन्हीं मुसलमानो द्वारा जलाए गए हिन्दू देवालय पर ध्यान भी नहीं दे रही है।

मुसलमानो द्वारा देवालय को जलाना, मन्दिर के महन्त को बुरी तरह पीटना और धम पुस्तक को अपमानित करना हिन्दुओ का ही अपमान नहीं है, बल्कि देश मे घोर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देना है? क्या इस प्रकार को सरकार की नीति साम्प्रदायिकता को बढावा देना नहीं है? क्या यह धर्म निरपेक्षता के नाम पर कलक नहीं है? क्या यह हिन्दुओ पर घोर आत्याचार नहीं है।

अस्तु, हम आशा करते हैं कि सरकार, इन दगो के पीछे विदेशीय व विधर्मी सरकारो के हथकडो की ओर विशेष ध्यान देगी और हिन्दू जाति एव धर्म की उचित रक्षा की व्यवस्था करेगी।

—ओंकार नाथ, मन्त्री
आर्यसमाज माटुंगा बम्बई

## स्नातक वेदव्रत जी की पत्नी का देहान्त

लखनऊ—दिनाक १३-१०-६९ आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा सचालित रु० ७०००) रु० की "विश्वकर्मा-वशज-छात्रवृत्ति योजना-निधि" के सस्थापक अमरावती निवासी दानवीर स्वर्गीय श्री भवानीलाल शर्मा के सुयोग्य पुत्र गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक वेदव्रत शर्मा सम्प्रति लखनऊ निवासी की धर्म पत्नी श्रीमती सावित्री देवी आयु ४० वर्ष, की जो हनुमान मन्दिर के सम्मुख गत रविवार दिनाक १२-१०-६९ को किसी मोटर गाडी द्वारा कुचल कर मृत्यु हो गयी। समाचार मिलने ही स्नातक जी ने जाकर मृत देह को पहचान कर पुलिस द्वारा पचनामा तथा स्थानीय मेडिकल कालिज मे पोस्ट मार्टम आदि की आवश्यक कार्यवाही के पश्चात् मृतक की दाह क्रिया पूर्ण वैदिक विधि से की।

'आर्य मित्र' परिवार सभा व परिचितो द्वारा दिवगतात्मा की सद्गति एव शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करने के निमित्त प्रभु से प्रार्थना की गई। अपने पीछे वे तीन पुत्रियाँ व एक पुत्र छोड गयीं हैं।

## उत्सव—

आर्य समाज अमरोहा का वार्षिक उत्सव इस वर्ष दिनाक २३-४ नवम्बर १९६९ रविसोम मगल का बड़े उत्साह पूर्वक आर्य समाज मन्दिर मे मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के साधु सन्त महात्मा उपदेशक प्रचारक लोक सभा व राज्य सभा के सदस्य उ० प्र० तथा भारत सरकार के मन्त्री गण पधार रहे हैं। महिला सम्मेलन तथा शिक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। धर्म प्रेमी जनता से प्रार्थना है कि तन मन धन से सहयोग प्रदान कर उत्सव मे सम्मिलित हो धर्म लाभ उठायें।

—प्रेमविहारी आर्य मन्त्री

## श्री गुप्त जी की भावज का देहावसान

अत्यन्त दुख है कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री चन्द्रभानु जी गुप्त की भावज श्री गुप्त जी के बडे भाई श्री स्व० जवाहरलाल जी की पत्नी का ७१ वर्ष की आयु मे एक लम्बी बीमारी से १३ अक्टूबर को प्रात देहावसान हो गया। मृत्यु के समय श्री गुप्त जी, उनके बडे भाई श्री बा० रामचन्द्र जी एडवोकेट लखीमपुर तथा अन्य परिवार के सब लोग उपस्थित थे। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार श्री नारायण गोस्वामी जी ने सम्पन्न कराया। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। —नारायण गोस्वामी



## विश्वकर्मा वंशज बालकों को—
## ७०००) का दान

### श्री भवानीलाल गजानन्द जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिजोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुहराम की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालको के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार भाद्रपद सम्वत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुको को मास जुलाई में ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

—मन्त्र आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

# 'अमूल्य रत्न'

१—महान् कलाकार वह है जो जीवन को ही कला का विषय बनाये।

२—आज के लिए और सदा के लिए सबसे बड़ा मित्र आदर्श पुस्तक है।

३—उत्तम व्यक्ति शब्दो मे सुस्त पर कार्य मे चुस्त होते हैं।

४—प्रगति ही जीवन है। बिना कार्य के सिद्धान्त मानसिक विलासिता तथा बिना सिद्धान्त का कार्य अंधे की टटोल है।

५—क्रोध का अस्त्र स्वय चालक को घायल कर देता है।

६—चरित्र हीनता जब व्यक्ति को पिछले पंक्ति मे ढकेल देती है, तो पारिवारिक उत्तमता उसे आगे नहीं ला सकती।

७—जो अपने प्रति कठोर होता है, वही दूसरे के प्रति उदार हो सकता है।

८—मनुष्य की परीक्षा विपत्ति व सम्पत्ति दोनो में होती है। विपत्ति में धैर्य व दृढ़ता तथा सपत्ति में क्षमा व उदारता की।

९—दुनिया मूर्ख कहे कोई परवाह नहीं पर ध्यान रहे दुनिया दुष्ट न कहे।

१०—अपराध छिपा नहीं रहता। मुंह पर लिखा रहता है।

११—यदि मतदाता मूर्ख होंगे तो प्रतिनिधि धूर्त होंगे।

१२—किसी तलवार की धार उतनी तीव्र नहीं होती जितना कि कर्कश जिह्वा की होती है।

१३—तुम अपने जीवन को इतना पवित्र रखो कि तुम्हारी निंदा होने पर लोग उस पर विश्वास न करें।

१४—प्रशंसा उच्चतम मस्तिष्क वालो के लिए प्रेरणादायक, तथा कमजोर मस्तिष्क वालों के लिए हानिकारक होती है।

१५—पतिव्रता स्त्री के श्रृंगार हृदय के सद गुण तथा कुलटा के भड़कीले वस्त्राभूषण होते हैं।

१६—प्रेम सहन करता है बदला नहीं लेता।

१७—सच्चा जोरदार वह है जो न दबे न दूसरे को दबने दे, बल्कि जो दब या जाता है उसे भी सहारा दे।

१८—स्त्री एक मर्यादा मे मॉं दूसरी मे बहन तीसरी में पत्नी है। अन्न एक मर्यादा मे भोजन दूसरे मे औषधि तीसरे मे विष है।

१९—जो हमारा हर्ष है वह किसी न किसी का शोक अवश्य है, जो हमारी हानि है, उससे किसी न किसी का घर अवश्य आनन्दित हुआ होगा।

२०—तुनुक मिजाज प्राय वे लोग होते हैं जिन्हे दूसरो को डांटने मे तो स्वाद है परन्तु जो अपने पर डांट पड़ना पसन्द नहीं करते।

२१—दिन मित्रों के वेश मे आते हैं और प्रकृति की अमूल्य भेंट लाते हैं यदि हम उनका प्रयोग न करें तो वे चुप चाप लौट जाते हैं।

सकलन कर्ता
सत्य नारायण द्विवेदी 'विजय'
गंगा जमुनी (बहराइच) [उ० प्र०]

# उत्तर प्रदेश के १७ जिलों में धान की महामारी का प्रकोप

## युद्ध स्तर पर मुकाबले की तैयारी

राज्य के उन १७ जिलों के अधिकारियों को जहां धान के पौधो मे लगे भुलगा रोग ने महामारी का रूप धारण कर लिया है सावधान करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने युद्ध स्तर पर उसका मुकाबला करने का आदेश दिया है।

यह जिले हैं: गाजीपुर, जौनपुर, बलिया, मिर्जापुर, आजमगढ़, बस्ती, देवरिया, बाराबंकी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, रामपुर, वाराणसी, गोरखपुर, फैजाबाद, इलाहाबाद और नैनीताल।

इस रोग से जिसे 'टुंगरू' का नाम दिया गया है, राज्य की लगभग ढाई लाख एकड़ में धान की फसल प्रभावित हुई है।

प्रभावित जिलों के विकास खडो के विकास गृहों मे मुख्यालयों मे द्रुतगामी परिवहन साधनों से बडे पैमाने पर उपकरण और दवाइयां पहुंचा दी गई है। साथ ही इन दवाइयों तथा उन्हें छिड़कने के उपकरणों को विकास खड अधिकारियो से प्राप्त करके तुरंत अपनी फसलो पर इस्तेमाल करने की सलाह भी किसानों को दी जा चुकी है। उन्हें एक एकड़ की दवा के लिये केवल १७ रु॰ व्यय करने होंगे।

किसानों से कहा गया है कि वे अपनी स्वस्थ फसलो पर भी दवाईयों का छिड़काव कर लें अन्यथा 'फुगा' नामक कीड़े के जरिये रोगी पौधो से स्वस्थ पौधों तक रोग को पहुंचने मे कुछ भी समय नहीं लगता।

यह 'फुगा' नाम का कीड़ा आकार में छोटा, हरे रंग का होता है और इसके पेट के आखिरी हिस्से मे काले धब्बे होते है। यह दो तरह से फसलों को नुकसान पहुंचाता है एक तो पौधे का रस चूसकर दूसरे एक पौधे से दूसरे पौधे तक रोग को पहुंचाकर।

भारत सरकार से छिड़काव करने के और उपकरणो की सप्लाई करने का अनुरोध किया गया है तथा उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा उत्तोलित पाखण्ड-खण्डिनी पताका का पुण्य ऐतिहासिक स्थान

# मोहन आश्रम हरिद्वार

ऋषि भक्त देहरादून निवासी ला० बल्देवसिंह जी ने सन् १९१२ ई० में भीम गोडे के ऊपर सप्तस्रोत गंगा के तट पर लगभग ६० बीघा विस्तृत भूमि जहां संवत् १९२४ वि० मे महर्षि ने पाखण्ड खण्डिनी पताका उत्तोलित की थी स्वय क्रय करके इस आश्रम की महात्मा हंसराज जी के सहयोग से स्थापना कराई और भक्ति प्रचारिणी सभा के नाम से ट्रस्ट स्थापित किया और युवावस्था में परलोक सिधारने वाले अपने पुत्र मोहन के नाम से यह आश्रम स्थापित किया था।

आश्रम मे ६७ कमरे सभा-भवन, यज्ञशाला बन चुके हैं। फल व पुष्प के उद्यान लगाए जा रहे हैं। लगभग ४० बीघा भूमि मे कृषि होती है। आश्रम का अपना ट्यूब वैल है। नित्य प्रात. साय सत्संग की व्यवस्था है। महात्मा आनन्द स्वामी जी ट्रस्ट के प्रधान एव माता सावित्री सेठानी पुत्र बधु स्वर्गीय ला० बल्देवसिंह जी उपप्रधान हैं। स्वामी मनीश्वरानन्द जी साथ इस आश्रम के अध्यक्ष (सचालक) हैं।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध सन्यासी व विद्वान् समय २ पर यहां पधार कर पतित पावनी भागीरथी के तट पर भगवती श्रुति व उपनिषदों की पुनीत कथा व प्रवचनो द्वारा आश्रम के साधक साधिकाओं को तथा अन्य जनता को लाभ पहुंचाते रहते हैं।

साधना की दृष्टि से जो आर्य भाई व बहन यहां अस्थायी या स्थायी रूप से निवास करना चाहें वह आश्रम सञ्चालक से पत्र व्यवहार करें।

—शिवदयालु, पूर्वमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

आश्विन २७ शक १८९१ आश्विन शु० ८
[ दिनांक १९ अक्टूबर सन् १९६९ ]

'आर्य-मित्र'
उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य: २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

**आर्य-जीवन-(वेदांक)** सम्पादक—श्री पं० मदनमोहन जी विद्यालंकार, पृष्ठ-संख्या—८०, मूल्य एक प्रति ७५ पैसे।

पता—आर्य-जीवन कार्यालय, सुल्तानपुर बाजार हैदराबाद [दक्षिण]

'आर्य जीवन' आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण का मासिक मुख-पत्र है। उसका यह वेदांक इस बार श्रावणीपर्व के अवसर पर निकाला गया है। इस अंक के सम्पादक आर्य-जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, लेखक, वक्ता, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक और वेदों के यशस्वी मर्मज्ञ हैं। छपाई, सफाई, शुद्धता, की दृष्टि से भी यह अंक विशेष सराहनीय है। लेखों के चयन और उनकी साज सज्जा मे सम्पादक महोदय ने अच्छा परिश्रम किया है। 'आर्य-जीवन' का यह विशेषांक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की उत्तम परम्पराओं के अनुरूप तो है ही, उक्त सभा के यशस्वी प्रधान और और आर्य-जगत् के तपस्वी नेता श्री पण्डित नरेन्द्र जी की ओर से आर्य-जगत के लिये यह एक अत्यन्त सराहनीय देन भी है। क्यों कि सभा और उसके सुयोग्य प्रधान जी के उदार सहयोग को प्राप्त करके श्री सम्पादक जी के प्रयास और भी खिल उठे हैं। वेद और विश्व-शान्ति' 'वेद ईश्वरीय ज्ञान' स्वतन्त्रता और नियन्त्रण' 'विज्ञान, वेद और दयानन्द' विवाह की वैदिक भावना' 'भारत की स्वतन्त्रताकी कहानी' आदि सभी लेख सुरुचिपूर्ण और स्थायी महत्त्व रखने वाले हैं।

**आर्यमर्यादा-(वेदाविर्भाव-विशेषांक)**

सम्पादक—श्री पण्डित जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती शास्त्री पृष्ठ संख्या-११२, मूल्य-७५ पैसे प्रति। पता-आर्य-मर्यादा कार्यालय १५ हनुमान रोड नई देहली—१

सहयोगी 'आर्य मर्यादा' आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साप्ताहिक मुख-पत्र है। उसका नया 'वेदाविर्भाव विशेषांक' हमारे सामने है, क्योंकि विषय-वस्तु और उपयोगिता की दृष्टि से अत्यन्त सराहनीय है। इसमें विभिन्न आर्य विद्वानो ने वेदो के ईश्वरीय ज्ञान होने का सम्पोषण करते हुए उनके प्रकाशन-प्रकार पर युक्तियो और प्रमाणो के आधार पर अच्छा प्रकाश डाला है। एक कठिन उपेक्षित और विवाद-ग्रस्त विषय पर प्रौढ़ आर्य विद्वानो के सारगर्भित विचार इस विशेषाक में एक ही स्थान पर मिल जाते हैं। आर्य-मर्यादा के नये और नियमित ग्राहकों को यह विशेषांक १०) रु० वार्षिक मूल्य में ही सुलभ है।

**आर्य-जगत्**—[वेदाग नम्बर] सम्पादक-श्री प० त्रिलोक चन्द जी शास्त्री पृष्ठ सख्या ३२, मूल्य-४० पैसे प्रति

'आर्य-जगत्' आर्य प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जालधरका मुख-पत्र है। श्रावणी के अवसर पर इस बार 'आर्य-जगत्' ने अपना 'वेदाग-नम्बर' निकाला है। वेदों के महत्त्व और शिक्षा-प्रणाली के विषय मे इस में बहुत उत्तम सामग्री प्रस्तुत की गई है। इस उत्तम प्रकाशन के लिये पत्र के सम्पादक जी और अधिष्ठाता जी-श्री डा० वेदीराम जी एम० ए०, पी० एच० डी को हार्दिक बधाई।

**वीर-तरंग**—[भजन-सग्रह] सग्रहकर्त्ता—श्री प्रेम प्रकाश, प्रकाशक-प्रान्तीय आर्य वीर दल हरयाना-पंजाब, मिलने का पता-आर्य समाज धुरी, पजाब, पृष्ठ-स० ४०, मूल्य-३० पैसे

आर्यों के सत्सग प्रसगों और महोत्सवों आदि में उपयोग के लिये नये और पुराने ओजस्वी तथा सारगर्भित भजनों का यह सग्रह अच्छा है। इसका उपयोग आर्य समाजों के नगर-कीर्तनों में भी सफलता और सुविधा पूर्वक किया जा सकता है।

**जीवनामृत**—लेखक-श्री प्रेम प्रकाश, प्रकाशक—आर्य समाज धुरी, पजाब पृष्ठ स०-७०, मूल्य-००-५० पैसे

यह लेखक महोदय के लेखों का सग्रह है। छात्रों के नैतिक प्रशिक्षण के लिये यह विशेष उत्तम है। मूल्य उचित और मुद्रण उत्तम है। विषय सूची इस प्रकार है—वेदों का ईश्वर, वैदिक उपासना, विश्व प्रेम, स्वदेश प्रेम धर्म-भूषा, धर्म, सत्य, श्रद्धा भक्ति, ब्रह्मचर्य, आहार, मांस-विवेचन समय पालन, विवाह, कर्त्तव्य-पथ, मानव की शक्ति और जीवन-ज्योति। नवयुवक आन्दोलनों के संयोजक तथा शिक्षा-संस्थाओं के प्रबन्धकों को इसे अवश्य ही पढ़ना चाहिये।

**दर्पण**—उर्फ वैदिक काल की सच्चाई लेखक-श्री हरि सिंह आर्य पता—जवाहर गेट, गाजियाबाद [जि० मेरठ] पृष्ठ संख्या-७२, मूल्य—एक रुपया

इस पुस्तक में बहुत अच्छी और उपयोगी जानकारी प्रस्तुत की गई है; परन्तु पुस्तक के नाम से इस की विषय-वस्तु का बोध मिलना कठिन है। विस्तृत विषय-सूची को देखकर ही इसका परिज्ञान होता है। यह एक ऐसी सन्दर्भ पुस्तक है, जो लेखकों, उपदेशकों, अध्यापकों, विचारकों और सभी श्रेणियों के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस का यथार्थ महत्त्व तो पुस्तक के देखने पर ही ज्ञात हो सकेगा। लेखक महोदय को उत्साहित करना सभी विज्ञवरों को उचित है।

**स्वाध्याय-संग्रह**—लेखक-श्री स्वर्गीय स्वामी वेद शास्त्रज्ञ वेदानन्द [दयानन्द] तीर्थ, प्रकाशक—श्री गोविन्द राम हासानन्द, देलही पृष्ठ सख्या-१४४, मूल्य—तीन रुपये

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन प्रथम वार सन् १९४० मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा लाहौर से किया गया था। फिर इस का दूसरा सस्करण देहली के एक पुस्तक प्रकाशन संस्थान आर्य-प्रकाशन मण्डल ने निकाला था। अब यह नया सस्करण 'वेद-प्रकाश' मासिक के विशेषाक के रूप मे प्रकाशित हुआ है। पुस्तक बहुत ही उत्तम है। मूल्य इस वार बहुत अधिक रखा गया है।

**सुमंगली**—[वैदिक-विवाह-पद्धति]

विवाह-संस्कार करवाने वाले पुरोहितों और जन-साधारण के उपयोग के लिये समय-समय पर कई वैदिक-विवाह-पद्धतियां प्रकाशन में आ चुकी हैं। कुछ कुछ उपयोगी होने पर भी ये पद्धतियां सस्कारों में कुछ न कुछ विधि-भेद करने वाली ही होती हैं। सुविधा, समानता, प्रामाणिकता और विधान आदि की दृष्टि से सब सस्कारों में महर्षि दयानन्द कृत सस्कार-विधि : का उपयोग ही उत्तम और वांछनीय है। 'सुमगली' का सकलन अलीगढ़, वाले आचार्य श्री मित्रसेन जी एम० ए० ने किया है। साधारण कागज की इस छोटी-सी पुस्तक का मूल्य एक रुपया बहुत अधिक है। यह पुस्तक-सेवा सदन कटरा अलीगढ़ से मिल सकती है।

—नरायण गोस्वामी

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.केलिये भ.दी. आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग लखनऊसे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् **आर्य-मित्र** ओ३म्

'श्रय जयेम ] लखनऊ रविवार कार्तिक ४ शक १८९१, कार्तिक कृ० १ वि० सं० २०२६, दि० २६ अक्टूबर १९६९ [ हम आर्य बनें

करतारपुर में—

# गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह संपन्न।

## आर्य सम्मेलन, हिंदिरक्षा सम्मेलन, श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन आदि धूमधाम से हुए

### आर्य वीरो का अढाई मील लम्बा जलूस निकला था

करतारपुर जालंधर मे ऋषि दयानन्द जी के गुरु श्री विरजानन्द जी दण्डी की निर्वाण शताब्दी अत्यन्त समारोह से ९ से १२ अक्टूबर तक मनायी गयी। हरियाना पंजाब दिल्ली आदि से हजारो आर्यो ने वहा पहुच कर गुरु विरजानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। हिंदी सम्मेलन के सभापति प्रसिद्ध पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी थे। हिन्दी सम्मेलन मे पंजाब मे हिन्दी रक्षा के संदर्भ मे प्रस्ताव श्री वीरेन्द्र जी ने पेश किया। आपने कहा कि प्रस्ताव पास करने से पहले अपने हृदयो को टटोल प्रस्ताव पास होने पर उसे क्रियान्वित करना होगा। आपने हजारो देवियों को जो वहा बठी थीं सम्बोधित करते हुये कहा कि आपको भी बलिदान देना होगा। आर्य सम्मेलन ने पंजाब सरकार की हिन्दी भाषा से शत्रुता के विरुद्ध रोष प्रकट किया और कहा कि इस देश के हर नागरिक को भाषा माध्यम चुनने का अधिकार है। पंजाब सरकार इस अधिकार को छीन कर नागरिको के मूलाधिकार पर प्रहार कर रही है। सम्मेलन ने पंजाब सरकार से माग की कि वह अपनी हठधर्मी छोड कर हिन्दी भाषा का उचित स्थान दे। सम्मेलन पंजाब भर के आर्यों से प्रार्थना करता है कि वह अपनी सारी शक्ति हिन्दी के हित के लिये लगा दे। श्री वीरेन्द्र जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि भारत के सभी हिन्दी प्रेमी इसमे हमारा साथ देगे। जब भी आर्य समाज पर कोई कठिनाई आती है इसके लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने से भी संकोच नहीं किया जाता। आर्य समाज का जन्म ही कठिनाइया दूर करने के लिये हुआ है। हिन्दी पर चोट देश की एकता पर चोट है। आपने कहा कि अकाली भाई समझलें कि हम उनसे कोई भीख नहीं मांग रहे है। यदि हमें अधिकार हमे समझौता से न मिले तो हम संघर्ष भी करेगे। इसी प्रकार गोरक्षा सम्मेलन भी जोरदार रहा। नेताओ के ओजस्वी भाषण हुये।

श्रद्धाजलि सम्मेलन मे भाषण करते हुये महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज ने कहा कि गुरु विरजानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने का ढंग यह है कि हम आज निर्वाण शताब्दी के अवसर पर निर्माण करने की प्रतिज्ञा करें। हमे संगठन को और अधिक सुदृढ करना चाहिये क्योंकि यदि संगठन मे कमी या दुर्बलता आ जाये तो संगठन विनाश का रूप धारण कर लेता है।

आप ने कहा कि जीवन का निर्माण करने के बाद ही समाज का निर्माण किया जा सकता है। जो व्यक्ति स्वयं अपना मार्ग नहीं जानता वह व्यक्ति दूसरे को कैसे मार्ग दिखाएगा। आपने अपील की कि प्रत्येक सच्चे आर्य को कर्तव्य की पूर्ति करनी चाहिए।

### दीवान रामसरन दास का भाषण

इसी अवसर पर दीवान राम सरण दास ने लुधियाना निवासियो की ओर से १४ हजार ३ सौ रु० स्मारक के लिए भेंट किया आपने कहा कि गुरु विरजानन्द ने महर्षि दयानन्द को तैयार किया और हम उनके मिशन को सफलता के लिये हर सम्भव प्रयास करेगे। नगर मे आर्यो का ढाई मील लम्बा जुलूस निकला था।

वर्ष ७१ | अंक ३९

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए

इस अंक में पढ़िए।

# दुरितों का दूर करना ही भद्र की प्राप्ति है

[ स्व० श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० ]

**विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥** -यजुर्वेद

(ऋग्वेद ५।८२।५, यजुर्वेद ३०-३, तैत्तिरीय ब्राह्मण २-४ ६ ३, तैत्तिरीय आरण्यक १०।१०।२)

अन्वय —हे देव सवित, विश्वानि दुरितानि परा सुव। यद् भद्र (स्यात) तन् न आसुव ॥

अर्थ —हे प्रेरक प्रभो! सब बुराइयों को दूर कीजिये। जो कल्याणकारक वस्तु हो वह हमारे लिए दिलाइये।

व्याख्या —यह ऋषि दयानन्द का प्रियतम मन्त्र है। अपने वेद-भाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ मे ऋषि ने इसी मन्त्र से ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना की है और प्रत्येक मतमतान्तर का मानने वाला मनुष्य इस मन्त्र से बिना सकोच के प्रार्थना कर सकता है। इस प्रकार की प्रार्थना सब प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है। सभी 'दुरित' से बचना चाहते हैं और 'भद्र' को ग्रहण करना चाहते हैं।

इस मन्त्र मे तीन विशेष शब्द हैं, जिनके अर्थ विचारणीय हैं। एक 'सविता', दूसरा 'दुरित' और तीसरा 'भद्र'। प्रार्थना का अर्थ है प्र+अर्थना। 'प्र' का अर्थ है 'प्रकर्ष' तेजी से विशेष उत्कण्ठा से। अर्थना का अर्थ है मांगना। प्रार्थी उसी वस्तु को उत्कण्ठा से मांगता है जिसका मूल्य उसको ज्ञात होता है और जिसको पा जाना उसकी शक्ति के भीतर है। भूखा भिखारी रोटी मांगता है। अमेरिका के राज्य की प्रभुता चाहता। अज्ञात या अप्राप्य वस्तु की कल्पना हो सकती है। कभी कभी इच्छा भी। परन्तु इसको प्रार्थना नहीं कह सकते। प्रार्थना के लिए आन्तरिक उत्कण्ठा या विह्वलता आवश्यक है। उसके लिए यह जानने की आवश्यकता है कि वह क्या वस्तु है जिसकी हम को मांग है? बच्चा भूख से व्याकुल होकर चिल्लाता है। वह उसकी सबसे सच्ची प्रार्थना होती है। 'अर्थ' बिना समझे 'प्रार्थना' करना अपने को धोखा देना है। जिस वस्तु को तुम जानते ही नहीं उसको प्राप्त करने की इच्छा ही कैसे हो सकती है और यदि वह वस्तु प्राप्त भी हो जाय तो उससे तुमको क्या लाभ हो सकता है। ससार मे लोग 'मोक्ष' या 'स्वर्ग' के लिए सबसे अधिक प्रार्थना करते हैं। वह नहीं जानते कि मोक्ष क्या वस्तु है या स्वर्ग कैसा और कहाँ है। इसलिये ऐसी अज्ञात प्रार्थनायें मोक्ष के स्थान मे बन्ध और स्वर्ग के स्थान मे नरक की प्राप्ति ही कराती हैं। इसलिये प्रार्थी को

'दुरित' और 'भद्र' के अर्थों को जानना चाहिये।

दुरित दु + इत। इण गतौ से 'क्त' प्रत्यय करके 'इत' बना। 'इत' मे 'दु' लगा देने से 'दुरित' बना। सायण ने 'दुरितम' का अर्थ किया है 'अज्ञानात् निष्पन्न' (देखो ऋग्वेद भाष्य १ २३ २२) और 'दुरितानि' का 'पापानि' (देखो ऋग्वेद भाष्य २ २७ ५) आप्टे ने 'दुरित' का अर्थ किया है डीफीकल्टी (कठिन) सीनफल (पाप), एबैड कोर्स (बुरा मार्ग)। धातु और प्रत्यय पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि मार्ग मे जो कुछ बाधाएँ उपस्थित हैं वह सब 'दुरित' हैं। आप कहीं पर पहुचने के लिए कोई मार्ग खोजते हैं। यदि मार्ग अच्छा है तो यात्रा सुगम होती है। यदि मार्ग में कांटे हों तो यह 'दुरित' है। यदि ईंट-कंकड़ के रोड़े हों तो दुरित है। यदि खाबड़ खूबड़ हो तो यह दुरित है। यदि झाड़ झखाड़ हो तो यह दुरित है। यदि बीच मे नदी नाला आ जाय तो यह दुरित है। यदि आप के पैरों मे थकावट आ जाय और आपको यात्रा के बीच मे ही बैठ जाना पड़े तो यह दुरित है। यदि मार्ग मे डाकू मिल जाय तो वह दुरित है। साराश यह है कि आप की जीवन-यात्रा मे जो बाधायें पड़ती हैं वह सब दुरित हैं। मंजिल एक है, मार्ग भी एक है। परन्तु बाधायें अर्थात् दुरित बहुत से हैं। आपकी जीवन यात्रा आप के जन्म से आरम्भ होती है, आरम्भ से ही 'दुरित' भी आ उपस्थित होते हैं। शैशव काल के अनेक रोग (जुवेनील डीसीएज) आपके मार्ग को रोकते हैं। यह 'दुरित' है। बड़े होने पर जिस कार्य में आप हाथ डालते हैं उसी मे कोई न कोई वस्तु बाधक हो जाती है। कभी आप की अविद्या, कभी आप का प्रमाद, कभी आपका लोभ, कभी किसी बाहरी शक्ति का विरोध। यह सभी तो 'दुरित' हैं, और इनमे यदि एक छोटा सा भी दुरित शेष रह गया तो आपकी जीवन यात्रा असम्भव हो सकती है। आपका समस्त शरीर सुदृढ और रोगरहित हो, केवल पैर की सबसे छोटी उंगली के एक किनारे पर सरसो के बराबर फोड़ा हो जाय, आप देखेंगे कि आपका सारा काम ठप्प हो जायगा। यदि आप राजा हैं और आपने अपने किले की दीवारें बहुत चौड़ी और मजबूत बनाई हैं, जिनका तोड़ना किसी शत्रु की शक्ति से बाहर है और यदि आप के किले के कई मील के सुदृढ़ घेरे मे एक स्थान पर एक हाथ की लम्बाई मे एक कमजोर जगह छूट गई तो उस हाथ भर जगह मे होकर ही शत्रु का प्रवेश हो सकता है और आपका साम्राज्य एक क्षण में अस्त-व्यस्त हो सकता है। इसीलिये वेद मे 'दुरितानि' के साथ 'विश्वानि' विशेषण लगाया गया। आप जब भगवान् से 'दुरितों' के दूर करने की प्रार्थना करते हैं तो 'विश्वानी' पर विशेष बल है।

'यद् भद्र' -जो भद्र या कल्याणकारक होवे! भद्र क्या है? 'दुरितो का दूर करना ही भद्र है। महामुनि गौतम ने न्यायदर्शन में दो सूत्रों द्वारा इस रहस्य को समझाया है। 'बाधना लक्षणार्थ दुःखम्'। 'तदत्यन्तविमोक्षो अपवर्ग' (न्यायदर्शन, १।१।२१,२२)। अर्थात् रुकावट ही दुःख है। दुःख ही को 'दुरित' कहते हैं। (दु + ख = दुःख, दु + इत = दुरित)। 'ख' नाम 'इन्द्रिय' का भी है और 'आकाश' का भी। आकाश में ही गति सम्भव है। इन्द्रियां भी आकाश मे ही गतिवती हो सकती हैं। जिन वस्तुओं द्वारा इन्द्रियों की नैसर्गिक प्रगति मे रुकावट होती है वही दुःख है। वही दुरित है उससे 'अत्यन्तविमोक्ष' का नाम अपवर्ग है। अर्थात् कोई रुकावट शेष न रह जाय। रुकावटों के निःशेष होने पर जो स्थिति होगी वही 'भद्र' है। उसी की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

इस मन्त्र मे ईश्वर को 'देव सवित' कहकर पुकारा गया है। 'सविता' (सवितृ) शब्द के अर्थों पर विशेष विचार करना है। 'सविता' का सम्बन्ध 'परासुव' और 'आसुव' और दोनों से है। क्योंकि यह तीनों शब्द एक ही

( शेष पृष्ठ ११ पर )

लखनऊ रविवार २६ अक्टूबर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## पशु-बलि निरोध आन्दोलन की आवश्यकता

आर्य समाज मानवता के आदर्शों का सजग प्रहरी है। धर्म के नाम पर मानवों मे पशु बलि का अवैदिक ही नहीं अमानवीय कार्य है। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ मे हिंसा के मिथ्यात्व के विरुद्ध आन्दोलन किया और यज्ञपद्धति को अहिंसात्मक रूप देने मे सफलता प्राप्त की, परन्तु पौराणिक एवं तान्त्रिक पोपडम का आज भी इतना अधिक व्यापक प्रभाव है कि समय-समय पर देवी के नाम पर पशु-बलि प्रथा प्रचलित है। पशु-बलि के पीछे जो अन्ध विश्वास सव्याप्त है, वह यह है कि जो देवी को भेंट मे पशु की बलि देगा उसकी इच्छा पूर्ण होगी। इस मिथ्या अन्धविश्वास के पीछे आज भी मूख जनता हजारो, लाखो निरीह प्राणियो की बलि देना पुण्य कार्य समझती है।

विजयादशमी से पूर्व अष्टमी, नवमी तिथियो मे देवी के नाम पर आज भी जो बलियाँ दी जाती है, उसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अकेले नेपाल के एक नगर काठमाण्डू मे किस प्रकार बलि दी गयी–समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुआ है—

### दुर्गाष्टमी पर काठमाण्डू मे ५० हजार पशु-पक्षियो की बलि

"काठमाण्डू १८ अक्टूबर-देवी दुर्गा के सामने बलि चढ़ाने के लिये भारत से ट्रकों में पशुओ के यहाँ पहुंचने पर जनता ने भारी हर्षोल्लास किया।

दुर्गाष्टमी के दिन नगर के कई मुहल्ले तो बूचड़खाने का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। एक दिन में लगभग ५० हजार भेड़, बकरियाँ, भैंसे और पक्षी मारे गये। इनमें से अधिकाश पशु-पक्षी भारत से तथा १० हजार भेड़ें तिब्बत से लाये गये थे।'

इस समाचार पर जितनी समालोचना की जाय थोडी होगी। हिन्दू धर्म पर अभिमान करने वाले नेपाल को एक मात्र हिन्दू राष्ट्र कहकर फूले नहीं समाते पर क्या इस प्रकार की पशु-बलि हिन्दू-धर्म की देन है। गौतम बुद्ध ने भी यज्ञों मे पशु बलि को देख कर यज्ञो का त्याग किया था और अहिंसा का प्रचार किया था, पर क्या आज भी धर्म के नाम पर ऐसी ही हिंसा व्याप्त नहीं है। हमने केवल–काठमाण्डू के समाचार का उद्धरण दिया है। इसी प्रकार न जाने कितने स्थानो मे मन्दिरो मे घरो मे इसी प्रकार पशु बलि न दी गयी होगी।

लोग कहते हैं आर्य समाज की क्या आवश्यकता है। यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो हम पशु-बलि का निरोध करने मे ही यदि सफल हो जाते तो और बहुत सी समस्याएँ हल हो जाती। हमारे राष्ट्रीय जीवन मे मांसाहार बढ रहा है, उसको भी पशु बलि से बढावा मिलता है। हम समझते हैं धर्म के नाम पर पशु बलि आर्य समाज के लिये एक चेलेंज है। क्या आर्य समाज के नाम पर गोरक्षा आन्दोलन करके ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझने वाले स्वयम्भू नेता पशु बलि निरोध की दिशा मे अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

### आनन्द स्वामी जी की सफल विश्व वेद-प्रचार यात्रा

आर्य जगत् के मूर्धन्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज भारत से बाहर अपनी वेद प्रचार यात्रा मे आगे बढ़ रहे हे। उनका पहला पत्र मित्र के पाठक पढ़ ही चुके हैं, जर्मनी इग्लैण्ड, आयरलैण्ड के बाद अब वे अमेरिका पहुच गये हैं। और अमेरिका के नगरो मे अपनी अमृतवर्षा द्वारा वेद का सन्देश पहुचा रहे हैं। पिछले दिनो सुरीनाम मे आर्य दिवाकर सस्था की जयन्ती मे पहुंच कर आपने वहाँ के सभी आर्य बन्धुओं को प्रेरणात्मक सन्देश दिया, और वहाँ से ट्रिनीडाड और गायना के आर्य बन्धुओ के पास पहुचेंगे। और फिर अमेरिका मे अपनी प्रचार यात्रा आरम्भ कर देंगे। स्वामी जी के उपदेशों का पश्चिम की भौतिकतावादी जनता पर अच्छा प्रभाव हुआ है। और वे लोग वेद और वैदिक साहित्य की ओर आकृष्ट हो रहे हैं।

हम मित्र परिवार की ओर से स्वामी जी की विश्व-यात्रा और उनके द्वारा सम्पन्न वेद प्रचार की सफलता की कामना करते हैं। वास्तव मे आज उन जैसे आदर्श तपस्वी ऋषि भक्तो की आर्य समाज को बहुत आवश्यकता है। स्वामी जी का जीवन ऋषि-भक्तो के लिये वेद-प्रचारार्थ आत्मार्पण की प्रेरणा दे रहा है। ★

# महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा 'सुरीनाम' में वेद प्रचार

## आर्य दिवाकर की ४० वीं जयन्ती में महात्मा आनन्द स्वामी का आशीर्वाद

आर्य दिवाकर सुरिनाम नामक सस्था सुरिनाम मे स्थापित हुए ता० २१ सितम्बर को ४० वर्ष हो गये। जिसकी जयन्ती समारोह शनिवार ता० २० सितम्बर से ४ अक्तूबर तक वेद यज्ञ-भजन उपदेश एव विविध विद्वानों व महानुभावों के भाषण द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर देशदेशान्तर के विद्वान् व महानुभावो को आमन्त्रित किया गया था। हमारी वर्षों की योजना थी कि उस शुभावसर पर भारत के पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती को यहा बुलाया जाय।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी शुक्रवार ता० १५ अगस्त को प्रात देहली से अपनी यात्रा आरम्भ कर शाम को जर्मनी पहुँचे, जहा आप ५ दिन मे ६ व्याख्यान दे ता० २० अगस्त को लण्डन के लिये रवाना हुये। यहा भी सारा देश भ्रमण कर ७ व्याख्यान के बाद ता० ५ सितम्बर को अमेरिका पधारे। वहा के मशहूर शहर न्यू यार्क, क्लैफलैण्ड, पिलबर्ग, शिकागो आदि स्थानो मे अपने भाषण दिये। महात्मा जी की ता० ११ सितम्बर को यहा पहुचने की सूचना मिल गई थी। इस दिन महात्मा जी के स्वागत के लिये काफी जनता हवाई अड्डा (जान्द्रई) पधारी जो पारामारिबो से ३० मील पर है। शाम को ठीक ८ बजे महात्मा जी ने हमारे देश भूमि को स्पर्श कर पवित्र बनाया। सज धज से महात्मा जी का सैकड़ो की सख्या मे स्वागत कर सैकडो मोटरों के साथ रवाना हुये। यात्रा पथ पर प्रान्तिक आर्य समाज का मन्दिर जो बन कर तैयार हुआ है (और निकट भविष्य में महात्मा द्वारा उदघाटन होगा) यहां पर महात्मा जी का स्वागत किया गया। रात्रो मे १० बजे हम आर्य दिवाकर पहुच गये जहा महात्मा जी का स्वागत अनाथ बच्चो द्वारा हुआ। सोमवार ता० २२ सितम्बर को प्रात सुरिनाम के गवर्नर से मुलाकात करायी गयी और मगलवार ता० २३ सितम्बर को योजना और वेलफार के मिनस्टर श्री विश्वामित्र जी से मुलाकात करायी गयी इसी रात्री मे स्वामी जी का पहला भाषण आर्य दिवाकर मन्दिर मे हुआ जहां हजारो लोगो ने भाग लिया।

आर्य दिवाकर जयन्ती के बाद डेढ महीने तक विविध स्थानो मे उपदेश करने के बाद २ सप्ताह के लिये त्रिनिडाड और २ सप्ताह के लिये गायाना मे स्वामी जी पधारेंगे।

# क्या वेदों में इतिहास है?

[ श्री डा० रघुवीरशरण आर्य मुख्य संचालक उ० प्र० अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति नई दिल्ली-१ ]

'कादम्बिनी' सितम्बर १९६९ में एक लेख 'प्राचीन भारत के निर्णायक युद्ध' श्री चन्द्रिका प्रसाद मिश्र-५, खेड़ापति नगर, ग्वालियर-२ द्वारा लिखित पढ़ा। पृष्ठ ४५ भाग २ पंक्ति ३ पर "भेद और शबर के युद्धों का उल्लेख हमें ऋग्वेद में भी मिलता है" इस वाक्य से यह ज्ञात होता है कि श्रीमिश्रजी भी पश्चिमी विद्वानों के लेखों के आधार पर या पश्चिमी दृष्टि कोण अपनाये जाने के कारण वेदों में इतिहास मानते हैं। वेदों में इतिहास मानने व सिद्ध करने का दु:साहस विदेशियों (ईसाईयो) ने इस कारण किया था कि जिससे वेद, आर्यों की मान्यतानुसार ईश्वरी ज्ञान सिद्ध न होकर इतिहास की पुस्तके मात्र बन कर रह जायें। इसी में उन की विजय थी। और वे किसी अंश तक सफल भी हुए। क्यों कि भारतीय विद्वानों ने भी वेदों को पश्चिमी दृष्टिकोण (चश्मे) से देखा और (वेदों को) इतिहास की पुस्तके या वेदों में इतिहास स्वीकार कर बैठे—

वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं और सृष्टि को आदि में ही ऋषियों पर उक्त ज्ञान अवतरित हुआ। वेदों में व अन्य तथा कथित धार्मिक पुस्तकों में अन्तर यह है कि:-(१) अन्य कथित धर्म ग्रन्थ व्यक्तियों की गाथाओं से भरे पड़े हैं-(२) पक्षपात व देश काल के प्रभाव से युक्त हैं-(३) विज्ञान व सृष्टि की प्रत्यक्ष बातों का विरोध करते हैं-[४] मानव मात्र के लिये समान रूप से कल्याणकारी मार्ग का निर्देशन नहीं करते-[५] विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा वर्ग विशेष के लिये बनाये गये हैं। किन्तु वेद इन सभी बातों से ऊपर उठ कर, मनुष्य मात्र को समान समझ कर मार्ग का निर्देशन करते हैं-[२] वह सत्य को सर्वोपरि मानते हैं-[३] उन में विज्ञान, युक्ति, तर्क और न्याय के विपरीत कुछ नहीं हैं-[४] उनमें किसी देश विशेष, व्यक्ति, काल का वर्णन न होकर ऐसे शाश्वत मार्ग का निर्देशन है जिससे मनुष्य मस्तिष्क की सारी उलझी गुत्थियां सुलझ सकती हैं-[५] वेद लौकिक, पारलौकिक उन्नति के लिये समान रूप से प्रेरक हैं। वेद की शिक्षाएँ सर्वाङ्गीण हैं, इसी लिये आधुनिक युग के महान् द्रष्टा महर्षि दयानन्द ने कहा है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है-"

यदि वेदों में भेद, शबर व दशरथादि का इतिहास है तो मानना पड़ेगा कि वेद शबर, भेद व दशरथादि के जीवन काल में या उनके मरणोपरान्त लिखे गये। जब कि महर्षिमनु से लेकर जैमिनि पर्यन्त की यह मान्यता है कि वेद जैसे सर्वज्ञ कल्प शास्त्र का प्रादुर्भाव सर्वज्ञ सर्व शक्ति परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी के द्वारा होना सम्भव नहीं है-और वह भी आदि सृष्टि में जब कि शबर आदि का अस्तित्व भी नहीं था। वेदान्त दर्शन के सूत्रों के अनुसार 'जन्माद्यस्ययत.' अर्थात् ब्रह्मा से रूपात्मक जगत् की उत्पत्ति व 'शास्त्रयोनित्वात्' ऋग्वेदादि का कारण भी ब्रह्म ही है-क्यों? कारण दिया कि 'तत्तु समन्वयात्' यह तथ्य जगत् व शास्त्र के समन्वय से समझा जा सकता है—

ईश्वरीय ज्ञान की जो मुख्य कसौटियां होनी चाहिये उनमें दो प्रमुख कसौटियां अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान मानव समाज को सृष्टि की आदि में मिला हो—और उक्त ज्ञान किसी सर्वज्ञ शक्ति ने प्रदान किया हो क्योंकि सृष्टि का पूर्ण ज्ञान किसी पूर्ण ज्ञाता द्वारा ही जीवों को सम्यक्तया प्राप्त हो सकता है-ऋक्, यजु, साम तथा अथर्व इन चार विभागों में उक्त ईश्वरीय ज्ञान विभक्त है और क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान इन चारों विषयों का उनमें समावेश है-वेद शब्द जो विद् धातु से बना है उसके चार ही अर्थ महर्षि पाणिनी ने अपने धातुपाठ ग्रन्थों में किये हैं—१-विद-ज्ञाने अर्थात् ज्ञान प्राप्त करना-२-विद-लाभे अर्थात् ज्ञान पूर्वक कर्म द्वारा एहिक तथा पारमार्थिक सुख शान्ति पाना, ३-विद-सत्तायाम, अर्थात् आत्मा तथा परमात्मा सत्ता को उप-आसना द्वारा पहिचानना-४-विद्-विचारणे अर्थात् विचार-विशेष ज्ञान [विवेक] द्वारा प्रत्येक पदार्थ का निदिध्यासन अर्थात् साक्षात्कार करना—

अब विचारणीय है कि इन में [वेद में] किन्हीं मनुष्य विशेष के इतिहास के लिए स्थान है? वेद तो अपौरुषेय हैं—उन में किन्हीं स्थान विशेष, काल विशेष या मनुष्य विशेष की चर्चा का प्रश्न ही नहीं उठता—अब तो पश्चिमी विद्वान् भी इस तथ्य को स्वीकार करने लग गये है कि वेद सृष्टि की आदि में ही परमात्मा द्वारा मनुष्य को प्राप्त हुए—श्री हाडान्डे लिखते है कि 'The Brahmanic religion is the first and purest product of Super natural religion and that the Hindu Scriptures Contain to a moral Containing the original doctrines and terms of revolution delivered from God Limself to mankind at the first Creation—" अर्थात् ब्राह्मण (वैदिक) धर्म सब से प्राचीन और ईश्वरीय धर्म का अत्यन्त शुद्ध परिणाम है—तथा हिन्दु धर्म ग्रन्थों में अमूल्य सिद्धान्त और ईश्वरीय ज्ञानके वचन पाये जाते हैं—जो सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने मनुष्य मात्र को प्रदान किये—इसी प्रकार Louis Jacollist व Sir LrilliumJohnes आदि पश्चिमी विद्वानों ने भी अपने विचार प्रगट किये हैं—

मेरा आर्य विद्वानों से अनुरोध हैं कि दिसम्बर ६९ में मनाई जा रही 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' शताब्दि के सुअवसर पर अन्य विषयों के साथ-साथ 'क्या वेदों में इतिहास है ?' विषय पर भी निर्णायक निश्चय लेकर ही दम लेना चाहिये—

## अगला अंक बंद रहेगा

आर्यमित्र के इस अंक के पश्चात् आर्यमित्र का ऋष्यंक छपना प्रारम्भ हो जायगा। अतः २ नवम्बर का अंक बंद रहेगा। अब अगला दिवाली का ऋष्यंक ९ नवम्बर को प्रकाशित होगा। पाठक व एजेन्ट नोट करलें।

— प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री सभा व अधिष्ठाता
आर्यमित्र लखनऊ

—मुंशी गंज बाराबंकी के श्री रघुनन्दन प्रसाद जी ने अपना एक बड़ा मकान डी० ए० वी० माध्यमिक विद्यालय को दान कर दिया है। —कृष्ण चन्द्र कौशल

## शुभ-कामना

शुभ दशहरा कामना,
करके कृपा स्वीकार हो,
सफल यह प्राचीन गौरव
से भरा त्यौहार हो।
हो रणञ्जय भावना,
वीरत्व का संचार हो,
भव्य भारतवर्ष का
सर्वत्र जय जयकार हो॥

—रणञ्जयसिंह (राजा)
एक्स-एम. पी., एम. एल. ए.

## परमानन्द बस्ती बीकानेर का उत्सव

आर्यसमाज परमानन्द बस्ती (रथखाना) बीकानेर का वार्षिकोत्सव २६ अक्टूबर से २ नवम्बर ६९ तक समारोह से होगा। —मन्त्री

# महात्मा गांधी और आर्यसमाज

[ श्री प० शिवदयालु जी मेरठ ]

महात्मा गांधी के साथ आर्य समाज का दीर्घकालीन पुराना और घनिष्ट सम्बन्ध है। दक्षिण अफ्रीका से विजयी होकर जब महात्मा जी पधारे तो सर्वप्रथम अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के निमन्त्रण पर गुरुकुल कांगडी मे उन्होने पदार्पण किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनको मिस्टर से महात्मा बनाया और आर्य समाज से मिलकर कार्य करने को कहा।

महात्मा जी ने सांस्कृतिक एव सामाजिक क्षेत्रो में कार्य करने की अपेक्षा राजनीतिक क्षेत्र मे कार्य करना अत्यावश्यक समझा और ऐसा करना ठीक ही था। दासता पाश मे जकड़ी हुई जाति को मुक्त कराना प्राथमिक कार्य है, इसी दृष्टि से महात्मा जी ने भारत की राजनीति मे पदार्पण किया।

उस समय प्रत्येक अंग्रेज अपने को भारत का शासक समझता और भारतवासी को घृणा की दृष्टि से देखता था। जनता में अंग्रेजो का आतक छाया हुआ था। भारतीय संस्कृति, सभ्यता साहित्य और भाषा पर निरन्तर वज्र घात हो रहे थे। भारत को पदाक्रात करने वाले अंग्रेजो के विरुद्ध खुल कर बोलने और उनके शासन को उखाड़ फेंकने की भावना इने गिने क्रान्तिकारी वीरों के अतिरिक्त जनसाधारण मे नहीं थी। गाधी ने देश के अनेक भागो मे सत्याग्रह करके जनमानस को उद्वेलित किया और राउलेंट के काले कानून के विरुद्ध सत्याग्रह करने की घोषणा की। सर्व साधारण के मनो मे चेतना उत्पन्न हुई और अपने देश मे अपने राज्य की भावना, जिसका सूत्रपात महर्षि दयानन्द जी ने सर्व प्रथम किया था जागृत हो उठी। लोकमान्य तिलक का पावन मन्त्र 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" घर-घर उद्घोषित होने लगा।

सन् १९२१, १९३१ व १९३२ मे कई स्वतन्त्रता सग्राम महात्मा जी के नेतृत्व में देश के लड़े गये और पूर्ण स्वाधीनता 'कम्पलीट इनडेपेन्डेन्स' का ध्येय लाहौर कांग्रेस मे स्पष्ट किया गया। सन् १९४२ ई० मे 'करो या मरो' की प्रतिज्ञा के साथ स्वाधीनता का अन्तिम समर भी महात्मा गांधी जी के नेतृत्व मे लडा गया।

इन सब ही सग्रामो मे आर्यसमाज ने महात्मा जी का पूरा-पूरा हाथ बटाया। भारी सख्या में आर्य समाजी सत्याग्रह समरों मे जूझे। अनेक आर्य समाजो मे ताले पड़ गये और अनेक आर्य सस्थाओ को अंग्रेजो ने गैर कानूनी घोषित किया। क्रान्तिकारी आन्दोलनो में भी आर्य समाज का सहयोग सराहनीय रहा है। स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, लालाहर दयाल, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, राम प्रसाद बिस्मिल आदि अनेक आर्य नर पुगवों ने क्रान्तिकारी आन्दोलनो की अगवानी की और अनेको ने हँसते हँसते फासी के झूले झूले।

महात्मा गाधी जी निश्चय आर्य समाज के लिये श्रद्धा के पात्र हैं। पूजनीय स्तुत्य और वन्दनीय हैं। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि आर्य समाज महात्मा गाधी जी के प्रत्येक सास्कृतिक सामाजिक अथवा राजनीतिक सिद्धान्त व दृष्टिकोण को मानने वाला है। आर्य समाज वेदो को ईश्वरीय ज्ञान मानता है जब कि गांधी जी इसके विरोधी रहे हैं। उन्होने एक बार स्पष्ट लिखा था कि स्वामी दयानन्द ने मूर्ति पूजा का खण्डन तो किया जिसको मैं भी जगलीपन समझता हू। किन्तु वेदो को अपौरुषेय कह कर वेद के एक-एक शब्द को मूर्तिवत् पुजवा दिया है।

आर्यसमाज सस्कृति अर्थात् धर्म के सनातन अग को अपरिवर्तन शील मानता है अर्थात् धर्म के मूल सिद्धान्तों के सम्बन्ध में समझौता करने का प्रबल विरोधी है जब कि महात्मा जी समन्वयवादी रहे हैं और सकर सस्कृति अर्थात् मिली-जुली सस्कृति के मानने वाले थे। गांधी जी की इस मान्यता ने आर्यसस्कृति के तेज को भारी क्षति पहुचाई है।

गाधी जी जातिवाद के विरोधी रहे हैं और आर्य समाज भी इसका प्रबल विरोधी रहा है। किन्तु जन्ममूलक वर्णवाद को उन्होने मान्यता दी है जब कि आर्यसमाज गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण धर्म को प्रतिष्ठित करना चाहता है। सहस्रो प्रचलित जाति उप जातियो को समाप्त कर सामाजिक क्षेत्र मे प्रबल क्रान्ति करना चाहता है, और नव-समाज का निर्माण करना चाहता है। महात्मा जी अस्पृश्यता के प्रबल विरोधी रहे हे और क्रियात्मक रूप से छूत छात का भारी विरोध उन्होने किया है। मौलाना मोहम्मद अली ने जब कोकानंडो कांग्रेस के अध्यक्षपद से अछूतो को दो भागो मे बाँटकर आधे अछूतों को मुसलमान बना कर उनके उद्धार करने की बात कही थी तो गांधी जी ने उसका विरोध किया। जब सन् १९३५ मे ब्रिटीश पारलियामेंट ने अछूतों को सवर्ण हिन्दुओं से पृथक निर्वाचन को उस समय के सुधारों में सम्मिलित किया तो गांधी जी ने उसके विरोध में आमरण अनशन किया और अंग्रेजों के षडयन्त्र को निरस्त कर दिया। आर्य समाज ने महात्मा जी की इस दूरदर्शिता की बडी सराहना की और अछूतोद्धार के कार्य को अधिक से अधिक बल के साथ आगे बढ़ाने का प्रण किया किन्तु आगे चलकर गांधी जी ने अवर्ण हिन्दुओ को हरिजन कहकर उस पार्थक्य वाद की नीति को पल्लवित कर दिया और स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय संविधान में सरक्षण देकर उस नीति को पुष्ट किया जिसको आर्य समाज हिन्दू जाति के लिये निश्चय खतरनाक समझता है।

महात्मा गांधी जी ने राष्ट्र-भाषा हिन्दी का दक्षिण भारत में प्रबल प्रचार किया तो आर्य समाज ने इस पुण्य कार्य मे पूरा २ उनका हाथ बटाया किन्तु बाद मे मुसलिम तुष्टिकरण नीति के कारण गांधी जी ने हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी अर्थात् मिली-जुली हिन्दी-उर्दू भाषा का समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और साथ ही एक राष्ट्र की एक लिपि के सिद्धान्त को त्याग कर हिन्दी-उर्दू लिपियो को राष्ट्रीयस्तर पर मान्यता देने का आन्दोलन किया तो आर्य-समाज ने गाधी जी के इस पग का भी खुला विरोध किया।

सन् १९१६ की लखनऊ कांग्रेस मे मुसलमानो को सारे भारत मे ३० प्रतिशत स्थान एवं पृथक निर्वाचन का ठहराव पास करके फूट और विभाजन का विष वृक्ष बोया गया और भारत के राजनीतिक क्षितिज पर उदित होकर गाधी जी ने जहा राष्ट्र में नव चेतना उत्पन्न की, वहाँ साथ ही खिलाफत आन्दोलन को खड़ा करके भयकर राजनीतिक भूल की। हिन्दुओ को निर्बल और मुसलमानो को अधिक मतान्ध और उद्दण्ड बना दिया।

सन् १९४७ ई० में जब अंग्रेज

## विचार-विमर्श

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति वश भारत छोड़ने के लिये तैयारी करने लगे तो उन्होंने अपनी कूटनीति का जाल फैलाया और मुसल्मानो को हिन्दुओं से पृथक करने का भारी षड्यन्त्र रचा। गांधी जी ने इस षड्यन्त्र का उचित विरोध न कर स्वय उस षड्यन्त्र में फस गये और हिन्दू-मुस्लिम भाई २ का नारा लगाया और यह घोष किया कि बिना हिन्दू मुस्लिम एकता के स्वराज्य असम्भव है। इस घोष ने भारत की राजनीति मे हलाहल विष का काम किया। अंग्रेजो ने परिस्थिति से लाभ उठाकर मुसल्मानों को अधिक से अधिक सुविधाएँ अधिकार देने की बात चलाई यहाँ तक कि भारत को विभाजित करने की भी चाल चली। गांधी जी ने इसका विरोध गलत प्रकार से किया और भारत के राष्ट्रीय जीवन को विषाक्त बना कर मिष्टर जिन्हा को कोरा चैक देने की घोषणा की। अंग्रेजो ने मुसल्मानों को समझाया कि गांधी के हाथ मे है क्या जो कोरा चैक देता है, शक्ति तो अभी हमारे हाथो मे है, हम मुसलमानों के लिये भारत के टुकड़े करके एक मात्र उनको सौंप देंगे। मुसलमान खुल्लमखुल्ला कांग्रेस से पृथक् हो हिन्दुओ का विरोध करने लगे। और अन्त मे भारत का विभाजन हो गया। गांधी और नेहरू ने यह कहा कि भारत का विभाजन हमारी लाशो पर होगा, किन्तु विभाजन हो गया, और गांधी जी नेहरू जी की बात कोरी बात ही रह गई।

लगभग ३० वर्ष पुरानी बात है कि उत्तर भारत मे खाकसार आन्दोलन तेजी से चल रहा था, और औपनिवेशिक स्वराज्य के अन्तर्गत स्थापित उत्तर प्रदेश का कांग्रेसी शासन उसको दबाने मे अशक्त हो गया था। तब महात्मा गांधी की दृष्टि आर्य समाज की ओर पड़ी, और सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं मध्यप्रदेश के स्पीकर श्री बाबू घनश्यामसिंह जी गुप्त को बुलाकर कहा कि इस आन्दोलन को दबाना चाहिये। और कहा कि मैं आर्य समाज के राष्ट्र-प्रेम एवं कार्य कुशलता को अन्य सब संगठनों की अपेक्षा श्रेष्ठ समझता हू। उस ही को आगे बढाना चाहिये, तो बाबू जी सीधे लेखक के पास घर पर पधारे, और महात्मा जी का सन्देश दिया, और आर्य वीरों को सगठित एवं सुशिक्षित करने का आग्रह किया तो लेखक ने कहा कि आप ५०००० आर्य सैनिक ६ मास में तैय्यार करने को कहते हो, सो तो हो जावेंगे, किन्तु इस कार्य में भारी व्यय करना होगा, जिलेवार शिक्षक तैय्यार करने होंगे। स्वयं सेवकों की भरती कर शिक्षण शिविर लगाने होगे। शिविरो व शिक्षकों आदि पर एक लाख से ऊपर व्यय होगा, तो बाबू जी ने कहा कि महात्मा जी ने आवश्यक धन की व्यवस्था कराने का भी आश्वासन दिया है।

प्रथम शिक्षक शिविर डौरली के मैदान मे लगवाया गया। इधर खाकसारो की लाहौर मे सिकन्दर हयात खां ने मारे डण्डो और गोलियो के कमर तोड कर रखदी, और आर्य समाज को उनसे लोहा लेने का अवसर न आया। निष्कर्ष यह है कि आर्य समाज से महात्मा जी का कई विषयो मे गहरा मतभेद व विरोध होते हुये भी उनके हृदय में आर्य समाज के लिये पर्याप्त स्थान था। वह तो मुस्लिम तुष्टिकरण की अराष्ट्रीय व साम्प्रदायिक नीति के शिकार होकर विरोध कर बैठते थे।

किन्तु आर्य समाज ने उनके विरोध की कभी चिन्ता न की और वह ध्येय पर बढ़ता ही गया।

जब सन् १९३८ ई० मे आर्य समाज ने हैदराबाद की निजामीशाही के अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन का सूत्रपात किया तो गांधी जी ने उसको साम्प्रदायिक कह कर मुसलमानों को सन्तुष्ट करने का यत्न किया, तो आर्य समाज ने गांधी जी का डट कर विरोध किया। लेखक ने स्वयं कांग्रेस के सब पदो को विरोध रूप में त्याग दिया और गांधी जी तथा नेहरू जी को लिखित रूप में खुली चुनौती दी। सहस्रों कांग्रेस मे कार्य करने वाले आर्य सामाजिक कार्य कर्त्ताओ ने अपने-अपने त्याग पत्र भेजकर अखिल भारतीय कांग्रेस के कार्यालय मे ढेर लगा दिया, तो उस समय के कांग्रेस के महामन्त्री आचार्य कृपलानी जी ने विवश होकर यह घोषणा की कि आर्य समाजी कांग्रेस के पदो पर रह कर भी इस आन्दोलन मे खुला भाग ले सकते है। आर्य समाज का सत्याग्रह आन्दोलन तीव्र गति से चला। १०००० से ऊपर आर्य वीरो ने निजामशाही की जेलों को पाट दिया और सारे भारत वर्ष मे कहीं भी तो साम्प्रदायिक उपद्रव नहीं हुआ। समय आया कि महात्मा गांधी जी का भ्रम दूर हुआ, और उन्होंने अकबर हैदरी [प्रधान मन्त्री हैदराबाद] को पत्र लिखा कि आर्य समाज की मांगें शुद्ध धार्मिक व नैतिक हैं, उन्हें शीघ्र पूरा किया जाय, नहीं तो वह स्वयं इस आन्दोलन मे आर्य समाज का खुल कर साथ देंगे। निजामशाही थर्रा तो पहले ही रही थी, इस पत्र को पाकर उसके छक्के बिल्कुल छूट गये, और तुरन्त आर्य समाज की सारी मांगें पूरी कीं, और सम्मान पूर्वक आर्य सत्याग्रहियों को कारागारो से विदा किया।

महात्मागांधी जी से इतने मतभेद होते हुए भी आर्य समाज उनके उपकार त्याग तपस्या देशप्रेम ईश्वर निष्ठा व आर्य संस्कृति सम्बन्धी उनकी आस्था को दृष्टि में रखते हुए श्रद्धा पूर्वक उस महान् राष्ट्र पुरुष के प्रति उसकी पावन जन्म शताब्दी के अवसर पर अपनी श्रद्धा की अञ्जलि सादर समर्पित करता है।

तथा महात्मा गांधी जी का विश्व को जो पावन सन्देश है। जैसा कि मैं समझा—

निम्न शब्दों मे अंकित करता हूं—

१—आत्मा अमर अजर अविनाशी और शक्ति का पुञ्ज है। इसको नाशमान् दीन-हीन अकिंचन व पानी का बुदबुदा समझना भूल है।

२—ईश्वर-विश्वास और एक ईश्वर की उपासना से मानव का नैतिक चारित्रिक और आत्मिक बल बढ़ता है। नास्तिकता, जड़पूजा और अनेक देवो की पूजा से नैतिक चारित्रिक पतन होता, तथा अन्धविश्वास और साम्प्रदायिकता पनपती हैं।

३—भारत तथा ससार के सब राष्ट्रो मे स्वर्ग का राज्य जिसको गांधी जी रामराज्य के नाम से पुकारतेथे, स्थापित करना जिसमे ईर्ष्या द्वेष, छल-कपट लोभ और मात्सर्य न हो और शासक-शासित का अमीर-गरीब का ऊँच नीच का काले-गोरे का भेद न हो और राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई के उत्थान की ओर शासन का प्रमुख ध्यान हो।

४—सदा सत्य और अहिंसा हमारे जीवन निर्माण के प्रमुख सम्बल हों।

## वसुधारा का मन्त्र

पहले यज्ञ के पश्चात् वसो पवित्र मासि शत धारम् बोलकर यज्ञ मे घृत की धार छोड़ी जाती थी। अब भी प्राय: ऐसा होता रहता है। परन्तु सार्वदेशिक सभा की विद्वत् परिषद् ने कई वर्ष से इस मन्त्र को बोलने का निषेध कर दिया है, और कारण यह बताया है कि इस मन्त्र का अर्थ यहाँ लागू नहीं होता। परन्तु इसके स्थान पर कौन-सा मन्त्र बोला जाये या वसुधारा का छोड़ना ही बन्द कर दिया जाये यह पता नहीं चलता। मैने अथर्व १२-३-४१ से यह मन्त्र चुना है जो वसुधारा के लिये पूर्ण फिट हो रहा है, इसे नोट कर लिया जाये। मन्त्र—

वसोर्याधारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः।
सर्वास्ता अवरुन्धे स्वर्ग: षष्ट्यांशरत्सु निधिपा अभीच्छात्।

—विहारीलाल शास्त्री

# काव्य कानन

## आर्य-विनय

रुद्र सकल बल के भण्डार !
हे ज्योतिर्मय ! हे कर्त्तार !
हे भूपों के भूप ! अनूप !
शुद्ध ! बुद्ध ! हे विमल-स्वरूप !
जन्म-मरण से रहित ! अपार !
रहे उपासक तुझे पुकार ॥
सब कालो मे हे भगवान !
सब देशों मे कीर्तिमान् !
रहें सुरक्षित सब नर नार ।
बोलें तेरे जय - जयकार ॥
मुद - मंगल-मय ! नव प्रकाश ।
नित आवे जन-जन के पास ।
धर्म, अर्थ, हम काम और मोक्ष ।
अनुभूति तेरी अपरोक्ष ॥
पायें तुझमे हे जगदीश !
सदा नवायें तुझको सीस ॥
पाप-ताप, मृत्यु का भय ।
राग-द्वेष, हे मंगलमय !
हम सबका दो दूर हटा ।
प्रभुवर ! लो हमको अपना ॥
तव रक्षित होकर हम लोग ।
भोगें शुभतर, शुचितर भोग ॥
मांग रहे तुम से वरदान ।
प्रभुवर ! दो प्रज्ञा का दान ॥
शरणागत की राखो लाज ।
हे अज ! शुभ शुचितम-महाराज ! !
भक्ति-मुक्ति करो प्रदान ।
हे देवो के देव ! महान् ! !

—जगत्कुमार शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' नई दिल्ली

## प्रयत्न और प्रगति

व्यक्ति के प्रयासो से युग की तस्वीर बदल जाती है ।
बूंद-बूंद बरसा कर बादल
ताल सरोवर भर देते है
थोडा थोडा करने वाले भी
कुछ का कुछ कर देते है ।
सूरज का प्रताप देखलो तम से ज्योति निकल आती है ।
मानवता की गति प्रगति
सब मेहनत की गाथ कहानी
आलस्य नाम भिखारी है
मेहनत तो है दाता दानी
मेहनत के बलबूते सरिता सिता तक बहा लाती है ।
परावलबन छोड हाथ से
करते हैं जो काम निरन्तर
सदा पूजती उनको दुनिया
और वे ही रहते स्वतन्त्र
पहले खून पसीना देकर फिर जाति गौरव पाती है ।

—प्रो० ओमकुमार एम०ए० द्वय, दयानन्द कालेज, शोलापुर

## भजन

[ १ ]

सुमिरन करले मन मन्दिर मे, ओ३म नाम सुखकारी रे ।
परमपिता परमेश्वर प्यारा, प्रीतम जग हितकारी रे ॥
निराकार निर्वैर नियन्ता, निर्विकार निस्सारी रे ।
अनुपम अभग अनन्त अखीश्वर अजर अमर अविकारी रे ॥
सर्वान्तरयामी सर्वेश्वर, शुद्ध सुखद सृष्टी करता ।
स्वामी सर्वाधार सच्चिदानन्द शान्ति सचारी रे ॥
घट-घट घमे घर मे घन मे, दामिनि की द्युति न्यारी में ।
जग मे जन मे मन मे तन मे, व्यापक व्योम विहारी रे ॥
नित्य पवित्र सकल जग भरता, हरता दुख करता धरता ।
'देव" दयालु दयामय दाता, दयासिन्धु दुखहारी रे ॥

## स्वतन्त्रता स्तवन

(राग केदारा-त्रिताल)

[ २ ]

स्वागत हे देवी स्वतन्त्रते, जन गण मन की परम साधना ॥
शान्ति सुधा सरसाने वाली । आनन्द स्रोत बहाने वाली ।
राष्ट्र हृदय हर्षाने वाली । हे युग-युग की सुखद कामना ॥
स्वागत ० ॥
विश्व गगन का जगमग तारा । कैसा मनहर रूप तुम्हारा ।
तुमने नव-जीवन सचारा, हे नवयुग की नवल सृजना ॥
स्वागत ० ॥
जब तुम दया दिखा जाती हो । शान्ति समीर बहा जाती हो ।
नव प्रभात जग मे लाती हो । हे मानव की दिव्य कल्पना ॥
स्वागत ० ॥
शुभ सन्देश सुनाई तूने । दुख से मुक्त दिलाई तूने ।
मन की मलिन मिटाई तूने । पर सत्ता की दुखद वेदना ॥
स्वागत ० ॥
सब सुखों की सार तुम्ही हो । भव्य-भाव भण्डार तुम्हीं हो ।
'देव' हृदय आधार तुम्हीं हो । लिए आरती करें वन्दना ॥
स्वागत ० ॥

—ब्रह्मदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'देव' वकील सरकार
प्रधान, आर्य समाज, तहसील दावगांव

## प्रभु आओ

मन मन्दिर मे आओ, प्रभु आओ ॥
दूर करो अज्ञान तिमिर को
हो जीवन पथ पर उजियारा ।
रह न सके मन के मन्दिर मे
गहन निराशा का अँधियारा ।
हृदय भवन मे दिव्य ज्ञान की,
पावन ज्योति जलाओ—प्रभु आओ ।
तेरी ज्योति किरण को पाकर
अंधकार को दूर हटाऊँ ।
तेरी अनुपम कृपा दृष्टि से,
जग मे जीवन सफल बनाऊँ ।
भर लूँ आचल अनुपम निधि से,
यदि प्रभु जी तुम अपनाओ—प्रभु आओ ।
दुर्गुण दूर करो अन्तर के,
सत्य गुणो का समावेश हो ।
लोभ, मोह और पाप द्वेष का,
मेरे मन मे, नहीं लेश हो ।
पुष्पलता के इस जीवन को,
पावन आज बनाओ—प्रभु आओ ।

—पुष्पलता श्रीवास्तव, मन्त्रिणी महिला समाज सभा-भवन

# यज्ञ के अधिकारी

[ले०—श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद-सदन, इन्दौर—२]

[गताङ्क से आगे]

क्योंकि पत्नी के साथ ही धर्मादि कार्यों के अनुष्ठान करने से समस्त पुरुषार्थों की सिद्धि होती है। इसलिये स्मृति मे कहा है :—"यजमानः सपत्नीको जुहुयात्।" यज्ञादि कर्मों में सपत्नीक यजमान आहुति प्रदान करें।

## अंगहीन भी अपात्र है

यज्ञके लिये पूर्वोक्त पात्रता होने पर भी— "नागहीनम्" अंगहीन व्यक्ति भी यज्ञ का अधिकारी नहीं है।

## आश्रम व्यवस्थानुसार यज्ञों की पात्रता

परन्तु उपरोक्त पात्रता के आदेश नित्य के अग्निहोत्रादि कर्म एवं संस्कार कार्यों के लिये आवश्यक नहीं है क्योंकि नित्य का संध्याग्निहोत्र ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ भी करते हैं। अतः यज्ञ की भी आश्रम व्यवस्था के अनुसार पात्रता मान्य की गई है जो कि निम्न प्रकार है :—

(१) ब्रह्मचारी के लिये यज्ञ—संध्या एवं दैनिक अग्निहोत्र आवश्यक है।

(२) गृहस्थ के लिये यज्ञ—पंच महायज्ञ, संस्कार, काम्य इष्टियां, श्रौत स्मार्त्तादि यज्ञ है। गृहस्थ ही सब प्रकार के यज्ञों का अधिकारी है।

(३) वानप्रस्थ के लिये यज्ञ—सायंप्रातहवनादि पंचमहायज्ञ तथा पर्वादि यज्ञ हैं।

(४) सन्यासी के लिये यज्ञ—केवल ब्रह्मयज्ञ है, अर्थात् सन्ध्योपासन, योगाभ्यास, स्वाध्याय, प्रवचन आदि ही उसके यज्ञ हैं। पूर्वोक्त अन्य आश्रमियों के अनुष्ठान करने योग्य यज्ञ उसके करने कराने के लिये नहीं है।

## संन्यासियों के लिये यज्ञ नहीं है

महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे लिखा है :—

'यद्बाह्य क्रियामयमस्ति सन्यासिना तन्न।'

जो बाह्य अग्नि मे यज्ञादि कर्मकाण्ड किये जाते हैं वे सन्यासियों से लिये नहीं है। यही व्यवस्था प्रचीन काल से मान्यता को प्राप्त किये हुए है और तदनुसार व्यवहार मे भी है।

## वर्ण व्यवस्थानुसार पात्रता

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सभी को यज्ञ करने का अधिकार है। शूद्रादि संज्ञा जन्म जाति मूलक नहीं है अपितु गुण कर्म स्वभावानुसार है। प्रत्येक को यज्ञ का अधिकार है। अतः अधिकार के कारण सभी को पात्रता प्राप्त करनी चाहिये। शूद्र को भी यज्ञ करना चाहिये। यज्ञ से सब प्रकार की उन्नति होती है, ऐसा यजुर्वेद के १८ वें अध्याय में वर्णित है। उन्नति करने का अधिकार सबको है। विद्वानो की संगति करना, उनका सत्कार दान आदि शुभ कर्म करना सभी का अधिकार है। अतः महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने शूद्रों को भी यज्ञ का अधिकार प्रदान करना उनको उन्नत बनने बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। संस्कार विधि मे लिखा कि—

'सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करें·· यदि यजमान न पढ़ा हो तो इतने मन्त्र अवश्य पढ़ लेवें। यदि कोई कार्यकर्ता जड़, मन्दमति, काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो तो वह शूद्र है। अर्थात् शूद्र मन्त्रोच्चारण में असमर्थ हो तो पुरोहित ऋत्विज् मन्त्रोच्चारण करे और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावे।'

## यज्ञ कराने का अधिकार केवल ब्राह्मण को है

यज्ञ करने का अधिकार सबको है, परन्तु यज्ञ कराने का अधिकार सबको नहीं है। केवल वेदज्ञ ब्राह्मण को ही यज्ञ कराने का अधिकार है, अन्यो को नहीं। न जानने वाले से यज्ञ कराने से यज्ञ यथाविधि हो ही नहीं सकता है। संस्कार-विधि के गृहस्थाश्रम प्रकरण मे चारों वर्णों के स्वरूप लक्षण में ब्राह्मण के लक्षण में ही—यजनं याजनं—ये दोनो लिखे हैं। अर्थात् यज्ञ करना और कराना। अन्य वर्णों के लिये यज्ञ कराने का उल्लेख है परन्तु यज्ञ करने का नहीं है। इसी प्रकार यज्ञ कराकर जीविकार्थ दान-दक्षिणा लेने का भी ब्राह्मण के लिए लिखा है अन्यो को नहीं। अतः यज्ञ करने का अधिकार वेदज्ञ ब्राह्मण को है और इसके द्वारा अपनी वृत्ति भी चलाने का अधिकार है। इसी प्रकार महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने उदयपुर महाराणा को भेजे पत्र मे लिखा है कि चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण करके यज्ञ करावे।

यदि अन्य वर्णस्थ जन यज्ञ करावेगें तो यज्ञ की व्यवस्था अवश्य बिगड़ जावेगी और वेद विद्या की बहुत अधिक हानि होगी। अतः वेदज्ञ, धार्मिक विद्वान् ब्राह्मणों से ही यज्ञ कराना चाहिये अन्यों से नहीं।

## यज्ञ कराने का अधिकार गृहस्थ को ही है

यज्ञ जिससे करवाया जाता है या जो यज्ञ करता है वह यजमान संज्ञक है और जो यज्ञ कराते हैं वे ऋत्विज संज्ञक हैं। इन्हीं को पुरोहित, होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा, आचार्य आदि संज्ञायें कार्य विशेष से होती हैं। ये भी सपत्नीक, गृहस्थ होने चाहिये, जैसा कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के निम्न वाक्यों से स्पष्ट है :—

(१) 'उत्तम गृहस्थ, धार्मिक विद्वानों का वरण कर ·····।' (संस्कार विधि)

(२) 'वेदप्रिय, पूजनीय, सर्वोपरि गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है।' ( „ )

(३) 'वेदवित्, धार्मिक होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण ·····।' ( „ )

अतः यज्ञ कराने वाले ऋत्विजों की पात्रता सपत्नीक गृहस्थ विद्वानों को है। अपत्नीक को नहीं तथा गृहस्थ के अतिरिक्त ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ एवं सन्यासियों को भी नहीं है। वेद में इसकी पुष्टि का निम्न प्रमाण उपलब्ध होता है :—

'ये देवानां ऋत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम्। इम यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम्॥

(अथर्व काण्ड ११। सूक्त ५८। म० ६)

इस मन्त्र मे विद्वानों के ऋत्विजों को जो कि यज्ञो को अच्छे प्रकार से कराने मे कुशल हैं उनको यज्ञ मे पत्नी सहित आने के लिये विधान किया है। अर्थात् यज्ञ कराने वाले ऋत्विज भी पत्नी वाले गृहस्थ ही होने चाहिये। अपत्नीक ऋत्विज कर्म कराने के लिये ग्राह्य नहीं है—इसकी पुष्टि इस पूर्वोक्त मन्त्र से होती है।

## ऋत्विजों की अन्य योग्यता

सपत्नीक एवं गृहस्थ होने के अतिरिक्त ऋत्विजों की अन्य क्या

योग्यता होनी चाहिये इस बारे में महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने लिखा है।

(१) 'अच्छे विद्वान्, धार्मिक, जितेन्द्रिय, कर्म करने में कुशल निर्लोभ, परोपकारी, दुर्व्यसनो से रहित, कुलीन, सुशील वैदिक मत वाले · · :'

(२) धर्मात्मा, शास्त्रोक्त विधि को पूर्ण रीति से जानने हारा विद्वान् सधर्मी, कुलीन, निर्व्यसनी, सुशील वेदप्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है।'

(३) ऋत्विज्, होता, अध्वर्यु और ब्रह्मा का वरण करे जो कि धर्मात्मा विद्वान् हो।'

(४) 'सुपात्र, वेदवित्, धार्मिक, होता आदि सपत्नीक ब्राह्मण ।'

(५) उत्तम, गृहस्थ, धार्मिक विद्वानो का वरण · ।'

(६) 'पुरोहितादि सद्धर्मी · ·· ।'

ऋत्विजो के सम्बन्ध मे उपरोक्त वाक्य संस्कार-विधि में महर्षि ने लिखे हैं। अत उपरोक्त लक्षणो से युक्त गृहस्थ को यज्ञ कराने का अधिकार है तथा अविद्वान्, अधार्मिक, पतित आचरण वाले गृहस्थ को यज्ञ कराने का अधिकार नहीं है। क्योकि ऐसे अनधिकारी से यज्ञ कराने से वेद विद्या का नाश तो होगा ही, साथ ही यज्ञ का भी नाश होगा।

## अविद्वान् ऋत्विजो से यज्ञ का नाश

अविद्वान् ऋत्विजों से यज्ञ कराने से यज्ञ का नाश होता है इसकी पुष्टि निम्न वाक्य से होती है :—

'यद्वै यज्ञे अकुशला ऋत्विजो भवन्ति यज्ञस्य विरिष्टिमित्याचक्षते।'
(गोपथ ब्राह्मण)

अर्थात् जब यज्ञ कर्म के न जानने वाले, अयोग्य, अकुशल व्यक्ति ऋत्विज् बनकर यज्ञ कर्म कराते हैं तो उसे यज्ञ का नाश ही कहा जाता है। इसलिये विद्वान् वेदज्ञ, धार्मिक व्यक्तियों से ही यज्ञ कराना चाहिये। क्योंकि :—

'विप्रो यज्ञस्य साधनः' (सामवेद)

यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिये विप्र ही प्रमुख रूप से साधन है। बिना इस विप्र रूपी साधन के यज्ञ हो ही नहीं सकता। विद्वान्, वेदवित्, धार्मिक, कुलीन, ब्रह्मवेत्ता सद्धर्मी ब्राह्मण को ही विप्र कहा जाता है। परन्तु :—

## संन्यासी यज्ञ कराने का अधिकारी नहीं है।

उपरोक्त विप्र लक्षणो से युक्त यदि संन्यासी है तो उसको यज्ञ मे ऋत्विज् बनने का अधिकार नहीं है। जब उसे ऋत्विज् बनने का ही अधिकार नहीं तो उसका वरण भी होता, अध्वर्यु उद्गाता, ब्रह्मा आदि के रूप मे भी नहीं हो सकता है। इसका कारण यही है कि यज्ञ करने एव कराने के अधिकारी के लिये यज्ञोपवीत धारण करना आवश्यक बताया गया है। जैसा कि :—

'ते सर्वे एव यज्ञोपवीतिनो भूत्वा इत्याद्य यजमानश्च ब्रह्मा च पश्चात् परीत पुरस्तादगनीत्।' (शतपथ ब्राह्मण २।५।२।१८)

अर्थात्—ये सब ब्रह्मा, होता अध्वर्यु, उद्गाता, यजमान आदि यज्ञोपवीति होकर यजमान और ब्रह्मा इस प्रकार पश्चिम दिशा को चलते हैं और आग्नीध्र पूर्व दिशा की ओर चलता है। यहाँ सबको यज्ञोपवीति होकर अर्थात् बायें कन्धे पर यज्ञोपवीत धारण करके क्रिया सम्पन्न करने का उल्लेख है। यदि संन्यासी यज्ञ में होता, ब्रह्मा आदि कुछ भी बनेगा तो उसे यज्ञोपवीत धारण करना ही होगा—अन्यथा यज्ञ विधि-हीन तथा निष्फल हो जायगा। यदि संन्यासी यज्ञोपवीत धारण करेगा तो उसके यज्ञोपवीत त्याग की आश्रम मर्यादा का भग और प्रतिज्ञा की हानि होगी तथा यह उसका असत्य व्यवहार भी माना जावेगा। अतः संन्यासियों को यज्ञ वेदि पर बैठाना अयुक्त ही है। इसी प्रकार लाट्यायन श्रौत सूत्र मे लिखा है :—

'सर्वेषा यज्ञोपवीतोदकाचमने नित्ये कर्मोपयताम्।' (१।२।१४)
'सर्वेषां उद्गातृ प्रभृतीनां चतुर्णामपि आर्त्विज्ये उपक्रम वेलायां यज्ञोपवीत मुदकाचमन च नित्य कर्मोपयता कर्म कुर्वताम्।'

अर्थात् यज्ञो मे जो होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मादि रूप से वरण किये गये ऋत्विज् है उनको कार्य के प्रारम्भ मे यज्ञोपवीत धारण, जल का आचमन आदि कार्य करने चाहिये। इसी प्रकार :—

'यज्ञोपवीति एव-याजयेत्'
(एतरेय ब्राह्मण)

यह वचन भी यज्ञोपवीत धारी को ही यज्ञ कराने का अधिकार प्रदान करता है।

सन्यास ग्रहण करने पर तो यज्ञोपवीत का त्याग किया जाता है क्योकि यज्ञोपवीत का सम्बन्ध बाह्य कर्मकाण्ड की अग्नियो से है इन्हीं बाह्य यज्ञाग्नियो को संन्यासी त्यागता है और बाह्य कर्मकाण्ड को भी त्यागता है। अत इन बाह्य यज्ञो का अधिकार प्रदान करने वाले यज्ञोपवीत का भी उसे त्याग करना पड़ता है। ऐसी स्थिति मे यदि वह उन्हीं त्यक्त यज्ञो को करता है तो उसका त्याग हो क्या हुआ और फिर उसका सन्यास भी क्या हुआ? उसकी आश्रम मर्यादा भग हो जाती है तथा उसका सन्यास वेश स्वाग मात्र रह जाता है। यदि उसे यज्ञ कराना ही अभीष्ट है तो वह सन्यास को छोड़कर यज्ञोपवीत एव शिखा को धारण करके सपत्नीक गृहस्थ बनकर अधिकारी बन जावे और यज्ञ मे ब्रह्मादि बनने की अपनी लालसा की तृप्ति कर लें। संन्यासी को तो लोकेषणा एवं वित्तेषणादि के वशीभूत होकर यज्ञादि कर्मों को कराना एवं ब्रह्मादि बनना नितांत अयुक्त है क्योकि वह तो इन एषणाओं का भी त्याग करके संन्यासी बनता है।

ब्रह्मा को यज्ञ मे आहुतियां भी प्रदान करनी होती है। यह कार्य भी सन्यासी की मर्यादा के विपरीत है। यदि आहुति नहीं प्रदान करेगा तो यज्ञ की विधिहीनता और अपूर्णता रहेगी। इस प्रकार दोनो ही स्थितियाँ उसके लिये प्रतिकूल हैं। गोपथ ब्राह्मण मे ब्रह्मा को घृत की आहुति देने के सम्बन्ध मे विधान आता है तथा अन्यत्र भी पूर्णाहुति से पूर्व ब्रह्मा को प्रायश्चित आहुति देने का भी विधान आता है। ऐसी स्थिति में लोकेषणा एवं वित्तेषणाओ के वशीभूत होकर संन्यासियों का यज्ञ मे ब्रह्मादि के रूप मे वरण सर्वथा अयुक्त ही है।

इसके अतिरिक्त संन्यास लेते समय शिखा को भी त्यागना पड़ता है। शिखा रहित व्यक्ति द्वारा किया गया यज्ञ कर्म निष्फल होता है। जैसा कि :–

'विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्'–यह कात्यायन स्मृति का वचन निष्फलता की घोषणा कर रहा है। यदि कोई अपने यज्ञ को नष्ट करना ही चाहता है तो उसे बिना यज्ञोपवीत धारी, बिना शिखा वाले व्यक्तियो से तथा जो आश्रम मर्यादा का उल्लंघन लोकेषणा एव वित्तेषणा के वशीभूत होकर कर रहे हैं ऐसे जो प्रतिज्ञा एव व्रत को भग करने वाले हैं और जो धर्म की मर्यादा उल्लंघन करने वाले सन्यासी हैं उनसे यज्ञ कराना चाहिये। इसमे यदि कोई धर्म समझता है तो वह निःसन्देह धर्म की हानि ही करता है।

काठक गृह्य सूत्र मे लिखा है :-

'निःशिखत्व तु अमंगल धर्मो अरिष्ट हेतुः। तथा च पठन्ति 'अमेध्यमतेत् शिरो अशिखम्'—'यत्रवाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव'-इति निन्दावादः।'

अर्थात् बिना शिखा का यज्ञ में होना अमगल का तथा अनिष्ट का हेतु है। शास्त्रो में बिना शिखा के सिर को अपवित्र, अयज्ञिय कहा है। क्योंकि यजुर्वेद मे–'यत्रबाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव'–यह निन्दा परक वाक्य शिखा रहित शिरों के लिये कहा है। इसी प्रकार शिखा के लिये वेद में प्रशंसापूर्ण शब्द निम्न रूप में कहे गये हैं —

'श्रिये शिखा।' (यजु॰ १९।९२)

अर्थात् शिखा, ऐश्वर्य, श्री, शोभा, लक्ष्मी, आदि के लिये होती है। अतः यज्ञ को मगलमय एव श्रीयुक्त बनाने के लिये शिखा को जिनने त्यागा नहीं है ऐसे ही ऋत्विजों से यज्ञ कराना चाहिये तथा जिनने शिखा का त्याग कर दिया है ऐसे सन्यासी आदमियो से यज्ञ नहीं कराना चाहिये। इत्यादि अनेक हेतुओं एव प्रमाणो से संन्यासियों का ब्रह्मत्व या यज्ञाध्यक्षत्व सर्वथा असिद्ध है और अमंगलजनक होने से त्याज्य ही है। इससे वास्तव में अमगल हुआ भी है।

'नि.शिखत्व तु अमगल धर्म'-की मान्यता भी लोक मे विद्यमान् है। इसलिये विवाहादि कार्यों के अवसर पर सन्यासियो को निमन्त्रित भी नहीं किया जाता है। यदि ऐसे अवसर पर सन्यासी आ जाता है तो अशुभ ही माना जाता है। परन्तु अज्ञान से अब तो सन्यासियो से विवाह सस्कार भी कराते हैं। यह सब परिपाटी शास्त्र मर्यादा के विपरीत ही है।

कुछ लोग कहते है कि वेद मे 'यतीना ब्रह्मा भवति सारथि.'–आता है। इसका अथ वे करते हैं कि ब्रह्मा तो केवल सन्यासी ही होता है, अन्य नहीं होता है।–यदि यही अर्थ मान लें तो महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने तथा सब शास्त्रकारो ने बहुत भारी गलती कर दी है कि उमने गृहस्थ को यह कर्म कराने का अधिकार प्रदान किया है। परन्तु साधारण व्यक्ति भी जान सकता है कि उक्त मन्त्र का यह अर्थ नही है कि सन्यासी ही ब्रह्मा होता है। [illegible] है कि यतियो का [illegible] सन्यासियों का सारथि अर्थात उनको योग मार्ग पर चलाने वाला ब्रह्मा है। ब्रह्म को योग मार्ग से जानने वाला ही दूसरो को योग मार्ग का उपदेश करने वाला एव मार्ग को बताने वाला आध्यात्मिक साधना कराने की योग्यता वाला भी ब्रह्मा पद वाच्य है। वही उन सन्यासियो का ब्रह्मा है। अर्थात् उपासना काण्ड के साधक यति–यत्नशीलो का एव सन्यासियो का ज्ञानोपदेष्टा एव आध्यात्मिक क्रियात्मक अभ्यास मार्ग का जो श्रेष्ठ दर्शक हैं वही उन यतियो का ब्रह्मा है क्योंकि सारथि तुल्य वह उनको ले जाने वाला, पथ प्रदर्शक, नेता तुल्य है। 'यतीनां ब्रह्मा'–का अर्थ यतियो का ब्रह्मा यह होता है न कि यति ही ब्रह्मा होता है यह अर्थ होता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भी यज्ञ करवाये थे। परन्तु उनका जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसमे १-२ ही ऐसे प्रसग आये है जिनमे श्री स्वामी जी का यज्ञ के साथ सम्बन्ध का उल्लेख है। उनमे एक प्रसग यज्ञोपवीत सस्कार का है। वहां पर भी यह नहीं है कि उनके सस्कार का यज्ञ या विधि स्वय ऋत्विज बनकर कराई। यजमान ने उनसे यज्ञोपवीत लेने की इच्छा प्रकट की। उन्होने यज्ञोपवीत देना स्वीकार किया और यज्ञोपवीत विधिपूर्वक यज्ञ द्वारा दिया गया। इसमे सस्कार की विधि तो अन्य विद्वानो से ही सम्पन्न कराई जाकर यज्ञोपवीत श्री स्वामी जी द्वारा दिये जाने से यजमान तो गौरव से यही कह सकता है कि श्री स्वामी जी ने मेरा यज्ञोपवीत किया है। क्योकि स्वामी जी की प्रेरणा से यज्ञोपवीत हुआ और वे स्वय उपस्थित भी थे और उनने उस यजमान को यज्ञोपवीत धारण भी कराया। ऐसी स्थिति मे यज्ञ कार्य के लिये उनका ब्रह्मा होना प्रमाणित नहीं है [illegible] शास्त्र मर्यादा के विरुद्ध [illegible] ब्रह्मा हो भी नहीं सकते थे।

इसी प्रकार श्री स्वामी जी ने गायत्री अनुष्ठान कराया था। उसमे भी उसने बाहर से ही पडितो को बुलवाकर कराया था ऐसा लिखा है। दक्षिणा भी स्वामी जी ने उनको दी थी। वहा पर भी ऐसा नहीं है कि वे यजमान बन कर या ऋत्विज ब्रह्मादि बनकर बैठे थे। श्री स्वामी जी ने उस यज्ञ का व्यय वहन किया था अतः श्री स्वामी जी ने कराया यही लोक मे प्रख्यात हुआ।

सन्यासी अपने व्यय से या द्रव्य सग्रह करके या अन्यो को प्रेरणा देकर यज्ञ करवा सकते हैं लोकोपचार के लिये, परन्तु शास्त्र मर्यादा का उल्लघन करके वे स्वय यजमान, होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा आदि नहीं बन सकते हैं। यदि सन्यासी यज्ञो में ब्रह्मा बन सकता है तो कम से कम सन्यास सस्कार के प्रकरण मे तो वरण मे अवश्य महर्षि स्वामी दयानन्दजी लिख देते कि सन्यासियो का वरण करके सस्कार करावे। परन्तु वहा पर भी स्पष्ट शब्दो मे यज्ञ कार्य के लिये गृहस्थ का ही वरण करने को लिखा है। अत स्पष्ट सिद्ध है कि महर्षि कहीं भी यज्ञ मे ब्रह्मा आदि नहीं बने थे और न यह वेद शास्त्रानुकुल ही है।

इसी प्रकार उदयपुर महाराणा को एक पत्र लिखते हुये श्री स्वामी जी ने लिखा 'आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिये एक वर्ष में दश हजार रुपये के घृतादि से जिस रीति से होम हुआ था उसी रीति से प्रति वर्ष होम कराइये, परन्तु उनमे से ५ हजार रुपयो के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही मे कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेके विजय दशमी तक चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण कराकर एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रखकर होम कराइयेगा।' यदि सन्यासी से ही यज्ञ कराना अभीष्ट होता या सन्यासी को यज्ञ कराने का अधिकार होता तो चारो वेदों के ब्राह्मणो का वरण करने के स्थान पर उत्तम, त्यागी सन्यासियो का वरण करके या उसके अधिष्ठातृत्व मे यज्ञ कराने के लिये लिखते अथवा वे यह यह भी लिख देते कि मैं आकर के यह यज्ञ सम्पन्न करा दूंगा या मेरे निरीक्षण मे होगा। परन्तु कोई भी ऐसा लेख स्वय महर्षि का नहीं है जो संन्यासियो को ब्रह्मादि बनाने का पोषक हो। अत जीवन चरित्र मे कुछ भी यज्ञोपवीत या गायत्री अनुष्ठान की बात आती है वह भी पूर्वोक्त रीति से स्पष्ट हो जाती है।

# देवनागरी में तार : कम शब्दों में अधिक बात

श्रीजगतपति शरण निगम

पहले सभी तार अंग्रेजी में भेजे जाते थे। अब अनेक वर्षों से तारघरों मे हिन्दी तारो की व्यवस्था कर दी गई है। देवनागरी लिपि मे न केवल हिन्दी मे वरन् किसी भी भारतीय भाषा के तार भेजे जा सकते हैं। तार भेजने वाले सभी व्यक्ति यह चाहते हैं कि वे अपना सन्देश इस प्रकार लिखें कि कम से कम शब्दो मे अधिक से अधिक बात आ जाए। इस से उन्हें कम दाम देने पड़ेंगे। इस की सबसे अच्छी तरकीब देव नागरी में तार भेजना है। अभी इस बात का कम ही प्रचार हो पाया है कि देवनागरी में लिखे तार अंग्रेजी तारों की अपेक्षा सस्ते पड़ते हैं और भारत की किसी भाषा के तार देवनागरी में भेजे जा सकते हैं।

अब देश के अधिकांश तारघरों में देवनागरी लिपि के तार भेजने की व्यवस्था है। रेलवे तथा डाक-तार विभाग के कर्मचारियों को देवनागरी तारों के प्रेषण का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। उनका प्रशिक्षण तभी सार्थक होगा और देवनागरी तार सेवा का विकास तभी होगा जबकि विभिन्न तारघरो मे पर्याप्त मात्रा मे तार देवनागरी मे ही भेजे जाएं।

देवनागरी तारो की संख्या अभी उस सीमा तक नहीं पहुची है जितनी अपेक्षित है, कारण यह कि अभी लोगो को इन के बारे मे कम जानकारी है। देवनागरी का प्रचलन तभी बढ़ेगा जब तार भेजने वालों को इन के द्वारा प्राप्त होने वाली सुविधाओ की पूरी पूरी जानकारी हो। इस के लिए प्रचार की आवश्यकता है। यह कार्य स्वय सरकार द्वारा तो किया ही जा रहा है। कुछ स्वयसेवी हिन्दी संस्थाएं भी देवनागरी तारों के प्रचार का कार्य जोरशोर से कर रही हैं।

तार की भाषा संक्षिप्त होनी चाहिए। उस मे पत्र की तरह सभी बातें विस्तार से नहीं लिखी जा सकती हैं। जो बात बहुत आवश्यक है उसे कम से कम शब्दों मे इस ढग से लिखा जाए कि उसका आशय तार पाने वाले व्यक्ति को सरलता से ठीक प्रकार समझ मेआ जाए। अतएव तार लिखना एक कला है जो थोड़े से अभ्यास से आ जाती है। हिन्दी या देवनागरी तारों की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इस में दूसरे व्यक्ति की सहायता नहीं लेनी पड़ती है,जब कि अंग्रेजी तारो को दूसरो से लिखवाना पड़ता और पढ़वाना पड़ता है। हिन्दी के तार लोग आसानी से स्वय लिख सकते हैं, तथा पढ़ सकते हैं।

हिन्दी या देवनागरी लिपि में लिखे तारों के शब्द गिनने के कुछ विशेष नियम हैं। यदि उन नियमो को ध्यान मे रखते हुए तार सन्देश लिखा जाए तो उससे तार प्रभार मे बहुत बचत होती है। हिन्दी मे जहां एक शब्द से काम चल जाता है वहाँ अंग्रेजी मे तिगुने शब्द लिखने होते हैं जैसे रात दिन (डे एण्ड नाईट), परसो (डे आफ्टर टुमारो), समाप्त (आउट आफ स्टाक), सेवा काल (लेथ आफ सर्विस), वेतनमान (स्केल आफ पे), प्रश्नोत्तर (क्योश्चन एण्ड आन्सर), सप्ताहबाद (आफ्टर ए वीक), बारबार (अगेन एण्ड अगेन), वर्ण क्रम से (इन अल्फावेटिकल आर्डर), निदेशक मडल (बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स), मालगाडी से (बाई गुड्स ट्रेन), रजिस्ट्री से (बाई रजिस्टर्ड पोस्ट), विधिवत (थ्रू प्रापर चैनेल), सुविधानुसार (एकार्डिंग टू कनवीनियन्स), मतभेद (डिफरेंस आफ ओपीनियन)।

इसी प्रकार अंग्रेजी में चार शब्दों के स्थान पर हिन्दी में एक ही शब्द पर्याप्त है। इस प्रकार तीन शब्दों के प्रभार की बचत होती है, जैसे ··वस्तुतः (ऐज ए मैटर आफ फैक्ट), यथाशीघ्र (ऐज एलीएज पासिबिल), के मतानुसार (ऐज पर ओपीनियन आफ), कर्तव्यपालन मे (इन डिस्चार्ज आफ ड्यूटीज), सदन नेता (लीडर आफ दि हाउस), लाभहानि लेखा (प्राफिट एण्ड लास एकाउन्ट), लघुरीति से (बाईशार्ट कट मेथड), डाक प्रमाणित (अन्डर सार्टीफिकेट आफ पोस्टिंग)।

अन्य कुछ उदाहरण भी हैं जिन मे हिन्दी के एक शब्द के लिए अंग्रेजी मे ५ तक शब्द लिखने पड़ते हैं। इस प्रकार चार शब्दो का प्रभार व्यर्थ जाता है, जैसे····· चर्चामध्य (ड्यूरिंग दि कोर्स आफ डिस्कशन), प्रत्यक्षत. (आन दि फेस आफ इट), आसकूँगा (विल बी एबिल टुकम), इत्यादि।

## देवनागरी तारो के सामान्य नियमः

(क) दस अक्षरो तक के शब्द पर एक शब्द का तार प्रभार लगता है। यदि एक शब्द मे दस से अधिक अक्षर हो तो दस अक्षरो का एक और जो अक्षर बाकी बच रहे उनका भी एक शब्द माना जाएगा।

(ख) मात्राओ का अलग नहीं गिना जाता है। जैसे 'ज = जो एक ही अक्षर माना जाएगा।

(ग) अधिक से अधिक दस अक्षरो वाले सम्पूर्ण क्रिया वाचक/वाक्याश को भी तार प्रभार के लिए एक ही शब्द गिना जाता है। जैसे 'आरहा हूँ', 'मगादिया गया', 'पहुँचादिया जाएगा', इनका एक ही शब्द माना जाएगा। अंग्रेजी तार के हिसाब मे 'हैज बीन सेंट' तीन शब्द माने जाएगे जबकि भेजा दिया गया है एक ही शब्द गिना जाएगा।

(घ) विभक्तियों के चिन्हों अथवा सबंध सूचक शब्दों, जैसे·· ने, को, के, लिये, का, की, के, में, पर आदि को पहले शब्द के साथ मिलाकर लिखना चाहिए। जैसे मोहनको, दिल्लीमें, रामके लिए स्टेशनपर, आदि। विभक्ति मिला हुआ शब्द एक शब्द ही गिना जाता है।

(ङ) समासयुक्त शब्द भी एक ही गिना जाता है। जैसे उत्तराभिलाशी, पराधीन, संतोषजनक, अत्यावश्यक आदि एक ही शब्द माने जाते हैं।

(च) संयुक्त व्यंजनों में प्रत्येक अक्षर को तार प्रभार के लिए अलग अलग गिना जायगा, जैसे क्न, म्य, क्ष, त्र, ज्ञ, र्ग आदि के दो अक्षर तथा स्य तीन अक्षर माने जाएँगे।

(छ) यदि बीच में स्थान न छोड़ा गया हो और दस से अधिक अक्षर न हों तो प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानसम्पादक, आदि एक ही शब्द गिने जाएँगे।

इसके साथ-साथ निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखना भी आवश्यक है :—

१. व्यापारिक चिन्ह या संख्या मे गिनने के लिए पांच अंको या चिन्हो तक के 'समूह' को एक शब्द गिना जाता है।

२ जिस स्थान को तार भेजा जा रहा है उसके नाम को एक शब्द माना जाता है परन्तु उसे उस रूप में लिखना चाहिए जैसे तार निर्देशिका में नामों की सूची में लिखा गया है। उदाहरण के लिए-विक्टोरियागार्डन बम्बई को एक शब्द गिना जाएगा।

३. शब्दों के प्रारम्भिक अक्षरों में से प्रत्येक को एक शब्द

माना जाता है, जैसे यदि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के लिए के० लो० नि० वि० लिखा जाए तो ४ शब्द माने जाएंगे, किन्तु इसे यदि 'केलोनिवि' लिखा जाए तो केवल एक शब्द गिना जाएगा।

४ प्रत्येक विराम चिन्ह और कोष्टकों को भी एक शब्द माना जाता है। दो शब्दों के बीच यदि वक्र रेखा का प्रयोग हुआ हो तो उसको भी एक शब्द माना जाएगा। जैसे, 'मई/जून' को तीन शब्द गिना जाएगा।

## तार सन्देश लिखनेकी विधि:

बहुत लोगों की यह धारणा है कि हिन्दी में जो बात लिखी जाती है वह अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक स्थान लेती है, अथवा उतना ही बात के लिये अधिक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। यह भ्रम बिल्कुल निराधार है। ऐसी बात केवल वे ही कहते हैं जिन्हे बिल्कुल अभ्यास नहीं है अथवा लिखने का तरीका नहीं जानते हैं। यदि थोड़ा ध्यान से लिखा जाए तो अपने भावों को थोड़े ही शब्दों में सरलता से व्यक्त किया जा सकता है। ऊपर दिये गये उदाहरणों से यह बात स्वयं सिद्ध है। जहां तक तारों का सम्बन्ध है, हिन्दी में लिखे गये सन्देश अंग्रेजी की अपेक्षा निश्चय ही कम शब्दों के होंगे, क्योंकि हिन्दी तारों को लिखने की विशेष विधि है तथा शब्दों को गिनने के नियम भी अलग है। समासयुक्त शब्दों का प्रयोग करने और विभक्ति को साथ मिलाकर लिखने से शब्दों की और बचत हो सकती है। ऊपर जो कुछ नमूनों दिये गये हैं, उनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यदि उन तारों को अंग्रेजी मे भेजा जाय तो दो से लेकर पांच छः शब्दों तक का अधिक प्रभार देना पड़ेगा, परन्तु उन्हीं को यदि ठीक ढंग से हिन्दी में लिखा जाये तो एक शब्द या दो शब्द मात्र का प्रभार पड़ेगा। इस प्रकार तार भेजने के व्यय मे बहुत बचत की जा सकती है। कुछ व्यक्तियों अथवा व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिये जिन्हे रोज अनेक तार भेजने पड़ते है, हिन्दी मे तार भेजना विशेष लाभप्रद है।

तार पर पता इस ढंग से लिखा जाना चाहिए ताकि तार सुविधा से पहुच जाए और कम से कम शब्दों का प्रयोग करना पड़े। बडे बड़े नगरों में पूरे पते के अभाव मे डाक कर्मचारियो को कठिनाई हो सकती है अतः वहां सडकों का नाम तथा मकान नम्बर अवश्य देना चाहिए। और यदि तार पाने वाले के यहां टेलीफून है तो उस का क्रमांक दे देने से जब तार गन्तव्य स्थान पर पहुचेगा तो वहा का तार घर सम्बन्धित व्यक्ति को टेलीफोन पर तार सदेश पढ़कर सुना देगा। टेलीफोन के लिए टी० एफ० लिखा है तथा आगे उस का नम्बर……दोनो मिलाकर एक शब्द माना जाता है चाहे उस मे कितने ही अकादि क्यों न हो। उदाहरण के लिए… ' रामेन्द्र कुमार वाजपेयी टी० एफ० ७९३१६।

तार पाने वाले का पता संक्षिप्त रूप से भी लिखा जा सकता है। परन्तु यह तभी सभव है जब तार का पता तार घर में नियमानुसार शुल्क देकर पजीकृत करा लिया गया हो। जसे 'केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद' के लिए 'हिन्दी परिषद' 'रेल सेवा आयोग' के लिए रेल सेवा योग, 'हिमाचल प्रदेश विधान सभा सचिवालय' के 'हिमसभा' इत्यादि। सरकारी कार्यालयों के अतिरिक्त इस प्रकार के संक्षिप्त पतो का पजीकरण व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा भी कराया जा सकता है जैसे · · 'शुद्ध मधु भण्डार' के लिए 'शुद्ध मधु', राजेश पुस्तक मन्दिर' के लिए 'पुस्तक मदिर' इत्यादि। तार के पते मे नाम बहुत सावधानी से लिखा जाना चाहिए। जैसे · · 'राम प्रसाद शर्मा कानपुर' यदि पते में लिखा जाएगा तो चार शब्द होंगे किन्तु वहीं यदि इस प्रकार लिखा जाए 'रामप्रसादशर्मा कानपुर' तो दो शब्द गिने जाएंगे।

अंग्रेजी के कुछ क्रियावाचक शब्द ऐसे होते हैं जिन के हिन्दी पर्याय दो शब्दों मे आते हैं परन्तु उनको यदि मिलाकर लिखा जाए तो तार के लिए एक ही शब्द माना जाता है, जैसेः 'एक्सपीडाइट' के लिए जल्दी करो तार मे 'जल्दीकरो', 'वायर' के लिए तार में 'तारदो', 'एरैंज' के लिए प्रबन्ध करो तार मे प्रबन्धकरो' इत्यादि।

हिन्दी तारो में क्रिया का रूप थोड़ा सा बदल कर उन्हें आदर सूचक बनाया जा सकता है जबकि अग्रेजी मे प्लीज, काईन्डली जैसे शब्दो का अलग से लगाना पड़ता है। इस प्रकार एक शब्द की बचत होती है। जैसे 'प्लीज सेंड' के लिए 'भेजिए' अथवा 'भेजदीजिए' लिखना पर्याप्त है। इसी प्रकार 'प्लीज अरेंज टु सेंड' के लिए एक शब्द 'भेजदीजिये' उस आशय को पूरी तौर से स्पष्ट कर देता है। इस तरह हिन्दी मे शब्दो की बचत होती है

समासो और सधि का उचित प्रयोग करके भी हिन्दी तारो मे शब्द की बचत की जा सकती है, जैसे 'रात और दिन' के लिए 'रातदिन', वर और वधु' के लिए 'वरवधू' 'सुविधा के अनुसार' के लिए 'सुविधानुसार' 'खेद के साथ', के लिए 'सखेद' बिना देर लगाये' के लिए 'अविलम्ब' इत्यादि।

अंग्रेजी तारो मे लम्बा सदेश लिखते हुए विराम चिन्ह लगाना आवश्यक हो जाता है अन्यथा उस का अर्थ ठीक समझ मे नहीं आएगा। इस के विपरीत यह देखा गया है कि हिन्दी संदेशो को यदि हिन्दी मे लिखा जाए तो विराम चिन्ह न लगाने पर भी अर्थ समझने मे कोई कठिनाई नहीं है। तार सदेशो के अत मे भी विराम चिन्ह लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

देवनागरी तारों को लोक प्रिय बनाने के लिये हमारा प्रयास होना चाहिए कि सभी तार चाहे सरकारी हों या निजी देवनागरी मे भेजें क्योंकि ये सस्ते, सरल एवं सुबोध होते हैं।

## अन्न प्राशन संस्कार

'प्रोफेसर सदाविजय आर्य दयानन्द कालेज अजमेर के आयुष्मान पुत्र आशीष का अन्नप्राशन संस्कार वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। प्रोफेसर महोदय के श्वसुर श्री प० मदन मोहन विद्यासागर ने उक्त संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार की वैज्ञानिक समीक्षा करते हुये, सम्पन्न कराया। पंडित जी हैदराबाद के निवासी तथा आर्यजगत् के कर्मठ नेता है। इस अवसर पर नगर के सम्भ्रान्त व्यक्ति भारी संख्या मे उपस्थित थे। कालेज के आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री व श्री रामचन्द्र आर्य मुसाफिर ने बालक को आशीर्वाद दिया।'

—बुद्धिप्रकाश आर्य
अध्यापक, दयानन्द कालेज अजमेर

# सूचनाएँ शिक्षा विभाग सम्बन्धी

[१] प्रदेशीय विद्यार्य सभा के तत्वावधान में धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर २८ अगस्त से २ सितम्बर १९६९ तक आर्य समाज लखीमपुर ने लगाया। इस शिविर में निम्न लिखित तीन विद्यालयों की अध्यापिकाओं ने प्रशिक्षण लिया।

[१] भगवान् आर्य कन्या डिग्री कालिज लखीमपुर की ६

[२] आर्य महिला विद्यालय शाहपुर की दो

[३] श्री दयानन्द रामेश्वर प्रसाद हुँमरानी आर्य कन्या इण्टर कालिज सीतापुर की दो।

इस शिविर में श्री महेन्द्र प्रताप एम ए. निरीक्षक आर्य विद्यालय, श्री श्यामसुन्दर शास्त्री उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० व श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा जि० लखीमपुर खीरी ने प्रशिक्षण दिया।

इस प्रशिक्षण शिविर का निरीक्षण श्री रामबहादुर जी मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा ने ३१-८-६९ को किया, और उस की प्रबन्ध व्यवस्था से बहुत सन्तुष्ट हुये। तथा प्रशिक्षणार्थियो के समक्ष पंच महायज्ञ, १६ संस्कार तथा धर्मशिक्षा की आवश्यकता व महत्त्व पर व्याख्यान दिया।

इस शिविर के तारतम्य मे 'वैदिक संस्कृति में समानता' के विषय पैर वाद-विवाद प्रतियोगिता हुयी, जिसमे सीतापुर, शाहजहाँपुर, लखीमपुर के आर्य विद्यालयो की छात्राएँ सम्मिलित हुयी। जिसमें श्री दयानन्द रामेश्वर प्रसाद हुमरानी आर्य कन्या इन्टर कालेज सीतापुर की छात्रा व संस्था सर्व प्रथम रही।

इस शिविर तथा प्रतियोगिता मे सम्मिलित होने वाली छात्राओं व अध्यापिकाओं तथा अन्य आगन्तुक महानुभावो के आवास, जलपान, व भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्य समाज लखीमपुर ने की।

प्रदेशीय विद्यार्यसभा उ० प्र० की ओर से आर्य समाज लखीमपुर के पदाधिकारीगण, प्रशिक्षणार्थियो, छात्राओं तथा प्रशिक्षण देने वाले महानुभावो सभी को बहुत बहुत धन्यवाद है।

इस सभा की ओर से प्रशिक्षणार्थियो को प्रमाणपत्र तथा आर्यसमाज लखीमपुर की ओर से प्रतियोगिता मे सम्मिलित होने वाली छात्राओं को पारितोषिक दिये गये।

(२) प्रदेशीय विद्यार्यसभा की ओर से होने वाली धर्म शिक्षा परीक्षाएँ आगामी फरवरी मास के अन्त मे होगी। उन परीक्षाओं मे प्रवेशार्थियो के लिए प्रवेश फार्म इस कार्यालय से मास दिसम्बर सन् १९६९ ई० मे मगाये जावे।

(अ) धर्म प्रवेशिका मे कक्षा ७ की छात्र छात्राएं सम्मिलित होगी।

(ब) धर्म भूषण परीक्षा मे कक्षा ९ की छात्र-छात्राएँ सम्मिलित होंगी।

(स) धर्माधिकारी परीक्षा मे कक्षा ११ की छात्र-छात्राएं सम्मिलित होंगे।

समस्त आर्य विद्यालय इन परीक्षाओ मे अवश्य अनिवार्य रूप से प्रत्येक छात्र-छात्राओ को सम्मिलित करायें।

आर्य विद्यालय बिना धर्म शिक्षा की पढाई के, बिना जल के कुंआ, बिना सुगन्धी के पुष्प, तथा बिना आत्मा के शरीर के समान हैं।

रामबहादुर, एडवोकेट
मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०
स्थान—पूरनपुर (पीलीभीत)

## अजमेर में ऋषि मेला

परोपकारिणी सभा के तत्वाधान में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के ८६ वें निर्वाण दिवस पर इस वर्ष ऋषि मेला दिनांक १० नवम्बर से १६ नवम्बर तक ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर मे समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। उस समय यजुर्वेद पारायण यज्ञ कवि सम्मेलन वाद-वाद प्रतियोगिता, ईसाई निरोध सम्मेलन तथा शोभा यात्रा का कार्य क्रम रखा गया है।

—श्रीकरण शारदा मंत्री

—२८ सितम्बर को आर्य समाज पूना में केरल के श्री जोसेफ ने ईसाईमत त्यागकर वैदिक धर्म विधिवत् ग्रहण किया। आप का नाम सत्यानन्द रखा गया।

—मंत्री

—९ अक्तूबर को आर्य समाज रेल बाजार कानपुर ने गुरु विरजानद की निर्वाण शताब्दी मनायी।

—मंत्री

—९ अक्तूबर को आर्य समाज मुजफ्फर पुर ने विरजानन्द निर्वाण शताब्दी मनायी। मंत्री

—११-१२ अक्टूबर को जानी खुर्द (मेरठ) मे श्री आशानन्द जी भजनीक ने मैजिक लालटेन द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया।

—मन्त्री

—८ सितम्बर को पार्वती विद्यालय बदायूँ मे संस्कृत दिवस समारोह से मनाया गया।

—प्रधानाचार्या

—आर्य समाज नामनेर (आगरा) का वार्षिकोत्सव ५ अक्टूबर से ७ अक्टूबर तक बड़े समारोह से मनाया गया।

—विजयकुमार मागलिक, मन्त्री

—१२ अक्टूबर को उन्नाव के जिलाधीश श्री मनबोधनलाल जी गुरुकुल हैदराबाद (उन्नाव) पधारे। आपने गुरुकुल की व्यवस्था देखकर प्रसन्नता प्रकट की। और १०००) रु० गुरुकुल को देने का वचन दिया।

—श्रीराम बाजपेयी, उपमन्त्री

—आर्य समाज लल्लापुर (वाराणसी) ने श्री पंडित सत्यव्रत जी वेदालंकार की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। —मन्त्री

—आर्य समाज कुदरकी के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र भूषण जी के छोटे भाई श्री नरेन्द्र भूषण की पत्नी का देहान्त हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया। कोषाध्यक्ष जी ने १०१) स्थानीय आर्य समाज को दान में दिया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। मन्त्री

## आर्य समाज कोटला

९ अक्टूबर को आर्यसमाज कोटला (आगरा) मे स्वामी विरजानन्द जी दण्डी की निर्वाण शताब्दी श्री प० हरनारायण जी शर्मा वैद्य प्रधान की अध्यक्षता में समारोह से मनायी गयी। श्री मा० कवर्नसिंह जी, प्रधान जी और श्री रवीन्द्र गुप्त जी मन्त्री ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। —रवीन्द्र बाबू मन्त्री

## आवश्यक सूचना

जो आर्यसमाजें अपने वार्षिक उत्सव या किसी अन्य उत्सव पर नई तरजो राग रागनियो में वेद प्रचार करवाना चाहते हैं तो इस पते पर पत्र-व्यवहार करें—

संगीत प्रोफेसर सूरजप्रकाश आर्य
भजनोपदेशक
एन ५ कृष्णनगर, हरिद्वार

## अध्यात्म-सुधा
( पृष्ठ २ का शेष )

धातु 'षू' के सूचक है । 'सविता' का अर्थ है 'प्रसविता' अर्थात् प्रेरक । मोनियर विलियम्स ने अपने बृहद् संस्कृत कोष मे 'सव' का अर्थ दिया है "One who sets in motion, impels, an instigator, a stimulator" सविता का अर्थ दिया है— a stimulator, rouser, vivifier, हमने यह अंग्रेजी अर्थ इसलिये दिये है कि साधारण हिन्दी भाषा मे हम सब प्रसव, सविता, प्रसविता के मुख्य धात्वर्थ की उपेक्षा कर जाते हैं । ऋग्वेद के पाचवें मण्डल के ८२ वें सूक्त मे ९ मन्त्र हैं । उन सबको देवता 'सविता' है । और हर मन्त्र मे सविता के साथ 'षू' धातु के किसी न किसी रूप का प्रयोग हुआ है । इससे ज्ञात होता है कि 'सविता' और उसके सम्बन्धी 'परासुव' और 'आसुव' विशेष अर्थो के सूचक हैं ।

परमात्मा के जितने नाम वेदों में अथवा अन्यत्र गिनाये गये हैं उन सबका सम्बन्ध प्राणिवर्ग से है । 'नाम' होता ही इसलिये है कि नाम लेने वाला 'नामी' के साथ अपना सम्बन्ध निर्धारित कर सके । जिसका किसी के साथ सम्बन्ध नहीं उसके नाम वा सज्ञा की आवश्यकता नहीं । संज्ञायते अनया' 'सजानते अनया वा' सा 'सज्ञा' जिसके द्वारा ज्ञान हो सके वह सज्ञा है । ज्ञान के लिए ज्ञाता या चेतन जीव की आवश्यकता है । जीव और ईश्वर के सम्बन्ध अनन्त हैं । महाभाष्य मे मुनिवर पतञ्जलि ने लिखा है 'एकशत षष्ठ्यर्था.' (१।१।४८) अर्थात् सम्बन्ध तो सैकड़ो होते है । विशेष अवस्था मे विशेष सम्बन्ध को बताने की आवश्यकता होती हे । परमात्मा 'सविता', 'प्रसविता' या प्रेरक है, इसका क्या अर्थ है ?

सकुचित अर्थ मे 'सविता' सूर्य को भी कहते हैं । सूर्य भी प्रसविता या प्रेरक है । रात के व्यतीत होने पर सूर्य की किरणें जब वस्तुओं पर पड़ी हैं तो हर पदार्थ के भीतर एक प्रकार की प्रेरणा या जागृति उत्पन्न हो जाती है । सूर्य किसी नई चीज का उत्पादन नहीं करता । पदार्थों मे जो शक्तियां निहित थीं वही जाग उठती हैं, नया जीवन आ जाता है । अंग्रेजी के शब्द stimulator या vivifier आन्तरिक भावो को ठीक-ठीक व्यक्त करते हैं । कोई मनुष्य प्रात काल अपने जीवन मे सूर्य के प्रकाश से आई हुई इस जागृति का अनुभव कर सकता है । अन्य प्राणधारी, या वनस्पति आदि जड़पदार्थ भी इस बात के द्योतक हैं । सूर्य की किरणें यदि गुलाब पर न पड़ती तो गुलाब न खिलता । सूर्य की किरणे गुलाब नहीं हैं, सूर्य का और गुलाब का कारण-कार्य का सम्बन्ध नहीं । सूर्य से गुलाब नहीं बना । न गुलाब बिगड़ कर सूर्य मे विलीन हो जायगा । परन्तु गुलाब की आन्तरिक बीज-रूप अविकसित शक्तियों को विकास करने को उद्यत करने में सूर्य की किरणें प्रेरक हैं । उनके द्वारा भीतर से कुछ ऐसा परिवर्तन होता है कि गुलाब के समस्त अन्तर्निहित गुण अव्यक्त से व्यक्त हो जाते हैं । दूसरा दृष्टान्त आप विद्युत् का ले सकते हैं । विद्युत्-तरग को भी सविता या प्रेरक कह सकते हैं । एक ही विद्युत्-कोष से भिन्न भिन्न यन्त्रो का सम्बन्ध होता है । तरग खुलते ही भिन्न-भिन्न यन्त्रो को प्रेरणा मिलती है । वह प्रगतिशील हो जाते हैं । आटे की चक्की आटा पीसने लगती है । लकड़ी काटने की मशीन लकड़ी काटने लगती है । छापेखाने की मशीन छापने लगती है । मशीनें अलग-अलग हैं परन्तु प्रेरणा सबको उसी विद्युत् तरग से मिलती है ।

इन लौकिक उदाहरणो की आन्तरिक भावनाओ पर विचार कीजिये और फिर उनको इस मन्त्र में प्रयुक्त 'सविता' शब्द पर घटाइये ।

परमात्मा किसी प्राणी को बलात् आज्ञा नहीं देता कि तुम ऐसा करो । तुम ऐसा मत करो । प्राय धार्मिक क्षेत्रो मे ऐसी धारणा है कि ईश्वर जो चाहता है प्राणियों से कराता है । परमात्मा जिसको चाहता है ठीक मार्ग पर लगाता है, जिसको चाहता है गुमराह कर देता है । यदि ईश्वर इसी प्रकार अपनी आज्ञाओ को बलात् जीवों पर थोपता तो जीवो की प्रार्थना व्यर्थ जाती । किसका सामर्थ्य था कि वह ईश्वर के आदेशों को टाल सके । किसी ने कहा है कि.—

> जाको प्रभु दारुण दुःख देहीं ।
> वाकी मति पहले हरि लेहीं ।

कुरान मे बार-बार दुहराया गया है कि अल्लाह जिसको चाहता है ठीक मार्ग पर लगाता है और जिसको चाहता है गुमराह करता है । यदि परमात्मा की इच्छा ही है कि ससार मे दुरित रहे तो दुरितों के दूर करने और उनके स्थान में 'भद्र' प्राप्त कराने का प्रश्न ही नहीं उठता । परन्तु परमात्मा के लिए इस प्रकार की भावना वैदिक भावना नहीं है । परमात्मा न किसी जीव को बनाता है, न उसको किसी विशेष कार्य के लिए मजबूर करता है । सूर्य की किरणें जब मिर्च के बीज पर पड़ती हैं और साथ ही साथ उसके पास ही बोये हुए गाजर के बीज पर पड़ती हैं तो उनको प्रेरणा तो दोनो के लिए होती है । परन्तु मिर्च का बीज मिर्च चरपरा है और गाजर का गाजर । एक मे कड़वापन, दूसरे मे मीठापन ! किरणे न कड़वापन उत्पन्न करती हैं न मीठापन ! प्रेरणा उनको मिलती है ।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें पदार्थों को जागृति देती है उसी प्रकार आस्तिक्य की भावना भी प्रत्येक प्राणी के भीतर जागृति उत्पन्न कर देती है । वही स्फूर्ति 'दुरितो के निराकरण के लिए शक्ति प्रदान करती है । रोग के कीटाणु स्वस्थ शरीर पर भी आक्रमण करते हैं और रुग्ण शरीर पर भी । परन्तु स्वस्थ शरीर स्वस्थता की सहायता से आक्रमण करने वाले कीटाणुओ को नष्ट कर देता है, जैसे पत्थर पर पड़ी हुई जलती हुई दियासलाई । दियासलाई बुझ जाती है, पत्थर ज्यों का त्यों रह जाता है । वही दियासलाई फूँस के ढेर पर पड़कर भड़क उठती है । एक अस्वस्थ शरीर विशूचिका के कीटाणु को लेकर न केवल स्वयं ही मृत्यु का ग्रास बनता है अपितु अन्य शरीरों को भी अपने साथ नष्ट कर देता है । आस्तिक मनुष्य और आस्तिक्यहीन मनुष्य के आत्मा में यही भेद है । दुरित तो अपने आक्रमण सभी पर करते हैं, परन्तु जो प्रार्थी दुरितों की प्रकृति को समझता हुआ परमात्मा की प्रेरणा से अपने को सुसज्जित पाता है उसके दुरित शीघ्र पराजित हो जाते हैं । सबल होते हुए भी प्रभाव शून्य हो जाते हैं । उनकी प्रगति कुंठित हो जाती है ।

जो मनुष्य परमात्मा के सवितृ-भाव को न समझकर परमात्मा से वस्तुविशेष की मांग करते हैं उनकी प्रार्थना निष्फल जाती है । परमात्मा मुफ्त मे किसी को सदावर्त या खैरात नहीं बांटता । प्रायः धनाढ्य लोग खैरात में बहुत से भिखारियो को मुफ्त भोजन देते हैं । इससे दानियों को ख्याति तो प्राप्त हो जाती है, भिखारियों के सामर्थ्य मे कोई भेद नहीं पड़ता । यदि वह धनाढ्य खैरात न बांटकर केवल प्रेरणा करे तो वही भिखारी थोड़े दिनो मे अपने पैरों पर खड़े हो सकते है और दूसरो को प्रेरणा करने के योग्य बन सकते हैं । वैदिक विधि से 'सविता' के प्रेरकत्व को समझता हुआ 'प्रार्थी' भिखारी नहीं है । वह मुफ्त कोई चीज नहीं मांगता । वह ईश्वर के प्रेरकत्व पर विश्वास करके दुरितों को दूर करने का सामर्थ्य चाहता है । दुरितो का दूर करना ही भद्र की प्राप्ति है । रोग का पराभव ही शक्ति का सचार है । ज्यों ज्यों पाप की भावना कम होती है कल्याण की भावना उत्पन्न हो जाती है ।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पञ्जीकरण सं० एल.–६०
कार्तिक ४ शक १८९१ कार्तिक कृ० १
[ दिनांक २६ अक्टूबर सन् १९६९ ]

# 'आर्य-मित्र'

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष: २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

**'परिवार नियोजन–राष्ट्रीय संकट'**–संग्रहकर्ता श्री छगनलाल कश्यप, पुस्तक प्राप्ति स्थान–भारत आयुर्वेद गृह उद्योग सदन आनासागर कृष्णगंज अजमेर मूल्य ३० पैसे।

आज हमारे देश में परिवार नियोजन का सर्वत्र शोर सुनाई पड़ता है। अमरीकी सहायता से प्राप्त धन का उपयोग लोगो को पुंसत्वहीन बनाने में किया जा रहा है। देश की जनशक्ति का ह्रास करने का यह एक नियोजित षडयंत्र है और खेद है कि सरकार के द्वारा ही इसका प्रचार किया जाता है। यह सत्य है कि आर्थिक स्थिति का सुधार तभी संभव है जबकि परिवार के सदस्यो की सख्या मर्यादित हो, परन्तु संतान का कम उत्पन्न होना कृत्रिम उपायो को काम मे लाने पर उतना निर्भर नहीं है जितना आत्म सयम से। बात बात मे महात्मा गांधी की दुहाई देने वाले लोग यह भूल जाते है कि गाधीजी परिवार नियोजन के लिये कृत्रिम उपायो को काम में लाने के घोर विरोधी थे।

परन्तु समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। यह परिवार नियोजन का विचार आज भारत के हिन्दुओं में ही अधिक व्यापक हो रहा है। मुसलमान और कैथोलिक ईसाई उसे अपनी धार्मिक मान्यताओ के विरोध मे होने के कारण स्वीकार नहीं करते। ऐसी दशा मे यह सोचना पड़ेगा कि यदि परिवार नियोजन के कार्यक्रम को एकांगी रूप से केवल हिन्दुओ ने स्वीकर किया तो इससे उनका अल्पमत मे हो जाना सुनिश्चित है। हिंदुओं को तो कानूनन एक पत्नीव्रतीहोने के लिए बाध्य किया जाता है जबकि मुस्लिम सामाजिक विधान में सशोधन करने मे सरकार को हिचकिचाहट होती है। यद्यपि श्री मुहम्मद करीम चागला जैसे सुशिक्षित और प्रगतिशील मुसलमान यह स्पष्ट कर चुके हैं कि कुछ कट्टर पन्थी मुल्ला मौलवियों की चिंता किये बिना ही सरकार को मुस्लिम कानूनों में सशोधन करना ही चाहिये। अस्तु। कश्यपजी ने इस पुस्तक मे परिवार नियोजन से उत्पन्न राष्ट्रीय विभीषिका का ज्वलन्त चित्र उपस्थित किया है। जगद् गुरु शकराचार्य, सर्वोदयी नेता विनोवा भावे, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रधान गुरु गोलवलकर आदि नेताओं तथा धर्माचारियो की सम्मति सग्रह कर इस लघु पुस्तिका मे स्पष्ट कर दिया गया है कि परिवार नियोजन के क्रियान्वित होने से हिन्दुओ के ऊपर आने वाले आसन्न संकट की सभावना कम नहीं है। इसी प्रकार आयुर्वेद शिरोमणि प० ब्रह्मानन्दजी त्रिपाठी तथा आचार्य भद्रसेनजी आदि की सम्मतिया भी उल्लेखनीय हे। उस पुस्तक का सर्व सामान्य मे प्रचार युग की आवश्यकता है। सग्रहकर्त्ता की हार्दिक इच्छा है कि उसका प्रचार भारत के कोने-कोने मे हो। अधिक सँख्या में वितरण करने के लिये आर्य संस्थाओं तथा दानी सज्जनो को लागत मात्र पर १५) रु० सैकडा के भाव से यह पुस्तक उपर्युक्त पते पर अथवा वैदिक यंत्रालय केसरगज अजमेर से उपलब्ध कर सकते है।

–डा० भवानीलाल भरतीय एम. ए. पी एच. डी.
प्राध्यापक गवर्नमेन्ट कालेज, अजमेर एवं मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

**नयी पूजा नयी आरती**–प्रकाशक–अध्यापक प्रकाशन, २८५, एलवल आजमगढ़। रचयिता–वेद प्रकाश आर्य, प्रवक्ता दयानन्द महाविद्यालय आजमगढ़। मूल्य–१.५०।

वर्तमान युग में वीर काव्य धारा के प्रख्यात कवि श्री वेदप्रकाश आर्य की काव्य कृति 'नयी पूजा नयी आरती' एक नूतन दिशा वर्तिनी प्रकाशिका है। इस पुस्तक मे श्री आर्य की १२ कवितायें संकलित हैं। कविताओं में ओज, करुण तथा भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती हुई दृष्टि गोचर होती है। कविताओं में देश के पौरुष को उदबुद्ध करने की शक्ति है। पंक्ति-पंक्ति में देश प्रेम की अग्नि धधक रही है। कश्मीर सम्बन्धी यह पंक्तियाँ हृदय को छूने की सामर्थ्य रखती हैं—

कश्मीर धरा का नन्दन माना जाता है।
भारती भाल का चन्दन माना जाता है।।
पतझर मे सरस सुहावन माना जाता है।
या जेठ मास मे सावन माना जाता है।।

मेरठ जिले के वीर सेनानी मेजर आशाराम त्यागी के जीवन से सम्बन्धित कविता तो अत्यन्त उच्चकोटि की बन पड़ी है। युद्ध करते हुए 'आशाराम' की उच्च आकांक्षा और आदर्श का सजीव चित्रण इन स्फूर्तिदायिनी पंक्तियों मे देखिये—

एक ही चिन्ता कि सूरज मेघ मे लुकने न पाये।
एक ही चिन्ता कि पौरुष राष्ट्र का चुकने न पाये।
एक ही चिन्ता कि गति का रथ कभी रुकने न पाये।
एक ही चिन्ता कि झडा देश का झुकने न पाये।।

आशाराम की अन्तिम अभिलाषा को व्यक्त करने वाली निम्न पंक्तियों को पढ़कर हमारे नेत्र छलछला आते हैं, और हृदय भाव विभोर हो जाता है।

मा तुम्हारी जाह्नवी सी कीर्ति घट पाई नहीं है।
लक्ष्य से क्षण एक मेरी दृष्टि हट पाई नहीं है।
धवल यश मे यो तुम्हारे कुछ कमी आई नहीं है।
प्राण तो अर्पित किये पर पीठ दिखलाई नहीं है।

'नयी पूजा नयी आरती' की समस्त कविताओ मे देश का यौवन अंगड़ाइया ले रहा है। इतिहास के कई गौरवपूर्ण पृष्ठ जीवित रूप ले उठे हैं। गुरु गोविन्द के पुत्रो के बलिदान की कथा हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती है। 'घर के मित्रो मे सावधान' सन्धान बदलना ही होगा' 'तू ही शक्ति, स्रोत है नारी' 'तथा समझौते बाजी बन्द करो' अत्यन्त ही विचारोत्तेजक कवितायें हैं। 'नयी पूजा नई आरती' शीर्षक कविता तो युग धर्म की व्याख्या प्रस्तुत करती है। जिससे माँ मस्ती से संघर्षपूर्ण अतीत, रक्त सिंचित नवयुग तथा मांगलिक भविष्य का सजीव वर्णन करते हुये कवि की वाणी में एक भावावेश और बाध तोड़ कर बहने वाला विचार प्रवाह दृष्टिगत होता है। कितनी प्राण शक्ति है, इन पंक्तियो मे–

ओ मुल्ला चढ़कर मस्जिद पर आवाज लगाना करो बन्द।
ओ पण्डित जी भोले शंकर पर भोग चढ़ाना करो बन्द।।
मैं आज आरती करता हूं जन जन के भाग्य विधाता की।
उस जन्म भूमि की जननी की उस प्यारी भारत माता की।।

इस पुस्तक का घर घर मे प्रचार होना चाहिये। आज के युग में ऐसे वीर काव्य के प्रणेता श्री आर्य जी बधाई के पात्र हैं।

नारायण गोस्वामी

स्वत्वाधिकारिणी, आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिये भ.दी. आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग लखनऊसे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

| (१) मंडली पंजाब, हरयाना हिमाचल, जम्मू कश्मीर | (२) द्वितीय मण्डली राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र | (३) तृतीय मंडली मध्य भारत, मध्य, आन्ध्र | (४) चतुर्थ मण्डली उत्तर प्रदेश, बिहार बंगाल | (५) पंचम मण्डली उत्तर प्रदेश |
|---|---|---|---|---|
| देहली | देहली | देहली | देहली | देहली |
| मे | मे | से | से | से |
| फरीदाबाद | गुडगाव | कोसी | हरदोई | मेरठ |
| भिवानी | रेवाडी | मथुरा | गोंडा | गढमुक्तेश्वर |
| रोहतक | रुहाना | आगरा | बस्ती | मुजफ्फरनगर |
| सोनीपत | रतनगढ | झांसी | गोरखपुर | सहारनपुर |
| करनाल | गंगानगर | ग्वालियर | बलिया | देहरादून |
| हिसार | बीकानेर | से | गाजीपुर | कोटद्वार |
| अबोहर | जोधपुर | मध्य भारत | आजमगढ | बिजनौर |
| फीरोजपुर | पाली | (७ दिन आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य भारत के कार्यक्रमानुसार) | जौनपुर | मुरादाबाद |
| जालन्धर | पीपाड | खण्डवा | शाहगंज | रामपुर |
| करतारपुर | ब्यावर | शोलापुर | फैजाबाद | बरेली |
| अमृतसर | अजमेर | बम्बई | वाराणसी | पीलीभीत |
| दीनानगर | शाहपुर | पूना | दानापुर | लखीमपुर |
| गुरदासपुर | भीलवाड़ा | हैदराबाद | पटना | सीतापुर |
| बटाला | चित्तौड़ | आन्ध्र मे | मुजफ्फरपुर | शाहजहानपुर |
| पठानकोट | नीमच | (७ दिन आर्यप्रतिनिधि सभा म० द० के कार्यक्रमानुसार) | दरभगा | बरेली |
| धर्मशाला | जयपुर | वर्धा | मुंगेर | बदायूं |
| मण्डी | उदयपुर | नागपुर | भागलपुर | चन्दौसी |
| जम्मू | मारवाड | दुर्ग | देवघर | अलीगढ |
| श्रीनगर | आबू | रायपुर | गया | हाथरस |
| होश्यारपुर | सिद्धपुर | बिलासपुर | हजारीबाग | कासगंज |
| फगवाडा | मोरवी | कटनी | धनबाद | फर्रुखाबाद |
| लुधियाना | टंकारा | सागर | झरिया | मैनपुरी |
| अम्बाला | राजकोट | जबलपुर | राची | शिकोहाबाद |
| पटियाला | अहमदाबाद | सतना | टाटा | इटावा |
| कालका | बडौदा | वाराणसी | हावडा | कानपुर |
| शिमला | उज्जैन | | बंगाल मे | बिन्दकी |
| चण्डीगढ़ | बारां | | (५ दिन आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यक्रमानुसार | फतेहपुर |
| दिल्ली | कोटा | | वाराणसी | इलाहाबाद |
| वाराणसी | सवाईमाधोपुर | | | मीरजापुर |
| | भरतपुर | | | वाराणसी |
| | देहली | | | |
| | वाराणसी | | | |

उपर्युक्त सभी स्थानों की आर्यसमाजे शास्त्रार्थ मण्डलियों का प्रबन्ध प्रचार आतिथ्य करेंगी। आर्यसमाज के प्रचार-युग मे यह कार्यक्रम एक नया मोड लायेगा ऐसी आशा है,

निवेदक—

**प्रकाशवीर शास्त्री**
संसद सदस्य
(प्रधान)

**महेन्द्रप्रताप शास्त्री**
एम ए ओ एल
संयोजक

**उमेशचन्द्र स्नातक**
एम ए
सम्पादक आर्यमित्र

**कैलाशनाथ सिंह**
एम ए
उपसंयोजक

**विश्वश्रवा: व्यास**
एम ए वेदाचार्य
प्रचार-मन्त्री

सह-संयोजक
शताब्दी एवं पाखण्ड-खण्डिनी पताका समारोह-समिति

**शिवकुमार शास्त्री**
संसद सदस्य
प्रधान

**प्रेमचन्द्र शर्मा**
सदस्य विधान सभा
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

लखनऊ रविवार १६ नवम्बर ६९
दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## शास्त्रार्थ शताब्दी का शंखनाद

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हरद्वार कुम्भ मे पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर शखनाद किया था, उसी के अनुसार उन्होंने काशी में सौ वर्ष पूर्व शास्त्रार्थ किया था। शास्त्रार्थ में उनकी विजय हुई, और सारे विश्व मे महर्षि की विद्वत्ता एवं वेद-निष्ठा की धूम मच गयी। महर्षि ने इस शास्त्रार्थ के बाद भी अनेक शास्त्रार्थ किये, परन्तु इस शास्त्रार्थ का अपना ऐतिहासिक महत्व हे। महर्षि की इस शास्त्रार्थ पद्धति को अपनाकर आर्यसमाज ने अपना कार्य आरम्भ किया और देश मे फैले अविद्यान्धकार का नाश हुआ। इस प्रकार काशी शास्त्रार्थ से उस युग मे प्रेरणा मिली थी। आज भी इसका महत्व बना हुआ है। आज आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिये आवश्यकता इस बात की है कि फिर से उसकी शक्ति शास्त्रार्थ शैली की ओर लगायी जावे। इस कार्य के लिये शास्त्रार्थ शताब्दी एक उत्तम सुयोग है और इसीलिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आगामी दिसम्बर मे २३ से २६ तक शताब्दी मनाने का निश्चय किया है और इस सम्बन्ध मे २० नवम्बर से शास्त्रार्थ मण्डलियाँ देश का भ्रमण आरम्भ करेंगी। इस प्रकार शास्त्रार्थ शताब्दी आरम्भ हो रही है, और सारे आर्यसमाज जगत् को महर्षि के कार्य को पूरा करने का अवसर मिल रहा है।

शताब्दी समिति ने काशी में ६ परिषदें और ६ महापरिषदें और ६ महासम्मेलनो का कार्यक्रम घोषित किया है, यज्ञ और प्रदर्शनी आदि अनेक कार्य-क्रम भी सम्पन्न होंगे। इन सभी कार्य-क्रमों का विस्तृत विवरण शीघ्र ही प्रकाशित किया जायगा। इन अक में शताब्दी समिति ने शास्त्रार्थ यात्रा का विवरण प्रकाशित कराया है, उससे आर्य जनता को यह स्पष्ट हो जायगा कि शताब्दी का क्या स्वरूप होगा और उससे क्या लाभ हो सकता है। कुछ भाइयो ने शास्त्रार्थ से जनता मे आर्यसमाज के प्रति विपरीत भावना की शंका व्यक्त की है, परन्तु हमारा यह कार्य सत्य और ज्ञान के प्रसार की भावना से ही है, किसी विद्वेष और सघर्ष की दृष्टि से नहीं। इसलिये हमे पूर्ण विश्वास है कि जनता हमारे सन्देश को सुनेगी और महर्षि दयानन्द के पुण्य प्रताप से अवश्य प्रभावित होगी।

जहां तक अपने बन्धुओ का आर्य जनता मे शताब्दी के लिये उत्साह है। परन्तु 'श्रेयासि बहु विघ्नानि के अनुसार कुछ भाइयो ने शताब्दी के सम्बन्ध में गलत धारणायें बनाली हैं और आर्य जनता मे भ्रम उत्पन्न करने का यत्न कर रहे हैं। हम ऐसे बधुओ की सुबुद्धि के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं, और उनके कार्य के औचित्य अनौचित्य का निर्णय आर्य जनता पर छोड़ते हैं। हमे विश्वास है कि महर्षि दयानन्द के कार्य को रचनात्मक रूप देने में जो बाधक होगा उसे कभी क्षमा नहीं किया जायगा। आर्य जनता व्यक्ति को कभी महत्व नहीं देती उसके सम्मुख महर्षि दयानन्द का कार्य मुख्य है।

शताब्दी आरम्भ हो चुकी है, और सारे आर्य बन्धुओ एव ऋषि भक्तो की परीक्षा का समय है। समय बतायेगा कि कौन सच्चा ऋषि-भक्त है और कौन ऋषि के नाम पर ससार को धोखा देने वाले हे।

शताब्दी के लिये एक लाख रुपये की अपील के अनुसार धन सग्रह का कार्य आरम्भ हो गया है, नोट छप चुके हैं और आर्य पुरुष एवं आर्य समाजें धन भेज रही हैं। सबको अपने कर्तव्य का पालन करना है।

छपते छपते

## महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

**देहली, वाराणसी के आर्यों में उत्साह की लहर**
**धनी-मानी सज्जनो की यजमान बनने की स्वीकृति**
**एक-एक हजार रुपये तथा अधिक के कई दान**
**शास्त्रार्थ यात्री विद्वानों का २० नवम्बर को आर्यसमाज मुलतान, देवनगर देहली में स्वागत-समारोह**
**देहली से स्पेशल ट्रेन चलने की आशा**
**वाराणसी में स्वागत समिति तथा उपसमितियों का निर्माण**

## आर्यसमाज बैंकोक (थाइलैण्ड) द्वारा १०००) एक हजार रुपया भेंट

अन्य आर्यसमाजें अनुकरण करें

१०००) एक हजार रुपया आर्यसमाज बैंकोक (थाइलैण्ड)
२००) दो सौ रुपया आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर
२००) दो सौ रुपया आर्यसमाज मिर्जापुर
१०१) एक सौ एक रुपया आर्यसमाज गुड मण्डी औरंगाबाद
१०१) एक सौ एक रुपया श्री मदनलाल जी कोषाध्यक्ष सभा लखनऊ
१०१) एक सौ एक रुपया श्री लाजपत राय जी लखनऊ
१००) सौ रुपया स्त्री आर्यसमाज गणेशगंज
१००) सौ रुपया आर्यसमाज गोरखपुर
१००) सौ रुपया आर्यसमाज चन्दौसी (मुरादाबाद)
१००) सौ रुपया आर्यसमाज बिसौली (बदायूं)
५०) पचास रुपया आर्यसमाज श्री परमानन्द बख्शी, बीकानेर
५०) पचास रुपया आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ
५०) पचास रुपया आर्यसमाज बरखेड़ा पीलीभीत
२५) पच्चीस रुपया आर्यसमाज चन्दकोट गढवाल
२२) बाईस रुपया हीरामणि शर्मा सभापति जेत्रपुर सहकारी समिति शमसाबाद (आगरा)
२१) इक्कीस रुपया आर्यसमाज जबलपुर
१०) दस रुपया श्री सत्यपाल जी, ८५ नर्मदा मार्ग जबलपुर
१०) दस रुपया श्री मकरन्द शर्मा जी शाहाबाद
१०) दस रुपया आर्यसमाज भगवानपुर सहारनपुर
१०) दस रुपया श्री आई एन त्रिपाठी १६ पार्क होटल ग्वालियर
१०) दस रुपया श्री गंगा शरण जी मिश्र, इटावा
१०) दस रुपया श्री रघुनाथ प्रसाद जी जमादार हरनौत
५) पांच रुपया श्री गोवर्धन दास जी गंगानगर राजस्थान
५) पांच रुपया आर्यसमाज कम्पू ... फर्रुखाबाद
५) पांच रुपया आर्यसमाज गोवर्धन मथुरा
१) एक रुपया आर्यसमाज जौरी बुजुर्ग झांसी

क्रमश.

—महेन्द्र प्रताप शास्त्री
संयोजक

श्री पुज्य महत्म अ द वस मी जी

# हैदराबाद में झगड़ों को निपटाने का दायित्व मैंने स्वंय नहीं लिया था, अपितु मेरे ऊपर डाल दिया गया था।

## मेरे साथ (श्री रामगोपाल की सार्वदेशिकसभा द्वारा) अन्याय पर अन्याय हो रहा है और मैं संन्यासी होने के कारण चुप हूँ।

(महात्मा आनन्द स्वामी जी का कथन)

महात्मा आनन्द स्वामी जी को सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग दिनांक २४-८-६९ का निम्न प्रस्ताव सूचनार्थ भेजा था तथा यह भी बता दिया था कि महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने निम्न उस समिति मे रहने से इन्कार कर दिया है।

**प्रस्ताव–**

हैदराबाद आर्य महासम्मेलन के निश्चयानुसार प्रान्तीय सभाओ के विवाद को निपटाने के लिए श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने दायित्व लिया था। खेद है कि श्री स्वामी जी ने पंजाब सभा के विवादों की कोई सर्व सम्मत हल निकालने से पूर्व इस दायित्व को बीच में ही छोड़ दिया जिससे वह विवाद और उग्र रूप में सामने आने लगे।

अतः यह सभा श्री आनन्द स्वामी जी द्वारा छोड़े गये अधूरे कार्य को पूर्ण रूप से निर्णायक स्थिति तक पहुचाने का दायित्व निम्नलिखित तीन संन्यासी महानुभावों को सौंपती है कि वे न्याय सभा के निर्णय तथा सार्वदेशिक सभा के नियमोपनियम के अनुसार आर्यसमाज मे चल रहे विवादों का हल निकाल कर सभा को सूचित करें जिससे उस निर्णय को वैधानिक रूप देने मे सभा अपने अधिकार का प्रयोग कर सकें :—

१. श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी।
२. श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी।
३. श्री स्वामी विद्यानन्द जी 'विदेह'।

उपरोक्त प्रस्ताव की भाषा से दुखी होकर महात्मा जी ने निम्न पत्र लिखा :—

सत्य प्रतिलिपि

आर्य दिवाकर
वानिगा स्ट्रीट, ११०
पारामारिबो (सुरिनाम)
साऊथ अमरीका, १५-१०-६९

मेरे प्यारे श्री भल्ला जी,

सप्रेम नमस्ते।

पत्र आपका मिला, हजारहाँ मील दूर मैं पाताल देश में बैठा हूं। और वेद सन्देश सुनाने मे निरन्तर लगा हू। मेरी गैरहाजिरी में सार्वदेशिक सभा ने यह गलत और अधूरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, मै तो इधर सार्वदेशिक सभा के गुण गा रहा हू और वह मेरे ऊपर ऐसी कृपा कर रहे हैं।

हैदराबाद मे झगड़ों को निपटाने का दायित्व मैंने स्वय नहीं लिया था अपितु मेरे ऊपर डाल दिया गया था–फिर मुझे सफल होने मे बाधा किसने डाली यह भी तो लिखना चाहिए था, मेरे साथ अन्याय पर अन्याय हो रहा है, और मैं संन्यासी होने के कारण चुप हूं। मैं जब से इधर आया हूं भारत तथा समाज का कोई समाचार नहीं मिलता। ऊपर के पते पर मै १५ नवम्बर तक रह कर फिर गियाना और त्रिनिडाड चल दूंगा–वहां से मैं यू० एस० ए० पहली दिसम्बर को पहुंच कर वेद कथाएं करूंगा।

श्री रामनाथ भल्ला,
९–सी, मीरदर्द रोड,
नई दिल्ली, इण्डिया

सेवक
ह० आनन्द स्वामी सरस्वती

आर्य सम्मेलन हैदराबाद के प्रस्ताव दिनाक ८-११-६८ के आधार पर सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने अपनी बैठक दिनाक २३-२-६९ को निम्न प्रस्ताव स्वीकार किया था।

'यह दशम आर्य महासम्मेलन प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ के उत्पन्न विवाद तथा न्यायालय में चल रहे मुकदमों के लिए चिन्ता प्रकट करते हुए उनके निपटारे के लिए अभियोगो से सम्बद्ध व्यक्तियों को सानुरोध आदेश देता है कि वे राजकीय न्यायालयो से अविलम्ब मुकदमें वापस लेवें। साथ ही यह सम्मेलन सर्वसम्मत से निश्चय करता हुआ परम पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी को पूर्णतः सर्वाधिकार देता है कि वे उपर्युक्त सभी विवादों का निवटारा शीघ्र कर दें।'

उपरोक्त प्रस्ताव से स्पष्ट प्रतीत होता है कि महासम्मेलन तथा सार्वदेशिक सभा ने महात्मा जी को झगड़े निपटाने के लिए पूर्णतः सर्वाधिकार दिये थे। परन्तु महात्मा जी के विदेश चले जाने के बाद यह कहना कि महात्मा जी ने विवादो को निपटाने का दायित्व स्वय लिया था तथा वह उस बीच में छोड़ गये यह महात्मा जी के साथ घोर अन्याय है। अब २४-९-६९ के प्रस्ताव को हजारों की सख्या मे छापकर सारे भारतवर्ष में बाँटने पर महात्मा जी के विरुद्ध मिथ्या प्रचार से उनका क्षुब्ध होना स्वाभाविक है। संन्यासियों का तो पहले ही अभाव है परन्तु श्री रामगोपाल आदि द्वारा आर्यजगत् के सर्वोच्च संन्यासी के साथ इस प्रकार का व्यवहार होने पर कौन अब संन्यासी बनेगा तथा आर्य समाज का प्रचार करेगा। अब महात्मा आनन्द भिक्षु जी के साथ भी ऐसा ही व्यवहार हो रहा है, आर्य जनता स्वयं देख लें।

## श्री पं० माधवाचार्य जी को खुला चेलैंज

श्री माधवाचार्य जी ने 'क्यों ?' नाम की एक पुस्तक लिखी है, उस में स्थान-स्थान पर अपने स्वाभावनुसार 'दकियानूस दयानन्दी' आदि गालियां लिखी हैं, उन गालियों का उत्तर तो नहीं देंगे पर शास्त्रार्थ सम्बन्धी जो बातें हैं, उन पर तो लिखना आवश्यक ही है।

क्यों ? के पूर्वार्द्ध पृष्ठ ५० पर श्री माधवाचार्य जी ने लिखा है कि–

'आर्य समाज भी यदि किसी एक दर्शन को भी मान ले तो उसकी रेत की दीवार धम्म से गिर जाय। सभी दर्शनों में–मूर्ति पूजा, ईश्वर का अवतार, मृत श्राद्ध, जन्मना वर्ण व्यवस्था, तीर्थ और छुआ-छूत आदि वैदिक विषय ओत प्रोत हैं।

श्री माधवाचार्य जी इन विषयों को कभी वैदिक सिद्ध नहीं कर सके न कर सकेंगे, अब सभी दर्शनों में इन विषयों को ओत प्रोत बताते है।

मै अमर स्वामी परिव्राजक और प. बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ हम दोनो इन विषयों पर शास्त्रार्थ करने को उद्यत हैं। श्री माधवाचार्य जी को रजिस्ट्री भेज दिया है, यदि वह अपने स्वभावानुसार शास्त्रार्थ को टालेंगे तो उनकी पराजय समझी जायगी।

अमर स्वामी, परिव्राजक
संन्यास आश्रम गाजियाबाद

बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ
रामपुर गार्डन, बरेली

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी और पुरानी सार्वदेशिक सभा

[ श्री बलवीरसिंह जी बेधड़क, सदस्य सार्वदेशिक सभा ]

महर्षि दयानन्द के काशी-शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के देश देशान्तर मे व्यापक प्रभाव को देख कर ईर्ष्या और द्वेष से भरी एक सूचना सार्वदेशिक पत्र १२ अक्टूबर १९६९ के अङ्क मे प्रकाशित हुई है, कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी को हमारा समर्थन प्राप्त नहीं है। इन सूचना के नीचे लिखा है मन्त्री-सार्वदेशिक सभा देहली।

१—हम इन मन्त्री सार्वदेशिकसभा देहली से पूछना चाहते हैं कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मनानी चाहिये थी या नहीं। यदि मनानी चाहिये थी तो आपने क्यों नहीं इसका प्रबन्ध किया, क्या आपको प्रतिनिधिसभाओं के साथ मुकदमा करने से अवकाश नहीं मिलता।

२—दूसरा हमारा प्रश्न यह है कि जब यह काशी शास्त्रार्थ शताब्दी जिला सभा वाराणसी मना रहा था, तब तो आप की सार्वदेशिक सभा के अनुसन्धान विभाग ने शताब्दी पर प्रकाशित होने वाले शोध ग्रन्थ में छपने के लिये लेख भेजे, तब तत्त्वावधान और समर्थन नहीं सूझा था और जब इस महान् काम को आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश ने अपने हाथो में लिया तब तत्त्वावधान और समर्थन सूझा।

३—एक ओर तो ये तथाकथित मन्त्री सार्वदेशिकसभा आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश को पत्र लिखते हैं कि हम क्या सहयोग दे, दूसरी ओर यह नीचता भरी सूचना छापते है।

४—अब लगभग १५० आर्य विद्वान् शास्त्रार्थ यात्रा के लिये सन्नद्ध हो रहे हैं। समस्त भारत में शास्त्रार्थ यात्री अभियान करने वाले हैं, कई सौ शास्त्रार्थ सारे देश में और १८ शास्त्रार्थ काशी मे होने की घोषणा हो चुकी है। विरोधी भी तैयारी में लगे हुए हैं, तब यह निर्लज्जता भरी सूचना छापी जाती है।

५—उस सूचना मे लिखा है कि धन संग्रह के लिये हमारा प्रमाणपत्र मांगा जावे और धन की सूचना हमे दी जावे। बिहार के एक आर्य समाज ने इन्हे पत्र लिखा कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की तारीखें क्या है, तब इन कथित मन्त्री सार्वदेशिक सभा ने उस आर्य समाज को पत्र लिखा कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी स्थगित हो गई है, इस निमित्त धन हमारे कार्यालय मे भेजो। शाबाश। शताब्दी मनावे आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश और धन भेजे इन मन्त्री सार्वदेशिकसभा को। क्या मुकदमेबाजी के लिये रुपये की कमी हो गई है जो शास्त्रार्थ के नाम पर मांगा रुपया प्रान्तीय सभाओ के साथ मुकदमेबाजी पर व्यय किया जा रहा है। नहीं तो बतावे कि मुकदमा लड़ने के लिये कब चन्दा किया है।

६—जो व्यक्ति परिवार वालो से मुकदमाबाजी करता रहता है। उसके यहाँ विवाह शादी मे भी रिश्तेदार नहीं आते और जो मुहल्ले वालो से मुकदमाबाजी करता रहता है, उसके मरे-जिये मे भी मुहल्ले वाले इकट्ठे नहीं होते है। अभी अभी हैदराबाद मे दशम आर्य महासम्मेलन हुआ उसमे न तो कोई आर्यप्रादेशिकसभा का ही पहुंचा और न हरियाणा के उन सच्चे आर्यों को बुलाया गया जिन ऋषि भक्तो के आँखो मे ऋषि का नाम सुनते ही आंसू आ जाते है, और न इनके तत्त्वावधान के कारण आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब को हैदराबाद निमन्त्रण दे सका। क्या ऐसा ही तत्त्वावधान काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पर कराना चाहते हो।

७—तुमने धक्का देकर आर्य प्रादेशिकसभा को निकाल दिया। आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब से मुकदमा करते तुम्हे पांच वर्ष हो गये। यू० पी० सभा के सर्व सम्मत वृन्दावन निर्वाचन को तुम ने अवैध कह किया। क्या तुम तत्त्वावधान के लायक हो।

८—अपने तत्त्वावधान मे तुम ने हैदराबाद मे पौराणिक पाखण्डी श्री शंकराचार्य जी को तो धरती पर लाल कपड़ा बिछाकर स्वागत् किया और उन्हें आर्यो के बीच बैठाकर सब आर्य भाइयों से राधेश्याम जपवाया, क्या काशी मे भी आर्य विद्वानो से यही अपने तत्त्वावधान मे कराना चाहते हो।

९—काशी शास्त्रार्थ शताब्दी को कोई व्यक्ति नहीं मना रहे। उस का सारा प्रबन्ध आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के हाथो मे है, आपको क्या घबराहट तत्त्वावधान की है।

१०—जब शास्त्रार्थ शताब्दी की तारीखें १६ से २१ नवम्बर तक रखीं, तब इन्ही तारीखो मे गोवा मे सम्मेलन रखा दिया और इन्हीं तारीखो में दिल्ली से पांच सौ आर्यों की स्पेशल ट्रेन चला दी और १ नवम्बर की दिवाली १६ नवम्बर को अजमेर मे करा कर दिल्ली के आर्यों की स्पेशल ट्रेन के स्वागत मे सब राजस्थान को हिलगा दिया और जब हमने तारीखें बदल दीं और २३ से २८ दिसम्बर तक शताब्दी की तारीखें रखी तब सुना हैं कि इन्हीं तारीखों मे अब आर्यवीर दल का शिविर बम्बई मे रखा जा रहा है और इन्हीं तारीखो के मध्य अपनी तथाकथित सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग देहली मे बुलाई जा रही है। यह आप का तत्त्वावधान हो तो रहा है। आर्यजनता के आगे इन कर्मो को करते हुए कुछ भय लज्जा आदि भी होता है या नहीं।

नोट —समस्त आर्यजगत् को सावधान किया जाता है कि इस समय काशी मे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है, समस्त देश और देशान्तर मे आर्यसमाज की मान मर्यादा को प्रभावशाली बनाने का समय है। ऐसी कलुषित विज्ञप्तियो से सावधान रहे और काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मे भारी संख्या मे काशी पहुंचें और पर्याप्त धन राशि उत्तर प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा को भेजकर सहयोग देवें।

आर्यजगत् को यह जान कर हर्ष होगा कि आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानो ने यह घोषणा कर दी है कि महर्षि की जीती हुई काशी को अब एक सौ वर्ष बाद हम दुबारा जीतकर दिखा देंगे। ऐसे समय मे आर्य समाज का कोई शत्रु ही ऐसी कमीनी सूचना निकाल सकता है।

इस सार्वदेशिकसभा के अधिकारियो से जब पृथक पृथक पूछा जाता है तब सब कह देते हैं कि हम ने नहीं छापी है, यह सूचना उसने छापी है। सब एक दूसरे पर डाल रहे है। वास्तव मे यह सूचना उस व्यक्ति ने निकाली है जो आर्य समाज के सब झगड़ो का आदि स्रोत है और जिसको इस सार्वदेशिक सभा ने एक हजार रुपया मासिक देकर सारे देश मे आर्य समाज मे लड़ाई करने के लिये पाल रखा है।

इस महानुभाव ने काशी में रह कर आर्य समाज के विद्वान् डाक्टर मङ्गलदेव शास्त्री जी तथा आचार्य देवदत्तशर्मोपाध्याय के साथ पौराणिक पण्डितो से मिल कर बगावत की और फिर निकाले

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सत्यार्थ-प्रकाश की भूमिका में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं:—'मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों को सत्य से छोड़ असत्य में झुक जाता है'। महर्षि का यह लेख आर्य समाजों के वर्तमान नेताओं पर अक्षरशः घटता है। गत पांच वर्षों से इन आर्य नेताओं की पद लोलुपता, हठ व दुराग्रह के कारण आर्य समाओं में उत्पन्न पारस्परिक विवादों व वैमनस्य से आर्य जगत् मे एक विचित्र स्थिति व्याप्त है। इन सभाओं के विरोधी पक्ष अपने को सत्य व दूसरे को असत्य सिद्ध करने मे अहर्निशरत हैं। आरोप प्रत्यारोप की झड़ी लगी हुई है। विवाद सिद्धान्त का नहीं है। ईश्वर निराकार है या साकार, जीवात्मा विभु है या परिच्छिन्न, मुक्ति से पुनरावृत्ति है वा नहीं, श्राद्ध जीवित का होता है व मृतक का इन बातों पर विवाद नहीं है। विवाद का विषय है केवल कुर्सी। आर्य समाज के सभी रचनात्मक कार्यों के प्रति हमारे नेता सर्वथा उदासीन हैं। श्रद्धालु आर्य जनता का दान में दिया हुआ पैसा निर्दयता के साथ सरकारी न्यायालयों मे चल रही मुकदमे बाजी मे पानी की तरह बह रहा है। सभाओं पर अपना अपना अधिकार जमाये रखने के लिए संविधान व नियम की दुहाई देने वाले ये नेता ऐसे असम्वैधानिक व अनैतिक हथकण्डे प्रयोग करते आ रहे हैं कि जिनको सुनकर सर्व साधारण आर्य जनता यह सोचने पर विवश हो रही है कि क्या सचमुच ये ही वे नेता हैं जो महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार कराने की तमन्ना अपने दिलों में सजोये रखने की दिन रात घोषणा करते रहते हैं। आर्य समाज की इस दुरवस्था से दुःखी होकर आर्य नेताओं के पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने के लिए कतिपय सज्जनों द्वारा कई प्रयास किये गये जिनमें से नवीनतम प्रयास दशम आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद मे दिनांक ८-

## आर्यसमाज संगठन समिति—

# क्या ? और क्यों ?

## कुछ जानो! कुछ भूलो!

११-६८ को सर्व सम्मति से आर्य जगत् के सर्व मान्य सन्यासी पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को सभाओं के पारस्परिक विवाद निपटाने का अधिकार दिया जाना था।

आर्य महा सम्मेलन में स्वीकृत तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अन्तरंग सभा दि० २३-२-६९ द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव निम्न प्रकार है:—'यह दशम आर्य-महा सम्मेलन (हैदराबाद) प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में उत्पन्न विवाद तथा न्यायालयों मे चल रहे मुकदमों के लिए चिन्ता प्रगट करते हुए उनके निपटारे के लिए अभियोगो से सम्बद्ध व्यक्तियों को सानुरोध आदेश देता है कि वे राजकीय न्यायालयों से अविलम्ब मुकदमें वापिस लेवें साथ ही यह सम्मेलन सर्व सम्मति से निश्चय करता है कि परम पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी को पूर्णत. सर्वाधिकार देता है कि वे उपर्युक्त सभी विवादों का निपटारा शीघ्र करा दें'।

आर्य महासम्मेलन मे सर्व सम्मति से स्वीकृत उक्त प्रस्ताव के आधार पर पूज्य महात्मा जी ने पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के दोनों पक्षों के पारस्परिक विवादों को निपटाने का प्रयत्न किया किन्तु खेद है कि वे अपने कार्य मे सफल न हो सके। महात्मा जी ने अपने वक्तव्य दिनांक २८-२-६९ मे इस असफलता को इन शब्दों मे स्वीकार किया है—'पिछले लगभग छः महीनों से मैं और मेरे साथी इस प्रयत्न मे लगे रहे कि किसी प्रकार दोनों पक्ष संगठित होकर सभा का कार्य चलायें परन्तु ऐसा न हो सका। यद्यपि महात्मा जी ने यह अनुभव किया कि दोनों पक्षों में से एक पक्ष श्री वीरेन्द्र पक्ष जानबूझ कर उनसे असहयोग कर रहा है। जिसके कारण सफलता प्राप्त नहीं हो रही, तथापि साधु सन्तों की पद्धति का अनुसरण करते हुए महात्माई ढंग से उन्होंने असफलता का समस्त दायित्व इन शब्दों में अपने ऊपर ले लिया—"मैं जो कुछ कर सकता था झगड़े निपटाने के लिए किया। परन्तु मेरा तप अभी अधूरा प्रतीत होता है, इसी लिए असफलता का मुंह देखना पड़ा।"

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के जिस पक्षने पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के साथ असहयोग किया, उस पक्ष को पुरानी-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का पूर्ण सहयोग व समर्थन मिलता रहा है। यही कारण है कि महात्मा जी के व्यवहार तथा असफलता के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी शालवाले ने सर्वथा विरोधी मूल्यांकन किया है। उनके शब्दों मे 'महात्मा आनन्द स्वामी जी ने एक पक्ष [अर्थात् प्रो० रामसिंह पक्ष] का पूरी तरह साथ देकर जलती आग बुझाने के स्थान पर तेल ही छिड़का है। ···महात्मा जी स्वयं ही यह अनुभव करेंगे कि चन्द व्यक्तियों के बहकाने मे आकर उन्होंने जो पग उठाया है, उनसे आर्य समाज को कितनी महती क्षति हुई है।'' हम आज आर्य समाज को विनाश करने वाले व्यक्तियों पर महात्मा जी का वरद हस्त देखकर आश्चर्य चकित है। पूज्यपाद स्वामी जी के सम्बन्ध में की गई उपर्युक्त आलोचना को पढ़कर श्रद्धालु आर्य समाजी का बुद्धि व्यापार कुछ देर के लिए शिथिल हो जाता है।

जिस आनन्द स्वामी के प्रवचनों व पुस्तकों तथा लेखों ने लाखों व्यक्तियों के हृदय में आस्तिकता उत्पन्न कर उन्हें आर्य समाज में दीक्षित किया है, जिसकी कथाएं सुनने के लिए जनता का अपार समुद्र उमड़ पड़ता है, जिस स्वामी ने अपने यौवन काल में आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के माध्यम से लाखों

---

★श्री प्रोफेसर रत्नसिंह एम० ए०
मन्त्री आर्यसमाज संगठन समिति

---

अकाल पीड़ितों को मृत्यु के मुंह से निकाला जिसने हजारों हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचाया, जिसने अनेक वर्ष सच्चे योगियों के चरणों मे बैठकर योग विद्या प्राप्त की, और अन्त में जिसने अपना हरा भरा परिवार तथा लाखों की सम्पत्ति को त्याग कर देश-विदेश मे दयानन्द के मिशन की अलख जगाई, जिस महात्मा के दर्शन मात्र से सच्चे आस्तिक शान्ति प्राप्त करते हैं, क्या सचमुच वही आनन्द स्वामी सरस्वती अब इतना पतित हो जाये कि वह अपना विवेक खोकर दूसरे लोगों के बहकाने मे आने लगे और तुल जाये वह अपने प्यारे दयानन्द के आर्य समाज का विनाश करने पर ? अपने आर्य संन्यासियों की इस प्रकार की आलोचना को देखकर सीधा सच्चा साधारण आर्य समाजी निराश व हताश होकर अपने घर बैठ जाता है और यही सोचने पर बाध्य हो जाता है कि आनन्द स्वामी जी की तरह शायद दयानन्द के तप में भी कुछ कमी थी जिसके कारण उसके द्वारा लगाया हुआ पौधा [आर्य समाज] अपने जीवन के १०० वर्ष भी पूरे न कर पाया और मुरझाने लगा जब कि महात्मा बुद्ध, महात्मा ईसा के वृक्ष दो सहस्र वर्ष से फल फूल रहे हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तो अपनी असफलता की घोषणा कर आर्य नेताओं के आचरण से अति क्षुब्ध व दुःखी होकर

अपने पूर्व निश्चित पुरोगम के अनुसार इंग्लैण्ड और अमेरिका में वैदिक धर्म का प्रचार करने चले गये। उनके यहाँ भारत में रहते हुए ही ३१ मई को आर्य जगत् के लिए एक अत्यन्त लज्जाजनक घटना घटी। वह थी दो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओ का बनाना। दोनो सार्वदेशिक सभाएं अपने निर्वाचन की वैधानिकता का डका पीट रही हैं। आर्य जगत् के नाम दोनों के कार्यालयो से परस्पर विरोधी विज्ञप्तियाँ प्रसारित हो रही हैं। आर्य जनता किंकर्त्तव्य विमूढ हो रही है। वह सोच रही है कि कौन सी सार्वदेशिक सभा का आदेश माना जाये। कितने ही आर्य समाज तो इन विज्ञप्तियों को अपने साप्ताहिक सत्सगो मे सुनते भी नहीं और उन्हें रद्दी की टोकरी मे फेंक देते हैं। यह है हमारी वर्तमान शोचनीय स्थिति !

# दिवाली

दिवाली लिए दिव्य दीपक करों मे।
अँधेरा मिटाती चली आ रही है॥

घमण्डी घनों ने रमा सी अमा को दिया योग पूरा सुहागिन बनाया
भुलावे मे भूले भटकते रहे ये सदा देव मार्गों को धुंधला बनाया
किरण किन्नरी किन्तु कोमल स्वरो मे प्रभाती सी गाती चली आ रही है॥१

सजो सृष्टि की सीढियो मे चढे तो यहाँ पीडियो ने करामात की है।
विषय वासनाओं के आसन डिगे योग ने भोग को ही यहाँ मात दी है।
निधन की भुजाएं अमर आत्म-जय का कि डका बजाती चली आ रही है॥२

हुईं मौन थी वेद की जो ऋचाए उन्हे आज फिर से मिली ब्राह्मवाणी।
सुधी थे पिपासु हुए धन्य प्यारे निराले कृती पी पीयूष प्राणी।
द्विजो की प्रतिष्ठा पुरानी प्रथा को सदेशा सुनाती चली आ रही है॥३

चली शास्त्र सम्मान की चारु चर्चा कि अर्चा महावर्ण आश्रम ने पाई।
हुए दर्शनो वे, सुदर्शन जनो को मनो ने मुनिस्मृति की सुस्मृति जगाई।
युगो से पडी सो रही सस्कृति को सहेली जगाती चली आ रही है॥४

अनादित्व आस्था लिए जीव ईश्वर प्रकृति की मिली ये तरङ्गित त्रिवेणी।
तुला तर्क मे जो तुली मान्यताए मिली धर्म को ही प्रथम एक श्रेणी।
मतो की खड़ी जो कि मीनार ऊँची उन्ही को गिराती चली आ रही है॥५

करोड़ो सहे कष्ट योगी न ऊबे भले जाम कोई विषैले पिलादे।
उसी को दयानन्द बोलेंगे ज्ञानी सुधाधार प्यासी धरा को पिला दे।
'प्रणव' नास्तिको को सुआस्तिक बना दे कि जादू चलाती चली आ रही है॥६

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए०, फीरोजाबाद

## आर्यसमाज संगठन समिति का उदय

आर्यसमाज की इस दयनीय अवस्था को देखकर आर्यसमाज के कुछ नवयुवको ने निर्णय लिया कि अब हम आर्यसमाज का मजाक उड़ता देख नहीं सकते। यदि आर्यसमाज की यह स्थिति रहे तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा हमारे लिए सबसे बड़ा पाखण्ड है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को सार्थक करने व वर्तमान पाखण्ड का विनाश करने के लिए तथा आर्यसमाओं के दलगत विवादो का पिटारा करा विनाशोन्मुख आर्यसमाज की रक्षा करने के लिए आर्य जगत् के गौरव परम तपस्वी, वीतराग पूज्यपाद महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता मे कतिपय आर्य युवक संगठनो ने ३० जून ६९ की बैठक में निम्न निर्णय लिया।

यह सम्मेलन सर्वदेशिक एवं प्रान्तीय स्तर पर हो रहे विघटनात्मक नेतृत्व को आर्यसमाज के पवित्र संगठन एवं आर्यों के लिए अत्यन्त दु:खद तथा लज्जाजनक समझता है। इस सदर्भ मे नैतिक मूल्यो को भुला कर सार्वजनिक प्रचार और परस्पर विवादास्पद झगडो को लेकर राजकीय न्यायालयो मे जाना सगठन की दृष्टि से अत्यन्त घातक, अशोभनीय एवं अवांछनीय है। सार्वदेशिक सभा के वर्तमान निर्वाचन से दो सार्वदेशिक सभाओ के बन जाने से आर्य जगत् के उच्चतम नेतृत्व के पतन की भी आशका दिखाई देने लगी है जो इस सम्मेलन की दृष्टि में अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। इन परिस्थियों मे युवकों की यह गोष्ठी आर्य जगत् की प्रतिक्रियात्मक भावनाओ का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने के उपरान्त सर्व सम्मति से इन सभी विवादो को समाप्त कराने और शान्तिमय वातावरण निर्माण कराने की दृष्टि से महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज को सर्वाधिकारी घोषित करता है जो अधिक से अधिक १५ व्यक्तियो की परामर्शदातृ सर्वोच्च समिति बनाकर आर्यजगत् पर आये हुए अप्रत्याशित संकट को शीघ्र समाप्त कराने का प्रयत्न करे। यह सम्मेलन स्वामी जी तथा इस सर्वोच्च समिति को पूर्ण विश्वास दिलाता है कि उसके आदेश एवं निर्देश पर सारे भारत की आर्य युवा शक्ति तथा भद्र आर्यजन हर प्रकार का बलिदान करने के लिये उद्यत रहेंगे।

स्वामी जी ने उसी समय १३ सदस्यो की समिति गठन की घोषणा कर दी। कुछ सदस्यो को स्वामी जी ने बाद मे अपने अधिकार से मनोनीत किया है। इस समिति मे ७ प्रोफेसर १ प्रिंसिपल, २ पत्रकार व कई सुयोग्य वक्ता व समाज सेवी हैं। प्रिंसिपल भगवान दास इस समिति के गौरव हैं। गत हिन्दी रक्षा आन्दोलन के संचालन मे आपका बहुत बड़ा योग रहा। आपके सौजन्य, शालीनता, मधुरता, गम्भीरता व साधुता सर्व विदित है। इस समिति में एक जिन्दा शहीद भी हैं। वे हैं श्री प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपको कैरों सरकार के द्वारा असह्य कष्ट झेलने पड़े। आपके हाथों की हथेलियों पर कुर्सी रखकर उस पर घण्टों तक पुलिस वाले बैठे रहे। डिब्बे में पाखाना भरकर आपके गले में लटकाया गया परन्तु यह वीर सेनानी अपने मार्ग से विचलित न हुआ। श्री ब्रह्मचारी इन्द्रदेव जी मेधार्थी ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज के लिए अर्पित किया हुआ है। आप एक गम्भीर व सुलझे हुए विचारक हैं। प्रो० श्यामराव जी एम० ए० एक विवादग्रस्त व्यक्तित्व हैं। कई नेताओ के विचारानुसार आप एक कम्युनिष्ट हैं और आर्यसमाज में विघटन उत्पन्न करना ही आपका लक्ष्य है। हमारे सामाजिक जीवन में इतना पतन आ चुका है कि किसी व्यक्ति में तनिक भी मतभेद होते हुए ही हम उसे बदनाम करना शुरू कर देते हैं। [क्रमशः]

# शास्त्रार्थ शताब्दी

( श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ, बरेली )

अब से सौ वर्ष पहले शास्त्रार्थ का जो आरम्भ ऋषि दयानन्द ने किया था, वह आर्य समाज की ओर से आज तक चालू है। इस शताब्दी मे पौराणिक, जैन ईसाई मुहम्मदी सबसे ही सैकडो शास्त्रार्थ आर्य समाज से हो चुके हैं। एक बात विचारणीय है कि पौराणिक पण्डितों ने ईसाई मुसलमानो से कोई भी शास्त्रार्थ नहीं किया और न ही जैनो से। ईसाई मुसलमानो के भी शास्त्रार्थ नहीं हुये। अकेले आर्यसमाज से सब के दगल हुये हैं। वास्तव मे थोडे थोडे अन्तर से ये सब मतवादी एक हैं। जनता के भोलेपन से लाभ उठाना परलोक के नाम पर माल बटोरना पण्डित भी चाहता है, पादरी भी, मौलवी भी। इसीलिए तीनो को आर्य समाज से भय है। मूर्ति पूजा बन्द हुई तो बकरो के चढावे भी नहीं रहेंगे। बम सब अन्धविश्वास पाखण्ड, ढोंग, रूढिवादिता मिलकर एक ओर खडी है। ईद की कुर्बानी और नवदुर्गों के बलिदान सब हत्यायें मुँह फैलाये एक लाइन में हैं, और तर्क का आचरणात्मक धर्म का डडा लिये हुये आर्य समाज एक ओर खडा है। आर्य समाज मानव मात्र को भ्रान्तियो से बचाने का व्रत लिये हुये हैं। इसीलिये उसके विरोध मे सब शास्त्रार्थ को आते हैं।

किया इज़हारे हक क्या एक
ज़माना अपना दुश्मन है।
मुकाबिल मे हमारे एक-सा
शैखो बिरहमन है।

आज देश मे साम्प्रदायिक दङ्गो की लहर आ रही है। इसका कारण है राजनैतिक। राजनैतिक बाजीगर इन दङ्गो से लाभ उठाते हैं, और उधर साम्प्रदायिक दङ्गो को गला फाड-फाड कर बुराई करते हैं।

यह सब खुराफात शास्त्रार्थो से दूर हो सकती है। शास्त्रार्थों के द्वारा मनुष्य बुद्धिवाद की ओर बढता है। सोचने विचारने मे समय लगता है। नये नये ग्रन्थ पढना है। फिर उसे इन बेहूदे दङ्गो फिसादो के लिये समय ही कहाँ मिल सकता है। शास्त्रार्थ भारत की पुरानी परम्परा है। वैदिक धर्मी और बौद्ध शास्त्रार्थ करते रहे, जन और बौद्धो मे वाद विवाद हुए। शैव और वैष्णव शास्त्रार्थ करते रहे। शास्त्राभ्यास द्वारा प्रतिपक्षी को पछाडने मे पूरा प्रयत्न करते थे पर मनोमालिन्यका नाम नहीं था। आज भी उस काल के लिखे जैन, बौद्ध वैदिक ग्रन्थ विद्यमान हैं।

जैन विद्वान् श्री विद्यानन्द जी स्वामी कृत प्राप्त परीक्षा बौद्ध विद्वानो मे श्री असग और वसुबन्धु के ग्रन्थ तथा नैयायिक विद्वान उदयन की न्याय कुसमाजलि (सस्कृत साहित्य के अमूल्य ग्रन्थ हैं) आर्य समाजियो के और मुसलमानो के सैकडो शास्त्रार्थ हुये हैं। परन्तु अब सब ओर सन्नाटा है, धर्मान्वेषण की प्रवृत्ति राजनैतिक धूर्तों के प्रचार से बन्द हो गई है। आर्यसमाज को इस प्रचार को फिर चलाना चाहिये। किन्तु खेद है कि आर्य समाज स्वय उन्हीं प्रपंचो मे फसा जा रहा है जिनमे सस्थाओ के विनाश हो जाते हैं। गौरव गिर जाता है।

आज आर्यसमाज मे स्वाध्याय शील सदस्यो का अभाव है। सिद्धान्तज्ञ उपदेशक चलते जा रहे है। शास्त्रार्थ समाप्त प्राय है। जो है वे तट तरु के समान खडे हैं नेताओ की भरमार है। और ऐसे नेता जो आर्यसमाज को सीढी बनाकर ऊपर चढना चाहते हैं वे नेता नहीं दीख रहे जो अपने प्रभाव से समाज को उन्नत बनावें। आर्य समाज जनतन्त्र सस्था है। आर्य जनता को यदि वैदिक धर्म प्यारा है और उसे विश्व धर्म बनाने की रुचि है तो स्वाध्याय और शास्त्रार्थों को जीवित करो अपने प्रत्येक उत्सव पर शास्त्रार्थ शका समाधान रक्खा जाये और अन्य मत वालो को प्रेमपूर्वक बुलावा दिया जाये। खण्डन गम्भीरता और विद्वत्ता पूर्वक मीठे शब्दो मे युक्ति प्रमाणपूर्वक हो। कटु शब्द, अनर्गल खण्डन न होने चाहिये। कटुता वा साम्प्रदायिकता फैलाने वाले राजनैतिक भाषण अपनी वेदी से न दिये जायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने काशी शास्त्रार्थ शताब्दी का कार्यक्रम बनाकर आर्यसमाज को नया मोड दिया है। शास्त्रार्थ यात्रा आरम्भ हो रही है, काशी मे समारोह होगा। समस्त आर्य जनता को इसे सफल बनाने में जुट जाना चाहिये।

---

राजनैतिक पार्टियो के सदस्य सभाओं के अधिकारी न बनें—

## गुरु विरजानन्द शताब्दी समारोह का निश्चय, सार्वदेशिक सभा विधान में आवश्यक संशोधन किया जाय

( विशेष प्रतिनिधि द्वारा )

जालधर—१५-१०-६९ गुरुविरजानन्द शताब्दी समारोह का कार्यक्रम करतापुर मे ५ अक्तूबर से १२ अक्तूबर तक हुआ। सगीत सम्मेलन, हिन्दी रक्षा सम्मेलन, गौ रक्षा सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन हुये। इन सब मे से युवक सम्मेलन अधिक सफल रहा और आर्य भाइयो ने उसकी कार्यवाही मे बडी रुचि ली। उस मे प्रस्ताव द्वारा निश्चय किया गया कि राजनीतिक व्यक्ति जो ससद् अथवा विधान सभाओ के सदस्य हो उन्हे सार्वदेशिक सभा अथवा प्रान्तीय सभाओ के अधिकारी न बनाया जावे तथा इसके लिये आवश्यकतानुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विधान मे सशोधन किया जाय। प्रो० रामप्रकाश जी ने अपने प्रभावशाली भाषण मे बताया कि राजनैतिक व्यक्ति सभाओ का अपने व्यक्तिगत हितार्थ लाभ उठाते हैं। इसलिए वह उनके अधिकारो के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यही कारण है कि सभाओ के झगडे समाप्त नहीं होते। सभाओ तथा आर्यसमाजो मे शान्ति स्थापन करने का एकमात्र यही उपाय है कि राजनीतिक व्यक्तियो को सभाओ के अधिकारी बनने से वंचित किया जावे। आर्यसमाज सघटन समिति के वर्तमान कार्यक्रम का उल्लेख करते हुये उन्होने कहा कि इस समिति का निर्माण केवल सभाओ के झगडे समाप्त करने के लिए किया गया है। ज्यो ही वह समाप्त हो जायगे सघटन समिति को समाप्त कर दिया जावगा। प्रो० श्यामराव एम० ए० ने श्री रामगोपाल शालवाले की सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्यसमाज सघटन समिति तथा उसके अधिकारियो के विरुद्ध साप्ताहिक सार्वदेशिक पत्र दिनाक २१-९-६९ तथा २२-९-६९ और विज्ञप्तियो द्वारा मिथ्या व भ्रम मूलक प्रचार का उल्लेख करते हुये उन सब का खण्डन किया तथा बताया कि वह न तो सार्वदेशिक सभा पर अधिकार जमाना चाहते है तथा न आर्य जगत् के नेता बनने की कामना रखते हैं। उन्होने कहा कि गौ रक्षा आन्दोलन की आड मे ससद सदस्य बनने वाले व्यक्तियो ने गौ रक्षा का कार्य भुला दिया और अब सिवाए सभाओं में झगडे कराकर सार्वदेशिक सभा पर अधिकार बनाये रखने के उनका अन्य कोई उद्देश्य नहीं। उन्होने खेद व्यक्त किया कि ला० रामगोपाल तथा उनकी सार्वदेशिक सभा महात्मा आनन्द भिक्षु जी तथा आर्यसमाज सघटन समिति के झगडे निपटाने के पवित्र कार्य मे केवल सहयोग ही नहीं देते अपितु उनका विरोध कर रहे है। प्रो० श्यामराव के भाषण का हजारो उपस्थित आर्य नर नारियो ने बार बार करतल ध्वनि करके बडी सराहना की। अन्त मे वह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ। आर्य सम्मेलन मे बोलते हुये आपने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे कोई अधिकारी भी पूरा समय देकर कार्यालय मे नहीं बैठता तथा न कोई उपयोगी कार्य करता है केवल बिल्डिंग ही खडी है। जब तक लगनशील सारा समय देने वाले व्यक्ति सभा के अधिकारी न होंगे आर्यसमाज का उन्नति रुकी रहेगी।

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी—

# आर्यसमाज पुनः आवाहन करता है 'है कोई मां का लाल'

—सन्तोष कण्व, बरेली

जी हां आश्चर्य की कोई बात नहीं है। नवम्बर १९६९ आ गया है। शत् वर्ष व्यतीत होगे शास्त्रार्थ तिथि से शास्त्रार्थ यात्रा आरम्भ होगी और काशी मे शताब्दी समारोह होगा।

किसकी शताब्दी ?

शास्त्रार्थ की।

कैसी शताब्दी? कैसीशताब्दी ?

अजी क्या सोते रहते हो जो पूंछ रहे हो 'कैसा शास्त्रार्थ ? कैसा शास्त्रार्थ ?'—एक शास्त्रार्थ और विश्व के इतिहास का ऐतिहासिक शास्त्रार्थ। जिसे भुलाया नहीं जा सकता। जो नवम्बर १८६९को काशी स्थित 'दुर्गाकुण्ड' के समीप 'आनन्द बाग' मे आर्य समाज के प्रवर्त्तक पूज्यपाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज तथा देश के माने हुये महान् विद्वान्-सत्ताइस पौराणिक पण्डितो के मध्य 'मूर्त्ति-पूजा' विषय पर हुआ था।

क्या हुआ था उस शास्त्रार्थ में ?

हुआ क्या था ? स्वामी दयानन्द की प्रकाण्ड विद्वता के समक्ष पौराणिक पण्डितो की जब कुछ न चली तो कोलाहल करते हुए भाग खड़े हुए—मानो स्वामी दयानन्द पर विजय प्राप्त कर चुके हैं।

परिणाम क्या हुआ ?

अजी परिणाम क्या ? चोरो के पैर ही कितने होते हैं ? परिणाम यही हुआ कि पौराणिक पण्डित वेदों मे मूर्त्ति पूजा नहीं दिखा सके।

फिर ?

फिर क्या ? उसके उपरान्त स्वामी जी अठारह बार काशी आये और विज्ञापन पर विज्ञापन देते रहे कि अब भी यदि वेदो मे मूर्त्ति-पूजा का कोई प्रमाण मिला हो तो लाओ'।

परन्तु दिखाते क्या ? होता तो दिखाते भी।

हा अब आपने कही बात पते की।

अच्छा अब आगे क्या विचार है ?

नवम्बर १९६९ मे पूरे सौ वर्ष हो रहे हैं, इस शास्त्रार्थ को हुये।

इसमें सन्देह भी क्या है ?

फिर तो 'काशी शास्त्रार्थ शताब्दी' मनायी जायगी।

निःसन्देह अब आप हमारे रंग मे रग गये।

परन्तु · ·!

हां परन्तु क्या ?

·· परन्तु किस रूप में मनायी जाएगी ?

हां यह अच्छा पूछा ! यह महान् शताब्दी दो भागो में मनाई जाएगी।

वह कौन से ?

प्रथम भाग के अन्तर्गत सम्पूर्ण भारतवर्ष में शास्त्रार्थ की कारे घूमेगी और हमारे आर्य विद्वान् शास्त्रार्थ की चुनौती देंगे।

किसको ?

पौराणिक पण्डितो को।

किस विषय पर ?

उसी विषय पर जिस पर स्वामी जी का शास्त्रार्थ हुआ था।

अच्छा आपका अभिप्राय अब मै समझा। आप पुनः यह कहने जा रहे हैं कि यदि अब भी वेदों में मूर्त्ति पूजा का कोई भी प्रमाण मिला हो ले आओ ?

जी हां हम तो यही विषय रखेंगे।

और तीय स्प क्या है ?

द्विती भाग के अन्तर्गत विश्व के सम्पूर्ण स्कालर काशी मे एकत्र होगे तथा उनसे शास्त्रार्थ होगा।

वाह यह तो बहुत ही उत्तम कार्य है। आखिर किस विषय पर शास्त्रार्थ होगा ?

शास्त्रार्थ का विषय है—'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं'।

विषय तो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। परन्तु बहुत दिन लग जाएंगे इस विषय पर शास्त्रार्थ होने में।

अजी दिन क्या ? यदि सात दिन में विश्व भर के घुटने न झुकवा लें वेदो के आगे तो दयानन्द के चेले नहीं।

वाह उमग तो आपकी बहुत ऊँची है।

अच्छा अब ?

अब क्या ? अब तो केवल यही कहना शेष है—

'आर्य समाज आज खुली चुनौती दे रहा है तथा आवाहन करता है कि—है कोई माई का लाल ! जो आज सौ वर्षों के उपरान्त भी वेदों में मूर्त्ति-पूजा का कोई भी प्रमाण प्रस्तुत कर सके।'

वाह तब तो आपने कमाल कर दिया। परन्तु आगे क्या ?

आगे यह कि विश्व भर के स्कालरो—वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के विरुद्ध अपनी दलीलें प्रस्तुत करो—हम तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देंगे।

वाह ! वाह !! वाह !!! ·· अब तो आर्यसमाज जाग गया और विश्व में खलबली मच गई।

अजी सोया भी कब था ? ·· बोलो वैदिक धर्म की ·····

·· जय !

महर्षि दयानन्द की···

·· जय !

× × ×

(पृष्ठ ५ का शेष)

गये। अब भी इस सार्वदेशिकसभा के ये महानुभाव काशी से प्रकाशित होने वाले पौराणिक पत्र सन्मार्ग मे पौराणिको से मिलकर शास्त्रार्थ शताब्दी के विरुद्ध विष उगलवा रहे हैं। जिस समय आर्यजगत् इन के कर्मों को जानेगा तब समस्त देश इनको धिक्कारेगा।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी सार्वदेशिकसभा को बुद्धि दे जो ये लोग यह जान सकें कि यह व्यक्ति अपनी एक हजार रुपये की सार्वदेशिक की नौकरी के कारण सबको लडा रहा है कि यदि सब मिलकर बैठ गये तो मेरी सर्विस चली जावेगी हम लोगों का यह निश्चित मत है कि सारे देश मे स्वतः झगड़ा कहीं नहीं है पर यह व्यक्ति झगड़ा पैदा करता है। और हजारो रुपया भिन्न-भिन्न प्रान्तो में झगड़ा कराने के लिये इन महानुभाव ने अब तक व्यय किया इसके प्रमाण दिये जा सकते हैं।

हमे शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये आर्यजगत् का पूर्ण सहयोग मिल रहा है और आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् हमारे साथ है। यह हो सकता है कि कुछ सरकारी पण्डितों पर इसका प्रभाव हो पर सब आर्य विद्वानो की स्वीकृतियाँ प्राप्त है। और सब विद्वान् इस समय तैयारी में सनद्ध हैं। उनके उत्साह को भी बढ़ाना हमारा सबका कर्त्तव्य है।

**विश्वकर्मा वशज बालकों को-**

**७०००) का दान**

**श्री भवानीलाल गज्जूवाल जी शर्मा स्थिर निधि**

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिजजोदेवी-भवानीलाल शर्मा सुपुत्र की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार भाद्रपद सम्वत २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओ के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३-उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई में।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

ओ३म्

# आर्य्य-मित्र

'वयं जयेम ] लखनऊ-रविवार मार्गशीर्ष २ शक १८९१, मार्गशीर्ष कृ० ६ वि० स० २०२६, दि० ३० नवम्बर १९६९ [ ᳵम जीते

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के उपलक्ष में २० नवम्बर ६९ को दिल्ली (आर्यसमाज मुल्तान देवनगर) में भव्य समारोह

## शास्त्रार्थ के लिए पोस्टरों द्वारा विज्ञापन, लिखित [illegible], परन्तु शास्त्रार्थ के लिये [illegible] भी सम्मुख नहीं आया, पौराणिक पण्डित दिल्ली से बाहर चले गये

### *आर्यसमाज की विजय की सर्वत्र चर्चा*

आर्य विद्वानो का भव्य स्वागत करते हुये शास्त्रार्थ शताब्दी को सफल बनाने का आर्य जनता द्वारा संकल्प

दिल्ली की आर्य जनता के समान सभी स्थानो के आर्य बन्धु उत्साह दिखावे

शास्त्रार्थ शताब्दी की सफलता आर्य समाज को नये युग मे पहुँचायेगी

वाराणसी पहुँचने की तिथियाँ २३ से २८ दिसम्बर ६९ याद रखे और शताब्दी के लिये धन-सग्रह मे जुट जावे

| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | ४४ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पैसे

संपादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढ़िए !

# अध्यात्म-सुधा

# अग्नि-पान

[ श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री साधु-सोमतीर्थ, देहली ]

ऋत धीतय आगत,
सत्य धर्माणो अध्वरम् ।
अग्ने पिबत जिह्वया ॥
ऋ० ५।५१।२

शब्दार्थः—[सत्य-धर्माणः] हे सत्य-धर्म से प्रेम करने वालो ! (ऋत धीतये) सत्यता और सज्जनता को प्राप्त करने तथा प्रचारित करने के लिये इस (अध्वरम्) यज्ञ में, मार्ग में, परोपकारमय, जीवन मे (आगत) आओ, प्रवेश करो, और (जिह्वया) अपनी जिह्वा से (अग्नेः) अग्नि का, ईश्वर-भक्ति के रस का, जीवन का (पिबत) पान करो ।

भावार्थ :—हे सत्य-धर्म से प्रेम करने वाले सज्जन पुरुषों ! सत्यता और सज्जनता की प्राप्ति तथा प्रसार के लिये यज्ञमय जीवन का अनुष्ठान करो । आओ, स्तुति प्रार्थना और उपासना के द्वारा भक्ति-रस का पान करो ।

## प्रवचन

१–लोहे के चने चबाने की कहावत प्रसिद्ध है । यहाँ अँगारे चबाने के लिये वेद मानव-जाति का आवाहन कर रहा है । चौंकिये मत । विचार कीजिये । वेद की बात हितकर है । असम्भव या हानिकारक नहीं ।

२–मनुष्य स्वभाव से सत्य-शील है । वह भूल, भ्रम अथवा दुष्ट-संग-वश मिथ्या आचार-विचार को ग्रहण कर लेता है । फिर भी स्वाभाविक और आन्तरिक रूप में तो वह सत्यता से ही प्रेम करता है जब कोई मनुष्य सत्यता की खोज करता है, तब वह अल्पज्ञता वश कभी-कभी झूठ को सत्य और सत्य को झूठ समझ लेता है । संस्कार-दोष से या अपनी इन्द्रियों में किसी प्रकार का विकार होने के कारण वह दुविधा के पंजे मे फँस जाता है । कभी ढोंग और दिखावा उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । कभी झूठे गुरुओं, पाखण्डी-सन्तों और घमण्डी एवं दम्भी नेताओं की लच्छेदार बातें उसे भ्रम में डाल देती हैं । सत्यवादी होते हुए भी, वह मिथ्यावादी-सा बन जाता है ।

३–स्वार्थी और नीति निपुण लोग मिथ्या बातों और असत्य सिद्धान्तों का सत्यवत् प्रचार करके, लोगों को निरन्तर ही पथ-भ्रष्ट करते रहते हैं । उनकी भ्रष्ट चालों से बचना जनसाधारण के लिये अत्यन्त कठिन है । विक्षोभ और पश्चाताप के थपेड़ों से सन्तप्त मानव तो कभी-कभी यह कातर-नाद भी कर उठते हैं—

खुदाया ! अब तेरे ये,
बेखता बन्दे किधर जायें ?
इबादत भी है मक्कारी,
सियासत भी है मक्कारी ॥

४–हे सत्य प्रिय भाइयो ! और बहिनों ! यदि तुम 'ऋत' को धारण करना चाहते हो, तो यहाँ आओ । यज्ञ की इस पवित्र वेदी पर आकर, अपना उचित स्थान ग्रहण करो, और करो अपने कर्त्तव्य का पालन । यहाँ ही तुम्हे 'ऋत' की प्राप्ति होगी । 'ऋत' सत्य का शोधा हुआ, तपा हुआ, निखरा हुआ और सर्वथा ही विवाद-रहित रूप है । ऐसा मनुष्य कौन है, जो उसे प्राप्त करना न चाहे ?

५–'ऋत' एक असाधारण वस्तु वा तत्त्व-बोध है । यह एक बहुत बड़ी सिद्धि है । सत्य, यश, सज्जनता, सदाचार, न्याय, विनय, धर्म, श्रद्धा, निष्ठा, प्रकाश, पवित्रता, सात्विकता आदि ये सब अर्थ और भाव इस एक 'ऋत' शब्द से ही अभिप्रेत हैं । यज्ञ की पवित्र वेदी पर, विधिपूर्वक आसीन होकर, श्रद्धामय जीवन व्यतीत करते हुए, स्वधर्म का पालन करने से ही ऋत की प्राप्ति होती है । कार्य कुछ कठिन अवश्य है, तथापि यह आवश्यक है । यदि 'ऋत' की प्राप्ति न हो सकेगी, तब तो यह दुर्लभ मानव-जीवन व्यर्थ ही चला जायेगा ।

६–जिस प्रकार 'ऋत' शब्द का भाव और अर्थ गम्भीर तथा बहुत विस्तृत है, उसी प्रकार 'अध्वर' शब्द का अर्थ भी बहुत गम्भीर और व्यापक है । संक्षेप में सब प्रकार के शुभ-कर्मों को 'अध्वर' कहते हैं । परन्तु एक बड़ी और आवश्यक बात यह है कि यह 'अध्वर' शब्द मनसा, वाचा, कर्मणा सब प्रकार की हिंसाओं का विरोधी है । हिंसा का प्रचार और रूप चाहे जो हो, वह 'अध्वर' का पूर्ण तथा विरोधी-भाव है । हिंसा मात्र का विरोधी अथवा प्रतिषेधक यह 'अध्वर' शब्द है ।

७–हे भाइयो ! 'ऋत' की प्राप्ति के लिये शीघ्रता पूर्वक इस यज्ञ-वेदी पर आओ, और 'अध्वर' का अनुष्ठान करो । अपने हृदय की सत्य-शीलता तथा पवित्रता को कार्य रूप में परिणत करो । यदि जीवन में कुछ कच्चापन है, तो यज्ञ की अग्नि में तपा-तपा कर संशोधन और परिपाक कर लो । यज्ञ-वेदी पर बैठो और अग्निपान करो । डरो मत । यह तो प्रभु-प्रेम का गरमा-गरम आनन्दामृत ही है ।

८–तुम गरमा-गरम चीज़ों को पसन्द करते हो, सो, लो, यह गरम भी है, मादक भी, आह्लादक भी, बुद्धिवर्धक भी, और मधुर भी । इसकी गरमी, इसकी शुद्धता, नूतनता और शक्तिमत्ता की प्रतिबोधक है । यह जीवन है, अलौकिक है । अग्नि होने पर भी यह भौतिक अग्नि के समान दाहक अथवा विनाशक नहीं है । यह तो दुर्लभ अमृत-रस है । आओ, इसका पान करो । जीवन, ज्योति और जागृति का वरदान प्राप्त करो । उस ज्योतिस्वरूप और जीवन-दाता की स्तुति, प्रार्थना और उपासना प्रतिदिन नियम पूर्वक किया करो । यह तो है—अग्नि पान ।

९–धैर्य रखो । निराशा-विघ्नों को अपने पास न आने दो । यज्ञ के पवित्र कुण्ड मे डाली प्रत्येक आहुति अपना चमत्कार दिखायेगी । यह अग्नि-पान तुम्हें अमरता प्रदान करेगा । आमोद-प्रमोद और लोक-लाज को छोड़कर थोड़ा सा पीलो :—

हरि-रस पीया जानिये,
कभी न जाये खुमार ।
मैं-मन्ता घूमत फिरे,
नाहीं तन की सार ॥
प्रेम-मग्न जे साधु-जन,
तिन गति कही न जात ।
छिन रोते, छिन में हंसे,
दया अट-पटी बात ।
प्रेम न जाने नियम, व्रत,
प्रेम न बुद्ध-व्यवहार ।
प्रेम-मगन जब मन भया,
कौन गिने तिथि-वार ।

१०–यह चटोरी जिह्वा खट्टे मीठे, कड़वे, कसैले, नमकीन, और चटपटे अनेक प्रकार के रसों की खोज और विवेचन में न जाने कब से आपा खो रही थी ? अग्नि पान करके आज इसे भी चिर तृप्ति मिल गई । अब तो यह रात दिन भक्ति रस के पीने-पिलाने में ही मस्त रहती है । ध्यान दीजिये पिलाकर पीना, आनन्द को कई गुना बढ़ा देता है ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

लखनऊ रविवार ३० नवम्बर ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०७०

## पाखण्ड खण्डिनी पताका

महर्षि दयानन्द ने हरद्वार कुम्भ के अवसर पर देश धर्म और समाज में सव्याप्त पाखण्डों का खण्डन करने वाली पताका को फहराकर एक नवीन इतिहास प्रारम्भ किया था। आर्य समाज महर्षि के उत्तराधिकारी के रूप में उस पताका को फहराने का अधिकारी है। आज आर्य समाज क्षेत्र में पाखण्ड-खण्डिनी पताका शताब्दी की गूज है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम धर्म देश और समाज के नाम पर फैले पाखण्डो का खण्डन करने के लिये फिर साहस के साथ कदम बढ़ायें। वाराणसी में २३ से २८ दिसम्बर की तारीखों मे एक बार सारे आर्य जगत् को सोत्साह घोषणा करनी है, हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति से पाखण्ड खण्डन करेंगे।

दूषित उपासना पद्धति, श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जाति व्यवस्था, समाज मे सम्पत्ति का प्रभुत्व, भ्रष्टाचार आदि सभी क्षेत्रों मे एक क्रान्ति करनी होगी। आस्तिकवाद की आदर्श स्थापना हमारा कर्त्तव्य है, और साथ ही समाज का आदर्श निर्माण भी इसके बीच मे आने वाले सभी पाखण्डो का नाश हमे करना होगा। क्या हम इसके लिये तैय्यार हैं? समय उत्तर माँग रहा है।

### आर्थिक क्रान्ति के सम्बन्ध में निराशा

कांग्रेस महासमिति के विशेष निमन्त्रित अधिवेशन मे आर्थिक क्रान्ति सम्बन्धी कोई विशेष आकर्षक घोषणा न होने के कारण जनता को काफी निराशा हुई है।

घोषणा न होने के दो कारण दिये गये हैं। (१) घोषणा पत्र तैयार करने के लिये समिति का गठन किया गया है। (२) प्रधान मन्त्री अनुभव करती हैं कि बैंक राष्ट्रीयकरण के प्रगति देने मे अभी कानूनी स्थिति मे रुकावट है, साथ ही साधनों के अभाव को भी दुहराया गया है।

सर्व साधारण जनता को आशा थी कि इस अवसर पर कोई आर्थिक क्रान्तिकारी घोषणा अवश्य होगी, परन्तु निराशा ही हाथ लगी। हम आशा करते हैं कि सत्ता के सघर्ष में जनता को केवल मृग तृष्णा के भ्रमजाल में ही उलझाये नहीं रक्खा जायगा। अपितु शीघ्र ही नवीन पग उठाये जायेंगे।

### उत्तर प्रदेश सरकार की स्थिति

मध्यावधि निर्वाचन मे कांग्रेस के कर्णधारो ने हमें स्थिर सरकार देने का आश्वासन दिया था, परन्तु कांग्रेस सगठन के विभाजन ने आज प्रदेश सरकार को प्रकम्पित कर दिया है और नये-नये दलीय गठबन्धनो की सम्भावनायें उत्पन्न हो रही हैं।

उत्तरप्रदेश की निर्धन जनता बार-बार के निर्वाचनों के लिये तय्यार नहीं है, परन्तु यह भी स्मरण रखना चाहिये कि विधान सभा मे दल-बदल की स्थिति को भी अधिक पसन्द नहीं किया जायगा जनता किसी को भी क्षमा नहीं करेगी।

हम चाहते हैं कि कांग्रेस के संगठन पक्ष मे जो विवाद है उनसे ऊपर उठकर विधान सभा सदस्य अपनी दृढ़ता एवं क्षमता का परिचय दें जिससे उत्तर प्रदेश मे सरकार स्थिरता का रूप धारण कर सके।

गुप्त, त्रिपाठी, चरणसिंह या और कोई जो भी उत्तर प्रदेश को स्थायी सरकार दे सकेंगे उत्तरप्रदेश की जनता उन्हीं का स्वागत करेगी।

### गुरु नानक ५०० सौ वी जन्म शती

भारत को जिन सन्तो को जन्म देने का गौरव प्राप्त है, उनमे श्री गुरु नानकदेव का स्थान भी है। श्री नानक ने अपने सादा जीवन और मानव मात्र के प्रति भाईचारे की भावना के उपदेश से जन जीवन को प्रभावित किया था। राजकीय उत्पीडन से सत्रस्त जनता ने नानक वाणी मे शान्ति का सन्देश पाया और उनके मार्ग पर चलना आरम्भ किया। आज से पाच सौ वष पूर्व उन्होने जन्म लेकर मानवता के लिये आत्म-समर्पण किया था। उनके विचार और सिद्धान्त दार्शनिक कसौटी पर चाहे खरे न उतरते हो और उनमे शास्त्रीय चिन्तन का अभाव हो, परन्तु यह निर्विवाद है कि उन्होने आस्तिकता के प्रचार मे योग दिया और दुखी मानवता को त्याग एवं प्रेम का सन्देश दिया यही कारण है कि उनके अनुयायियो की एक बडी सख्या तय्यार हो गयी।

इस अवसर पर नानक की स्मृति मे आयोजनकर्त्ताओ से यह अवश्य निवेदन करेगे कि जिस शान शौकत और फिजूल खर्चों का प्रदशन समारोह मे हुआ है उससे नानक के अनुयायियो की आलोचना हो रही है। चाहिये तो यह था कि नानक के जीवन की शिक्षाओ के अनुसार सादगी का व्यवहार होता। इसी सिलसिले मे केन्द्र सरकार ने ५० लाख व्यय करने की घोषणा कर नानक जयन्ती को धम निरपेक्षता के विवाद मे घसीट लिया है। हम समझते हैं कि सरकार को इस प्रकार के कार्यों से अपने को पृथक रखते हुये महापुरुषो का सम्मान करना चाहिये। केवल सिक्ख सम्प्रदाय को तुष्टि से धम निरपेक्षता नहीं होगी फिर सभी के लिये सरकार को आगे आना पडेगा तब समस्या उलझ जायेगी आशा है सरकार गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी।

## सभा-भवन के लिए शीघ्र धन भेजिए

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का नव भवन बनने की तैयारियां अब पूर्ण हो गई हैं। अब शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ हो रहा है। जिन आर्य समाजों ने और व्यक्तियों ने इसके लिये धन देने के वचन दिये थे वे कृपया तुरन्त अपना रुपया भेजने की कृपा करें। अन्य दानदाताओ से भी प्रार्थना है कि वे इस शुभ कार्य के लिए शीघ्र दान भेजने की कृपा करें। दानदाताओं का नाम सगमरमर के पत्थर पर खुदवा कर भवन मे लगवाया जायगा। इससे उनकी कीर्ति स्थायी रहेगी।

**मदनलाल कोषाध्यक्ष**
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## शास्त्रार्थ शताब्दी के नोट

प्रेस की असावधानी से नोटो के छपने मे विलम्ब हो गया, जिसका हमें खेद है। अब नोट तैयार होकर आगए हैं, अब सब जगह भेजे जा रहे हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि महाराष्ट्र और और पजाब की कुछ दूरवर्ती आर्य समाजों और भाइयो ने स्वय नोट मगाए हैं। जिनको नोट न पहुचे हों और धन एकत्र करना चाहे वे शीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ को लिखें।

महेन्द्र प्रताप शास्त्री
सयोजक

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

पे. ७८५

## दिल्ली से स्पेशल बसों की व्यवस्था

दिल्ली और समीपस्थ आर्य जनता की भावनाओं को दृष्टि में रखते हुये महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के लिये स्पेशल बसों का प्रबन्ध किया गया है। दिल्ली से वाराणसी जाने आने का किराया ४३ रु० ५० पैसे होगा। १५ दिसम्बर ६९ तक किराया जमा करके अपनी सीट सुरक्षित करा लेनी चाहिए। धन जमा करने का पता १५ हनुमान रोड नई दिल्ली है।

### बस द्वारा यात्रा का कार्यक्रम

दिनांक २४ दिसम्बर ६९

[१] मध्याह्नोत्तर २ बजे निम्न स्थानों से प्रस्थान
- १–१५ हनुमान रोड से फोन ४३२८०
- २–आर्य समाज करौलबाग से फोन–५६७४५८
- ३–आर्य समाज कीर्तिनगर से ··· ··· ···
- ४–आर्य समाज शक्तिनगर से फोन—२२५८७३
- ५–आर्य समाज गुड़गांव से · · ···

[२] सायंकाल ६ बजे—
- मुरादाबाद पहुच
- ७-३० बजे मुरादाबाद से प्रस्थान

[३] रात्रि ११ बजे—
- शाहजहांपुर में विश्राम

दिनांक २५ दिसम्बर ६९

[१] प्रातः ७ बजे—
- शाहजहांपुर से प्रस्थान
- १० बजे लखनऊ पहुच और विश्राम

दिनांक २६ दिसम्बर ६९
- प्रातः ७ बजे लखनऊ से प्रस्थान
- मध्याह्न ११ बजे अयोध्या पहुंच
- मध्याह्नोत्तर ३ बजे अयोध्या से प्रस्थान
- रात्रि ७ बजे वाराणसी पहुच

२७ व २८ दिसम्बर ६९ वाराणसी में

( काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह में )

### वाराणसी से प्रस्थान

दिनांक २८ दिसम्बर ६९
- साय ४ बजे वाराणसी से प्रस्थान
- रात्रि ८ बजे प्रयाग पहुचना और विश्राम

दिनांक २९ दिसम्बर ६९
- प्रातः १० बजे प्रयाग से प्रस्थान
- मध्याह्न १ बजे कानपुर
- २ बजे कानपुर से प्रस्थान
- ६ बजे अलीगढ
- ८ बजे अलीगढ से प्रस्थान
- ११ बजे रात्रि दिल्ली पहुचना

यात्री बन्धु शीत ऋतु की दृष्टि से अनुकूल वस्त्र साथ मे रक्खें।

निवेदक :—

| शिवकुमारशास्त्री | रामनाथ सहगल | रामचन्द्र आर्य |
|---|---|---|
| संसद्-सदस्य | प्रबन्धक | सह प्रबन्धक |

फोन नं० २२६६८१

[illegible] शास्त्रार्थ शताब्दी सभा समिति

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली की अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया है कि २३ से २८ दिसम्बर १९६९ को होने वाले महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी' समारोह आर्यों के सार्वजनिक, सार्वभौम महोत्सव हैं। उन्हें सफल बनाने के लिये आर्य जनता को तन, मन, धन से सहयोग देना चाहिये और आर्य समाज की शक्ति का विराट् प्रदर्शन करने के लिये वहां अधिक से अधिक संख्या मे पहुंचना चाहिये।

—[illegible] उप मन्त्री, सभा

## निरीक्षक महानुभावों से निवेदन ?

समस्त निरीक्षक महानुभावों को सूचित किया जाता है कि सभा के वर्ष का एक मास शेष है। किन्तु निरीक्षण कार्य ज्यों का त्यो ही है। दो एक सज्जनों ने निरीक्षण किया है। सभा की मन्त्रियों एवं मुख्य निरीक्षक महोदयों से प्रार्थना है कि अपने-अपने क्षेत्र के निरीक्षक महानुभावों को प्रेरणा करें और शास्त्रार्थ शताब्दी के लिए अपने क्षेत्र में प्रचार करें–धन सग्रह करने की कृपा करें–जनता से सानुरोध प्रार्थना करें कि काशी शास्त्रार्थ महोत्सव में चलने की अभी से तैयारियां करें। जिससे यह महायज्ञ, महोत्सव सफल हो।

## मुख्य निरीक्षक नियुक्ति सूचना

झांसी कमिश्नरी (बुन्देलखंड) के आर्य समाजों को ज्ञातकर प्रसन्नता होगी कि सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री एम ए. प्रधानाचार्य जगम्मनपुर (जालौन) निवासी झांसी, जालौन उरई, बादा, हमीरपुर तथा महाराजपुर के आर्य समाजों का निरीक्षण करने समाज जो शिथिल हो गये है, उन्हे जागृत करने तथा [illegible] मे आर्य महा सम्मेलन कराने के लिए मुख्य निरीक्षक पद पर नियुक्त किए जाते है। साथ ही समाजो का कर्तव्य है कि उक्त श्री आचार्य जी के पहुचने पर समाज का निरीक्षण कराने आदि मे सहयोग प्रदान करें और सभा प्राप्तव्य [illegible] भी देने की कृपा करें।

श्री आचार्य जी काशी शताब्दी के लिए कमिश्नरी भर मे अपने भ्रमण द्वारा आन्दोलन करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

## काशी शास्त्रार्थ शती 'सहयोग दो समिति'

काशी के प्रमुख आर्य युवकों की एक बैठक आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी में दि० २२-११-६९ को सायं ७ बजे से श्री कैलाश प्रसाद आर्य की अध्यक्षता में हुई। जिसमें दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शती समारोह में सहयोग देने निमित्त 'सहयोग दो समिति' के गठन करने का निश्चय हुआ जिसके सर्वश्री कैलाशप्रसाद आर्य अध्यक्ष, श्री सेवालाल आर्य संयोजक, प्रकाशनारायण शास्त्री व अमर नाथ उपसंयोजक एवं श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर, ओमप्रकाश वर्मा, दिनेशकुमार आर्य, श्यामसुन्दर विन्ध्विस, रजिन्द्रनाथ सदस्य निर्वाचित हुये।

प्रकाशनारायण शास्त्री
उप संयोजक
वाराणसी

## ब्रह्मा कुमारी दर्पण छप कर तैयार

ब्रह्माकुमारी दर्पण नामक ट्रैक्ट १६ पेजी छप कर तैयार पुनः हो गया है। कागज सफेद २४ पौंड का लगाया गया है।

ईसाई निरोध प्रचार के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य प्रति १५ पैसा, इकट्ठी प्रचारार्थ १०) सैकड़ा—

पता :—घासीराम प्रकाशन विभाग
आर्य प्रतिनिधिसभा-लखनऊ

उक्त नाम की पुस्तक जो आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से छपी है और जिसके लेखकों में श्री जयदेव जी विद्यालंकार और श्री पं० सूर्य देव जी डी.लिट् के नाम हैं। पुस्तक पढ़कर बड़ा खेद हुआ कि यह इतिहास है या एक संक्षिप्त विवरण। इसमें अनेक संस्था और समाजों का भी वर्णन दिया गया है। यदि यह न दिया जाता तो कोई शिकायत नहीं थी और समाजों के काम का वर्णन देना था तो पूरा वर्णन देना था।

मुझे खेद है कि लेखकों ने बदायूं तक तो पहुंचकरी, परन्तु बरेली जहां रुहेल खंड का प्रांतभर में सबसे अधिक कार्य हुआ, उसका नाम ही नहीं। न कोई उसकी सेवा की चर्चा।

आजकल जो इतिहास लिखे जा रहे हैं, उन सबमे संकीर्ण दृष्टि से काम लिया जा रहा है। आर्य समाज के इतिहास के सब भाग पढ़ डालिये। आर्य मुसाफिर मिशन आगरे की सेवाओं का कहीं नाम नहीं मिलेगा। यद्यपि इस मिशन ने जो काम किया वह आजतक बड़ी-बड़ी संस्थायें नहीं कर पायी।

इसी प्रकार का यह इतिहास है।

# हैदराबाद सत्याग्रह का इतिहास

[ले०—श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री]

## बरेली ने सत्याग्रह में क्या किया?

जब श्री राजगुरुजी प० धुरेन्द्र शास्त्री जी यहां सर्वाधिकारी के रूप मे पधारे तो पांच सौ रुपये की थैली उन्हें भेंट की गयी और उनके पश्चात् ही भेजे हुए वीर सत्याग्रहियों की एक सौ एक का जत्था लेकर श्री ठाकुर लाखन सिह जी हैदराबाद को चल दिये।

ठाकुर साहब के साथी सौ सत्याग्रही सब ही एक गणवेष मे थे और प्रत्येक स्टेशन पर सूचना देने को बिगुल बजाते थे और ये सब के सब ही लगभग कांग्रेसी थे। क्योंकि श्री ठाकुर लाखन सिह जी बरेली जिले की कांग्रेस के नेता थे और प्रदेश की कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे।

माननीय श्री नेहरू जी के प्रिय व्यक्तियों में थे। श्री पंत जी और श्री किदबई साहब ठाकुर जी का बड़ा आदर करते थे। जब हैदराबाद जेल में ठाकुर जी ने अनशन किया तो कांग्रेस आर्य समाज, राजपूत सभा के इतने तार पहुंचे कि सर अकबर हैदरी चकित रह गये और जेल के डाक्टर ने श्री ठाकुर साहब से माफी मांगी। बदायूं से भी प्रथम जत्था लेकर श्री मुंशी टीकाराम जी गये थे वे भी कांग्रेसी थे, अब सोशलिस्ट हैं। इधर सत्याग्रह में भाग लेने वाले ९० प्रतिशत तपस्वी कांग्रेसी थे। वे थे सब आर्य विचार धारा के। ठाकुर साहब के सत्याग्रह में भाग लेते ही २-३ जिलों में अग्नि फैल गयी, सैकड़ो जवान सत्याग्रह की अग्नि में कूदने को तैयार हो गये। सहस्रों ग्रामवासी ठाकुर साहब के अनुयायी थे। फिर एक बड़ा जत्था चला महन्त श्री बाबा प्रेमानन्द जी के नेतृत्व में। बाबा जी उदासीन गद्दी के महन्त थे और प्रतिष्ठित जमीन्दार। बाबा जी को मैंने शपथ दिला दी थी कि चाहे आपको पीटा भी जाये परन्तु आप हाथ नहीं उठायेंगे। जब खण्डवे मे श्री बाबा जी का जत्था पड़ा था और मुसलमानो ने बाहर आर्यों पर लाठी बरसायी थी, तो बाबा जी दांत पीस पीस कर हाय करके रह जाते थे और जत्थे वालो से कहते थे कि अब तो फाटक खोल ही दो। वस्तुतः बाबा जी लाठी लेकर सडक पर पहुंच जाते तो १०-२० मुसलमान मारे अवश्य जाते ५० ६० व्यक्तियो मे वे अकेले लाठी चला सकते थे। क्योंकि बिन्नौट के हाथ जानते थे। गदके में तो इस जिले मे उनके जोड़ का कोई न था। श्री प० नान्हू राम जी उपदेशक जो पांवों से बेकार थे जत्था लेकर गये। अपनी नौकरी भी छोड़ गये और बड़ी शान से सत्याग्रह किया। बरेली मे जब श्री विनायक राव जी सप्तम सर्वाधिकारी पधारे थे तो उनके साथ हल्द्वानी बरेली के ६७ सत्याग्रही किये गये और १५ सौ रु० थैली भेंट की गयी मेरी १० मिनट की अपील मे बरेली की जनता ने रुपया बरसाना आरम्भ कर दिया जब १५ सौ हो गये तो मैने रुपया लेने को मना कर दिया, किन्तु जनता रुपया देती ही रही।

इसी दान में मैंने अपने दो स्वर्ण पदक १ चांदी का पदक दिया और श्री चन्द्रनारायण जी सक्सेना ऐडवोकेट ने भी अपना स्वर्ण पदक भेंट कर दिया। ये पदक १-१ तोले के थे, राजस्वर्ण के।

मैने अपने कालेज से अवैतनिक छुट्टी ले रक्खी थी और श्री प० सत्यपाल जी वैद्य ने अपनी वैद्यक की दूकान बन्द कर दी थी। श्री कृष्ण जी आर्य ने जो अब रामपुर जिले में कांग्रेस के नेता हैं, अपना सब कार-बार छोड़कर कार्यालय को संभाल रक्खा था। जब सत्याग्रह में जाने की तैयारी हुई तो मुझे और पं० सत्यपाल जी वैद्य को श्री कृष्ण जी को शोलापुर मे तार आ गया कि तुम लोग यहां मत आओ, वरना वहा का काम ठप हो जायेगा। इधर श्री बाबू उमाशकर जी का पत्र मिला कि सत्याग्रह अभी और चलेगा, तब अक्तूबर मे अन्तरङ्ग सदस्यो का जत्था चलेगा उसमे ही मुझे चलना होगा। मै श्री देवेन्द्र नाथ जी के साथ जाना चाहता था। अस्तु, बहुत कुछ बहस हुई अत मे यहां के काम को देखते हुए मुझे और कांग्रेसी श्री प०सत्यपाल जी वैद्य को रुकना पड़ा परन्तु श्री कृष्ण जी नहीं माने वे जत्थे में चले गये तब उनका काम श्री मुंशी श्याम बिहारीलाला जी ने संभाला।

उझानी से जो जत्थे गुजरे उनके स्वागत के व्यय का सब भार मैने उठाया श्री लाखनसिंह जी के जत्थे का तो बहुत ही ठाठदार स्वागत मिठाई आदि से हुआ था और अनेक जनों का भोजन भी मेरे और पं० स० पा० जी वैद्य के यहां होता रहा। और शोलापुर के कार्यालय मे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के जो सहायक कार्यकर्ता थे वे थे बरेली के श्री स्वामी शुल्कानन्द जो पूर्व बाबू जुगल किशोर जी। इनका भोजन, व्यय भी इनके घर से पहुचता था।

अजब मस्ती का समय था। निराली उमग थी, बलिदानो की। मुझे बुखार आ गया, परन्तु काम करता रहा। पता ही नहीं चला उस धार्मिक जोश के बुखार में यह बुखार दब गया। एटे से नैनीताल तक मैं और प० सत्यपाल जी वैद्य प्रचार करते गये। हल्द्वानी में जब आर्य समाज ने तो दांतनिचोर दिये तब श्री पं० शंकर लाल जी ने प्रचार का प्रबन्ध किया, रामलीला भूमि पर मेरा भाषण हुआ।

जोश की लहर दौड़ गयी। कई कांग्रेसी मुसलमान भी सत्याग्रह के लिये तैयार हो गये, परन्तु उन्हें आगे के लिये रखा गया। देवियों ने घर-घर जाकर चदा किया, एक लडकी खत्री कपूर उस बेटी का नाम याद नहीं रहा उसने तो कई दिन बड़ा परिश्रम धन सग्रह और घर-घर सत्याग्रह प्रचार मे लगाया। बदायूं, बरेली, पीलीभीत, नैनीताल जिलो से सत्याग्रही गये जो आर्य थे, राष्ट्रवादी थे इस सब काम का श्रेय वीर स्वर्गीय लाखन सिह जी को था। इस दुबले पतले ठाकुर मे न जाने कहाँ का तेज था, जोश था। अपने देश और धर्म के लिये सत्याग्रह को जाते हुए जब वे उझानी स्टेशन पर पहुचे और २ मिनट बोले तो स्टेशन पर भीड़ का ठिकाना न था। उसी नगर के प्रमुख रईस मिल मालिक रायबहादुर, श्री ब्रजलाल

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# काव्य कानन

## यज्ञ का अभाव

छोड़ा यज्ञ कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ !

बिसर गये वैदिक पथ सुखदा, नित्य-कर्म को भूल गये !
पाखण्ड झंझावात चले-स्वार्थ के झूले-झूल गये !!
असत् व्यवहार बढ़ा दुख-बन्धन, कर्माकर्म का ध्याव मिटा !
वेदाध्ययन श्रद्धागत बैठे-वैदिक-वास्तविक ज्ञान मिटा !!
असन-वसन हों मन्द-भाव से, हृदय अन्ध हो प्रमाद हुआ !

छोड़ा यज्ञ-कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ ॥ १ ॥

अनिष्ट-अनावृत कुलिस-कर्म से, उज्ज्वल-ज्योति बुझाय चले !
गायत्री सद्-मन्त्र विकाशित, आर्य-गौरव-भुलाय चले !!
वायु मण्डल है विशद बनाने-हेतु यज्ञ को न करते !
धूम्र-पान से दुखद विषैले, नभ मे, दुर्गन्धी भरते !!
आज सभी इस कारण से है, असह्य यह विषाद हुआ !!

छोड़ा यज्ञ-कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ ॥ २ ॥

पश्चात्य देशों की पद्धति, पावन ज्ञान विभोर हुए !
दुग्ध-दधी, मक्खन बिसराये, चाय को चाट निछोर हुए !!
सन्ध्या ईश्वर, के प्रति श्रद्धा, साधन नेक निहोरना !
गौ-सेवा उपकार न करते, नीति, सुप्रीति विचारेना !!
असभ्यता से पेस आते हैं, नास्तिकता विवाद हुआ !

छोड़ा यज्ञ-कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ ॥ ३ ॥

मन्द- बुद्धि सुधि भूल रहे हैं, अदनीत है अन्याय हुए !
धर्म, न ध्यान, श्रेय-साधन बिन, जन-जीवन दुखदाय हुए !
किन्तु ईश्वर-अनुकम्पा से, इस युग मे अवतार हुए !!
पिछड़ो का फिर मेल-मिलाप-ये महर्षि से सुधार हुए !
धूजे-धूर्त्त-धाक सुनी जब, सर वैदिक घन-नार हुआ !!

छोड़ा यज्ञ-कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ ॥ ४ ॥

आर्यवर्त्त था स्वर्ग सप्त सुख, घर-घर वैदिक पाठ रहा !
सस्य स्यामला गोपालक थे, यज्ञ रूप वैराट रहा !!
थी जल से तृप्त है पृथ्वी, अन्न से अटूट भण्डार रहा !
आर्यवीर सधीर सबल भट्ट, ओज-तेज-तप धार रहा !
आज रहे "घनसार" भिन्न-भिन्न घर-घर में परिवाद हुआ !!

छोड़ा यज्ञ कर्म जभी से,
भारत का बरबाद हुआ ॥ ५ ॥

कवि—कस्तूरचन्द "घनसार"
उपाध्यक्ष, आर्यसमाज, पीपाड़ शहर

## मैं मौन देश के निर्माताओं का निर्माण किया करता हूँ

मैं मौन देश के निर्माताओं का निर्माण किया करता हूं !
मैं शासक को अनुशासित कर जन का परित्राण किया करता हूं !

मैं ही ऋषियों के आदर्शों का प्रहरी
मैं ही प्रतिमा हूं बीते युग की गहरी
मैं ही मानव को दिशा दिखाया करता
मैं जीवन के मूल्यों में जीवन भरता

मैं धर्म-प्राण हूं धर्म तत्त्व को मूरतिमान किया करता हूं—

मैंने विकास को चरण दिए द्रुत गामी
गिरते समाज की उँगली मैंने थामी
मैंने नर को उन्नति का शिखर दिखाया
मैने चढ़ने का साहस-शौर्य जगाया

उज्ज्वल भविष्य का वर्तमान में गर्भाधान किया करता हूं—

जब भी आक्रान्त हुई भारत की धरती
जब भी आजादी विवश कराहा करती
तब तब पैदा करता दुर्जय सेनानी
मैं जागृत करता हूं शोणित बलिदानी

मैं यौवन के धनु पर पौरुष का शर सन्धान किया करता हूं—

मैं इतिहासों को उलट-पलट कर देता
मैं ही हर युग में नये पृष्ठ लिख देता
मेरे इंगित पर जग करवट लेता है
मेरा उन्नत वक्ष इन्किलाब देता है

युग क्रान्ति-करों से काल-चक्र को मैं गतिमान किया करता हूं—

मेरा सुत जब भी दूध हेतु तरसा है
तब मेरी आंखों से विप्लव बरसा है
जब भी अपमानित मेरी सुता हुई है
मैं कुपित हुआ चरणों मे शक्ति झुकी है

मैं अपने पद चापो से पल में प्रलयाह्वान किया करता हूं—

मैं हूं गम्भीर इसी से गुरु कहलाता
मैं कवि हूं मैं ही युग का भाग्य-विधाता
वह कौन खडा हो मुझे चुनौती देता ?
क्यों शान्ति-परीक्षा अपमानों से लेता ?

मैं बहुत शान्त हूं, किन्तु कभी भीषण अभियान किया करता हूं-

अपनी समाधि मे लीन मुझे रहने दो
उस सत्य स्वर्ग का मौन सृजन करने दो
मत रोटी की चिन्ता में मुझे जलाओ
मत भेदभाव से मेरा क्रोध जगाओ

तुम मुझसे छल न करो मैं मन की बातें जान लिया करता हूं—

है यह विद्या का मन्दिर अतिशय पावन
मत बूटों के रव से करो अपावन
ये छात्र तुम्हें जो हिंसा-रत दिखलाते
ये बल प्रयोग का दुष्फल ही बतलाते

ये मेरे प्राण इन्हीं से मैं [illegible] को भगवान किया करता हूं—

—कृष्णबिहारी 'प्रणत' एम०ए० एल०टी०
प्रवक्ता—डी० वी० इन्टर-कालेज, मोंठ (झांसी)

# धार्मिक समस्याएं

## याज्ञिक आचार संहिता—
# यज्ञ के लिए व्रती बनना चाहिए

### व्रतों से शुद्धता एवं पवित्रता

यज्ञ करने-कराने के अधिकारियों को या इच्छुकों को यज्ञानुसार व्रतादि धारण करके अपने को यज्ञ का व्रती बनाना चाहिए। यजमान, यजमान पत्नी, यजमान के पारिवारिक जन, समस्त ऋत्विग्गण तथा जो यज्ञ में भाग लेना चाहते हों, उन सबको यज्ञ के पूर्व दिनों से ही व्रतादि का धारण और पालन करना चाहिये। व्रतों से ही शारीरिक आन्तरिक तथा मानसिक शुद्धता और पवित्रता होती है। वेद ने कहा है—

'शुद्धाः पूता भवत यज्ञियः'।
[अथर्व १२-२-२०]

अर्थात् शुद्ध पवित्र होकर यज्ञ के योग्य बनो। इस प्रकार यज्ञ के लिये बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की शुद्धता और पवित्रता की आवश्यकता होती है। बाह्य अर्थात् शारीरिक शुद्धि आवश्यक है ही, परन्तु उसके साथ आन्तरिक पवित्रता भी परमावश्यक है। आन्तरिक पवित्रता के बिना केवल बाह्य शुद्धि का कोई महत्त्व नहीं है। इसीलिये कहा है—

'अन्तः स्नान विहीनस्य बहिः स्नानेन किं फलम्'।

अर्थात् जिसकी आन्तरिक शुद्धि नहीं हुई है, जिसके अन्दर के मलों का नाश नहीं हुआ है, बाह्य शुद्धता से यज्ञादि अनुष्ठान या योगादि कार्यों में कुछ भी फल या लाभ नहीं। इसीलिये वेद ने 'शुद्धाःपूताः' ये शब्द कहकर शुद्ध और पवित्र होकर यज्ञ के अनुष्ठान करने योग्य बनने को कहा। शुद्धता का सम्बन्ध शरीर की बाह्य स्वच्छता से है और पवित्रता का सम्बन्ध शरीर के अन्दर के प्राण, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकारादि की पवित्रता से है। इन दोनों प्रकार की शुद्धता और पवित्रता से यह शरीर यज्ञ सम्बन्धी बनता है।

### यह शरीर भी यज्ञ है

शतपथ ब्राह्मण में—'पुरुषो वाव यज्ञः' पुरुष निश्चय से यज्ञ है, कह कर जीवन को यज्ञमय बनाने का संकेत किया है, क्योंकि वेद ने इस शरीर को यज्ञ के लिये बनाया है जैसा कि :-

'इयं ते यज्ञिया तनू.'।
[यजु० अ. ४।१४]

अर्थात् यह शरीर यज्ञ के निमित्त है—यज्ञ सम्बन्धी है। मनु ने भी 'स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैः-श्लोक द्वारा अपने शरीर को ब्रह्म सम्बन्धी बनाने के लिये इस शरीर द्वारा व्रतानुष्ठान एवं यज्ञादि के लिये आदेश दिया है।

### व्रत का आदेश

इस शरीर को यज्ञ योग्य बनाने का उपाय वेद ने निम्न शब्दो मे कहा है :—

'व्रतं कृणुत व्रत कृणुत'।
[यजु : अ० ४।११

अर्थात् व्रत करो-व्रत करो। क्योंकि ब्रह्माण्ड में प्रकृति से ब्रह्म पर्यन्त सभी देव अपने-अपने व्रत पर स्थिर हैं। अग्नि, वायु, सूर्य चन्द्र आदि सभी अपने-अपने व्रतो पर आरूढ़ होने से व्रतपति बने हुये हैं और व्रतपति होने से ही—अपने व्रत पर दृढ़ एवं अटल होने से ही वे देव संज्ञक हैं।

### व्रतों से देवत्व की प्राप्ति

यदि मनुष्य भी व्रतो पर आरूढ़ हो जावे तो यह भी देवत्व को प्राप्त कर सकता है। जैसा कि कहा है :—

'देवान्वा एव उपावर्त्तते यो व्रतमुपैति' [शतपथ]

अर्थात् :—जो व्रत धारण करता है, वह देवों को सब ओर से प्राप्त करता है। क्योंकि व्रतादि कर्मों से ही मन, इन्द्रियादि की पवित्रता एवं शरीर की शुद्धता एवं पवित्रता से ही देव भावो का वास होता है, और अपवित्र भावों मे ही असुरो का निवास होता है। आसुरी भावो की निवृत्ति से ही हमारी दैवी पवित्रता सम्पादित होती है। अतः यज्ञ-कर्म के लिये व्रतादि द्वारा अपनी शारीरिक एवं मानसिक शुद्धता पवित्रता सम्पादन करनी चाहिये जैसा कि वेद के निम्न शब्दों मे आदेश है।

'दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देव यज्याये यद्वो ऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि''। [यजुः अ. १।१३]

अर्थात् :—दिव्य कर्मों के लिये तथा यज्ञादि कर्मों के लिये यज्ञ द्वारा शुद्ध होओ जिससे तुममे जो अशुद्ध तत्त्व हैं वे दूर या नष्ट हो जावें। इससे तुमको यज्ञ द्वारा शुद्ध करता हूं।

—व्रत के लिये तप की उपयोगिता—

यज्ञ के लिये व्रतानुष्ठान कर्ता-व्रती पुरुष को व्रत मे मानसिक एवं शारीरिक तप ही करने से शुद्धता एवं पवित्रता प्राप्त होती है। जो शुद्धता एवं पवित्रता है वही सत्य है-वही ऋत है। जो अशुद्धि है वही अनृत है-असत्य है। तप की अग्नि से ही ऋत और सत्य का उद्भव या उपलब्धि होती है। इस ध्रुव सत्य को वेद निम्न शब्दो मे प्रकट कर रहा है—

'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसो ऽध्यजायत'। [ऋग्वेद मं० १०। १९०। १] इसी रहस्य का—'ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्'—में भी दर्शन हो रहा है। अर्थात् तप से ही सत्य का उद्भव होता है। वह सत्य दो प्रकार का है। एक जो प्रकृति से संबंधित है। इसका ज्ञान पदार्थ-विद्या है। यही ऋत है। यही अपरा विद्या है। दूसरा जो इससे भिन्न ज्ञान परमात्मा से संबंधित है वह सत्य विद्या है। इसी को परा-विद्या कहते हैं, ऋत और सत्य, अपरा और परा असंभूति और संभूति अविद्या और विद्या संज्ञक है। अर्थात् प्रकृति और पुरुष दोनो का सत्य ज्ञान तप पूर्वक यज्ञानुष्ठान से देवत्व सम्पादन द्वारा होता है। अतः यज्ञ के व्रती व्यक्तियो को विविध प्रकार के व्रतो द्वारा—'व्रतं चरिष्यामि'—का संकल्प लेना ही पड़ता है।

[ले०—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर—२

### अन्य व्रती जनों को भी यज्ञ के फल की प्राप्ति

काम्य यज्ञो मे यजमान की कामना के समान ही कामना वाले अन्य जन भी व्रती बनकर सम्पूर्ण यज्ञ मे श्रद्धापूर्वक शान्त चित्त से, परमात्मा मे ध्यान लगाकर अपनी एवं यजमान की कामना की सफलता की इच्छा मन से, मन्त्र से या मन्त्रान्त मे स्वाहा की ध्वनि के साथ स्वयं भी 'स्वाहा' शब्द उच्च स्वर से उच्चारण करके सम्पूर्ण यज्ञ मे भाग लेते हुए फल प्राप्ति के अधिकारी बन सकते हैं। इस प्रकार का यज्ञानुष्ठान भौतिक यज्ञ के आश्रय से अन्य व्रतियो को भी यज्ञ का फल प्राप्त करने में अधिकारी बनाता है। क्योंकि वेद मे :—

'स्वाहा यज्ञं मनसः'। [यजु अ० ४। ६]

कहा है। जिससे मन से भी श्रद्धापूवक यज्ञ सम्पादन हो सकता है, यह ज्ञात होता है। श्रद्धा की हवि से मनरूपी अग्नि में जो आहुति प्रदान करता है, तो उसका मानस यज्ञसम्पादन होता है। मानस यज्ञ आदि बाह्य यज्ञ के साथ संयुक्त हो जावे तो अत्यधिक फलदायक हो जाता है। अतः भौतिक एवं मानसिक यज्ञो के लिये अपने शरीर को भी यज्ञमय बनाना चाहिये और इसके लिये व्रती बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

# 'ईसा खुदा नहीं था'

[ ले०—श्री अनूपसिंह जी, दयानन्द-भवन, मुजफ्फर नगर उ०प्र० ]

ईसा का जन्म यरुसलीम देश में 'बेथलीहेम' ग्राम में इस्राइल वंश में हुआ था। उनकी माता जी का नाम कुमारी मरियम और पिता जी का नाम यूसुफ था। 'ईसा' के पिता जी बढ़ई का काम करते थे और यहूदी मत के मानने वाले थे।

ईसाईमतावलम्बी 'ईसा' को खुदा मानते हैं, परन्तु यदि ठीक २ पक्षपात रहित होकर 'बाइबल का अध्ययन किया जाय तो ईसा का खुदा होना तो दूर किनार रहा उसमें महापुरुष के लक्षण भी घटित नहीं होते। अप्रलिखित बाइबल के उद्धरण इस बात को पुष्टि करते हैं।

संसार में आने का उद्देश्य :—मत्तीरचित इंजील में ईसा के संसार में आने का उद्देश्य लिखा है—'यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति देने आया हू मैं शान्ति नहीं तलवार देने आया हूं। मै मनुष्य को अपने पिता के विरुद्ध, पुत्री को अपनी माता के विरुद्ध, बहू को अपनी सास के विरुद्ध खड़ा करने आया हूं।" (मत्ती अ० १० आ० ३४, ३५) वाह ! क्या कहने ? ईसा के संसार मे आने का उद्देश्य अशान्ति फैलाना और आन्तरिक विघटन करना है। महा-पुरुष के आने का उद्देश्य तो दूसरों के दुःखों को मिटाना होता है। किसी का वचन है—

> न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापवर्गकम्।
> कामये दुःख तप्तानां, प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

अर्थात् मैं (महापुरुष) राज्य की कामना नहीं करता, स्वर्ग व मोक्ष की कामना भी मैं नहीं करता। मैं तो यही चाहता हूं कि दूसरो के दुःखों का नाश कर सकूं।

गुरुडम :—'ईसा' के अन्दर अपने को गुरु मनवाकर, पूजा कर-वाने की भावना कूट २ भरी हुई थी। भोले भाले मनुष्यों को बहका कर कहता है—'मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि तुम्हें यदि राई के दाने के बराबर ईमान होता तो अगर तुम उस पहाड़ से कहते कि यहां से चला जा तो चला जाता और तुम्हारी कोई बात असम्भव न होती।' (मत्ती अ १७ आ. २०) 'क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं बाप में और बाप मुझमें हैं।' (युहन्ना अ. १४ आ. ११)

देखिए ईसा अपना सम्मान कराने के लिए कितना लालायित है—'ईसा ने कहा कि जिस प्रकार बाप मुर्दों को उठाता है और जीवित करता है उसी प्रकार बेटा [ईसा] जिन्हें चाहता है जीवित करता है। क्योंकि बाप किसी का न्याय भी नहीं करता, वरन् उसने न्याय का सारा काम बेटों को सौंप दिया है ताकि सब लोग बेटे का आदर करें। जिस प्रकार बाप का सम्मान करते हैं उसी प्रकार जो बेटे का सम्मान नहीं करता, वह बाप का, जिसने उसे भेजा है, सम्मान नहीं करता।' [युहन्ना अ. ५ आ २१, २२, २३]

अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना 'ईसा' अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनने में भी नहीं चूकते। 'ईसा ने कहा कि संसार का प्रकाश मैं हू। जो मेरे पीछे चलेगा, वह अंधेरे में नहीं चलेगा वरन् जीवन का प्रकाश पायेगा।' [युहन्ना अ. ८ आ. १२]

'पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं परन्तु मेरे कहे हुए वचन नहीं टल सकते।' [मरकुस अ १३ आ ३१]

'मुझको पाप क्षमा करने का अधिकार है।' (मत्ती अ. ९ आ. ६)

भीरुता का उपदेश :—'ईसा' अपने शिष्यों को विरोधियों से डर कर भाग जाने का उपदेश है। 'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ तो दूसरे नगर मे भाग जाना।' [मत्ती अ. १० आ. २३]

चमत्कार :—ईसा ने जो चम-त्कार दिखायें वे कोरा ढोंग है। तर्क और विज्ञान की कसौटी पर पूरे नही उतरते।

'जब ईसा को यह सामर्थ्य था कि उन्होंने एक बार सात रोटियाँ और छोटी मछलियों से, स्त्री बच्चों को छोड़कर चार हजार भूखे पुरुषों को तृप्त कर दिया था, तो फिर सात टोकरे बचे टुकड़ों से भर गए, तो स्वयं भूख से पीड़ित अंजीर के फल क्यों खाते फिरे ? (मत्ती अ. १५ आ. ३४ से ६९ तक)

फांसी के तख्ते पर लोगों ने ईसा के साथ मजाक करते हुए कहा था—'देखो ! यह लोगों को पापों से बचाने और मोक्ष दिलाने के लिए आया था, किन्तु अपने को यह सूली से भी न बचा सका।'

प्रतिशोध :—'ईसा' प्रतिशोध जैसी निकृष्टतम भावना से भी न बच सका। 'जो कोई मनुष्यों के सामने मेरी अस्वीकृति करेगा, मैं भी अपने बाप के सामने, जो आकाश पर है, उसकी अस्वीकृति करूंगा।' [मत्ती अ. १. आ. २३]

एकबार ईसा को भूख लगी तो वह अजीर के वृक्ष के पास गए। उस पर फल न पाकर उसको श्राप देते हुए कहा—'तुझ में फिर कभी फल न लगेंगे।' [मत्ती अ. २१ आ. १८, १९]

चोरी :—ईसा ने अपने शिष्यो से चोरी करवाई। 'ईसा ने अपने शिष्यों से एक गधी मय बच्चे के खुलवायी धोखा देकर और शिष्यों को सिखलाया कि कोई पूछे तो कहना मालिक ने मगवाई है।' [मत्ती अ. २१ आ. १ सेठ]

क्या चोरी करवाना और झूठ बोलना महापुरुषो को शोभा देता है ? कदापि नहीं।

मृत्युवेदना :—जब ईसा को सूली से बांधकर उसके हाथ पांव में कीलें ठोंकी गई तब उसने एक जोर से चीख मारी और कहा—'ऐ मेरे परमात्मा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ? यह मौत का महा-दुःख मुझ से टाल दे।' यदि ईसा में आत्मिक बल होता तो वह भी सुकरात, बन्दा बैरागी और ऋषि दयानन्द की भान्ति हंसते २ मृत्यु वेदना को सहन कर लेता।

पादरी का सर्टिफिकेट :—एंग्ली कन चर्च के एक पादरी डा० 'स्टूअर्ट' ने अपने पद से त्याग पत्र देते हुए कहा था—'कोई भी विचा रक इस बात में विश्वास नहीं कर सकता कि किसी कुमारी से किसी का जन्म हो, या कब्र में गड़ने के बाद कोई पुनः जीवित हो। उन्होंने कहा 'ईसा' खुदा नहीं था।

•

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

११—यदि कोई पूछे कि कैसा है भक्ति-रस का मजा ? तब यह बड़ी सफाई से सन्त तुकाराम का यह अभंग उसे सुना देती है—

> गूंगे का गुड़ है भगवान।
> बाहिर-भीतर एक समान ॥
> गुड़-सा मीठा है भगवान्।
> बाहिर-भीतर एक समान ॥

१२—अभिप्राय इसका स्पष्ट यही है कि यह कुछ अधिक कहने सुनने का विषय ही नहीं है। जो इसे जानना चाहे, वह इसे स्वयं पीकर देख ले।

> खेती-पाती बीनती,
> और घोड़े का संग।
> अपने-आप सम्हालिये,
> लाख लोग हों तंग ॥

### उत्तरप्रादेशिक पश्चिमी क्षेत्र के आर्य विद्यालयों का

# शिक्षा सम्मेलन

### अध्यक्ष श्री बा. रामबहादुर एडवोकेट का भाषण

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या-चन्द्रमसाविव पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥

हे सर्वरक्षक, सर्वान्तर्यामी, सर्व प्रेरक, कल्याणपथप्रदर्शक पर-मात्मन ! आपकी दया से, जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र; आदि सृष्टि से सब चराचर जगत् के हितार्थ निरन्तर नियम बद्ध दृढ़तापूर्वक अपने मार्ग पर चलते चले आ रहे हैं, उसी प्रकार हम सब अपने कर्तव्य पालन में सन्मार्गगामी बनें और दानी, ज्ञानी तथा सच्चरित्र धर्मात्मा जनों से सम्पर्क बनाएं ।

आदरणीय स्वागताध्यक्ष जी एवं उपस्थित शिक्षा–प्रेमी बहनों और भाइयों

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के नैनीताल में हुए गत वृहदधिवेशन के अवसर पर कतिपय आर्य विद्यालयों के प्रबन्धक तथा प्रधानाचार्य महानुभावों ने यह तय किया था कि आर्य विद्यालयों की सामयिक समस्याओं एव उनमें धर्म शिक्षा की ओर वास्तविक अभिरुचि उत्पन्न करने तथा उसको स्थिर बनाए रखने के उपायों पर विचार करने के लिये क्षेत्रीय शिक्षा-सम्मेलन किये जाया करें । उसी योजना के अन्तर्गत यह सम्मे-लन हो रहा है जो क्रम संख्या-नुसार सातवां शिक्षा-सम्मेलन है ।

इस सम्मेलन की आवश्यकता, उपयोगिता और इनमें विचारणीय विषयों पर प्रकाश डालने से पहले मैं आर्य कन्या इण्टर कालिज बुलन्द शहर के प्रधान श्री शिवलाल वर्मा तथा उनके समस्त सहयोगी सदस्यों और आर्य बन्धुओं को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस सम्मेलन का आयोजन प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में किया तथा मेरे प्रति जो प्रेम दर्शाया है उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं सबके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित कर सकूं ।

शिक्षा प्रेमी बहनों और भाइयों । शिक्षा प्रसार सर्वोत्तम पुण्य कार्य है, इसे सदैव सभी ने माना है । देश का हर धर्म इस कार्य को उपयोगी मानता है । और आर्य समाज ने तो इस दिशा में जितना कार्य किया है उतना देश की अन्य कोई धार्मिक, राज-नीतिक या सम्प्रदायिक संस्था अभी तक नहीं कर पाई है । परन्तु यहां पर मैं आपके हृदय की आन्तरिक सद्भावनाओं को जागृत करके आपका ध्यान उस वास्तविक लक्ष्य की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं जिससे प्रेरित होकर महर्षि दया-नन्द से अनुप्राणित हमारे पूर्वजों ने आय विद्यालयों की स्थापना की थी । उनका ध्येय केवल अक्षरबोध या विभिन्न विषयों का पाण्डित्य नहीं था, अपितु उनकी हार्दिक कामना थी कि छात्र-छात्राओं मे सच्चरित्रता, ब्रह्मचर्य पालन, ईश्वर भक्ति, परिवार तथा समाज के प्रति कर्तव्य पालन देश भक्ति ही नहीं वरञ्च उनमें यह क्षमता उत्पन्न हो कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती-निर्दिष्ट वैदिक दृष्टि हृदयंग कर धर्म, अर्थ काम और मोक्ष के सिद्ध-साध, राजधर्म तथा सत्य-अहिंसा आदि योङ्गागों को चरितार्थ कर उसी प्रकार जगत् का पथ-प्रदर्शन करें जैसे महाभारत काल से पूर्व हमारे ऋषि मुनि करते रहे थे ।

परन्तु इस दिशा में हमे वाञ्छित सफलता अभी तक नहीं मिल पाई है । इसका एक मात्र कारण यह है कि हम अपने धर्म, ग्रन्थ, वेद, शास्त्र, उपनिषद् आदि के आधार पर धर्म शिक्षा के पठन पाठन को योजनाबद्ध नहीं कर पा रहे । इस विषय मे हमारे विद्या-लयों की प्रबन्ध समितियां प्राय. उदासीन हैं । प्रबन्ध समितिया प्रायः अनेक बहाने बना कर इस परमावश्यक विषयो को टाल देती हैं–कभी धर्म-शिक्षकों का अभाव, कभी समय का अभाव, कभी अभि-भावकों की अरुचि, कभी राजकीय शिक्षा-विभाग के अधिकारियों की ओर बाधा आदि अनेक बातें बताई जाती हैं । किन्तु क्या यह नहीं सत्य है कि जहां कमना होती है वहां उपाय भी निकाल लिये जाते हैं ? 'Where there is a will there is a way' वास्तविक कारण केवल एक है–इच्छा और सकल्प का अभाव ।

देश की बिगड़ती दशा छात्रों की अनुशासन हीनता देख कर अब हमारी सरकार भी नैतिक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करने लगी है । अतः शिक्षाधिकारियों की ओर से किसी बाधा का भय नहीं है । छात्र-छात्राओं को जब आप ज्ञानी और सदाचारी बनाएंगे तो अभिभावक भी प्रसन्न होंगे, बाधा नहीं डालेंगे । समय तो निकालने से निकलेगा, टालने से टलेगा । शिक्षक-शिक्षकाओं का अभाव दूर करने के लिए उपाय बताए तथा कार्यान्वित किए जाते हैं; परन्तु अधिकतर विद्यालय उन्हे काम मे नहीं लाते । धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाये जाते है, उनमें प्राय. शिक्षकों को भेजा नहीं जाता । धर्म शिक्षा पढाने वालो को आप अतिरिक्त वृद्धि कुछ भी नहीं देना चाहते । जब आप धर्म शिक्षा पढ़ाने वालों का उत्साह बढाएंगे तो आपको पढ़ाने वाले अवश्य मिलेंगे ।

इसलिए विनम्र आग्रह है कि प्रबन्ध समितियां कृपा करके धर्म शिक्षा के पठन-पाठन की ओर क्रियात्मक एव प्रभावी पग उठाएं ।

प्रत्येक विद्यालय मे हिन्दी सस्कृत के अध्यापक को विशेष वेतन वृद्धि देकर धर्म शिक्षा पढ़ाने को उद्यत करे । धर्म मे शिक्षा प्रशि-क्षण शिविरों अध्यापक—अध्या-पिकएँ भेजे जाया करें । समय–विभाग में धर्म शिक्षा का समय निर्धारित करें । धर्म शिक्षा में अच्छे उत्तीर्ण विद्यार्थियो को पारि-तोषित [illegible] दी जाएं । कक्षाओं में शिक्षण वाक्य पट्ट लगाए जाएं । अध्यापक-अध्यापिकाएं सादा वेश-भूषा में विद्यालय आया करें । पान, सिग्रेट, बीड़ी आदि सेवन करने वाले भी न हों । प्रत्येक शिक्षक को कहा जाए कि हर विषय के साथ चरित्र सम्बन्धी शिक्षा अवश्य दिया करें । आप यह सब करके तो देखिये वांछित फल अवश्य मिलेगा ।

सच बात तो यह कि हमारे विद्यालय जगत् मे मानवता पनपाने की प्रयोगशालाएं सिद्ध हो सकें । और मानवता की रश्मियां हमारे विद्यालयो से फैलकर अन्य विद्या-लयों को भी आलोकित करें तभी हमारा लक्ष्य पूरा समझा जाएगा । इस सफलता के लिए आप सबके हार्दिक एव क्रियात्मक कार्य कलाप की आवयश्कता है ।

दूसरी विचारणीय समस्या हमारे सामने यह है कि इस प्रदेश मे आर्यसमाज के कई सौ विद्यालय हैं परन्तु उनकी सगठित शक्ति का कहीं भी आभास नहीं मिलता है । मैं तो निवेदन करूंगा कि समस्त आर्य विद्यालय संगठित और सामू-हिक रूप से शिक्षा के पाठ्य क्रम, विद्यालयो के मान्यता–सम्बन्धी नियमो अनुदान सम्बन्धी नियमों तथा सभी सरकारी और गैर–सर-कारी विद्यालयो में नैतिक शिक्षा के दिए जाने आदि अनेक आवश्यक विषयो पर अपने सुझाव देकर उनको मनवाने पर यथेष्ट बल दें, तो हम बहुत उपयोगी सुधार कर व करा सकते हैं ।

अनेक वर्तमान शिक्षा शास्त्री और देश के नेता समय-समय पर अपने ये उद्‌गार व्यक्त करते रहते हैं कि देश के बिगड़े वातावरण को सुधारने के लिए शिक्षा मे परिवर्तन लाना होगा, परन्तु दुःख है कि २२ वर्ष मे भी अभी तक हमारे नेता यह निश्चय न कर पाए हैं कि देशहित मे किस प्रकार की शिक्षा पद्धति होनी चाहिए महर्षि दया-नन्द की कृपा से आर्य समाज के पास शिक्षा सम्बन्धी आवश्यक योजना विद्यमान है जिससे देश का यथार्थ कल्याण हो सकता है । परन्तु यह सब कुछ तभी सम्भव

हैं संभवतः तब हम संगठित रूप से अपनी आवाज सरकार तक पहुंचाने में सक्षम हो सकेंगे।

अतः मेरा आग्रह है कि आप अब ऐसा प्रयत्न कीजिये कि इस प्रदेश के सभी आर्य विद्यालय एक सूत्र में ग्रथित होकर शिक्षा सम्बन्धी समस्त बातों पर प्रभावी सुझाव देकर सरकार तथा देश का पथ प्रदर्शन कर सकें।

एक सूत्र मे बांधने का एक ही उपाय है कि सब विद्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से सम्बन्धित हो जाएं।

अभी तक इन प्रदेश के केवल १४० विद्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बध हैं। उनमें से भी अनेक विद्यालयों ने इन्टरमीडिएट एक्ट (संशोधित) ऐक्ट के अन्तर्गत अपनी प्रशासनीय योजनाएं आर्य प्रतिनिधि सभा की नीति व आदेशों के विरुद्ध बना ली हैं। इनमें से कुछ ने राज्य के शिक्षा अधिकारियों की गलत नीति के कारण, तथा कुछ ऐक्ट की भावना को गलत समझ कर ऐसा किया। परन्तु कुछ विद्यालय ऐसे भी हैं जिनकी प्रबन्ध-समितियों में कुछ ऐसे तत्त्व विद्यमान थे, जो परोक्ष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध विच्छेद कर के अपना अधिकार रखना चाहते थे।

इस कारण हमारी संगठित व सामूहिक अवाज उठने नहीं पाती तथा सगठन का ढीलापन सिद्ध होता है।

इसलिये इन १४० सम्बद्ध विद्यालयो की समितियों का तो यह पवित्र कर्तव्य हो ही जाता है कि जिन विद्यालयो की प्रशासनीय योजनाओ मे आर्य प्रतिनिधि सभा की नीतियों व आदेशो के विरुद्ध जो कुछ हो उसे निकाल कर उचित सशोधन कर ले।

यहाँ पर मैं एक और बात चेतावनी के रूप मे बता देना उचित समझता हूं कि कि देश मे आर्य समाज को हानि पहुचाने एवं उस की सस्थाओं को आर्यसमाज से छीनने का अनेक स्थानों पर योजनाबद्ध कार्य हो रहा है और इसलिये अनेक आर्य समाजो और आर्य सस्थाओ में आर्य समाजी के छद्मवेष मे अनेक तत्त्व समय-समय पर हमारी असावधानी के कारण प्रवेश पाते रहते हैं, एवं आर्य समाजो और उनकी संस्थाओं को पथ भ्रष्ट करने की चेष्टा करते रहते हैं। ऐसे तत्त्वों की सहसा पहचान यह है कि वे ऐसे नियमो के पक्ष में रहते हैं, जिनसे आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन मे न रह सकें।

अतः इस दिशा मे मेरा आग्रह यह है कि आर्य सभासद् चुनते समय चरित्र एव सिद्धांत सम्बन्धी नियमों को लागू करने पर पूरा बल दिया जाए तथा जिन विद्यालयों की प्रशासनीय योजनाओं मे ऐसे नियमो की कमी है कि जिन के कारण कार्य कारिणी समितियो में आर्य सभासदो का बहुमत हो सके एव आपातिक अवस्था में आर्य प्रतिनिधि सभा हस्तक्षेप करने की पूर्ण अधिकारिणी हो उन प्रशासनीय योजनाओं में तुरन्त प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० के परामर्श से उचित सशोधन कर लिए जाएं।

आर्य प्रतिनिधि सभा को इस तरह हस्तक्षेप करने के अधिकारो से संस्थाए गैरों के हाथो में जाने से बचाई जा सकेंगी जो नितान्त आवश्यक है। यहां पर मैं आपको यह स्मरण दिलाना उचित समझता हू कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने संस्थाओं सम्बन्धी अपना पूरा उत्तर दायित्व अपने नियम संख्या ४४ के अन्तर्गत प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० का सौंप दिया है।

अतः प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश की आर्य शिक्षा सस्थाओं को एक सूत्र में ग्रथित करके जहां उपर्युक्त आवश्यक कार्यों में आपका सहयोग लेना चाहती है वहां आर्य विद्यालयों की उन्नति के लिए निम्नलिखित कार्यों को भी क्रियान्वित करना चाहती हैं :—

१—विद्यालयों में समय-समय पर उठने वाले प्रबन्ध समितियों के सदस्यों से सम्बद्ध विवादों का सद्भावना पूर्वक यथा सम्भव शीघ्र निबटाने का प्रयत्न :

२—प्रबन्ध-समिति तथा शिक्षकों के बीच उठे विवादों को शीघ्र निबटाने का प्रयत्न एवं आवश्यकता होने पर शिक्षकों अन्य विद्यालयो में स्थानान्तरित करना।

३—राजकीय शिक्षा-विभाग तथा प्रबन्ध समितियो के बीच उपयोगी कार्य के लिए सहयोग देना।

४—यदि आप महानुभावों के सहयोग से प्रदेशीय विद्यार्य सभा पर्याप्त समृद्ध हो जाए तो पिछड़े एवं ऐसे क्षेत्रों में अपने विद्यालय को स्थापित करना जहां अराष्ट्रीय तत्त्व अपने विद्यालयों के माध्यम से भारतीय जनता को पथ भ्रष्ट करते रहते हैं।

५—अभावग्रस्त विद्यालयों को ऋण या अनुदान दिए जा सकें।

६—धर्म शिक्षा [नैतिक शिक्षा] को प्रोत्साहन देने के लिए पारितोषिक तथा छात्र वृत्तियां दी जा सकें।

ये समस्त कार्य तभी सम्पन्न हो सकते हैं जब आप सब महानुभाव सच्चे हृदय से निम्नलिखित कार्यों मे सहयोग देने की कृपा करें :—

१—प्रदेशीय विद्यार्य सभा की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए आपके सामने एक अत्यन्त सुन्दर एवं सरल उपाय रखा जा चुका है। वह यह कि प्रत्येक विद्यालय अपनी कुल छात्र-छात्रा सख्या पर केवल २५ पैसे प्रति छात्र/छात्रा की दर से प्रति वर्ष एक बार अवश्य दे दिया करें।

२—आप महानुभाव प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० एव राज्य शिक्षा विभाग को अधिकार दीजिए कि जिन आर्य विद्यालयों की प्रशासनीय योजनाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा की नीति और आदेशों के अनुसार सशोधन, परिवर्तन व परिवर्धन आवश्यक हैं जो प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० के प्रस्तावों के अनुसार राज्य शिक्षा विभाग स्वीकार कर ले।

३—आर्य विद्यालयों की नीति सम्बन्धी बातों का पत्र-व्यवहार विद्यालयों तथा राज्य शिक्षा विभाग के बीच प्रदेशीय विद्यार्य सभा (उ० प्र०) के माध्यम से हुआ करे।

४—प्रदेशीय विद्यार्य सभा को आर्य विद्यालयों की सहमति अथवा बिना शिक्षको के स्थानान्तरण का अधिकार हो।

५—प्रदेश के समस्त आर्य विद्यालयों को प्रेरणा कीजिये कि जो विद्यालय अभी तक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध नहीं हैं वे अपना सम्बन्ध जोड़ें और उक्त सभा के नियम और अनुशासन को मानें।

६—धर्म शिक्षा के पठन-पाठन का प्रत्येक आर्य विद्यालय में अनिवार्य रूप से समुचित प्रबन्ध हो।

७—प्रदेशीय विद्यार्य सभा के तत्त्वावधान में होने वाली वार्षिक धर्म शिक्षा परीक्षाओं मे कक्षा ७ ९ व ११ के समस्त छात्र और छात्राएं अनिवार्य हुआ करें। धर्म परीक्षाओं के परिणाम छात्रों के परीक्षा फल पत्रकों में अंकित किये जाया करें।

८—प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० के तत्त्वावधान मे होने वाले शिक्षा सम्मेलनों में आमन्त्रित व्यक्तियों को अवश्य सम्मिलित होना चाहिये।

९—प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० के तत्त्वावधान में आयोजित धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविरों में आर्य विद्यालयों को अपने यहां से वांछित सख्या मे शिक्षक/शिक्षिकाओ को अवश्य भेजना चाहिये।

अन्त में मैं आप सबको पुनः धन्यवाद देकर अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूं और आशा करता हू कि आप सभी प्रत्येक विषय पर गम्भीरता से विचार करेंगे और कार्यरूप मे परिणित करेंगे।

आपका—
**रामबहादुर एडवोकेट**
मुरादाबाद

# लन्दन में आर्य समाज की प्रशंसा

[ श्री डी० मकरसिंह पोर्ट लुईस मोरीशस ]

निष्काम कर्म फल लाता है और प्राप्त फल से वे लोग भी खुश होते हैं, जो कर्म से रत लोगों से कोई खास सम्बन्ध नहीं रखते।

किसे मालूम था कि १९१० में मारीशस द्वीप में आर्य समाज की नींव पड़ेगी, वह निष्काम भाव से काम करता रहेगा और जब लगभग आधी सदी पुराना होगा १९६६ में लन्दन की जगद् विख्यात मासिक पत्रिका 'स्तैम्प न्यूज' में उस की सेवा का स्मरण कराया जायगा।

बापू जी की जन्म शती के इस साल में इस द्वीप ने ६ स्मारक डाक टिकट दि० एक जुलाई से जारी किये हैं। उक्त पत्रिका मे इन्हीं का इतिहास दिया गया है, और कहा गया है कि गांधी जी मारीशस मे १९०१ मे पधारे थे, जब उन्होने वहाँ के प्रवासियो को कहा कि विद्या प्रचार पर बल देना चाहिए। आर्य समाज ने जन्म ग्रहण करते ही ६ साल पहले दिये गये सत्परामर्श का ख्याल किया और विद्या प्रचार आरम्भ किया।

'स्तैम्प-न्यूज'—सम्पादक ने प्राध्यापक विष्णुदयाल के सबंध मे जो आर्य संस्था लाहौर डी. ए. वी. कालिज की उपज हैं, यह लिखा कि वे उद्भट विद्वान् होने के साथ-साथ तत्वज्ञानी भी हैं। उन्होने भारत से लौटकर छिन्न-भिन्न पड़े हुए प्रवासियों में एकता स्थापित की, अपने श्रेष्ठ नेतृत्व के कारण सब को अपने पीछे चलाया और उनकी सेवा के परिणाम स्वरूप मारीशस को १९४७ मे नया संविधान प्राप्त हुआ।

आर्य्य समाज की प्रथम बार वहाँ तब चर्चा हुई थी जब लन्दन समाज के १९ वीं शताब्दी के अन्तिम चरण मे लक्ष्मीनारायण नाम के आर्य प्रधान थे। जिन्हे एक बार मेक्स-मूलर ने सन्देश भेजा था।

वर्तमान शती मे पञ्जाब केसरी लाला लाजपत राय लन्दन पधारे हुए थे। जब १९०७ मे उनका बृहत्ग्रन्थ 'आर्य्य समाज' प्रकाशित हुआ था। एक अर्द्ध शताब्दी व्यतीत हुई, तब लन्दन की 'कोटेम्पोरेरी रिव्यू' मे प्रो विष्णु दयाल का एक आर्य समाज सम्बन्धी लम्बा लेख छपा जिसे 'सार्वदेशिक' ने उतारा था।

तत्पश्चात् उनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'दो विख्यात् भारतीय' दि २ अक्टूबर १९६८ मे पेरिस मे मुद्रित हुआ। उसी दिन से गांधी जन्म-शताब्दी का मनाना आरम्भ हुआ था।

प्रो० विष्णु दयाल ने अपने ग्रन्थ मे बताया कि दोनो प्रसिद्ध भारत वासी गुजराती हैं। प्रथम महर्षि दयानन्द हैं और दूसरे महात्मा गान्धी। यह महर्षि का प्रथम जीवन चरित्र है, जो फ्रेन्च मे लिखा गया है।

---

[ पृष्ठ ५ का शेष ]

जी बघवार एम० ई० थे। उन्होने मुझे बताया कि ठाकुर साहब के वचनो को सुनकर उन्हे भी आश आ रहा था कि सत्याग्रह मे बल है। राय बहादुर साहब हैदराबाद के वजीरे आजम महाराजासर किशन प्रसाद जी के समधी थे। ठाकुर साहब के ये शब्द थे धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये आयुभर सत्याग्रह करते-करते वहीं मर जाना है या विजय लेकर लौटना है। ०

—चोढ़ेरा आर्यसमाज के मन्त्री मुशी बाबूलाल जी के पौत्र का मुण्डन सस्कार श्री प० रामदयालु जी शास्त्री ने वैदिक रीत्यनुसार कराया। मास्टर छोटे लाल जी ने चारों वेद आर्य समाज को दान मे दिये। —बाबूलाल अध्यापक मन्त्री

—२२ अक्टूबर को मेरी पत्नी का देहान्त हो गया। उस का अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया। शान्ति प्रसाद आर्य अगवानपुर [मुरादाबाद]

—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भजनोपदेशक श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा ने कायगज तहसील मे प्रभावोत्पादक वैदिक धर्म का प्रचार किया। ६८) वेद प्रचारार्थ दिये गये। प्रधान आस

—२६ अक्टूबर को आर्यसमाज खुरजा में एक ईसाई युवक व उसकी पत्नी ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। शुद्धि के पश्चात् उसका नाम श्याम चक्र व उसकी पत्नी का नाम राधा देवी रखा गया। मन्त्री

—आर्य समाज सिवहारा [बिजनौर] के मन्त्री श्री लाला हरस्वरूप जी की धर्म पत्नी का ७० वर्ष की आयु मे २४ अक्टूबर को देहान्त हो गया। आप का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया। मन्त्री

—२ से ४ नवम्बर तक आर्य समाज हरथला कालोनी मुरादाबाद का द्वितीय वार्षिकोत्सव समारोह से मनाया गया। २९ अक्टूबर को श्री चन्द्र प्रकाश जी के नवजात पुत्र का नाम करण सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। मन्त्री

—आर्य [illegible], श्री [illegible] गोविन्द नगर, कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनाक १ से ३ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। प० रामदयालु जी शास्त्री, प० शांती प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी प० वेदराज जी भजनोपदेशक आदि के वैदिक धर्म पर सारगर्भित एवं ओजस्वी भाषण हुए और वैदिक धर्म का खूब प्रचार हुआ। मन्त्री

—आर्यसमाज जामनगर में गत अक्टूबर मास की १९ तारीख को न्युयोर्क अमेरिका के एक अमेरीकन यहुदी नागरीक श्री स्टेनली जहनेफका जो कि युनिवर्सीटी के समाज शास्त्री के स्नातक हैं। शुद्धिसंस्कार समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। उनका आर्यनाम श्री सुभाष रखा गया। शुद्धि सस्कार के पाश्चत् उनका विवाह सस्कार आर्य महिला श्री शान्ताबेन धर्मदास न्यूयार्क के साथ जो कि न्युयार्क युनीवर्सिटी की समाज-शास्त्र की स्नातिका हैं सम्पन्न हुआ। श्री स्टेनली सुभाष वैदिक धर्म के सिद्धांतो मे गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

रविचन्द्र ओझा मन्त्री,

—आर्यसमाज खडवा मे ९ नवम्बर को ऋषि निर्वाणदिवस एवं दीपावली पर्व मनाया गया। —बसन्तलाल गुप्ता

—आर्य स्त्री समाज बुलन्दशहर का द्वितीय वार्षिकोत्सव २ से १२ अक्टूबर तक बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे २ अक्तूबर से ९ अक्तूबर तक उपनिषदो की कथा श्री सतीश चन्द्र जी ब्रह्मचारी द्वारा एवं पडित वंशराज जी द्वारा भजन हुए। उत्सव मे स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, श्री जगदेव सिह जी सिध्दान्ती पुरुषोत्तम जी ब्रह्मचारी, वेदराज जी भूडिया द्वारा भजनोपदेश आदि से उत्सव सम्पन्न हुआ। और वेद प्रचार के [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा को भेज दिये गये।

—सदस्या स्त्री आर्य समाज

## सार-सूचनाएं

—आर्य स्त्री समाज इलाहाबाद ने एक प्रस्ताव पास करके सरकार से प्रार्थना की है कि वह कोसला कमेटी के प्रस्तावों को कार्यान्वित न करे।

शन्नोदेवी मंत्रिणी

—मेरी बीमारी में जिन लोगों ने मेरी आर्थिक सहायता की तथा सहानुभूति प्रकट की उनके प्रति मैं आभार प्रदर्शित करता हू।

स्वामी अनुभवानन्द मंत्री
आ. स. सोरिख

—आर्य समाजो के उत्सवों पर प्रभाव शाली भाषण देने के लिए सुप्रसिद्ध व्याख्याता श्री प. विश्वनाथ त्यागी बी. ए. को बुलाने के लिए मुझे निम्न पते पर लिखिये।

कुमारी ललिता त्यागी एम. ए.
भारत निवास, मुरादाबाद

### उत्सव

—आर्य समाज बहराइच का वार्षिकोत्सव ८ जनवरी से ११ जनवरी सन् ७० तक समारोह से मनाया जायगा। मंत्री

—आर्य समाज गोण्डा की हीरक जयन्ती ३० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक मनाई जायगी।

—मंत्री

## आर्यसामज देहरादून का ६०वां वार्षिकोत्सव

७ नवम्बर से ११ नवम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के नेता एव विद्वान् महोपदेशक :—

श्री पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री, श्री अमर स्वामी परिव्राजक, श्री स्वामी विवेकानन्द जी, श्री पं० ओम प्रकाश जी आर्योपदेशक, श्री प्रो० राम प्रकाश जी, श्री प्रो० उत्तम चन्द जी शरर इत्यादि कई विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुये तथा ओम प्रकाश जी वर्मा, श्री अमर नाथ जी प्रेमी, श्री वीरेन्द्र सिंह वीर, श्री सुगन चन्द जी, श्रीमती कुन्तल कुमारी जी के मधुर भजनो से जनता विशेष आनन्दित हुई।

—मंत्री

आर्यसमाज फतेहपुर के तत्वावधान में गजराज सिंह व कुमारी उमाकुमारी का शुभविवाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुआ।

वेद प्रकाश नारायण मंत्री

आर्य समाज शान्ता क्रुज बम्बई मे महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अवैतनिक उपदेशक श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह एम. ए. का प्रवचन हुआ।

दिनांक ७ नवम्बर को आर्य समाज मन्दिर मुगलसराय में 'ब्रह्मचारी अखिलानन्द निर्वाण दिवस' तथा ९-११६८ को 'महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस क्रमशः श्री चुन्नीलाल एवं श्री राम रामकिशन कपाही की अध्यक्षता में मनाया गया। मंत्री

—आर्य युवक परिषद् आर्य गुरुकुल सिरसागंज (मैनपुरी) ने दिल्ली के श्री प्यारे लाल जी गुप्त के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

—मंत्री

आर्य समाज लश्कर का ६८ वां वार्षिकोत्सव २३ से २६ अक्टूबर तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर संस्कृत और महिला सम्मेलन भी हुए

—मंत्री

—गुरुकुल आमसेना द्वारा—विजयादशमी पर खरियार रोड में दशहरे पर होने वाले विशाल मेले मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

दीवाली पर ऋषि निर्वाण के उपलक्ष्य मे खरियार रोड में जलूस निकाला तथा आम सेना ग्राम मे विशेषज्ञ और ऋषि दयानन्द का परिचय दिया। इसी समय गुरुकुल की ओर से आचार्य धर्म देव जी ने निर्धन व्यक्तियों को वस्त्र प्रदान किये। —अधिष्ठाता

—सभा के भजनोपदेशक श्री प्रकाशवीरजी के द्वारा आर्य समाज शिवाजी पुर ने बदायूं नगरमे वैदिक धर्म का प्रचार कराया। मुहल्ला प्रचार के अतिरिक्त आपने पार्वती आर्य कन्या संस्कृत इन्टर कालेज बदायूं में प्राचीन नारियों का गौरवमय इतिहास प्रस्तुत किया। उपस्थित नगर की महिलाओं, शिक्षिकाओं और कन्याओं पर उत्तम प्रभाव पड़ा।

## गुरुकुल अयोध्या की सूचना

गुरुकुल अयोध्या की कार्य कारिणी ने निश्चय किया है कि कोई सज्जन श्री स्वामी विज्ञयानन्द जी व पंडित वसुमित्र जी को इस गुरुकुल के नाम पर धन न दें।

—अधिष्ठाता गुरुकुल अयोध्या

—गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम का वार्षिक महोत्सव दिनांक २३ से २६ अक्तूबर तक बड़े ही समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हुए वीर सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने योगासन, प्राणायाम, स्तूप निर्माण फायर जम्प, लेजिम रुकीपर ड्रिल आदि अनेकों प्रकार के क्रीड़ाओं का रोचक कार्य क्रम उपस्थित किया। सरस्वती सम्मेलन में ब्रह्मचारियों ने संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में धारा प्रवाह भाषण देकर जनता को चकित कर दिया। इसी अवसर पर ब्रह्मचारियों को पारितोषिक वितरण किया गया—और गुरुकुल की विद्यारत्न की उपाधि भी दी गयी। इस अवसर पर बिहार, बगाल, नेपाल, संयुक्त प्रदेश आदि के अनेकों यात्री पहुचे थे। उत्सव पूर्ण सफल रहा।

मुख्याधिष्ठाता—महादेव शरण

## आर्य बन्धुओं के लिये स्वर्ण अवसर

सब आर्य सज्जनों को सेवा में सहर्ष सूचित किया जाता है कि, हम वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम के लिए एक सुन्दर योजना बना रहे हैं। इस आश्रम मे धर्म ग्रन्थों के स्वाध्याय का, तथा भोजनादि का सब प्रबन्ध होगा। आश्रम में रहने के इच्छुक महानुभाव अपना खर्च स्वयं देंगे। जो सज्जन आश्रम में निवास के इच्छुक है, कृपया निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें, अथवा आकर स्वय मिले।

—रामप्रताप अग्रवाल
दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय
हिसार (हरियाना)

—१५ अक्तूबर को केन्द्रीय आर्य समाज गोरखपुर का संगठन किया है। जिसके अधिकारी निम्न चुने गए हैं। प्रधान श्री मोहनलाल जी उपप्रधान, श्री सूर्यबली, श्री प्रमोद चन्द्र जी, कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी।

—सुरेश चन्द्र वेदालंकार
मंत्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा

### निर्वाचन—

—बोकारो स्टील सिटी में ८ अक्तूबर को आर्य समाज की स्थापना हो गयी, निर्वाचन इस प्रकार हुआ। प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार जी, मंत्री श्री कुलदीप राय कपूर, कोषाध्यक्ष श्री ओ३म्प्रकाश भाटिया। मंत्री

प्रधान—श्री गुरदयाल शर्मा
मन्त्री—श्री आदर्श कुमार भोगा
कोषाध्यक्ष—केदारनाथ सूद

—आर्य समाज न० २, तिलक नगर नई दिल्ली

प्रधान—श्री वीरभान वीर प्रिंसीपल
उपप्रधान—डा. बी एस. आर्य
" " —श्रीमती कौशल्या देवी जी
मन्त्री—श्री अशोक कुमार दुआ (इन्जिनियर)
कोषाध्यक्ष—श्री नन्दलाल जी

—आर्य समाज बहाबराबाद

प्रधान—श्री चौ० मुख्तारसिंह जी
उपप्रधान—„ मा० बलवंत सिंह जी
मन्त्री— „ रूपराम जी
उपमंत्री— „ मा. सत्यपालसिंह जी
कोषाध्यक्ष— „ सुलेखचन्द जी

—आर्य समाज मनियर-बलिया

प्रधान—श्री लक्ष्मण सिंह जी
उपप्रधान—श्री बंशीधर प्रसाद जी
मन्त्री—श्री अवध बिहारी पांण्डेय ज
उपमंत्री—श्री भृगुनाथ प्रसाद जी
कोषाध्यक्ष—श्री परमेश्वर प्रसाद ज

—आर्य समाज पानीपत

प्रधान—श्री दिलीपसिंह जी आर्य
उपप्रधान—श्री योगेश्वर चन्द
मंत्री—श्री मेघराज आर्य
उपमंत्री—टिकन राय बत्रा
प्रचार मंत्री—श्री ठाकुर दास बत्रा
कोषाध्यक्ष—श्री ईश्वर चन्द सर्राफ

—जिला आर्य उप प्रतिनिधिसभा हरदोई

प्रधान—श्री पं. रघुनन्दन शर्मा
मन्त्री—श्री अनन्तराम शर्मा
कोषा०—श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता
निरीक्षक—बाबू अवध बिहारी वर्मा

—अनन्तराम शर्मा

प्रिय महोदय, नमस्ते !

दक्षिण अफ्रीका में ३ मास रहकर अब भारत लौट रहा हूँ। दक्षिण अफ्रीका की इस यात्रा मे नैटाल, ट्रान्सवाल और केप-प्राविन्स में सब मिलाकर १२५ से ऊपर व्याख्यान दिये। ३१ अक्तूबर १९६९ को आर्य प्रतिनिधि सभा के भवन मे ५ देवियों के यज्ञोपवीत सस्कार कर ये। इससे पूर्व दक्षिण अफ्रीका मे किसी आर्य महिला ने यज्ञोपवीत नहीं धारण किया था। इस दृष्टि से यह ऐतिहासिक घटना समझनी चाहिये। इन आर्य महिलाओ के नाम (१) श्रीमती विद्यावती लालसिंह (२) श्रीमती शन्नो देवी परमासिंह (३) श्रीमती प्रोधुन कृपानन्द, (४) श्रीमती प्रभावती नानकचन्द और (५) श्रीमती अम्बिला परमेश्वर हैं।

—सत्यप्रकाश

## आर्यसमाजो और आर्य बन्धुओ से सादर निवेदन— आर्यमित्र के ग्राहक बनिए, वार्षिक १०)

१—यदि आप देश देशान्तर के समस्त आर्य जगत् का समाचार जानना चाहते हैं, तो आर्यमित्र के ग्राहक बनिये।

२—आर्यमित्र आर्यसमाज का सबसे पुराना और देश देशान्तर में जाने वाला आर्य प्रतिनिधि सभा (उ प्र) का प्रमुख पत्र है।

३—आर्यमित्र अभूतपूर्व विशेषाङ्कों को प्रकाशित करता है, जो ग्राहकों को बिना मूल्य दिये जाते हैं।

४—महर्षि के काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के पूर्ण समाचार प्रति सप्ताह जानने के लिये आर्यमित्र के ग्राहक बनिये।

५—आर्यमित्र मे समस्त परिवार के पढ़ने योग्य सामग्री पर्याप्त रहती है। जैसे महिला जगत्, बाल जगत सक्षिप्त समाचार इत्यादि।

६—आर्य मित्र मे प्रति सप्ताह वेदमन्त्रों की सुन्दर व्याख्या प्रकाशित की जाती है। जो स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिये बडी आकर्षक और शान्तिदायक रहती है।

७—आर्यमित्र मे विद्वत्तापूर्ण शास्त्रीय लेख प्रति सप्ताह छपते हैं।

८—आर्यमित्र मे शास्त्रीय शका समाधान आपको पढने को मिलेंगे।

९—आर्यमित्र में सुन्दर और सिद्धान्तो पर कविताएँ उच्च कवियो की प्रकाशित की जाती हैं।

१०—आर्य जगत् मे जो भ्रामक गलत प्रचार कुछ लोग फैला रहे हैं, उनका सही हाल आर्यमित्र द्वारा ही आपको प्राप्त हो सकता है।

नोट—अत आप आज ही १०) मनीआर्डर द्वारा भेजकर आर्यमित्र के ग्राहक बनें, जिससे इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषाङ्क आपको विना मूल्य मिल सके।

निवेदक
व्यवस्थापक आर्यमित्र
—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
—५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खण्डिनी पताका-शताब्दी महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ :—

सब आर्य बन्धुओं को विदित हो कि वाराणसी एवं गोरखपुर कमिश्नरियों के आर्य समाजों के आर्य बन्धुओं के द्वारा काशी शास्त्रार्थ एव पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी की स्वागत कारिणी समिति एव विभिन्न विभागो के प्रबन्धार्थ १२ उपसमितियो का निर्माण हो गया है। स्वागत समिति अपने आर्य बन्धुओं के आतिथ्य-निवास आदि की उचित व्यवस्था करने मे सलग्न है।

आवास-निवास स्थान का प्रबन्ध डी० ए० वी० डिग्री कालेज व डी० ए० वी० इन्टर कालेज तथा आदर्श सेवा इन्टर कालेज (तीनों ही एक दूसरे से सटे हुए हैं) वाराणसी में किया गया है। प्रान्तवार आवास बनाए जा रहे हैं, और निवासाध्यक्ष मनोनीत किये जा रहे हैं। निवास नि शुल्क होगा। भोजन—यात्रियों को अच्छा और शुद्ध मिले, इसके लिए ढाबों का प्रबन्ध किया गया है।

स्टेशनों पर स्वयम् सेवकों का प्रबन्ध रहेगा।

खुले अधिवेशन के लिए पडाल दयानन्द डिग्री कालेज वाराणसी मे तैयार किया जा रहा है।

यात्रियों को सर्व प्रकार की सुविधा देने का स्वागत समिति प्रबन्ध कर रही है। आशा की जाती है कि आर्य नर नारी अपने २ पहुचने की सूचना से तुरन्त 'स्वागत कारिणी समिति आर्य समाज काशी बुलानाला वाराणसी' को देकर कृतार्थ करेंगे।

शोभा यात्रा के लिए आर्य समाजें अपने २ बोर्ड लाने की कृपा करें। यदि बने न हो तो अभी से बनाने की कृपा करें।

**प्रेमचन्द्र शर्मा** — सभा मन्त्री

**महेन्द्र प्रताप शास्त्री** — सयोजक

# क्या वेद में इतिहास है ?

**(ले० यजुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा, मीमांसातीर्थ)**

ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रकाश सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ, लेकिन पाश्चात्य व कतिपय भारतीय विद्वानों ने ऋषि दयानन्द कृत सत्य भाष्य की उपेक्षा कर वेद मे इतिहास माना है । इसका ही उत्तर यह खोजपूर्ण व प्रामाणिक ग्रन्थ है । मूल्य २) रु० ५० पैसे ।

## कर्म मीमांसा

**(ले० आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री)**

विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में कर्म के विविध विषयों तथा कर्तव्याकर्त्तव्य पर बहुत सूक्ष्म विवेचन किया है । स्व० श्री पुरुषोत्तम दास टन्डन, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, स्व० स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी स्व० पं० गंगाप्रसाद जी, स्व० आचार्य नरदेव जी शास्त्री, श्री प० प्रियव्रत जी व पं० धर्मदेव जी आदि ने इसकी भूरि २ प्रशंसा की है । मूल्य २) रु० २५ पैसे ।

## वैदिक-इतिहास-विमर्श

**(ले० आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री)**

मेकडानल की "वैदिक इन्डेक्स" का समुचित उत्तर वैदिक इतिहासो का निर्णय देवतावाद की वैज्ञानिकी स्थिति पर अद्भुत व अनोखी पुस्तक मूल्य ७) रु० २५ पैसे सजिल्द ८) रु०

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद् की विद्या विनोद, विद्यारत्न, विद्या विशारद व विद्या वाचस्पति की परीक्षायें मण्डल के तत्वाधान मे प्रतिवर्ष होती हैं । इन परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें अन्य पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त हमारे यहां भी मिलती है ।

चारों वेद भाष्य, स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ तथा आर्य समाज की समस्त पुस्तकों का प्राप्ति स्थान :—

## आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड

**श्रीनगर रोड, अजमेर ।**

ग्रन्थो का सूचीपत्र तथा परीक्षाओं की पाठ्यविधि मुफ्त मगावें ।

# धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् की रजि० सिद्धांत प्रवेश सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धान्तालकार, सि० शास्त्री, सिद्धान्ताचार्य की परीक्षायें आगामी दिसम्बर जनवरी मे समस्त भारत व विदेशो मे होंगी । उत्तीर्ण होने पर तिरगा प्रमाण-पत्र दिया जाता है । आबाल वृद्ध, नर-नारी सोत्साह भाग ले रहे हैं ।

१५ पैसे के टिकट भेज कर नियमावली मगाइये ।

आदित्य ब्रह्मचारी
यशपाल शास्त्री
प्रधान

आचार्य मित्रसेन
एम. ए. सिद्धातालकार
परीक्षा मन्त्री

**भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद्**

**सेवा-सदन कटरा, अलीगढ़**

# सत्यार्थ-प्रकाश

अपूर्व संस्करण

ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का नितान्त नवीन एवं परिष्कृत सस्करण मण्डल के अध्यक्ष डा० सूर्यदेव शर्मा के शुभ दान से प्रकाशित होने के कारण प्रचारार्थ रियायती मूल्य केवल २ रु० ५० पैसे मे आर्यजनता को भेंट है । उस पर भी कमीशन १०) रु० तक ६½ ./, १० से ऊपर २५) रु० तक १२½./, २५) से ऊपर ५०) रु० तक १५ ./, ५०) से ऊपर २००) रु० तक २० ./ व २०० रु० से ऊपर २५ ./ । आर्डर के साथ १/३ धन भेजना आवश्यक है ।

७२० पृष्ठ की इस पुस्तक को जो २४ पौंड के सफेद कागज पर छपी है, इतने सस्ते मूल्य में मगाकर धर्म प्रचार के इस अपूर्व अवसर से लाभ उठाइये ।

आर्ष पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र मुफ्त मंगावें ।

**आर्य साहित्य मण्डल लि०**

श्रीनगर रोड, अजमेर

'तीस वर्षों से आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसो रोगो की अकसीर दवा'

एजेण्ट चाहिये··· **कर्ण रोग नाशक तैल** ······ रजिस्टर्ड

कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, कुलना, सीटी-सी बजना, आदि कान के रोगों मे बड़ा गुणकारी है । मूल्य १ शीशी २ रुपये, एक दर्जन पर ४ शीशी कमीशन की अधिक देकर एजेन्ट बनाते हैं । एक दर्जन से कम मगाने पर खर्चा पैकिंग-पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा । बरेली का प्रसिद्ध रजि. 'शीतल सुरमा' आंखो की रक्षा के लिये प्रति दिन प्रयोग करे, आंखों के लिए अत्यन्त गुणकारी है । इसके प्रयोग से आंखों मे सुखदायक ठडक उत्पन्न होती है रोजाना प्रयोग करने से निगाह तेज हो जाती है, और आखें कभी दुखने नहीं आतीं । आंखों के आगे अंधेरा सा आना, तारे से दिखाई देना धुंधला नजर आना, खुजली मचना, पानी बहना, आंखों की जलन, सुरखी और रोहो को शीघ्र आराम कर देता है । मूल्य ३ ग्राम की शीशी रु० २-२५ पैसे ।

'कर्ण रोग नाशक तैल' सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद, यू० पी०

## विश्वकर्मा वंशज बालकों को-

# ७०००) का दान

## श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकरास की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार भाद्रपद सम्वत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की ।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओ के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी ।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई मे ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक हैं ।

**—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ**

## विचार-विमर्श

# भारत ईसाई-समाज भारतीयकरण के पथ पर

(ले०-श्री पं० शिवदयालुजी मेरठ)

पुर्तगाली और बरतानवी शासनकाल में भारतीय ईसाइयों में पाश्चात्य रीति रिवाजों का तथा पूजा पद्धति का अन्धा अनुकरण किया गया है और इस अनुकरण को ईसाइयत का एक अङ्ग बना दिया गया जबकि ईसा एशिया का था और ईसाइयत का उद्गम स्थान निश्चय एशिया था।

भारत में जब स्वतन्त्रता प्राप्ति की लहरें चलीं तो भारत के ईसाइयों ने अपने आपको उनसे अछूता रखा। लहरों के साथ-साथ भारत की हिन्दू जनता में अपनी परम्पराओं, प्रथाओं और मर्यादाओ के प्रति आस्था जागृत हुई किन्तु भारत के ईसाई पाश्चात्य परम्पराओं आदि के दास बने रहे और विदेशी तत्व के रूप मे उनको देखा जाने लगा।

श्रीयुत एन० लक्ष्मी महोदय जब बम्बई के आर्कडायो सिस के संचालक फादर मोनसाइनर साइमन पीमेण्टस् से मिले तो उन्होंने उपयुक्त विचार प्रगट करते हुए कहा कि ईसाई संगठन का यह स्पष्ट आदेश है कि संसार के ईसाइयों को अपने देश की रीति-रिवाजों परम्पराओं और प्रथाओं को अपनाना चाहिये, किन्तु विदेशी दासता के युग में भारत के ईसाइयो ने विदेशी शासकों का अन्धानुकरण करके अपने आपको भारत में विदेशी तत्त्व ही बनाये रखा।

अब समय आ गया है कि हम स्पष्ट रूप से भारतीय सभ्यता को अपनावें और भारतीय समाज का अङ्ग बनकर रहें।

३ अगस्त १९६९ ई० को अपने चर्च के भाषण मे फादर पिमेण्ट ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हमको जो विदेशी शिक्षा अब तक दी जाती है कि केवल ईसाई धर्म ही सच्चा है और सब झूठे हैं इससे ऊपर उठना होगा हमें सब धर्मों में विद्यमान सत्यों को अपनाना होगा और दम्भ से बचना होगा। दूसरे धर्मों को झूंठा कहना निश्चय दम्भ है।

फादर पिमेन्ट ने बतलाया कि भारत कैथालिक बिशपो के एक सम्मेलन मे एक कमीशन नियुक्त किया गया था जिसने अपनी रिपोर्ट मे ईसाई चर्च के समक्ष भारतीय करण की दिशा मे एक १२ सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो निम्न प्रकार है—

१—जूते उतारकर उपासना भवन मे भूमि पर फर्श पर बैठना।

२—सिजदे को त्याग कर मस्तक को हस्ताञ्जलि सहित नमन करना।

३—पुरोहित तथा उपासकों द्वारा पंचाङ्ग-प्रणाम का किया जाना।

४—चुंबन के स्थान पर अंगुलियों द्वारा नेत्रों व मस्तक का स्पर्श करना।

५—शान्ति-चुम्बन के स्थान पर अंजली हस्त होना।

६—धूप अगर बत्ती आदि सुगन्धित द्रव्यो को विशेष रूप से उपासना भवन मे जलाना।

७—रोमन प्रथा के अनुसार वस्त्र धारण के स्थान पर अगवस्था व उपस्तरण धारण करना।

८—कारपोरल पात्र को स्थाली में परिवर्तित कर देना।

९—मोमबत्ती के स्थान पर चर्च में तेल के दीपक जलाना।

१०—दीप दान और प्रसाद की प्रथा चालू करना।

११—ताल स्वर के साथ सम्मिलित प्रभु बन्दन कीर्तन करना।

१२—पुष्प धूप दीप के साथ आरती करना।

इस स्थल पर पाठकों को यह भी स्मरण कराना आवश्यक है कि भारतीय कैथालिक ईसाई चर्च ने कितने ही वर्ष पूर्व ईसाई बनाते समय पीटर आदि विदेशी नाम करण को त्याग दिया था और शुद्ध संस्कृत नामो को मान्यता देने का निश्चय किया था। मृदुला, मञ्जू, ऊषा, प्रभा, प्रभात, प्रवीण अरुण आदि नामों को अपना लिया पूजा बलिदान के अवसर पर विदेशी शैम्पियन शराब के स्थान पर द्राक्षारस का प्रयोग चालू कर दिया।

विदेशी सभ्यता के गुलाम ईसाइयो मे उन सुधारो के कारण हलचल मच गई है और विशेषकर बम्बई नगर मे जो पाश्चात्य सभ्यता में बुरी तरह से रग गया है वहां जूते उतारकर उपासना मे फर्श पर बैठना कठिन हो रहा है। बम्बई की तो बात ही निराली ठहरी वहा तो भारतीय सभ्यता संस्कृति के ठेकेदार आर्य समाजी भी अपने उपासना भवन मे जूते पहने कुर्सियों पर बैठते है।

भारत के रोमन कैथालिक चर्च ने भारतीयकरण की दिशा में जो पग उठाये हैं उनसे आर्यसमाज को भी कुछ शिक्षा लेनी चाहिये। हम देखते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता के दास आर्यसमाजी अपने मन्दिरों में कोट पैण्ट व पाजामों में जाते हैं यहां तक कि यज्ञ वेदी पर भी पैन्ट पाजामा पहने जा विराजते हैं। पुरोहित मना करता है तो उसको दकियानूसी बतलाते हैं। अपनी सभ्यता को ठुकराते इन गुलामों को लज्जा नहीं आता। यज्ञ वेदी पर घुस कर भी अभारतीय तथा अनार्य वेशभूषा वाले को बैठने न दिया जाय। विवाह संस्कार के समय पर पैन्ट पैजामा पहन कर बैठते हैं और धौत वस्त्र धारण कराते पुरोहित को भय लगता है। अपनी सभ्यता की रक्षा करने का दावा करने वाले आर्य समाजियों को दिल पर हाथ रख कर सोचना चाहिये। जिन लोगों के पास धोतियां नहीं हैं उनके लिये आर्यसमाज मन्दिर में कुछ लुंगियां रखी जायें और वेदी पर बैठने से पूर्व पैन्ट पाजामा मोजे उतरवाकर पाद प्रक्षालन करा लुंगी धारण कराई जानी चाहिये।

पाश्चात्य सभ्यता के दास आर्यसमाजी यज्ञोपवीत भी उतार कर खूंटी पर धर देते हैं। उनको चमड़े का तस्मा व पेटी नहीं अखरती यह पवित्र सांस्कृतिक चिन्ह अखरता है।

विदेशियो द्वारा विदेशी मत दीक्षित भारतीय हिन्दू तो भारतीय एवं हिन्दू परम्पराओं रीति-रिवाजों को अपनाते जा रहे हैं और हम निर्लज्जतापूर्वक पाश्चात्य सभ्यता के दास बनते जा रहे हैं।

अतः मेरा आर्यसमाजों से यह सादर साग्रह अनुरोध है कि वह अपने पर्वों, संस्कारों, उत्सवों, सत्सगो में पूर्ण आर्य वेशभूषा रीति प्रथाओं को दृढ़तापूर्वक अपनावें।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.–६०

सृष्टि संवत् १ अरब ९६ करोड़ ... ४ वर्ष
[ दिनांक ३० नवम्बर सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तरप्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No. L. 60
पता–'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष: २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

# साहित्य-समीक्षण

**विश्व ज्योति**–( गुरु नानक अंक ) संपादक–विश्वज्योति सम्पादक मण्डल। वार्षिक शुल्क १०), इस अंक का मूल्य २) वसन्त-साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)

विश्वज्योति १८ वर्ष से साधु आश्रम होशियारपुर से निकल रही है। यह सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है। इस में सभी प्रकार के लोगों के लिए पठनीय सामग्री रहती है। बालकों के लिए तो इस मे बहुत सुन्दर शिक्षाप्रद सामग्री दी जाती है।

प्रस्तुत अंक 'श्री गुरु नानक अंक' के रूप में निकला है। गुरु नानक के जन्म को पांच सौ वर्ष हो रहे हैं, सारे देश और विदेश में इनकी पांच सौ वर्ष की शताब्दी मनाई जारही है। गुरु नानक देव सुविख्यात संत हुए हैं, भारतीय संत परम्परा में उनका स्थान उच्च है। वह सिख धर्म के प्रवर्तक थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को सत्य पवित्रता, न्याय और सदाचार की उत्तम शिक्षा दी। वे मानव सेवा को अपना धर्म समझते थे। उन्होंने एक ईश्वर की पूजा का प्रचार किया। जाति-पांति के विरुद्ध आवाज उठाई। मृत श्राद्ध का उन्होने प्रेम पूर्वक खण्डन किया। उनकी वाणी में ऐसी मधुरता थी कि उनके उपदेश सुनकर श्रोता मन्त्र मुग्ध हो जाते थे। इस अंक के पढने से गुरु नानक के जीवन और उनके कार्य व शिक्षा का विस्तृत विवरण पाठको को मिलेगा। मानसिक शान्ति के इच्छुकों को यह अंक अवश्य पढ़ना चाहिये।

**वैदिक धर्म**–साप्ताहिक (उर्दू) जालन्धर छावनी। सपादक श्री प्रिंसिपल राम चन्द्र जी जावेद एम ए वार्षिक शुल्क ८)

श्री प्रिं० राम चन्द्र जी जावेद आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् और लेखक हैं। आप वैदिक धर्म का सपादन बड़े परिश्रम उत्साह और लगन से करते हैं। वैदिक धर्म के लेख, कविताएँ सपादकीय लेख व टिप्पणिया सभी महत्व पूर्ण और शिक्षाप्रद होते हैं। प्रस्तुत २५ सितम्बर का अंक सध्या प्रार्थना अक के नाम से पुस्तकाकार निकला है। इस अंक में पहले सध्या मन्त्र हिन्दी मे, फिर उर्दू मे दिये हैं। उनका अर्थ कविता मे उर्दू भाषा में दिया गया है। सध्या के मन्त्रो के पश्चात् प्रार्थना के आठो मन्त्रों का कविता मे भावार्थ दिया है। अन्त मे भजन दिये गये हैं। पंजाब के पुराने कवि श्री केवल कृष्ण रिटायर्ड मुंसिफ की बनाई हुयी सध्या की पुस्तक थी, उसी को अब इस रूप मे और पुराने वेद मन्त्रो का सग्राह करके सध्या प्रार्थना अंक के रूप मे यह वैदिक धर्म के पाठको के हितार्थ भेंट किया गया है। उर्दू जानने वालो के लिए यह अङ्क उत्तम है। भजनगाने योग्य हैं।

**वैदिक-यज्ञ-विज्ञान**–लेखक–डा श्रीराम आर्य प्रकाशक–वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज। पृष्ठ-संख्या–१६०, मूल्य–१–८० पैसा।

इस पुस्तक के लेखक आर्य साहित्य के सुप्रसिद्ध निर्माता श्री डा० श्रीराम जी आर्य हैं। उनकी अन्य पुस्तकों के समान ही यह पुस्तक भी बहुत उपयोगी है। विषय नाम से ही स्पष्ट है। मुद्रण और कागज उत्तम एव मूल्य उचित है। इसमें प्रार्थना, मन्त्रों, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण और प्रधान होम के सभी मन्त्रों के अर्थों के साथ वैदिक-यज्ञ-पद्धति का उल्लेख करके, ऋतु-अनुकूल हवन-सामग्री की निर्माण-विधि औषधियों के गुण-दोष आदि भी दर्शाये गये हैं। इसका यज्ञ-विज्ञान प्रकरण मौलिक और सर्वाधिक महत्व पूर्ण है। बहुत वर्षों के बाद यह ऐसी उत्तम पुस्तक प्रकाश में आई है। इस का प्रचार खूब होना चाहिये।

**कुरान की विचारणीय बातें**–लेखक–श्री डा० श्रीराम आर्य प्रकाशक–वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज। पृष्ठ-संख्या–३२, मूल्य–००–४० पैसे प्रति

जो लोग विभिन्न मत-मतान्तरों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक अध्ययन के प्रेमी हैं, उनके लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। सुयोग्य लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। इस की पूरी खूबियां तो देखने पर ही ज्ञात होंगी। इस पुस्तक के कुछ विशेष आयोजन हो सकें तो उत्तम है। इस का प्रकाशन उर्दू में भी होना ही चाहिये।

**आत्म-ध्वनि**–लेखक–श्री प्रेम प्रकाश। प्रकाशक–महाशय कुन्दन लाल, प्रेम प्रकाश। धुरी मण्डी [पंजाब] पृष्ठ संख्या–१०४, मूल्य–७५ पैसे

उत्तमोत्तम सोलह लेखो का यह सग्रह युवक वर्गों के लिये बहुत उपयोगी है। लेखों के शीर्षक इस प्रकार हैं–

मानव, पाप का ताप, समाज, विचार विनिमय, कर्म-फल, मन इन्द्रियां, आत्म-सत्ता, प्रार्थना, धन, दाता, देवयज्ञ, माता-पिता, शक्ति, मोक्ष, इच्छा और भक्त-भावना। छात्र वर्गों में इस पुस्तक का प्रचार विशेष रूप से होना चाहिये। इससे उन्हे उपयोगी जानकारी मिलेगी, विचारो मे दृढ़ता आयेगी और दृष्टि-कोण की पवित्रता एव विशालता भी उन्हें प्राप्त होगी। मुद्रण सुन्दर, टाइप मोटा और कागज पुष्ट है। पुस्तक सुन्दर है।

**आर्योदय**–[दिवाली विशेषांक] सम्पादक श्री मोहन लाल जी मोहित। प्रकाशक–आर्य सभा मारिशस, वार्षिक मूल्य रु० ७ ५० सेंट।

श्री मोहन लाल जी मोहित मौरीशस के सुप्रसिद्ध विद्वान् आर्य नेता और लेखक हैं। आपके लेख आर्य मित्र के विशेषांकों में भी प्रकाशित हुआ करते हैं। आप ऋषि दयानन्द जी के सच्चे भक्त हैं। आपके सम्पादकत्व मे ही आर्योदय साप्ताहिक निकलता है। इस अंक में मौरीशस के प्रसिद्ध विद्वानों के लेख दिये गये हैं। श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की ऋषि गुण गान कविता अच्छी लिखी गयी है। पत्र की छपाई सफाई उत्तम है। श्री मोहित जी का उद्योग प्रशंसनीय है।

–नारायण गोस्वामी

स्वत्वाधिकारिणी, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिये ज. वी. अर्यभास्कर ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
ओ३म्

# आर्य-मित्र

वय जयेम ] लखनऊ—रविवार मार्गशीर्ष १६ शक १८९१ मार्गशीर्ष कृ० १३ वि० स० २०२६ दि० ७ दिसम्बर १९६९ ग्म जात

# वाराणसी में शताब्दी समिति की बैठक

## —वाराणसी और गोरखपुर मण्डलों के आर्यों में उत्साह

## ३२,००० रु० से अधिक दानों की घोषणा

### शताब्दी - समारोह का कार्यक्रम

*

२९ नवम्बर १९६९ को आर्यसमाज दुलानाला, वाराणसी मे शास्त्रार्थ शताब्दी समिति की बैठक श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य की अध्यक्षता मे हुई। श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ससद सदस्य श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० ए० श्री राजितसिंह जी श्री कैलाशनाथ सिंह जी आदि के अतिरिक्त वाराणसी और गोरखपुर मण्डलो के लगभग ८० प्रतिनिधि उपस्थित थे। सर्वप्रथम सयोजक तथा उप सयोजक ने अब तक हुये कार्य का विवरण तथा भावी कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की। उसके पश्चात अनेक प्रतिनिधियो ने अपने सुझाव दिये।

अन्त मे प्रधान जी ने धन के लिये अभ्यर्थना की जिसके परिणामस्वरूप वहीं पर ३२ ०००) रु० से अधिक की घोषणाए की गयी। उसका विवरण पृष्ठ ३ पर दिया जा रहा है।

रात्रि को दूसरी बैठक हुई। उसमे शताब्दी समारोह का विस्तृत कार्यक्रम नि[illegible] किया गया। यह शीघ्र ही प्रकाशित कर आर्यसमाजो मे भेजा जायेगा

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री
सयोजक

| वर्ष | अंक |
|---|---|
| ७१ | ४५ |

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पैसे

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढ़िए !

# जो मानव को प्रभु मिलन की चाह, ताके हेतु यह सरल-सीधी राह

[लेखक–श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द जी अध्यक्ष वेदोक्त यज्ञ प्रचारक मडल] ३ दीवानहाल दिल्ली–६

मानव हृदय में यह अभिलाषा सर्वैव जागृत होती ही रहती है, ऐसी तरगें उठती ही रहती है, कि मानव जीवन को प्रदान करने वाली उस महान् शक्ति के, उस महान् ज्योति के दर्शन करूँ। उस से मिलाप करूँ। जिसने इस सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है, साथ ही साथ मानव की रचना से पूर्व पशु पक्षियो को रचा, उससे भी पूर्व मानव और पशु पक्षियो के लिए उपयोगी सकल पदार्थों की भी रचना की गई थी, उस ऐसे रचैयता प्रभु परमेश्वर के दर्शन करके जीवन सफल करलूं। जिससे आत्म शान्ति की उपलब्धि हो जाये।

तब मानव विचारने लगा, कि उसके दर्शन पाने के लिए मुझे कहां जाना है, उसे प्राप्त करना गुरुजनो ने मेरा लक्ष्य बताया है। उस लक्ष्य की सिद्धि के लिए मुझे अब उसका पता लगाना अत्यावश्यक है। तब वह जिधर जाता, जिसे मिलता, उसका पता पूरी तरह जानने का यत्न करता। उसे जो मिलता वह नई समस्या उसके सम्मुख, उसके सामने खड़ी कर देता, एक महानुभाव मिले, कहने लगे–भोले बन्धु! तू क्या चाहता है, उस भगवान् के दर्शन? तो ले सुन, वह भगवान्-भगवान्, कोई नहीं है, यह तो केवल मात्र एक भय खडा कर दिया है, जिससे जनता प्रभुनाम के भय से डरती रहे अन्यथा और कुछ नहीं है। समझे भाई–समझे, इस बखेड़े मे क्या पड़े हो, खाओ पियो और मौज उड़ाकर जीवन बिताओ। अरे यदि कोई—

भगवान् नाम की वस्तु होती-तो उसे आज तक कोई न कोई तो देख ही पाता, परन्तु ऐसा तो कोई दिखाई नहीं देता जो यह कहे कि मैने उस प्रभु के दर्शन किये हैं, ऐसे महानुभाव तो मिलते हैं कि जो यह कहे कि ससार की रचना करने वाले के दो नहीं चार हाथ हैं, आठ हाथ हैं, उसके चार मुख हैं, परन्तु ऐसी सब बातें कह देने के पश्चात् ही वह इस बात का उत्तर देने मे मूक हो जाते हैं, कि वह कहा और किस रूप में है, अत: ज्ञात हुआ कि उस परम पिता परमेश्वर की खोज इस भान्ति पूरी करना कठिन ही हैं, तो फिर क्या विधि प्रयुक्त की जाये, जिससे उन को प्राप्त करने मे मानव समर्थ हो। मिलने की चाह की पूर्ति हो, यह बताओ इस अभिलाषा को कैसे पूरा किया जाए। उस सरल मार्ग का अवलोकन करा दो। इसी कामना मे तो मैने अभी-अभी सबके साथ मिल बैठ कर गायत्री मत्र का बडी श्रद्धा-भक्ति एव प्रेम के साथ जाप किया हैं, उसके अर्थों पर भी विचार किया है–क्योंकि कल वहा एक धर्म मन्दिर

मे एक महात्मा बडा ही सुन्दर–पवित्र और सारगर्भित उपदेश देते हुए कह रहे थे कि इस गुरु मत्र गायत्री मत्र का जाप प्रत्येक मानव को अर्थों सहित विचार करके करना चाहिये।

ओ३म्। भूर्भुव: स्व:। तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योन: प्रचोदयात्॥

सरलअर्थ–ज्ञान-कर्म–उपासना के प्रेरक प्रभु-परमेश्वर हम आप को वरण करते हैं, अर्थात् धारण करते हैं, आप हमे सद् बुद्धि की प्रेरणा दीजिए, जिससे हम सदा-सदा सद् मार्ग पर चलते रह कर अपने जीवनों के उत्थान के मार्ग की ओर न ढाते रहें।

हमने इस गुरु मत्र का जाप किया, अर्थो को विचारा उसके पश्चात् फिर इस भांति भगवान् के चरणो मे प्रार्थी हुये।

प्रार्थना—हे! पारब्रह्म परमेश्वर, जगत् पिता जगदम्बे! आप हमारी बुद्धियों को पवित्र-निर्मल निर्भ्रान्त बना दीजिए, कि जिससे वह धारणावती और मेधावती हो जाये। और फिर हम इस योग्य बन जायें, समर्थ हो जाएँ। आपके दर्शन करने योग्य हो जावे।

प्रार्थना की समाप्ति पर अनायास ही एक बडे जोर का धमाका हो जाने के साथ ही एक ध्वनि होने लगी: भक्त! प्यारे भक्त! क्या तू मुझे मिलना चाहता है, यदि वास्तव मे तेरी यही इच्छा है, तो तू उठ इधर-उधर भटकना छोड़कर एक ओर होकर इधर इस मार्ग पर बिना खटके के चला आ। मार्ग सीधा और सरल है, संसार का प्रत्येक प्राणी तुझे यह कहेगा, मेरे साथ आ मेरे पीछे आ। मैं तुझे उस स्थान पर ले चलूगा। वह सब पथ भ्रष्ट करने का यत्न करते हैं, मैंने तो मानव को प्रारम्भिक ज्ञान मे ही यह चेतनो दे दी थी कि जिससे वह किसी भ्रम मे न फँसे। परन्तु मानव ने उस चेतना से जब लाभ उठाना छोड़ दिया, तो अनेकानेक भ्रमों में फँसता चला गया, मेरे दिये प्रकाश को, उस ज्योति को त्याग देने से यह सारी अपदायें मानव को सहन करनी पड़ रही हैं?

भक्त ने इधर-उधर चारों ओर दृष्टि को घुमा-घुमाकर देखा तो कहीं पर भी कोई उसे दृष्टिगोचर न हुआ, तो घबरा कर बोला भगवन् आप मुझे यह जो चेतना दे रहे हैं, उसे तो मै जान रहा हूं, परन्तु आप हैं कहाँ? यह मै जान नहीं पाया, इसी के लिए तो मैं परेशान हू, विह्वल हो रहा हूं, परन्तु पा नहीं रहा।

प्यारे भक्त! मैं तो तेरे निकट अति निकट हू, मै तेरे ही हृदय मन्दिर की गुफा मे तो बैठा हू, यही चेतना तो मैने मानव तेरे लिए वेद ज्ञान मे प्रदान की थी कि—

ओ३म्। हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्य मे देवान्धाद्गुहा निषीदन्। विदन्ती मत्रनरो धियन्धा हृदायस्तष्टान्मन्त्रा अशंसन्॥ ऋ १।६७।२।

भावार्थ–देखो प्यारे भक्त! ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ६७ सूक्त के दूसरे मन्त्र के अतर्गत मानव की चेतना के लिए कहा गया है कि जगत् पिता प्रभु परमेश्वर इस समस्त विश्व के रचयिता हैं। सब प्रकार के धनों-बलों और मनुष्य मात्र के उपयोग मे आने वाले सकल पदार्थों को अपने ही हाथ में रखते हैं। और वह स्वयं तो मानव के हृदय की गुफा मे ही निवास करते हुए सभी वेदों को अपने प्रभाव से प्रभावित रखते हुए ठिकाने ठिकानेही सदा रखते हैं। बुद्धिमान् ध्यान धारी मनुष्य तब अपने हृदय मन्दिर को वेद मत्रो द्वारा पवित्र करके स्तुति प्रार्थना और उपासना करके बड़े प्रेम-आदर-सत्कार पूर्वक विचार करते हुए उनके ज्योतिर्मय दर्शन प्राप्त करते हैं।

जगत् के रचने वाले उस परम पिता परमात्मा देव को न मानने वाले नास्तिको की बात को तो छोड दीजिये, क्योंकि वह तो उसके अस्तित्व को ही स्वीकार ही नहीं करते। उनसे तो इस समय हम कोई बात नहीं कर रहे, वस्तुत: उन प्राणियो से जो भगवान् दयावान को मानते हैं, जो सच्चे आस्तिक कहलाते हैं, जो सदा ही उस प्रभु की खोज मे लगे रहते हैं। वह लोग जो उसकी खोज में मन्दिरों मे जाते हैं उन्हें छेड़ने के लिए

(शेष पृष्ठ १५ पर)

लखनऊ रविवार ३० नवम्बर ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि संवत १९७२९४९०७०

## काशी चलने की तैयारी करो

२३ दिसम्बर सन ६९ से २८ दिसम्बर तक काशी मे प्रात स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शास्त्रार्थ शताब्दी बडे समारोह से मनायी जायगी। आज से एक सौ वर्ष पहले काशी के उच्चकोटि के विद्वानों के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मूर्ति पूजा के विरोध मे काशी नरेश के प्रधानत्व मे शास्त्रार्थ हुआ था। महर्षि दयानन्द का पक्ष था कि मूर्ति पूजा का विधान वेदो मे नहीं है, इसलिए मूर्ति पूजा त्याज्य है। काशी के पडितो ने मूर्ति पूजा को वेदों से साबित करने का असफल प्रयत्न किया था, परन्तु वे जब वेदो से यह प्रमाणित न कर सके तो मनुस्मृति पुराणो का सहारा लिया। परन्तु दयानन्द की तीखे तार्किक प्रमाणो के आगे वे मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके। यह शास्त्रार्थ सवत् १९२६ ई० कातिक सुदी १२ मङ्गलवार के दिन हुआ था।

अब सौ वर्ष बाद वही समय आया है। आर्य समाज पौराणिक विद्वानो से कहेगा कि जब आप लोग मूर्ति पूजा वेदो से सिद्ध न कर सके तो अब एक सौ वर्ष बीत ने पर सिद्ध कीजिये। इसी मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ होगा। सुना है कि पौराणिक पडित व श्री करपात्री जी महाराज शास्त्रार्थ की तैयारी मे लगे हुए हैं, वे इस विषय पर शास्त्रार्थ करेंगे। यह शास्त्रार्थ दर्शनीय होगा।

ऋषि दयानन्द के भक्तो, आर्य बन्धुओ, आपने सन् १९२५ की ऋषि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी मथुरा में देखी थी, जिसमे १० लाख आर्य देश विदेश से पहुंचे थे। इसके बाद सन् १९३३ मे दयानन्द की निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अजमेर में हुई थी, उसमें भी लाखों आर्यों ने भाग लिया। फिर फिर १९५९ मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा मे हुई उसमे भी लाखों आर्यो ने भाग लिया। जैसी मथुरा उस समय सजी थी, वैसी कभी नहीं सजी। अब फिर आर्यों को ससार को बताने का अवसर आ गया है कि हम चाहे आपस मे लडते हो, पर ऋषि दयानन्द के नाम पर कहीं भी एकत्र हो कर यह प्रमाणित करते हैं कि हम सब एक हैं।

आर्य नेताओ! आपका चाहे किसी से भी मतभेद हो, कैसा भी झगडा चल रहा हो, उसे भुलाकर काशी पहुचिये। और वहाँ ऋषि दयानन्द के कार्य मे हाथ बटाइए। ससार के काम सब होगे पर आपके जीवन मे फिर शताब्दी न आवेगी, इसलिए अभी से सपरिवार काशी चलने की तैयारी कीजिए।

आर्य महिलाओ! आप अधिक से अधिक सख्या मे अपनी बहनों को काशी ले चलने के लिये प्रेरणा कीजिये।

जिस काशी के दर्शनो के लिए लोग तरसते हैं, वही काशी आज आप के आने की प्रतीक्षा कर रही है। काशी के आर्य बन्धु दिन रात एक करके आपको सुख सुविधा प्रदान करने मे लगे हुये हैं। काशी में आपको ठहरने की पर्याप्त सुविधा रहेगी। भोजन के लिये शुद्ध पवित्र खावे खुले हुये मिलेंगे। प्रत्येक वस्तु बाजार भाव से आप को मिलेगी, शास्त्रार्थ के अतिरिक्त कई विशाल सम्मेलन होंगे, जिनमे देश के चोटी के विद्वान् अपने भाषणों से आपकी आत्मिक क्षुधा शान्त करेंगे। ऐसा पावन समय बार बार नहीं आता। इस लिये हम फिर प्रत्येक आर्य बन्धु और आर्य देवियो से प्रार्थना करते हैं कि आप अधिक से अधिक सख्या में काशी पहुच कर इस महान् शताब्दी को सफल बनाइये।

## महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के लिये वाराणसी में घोषित दान राशियाँ

| | |
|---|---|
| १०००० | आर्यसमाज बुलानाला वाराणसी |
| २५०० | आर्यसमाज बलिया |
| २५०० | आर्यसमाज गोलागोकर्णनाथ |
| २५०० | आर्यसमाज मिर्जापुर |
| १२०० | आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर |
| ११०० | आर्यसमाज जौनपुर |
| ११०० | आर्यसमाज इलाहाबाद |
| ११०० | आर्यसमाज हाथरस |
| ११०० | आर्यसमाज देहरादून |
| ११०० | आर्यसमाज गणेशगज लखनऊ |
| ११०० | आर्यसमाज गोरखपुर |
| ११०० | आर्यसमाज बगहा (मिर्जापुर) |
| ११०० | आर्यसमाज लल्लापुर (वाराणसी) |
| ११०० | श्री कृष्ण बलदेव जी, लखनऊ |
| ५०१ | आर्यसमाज गाजीपुर |
| ५०१ | आर्यसमाज मुगलसराय (वाराणसी) |
| ५०१ | आर्यसमाज कोसी कला (मथुरा) |
| २५१ | आर्यसमाज कन्यागुरुकुल, हाथरस |
| २५१ | आर्यसमाज साहिब गज गोरखपुर |
| २५१ | आर्यसमाज रेलवे कालोनी गोरखपुर |
| २५१ | आर्यसमाज खोजवा |
| २५१ | आर्यसमाज मातृ मन्दिर कन्यागुरुकुल वाराणसी |
| २५१ | आर्यसमाज गोपीगंज |
| १५१ | आर्यसमाज डी० एल० डब्लयू |
| १०१ | आर्यसमाज आजमगढ |
| १०१ | आर्यसमाज चन्दौली |
| १०१ | आर्यसमाज जैतपुरा |
| ५१ | आर्यसमाज शाहजहापुर |
| ५१ | आर्यसमाज जगी गज |
| १०१ | आर्यसमाज राबर्टस गज |
| १०१ | आर्यसमाज मऊनाथ भञ्जन |
| ३२, ३६७ | |

## शास्त्रार्थ शताब्दी कार्यालय काशी को

शताब्दी का कार्यालय ८ दिसम्बर १९६९ से लखनऊ से वाराणसी चला जावेगा। वहाँ का पता —

आर्यसमाज
बुलानाला,
वाराणसी

होगा। शताब्दी सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार वहीं के पते पर करे।

—महेन्द्र प्रताप शास्त्री सयोजक

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की धूम आर्यों में अपूर्व उत्साह

## श्री पं० आशाराम जी पाण्डेय उपमन्त्री सभा का तूफानी दौरा

पूर्वीय क्षेत्र के आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नवयुवक उत्साही उपमन्त्री श्रीयुत पण्डित आशाराम जी पाण्डेय मीरजापुर निवासी काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी के लिये आर्य जनता को काशी पहुचने के लिये प्रोत्साहित करने एवं शताब्दी मध्ये धन संग्रहार्थ दि० ६ दिसम्बर १९६९ से गोरखपुर, बनारस, इलाहाबाद, तथा फैजाबाद कमिश्नरियों के समस्त जिला आर्यसमाजो मे तूफानी भ्रमण करेगे। आर्यसमाजो को चाहिये कि पाण्डेय जी के पहुचने पर उनका स्वागत करें और शताब्दी के लिये उनके भाषण का प्रबन्ध करें और प्रचुर धन द्वारा शताब्दी समारोह मे पूर्ण सहयोग प्रदान करे। —प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के प्रचार निमित्त बिहार प्रदेश का तूफानी दौरा

शास्त्रार्थ मण्डली के प्रमुख वक्ता आचार्य श्री प० श्यामसुन्दर जी शास्त्री एवं श्री प० रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर, श्री खड्गपालसिंह निम्न स्थानो पर शीघ्रातिशीघ्र पहुच रहे हैं, सम्बन्धित स्थानो के आर्यसमाज के मन्त्री महोदयों से अनुरोध है कि उपरोक्त महानुभावो के पहुचने पर प्रचार की व्यवस्था करें तथा अधिक से अधिक सख्या मे शताब्दी के नोटों की बिक्री करायें और हर सम्भव सहयोग प्रदान कर शताब्दी को सफल बनाने का प्रयत्न करें।

| | | |
|---|---|---|
| सीवान | छपरा | खगड़िया |
| नरकटियागंज | जनपटियागंज | दरभंगा |
| लहेरियासराय | मोतीहारी | मलाही |
| संग्रामपुर | बेतिया | भागलपुर |
| मुंगेर | जगदीशपुर | हजारीबाग |
| राजधनवाद | साहिबगंज | रांची |
| झरिया | धनबाद | सिन्द्री |
| टाटानगर | पटना सिटी | बांकीपुर |
| दानापुर | बिहार शरीफ | गया |
| आरा | कलकत्ता | |

नोट—उपरोक्त समाजों के प्रधान एवं मन्त्री महोदयों से अनुरोध है कि प्रचारकों को एक दिन से अधिक रोकने का कष्ट न करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

## काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी का आन्दोलन कीजिये

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि काशी शताब्दी पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी २३ दिसम्बर से २८ दिसम्बर १९६९ तक काशी नगरी में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायगा। प्रदेश की जिला उप समाएँ एवं जिला के प्रमुख आर्य समाजों को चाहिए कि अपने अपने क्षेत्र में शताब्दी मंडल की स्थापना करें और जिले भरमें प्रचार किया जावे। काशी चलने के लिए आर्य जनता को उत्साहित किया जाय और शताब्दी के लिए पुष्कल धन राशि संग्रह की जाए। या धर्म लाभउठाने की कृपा करें। —संयोजक

## दान-सूची

### काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के निमित्त २८-११-६९ तक सभा को प्राप्त धन की सूची

( पूर्व प्रकाशित सूची से आगे )

२१.०० श्री मन्त्री जी आ. स. सुल्तानपुर (नैनीताल)
१००.०० श्री मन्त्री आ स. फेड़हेड़ी कुमहरी सहारनपुर
१६.०० श्री मोतीराय ग्राम सिकल्या गढ़वाल
५०.०० श्री राकेशकुमार द्वारा श्री हरिश्चन्द्र आर-आई बुलामिस गढ़वाल
१०.०० श्री शिवनाथ शुक्ल आ स महगवां हरदोई
१०.०० श्री गोविन्दराम रामगोपाल घिरोर मैनपुरी
१०.०० श्री हीरालाल जी आर्य बेलापुरा
२.०० ,, परमहस भारती घुमकिलोनी मिर्जापुर
२५.०० ,, प्रधान आ. स रामगढ़ (मिर्जापुर)
४०.०० ,, रंगीराव आर्य बालकुआ (देवरिया)
२.०० ,, त्रिवेदी प्रसाद भटपुरी (उन्नाव)
१००.०० ,, मन्त्री आ. स. देवास (म. प्र.)
३.०० ,, मनोहर प्रसा. मिश्र डुगरीभाली (उड़ीसा)
२०.०० ,, ओ३म्प्रकाश आर्य सुधीपुर (गोंडा)
३.०० ,, मन्त्री आ. स. बकहांरामनन्द (बिहार)
२५.०० ,, बी. राठके ४ लाई सिन्हारोड कलकत्ता
५०.०० ,, विन्देश्वरीप्रसाद आ. स बालमीकी नगर (चम्पारन)
१०१.०० ,, मन्त्राणी स्त्री आ. स गणेशगंज (लखनऊ)
१०१.०० ,, श्री आनन्ददेवसिंह प्रधान आ. स. बांदा

—मदनलाल, कोषाध्यक्ष

## आधुनिक (भीम) श्री सुखदेव जी शास्त्री व्यायामाचार्य के अभूतपूर्व व्यायाम प्रदर्शन एवम् (यौगिक आसन)

भारतवर्ष के समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवम् गुरुकुलों के अधिकारी गणों को सूचित किया जाता है कि उक्त श्री शास्त्री जी द्वारा

१—कार को रोकना।
२—कार को छाती पर चढ़ाना।
३—तीन सूत मोटी लोहे की जंजीर तोड़ना।
४—२५ मन चक्की के पाट को छाती पर रखवाना।
५—तांम्बे की तस्तरी को चीरना।
६—दांतों से साइकिल उठाना।
७—बिजली के बल्ब को हथेली से चूर्ण बनाना इत्यादि प्रदर्शन एवम् विशेष रूप से योगिक आसनों को हमने देखा है। जो अत्यन्त ही प्रभावशाली एवम् अभूत पूर्व हैं। भारतीय संस्कृति एवम् वैदिक धर्मानुयायियों आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं में श्री शास्त्री जी को बुलाकर प्रचार एवम् व्यायाम का प्रदर्शन करना चाहिए। शास्त्री जी योग्य वक्ता आर्य विचारों से ओतप्रोत गुरुकुलीय होनहार नवयुवक हैं। हम इनके भविष्य की सुन्दर सुखद शुभ कामना करते हैं।

शिवकुमार शास्त्री, संसद्सदस्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा — प्रकाशवीर शास्त्री, संसद-सदस्य

—आर्यसमाज साहन—(बिजनौर)
प्रधान—श्री शिवचरणसिंह कर्णवाल
उप०— ,, डा० रामकुमार
मन्त्री— ,, होरीसिंह बी. ए. बी. टी.
उप०— ,, डा० चन्द्र भानु
कोषा०— ,, परमालसिंह
—होरीसिंह मंत्री

—आर्य कुमार सभा तेराबाकद
प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय
उप०— ,, मथवल दुबे
मन्त्री— ,, देवेन्द्रकुमार पाण्डेय
कोषा०— ,, सन्तोष कुमार त्रिपाठी
—मन्त्री

## शुभ-विवाह

गत २३ नवम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट के पुत्र श्री बालेश्वर सिंह सूद की सुपुत्री कुमारी रीता का पाणिग्रहण संस्कार गुरुकुल कांगड़ी के श्री सोमप्रकाश जी के सुपुत्र चि० सुमन के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार महानगर लखनऊ में श्री नारायणगोस्वामी जी ने सम्पन्न कराया। विवाह के अन्त मे श्री बा० पूर्णचन्द्र जी व श्री सोम प्रकाश जी ने नवदम्पती को भाव भरा आशीर्वाद दिया। विवाह अत्यन्त सादगी से दान दहेज को त्यागकर हुआ था, बारात प्रातःकाल आई और दिन में विवाह हुआ। शाम की गाड़ी से बारात विदा हो गयी। बारात में केवल छोटे बड़े ८ व्यक्ति आये थे। इस तरह यह विवाह एक आदर्श विवाह था।

—नारायणगोस्वामी

## आर्य समाज उझानी का उत्सव

२४-१०-६९ से २७-१०-६९ तक उझानी समाज का उत्सव धूमधाम से हुआ। प्रातः, दुपहर, मध्याह्न बैठकें होती रहीं। उप स्थिति बहुत अच्छी रही। आर्यसमाज के प्रधान पं० सुनहरीलाल जी मिश्र बड़ी लगन से काम कर रहे हैं। समाज की आयको जोड़ने के स्थान पर प्रचार में लगाना यह उत्तम समझते हैं।

यहां का आर्यसमाज स्थापित ही इनके पूर्वजों ने किया है। अब इस पर इन लोगों ने बड़े-बड़े शास्त्रार्थ कराये हैं। ऊंचे से ऊंचे उपदेशक और संन्यासी यहां पधार चुके हैं। पं० सुनहरीलाल जी का सब परिवार शिक्षित है और आर्यसमाजी है। इस समाज के पुराने सदस्य श्री रघुबीरशरण जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष समाज बड़ी रुचि समाज में रखते हैं। इनकी उपस्थिति शतप्रतिशत रहती है।

## आर्यसमाज बिहारीपुर का उत्सव

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली

का वार्षिक उत्सव भी बड़ी शान से हुआ। श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट अध्यक्ष रहे। और श्री पं० रामस्वरूप जो पाराशर, आ० श्री पं० विश्वबन्धु जी शास्त्री, श्री स्वामी आत्मानन्द जी के शास्त्रीय भाषण हुये, और सभा के प्रचारक श्री पं० रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर ने भजनों से रस वर्षाया एव आचार्य सावित्रीदेवी एम० ए० की कथा हुई।

बिहारीलाल शास्त्री

## आर्य समाज लखनऊ का महोत्सव

आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव २३ से २५ नवम्बर तक समारोह से मनाया गया। २३ नवम्बर को आर्य समाजों के सदस्य व नगर के सभी आर्यों का सहभोज हुआ। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि हुये। —गंगाप्रसाद वाजपेयी मन्त्री

## सार-सूचनायें

—हिरंय्या (बस्ती) में ईसाइयों को अपनी पुस्तकें बेचते हुये और प्रचार करते हुये मैंने देखा। उधर की आर्यसमाजों को सतर्क रहना चाहिये। —रामकृष्ण दुबे

—राजगृह आर्यसमाज (पटना) के मन्दिर यज्ञशाला बनवाने हेतु दानदाताओं से प्रार्थना है कि वे इस कार्य के लिये दान दें। -मन्त्री

## सुदिष्ट बाबा के मेले में प्रचार

बलिया जनपद के द्वाबा क्षेत्र का प्रसिद्ध मेला 'धनुष यज्ञ' में आगामी दि० १३, १४, १५ दिसम्बर ६९ को सहतवार आर्यसमाज की ओर से प्रचार कार्य होगा—उक्त मेले में प्रति वर्ष वैदिक धर्म का प्रचार होता।

—दर्शन आर्य

—हेमपुर डिमौरा (बदायूं) में में श्री बुद्धदेव आर्योपदेशक ने २८ अक्तूबर से ५ नवम्बर तक वैदिक धर्म का प्रचार किया। दो दिन हुसा मत वालो से शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज की स्थापना हुई।

—मन्त्री

—९ नवम्बर को आर्यसमाज रेल बाजार छावनी कानपुर में श्री होशियारसिंह जी मलिक की अध्यक्षता में ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया। —शम्भूराम शास्त्री मन्त्री

—गंगा स्नान मेला तिगरि (मुरादाबाद) मे आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री माननीय प० शिवकुमार जी शास्त्री व युवक शिरोमणि माननीय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य ने पधार कर शिविर का निरीक्षण किया तथा कार्यक्रम देखे।

—सुखदेव शास्त्री

—९ नवम्बर को आर्यसमाज कोटला (आगरा) मे ऋषि निर्वाणोत्सव समारोह से प्रातः काल मनाया गया। विशेष यज्ञ के पश्चात् श्री पं० हरनारायण जी उपाध्याय प्रधान श्री ओमनारायणसिंह एवं श्री रवीन्द्रबाबू गुप्त ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। अब इस समाज का कार्य नियमानुसार चल रहा है। —मन्त्री

—उन्नाव—कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर स्थानीय आर्य महिला समाज की ओर से दिनांक २२ व २३ नवम्बर १९६९ ई० को श्री कुंवर जोरावरसिंह व श्रीमती प्रभावती जी द्वारा आर्यसमाज मन्दिर में वैदिक धर्म का प्रचार होता रहा।

—सुमित्रा चौधरी मन्त्रिणी

## ग्राम भूपखेड़ी (मु०नगर) में १३० ईसाइयों की शुद्धि

दूसरा शुद्धि सम्मेलन भूपखेड़ी जिला मुजफ्फरनगर में हुआ, जिसमे १३० ईसाईयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। संस्कार श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया। श्री हरिदत्त शर्मा ने शुद्धशुदाओं का स्वागत किया। सार्वजनिक सभा मे कई विद्वानों के भाषण हुये। ग्रामवासियों ने समारोह मे पूर्ण सहयोग दिया।

हरिदत्त शर्मा कृते (द्वारिकानाथ)
प्रधान मन्त्री

## ग्राम लंढोरा (सहारनपुर) में २०० ईसाइयो कीशुद्धि

ग्राम लढोरा जिला सहारनपुर में श्री इतवारीलाल ने एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिस मे २०० ईसाइयो ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि संस्कार श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया। श्री द्वारकानाथ जी प्रधान मन्त्री श्री यशपाल जी श्री गोकलचन्द जी व श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष आदि ने जाकर भाग लिया।

## निर्वाचन

आर्य समाज कसौली (मुजफ्फर नगर)।
प्रधान—श्री विज्येन्द्र आचार्य
उप०— ,, बलबीर सिंह आर्य
मन्त्री— ,, श्यामसिंह आर्य एम ए
उप०— ,, कर्णसिंह आर्य
कोषा०— ,, मेयमपाल आर्य

—आर्य समाज हेमपुर (बदायूं) प्रधान—श्री रामपाल सिंह, मन्त्री श्री प्रेमपाल सिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री जयराम सिंह मंत्री।

## कन्या की आवश्यकता !

गौड़ वंशीय कुमार ब्राह्मण आयु २५ वर्ष जो इन्टर कालेज में स्थाई (कन्फर्म) अध्यापक है।

ट्यूशन आदि की आय के अतिरिक्त मासिक वेतन २०७) रु० है। के लिए सुशील, योग्य वधू चाहिए। विवाह-वैदिक रीति से, ब्राह्मण मण्डल में बिना दहेज के हो सकेगा। —रामचन्द्र शर्मा
(कोषाध्यक्ष-आर्य समाज)
शर्मा-निवास-बांदा (उ० प्र०)

## आर्यसमाजों और आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन–
## आर्यमित्र के ग्राहक बनिए, वार्षिक १०)

१–यदि आप देश देशान्तर के समस्त आर्य जगत् का समाचार जानना चाहते हैं, तो आर्यमित्र के ग्राहक बनिये ।

२–आर्यमित्र आर्यसमाज का सबसे पुराना और देश देशान्तर में जाने वाला आर्य प्रतिनिधि सभा (उ. प्र) का प्रमुख पत्र है।

३–आर्यमित्र अभूतपूर्व विशेषाङ्कों को प्रकाशित करता है, जो ग्राहकों को बिना मूल्य दिये जाते हैं ।

४–महर्षि के काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के पूर्ण समाचार प्रति सप्ताह जानने के लिये आर्यमित्र के ग्राहक बनिये ।

५–आर्यमित्र में समस्त परिवार के पढ़ने योग्य सामग्री पर्याप्त रहती है । जैसे महिला जगत्, बाल जगत् संक्षिप्त समाचार इत्यादि ।

६–आर्य मित्र मे प्रति सप्ताह वेदमन्त्रो की सुन्दर व्याख्या प्रकाशित की जाती है । जो स्वाध्यायशील व्यक्तियो के लिये बड़ी आकर्षक और शान्तिदायक रहती है ।

७–आर्यमित्र मे विद्वत्तापूर्ण शास्त्रीय लेख प्रति सप्ताह छपते हैं।

८–आर्यमित्र में शास्त्रीय शका समाधान आपको पढ़ने को मिलेंगे ।

९–आर्यमित्र में सुन्दर और सिद्धान्तों पर कविताएं उच्च कवियो की प्रकाशित की जाती हैं ।

१०–आर्य जगत् में जो भ्रामक गलत प्रचार कुछ लोग फैला रहे हैं, उनका सही हाल आर्यमित्र द्वारा ही आपको प्राप्त हो सकता है ।

नोट–अत. आप आज ही १०) मनीआर्डर द्वारा भेजकर आर्यमित्र के ग्राहक बनें, जिससे इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषाङ्क आपको विना मूल्य मिल सकें ।

निवेदक
व्यवस्थापक आर्यमित्र
–आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
–५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

# धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् की रजि० सिद्धांत प्रवेश सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धान्तालंकार, सि० शास्त्री, सिद्धांताचार्य की परीक्षायें आगामी दिसम्बर जनवरी में समस्त भारत व विदेशो में होंगी । उत्तीर्ण होने पर तिरगा प्रमाण-पत्र दिया जाता है । आबाल वृद्ध, नर-नारी सोत्साह भाग ले रहे हैं ।

१५ पैसे के टिकट भेज कर नियमावली मगाइये ।

| | |
|---|---|
| आदित्य ब्रह्मचारी | आचार्य मित्रसैन |
| यशपाल शास्त्री | एम. ए. सिद्धांतालकार |
| प्रधान | परीक्षा मन्त्री |

**भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद्**
**सेवा-सदन कटरा, अलीगढ़**

# सत्यार्थ–प्रकाश

अपूर्व संस्करण

ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का नितान्त नवीन एवं परिष्कृत संस्करण मण्डल के अध्यक्ष डा० सूर्यदेव शर्मा के शुभ दान से प्रकाशित होने के कारण प्रचारार्थ रियायती मूल्य केवल २ रु० ५० पैसे में आर्यजनता को भेंट है । उस पर भी कमीशन १०) रु० तक ६½ ./ , १० से ऊपर २५) रु० तक १२½./ , २५) से ऊपर ५०) रु० तक १५ ./ , ५०) से ऊपर २००) रु० तक २० ./ व २०० रु० से ऊपर २५ ./ । आर्डर के साथ १/३ धन भेजना आवश्यक है ।

७२० पृष्ठ की इस पुस्तक को जो २४ पौंड के सफेद कागज पर छपी है, इतने सस्ते मूल्य मे मगाकर धर्म प्रचार के इस अपूर्व अवसर से लाभ उठाइये ।

आर्य पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र मुफ्त मंगावें ।

**आर्य साहित्य मण्डल लि०**
श्रीनगर रोड, अजमेर

'तीस वर्षों से आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसों रोगों की अकसीर दवा'

एजेण्ट चाहिये **कर्ण रोग नाशक तैल** ······· रजिस्टर्ड

कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, मवाद आना, कुलना, सीटी-सी बजना, आदि कान के रोगों में बड़ा गुणकारी है । मूल्य १ शीशी २ रुपये, एक दर्जन पर ४ शीशी कमीशन की अधिक देकर एजेण्ट बनाते हैं । एक दर्जन से कम मंगाने पर खर्चा पैंकिंग-पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा । बरेली का प्रसिद्ध रजि. 'प्रीतम सुरमा' आंखो की रक्षा के लिये प्रति दिन प्रयोग करें, आंखो के लिए अत्यन्त गुणकारी है। इसके प्रयोग से आखों मे सुखदायक ठडक उत्पन्न होती है रोजाना प्रयोग करने से निगाह तेज हो जाती है, और आखें कभी दुखने नहीं आतीं । आंखों के आगे अंधेरा सा आना, तारे से दिखाई देना धुंधला नजर आना, खुजली मचना, पानी बहना, आंखों की जलन, सुरखी और रोहों को शीघ्र आराम कर देता है । मूल्य ३ ग्राम की शीशी रु० २–२५ पैसे ।

'कर्ण रोग नाशक तैल' सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद, यू० पी०

## विश्वकर्मा वंशज बालकों को–
# ७०००) का दान
### श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१–विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकरास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजन निम्न लिखित नियमानुसार भाद्रपद सम्वत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की ।

२–इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी ।

३–उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले [illegible] को मास [illegible]) के स्टाम्प भेजकर [illegible] भेजना आवश्यक हैं ।

–मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

शिवालय मे जाते, वहाँ जाकर पूजा करते, धूप दीप जलाते, मिठाई आदि चढ़ावा चढाते, आरती उतारते, भोग लगाते, वस्त्र पहनाते हैं। कुछ-कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो इसी विचार के आधार पर तीर्थों की यात्रा करते हैं, और सोचते हैं कि किसी भी प्रकार से किसी भी स्थान पर इस यात्रा में ही उस भगवान् को प्राप्त करले। यदि वह भगवान् कहो पर भी दयावान हो जाएँ, और हमें उनके दर्शन हो जाएँ, परन्तु जब इस प्रकार की सब क्रियाये कर लेने पर भी नहीं, इससे भी अधिक खोज कर-कराके कोई फल नहीं। उनके दर्शनों कोई सफलता नहीं प्राप्त हो पाई, तब वही मानव जो यह सब प्रकार के यत्न कर रहा था, इस प्रकार हाथ पैर मार कर थक जाता है। तब विचारने लगता है कि वह इस ससार भर मे तो कही दिखाई देता नहीं। अत सम्भव है कि वह कहीं आकाश मे ही हो, और वहाँ पर पहुंचने की अपनी तो सामर्थ्य नहीं। हो सकता है कि आज के युग में कोई विज्ञान या जो चन्द्रभ्रमण पर जाने मे समर्थ हो गए हैं। वहाँ पर उसको भी खोज लें, पर उन्हे तो भगवान् नाम की वस्तु पर ही विश्वास नहीं। ऐसा सब विचार २ कर भगवान् की खोज करने वाला प्राणी भी निराश हो गया। अब वह कहने लगता है कि यूँ कहने लगता है कि यूँ तो वह एक पूर्ण सत्य शक्ति ही है अवश्य, परन्तु फिर भी न जाने वह छुपी हुई कहा है, इस बात का तो पता ही नहीं चलता। विचारते-विचारते एक विचार भक्त के सामने आ खडा हुआ कि हमारे वह मित्र उस दिन कह रहे थे कि भगवान् लक्ष्मी पति हैं, हा! हां उन्हें इस नाम से भी पुकारा जाता है। और साथ ही वह यह भी तो कहते है कि वह तो अपना निवास क्षीर सागर में ही रखते हैं और वहां पहुंचना तो आकाश पर जाने से भी असम्भव है। वहा पहुचने का अपने पास तो कोई साधन ही नहीं। तो क्षीर सागर की यात्रा कैसे-अंतहार कर शात होकर कहीं या हारकर बैठ जाते हैं।

वेद भगवान् ने ऊपर वाले वेद के अतर्गत कहा कि वह भगवान् लक्ष्मी पति है, एश्वर्यवान है, वह धन वाले-धनवान्, धन पति (लक्ष्मी पति हैं। वह बलपति बलवान्) आदि-आदि अनेक नामों से पुकारते हैं-जिस मत्र का हमने अभी-अभी पाठ किया उसी मे कहा गया है, कि-'हस्ते दाधवो नृम्णा' अर्थात् वह प्रभु जी ससार के सब धनो को अपने ही अधीन रखते हैं। आप विचार तो कीजिए, जो वस्तु जिसके पास होती है, वह उसके बिना अन्य किसी से कैसे प्राप्त हो सकती है, इस पर एक कवि ने कहा है।

जो गध है सुमन मे,
और ज्योति है नयन मे।
इस भान्ति रम रहे हो,
हे प्राण नाथ मन मे॥
कस्तुरी नाभि मे है,
पर मृग अधीर हो कर।
व्याकुल भटक रहा है,
बेहड उजाड़ बन मे॥
शुभ कर्म ईश भक्ति,
उद्देश्य को भुला कर।
जीवन बिता रहे हैं,
मति हीन दुर्व्यसन मे॥
शिशु काल खेल खोया,
यौवन गया मदन में।
अब हाय वृद्ध पन भी,
लगता नही भजन मे॥
ससार के दुःखो से छुटें,
प्रकाश वह नर।
तल्लीन हो गया जो,
हरि भक्ति कीर्तन मे॥

प्यारे भक्त जनो! श्री प्रकाश जी ने कितने सरल शब्दों में वर्णन कर दिया, कि कस्तुरी की तलाश मृग जगल में भागता फिरता है—और वह उसी की नाभि में छुपी है। वेद भगवान् ने कहा—ए मानव। वह प्रभु तो-'गुहा निषीदन' भक्त! वह तेरे हृदय मन्दिर में ही विराजमान है-तो जब वह तेरे हृदय रूपी गुफा में ही निवास करते हैं तो तू फिर जगलो मे क्यो भागता फिरता है। मन्दिरो मस्जिदों मे भटकने के स्थान पर तू अपने मन मन्दिर मे ही उसे झाक कर निहार ले। तू उस परम प्यारे को उस महान् धन को प्राप्त करना तो चाहता है, अपनी सूक्ष्म बुद्धि को सम्भाल और अपने बाहर के पट बन्द करके तनिक अपने अन्दर के पट खोल कर भीतर की ओर ही अपनी दृष्टि को ले चल, वहाँ यदि तू झुक कर झाँकेगा-तो सुन तुझे वह ज्योतिर्मय ज्योति स्वरूप, वह लक्ष्मीपति, वह धनो के पति, धनपति, धनवान परमपिता के दर्शन मिलेंगे आ-

वह छाती मे लेगे लगा—
ले तुझे सीधी राह दी है बता।

## निर्वाचन

निर्वाचन—आर्यसमाज नगीना का निर्वाचन श्री गजराज सिंह जी प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की अध्यक्षता मे १६ नवम्बर को हुआ।

प्रधान—श्री ठा० उदयवीर सिंह जी
उप०— ,, राजवीर सिंह गोस्वामी
,, — ,, नरेश प्रकाश गोस्वामी
मन्त्री— ,, दीनानाथ गोस्वामी
उपम०— ,, भीमसिंह राघव
,, ,, — ,, विजय कुमारसिंह रा०
कोषा०—,, देवप्रकाश गोस्वामी

—दीनानाथ गोस्वामी
मन्त्री

आर्य समाज पूरनपुर ने अपने पूर्व प्रधान श्री गगाराम के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित कर परमपिता परमात्मा से दिवगतात्मा की शान्ति एवम् सद् गति की तथा उनके सतप्त दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

—प्रेमचन्द्र मन्त्री
आर्य समाज पुरनपुर

—स्त्री आर्यसमाज अलिसुइया प्रयाग ने श्रावणी उत्सव, बलिदान दिवस, तथा वेद प्रचार सप्ताह बिरजानन्द व ऋषि निर्वाण दिवस सानन्द मनाये। —मन्त्रिणी

—२० से २२ नवम्बर तक आर्यसमाज मोठ (झांसी) का वार्षिकोत्सव समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

## काशी शास्त्रार्थ शती सहयोग दो समिति का गठन हो चुका है।

काशी के आर्य युवकों द्वारा काशी शास्त्रार्थ शती समारोह मे प्रबन्ध व्यवस्था तथा योगदान के लिए स्वयम् सेवकों की आवश्यकता देखकर काशी शास्त्रार्थ शताब्दी मे सहयोग दो समिति का गठन किया गया है। मै प्रदेश तथा विशेष कर उसके पूर्वी भाग के सभी आर्य युवक सगठनो मे एव आर्य युवको से अपील करता हू कि जो युवक-बन्धु अथवा प्रौढबन्धु इस पवित्र कार्य मे योग देना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने संगठन के माध्यम से अथवा व्यक्तिगत रूप से समिति कार्यालय को प्रेषित करने का कष्ट करे। समिति कार्यालय :—

काशी शास्त्रार्थ शती सहयोग दो समिति सी १५/३६७ लल्लापुर वाराणसी

—प्रकाश नारायण शास्त्री
उपसयोजक
दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शती सहयोग दो समिति वाराणसी,

## ददरी के मेले में प्रचार

बलिया के प्रसिद्ध मेले ददरी मे दि० २२, २३, २४ नवम्बर को वैदिक धर्म का प्रचार समारोह पूर्वक जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षण मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

२३ नवम्बर को ददरी मेले मे आर्य समाज के पडाल मे जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक श्री स्वामी सत्यानन्द की अध्यक्षता मे हुई, जिसमे बलिया, रसडा, सहतवार, मनियर, सिकन्दर पुर, खरसडा, हथौडा, और बेल्थरा रोड के प्रतिनिधियो ने भाग लिया-सर्वप्रथम ईश प्रार्थना के पश्चात् आय व्यय का विवरण बनाया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ, पुन नवीन निर्वाचन हुआ।

प्रधान—श्री स्वामी सत्यानन्द जी रसड़ा
उपप्र०—श्री रामेश्वर प्रसाद जी बलिया
मन्त्री—श्री आर्यवसुमित्र मनियर
उपम०—श्री उमेशचन्द्र खरसडा
कोषा०—श्री सुदर्शन आर्य सहतवार

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल—६०
मार्गशीर्ष १६ शक १८९१ मार्गशीर्ष कृ० १३
[ दिनाङ्क ७ दिसम्बर सन् १९६९ ]

# आर्य-मित्र

उत्तरप्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य-पत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष २५९९३ तार। "आर्यमित्र"

## साहित्य-समीक्षा

**मूर्त्तिपूजा**—लेखक श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, प्रकाशक वैदिक प्रकाशन मन्दिर १३ लखपतराय लेन इलाहाबाद, साइज २०×३०=१६, पृष्ठ स० ६० मू० ७५ पै० ।

इस पुस्तक मे बहुत सरल रीति से और बुद्धि मे पूरी तरह बैठ जाने वाली युक्तियो से मूर्त्तिपूजा की निरर्थकता को सिद्ध किया गया है। पुस्तक प्रत्येक विचारशील हिन्दू को पढ़नी चाहिये। और जो लोग ईश्वराराधन का सही ढग जानना चाहते है, उनके लिये तो पुस्तक बहुत ही उपयोगी है।

**पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी**—लेखक-श्री रामप्रकाश जी एम एस सी, पी एच डी, प्रकाशक-स्वामी आत्मानन्द प्रकाशन मन्दिर वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर, साइज २०×३०=१६ पृष्ठ-स० १९३।

इस पुस्तक मे महान प्रभावशाली विद्वद्वर श्री प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी का जीवन चरित्र है। इसको पढ़ने से श्री पडित जी के जीवन की श्रद्धा भरी घटनायें तो ज्ञात होंगी ही साथ ही आर्य समाज की तत-कालीन दशा का भी ऐतिहासिक ज्ञान होगा। ऐसे जीवन चरित्रो को पढ़ने से जीवन सुधरता है। उदात्त भावनायें बनती हैं। श्री प० गुरुदत्त जी का चरित्र एक साधना प्रिय मुनि का चरित्र है।

**मुकदमा**—सपादक लियोपोल्ड लाबेदस और मैक्स हेवर्ड प्रकाशक नेशनलएकाडमी ९ असारी मार्ग दरियागंज दिल्ली-६ पृष्ठ स० ४६४। मूल्य २)

इस पुस्तक मे उन मुकदमो के वृत्तान्त हैं, जो सोवियत सरकार रूस ने वहाँ के बुद्धि जीवियों (लेखकों) पर चलाये हैं। और उन स्वतन्त्र विचार रखने वालो को कितनी घोर यन्त्रणाओ से भरी जेलो मे डाला गया है।

पुस्तक पढकर यह पूरा विश्वास हो जाता है कि कम्यूनिस्टो के राज में वचारिक स्वतन्त्रता को कतई स्थान नहीं। पुराने पोप और खलीफा जैसे सकीर्ण विचार के होते थे, वैसे ही ये साम्यवादी शासक भी हैं। न्याय का तमाशा करके बुद्धिवादी विचारको का दमन किया गया है। इस पुस्तक को पढकर मनुष्य यह जान सकता है कि समृद्ध तानाशाही से गरीब भी प्रजातन्त्र लाख दर्जे अच्छा है।

**वेदस्वाध्याय प्रभु मिलन**—सपादक श्री डा० वेदमित्र एम ए श्री प० रामगोपाल जी वैद्य कुमारी स्वर्ण कान्ता एम ए प्रकाशक अ[illegible] मण्डल ११ आनन्दपुरी टैंकरोड देवनगर करोल बाग नई दिल्ली ५।

यह एक मासिक पत्र है, जिसमे वेद गीता उपनिषद आदि के [illegible] हिन्दी अग्रेजी अनुवाद सहित दिये जाते है। स्वाध्याय प्रेमियो के योग्य सामग्री है।

**सप्त सखी सम्वाद**—प्रथम और द्वितीय भाग ले० श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द जी, प्रकाशक-वेदोक्त यज्ञ प्रचारक मण्डल ३, दीवानहाल दिल्ली। साइज २०×३०=१६ पृ० स० ९६ मू० १-४०

इस पुस्तक मे सरल भाषा मे कुछ मन्त्रों की व्याख्या सम्वाद रूप में की गयी है। बालकों के लिये पुस्तक शिक्षा प्रद और ज्ञानवर्द्धक है।

बिहारीलाल शास्त्री

## सम्पादक के पत्र

### सार्वदेशिक सभा नहीं, सर्वनाशक सभा

१९ अक्टूबर १९६९ ई० के सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के पृष्ठ ५ पर मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, राम-लीला मैदान नई दिल्ली—१ के काशी शास्त्रार्थ सम्बन्धी वक्तव्य को पढ़कर हृदय मे ऐसी असह्य वेदना हुई कि जिस सार्वदेशिक सभा के जिम्मेदार पदाधिकारी ऐसी अनर्गल और तथ्यों के विपरीत वक्तव्य प्रकाशित करा सकते हैं, वह 'सार्वदेशिक सभा' न होकर 'सर्वनाशक सभा' हो सकती है। इस वक्तव्य में उन्होंने कहा है कि 'इस सभा से किसी प्रकार का सहयोग एव समर्थन प्राप्त नहीं किया गया है। जब कि २ माह से आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र 'आर्य्यमित्र' अपने प्रत्येक अक में सहयोग व समर्थन मांग रहा है। आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास का मार्मिक निवेदन इन पद लोलुप नीतिज्ञो को कैसे पिघला सकेगा। भला पत्थर भी कहीं पिघलते हैं।, पत्थर तो हमेशा टूटते हैं, अथवा उन्हें काट छांट कर कार्य के योग्य बनाया जाता है। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी तो मनाई जायेगी ही, परन्तु यदि इन आर्य द्रोही, पद लोलुप, राजनीतिज्ञों के कार्य कलापों के द्वारा इस तथा कथित सार्वदेशिक सभा की लाश का जनाजा भी निकल जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की पूर्व घोषित तिथियो में इस तथा कथित सार्वदेशिक सभा ने गोवा प्रदेश आर्य सम्मेलन रखकर जो अपनी हीनता का परिचय दिया है, और इस नीच कार्य मे जिस किसी ने भी इस सार्वदेशिक सभा को सहयोग दिया है, उन्हे दयानन्द के सच्चे सैनिक कभी क्षमा नहीं करेगे। जिस शास्त्रार्थ के लिये देव दयानन्द को आर्य समाज के अतिरिक्त अन्यो का भी सहयोग प्राप्त हुआ, उसी शास्त्रार्थ की शताब्दी मनाने के मार्ग मे देव दयानन्द के अनुयायी कहने वाले बाधक बने हुये हैं। सपूत तो सपूत ही रहेगा और कपूत, कपूत ही। अब तो यही अच्छा रहेगा कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति को इस तथा कथित सार्वदेशिक सभा से किसी प्रकार के सहयोग की आशा नही करनी चाहिये, और न ही कोई सहयोग व समर्थन मांगना ही चाहिये। इस महान् कार्य में समस्त उत्तर प्रदेश काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति के साथ है। मैं अपनी सस्था के कार्य वश जहां भी जाता हू आर्य जनो में एक नया उत्साह और विश्वास पाता हू। और इस तथा कथित सार्वदेशिक सभा के विपरीत जो कुछ भी सुनने को मिलता है, वह लिखने के योग्य नहीं है।

भगवान इस तथा कथित सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को सुबुद्धि दें कि वे इस महान् कार्य मे बिना किसी स्वार्थ के सहयोग दें और समर्थन करे।

डॉ० ओमपाल शास्त्री 'आर्यसेवक' सम्पादक
'सुप्त अगारा' साप्ताहिक मेरठ
मन्त्री, आर्य सेवा सघ, रसूलपुर धौलिंद
पो० रसूलपुर धमौली (बागपत) मेरठ

स्वत्वाधिकारिणी, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिये बा. बी. अर्यभास्कर ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मु. तथा प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र ओ३म्

'यम अयेम ] लखनऊ-रविवार मार्गशीर्ष २३ शक १८९१ मार्गशीर्ष शु० ६ वि० सं० २० दि० १४ दिसम्बर १९६९ ] हम जीतें

# आर्यजनों में शताब्दी के लिए

# अपार उत्साह

## विदेशों के आर्यों का पूर्ण सहयोग,

## हैदराबाद से कम से कम एक सौ का जत्था

## एक हजार रुपये देकर यजमान बनने की होड़

## विद्वानों में शास्त्रार्थ करने के लिये पूर्ण उत्साह

## श्री शंकराचार्य तथा श्री करपात्री जी का

## आह्वान स्वीकृत

पिछले दिनो [illegible] बहुत अधिक नर नारियो के सम्मिलित होने की आशा है [illegible] आर्य जगत की शक्ति का प्रभावोत्पादक प्रदर्शन कर सको। [illegible] आर्यसमाज की धाक बढाने के लिये तन मन धन से सहयोग [illegible]

श्री शंकराचार्य [illegible] आह्वान किया है। आर्य समाज ने उनके आह्वान को [illegible]

समारोह का विस्तृत कार्यक्रम [illegible] इस अंक मे पृष्ठ ४ ५ पर पढे। प्रसन्नता की बात है कि [illegible]। विद्वानो की स्वीकृति प्रवचन, भाषण शास्त्रार्थ करने की [illegible] चुकी है।

…नाप शास्त्री
संयोजक

वर्ष ७१ | अंक ४६

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)

सम्पादक—
—उमेशचन्द्र स्नातक
एम ए.

इस अंक में पढिए !

लखनऊ रविवार १४ दिसम्बर ६९ दयानन्दाब्द १४५
सृष्टि सवत् १९७२९४९०७०

## शताब्दी की सफलता के लिए

काशी मे महर्षि दयानन्द ने जो शास्त्रार्थ किया था उसकी शताब्दी के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने जो कार्यक्रम निर्धारित किया है. उसके अनुसार देश मे शास्त्रार्थों का कार्यक्रम ई अनेक आर्यसमाजों ने अपने उत्सवो पर शास्त्रार्थों की योजना बनाकर शताब्दी के सन्देश को जन-जन तक पहुचाने का सफल प्रयास आरम्भ कर दिया है. शास्त्रार्थो की इस योजना से पौराणिक क्षेत्र मे खलबली मचने लगी है । वाराणसी मे ही सनातनी पण्डितो ने प्रयत्न करके २० नवम्बर को आनन्द बाग मे आर्य समाज के कार्यक्रम को रुकवाने का निष्फल प्रयास किया । १४४ धारा लगवाकर दयानन्द चबूतरे पर यज्ञ को रुकवाने का यत्न किया अन्त मे आर्यजनो के प्रयत्नो से १४४ धारा हटा ली गई और महर्षि दयानन्द के काशी मे सम्पन्न शास्त्रार्थ कार्यक्रम की स्मृति मे यज्ञ व सभा सम्पन्न हुई ।

आर्य जन इस घटना से अनुमान लगा सकते हैं कि पौराणिक जगत् आर्यसमाज के इस कार्यक्रम से कितना प्रभावित है ।

दुर्भाग्य है कि आर्य समाज मे भी एक इसी प्रकार का वर्ग सक्रिय है जो शताब्दी की सफलता से चिढ़कर वैयक्तिक विद्वेश के साथ-साथ सामाजिक विध्वस तक के लिये सक्रिय है। हम ऐसे व्यक्तियों के लिये प्रभु से सद्बुद्धि की ही प्रार्थना करते हैं । हमे पूर्ण विश्वास है कि यदि इन विघातक तत्वो ने अपनी सक्रियता न छोडी और इस शताब्दी की सफलता के लिये अपना योग दान नहीं दिया तो आर्य जनता उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगी । हम अपने मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं और हम हृदय और दृढता से इस कार्यक्रम को आर्यसमाज का कार्यक्रम मानते है और हम जनता को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि इस कार्यक्रम से आर्यसमाज की शिथिलता दूर होगी और आर्य समाज एक नये युग मे प्रवेश करेगा । जनता जाँच लेगी कि कौन आर्य समाज के नाम पर मौज उडा रहे हैं और कौन आर्य समाज के लिये जान हथेली पर लिये डोलते हैं । जो आर्यजन महर्षि के कार्य को आगे बढ़ाने के इच्छुक हैं वे इस अवसर पर कदम बढ़ाकर आगे आवे. शताब्दी कार्यक्रम उनका स्वागत् करेगा । शताब्दी के लिये स्वागत् समिति की ओर से तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी हैं. आर्य समाज शास्त्रार्थ पद्धति के वातावरण में न पहुच कर चिन्तन, स्वाध्याय और व्रत ग्रहण के ससार मे एक नवीनता अनुभव करेगा । काशी शताब्दी की सफलता के लिये आप क्या कर रहे है और आपने क्या किया है इस सम्बन्ध मे अपने कर्तव्य का निर्धारण कीजिये यही महर्षि के प्रति आपकी सामयिक श्रद्धाञ्जलि होगी ।

---

# आर्यजन २३ से २८ दिसम्बर ६९ तक शास्त्रार्थ शताब्दी में काशी रहें

### पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर आर्यजन महर्षि दयानन्द के मानव निर्माण एवं वैदिक धर्म प्रचार का संकल्प ले

भारत के विविध प्रान्तो से आर्य जन उत्साहपूर्वक काशी पहुंचने की तैय्यारियाँ कर रहे है. अनेक आर्यसमाजो से आर्य जन शताब्दी मे पहुंचने के लिये पद-यात्रा आरम्भ कर रहे हैं स्थान स्थान पर वे आर्य समाज, वेद और महर्षि दयानन्द का सन्देश देते हुये वाराणसी पहुचेंगे । शास्त्रार्थ मण्डलिया अनेक स्थानो पर भ्रमण कर रही हैं ।

जैसे-जैसे महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की तिथियाँ समीप आती जा रही हैं वैसे ही वैसे आर्य जनता मे शताब्दी के लिये उत्साह बढता जा रहा है । स्वागत समिति की ओर से बड़े उत्साह के साथ आवास एव समारोह व्यवस्था का प्रबन्ध किया जा रहा है । आर्यसमाजें अपने स्थानो से पहुचने वाले व्यक्तियो की सख्या आदि का विवरण स्वागत समिति कार्यालय को भेजकर अपनी व्यवस्था कराले ।

शताब्दी का कार्यक्रम और पोस्टर आदि छप चुके हैं और भारत भर की आर्यसमाजो एव सभी प्रमुख आर्य सस्थाओ को भेजे जारहे हैं । जिन समाजो व सस्थाओ मे वे पहुचे वे उनका अधिकाधिक प्रचार कर जनता को शताब्दी के सम्बन्ध से परिचित कराने की व्यवस्था करे ।

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी एव पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी कार्यक्रम निश्चित रूप से आर्यसमाज के जीवन में एक नया परिवर्त्तन लायेगा । शताब्दी कार्यक्रम यह स्पष्ट कर देगा कि महर्षि के मिशन की पूर्ति मे कौन सलग्न हैं और कौन महर्षि के नाम पर मौज मारना चाहते है । यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो चुका है कि महर्षि के भक्तो के मार्ग मे कोई बाधक बनकर नहीं रह सकता ।

शताब्दी एकता और त्याग का सन्देश लाई है. हमे इससे लाभ उठाना है ।

[ २३ से २८ दिसम्बर वाराणसी पहुचने के लिए सुरक्षित रक्खे ]

---

## उत्तर प्रदेश आर्य महिला परिषद्

### स्त्री आर्य समाजें अपने दो-दो [illegible]धि भेजे

काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर आयोजन

उत्तर प्रदेश मे स्त्री आर्य समाजो के विकास एवं उनको प्रगतिशील बनाने तथा प्रान्त मे नारी जागरण आन्दोलन के प्रश्न पर विचार करने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महिला प्रचार-विभाग की ओर से महिला परिषद् का आयोजन किया जा रहा है। समय और स्थान की सूचना शताब्दी पण्डाल मे दी जायगी। सभी स्त्री आर्य समाजो से प्रार्थना है कि वे अपनी ओर से दो प्रतिनिधि महिला परिषद् के लिये भेजने की कृपा करें।

प्रतिनिधियो के नाम सभा कार्यालय में द्वारा आर्य समाज बुलानाला वाराणसी के पते से भेज दें ।

अक्षय कुमारी शास्त्री
मन्त्री महिला प्रचार विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

# महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

## पाखंड-खंडिनी पताका शताब्दी समारोह

# विस्तृत कार्य-क्रम

दिनाक—मार्गशीर्ष शुक्ला १५, पौष कृष्ण १, २, ३, ४, ५, स० २०२६ वि० तदनुसार मगलवार से रविवार २३, २४, २५, २६, २७, २८ दिसम्बर १९६९ ।

स्थान—दयानन्द महाविद्यालय (डी ए वी कालेज) वाराणसी ।

### मंगलवार २३ दिसम्बर १९६९

प्रात·—७-०० बजे से ८-३० बजे तक सध्या एव वृहद् यज्ञ । यजमान-आर्यसमाज देहरादून

८-३० „ ९-०० „ 'ओ३म् ध्वज' एवं 'पाखण्ड-खण्डिनी पताका का उत्तोलन ।

९-०० „ ९-३० „ ध्वजगान—कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियाँ । भक्ति सगीत ।

९-३० „ १०-३० „ प्रवचन—श्री महात्मा आनन्दभिक्षु जी महाराज ।

१०-३० „ १२-०० „ व्याकरण परिषद् ।

मध्याह्न—१-३० „ २-०० „ संगीत ।

२-०० „ ५-०० „ पुराण-पर्यालोचन परिषद् ।

रात्रि—७-०० „ ७-३० „ सगीत ।

७-३० „ १०-०० „ श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अराष्ट्रीय-प्रचार निरोध सभा ।

### बुधवार २४ दिसम्बर १९६९

प्रात. ७-०० बजे से ८-३० बजे तक सन्ध्या, वृहद् यज्ञ ।
यजमान—आर्य प्रादेशिक उपसभा दिल्ली ।

८-३० „ ९-०० बजे-भक्ति सगीत ।

९-०० „ १०-०० „ प्रवचन—श्री स्वामी आनन्दगिर जी

१०-०० „ १२-०० „ सांख्य-परिषद् ।

मध्याह्न—१-३० बजे से २-०० बजे तक संगीत

२-०० „ ४-०० „ वेदान्त परिषद् ।

४-०० „ ५-०० „ भाषण-श्रीप्रो०रतनसिंह जी एम. ए गाजियाबाद ।

रात्रि—७-०० „ ७-३० „ सगीत ।

७-३० „ १०-०० „ सस्कृत सम्मेलन अध्यक्ष-डा०धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्क शिरोमणि
उद्घाटन भाषण—डा० सत्यव्रतसिंह अध्यक्ष, सस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ।

### बृहस्पतिवार २५ दिसम्बर १९६९

प्रात· ७—००बजे से ९—०० बजे तक सन्ध्या, महायज्ञ ।
यजमान—श्री रतनचन्द सूद, नई दिल्ली ।

९—०० „ ९—३० „ सगीत ।

९—३० „ १०—३० „ प्रवचन—श्री आचार्य भगवानदेव जी, गुरुकुल झज्झर ।

१०—३० „ १२—०० „ श्रौत सूत्र परिषद् ।

मध्याह्न १—३० बजे से २—०० बजे तक संगीत ।

२—०० „ ५—०० „ मानव आचार संहिता सम्मेलन तथा भाषण ।

रात्रि ७-०० बजे से ७-३० बजे तक संगीत ।

७-३० „ १०-०० „ उद्घाटन समारोह
स्वागत भाषण-श्री विश्वनाथ प्रसाद साहू, अध्यक्ष, स्वागत समिति
अध्यक्ष—श्री घनश्यामसिंह गुप्त, पूर्व प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली
उद्घाटन भाषण—माननीय श्री चरणसिंह जी, पूर्व मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश ।
संगीत—कन्या गुरुकुल, हाथरस की ब्रह्मचारिणियो द्वारा भाषण ।

### शुक्रवार २६ दिसम्बर १९६९

प्रात: ७-०० बजे से ९-०० बजे तक सन्ध्या, वृहद् यज्ञ ।
यजमान—श्री मुलकराज भल्ला, प्रधान, आर्य समाज, अनारकली, नई दिल्ली

९-०० „ ९-३० „ संगीत ।

९-३० „ १०-३० „ प्रवचन—श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी, दिल्ली ।

मध्याह्न १-०० बजे से १-३० बजे तक सगीत ।

१-३० „ ५-०० „ महिला—सम्मेलन ।

रात्रि ७-०० बजे से ७-३० बजे तक संगीत ।

७-३० „ १०-०० „ आस्तिक सम्मेलन ।
उद्घाटन भाषण श्री पूर्णचन्द्र जी, एडवोकेट, पूर्व प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली ।
विषय-(क) ईश्वर का अस्तित्व ।
(ख) ईश्वरावतार वेद-विरुद्ध है ।
(ग) ईश्वर की प्रार्थना, उपासना, स्तुति का वैदिक रूप ।

### शनिवार २७ दिसम्बर १९६९

प्रात: ७-०० बजे से ९-० बजे तक सन्ध्या, वृहद् यज्ञ ।
यजमान-आर्यसमाज, नया बांस, दिल्ली ।

९-०० „ ९-३० „ भक्ति सगीत ।

९-३० „ १०-३० „ प्रवचन-प्रो० श्यामराव जी, नई दिल्ली ।

मध्यान्ह १-०० बजे से ५-०० बजे तक शोभायात्रा ।

रात्रि ७-०० बजे से ७-३० बजे तक सगीत ।

७-३० „ १०-०० „ शिक्षा सम्मेलन ।
उद्घाटन भाषण-श्री कालूलाल श्रीमाली उपकुलपति, वाराणसी हिन्दू विश्ववि० ।
अध्यक्ष-श्री लाला सूरजभान, उपकुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।

## रविवार २८ दिसम्बर १९६९

प्रातः ७-०० से ९-०० बजे तक सन्ध्या, वृहद् यज्ञ ।
यजमान—श्री कृष्ण बलदेवजी, लखनऊ ।
९-०० „ ९-३० „ भक्ति-संगीत ।
९-३० „ १२-०० „ वेद—सम्मेलन ।
भाषण—(क) वेद अपौरुषेय हैं ।
(ख) वेदों मे इतिहास नहीं ।
(ग) ऋषि-निर्दिष्ट वेदार्थ प्रणाली ही ठीक है ।

मध्यान्ह १-०० बजे से १-३० बजे तक सगीत ।
१-३० „ ३-३० „ आर्य सम्मेलन ।
अध्यक्ष—श्री नरेन्द्रजी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण, हैदराबाद ।
(क) भाषण ।
(ख) आर्य जगत् के शास्त्रार्थ महारथियों का अभिनन्दन ।
(ग) आर्य जनता द्वारा ऋषि दयानन्द की पाखण्ड-निवारक भावना की पूर्त्यर्थ व्रत-ग्रहण ।
३-३० „ ५ ०० „ अभ्यर्थना—श्री प्रकाशवीर शास्त्री, ससद्-सदस्य ।

रात्रि ७-०० बजे से ७-३० बजे तक सगीत ।
७-३० „ ९-३० „ विशेष भाषण (क) मृतक श्राद्ध वेद विरुद्ध है ।
[ख] अन्ध विश्वासों से हानि ।
[ग] पाखण्ड निराकरण ।
९-३० „ १०-०० „ समापन-विधि ।

## परिषदों, सम्मेलनों, भाषणों के लिये आमंत्रित विद्वद्गण

श्री स्वामी अमरभारती जी; श्री स्वामी व्रतानन्द जी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़, श्री स्वामी अखिलानन्द जी मेरठ, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, श्री आचार्य प्रियव्रत जी, उप कुलपति गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति, श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड, श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक, श्री उदयवीर जी शास्त्री, श्री प्रो०रामसिह जी, श्री प० ईश्वरचन्द्रजी, श्री प० सुरेन्द्रनाथ शर्मा गौड,श्री डा० लोकेशचन्द्रजी,श्री आचार्य रामानन्दजी श्री प०शान्ति प्रकाश जी, श्री रघुवीरसिंह शास्त्री ससद सदस्य, श्री प० भवानीलाल जी भारतीय एम०ए० प्रवक्ता हिन्दी विभाग, गवर्नमेंट कालिज अजमेर श्री प. सत्यानन्द जी वेदवागीश अजमेर, सुश्री प्रज्ञादेवीजी, सुश्रीसुमित्रा देवी जी, श्रीमती सरलादेवी शास्त्री, श्रीमती सावित्री शर्मा, सुश्री श्रीमती देवी वेदाचार्य, श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री, श्री रामदयालु शास्त्री, श्री आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री,श्री आचार्य विशुद्धानन्द, श्री आचार्य सत्यमित्र जी शास्त्री ।

विज्ञप्तियां-(१) रविवार २८ दिसम्बर १९६९ को व्रत ग्रहण से पहिले प्रातःकाल से उपवास करना चाहिये ।
(२) परिषद् अथवा सम्मेलन के सैद्धान्तिक विषयों के बारे में कोई भी व्यक्ति शास्त्रार्थ अथवा शंका कर सकता है, जिसका उचित समाधान किया जावेगा ।
(३) कार्यक्रम मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने का अधिकार सुरक्षित है ।
(४) समारोह-नगर मे सिगरेट, बीड़ी पान सर्वथा निषिद्ध है ।
(५) सभा मण्डप तथा समारोह नगर के अन्य भागो मे सब नर-नारियो को परस्पर सद्व्यवहार करना चाहिए ।

**प्रकाशवीर शास्त्री, संसद सदस्य,** प्रधान
**महेन्द्रप्रताप शास्त्री,** सयोजक,
**शिवकुमार शास्त्री, संसद् सदस्य** प्रधान, आ० प्र० सभा, उ० प्र०
**कैलाशनाथसिंह** उप सयोजक
**प्रेमचन्द शर्मा, सदस्य, वि.स. आचार्य** मन्त्री, आ० प्र० सभा, उ० प्र०
**विश्वश्रवा व्यास** प्रचार—मन्त्री,

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समिति ।

★

## पाखण्ड खण्डिनी पताका सम्बन्धी गीत भेजिए

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के अवसर पर ओ३म् ध्वज के साथ 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' भी फहराई जावेगी । उस अवसर के लिये तथा भविष्य के लिये 'पाखण्ड खण्डिनी पताका'पर एक सुन्दर गीत की आवश्यकता है । कवियो से प्रार्थना है कि शीघ्र ही उपयुक्त गीत बनाकर १६ दिसम्बर तक निम्नस्थ पते पर भेज दें । सर्वोत्तम गीतकार को सम्मानित किया जावेगा ।

-- महेन्द्रप्रताप शास्त्री
सयोजक
आर्यसमाज, बुलानाला, वाराणसी

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में आने वाले यात्रियों को सूचना

१-शताब्दी कार्यालय "आर्यसमाज बुलानाला वाराणसी" मे खुल गया है । समारोह के सम्बन्ध मे सब प्रकार की जानकारी वहीं से प्राप्त हो सकेगी ।
२-यात्रियो को काशी अथवा वाराणसी जकशन स्टेशन पर उतरना चाहिये । उनको प्रत्येक गाडी पर हमारे स्वयम् सेवक मिलेंगे ।
३-महोत्सव डी० ए०वी० कालेज वाराणसी मे होगा । वहीं पर तथा पास के अन्य विद्यालयो में ठहरने का प्रबन्ध होगा ।
४-डी० ए० वी० कालेज वाराणसी जकशन से लगभग १ मील होगा । रिक्शा किराया लगभग ७५ पैसे है । स्टेशन पर रिक्शा तांगा आदि बडी संख्या मे मिलते है । ठहरने के लिये शिक्षा सस्थाओ के भवनो और धर्मशालाओ मे नि:शुल्क स्थान मिलेगा । अलग ठहरने वाले नर-नारी २) रुपये से १०) रुपये तक प्रतिदिन के हिसाब से देकर रावटी अथवा छोटे बड़े तम्बुओ मे ठहर सकेगे । इसमे प्रकाश का व्यय भी सम्मिलित होगा । चारपाइयो का किराया अलग होगा ।
५-भोजन, (रोटी और पूड़ी) तथा अन्य सामग्रियो की दुकानें होंगी। जहाँ पर निर्धारित मूल्य पर अच्छा सामान मिलेगा ।
६-स्नान के लिए गरम तथा ठंडा पानी उपलब्ध होगा ।
७-शनिवार २७ दिसम्बर १९६९ को दिन के एक बजे से शोभायात्रा निकलेगी—उसके लिये आर्य समाजों, तथा अन्य सस्थाओं को अपने अपने नाम के कपड़े तथा ओ३म् के झण्डे अवश्य लाना चाहिये ।

# वयं स्याम वरुणो अनागः

[ श्री प० जगत्कुमार जी शास्त्री साधु-सोमतीर्थ, देहली ]

यो मृडयाति चकुषे चिदागो,
वयं स्याम वरुणे अनागः ।
अनुव्रतानि अदिते ऋधन्तो,
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
—ऋ० ७-८७-७

शब्दार्थ-[य.] जो परमात्मा [आगः] अपराध [चकृषे] करने वाले के प्रति [चित्] भी [मृडयाते] अपनी कृपा ही करता है, [वरुणे] उस वरण करने और वर्णन करने योग्य पूज्य प्रभु के समीप [वयम्] हम [अनागः] पाप रहित [स्याम] होवें। [अदितेः] उस अखण्ड शक्ति के [व्रतानि] नियमों को [ऋधन्तः] जानते और मानते हुये,हे विद्वानो! [यूयम्] तुम सब [स्वस्तिभि.] अपने कल्याणप्रद उपदेशो और आशीर्वादों के द्वारा [सदा] सदा ही [नः] हमारी [पात] रक्षा करो।

भावार्थ—जो प्रभु पापियो पर भी सदैव दया करने वाला है, हम उसके समीप सदा ही पाप रहित होवें। हमारा आचरण सदैव ईश्वरीय आदेशो और सृष्टि क्रम आदि प्राकृतिक नियमो के अनुसार हो। हे ससार के विद्वानों अपने कल्याणकारी उपदेशो और आयोजनों के द्वारा आप सब सदा ही हमारी रक्षा करते रहे।

१-जो लोग अधर्माचरण करते हैं, भगवान् उनको भी भोग और ऐश्वर्य प्रदान करते ही हैं। जीवन देते हैं। सुन्दर और सबल शरीर देते हैं। सम्भलने, सुधरने और धर्माचरण करने के नये-नये अवसर प्रदान करते हैं। जिसे ईश्वरीय कोप कहा जाता है, वह भी वास्तव में तो ईश्वरीय दया का ही एक रूप है।

२—यदि मनुष्य प्रभु के दान का सत्कार और सदुपयोग नहीं करता, तो यह मनुष्य की अपनी इच्छा है। इसे कोई चाहे, तो मनुष्य की मूर्खता भी कह सकता है। परन्तु भगवान् की उसके ऊपर दया और कृपा मे तो फिर भी कुछ भी कमी नहीं होती। वह तो धर्मात्माओं तथा अधर्मात्माओं सभी पर अपनी कृपा करता ही है। वह तो सबका है। वह तो स्वभाव से ही दयालु है। कभी-कभी ऐसा भी होना है कि अपनी नादानी के कारण मनुष्य प्रभु की दया को भी उसका कोप समझ बैठता है।

३—जो धर्मात्मा हैं, वे प्रभु की दया से मोक्षावस्था को प्राप्त होते हैं। और जो दण्डनीय अधार्मिक जन हैं, वे भी सुधरने और उन्नत होने के नये नये अवसर पाते ही हैं। उन पर प्रभु की कृपा होने के स्पष्ट प्रमाण भी सभी के सामने हैं। परन्तु मनुष्य के धार्मिक होने पर प्रभु के प्रेम और आनन्द की जो अनुभूति प्राप्त होती है, उसका आनन्द कुछ और ही है। त्यागी,

तपस्वी, सात्विक, आस्तिक और धार्मिक मनुष्य, जिस ईश्वरीय आनन्द का उपभोग किया करते हैं, भोगी, विलासी, तमोगुणी, नास्तिक, दम्भी और अधार्मिक लोगों के विषयानन्द और सासारिक सुख तो उसकी तुलना मे सर्वथा ही रूखे, फीके, कडवे, कसैले और अत्यन्त तुच्छ हैं।

४—ईश्वर के सम्मुख तो हमें पूर्णतया पवित्र होकर ही जाना चाहिये। पवित्रता सर्वांगीण पवित्रता हो। तन पवित्र हो। मन पवित्र हो। विचार पवित्र हों। कार्य क्रम पवित्र हो। खान-पान पवित्र हो। साथी-सगी पवित्र हो। वातावरण पवित्र हो। रोम-रोम और कण-कण मे पवित्रता का निवास हो। क्यो? इसलिये कि हमारा वह प्रियतम भी पवित्र है। वह पवित्रता को पसन्द करता है। उसके सामने दिखावा कैसा? और बनावट क्यों? सर्वांगपूर्ण पवित्रता का सम्पादन करो।

५—सावधान! ढोंगी बनकर उसके सामने जाने से तो काम नहीं चलेगा। हमने माना कि मनुष्य अपने दुष्कर्मों, दुष्ट मित्रों, दुष्ट अभ्यासो, दुष्ट विचारों और अपनी भ्रान्त धारणाओं से बहुत अधिक मोह करता है। वह सहसा ही उनको छोड़ने के लिये तैयार नहीं होता फिर भी वह यदि प्रभु को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे इन अभद्र पदार्थों, भावों, विचारों, कार्यों, सम्बन्धो और सम्पर्कों को त्यागना ही होगा। ये तो मैल हैं। मैल कहो, वा मल, बात एक ही है। इनको त्यागे बिना तो ब्रह्मानन्द की प्राप्ति सम्भव ही नहीं है।

अपने जीवन के चरम-लक्ष्य अर्थात् मोक्ष को तो मनुष्य तभी प्राप्त कर सकेगा, जब कि वह सभी प्रकार की अभद्रताओं का परित्याग करके, भद्रताओं का सम्पादन पूरा कर चुकेगा।

६—क्योंकि—

ओम् नाम कडवा लगे,
मीठा लागे दाम।
दुविधा मे दोनो गये,
माया मिली न राम ॥

७—और—

चिऊँटी चावल ले चली,
आगे मिल गई दाल।
कहे कबीर दोऊ ना मिलें,
इकले दूजी डाल ॥

८—एकमेव—

मन मलीन तन सुन्दर कैसे।
विष रस भरे कनक-घट जैसे।

९—उत्थान कठिन है, पतन आसान—

मनवा तो हंसा भया,
उड़कर चला आकाश।
ऊपर से ही गिर पड़ा,
वह माया के पास ॥

१०—कार्य कुछ कठिन अवश्य है। फिर भी इसे करना ही होगा। प्रभु की प्राप्ति का कोई दूसरा मार्ग भी तो नहीं है। हे दुनियादार भाइयों! आप सब अपने पूर्ण सामर्थ्य से ससार के सुख-समुदाय और पवित्रता के भण्डार की वृद्धि तथा रक्षा के आयोजन करो। ऐसा करते हुए तुम उस दीनदयाल प्रभु के प्रति सदा ही कृतज्ञ रहो। ऐसा होने पर तुम्हारा जीवन उत्तरोत्तर पवित्र और आनन्दमय होता चला जायगा।

११—हे जगति-तल के सम्पूर्ण विद्वानों! आप सब आपस मिलकर एक हो जाओ। और, सज्जनता की रीति से हमारा पथ-प्रदर्शन करो। हम साधारण लोगों को, आप की आपस की फूट और नोक-झोंक के कारण भारी कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। आप लोग ऐसे नियमों, विधानों, सिद्धान्तों और मन्तव्यों का उपदेश तथा प्रचार करो,जो प्राणिमात्र के लिये कल्याणकारी हों। ऐसी वस्तुओं और ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करो, जिनसे सभी का भला हो। क्योंकि जब विद्वानों में पारस्परिक प्रेम होता है, तभी उनके अनुयाइयों में भी प्रेम का व्यवहार हो सकता है। विद्वानों में पारस्परिक वैर-विरोध के होने पर तो उनके अनुयाई वर्गो में भी भारी उपद्रव और विनाश काण्ड उपस्थित हो जाते हैं। यह एक सार्वभौम नियम है।

१२—सभी विद्वानों को उचित है कि अपने उत्तम सिद्धान्तों को केवल मात्र मौखिक कथन तक ही सीमित न रखें। ऐसा होने पर तो उन सिद्धान्तो को मौखिक शब्द-जाल ही समझा जायेगा। और विद्वानों का अपयश भी होगा। सभी विद्वानो को अपनी-अपनी करनी और कथनी मे उचित ताल-मेल भी स्थापित करना चाहिये। अपने उपदेशों में उन्हें

(शेष पृष्ठ ९ कालम २ पर)

# काव्य कानन

## काशी शास्त्रार्थ शताब्दी— "प्रयाण गान"

चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
शत वर्ष पहले जिसे जाकर के जीता था दयानन्द ने,
हिलाया काशी की धरती को था जाकर दयानन्द ने,
बजाया वेद का डंका जहां जाकर दयानन्द ने,
दिया पाखण्ड का घट फोड़ फिर जाकर दयानन्द ने,
उसी काशी मे फिर से एक हुंकार करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
वही काशी जो गढ़ विद्या का दुनिया भर में अब तक,
वही काशी जो गढ़ संकीर्णता का दुनिया भर में अब तक,
वही काशी जो गढ़ पाखण्ड का दुनिया भर में अब तक,
वही काशी जो गढ़ मूर्ति-पूजा का दुनिया भर में अब तक,
उसी काशी मे ऐ आर्यों, चलो पाखण्ड हरने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
'संस्कृत विश्वविद्यालय, जहां की एक शोभा,
'पाणिनी विश्व विद्यालय' जहां की एक शोभा,
'हिन्दू विश्व विद्यालय' जहां की एक शोभा,
वही प्राचीन 'गङ्गा' भी जहा की एक शोभा,
उसी काशी मे सच्चे ज्ञान का प्रसार करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
जहाँ की गलियों में अब भी घर-घर ब्राह्मण बसते,
जहां की गलियों में अब भी घर-घर संस्कृत विद्यालय,
जहां के लोग प्रातःकाल आ गङ्गा नहाते,
जहां के लोग अब भी घर-घर वेद पाठ करते,
उसी काशी के लोगों को पुनः 'गुण, कर्म स्वभाव' सिखाने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
ऋषि ने जब किया शास्त्रार्थ था काशी विजय करने ॥
'मूर्ति-पूजा' अवैदिक है कहा था लाखों में आकर,
ऋषि ने जब रखे प्रमाण वेदों के वहां लाकर,
विशुद्धानन्द-बाल शास्त्री भगे मैदान तजकर,
उसी काशी में फिर शास्त्रार्थ की धूम मचाने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
मगर कब सत्य पर इस तरह आवरण पड़ा है,
कहीं सूरज का भी प्रकाश रोके से रुका है,
कहीं दरिया का भी प्रवाह रोके से रुका है,
कहीं सुमेरु पर्वत भी हिलाये से हिला है,
उसी काशी मे फिर से सत्य का प्रसार करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
दयानन्द देव ने इस अपमान से जी न दुखाया,
अपनी सच्ची विजय पर, ईश्वर के सम्मुख सिर नवाया,
सदैव ही सत्य वैदिक धर्म का डंका बजाया।
अठारह बार काशी आके विज्ञापन लगाया,
उसी काशी में उस विज्ञापन की पुनरावृत्ति करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥
मिला हो कोई भी प्रमाण तो लाकर दिखाओ,
कहीं वेदों में मूर्तिपूजा' हो तो लाकर दिखाओ,
यदि ईश्वर की मूर्ति बनती हो तो आकर बनाओ,
अगर कहीं मिल भी गई हो तो आकर दिखाओ,
उसी काशी में उक्त प्रश्नों की बौछार करने।
चलो काशी विजय करने, चलो काशी विजय करने ॥

—सन्तोष 'कण्व' बरेली

## जरूरत है !

काशी को प्रस्थान करने की आज जरूरत है !
वैदिक-सुदृढ़ शस्त्र सजाने की आज जरूरत है !!
आर्य्यवर्त्त की सुसंस्कृति बताने की जरूरत है !
विश्व मे भव्य-भावना भरने की जरूरत है !!
महर्षि की दिग्विजय को फिर दिखाने की जरूरत है !
सत्यार्थ प्रकाश की ज्योति जगाने की जरूरत है !!
सत्यासत्य का हो रहा युद्ध-विजय बताने की जरूरत है !!
सज-धज के चलो आर्य-गौरव दिखाने की जरूरत है !!
चलें सब विज्ञवर पण्डित बेधड़क बोलने की जरूरत !
चल रही सब पाखण्ड-पोल ये खोलने की जरूरत है ! !
पुराणो मे 'भरे मनमाने धर्म' सुधारने की जरूरत है !
चल आये वैदिक धर्म वही धारने की जरूरत है।
समय है शास्त्रार्थ करने की विज्ञवीरों की जरूरत है !
खोलदें द्रव्य खजाने ऐसे दानवीरों की जरूरत है !
बतागये महर्षि रास्ता याद दिलाने की जरूरत है !
'घनसार' विचार कर चलना, गौरव दिखाने की जरूरत है!

—कवि कस्तूरचन्द्र "घनसार"

## नेह निमन्त्रण

चलो सब शूरो सीधे काशी
ज्ञान गङ्गा गहरी धारा, सत्य स्नेह ने शीघ्र पुकारा
श्रेष्ठ सृष्टि के वासी···
तेईस से अठ्ठाइस दिसम्बर, नित्य निनाद से अवनी अम्बर
भरो प्रीति प्रत्याशी···
छोड़ ऊपरी उहापोह को, चलो शताब्दी समारोह को
अभियन्ता अधिशासी···
आर्यों चहु दिशि आज चुनौती, मनीषियो को मौन मनौती
देश प्रदेश प्रवासी···
शुद्ध शिरोमणि शास्त्रार्थ है, नित्य-न्याय ननु निर्णयार्थ है
श्रुतिशील श्रेष्ठ संन्यासी···
अवश्यमेव तु सिद्धि अस्ति, भूधातोर्हि भविष्यति
लृलुटो स्यतासी···
मिथ्या मत सब 'मूल' हिलाये, मृतप्राय जन पुन. जिलाये
प्रतिभा पूरण मासी···
मार्ग दुनिया को दिखा दो, आर्यो आगे नाम लिखा दो
अवनी पर अभी अमासी···
नित्य निरञ्जन निराकार है, नतस्य प्रतिमा वेद विचार है
अजर अमर अविनाशी···
आयोजक जहँ श्री शास्त्री, क्यो न सफल सब होंगे कार्य
कोरी मत दीजे शाबाशी···
'शिव' 'महेन्द्र' 'बहु' 'देव' मिलेंगे, पुञ्ज 'प्रकाश' से पुष्प खिलेंगे
है आकर्षण आकाशी···
कुछ दिन का है देखो मेला, झूठा जग का छोड झमेला
जल में मीन प्यासी···
दिग्विजय करके दिखलावें, कौमुदि कीर्ति केतु फहरावे
जन-जन ज्योति जयाशी···
द्वार विजय दुन्दुभि बजाओ, श्रुति श्रेयस मन सुमन सजाओ
मोहन मन अभिलाषी···

—मदनमोहन एडवोकेट मोठ (झांसी)

# दिल्ली में मूर्त्ति पूजा पर शास्त्रार्थ

[ ले०—श्री ओमप्रकाश शर्मा, आर्य पुरोहित दिल्ली ]

२३/११/६९ दिन रविवार की रात्रि को ८ से १० बजे तक आर्यसमाज देव नगर दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर श्री प्रो० रामसिंह जी की अध्यक्षता मे सनातन धर्म और आर्यसमाज के मध्य शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज की ओर से शास्त्रार्थ कर्त्ता परम पूज्य श्री प० अमर स्वामी जी महाराज थे, और सनातन धर्म की ओर से श्री पं० रामेश्वराचार्य जी शास्त्री शास्त्रार्थ कर्त्ता थे।

### श्री पं० रामेश्वराचार्यजी शास्त्री ने कहा कि—

यह समय आपस में लड़ने का नहीं है, इस समय तो हिन्दुओं को संगठित होकर वैदिक धर्म के विरोधियों के साथ लड़ना चाहिये।

२—मेरा दावा है कि वेदों मे संन्यास का विधान नहीं है, मैं इस विषय पर शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ स्वामी जी महाराज वेदों में संन्यास का विधान बताने की कृपा करें।

३—वेदों में मूर्ति पूजा का विधान है या नहीं यह जानने से पहिले यह निर्णय हो जाना चाहिये कि असली वेद वह हैं जिनको आर्य समाज मानता है? या वह वेद हैं जिनको सनातन धर्म मानता है। जब तक यह निर्णय न हो तब तक वेद के प्रमाण कैसे दिये जा सकते हैं?

४—संस्कार विधि-मुण्डल संस्कार में—'विष्णो दंष्ट्रोऽसि, मन्त्र के द्वारा उस्तरे को कहा गया है कि—हे उस्तरे तू विष्णु की डाढ़ है। यह मूर्ति पूजा है।

'शिवो नामादि स्वधिस्ते पिता नमस्ते,,० इस मन्त्र में उस्तरे को नमस्ते की गई है, यह भी मूर्ति पूजा है। 'वनस्पति भ्यो नमः, कह कर ऊखल और मूसल के पास मूर्ति अन्न रखने का विधान भी संस्कार विधि में है, कहिये यह क्या है?

मुसलमान मूर्तियो के विरोधी थे उनकी बात पर मुहर लगाकर आर्य समाज भी उन्हीं में मिल गया।

### श्री म० अमर स्वामी जी महाराज—

शास्त्रार्थ शत्रुता और लड़ाई नहीं यह तो प्रेम पूर्वक विचार विनिमय है। शास्त्रार्थ करके हम आपके वैरी नहीं बन जायेंगे, वैदिक धर्म विरोधियों का सामना करने के लिये—शास्त्रार्थ समाप्त होते ही हम आपके साथ चलने के लिये तैयार हैं, मैं आपके आगे-आगे चलूंगा।

२—वेदों में संन्यास का विधान है या नहीं, आज शास्त्रार्थ का यह विषय नहीं है, आज तो यह बताइयों कि वेदों मे मूर्ति पूजा का विधान कहाँ है?

हैं। वह तस्वीर को बनाना और रखना पाप मानते हैं, हम न उनका बनाना पाप मानते हैं न रखना, वह मूर्तियों को तोड़ते हैं और हम मूर्तियों की रक्षा करते हैं।

हम यह कहते हैं कि मूर्ति—मूर्तिमान् की होती है अमूर्त्त अर्थात् निराकार की नहीं। श्री राम और श्री कृष्ण आदि महापुरुषों के चित्र रक्खे जायें और उनके चरित्रों से शिक्षा ली जाय। मूर्ति चाहे किसी की भी हो वह खाती-पीती और सोती जागती नहीं है। मूर्तियों के खिलाने पिलाने और सुलाने जगाने का यत्न निरा पाखण्ड है, हम इसी का खण्डन करते हैं।

## विचार-विमर्श

१—वेद के किन-किन मन्त्रों में आज्ञा है कि ईश्वर की मूर्ति बनानी और पूजनी चाहिये २—मूर्ति-सोना, चान्दी, पीतल, पत्थर या मिट्टी आदि किस चीज की बनायी जानी चाहिये? ३—वंशी वाली मूर्ति का वेद में विधान है या धनुष वाली का : चार मुख वाली, या चार या आठ भुजा वाली का या रुण्ड-मुण्ड गोल मटोल का, जिसका कि नाम शिव-लिंग रक्खा हुआ है, इन मे से कौन-सी मूर्ति के बनाने का विधान वेद में है? ४—पुराणों मे भिन्न-भिन्न चार ईश्वर बताये गये हैं। १—चार मुख वाले ब्रह्मा, २—चार भुजा वाले विष्णु, ३—गले में साँप लपेटे हुए तीन नेत्रों वाले शिव जी, ४—आठ भुजाओ वाली सिंह वाहिनी देवी,। बताइये इन में से कौन वैदिक है, जिसकी मूर्ति आप सिद्ध करना चाहते है।

मूर्तियो के विषय में हम मुसलमानों के साथ कदापि नहीं

ईश्वर की बनाई हुई मूर्तियां-माता पिता आचार्यादि हैं उनकी पूजा करनी चाहिये पत्थर मिट्टी आदि जड़ और मनुष्यों द्वारा बनाई हुई मूर्तियों की नहीं।

आर्य समाज के संस्कार में विधि आदि ग्रन्थों में मूर्ति है या नहीं यह भी शास्त्रार्थ का विषय नहीं है। वैसे 'विष्णो दंष्ट्रो ऽसि, में यह कहा गया है कि यज्ञ में यह उस्तरा काटने का साधन है। विष्णु-यज्ञ का नाम है दंष्ट्र, काटने का साधन, उस्तरा-मुण्डन संस्कार रूप यज्ञ मे बाल काटने का साधन है। वह विष्णु कौन सा है, उस्तरे जिसकी डाढ़ हैं?

'शिवो नामासि,० मन्त्र यजुर्वेद के तीसरे अध्याय का है इसमें उस्तरे का कहीं नाम नहीं है कल्याणकारी नाम वाले परमेश्वर को नमस्ते है।

ऊखल मूसल के नाम पर अन्न भूमि पर रखना, ऊखल मूसल के खाने के लिये नहीं है, ऊखल मूसल से जो कृमिक्षत विक्षत या अङ्ग भङ्ग हो जाते हैं उनके लिये भोजन देने का विधान है स्कूल पाठशाला आदि के नाम पर जो दान दिया जाता है, वह उन स्थानों और मकानों में रहने वालों के भोजनादि के लिए होता है मकान भोजन नहीं खाते हैं।

जिन चार वेदों को आर्यसमाज मानता है उनको सनातन धर्म भी मानता है वह तो उभय सम्मत हैं उन्हीं के प्रमाण दीजिये। इनके अतिरिक्त जिनको सनातन धर्म वेद मानता है वह तो पूरे मिलते ही नहीं है उसके प्रमाण का प्रश्न ही नहीं उठता है।

'न तस्य प्रतिमास्ति, कह कर वेद में ईश्वर की मूर्ति का निषेध किया है विधान कहीं भी नहीं है। आपके पुराणो में भी मूर्ति पूजा का खण्डन विद्यमान है। यथा—न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामया, भागवत्

इसमें कहा है कि पानी के तीर्थ नहीं होते और मिट्टी पत्थर आदि के देव नहीं होते हैं। 'यस्यात्म बुद्धि, कुणपेत्रिधातुके० भागवत के श्लोक में मूर्ति पूजकों को बैलों का चारा ढोने वाला गधा बताया है। क्या यह पुराण वाक्य वेद विरुद्ध है।

### श्रीपं० रामेश्वराचार्य जी शास्त्री—

ने फिर वेदों में संन्यास सम्बन्धी मन्त्र प्रमाण की मांग की और कौन से वेद प्रमाण हैं यह प्रश्न उठाया। आगे कहा कि—इन्द्रो मायाभिः पुरु रूप ईयते, इस मन्त्र में कहा है कि—इन्द्र परमेश्वर अनेक रूपों में, आता है।

'सम्वत्सरस्य प्रतिमा, रात्रि,० इस वेद मन्त्र मे संवत्सर की प्रतिमा रात्रि बताई है, रात्री काली होती है इससे सिद्ध हुआ परमेश्वर की काली प्रतिमा बनाने का इसमें विधान है।

'चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽस्य।,

# महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा सुरीनाम दक्षिण अमेरिका में वेद-प्रचार

## दक्षिण अमेरिका ब्राजील, पेरू, मैक्सिको में भारतीय सभ्यता की रक्षा के लिये आर्यसमाज को कार्य करने की प्रेरणा

महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

भारत के अपने आर्य भाइयो से लगभग १५ हजार मील दूर मैं पाताल देश मे बैठा हुआ हू। भारत से योरोप तथा योरोप से यू एस ए (अमेरिका) तथा अमेरिका से दक्षिण अमेरिका यह सारी यात्रा मैने आकाश-मार्ग से की। कितने ही देश, कितने ही पर्वत, कितने ही बड़े समुद्र मैं लाघ आया, और जब मै दक्षिण-अमेरिका के देश सुरीनाम में पहुचा तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं भारत पहुच गया हू। सुरीनाम के लोगो ने हिन्दी भाषा को अभी तक जीवित रखा है।

आज ध सौकसे वर्ष पूर्व भारत के उत्तर ।प्रदेशस्थ गोरखपुर बहराइच, गोण्डा, बस्ती, अयोध्या तथा बरेली इत्यादि जिलो से लगभग पैंतीस हजार भारतीय यहाँ के बीहड़ जगलों को आबाद करने के लिये कन्टैक्ट पर लाये गये थे। इन पुरुषार्थी भारतीयो ने यहाँ पहुंच कर भयकर तप तपा और सुरीनाम को दक्षिण अमेरिका का फूल बना दिया। उन पुरुषार्थी लोगों की दयनीय अवस्था से ईसाई लोगों ने लाभ उठाया, और चौदह हजार भारतीयों को लोभ देकर ईसाई बना लिया गया।

इस समय इस देश की चार लाख आबादी मे से डेढ़ लाख हिन्दू हैं। जो लोग मजदूर बनकर आये थे, आज वह जमींदार, व्यापारी, एडवोकेट, डाक्टर तथा इन्जीनियर हैं, और अर्थ की दृष्टि से उन्नति कर रहे हैं। सबसे पहले यहाँ आर्य समाज का कार्य 'आर्य दिवाकर' के नाम से आरम्भ हुआ, आज आर्य दिवाकर एक विशाल सस्था बन चुकी है। इसके बड़े बड़े भवन हैं, लाखों रुपयों की सम्पत्ति है। इसके अधीन सोलह आर्य समाजें हैं, जिनमें से दस के अपने सुन्दर भवन हैं। बारह प्रचारक पण्डित हैं, आठ हिन्दी पाठशालायें चल रही हैं, एक बहुत बड़ा अनाथालय चल रहा है। भारत के रुपये की दृष्टि से बारह लाख रुपये का वार्षिक व्यय है। एक नन्हा मासिक पत्र भी प्रकाशित होता है। यहाँ आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से एक समाज बना हुआ है। मन्दिर बड़ा सुन्दर है, एक अनाथालय के अतिरिक्त इस समाज की ओर से अन्य कोई विशेष कार्य नहीं है।

मैं यहाँ २१ सितम्बर को पहुच गया था, तब से निरन्तर सारे देश के ग्रामों में जाकर वेद-कथायें सुना रहा हू। यह कार्य १७ नवम्बर तक का है। उसके बाद मैं गियाना, ट्रिनीडाड जाकर वेद-सन्देश सुनाऊँगा, तदनन्तर उत्तरी अमेरिका मे एक मास तक भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयोंमे भाषण दूंगा।

सुरीनाम देश के गवर्नर तथा प्रधान मन्त्री और दूसरे मन्त्रियो से मैंने भेंट की और उन्हें आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधि और दयानन्द कालेज सोसायटी के कार्यों आदि से अवगत किया, मेरी बातें सुन कर वे आर्य समाज से बड़े प्रभावित और प्रसन्न हुये, और आश्चर्य से पूछा कि इतना बडा कार्य आर्य समाज कैसे करता है। मैंने उन्हे बताया कि किसी बड़ी सरकारी सहायता से नहीं, अपने तप और त्याग से ही आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ रहा है।

जब आर्य दिवाकर का चालीसवाँ उत्सव हो रहा था तो ये सारे राज्याधिकारी उसमें पधारे थे, और मैंने अंग्रेजी में भाषण देकर सिद्ध किया कि वैदिक शिक्षा और वेदवाद ही से मानव सच्चा मानव बन सकता है। गवर्नर मेरे भाषण को [illegible] बड़े प्रसन्न हुए और अपने भाष[illegible] [illegible]े भाषण का वर्णन करते हुये कहा कि ऐसे [illegible] से दुनिया मे शान्ति हो सकती है। आर्य दिवाकर के सुयोग्य उप प्रधान श्री रामभरोसे जी ने सभा के चालीस वर्षों का सुन्दर विवरण सुनाया, आर्य दिवाकर के प्रधान डा०इन्द्रमणिसिंह रघुबीरसिंह एक बहुत पण्डित नवयुवक बार एट-ला हैं, और समाज के लिए पूरा ध्यान देते हैं। यदि आर्य दिवाकर के पण्डित और कार्यकर्त्ता लोग ध्यान न देते तो भारत के आये ये सब पुरुषार्थी ईसाई-मत में चले गये होते।

अब सुनिये यह दक्षिण अमेरिका क्या है। इसमे लगभग २५ देश हैं। जिसमे से ब्राजील सबसे बडा है, जहाँ पिछले दिनों भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्द्रा-गांधी का भव्य स्वागत हुआ था। दक्षिण अमेरिका के १७ देशों मे में श्रीमती गाधी ने भाषण देकर भारत के प्रति बडा प्यार पैदा किया। दक्षिण अमेरिका के जिन देशो मे मुझे जाने का अवसर मिला या जिन देशो के लोग आकर मुझे मिले उनका कहना है कि श्रीमती गांधी के दौरे से इधर रहने वाले भारतीयों को हर प्रकार का लाभ हुआ है। ब्राजील के सबसे बड़े नगर 'साओ पालो' मे सत्तर लाख लोग रह रहे हैं। थोड़े ही दिनों में इस नगर ने बडी उन्नति की है। छः लाख तो इस नगर में जापानी ही हैं, जो इस नगर के कला-कौशल की जान हैं। इस नगर के बैंक रात के नौ बजे से प्रात. चार बजे तक खुलते हैं। इस नगर मे चौबीस घण्टे काम होता है, कोई बेकार नहीं है। ब्राजील के लोग विलक्षण हैं ये न काले हैं न गोरे हैं। नीग्रो तथा भारतीयो के साथ योरोप के गोरे लोग सर्वथा मिल गये हैं। आपस मे विवाह होने लगे हैं, एक दूसरे की बातो को अपना लिया गया है, इनके परिवार भारतीयों जैसे हैं, कितने ही खाने भारतीयों जैसे हैं, मिलते हैं तो आलिंगन करते हैं, अतिथ्य-सेवा बडी है।

योरोप तथा अमेरिका के लेखको पर यदि विश्वास किया जाय तो कहना होगा कि पाताल देश दक्षिण अमेरिका में सबसे पहले वे लोग आये जो एशिया की ओर से चले थे। इनमे से कुछ लोग आज से पच्चीस हजार वर्ष पहले इस दक्षिण देश मे आबाद हो चुके थे। इन्हें आज "सुर्ख इण्डियन" कहा जाता है। इनका रग-रूप तथा नाक-आंख, ओठ आज भी भारतीयो जैसे है। इन लोगो को देखने जब मै सुरीनाम के घने जगलो मे गया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मै उत्तर प्रदेश या पजाब के सज्जनो से बात कर रहा हू। दुभाषियो के द्वारा मैंने उनसे कहा कि मै अपने बिछुड़े भाई से मिल रहा हू। रेड-इण्डियन ने कहा कि आपको देखते ही मेरे रक्त की गति तीव्र हो गयी, और मन ने चाहा कि मैं आपके पग पकड़ लूं। पहले ये लोग सारे

[ शेष पृष्ठ १२ पर ]

# श्री करपात्री जी का भ्रमोच्छेदन

दिनांक १९ नवम्बर के समाचार पत्र आज मे श्री स्वामी करपात्री जी का काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के सम्बन्ध मे सामजस्य की आवश्यकता शीर्षक पत्र प्रकाशित हुआ है। आर्य्यसमाज स्वामी दयानन्द जी की जो शास्त्रार्थ शताब्दी काशी मे, काशी नरेश की अध्यक्षता मे सौ वर्ष पहिले शास्त्रार्थ हुआ था उसके सम्बन्ध में मना रहा है। किन्तु यह कहना कि इतिहास से सिद्ध है कि स्वामी दयानन्द कई बार काशी मे पराजित हुए थे, असत्य है। आपके पास कौन इतिहास है। यदि इतिहास मे देखना हो तो देखें। महर्षि दयानन्द ने जब गोरक्षा का प्रश्न उठाकर गोकरुणानिधि लिखकर काशी मे हस्ताक्षर कराने आये थे, तो काशी के पडितो ने उन्हे ईसाईयों का एजेण्ट कहकर अपमानित किया था और गोरक्षा पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया था। नहीं तो गोरक्षा का प्रश्न कभी का हल हो गया होता। आपने लिखा है कि स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ मे विशुद्धा नन्द बालशास्त्री शिवकुमार शास्त्री से पराजित हुए थे। शिवकुमार शास्त्री ने तो शास्त्रार्थ ही नहीं किया। काशी के पडित धर्म का लक्षण न कर सके। बालशास्त्री अधर्म का लक्षण न कर सके। मूर्तिपाषाण पूजा वेदो मे न दिखा सके। और कर्म को कल्म सज्ञा कहाँ होती है। व्याकरण से सिद्ध न कर सके। अन्त मे पराजित होकर हुल्लड़ करते हुए सब लोग भाग गये। अन्त मे काशी नरेश ने स्वामी जी से क्षमा माँगी। आप मुद्रित काशी शास्त्रार्थ पढ़कर देखे। तथा अजमेर मे रखे हुए स्वामी जी के हस्तलिखित पत्रो को पढ़े। यह तो वही बात हुई कि स्वामी शकराचार्य को कोई कह दे कि इतिहास से सिद्ध है कि बौद्धो से हार गये थे। स्वामी दयानन्द की कृपा है कि जिन पुराणो को आप वेद मानते हैं, उसमे गोवध का प्रकरण जो गोमेध और अश्वमेध नाम से है, उसे—अश्वालम्भ गवालभ्यं सन्यासं पल पैतृक। देवरात् सुतोत्पत्तिः कलौ पच विवर्जयेता। पारासर कह कर कलिकालके लिये निषेध है। वह उत्तर देते हैं, किन्तु आज सनातन धर्म के सब पडित कहते हैं कि गोमेध अश्वमेध का अर्थ गोवध और अश्ववध नहीं है। अपितु गौ पृथ्वी का कृषि सम्बन्धी विद्या का वर्णन है, और अश्वमेध का अर्थ राष्ट्र रक्षा है। ऋषि दयानन्द ये सारे अर्थ कर गये। आज उनके सम्बन्ध मे झूठ बोलकर सामजस्य स्थापित करना चहते हैं। शुद्धि आन्दोलन ऋषि दयानन्द ने किया था, कि आज आर्य्यसमाज ही ईसाईयों के क्षेत्र मे जाकर शुद्धि का कार्य कर रहा वेद नहीं छपा है। उपनिषद ब्राह्मण पुराण ग्रन्थों पर वेद क्यों नहीं छपा। आप शाखा ग्रन्थों की बात करते हैं। जो इस समय बहुत से लुप्त हैं, इसका अर्थ हुआ मुसलमानो को ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण और ईसाइयों का बाइबिल पूरा केवल हिन्दुओं का वेद पूरा नही है। आपने लिखा है कि आर्य्यसमाज ईश्वर को निराकार साकार दोनों मानता है। आपको पता होना चाहिये कि आर्य्यसमाज वेद के आधार पर ईश्वर को केवल निराकार मानता है। आर्य्यसमाज जिन वैदिक सिद्धातो को मानता है उसमे सब आस्तिकों की एकता एव सांमजस्यता है। काशी शास्त्रार्थ शताब्दी में आपको सहयोग करना चाहिये। और प्रेम पूर्वक सम्मिलित होना चाहिये।

है। आप एक ओर राष्ट रक्षा की बात करते हैं, दूसरी ओर हरिजनो को अस्पृश्य समझते हैं। उस दिन काशी अजेय कहाँ थी। जब हिन्दू विधर्मी बने। काशी के महान् पडित नीलकठ शास्त्री मधुसूदन शास्त्री ईसाई बन गये। काशी के पडित तब कहाँ थे। जब विश्वनाथ मदिर तोडा गया। और काशी के पडितो ने कहा था कि विश्वनाथ जी कुआ मे कूद गये। आपको स्वत इसविषय मे मौन साधकर सत्य सामजस्य का परिचय देना चाहिये। हैदराबाद आदि स्थानो पर सत्याग्रह कर आर्य्यसमाज ने मन्दिरो की रक्षा किया। आर्य्यसमाज चार वेदो कोही मूलसहिता मानता है। आप १३ मानते हैं तथा उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थो को भी वेद सज्ञा देते हैं, किन्तु किसी भी पुस्तक पर

आप काशी शास्त्रार्थ शताब्दी की घोषणा पढ़लेते। जिसमे आस्तिक सम्मेलन रखा गया है। जो अनीश्वर वादी हैं। उसमे सब ईश्वर वादी एक हो। उसमे महिला सम्मेलन संस्कृत सम्मेलन- आदि होगे। यज्ञ होगा—१०० वर्ष के पश्चात् फूट को समाप्त कर एकता सूत्र मे परिबद्ध होकर राष्ट्र की रक्षा करे। आज भगवान् की बनाई लाखों मूर्तिया ईसाई बन रही हैं। उनको बचाते और नही तो आप लोग अलग दो चावल की खिचडी पकाना चाहते है। स्वामी दयानन्द की दिग्विजय है, जो स्त्रियां आज देश का कार्य्य कर रही हैं। अब अछूत शब्द ही निकाल दिया गया। आपका काम है कुछ न कुछ व्यर्थ का काम करना। आपने लिखा है मन्दिर और मूर्तिया बहुत बनगई। लेकिन आपको ज्ञात होना चाहिये कि मूर्तिपूजा के पीछे हमारा देश गुलाम हुआ। हमारी लड़कियां गजनी के बाजार में दो-दो आना में बिकी—सोमनाथ का इतिहास बतलाता है।—आज उस अनेकता का परिणाम है कि हमारी माता के टुकड़े हुए और हिन्दू जाति में इस रुढ़िवादिता और पाखड के पीछे एकता का सूत्र समाप्त हो गया।

आचार्य श्री प० सत्यमित्र शास्त्री
वेदतीर्थ, बड़हलगज, गोरखपुर

---

आपने यह कहकर कि विश्वनाथ मन्दिर मे अछूतों के प्रवेश से भगवान् विश्वनाथ निकल कर मेरे विश्वनाथ मे चले आये। और अलग विश्वनाथ मन्दिर बनवाया है।

इस व्यवहार से सारी काशी एवं हिन्दू जगत् आप से क्षुब्ध है। आकर देखिये जहाँ शकराचार्य्य पैदा हुए वह सारा गाव ईसाई बन गया है, और ईसा जी मेरे प्राण बचैया कह कर कीर्तन कर रहा है। तमाम हिन्दू बहराइच जाकर बलि मिया जिसने हिन्दू जाति की चोटी काटी उसकी पूजा करता है। मूर्तिपूजा के ढोगने सोमनाथ मन्दिर का सत्यानाश किया, और हमारी बहनों की अस्मत लुटी। अब उस ढोंग और पाखड मे जाति न फसेंगी। आप आर्य्यसमाज से मिल कर कार्य्य करें। सनातन धर्मी जनता को बहका कर व्यर्थ में फूट न पैदा करें। यदि शास्त्रार्थ चाहते हैं, तो स्वतः शताब्दी स्थल पर आकर प्रेमपूर्वक आप शास्त्रार्थ करे। यदि ईट से पत्थर का जवाब देना चाहते हैं, तो आपके पास इसके सिवा क्या है।—वैमनस्य त्याग कर प्रेम सत्य सामजस्य की स्थापना करे।

# दिल्ली में आर्यसमाज का चैलेंज

आर्यसमाज देवनगर 'सुल्तान' ने अपने वार्षिक उत्सव के अवसर पर उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर दिल्ली की समस्त सनातन विद्वत मण्डली को 'मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है' इस विषय पर शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज दिया। सब सनातन धर्म के मन्दिरो और सार्वजनिक स्थानों पर इसके लिए विज्ञापन लगाये गये। इस पर प० माधवाचार्य तो दिल्ली से बाहर चले गये। और भी किसी विद्वान ने शास्त्रार्थ की चुनौती को स्वीकार नहीं किया। इस पर भी एक सम्मेलन का आयोजन श्रद्धेय स्वामी अमर भारती जी की अध्यक्षता मे किया गया। शास्त्रार्थ दिग्विजय यात्रा के लिए पधारे विद्वानो एव अन्य आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेताओ का स्वागत किया गया। जिनमे प्रमुख थे प० सब श्री मदन मोहन विद्यासागर (हैदराबाद), स्वामी अमर भारती जी, प० सुरेन्द्र शर्मा जी काव्यतीर्थ, आचार्य विश्वश्रवा जी प० श्याम सुन्दर जी, स्वामी शकरानन्द जी, प० रामदयालु जी शास्त्री, प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा, प० शिव-कुमार शास्त्री प्रधान प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा प० उमेश चन्द्र जी स्नातक, सम्पादक आर्य मित्र, आदि थे। 'मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है' इस विषय पर विद्वानो ने विचार रक्खें। प० मदन मोहन जी विद्यासागर ने परमेश्वर के स्वरूप की व्याख्या की। आचार्य सुरेन्द्र शर्मा जी ने बताया कि वह क पुजारी वश मे पैदा हुए। स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र पढकर उन्होने मूर्ति पूजा त्याग दी। अब उनकी आयु ८० वष की है, वह ५ वर्ष से मूर्ति पूजा के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं। माता- ।चार्य और अतिथि जो कि जीवित मूर्तिया हैं उनकी सेवा अवश्य करनी चाहिये। प० श्याम सुन्दर जी ने आर्यसमाज की प्रचार पद्धति में जो परिवर्तन हो गया है, उस पर गहरा दुख व्यक्त किया। व्याख्यानो और भजनों के विषय और सार बदल गये हैं। प० राम-दयालु जी शास्त्री ने पुन इस कार्य को आरम्भ करने के लिए धन्यवाद दिया। शास्त्रार्थ पद्धति को फिर से अपनाने से ही आर्यसमाज मे नवजीवन का सचार हो सकता है। अन्त मे स्वामी अमर भारती जी ने आज से दो वर्ष पहले जो इस विषय पर प्रेरणादायक लेख लिखे थे, उसका पुन स्मरण करवाया। इस आयोजन के लिए उन्होने आचार्य विश्वश्रवा जी तथा प्रि० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री को कोटिश धन्यवाद दिया। आगे उन्होंने कहा नास्तिको मे तो कोई झगडा ही नहीं। क्योकि उनका तो कोई लिबास ही नही, वह तो नग है। उनके वस्त्र मे कौन दोष निकालेगा। हा आस्तिको का ईश्वर के नाम, काम और शकल पर बडा झगडा है। इससे ही नास्तिकता का प्रचार हो रहा है। मूर्ति पूजा उसका सबसे बडा कारण है। शिव जी के परिवार को ही लें उनकी चार भुजाए, तीन आखें हैं और उनके शिर से गगा निकलती हैं। उनकी सवारी है बैल। उनकी पत्नी की सवारी है शेर। उनके दो बेटे। एक उनका षडानन्दा उसकी सवारी है मोर। दूसरा उनकी पत्नी का गणेश जिसकी सवारी चूहा। दोनो बेटे पति-पत्नी के सयोग से पैदा नहीं हुये। अब बताइये इन कपोल कल्पित बातों पर कौन विश्वास करेगा। इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने बडे हास्या-स्पद श्लोक सुनाये। जिससे उप-स्थित जनता को बडी हसी आई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे आर्यसमाज देवनगर के मन्त्री श्री हरप्रकाश बन्धु और श्री नानक चन्द्र जी हकीम ने जो विशेष सहयोग दिया उसके लिये काशी शास्त्रार्थ शताब्दी उनका हार्दिक धन्यवाद करती है।

—हरप्रकाश बन्धु एम ए
मन्त्री

# काशी शास्त्रार्थ शताब्दी

के लिए

## दिल्ली से स्पेशल बसों की व्यवस्था

दिल्ली और समीपस्थ आर्य जनता की भावनाओं को दृष्टि मे रखते हुये महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के लिये स्पेशल बसो का प्रबन्ध किया गया है। दिल्ली से वाराणसी जाने आने का किराया ४३ रु० ५० पैसे होगा। १५ दिसम्बर ६९ तक किराया जमा करके अपनी सीट सुरक्षित करा लेनी चाहिए। धन जमा करने का पता १५ हनुमान रोड नई दिल्ली है।

### बस द्वारा यात्रा का कार्यक्रम

दिनांक २४ दिसम्बर ६९

[१] मध्याह्नोत्तर २ बजे निम्न स्थानो से प्रस्थान
१–१५ हनुमान रोड से फोन ४३२८०
२–आर्य समाज करोलबाग से फोन–५६७४५८
३–आर्य समाज कीर्तिनगर से
४–आर्य समाज शक्तिनगर से फोन–२२५८७२
५–आर्य समाज गुडमण्डी से

[२] सायकाल ६ बजे—
मुरादाबाद पहुच
७ ३० बजे मुरादाबाद से प्रस्थान

[३] रात्रि ११ बजे—
शाहजहापुर मे विश्राम

दिनाक २५ दिसम्बर ६९

[१] प्रात ७ बजे—
शाहजहॉपुर से प्रस्थान
१० बजे लखनऊ पहुच और विश्राम

दिनाक २६ दिसम्बर ६९
प्रात ७ बजे लखनऊ से प्रस्थान
मध्याह्न ११ बजे अयोध्या पहुच
मध्याह्नोत्तर ३ बजे अयोध्या से प्रस्थान
रात्रि ७ बजे वाराणसी पहुच

२७ व २८ दिसम्बर ६९ वाराणसी मे
( काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह मे )

### वाराणसी से प्रस्थान

दिनाक २८ दिसम्बर ६९
साय ४ बजे वाराणसी से प्रस्थान
रात्रि ८ बजे प्रयाग पहुचना और विश्राम

दिनाक २९ दिसम्बर ६९
प्रात १० बजे प्रयाग स प्रस्थान
मध्याह्न १ बजे कानपुर
२ बजे कानपुर से प्रस्थान
६ बजे अलीगढ
८ बजे अलीगढ से प्रस्थान
११ बजे रात्रि दिल्ली पहुचना

यात्री बन्धु शीत ऋतु की दृष्टि से अनुकूल वस्त्र साथ मे रक्खें।

निवेदक –

| शिवकुमारशास्त्री | रामनाथ सहगल | रामचन्द्र आर्य |
| --- | --- | --- |
| ससद् सदस्य | प्रबन्धक | सह प्रबन्धक |

फोन न० २९६६८१

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी यात्रा समिति
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली

# काव्य कानन

## अरदास
## प्रकाश-याचना

अजर, अमर, जगदीश्वर, शुद्ध, बुद्ध, कर्त्तार।
सर्व शक्तिमय, विज्ञवर, पूज्य, बिश्व - मर्त्तार ॥१
नित्य, अभय, करुणानिधे, सच्चिदानन्द - स्वरूप।
गुरुओं के गुरुवर, विभो, हे भूपो के भूप ॥२
हे अकाम, गुण-धाम हे, कृपासिन्धु भगवान्।
सत्य, सनातन, पूज्यवर, प्रज्ञा करो प्रदान ॥३
घर-घर मे गूंजे प्रभो! ओ३म् नाम का नाद।
जन-जन के हरता रहे, पाप - ताप - अवसाद ॥४
बल, वैभव, सुख, सम्पदा, विविध-भोग, यश, मान।
विजय - विभूति, गति, मति, पाकर दान महान् ॥५
करें समर्पण आपको, हम तन, मन, धन, प्राण।
तेरी छाया में बसें, सुखी, अभय यजमान ॥६
पीकर अमृत वेद का, बनें अमर सब लोग।
सुयश - सफलता सहित सब, साधें भक्ति - योग ॥७
सत्यासत्य - विवेकयुत, नरवर शुद्ध, प्रबुद्ध।
उन सब चालों को तजें, जो हैं धर्म-विरुद्ध ॥८
धन - यौवन उन्माद में, ना कोई होवे चूर।
मानव - मानव मे बढ़े, प्रेम - भाव भरपूर ॥९
भ्रष्टाचारों को तजें, भजें तुझे दिन - रात।
हे जीवन-धन, पूज्यवर! मम गुरुवर! पितु-मात ॥१०
सब देशों में हे प्रभो! सब कालो मे नाथ!
हम सब सत्पथ पर बढ़ें, प्रेम-भाव के साथ ॥११
हे देवों के देव! अब, काटो सब भव-जाल।
अपने भक्ति - दान से, हमको करो निहाल ॥१२
काम, क्रोध, अहकार, मद, लोभ, मोह का क्षय।
करने का सामर्थ्य दो, स्वामिन्! करो अभय ॥१३
धर्म, अर्थ और काम का, सम्यक् शुभ-व्यवहार।
करके पायें मुक्ति-पद, जगति के नर-नार ॥१४
मुद - मगल सुख - शान्ति, नाथ करो प्रदान।
साधु-सग, विचार शुभ, दीजिये सम्यक् ज्ञान ॥१५
काल बली के काल हे, मगलमय भगवन्त।
भव-बाधा जन की हरो, करो दुखो का अन्त ॥१६
तव-प्रेरित सब नारी-नर, बढे, चढें आकाश।
दिन - प्रति - दिन जग मे बढ़े, प्रज्ञा का प्रकाश ॥१७
जग - मग आलोकित करो, करो मृत्यु-भय दूर।
जीवन का साफल्य दो, विनय करो मन्जूर ॥१८
वेद-नाद विकसे प्रभो! होवे यज्ञ प्रसार।
सदाचार - विस्तार हो, सुखी बसे ससार ॥१९
शुभ कर्मा-समुदाय का, बढे जगत मे मान।
दुखवादो का अन्त हो, जन जन का कल्याण ॥२०
सत्य - सिरोही तानकर, जीते जग - रण - खेत।
तन, मन, धन सब, वार दे, धर्म काज के हेत ॥२१
सत्य - सिरोही कर लसे, बढे सत्य - व्यवहार।
शिवतर जीवन मे रमे, सुन्दर - तर ससार ॥२२
हे स्वामी! नामी-प्रवर! शक्ति-धाम, सुख रूप।
हे अनाम, गुण - ग्राम हे, मगल मूल अनूप ॥२३
अल्प-गति, मति चपल हम, है बालक अनजान।
भिक्षु तेरे द्वार के, नाथ करो कल्याण ॥२४
हे अखण्ड, आनन्द-घन, ज्ञान-रूप, सुख-सार।
हे प्रणम्य, हे रम्यतम, विनय करो, स्वीकार ॥२५

—जगत्कुमार शास्त्री 'साधु सोमतीर्थ' आर्योपदेशक

## उत्तिष्ठ

उठो! उठो!! उठो!!! — उठो! उठो! उठो!
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!!
वेद के प्रचार को, धर्म के प्रसार को,
विश्व के कल्याण को, जाति के उत्थान को।
वीर तुम उठो! धीर तुम उठो!
उठो आर्य्यो! — उठो! उठो!! उठो!

भेद भाव मिटाने को, मिथ्या प्रचार हटाने को,
शत्रुता मिटाने को, मित्रता बढ़ाने को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य वीरों! — उठो! उठो!! उठो!

शान्ति की स्थापना को, समाजवाद लाने को,
नशा बन्दि करने को, गो-रक्षा करने को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य्य कुमारो! उठो! उठो! उठो!

अनाचरण मिटाने को, आचरण सिखाने को,
अविद्या के मिटाने को, विद्या के प्रसार को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य्य ब्राह्मणो! -उठो! उठो! उठो!

चीन की पिटाई को, पाक की कुटाई को,
आर्यों की सुरक्षा को, अनार्य्यों से लड़ने को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य्य क्षत्रियो! — उठो! उठो! उठो!

अभाव के मिटाने को, भुखमरी मिटाने को,
धर्म के बचाने को, राष्ट्र के विकास को;
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य्य वैश्यो - उठो! उठो! उठो!

ब्राह्मणों की सेवा को, क्षत्रियों की सेवा को,
वैश्यो की सेवा को, कर्त्तव्य के पालने को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो आर्य्य शूद्रों! उठो! उठो! उठो!

अनुसन्धान करने को, भविष्य के सुधार को,
सभ्यता प्रदर्शन को, भ्रष्टाचार मिटाने को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो विद्यार्थियों! उठो! उठो! उठो!

देश के उत्थान को, समस्याए सुलझाने को,
जनता के कल्याण को, शिक्षा के प्रसार को
वीर तुम उठो! धीर तुम उठो!
उठो राजनीतिज्ञों! उठो! उठो! उठो!

अन्न के उपजाने को, कृषि के विकास को,
खेतो के सुधार को, राष्ट्र के सम्मान को,
वीर तुम उठो! धीर तुम उठो!
उठो कृषक वर्ग! उठो! उठो! उठो!

अंग्रेजियत हटाने को, मानवता लाने को,
देश के बचाने को, सीमा की सुरक्षा को,
वीर तुम उठो! — धीर तुम उठो!
उठो कर्णधारों! उठो! उठो! उठो!

धार्मिक क्रान्ति करने को, सामाजिक क्रान्ति करने को,
राजनैतिक क्रान्ति करने को, सांस्कृतिक क्रान्ति करने को,
वीर तुम उठो! धीर तुम उठो!
उठो 'कण्व' साथियो! उठो! उठो! उठो!

—ब्र० सन्तोष 'कण्व' बरेली

# संस्था-परिचय

# मोरिशस में आर्यसमाज

[ ले०—श्री गुरुदत्त रामपालसिह ]

## हमारा प्यारा देश—

अफ्रीका महा द्वीप के पूर्व में हिन्द महासागर के मध्य में स्थित यह अनोखा प्यारा देश ६२० सर्क-मील में फैला हुआ है, यह टापू वस्तुतः स्वर्ग है, जहां कोई दैत्य नहीं रहता है। एक कहावत मशहूर है कि मोरिशस की रचना परमेश्वर ने स्वर्ग निर्माण करने से पूर्व स्वय निज हाथों से की थी। यह देश एक धार्मिक केन्द्र है, जहां पर आर्य समाज की महत्ता अति भारी है।

## आर्यसमाज—

सर्व प्रथम आर्य वीर सर्व श्री मोती मास्टर और खेमलाल जी ने देश में आर्य समाज का बीज लगाया। श्री मान्यवर हवलदार वहाँ पर धार्मिक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को लाये थे। तथा वहीं से आपने स्वामी दयानद सरस्वती जी का सन्देश का प्रचार आरम्भ किया। सन् १९०६ में डाक्टर मणिलाल मागनलाल जी का मोरिशस मे आगमन हुआ। आर्य समाज के विकास में आपने विशेष रूप से अपना सहयोग दिया। इन प्रयत्नो से सभा अति दृढ़ हो गई।

## स्थापना—

दिनाङ्क प्रथम अप्रैल १९१० ई० को क्यूपिप स्थान में आर्य समाज की स्थापना हुई। तत्पश्चात् पोर्ट-लुई नगर मे आर्य परोपकारिणी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की भी आयोजना हुई। वर्तमान आर्य समाज के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी है, और मन्त्री के पद पर श्री मोती तोरल जी हैं।

## श्री भारद्वाज का आगमन—

सन १९११ ई० से श्री चिरजीव डाक्टर भारद्वाज श्री सपरिवार यहाँ पधारे थे। साथ ले आप की धर्म पत्नी श्रीमती सुमनी भी। विशेष रूप से दोनो पति पत्नी ने वैदिक प्रचार मे हाथ बढ़ाये। वैदिक प्रसार से स्वामी मगलानद जी का नाम अत्यन्त उल्लेखनीय है। आप की असीम कृपा से धर्म क्षेत्र की काया कल्प हुई।

## हिन्दी पाठशाला—

सन् १९१४ ई० मे साहसी आर्य सेवको ने वाक्वा नामक शहर मे भूमि खरीद कर, एक सुन्दर भवन का निर्माण किया। पण्डित काशीनाथ जी की अध्यक्षता मे इस भवन में दैनिक हिन्दी की पढाई होती है। साथ-साथ वहा प्रतिदिन यज्ञ, हवन, सन्ध्या, कीर्तन सिखाया जाता है।

## निर्वाण अर्द्ध शताब्दी—

आर्य सभा की स्मृति मे आम हिन्दुओ ने निर्वाण अर्द्ध शताब्दी महोत्सव सन् १९१३ ई० में बडी धूम-धाम से मनाया। पण्डित कन्हैयालाल जी वेदोपदेशक के प्रधानत्व मे यह समारोह सु सम्पन्न हुआ। स्वामी दयानद जी की याद चिर स्मरणीय है।

## अनाथालय—

सन् १९४० मे आर्य वीर श्री गयासिहजी ने पोर्ट-लुई शहर मे एक अनाथालय की योजना बनायी। आज इस सुन्दर भवन मे लगभग १०३ प्राणियो का पालन पोषण नियमानुसार होता हैं। प्रति दिन अनाथो को सभा द्वारा पढाई, लिखाई, सिलाई पूजा पाठ सिखाये जाते हैं। एक दैनिक पाठशाला भी वहा चल रही है। गयासिंह अनाथालय के वर्तमान मैनजर श्री कालिचरण जी हैं।

## कन्या पाठशाला—

मोरिशस मे कन्या पाठशाला की स्थापना की गई जिसके सहारे प्रत्येक कुमारियो सु विद्या अध्ययन कर सकेंगी। पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई कला तथा कसीदा शिक्षा भी यहाँ सिखायी जाती है।

इसकी योजना से 'स्त्री शूद्रो नाधियताम्' सूक्ति की निशान अब मिट गयी है। आधुनिक महिला समाज की स्थापना भी हो चुकी है। इस मण्डल की प्रधाना श्रीमती भीमा है, तथा मन्त्री द्रौपदी माता बदल जी है।

## आर्य विद्या समिति—

विद्या प्रसार के लिए आर्य वीरों ने विद्या समिति का निर्माण किया जिसके द्वारा पढ़ाई ठीक रूप से होती है। इसके साथ मे नवीन पाठ क्रम की आयोजना भी हुई, जिससे विद्या अध्ययन अधिक सरल हो। सभा ने विशेष प्रयत्न किया अध्यापक प्रशिक्षण की स्थापना करने मे। आज विद्या समिति के मन्त्री पद पर श्री हरिलाल चुरामणि जी हैं। आप का नाम आदरणीय है।

## भारतीय परीक्षा—

सन १९४७ ई० मे मान्यवर श्री राम प्रसाद सुखू जी के यत्न से धार्मिक परीक्षा शुरू हुई। विद्या विनोद-विद्या वाचस्पति, रत्न, भूषण, प्रभाकर आदि कक्षाओ की परीक्षा दी गयी है। आज समाज की मेहरबानी से परीक्षार्थियो की संख्या मे वृद्धि हुई, लगभग पाच सौ छात्र है, जो धार्मिक परीक्षा म सम्मिलित होते हैं।

## प्राथमिक पढाई—

आर्य समाज की शाखाए तीन सौ से ज्यादा मोरिशस मे हैं। लगभग सभी सभाओ मे प्राथमिक पढ़ाई हो रही है। इन की परीक्षा सभा लेती है। कुल विद्यार्थी सात हजार हैं। इसके सहारे हिन्दी भाषा कण-कण मे फैल गई हैं। सर्व प्रथम लाबूदोर्ने नामक स्थान मे आर्य सभा की स्थापना हुई, जिसकी कोख से अनेक विद्वानो ने जन्म पाये हैं।

## वैदिक प्रचारक—

वैदिक उपदेशको की सख्या ५० हैं, सभा द्वारा प्रचारक गाँव-गाँव मे जाकर धार्मिक ज्ञान का प्रचार करते हैं। सस्कार विधि नियमानुसार पढ़ाते हैं। इस प्रसार मे कुछ पण्डितों के नाम स्वर्ण अक्षरो मे चमकते हैं। जैसे — सर्व श्री बेनी माधो, शिवदत्त जी, साधु नारायण, ब्रज मधु, प० धर्मवीर धूरा जी।

## हिन्दी अखबार

लगभग पचास वर्ष लगातार से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन आर्य सभा द्वारा हो रहा है। जो वर्तमान आर्योदय समाचार पत्र है। हिन्दी प्रचार मे इनका सहयोग अनोखा है। इस अखबार के सम्पादक श्री मोहनलाल मोहितजी हैं।

## आर्येन वैदिक स्कूल

समाज द्वारा दो आर्येन वैदिक पाठशाला चल रही हैं। एक वाक्वा नगर मे तथा दूसरी लावाचौर गाव मे। सरकार द्वारा यहा दैनिक पढाई होती है। पोर्टलुई राजधानी मे समिति की ओर से एक कालेज (डी ए वी कालेज) की आयोजना हुई है। जिसके प्रिंसिपल श्री विक्रम प्रताप [illegible] ए बी टी है। प्रति साल [illegible] छात्रो को भारतीय [illegible] सभा की ओर [illegible] मिलता है।

## उपसंहार—

[illegible] आर्यसमाज आन्दोलन [illegible] का त्याग, परिश्रम [illegible] प्रशसनीय और अनुकरणीय [illegible]। इस अद्भुत परिवर्तन के लिए हम प्राय कृतज्ञ हैं।

## अमेरिका में प्रचार म० आनन्द स्वामी द्वारा

[ पृष्ठ ७ का शेष ]

दक्षिण-अमेरिका पर छाये हुये थे, परन्तु योरोप की भिन्न-भिन्न जातियों, स्पेन, पुर्तगाल इत्यादि ने आक्रमण करके इन्हें लगभग समाप्त कर दिया। जब कोलम्बस १४४२ मे भारत की खोज मे निकला और अमेरिका पहुच गया तो यहां इन लोगो को देखकर समझ बैठा कि वह भारत पहुंच गया है। तब भी ये भारतीय भारी सख्या मे विद्यमान् थे। पहले ये लोग शव जलाते थे, सूर्य नमस्कार करते थे परन्तु अब तो ये ईसाई हो चुके है। पादरियो ने जगलो के अन्दर गिरजे बना दिये हैं। भारत के लोगो ने इनकी कभी सुधि नहीं ली, हिन्दुओ की लापरवाही से कितने ही हिन्दू देश मुसलमान हो गये है, और कितने ही ईसाई हो गये हैं। अब विदेशो मे लाखो हिन्दू धन कमा रहे है वे भारतीय सस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। आर्य समाज के सेवको को इधर ध्यान देना चाहिए था, परन्तु उन्हें परस्पर के झगड़े ही नहीं छोड़ते।

अब दक्षिण अमरीका के एक और देश की बात सुनिये। इसे पेरू कहा जाता है, जन संख्या एक करोड से भी अधिक है। अमेरिका का लेखक डेविडबोबिन ने लिखा है कि यहाँ के रहने वालो की संस्कृति लाखो वर्ष पुरानी है, जब लदन और पेरिस में झोंपड़ियाँ थी तब पेरू के नगर शानदार थे। एक सज्जन लोपेज ने एक पुस्तक पेरू की आर्य जाति के नाम से लिखी है, उसमे लोपोज बतलाता है कि पेरू की भाषा मे सस्कृत के एक हजार शब्द हैं, और वह लिखता है कि 'एन्टीपेज आफ दि पेरुविन पोइट्री हे जदि इम्प्रिन्ट्स एण्ड महाभारत अर्थात् पेरू की कविता के हर पन्ने पर रामायण तथा महाभारत की छाप लगी हुई।" परन्तु अब तो ईसाई-मत का बाला हे।

दक्षिण अमेरिका के कुछ ऊपर मैक्सिको बड़ा देश है, वहा के मन्दिर मैसूर के मन्दिरों जैसे हैं, वहाँ के लोग चारयुग मानते हैं, गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली थी, विवाह का वही ढग, पुनर्जन्म और आत्मा के अमर होने का इन्हें पूर्ण विश्वास है। विजयादशमी दशहरा मनाते हैं। जिन लोगो को अमरीकन इण्डियन कहा जाता है वे एक परमात्मा को मानते हैं जो सर्वव्यापक है और मनुष्यों के कार्यों का फल देता है। बच्चों के जन्म पर इन लोगों के यहाँ जन्म-पत्री बनायी जाती है। पेरू तथा मैक्सिको में शिवलिंग पूजा भी देखी गयी है। यद्यपि स्पेन वालों का राज्य यहाँ चार सौ वर्ष रहा, फिर भी ये इण्डियन अब भी सत्तर प्रतिशत शाकाहारी है और भी कितनी ही बातो से सिद्ध होता है कि अमेरिकन इण्डियन भारत के कितने ही प्रभाव अपने साथ ले गये थे। इन आर्य हिन्दुओ ने दक्षिण अमरीका के तीन बटा चार भाग पर डेढ़ हजार वर्ष तक राज्य किया फिर ये शिथिल होने लगे। भारत से इन्हें कोई सहायता न मिली और आज वे दूसरो की सभ्यता के अधीन होते चले जा रहे हैं।

**आनन्द स्वामी सरस्वती**
पारामारीबो, दक्षिण अमेरिका

★

## वनिता-विवेक

(पृष्ठ ९ का शेष)

कहता है 'इधर आओ, मैं मार्ग पर खड़ा हू।' और वह व्यक्ति शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुच जाता है। जनक ने पूछा 'जब शब्द भी न हो तब हम किस ज्योति से देखते हैं?' महर्षि बोले 'आत्मज्योति' तब हम आत्मा की ज्योति से देखते हैं, जनक ने पूछा 'कतम आत्मा इति' यह आत्मा क्या है? 'ऋषि ने उत्तर दिया 'योऽयं विज्ञानमय प्राणेषुहृदयान्तर्ज्योतिः पुरुष।' यह जो ज्ञान विज्ञान से भरा हुआ, इन्द्रियो से ढका हुआ हृदय के अन्दर ज्योतिर्मय विद्यमान है—यह आत्मा है, यह आत्मा दिखाई क्यों नहीं देता? इन्द्रियों के आवरण ने उसे ढका हुआ है। आनन्द स्वामी जी महाराज की पुस्तक के आधार पर यह वर्णन बताते हुए सरला बहन ने कहा' जिस मनुष्य को आत्मदर्शन की अभिलाषा हो जाती है वह सांसारिक पदार्थों के के प्रति निरासक्त हो जाता है।

कठोपनिषद् की नचिकेता की कथा बताते हुए उन्होंने कहा कि जब यम ने नचिकेता को कहा 'तू हाथी, घोड़े संसार के ऐश्वर्य, भोग विलास, प्रकृति पर शासन जो कुछ चाहे मांग, आत्मज्ञान बड़ा कठिन है, इसे मत मांग, नचिकेता आजकल का युवक न था, उसने कहा 'भौतिक वासनाएँ तो एक जन्म क्या, सैकडो जन्म लेते जाय तब भी नही मिटती पर आत्मतत्व के दर्शन कर लेने पर भौतिक जगत् स्वय हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है, भगवन्! मुझे आत्मा का उपदेश दीजिए, मैत्रेयी याज्ञवल्क्य का सवाद वृहदारण्यकोपनिषद् (४-५) में आता है, याज्ञवल्क्य जब वानप्रस्थी होने लगे तब उन्होंने अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा' लो तुम्हें कुछ धन दौलत देता चलूं जिससे तुम सुखपूर्वक जीवन बिता सको।' मैत्रेयी पूछने लगी 'यन्नु ये इव सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णास्यात् स्यायव ते नामृता।' अगर सम्पूर्ण पृथ्वी के भोग के पदार्थ मुझे मिल जांय तो क्या मेरी आत्मा को उससे शांति मिल सकेगी या नहीं? याज्ञवल्क्य ने कहा 'नेति नेति' यथैव उपकरणवतां जीवित तथैव ते जीवित स्यात्, अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन' ससार के भौतिक साधनों के मिलने से तुझे आत्मिक शांति प्राप्त नहीं होगी, हा उपकरण अर्थात् साधन संपन्न व्यक्तियों का जीवन जितना सुखी हो सकता है उतना सुखी तू जरूर हो जायगी, मैत्रेयी ने कहा 'येनाद नामृतास्या किमह तेन कुर्याम्' जिस वस्तु को प्राप्त करने से मेरी आत्मा को चिरस्थायी शांति न मिले उसके पीछे दौड़कर मैं क्या करूंगी? मुझे आत्मदर्शन का मार्ग बताइए, मुण्डकोपनिषद् के एक सूत्र द्वारा आत्मदर्शन का मार्ग बतलाया गया है, वहां आया है 'हृदामनीषा मनसाऽभिक्लृप्तो' वह हृदय से, बुद्धि से, मन से प्रकाशित होता है। (क्रमशः)

## वनिता विवेक

बहनों की बातें—६

# आत्म शुद्धि का उपाय (१)

[ श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, गोरखपुर ]

अधिकांश मनुष्य आज अविकसित और अपूर्ण जीवन ही बिता रहे हैं। जीवन के विशाल मरुस्थल में कहीं-कहीं कुछ परिश्रमी लोगों ने उसे हरा-भरा बनाया है, बाकी बंजर ही बंजर पड़ा है। ऐसे लोग यह समझ नहीं सके कि संसार के नाटक में उन्हें भी एक महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा करना है। आज के नवयुवक को अपनी पूरी योग्यताओं का जरा भी अनुमान नहीं। हमारे विद्यालय भी उन्हें अपना आत्म-साक्षात्कार करने और आत्मिक शक्ति की पहचान में जरा भी सहायता नहीं करते हैं। बालक और बालिकाओ में अपने को पहचानने की स्वाभाविक प्रकृत्ति होती ही है। यही कारण था कि जब महिला मंडल सुमन के घर एकत्र हुआ तो मधु ने सरला बहन जी से आत्मा क्या है? आत्मशुद्धि का क्या उपाय है? और आत्मा की शक्ति का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? प्रश्न पूछे। इस विषय में सरला बहन ने पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज द्वारा 'जीवन गाथा' मे उल्लिखित महर्षि नारद की सुनाई हुई एक कहानी सुनाई। उन्होंने कहा 'एक था राजा। उसका नाम पुरञ्जन था। एक अज्ञात नाम वाला उसका मित्र था। वे बहुत दिनो से इकट्ठे रहते थे—प्रसन्न थे। उस समय पुरञ्जन ने एक नगरी मे रहना चाहा। खोज करते करते एक नगरी मिली। उसमे नौ द्वार थे। एक द्वार से अन्दर जाकर पुरञ्जन ने देखा कि नगरी बहुत सुन्दर है और उसके अन्दर एक सुन्दर स्त्री रहती है। दस साथी हैं उसके। पांच फनो वाला सांप उसके पास घूम रहा है जो उसकी रक्षा करता है। पुरञ्जन उस स्त्री को देखकर मस्त हो गया। उस स्त्री ने उसे अपने पास बुलाकर कहा 'मेरे यहाँ रहोगे?' पुरञ्जन ने कहा 'अवश्य।' रहने लगे दोनो। समय बीतता गया। पुरञ्जन मस्त था। कितने ही बेटे बेटियां हुई उसके। यह पुरञ्जन ही आत्मा है। मनुष्य का शरीर ही उसके निवास की नगरी है। शास्त्रों ने भी इस शरीर को आठ चक्रो वाली, नव द्वारों वाली देवताओं की नगरी अयोध्या कहा है; इस नगरी मे रहने वाली सुन्दरी स्त्री बुद्धि है! पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां इसके दस साथी हैं, प्राण, या व्यान, उदान और समान पाँच फणों वाला सांप ही इसकी रक्षा करने वाला सर्प है।

नगरी मे रहते-रहते सौ वर्ष बीत गए। नगरी की सभी दीवारें जीर्ण शीर्ण हो गई। एक के बाद दूसरा रोग आने लगा। एक दिन पुरञ्जन नगरी से बाहर गया। कई स्थानो पर घूमने के बाद विदर्भ राजा के यहां अपूर्व कन्या के रूप मे उत्पन्न हुआ। कन्या बड़ी हुई तो 'मलेध्वज' नामक राजा के साथ उसका विवाह हुआ, दोनो मिल कर राज्य करने लगे।

तब एक दिन मलेध्वज ने देखा कि उसके सिर के बाल सफेद होने लगे हैं, श्वेत केशो को देखकर उसने कहा 'रानी, अब बुढ़ापा आ गया, राज्य को छोड़ देना होगा, एकान्त वन में जाकर वानप्रस्थी बन कर रहना होगा,' रानी भी साथ गई, एक दिन मलेध्वज का देहान्त हो गया, अपूर्व कन्या रोने लगी, चिता बनाई, आग लगा दी उसको; अग्नि मे जा रही थी वह कि आवाज आई 'पुरञ्जन,' रानी ने आश्चर्य से इधर-उधर देखा, आवाज ने कहा 'आश्चर्य करने की बात नहीं? तुम ही पुरञ्जन हो, पुरञ्जन को ध्यान आया बोला' हाँ अब स्मरण आता है, 'आवाज ने कहा' क्या तुम्हे अपना मित्र याद है जिसका कोई नाम नहीं था, मै ही वह मित्र हू; सहस्रों लाखों वर्षों तक हम लोग साथ-साथ रहे, कितना आनन्द था, उस समय, कितना प्रसन्न था तू, आज तू रो रहा है, चिल्ला रहा है, इस माया के जाल से बाहर आ।

उस आवाज ने कहा 'देख मैं आज भी वही हू, जो वर्षों तक तेरे साथ रहा, देख आज मेरे पास आनन्द का सागर उमड़ता है, मैं तेरा पुराना मित्र हूं, जिसका नाम तुझे पता नहीं, मेरे साथ आ,' पुरञ्जन देर तक समझ नहीं पाया। अन्त में उसे ज्ञात हुआ, उसने देखा कि वह अपूर्व कन्या नहीं, पुरञ्जन नहीं, स्त्री नहीं, पुरुष नहीं। कुछ भी नहीं वह केवल आत्मा है, एक आत्मा, और उसका केवल एक मित्र है, वह जिसका नाम पता नहीं, जिसको कितने ही लोग कितने ही नामो से पुकारते हैं। 'तदेवाग्निस्तदादित्य तद्वायु तदुचन्द्रमा। तदेवशुक्रं तद्ब्रह्मस आप सप्रजापति।' वेद ने उसे अग्नि, वायु, आदित्य चन्द्रमा, प्रजापति, शुक्र आदि अनेक नामों से पुकारा है। इसका यही मित्र इसकी इच्छानुसार इसके लिए कितनी वस्तुओ की सृष्टि करता है, कितने ही रंगो की, कितनी ही सुगन्धियो की। इसके लिए ही वह मित्र सब कार्य करता है। वह फूल की पखुड़ियो मे तितली के पंखो मे, परिन्दो के परो मे, बादलो मे इन्द्रधनुष मे, प्रभात की उषा मे, सध्या की छिटकती लाली मे बैठा उसी के लिए अपनी तूलिका से किस्म-किस्म के रंग भरा करता है। पवन के झकोरो मे, झरनो की झर-झर मे, बादलो की गर्जन मे, पक्षियों के कलरव मे, प्रपातों की झकार में, और नदियो के कलकल में वह चतुर गवैया बैठा अपनी संगीत की सुरीली तान छेड़ रहा है? पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, सितारे तथा ग्रह, उपग्रह सब उसी के बनाए हुए हैं। इसका यही मित्र इसकी सुविधा के लिए कितनी ही वस्तुओ की सृष्टि करता है, कितनी ही सुगन्धियों और रंगों का निर्माण करता है। उसने अपने मित्र पुरञ्जन के लिए अन्न, दूध, फल, फूल, प्रदान किए हैं।

नारद जी ने यह ज्ञान सुनाने के पश्चात कहा 'जिस नगरी में पुरञ्जन प्रविष्ट हुआ, उसमें रहने वाली सुन्दरी बार-बार पुरञ्जन के, अपने वश मे कर लेती है। वह शराब पीती है तो आत्मा नशे में चूर हो जाता है, वह खाती है तो वह खाता है, वह हंसती है तो वह हंसता है, वह आती है तो वह आता है। वह स्त्री है अपने दस साथियो के नशे मे-इन्द्रियों के वश मे। इस लिए कि इस स्त्री को सुख मिलता है। पुरञ्जन को सुख नहीं मिलता, उसे तो सुख मिलता है केवल एक उपाय से कि इन्द्रियाँ मन के वश मे रहें, मन बुद्धि के वश में और बुद्धि आत्मा के वश मे।'

उपनिषद् मे एक कथा आती आती है। याज्ञवल्क्य ऋषि के पास महाराज जनक बैठे थे। जनक ने कहा-महाराज! मेरे मन मे यह प्रश्न बार-बार उत्पन्न होता है कि हम जो वस्तुएँ देखते हैं वे किस ज्योति से देखते हैं? याज्ञवल्क्य ने कहा 'सूर्यो ज्यति' अर्थात् सूर्य की ज्योति से देखते हैं। 'जनक ने कहा 'सूर्यास्त होने पर हम किस ज्योति से देखते है?' उस समय हम 'चन्द्रमा के प्रकाश' से देखते है। 'जनक बोले' जब चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हो, अमावस्या के बादलो की घोर अन्धेरी रात हो तब?' महर्षि ने कहा, तब हम शब्द की ज्योति से देखते है। विशाल वन है, चहु ओर अन्धेरा है, पथिक मार्ग भूल गया है, वह आवाज देता है मुझे मार्ग दिखाओ। तब दूसरा व्यक्ति दूर खड़ा हुआ उस शब्द को सुनकर

[शेष पृष्ठ १२५१]

# इस्लाम का भविष्य

[ श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री ]

इस्लाम हमारे भारत मे एक प्रसिद्ध मत है। अब भी ५ करोड़ मुसलमान यहां बसते हैं। एशिया यूरोप और अफ्रीका मे करोडो मुसलमान बसे हुये हैं। अरब,मिस्र ईरान, टर्की, अफगानिस्तान, इण्डोनेशिया, मलयेशिया पूरे के पूरे मुसलमानी देश हैं। वहाँ मुस्लिम राज्य हैं। भारत के भी मुसलमानो ने २ भाग करा लिये और पाकिस्तान नामक पूर्वी पश्चिमी दो और इस्लामी राज्य बनाये।

इस्लाम से अधिक कट्टर असहिष्णु, संकीर्ण और हिंसा प्रिय और कोई मत नहीं है, कम्यूनिस्टों के अतिरिक्त।

इस्लाम का प्रसार स्थिति और संरक्षण केवल भौतिक बल पर आधारित रहा है। हृदय और मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाला इस मत मे कोई आकर्षण नहीं है इस्लामी देश हैं वे शक्ति हीन हैं अत उन पर चीन वा रूस का पञ्जा रक्खा हुआ है। सब ही इस्लामी देशों मे रूस का प्रभाव बढ़ रहा है। अत· आज राजनैतिक प्रभाव इस्लाम पर कम्युनिस्टो का है तो कल धार्मिक प्रभाव भी कम्यूनिस्ट डाल सकते हैं। कम्यूनिज्म की विचारधारा के आगे इस्लामी विचारधारा ठहर सके यह असम्भव है। मार्क्सवाद की धारा मे इस्लाम बहकर विलीन हो जायगा। अल्लाह! आखिरत, दोजख और बहिश्त सब भौतिक वाद की अग्नि मे भस्म हो जायेंगे चीन और रूस की मित्रता और संरक्षण मुसलमानो की वही दशा बना देगा जो कि सिंकियाँग (चीनी तुर्किस्तान) के मुसलमानो की है।

## भारत के मुसलमान

# धार्मिक समस्याएं

अपने प्रारम्भिक काल मे इस्लाम ने यूरोप और एशिया में आतंक फैला दिया था।

मध्य एशिया के बौद्ध, अफगानिस्तान के शैव आदि और इण्डोनेशिया के सब शैव इस्लामी अजगर की फुंकारो से दहल गये और अन्त मे इस्लामी अजगर इन सब मतो को निगल गया। भारत में भी बहुत से कायर और स्वार्थी तथा स्वसमाज बहिष्कृत जन इस्लाम के उदर मे चले गये। सेवा भाव, प्रेम वा दार्शनिक विचारों अथवा आध्यात्मिक विचार धारा के कारण इस्लाम कहीं नहीं फैला। इस्लाम का प्रसार तलवार से ही हुआ है और हो सकता है।

किन्तु समार मे अब इस्लाम का वर्चस्व क्षीण हो गया है। अब इस्लामी देश दूसरो का सहारा ताकते फिरते हैं। करोड़ों मुसलमान तो गैर मुसलमानो के आधीन रह रहे है। और जो स्वाधीन

हां भारत में इस्लाम भी सुरक्षित रह सकता है और मुसलमान भी। बशर्ते कि मुसलमान अपने देश वासियों के अर्थात् हिन्दुओ के साथ घुलमिल कर रहें हिन्दू कोई एक मत तो है नहीं। यह तो मतों का संग्रह है, जिनकी राष्ट्रियता एक है। ईश्वर और वेद को न मानने वाले जैन और ईश्वर और वेद मानने वाले वैष्णव और मूर्त्ति पूजा के विरोधी आर्य समाजी और प्रतिमा पूजक सनातन धर्मी सब एकता से कैसे रहते हैं ?

क्योंकि राष्ट्रियता मे संस्कृति में इन सबका एका है। तुम अरब के धर्म को मानते हो मानो परन्तु भारतीय राष्ट्रियता का विरोध मत करो। और यहां के मूल धर्म वालों को काफिर, मुशरिक कह कर उनके कार्यों मे विघ्न मत डालो। उन्हें देखकर जलो मत, उनकी उन्नति पर कुढ़ो मत। देश की रक्षा में मिलकर काम करो फिर कौन हिन्दू है जो इस्लाम का विरोध करेगा। हिन्दू मान्यता के अनुसार तो सब धर्म सब प्रकार की उपासनाएं ईश्वर तक पहुंचाती हैं। फिर आपके धर्म का वे विरोध कैसे करेंगे। इस देश मे प्रेम से रहो तो इस्लाम को कोई खतरा नहीं है, वह फल-फूल सकता है। और जैसे ईसाई लोग ईसाइयत का भारतीयकरण कर रहे हैं यदि आप भी इस्लाम का राष्ट्रियकरण कर लें तो इस्लाम चमक जाये। पाकिस्तान में तो उर्दू में नमाज पढ़ना शुरू हो गया। मियां भुट्टो कुरान शरीफ को जीवन संहिता न मानकर केवल आचार संहिता बता रहे हैं। आगे देखिए क्या-क्या होने वाला है। कहीं हदीसो की भविष्य वाणी के अनुसार १४ वीं सदी मे इस्लाम सिकुड़ कर फकत काबे में रह जायगा-जैसे सांप सिकुड़कर अपने बिल में जा घुसता है।

उसकी रक्षा हो सकती है तो इस धर्म भूमि भारत में हो सकती है क्योंकि यहाँ के निवासियों को किसी भी धर्म से द्वेष नहीं। सैकड़ों वर्ष से यहूदी, पारसी जो कि विदेशी भी हैं और अन्य धर्मी भी यहां सुख से रह रहे हैं फिर मुसलमान तो हमारे देश बन्धु हैं। उन को हिन्दू कैसे सता सकता है ? सब प्रेम से सद्भावना से रहें।

# काशी शास्त्रार्थ-शताब्दी सार्थक कैसे ?

[श्री प्रो० रवीन्द्रकुमार पाण्डेय, एम० ए०]

१६ नवम्बर, १८६९ दिन मंगलवार, सायं ४ बजे, काशी नरेश की अध्यक्षता मे, 'वेदो से मूर्त्ति पूजा स्थापित की जावे' विषय पर, एक ओर अकेले लगोट बध महर्षि स्वामी दयानन्द तथा दूसरी ओर काशी का सम्पूर्ण विद्या पुञ्ज यथा स्वामी विशुद्धानन्द जी, प० बाल शास्त्री, प० शिवसहाय, प० माधवाचार्य, प० वामनाचार्य, प० ताराचरण तर्क रत्न, प० विष्णुकृष्ण वेदान्ती आदि सब शास्त्रार्थ के लिये मूर्त्ति पूजा के शत्रु स्वामी दयानन्द को परास्त करने आये। तदुपरान्त स्वामी दयानन्द के प्रश्नो से निरुत्तर होकर एक-एक करके सभी विद्वान् बैठते गये, जिसका प्रभाव आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार में अच्छा पड़ा।

देश में, शास्त्रार्थों की, एक श्रृंखला चल पड़ी थी। धर्मवीर प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी लक्ष्मणानन्द, प० देवदत्त शास्त्री, प० तुलसीराम (स्वामी) पं० मंसाराम, स्वामी योगेन्द्रपाल, प० धर्मभिक्षु, प० भोजदत्त आर्य मुसाफिर (आगरा), प० चमूपति आदि विद्वानों ने शास्त्रार्थों के माध्यम से आर्यसमाज के सिद्धान्तों की विजय पताका फहराई।

अब सौ वर्ष पश्चात् १९६९ में वही सुअवसर आ गया जिसमे शास्त्रार्थ शताब्दी, काशी नगरी मे, पुन· होने जा रही है। देखना है कि कौन-कौन शास्त्रार्थ महारथी विद्वद्वर पौराणिक-पण्डितो, ईसाई पादरियो, मुसलमान मौलवियो, जैन तथा बौद्ध वाम मार्गियो से शास्त्रार्थों द्वारा 'वैदिक धर्म' की दुन्दभी बजायेगा ? जहा· तक शताब्दी की सफलता तथा सार्थकता का प्रश्न है, वह मेरी समझ से, तभी सम्भव है, जबकि आर्यसमाज से कोई शास्त्रार्थ करने का साहस न करे ?

आर्यो! धर्मवीर प० लेखराम आर्य मुसाफिर के अन्तिम समय के,शब्दों को एक बार फिर स्मरण दिलाता हू कि 'आर्यसमाज से तकरीर और तहरीर' का कार्य बन्द न हो। साथ ही ऋषि दयानन्द के, ऋण से उऋण भी, तभी हुआ जा सकता है जब मूर्त्ति पूजा, अवतारवाद, नास्तिकता पाखण्ड आदि सामाजिक कुरीतियों पर डटकर सघर्ष हो। बड़ी प्रसिद्ध उक्ति है—

'नक्कारा धर्म का बजता है,
　　आये जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदस,
　　आजमाये जिसका जी चाहे।'

इस मन्त्र में भी परमेश्वर की मूर्ति बताई गई है,इस मन्त्र में महादेव, नाम भी है।

'न तस्य प्रतिमास्ति,० इस मन्त्र में प्रतिमा, अर्थ मूर्ति नहीं है यहां प्रतिमान् परमेश्वर की समानता करने वाली वस्तु का निषेध है मूर्ति का निषेध नहीं।

भागवत् के श्लोकों में मूर्ति पूजा की निन्दा नहीं, यह कहा है कि मूर्ति की पूजा देर में पवित्र करती हैं और सत्संति शीघ्र पवित्र कर देती है।

'विष्णोः दंष्ट्रो ऽसि, मे 'असि, मध्यम पुरुष का चिन्ह है इसको स्पष्ट करिये यह तो उस्तरे को कहा गया है कि—तू विष्णु की दाढ़ है।

'वनस्पतिभ्यो नमः, कह कर भूमि पर अन्न क्यों रक्खा जाता है ? यदि कीड़ों के लिये है तो चीटियो के बिलों पर डालना चाहिये।

मैं शिव आदि की निन्दा सुनकर विषयान्तर में नहीं जाऊंगा। जिसको शिव लिंग कहते हैं वह तो निराकार ईश्वर की मूर्ति है इसी लिए गोल है, वह किसी की मूत्रेन्द्रिय नहीं है।

संस्कार विधि में—बालक की जीभ पर सोने की सलाई द्वारा शहद से ओम् की मूर्ति बनाने का विधान है।

सीमन्तोन्नयन संस्कार में—खिचड़ी में पुष्कल घृत डालकर स्त्री को अपनी छाया देखने की आज्ञा है, उस समय पति-पत्नी से पूछता है कि—किं पश्यसि ? क्या देखती हो ? पत्नी कहती है कि—प्रजा, पति की दीर्घायु और सौभाग्य आदि देखती हूं। यह मूर्ति-पूजा नहीं तो क्या है ?

संवत्सरस्य प्रतिमा, वाले मंत्र में रात्रि को धन देने वाली कहा है। यह रात्रि जिसमे सोते हैं यह तो चोरो को धन देती है, धन देने वाली तो परमेश्वर की मूर्ति ही है।

## पूज्यपाद श्री अमर स्वामी जी महाराज

प्यारे शास्त्री जी इस सायाभिः पुरुरूप ईयते, आदि मंत्र में इन्द्र नाम सूर्य का है मन्त्र में आये उसके सहस्र घोड़े बताये हैं जो सूर्य की किरणें हैं। आप के पुराणों में १ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ शिव, परमेश्वर बताये गये हैं और ४ चौथी देवी को सृष्टि रचने वाली कहा गया है इन्द्र बेचारे की तो वहां कुछ गिनती ही नहीं है। न शैव उसको ईश्वर मानते हैं न वैष्णव और शाक्त। इन्द्र सूर्य है सो उसको अनेक रूपो में आने दीजिये।

कोई पुराण ब्रह्मा को ईश्वर मानता है कोई विष्णु को और कोई शिव को आराध्य बताते हैं देवी भागवत मे इन तीनो की पूजा को व्यर्थ बताया है।

'ये वास्तुवन्ति मनुजा अमरान् विमूढ़ाः माया गुणैस्तव चतुरमुख विष्णु रुद्रान्',

जो मनुष्य ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र की पूजा करते है वह विमूढ़ हैं। प्राप्ते कलावह दुष्ट तरे चकाले, श्लोक में कहा है कि—हे देवी ! जो तुम को नहीं भजते और धूर्त पुराण चतुरों पौराणिको के बताये तेरे बनाये हुए ब्रह्मा विष्णु और शकर की पूजा करते है वह मूर्ख हैं।

शप्तो हरिस्तु भृगुणा—इस श्लोक मे कहा है कि—भृगु के शाप से विष्णु को मछली, कछुवा, सूकर और नृसिंह के जन्म लेने पड़े जो उसकी पूजा करते हैं उनको मृत्यु का भय अवश्य होगा।

शम्भो पपात भुविलिङ्ग मिद प्रसिद्धं—इस श्लोक मे कहा है कि भृगु के शाप से शिव का लिंग भूमि पर गिर पड़ा यह प्रसिद्ध ही है। उस कपाली शिव की जो पूजा करते हैं उनको न इस लोक में सुख मिलता है न परलोक में। कहिये ! आप इसकी पूजा सिद्ध करना चाहते हैं ?

पहिले यह तो निर्णय कर ली लीजिये कि—इनमें से परमेश्वर कौन सा है ?

शिव पुराण में कहा है कि—

'लिङ्गोपरि च यद्द्रव्य तदग्राह्यं मुनीश्वराः।
सु पवित्रं च तज्ज्ञेयं यल्लिंग स्पर्श बाह्यतः॥'

अर्थात् जो वस्तु लिंग पर चढ़ती है वह अपवित्र अग्राह्य होती है। वह पवित्र रहती है जो लिंग स्पर्श से बाहर हो।

कहिये यही लिंग निराकार की मूर्ति है ?

शिव पुराण में लिखा है कि शिव जी ऋषियों की पत्नियों के सामने नगे होकर हाथ में लिंग थाम कर नाचने लगे तब क्रोध में भरकर ऋषियों ने उनको शाप दिया कि तुम्हारा लिंग भूमि पर गिर पड़े वह गिर गया, उसी की पूजा आप कराते हैं।

रात्रि को संवत्सर की प्रतिमा कहने का प्रयोजन यह है कि—सवत्सर—वर्ष है रात्रि उसको नापने का साधन है।

भागवत् के श्लोकों मे मूर्ति पूजा की स्पष्ट निन्दा है और कहा है कि—मिट्टी-पत्थर के देव नहीं होते हैं।

वनस्पतिभ्यो नमः —कहकर कृमियो के लिये भूमि पर अन्न रखना चीटियां भी तो आकाश पर नहीं रहती हैं। शुनां च पतितानां, मनु के श्लोक कुत्तों, कौओं और कृमियों के लिये भुवि-भूमि पर ही अन्न रखना कहा है। खिचड़ी पर पड़े घृत मे पत्नी प्रजा आदि देखने की बात कहती है तो मूर्ति पूजा हो गई यह आप का अद्भुत विचार है। अच्छी सन्तान चाहती है पति की लम्बी आयु आदि सभी घृतादि से मिलता है इसमें मूर्ति पूजा क्या हुई ?

वेद से आप मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके मेरे सब प्रश्न वैसे के वैसे रक्खे हैं, आप ने संस्कार विधि को वेदानुकूल मान लिया इसके लिये बधाई।

## अध्यात्म-सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' सूर्य का आत्मा मै हू—यह है प्रभु का सन्देश। सूर्य के रूप मे वह सारे संसार की चौकसी कर रहा है। सबको सबका वास्तविक मार्ग बतला रहा है। यह सूर्य यह प्रश्न कह रहा है—

ऐ असख्यों चिन्ताओं के भार से व्याकुल मनुष्य ! उठ ! जाग ! और उस अपने सर्व-रक्षक, सर्व चिन्तक के सर्वधारक, कन्धो पर इन्हें परम श्रद्धा से अर्पित कर निश्चिन्त क्यों नहीं हो जाता ? अरे ! जीव ! जिसकी सर्वशक्ति माता हर समय जाग रही है उसे कैसी फिकर, किसकी चिन्ता ? क्यों नहीं, उसकी गोद में बेफिकरी में मस्ताना होकर लोटता ?

इसलिये वेद मन्त्र हृदय मे अग्नि और ऊषा को जागृत करता हुआ मनुष्य को कहता है—

"हे कर्म वीर! उठो! जागो! तुम्हारे लिये ससार का कार्य क्षेत्र खुला पड़ा है। तुम छोटे से काम को हाथ में लोगे, तुम्हारे स्पर्श से वही महत्त्वपूर्ण बन जायेगा। तुम मानव सेवा के लिए आए हो ! तुम में महान् शक्ति निहित है। तुम अपनी शक्ति से अपरिचित हो। उसको पहचानो। उठो लोग तुम्हारी आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। उठो, जागो, समस्त संसार तुम्हारे जागने और तुम से ज्योति प्राप्त करने की प्रतीक्षा में है। सूर्य के समान तुम्हे बनना है। चौकसी की देवी ऊषा के गोद मे जन्मे सूर्य की तरह उदित होओ ! अपनी तमोभेदक किरणों का विकास करो। उठो! तुमसे ससार का कल्याण होने वाला है।

वेद मन्त्र का भाव यही है कि मनुष्य स्वयं जागृत हो और अग्नि को अपने हृदय मे प्रदीप्त कर समाज को जागृत करे। राष्ट्र का उद्धार करे। निराशा को दूर कर आशा का प्रसार करे।

इस ससृति में एक सत्य है—
मनुज आज का महाराज है
इसको वह वश मे कर ले तो
प्रस्तुत हीरो का जड़ा ताज है
सखे आज के इस प्रभात मे
बने आज की सुदृढ़ योजना
फिर कल आ तुमको खोजेंगे
तुम्हे पडेगा कुछ न बोलना
स्वर ऊषा के सुनो सुनाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ।

# गढ़वाल के शुभ-चिन्तकों से विनम्र निवेदन

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल की दिनांक २०-७-६९ की असाधारण सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया :—

'कर्मभूमि के १० मई ६९ के अंक में एक समाचार प्रकाशित हुआ है, जिसमें बताया गया है कि–'टिहरी गढ़वाल में स्थित चन्द्रबदनी के प्रसिद्ध मन्दिर में गत दो हजार वर्षों से पशुओं की बलि देने की एक कुप्रथा चली आ रही थी। इस वर्ष गांधी जन्म शताब्दी के उपलक्ष में टिहरी गढ़वाल की तथा पास पड़ोस की जनता, विधायकों, समाज सुधारकों, विद्वानों और श्रद्धालुजनों ने अहिंसा व्रत लेकर उक्त कुप्रथा का अन्त कर दिया है। बलि के स्थान पर वहां वैदिक और पौराणिक यज्ञों का आयोजन किया गया, जिसमे देश के प्रसिद्ध भारतीय संस्कृति के पोषक धर्माचार्यों ने भाग लिया।'

यह समाचार अत्यन्त हर्ष और प्रेरणा दायक है। आर्यसमाज सावली आदि पञ्चपुरी गढ़वाल और उसकी अपनी शाखा समिति दिल्ली की ओर से टिहरी तथा पास पड़ोस के उन सभी महानुभावों को जिनके पुण्य प्रयास से इस कुप्रथा का अन्त करके अनुकरणीय सुधार किया गया, हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

सही अर्थों में देवी हो या देवता, ये प्राणी मात्र को कोई कष्ट नहीं देते अपितु सदैव सुख देने वाले होते हैं। मनुष्य अपनी अज्ञानता और निजी स्वार्थों के कारण उनके नाम पर इस प्रकार की कुप्रथाओ का सृजन करके जहाँ मूक और निरपराध पशुओ के साथ भयंकर अत्याचार करता है वहां स्वयं को तथा देश और समाज को भी अनेक प्रकार से हानि पहुचाता है। वस्तुतः इस प्रकार की कुप्रथाएं विकसित और स्वस्थ समाज के प्रतिकूल हैं जिनका सभ्य ससार मे कदापि समर्थन नहीं हो सकता।

हमारे जिले के अनेक स्थानों मे भी इस प्रकार की कुप्रथाएँ अभी तक चली आ रही हैं जिनमें सुधार करने की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः गढवाल की जागृत जनता, सभी जननायकों, समाज सुधारको, प्रवासी सुधारक संस्थाओं, विद्वज्जनो और दयालु धर्मप्रेमियों से सानुरोध प्रार्थना की जाती है कि टिहरी की जनता की भांति–'अहिंसा परमो धर्मः' का पालन करते हुए तथा पूज्य गाँधी जी के अहिंसा व्रत को आचरण मे लाते हुए देवी देवताओं के नाम पर मूक पशुओ की बलि प्रथा को समाप्त करके उपयुक्त सुधार किया जाय। इस प्रकार के सुधार से जहा सभी पुण्य और यश के भागी बनेंगे वहां देश और समाज का भी अत्यन्त हित होगा तथा सभी प्राणी मात्र को सुख पहुंचेगा।'

— शान्ति प्रकाश 'प्रेम'
मन्त्री आ. स. पंचपुरी गढ़वाल

—भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित नाल्मीकिनगर में आर्य समाज का द्वितीय वार्षिक उत्सव २१-११-६९ और २२-११-६९ को मनाया गया। जिसमें श्री हरिप्रसाद शास्त्री एवं ठाकुर महानन्द सिंह के उपदेश एवं भजन हुये श्रोतागण की उपस्थिति प्रशंसनीय रहा।'

—विध्येश्वर प्रसाद

# आर्यवीरों से प्रार्थना

समस्त उत्तर प्रदेश के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह जो २३ दिसम्बर ६९ से २८ दिसम्बर ६९ तक डी. ए. वी. कालेज के प्रांगण में मनाया जा रहा है। उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल ने सेवा करने का कार्य भार अपने ऊपर लिया है, अतएव आप सबसे निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या मे आर्यवीर गणवेश में आने की कृपा करें। समस्त अधिकारी अपने यहाँ से आने वाले आर्यवीरों की सूची १५-१२-६९ तक कार्यालय लल्लापुरा के पते पर भेजें। प्रसन्नता की बात है कि अधिक से अधिक स्वयम् सेवकों के भाग लेने के समाचार आ रहे हैं। यह आयोजन भव्य होगा तथा उसकी व्यवस्था करना तथा सेवा कार्य करना हम सबका नैतिक कर्त्तव्य है। दल के अधिकारियों को भाग लेना अनिवार्य है। स्वयमसेवकों के भोजन तथा आवास की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। स्वयमसेवकों की सूची दल अधिकारी की टिप्पणी के साथ तथा स्वयमसेवकों के हस्ताक्षर सहित आना चाहिये। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्यवीर अपने कर्त्तव्य को निभाने में कदापि पीछे नहीं रहेंगे। जिनको अलग से पत्र नहीं पहुंचा है वे इस विज्ञप्ति को ही पत्र समझें।

नोट :– २२ ता० की रात्रि तक सबको आ जाना चाहिये।

भवदीय :–

| आनन्दप्रकाश | अवधबिहारी खन्ना |
|---|---|
| संचालक | सहायक संचालक |
| उ. प्र. आर्य वीरदल | उ. प्र. आर्यवीर दल |
| संयोजक | |

स्वयंम सेवक तथा सुरक्षाविभाग
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ
शताब्दी समिति वाराणसी

## आर्य समाज लाजपतनगर, कानपुर।

आर्य समाज लाजपत नगर, कानपुर का वार्षिक उत्सव तारीख १६ से २३ नवम्बर, ६९ तक बड़ी धूमधाम से लाजपत उद्यान में मनाया गया। इस अवसर पर प्रभात फेरियां, वेद कथा, नगर कीर्तन, भजन-उपदेश, आध्यात्मिक प्रवचन, हवन-यज्ञ आदि में हजारों आर्य प्रेमी सम्मिलित हुये सामारोह में भाग लेने वाले विशिष्ट एव विद्वान् व्यक्तियो मे विशेषरूप से प्रिन्सिपल श्री ज्ञानचन्द जी, श्री मदन मोहन विद्यासागर (हैदराबाद निवासी), प्रो० रतन सिंह, आर्य संन्यासनी माता विद्योतमा यति, श्री ओम् प्रकाश (रेडियो सियर), कु० भद्रपाल एवं कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के नाम उल्लेखनीय हैं।

'आर्य समाज की आवश्यकता' पर बच्चों की एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जिसमें बालक-बालिकाओं ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। प्रथम तीन श्रेष्ठ वक्ताओं को पुरस्कृत किया गया।

उपस्थित जन-समुदाय के लिये एक ऋषि-लंगर की व्यवस्था भी की गई थी।

—बी० एन० मलिक प्रधान

## 'वाद विवाद' एवं 'संस्कृत वाक् प्रतियोगिता'

२८ दिसम्बर ६९ को मध्याह्नोत्तर ३ बजे से श्री लाला हरिवंश जी की अध्यक्षता में 'आधुनिक सिनेमा अहितकर है?' विषय पर वाद विवाद तथा 'शिव सङ्कल्प' मन्त्रपाठ की संस्कृत वाक् प्रतियोगिता आर्यसमाज चूना मण्डी पहाड़गंज में होगी। वाद विवाद में विजेता संस्था को 'धर्मेन्दु चल विजेयोपहार' दिया जावेगा।

ओमप्रकाश एम० ए०-

# घोषणालोचनम्

[ श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री ]

श्री माधवाचार्य जी ने एक शास्त्रार्थ घोषणा छापी है। उसको पढ़कर प्रत्येक समझदार व्यक्ति समझ सकता है कि माधव जी शास्त्रार्थ से बचना चाहते हैं और मूर्ख पौराणिक जनता पर यह धाक जमाना चाहते हैं कि आचार्य जी बड़े भारी पडित हैं। सस्कृत के महाकवि हैं। सर्व शास्त्रार्थतत्पज्ञ हैं। आखिर दूकानदारी जो चलानी है।

## आप के शास्त्रार्थ करने को पूर्ति देखिये :–

क–शास्त्रार्थ श्लोकबद्ध सस्कृत मे लिखित होगा और उसकी हिन्दी मे अनुवाद जनता को सुना दिया जायगा।

ख–निर्णायक निषपक्ष चाहे ईसाई मुसलमान हो वह होना चाहिये।

ग–प्रश्न कर्त्ता आचार्य जी ही होगे आर्य समाजी नहीं क्योंकि चुनौती उन्होंने ही दी है।

अब विचारिये कि शास्त्रार्थ तो सुनाना है जनता को परन्तु होगा वह पद्य बद्ध सस्कृत मे विचारिये है कोई तुक ?

यदि आर्य पडितों की योग्यता की परख करनी अभीष्ट है तो उनके प्रमाण पत्र देखले। और कविता का शास्त्रार्थ ज्ञान से क्या सबन्ध है। यह तो कवि सम्मेलन की वस्तु है। पद्यबद्ध भाषण करने वाले धाराप्रवाह सस्कृत भाषण करने वाले तो आर्य समाज मे व्याकरणाचार्य श्री प० विशुद्धानन्द जी एम० ए० और उनकी पत्नी सौभाग्यवती निर्मलादेवी तथा उनकी पुत्री बेटी मृदुला एम ए है। बेटी सावित्री साहित्याचार्या एम ए हैं। हमारी बहु और बेटियाँ भी बडी पडितायें हैं। धर्म निर्णय मे इस अड़गे को आचार्य जी केवल इसलिये लगाते है कि समय इन व्यर्थ बातो मे निकल जाये और मुख्य विषय जनता के सामने न आने पाये।

निर्णायक तो वह जनता होगा कि जिसे शास्त्रार्थ सुनाना है फिर एक विशेष निर्णायक की आवश्यकता बता कर शास्त्रार्थ को टालना ही चाहते हैं। ऐसा ही अडगा लगाकर माधव जी अरनियाँ के शास्त्रार्थ से बच चुके हैं।

प्रश्न कर्त्ता आचार्य जी ही रहें और उत्तरदाता आर्य समाज। यह भी शास्त्रार्थ के मुख्य विषय से बचने की बात है। आपका दावा है 'दयानन्दकृत समस्त ग्रन्थ अवैदिक, भ्रष्ट, सदोष, और सब कपोल कल्पित हैं' तो हुआ करे इसमे आर्य समाज के पक्ष की क्या हानि ? आर्य समाज के धर्म ग्रन्थ तो चार वेद हैं, उनमे दोष दिखायें तो आर्य समाज को स्वीकार है। परन्तु माधव जी स्वामी जी के ग्रथ सदोष सिद्ध हो जाने से मूर्त्ति पूजा, मृतक श्राद्ध, अवतारवाद तो वैदिक सिद्ध नहीं हो जायेंगे। जब तक आप मूर्त्ति - पूजा [ विष्णु शिव, गणेश, दुर्गा, काली, हनूमान जी की मूर्त्तियो की पूजा को वैदिक सिद्ध न करद, अवतार और मृतक श्राद्ध की विधि वेद मे न दिखला दें तब तक सनातन धर्म (पौराणिकमत) तो अधरमे ही लटका रहेगा। आप अपने पक्ष को सिद्ध करने मे असमर्थ हैं यह हम बीस पचीस वर्ष से देख रहे है। अत 'स्वपक्ष दोषाभ्युपगमात परपक्ष दोष से प्रसगमतानुज्ञा' अपने पक्ष के दोष न हटा कर दूसरे के पक्ष मे दोष देना–इलजामी जवाब देना 'मतानुज्ञा' नाम निग्रह स्थान मे आप आ गये हैं। पडे रहिये मुँह छिपाये निग्रह स्थान में।

आप लिखते हैं कि काशी मे स्वामी दयानद की दुर्गति पूर्ण पराजय हुई थी' तो क्या स्वामीजी के–मूर्ति पूजा वेद मे दिखाओ–इस प्रश्न का उत्तर पडितों ने दे दिया था ? यदि हां तो वही उत्तर हमे भी दे दो। और यदि आज तक कोई प्रमाण वेदो मे मूर्ति पूजा का नहीं है तो श्री स्वामी जी की पराजय कैसे हुई। स्वामी जी या, आर्य समाज का पक्ष तो सिद्ध है साध्य नहीं। आपका पक्ष साध्य है, अत उसे सिद्ध कर दिखाइये तो स्वामी जी के ग्रन्थ अपने आप ही निरस्त हो जायेंगे। शास्त्रार्थ ग्रथो के सशोधन पर नहीं हुआ करते मान्यताओ पर होते हैं। हमने सिवहारे मे, फर्रुखाबाद मे, बिलसी मे, अरनिया मे प० अखिलानद जी, माधव जी आदि के शास्त्रार्थ देखे केवल हुल्लड बाजी ही रही। हमारे कई शास्त्रार्थ महारथी प० ओमप्रकाश जी खतौली जिनके तमाचो का मजा आचार्य जी चख चुके हैं।

श्री स्वामी अमर भारती जी
( भू० पू० ठा अमरसिंह जी )

(शेष पृष्ठ १२ पर)

---

(पृष्ठ ६ का शेष)

अपने हृदय की दृढ आस्था, श्रद्धा, पवित्रता और अनुभूतियो को प्रतिबिंबित करना चाहिये। जब विद्वान् अपने सच्चे हृदय से उपदेश करते हैं, और स्वय भी अपने उपदेश के अनुसार आचरण करते है तभी उनके उपदेश सफल एव लाभकारी होते हैं।

१३–हम जिस ईश्वर के उपासक हैं, वह तो पापियो पर भी दया करने वाला है, फिर हम किसी पर कोप कैसे कर सकते हैं ? पाप और पुण्य की परिभाषा करना तो हमारे वश मे नहीं है। हमारे लिये तो इतना ही बस है कि हम पापो से घृणा करे, पापियो से नहीं। पापी तो एक प्रकार के मानसिक रोगी ही है। रोगियो की तो चिकित्सा होनी चाहिये। उनके प्रति तो दया का व्यवहार ही उचित है। जो लोग स्वय दोषो और पापो मे लिप्त रहकर, अपराधियो जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे दम्भी लोग भी दूसरों के उद्धार और सुधार के प्रपच रचते हैं। यह तो पूरा पाखण्ड है।

१४–ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ चतुर चोरों ने परोपकार को भी एक पेशे का रूप दे डाला है। और अधिक चतुर मानवो!!! तुम पहले अपना इलाज करो। पहले आत्मउद्धार करो। किसी दूसरे की आख का तिनका निकालने से पूव तुम अपनी आँखो के शहतीर तो निकाल लो। किसी और पै दोषारोपण करने से पूव तुम अपनी ओर देखो। अपने-अपने पाण्डित्य का उपयोग पहले अपने लिये करो। क्योकि–

बुरा जो देखन मै चला,
बुरा मिला नहीं कोय।
जो मन खोजा आप ना
मुझसे बुरा ना कोय॥

१५–प्रत्येक मनुष्य का उचित है कि वह समाज की सद्स्थिति का सरक्षण और सवर्धन निरन्तर करता रहे। विद्वानो का तो यह सर्वोपरि कर्त्तव्य ही है। जो ससारी जीव भूलों और भ्रान्तियों में फँस कर नाना प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं, उनका उद्धार और सुधार तो विद्वानो को ही करना है। यदि विद्वान भी ससार की सुख शान्ति की सुरक्षा का प्रबन्ध न करेगे तो फिर उनमे और साधारण लोगो मे क्या भेद रह जायेगा ?

१६–भगवान् की दया का यह अभिप्राय कदापि नहीं है, कि वह पापियो को क्षमा कर देता है, और वे कर्म फल भोग से बच जाते है। प्रभु की दया का प्रकाश तो उसके नियमो और उसके न्याय का ही एक अग है। उसकी दया तो उसके दण्ड दान मे भी विद्यमान रहती है। प्रभु की विशेष कृपा और उसकी विशुद्ध अनुभूति तो शुद्ध, पवित्र, सदाचारी एव नि [illegible] भक्तो को ही प्राप्त होती है। तभी तो [illegible] पता को मानवता का सवारि [illegible] समझा जाता है शील तो [illegible] आभू [illegible] है समाज की [illegible] अर्थात सु [illegible] स्थिति–सद्स्थिति के लिये शील सम्पन्न जनो की वृद्धि की आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

बनो आर्य वेद मत पर चलो।
रहो बेखतर मत किसी से डरो॥

## गुरुकुल महाविद्यालय

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल मे गुरुकुल महा विद्यालय प्रारम्भ हो गया है। जिसमें वेद वेदाङ्ग, दर्शन, उपनिषद्, गणित, इगलिश, भूगोल आदि विविध विषय एव विविध भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं, विद्यार्थियो के जीवन निर्माण और सदाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

विद्यालय मे प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य, की परीक्षाए होती हैं। उपदेशक विद्यालय में उपदेशक भी तैयार किए हैं।

## वैदिक योगाश्रम शुक्रताल का पंचम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कार्तिक गगा स्नान के मेले के अवसर पर १८ से २३ नवम्बर सन् १९६९ तक वैदिक योगाश्रम शुक्रताल का पचम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम और अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमे हजारो व्यक्तियो ने वैदिक धर्म के प्रचार से लाभ उठाया।

उत्सव में गो रक्षा आदि अनेक सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साधना प्रेमियों को योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया। ऋग्वेद से महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

योगासन, प्राणायाम, व्यायाम के प्रदर्शन ब्रह्मचारियों द्वारा दिखाये गये। भोजनार्थ ऋषि लगर चलता रहा–जिसमे सब नर नारियो के भोजन का सुप्रबन्ध था। ठहरने की सुव्यवस्था की गई।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर श्री विद्वद्वर्य योगीराज महा मान्यवर पण्डित विद्याधर जी स्नातक वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर के पावन कर कमलों द्वारा यज्ञशाला की आधार शिला रखी गई। दानी महानुभावो ने यज्ञशाला के निर्माण के लिए बढ़ चढ़ कर दान दिया।

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक
सस्थापक व सचालक वैदिक
योगाश्रम शुक्रताल [मुजफ्फरनगर]
(उ० प्र०)

### उत्सव

—आर्य समाज सदर बाजार झांसी का ३७ वां वार्षिकोत्सव १४ से १६ दिसम्बर तक समारोह से मनाया जायगा। धर्म प्रेमी जनता पधार कर ज्ञान लाभ प्राप्त करें। —मन्त्री

### सूचना

'समस्त उत्तर प्रदेशीय आर्य समाजो को विदित हो कि सभा के मुख्यनिरीक्षक श्री विशम्भर नाथ तिवारी कानपुर निवासी की आँख का मोतियाबिन्द का सफल आपरेशन हो गया है। वे इस समय स्थानीय आँख के अस्पताल मे भरती है।

स्वस्थ्य होने पर वे निरीक्षण कार्य तेजी से करने लगेंगे ऐसी आशा है।' —वीरेन्द्र आर्य मन्त्री
आर्यसमाज सीतापुर

### निर्वाचन

—आर्य समाज पीपाड़ शहर
प्रधान—श्री भानीराम लड्ढा
कार्य वाहक प्रधान—श्री बन्सीलाल आर्य, उपप्रधान—श्री बस्तीमल आर्य पुरोहित, मन्त्री—श्री रामरख उप मन्त्री—श्री मागीलाल कुलदीप, कोषाध्यक्ष—श्री भवरलाल वैष्णव, प्रचार मन्त्री—श्री कवि कस्तूरचन्द "घनसार"

—आर्य समाज रेवती (बलिया)
प्रधान श्री रामश्याम ओझा
उपप्रधान—श्री बच्चालाल जी
मन्त्री—श्री अरविन्द प्रसाद
उप मन्त्री—श्री बब्बनसिह
कोषाध्यक्ष—श्री गंगाप्रसाद

—चम्पारण जिला आर्यसमाज
प्रधान श्री योगेन्द्रप्रसाद एडवोकेट मोतिहारी, उपप्रधान श्री प्रभुनारायण आर्य नरकटियागज उपप्रधान श्री शिवशकरप्रसाद मलाही, प्रधान मन्त्री वी. के. शास्त्री, वकील, उपमन्त्री श्री दीनानाथ आर्य नरकटियागंज, उपमन्त्री श्री बलदेवप्रसाद जी मलाही, कोषाध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द प्रसाद जी मलाही —मन्त्री

—दखनपुर के मास्टर शान्ति प्रसाद का आगरा में १५ नवम्बर को देहान्त हो गया। आप आर्यसमाज नजीबाबाद, नगीना के मंत्री रहे थे। परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

शकर लाल शर्मा
मंत्री आ स. राजा मडी, आगरा

—महिला सत्संग सभा नगर आर्यसमाज साहब गज गोरखपुर की ओर से कार्तिकी मेले मे यज्ञ का आयोजन हुआ था। —मंत्री

—'आर्य समाज बड़गांव (गोंडा) का १० वां वार्षिकोत्सव बड़े ही धूम-धाम से दिनाक २९ अक्टूबर से २ नवम्बर तक मनाया गया।

—श्री ठाकुर सिंह नेगी मंत्री आर्य समाज बड़गाँव गोंडा के चि. पुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह नेगी का शुभ विवाह आयुष्मति शकुन्तला चौहान के साथ देहरादून में बड़े ही धूम-धाम से पूर्ण वैदिक रीति से आर्य विद्वान् द्वारा सम्पन्न हुआ। —मंत्री

डी ए वी. इन्टर कालिज के शिक्षक श्री महेश्वर पाण्डेय

मैं आर्य मित्र के माध्यम से समस्त आर्य सामाजिक शिक्षा सस्थाओ के शिक्षक एवं शिक्षिकाओ से अभ्यर्थन करना चाहता हू कि श्री पाण्डेय जी एक दृढ ऋषि भक्त कर्मठ आर्य हैं, माध्यमिक शिक्षक सघ उत्तर प्रदेश तथा भारतवर्ष के अध्यक्ष बने रहने में आर्यो को परम गौरव की बात हैं। ऐसे निष्ठावान् अदम्य उत्साही गम्भीर, क्रान्तिकारी एव दूर देशी व्यक्ति को पुनरपि हम उत्तर प्रदेश संघ का अध्यक्ष चुन कर अपनी सूझ का परिचय देंगे। निवेदक—
आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र
प्रवक्ता बदायूं तथा अन्तरंग
सदस्य आ. प्रति. सभा

—आर्य समाज शहर मुजफ्फर नगर का ६४ वां वार्षिकोत्सव २६ से २९ अक्तूबर तक सफलता पूर्वक मनाया गया। जिसमें माता विद्योतमा यति, कु० सुखलाल आर्य मुसाफिर व ठा० यशपाल सिंह ससद सदस्य स्वामी रामेश्वरा नन्द जी आदि के भाषण हुए।

ओम प्रकाश शर्मा, मंत्री

—नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर का तीसवां वार्षिकोत्सव १३ से १६ नवम्बर तक लाल डिग्गी उद्यान में समारोह पूर्वक मनाया गया। मंच से श्री पं० द्विजराज शर्मा प्रचार मंत्री ने घोषणा की कि इसी प्रकार गोपाष्टमी पर ही वार्षिकोत्सव होता रहेगा। धन्यवाद, आरती गान तथा शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

परमेश्वर प्रसाद, मंत्री

## घोषणा लोचनम्

(पृष्ठ ११ का शेष)

जिनका सामना आप कर नहीं सकते। तैयार खडे हैं। पर हुल्लड़ के लिये नहीं मैं भी सेवा को तैयार हू पर शास्त्रानुसंधान के लिये। वितण्डा के लिये नहीं।

श्री स्वामी दयानन्द का पक्ष है—मूर्ति पूजा, मृतक श्राद्ध अवतारवाद अवैदिक हैं—अतः कोई पंडित जब तक इन्हे वैदिक सिद्ध न करदे तब तक स्वामी जी का विजयनाद होता ही रहेगा।

## काशी शास्त्रार्थ एवं पाखण्ड खन्डिनी पताका शताब्दी का आन्दोलन कीजिये

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि काशी शास्त्रार्थ शताब्दी पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी समारोह २३ दिसम्बर २८ दिसम्बर १९६९ तक काशीनगरी मे मनाया जायगा। प्रदेश की जिला उप समाएँ एव जिला के प्रमुख आर्य समाजो को चाहिए कि अपने अपने जन क्षेत्र मे शताब्दी मंडल की स्थापना करें और जिले भरमे प्रचार किया जावे। काशी चलने के लिए आर्य जनता को उत्साहित किया जाय और शताब्दी के लिए पुष्कल धन राशि सग्रह की जाए। था धर्म लाभउठाने की कृपा करें।--संयोजक



### आवश्यकता

'योग्य, शिक्षित, सुशील, सुसस्कृत एम० ए० (मनो०) एम० एड० २३ वर्षीया गृहकार्य मे अति दक्ष सभ्रान्त कुल की आर्य कन्या के हेतु (बीसा अग्रवाल गर्ग गोत्रीय) योग्य वर की आवश्यकता है। पत्र-व्यवहार ४७ बी० अभिकर्ता द्वारा आर्य मित्र लखनऊ,'

–श्री गंगानगर १ दिसम्बर। स्थानीय महर्षि दयानन्द कालेज मैं एक विशाल अन्त' राज्य वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता माननीय श्री ताराचन्द शर्मा एव सयोजक प्रो० चम्पालाल गुप्त ने किया। प्रतियोगिता मे राजस्थान, पजाब, हरियाणा, देहली, चडीगढ़ आदि प्रान्तो एव केन्द्रशासित प्रदेशो की १७ टीमो ने भाग लिया। श्री गगानगर जिले मे इस स्तर का यह सबसे बड़ा आयोजन था।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का परिणाम निम्नानुसार रहा—
प्रथम–श्री जितेन्द्र सिंह–पजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ।
द्वितीय–श्री विनोद कुमार दुबे–जी० बी० पौदार कालेज नवलगढ।
–श्री विजय कुमार बतरा-महर्षि दयानन्द कालेज, श्रीगगानगर
तृतीय–श्री भागीरथ–राजकीय महाविद्यालय, कोटा।
–श्री पवन कुमार अग्रवाल-महर्षि दयानन्द कालेज, श्री गगानगर

इनके अलावा श्रेष्ठ स्तर प्रदर्शित करने पर राजकीय महाविद्यालय कोटा के छात्र महावीर सिंह हाडा शारदा सदन कालेज, मुकुन्द गढ के छात्र श्री सुधीर कुमार जोशी, यूनिवर्सिटी कामर्स कालेज, जयपुर के छात्र श्री जगदीश कातिल, जी० बी० पौदार कालेज, नवलगढ के छात्र श्री मधुसुदन शर्मा एव मुकुदगढ के श्री आत्माराम शर्मा को विशेष सान्त्वना पुरस्कार दिए गए। वाद-विवाद का स्तर पर्याप्त उच्च एवं प्रशसनीय रहा। चल वैजयन्ती राजकीय महाविद्या ,कोटा को प्राप्त हुई।

## आर्यसमाजो और आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन—
## आर्यमित्र के ग्राहक बनिए, वार्षिक १०)

१—यदि आप देश देशान्तर के समस्त आर्य जगत् का समाचर जानना चाहते हैं, तो आर्यमित्र के ग्राहक बनिये।

२—आर्यमित्र आर्यसमाज का सबसे पुराना और देश देशान्तर मे जाने वाला आर्य प्रतिनिधि सभा (उ. प्र) का प्रमुख पत्र है।

३—आर्यमित्र अभूतपूर्व विशेषाङ्को को प्रकाशित करता है, जो ग्राहको को बिना मूल्य दिये जाते हैं।

४—महर्षि के काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह के पूर्ण समाचार प्रति सप्ताह जानने के लिये आर्यमित्र के ग्राहक बनिये।

५—आर्यमित्र में समस्त परिवार के पढ़ने योग्य सामग्री पर्याप्त रहती है। जैसे महिला जगत्, बाल जगत् सक्षिप्त समाचार इत्यादि।

६—आर्य मित्र मे प्रति सप्ताह वेदमन्त्रों की सुन्दर व्याख्या प्रकाशित की जाती है। जो स्वाध्यायशील व्यक्तियो के लिये बड़ी आकर्षक और शान्तिदायक रहती है।

७—आर्यमित्र मे विद्वत्तापूर्ण शास्त्रीय लेख प्रति सप्ताह छपते हैं।

८—आर्यमित्र मे शास्त्रीय शका समाधान आपको पढ़ने को मिलेंगे।

९—आर्यमित्र मे सुन्दर और सिद्धान्तो पर कविताएँ उच्च कवि की प्रकाशित की जाती हैं।

१०—आर्य जगत मे जो भ्रामक गलत प्रचार कुछ लोग फैला हैं, उनका सही उत्तर आर्यमित्र द्वारा ही आपको प्राप्त हो सकता है।

नोट—अत आप आज ही १०) मनीआर्डर द्वारा भेजकर आर्यमित्र के ग्राहक बने, जिससे इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषाङ्क आपको विना मूल्य मिल सके।

निवेदक
व्यवस्थापक आर्यमित्र
—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
—५मीराबाई मार्ग, लखनऊ

## आवश्यकताहै।

गौड ब्राह्मण कुलोत्पन्न दो कन्याओ के लिए ब्राह्मण वरो की। कन्याओ की आयु १८ व २२ वर्ष है। सुन्दर सुशील स्वस्थ हाई-स्कूल व इन्टर पास है। वा सुशिक्षत २४-२५ वर्ष के बारोजगार हो।

पता—सुरेशचन्द्र शर्मा ठेकेदार कृष्णा बिल्डिङ्ग चारबाग लखनऊ

## ब्रह्मा कुमारी दर्पण छप कर तैयार

ब्रह्माकुमारी दर्पण नामक ट्रैक्ट १६ पेजी छप कर तैयार पुन हो गया है। कागज सफेद २४ पौंड का लगाया गया है।

ईसाई निरोध प्रचार के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य प्रति १५ पैसा, इकट्ठी प्रचारार्थ १०) सैकड़ा—

पता :—घासीराम प्रकाशन विभाग
आर्य प्रतिनिधिसभा-लखनऊ

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

## सफेद दाग

श्वेतिका बूटी ने करीब ३० वर्षों से श्वेत दाग के रोगियों को ९ दिनों मे पूर्ण फायदा पहुचाकर ससार मे ख्याति प्राप्त किया है। एक पैकेट दवा मुफ्त मँगवाकर पूर्ण लाभ प्राप्त करें।

वेस्टर्न इण्डिया कं० (V. N.)
पो० कतरी सराय (गया)

## ❋सत्यार्थ—प्रकाश❋

अपूर्व संस्करण

ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का नितान्त नवीन एव परिष्कृत सस्करण मण्डल के अध्यक्ष डा० सूर्यदेव शर्मा के शुभ दान से प्रकाशित होने के कारण प्रचारार्थ रियायती मूल्य केवल २ रु० ५० पैसे मे आर्यजनता को भेंट है। उस पर भी कमीशन १०) रु० तक ६३/, १० से ऊपर २५) रु० तक १२½/, २५) से ऊपर ५०) रु० तक १५/, ५०) से ऊपर २००) रु० तक २०/ व २०० रु० से ऊपर २५/। आर्डर के साथ १/३ धन भेजना आवश्यक है।

७२० पृष्ठ की इस पुस्तक को जो २४ पौंड के सफेद कागज पर छपी है, इतने सस्ते मूल्य मे मंगाकर धर्म प्रचार के इस अपूर्व अवसर से लाभ उठाइये।

आर्ष पुस्तकों का बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मंगावें।

### आर्य साहित्य मण्डल लि०
श्रीनगर रोड, अजमेर

'तीस वर्षो से आयुर्वेद की सर्वोत्तम, कान के बीसो रोगो की अकसीर दवा'

एजेण्ट चाहिं **कर्ण रोग नाशक तैल** ... रजिस्टर्ड

कान बहना, शब्द होना, कम सुनना, दर्द होना, खाज आना, सांय-सांय होना, (द आना, कुलना, सीटी-सी बजना, आदि कान के रोगो मे बड़ा गुणकारी है। मूल्य १ शीशी २ रुपये, एक दर्जन पर ४ शीशी कमीशन की अधिक रदेकर एजेण्ट बनाते हैं। एक दर्जन से कम मगाने पर खर्चा पैकिंग-पोस्टेज खरीदार के जिम्मे रहेगा। बरेली का प्रसिद्ध रजि 'शीतल सुरमा' आखो की रक्षा के लिये प्रति दिन प्रयोग करे, आँखें के लिए अत्यन्त गुणकारी है। इसके प्रयोग से आखो मे सुखदायक ठडक उत्पन्न होती है रोजाना प्रयोग करने से निगाह तेज हो जाती है, और अ कभी दुखने नहीं आतीं। आखो के आगे अँधेरा सा आना, तारे से दिखाई देना धुंधला नजर आना, खुजली मचना, पानी बहना, आखो की जलन, सुरखी और रोहो को शीघ्र आराम कर देता है। मूल्य ३ ग्राम की शीशी रू० २-२५ पैसे।

'कर्ण रोग नाशक तैल' सन्तोमालन मार्ग, नजीबाबाद, यू० पी०

## विश्वकर्मा वंशज बालकों को—
## ७०००) का दान

### श्री भवानीलाल गजूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकरास की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वशीय बालको के हितार्थ ७०००) को धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजन निम्न लिखित नियमानुमार भाद्रपद सम्वत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इम मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओ के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुको को मास जुलाई मे ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मँगाकर भरकर भेजना आवश्यक हैं।

—मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ.